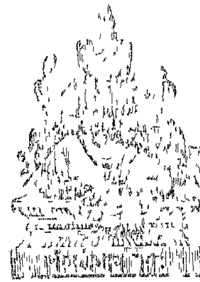


सूरसागर ॥

सारावली ॥

श्रीवल्लभ चरण कमलेभ्यो नमः ॥ श्री विठ्ठलेशो जयतितराम ॥ श्री गिरिधरो जयतितराम ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ अथ श्रीसूरदास जी कृत सूरसागर सारावली तथा सवालाखपदके सूचीपत्र श्रीकृष्णानंद व्यासदेव रागसागर संग्रहकृत तथा राग कल्पद्रुम लिख्यते ॥ वन्दौं श्री हरिपद सुखदाई । जाकी कृपाते पंगु गिरि लंघै अँधरेको सबकुछ दरसाई ॥ बहिरो सुनै मूक पुनि बोलै रंकचलै शिर छत्र धराई ॥ सूर-दास प्रभुकी शरणागत बारम्बार नमो ते पाई ॥ रागिनीकाफी तालजति ॥

खेलत यहि विधि हरि होरी हो होरी हो वेद विदित यह बात ॥
टेक-अविगति आदि अनन्त अनूपम अलख पुरुष अविनाशी । पूरण ब्रह्मप्रकट पुरुषोत्तम नित निज लोकविलासी १ जहँ वृन्दावन आदि अजरजहँ कुंजलता विस्तार । तहँ बिहरत प्रिय प्रीतम दोऊ निगम भृङ्ग गुंजार २ रतन जटित कालिंदीके तट अति पुनीत जहँनीर । सारस हंस चकोर मोर खग कूजत कोकिल कीर ३ जहँ गोवर्द्धन पर्वतमणिमय सघन कंदरासार । गोपिन मंडल मध्यविराजत निशि दिन करतबिहार ४ खेलतखेलत चितमें आई सृष्टि करन विस्तार । अपने आपकरि प्रकटकियोहै हरीपुरुष अवतार ५ मायाकियो क्षोभ बहु बिधि करि कालपुरुष के अंग । राजस तामस सात्विक त्रैगुण प्रकृति पुरुषको संग ६ कीन्हे तत्त्व प्रकटतेहो गण सबै अष्टअरु बीस । तिनके नाम कहत कवि सूरजी निर्गुण सबके ईश ७ पृथिवी अप तेज

वायु [illegible] [illegible] [illegible] । यह अहंकार औरमन बुद्धि [illegible]
अहंकार मिलि [illegible] ८ पाप [illegible] [illegible] उदान और कहियत प्राण
समान । तक्षक धनंजय पुनि देवदत्त और पौंड्रक शंखचूड़ ९ राजस
तामस सात्त्विक तीनों जीव [illegible] सुखधाम । अट्ठाईस तत्त्व यह कहि-
यत मोकों [illegible] सर्गो नाम १० नाभी कमल नारायणको सो वेद [illegible]
अवतार । नाभीकमल में बहुतहि भटक्यो तऊ न पायो पार ११ तब
आज्ञाभइ [illegible] तप करो परम [illegible] आम । तब ब्रह्मा तप कियो वर्ष
सात दूरि भये सब पाप १२ तब दर्शन दीन्हो [illegible] परमधाम निज
लोक । ताको दर्शन देखि [illegible] [illegible] निःशोक १३ जहां आदि
निजलोक महानिधि रमा सहित [illegible] । [illegible] करुणानिधि
रमासुखद [illegible] १४ अस्तुति कीन्हीं विविध नाना करि परम एकत्र
आनन्द । जै जै जै श्रुति गीत गावैं पढ़त हैं नानाछंद १५ आज्ञा
दीनी नाथ चतुरानन करो सृष्टि विस्तार । तेरी लेखनि को [illegible] नीको
रचनारचि अपार १६ चौदहलोक करो नाना विधि रचि बैकुंठ पताल ।
नाना रचना रची विधाता [illegible] १७ दशहो पुत्र भये ब्रह्मा
के जिनसंरच्यो संसार । स्वायंभुव मनु प्रगट [illegible] अरु [illegible] १८
भुवको रक्षा कारन [illegible] और वराह अवतार । पाछे कपिल रूप
हरि धार्यो कीन्हो सांख्य विचार १९ दीन्हो ज्ञान आप माताको
कीन्हो भवनिस्तार । आठौं लोकपाल [illegible] अपन अपन अधिकार
२० तेज अग्नि यम [illegible] वरुण औ [illegible] यह नाम । मृत्यु कुबेर
यक्षपति कहियत जहँ ओंकार को धाम २१ सत्यलोक जनलोक तप-
लोक और महर निजलोक । जहँ राजत ध्रुवराज महानिधि निशिदिन
रहत अशोक २२ उनकी आज्ञा पाय [illegible] पांच वर्ष सुकुमार ।
ताको आप कृपा हरि कीन्ही धरि आये अवतार २३ पाछे पृथु को
रूपहरि लीन्हो नानारसदुहि काढ़े । तापर रचना रची विधाता बहु
विधि यत्न नबाढ़े २४ रचि नवखण्ड दीपसातौंमिलि कीन्हो जोरि
समाज । बन उपवन पर्वत बहु फूले सबै बसन्त को साज २५ दानव देव
लगे आपसमें कीन्हो युद्ध प्रचार । विविधशस्त्र छूटत पिचकारी चलत
तीरनकी धार २६ दीन्हे मारि असुर हरिने तब देवन दीन्हो राज ।

सुकन को फगुवा इन्द्रासन सुख भालको भाल २७ विद्याधर गन्धर्व
अरु रथा पान करत गवनाई । प्रगटी सिंधु उठत निन्हातिन को फगुवा
मुखवाले २८ चन्द्रलोक दीन्हो शशिको तब फगुवामें हरिन्याय । सब
नक्षत्र को राजा दीन्हो शशिमंडल में थाप २९ मंगल बुध शुक्र अरु
शनि अरु राहु केतु यह जान । रवि अरु शशि सबहुन को फगुवा
दीन्हो चतुर सुजान ३० अतल वितल अरु सुतल तलातल और महा-
तल जान । पाताल और रसातल मिलि सातों भुवन प्रमान ३१ संक-
र्षणको धाम परमरुचि तहँ राजत निजधीर । शेषनाग ताके तरक्षस
बसत महा बल धीर ३२ इलावर्त और किंपुरुषा कुरु और हरिवर्ष
केतुमाल । हिरनमैरमनक भद्राश्व भरतखण्ड कुरुपाल ३३ सातों
द्वीप कहे शुकमुनिने साँईकहत अनूप । जंबु प्लक्ष क्रौंच शाल्मल शा-
कद्वीप कुश पुष्कर भरपूर ३४ अपने २ स्थानकपर सब फगुवा दियो
मुरनाथ । अरु २ हरि मायाते वामन प्रगट भये हैं आय ३५ तब २ और
अवतार धरयाते कीन्हो असुर सँहार । सो चौबीसरूप निज कहियत
वर्णन करत विचार ३६ प्रथम दिये स्वायंभुवमनु नृप अरु आज्ञा यह
दीन्ही । भूपर जाय राज तुम करिहौ सृष्टि विस्तार यह कीन्हो ३७
स्वायंभुवमनु अरु शतरूपा तुरत भूमि पर आये । जलमें मगन धरा भूव
देखे फिर अजपै चलि आये ३८ आयो आय कहो सबही विधि सुबहुत
दे खियत नाहीं । तब अति ध्यान कियो श्रीहरिको केशव भये सहा-
ईं ३९ ब्रह्मकी नाकते प्रगटे सूकर अति लघु रूप । देखत मात्रसे
बढ़िगये हैं कीन्हो वृहतस्वरूप ४० जयजय करत सकल सुर नर मुनि
जलमें कियो प्रवेश । जायपताल दाढ़गहिलीन्हो धरणी रमानरेश ४१
नैभुनकमल कुसुमकीनाईं चलेमनहुँ गजराज । कछु डरनाहिन जिय
में डरपति अतिआनन्द समाज४२ योगीसाधु सनकादिक चारों गये
हरिके निजलोक । कीन्हे क्रोधमने जब कीन्हे दियो शाप अति शोक
४३जय अरु विजय असुरयोनिन को भये तीनअवतार । तिनमें प्रथम
लियो कश्यप गृह दितिकी कोखिसँभार ४४ प्रथमभयो हिरणाक्ष
महाबल जिन जीते लोकपाल । नारद सीखगयो सूकर पै देखो रूप
बिकराल४५सहसबर्षलौं जलमेंजूझे कियोदनुज संहार । पाछे आय

भसिको थापी कियो यज्ञ विस्तार ४६ स्वायम्भू मनसुता तनया क-
हियत तीन प्रमान । आकूती देवहुती और प्रसूती चतुर सुजान ४७
प्रसूती दई दक्षप्रजापति तिनकी सतीसयान । सोदीन्ही महादेव दे-
को अतिआनंद सुजान ४८ लख्योदेह अभिमान पायके बहुरि दक्षगृह
आई । सतिप्रतहिसक्यौ जग जान्यो बहुरो रूपविहाई ४९ आकूती दई
रुचि प्रजापति भयेयज्ञ अवतार । इन्द्रासनबैठे सुख विलसत दूरकियो
भुवभार ५० देवहुती कर्दम को दीन्ही तिन कीन्हो तप भारी । विष्णु
सरोवर आये माधव किये गरुड़ असवारी ५१ दियो बरदान दृष्टि
करिवेको अस्तुति करी प्रमान । मेरो अंश अवतार होयगो कहिभये
अन्तर्द्धान ५२ पाछे ऋषि निज तप बलपायो कीन्हो प्रकट विमान ।
तामें बैठि सकललोक देख्यो कन्याने सुखदान ५३ पाछे कपिल रूप
हरि प्रकटे दर्शन करि मुनिराय । कीन्हो त्याग गये बनको तव ब्रह्म
परमपद पाय ५४ पाछे विविधज्ञान जननीको दीन्हो कपिल दयाय ।
सांख्य योग अरु ज्ञान भक्ति दृढ़ बरण्यो विविध बनाय ५५ जननीको
रूप तुरत ह्वै गइ वह हरिके रूप समाय । चले मगनह्वै आत्मध्यानकरि
गंगासागरन्हाय ५६ आजहुँलौं राजत सोरथिकौतट करनको अभिलाष ।
सांख्याशास्त्र बहुत महामुनि सेवत चरणानुसार ५७ अत्रि पुत्रार्थ ब्रह्मादिक
तिनकोन्हो तपजाय । आये तीनदेवताकेढिग ब्रह्मा शिव हरिराय ५८
तब उन मांग्यो सुत तुमहीसे तीनो प्रकटे आय । अज शशि अंश रुद्र
दुर्वासा दत्तात्रेय हरिराय ५९ अनसूया के गर्भ प्रकट ह्वै कियो योग
आराधि । यम अरु नियम प्रमान प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि ६०
आसन कसब सिद्ध योगकर प्रकट कला जगदीश । दीन्होभोग सहस्र
नृपको बहु करुणानिधि जगदीश ६१ कीन्हे गुरु चौबीस सीख लै
यदुकोदीन्होज्ञान । पातंजलिसे मुनिपद सेवत करतसदा अजध्यान ६२
जब दृष्टिन पर किरपाकीन्ही ज्ञानकला विस्तार । सनकसनंदनऔर
सनातन चारों सनतकुमार ६३ उनसे कह्यो सृष्टि नाना विधि रचना
करो बनाय । उननहिँ मान्यो तब चतुरानन खीझे क्रोध उपाय ६४
शङ्कर प्रकट भये भृकुटीते करी सृष्टिनिर्मान । भूत प्रेत बैतालरचो बहु
दौरे विधि को खान ६५ पूरण करो कह्यो चतुरानन सृष्टि महादुख

दैन । तब शङ्कर तपस्या को निकसे खिलौं कमलदल नैन ६६ मूरति त्रियाजु भई धर्मकी तिनके हरि अवतार । नारायण जब अंश प्रकट भये तिन कैलो अनुसार ६७ सहस कवच इक असुर संहारेउ बहुरि कियो तनुधारी । ध्यानधरेउ सुरपतिको तब उन पठइअप्सरानारी ६८ बहुत भाँति उन कियो परम छल तपमें उनके काज । कछु नहिँ चलो महानार। अगा सुख समाधि तियमाज ६९ इक उर्बशी हृदय उपजाई दई शक्र को ताय । ताको देखि देखि जीवत हैं अजहुं इन्द्र सुरत पाय ७० स्वायंभु के द्वितिय पुत्र उत्तानपाद मति धीर । तिन के ध्रुव बालक जो जाये और उत्तम गंभीर ७१ नृपके पास गये गोदीमें बैठनको सुकुमार। तब लघु मात कह्यो तब बैठो जब मेरे अवतार ७२ सुनि कटु वचन गयो माता पै तब उन ज्ञान दृढ़ायो । हरिकी भक्ति लागे सुख नीके जो चाहौ सुख पायो ७३ पांचवर्ष के निकसि चले तब मधुबन पहुँचे आय। विच नारदमुनि तत्त्व बताओ जपैं मंत्र चित लाय ७४ कछुदिन पत्र भक्ष करि बीते कछुदिन लीन्हो पानी । कछु दिन पवन कियो अनुप्राशन रोंक्यो श्वास यह जानी ७५ दारुण तप जब कियो राजसुत तब कांप्यो सुर लोक। त्राहि २ हरिसों सबभाष्यो दूर करो मन शोक ७६ तब हरि कह्यो कोऊ जिन डरपो अबहिं तुरत में जैहों । बालक ध्रुव बन करत गहन तप ताहि तुरत फल दैहों ७७ इतनी कहत गरुड़ पर चढ़िके तुरतहि मधुबन आये । कम्बु कपोल परसि बालकके बाणीप्रकटकराये ७८ अस्तुतिकरी बहुत ध्रुव सब विधि सुनि प्रसन्न भये आप। दीये राज भूमिमण्डल को सब विधि थिर करि थाप ७९ हरि बैकुण्ठ सिधारे पुनि ध्रुव आये अपने धाम । कीन्हो राज तीस षट बरषन कीन्हे भक्तन काम ८० यक्ष प्रबल बाढ़े भुव मंडल तिन मार्यो निज भ्रात। तिनके काज अंश हरि प्रकटे ध्रुव जगत विख्यात .८१ बहुत वर्षलौं राज कियो भुव फिर आये निजलोक। सबके ऊपर सदा विराजत ध्रुव सदा निःशोक ८२ सनकादिक पूछियो चतुरानन ब्रह्माजीवको बीच। प्रकट हंसवपुधर्यो जगत पुर जोपै नीर समीच ८३ यह भुवमंडलको रसकाढ्यो भांति२ निजहाथ। धरि पृथुरूप कियो जगआनँद अखिललोकके नाथ८४

प्रियव्रत वंश प्रगट हरि निज वपु ऋषभदेव यह नाम। कौनकौन [illegible] सकल भजन को धाम ८ अभिराम ८५ कीन्हो यज्ञ [illegible] बरषाये बरषा बरषो नाहिं। तब हरि आप मेघ ह्वै बरषे करी परम सुख छाहिं ८६ ज्ञान उपदेश कियो पुत्रनको ब्रह्मावर्त मँझार। पाखंडहि संन्यास जगतमें विचरे परम उदार ८७ आठो सिद्धि भईं सन्मुख जाय करी न अङ्गीकार। जैजैजै श्रीऋषभदेव मुनि परब्रह्म अवतार ८८ ब्रह्म सभामें यज्ञकियो जब करन वेदउच्चार। प्रकटभये हयग्रीव महानिधि परब्रह्म अवतार ८९ चार वेद लैगो शंखासुर जलमें रह्यो छिपाय। धरि हयग्रीव रूप हरि मार्यो लीन्हें वेद छुड़ाय ९० सत्यव्रत राजा रघुवंशी प्रथम भये मनुराय। कीन्हो तप बहु भांति परम रुचि प्रकट भये हरिराय ९१ धरि लघु रूप मीनको मोहन आये उनके पानि। तब उन जल में डारि दियो फिर तब बोले हरि बानि ९२ [illegible] बीच डारि जिन मोको बड़े मच्छ डर लागा। यहकहि [illegible] धरेउ सत्यव्रत के भाग ९३ सतयें दिवस होयगो प्रलय [illegible] नाव। तामें बैठ सात द्विज अरु तुम करो भजन ममभाव ९४ [illegible] हरि नृप देखतही भये जो अन्तर्ध्यान। मार्तंड [illegible] तबकीन्हो नृप ज्ञान ९५ सबहि अन्नको बीज लियो नृप [illegible] द्विज साथ। बैठो नाव ध्यान हरिको करि दर्शन दीन्हो नाथ ९६ [illegible] किनारा आय तहँ लख्यो [illegible] विशाल। [illegible] तब हरि [illegible] बनाय ९७ बहुतकाललौं विचरे जलमें तब हरि भये सुशांति। [illegible] प्रबल विविध नानाकर सृष्टि रची बहुभांति ९८ यह हरि मच्छरूप जब लीन्हो कियो चरित विस्तार। जैजैजै श्रीमीन महा वपु जै जै जगत अधार ९९ सुर अरु असुर मथन कीन्हो निधि चौदह रतन निकार। पर्वतपीठ धरेउ हरि नीके लियो कूर्म अवतार॥ १०० हिरण्यकशिपु अतिप्रबल दनुजहै तपकीन्हो परचंड। तब [illegible] दीन्हो चतुरानन कीन्हो अमर अखंड १०१ जपतप राख्यो तबहिं भवनमें सबसंपति गहिलीन्हो। गहे जबकच कामिनि राजाकी तबनारद [illegible] दीन्हो १०२ याके गर्भबसत है हरिजन हनुसुरपति यहबात। तब तजिदई आप लैआये निज आश्रम विख्यात १०३ नितप्रति ज्ञानकथा हंसन

सो ... मुनिराज । सुनि प्रह्लाद प्रसन्न कीयो अति आनन्द ... पाठ पढ़ायो ... बहु विधि देख्यो निजधाम । तब नारदमुनि ... लै आये ग्राम १०५ पाछे लोकपाल सब जीते ... कियो आप । ... कुबेर अनिल यम मारुत सुवश कियो सब ता ... १०६ ... भयो सुरलोकन गये सबै अपदास । तब ग्रज स्थान कियो आपको ... भई अकास १०७ पाताल लोक अरु देव असुर ... करौं संहार । जब मेरे जन को दुख देहै क्षणहिं में डारौं मार १०८ जब प्रह्लाद प्रकट ताके गृह पांच वर्ष के भै हैं । आदर बहु कीन्हो राजाने पठन विप्र गृह गैहैं १०९ जब वह विप्र पढावें कुछ२ सुन के चित धरि राखै । जब वह जाय तबहिं सबहिनसों रामराम मुखभाखै ११० बालक और पढ़त शालामें तिनहिं करत उपदेश । हरिको भजन करो सबही मिलि और जगत दुखलेश १११ याहि विधि करि उपदेश सबनको किये भजन रसलीन । सण्डामर्क जो पूछन लाग्यो तब यह उत्तर दीन ११२ रामकृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज ॥ सोई सार जगतमें कहियत सुनो देव द्विजराज ११३ येही बात जगतमें नीकी सोई पढ़त हम आज । जबहीं विप्र कहेउ जो असुर सों पुत्र पढ़त बिन काज ११४ तबहि असुर प्रह्लाद बुलाये लिये गोद भरि अंक । कहो पुत्र तुम कहा पढ़ाहो पूछत कहेउ निशंक ११५ श्रवण कीर्त्तन स्मरण पाद रत अरचन बंदन दास । सख्य और आत्मा नैवेदन प्रेम लक्षणा जास ११६ सुनो पिता हौंयही पढ्योहूं और बात नहिँ जानूं । इनते और सोहिँ जो कहियत सो कबहूं नहिँ मानूं ११७ दीन्हो पटकि भूप धरणीपर कहेउ विप्रसों खीझ । रे मूरख तू कहा पढ़ायो कैसे देउँ तोहिं रीझ ११८ जो यह मेरो बैरी कहियत ताको नाम पढ़ायो । देहु गिराय याहि परबतते क्षण यातजीव कशायो ११९ दीन्हो डारि शैलते भू पर पुनि जल भीतर डारो । डारि अग्निमें शस्त्रन मारो नाना भांति प्रहारो १२० तऊन घात भई अंगन की जहँतहँ राम बचायो । तब नृप आपशस्त्रकर गहि के बहुतहि त्रास दिखायो १२१ कहाँहैं राम कह्यो बहुतेरो यों कहि गरजन कीन्हो । घट घट जल थल व्योम धरणीमें व्यापक यह मुनि लीन्हो १२२ तबलै खड्ग खम्भमें मारो भयो शब्द अतिभारी । प्रकट भये नरहरि वपु धरि हरि

कटकटकरि उच्चारो १२३ पकरि लियो क्षणमांझ असुर बलदाप किनख विदारो । रुधिरपानकरि आंत मालधरि जैजै शब्द उचारो १२४ मारो दैत्य दुष्ट दुःख क्षणमें जै नृसिंह वपु धारे । पुष्पन वृष्टि करत सुर नर मुनि भये भक्त रखवारे १२५ रमा निकट नहिं आवत हरिके ऐसो वपु हरि धारो ॥ अजभवनादिक देव नारदमुनि जानत रूप बिहारो १२६ अपनो अपनो अस्तुति करिके सबहिन यहै सुनायो । गन्धर्व अरु विद्याधर चारण विमल बिमल यश गायो १२७ तब प्रह्लाद आय हरिपदसों शीश नाय यह भाख्यो ॥ जैजैजै जगदीश जगतगुरु मोर अभय प्रण राख्यो १२८ तुमही आदि अखंड अनूपम अशरण शरण मुरार । देव देव परब्रह्म परिपूरण भक्तहेतु अवतार १२९ जहँजहँ भीरपरत भक्तनको तहँतहँ होत सहाय ॥ अस्तुति करि मन हर्ष बढायो लेहुन जो मनभाय १३० तब बोले नरसिंह कृपाकरि सुनहु भक्त सतभाव ॥ मन्वन्तरको राज दियो तोहिं धरयो शीशपर हाथ १३१ निरगुण सगुण होय मैं देख्यो तोसों भक्त न पाऊं ॥ जहँजहँ भीर परत भक्तनको तहां प्रकट होय आऊं १३२ सुन प्रह्लाद प्रतिज्ञा मेरी ताको कबहुं न त्यागों ॥ जैसे धेनु बच्छ को चाटत तैसे मैं अनुरागों १३३ जो मांगो सो देहुं तुरतहीं नहिं बिलम्ब कछु लाग । तब प्रह्लाद यही वर मांग्यो चरण कमल अनुराग १३४ कृपाकरि दीन्हो करुणानिधि अटल भक्ति थिर राज ॥ अन्तर्द्धान भये हरि तहँते सुफल भये सब काज १३५ नारदरूप जगत उद्धारण बिचरत लोकन माय ॥ करि उपदेश ज्ञान हरि भक्तहि अरु वैराग्य दृढाय १३६ स्वायंभू मनरूपा दोऊ कीन्हे यतहैं अवतार ॥ जग को धर्मप्रचार किये भुव भक्त कर्म आचार १३७ करुणाकर जल निधि ते प्रकटे सुधा कलश लै हाथ । आयुर्वेद बिस्तारण कारण सब ब्रह्माण्ड के नाथ १३८ क्षत्री दुष्ट बढे जो भुवपर लियो कृष्ण अवतार । परशुराम ह्वै कै द्विज थापे दूरकियो भूभार १३९ रघुकुल बंश चतुर चूडामणि पुरुषोत्तम अवतार । दशरथके गृह जन्म लियो हरि रूपराम सुकुमार १४० रावण कुम्भकर्ण असुराधिप बढे सकल जग माहिं । सबहिन लोकपाल उन जीते कोऊ बाच्यो नाहिं १४१ सकल देव मिलि जाय पुकारे चतुराननके पास । लै शिव संग चले चतुरानन क्षीरसिन्धु सुखबास १४२ अस्तुति करि बहु भाँति जगाये तब जागे निज नाथ । आज्ञा दई जाय कपि कुल में

प्रकटे। अवधपुरराय १४३ तबब्रह्मा कर्ताहिनसोंभाष्यो सोईसबसुरकीन्हें।
आतोंदीप जाय कपिकुल में आय जन्म सुरलीन्हें १४४ अपनेअंशआय
हरि प्रगटे पुरुषोत्तम निजरूप। नारायण भुवभार हरो है अति आ-
नन्दस्वरूप १४५ वासुदेव सों कहत वेद में पूरणअवतार। शेषसहसमुख
रटत निरंतर तऊ न पावतपार १४६ सहस्रवर्षलौं ध्यानकियो शिव राम
चरित सुखकार। अवगाहन करिकै सब देख्यो तऊ न पायो पार १४७
शितीसमाधि मतो तब पूछ्यो कहोमरम गुरुईश। काको ध्यानकरत उर
अंतरकोपूरणजगदीश १४८ तब शिव कहेउ राम अरु गोविंद परम इष्ट
इक मेरे। सहस्र वर्ष लौं ध्यान करत हौं राम कथा सुख केरे १४९ तामें
रामसमाधि करी अब सहस्रवर्ष लौं नाम। अतिआनन्द मगन मेरो मन
अँगअँगपूरण काम १५० दाया करि मोको यह कहिये अमर होहु
जेहिभाँति। सोहिं नारदमुनि तब बतायो ताते जिय अकुलाति १५१
तब गरुडेव कृपाकरिकै यह चरितकियो विस्तार। श्रीब्रह्मांडपुराण
व्यासमुनि कियो बदन उच्चार १५२ मुनि वाल्मीकि कृपा सातोंऋषि
राम मंत्र फल पायो। उलटो नाम जपत अघ गयो पुनि उपदेश करा-
यो १५३ राम चरित बरणनके कारण वाल्मीकि अवतार। तीनों
लोक भये परिपूरण रामचरित सुखसार १५४ शतकोटी रामायण
कीनो तऊ न लीन्हों पार। कह्यो वशिष्ठमुनि रामचन्द्रसों रामायण
उच्चार १५५ कागभुशुंड गरुड सों भाष्यो रामचरित अवतार। सकल
वेद अरु शास्त्र कह्योहै रामचन्द्र यशसार। १५६ कछु संक्षेप सूर अब
बरणत लघुमति दुरबल बाल। यह रचना पावनके कारन मेटन भव
जंजाल १५७ तीनोंव्यूह संगलैप्रकटे पुरुषोत्तमश्रीराम। संकर्षन प्रद्युम्न
लछिमन भरत महा सुखधाम १५८ शत्रुघ्नहि अनिरुध कहियतु हैं
चतुर्व्यूह निज रूप। रामचन्द्र प्रकटे जब गृह में हरषे कोशलभूप १५९
पुष्य नक्षत्र नौमी सु परम दिन लगन शुद्ध शुभ बार। प्रकटभये दशरथ
गृह पूरण चतुर्व्यूह अवतार १६० अति फूले दशरथ मनहीमन कौ-
शल्या सुख पायो। सौमित्रा कैकयी मन आनँद यह सबहिन सुत
जायो १६१ गुरु वशिष्ठ नारदमुनि ज्ञानी जन्मपत्रिका कीनी। राम-
चन्द्र विख्यात नाम यह सुरमुनि की छवि लीनी १६२ देत दान नृप

राज द्विजनको सुरभी हेम अपार । सब सुन्दरि मिलि मंगल गावत
कंचन कलश दुवार १६३ आये देव और मुनिजन सब दे अशीश सुख
भारी । अपने अपने धाम चले सब परम प्रमोद रुचिकारी १६४ मनबांछित
फल सबहिन पाये भयो सकल आनन्द । बालरूप ह्वै के दशरथ सुत
करत केलि स्वच्छंद १६५ घुटुरुन चलत कनक आंगन में कौशल्या
छबि देखत । नील नलिन तन पीत अँगुलिया घनदामिनिद्युति पेख-
त १६६ कबहुँक माखन रोटी लैके खेल करत पुनि मांगत । मुखचुं-
बत जननी समझावत आय कंठ पुनि लागत १६७ काग भुशुंड दरश
को आये पांच बर्षलों देखे । स्तुति करी आपु बर पायो जन्म सुफल
करि लेखे १६८ किरपा करि निज धाम पठायो अपनो रूप दिखा-
य । वाके आश्रम कोउ बसतहै माया लगत न ताय १६९ प्रातकाल
उठि जननि जगावत उठो मेरे बारे राम । उठि बैठे दतुवन लै आई
करी मुखारी श्याम १७० चारो भ्रात मिल करत कलेऊ मधु मेवा
पकवान । जल आचमन आरती करिके फिर कीन्हों स्नान १७१
करत श्रृंगार चार भइया मिलि शोभा बरणि न जाई । चित्र विचित्र
सुभग चौतनिया इन्द्र धनुष छबि छाई १७२ अलकावलि मुक्तावलि
गंथी डोर सुरंग बिराजै । मनहुं सुरसरी धार सरस्वती यमुना मध्य
बिराजै १७३ तिलक भाल पर परम मनोहर गोरोचन को दीनो ।
मानो तीन लोककी शोभा अधिक उदय सो कीनो १७४ खंजन
नैन बीच नासापुट राजत यह अनुहार । खंजन युग मनो लरत लराई
कीर बुझावत रार १७५ नासा के बेसर में मोती बरण बिराजत
चार । मनो जीव शनि शुक्र एकह्वै बाढे रविके द्वार १७६ कुंडल ल-
लित कपोल बिराजत झलकत आभा गंड । इन्दीवर पर मनो देखि-
यत रविकी किरण प्रचंड १७७ अरुण अधर दमकत दशनावलि
चारु चिबुक मुसक्यान । अति अनुराग सुधाकर सींचत दाड़िमबीज
समान १७८ कंठसिरी बिच पदिक बिराजत बहुमणि मुक्ताहार ।
दक्षिणावर्त देत ध्रुव तारे सकल नखत बहुबार १७९ रतन जड़ित कं-
कन बाजूबँद नगन मुद्रिका सोहै । डार डार मनु मदन बिटपतरु बिकच
देखि मनमोहै १८० कटिकिंकिणि रुनु झुनु सुनि तनकी हंस करत

किनकारी। नूपुर मुखर पग लालि पन्हैया उपमा कौनविचारी१८१ भूषन बसन आदि सब रचि रचि माता लाड लडावै। रामचन्द्र की देय माधुरी दरपण देख दिखावै १८२ निज प्रतिबिंब विलोकमुकर में हँसत राम सुख राम। सोमेइ लक्ष्मण भरत शत्रुहन खेलत डोलत पास १८३ दशरथ राय न्हाय भोजनको बैठेअपने धाम। लावोबेगि राम लक्ष्मणको सुनि आये सुखधाम १८४ दैरि संग बाबा के चारो भैया जेंवन लागे। दशरथराय आपु जेंवतहैं अतिआनंद अनुरागे१८५ लघु लघु ग्रास राम मुख मेलत आपु पिता मुख मेलत। बालकेलि को विशद परमसुख सुखसमुद्र नृपझेलत१८६ दालभात घृत कढीसलोनी अरु नाना पकवान। आरोगत नृप चारिपुत्र मिलि अति आनन्द नि-धान१८७ अचवनकर पुनि जलअचवायो जनवृप बीरा लीनो। राम लषण अरु भरत शत्रुहन सबहिन आँचवदीनो१८८ चोराखाप्रचले खेलनको मिलिके चारोंवीर। सखासंग सब मिलेबराबर आये सरयू तीर१८९तीर चलावत शिष्यसिखावतअरनिशानदेखरावत। कबहुंकसभै अश्व चढि आपुन नानाभांति नचावत १९० कबहुंक चारभात मिलि अगिया जात परम सुखपावत। हरिन आदि बहुजंतु किये बध निज सुरलोकपठावत १९१यहिविधि वन उपवन बहुक्रीडा करीराम सुखदाई। बालमीकि मुनि कही कथाकर कछु यक सूर जोगाई१९२ भई सांझ जननी टेरतहै कहां गये चारोभाई। भूख लगी ह्वैहै लालन को लावो बेगि बुलाई१९३इतने सांझ चार भैया मिलिआये अपने धाम। मुखचुंबत आरतीउतारत कौशल्या अभिराम १९४ सौमित्र केकयि सुख-पावत बहुविधि लाड लडावत। सबमेवा पकवान मि-ठाई अपने हाथ जेंवावत १९५ चारों भ्रातन श्रमित जानिके जननी तब पौढाये। चापत चरण जननि अप अपनी कछुक मधुर सुर गा-ये १९६ आई नींद राम सुख पाया दिनको श्रम बिसरायो। आगे भोर दौरि जननी ने अपने कंठलगायो१९७विश्वामित्र बडे मुनि कहि-यत यज्ञ करत निजधाम। मारिच और सुबाहु महासुर विघन करत दिनयाम १९८ परब्रह्म अवतार जानि के आये नृपके पास। दशरथ राय बहुत पूजाबिधि किये प्रसन्न हुलास १९९ भोजन कर जमहींजु

पुरुषोत्तम नेक नयन जवहेरे २३७ लीन्हों अंश खैंचि भृगुपति को अपने रूप समायो । करो जायतप मौन महेंद्र पै मुनि मुनिवर शिर-नायो २३८ अति आनन्द अयोध्या आये कियो नगर शृंगार। कदली खंभ चौक मोतिन के बाँधी बंदनवार २३९ कियो प्रवेश राज भवनन में रामचन्द्र सुखराश । अद्भुत भवन बिराजत रत्नन सूरज कोटि प्रकाश २४० द्वादश वरष बिराजे बालक फिर भूभार हरो । कैकेयी के वचन प्रमान किये नृपतब यह काज करो २४१ वचन समक्ष नृपआज्ञा कीन्हीं देव उपाय करो । रामचन्द्र पितुआज्ञा मानी जिय में वचन धरो २४२ यहभूभार उतारन रघुपति बहुत अर्थियन सुखदैन । वनो वास को चले सियासँग सुखनिधि राजिव नैन २४३ मारग में हरि कृपा करी है परम भक्त इक जान । तहँते गयेजु चित्र-कूट को जहां मुनिन की खान २४४ बाल्मीकि मुनि बसत निरंतर राममंत्र उच्चार । ताकोफल यह आज भयो मोहि दर्शन दियो कुमार २४५ पूजा कर पधराय भवन में रामचन्द्र परनाम । कियो विविध विधि पूजा करिके अर्घ्य चरनन शिरनाम २४६ बहुत दिनलौं बसे जगत गुरु चित्रकूट निजधाम । किये सनाथ बहुत मुनिकुल को बहु-विधपूरे काम२४७ भरतजान जियमें रघुपतिको दुःखकर परगतियोग। आये धाय संग सब लैके पुरवासी गृहलोग २४८ बिन दशरथ सब चले तुरतही कोशलपुरके वासी । आये रामचन्द्र मुख देख्यो सबकी मिटी उदासी २४९ रामचन्द्र पुनि सब जन देखेपिता न देखन पाये । पूछी बात कह्यो तबकाहू मन बहुविधि बिलखाये २५० वेदरीतिकरि रघुपति सबविधि मर्यादा अनुसार । बहुत भांति सब बिधि समुझा-ये भरत करी मनुहार २५१ गुरु वशिष्ठ मुनिकह्यो भरतसों रामब्रह्म अवतार । वनमें जाय बहुत मुनि तारे दूर करैं भुवभार २५२ पुनिनिज विश्वरूप जो अपनो सो हरि जाय देखायो । आज्ञा पाय चले निज पुरको प्रभुहि गीत समझायो २५३ कछु दिन बसे जुचित्रकूट में राम-चन्द्र सहभ्रात । तहांते चले दंडकावन को सुखनिधि सांवलगात २५४ मारग में बहु मुनि जन तारे अरु बिराध रिपुमारे । बंदन कर सरभंग महामुनि अपने दोष निवारे २५५ दरशन दियो सुतक्षण गौतम.पंच-

बटी पग धारे। तहां दुष्ट सूर्पनखा नारी करि बिन नाक उधारे २५६ यह सुनि असुर प्रबल दलआये छिन में राम सँहारे। कीन्हे काज सकल सुर मुनि के भुव के भार उतारे २५७ मुनि अगस्त्य आश्रम जु गये हरि बहुबिधि पूजा कीन्हीं। दिव्य बसन दीने जब मुनि ने फिर यह आज्ञा दीन्हीं २५८ दशकंधर को बेगि सँहारो दूरकरो भुवभार। ओया सुद्र। दिव्य बस्त्र ले दीने जनक कुमार २५९ सूर्पनखा जब जाय पुकारी नाक कान ले हात। रावण क्रोध कियो अति भारी अधर फरक अतिगात २६० गयो मारीच आश्रमहि तबहीं वानें बहु सम-झायो। तब मारीच कह्यो दशकंधर बिनती बहुत करायो २६१ राम-चन्द्र अवतार कहत हैं सुनि नारद मुनि पास। प्रकट भये निश्चर मारन को सुनि वहभयो उदास२६२ करगहि खड्ग तोर बध करिहैं सुनि मारिच डर मान्यो। रामचन्द्र के हाथ मरूंगो परम पुण्य फल जान्यो२६३ कपट कुरंग रूपधरि आयो सीता बिनती कीन्हीं। राम-चन्द्र कर धायक लैके मारन की बिधि कीन्हीं २६४ मार्यो धनुष बाणले ताको लक्ष्मण नाम उचारेव। लक्ष्मण नाम सुनत तहँ आये अवसर दुष्ट बिचारेव २६५ धरिकै कपट भेष भिक्षुक को दशकन्धर तहँ आया। हरि लीन्हों छिन में मायाकरि अपने रथ बैठायो २६६ चल्योभाज गीधायु जंतुज्यों लैके हरिको भाग। इतने रामचंद्र तहँ आये परमपुरुष बड़भाग २६७ जब माया सीता नहि देखी जियमें भये उदास। पूछनलगे राम द्रुम गनसों बहुत बढ़ीदुखरास २६८ मा-रग में जटायु खगदेख्यो बिकल भयो तनहीन। बिनती करी राम मैंतासों बहुत लड़ाईकीन २६९ जब तन तज्यो गृद्ध रघुपति तब बहुत करम बिधि कीनो। जान्यो सखा राम दशरथको अपनी निजगति दीनो२७०मारगमें कबंधरिपु मार्यो सुरपति काज सँवार्यो। पंपापुर हरि तुरतपधारे जलको दोषनिवार्यो २७१ शबरी परमभक्तरघुपति कीबहुतदिननकीदासी। ताकेफल आरोगे रघुपति परणभक्तिप्रकासी २७२ दीन मुक्ति निजपुर की ताको तब रघुपति चले आगे। सीता सीताबिलपत डोलतपरम बिरह सोंपागे २७३ रबिनन्दन जब मिले रामको अरु भेंटे हनुमान। अपनी बात कहा उन हरिसों बालि बड़ो

महल चित्रसारी शरदनिशा उजियारी। बैठे जनकसुता सँग बिलसत
मधुर बोलि अनुहारी ३१२ कबहुँक अगरधूप नानाविधि लियसुगन्ध
सुखकारी। कबहुँक निरतत देवनटी लखि रीझत हैं सुखभारी ३१३
राम विहार कहेउ नानाविधि बालमीकि मुनिगायो। बरणत चरित
विस्तार कोटिशत तऊ पार नहिँ पायो ३१४ सुर समुद्रकी बुन्द भई
यह कवि बरणन कह करिहै। कहत चरित रघुनाथ सरस्वती बौरी
मति अनुसरि है ३१५ अपने धाम पठाय दिये तब पुरबासी सब
लोग। जैजैजै श्रीराम कल्पतरु प्रकट अयोध्याभोग ३१६ हुय नृपति
जब बैठे भुवपर धरि भृगुपति को रूप। क्षत्रामें भुवको भार उतास्यो
परशुराम द्विजभूप ३१७ व्यासरूप ह्वै वेद विस्तारे कीन्हे प्रकट पुरा-
शान। नाना वाक्य धर्म थापनको तिमिरहरण भुवभारन ३१८ बुद्ध
रूप कलिधर्म प्रकाश्यो दया सकल को मूल। दूर कियो पाखण्डवाद
हरि भक्तनको अनुकूल ३१९ कलिके आदि अन्त सतयुगकेहै कलकी
अवतार। मारि म्लेच्छ सर्म्म फिर थाप्यो भयो जग जयजय का-
र ३२० कर्मवाद थापनको प्रकटे पृश्नि गर्भ अवतार। सुधापान दीन्हो
सुरगणको भयो जग यश विस्तार ३२१ असुरनको व्यामोह कियो
हरि धरो मोहनी रूप। अमृत पानकराय सुरनको कीन्हे चरित अ-
नूप ३२२ तैसेही भवभार उतारन हरि हयग्रीव अवतार। कालिंदी आश्चर्य
कियो हरि मारे दैत्य अपार ३२३ गज अरु ग्राह लड़ेउ जलभीतर तब
हरि सुमिरण कीन्हो। छोड़िगरुड़ सुखधाम माधवो भक्तनको सुख-
दीन्हो ३२४ जब बहु असुर बढ़े पृथिवी पर कियो अनर्थ विस्तार।
सत्यसेन प्रकटे विश्वम्भर सत्यक्रियाहै अपार ३२५ निजबैकुण्ठ बसाय
रमापति कियो रमाको हेत। विनतीसुनि कमलाकी केशव कीन्हो
सुख संकेत ३२६ ब्रह्मचर्य थापनके कारण धरो विभु अवतार। जहँ
तहँ मुनिवर निज मर्यादा थापी अघट अपार ३२७ अजित रूप ह्वै
मीन धरो हरि जलनिधि मथबे काज। सुर अरु असुर चकित भये
देखत किये भक्तके काज ३२८ जब बलिराजा गये देवपुर लीन्हो स्वर्ग
छुड़ाय। अदिती दुखितभई कश्यपसों विनती करी सुनाय ३२९ तब
कश्यप मुनि कहेउ पयोव्रत विधिसों करो बनाय। ताकी कोखि

अद्भुत धरि लीन्हो श्रीवामन सुखदायक ३३० भादौं शुक्ल द्वादशी शुभ दिन
प्रगटे विप्र स्वरूप। शिव विरंचि सनकादिक आये देखन को सुख-
रूप ३३१ यज्ञोपवीत विशोक कियो विधि सब सुर भिक्षा दीन्ही।
बामनरूप चलेहरि द्विजवर बलिकी सब सुधि लीन्ही ३३२ दण्ड कमं-
डलु हाथ बिराजत अरु ओढ़े मृगछाला। धरि पुस्तक चले बामद-
ग अम्बुज नयन बिशाला ३३३ सूरजकोटि प्रकाश अंगमें कटिमेखला
बिराजै। करी वेदधुनि नृपद्वारे मनहुं महाघन गाजै ३३४ सुनिआयो
राजहीं बलिराजा आय चरणशिरनायो। बिनती करी बहुत सुखमा-
न्यो आजभयो मनभायो ३३५ चलिये विप्र यज्ञशाला में जहँ द्विज-
वर सब राजैं। आये ब्रह्मसभा में बामन सूरज तेज बिराजैं ३३६ तब
नृप कहेउ कछू द्विज माँगो रत्नभूमि अभिराम। हय गज हेमरत्न
पाटम्बर देहौं प्रकट प्रमान ३३७ तब बोले बामन यह बानी सोहुन प्रह्लाद
कुलभूप। बहुत प्रतिग्रह लेतबिप्रजो जायपरत भवकूप ३३८ तीनपैंड
बसुधा हमपावैं पर्णकुटी इक कारन। जब नृप भुव संकल्प कियो है
लागेदेह पसारन ३३९ एक पैंडमें बसुधा नापी एकपैंड सुरलोक। एक
पैंड दीजै बलिराजा तब ह्वैहौ बिनशोक ३४० नापोदेह हमारी द्विजवर
सो संकल्पित कीन्हो। सुनि प्रसन्न बामन यों बोले तैं मोको बशकी-
न्हो ३४१ सदा द्वार तेरे ठाढ़ो ह्वै दरशन देहौं तोहिं। मायाकाल कबहुं
नहिँ व्यापै सुमिरन करते मोहिँ ३४२ सुतल लोकमें थिरकरिराख्यो
जहँ विभूति अति भारी। गहिकै गदा द्वारपर ठाढ़े बामन ब्रह्म मु-
रारी ३४३ स्वर्गलोक दीन्हो सुरपतिको पुनि थिर कर करथाप्यो।
निगम नेति कहि रटत निरन्तर देव प्रभु सब काँप्यो ३४४ बामनरूप
ब्रह्महरि प्रकटे जिनको यश जगगावै। शेष सहसमुख रटत निरन्तर
सूर पारकिमि पावै ३४५ पुनि बलि राजहिं स्वर्गलोकमें थापैंगे हरि-
राय। सर्बभौम अवतार धरैंगे श्रीबामन सुखदाय ३४६ पुनि विभुरूप
एक हरिलैंगे सकल जगत कल्यान। कपट खण्ड पाखण्ड असुर को
थापे भक्त निदान ३४७ विष्वक्सेन रूप हरिलैंगे कीन्हो शिवको
हेत। असुर मारि सब तुरत बिडारे दीन्हें रुद्र निकेत ३४८ धर्मसेतु ह्वै
धर्मबढ़ायो भुविको धारण कीन्हो। शेषरूप ह्वै धराशीश फिर सब

जगको सुख दीन्हो३४९ अन्तरयामी पालन कारन निज सुधर्म धरि रूप। अन्नदानदै सबजग पोष्यो किये काज सुरभूप ३५० योगपन्थ पातंजलि भाष्यो सोउसीरा सबजान्यो। योगीश्वर वपुधारि हरिप्रकटे योग समाधि प्रमान्यो ३५१ क्रियापन्थ श्रुतिने जो भाष्यो सो सब असुर मिटायो। वृहदभानु ह्वैके हरिप्रकटे सगामें फिरिप्रकटायो३५२ यह अनेक अवतार कृष्णके को करिसकै बखान। सोई सूरदासने बरणो जो कहे व्यासपुरान३५३अंशकला अवतार श्यामके कविपै कहत न आवै। जहँ जहँ भीर परत भक्तन को तहँ तहँ वपु धरिधावै ३५४ माया कला ईश चतुरानन चतुर्व्यूह धरिरूप। वायु वरुण अरु यम कुबेरशशि मृत्यु अग्नि सुरभूप ३५५ रवि शशि भृगु मरीचि सुरगुरु अरु चार वेद वपुजान। जगको प्रकट करन परजापति प्रकटे कलानिधान३५६जो जो भूप भये भूमण्डल लोकपाल निजजान। निज महिमा हरि प्रकट करी है विधिके वचन प्रमान ३५७ सुर अरु असुर रची हरिरचना सो जगप्रकटहि कीन्ही। क्रीड़ाकरी बहुतनानाविधिनिगम बात दृढ़चीन्ही ३५८ यहिविधि होरी खेलत खेलत बहुत भांति सुख पायो। धरि अवतार जगतमें नाना भक्तन चरित दिखायो ३५९ अंश कला अवतार बहुतविधिराम कृष्ण अवतारी। सदा विहार करत ब्रजमण्डल नंदसदन सुखकारी३६०नित्य अखण्ड अनूपअनागत अविगत अनघ अनन्त। जाकोआदि कोऊ नहिंजानत कोउन पावतअन्त३६१ जब हरिलीलाकी सुधिकीन्ही प्रकटकरन विस्तार। श्रीवृषभानु रूप ह्वै प्रकटे पुनि ब्रजराज उदार३६२विद्या ब्रह्मकही यशुमति सोजाकी कोखि उदार। सोरहकला चन्द जो प्रकटे दीन्होतिमिर विदार ३६३ पुनि बसुदेव देवकी कहियत पहिले हरि बर पायो। पूरण भाग्यआय हरि प्रकटे यदुकुल ताप नशायो३६४ आठे बुद्ध रोहिणी आई शंख चक्र वपुधारो। कुण्डल लसत किरीट महाद्युति वपु बसुदेव निहारो ३६५ अस्तुति करी बहुत नानाविधि रूपचतुर्भुज देख्यो। पीताम्बर अरु श्याम जलद वपु निरखि सुफल दिन लेख्यो ३६६तब हरि कहेउ जन्मतुम्हरे गृह तीनबार हम लीनो। पृश्नीगर्भ देव ब्राह्मण जो कृशारूप रंग भीनो ३६७ माँगो सकल मनोरथ अपने मन बांछित

फल पायो । शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म लैआयो ३६८ यह भुव भार उतारन कारन हलधर के सँग लायो । क्रीड़ा करो लोक पावनकर करो भक्त मन भायो ३६९ प्राकृत रूप धरोहरि क्षणमें शिशु ह्वै रोवनलागे । तव बसुदेव देवकी निरखत परम प्रेम रसपागे ३७० तब देवकी दीन ह्वै भाख्यो नृपको नाहिँ पतीजै । अहो बसुदेव जाव लै गोकुल कह्यो हमारो कीजै ३७१ तबलै हरि पलना पौढ़ाये पीताम्बर उढ़ायो । तब बसुदेव शीशधरि पलना भयोसबन मन भायो ३७२ गोकुल चले प्रेम आतुर ह्वै खुलिगये कपट कपाट । सोयेजान पहरुआ सोये सबै मुक्त भईबाट३७३तब बसुदेव लियो कर पलना अपने शीशचढ़ायो । रैन अंधेरी कछु नहिँ सूझत अटकर अटकर आयो ३७४ शेष सहस फन ऊपर छाये घनकी बूंद बचावें । आगे सिंह हुंकारत आवत निर्भय बाट जनावें ३७५ यमुना अतिजल-पूर बहुत है चरण कमल परशायो । मारग दीन्हो राम सिन्धु ज्यों नन्दभवन चलि आयो३७६ पहुंचे आय महर मन्दिरमें नेक न शंका कीन्ही । बालक धरि लैके सुर देवी सुरति गवन की कीन्ही ३७७ लै बसुदेव तुरत घर आये काहू जिय नहिंजाने । जब वह रोवनलागी तव सब जाग परे अकुलाने३७८बालक भयो कह्यो नृपसों जब दौरि कंस तब आयो । करगहि खड्ग कह्यो देवकि सों बालक कहँ पहुँ-चायो ३७९ तब देवकी अधीन कह्यउ यह मैं नहिँ बालक जायो । यह कन्या मोहिँ बकस वीरतू कीजै मोमनभायो ३८० कंस बंशको नाशकरतहै कहासमुझ रिसयानी । मोको भई अनाहदबानी तातेडर नहिंजानी३८१कन्यामाँगलई तब राजा नेकुशंक नहिंआनी । पटकत शिला गई आकाशै कंस प्रतीति न मानी ३८२ भई अकाश बाणी सुरदेवी कंस यहां अबआई । तेरो शत्रु प्रकट कहुं ब्रजमें काहुलख्यो नहिं जाई ३८३ जैसे मीन करत जलक्रीडा जलमें रहत समाई । त्यों तुवकाल प्रकट इक कतहूं लखि न सकत तेहि कोई ३८४ अन्त द्धान भई सुर देवी कंस प्रतीति जो मानी । तब बसुदेव देवकीके गृह कंसगयो यह जानी३८५ क्षम अपराध देवकी मेरो लिख्यो न मेट्यो जाई । मैं अपराध किये शिशुमारे कर जोरे बिललाई ३८६ पुनि

गृह आय सेजपर सोयो नेकु नींद नहिं आवे । देश देशके दूत बुलाये
सबदिन यतो सुनावे ३८७ दीन हीन जो असुर बहुत बलि करत
सकल पुनितैसो । बूझतनाहिं ततभार उतारेउ जलको माखनजैसो ३८८
भयो भोर यशुमति गृह आनन्द मंगलचार बधाई । जागी महरि पुत्र
मुख देख्यो आनँद उर न समाई ३८९ जैसे शशि प्रकटत प्राचीदिशि
सकल कलाभरि पूर । यशुमतिकोख आय हरि प्रकटे असुर तिमिर
कर दूर ३९० नन्दराय घर ढोटाजायो महर महासुख पायो । विप्र
बुलाय वेदधुनि कीन्ही स्वस्ती बचन पढ़ायो ३९१जातकर्म कर पूजि
पितर सुर पूजन विप्र करायो । दोइलख धेनुदई तेहि अवसर बहुतेहि
दान दिवायो ३९२ परबत सात्त तिलन को कीन्हो रतनन ओघ मि-
लायो । मागध सूत और बन्दीजन ठौर ठौर यश गायो ३९३ बाजे
बजत बिचित्र भाँति सों रह्यउ घोष सब गाज । सुर सुमनन बरषावत
गावत व्योम बिमानन साज३९४ बाँधत बन्दनवार साँथिये द्वारेध्वजा
सोहाई । कनक कलश प्रति पौर बिराजत मंगलचार बधाई ३९५
सुरभी वृषभ सिंगारे बहुविधि हरदी तेल लगाई । सुवरण माल बि-
चित्र धातुरँग अँग अँग चित्र बनाई ३९६ आयेगोप भेंट लै लैके भूषण
बसन सोहाये । नाना विधि उपहार दूधदधि आगेधरि शिरनाये३९७
यशुमति के गृह पुत्र प्रकट भयो सुनी सकल ब्रज नारी । मंगल साज
सँवार हाथलै घर घर मंगलकारी ३९८ अति आतुर ह्वै चलीं झुण्ड
जुरि शिर सुमनन बरसावें । मानों रीझ मधुप बरणी को रस पराग
दरसावें ३९९ पहुँची जाय महर मन्दिर में करत कुलाहल भारी ।
दरशन करि यशुमति सुतको सब लेन लगीं बलिहारी ४०० नाचत
गोप परसपर सब मिलि छिरकत हैं नवनीत । दूध और दधि और
हरद जल सींचत हैं करप्रीत ४०१ यशुमति कोखि सराहि बलैयालेन
लगीं ब्रजनार । ऐसो सुत तेरे गृह प्रकट्यो या ब्रजको शृङ्गार ४०२
यशुमति रानी देति बधाई भूषण रतन अपार । फूलीफिरत रोहिणी
मइया नख शिखकर शृङ्गार ४०३ देत अशीश चलीं ब्रजसुन्दरि जिय
उपज्यो सुखभारी । गृह पूजन सब कियो वेद विधि नंदराय सुखका-
री ४०४ देश देश ते ढाढ़ी आये मन बांछित फल पायो । को कहि

सकै लौंवो उनको गर्भ सयन मन भायो ४०५ तादिन ते सगरे या
ब्रजमें रमारूप दरसायो । निज कुल वृद्ध जानि एक ढाढ़ी गोवर्द्धन ते
आयो ४०६ परम उदार गहर ब्रजपतिजू ढाढ़ी निकट बुलायो । बा-
जत हुडुक मंजीरा नूपुर नाना भाँति नचायो ४०७ झँगा पगा अरु
पाग पिछौरी ढाढ़िन को पहिरायो । हरि दरियाई कंठ लगाई पर
दरसात उढायो ४०८ बहुत दान दीन्हे उपनन्दजू रतन कनक मणि-
हीर । धरानन्द धन बहुतहि दीन्हो ज्यों बरषत घननीर ४०९ कुण्डल
कान कंठ मालादै ध्रुवनन्द अति सुखपायो । सीधो बहुत सुरसुरा नंदै
गाड़ा भरि पहुंचायो ४१० कर्मविरानिन्द कहत हैं बहुतहि दान दि-
वायो । ब्रजरानी ढाढ़िन पहिराई मनवांछित फल पायो ४११ चले
भवनको दै असीस दोउ निरभय कीरति गावै । जानि यांचे ब्रजपति
उदार अति याचक फिर न कहावै ४१२ नाना विधिके बिबिध खि-
लौना रतनन अधिक अमोले । ताको लेन गये मथुरा को आनक
दुन्दुभि बोले ४१३ वेग जाव गोकुल तुम अबहीं सुनियत है उतपात ।
सुनि ब्रजराज तुरत घरआये जियमें अति अकुलात ४१४ प्रथम पूतना
कंस पठाई अति सुन्दर वपुधारउ । घसिकै गरल लगायो उरोजन
कपट न कोउ निहारउ ४१५ लिये उठाय श्याम सुन्दर तो घनगाहि
कै मुख लीन्हो । लीन्हे खैंच प्राण विष पयसुत देह विकराल तन की-
न्हो ४१६ छोंड़ छांड़ कहि परी धरणि पर कर अराग सु पसार ।
योजन डेढ़ बिटप तोरी सब चूर चूर कर डार ४१७ ताको जननी की
गतिदीन्हीं परम कृपाल गुपाल । दीन्हीं फूंक काठ सब वाको मिलके
सकल गुआल ४१८ तबहीं नंदरायजू आये कौतुक सुनि यहभारी । बि-
स्मितभये देखने राख्यो बालक यहसुखकारी ४१९ विप्रबुलाय वेदधुनि
कीन्हीं रक्षा बहुत कराई । आरति बिबिधि उतार महरजू मंगल करत
बधाई ४२० एक दिना हरि लई करोटी सुनि हरषी नंदरानी । विप्र
बुलाय स्वस्तिबाचन करि रोहिणी नयन सिरानी ४२१ नित मंगल
नित होत कुलाहल नित नित बजत बधाई । भादों देव छट्ठ को शुभ
दिन प्रकट भये बलभाई ४२२ वर्ष दिवस पहिले ब्रजमण्डल शेष महा
तप लीन्हो । अपनो धाम जान प्रकटो भवरूप प्रकट निज कीन्हो ४२३

कंस नृपति ने शकट बुलायो लेकर बीरा दीन्हो। आय नन्द गृह द्वार नगर में रूप शकटको कीन्हो ४२४ मारी लात श्याम पलनाते परयउ धरणि भहराय। जहँ तहँतें दौरे ब्रजबासी श्यामहिं लियो उठाय ४२५ बच्छ पुच्छ लैदियो हाथपर मंगलगीत गवायो। यशुमति रानीकोधि सिरानी सोहन गोद खिलायो ४२६ इकदिन अस्तन पान करावति यशुमति अति बड़भागी। बदन पसारि विश्व दिखरायो क्षण इक मुरछा लागी ४२७ तृणावर्त्त बिपरीत महाखल सो नृपराय पठायो। चक्रबात ह्वै सकल घोषमें रज धुंधर ह्वै छायो ४२८ चल्यो उठाय गुपाल व्योम में तब हरि कंठगहायो। पटक्यो शिला खरिकके आगे क्षण निरजीव करायो ४२९ गर्गराज मुनिराज महाऋषि सो बसुदेव पठायो। नाम करण ब्रजराज महर घर अति आनन्दित आयो ४३० नाम करण कीन्हो दोहुन को नारायण सम भाये। तुम्हरे दुःख मिटावन कारण पूरण को अभिलाये ४३१ रामकृष्ण अवतार मनोहर भक्तन के हित काज। बहुतहि काज करेंगे तुम्हरे सुनहु महर ब्रजराज ४३२ एकदिना पलना हरि पौढ़े नन्दमहर के द्वार। नँदरानी गृह कारजलागी नाहिंन लई सँभार ४३३ कंस नृपति इक असुर पठायो धरेउ कागको रूप। सनमुख आय नयन दोउ जोरे देख्यो श्याम को रूप ४३४ कंठ चाप बहु बार फिरायो पटक्यो नृप के पास। एक याम में बचन कहेउ यह प्रकट भयो तुव नास ४३५ यह कहिके तन त्याग कियो उन कंस नृपतिके आगे। भयो उदास सुहात न कछु ये क्षण सोवत क्षण जागे ४३६ एकदिना ब्रजराज महरजू और यशोदारानी। घुटुरुनचलत श्यामको देखत बोलत अमृतबानी ४३७ इतते नन्द महर बोलतहैं उतते जननि बुलावत। सुंदरश्याम खिलौना कीन्हो हँसि हँसि मोद बढ़ावत ४३८ शशि को देख आर हरि ठानी कर मनुहार मनावत। मधु मेवा पकवान मिठाई बिबिध खिलौना लावत ४३९ कमलनैन को महरयशोदा जल प्रतिबिंब दिखावत। फेरत हाथ चन्द पकरन को नाहिंन होत लखावत ४४० बूढ़े बाबू दरशन आये लाय चन्द्रमणि दीन्हो। ताको देख और सब छांड़ी भोजन की सुधि कीन्हो ४४१ औट्यो दूध कपूर मिलायो प्यावत कनक कटोरे।

पोषत देखि रोहिणी यशुमति डारत हैं तृण तोरे ४४२ कछुदिन मधि
सग दोउ बालक बल मोहन दोउ भाई । चोरी करत हरत दधिमाखन
लीला कहिय न जाई ४४३ सब ब्रजनारी उरहन आईं ब्रजरानी के
आगे । मैं नाहिंन दधिखायो याको शिशुह्वै रोवनलागे ४४४ एकदिना
ब्रजपतिकी पौरी खेलतहरि ब्रजबाल । माटीखाय वदन दिखरायो
चंचल नयन विशाल ४४५ सकल ब्रह्मांड उदर में देख्यो ब्रजमंडल
ग्वाल । नन्दमहर यशुदा रोहिणि पुनि धेनु सकल ब्रजग्वाल ४४६
हृदयज्ञान उपज्यो तब यशुमति पूरण ब्रह्म विशेखे । हरि उपजाई
माया तब सब बहुरि एककरि लेखे ४४७ एकदिना दधिमथन कर-
तहीं महरघोषकी रानी । हरि मांग्यो माखन नहिं दीन्हों तबमन
में रिस ठानी ४४८ फोरे भांड दही आंगनमें फैल परेउ अति भारी ।
दौरि पकर देत नहिं मोहन अति आतुर महतारी ४४९ जानी विक-
ल बहुत जननी को हरि पकराइ दीन्हीं । बहुत दामलै बांधन लागी
आंगुर द्वै भइ हीनी ४५० व्याकुल भई बंधत नहिं मोहन दया श्यामको
आई । ऊखल दाम बँधे हरि जाने गोपी देखन धाई ४५१ तौलौं बँधे
देव दामोदर जौलौं यह ब्रत कीन्हीं । देख दुखितह्वै सुत कुबेरके कृपा
दृष्टिकरिदीन्हीं ४५२ नारदमुनिको शापपायके श्यामदई गतिताय ।
निकसे बीच अटक ऊखलमें श्याम रहे अटकाय ४५३ चरणपरसि
ते पुलकि भये भुव परे वृक्ष भहराय । भयो शब्द आघात स्वर्ग लौं
सुनि आये ब्रजराय ४५४ अस्तुति करिके गये स्वर्गको अभय हाथ
करिदीन्हों । बंधन छोरि नंदबालकको लै उछंग कर लीन्हों ४५५
यशुमतिजू सों लरैं महरजू तुमक्यों बाँध्यो दाम । गर्गकहेउ मोहैनारा-
यण आयेहैं बलश्याम ४५६ यशुमतिमाय धाय उर लीन्हों राईलोन
उतारो । लेत बलाय रोहिणी नीके सुंदररूप निहारो ४५७ कबहुँक
कर करताल बजावत नानाभांति नचावत । कबहुंक दधि माखन के
कारण आछी आर मचावत ४५८ बड़ेगोप उपनन्द बुलाये नंदमहर
के धाम । कीन्हे संग गोपसब मिलिके जेहिबिधि पूरण काम ४५९
बहु उतपात रहतहैं गोकुल नितप्रति कंस पठायो । अंतजाय कहुँबास
करैंगे बालक देखनचायो ४६० अब वृन्दाबन जाय रहैंगे जहँ बाहुब

तृणापानी। चले गोप अति ओप बिराजैं बोलत हो हो बानी ४६१ य-
मुना उतर आय वृन्दावन जहां सुखद्रुम राजैं। गोवर्द्धन वृन्दावन
यमुना सघन कुञ्ज अति छाजैं ४६२ बसे जाय आनंद उमँगसों गइयां
सुखद चरावैं। आयो दुष्ट बक्रासुर जान्यो हरिचित बातबरावैं ४६३
करि बिचार छिनमें हरिमारो सो बक्रा बनआज। तापाछे जो बक्का-
सुरआयो घातकियो ब्रजराज ४६४ बच्छ चरावत बेणुबजावत गोप
सखनके संग। सो देखत चतुरानन आये हरिलीलारसरङ्ग ४६५ छाकें
खात खवावत ग्वालन सुन्दर यमुनातीर। ग्वालमंडली मध्यबिराजत
हरि हलधर दोउबीर ४६६ गाय गोप अरु बच्छ सबै बिधि छिनहीमें
हरिलीन्हों। सबको रूपभये हरिआपुन नेकबिलम्ब न कीन्हों ४६७
जबहीं गर्व गयो चतुरानन अद्भुत चरितहिंदेख। परोधाय हरिपांय
जोरिकर नाथ कृपाकरदेख ४६८ अस्तुतिकरी वेदविधि करिकै चतु-
रानन बहुभांति। अद्भुत चरित देख माधोको हँसत सकल कलिकाति
४६९ गये धाम अपनेविधि सुखसों हरिआज्ञा सुखपाय। वर्षदिवसलौं
सर्वरूप हरि ब्रजबासिन सुखदाय ४७० धेनु चरावन चले श्याम घन
ग्वाल मंडलीजोर। हलधर संग छाकभरि काँवर करत कुलाहलशोर
४७१ क्रीडाकरतआय वृन्दावन धेनु समूह नचावत। गोवर्द्धन पर बेनु
बजावत फूलन भेष सँवारत ४७२ कालीनाग नाथ हरिलाये सुर-
ग्वालजिवावे। कनक कमलके बोझ शीशधरि सथुरा कंसपठाये ४७
दावानलको पान कियो सुख गोपन रक्षा कीनी। वर्षा सुऋतु देख
वृन्दावनक्रीड़ाकी सुधि लीनी ४७४ बेनु बजाय बिलास कियो बनधौरी
धेनु बुलावत। बरहापीड़ दाम गुञ्जासखि अदभुत भेष बनावत ४७५
प्रातकाल असनान करनको यमुना गोपि सिधारी। लैकै चीरकदम्ब
चढे हरि बिनवत हैं ब्रजनारी ४७६ दै बरदान संग खेलन को शरद
रैनि जब आई। रचिकै रास सबन सुख दीन्हों रजनी अधिक करा-
ई ४७७ गोवर्द्धन धरि सब ब्रज राख्यो मघवा मान मिटायो। नारा-
यण प्रकटे सब जाने जोइ गर्गमुनि गायो ४७८ धेनुक और प्रलम्ब
सँहारे शंखचूड़ बध कीन्हों। करिकै चरण परस प्रभु बनमें व्याल
अभय पद दीन्हों ४७९ नानाबिधि क्रीड़ा हरि कीन्हीं ब्रजबासिन

सुखपायो। सबहिन यहसोच्यो विनतीकर हरि बैकुंठदिखायो ४८०
अभयदान दीन्हों मथवाको नंदरायको राख्यो। बरुणालोक में गये
कृपाकरि विविध बचन उन भाख्यो ४८१ यज्ञ करत ब्राह्मण मथुरा
के ओदन प्रथम मँगायो। उन नहिं दियो नारिपै पठये तब उन सुनि
सुखपायो ४८२ षटरस थार सँवार साजसों सबही हरिपै आई। कि-
यो मनोरथ पूरण उनको निरभय करि जु पठाई ४८३ व्योमासुर
केशी सब मारे अरु अरिष्ट बध कीनो। क्रीडा बहुत करी गोकुल में
भगतन को सुखदीनो ४८४ नारद आय कहेउ नृपसों यह कौन नींद
तू सोवे। तेरो शत्रु प्रकट गोकुल में शुभ न जानत कोवे ४८५ यह
सब देव प्रकट भये ब्रज में जहँ तहँ ठौरहि ठौर। उग्रसेन बसुदेव देवकी
यादवजे सब और ४८६ नंदगोप वृषभान यशोदा सबहि गोप कुल
जानें। करो उपाय बचो जो चाहो मेरो बचन प्रमानो ४८७ यह
सुनि कंस सबन को बन्धन दीनो है त्यहि काल। श्रीबसुदेव देवकी
निज पितु बन्धन दियो बिशाल ४८८ फिरि नारद गोकुल हो आये
हरि चरणन शिरनाये। अस्तुति करी बहुत नानाविधि मधुरे बैन
बजाये ४८९ हरि कछु इन उत्तर नहिं दीनो फिर गये अपने धाम।
बल मोहन सब सखा वृन्द लै क्रीडत गोकुल ग्राम ४९० बल अक्रूर
कंस यह भाष्यो सुन सुफलकसुत बात। राम कृष्ण को लायो मधुपुर
बिलम करो जनि जात ४९१ तब रथ बैठ चले सुफलक सुत संध्या
गोकुल आये। पैंड़े में हरिचरण धूरिलै अपने अंग लगाये ४९२ मिले
नंद बलदेव रोहिणी और यशोदारानी। पूजा करिपधराय सदन में
भोजन की विध ठानी ४९३ भोजन करि अक्रूर जो बैठे सब वृत्तांत
सुनाये। धनुष यज्ञ कीन्हों नृपजूने सबको वेग बुलाये ४९४ चलेमहर
ब्रजराज साजलै कौतुक देखन आज। रामकृष्ण दोउ आगे लैके सकल
घोष शिरताज ४९५ मारग में कालिंदी के तट कीन्हों जल असनान।
निज बैकुंठ दिखायो जलमें दीन्हों पूरण ज्ञान ४९६ करि बंदन हरि
के चरणनको पुनि अक्रूर यह भाख्यो। तुम यदुकुल प्रकटे पुरुषोत्तम
भक्तनको प्रणराख्यो ४९७ मथुराआयरहे उपवनमें नंदराय सबगोप।
राम कृष्ण के चरण परसंते अधिक मधुपुरी ओप ४९८ गये नगर

देखन को मोहन बलदाऊ ले साथ। पुर कुल बधू झरोखन झाँकत
निरख निरख गुनग्वाल ४९९ मारग में रजकरजक सहाह्यो सबहि
बसन हरि लीन्हे। बायक मिल्यो सबहि पहिराये मर्दिहन को सुख
दीन्हे ५०० आगे मिल्यो सुदामामाली फूल माल पहिराई। निर्भय
दान दियो हरि तिनको अविचल भक्ति दृढ़ाई ५०१ कुब्जा घसि च-
न्दनलै आई मारग देखन आई। हरि माँग्यो उनले जु समर्प्यो मन
बाँछित फल पाई ५०२ दियो बरदान भवन आवन को तहाँते चले
कन्हाई। मथुरा नगर देख मन मोहन फूले हैं दोउभाई ५०३ रीझत
नारि कहत मथुरा की आपुस में दै सैन। कोमलगात कौन को ढोटा
सुन्दर राजिव नैन ५०४ यह बालक सुकुमार सरस वपु असुर प्रबल
अति भारी। कैसे कै वाको मारैंगे सोचत हैं पुर नारी ५०५ उपवन
आय कियो हरि ब्यारू नन्दराय सुख दीन्हों। मधु मेवा पकवान
मिठाई जो भायो सो लीन्हों५०६पौढ़ेजायदोउभय्यागर सोवत आई
निंद। स्वपने में मथुरा फिर देखी जागे बालगोबिन्द५०७भयो प्रात
नृप फेर बुलायो धनुषयज्ञको देखन। मल्लयुद्ध नानाविध क्रीड़ा राज
द्वारको पेखन५०८ गये ब्रजराज द्वार भूपतिके बहु उपहारदिवाये।
तब नृप कह्यो सकल गोपन सों भलो करी तुमआये५०९ बैठारेसब
मंचओप सों कौतुक देखन लागे। रामकृष्ण सँग ग्वाल मराडली नगर
देख अनुरागे ५१०तोरेधनुष टूककरिडारे दोउन आयुधकीने। ताहु
मारिकरि चर पहकआ परम मोदरस भीने ५११ मद गजराज द्वार
पर ठाढ़ो हरि कहेउ नेक बचाय। उन नहिँ मान्यो सन्मुख आयो
पकरेउ पूंछ फिरायं५१२दियो पठाय श्याम निजपुर को मावत सहि
गजराज। आगे चले सभामें पहुंचे जहँ नृप सकलसमाज ५१३ बड़ेबड़े
राजा सब बैठे अरु पुरबासी लोग। अपने अपने भाव सुदेखत मिट्यो
सकल मनशोक५१४मल्लनसबन मल्लसे दीखे नृपन लखे नृपराय।
युवतिन सबै काम वपुदेखे भेंटन को ललचाय५१५गोपन सखाभाव
करि देखे दुष्ट नृपति कृतदराड। पुत्रभाव बसुदेव देवकी देखे नित्यअ-
खराड ५१६ बिदुष जनन बिराट प्रभु दीखे अति मनमें सुखपायो।
रूपरा तत्त्व देख योगीजन हितसों ध्यान लगायो ५१७यदुकुलके कुल

गोपक प्रकटे सब यादव सुखदाई। कंसदेखि निजकाल आपनो बहु-
तरि क्रोध रिसाई ५१८ जब उन कह्यो मल्लक्रीड़ा तुम करत गोपके
संग। वृन्दावन में हम सुनियत हैं क्रीड़त हो बहुरंग५१९ अब तुमकंस
नृपति कु देखाओ मल्ल युद्ध करिनीके। कह्यो चाणूर मुष्टि सब मिलि
कै जानत हो सब जीके ५२० तब हरि भिरे मल्ल क्रीड़ाकर बहुविध
दाँव देखाये। बरसान कियो प्रथम संक्षेपन अबहूं बरसान पाये ५२१
मुष्टिकसाथ लरेबलभाई अरेउ दृहदबपुसोउ। छिनहीमेंहरितुरतसँहारे
अतिआनँदमनहोउ५२२और मल्लमारे गाल तोशल बहुतगये सबभाज।
मल्लयुद्ध हरि करि गोपनसों लखिफूले ब्रजराज५२३तब नृपकंस बहुत
बिललायो बार बार रिसयाई। बाँधो नन्द हरो गोपन धन कीन्हों
अपर दुराई५२४ फागुनबदि चौदशको शुभदिन अरु रविवारसुहायो।
नखत उत्तरा आप बिचारेउ काल कंसको आयो५२५ यह कहि कूद
गये हरि ऊपर जहँ बैठे नृपराय। हरि को देखि खड्ग कर लीन्हों
सन्मुख आयो धाय५२६ तब हरि केश पकरि अपनेकर धरणी मांझ
पछारो। ऊपर गिरे आपु तिहुँपुर को बोझ शीश पर डारो ५२७
कचगहि आपु बहुत वह खैंच्यो हरि यमुनालौं आये। करिबिश्राम
सकल श्रम बीत्यो जब यमुना जल न्हाये५२८बंधन छोर पिता माता
को अस्तुति करि शिरनायो। तुम हमको पठये गोकुल में याते लाड़
लड़ायो ५२९ यशुमति मात और ब्रजपतिजू बहुतहि आनँददीनो।
याते टहल करन नहिँ पायो कहत श्याम रँग भीनो५३०तब ब्रजराज
महरपै आये बलि मोहन दोउ भाई। तुम्हरी कृपा कंस मैं मारो कहँ
लौं करौं बड़ाई ५३१ रोहिणि यहबोली यशुमति सों हम तुम्हरेसुख
पायो। ज्यों तुम्हरो सुत त्यों मेरो सुत बहुतहि लाड़लड़ायो५३२हि
मिल चले सकल ब्रजबासी नंदगाँव फिरि आयो। सुबस बसी मथुरा
तादिनते उग्रसेन बैठायो५३३रामकृष्ण घरआये जाने पुरबासिन सुख
पायो। मंगलचार भये घर घर में मोतिन चौक पुरायो५३४ तबहरि
मात पिता पै आये दोउ भाइन शिरनायो। बन्धन छोर विनय बहु
कीन्हे तुम हम बिन दुखपायो५३५फिर बसुदेव बसे अपने गृह परम
रुचिर सुखधाम। रामकृष्णको लाड़ लड़ावत जानत नहिँ दिन या-

कीन्हों कोप। छिनहीमांझ गोवर्द्धनधारो राखिलिये सबगोप ५७४ ऐसे बहुत चरित्र कान्हके बरणि कहत नहिं आवें। उद्धव तुम नयनन नहिं देखो ताते भेद न पावें५७५तब उद्धव कहेउ धन्य धन्य तुमधन्य धन्यब्रजनार। तुम्हरे सुबस सदा हरिखेलत ब्रजमें करतबिहार५७६ तुम्हरी चरणकमल रज कारण तप कीन्हों चतुरानन। रमाशेष पुन किनहुन पायो सो देखियत वृन्दावन ५७७ गुल्मलता में जन्ममांगि तब विधिसों गोद पसारी। उद्धव कहत सदा म्वहिं दीजै चरण रेणु ब्रजनारी ५७८ एक रूप ह्वैरहे वृन्दावन गुल्म लता कर बास। बज्रनाभ उपदेश कियोजिन पूरण केल प्रकाश५७९शकरूप उद्धव फिर आये हरिचरणन शिरनायो। कह्यो वृतान्त गोप बनितन को बिरह न जात कहायो ५८० म्वहिं खोजत षटमास बीतिगये तबहुं न आयो अन्त। ब्रजजुवतिनके नैन प्राणबिच तुमहीं श्याम बसन्त ५८१ छिन नहिं दूर श्याम तुम उनसों मैं निश्चय यह कीनो। तुम्हरोरूप देखि गोकुलमें बाढ्यो नेह नवीनो ५८२ तबहरि कह्यो सुनो उद्धवजू ब्रजबासी तन सार। तिनको सपन कबहुं नहिं छांडो सत्य कहतहौं तोर ५८३ वृन्दाबनमें धेनु चरावत गोप सखनके संग। वेनु बजावत मोद बढ़ावत क्रीड़ा कोटि अनंग ५८४ अरु गोपिनसों आसुआसकरिनित प्रति करो बिनोद। दुष्टकंस मारन यहआयो सदा यशोदागोद५८५ कुंज कुंजमें क्रीड़ा करिकरि गोपिनको सुख देहौं। गोप सखन सँग खेलतडोलौं ब्रजतज अनत न जैहौं ५८६ मारेउ दुष्ट बहुत जो भूपर धर्म कारो बिस्तार। बसुधाभार उतारन कारन यदुकुल लिय अवतार५८७ मित्र एक बन बसत हमारो सो नयनन भरि देख्यो। ताको पूजन नितप्रति करिहौं सो तुम सुबुध बिशेख्यो५८८ नाना रतन कंदराकबहूं छिन नहिं मोहिं भुलावे। क्रीड़ा करो नित्य कुंजनमें गोपिन को सुख भावे ५८९ ताहीक्षण अक्रूर बुलाये बोलि मोहन यह भाख्यो। तुम अब वेग जाव हस्तिनपुर कमल नयन जिय राख्यो ५९० तब अक्रूरबैठि हरिकेरथ हस्तिनपुरजु सिधारे। कुंतीमिली युधिष्ठिरअर्जुन भीम बिदुर उर धारे ५९१ गांधारी दुर्योधन आदिक भीष्म कर्ण सबभेंटे। बहुत दिना के ताप सबन के सुफलकसुत सब मेटे ५९२ तब

यह कह्यउ नृपतिसों नीके बहुत भांति समुझायो। तब नृप कह्यउ नहीं मेरो बश मोह प्रबल जिय छायो ५९३ तब अक्रूर बिचार कियो यह हरिइच्छा जियमानी। करि परणाम गये मधुपुर को जहां श्याम सुखदानी ५९४ समाचार सबही कहि दीनो बलिमोहनहिं सुनायो। सुनबसुदेव देवकी दोऊ बहुतहि दुखजिय पायो ५९५ अस्ती अरु प्राप्ती दोउपत्नी कंसराय की कहियत। जरासंधपै जाय पुकारीं महा क्रोध मन दहियत ५९६ तीन बीस अक्षोहिणिवाले दल जरासंध तहँ आयो। बलमोहन छिनमांझ सँहारे करि बिनचमू पठायो ५९७ सत्रहबार फेर फिर आयो हरि सब चमू सँहारी। अबके फेर दुष्टो बनि आयो हरि कछुबात बिचारो ५९८ अंतरिक्षतें द्वैरथ उपजे आयुध तुरँग समेत। तापर बैठ कृष्ण संकर्षण जीतेहैं सबखेत ५९९ नारदजाय यवनसों भाष्यो राम कृष्ण दोउबीर। तोहि न गनत बसतहैं मथुरा बड़े बली रणधीर ६०० यह सुनि यवन तुरतही धायो जियमें अति अकुलाय। तीन कोटि भट यवन संगले मथुरा पहुंच्यो जाय ६०१ सुनि बलि मोहन बैठ रहसि में कीनो कछू बिचार। मागध मगध देशते आयो साजेफौज अपार ६०२ बिश्वकर्मा को आज्ञा दीनीरची द्वारका आय। निशिको सोये सब मथुरा में जगे द्वारकाजाय ६०३ हलधर हलमूसर करलीने सभीमलेक्ष सँहारे। मारि फौज सबही मागध की जरासंध उबारे ६०४ चले भाज दोउभाइ उहांते जहँसोवत मुचकुन्द। बसनउढ़ायरहेछिपि आपन परम परमानन्द ६०५ मारीलातआय जब नृपको तब जागयोभहराय। निकसी अगिन नैननतें तासों भस्मभयो तेहिदाय ६०६ इतने मांझ आपुहरि आये दरशन दीन्हों भूप। शंख चक्र गद पद्म चतुर्भुज सुंदरश्याम स्वरूप ६०७ तबपूछ्यो तुमकौनरूप हो कौन देव अवतार। अबलों कहुं देखे नाहीं मैं तुव अतिहै सुकुमार ६०८ तबहरि कह्यो जन्म मेरे बहु शेष न पावें पार। भुवकी रज नभके सब तारे तितने हैं अवतार ६०९ अब कहिये द्वापर युग सुन नृप बासुदेव ममरूप। भूतल भार उतारन आयो यदुकुल सुखद स्वरूप ६१० तब नृप अस्तुति बहुविधि कीन्हो जन्मकर्म गुणगाय। तुमहीं ब्रह्म अखिल अविनाशी भक्तन सदा सहाय ६११ नव गुण नवल रूप

पुरुषोत्तम श्री यदुकुल अवतार। जयजयजय बैकुंठसहानिधि कमलन-
यन सुखसार ६१२ वेदपुराण रटतयश जाको तऊ न पावत पार।
मैं मुचकुन्द नृपति कृतयुगको सोवत भये युगचार ६१३ अबमोको
आज्ञा कछु दीजे जैसे चरणन पाऊं। सदाबसों निजलोक निरंतर जन्म
कर्म गुणं गाऊं६१४क्षत्रीजन्म बहुत अघ कीन्हो तातें मुक्ति न होय।
बिप्र जन्म धरि मुक्ति होयगी करि तप साधन सोय ६१५ आज्ञा
लैके चल्यो नृपति वहँ उत्तर दिशाबिशाल। करि तप बिप्र जन्म जब
लीन्हो मिट्यो जन्म जंजाल ६१६ तहांते चले श्याम अरु हलधर प-
रवरषन गिरि आये। परबत बहुत नमन करि पूजा यह बिनती कर-
वाये६१७नितप्रति मोशिर मघवा बरसत लगत शीतअपार। अगनित
पाप महा दुख मेटो मांगत यही मुरार ६१८ इतने मांझ मगध चलि
आयो उन जानीयह बात। परबत मांझ गये दोउ भइया उब देखे दृग
जात ६१९ दीन्ही अग्नि लगाय चहूंधा उन जानी रिपु हान। राम
कृष्ण दोउ कूद पधारे पुरी द्वारका जान ६२० भयो आनंद द्वारका
में सब घरघर गीतगवाये। करि रिपुहान समर सब जीत्यो रामकृष्ण
घर आये ६२१ एक समय नारदमुनि आये नृपति भीष्म के गेह। पू-
जाकरी बहुत नानाबिधि नृपति जनायेनेह६२२लखि रुक्मिणी कह्यो
मुनि नारद यह कमला अवतार। पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम श्रीब-
सुदेव कुमार६२३उनके योग्य यही कन्या है सुनो देव महराज। तब
नृप कह्यउ करों निश्चय यह सुफलहोय ममकाज६२४तब नारदमुनि
गये द्वारका कृष्णचन्द्र के पास। बिनती करी रुक्मिणी की सब सुनि
हरि भये हुलास ६२५ करो बेग कछु बिलम्ब न कीजे नारद कहि
यह बात। श्रवणसुनत कमलापतिको जियलन पुलकित सबगात ६२६
सुनि नारद म्वहिं नींद न आवे करिहों बेग उपाय। यह कहि चले
आप हरि रथ चढ़ि शोभा कही न जाय६२७देश देश के नृपति जुरे
सब भीष्म नृपति के धाम। रुक्म कह्यउ शिशुपालहि देहोंनहीं कृष्ण
सों काम६२८एतने मांझ आपु हरि आयेसुनो नृपतिसबबात। उपवन
रहे जान जियमें यहमनमेंअति अकुलात६२९पूजन करनचली देवीको
सखी वृंद सब संग। पूजा करि बोली यह कमला लोक लाज हत

भंग६३० अटल शक्ति अविनाश अधिक बल एक अनादि अनूप। आदि अव्यक्त अंबिका पूरण अखिल लोक तव रूप ६३१ कृष्ण चन्द्र के चरण कमलमें सदा रहो अनुराग। येहो पति नित होहिं हमारे जो पूरण मम भाग ६३२ तब उन कहेउ कृष्ण तुम्हरे पति ह्वैहैं अचल सुहाग। चली महावर पाय रुक्मिणी अति पूरण अनुराग ६३३ तब हरि आय बैठ रथनीके आग्रमिले बडभाग। कर गहि बांह लई रथनीके अति आतुर चले भाग ६३४ मानो नील मेघके सँगमें मिली दामिनी आय। चले तुरत हरिपुरी द्वारका शंख चक्र धरि धाय ६३५ दुष्ट नृपति को मान मथनकरि चले द्वारकानाथ। जरासंध शिशुपाल आदि नृप पाछे लागे साथ ६३६ रथ पाछे मितिशोभित यहिविधि सकल दुष्टकी खान। महासिंह निज भाग लेत ज्यों पाछे दौरैं श्वान६३७ हलधर आय दुष्ट सब मारे असुर नृपति की भीर। भाजि चले शिशुपाल जरासंध अति व्याधित तन पीर ६३८ आये नाथ द्वारका नीके रच्यो मांडवो छाय। ब्याह केलि विधि रची सकल सुख सोंज गनोनहिं जाय ६३९ ब्रह्मा रुद्र देव तहँ आये शुक नारद सनकादि। दरशन करि मंगल सुखके सब मेटी बिरह जो आदि ६४० चैत्रमास पूनो को शुभदिन शुभ नक्षत्र शुभवार। ब्याहि लई हरि देव रुक्मिणी बाढ्यो सुख जो अपार ६४१ एक सत्राजित यादव कहिये सूरज देव उपास। दीन्ही मणि आदित्य स्यमंतक कोटिक सूर्य प्रकाश ६४२ भार भार नित कनक देतहैं नृपति सुनी यह बात। तब उन मांगी इन्नजाहिं दीनी बाढ्योबैर अघात ६४३ एक दिवस मृगया को निकस्यो कंठ महामणि लाय। तबउन सिंहमारि गहि लीन्हें ऋच्छ मिल्यो यक ताय६४४ जाम्बवान महबली उजागर सिंहमारि मणि लीन्ही। परबत गुफा पैठ अपने गृहजाय सुताको दीन्ही६४५ चरचा परी बहुत द्वारावती कृष्णचन्द्रकी बात। तबहरि गये शैलकंदर में अति कोमल मृदुगात ६४६ दिन अट्ठाइस युद्ध कियो जब ऋच्छ भयो बल भंग। तब पग परेउ बहुत स्तुति करि जानि रामपद संग६४७ तब हरि कहेउ भक्त तू मेरो तोसों करि संग्राम। कीन्हें शुद्ध तत्त्व सब तनके पूरण कीन्हें काम ६४८ जाम्बवती अरपी कन्या भरि मणि राखी सम्मु-

हाय। करि हरिध्यान गयो हरिपुरको जहां योगेश्वर जाय ६४६ लै स्यमंत मणि जाम्बवती सह आय द्वारकानाथ। अति आनंद कुलाहल घर घर फूले अँग न समात ६५० आश्विन सुदि नौमीको शुभदिन हरि आये निजधाम। तौलौं घर घर प्रति दुर्गाको पूजन कियो सब गाम ६५१ सत्राजित अपनी तनया को दीन्हे त्रिभुवन राय। सतभामा सुनाम लेहि कहियत शोभा कही न जाय ६५२ कीन्हो ब्याह परम आनँद सो सतभामा सुखरास। द्वारावती बिराजत नित प्रति आनँद करत बिलास ६५३ इन्द्रप्रस्थ हरि गये कृपाकरि पांडव कुल को तार। तहँ कालिन्दी बनमें ब्याही अतिसुंदरि सुकुमार ६५४ मित्रबिंदा यक नृपति नन्दनी ताको माधव ब्याये। सात बैल नाथन के कारण आप अयोध्या आये ६५५ सत्या ब्याहि बहुत सुख कीन्हो मथ्यो नृपति को मान। आये फेर द्वारका मोहन मंगलकेलि निधान ६५६ भद्रा ब्याहि आप जब आये द्वारावती अनन्द। तैसेही लक्षमणा बिवाही पूरण परमानंद ६५७ नरकासुर को मारि श्याम घन सोरह सहस त्रियलाये। एकहि लगन सबन कर पकरेउ एक मुहूर्त्त बिवाये ६५८ यह सुनि नारद अचरज पायो ब्रह्मलोक ते धाये। कृष्णचन्द्र के चरण परस करि बीणा मधुर बजाये ६५६ तब हरि रीझि कहेउ नारदसों कहौ कहां ते आये। तब उन कहेउ दरश को आयो बहुत रूप धरि ब्याये ६६० यह कौतुक देखनके कारण मैं आयोजो देखावो। रूप अनंत आदि अबिनाशी दरशन प्रेम बढ़ावो ६६१ तब हरि कहेउ जाव घर घर प्रति देखोगे सबठौर। मैंहीहौं सब थल परिपूरण मो बिन नाहिं न और ६६२ तब मुनि चले देख घरघर प्रति परम केलि सुखपायो। नाना क्रीड़ा करत निरन्तर घरघर रूप देखायो ६६३ कहुँ क्रीड़त कहुं दाम बनावत कहुं करत श्रृंगार। कहुं बालकन खिलावत माधवखेलत परम उदार ६६४ कहुं चौपर खेलत युवतिन सँग पांच सात उचार। कहुं मृगया को चले अश्वचढ़ि श्रीबसुदेव कुमार ६६५ कहुं कर लेकर शस्त्र सँवारत कहुं कछु करत बिचार। कहुं कछु बात कहत सबहिन सों कहुं सुनि वेद उचार ६६६ कहुं मिलि यज्ञकरत बिप्रन सँग अति आनंद मुरार। नाना दान देत

हय गजभुव ऐसे परम उदार ६६७ कहुं गोदान करत कहुं देखे कहुं कछुसुनत पुरान। कहुं निर्त्तत सबदेख बार बुध कहुं गंधरब गुण गान ६६८ कहुं जपं करत सनातन निज वपु ब्रह्म करत कहुंध्यान। कहुं उपदेश कहूं जैबेको कहुं दृढावतज्ञान ६६९ कहुं भोजन नाना रुचि सांगत षटरस के पकवान। आरोगत ब्रजराज सांवरो कहुं करत जलपान६७०कहुं जागत दरशनदियो मुनिको करि पूजा परणाम। संध्या करत कहूं त्रिभुवनपति स्नान करत कोउ धाम ६७१ कहुं पौढे कमलाके सँगमें परम रहस्य एकान्त। कहुं व्रत करत कहूं निगमनको ज्ञान कर्मको अन्त ६७२कतहूं श्राद्धकरत पितरनको तर्पण करि बहुभांति। कहु विप्रनको देतदक्षिणा कहुंभोजनकी पांति६७३ कहूं सुगंध लगावत लैकै कहूं अश्व शृंगार। कहुं गजरथ कहुं बाजि रथन् सजि डोलतहैं गृहद्वार ६७४ कहु ऊधोसों ब्रजसुख क्रीडापरम प्रेम उचार। कहु पांडवको कथा चलावत चिन्ता करतअपार६७५ कहुं मिलि बिप्र कहत सबहिनसों बालक करन सगाई। कहुं सुत व्याह कहूं कन्याको देत दायजो राई ६७६ कहुं गजराजबाजि शृंगारे तापर चढेजु आप। सँग बलभद्र चमू सब सँगले चले असुरदल कांप ६७७ कहूं हस्तिनापुर देखनको मनमें करतबिचार। कतहूंअर्घ देत सूरजको कहुं पूजत त्रिपुरार ६७८ कहुंयक दुर्गादेवि जानि कै जोरि बिप्र निजधाम। करतहोम बहुभांति वेदधुनि सर्बाविधि पूरण काम६७९प्रथमपुत्रको ब्याहजानिकैपूजतकहुंगणेश। कहूंऋषिनके चरणधोयकै शिरपर धरतनरेश६८० कहूं ब्याहकी केलि परमसुख निरखतमुनिसचुपायो। शेष सहसमुख पारन पावें कछुयकसूरजु गायो ६८१ फिर मुनि आय भवन कमलाके चरणकमल शिरनायो। मैं सब ठौर फिरेउ तुव देखन कतहूं पार न पायो ६८२ जित तितदेखो तुम परिपूरण आदि अनंत अखंड। लीला प्रकट देव पुरुषोत्तम व्याव्यापक कोटि ब्रह्मंड ६८३ शिव बिरंचि सनकादि महामुनि ऐयसुरेश दिनेश। इन सबहिन मिलि पार न पायो द्वारावती नरेश ६८४ तुम्हरे चरणकमल की महिमा जानत हैं त्रिपुरारि। प्रकटगंग पावन चरणन ते ताहिरहत शिर धारि ६८५ पुनि गौतम घरणी जानत हैं

नावक ग्रिवरीजान। उद्धव बिदुर युधिष्ठिर अर्जुन अरु भीषमसुरज्ञान ६८६ हनूमान अरु भक्त बिभीषण चरणकमल रजमांशी। सोई कृपा करो करुणानिधि मांगतहैं अनुरागी ६८७ यह कहिके मुनि लोक सिधारे बीणबजाय रिझाय। ब्रह्मलोकपहुंचे छिनहीमें हरिआज्ञाको पाय६८८पहिलो पुत्र रुक्मिणी जायो प्रद्युम्ननाम धरायो। कामदेव प्रगटे हरिके गृह पहिलेरुद्र जरायो ६८९ नारद जायकह्यो संबर सों तब रिपुवपु धरिआयो। वेग उपाय करो मारनको प्रगटद्वारका जायो६९० तब संबर भयभीत द्वारका गयो तुरत त्यहिकाल। हरिको चक्रदेख रखवारी ब्याकुल भयो बेहाल६९१तबनारदमुनि आयचक्र सों बात करन ठहरायो। इतनेमांझ पुत्रले भाज्यो निधिमें जान दुरा यो ६९२ एक मीनने भक्ष कियो तब हरि रखवारी कीनों। सोई मत्स्य पकरि मोधुकने जाय असुरको दीनो ६९३ तब उनकह्यो पाकशालामें अबहीं यह पहुंचाओ। चीरयो उदर पुत्र तब निकस्योउन जान्यो मम नाओ ६९४ नारद कह्यो यही तव पतिहै याकूं वेग बढाय। जौलों बडो होय तौलों यह असुरन मतिहि देखाय६९५सेवा कीनी बडे भये जब समरथ बिपुल उदार। महाबली बलराम कृष्णसुत कीन्हों असुर संहार ६९६ मारि असुर को आ[illegible] द्वारका कृष्णचरण शिरनायो। भीतरगये नये रुक्मिणीको सबहिन कहलगायो ६९७ बर अरु बधू आय जब जाने रुक्मिणी करत बधाई। रतिअरु काम प्रकत तादिन ते कबि मिलि कीरति गाई ६९८ यहिबिधि केलि करत द्वारावति पूरण परमानंद। महिमा सिन्धु कहां लग बरणो सूर जु कबि मतिमंद ६९९ पुनि अनिरुद्ध भेद नारदके चित्ररेखा हरिलीन्हों। चारवर्ष अरु चारमास लौंऊखाको सुखदीन्हों७०० तब हरिजाय संग हलधरलै सब यादव दल जोर। सबै भुजाकरि दूर असुरकी चार हाथ दियेछोर ७०१ आये रुद्र पक्ष करि ताको युद्ध करन हरि साथ। छिनमें जीतिबधूसुत लैके आय द्वारकानाथ ७०२ पुनि यक दिवस सुधर्मा बैठे यादव सभा अपार। उग्रसेन बसुदेव सात्यिकी अरु अक्रूर उदार ७०३ इतने मांझ दूत यक आयो सबहिन कहि समझायो। बासुदेवनृप आज्ञा करके मोकों वेगिपठायो७०४

बासुदेव यहकहत वेदमें प्रकटब्रह्मअवतार। सोतो मैंही प्रकट भयोभुव यहिविधि बढ्यो अपार७०५सरगमें जायतुरत हरि मार्योदीन्हींमुक्ति कृपाल। फेर द्वारका तुरत पधारे गरुड़चढ़े गोपाल ७०६ एक दुष्ट ने बहुतकियो तप औ रीझे त्रिपुरार। तब शिवने उनकृत्यादीन्ही बाढ़ो क्रोध अपार ७०७ कृत्याचली जहां द्वारावति हरिजानी यह बात। आज्ञाकरी चक्र को माधव छिन कृत्याकर घात ७०८ काशीजाय जराय छिनकमें गये द्वारकाफेर। अति आनंद परम सुखमों सबदिन बीतत रसटेर७०९ पुनिकुरुक्षेत्रगये यादवमिलि कियोतीर्थ अस्नान। यज्ञहोम करि पितर देवता बिप्रनको बहुदान७१०सूरज ग्रहण नृपन बहु जान्यो आय जुरी सब भीर। दर्शनभयो सबनको हरिको मिट्यो ताप तनपीर ७११भीष्म द्रोण अरु करण युधिष्ठिर भीमार्जुन सहदेव। कुंती नकुल औरगन्धारी कृपी बिदुर सहदेव ७१२ दुर्योधन सब भ्रात संगले धृतराष्ट्रहिले आयो। नारद गौतम बाल्मीकिमुनि हरिदर्शनहित धायो७१३भारद्वाज मरीच अंगिरा अत्रेमुनी अनंत। पुलह पुलस्त्य अगस्त्य कश्यप पुनि अरु सनकादिक संत७१४हरि को दर्शन करि सुख पायो पूजाबहुबिधिकीन्हो। अतिआनंदभये तनमनमें सोंज बहुत बिधि दीन्हीं७१५व्रजबासी सब सखासंगके यशुमति अरुव्रजराज। दर्शनपाय बहुत सुख पायो सुफल भये सबकाज७१६ यशुमति मात उछंग लगाये बल मोहन को आय। बाल भाव जिय में सुधि आई अस्तन चले चुचाय७१७गोपिन देखि कान्ह की शोभा बहुतहि मन सुखपायो। सघननि कुंज सुरत संगम मिलि मोहन कंठलगायो ७१८ रुक्मिणी कहत कमल लोचन सों राधा हमें देखायो। जाकी नित्य प्रशंसा तुम करि हम सबहिन कुं सुनायो७१९ तब वृषभानसुता पगधारी रानिन मंडल मांझ। मनो सरस इन्दीवर फूले ता मधिफूली सांझ७२०देख तेज वृषभान सुता को सबै भई छबि हीन। अति आनन्द मोद मन मान्यो हमहि कृतारथ कीन ७२१ तब हरि कह्यो मोहिं राधा बिन पल सम कछु न सोहाय। सुनो रुक्मिणी कथा घोष की मोपे कहिय न जाय ७२२ एक दिना बनमें इन मोको अपनो सुधा पिवायो। ताके बल गिरि गोबर्द्धन लै अपने हाथउठायो ७२३ अरु काली धेनुक दा-

धानल प्रकट पूतना आई। इनकी कृपा सकल बिघनन को छिन में दिये नशाई७२४भांति भांति करि मोहिं लड़ायो सघन कुंज में जाय। ताकी कथा कहों कह तुमसे मोपे कहिय न जाय ७२५ रास केलि करि क्रीड़ा कीन्हीं होरी खेलखिलायो। मटुकि छुड़ाय लियोदधि चरमत तउ कछु मन नहि आयो ७२६ रतन जटित पर्यंक द्वारका पौढ़त हैं सुखधाम। तोहू इनको ध्यान करतही बीतत है सब याम ७२७ इन बिन मोहिं कछूनहिभावे नन्दरायकीआन। सुनो रुक्मिणी लोचनमें ग बसी रहें मम प्रान७२८जागत सोवत अरु बन डोलत भोजन करत बिहार। ध्यान करत नखशिख इनहीं को बसि द्वारका मँझार ७२९ तब मिलि रंग बहुत भांतिन सों कीन्हें बिपुल बिहार। ब्रजजन चले सकल गोकुल को दीन्हें दान अपार ७३० चले द्वारका यदुकुल सब मिलि भयो कुलाहल भार। पहुंचे आय द्वारका सन्मुख घर घर मंगल चार ७३१ कियो बिचार यज्ञ को राजा राजसूय जिय जानि। कृ-ष्णचन्द्र को वेगि बुलाओ संग सकल पटरानि ७३२ आये इन्द्रप्रस्थ सब यदुकुल महा महोत्सव मान। जुरे भूप बहु सकल देश के हरि दर्शन जियजान७३३चारों भ्रात चारिदिशि जीतोभारतकहीबखान। ठौरठौर के नृप सबआये लै उपहार प्रमान ७३४ बड़ो यज्ञ राजसूय रचायो जुरे बिप्र बहु भारी। महा भाग्य राजा जु युधिष्ठिर जहं मा-धव अधिकारी ७३५ सबहिन कह्यो प्रथम पूजा अब कहो कौनकी कीजै। सबमें बड़ो कौनभूपतिहै जाहि अर्चना दीजै ७३६ तब सहदेव कह्यो सबहिन सों सुनो नृपति मनलाय। पूजा योग प्रकट पुरुषोत्तम कृष्णचंद्र यदुराय ७३७ सबहिन कह्यो साधु यह बाणी सुरमुनि म-नुज सराई। यक शिशुपाल दुष्ट नृप कहिये सुनतहि उठ्यो रिसाई ७३८ गोकुल नंद अहीर गोप गृह पय पियके यह जीयो। दधि जु चुराय खाय वृन्दावन चरित बिषम बहुकीयो ७३९ मातुल मारि बहुत अघ कीन्हें कहांलों करों बड़ाई। वृन्दावन गोबर्द्धन कुंजन लूटी नारि पराई ७४० बनबन गाय चरावत डोलत कांध कमरिया राजै लकुटी हाथ गरे गुंजमाला अधर मुरलिका बाजै ७४१ ऐसे ख्याल करे इन बहुबिधि कहत जुआवे लाज। वेद बिदित सुर काज बिगारे

नहिँ कीयें ब्रजराज ७४२ ब्रजआरत बिप्रन गामथुरामें यांचिभीख न दीन्ही। अरप ताकियो नहीं देवनको पहिले इनमति कीन्ही ७४३ माखनचोर चोरगोपिनको दूध जु दधि लैखायो। यमुना न्हात गोप कन्यनकोले घट कदम चढ़ायो ७४४ काली हरिकी आज्ञा को लै यमुना मांझ बसायो। ताहि निकालदियो क्षणाहींमें नेक सकोच न आयो ७४५ यक पूतना पय पान करावन प्रेम सहित चलि आई। ताहि लगाय हृदय लपटानो प्राण जो लियो चुराई ७४६ जन्महोत इन मात तात को तबहीं बन्धन दीन्हें। यादव ज्ञात भाज जित तितको अनतबाय सुख कीन्हों ७४७ बेणु बजाय रास इन कीन्हें मधुप गोप की नारी। परनारी को दोय कछू चित इन नहिँ कीन्ह बिचारी ७४८ दूध दहीके भाजनचाटे नेकहु लाज न आई। माखनचोरि फोरिमयनीको पीवत छांछ पराई ७४९ छाक खाय जूठन ग्वालिन को कछु मनमें नहिँ मान्यों। परदाराके संगजाय निशि कुब्जासों सुखमान्यों ७५० बहुत प्रीति करि गोपन जाने बहुबिधि लाड़ लड़ायो। ताको यतन कछू नहिँ मान्यों मथुरा में चलिआयो ७५१ जरासन्ध इन बहुत बारही करि संग्राम पलायो। हमडरकर दोऊभाई नगरसमुद्र बसायो ७५२ कालयवन के आगे भाज्यो जाय गुफा गहि लीन्हों। लातमारि मुचकुंद जगायो नेकु दया नहिँ कीन्हों ७५३ बातैं बहुत याहिकी लंपट सभा मांझ नहिँ कहिये। जियमें समुझ आपने सन्मुख मुखते चुप करि रहिये ७५४ अतिशय क्रोध भये पांडव सुत और नृपति हरिदास। राखे बरज सबन को माधव नेक न भये उदास ७५५ अतिही भई अवज्ञा जानी चक्र सुदर्शन मान्यो। करि निज भाव एक कृश तनमें क्षणक दुष्ट शिर भान्यो ७५६ परम कृपाल दयाल देवकी नन्दन पावन नाम। दीन्हीं मुक्त दयाकरिके तब दियो लोक निज धाम ७५७ जैजैकार भयो बसुधा पर राज युधिष्ठिर हरषे। अमृतस्नान कराय वेद बिधि कनक कुसुम शिर बरषे ७५८ दीन्हीं सभा बनाय पांडुकी मय मायागत अंत। ताको देख भ्रमे दुर्योधन महा मोह मति मंत ७५९ जलमें थलमति थलमें जलमति भई नृपतिको ज्ञान। अन्ध पुत्र लखि हँसे पवनसुत सुन जियमें रिसमान ७६० गयो भवन अकु-

साथ बहुत जिय क्रोधवंत अभिमानी। ताही दिनते पांडु पुत्रसों बैर विषम गति ठानी ७६१ सभा रची चौपर क्रीड़ाकरि कपट कियो अति भारी। जीत युधिष्ठिर भई सबजानी तउ मनमें अविकारी ७६२ युवती धरी जान दुष्टन ने जब द्रौपदी बुलाई। हरिको सुमिरन करत पथमें दुश्शासन गहिलाई ७६३ अहो नाथ ब्रजनाथ नाथनिज यदुकुल के निज नाथ। गोकुलनाथ नाथ सबजनके सोंपति तुम्हरे हाथ ७६४ ज्यों गजराज बचायो जलमें नेक विलंब न कीन्हीं। अपनो भक्त बचावन कारण विष अमृत करि दीन्हीं ७६५ शबरी गीध और पशु पक्षी सबकी रक्षा कीनी। अबतो सहाय करो तुम मेरीहै पांचन मति हीनी ७६६ चौपर खेलत भवन आपने हरि द्वारका संभार। पांसेडार परम आतुर सों कीन्हें अगत उचार ७६७ चीर बढ़ाय दियो बहुलोंहि सारा खेंचत पार न पायो। भीष्म द्रोण अरु करण युधिष्ठिर सब बिस्मय मनलायो ७६८ रहेउ दुष्ट पचिहार दुशासन कछू न कलाचलाई। बैठो आय सभा में पाछे बार बार पछिताई ७६९ फिर द्रौपदी भवन में आई श्रीहरि लज्जा राखी। वेद पुराण तन्त्र भारत में कही बहुत बिधि भाखी ७७० पुनि बनवास दियो पांडवसुत हरिद्वारका में जानी। अक्षय पात्र दिवायो रविनै बड़े भक्त सुखदानी ७७१ दुरवासा शापन को आये तिनकी कछु न चलाई। अक्षय कियो कमल दल लोचन भक्तन भये सहाई ७७२ पांडव कुलके सहाय भये हरि जहँ तहँ संगहि डोले। दुर्योधन सों कहेउ दूत ह्वै भक्त पक्ष दृढ़ बोले ७७३ पाँचगाँव पाण्डवको दीजै सुनो नृपति समबात। और राज सब तुमहीं करिये निपट जगत विख्यात ७७४ प्राची और प्रतीचि उदीची और अवाची मान। इन्द्रप्रस्थ बीचमें दीजै और राज तुव जान ७७५ सुनिकै क्रोध भयो दुर्योधन सब पाण्डवको राज। तुमरो कुल सब नाशहोयगो कहि जो चले ब्रजराज ७७६ बहुत दुःख दीन्हों पांडव को अबलों मैं सहि लीन्हों। लाख भवन बैठार दुष्ट ने भोजन में विष दीन्हों ७७७ बने बन फिरे अर्क तूलन ज्यों बास विराटहि कीन्हों। अन्तहि गुप्त रहे तापुर में भेद काहु नहिँ दीन्हों ७७८ जुरे नृपति अक्षोन अठारह भयो युद्ध अतिभारी। रथ हाँकत गोविन्द अर्जुनको दीन्ह शास्त्र सब

डारी ७७९ करी प्रतिज्ञा कहेउ भीष्मसुख पुनि पुनि देवमनाऊं। जो तुम्हरेकर शस्त्र गहाऊं गंगासुत न कहाऊं ७८० चढ़ेप्रबलदलदोउओर के बिच अर्जुन रथ ठाढ़ो। इत पारथ गांगेयबली उत जुरो युद्ध अति गाढ़ो ७८१ दशदिन लरे बली गंगासुत श्याम प्रतिज्ञा जानी। सत्य वचन हरि कियो भक्तको निगम झूंठकार बानी ७८२ धरि रथचक्र श्यामनिज करमें जबहिँ भीष्म परडारो। शीतल भई चक्रकी ज्वाला जब शिर तिलक निहारो ७८३ धन्य धन्य कहि परे आय पग शुरा निधान गंगेव। तब हरि कहेउ विपुल बल तुम्हरो जीति लिये सब देव ७८४ तब उनकहेउ चरण आपनमें राख्यो निशिदिन ध्यान। सोरि प्रतिज्ञा तुम राखी है मेटि वेदकी कान ७८५ डार शस्त्र शर शय्या सोये हरि चरणन चितलायो। उत्तर दिशा रवि जानदेह तजि वहां परम पद पायो ७८६ नृपति युधिष्ठिर राजतिलकदै मारि दुष्टकी भीर। द्रोण करण अरु शल्य मुक्तकरि मेटी जगकी पीर ७८७ गोविन्दआय द्वारका निज गृह अति आनन्द बढ़ायो। घर घर मंगल महा कुला-हल यदुकुल होत बधायो ७८८ शल्य नृपति तप किय पंचानन ताषैं यह वरपायो। दियो बनाय नगरसोपुरमें काहुन जातलिखायो ७८९ आय द्वारका शोर कियो उन हरि हस्तिनापुर जाने। प्रद्युम्न लरेसन दश दोदिन रंचहार नहिँ माने ७९० हरि अप सगुन जानि हस्तिन पुर बैठ तुरत रथ धाये। बहुत देशको पावन करिकरि सांझद्वारका आये ७९१ कीन्हों युद्ध आय शालव सों उन बहु माया कीन्हीं। जलमें थलमें जल देख्यो श्याम दूर करदीन्हीं ७९२ माया दूर करी नँदनन्दन चक्र दियो शिर डार। क्षणाहीं मांझ दुष्ट संहारो भुवको भार उतार ७९३ जय जयकार करत देवांगन बरषत कुसुम अपार। कियो प्रवेश द्वारका मोहन घर घर मंगलचार ७९४ राजसूय कर वाय श्यामघन जरासंध मरवायो। दन्तवक्र महिपाल महाबल वि-दुरथ प्राण नशायो ७९५ बालक मृतक देवकी मांगे सो छिनमें हरि लाये। दीन्हों दरश भक्त नृपबलिको तनके ताप नशाये ७९६ बालक आय देवकी जाने अस्तन पान कराये। हरि को प्रेमपान करिके वे हरिके पद पहुंचाये ७९७ एकादिना यदुनाथ संग सब विप्र मण्डली

न्हाय शुद्ध तनको करि हरि द्विज बचन बिचारेउ ८३५ बरष दिवस में अरसठ तीरथ न्हायकरत घरआये। आय प्रभास बिप्र बहुजनको बहुतहि दानदेवाये८३६पुन मिथला एक दिवस पधारे हरि बलदेव गोसाईं। गदा युद्ध दुर्योधन सिखयो नानाभेद बताई८३७पुनिद्वारका पधारे निजपुर अतिआनँद सुखबाढ्यो। प्रकट ब्रह्म नित बसत द्वारका कलह भूमिको काढ्यो८३८दश दश पुत्र एक एक कन्या हरिसबके उपजाई। सुतके सुतनाती पतिनी की महिमा कहिय न जाई ८३९ बड़े बली प्रद्युम्न कहावत कृष्ण अंश अवतार। तिन सब जगजीत्यो तिहुं लोकनबाढ्यो सुयश अपार८४०अश्वमेध करवाय युधिष्ठिर कुल को दोषमिटायो। करि दिगबिजय बिजय को जगमें सक्र पक्ष कर-वायो ८४१ नानाबिधि कीन्हीं हरि क्रीड़ा यदुकुल शाप दिवायो। जोज्यहि लोक छोड़िके आयो ताको तहँ पहुँचायो ८४२ ऊधो को कहिज्ञान आपनो निगमन तत्व बतायो। कही कथा दत्तात्रिय मु-निकी गुरु चौबीश करायो८४३ कहि आचार भक्त बिधभाषी हंस धर्म प्रकटायो। कहीबिभूत सिद्धसाधनता आश्रम चारकहायो ८४४ सांख्य तत्व गीता हरि कीन्हीं गुनकेभेद करायो। ऐलगीत पुनिभिक्षु गीत कहिपूजा बिधि दरशायो ८४५ सदाबसत हरिपुरी द्वारकाबहु बिधि भोग बिलासी। आदि अनन्त अखण्ड अनूपमहै अबिनाशि अबि-सी ८४६ एकदिना एकबिप्र द्वारका बसत सुखद निजधाम। वेदरूप तप रूप महामुनि कृष्ण बिप्र यहनाम८४७ बालक दश जु भये ताके जब भूमा लिये मँगाय। चित्तमें यह अनुरक्त बिचारत हरि दर्शनको चाय८४८ दशं सुत भयो जानके ब्राह्मण करिपुकार हरिपास। तब हरिकहेउ देवकी गतियह करतकाल जग नास ८४९ तबै अर्जुन यह कहेउ मत्त है नृप नाहिंन भुवभार। मैं अर्जुनगांडिवधनु जाको काल सो लरों ललकार ८५० जब सुत भयो कहेउ ब्राह्मण ने अर्जुन गये गृहताह। शरपंजर रोप्यो चहुँ दिशते जहाँ पवन नहिँ जाह ८५१ तब सुत गयो देहको लेके दरशन भयो न ताय। अतिही क्रोध भयो ब्राह्मणको बहुत बक्यो बिलखाय ८५२ तब अर्जुन ढूंढन को निकसे तीनलोक फिरि आयो। कहूंन पायो सुत ब्राह्मणके तब मनमें अकु-

लायो ८५३ कियो बिचार प्रवेश अग्निको हरि आये समुझायो। लै निज संगचले पश्चिमको लोका लोका सोहायो ८५४ कनकभूमि अरु धाम देशको देखे परम सुहायो। बहुत निबिड़तम देख चक्रधरि धरेउ हाथ सामुझाये ८५५ महाकालपुर तुरत पधारे हरिभूमाके पास। तुल्य अग्नि बर अग्नि समानी भूमा तेज प्रकास ८५६ छ्शातेजको देख सकल सुर तनमन भयो हुलास। अतिहीमंद तेज भूमाको हरिके तेज प्रकास ८५७ अतिआनंद परसपर बाढ्यो जब उन बिनतीकीन्हीं। भलीभई भुवभार उतारेउ गेरीफिरि सुधिलीन्हीं ८५८ लैदशपुत्रद्वार-काआये दीन्हें बिप्रबुलाय। कीन्हों दुःखदूरि अर्जुनको महिमा प्रकट दिखाय ८५९ कीन्हीं केलि बहुत बलमोहन भुवको भार उतारेउ। प्रकट ब्रह्मराजत द्वारावति वेद पुराण बिचारेउ ८६० एक दिना रुक्मिणि सों माधव करत बात सुखदाई। सुनु रुक्मिणि राधिकाबिन मोहिं पल सम कल्प बिहाई ८६१ कनकभूमि रचि खचित द्वारका कुंजनकी छबिनाहीं। गोबर्द्धन पर्वतके ऊपर बोलतमोर सुहाहीं ८६२ यमुनातीर भीर खग मृगकी मोहिं नितप्रति सुधि आवै। वृन्दा बिपिन राधिका मंदिर नितप्रति लाड़लड़ावै ८६३ रतिदिवस रमग्रवत सुधामें कामधेनु दरशाई। लूट लूट दधिखात सखनसँग तैसो स्वाद न पाई ८६४ षटरस भोजन नानाबिधिके करत महलके माहीं। छाके खात ग्वालमंडलमें वैसोतो सुखनाहीं ८६५ जन्मभूमि देखनके कारण फेरीमन ललचावे। धौरीधेनु बुलावन कारण मधुरेबेनु बजावे ८६६ रासबिलास बिबिधमें कीन्हें संग राधिका लीन्हें। कीन्हेंकेलि बिबिध गोपिनसों सबहिनको सुखदीन्हें ८६७ बलमोहन फिर ब्रजहि पधारे ऊधोको सँग लीने। दीन्होंबास चरणरज गोपिन गुल्म लता रसभीने ८६८ सदा बिलास करत गोकुलमें धन धन यशुमति मात। ज्यों दीपकते दीपक कीन्हों भये द्वारकानाथ ८६९ नितप्रति मंगल रहत सहरके नितप्रति बजत बधाई। नितप्रति मंगल कलश धरावत नितप्रति वेद पढ़ाई ८७० श्रीवृषभानु रायके आँगन नित प्रति बजत बधाई। नित प्रति मिल मुनि राजमण्डली मंगल घोष कराई ८७१ बाल केलि क्रीड़त ब्रज आँगन यशमति को सुखदीन्हों। तरुण रूप

मानो९०९बोरीखाय चलेखेलनको बीथिन ब्रजनार। लेचलिपकर बांह राधा पै सघन कुंज के द्वार ९१० राधा सों मिलि आनि सुख उपज्यो उन पूछी यक बात। कहो जु आज रैन कहं सोये हम देखे तुम प्रात९११तब हरि कहेउ सुनो मृगनैनी गाय गई यक दौर। ताको लेन गयो गोवर्द्धन सोय रहेउँ तेहि ठौर ९१२ कंद मूल फल दीने गोधन सो निशि को मैं खायो। भोर भये उठि तेरे आयों चरण कमल परसायो ९१३ निज प्रतिबिंब बिलोकि राधिका हरि नख मंडलमाह। द्वितियरूप देखे अबलाको मान बढ्यो तन छांह ९१४ चली रिसाय कुंज मृगनयनी जहँ अति करत गुंजार। बैठीजाय एकांत भवन में जहां मान गृह चार ९१५ नन्द कुंवर बिरहन राधा के बिरह भये भरि पूर। बैठे जाय एकांत कुंज में सखा कियो सब दूर ९१६ ललिता बोल कही मृदुबानी कृष्ण बिमल दल नैन। बिन राधा मोहिं कल न परत है कहत मधुर मृदु बैन९१७बेगजाय परि पांय राधिका बिनती करो सुनाय। दरशन देउ सकल दुःख मेटो तुम बिन रहेउ न जाय ९१८ तुम बिन खान पान नहिं भावत गोचारन शृंगार। रैन नींद नहिं परत निरंतर संभाखन व्यवहार ९१९करि दंडवत चली ललिता जो गई राधिका गेह। पांयन पर पर बहुत बिनय कर सुफल करन को नेह ९२० बेगि चलो वृषभानु नन्दनी बोलत नन्द कुमार। तुम बिन पल छिन कल न परत है भोजन सुख व्यवहार ९२१नयनि कुंज में मिलो श्याम सों भेंटो भरि अँकवार। कुसुम सेज पर करो केलि प्रिय गिरधर परम उदार९२२तो बिन पियहि कछू नहिं भावे तोसों पिय आधीन। तो बिन श्याम रहत हैं ऐसे जैसे जल बिन मीन ९२३ कहा सुभाव पर्यो सखि तेरो यह बिनवत हैं तोह। मान करत गिरवर धर पयसों मानत नाहिंन सोह ९२४ करि शृंगार सकल ब्रज सुन्दरि नीलांबर तन साज। रैन अंधेरी कछू न दीखत नूपुर धुनि जिन बाज९२५कुवलय दल कुसुमन सज्जा रचि पंथ निहारत तोर। सुपन जाग अरु सैन सुमृत तुव बचन सत्य है मोर ९२६ सित अरु पीत जूथिका बेनी गूंथो बिबिधबनाय। रचो भाल निज तिलक मनोहर अंजन नयन सोहाय ९२७ तू छबि सिंधु बिहर ब्रजनायक सुद्र नदी नहिं

भावै। जबते नाम सुन्यो श्रवणन तुव रैनि नींद नहिं आवै ९२८ हरि राधा राधा रटत जपत मंत्र दुरधाम। बिरह बिराग महायोगी ज्यों बीतत हैं सब याम ९२९ कबहुँक किसलै सेज सँवारत तेरेही हित लाल। कबहुंक अपने हाथ सँवारत गूंथत कुसुमन माल९३० तुव बिन बट संकेत मदन बन देखत लगत उदास। बिरह अगिन चहुंदिशा में धावत फूले दिखत पलास ९३१ सारस हंस मोर पारावत बोलत अमृत बान। बैठ रहे दुर सदन सघन बन धुनि नहिं सुनियत कान९३२का-लिन्दी तट बिमल कदमतर करत बदन तुव ध्यान। सुहृदय सखा त्यागि मनमोहन करत मधुर तुव गान९३३गुंजत श्रवणन मधुप सुनत हैं तुव स्रुति की सुधि आवै। कंचन बरन जात तेरो बपु पीताम्बर पहिरा-वै ९३४ सुनत कोकिला शब्द मधुरधुनि कमल नयन अकुलात। तेरे बोल करत सुधि जिय में बिरह भाल ह्वैजात९३५ तुव नासापुटगात मुक्तफल अधर बिंब उनमान। गुंजाफल सबके शिर धारत प्रकटी मीन प्रमान९३६ सिंधु सुतासुत तासुरिपु गमनी सुन मेरी तू बात। काम पिता बाहनभखको तन क्यों न धरत निजगात९३७ श्रीत बाहन पति बाहन रिपुको तपतबढी तनभारी। शैल सुतासुत तासुत अंगना सोतेतबै बिसा-री९३८भृङ्ग यूथचतुरानन तनया ब्रह्मनादसुरसंग। जलसुत बाहनसो जन धारत बिषम लगत जिय अंग९३९चतुरानन सुत तासुत वा सुत उदित होन अब आयो। मन्मथ मात तात सुत अथयो सोतो वृथा गँवायो ९४० पंकज उर पंकज जिन केरे तेरो अटल सुहाग। सुरपति बाहन तासुत शिर पर मांग भरो अनुराग९४१कमल पुत्र ता सुत कर राजत सो हरि निज कर लीन्हें। सप्त सुरन उपजाय बजावत रटन राधिका लीन्हें९४२सुत प्रह्लाद तासु सुत ता पित भ्राता वृथा गँवायो। संज्ञा सुत बपु सदृश बसन तन सो तन लागत छायो९४३सारंग ऊपर सारंग राजित सारंग शब्द सुनावै। सारंग देख सुने मृगनैनी सारंग सुख दर-शावै ९४४ सारंग रिपु की बदन ओटदै कह बैठी है मौन। ब्रह्मसुता सारंग के धोखे करत सकल ब्रज गौन ९४५ सारंग सुता देख सारंग को तेरो अटल सुहाग। सारंग पति तापति ता बाहन कीरत रट अनु-राग ९४६ दधि सुत बाहन सुभग नासिका दधि सुत बाहन देख्यो

दधि सुत बाहन बचन सुनत तुव अंग अंग अवरेख्यो ९४७ शशि को भ्रात कहत ता बाहन कुन्द कुसुम ललचात। खंजन सदृश देख तुव अंखियां तन मन में अकुलात ९४८ मारुत सुरपति रिपु ता पतनी ता सुत बाहन बात। श्रवण सुनत अकुलात सांवरो कछुक कही नहिं जात ९४९ चतुरानन सुत ता सुत पतनी ता सुतको जो दास। ता सुत बाहन पुत्र अंग धरि जलसुत करों प्रकाश ९५० श्रीबलदेव राम जो कहिये तामें भानु मिलाय। ताकी सुता कहत चतुरानन निगम सदा गुणगाय ९५१ सिंधुसुता तव भाग्य बिलोकत मनमें रही लजाय। काम पिता माता गुरुता बपु युवति कोट दरशाय ९५२ सातो राम मेल द्वादशमें ऐसे बीततयाम। द्वितिय राशमें मिलत सप्तमी मोजानत निजधाम ९५३ शैल सुताबरि तारिपु बांधत अंग अंग पिय आज। कोटि यतनकर सींचत तोऊ मिटत नहीं ब्रजराज ९५४ बायसंअजा शब्द मनमोहन रटत रहत दिनरैन। तारापति के रिपुपर ठाढे देखत हरिनैन ९५५ गंगासुत रिपु रिपु शिय मेरी सुनत नहीं सखिकाह। नारायणसुत ता सुत ता सुत लगत बिषम बिष ताह ९५६ जल बाहन देख बदन तुव ब्रह्मसुता अकुलानी। मंगल मात तासु पति बाहन राजत सदृश भुलानी ९५७ दक्ष प्रजापतिकी तनया पति तासुत नारगाई। सिंधुसुता सुत बाहनकी गति देखत बिषम भई ९५८ आगन तात तेहि तात अंगना त्यों उनमें तू राखी। बंधु कुसुम द्रुम तारिपुको पति सारंग रिपुकर भाखी ९५९ पति पाताल लगन तन धारन सो सुख भुजा बिचारी। प्रथम मथत जलनिधि जो प्रकट्यो सो लागत सब नारी ९६० बंधु कुमुद पति पिता सुता जो तुव यश मधुरगावै। ब्रह्मसुता सुत पदरज परसत सारंग सुता देखावै ९६१ इन्द्र सुतापति भुजा लगन लखि जल सुत हृदय लगावै। इन्द्र सुता तनया पति को सुत ताके गुनै न पावै ९६२ धरत कमलमें कमल कमल कर मधुर वचन उचार। कमलाबाहन गहत कमलसों कमलन करत विचार ९६३ कालिन्दी पति नैन तासु सुत लागत हैं सब लोग। इन्द्र मात तेहि तात सो सरधत प्रकट देखियत भोग ९६४ अंबुज मात तात पतिता रिपु ता पति काम बिगारे। ताते सुन तू भांननन्दनी मेरो बचन बि-

चारि ९६५ तीस भान हैमास सकल ऋतु सिंधु सुता मन जान। भूषन अंग लसत गुंजावलि और न कछू समान ९६६ इति दृष्टकूट सूचनिका संपूर्ण॥ कबहुँक सेज रचत वेदीकर हृदय होम घृत नैन। विप्रभोज बालन तुव देखियत अंग कुश नहिं चैन९६७ अब न वेग विचारबचन मम सुन वृषभान कुमारि। मिलहो बेग कमल दल लोचन सुन मेरी मनुहारि ९६८ गौर बरण हैजात सांवरो ध्यानकरत तुव अंग। पुन ललिता हरिके ढिग आई बैठे सांवलरंग ९६९ वेगचलो तुम श्याम मनोहर आणुकाज महंकाज। लेहु मनाय प्राणप्यारीको प्रकट्यो कुंज समाज९७० ऋतु बसंत अबआय देखियत फूलेकुसुम सुरंग। मानो मदन बसंत मिले दोउ खेलतहैं रसरंग९७१बेगिचलो अब प्रिया मनावन नेक बिलम्ब न लाओ। मेरीकही बात नहिं मानत ताकोज्ञान दृढाओ ९७२ परी पांय अपराध क्षमावत सुनत मिलेगी धाय। सुनत बचन दूतिका वदनतें श्यामचले अकुलाय ९७३ जहँ बैठी वृषभानुनंदनी तहंआये धरि मौन। परे पांय हरिचरण परशकरि छिन अपराध सलौन ९७४ सुनि हरिवचन बिलोकत शोभा मानगयो सब छूट। मिले धाय अकुलाय श्यामघन प्रेम काम रस लूट ९७५ रच्यो सिंगार श्याम अपने कर नख शिख प्रिया बनायो। शीश फूल बेनी नकबेसर तिलकभाल करवायो ९७६ युगताटंक चिबुक दशनावलि करकंकण उरमाल। नूपुरपद कटि क्षुद्रघंटिका सब शृंगाररसाल९७७ सकल सिंगार करत बरणनको कृपा यथामति मोर। होत बिलम्ब मिलनके कारण तातें बरणत थोर९७८चले धाय नवकुंज दोउमिलि किशलय सेज बिराजे। परिरंभन सुख रास हासमृदु सुरत केलिसुख साजे ९७९ नाना बंध विधि रस क्रीड़ा खेलत श्याम अपार। रसरस तरत्र भेद नहिं जानत दंपति अंग संभार ९८० सुरत समुद्र मगन दंपति रस झेलतु अति सुखझेल। निरवधि रमन अपरमित अच्युत मनुज साथ बहु खेल ९८१ नूपुर संचित किंकिनिकी धुनि सुनत मधुर किलकार। मदन सिंधु मधुमत्त मधुपगन फूलेकरत गुंजार ९८२ मधुप यूथमिलि सबन चन्द्रमा तड़ित लिये आकास। खंजन मीन बजावत गावत निरतत सुख सुबिलास९८३जलद समूह खसत उड़गण

गराये समुद्रके बीच। मकर कपोत बोल मृदु कोकिल अमृत सुधारस सींच९८४सोहन बेल सिंगार बिरपमों उरझी आनँदबेल। कंचन बेल तमालहि लपटी रसिकरंग भरिरेल९८५युगुल कमल तो मिलत कमल युग युगुलकमल लेसंग। पाँच कमलमध्य युगुलकमललखिमनमा भई अपंग ९८६ किरगा कदम्ब संज्ञका पूरणा सौरभ उड़त अवेश। अगर धूप सौरभ नासा सुख बरषत परम सुदेश ९८७ कुंतद कुमुद बंधूक मिलत पुनि मीन देख ललचात। तापर चन्द्रदेव संज्ञासुत तनमें बहुत डेरात ९८८ बरना भखकर में अविलोकत केश पास क्षत बंद। अधर समुद्र सदत जो सहसा धुनिउपजत सुखफन्द९८९मुदित मरालमिलत मधुकर सों खंजन मिलत कुरङ्ग। कीर कीर रनधीर मिलत सम रत रस लहर तरङ्ग ९९० सुरत समुद्र कहत दम्पति के निरवधि रमन अ-पार। भयो शेशमन सूर कहन को राधा कृष्ण बिहार ९९१ शोभा अमित अपार अखण्डित आप आतमा राम। पूरण ब्रह्म प्रकट पुरु-षोत्तम सबबिधि पूरणकाम९९२आदि सनातन एक अनूपम अविगति अल्प अहार। ओंकार आदि वेद असुरहन निरगुन सगुन अपार ९९३ चतुरानन पञ्चानन अरु पुन षट आनन समजान। सहसानन बहु आ-नन गावत पार न पाय बखान९९४ सघन कुञ्ज में अमित केल लख तन सुगन्ध कीरेल। मधुकर निकट आय पीवत रस सुखद सदा रस भेल९९५ मलिन भये रसमाल सरोबर मुनि जन मानस हंस। थकित बिलोक शारदा बरणन करके बहुत प्रशंस ९९६ वृन्दावन निज धाम परमरुचि बरणन कियो बढ़ाय। व्यास पुरान सघन कुञ्जन में जब सनकादिक आय ९९७ धीर समीर बहुत त्यहिकानन बोलत मधुकर मोर। प्रीतम प्रिया बदन अविलोकत उठि उठि मिलत चकोर९९८ अमित एक उपमा अविलोकत जियमें परत बिचार। नहिं प्रवेशाब्ज शिवगणेश पुनि कितक बात संसार९९९सहसरूप बहु रूप रूप पुनि एकरूप पुनिदोय। कुमुदकली बिगसित अम्बुज मिलि मधुकर भागी सोय १००० नलिन पराग मेघ माधुरि सो मुकुलित अम्ब कदम्ब। मुनिमन मधुप सदा रस लोभित सेवत अज शिव अम्ब१००१ गुरु-प्रसाद होत यह दरशन सरसठ बरष प्रवीन। शिवबिधान तप करेउ

बहुत दिन तऊ पार नहिँ लीन १००२सुख पर्यंक अंक भुज दै दिखियत
कुसुम अन्द भुल छाये। मधुर मल्लिका कुसमित कुञ्जन दम्पत लगत
सोहाये १००३ गोबर्द्धन गिरि रतन सिंहासन दम्पति रस सुखसान।
निबिड़ कुञ्ज जहँ कोउन आवत रस बिलसत सुखखान १००४ निशा
भोर कबहूं नहिँ जानत प्रेम मत्त अनुराग। ललितादिक सींचत सुख
नैनन जुर सहचरि बड़भाग१००५ यह निकुञ्जको बरगान करिदे वेद
रहे पचिहार। नेतिनेतिकर कहेउ सहसबिधि तऊनपायोपार१००६
दरशान दियो कृपाकरि मोहन बेगदियो बरदान। आगम कल्पसरमा
तुव ह्वैहै श्रीमुख कहोबखान१००७सोश्रुतिरूप होयब्रजमगडल कीनो
रास बिहार। नवल कुञ्जमें अंश बाहुधरि कीन्हीं केलिअपार१००८
पुनि ऋषि रूप रास वर पायो हरि से प्रीतम पाय। चरणा प्रसाद
राधिका देवी उन हरिकंठ लगाय १००९ वृन्दावन गोबर्द्धन कुञ्जन
यमुना पुलिन सुदेश। नित प्रति करत बिहार मधुररस श्यामा श्याम
सुबेश १०१० निरखि निरखि सुख दम्पति को यह कवि कुल सब
पचिहारे। भूषन खसे सुरत बश दोऊ केश न आपु संवारे१०११ ल-
लिता ललित बजाय रिझावत मधुर बीर कर लीने। श्यान प्रभात
रागपञ्चम षट मालकोस रसभीने१०१२ सुर हिँडोल मेघमालव पुनि
सारँग सुर नटजान। सुरसावंत भूपाली ईमन करतकान्हरोगान१०१३
ऊंच अडाने केसुर सुनियत निपट नायकीलीन। करत बेहार मधुर
केदारो सकल सुरन सुखदीन १०१४ सोरठ गौड़मलार सोहावन भैरव
ललित बजायो। मधुर बिभास सुनत बेलावल दम्पति अति सुख पा-
यो१०१५देव गिरी देशाक देव पुनि गौरी श्री सुखरास। जैतश्री अरु
पूर्वी टोडी आसावरि सुखरास१०१६रामकली गुनकली केतकी सुर
सुघराई गाये। जै जैवन्ती जगत सोहनी सुरसों बीन बजाये१०१७सूआ
सरस मिलत प्रीतम सुख सिन्धुबीर रस मान्यो। जान प्रभात प्रभाती
गायो भोर भयो दोउ जान्यो१०१८ जागे प्रात निपट अलसाने भूषन
सबउलटाने। करतसिँगार परसपरदोऊ अतिआलस शिथलाने१०१९
जालरंध्र ह्वै सहचरि देखत जन्म सुफल करि लेखे। जान प्रभात उछं-
गन दम्पति लेत प्राण रस पेखे १०२० औट्यो दूध कपूर मिलायो लै

ललिता तहँ आई। पहिले श्यामा को अँचवायो पाछे पिवत कन्हा-
ई१०२१करि शृङ्गार सघन कुञ्जन में निशिदिन करत बिहार। नीरा-
जन बहुबिधि वारत हैं ललितादिक ब्रजनार.१०२२ कबहुँक केलि
करत यमुना जल सुन्दर शरद तड़ाग। कबहुँक मधुर माधुरी झूलत
आनँद अति अनुराग१०२३ प्रथम बसन्त पञ्चमी शुभदिन मंगलचार
बधाये। पञ्चानन जाश्यो मन्मथ सो प्रकट भयो फिरि आये १०२४
यशुमति मात बधाई बांटत फूली अँग न समाई। उबटि न्हवाय श्याम-
सुन्दरको आभूषण पहिराई१०२५घरघरतेआईं ब्रजसुन्दरिमंगलसाज
सँवारे। हेम कलश शिर पर धरि पूरण काम मन्त्र उपचारे १०२६
अबिर गुलाल अरगजा सोधी लीन्हों सौज बनाय। मनमें किये मनो-
रथ बहुबिधि मिलवत सब मनभाय१०२७भीर जानि सिंहपौर त्रियन
की यशुमति भवन दुराई। ढूंढ सकल त्रिय दौर मात को पकर बांह
ले आई १०२८ केसर चन्दन और अरगजा शीश महर के नाये।
जोजो बिध उपजी जाके जिय सोइ सोइ भांति कराये१०२९ फगुआ
दियो महर मनभायो यशुमति परमउदार। पकरलिये घनश्याम मनो-
हर भेंटे भरि अँकवार१०३० पहिली जान बसंत पंचमी यशुमति बहुत
खिलाये। केसर चोवा और अरगजा श्याम अङ्ग लपटाये २०३१ ता
पाछे गोपिन ने छिरके कनक कलश भरिडारे। मानो शीश तमाल
अमृत घन सरस सुधानि धरारे १०३२ चन्दन चोवा मथत हाथ कर
नील जलद तन अरप्यो। मानो प्रकट करी अपने चित पियको प्राण
समरप्यो १०३३ किये मनोरथ नानाबिधि के मेवा बहुबिधि लाई।
सो हरिने स्वीकार कियो सब निरखि परम सुख पाई १०३४ सुबल
सुबाहु तोक श्रीदामा सकल सखा जुरिआये। रतन चौकमें खेल म-
चायो सरस बसन्त बधाये१०३५करत परस्पर गोपग्वाल मिलिक्रीड़ा
अति मनभाई। सुरँग अबीर गुलाल उड़ावत रह्योगगन सबछाई १०३६
फगुआ देन कह्यो मन भायो सबै गोपिका फूलीं। कंठ लगाय चलीं
प्रीतम को अपने गृह अनुकूलीं १०३७ करत आरती बिबिध भांतिसों
यशुमति परम सुहाई। सखावृन्द सब चले यमुन तट खेलत कुंवर क-
न्हाई १०३८ बैठे जाय सघन कुंजनमें यमुना तीर गोपाल। सखी एक

गहँ आय निकटही बोली बचन रसाल१०३९ वृन्दावन फूल्यो नँदनंदन सघन कुंज यहभांत। हरि प्रसीत मुकुलित द्रुम पल्लव मुखरित मधुकर पांत १०४० ठौर ठौर झिल्ली धुनि सुनियत मधुर मेघ गुंजार। मानो ऋतुराय मिलि कुसुमाकर फूले करत बिहार १०४१ अपनो सब गुण सुन्दै सेवावन स्मर अनन्त मिलिआयो। मधुर माधुरी मुकुलित पल्लव लागत परम सुहायो १०४२ गोवर्द्धन के शिखर सुभगपर फूले कुसुम पलास। सहज सुरत सुखदेत सँयोगिन बिरहिन करत उदास १०४३ पुहुप पराग परस मधुकर गन मत्त करत गुंजार। मनो कामि जन देख युवति जन बिथया शक्ति अपार १०४४ बीथिनबिपिन बिलोकि बिबिध सब मणिड़त कुसुमित कुंज। मनहुं हेम मंडपिका सुखरिति कल्प लता रस पुञ्ज१०४५ बेगचलौ वृन्दावन नायक राधा मारग जोवत। हिलमिलखेलो मन्मथक्रीड़ा क्यों बसंतदिन खोवत१०४६ सुनतबचन ललिताके मोहन तुरतचले उठिधाय। कियोबसंतखेल वृन्दावन अद्भुत फागु मचाय१०४७ लता लता बन बन कुञ्जन में खेलत फिरत बसंत। मनहुँ कमल मण्डल में मधुकर बिहरत हैं रसमन्त१०४८ उत श्यामा इत सखा मण्डली उत हरि इत ब्रजनार। मनो तामरस पारस खेलत मिल मधुकर गुञ्जार१०४९ खेल बसंत बहुत सुख मान्यों हर्षे गोपी ग्वाल। बिहँसि गये ब्रजराज भवन सब चञ्चल नैन बिशाल १०५० होरी डांडो दिवस जानके अति फूले ब्रजराज। बैठे सिंहद्वारपै आपुन जुरिके गोप समाज१०५१ बिप्र बुलाय वेदबिधि करिके होरीडांडो रोप। आनन्दे सब गोप मण्डली मन्मथ कियो प्रकोप१०५२ परिवा प्रथम दिवस होरी को नन्दराय गृह आई। सकल सौंज गोपी कर लेके खेलन को मनभाई १०५३ दुइज दुहूँ दिशि ते होरी मचि सुरङ्ग गुलाल उड़ायो। मनो अनुराग दुहुँन के अन्तर सबहिन प्रकट कराया १०५४ तीज तरुणि मिलि पकरे मोहन गहिकर अञ्जन दीनों। मत्त मधुप बैठ्यो अम्बुज पर मुखरत है सुरभीनों १०५५ चम्पकलता चौथदिन जान्यो मृगमद घोर लगायो। मनहुँ नील जलधर के ऊपर कुसुमाकर लपटायो१०५६ पांचै प्रमदा परम प्रीतिसों केसर छिड़की घोर। मनहूँ सुधानिधि बर्षत घनपर अमृत धार चहुँओर१०५७ छठि

छरागनीगाय रिझावत अति नागर बलबीर। खेलत फाग संग गो-
पिनके गोप वृन्दकी भोर १०५८ सातें रीजि सुगन्ध सब सुन्दरि ले
आईं उपहार। बल मोहन को हँसत खेलावत रीझ भरत अंकवा-
र १०५९ आठे अति आतुर अबला प्रिय चुम्बन दीन्हों गाल। नाना
बिधि शृङ्गार बनाये बेंदा दीन्हों भाल१०६० नवमी नोखत साजि रा-
धिका चन्द्रावलि ब्रजनारि। हो हो करत पलास कुसुम रँग बर्षत हैं
जो अपार१०६१ दशमी दशो दिशाभइ पूरित सुरँग सबीर गुलाल।
मनु प्रीतम मिलिबे के कारण फूले नयन बिशाल १०६२ एकादशी
एक सखि आई डार्यो सुभग अबीर। एक हाथ पीताम्बर पकर्यो
छिरकत कुम कुम नीर १०६३ द्वादशिमची दुहूंदिशि होरी इत गोपी
उत ग्वाल। इत नायक बलमोहन दोऊ उत राधा नवलाल १०६४
तेरस तरुणी सब मिलके यहकीन्हों कछुक उपाय। तोक सुबल मधु
मंगल बोल्यो सबहिँन मतो सुनाय १०६५ चौदशि चहूँ दिशा सों
मिलिके गठजोरो गहि भोर। मनमोहन पिय दूलह राजत दुलहिन
राधागोर १०६६ देखि कुहूं कुसमाकर फूल्यो मधुप करत गुंजार।
चंद्रावलि केसर ले आई छिरके नंदकुमार १०६७ शुक्लपक्ष परिवा
पुरुषोत्तम क्रीड़ाकरत अपार। हलधरसंग सखा सबलीन्हें डोलतगृह
गृह द्वार १०६८ द्वैज दाम कुसुमन की गूंथी अपने हाथ सँवार। दई
पठाय भानुतनया को पहिरत घोषकुमार १०६९ तीज तरुणि सब
गावतआईं नन्दरायदरबार। पकरेआय श्यामनद सुंदर भेटत भरिअंक-
बार १०७० चौथ चहूंदिशिते सबधाये सखा मंडलीआय। इततेआईं
कुंवरि राधिका होरी अधिक मचाय १०७१ पंचमिपंच शब्द करि
साजे सजि बादित्र अपार। रुजमुरज ढफताल बांसुरी झालरको झं-
कार १०७२ बाजतबीर रबाब किन्नरी अमृत कुण्डली यंत्र। सुरसुर
मंडल जल तरंग मिल करत मोहनीमंत्र १०७३ बिबिध पखावज आ-
वज संचित बिच बिच मधुर उपंग। सुर सहनाई सरस सारँगी उपजत
तानतरंग १०७४ कंसताल कठताल बजावत शृङ्गमधुर मुहचंग। म-
धुर खंजरी पटह प्रणाव मिल सुख पावत रतभंग १०७५ निपटन के-
री श्रवणन धुनि सुनि धीरन रहे ब्रजबाल।मधुरनाद मुरलीको सुनके

भेटे श्यामतमाल १०७६ छठि को षटरस सरस बनायो हरि भोजन करवायो। नानाविधि पकवानबनायो जेंवत अति सुखपायो १०७७ सातें सखिमिलि बारीलाई आरोगे ब्रजराज। आठेंदिशा सकलमिल ठाढ़ोदूरकरी सब लाज १०७८ नवमी नवसत साजि राधिकाहरिसों खेलतफाग। दशमी दशहुदिशा परिपूरण बाढ्योअतिअनुराग१०७९ एकादशी राधिका मोहन दोउमिल खेलनलाग। बैठेजाय सघन कुंजनमें जहँ सहचरि बड़भाग १०८० सघनकुंजमें डोल बनायो भूलत हैं पिय प्यारी। ललितादिक बीरी जो खवावत नानाभांति सँवारी १०८१ अतिसुगंध घसलाय अरगजा छिरकत सांवलगात। हरिवारी प्यारी हरि छिरकत शोभा बरणिन जात १०८२ द्वादश दिवस दुहूं दिश माच्यो फागुसकल ब्रजमांझ। आलिंगन सबदेत श्यामकोलखे न सुन्दरसांझ १०८३ तेरस भामिनि पियो अधररस अतिआनंदअघाय। चहुंदिशते गहिके गठ जोरी कीन्हों सखियन आय १०८४ पून्यो सुखपायो ब्रजबासी होरी हरष लगाय। परमराग अनुरागप्रकटभयो अतिफूले ब्रजराय १०८५ यशुमतिमाय लाल अपनेकोशुभ दिन डोल भुलायो। फगुवादियो सकल गोपिनको भयो सबन मन भायो १०८६ यमुनाजल क्रीड़त ब्रजबासी संगलिये गोबिंद। सिंहद्वार आरती उतारत यशुमति आनँद कंद १०८७ यहिबिधि क्रीड़त गोकुलमें हरिनिज वृन्दाबन धाम। मधुबन और कुमुदबन सुंदर बहुलाबन अभिराम १०८८ नन्दग्राम संकेत खिदर बन और काम बन धाम। लोहबन माटबेलबन सुन्दर भद्रटहद बनग्राम १०८९ चौरासी ब्रजकोस निरन्तर खेलतहें बलमोहन। सामवेद ऋग्वेद यजुरमें कहेउ चरित ब्रजमोहन १०९० व्यासपुराण प्रकट यह भाष्यो तंत्र ज्योतिषिन जान्यो। नारदसों हरि कहेउ कृपाकर अमृतबचन परवान्यो १०९१ मनकादिकसों कहेउ आपुहरि निज बैकुंठ मझार। व्यासदेव सुकदेवसहामुनि नृपसोंकियो उचार १०९२ नारायण चतुरानन सोंकहिनारद भेद बतायो। ताते सुनिके व्यास भागवत नृप शुकदेव जतायो१०९३ शेषकहेउ जो सांख्यायनसों सुनिके सनत्कुमार। कहेउ टहस्पतिपुनि मैत्रेसों उद्धवांकियो बिचार १०९४ ऐसे विविधप्रमाण प्रकटब्रहुलीला

करि ब्रजईश । सोई श्री शुकदेव महामुनि प्रकटकही राधीश१०९५ वृन्दावन हरि यहिविधि क्रीडत सदा राधिकासंग । भोरनिशा कबहू जानतहैं सदा रहत यकरंग १०९६ सघनकुञ्जमें खेलत गिरिधर मथुराकी सुधिबिसराई । राखे बरजि राधिकारानी अबजनक्योंमिजाई१०९७ राखौं कंठलगाय लालको पलकओट नहिं करिहौं । युग कुच बीच भुजा दोउनमिल सदा प्रेमरंग भरिहौं १०९८ सदा एकरस एकअखंडित आदि अनादि अनूप । कोटिकल्प बीतत नहिं जानत बिहरत युगुल सरूप १०९९ संकर्षण के बदन अनल तें उपजी अग्नि अपार । सलल ब्रह्मांड तुरतलेजरों मानो होरी दई पजार ११०० सकल तत्व ब्रह्मांड देवपुनि माया सबबिधि काल । प्रकृतिपुरुष श्रीपतिनारायण सबहैं अंश गोपाल ११०१ करम योग पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रमभरमायो । श्रीवल्लभ गुरुतत्व सुनायो लीलाभेद बतायो ११०२ तादिन ते हरि लील गाई एक लक्ष पदबंद । ताको सारसूरसारावलि गावत अति आनन्द ११०३ ॥ अथ श्रीनाथजी केबरदान ॥ तब बोले जगदीश जगत गुरु सुनो सूर ममगाथ । तुकृत समयश जो गावैगो सदारहै मम साथ ११०४ खेलत यहि बिधि हरि होरी हो होरी हो बेद बिदितयह बात ॥ * ॥ धरिजिय नेम सूर सारावलि उत्तर दक्षिण जाज । मन वांछित फल सबहीपावें मिटै जन्म जंजाल ११०५ ओंले सुनै पढ़ै मन राखे लिखै परम चितलाय । ताके संग रहत हौं निशदिन आनन्द जन्म बिहाय११०६ सरस संमतसर लीलागावैयुगलचरणचितलावैं । गरभबास बंदीखानेमें सूर बहुरि नहिँ आवें ११०७ इतिटेक ॥ इतिश्री सूरदासजीकृत सम्मतसरलीलातथासवालाखपदकेसूचीपत्रसमाप्त ॥

रागसारंग ॥ हरि हरि हरि सुमिरण करो । हरि चरणारविन्द उरमें धरो ॥ हरिकी कथा होय जब जहां । गंगाहू चलि आवे तहां ॥ यमुना सिन्धु सरस्वतिआवे । गोदावरी बिलम्ब न लावे ॥ सर्व्व तीर्थकोबास तहाँ । सूर हरि कथा होवे जहां १ यहि बिधि राजा करो बिचार । राजसाज सबही कोडार ॥ जीरन पट कोपीन तनधारो । चलो सुरसरी शीश उघारी ॥ पुत्र कलत्र देख सबरोवे । राजा तिनकीओर नजोवे ॥ राजा चलत चले सब लोग । दुखित भये सब प्रीति बियोग ॥ राजा

गंगाके ढिगआये । किये स्नान मृत्तिका लगाये ॥ करि संकल्प अन्न जल त्यागो । केवल हरिपदसों अनुरागो ॥ ऋषि वशिष्ठादिक तहँ आये । नारद आदि तहां मुनिधाये ॥ कुश आसन दे तेहि बैठाये । यों कहि पुनि तिनको शिरनाये ॥ धन्यभाग तुम दरशन पाये । मम उद्धार करन तुम आये ॥ तुम देखत हरि सुमिरण होई । और प्रसंग चले नहिँ कोई ॥ आज्ञाहोय करौं अब सोई । जातें मेरी सद्गतिहोई ॥ कोई कहै ज्ञान विस्तारो । कोई कहत यज्ञ निस्तारो ॥ कोऊ कहै मन्त्रजप करना । कोऊ कहै बहुत बिधि बरना । राजा कहेउ सप्तदिन माहीं । होनु अन्त मोहिँ सूझतनाहीं ॥ यहि अन्तर शुकमुनि तहँआये । ठाढ़ भये सब मुनि समुदाये ॥ करि प्रणाम नृप आसन दीन्हों । पुनि सनमान ऋषि नसबकीन्हें ॥ शुकको नृप कहेउनहिंजाई । शुकको रह्यो कृष्ण रसछाई ॥ शुककी महिमा शुकही जाने । सूरदास कहि कहा बखाने २ ॥ प्रथमभगवन्नाम महिमा ॥ रागभैरव ॥ कृष्णनाम रसनारटत सोईधन्य कलिमें । ताकेपदपंकजकी रेणुकी बलिमें ॥ सो सुकृत सोईपुनीतसोई कुलवन्ता । जाको निशि बासररहे कृष्णनाम चिन्ता ॥ योग यज्ञ तीरथ व्रत कृष्णनाम माहीं । बिनाकृष्णनाम कलि उद्धार और नाहीं ॥ सब सुखको सार कृष्ण कबहूं ना बिसरिये । कृष्णनाम ले ले भवसागरको तरिये ॥ श्रीगोवर्द्धन धरण प्रभु परम मंगलकारी । उधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ३ ॥ राग बिलावल ॥ भृङ्गीरे भजु चरण कमलपद जहां न निशिको त्रास । जब बिधुभानु समान एकरस सुखवारिज सुखरा-स ॥ जहां कंजलता भक्ति होतिनो लक्षण रस एक निगम संग । शुक नारद शारद भँवर भृङ्ग अनंग ॥ शिव बिरञ्चि खञ्जन मनरञ्जन क्षण क्षण प्रगट प्रवेश । सुनु मधुकरी भ्रमत्याग मदन राजीव केश ॥ चरण सरोवर ब्रह्म शिव हंस सनक सनन्दन ब्यास । सुर प्रभु सुगन्ध में प्र-फुलित तहां चल करिये बास ४ ॥ अथ सप्तऋषि उत्पत्ति ॥ ब्रह्मा सुमिरण करि हरि नाम । प्रगट किये ऋषि सप्त अभिराम ॥ भृगु मरीचि अंगिरा वशिष्ठ । अत्रेय पुलह भयो पुलस्त ॥ दक्ष प्रजापति आदिक भये । तिनते अनेक औरहू किये ॥ तिनते प्रगटी सृष्टि अपार । सूर कहाँलगि कहेपसार ५ शुकसों नृपति परीक्षित सुन्यो । तिन पुनि

भलीभाँति करगुन्गो ॥ सुत सेवकन तब मुनियों कहेउ। बिदुर मयत्रो सों पुनि लहेउ ॥ सुनि भागवत सबन सुखपायो। सूरदास सो बरणि सुनायो ॥ * ॥ अथ व्यास सम्वाद ॥ * ॥ सुतव्यासमों हरिगुण सुने। बहुरो तन तजि मनमें गुने ॥ सो पुनि नैमिषार में आयो। तहां ऋषिन को दर्शन पायो ॥ शिष्यन कहेउ भागवत सुनाई। भली भांति हरिके गुणगाई ॥ प्रथम कहेउ तिन ब्यास अवतार। सुनो सूरसो अब चित धार ६ ॥ अथ व्यास अवतार वर्णन ॥ सत युग लाख बरस की आई। त्रेता दश सहसकरिगाई ॥ द्वापरदश एकही भाई। कलियुग सतसेवत रहि गाई ॥ शोक ऋषिन सुननेको भाई। कलि मर्याद कही नहिँ जाई ॥ तातें हरि करि ब्यास अवतार। करी संहिता वेद बिचार ॥ बहुरि पुराण अठारह किये। एतहु शान्ति न आई हिये ॥ तब नारद तिनके ढिगआये। चारश्लोक कहे समुझाये ॥ यह ब्रह्मा सों कहे भगवान। ब्रह्मा मोसों कहे बखान ॥ सोई अब मैं तुमसों भाखी। कही भागवत इनमें राखी ॥ श्रीभागवत सुने जो कोई। ताको हरिपद प्रापतहोई ॥ ऊँच नीच ब्योरा नहिँ कोय। हरिको भजय सो हरिको होय ॥ जैसो लोहा पारसहोय। ब्यासभई मेरीगति सोय ॥ दासी सुत मैं नारदभये। दोयदासके सब मिटिगये ॥ ब्यासदेव तब करि हरिध्यान। कियो भागवत को जो बखान ॥ सुने भागवत जो चितलाई। सूर सो हरि भजि भवतरिजाई ७॥ हरि हरि हरि हरि हरिहरि हरो। हरि चरणारबिंद उरधरो ॥ हरिबियोग पांडव तजिराज। गयेहिमालय सबहीत्याग ॥ होऊकथा सुनहु चितधार। सूर कहेभागवत अनुसार ८ ॥ राग धनाश्री ॥ करमगतिटारेहु नाहिटरे। कहांविराहु कहां वे रविशशि आनिसंयोग परे ॥ गुरुवशिष्ठ पंडित अतिज्ञानी रचिपचि लगनधरे। पितामरनअरु हरनसियाको बनमेंबिपतिपरे ॥ भारतमेंभरबीइको अंडा घंटाटूटिपरे। हरिश्चन्द्र से दानी राजा नीचको पानिभरे। तीन लोक भावीके बशमें सुर नर देह धरे ॥ सूरदास होनीसो होहै काहेको शोचकरे ९ ॥ करुणा निधि तेरी गति लखि न परे। धर्म्म अधर्म्म नियेधि अबिद्यहि करण अकरणकरे ॥ जय अरु विजय अकर्म कियो कह ब्रह्मशरापदिवायो। असुर योनि दीनी ताऊपर धर्म अछेद करायो ॥ पितावचन खंडे सो

पापी सोई प्रह्लादहिकोनो। निकसे खम्भबीचतें नरहरि ताहिअभय पद दीनो। दान धर्म्म बहुकीन भानुसुत सोतुम बिमुख कहायो। वेद विरुद्ध सकल पांडवसुत सो तुमरेमनभायो। यज्ञकरत जु बिरोचनको सुत वेदवचन बिधिकर्म। द्विजकुल पतित अजामिल विषयी गणिका हाथ बिकायो। सुतहित नामलियो नारायण सो वैकुंठ पठायो। पतिव्रता जालंधर युवती सो पतिब्रततेटारी। दुष्टपुंश्चली अधम सुवेश्या शुआ पढ़ावत तारी। मुक्तहेतु योगी श्रमकरई असुर विरोधी पावै। अबिगत गति करुणामय तेरी सूर कहा कहि गावै १०॥ अबिगति गति जानी न परै। मन बच अगम अगाध अगोचर केहिबिधि बुध संचरै। अतिप्रचंड पौरुषसोमातो केहरि भूखमरै॥ तजिउद्यम आकाश कर बैठ्यो अजगर उदरभरै। कबहुंक तृण बूड़तपानीमेंकबहुंक शिला तरै॥ बागरसे सागर करि राखे चहुंदिशि नीरभरै। पाहन बीच कमल बिगसाहीं जलमें अगिनि जरै॥ राजारंक रंकते राजा लेशिर छत्रधरै। सूर पतित तरिजाय छिनकमें जो प्रभु टेक धरै॥ ११॥ राग धनाश्री॥ निगम कल्पतरु पक्वफल शुक मुख तेजु दयो॥ श्रीशुकदेव कृपा करिके अति परीक्षित श्रवणपयो॥ ज्ञान दीप हिरदे प्रगट्यो मनोकामना काजलयो॥ जगमें प्रकाश करि हरि कथा उरको तिमिर सबहि गयो। सूरश्याम सुनहो रसिकनसखि वारंबार रस पीवो नयो॥ १२॥ रागनीसोरठ॥ सुवा चलि व बनको रसलीजे। जाबनकृष्ण नाम अमृतरस श्रवणपात्र भरि पीजे॥ को तेरो पुत्र पिता तू काको मिथ्याभ्रम जगकेरो। कालमंजार लै जइहै तोको तू कहै मेरोमेरो॥ हरि नामारस मुक्तखेत्र चलि तोको देखराऊं। सूरदास साधनकी संगति बड़े भाग जो पाऊं॥ *॥ अथ श्री भगवान्की सेवा फलकीर्तन॥ रागनी बिलावल

भजो गोपाल भूलि जिनिजाउ। मानुष जन्मको यहीहै लाउ॥ गुरुसेवा करिभक्ति कमाई। कृपाभई तबमनमें आई॥ रही देहसों सुमरोदेवा। देहधारि करिये यहसेवा॥ सुनो संत सेवाकी रीति। करै कृपा मन राखे प्रीति॥ उठके प्रात गुरुन शिर नावै। प्रात समय श्रीकृष्णहि ध्यावै॥ जोई फल मांगै सोइ पावै। हरिचरणन में जो चित लावै॥ जिन ठाकुर को दरशन कियो। जीवन जन्म सुफल करि लियो॥

जो ठाकुरकी आरतिकरै। तीनलोक वाके पायन परै॥ जोठाकुरको करै प्रणाम। विष्णुलोक तिनको निजधाम॥ जोकोइ हरिकोसुमिरै नाम। ताकेसकल पूरणहैं काम॥ जोठाकुरको ध्यानलगावै। ध्रुवप्रह्लाद की पदवी पावै॥ जिन हरिको चरणामृत लियो। विष्णुधाम अपनो घर कियो॥ जो हरिआगे बाद्य बजावै। तीनलोक रजधानी पावै॥ जो जन हरिको ध्यान करावै। गर्भबासमें कबहुं न आवै॥ जोहरिको नित करै सिंगार। ताको पूरणहै स्वीकार॥ जोदर्पण ठाकुरहिं देखावै। चन्द्र सूर्य ताको थिर नावै॥ जो ठाकुरहिं सुतुलसि चढ़ावै। ताकी महिमा कहत न आवै॥ जो कीर्तन ठाकुरहिं सुनावै। ताको ठाकुर निकट बुलावै॥ हरिमंदिरमें दीपक करै। अंधकूप में कबहुं न परै॥ जो ठाकुरकी सेज बिछावै। निज पदपाय दाससो कहावै॥ पलनाजो ठाकुरहिं झुलावै। बैकुंठ सुख अपनेघर ल्यावै॥ जोठाकुरहिं झुलावै डोल। नितलीलामें करै कलोल॥ उत्सवकरि मन आरति करै। ता आधीन रहै श्रीहरै॥ जोठाकुरको भोग धरावैं। सदा परम नित आनंद पावैं॥ जो पद दीन्ह यशोदामात। ता सुखकी कछु कही न जात॥ ग्वालन सहित गोपाल जिमावै। सो ठाकुरको सखाकहावै॥ जो ठाकुर को स्वाद करावै। सो ताको फल तबहीं पावै॥ गोबर्द्धन की लीलागावै। चरणकमल को तबहीं पावै॥ श्री यमुनाजल करै जोपान। सो ठाकुर के रहै निधान॥ जहां समाज वैष्णवी होवै। ताकी संगति नितप्रति जोवै॥ श्रीभागवतसुनै आनँद करि। ताके हृदय बसे नितही हरि॥ जो ठाकुर को देह समरपै। उत्तम ग्रंथ ज्ञानके अरपै॥ जिन हरि की गगरी भरिआनी। तिन बैकुंठ अपनी स्थिति ठानी॥ जो ठाकुर को मन्दिर लेपै। मायाताके कबहुँ न लेपै॥ जो ठाकुर को सीधो बीने। जितने तीरथ तितने कीने॥ जो ठाकुरकी माला पोवै। सोइ परमभक्त नित होवै॥ जो ठाकुरको चन्दन लावै। त्रिबिधताप सन्ताप मिटावै॥ जोठाकुरके पायनधोवै। सदासर्बदानिर्मल होवै॥ जो हरि कीर्त्तनमुखमों करै। मुक्ति चारहूं पायनपरै॥ सेवामें जो आलस करै। कूकर ह्वैके फिर फिर मरै॥ मनसा जोसेवा आचरै। तबहीं सेवा पूरीपरै॥ सेवाको आश्रय करि रहै। दुख सुख

बचन सबनको सहै ॥ जो सेवामें आलस लावै ॥ सो जड़ जनम प्रेतको पावै । वेद पुराणान में यों भाख्यो ॥ सेवा रस ब्रज बीथिन चाख्यो ॥ सेवाकी यह अद्भुत रीती । श्री विठलेश सों राखे प्रीती ॥ श्री आचार्यहि प्रकट बनाई । कृपा भई तब मनमें आई ॥ सेवाको फल कहेउ न जाई । सुखसुमिरे श्रीवल्लभराई ॥ सेवाको फल सेवा पावै । सूरदास प्रभु हृदय समावे ॥ इतिसूरदास बिरचित सेवापद ॥

रागबिहाग ॥ भरोसो दृढ़ इन चरणन केरो । श्रीवल्लभ नखचन्द्र छटा बिन सबजग मांझ अंधेरो ॥ साधन और नहीं या कलिमें जासे होय निवेरो । सूरकहा कहे द्विविध आंधरो बिनामोल को चेरो ॥

इति श्री रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम सूर
सागरस्य सूरसारावली समाप्ता

*

श्रीगणेशायनमः ॥

रागकल्पद्रुमः॥नित्यकीर्त्तन॥

श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥ अथ श्रीकृष्णानंद व्यासदेव रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम नित्यकीर्त्तन प्रारंभः॥ रागभैरव ॥ मंगल माधो नाम उचार। मंगल वदन कमल कर मंगल मंगल जनहि सदा संभार। देखत मंगल पूजत मंगल गावतमंगल चरित उदार। मंगल श्रवण कथारस मंगल मंगलतन वसुदेव कुमार। गोकुल मङ्गल मधुबन मंगल मङ्गल रुचि वृन्दावन चन्द। मंगलकरन गोवर्द्धनधारी मङ्गल वेष यशोदानन्द॥ मङ्गलधेनु रेनुभुव मङ्गल मङ्गल मधुर बजावत बेनु। मङ्गल गोप वधू परिरंभन मङ्गल कालिन्दी पय फेनु। मङ्गल चरणकमल मंगल मङ्गल मङ्गल कीरति जगत निवास। अनुदिन मङ्गल ध्यान धरत मुनि मङ्गलमति परमानन्द दास १ मङ्गल रूप यशोदानन्द। मङ्गल मुकुटश्रवन मधि कुण्डलमङ्गल तिलकविराजत चन्द। मङ्गल भूषण सब अंग सोहत मङ्गल मूरति आनंद कन्द। मङ्गल लकुट कांखमें चापे मङ्गल मुरलि बजावत मन्द। मङ्गल चाल मनोहर मङ्गलदरशन होत मिटत दुखदन्द। मङ्गल ब्रजपतिनामसबन को मङ्गल यशगावत श्रुतिछंद २ उठोहो गोपाललाल दुहोधोरीगैया सद्य दूधमथि पीवहु भैया॥ भोरभयो बनतमचरबोले। घरघर घोषद्वार सब खोले। तुम्हरे सखा बुलावन आये। कृष्ण कृष्णकहि मङ्गलगाये। गोपी रई मथनियां धोवें। अपनो अपनो दही बिलोवें। भूषन बसन पलटि पहिराऊं। चन्दन तिलक ललाट बनाऊं॥ चार भुजा गोवर्द्ध धारी। मुख छबिपर बलिगइ महतारी ३ जागो हो मेरे जगत उजा कोटिक मन्मथ वारों मुसकनि पर कमल नयन अंखियन के तारे संगग्वाल बछ सबलेके यमुनाकेतीर बनजाउसवारे। परमानंद कही नँदरानी दूर जिन जाहु मेरे ब्रज रखवारे ४ आछो नीको लोनो मु

भोरहो दिखाइये। निशि के उनींदे नैन तोतरात मीठे बैन भावतहो जीके मेरे सुखही बढ़ाइये। सकलसुख करन त्रिविधि तापहरन उरको तिमिर बाढेउ तुरत नशाइये। द्वारेठाढ़े ग्वालबाल करउ कलेउलाल मिश्री रोटी छोटी मोटी माखनसों खाइये। तनिकसों मेरो कन्हैया वारि फेरी डारी मैया बेगी तो शुद्ध बनाय गहरु न लाइये। परमानंद जन जननि मुदित मन फूली फूली फूली उर अंग न समाइये ५ उठोनंद-कुमार भयो भिनुसार जगावत नँदरानी। झारी के जल बदन पखारत सुतकहि सारंग पानी। माखन रोटी अरु मधुमेवा भावे सो लीजै हो आनी। सूरश्याम मुख निरखि यशोदा मनहीं मन जु सिहानी ६ उठे नंदलाल सुनत जननी मुखबानी। आलस भरे नैन उठे शोभाकी खानी। गोपीजन थकितहिये चितवति सब ठाढ़ी। नैनको चकोर चन्द बदन प्रीति बाढ़ी। माता जल झारी लिये कमल मुख पखारेव। नीरहीका परस करत आलस बिसारेव। सखा द्वार ठाढ़े सब टेरत हैं तुमकूं। यमुना तट चलो श्याम चारन गोधनकूं। सखा सहित जेंवहु बलि भोजन कछु कीनों। सूरश्याम हलधर संग सखा बोल लीनों ७ जागिये गोपाललाल जननी बलिजाई। उठो तात भयो प्रात रजनी को तिमिर घटो प्रकटे सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई। उठो मेरे आनँद कंद गगन चंद मंद मंद प्रगट्यो आकाशभानु कमलनि सुखदाई। सिंगी सब पुर-तबेनु तुमबिना न छुटे धेनु उठो लाल तजो सेज सुन्दर घरराई। मुखते पट दूर कियो यशुदा को दरश दियो अरु दधिसबमांगिलियो विविध रसमिठाई। जेंवत दोउराम श्याम सकल मंगल गुन निधान थारमें कछु जूठ रही सु मानदासपाई ८ प्राणनाथ प्रातभयो जागो बलिजा-ऊं। सोना केर गोफन सुबेन में गुथाऊं। उगत सूरजज्योति भई कुल-हिरी बनाऊं। पाँयबांधोंघूघरू अरु चालिबोसिखाऊं। सूरदास मदन मोहन गुन तिहारे गाऊं। हरखि निरखि छबिके उपर बलिबलि ब-लिजाऊं ९ खेलिये आँगनमें छगन मगन कीजिये कलेवा। छीकेतें सारी दधि ऊपरतें काढ़िधरी पहिरिलेउ झंगुली फेंटा बांधिलेहु मेवा। ग्वालन के संग खेलनजाहु खेलन के मिस भूषनल्याउ कीन-परी प्यारेललन निशि दिनाकी टेवा। सूरदास मदनमोहन घरही

खेलोंप्यारे ललन भंवरा चक्र डोर देहों हंस चकोर परेवा १० मदन मोहन पीय कीजे कलेऊ । दूध में रोटी सानि माखन मिश्री आनी जोई जोई भावे सोईसोई लेऊ। खाँडखीर और घृत मिठाई मेवा आप खाहु और ग्वालन को देऊ। बृजपति पीय फेर खेलनको जाउ बल सुबल श्रीदामा को संग करिलेऊ ११ भोरनिकुंज भवनते भामिनि। आवति है लटकति गज गामिनि। अलक सुगन्धसगबगीछूटी। निशिकेउनींदे नैनबीरबहूटी॥पलटित बसन रसन मनि भूषण। शोभाअंग अंग जित दूषण। गुन निधान वृषभान दुलारी। दासी गोपाल लालजूकी प्यारी १२ रैनजागी पिय संग रंग भीनी। प्रफुलित मुख कंज नैन खंजरीट मीन मैन बिथुरि रहे चूरन कच बदन ओप कीनी। आतुर आलस जम्हात पुलकित अति पान खात मदमाते तन सुधि न रही शिथिल भई बेनी। मांगते टरि मुक्ताहल अलक संग अरुझि रही उरगन सतफलि मानो कंचुकी तजि दीनी। विकसति ज्यों चंपकली भोर भये भवनचली लटपटात प्रेमघटा गजगति गति लीन्हीं। आरति को करत नाश गिरधर सुठि सुखकीराशि सूरदास स्वामिनि गुन गने न जात चीन्हीं १३ नागरी नव लाल संग रंग भरी राजे। श्याम अंश बाँह दिये कुंवरि पुलकि हिये मंदमंद हंसनि जिया कोटि मदन लाजे । तरु तमाल श्याम लाल तरुणी अँग अंग वेलि निरखि सखी छबिसों केलि नूपुर कल बाजे। दामोदर हित सुबेत शोभित सविसुदेशनव निकुंज भंवर गुंज कोकिल कल गाजे १४ ॥ अथखंडिता॥ नव कंज नैन रति रंगरगे। प्रिया प्रेम बली रस रास रसमसे आलस वश माधुरी अंगअंगे। रूप यौवन चपलता गुनानआगरे मधुप खंजन मीन मान भंगे। कहे कृष्णदास कामिनि उरसि सधअगति गिरधरन सुखद प्रतिबिम्ब संगे १५ प्रातकाल प्यारेलाल आवनी बनी उरसि मरग जो सुमाल डगमगि सुदेश चाल चरन खदि मदन जीति करत हो मनी। प्रियाप्रेम अंगराग सगबगी सुरंग पाग गलित बरुह चूडश्यमज बारि कण सनी। कृष्णदासप्रभु गिरिधरकंठ सुरतपत्रलिख्यो करज लेखनी सुनि पुन राधिका गुनी १६ आजु नीके बने नंद नंदा। बदन इन्दु की ज्योति निरखि नभ चन्द्रमा क्षार अंबुधि परत

सघनचन्दा। श्रमस्वेदकन गातलालगिरिवर धरनसुखदेत मलयजसु पवनमंदा। कृष्णादासनाथ डग मगत पग चलतमानों कुंवर गूंथ्यो प्रेम फंद१७ललितबदन गलित कुसुम बलितकेश अतिसुदेश नयन नलिन रगमगेशशिशरद शर्बरी। मरगजोउरमाल शिथिल कहुंकहुं चंदनकी रेखरसभरे लपटातगातमधुप अर्बरी। शोभित उरउरजलखि मनो परसत नहिं परत पसिमनखछबि पर वारिडारों चंद खर्बरी। बासुदेव लालकल्याण गिरिधरको सुयशगावत श्रीबिट्ठलपदकमल रजप्रताप गर्बरी १८ भोर अंग २ शोभा श्यामके भली। मानहुं बिकसित बिचित्र नील कमल की कली। प्रिया उरसि लग्न राग सरस कुरित छबि पराग पवनपरसि मंदले सुगंधको चली। करि प्रवेश श्याणहार हरति युवति चित्तसार मरम बेधि समर बाण कामते बली। पलटि बसन सुखनिधान मत्त मधुप करतगान सुरत समै सुयश सुनोश्रवनदैअली। गोपालदास मदनमोहन कुंज भवन बलित रंग मुदित अवनि भावनी सुभाग केरली १९ शोभित सुभग लटपटी पाग भीने रसिक प्रिया अनुराग। कुंकुम तिलक अलक सेंदुर छबि अरुन नयन घूमत निशि जाग। कछु जँभात उर माल मरगजी पीक कपोल अधर मसि दाग। चतुर्भुज प्रभु गिरिधर नीकेलागत आलस बश सब अंग बिभाग २० भोर तमचुर बोले दोनों जू दरशाना। आतुरह्वै उठि धाये डगत चरण आये आलसमें नैन बैन अटपटी रसना। संध्या जु कहि सिधारे बचन जीयमें संभारे सकुचिके मदमंद प्रकटित दशना। चतुर्भुजप्रभु गिरिधरन सिधारो तहां जहां रति रंगरस लपटाये बसना२१ घूमत मत्तगज ज्यों चलतडगमगे। बतियाँकहत सैन मुख न आवतबैन आलसउनींदे नैन शोभित रगमगे। नागर नंदकिशोर नीकी छबि आयेभोर अंगअंग रतिरण चिन्ह जगमगे। चतुर्भुज प्रभु गिरिधर नहीं लागेपलक चारि जाम जीति काम रहे जूठ डगमगे २२ आजु छबि देत नयना आलस भरे रगमगे। रैनपलक न परी सुरतरन जेकरी भोरआये लाल धरत पग डगमगे। तन और गति भांति कहत कही न जाति कांति अद्भुत सकल अंग अंग जगमगे। चतुर्भुज प्रभु गिरिधर न भलीकरी पलटि आये बसनसोंधे मिले सगमगे२३ भोर डगमगतपग जीति मन्मथचले।

मकलर जनी डगे नयन नहिं पललत अरुन आलस चलतनयन लागत
भले। करिबनगर नत चिन्ह प्रकटित करत बसन आभूषन सुरतरन
दलमले। चतुर्भुजदास प्रभुगिरिधर छबिबढ़ी अधर काजर कुंकुमअंग
अंगरले २४ डगमगात आये नटनागर। कछु जंभात अलसात भोरभये
अरुण नयन घूमत निशि जागर। रसिकगोपाल सुरतरनको जस स-
कल चिन्ह लाये उरकागर। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन कुंजगढ़ रतिपति
जीत्यो रस सुखसागर २५ भोरभये आये हो ललन नीकी भांतियां।
जावकके उरचिन्ह नीलपट प्यारी दीनेनयन आलस भीने जागे सब
रतियां। छुटी ग्रीवा बन दामन खचित अभिराम कैसेके दुरत श्याम
डगमगी गतियां। केशवदास प्रभु नन्दसुवन काहे लजात भलेजू सांव
रेगात जानी सब घतियां२६ आइयेजू भले आयेकत सकुचतहो। तुम
संग्राम कीने सौतिनको सुखदीने याही रसभीने हांपे मोको तोरुचा
हो। तुमदेखे रिसगई उपजीहै प्रीति नई भई सोतो भई अब काहेसे
शोचतहो। नारायण मोहिं जानो वहे चेरी करिमानो कहा जीय रे
तो अभिलाष जू शोचतहो २७ अरुणनयन राजत प्रभुभोरे। अति सुख
सुरत किये ललना संग जात समद मन्मथ शर जोरे। राति उनींदे अ
लसात मरालगति गोलक चपल रहत कछु थोरे। मनहुं कमल के
कोशते प्रीतम ढूंढ़न रहत छपि रिपुदल दोरे। सजल कोप प्रतिमें
शोभियत संगम छवितारे पर ढोरे। मनहुंभारते भंवर मीनशिशुजाल
तरल चितवत चितचोरे। बरणि न जाइ कहांलों बरणों प्रेमजलद
बेलावल ओरे। सूरदासको कौन शिरोजहि हरि के सकल अंगबल
तोरे२८नाहिँ दुरत नयना रतनारे। जानु बंधूक सुमन बिशालपरसुंदर
श्याम शिलीमुख तारे। रहीजु अलक कुटिल कुंडलपर मोतनचितवत
चिते बिसारे। शिथिल भौंह धनुगहे मदनगुण रहे कोकनद बाणबि-
खारे। गुंदेही आवतहैं ये लोचन पलक आतुर उघरत नउघारे। सूरदास
प्रभु मोईधों कहो ऐसीको बनिता जासों रतिरनहारे २९ आवतलाल
गोबर्द्धनधारी। आलस नयनसरस रसरंगित प्रिया प्रेमनूतन अनुहारी।
बिलुलित मालमरगजी उरपर सुरतसमरकी लगी परागा। चुंबनश्याम
अधररसगावत सुरतिभाव सुख भैरव रागं। पलटिपरे पटनील सखीके

रसमें झीलत मदन तड़ाग। वृन्दावनवीथिन अवलोकत कृष्णदास लोचन बड़भाग ३० ॥ अथ समुदायपद ॥ रागभैरव ॥ भोर भाव तो श्रीगिरिधर देखों। सुभग कपोल लोल लोचन छबि निरखि के नयन सुफल करि लेखों। नख शिख रूप अनूप बिराजत अंग अँग मन्मथ कोटि बिशेखो। चतुर्भुज प्रभु रस रास रसिक को बड़े भाग बल इकटक पेखो ३१ श्याम सुन्दर भोर भवन आगे होय आवे। कबहूं सुख मंदहास मेरैसखि सुख किरास कबहूं बैन कबहूं नैन सैनहो जनावे। मेरी दधिमथन बार उनकी उठनि सवाररई नेतमाट समेत सकुतहो बिसरावे। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरअंग अंगकोटि मदन मूरति चलत बनको तनरुमनको चितेहो चुरावे ३२ जैये वह देशजहां नन्द नन्दनभेंटिये। निरखिये मुखकमल कांति बिरह ताप मेटिये। सुन्दर मुख रूपसुधा लोचन पुट पीजिये। लंपटलव निमिष रहित अंचय अंचय जीजिये। नख शिख मृदु अंगअंग कोमलकर परसिये। अरुअनन्य भावसो भजिमन कमबच सरसिये। रासहास भुव बिलास लीला सुख पाइये। भक्तन के यूथ सहित रसनिधि अवगाहिये। इह अभिलाष अंतरगत प्राणनाथ पूरिये। सागरकरुणा उदार त्रिबिध ताप चूरिये। छिनु छिनु पल कोटि कलप बीतत अतिभारी। परमानन्द कल्पतरु दीनन दुखहारी ३३ भोर भये नीको मुख हँसत दिखाइये। रातिके दरशके बिछुरेदोऊ पलकमेरे- वारिफेरिडारों नेकु नयननि सिराइये। कोमल उन्नत बाहूपर अमित भाव मेरीतेरी छाती छबि अधिक बढ़ाइये। छीतस्वामी गिरिधर सकलगुण निधान कहा कहूं सुख करि प्राणहोते पाइये३४ बिललित कर पल्लवमृदु बेन। हरषितहूं ब्रज आवत धेन। कोटि मदन द्युति श्याम शरीर। बिपति कल्पतरु यमुना तीर। दक्षिण चरण चरण परधरें। बामअंग भू कुंडलचले। बरुह चन्दवन धातु प्रबाल। मणि मुक्ता गुंजाफल माल। देखन चलहु सखि नन्दलाल। ललित त्रिभंगी मदन गोपाल ३५ तोहिं ध्यान लाग्यो सजनीरी। बारक दृष्टि परे मोहन। देखियत चित्र लिखीसी ठाढ़ी मदन सिंधु जल बूंद सनी। रूप निधान कमल लोचन तोहिं मिले आजुकी रजनी। कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक युवति दुख हरनी ३६ आंखिन में दुराय प्यारी

काहू देखन न दीजिये। हियेलगाइ सुखपाइ सबगुण निधि पूरण जोई जोई मन इच्छा होइ सोई सोई क्यों न कीजिये। मधुर मधुर बचन कहत श्रवणनसुख दीजिये। निर्मल प्रभु नन्द नंदन निरखि निरखि जी जिये ३७ ऐसेही करोरी दधि बिना मथन कियेदेह यशुमति नेकु अपनी रई। अपनहूं ढूंढि हारी तेसी निशि अंधियारी पाऊं न भवन मांझ कहां धौंगई। कछु न जिय सुहाई याहीते आतुरआई लोना केलालच जीय चटपटी भई। दिनाचारि करोकाज बाढो नन्दजूको राज जौलौं बहु रहों ल्याऊं नई। चतुर्भुजदास रानी मेरी अति चोप जानी ह्वै प्रसन्न मों तामहिया आनि दई। भोरही देउ अशीश बारजि निरखिसो शीश तिहारे गिरिधरकी हों बलि बलि गई ३८ श्रीनाथजी को ध्यान मेरे निशि दिना री माई। माधुरीमूरति मोहनीसूरति चितलियो चतुराई लाल पाग लटकि भाल चिबुक बेसर कंठमाल करणफूल मंदहास लोचन सुखदाई। मोरपंख शीशधरे मोतिनके हारगरे बाजूबन्द पहुँचिन कर मुद्रिका सुहाई। क्षुद्रघंटिका जेहरि नूपुर बिछिया सुदेश अंग अंग देखत उर आनन्द न समाई। मुरली अधर धरे श्याम ठाढे व्रजयुवति सांह सप्तसुरन तान गान गोवर्द्धनराई। निरखि रूप अति अनूप छाके सुर नर बिमान वल्लभ पद किंकर दामोदर बलिजाई ३९ श्रीकृष्णजीको ध्यान मेरे निशिदिना रीमाई। मनके महल प्रीतिकुंज तामें यदुराई ॥ ध्रुव ॥ सांवरे बरण कोमल चरण नखदेखे चकचौंधी होत पाय नूपुर पैंजनी सो बिधिने बनाई। दाहिने पदपद्म ताले टेढे भरत आलीरी ऐसे चरण दुखके हरणहैं सदा सुखदाई। लालझजार ताके बीच कंचनके तार लगे काछनी पचरंग तापर किंकिनी छबि छाई। बनमाल मुक्तमाल कंठवनी कौस्तुभमणि पीताम्बर चटकतामें दामिनी द्युतिपाई। बाजूबन्द अंगुरि मुंदरि नगनको अति चमत्कार अरुण अधर मधुर सुर मुरली बजाई। कमल नयन बिमल कान्ति कुंडल प्रतिबिम्ब होत आनँदसों मुख मानो रहेउ री मुसकाई। घुंघर वारी अलक झलक किये चन्दन खौर और मोर मुकुट शीश धरे बनी सुन्दरताई। कहैं भगवान हित रासराय प्रभुको निहारि श्री गोपाल २ रसना रटलाई ४० सुमिरो नरनागर बर सुन्दर गोपाललाल।

सबही दुख मिटि जैहैं चिन्तत लोचन बिशाल ॥ ध्रुव ॥ अलकन की झलकन लखि पलकन गति भूलिजात भ्रूबिलास मंदहास रदनहास करत घात रसाल। निन्दत रबि कुंडल छबि गंडमुकर झलमलात पिच्छ गुच्छ कृतअसन्त इन्दु बिमल बिन्दुभाल। अंग अंग जितअनंग माधुरी तरङ्ग रङ्ग बिमद मद गयन्द होत देखत लटकीली चाल। रतन रसन पीतबसन चारुहार बर शृँगार तुलसी रचित कुसुम खचितपीन उरखीन माल। ब्रजनरेश बंशदीप वृन्दावन बरमहीप श्रीवृषभान मान्य पात्र सहज दीनजन दयाल। रसिकरूप रूपराशि गुणनिधान जान राय गदाधर प्रभु युबती जन मुनि मानसमन मराल ४१ दीन्हों दरश सपने में आइ। क्षण एक सुख उपज्यो मेरे मन गये कहूं हरि बिरह बढ़ाइ। हाहा पाइँ परतिहैं तेरे क्योंहूं करि लावे न बुलाइ। अब न परत सोपै न रहेउ क्षण बिनुभेंटे जिय अतिअकुलाइ। यहदुख काहि कहौंसखि तोबिनु मेरेतूही एक सहाइ। कहा बिलंब करति जैबे को तोसों कहति सखि सौंहैं खाइ। वह मूरति गड़िरही हियेमें निकसति नहीं न और उपाइ। उठिये है सुनि बिनतीमेरी यशुमतिसुत रसिकिन कोराइ ४२ रागभैरव चर्चरी ॥ हरिके बिमुखनको मुख जिनि दिखावे। जिनिदिखावे नाथ जिनि दिखावे। जिनकी संगति होत दुरमतिहियें हरिके गुणरूप यश तुरत बिसरावे। जिनके परसत सदा सरस मन बिषयरस मगनह्वै जात अतिपाप उपजावे। करत करुना डरे बैर में चितधरे सतसंग परिहरे युबति चितलावे। साधु निन्दाकरे झूंठ भावे सदा प्रीतिराखे बिषयी बचन मनभावे। अनेकसाधनकरि ज्ञानराख्यो भाव क्षणकमें जलअग्नि ज्यों बुझावे। तेईजन बिमुख जे करें और बात कृष्ण न सुहात संसार धावे। साधुसंगति रहै बचन हरिगुण कहै संतत निबहै रसिक सोई सुखपावे ४३ नाथहाहा मोहिं दरश दीजै। दोषजिनि मनधरो सहज करुणाकरो बिगर साधन मोहिं दासकरि लीजै। दुखित क्षण होत जिअबदन देखिबिनारैनिदिन तपतचित्त कैसे जीजै। कासोंकहिये हिये राखिये कौनबिधि रहत नहीं क्योंहूं कर देह कीजै। लेत न उसास उरकेसेहू समाइ नहीं शोच सृगभरित पीजै। बदनलावति अमृतरसिकप्रीतम सुखदपान बिनुसकततन कैसे भीजै ४४

नेकु बोलोनाथ अमृत रसबैन । औरन सुहाइ परी करतिहौं हाय नित चितन लागत कछु नेक नहीं चैन । दीन जन मन मनोरथ के पूरन कारन और तिहुंलोकमें देखियत हैन । जे मिलत आइ ते लेत सरबसु-भाव करि कहौ कैसे हरिमनु रहै ऐन । अर्थबश रावरीहै तिहारेहाथ नाथकहो और समरथ है को दैन । रसिकपिया निठुरकरो कठिनमन दीनपर परसिकै तजत यह लखन तो घटैन ४५ ॥ ललना जागोभयो भोर । दूध दही पकवान मिठाई लीजिये माखन चोर । बिकसे कमल निमल बाणी सों बोलन लगे पक्षी चहुँओर । रसिक प्रीतमसों कहति नँदरानी सुनि आवो बैठो गोद हाहा नन्दकिशोर ४६ वृन्दावन न-वनिकुंज ठाढे उठि भोर । बांह जोरि बदन मोरि हँसत सुरत रतिको करि चितवत पुनि कछु लजाइ नैनिन की कोर । करत कबहुँ बेणु नाद श्रवरन पाइ सुधा स्वाद पक्षी गण प्रमुदित बन बोलत चहुँओर । रसिक प्रीतम छबि निहारि प्रकट्यो घन जिय बिचारि बार बार उ-मँगि तहां नाचत हैं मोर ४७ श्रीवल्लभ सुयश सन्तत नित उचिगाऊं । मन क्रम बचन क्षण एक न बिसराऊं ॥ ध्रुव ॥ पुरुषोत्तम अवतार सुकृत भल फलित जगत बंदन श्रीबिठलेश दुलराऊं । परसि पदकमल रज निरखि सौंदर्यनिधि प्रेम पुलकित कलुष कोटिक नशाऊं । श्री गिरिधरन देवपति मानमर्दन करन घोषरक्षक सुखद सुयश सुनाऊं । श्रीगोविन्द ग्वाल संग गायले चलत बन निरखि नैनन सिराऊं । श्री बालकृष्ण सदा सहज बालक दशा कमल लोचन सुहरषित रुचि ब-ढाऊं । भक्ति मारग सुदृढकरन गुणराशि व्रजमंडल श्रीगोकुलनाथही लड़ाऊं । श्रीरघुनाथ धर्म धुर धारशोभा सिंधु रूप लहरिन दुख दूरि बहाऊँ । पतित उद्धरण महाराज श्रीयदुनाथ बिशद अम्बुज हाथ सि-रसि परसाऊँ । श्रीघनश्याम अभिराम रूप बरषा स्वाती आशालगि रसना चातक रटाऊँ । चतुर्भुजदास परेउ द्वार प्रणिपत करे सकल कुलको चरणामृत भोर उठिपाऊँ ४८ भजि श्रीबिट्ठल चरणसरोजं ॥ नखमणि दीधिति दमित मनोजं । इच्छसि यदि सततं सुखसारं । त्य-जसि न किमिति विषय धृतभारं । यदि बांछसि हरि भक्ति सुरत्नं । कुरुचपलं शरणागत यत्नं । प्राप्य सुदुर्ल्लभ नर बरदेहं । परिहरि

सकल निगम सन्देहं । सानन्द हृदय संयोदित वचनं । तदयासिनो चेदितिग्रयपचनं । जन्मपदंभावयभव जलधिं । अनन्तमय भक्ताखिल बाधं । नाथ तवाहं अतिरण रावं । पूरय सतत मिमं मयि भावं । तव गुण गण कथितामृत माथे । प्रार्थ्य मिदं दिशतव रघुनाथे ४९ श्री विठलेश विठलेश रसना जपमेरी । ग्रन्थनिको यहिसार याहीमें होत पार बार बार बार कहत तोसों तुहित मेरी । अनतहु न भलो तोर वेग कहेउ करहि मोर भजिले गिरमोर नाथहि सकल सुखद केरी । जगतजनक सहाय प्रेम पुंज सुयश गाय दूरिकरी असद बात विषया अरुभेरी ५० प्रकटित सकल सृष्टि आधार । श्रीमद्वल्लभ राजकुमार । ध्येय सदापद अम्बुजसार । अगणितगुण महिमा जु अपार । धर्मादिक द्वारे प्रतिहार । पुष्टि भक्तिको अंगीकार । श्रीविट्ठल गिरिधर अवतार । नंददास कीन्हें बलिहार ५१ जय जय श्रीवल्लभ प्रभु श्रीविठलेश नाथे । निजजन पर करत कृपा धरत हाथ माथे । दोष सबै दूरि करत भक्त भावहिये भरत, काज सबै सरत सदा गावत गुण गाथे । काहेको देह दमत साधन करि मूरख जड़ विद्यमान आनँद तजि गहत क्योंअपाथे । रसिक चरण शरण सदा रहतहै बड़भागी जन अपनो करि गोकुलपति भरत ताहि साथे ५२ श्रीविट्ठलनाथ जूके चरण शरणं श्रीवल्लभनंदनं । कलिकलुष खंडनं परम पुरुषं त्रैताप हरणं । सकल दुख दारुणं भव सिंधु तारणं जनहित लीलादेह धरणं । कान्हरदास प्रभुसब सुखसागरं भूतले दृढभक्ति भाव करणं ५३ जै जै जै श्रीवल्लभनंद । कोटि कला वृन्दावन चन्द । निगम विचारें न लहे पार । सो ठाकुर अक्का के द्वार लीलाकरि गिरिधारको हाथ । छीति स्वामि श्रीविट्ठलनाथ ५४ नैन भरि देखौं गिरिधरको कमलमुख । मङ्गल आरतीकरौं प्रातही धारत निरखत होत परम सुख । लोचन विशाल छवि संचि हृदयमें धरो कृपा अवलोकन चारु भृकुटिन रुख । चतुर्भुज दास प्रभु आनन्द निधि रूप निरखिकरो दूरिसब रैनिको विरह दुख ५५ मंगल आरती गोपालकी । नित उठि मङ्गल होत निरखि मुख चितवनि नैन विशालकी । मंगलरूप श्यामसुंदर को मंगल छवि भृकुटि भालकी । चतुर्भुजदास सदामंगलनिधि बानिक गिरिधर लालकी ५६ मदनगोपाल

हमारे राम ॥ धनुशायक कर धरि विमल बने कर पीताम्बर अरु तनघन-श्याम । अपनी भुज बिन जलनिधि बांध्यो राम बचाये कौशिककाम। दश शिर हति सब असुर सँहारे गोवर्द्धन धरेउ कर बाम। तब रघुबर अब यदुबर नागर लीला नित्य विमल बहु नाम। परमानँद प्रभु भेद रहित हरि निज जन मिलिगावत गुणग्राम ५७ ॥ अथरासके कीर्तन ॥ राग भैरव ॥ राम रंगनि मिलवत नई। नाचति ब्रजललना तनु थेई। मुखरित कटि तटमणि मेखला। अभिनव गति चञ्चल करतला। नूपुर सञ्जित मोहित जना। लेति उरपगति प्रमुदित मना। कृष्णदास प्रभु रे सँकेत वारी। रिझये लाल गोवर्द्धनधारी ५८ नीको मन लाग्यो गिरिवर गावै। ततथेई ततथेई भैरव रागमिलि मुरलिका बजावै। नाचत नृप वृषभानु नन्दिनी ओघर गति रँग उपजावै। नूपुर क्वणित सुस्वरमणि कंकणमरवी यूथ सुख राशि बढ़ावै। सुरनदेत मधुमत्त मधुपकुलयक तालो सबके मनभावै। सुरति सिंधुप्यारी पियपदरज कृष्णदास न्योछावर पावै ५९ प्यारीग्रीवा भुजमेलि नृत्यतपीय सुजान। मुदितपरस्पर लेत गतिमें गति गुणराशि राधे गिरिधरन गुण निधान। सरस मुरली धुनिसों मिले सप्तसुर गावत भैरवराग अवघरतानबंधान। चतुर्भुज प्रभु श्याम श्यामाकी नटनदेखिरीझे खगमृग बनथकितव्योम बिमान ६० निर्तत्गुपाल संग राधिका बनी। बाहुदंड भुजनगोलिमंडल मधिकरत केलि सरस गान श्यामकौं संग भामिनी। मोरमुकुट कुण्डल छबि काछनी बनी विचित्र झलकत उरहार बिमलथकित चांदनी। परम मुदित सुर नर मुनि बरषत सब कुसुमनिवारत तनमन प्राण कृष्णदास स्वामिनी ६१ नाचत वृषभानुसुताहंससुता पुलिनमध्य हंस हंसिनी मयूर मंडली बनी। गावतगोपाललाल मिलवत झपताल लाल लज्जित अतिमत्तमदन कामिनी अनी। पदिक लाल कंठमाल तरल तिलक छलकपाल अवण फूल बरदुकूल नासिकामनी। नील कंचुकी सुदेश चंपककली गलित केश मुखरित मणि दाम बामकटि सु काछनी। मरकत मणि बलयराव मुखरित नूपुर सुभाव जावक युत चरणनख चन्द्रिका घनी। मन्दहास भौंहपास रासलास भ्रूबिलास अलग लाग लेत सुघर राधिका गुनी। कामअंग कितव लब्धरीझ हे

चरणागहे साधुसाधुकहतफिरत राधिकास्वनी। भेंटतगाढ़बाहुमूलउरज परस भई फूल व्यासबचन सानुकूल रसिक जीवनी ६२ मोरन के मण्डलमें नाचत पियप्यारी। सिखवत सब गानमान सीखति लखि दुरनि मुरनि हां हां हांहां होके आप देते हैं करतारी। मधुरे सुर राग लेत रागिनी सों मिलेतानरीझत लपटात दोऊ भरि भरि अंकवारी। श्री विट्ठल संग खेलति बोलति ततार्थेई थेई विहरत गिरिधारीलाल सुन्दरि नवनागरी ६३॥ अथ श्रीयमुनाजी के पद ॥ रागभैरव ॥ जैजै श्रीसूरजा कलिन्द नन्दनी। गुल्मलता तरु सुबास कुंजकुसुम मोदमत्त गुंजत अलि सुभग पुलिन बायु मंदनी। हरि समान धर्मशील कान्ति मंजुल जलद नील कटि नितंब भेदतनित गतिउतंगनी। सिक्ताजनु मुक्ताफल कंकण युत भुजतरंग कमलन उपहार लेत पियाचरण बंदनी। श्रीगोपेन्द्र गोपी संग श्रमजल कहि मिश्र रंग अति तरंगिनी सुरकि सरस सुफं-दनी। छीत स्वामी गिरिवर धर नंदनन्दन आनन्दकन्द यमुने जन दुरित हरणदुख निकंदनी ६४ अतिमंजुल प्रवाह मनोरमा सुखावगाह न-वनव द्युति राजत अति तरणि नन्दनी। श्यामवरण झलके रूपलाल लहरिवर अनुपसेवत संतत मनोज वायुमंदनी। कुमुद कंजवन विकास मंडित दिशि दिशि सुबास कूजित कल हंस कोक मधुर छन्दनी। प्र-फुलित अरविन्द पुंज कोकिल शुकसारगुंज सेवित अलि भृङ्ग पुंज विविध बंदनी। नारद शुक सनक व्यास ध्यावत मुनि करत आस चाहत हैं पुलिनवास सकल दुख निकंदनी। नाम लेत कटत पाप ऋषि किन्नर मुनि कलाप करत जाप परमानन्द आनन्द कन्दनी ६५ श्री-यमुना देवीको नमजाई। नाम रूप गुण ले हरि जूको न्यारो अपनी चाल चलाई। उनयश देखकियो भ्राताको तुमहिं परसिको उलहि न जाई। जे तन तजत तीर तुम्हरे ते तात किरनि में गैल लगाई। मुक्ति वधूको करि दूतत्व श्रवमनको लै आनि मिलाई। आपुन प्रयास आन उज्ज्वल करितात तपत आपु शीतलताई। जलको छलकरि अनल अघनको यहतुनिकी कोउक्यों पतिआई। निशिदिन पक्षपात पतितन को तदपि गदाधर प्रभु मनभाई ६६ यमुना यमुना नामभजो। हरि भक्तको अराधन इनको और कुपंथ तजो। देहैं सकलपदारथ तुमको

और को नाहिंभजो । व्रजपतिकी अतिही प्यारीहैं तातेंसकल शृंगार सज्यो ६७ ॥ समुदाय रागभैरव ॥ अरुभ्रूयेनीलाम्बर पीताम्बर महियां । कुंडल सोंलरलट बेसरिसों पीतपटहारहुमें बनमाल बांहियांमेंवहियां । इत्यादिअतिछबि अङ्गअङ्गरही फबिउपमा बिलोकिबेको पटतरनहिंयां । कामके कलोल छूटे सेजहू के सुख लूटे सूरप्रभु बिलसे कदमहूं की छहियां६८आये लाल डगमगात प्रातभालमहावर पीक कपोलन अधरन मसिनयननि अरसात । मोती माल लसैउर बिनु गुणा शिथिलित पागशिथिल सबगात । बोलत बोल अटपटे मोहन तापर सौंह करत न लजात । ओढ़े नीलबसन तुम आये द्वैजचन्द हृदि मांझ लखात सांचे बोल निबाहे व्रजपति मायाकर आयेपरभात६९ अरुणा उदयआये मेरेनन्दलाल । शिथिलितअंग उनींदे नयनन धरणीधरत डगमगी चाल । अधरन अंजन पीक कपोलन लटपट पाग जावक नियभाल । तापर सौंह करत हो व्रजपति उरसि बिराजत बिनुगुणा माल ७० प्रातसमय आवत गिरिधारी । कुंज महलतेचले भोर उठि संगराजित वृषभान कुमारी । घूमत नयन उनींदे मिसि के निरखि सहचरी गईं बलिहारी । पीक कपोलन लगे दुहुनके व्रजपति शिथिल गात अति भारी ७१ घूमत रतनारे नयन सकल निशाजागे । लटपटी सुदेशपाग अलकन की झलक बीच पीकछाप युग कपोल अधरन मसिलागे । बिन गुणमाल बनी बीच नखन रेखठनी पलटि परे बसन पीतकंकण सों दागे । धाकबन्यो चन्दनबनमाल लग्यो चन्दनसों डगमगात चरण धरत प्रिया प्रेमपागे । बचन रचन कियो साज बेग आये भोर मांझ बलिबलि या बदन कमल शोभित अनुरागे । जाय बसो वेगही धाम बिलसे जहां सकलयाम गोबिन्द प्रभु बलिहारी कर जोरे मांगे ७२ आये भोर उनींदे श्याम । सकल निशाजागे प्यारी सग हारेहो रति रण संग्राम । शिथिलित पागभाल पर जावक हिये बिराजत बिन गुणमाल । कुंकुम तिलक अलकपर सेंदुर सुभगपीक सोहत दोउगाल । कंकण पीठ गड्यो उर नखक्षत जनु घनमांझ द्वैजको चन्द । छीतस्वामि गिरिधरन भले तुम मोहिं खिझावत हो नँदनन्द ७३॥ रागभैरवचर्चरी ॥ सुमिरि मन गोपाललाल सुन्दर अति रूपजाल मिटिहै जंजाल सकल

निरखत सङ्ग गोपबाल। मोर मुकुट श्रीगवरे वनमाल सुभग गरे सब को मनहरे देखि कुंडलकी झलकगाल। आभूषण अंग सोहें मोतिन के हार पोहें कंठसरी सोहें हगगोपी निरखत निहाल। छीत स्वामी गोवर्द्धनधारी कुँवर नन्दसुवन गाइनके पाछे पाछे धरत हैं लटकीलो चाल ७४ प्रातभयो जागो बलिमोहन सुखदाई। जननी कहै बारबार उठो प्राणके अधार मेरे दुखहार श्यामसुन्दर कन्हाई। दूध दही माखन घृत मिश्री मेवा बदाम पकवान भांति विविध रस मलाई। छीत स्वामी गोवर्द्धनधारी लाल भोजन करि ग्वालन के सङ्ग वन गोचारन जाई ७५ ॥ रागभैरव ॥ भई भेंट अचानक आय। हैं। अपने गृहते चली यमुनाके उतते चले चारन गाय। निरखत रूप ठगौरी लागी उनको डगरभर चल्योनजाइ। छीतस्वामि गिरिधरन कृपाकरि मोतन चितये मुरिमुसकाइ७६जागिये ब्रजराज कुंवर कमल फूले। कुमुद वृन्दसकुचि भयेभृङ्ग लता भूले। तमचुर खगरोर सुनहु बोलत बनराई। रांभति गौ खोरदेन बछरा हित धाई। विधु मलीन रवि प्रकाश गावत ब्रजनारी। सूरश्यामप्रातउठ अंबुज करधारी ७७ कमलनयन हरिकरो कलेवा। माखन रोटी सद्य जम्यो दधि भांतिभांति की मेवा। खारिक दाख चिरौंजी किसमिस उज्ज्वल गरी बदाम।सफरी सेव छोहार सिंघारे जे खरबूजा नाम।अरुमेवा बहुभांति भांतिके षटरसके मिष्ठान। सूरदास प्रभुकरत कलेऊ रीझे श्याम सुजान७८उठहु नंदकुमार भयोभिनुसार जगावत नंदरानी। झारीके जल बदन पखारो सुत कहिकहि शार्ङ्गपानी। माखन रोटीअरु मधुमेवा जोभावै सो लीजै आनी। सूरश्याम मुख निरखि यशोदा मनहींमनहिं सिहानी ७९भोरभये निरखत हरि को मुख प्रमुदित यशुमति हरषित नन्द। दिनकर किरणि कमल जनु विकसित उरप्रति अति उपजत आनन्द। बदन उघारि जगावत जननी जागहु मेरे आनँद कन्द। मानहुं मथि सुरसिंधु फेन फटियो दिखाई पूरण चन्द। जाको ईश शेष ब्रह्मादिक गावत नेति नेति श्रुतिछंद। सोई गोपाल सुगोकुल भीतर सूर सो प्रकटे परमानंद ८० तहीं जाहु जहां रैन हुते। काहेको दुराव करत नंदनन्दन मिटे न अंक उर चिह्न जुते। बिनगुणहार मनोहर उरपर परम चतुर हिय लाइ

घुते। बिथुरी अलक अटपटे भूषण लुटे काम कुचबीच उते। दशन दाग नख रेख छबीली भामिनि भवन आय भुगुते। सूरश्याम देखि अति शोभा लोचन ललित उनींद हुते ८१ तहीं जाहु जहँ निशा बसे। जानतिहौ पिय चतुर शिरोमणि नागर जानर रागरसे। घूमत हो माना पिया उर गती नव बिलास श्रम सेज उसे। श्याम उरस्थल पर नख शोभित गगन दुइज जनु इन्दु लसे। काजल अधर प्रकट देखियत हैं नागबेलि रंग निपट खसे। लटपटि पाग महावर के रंग भामिनि पगपर शीश घसे। बिगलित केश मरगजी माला पीठि बलयके चिह्नलसे। सूरदास प्रभु प्रिया बचन सुनि नागर नगधर नेक हँसे ८२ क्यों सुदुरत हो प्रकट भये। कहतहैं नैन निशाके जागे मानो सरसिज अरुण नये। आवक भाल नागशशि लोचन मसिरेखा अधरन जोदये। बलया पीड़नितंब चरण मणि बिनु गुण कंठहार बनये। भुज ताटंक ग्रीव सोइ चन्दन चिह्न कपोल दशन असये। आलिंगन चन्दन कुच चर्चित मानो हैंशशि उर उदये। चरण शिथिल अरु चाल डगमगी घूमत घायल समर सये। सूर सखी कैसे मनमाने सुन्दर श्याम कुटिल सगये८३ लालन आयेरी रैनि गवांई। निशि भई छीन बोले तमचुर खग ग्वालिन तबहिंहँसी मुसकाई। अरुण किरणि मुख पंकज बिकसित मधुप लियो सुन्दर रस जाई। चन्दमलीन भयो दिनमणि ते कुमुद गये सबहो कुम्हिलाई। चारि याम जागत बीते मोहिं तुम बिनु मोको कछु न सुहाई। सूरश्याम या दरश परश बिनु सब निशि गई मेरी नींद हेराई८४ रति संग्राम बीर रसमाते। हो हरि सूरशिरोमणि अजहूं नहिंन संभार सकल अंगनाते। औरें बरण भये थे लोचन अपने अपने सहज बिनाते। मानहुँ भीर परी औधनकी ताते भये क्रोध अति राते। परिमल लुब्ध जहां अलि बैठत उड़िउड़िउड़ि नहिं सकत तहां ते। जनु मनमथ शर बागे फास्यो फाक होत सब बाहर घाते। बेधिजात अलसात उनींदे क्रम क्रम क्रम करि उठत तहां ते। मनसुरका कटाक्ष नाटस ले काढ़त नाहिं चुभ्यो हियराते। डगमगात घूमत जो घायल शोभा अति भई सुभट कलाते। सूरदास स्वामी रणजीते अब सकुचत यों हो तुमकाते ८५ जानति हैं जैसे गुणनि भरेहौ। काहे को

सुरति करत मनमोहन तोहि पै कहो तुम जहाँ हुतेहो । सिथिल आभरण निज अंग न सोहत आलसवन्त सबअंग भरेहो । चंदन तिलक मिल्यो कहँ अंजन कौन कृपा दल कुच उरउभरेहो । तुम अति कुशल किशोर नंद- सुत कहो कौनके चित हरेहो । औचकही जियजानि सूरप्रभु सोहें करत कोहोत खरेहो ८६ काहा हो पिय बात कहो । आप कछू जिय तरक गहतहो तो तुमसोंहा मौनगहो । कहाचूक हमको पियलागे रूखिरहे हो काहे जू । तबहीं ते वैसेहो ठाढे मोतिन को नहिं चाहे जू । अब छमहु अपराध हमारो कृपाकरो मुख बोलो जू । सूरश्याम अब तजो निठुराई गुप्त हृदयकी खोलो जू ८७ जाहु तहाँ कहा सोचतहो । जा संग रैनि बिहात न जानी भोरभये त्यहि सोचत हो । औरनि को छिनु युग बीतत है तुम निडचीते नागरहो । घूमत नयनजम्हात बारहीं रति संग्राम उजागर हो । मैं अब कहत तुम्हारे हित की ताहीके गृह सो- वरहो । सूरश्याम वैसी प्रिय कोहै वह रस वाही बिनु न लहो ८८ हमहीं पर पिय रूसेहो । बोलत नहीं सकचयों ह्वैरहे अति रंग हीन कछू से हो । रचि निरखत औरहि हित चित बिनु किधौं कहूं तुम लूटेहो । लखि हँसि बदन मिलत आजहि कछु और भये निठुरसेहो । डगमगात पग उतहि परतहै चितचंचल उतहूसेहो । सूरदास प्रभुसाँच बाँधिगये निज अंग अबला मूसे हो ८९ जागिये गोपाल लाल आनँद निधि नन्दबाल जसुमति कहै बार बार भोरभयो प्यारे । नयन कमल से बिशाल प्रीति बापिका मराल बदन ललित चंदतमै ऊपर कोटि- वार डारे । उगत अरुण बिगत शर्वरीश सकि किरणि हीन दीप मलिन छीन द्युति समूह तारे । मनहुँ ज्ञान घनप्रकाश बीते सब भव बिलास आस त्रास तिमिर तोय तरणि तेज जारे । बोलत खग मुखर निकर मधुकर ह्वै वे प्रतीत सुनहु परम प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे । मनो वेद बंदी मुनि सूत वृन्द मागध गन बिरद बदत जै जै जै जैत कैटभारे । बिगसित कमलावली चल प्रपंच चंचरीक गुंजत कल कोमल धुनि त्यागि कंजन्यारे । मनो बिराग पाय सकल शोक कूप गृह बिहाय प्रेम मत्त फिरत भृत्य गुणत गुण तिहारे । सुनत बचन प्रिय रसाल जागे अतिशयदयाल भागे जंजाल बिपुल दुख कदंब टारे । त्यागे

श्रम कंद दंद निरखिके मुखारविंद सूरदास अतिअनंद मो गदभार ६० जागिये गोपाल लाल प्रकटभयो हंसमाल मिटे गयो अंधकार उठो जननि मुख देखाई । मुकुलित भे कमल जाल कुमुद वृन्दावन बिहाल मेटहु जंजाल त्रिबिधि तापतननशाई । ठाढे सबसखा द्वार कहत नन्द के कुमार टेरत हैं बार बार आइये कन्हाई । गैयनि भई बड़ी बार भरि भरि पयथनन भार बछरा गन कर पुकार तुमबिनु यदुराई । ताते यह अटकपरी दुहुन काज सौंह करी उठि आवहु क्यों न हरी बोलत बलभाई । मुखते पट झटकि डारि चन्द्रबदन दे उघारि यशुमति बलिहारि बार लोचन सुखदाई । धेनु दुहन चले धाय रोहिणी को लई बुलाय दोहनी मोहिं दे मँगाय तबहीं ले आई । बछरा दियो थन लगायदुहतबैठिकै कन्हायहँसत नंदराय तहांमाता दोउआई । दोहनी कहुं दूधधार सिखवत नंद बार बार वह छबि नहिं वार पार नंद घर बधाई । तब हलधर कहेउ सुनाय धेनु बन चलो लिवाय मेवा लीन्हें मंगाय बिबिधि रस मिठाई । जेंवत बलराम श्याम संतन के सुखद धाम धेनु काज नहिं बिश्राम यशुदा जल ल्याई । श्यामराम मुख पखारि ग्वाल बाल लये हँकारि यमुना तट मन बिचारि गाइन हँकराई । शृङ्ग बेणु नाद करत मुरली सुर मधुर धरत ब्रजांगन मन हरत ग्वाल गावत सुखराई । वृन्दावन तुरत जाय धेनु चरति तृण अघाय श्याम हरष पाय निरखि सूरज बलिजाई ६१ जननि जगावति उठो कन्हाई । प्रकट्यो तरणि किरणि गण छाई । आवहु चन्द्रबदन दिखराई । बार बार जननी बलिजाई । सखाद्वार सब तुमहिं बुलावत । तुम कारण हम धाये आवत । सूरश्याम उठि दरशन दीन्हों । माता देखि मुदित मन कीन्हों ६२ भोर भये भोगीरस बिलास भये ठाढे । जागे यामिनी जगाय भामिनी अंग संग समाय श्वास शिथिलहरनि टरत दंत आलिंगन गाढे । घूमत रसमत्त मगन सूधेहु डग परत पगन छिनछिन चितु चौपचोजनि मोज मनोजनबाढे । अति रसमें रसिक राय शोभा बरणि न जाय बरु बिहारनि दासि लड़ाय प्रेम रँगरँगि काढे ६३ ॥

रागभैरव चर्चरी ॥ प्रातहि किशोर जोरि कुंजखेलनी । अंगअंग गुण तरंग गौर श्याम रूपराशि मदन केलि सुरत सिंधु कूल झेलनी । तरणि

नन्दनी सुनौर गावत पिय भृङ्ग कोर निगुण सकल गन्धरीर श्रमज अंबु भेलनी । बरबिहार रानी सुनुपुण दिग्राजानी बिठल बिपुल बारनेक भुजा कठमेलनी ९४ ॥ रागभैरव ॥ श्यामसंग श्यामनचत रासरंग गुणनि बचन शशि अखंड मंडल हँसिशरद यामिनी । तरनि तरुणा कूलमृदुल अकुस सितरज पुनीत त्रिबिध पवन तापबदन कामकामिनी । चरण चलित बाहु बलित ललित गान कलित तान मानसुख निधान तिरपलेति भामिनी । बर सुगन्ध रंगताल मधि मृदंग थिंग थाल लाल सुघर औघर गजराज गामिनी । रिझै पतिहिं गति दिखाय लेत कुंवर कंठलाय श्याम गात मांझ मनहुँ दुरति दामिनी । नैन सैन भ्रूविलास मंदहास सुखनिवास सुनि धुनि सुनि बोलत जै श्याम स्वामिनी ९५ जै गोबिन्द माधो मुकुन्द हरि । कृपासिन्धु कल्याण कंस अरि । कृपनिपाल केशवकमलापति । कृष्णकमल लोचन अगणित गति । रामचन्द्र राजीवनयन बर । शरण साधु श्रीपति शारंगधर । बनमाली बामन बिठुलबल । बासुदेव बासी ब्रज भूतल । खरदूषण त्रिशिरा शिर खंडन । चरणचिह्न दण्डक भुवमंडन । बकी दवन बकबकन बिदारन । बरुणबिषाद नन्द निस्तारन । ऋषिमख त्रान ताडका तारक । बनबसि तात बचन प्रतिपालक । गोकुलपति गिरिधर गुण सागर । गोपी रमन रास रति नागर । रघुपति प्रबल पिनाक बिभंजन । जगहित जनकसुता मनरंजन । कालीदमन केशि कर पातन । अघ अरिष्ट धेनुक अनुघातन । करुणामय कपिकुल हितकारी । बालिबिरोध कपट मृगहारी । गुप्तगोप कन्या ब्रतपूरण । द्विजनारी दरशन दुखचूरण । रावण कुम्भकरण शिरछेदन । तरवर सात एकशर भेदन । शंखचूड़ चाणूर संहारण । शक कहै मेरो रघुकारण । उत्तर कृपा गीध कृतकारी । दरशन दै शबरी उद्धारी । जे पद सदा शंभु हितकारी । जेपद परसि सुरसरी गारी । जेपद रमा हृदय नहिंटारी । जिनपदते तिहुँभुवन तियारी । जेपद वृन्दाबनहिं बिहारी । जेपद पांडव गृह पगुधारी । जिनपद शकटासुर संहारी । जेपद अहि फन फन प्रतिधारी । जेपद भक्तनके सुखकारी । जिन पद रज गौतम त्रियतारी । सूरदास सुर यांचत वे पद । करहु कृपा अपने जन पर

सह ९६ सोहत घुंघुवारे बार । अरुणि अधरहे सुकुता छवि निरखत नरनार । ललितमालिका नन्दनन्दनके छूटे कचन कांधुकी टूटेहार । निरखि अंग भामिनी मोऊ नैना उरसिजरहे चलति यौवन मदभार । सूरश्याम सग ... सुख देखत रीझे बारम्बार ९७ नैन श्याम सुख लूटत हैं । यही बात मोको नहि भावे हमतेकाहू छूटतहैं । महा अछौनिधि पाइ अचानक आपुहि सबै चुरावतहैं । अपनेहैं ताते वह कहियत श्यामहिलाहिं भवरावत हैं । किन्तु छिनु प्रति सुखसागर लूटत बरजो मोहिं लाजतहैं । सूरदास जो देत कछु यक कहौ कहा अनुमानत हैं ९८ श्रीकृष्ण नाम रसना रसोई मन्य कलिमें । जाको पदपङ्कजकी रेणुकी बलिमें । सोई सुहाग सोई पुनीत सोई कुलवन्ता । जाके निशि दिन रहै कृष्णनाम चिन्ता । योग यज्ञ तीरथ व्रत कृष्णनाम माहीं । बिना कृष्णनाम कलिउधार औरनाहीं । सब सुखनको सार कृष्ण कबहुं न बिसरिये । कृष्णनाम लै लै भवसागर को तरिये । श्रीगोवर्द्धन धरन प्रभु मङ्गलकारी । उधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ९९ ॥ रागभैरवतालएकताला ॥ कृष्णनाम भावतो हैं कृष्ण नाम भावे । बलिहारी ताको जो कृष्णनाम गावे । वसुधाको सार कृष्ण मेरे मनको अधार । कृष्ण श्रवण मङ्गलरूप कृष्ण नाम विचार । भजन की मूल कृष्णा हरन सकल खल कृष्ण व्रज समुद्रको पार । कृष्ण शिव को आधार मेरे रसनाको भाग्य कृष्णध्यान धार । मनको सुहाग कृष्ण रसना तंत्रनको तंत्र कृष्ण सब मंत्रन सुधार । यह रामराय कहत कृष्ण ताही जपत भगवान कृष्ण बारम्बार हरे हरे हरे कृष्ण कृष्ण रामराम राम । नारायण नारायण बासुदेव बासुदेव गिरिवरधर गिरिवरधर श्याम श्याम श्याम । दीनबन्धु दीनबन्धु बैकुंठधाम । होत प्रात बड़ पुनीत लेत हरिको नाम । दामोदर दामोदर चक्रपाणि चक्रपाणि नरहरि हरि नरहरि हरि मुररिपु मुरारी । मधुसूदन मधुसूदन सांवरे बनवारी । यमुना के तीरेतीरे वृन्दावन धाम । सूरश्याम रटत रहत राधावर नाम । भोर उठि सुमिरन करो होय सबही काम । वंशीवट यमुनातट सुन्दर घनश्याम१००॥ रागभैरव ॥ बांसुरी बजाई आज रङ्गसों मुरारी । शिवसमाधि भूलिगई मुनि मनकी तारी । वेदभनत ब्रह्माभूले भूले ब्रह्मचारी । सुनतही आनन्दभयो लगीहै करारी । रम्भा सबताल

मुखकी मुरली मुखकारी । यमुना जल उलटि बहेउ सुखिना सम्हारी । श्रीवृन्दावन वंशी मनो तीनलोक प्यारी । ग्वाल बाल मगनभये ब्रज की सब नारी । सुन्दरश्याम मोहनी मूरति नटवर वपुधारी । सूरकिशोर मदनमोहन चरणन बलिहारी १०१ ॥ रागभैरवतालतिताला ॥ दीखके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकैं । शीश मुकुट लटा छुटी और छूटी अलकैं । सुरनर मुनिद्वार ठाढ़े दरश कारण किलकैं । नासिका के मोती सोहै बीच लाल ललकैं । कटि पीतांबर मुरली कर श्रवण कुंडल झलकैं । सूरदास मदनमोहन दरश देहो भलकैं १०२ ॥ रागभैरव ॥ रामकृष्ण कहिये निशिभोर । वे अवधेश धनुषकर धारे वे ब्रज जीवन माखन चोर । उनके छत्र चमर सिंहासन भरत शत्रुहन लक्ष्मण जोर । उनके लकुट मुकुट पीताम्बर गायनके संग नन्दकिशोर । उनसागरमें शिला तराई उन राख्यो गिरि नखकी कोर । नन्ददास प्रभु सबतजि भजिये जैसे निरखत चन्दचकोर १०३ देखोरी यह कैसा बालक रानी यशोमति जायाहै । सुन्दर बदन कमलदल लोचन देखत चन्द्र लजाया है । पूरणब्रह्म अलख अविनाशी प्रकट नन्दघर आया है । मोरमुकुट पीताम्बर सोहै केशरि तिलक लगायाहै । कानन कुण्डल गलबिच माला कोटि भानु छबि छायाहै । शङ्ख चक्र गदा पद्म बिराजै चतुर्भुजरूप बनायाहै । परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमतिसुत कहलाया है । मच्छ कच्छ बाराह औ बामन रामरूप दरशायाहै । खंभफारि प्रकटे नरहरि वपु जन प्रह्लाद छुड़ाया है । परशुराम बुध निःकलंक होय भुवको भार मिटायाहै । काली मरदन कंस निकन्दन गोपीनाथ कहाया है । मधुसूदन माधव मुकुन्द प्रभु भक्तवछल पदपायाहै । दामोदर गिरिधर गोपालहरि त्रिभुवन पति मनभायाहै । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गायाहै । सुरनर मुनिके ध्यान न आवत अद्भुत जाकी माया है । सो परब्रह्म प्रकट हो ब्रज में लूट लूट दधि खाया है । परमानन्द कृष्ण मनमोहन चरण कमल चितलाया है १०४ ॥ रागभैरवतालएकताला ॥ मैं योगी यश गायारे बाबा मैं योगी यश गाया । तेरे सुत के दरशन कारण मैं काशी से आया । परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकललोक जामाया । अलख निरंजन देखनकारण

सकल लोक फिरआया । धनि तेरो भाग यशोदारानी जिन ऐसा सुत जाया । सुनत वड़े कोटे मतभूलो अलखस्वरूप घर आया । जो भावे सो लीजै रावर करो आपनी दाया । देहु अशीश मेरे बालकको अविचल बाढ़े काया । नामैंलेहौं पाटपटम्बर नामैं कंचनमाया । मुखदेखूं तेरे बालकको यह मेरे गुरुने लखाया । करजोरे बिनवै नन्दरानी सुन योगिनके राया । मुख देखन नहिं देहौं रावर बालकजात डेराया ।

[illegible]

कहुं बालक जात डिठाया । जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्योंजात डिठाया । तीनलोकका साहब मेरा तेरे भवन छिपाया । कृष्णबालको ल्याई यशुदाकर अंचल मुखछाया । करपसार चरणन रजलीनो सिंगीनाद बजाया । अलख अलख कर पाय छुये हैं हँसि बालक किलकाया । पांचबेर परकर्माकरके अति आनन्द बढ़ाया । हरिकीलीला हरमन अटक्यो चितनहिं चलत चलाया । अखिल ब्रह्मांडके नायक कहिये नन्द घरहि प्रकटाया । इन्द्रचन्द्र सूरज सनकादिक शारद पार न पाया । लाग श्रवण मंत्रदीजो सुनाया हँसिबालकमुसकाया । कौन देशके योगीहो तुम कौन नाम धरवाया । कहां बाम यह कहत यशोदा सुन योगिन के राया । तुमहीं ब्रह्मा तुमहीं विष्णु तुमहीं ईश कहाया । तुम विश्वम्भर तुम जगपालक तुमहीं करत सहाया । सूर श्याम कहे सुनो यशोदा शंकर नाम बताया २०५ ॥ रागभैरव ॥ नन्द द्वारे यक योगी आयो सिंगीनाद बजायो । शीशजटा शशिवदन सोहायो अरुण नयन छबिछायो । रोवत खीझत कृष्णसांवरो रहतनहीं हुलरायो । लियो उठाय गोद नँदरानी द्वारे जाय दिखायो । अलख अलख करिलियो गोद में चरण चूमि उरलायो । श्रवण लाग कछु मंत्र सुनायो हँसि बालक किलकायो । चिरजीवो सुत महरि तिहारो हौं योगी सुखपायो । सूरदास रमिचल्यो रावरो शंकर नाम बतायो २०६॥ रागभैरव ललितताला ॥ रामचरण अभिराम कामप्रद तीरथराज बिराजै । शंकर हृदयभक्ति भूतलबर प्रेम अक्षयबट छाजै । श्यामबरण पद पीठि अरुणतल लसत विशद नखश्रेणी । मनो रविसुता शारदा सुरसरि मिलिचलि ललित त्रिबेणी । अंकुश कुलिश कमलध्वजरेखा

भँवर तरंग बिलासा। मज्जन सुर मज्जन मुनि बरजन मुदित मनोहर बामा। बिन बिराग तप याग योग व्रत बिन तन तीरथ त्यागे। सो सब सुलभदास तुलसी प्रभुपद प्रयाग अनुरागे१०७॥ रागभैरव॥ यदुबर मेरे दीनदयाल शरणागत को करैं निहाल। केवट गीध रीछ कपि राक्षस कीट पतङ्ग किये प्रतिपाल। मुनिमनसा पूरण करिबेको गोपीनाथ भये नँदलाल। तन मन धन तुम्हरो तुमकोदे प्रेमरङ्ग छूटे यम जाल। चलनारे प्रभुके दरबार। कालबली ठाढ़ो चोबदार। इहहजूर में याद तिहार। चलने की कछु करो तयार। जिसमें हुरमत रहै तुम्हार। ऐसी करणी करले यार। जिसको खावन्द पकर बुलावैं। यतनकरे कछु बनि नहिं आवैं। बिन मरजी कोउ रहन न पावैं। क्या गरीब क्या साह कहावैं। जब यम आवे कछु न बसावैं। शरणमें बांध पकर लेजावैं। तबतो तूकहु कौन छुड़ावैं। ढिग बैठा कलपेकलपावैं। मौजूदातकि तैयारी कीजै। दरशन तलब बेग चललीजै। जो खावंद तोहि देखि पसीजै। कंठ लगाय रङ्गमें भीजै। करणीका कर करम कटारा। शील सिपर तपतेग तुम्हारा। धरै तोपकर ध्यान पियारा। ज्ञान घोड़ हूजे असवारा। जो तू ऐसा होय चलेगा। मालिक मनमें बहुत खिलेगा। काम क्रोध मद लोभ मोहबश यह संसार सपनदहेगा। निशिबासर हरिनाम उचारके रसना जपले परमपद लहेगा। सूरदास सुख जो तू चाहै गोबिन्दके गुण ज्यों तू गोबिंदके गुण गावै। पतित उधारन बिरद कहावै चरण शरणनित ध्यावै१०८॥

इति राग कल्पद्रुम नित्य कीर्त्तनान्तर्गत रागभैरव समाप्त॥

अथ रामकली राग प्रारम्भ॥

श्रीकृष्णायनमः॥ मोहन जागि हो बलिगई। ग्वाल बाल सब द्वार ठाढ़े बेर बनकी भई। पीतपट करि दूर मुखते छांड़िदे अरसई। अति अनन्दित होत यशुमति देखि द्युति नितनई। जगे जंगम जीव पशु खग

और ब्रज सबई । सूरके प्रभु दरश दीजै अरुण कीरना छई १ ॥ रागरा-
मकली ॥ भोर भयो जागोहो ललना कहा तुम अजहू रहेसो सोइ । पियो
धार अपनो धौनीको जैसे देह बल होइ । वेनी गुहुँ देउँ सुरा अंजन आंख
बिंदुका मुख धोइ । हँसत बदन सुख सदन निहारों वारुंहीं वारुंहीं
दतियां दोइ । टेरत ग्वाल बाल खेलन को गोरस मजहू होइ । व्रजजन
सब ठाढ़ी मुख देखन अति आरत सब कोइ । उठि बैठे तब गोद यशो-
दा सुन्दर सुत लिहुं लोइ । रसिक प्रीतम लगिवारे अंगनि से सांभलि रोटी
रोइ २ गैया तेरे लाल को मुख देखन हों आई । कालिह सुख देखि
गई दधि बेचन जातहि गयोहै बिकाई । दिनतेदूनो लाभ जाभयो
गाइनि बछिया जाई । आईसबैथँभाय सायकी गिरिधर देहु जगाई ।
सुनि प्रिय बचन बिहँसि उठि बैठे नागरि निकट बुलाई । परमानंद
सयानी ग्वालिनि चली संकेत बनाई ३ लाल को दरशन भयो सबेरो ।
बहुत लाभ पाऊगी माई दही बिकैहै मेरो । गलो जु सांकरि एक जो
नोकी भेंट भयो भट भेरो । अंक दे चली सयानी ग्वालिनि हरिको
बदन फिरि हेरो । प्रातहि मंगल भयो सखीरी ह्वै है सब काज
भलेरो । परमानन्द प्रभु मुख निरखत मिट्यो भयसागर फेरो ४ डगमग
चलति औरही भांती । नवनि कुंज ते राधा भामिनि अरुण उदै घर
जाती । रतिकी केलि सुमिरि मृगनैनी बार बार मुसक्याती । बसन
पयोतिते सुनुरी भामिनि मेटत उडपति कांती । निशिके चिह्न प्रकट
देखियत हैं कामकेलि कुल कांती । प्रीतम प्राण रतन संपुट कुच भेंट
जुगइ छाती । नंदकुमार सुरत संग लीने शरद बिमलकी राती । कृ-
ष्णादास गिरिधर पियके संग अधर सुधारस माती ५ हरिअनुरागि
युवति बडभागी । राधा रसिक नन्दनन्दनके सुखनिधि चरणकमल
अनुरागी । कोककला संगीत निपुण सखि पिय संगम रतिरस नि-
शिजागी । कृष्णादास प्रभु गिरिधर पियमुख देखत नयन टकटकी
लागी ६ बेसइयो मेरी रैन बिदाहोन लागी । घटिआई ज्योति मंदभये
तारेफूल बासना पागी । सोरह शिंगार बतीस अभरण अपने प्रीतम
संग जागी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको तृष्णा हमारे अनुरागी ७
होवोलजाउँ कलेऊकीजे । खीर खांड घृत अति मीठोहै अबकि कौर

बढ़ लीजै । वेनी बढ़ै सुनो मनमोहन मेरो कह्यो पतीजै । औट्यो दूध
सद्य धौरीको सातघंट जो पीजै । हौं वारी या बदन कमलपर अँचल
प्रेमजलभीजै । बहुरि जाय खेलो यमुना तट गोविंद संगकरि लीजै ८
ग्वालिन पिछवारे ह्वै बोल सुनायो । कमल नयन हरि करत कलेऊ
कतरन मुख लो आयो । मैया एक गाय बन ब्याई बछरा वहीं ब-
सायो । बेणु न लई लकुट नहिं लीनी अरबराय कोउ सखा न बुलायो।
चकित नयन चहूँदिशि चितवत सत्य इहै किधौं सपनो पायो । फूले
अँग न समात रसिक वर त्रिभुवनपुर रसछत्र निछायो । मिलिबैठ सं-
केत सदनमें विविध भांति कीनो मनभायो । परमानन्द सयानी ग्वा-
लिन उलटिअङ्क गिरिधरपियपायो ९॥ राग रामकली चर्चरी ॥ जयति आभीर
नागरी प्राणनाथे । जयति ब्रजराज भूषण यशोमति ललितदेत नव
नीत मिश्रीमुहाथे । जयति पात परभात दधिखात श्रीदामासङ्ग अखिल
गोधन वृन्द चरसाथे । ठौर रमणीक वृन्दा विपिन शुभस्थल सुन्दरी
केलि गुणगूढ़ गाथे । जयति तरणिजा तटनिकट रासमंडल रच्यो तत्त
ता थेई थेई नृत्तनाथे । चतुर्भुजदास प्रभु गिरिधरन बहुरि अब श्रीविट्ठल
प्रकटब्रज कियो सनाथे १० ॥ राग रामकली ॥ माखन तनिकदेरीमाय । त-
निक करपर तनिकरोटी मांगत चरणचलाय । कनक भुवपर तनिक
रेखाकरन पकरेव धाय । कंप्योगिरिशेष शंक्योदधिहेत अकुलाय । मेरे
मनके तनिक मोहन लागो मोहिंबलाय । तनिक मुखपर तनिक बतियां
बोलतहैं तुतराय । यशुमतिके प्राणजीवन धनलियो उर लपटाय । नंद
कुँवरगिरिधरन ऊपर सूरबली बलिजाय ११ ॥ राग रामकली चर्चरी ॥ लाल-
हिजगाइ बलिगई माता । निरखि मुखचन्दछबिमुदित भई मनहिं मन
कहति आधे बचन भयोप्राता । नयन अरसात अतिबारबार जंभातकं-
ठसोंलगिजात हरख गाता । बदन पोंछियो यमुन जलसों धोइके कहेउ
मुसकाय कछुखाहु ताता । दूध औट्योआनि अधिक मिश्री सानि लेहु
माखन पानि प्राणदाता । सूर प्रभु किये भोजन विविध भांति सो
पियोपय मोद करि घूंटसाता १२ आज लाड़िली लालहि जगाय जागी।
सकल निशि कुंज बसि प्रियेबल बांहुकसि बिलसि अंगअंग अनुरा-
गरागी । रामरोमनि अरुझि सकति नेकन सुरझि अति अवर मधुर

रस प्रेमपागी । बिहारनि दासि सकाम गौरश्यामसनाम चितै चि-
तवत काम लरनि लागी १३॥ अथ खंडिताराग रामकली ॥ रातिकहाँ श्यामसुन
देखि मुसकानी । हारबिन गुणा लेखअधर अंजनरेखनैन तमोरतुलरा-
लबानी। पागलटपटीबनीउरह कूटीतनी अंगकीगति देख जीयलजानी।
उपटि कंकन पीठ बनीबिहबल दीठ ईठकी ईठता लखीक्यानी । पाणि
पल्लव अधर दशनसोंगहिरहीं अरब बैन बोलि बचन हारमानी । सूर
प्रभु अंकभरी प्राणपति नागरी नवल नागर उरह घालिआनी १४
रागरामकली चर्चरी ॥ श्यामसुन्दर रैनि कहाँ जागे । देखिबिनु गुणमाल अधर
अंजन भाल जावक लग्यो गाल पीक पागे । चाल डगमगी अति
शिथिल अङ्गअङ्ग सबतोतरे बोल उर नखनि दागे । गड्यो कंकनपीठ
निपट बिह्वल दीठ शर्वरीलाल नहिं पलकलागे । कहिये साँचि बात
काहेजीय सकुचात कौन त्रिय जाके अनुराग रागे । दास कुंभनलाल
गिरिधरनसलेपर करत झूंठीसौंह मेरेआगे १५ ॥ रागरामकली ॥ जैयेतहाँ
जहाँ रैनिजागे । बनी बिनुगुण माल ओठ अंजन भाल सेंदुर लग्यो
गण्ड पीकपागे । आरक्त नयन अति शिथिल सब अंग गति ड[ग]मगात
राति नहिं पलक लागे । चपल चातुर ढीठ उपटि कंकन पीठ देखि-
यत उर साँझ नखन दागे । सकल ब्रज त्रियन में कौनसी नारि वह
जाकेतुम लाल अनुराग रागे। चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरनकाहे को
करत झूंठी सौंह मेरेआगे १६ भले आये भोर गिरिधरधरन । अरुण
नयन जँभात आलस धरत डगमगे चरन । पाग लटपटी पलटि परे पट
अटपटे आभरन । शिथिल अंग अंग सबहि देखियत निशाके जागर-
न । नव त्रिया संग प्रहर चारो पलक न पाये परन। चतुर्भुज प्रभु जीति
रतिरन कियो रति पति मारन १७ नीके आये गिरिधरधारी नागर।
जियकी कृपा हम तबहीं जानी भोर खोलाई आगर । तुम्हरे चिन्हत
रैन नैन अरुणाभये सकल निशाके जागर । जिन तुमपै यह खेलरच्यो
है ऐसी कौन उजागर । तुम अपने रँगही रीझे चतुर नारिके नागर।
बलि बलि जाउं मुखारबिन्द की सुरति कलेवरसागर । गुण कहि-
यत कहि पार न आवत मसि पर्वत क्षितिकागर । सूरदास प्रभु हमें
लाजआवत है तुमहो सदा उजागर १८ प्रातभये आये लाल कौंहु

अटपटी। आजकी रैन गोहिं नखत गनत गई मारग जोवत आँखिन लागी चटपटी। उर नख पयधर मनु गिरिवरधर गलित बरुहा चूड़ पाग बनी लटपटी। कृष्णादास प्रभु जानत रतिरस दास निसान मदन नृपति रन जीतिमानो अटपटी १९ लालरस भरे नयन आजु निशि जागे। अति विशाल अरसात अरुण भये रतिरन के रँग पागे। सुंदर श्याम सुभगता अटपटि अङ्गअङ्ग नख क्षत दागे। मानहु कोपि निदरि सन्मुख गर साथ भये अरिभागे। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन अधिक छबि बदनभृकुटी लागे। मानहुँ मन्मथ चाप मेटमोर रहेउ जोरिकर आगे २० आजु हरिनैन उनींदे आये। अंजन अधरललाट महावर नयन तमोर खवाये। शिथिलित बसन अरगजी माला कंकन पीठ सुहाये। लटपटि पाग अटपटे भूषण बिनु गुण हार बनाये। शिथिल गात अरु चाल डगमगी भृकुटी चन्दन लाये। सूरदास प्रभु यहै अचंभो तीन तिलक कहँ पाये २१ आवत ललन पिया रँगभीने। शिथिल अंग डगमगात चरण गति मोतिनहार उर चीने। पारिजात मन्दारमाल लपटात मधुप मधु पीने। गोविन्द प्रभु पियतहीं जाहु जहँ अधर दशन क्षत कीने २२ लालन जागत रैनविहानी। देखत पथ अँखियां अतिहारी कहाँ लाल रति मानी। कस्यो काल कोंहि लाल सखिन सँग पूरब विविध कहानी। रंग अनंग सुरत चित आवत छतियां अधिक पिरानी। भोर भये आये मेरेगृह देखतसखी हिरानी। रसिक प्रीतमदोऊ अँखियां अरुण भई कहो कहाँ रैन सिरानी २३ नयन उनींदे भयेरँग राते। मनहुँ गुलाल कुसुम पर सजनी फिरत भृङ्गमदमाते। प्रेमपराग पांखुरी पल दल प्रफुलित मदनलताते। सदासुबासविलास बिलोकनि प्रकट प्रेमके नाते। तैसिय मारुतमन्द जम्हावरि मिलत मुदित छबि ताते। सींचे सूरश्याम मानिनि निज हितकारि केलिकलाते २४ ॥ राग रामकली अथ समुदायपद ॥ काहि मिस यशुमतिके जाउँ। सकल सुखनिधि मुख निरखिके नयन तृषा बुझाउँ। द्वारे आरजसभा जुरीरही निकसिबे नहिं पाउँ। बिनुगये पतिवर्त्त छूटे हँसे गोकुल गाउँ। श्यामगात सरोज आनन ललित लेले नाउँ। सूरहि लगन कठिन मन की कहौं काहि सुनाउँ २५॥ रागरामकली॥ सखी हरिदरशको मोहिँचाउ। सांवरे

सों प्रीतिबाढ़ी लाख लोग रिझाउ। श्यामसुन्दर कमल लोचन अंग
अंग निरखाउ। सूर हरि के रूप राची लाज रहो कि जाउ २६ नन्द
सदन गुरुजन की भीर। तातें लालन बदननीके देखन न पाउँ। बिन
देखे जिय अकुलाय जाय दुख पाय यदपि बड़ेई खन उठिउठि आउँ।
लै चलरी मोहिं यमुना के तीर जहाँ बलबीर सुन्दर बदन देखि नैन
सिराउँ। नन्ददास प्यासेको पानी पिवाइ। ले निभाय जिय की तू
जानै तोसों कहां हों जनाइ २७ मन मृग बेध्यो मोहन नयन बान सों।
गूढ़भावकी सैन अचानिक तक तान्यो भृकुटी कमानसों। प्रथम नाद
बल घेरि निकटले मुरली सप्तक सुरबन्धानसों। पाछे बंक चितै मधुरै
हँसि घातकरी उलटी सुठानसों। चतुर्भुजदास पीर या तनकी मिटत
न औषधि आनसों। ह्वैहै सुख तबहीं उर अन्तर आलिंगन गिरिधर
सुजान सों २८ अँगुरिया छाँड़िरे मति अरग थरग। नूपुर बाजत त्यों
धरणी धरत पग॥ ध्रुव॥ कबहुँक यशोदा माईं भुज पसारि हँसि
उगमगायके उलटि डग। जननी मुदित मन चितै चितै शिशुतन रा-
खति कंठ लगाय सुन्दर श्यामसुभग। मृदुबानी तुतरात मांगिनवनीत
खात भुजनभाव जैसे जनावत बालखग। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरके बाल
बिनोद नंद आनन्द मुख देखें ठढ़ो डगाडग २९ उपमा औरजतख्यो नि-
रखि छबि। कोटि मदन अपुनो बल हारेउ कुंडल तेज छप्यो रबि।
खंजन मीन मृगजेहैं जेते दीनरहे क्योंहूंदबि। गिरिधर पलतर हराहि
लजावत सकुचत नहीं खोटे कबि। ईषदहास मदनद्युति निरखत ब्रज
शिखर सकुचाने। सूरश्याम लीला बपु काछियो पटतरमेटि बिरानें
३० ठाढ़ेरी खरिकमाई कौनको किशोर। सांवरे बरनमन हरन बंशी
धरन कामकरन कैसी गति जोर। पवन परसि जात चपल होत देख
पियरे पटको चटकीलो छोर। सुभग सांवरी कोटी घटातें निकसि आई
वे छबीली छटाको जैसो छबीली ओर। पूंछति पाहुनी खरिरहा हा
हा मेरी आली कहा नाउँ काहे चित्तवृत्ति को चोर। नन्ददास जाहि
चाहि चकचौंधी आय जाय भूल्योरी भवन गवन भूल्यो रजनी
भोर ३१ माई गिरिधरनके गुणगाऊं। मेरे तो व्रतयहे निशिदिन औरन
रुचि उपजाऊं। खेलन आंगन आउ लाड़िले नेकहुँ दरशन पाऊं।

कुम्भनदास छिलगके कारगा लालच लागि रहाऊं ३२ करतहो सबै सयानी बात। औलों देखे नाहिंन सुन्दर कमल नयन मुसुकात। सब चतुराई बिसरि जात है खानपान की तात। बिनु देखे छिनु कल न परतहै पलभरि कलप बिहात। सुनि भामिनिके बचन मनोहर सखि मन अति सकुचात। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल सँग सदा बसो दिन रात ३३॥ राग रामकली चर्चरी॥ निपट छोरे कान्ह सुनिजननी कहुँबात। होत जब समुदाय करत तब शिशुभाय एकांत पायकै नैन भरि मुसक्कात। देखिरस रीतिकी प्रीति बिपरीति गतिमति मानि छांड़ि संग लगो रहो निशिप्रात। जातनहीं बिसरि देखि वहुत यतन धरि समुझि कहुं चन्द देखे कमलहू बिगसात। दुरत घुंघर जबै लाल यशुमति हृदय उझकि धसि धरनि पाउँ धरि मुख किलकात। मनहुँ आषाढ़ घन बादरी सरलजि होत आनन्द सब फूल अति जल जात ३४ ग्वालिन आप तनदेखि मेरे लालतन देखिये। भीत जो होय तो चित्त अवरेखिये ध्रुव॥ मेरा तो सांवरो पांचही बरषको अजहुँ यह रोइ पयपान मांगे। तुमहो मस्त अति ढीठरी ग्वालिनी फिरत अठिलात गोपाल आगे। मेरे तो श्यामकी तनिकसी अँगुरियां ये बड़े नखन के दागतेरे। मष्ट करि सुनेगो लोग अगवारको कहां पाई भुजा श्याम मेरे। ठगठगे नैन दैनन हँसी ग्वालिनी मुख देखे शोभा अतिही बाढ़ी। सुनिसखी सूर सरबस हरेउ सांवरे अन उतर मइरिके द्वारठाढ़ी ३५ मेरीमति राधिका चरगा रजमें रहो। यह निहचै करैव अपने मनमें धरैव भूलिके कोउ कछु औरहू फलकहो। करम कोऊ करो ज्ञानहूं अज्ञमों मुक्तिके यतन करि वृथा दहो। रसिक बल्लभ चरगा कमल युग शरगा परि आश धरि यह महा पुष्टिपथ फल लहो ३६ मानिनी मानि जिमि मानिये तो करे आपु पायन परे नाथतेरे। दरश जाको करन जपत तरसे सदा सोतो यकटक तेरो बदनहेरे। हौं कहति सुमति उठि बेगि मिलि मीत सों मेराहित बचनजिनिभूलि फेरे। रसिक प्रीतम संग विहरि रसरंग सों क्यों न दुख अनगको सब निबेरे३७जयति श्रीराधिके सकलसुख साधिके तरुणिमगिश नित्य नौतन किशोरी। कृष्णतन लीन घनरूप की चातकी कृष्णा गुखहिम किरगाकी चकोरी। कृष्णा दग भृङ्ग बि-

श्यामहित पद्मिनी छया दृग मराल बंधन सुडोरी । छाया अनुरागी नन्द-नंदको मधुकरी छयाशुणागान रसनिधुबोरी । परम अद्भुत अलौकिक मेरीगति लखि मन सु सांवरे रंग अंग बोरी । और आश्चर्य काहू पै न देख्यो सुन्यो चतुर चौंसठि कला तदपि भोरी । विमुख परांगना ते चित्त जाको सदा करत निजनाहको चित्तचोरी । प्रकृति यह गदाधर कहत कैसेबनै अमित महिमा इतेबुद्धियोरी ३८ चतुर चारु चन्द्रावली मुख चकोरे । अस्तुति में चरण रति ब्रजयुवति मूषणी कमल लोचन नन्द नृप किशोरे । मानु मेरो कह्यो अतिशील रस रीति क्यों करावति सखी बहु निहोरे । मिले किमि धाय अब कुँवर चूडारत्न रसिक वर भूपाल चित्तचोरे । नवरंग कुंज महँ तव नामहित गाय गुणगात कल मुरलिका टाट मोरे । सुनि कृष्णदास शुभलग्न वह आनि धरीलाल गिरिधरनसों हाथजोरे३९ ॥ राग रामकली ॥देखो मेरे भाग की शुभघरी । नवल रूप किशोर मूरति कंठ ले भुज धरी । जाकेचरण सरोज गंगा शंभु ले शिरधरी । जाके चरण सरोज परसत शिला मुनि-यत तरी । जाके बदन सरोज निरखत आश सगरी सरी । सूर प्रभुके संग विलसत सकल कारज सरी ४० आज हरि पकरन पाये गोरी । लेगयो चोरचोरि मनमाखनजो मेरेधनहोरी । बांधों कंचनकलभकलेवर उभयभुजा दृगडोरी । राखों कठिन कठोर कुचन बिच सकै न काऊ छोरी । अधर दशन खडोरस गोरस छुवै न काहूकोरी । कामदंडदंडों परघरको नाउँ न लेय बहोरी । तबकुल कानि आनि तिरछी भई क्षमि अपराध किशोरी । शिव पर हाथ धराय सूर प्रभु सोचमोच शिर होरी ४१ गोपालेसाई बारेहीतेटेव । जानोंनहीं कौन पै सीखे चोरीके छलछेव । कबहुँक दुरते माखन खाते सुनि रहती करि कानि । अब हमपै क्यों सही परति है मणि माणिककी हानि । बुद्धि विवेक वचन चातुरि मन सर्वस लियेचुराय । सूरदास प्रभुके गुण औगुण कासों कहियेजाय ४२ माखनचोररीमैं पायो । जैयतु कहा जानकैसे पैयतु बहुत दिननहींखायो । हैं जु कहतिही होत कहाहै नितउठि भाजन लगनछुआयो । बहुतबार कौरैलगि देख्योंमेरीघात न आयो । बेनीकी कर गही चामटी घुंघटमांझ डरवायो । मतरोवो तुमसों कौन कहतहै

पलोटअंग हुलराओ। श्रीमुखसे उघराँह्वें दतियाँ तब हँसिकंठ लगाओ। परमानन्द प्रभु प्राण योवन धन बिशद बिमल यश गायो ४३ धनि यह राधि का के चरण। सुभग शीतल अतिसुकोमल कमल कैसे बरन। नखचन्द्र चारु अनूपराजत बिबिध शोभा धरन। कुणित नूपुर कुंज बिहरत परम कौतुक करन। रसिकलाल मनमोदकारी बिरह सागर तरन। बिबश परमानन्द छिनुछिनु श्यामजीके शरन ४४ बढ़ि बढ़ि बातलागी करन। श्यामसुन्दर सदन मोहन आये तेरे घरन। उदित ऊपर चिकुर कूरे चिकुर ऊपर दुरन। काम को दल साजिआइ आड़ देदे लरन। बिरहको संग्राम जीत्यो बाँधि अपनी परन। सूरके प्रभु तरन तारन राखि अपनी शरन ४५ बोलत कोक कला निधान। सम बचन सुनि उठि चलहि सखि छांड़ि सुन्दरि मान। तवनास सहित निकुंज महँ पिय करत मुरलीगान। केलि कौतुक रसिकनी त्रिय सुनहिं देकिनिकान। शेष रजनीबसत उड़पति जनुकिभयो बिहान। कृष्णदास प्रभुगिरिधरनपर वारिहौं तन प्रान ४६ बदूं जीत बढ़िमान घर आवे। सुन्दरश्याम बहुरि सन्मुखह्वै अंबुज बदनदिखावे। तब लगुमानकरहु कोउ कैसे जब लगु वह दरशन नहिं पावे। दृष्टिपरे मन मधुकर तिहि छिनु सहज सरोजहि धावे। त्रिभुवन मांझहो उत्तमयुवता आरजपथहि दृढ़ावे। कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धन धरकुल मर्यादा ढावे ४७ नैंलाल तेरीपैंजनियाँ झनकेंदी। माथे वे तेरे मुकुट बिराजे रीझग्वाल लटकेंदी। भईरी चकोर चतुर चन्द्रावलि गतिमति रति अटकेंदा। आशकरन प्रभु मोहन नागर चरण कमल चितदेदी ४८ हमारो दानदे रीगुजरेटी। नित उठि आवत जात चोर दधि बेचन आज अचानक भेंटी। अति सतरात कैसे छूटोगी बड़े गोपकी बेटी। कुंभनदास गिरिधरन लाल सों भुज ओढ़नी लपेटो ४९ अहो दधि मथति घोषकीरानी। दिव्यचीर पहिरे दक्षिणका कटि किंकिनि रुनझुन बानी। सुतके कर्म गावति आनन्दभरि बाल चरित्र जानिजानी। श्रमजल राजे बदन कमलपर मनहुँ शरद बरषानी। पुत्र सनेह चुचात पयोधर प्रमुदित अतिहरषानी। गोविन्द प्रभु घुटरुन चलिआये पकरी लई मथानी ५० मोहिं दधि मथनदे बलिगई। आउंबलिबलि बदन

ऊपर छाँड़ मथनी रई । लाल देहुँ नव नीत लौंदा आरि किन तुमठई। सुते हेति बिलोकि यशुमति प्रेम पुलकित भई । लेउछंग लगाय उरसों प्राणजीवन जई । बालकेलि गोपाल की ब्रजवासी करन नित नई ५१ श्री यमुना जी तिहारो दरश मोहिं भावै । श्रीगोकुल के निकट बसतिहै लहरनकी छबि आवै । सुखकरनी दुख हरनी यमुना जो जनप्रात नहावै । मन मोहन की खरी पियारी पटरानी जो कहावै । वृन्दावनमें रास रच्योहै मोहन मुरलि बजावै । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको वेद बिमल यश गावै ५२ नमो तरणि तनया परम पुनीत जगपावनीकृष्ण मन भावनी रुचिर नामा । अखिल सुख दायिनी सब सिद्ध हेतु श्री राधिकारवन रतिकरन श्यामा । बिमल यश भुवन नव काननी मोद युत पुलिन अति रम्यप्रिय ब्रज किशोरी । गोप गोपी नवल प्रेमरति वंदिता तटमुदित रहत जैसे चकोरी । लहरि भांवरि ललित बालुका सुभग ब्रजबाल मन पूरना रासफलदा । ललित गिरिवर धरन प्रिय कलिंद नंदिनी निकट कृष्णादास बिहरत प्रबलदा । निरखि हरषितब्रज युवति घोय मुरारि । थकित जित तित अमर मुनिगन नन्दलाल निहारि । बिनु बेन शिर केशलट चहुँ दिशा छुटकी झारि । शीश पर जनु जटाधारि रूपकिय त्रिपुरारि । रुचिर रचित ललाट केशरबिन्दु शोभाकारि । रोष मनहुँ तृतीय लोचन रहे रिपु जन जारि । कुटिलहरि नख हिये हरिके सुभग इहि अनुहारि । ईश जनु रजनीश राख्यो भालतेजु उतारि । कंदसीपज नील सरिगमय माल रची सम्हारि । नील शिरिवर गरल मानो लायलइ मदनारि । बदन रजतन श्यामसरिरउत शोभ यह अनुहारि । मनहुँ अंग बिभूति राजत शम्भुसोइ मधुहारि । त्रिदश पति यशुमति के आगे अशनको करे आरि । सूरदास बिरंचि जाको जपत यशमुखचारि ५३ बलिबलि चरितगोकुलराय । दावानलको पान कीनो पिवत दूध सिराय । पूतना के प्राण सोखेरहे उर लपटाय । कहति जननी दूध डारत खीझि कछु अनखाय । तृणावर्त्त अकाशते गहि शिला पटक्यो आय । डरत लालन झूलत पलना खरे देत झुलाय । यमल अर्जुन तोरि तारे हृदय प्रेम बढ़ाय । झटकि तात पलाश पल्लवदेहु देत दिखाय । कीरपिंजरा देत अँगुरी लेत श्याम

भजाय। बकासुर की चोंच फारो होय अचरज लाय। बिना दीपक
सदनमें हरि नेकु धरत न पाय। अघासुर मुखपैठि निकसे ग्वाल बच्छ
जिवाय। हरे बालक बच्छनवत्सत हेत दोरीमाय। फूटि पशुजवबनतृन
बनमें भ्रमनि ढूंढत जाय। लिख्यो हारे नागकारो देखि श्याम कराय।
निरथ काली फणनि ऊपर सहताल नचाय। धरेव गिरिवर बोहनों
कर बरस आंधिधराय। शकटभंजन प्रलंग कुचयुग कठिन लावतपाय।
धोय नारिन संग मोहन रच्यो रास बनाय। कहति जननी ब्याह को
तब ललनत बदन दुराय। वृषभ भंजनहनन केशी हन्यो पुच्छफिराय।
भजत सखन समेत मोहन देखि बयाई गाय। शेष महिमा कहि न
आवै सहस्र रसना पाय। सक रसना सूरको कहै अग अगणित भाय
५४ लटकत आवत कुंजभवनतें। हरि हरि परत राधिका ऊपर आ-
गार शिथिल गवनतें। चौंकि परत कबहू मारगबिच चले सुगन्ध प-
वनतें। भये उनींद भरम राधाके सकुचत दुरो सखनतें। आलस सिस
प्यारे न होतहैं नेकु न प्यारी तनतें। रसिक टरै जिन दशा श्यामको
कबहूं मेरे मनतें ५५ चरण कमलकी चेरी तेरी छांड़हु लालन नँदके।
कैसो है दान कहा किन लीन्हों दियो न कबहूँ बचन अरबिँद के।
देखत सखा सखी जन सगरी चरित ग्वाल ब्रजचँद के। लालन स-
कुचत अँचरा खैंचत पार न पावत बिबिध चटपटे फँद के। मदुको
खसत हँसत सब ग्वालिनि निरखि तिहारे छँद के। रसिक सदा मन
बसो बिबिध गुण रसनिधि आनन्द कँदके ५६ हाहालेउ सकोकोर।
बहुत बेर भईहै भूखे देख मेरी ओर। मेलि मिश्री दूध औट्यो पिवो
होहै जोर। अबहिं खेलन टेरहैं तेरे ग्वालभयो अतिभोर। जगे पंछी
द्रुम द्रुमन प्रति करन लागे शोर। खेलिबेको उठि भजोगे मानि मोर
निहोर। केहुँ ललन बलाय तेरी जोरि अंचल ओर। बदन चन्द वि-
लोकि शीतल होत हृदयो मोर। बैठि जननी गोद जेंवन लगे गोविंद
थोर। रसिक बालक सहज लीला करत माखन चोर ५७ मानहुँ
बात लालन मोरी। करो भोजन रोष भूलो होंजु मैयातेरी। दूधदधि
नवनीत घृत पक पकसि राखी थार। कहा लोटत धरणिमें मेरे लाल
होति अबार। गोद बैठो हौं जिवाऊं गाऊं तेरे गीत। खेलिबेको तोहिँ

ढार शरद समय शशि रातके । सन्तत सूर सुभाव हमारो । कत उरपति हौं काल भय । कौसिय भांति भजौ कोउ मोको तो धनै संभार नाथ ६७ ॥ राग रामकली चर्चरी ॥ जयति श्रीवल्लभ सुवन उद्धरन त्रिभुवन और नन्दके भवन की केलि ठानी । इष गिरिधर चरण सदा सेवक सरणाधार चारो वरण भरत पानी । वेदपथ व्यास से दूनसान दास से ज्ञानको कपिल से कर्म योगी । साधु लक्षण निपुण बहु ब्रज-राज प्रकट सुखरास मनो इन्द्रभोगी । सिन्धु सम गम्भीर मिलन रंग और प्रीति को जलसीर ब्रज उपासी । ध्यान को सनक से भक्त को नन्द से याही ते वश कियो ब्रह्मरासी । मनहुँ इन्द्रको श्रीति कथा सौं लगी प्रीति निवास की चलो नीति प्रति विवेकी । रहित अभि-मानते बड़े सनमान के शील अरु दान गोविन्द टेकी । सदा निर्मल नाम अष्ट सिद्धि नवनिद्धि द्वार सेवत जहां मुक्तिगामी । राम राम गिरिधरण जानि आयो शरण दीनके दुख हरण धाम धामी ६८ श्रीविठ्ठल वल्लभा धीश चरण अस्तुमे सर्वदा सुन्दरा शीतलाश्रोतम निकला विहित करणां । विहित मायावाद वादि दक्षादि जन संग निलासम जन कुमति हरणां । अखिल साधन रहित दोष शत कालुष ...नि विमति भर भरित निज दास शरणां । भंजना कारा कोपादि ...हु नक्षयुत वासना भंग भवजलधि तरणां । वदत हरिदास इति निज ...रणा मानकह गोकुलाधीश पद कमल वरणां ६९ जयति राधिका रमणावर चरणपरि चरणरति वल्लभाधीशसुत विट्ठलेशे । दासजन लौकिका लौकि के सर्वथा कैर्वाचिंता दयति हृदय देशे । स्थापयत गानसंसततक्षत लालसं सहज सुखमा रुचिर रूप वेशे । भालगत ति-लक शुभ्रादि शोभासहित मस्तकाबद्ध सित कृष्णाकेशे । सहज हासादि युत वदन पंकज सरस वचन रचना पराजित सुदेशे । अखिल साधन रहित दोषशत सहित मतिदास हरिदास गति निज वलेशे ७० मनो वल्लभा धीशपद कमल युगले सदा वसत मम विविध रसभाव वलितं । अन्य महिमा भास वासना वासितं माभवतु जातु निज भाव चलितं । भजतु भजनीय मति शयति रुचिरं चिरं चरण युगलं सकल गुण सु-ललितं । वदतु हरिदास इतिमाभवतु मुक्तिरपि भवतु मम देवसुत जन्म

फांसाती ७१ जयति भट्ट सम्भवा तनुज कृष्णा बदनानल श्रीमद्विलसुगारु
गर्भ रत्न । देव मुख जन मनुस्मृति करणा कृतनिजा निर्मल विहित बहु
विविध यत्ने । महालक्ष्मी पती गोपिकानाथ श्रीविट्ठलाशिष सुभग
तनुज ताये । ग्रथित मायावाद वर्त्ति बदन ध्वांस विहित निजदास
जनपक्ष पाले । पुष्टिपथ कथन रचिता नेक सुग्रन्थ मथित भागवत
पीयूषसारे । राधे युवती भाव संतत भावित हृदय सदय मानस जनित
मोद भारे । निज चरण कमल शरणी परिक्रमण कृतिमात्र पावित
विताल तीर्थजाले । कृष्णा सेवन विहित शरणागत शिक्षणा स्थापित संदेह
पातीक वाले । निज वचन पीयूष वर्ष पोषित सकल साहित्य पुष्ट्य
जन पुण्य पुल्ले । विविध वाचो युक्ति निगम वचनो भिरैरपिच दूरित
दुर्ग गज तुल्ले । इति प्रोक्ति भिर्दीन सर्वपालल्घे सकल कर्तारि बधा-
ली । देव परि देवना भवति हरिदास के सकल मानस रहित जन
कृपाली ७२ ॥ राग रामकली ॥ श्री महलक्ष्म रूप धरयो । नखशिख प्रति
भावन के भयता वृन्दावन राम्पति स्वांग करो । अरम परम गिरिधर
जुक्ती गाई सैन सैन ब्रजराज उद्धरयो । पद्मनाभ देखे नित्यावे सुखिरहा
रामरमा भूव सौ ७३ हेलीनयनि कुञ्जलीला रसपूरित श्रीवल्लभ बन
मोरे । अंगअंग विपुल किपुल मनदामिनि द्युति फल फन प्रति दोरे ।
करत प्रवेश विरह विरहिनि ग्रुसि भाल बहुत कठोरे । पद्मनाभ
मथुरेश निवारत श्रीलक्ष्मणभट सुतओरे ७४ सखिरी शोभारस मय
भाव प्रकट करि श्रीवल्लभ वर देह । अङ्ग अङ्ग ब्रजबधू विरहिनी
व्यापी युगल सनेह । वृन्दाराय कृष्ण प्रकटित ह्वै हृदय निगूढ कंदरा
देह । पद्मनाभ सुत हित कियो रासगनेह मुरलिका वेह ७५ श्रीगो-
कुलनाथ निजवपु धरेउ । भक्त हेत प्रकटे श्रीवल्लभ जगते तिमिर जु
हरेउ । नन्द नन्दन भये तब गिरि गोप ब्रज उद्धर्यो । नाथ विट्ठलसुवन
ह्वैके परम हित अनुसर्यो । अति अगाध अपार भव निधि तारि
अपनो कर्यो । दास माधव आस देखे चरण शरणो पर्यो ७६ सुमिरों
श्री विठ्ठलेश कुमार । अति अगाध अपार भवनिधि भयो चाहोपार ।
मैं बलि रहत करुणा सिन्धु कोमल सदा चित्त उदार । गोकुलेश
हृदय बसो मम लाल पाल मिहाल । लाल तिलक न तजी कतहुं परी

सर्दाप पुकार । अन्त भक्तन दियो धीरज भये पद दातार । चार युगमें
विशद कीरति भक्तहित अवतार । नवकिशोर कल्यान के प्रभु गाऊ
बारम्बार ७७ रुक्मिणी रमन निरवार्धत पावन । सुतकी गाढ़ अंगु
रिया डारति शोभा कोटिक मारन । दुर्भिक्ष दुर्बुद्धि पाप हरत धरणि
पर ले उछंग डरलायन । वृन्दावनको चन्द श्रीवल्लभ ले बताय हृल
रायन ७८ ॥ सोहरि ॥ अथ श्रीयमुनाजीके कीर्तन राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ नमो
देवि यमुने नमो देवि यमुने हरेर्हामा निजनाथ तरायं । निजनाथ भावं
दायिनि कुमारी कारण पूर्वके कुरु भक्तिरायं । ध्रुव । मधुप कुल कलित
कमलावली व्यपदेश धारित श्रीकृष्णानुत भक्त हृदये । सतत मति भा
वित हरि भावना जातस्फुता हृदय भावित निज हृदये । निज कुञ्जभव
विविध तरु कुसुम युत शोभमाना निजमति वृन्दे । स्मरमानि
गोपीवृन्द पूजित सर सर्वांग मधुरा नन्द नन्दे । उपरि चल दल
कमलारुणा द्युति रुणा परि मिलित जल भरैरायमुना । व्रजयुवति कुच
कुंभ कुंकुमा रुणानुरः स्मारमलमार पितुरमुना । अभि रजनि हरि
विहति सोक्षितं कुवलया मिव सुभग नयनान्य शोभि शान्ति तनुये ।
नयनयुग मत्यंकित बहु तराशि वलानि रसिकता निधितया कुरुये ।
रजनि जागर जनित राग रंजित नयन पंकजे रहनि हरि सीक्षसे ।
मकरन्द भरमिये तानन्द पूरिता सतत मिः हर्याशु मुंचसे । तटगता
नेक शुकसारिका मुनिवरा स्तुत विविध गुणा सिन्धु सागरे । संगता
सतत मिह भक्त जन ताप हति राजसे रास रस सागरे । रति भर श्रम
जलोदित कमल परिमल व्रज युवति जल विहति मोदे । ताटंक चलन
धुनि रसत संगीत युत मद मुदित मधुप कृत विनोदे । निज व्रजजना
वनायात गोवर्द्धने राधिका हृदय गत हृदय कर कमले । रति मति
भावित रस विट्ठलस्याशु कुरुवेणु निनदाह्वान सरले ७९ ॥ श्लोक ॥
व्रजपतिहृदवल्लभंकदात्वच्चरणसरोरुहमीदागास्पदंमे । तव जलटगातवा
लुकाकदाहंसकलनिजागमनामुराकरिष्ये । वृन्दावनेचारुरहद्वनेष
स्मनोरथंपूरयसूरमूते । दृग्गोचरःकृष्णविहारसदास्थितिस्त्वदीयतटएव
भूयात ॥ राग रामकली चर्चरी ॥ पियसंग भरिरंग करिकलोले । सबन को
सुखदेन पियको करत सेन चित न परत चैन जबहिँ बोले । अतिहि

विख्यात सब बात इन हाथ नाम लीलाहि कृपाकरि अतोले। दरश
करि परशकरि ध्यान हियमें धरैं सदा श्रीवल्लभनाथ इनसंग डोले। अतिहि
सुखकरन दुखसबनको हरनयहै लीलाहि परन निजही जु कूले। ऐसी
यमुना जानि तुम करो गुणगान रसिक प्रीतम पाय नगमूले ८० ॥
राग रामकली ॥ नयन भरिदेख्य श्रम भाल तनया। लील पिय सों करे
सबल तबहीं परे श्रम जलनि भरत आनन्द सनया। चलति टेढ़ी होइ
लेति पियको मोहि इन बिना रहित नहिँ एक छिनया। रसिक
प्रीतम रास करत यमुना पास मानो निर्द्धनन को हो जु धनया ८१
श्याम सुखधाम जहाँ नाम इनके। निशदिना प्राणपति आय हिय
में बसे जोई गावे सुयश भाग तिनके। यहि जगमें सार कहत बार-
म्बार सबन के अधार धन निर्द्धनके। लेत यमुना नाम देत अभयपद
भाग रसिक प्रीतम प्रिया जश जो तिनके ८२ कहत सुखसार निहार
धारके। इन बिना ऐसी कौन करिहै सखी हरत दुखदन्द सुखकन्द
बरषे। ब्रह्म सम्बन्ध जब करत हैं जीवको तबहिँ इनकी बाम भुजा
फरके। दौरकरि शोरकरि जाय पियसों कहैं अतिहि आतुरमनमें जु
हरषे। नाम निर्मोलन रत्ने कोऊ नामके भक्तराखत हियेहार करके।
रसिक प्रीतम की होत जापर कृपा सोई यमुनाजुको रूप परखे ८३
यमुनासी नाहिँ कोऊ और दाता। जे इनकी शरण जातहैं दौरिके
ताहिको तेहिशरण करि सनाथा। यहि गुण गान रसना एक सहस्र
रसना क्यों न दई विधाता। गोविन्द बलि तन मन धन वारने सबनको
जीवन इनहीं के हाथा ८४ श्याम संग श्याम ह्वै रहीरी यहुने। सुरत
श्रम बिंदुते सिन्धुसी बहि चली मानो आतुर अली रही न भवने।
कोटि कामहिँ वारों रूप नयन निहारों लाल गिरिधरन सँग
करत रमने। हरषि गोविंद प्रभु देखि इनकी ओर मानो नवदुलहनी
आई गवने ८५ यमुन यश जगत में जोई गायो। ताके आसक्त ह्वै
रहत प्राणपति नयन में बैन में रस जो छायो। वेद पुराण की बात
यह अगम है प्रेमको भेदकोऊ न पायो। कहैं गोविंद यमुनाकी जापर
कृपा सोई वल्लभ कुलशरण आयो ८६ चरण पंकज रेणु यमुना देनी।
कलियुग जीव उद्धारण कारण काटतपाप अबधार पैनी। प्राणपति

प्राण यह आयबे तान नेह सकल यह सुख श्री कौनु सेवी । गोविंद प्रभु
बिना रहत नाहिं एक छिन अतिहि आतुर चंचल जो नैनी ८७
धाइके जाइके यमुनातीरे । तिनहींकी महिमा कहांलों बरनिये जाइ
परसत प्रेम अंग नीरे । निशिदिना केलि करत मनमोहन प्रियाके संग
भक्तनकीहै भीरे । श्रीतनयासी गिरिधरनसों बिठलेश । बिना नेकुनहीं
धरत धीरे ८८ जोई गुण यमुना यह नाम गावै । ता ऊपर कृपा करत
श्रीबल्लभ प्रभु सोई यमुनाजी को भेद पावै । तन मन धन अब लाल
गिरिधरनको देकरि चरण जब चित्तहिं लावै । छीतस्वामी गिरिधरन
श्रीबिट्ठल नैननि प्रकटलीला दिखावै ८९ धनि यमुना निधि देनेहारी ।
करत गुणगान अज्ञान अघ दूरि जाहि मिलवत पिय और प्यारी ।
जिनहिं सन्देह करो चाल जियमें धरो पुष्टि पथ अनुसरो सुख जो
कारी । प्रेमके पुंजमें रास रस कुंजमें यहि राखति अति रङ्ग भारी ।
यमुना अरु प्राणपति और सब प्राणसुत कहूं जन जीव पर दया बि-
चारी । छीत स्वामी गिरिधरन श्रीबिट्ठल प्रीतिके लिये यह संभवारी
९० गुण अपार एक मुख कहांलों कहिये । तजो साधन भजो नाम
यमुनाजीको लाल गिरिधरन को तबहिं पइये । परम पुनीत प्रीति
रीतिकी जानहीं दृढकरि चरण कमल जो गहिये । छीतस्वामी गि-
रिधरन श्रीबिट्ठल यहिनिधि छांड़ि अब कहां जो जइये ९१ चितमें
यमुना निशिदिन जो राखो । भक्तके बश कृपा करत हैं सर्वदा ऐसो
यमुनाजीको है जो साको । जाहि मुखतें यमुने नाम यह उचरै लक्ष
कीजै अब जाइ ताको । चतुर्भुजदास अब कहतहैं सबन सों ताते यमुने
यमुने जो भाखो ९२ प्राणपति बिहरत यमुना के कूले । लुब्ध मक-
रन्दके बश भये भ्रमर ज्यों रबि उदय देखि मनो कमल फूले । करत
गुंजार मुरली लेके सांवरो ब्रजबधू सुनत तन सुधि जो भूलै । चतुर्भुज
दास यमुना प्रेम सिंधुमें लालगिरिधरन अब हरषि झूले ९३ बारबार
यमुने गुणगान कीजै । यहि रसनाते जो नाम रस अमृत भागयजाके
सोई सो लीजै । भानुतनया दया अतिही करुणामया इनकी करे
आशया सदा जीजै । चतुर्भुजदास कहें सोई पिय पामरहैं जोई यमुना
रसमें भीजै ९४ हेत करिदेत यमुने बास कुंजें । जहां निशिबासर रास

सुं गोवर्द्धनधर कहौंलौं बरनिये प्रेमपुंजे । थकित गोविन्द नीरथकित ब्रजबधू और कोउ जग अरत घीर मुरलि सुनिजे । चत्रुभुजदास यमुने जो पतंग जानि बहुधनकी नाईं चित्तलाइ गुंजे ९५ भक्तपर करिकृपा यमुन ऐसी । छांडि निजधाम बिश्राम भूतल कियो प्रकटली ला दिखाई जो लैसी । परम परमारथ करत हैं पर्बन को दय अद्भुत देत आप जैसी । नन्ददास जो जानि दृढ़ चरण गहे एक रसना कहाकहूं बिशेसी ९६ नेह कारने यमुन प्रथम आई । भक्त के चित्त की वृत्ति सब जानकी ताहि ते अतिहि आतुर जो धाई । जैसी जाके मन हती मन इच्छा ताहि तैसी साधु जो पुजाई । नन्ददास प्रभुनाथ ताहिपर रीझत जोई यमुनाजूके गुण जो गाई ९७ यमने यमुने यमुने जो गावो । शेष सहस्रमुख गावत निशि दिना पार नाहिं पावत ताहि पावो । सकल सुखदेनहार तातिकरो उच्चार कहत हैं बारबार भूलि जिन जावो । नन्ददासकी आस यमुने पूरण करी तातें कहूं घरी घरी चित्त लावो ९८ भाग सौभाग्य यमुने जो देई । बात लौकिक तजो पुष्ट यमुनेभजो लाल गिरिधरन को ताहि वर मिलेरी । भगवती सङ्ग करि बात उनकी लेसदा शांति रहें केलि गेरी । नन्ददास जो जाहि वल्लभ कृपा करे ताके यमुने सदा वश जो हेरी ९९ नाम महिमा जो येसी जानो । मर्यादिक कहें लौकिक सुखलहैं पुष्टको पुष्टपति निश्चयमानो । स्वाति जलबूंद जब परत है जाहिमें ताहिमें होत तैसो जो बानो । यमुने कृपा जान सिंधुजल महिमान सूरगुण पूर कहांलों बखानो २०० भक्तको सुगम यमुन अगम औरे । प्रातही न्हात अघजात ताके सकल यमहु रहत ताहि हाथजोरे । अनुभवी बिना अनुभव कहा जानहीं जाको पिया नहीं चित्तचोरे । प्रेम के सिंधुको मर्मजान्यो नहीं सूर कहि कहा भयो देह बोरे २०१ फल फलित होत फलरूप जाने । देखहू नहीं सुनि ताहि कह आपनो ताको यह बात कोऊ कैसेमाने । ताहीके हाथ निरमोल नग दीजिये जोई नीके करि परख जाने । सूर कहि क्रूरते दूर बसिये सदा यमुनको नाम लीजे जो छाने २०२
राग रामकली चर्चरी ॥ यमुनेपतितदास के चिह्नन्यारे । भगवतीको भगवत सङ्ग मिलिरहे ताके बसत हिये प्राणप्यारे । गूढ़ यमुने बात जोई अ

जानहीं ताके मनमोहन नयन तारे । सूर सुखसार निर्धार ये पावहीं जापर होय वल्लभ कृपारे २०३ ॥ रागरामकली ॥ यमुने रसखानको शीश नाऊं । ऐसी महिमा जानि भक्तको सुखदानि जोई मांगो सोई सोई पाऊं । पतितपावन करन नाम लीने तरन दृढ करि गहे चरण कहूं न जाऊं । कुंभनदास गिरिधरन मुखनिरखते यहीं चाहत नहीं पलक लगाऊं २०४ यमुने अगणित गुण गने न जाहीं । यमुना तट रेन इतनै होय बैनइनके सुखदैनकी कहं वडाई । भक्तमांगत जोई देत तेहीछिनसोई ऐसी करै कौन प्रण निवाही । कुंभनदास गिरिधरन मुख निरखते कहो कैसे करि मन अघाई २०५ यमुना पर तनमन प्राण वारो । जाकी कीरति विशद कौन अब कहिसके ताहि नैननते न नेकु टारो । चरण कमल उनके जो चिंतत रहो निशि दिन नाम मुखते उचारो । कुम्भनदास कहे लालगिरिधरन सुख इनकी कृपाभई तो निहारो २०६ भक्त इच्छा पूरण यमुने जो करता । बिनहिं मांगे देतकहांलों कहूं जैसे काहूको कोऊहोय धरता । यमुना पुलिन रास ब्रजवधूलिये पासमंद मन्दहास मन जो हरता । कुंभनदास जो प्रभु को मुख देखत यहि जिय लेखत यमुना जो भरता २०७ रास रस सागरे यमुना जानी । प्रति छिननउतन बहत धारा तन राखत अपने उरमांझ ठानी । भक्तको सहे भार देत प्राण अधार अतिहि बोलत मधुर मधुर बानी । श्रीविट्ठल गिरिधरन बर बस किये कौन पै जात महिमा बखानी २०८ भक्त प्रतिपालि जंजाल टारे । अपने रसरंगमें संग राखत सदा सर्वदा जोई यमुने उचारे । इनकी कृपा अब कहांलों बरणिये जैसे राखत जननि पुत्र बारे । श्रीविट्ठल गिरिधर संग बिहरते भक्तको एक छिन ना बिसारे २०९ कौनपै जात यमुने जो बरनी । सबहि को मन मनमोहन हरता सो पियको मनये जोहरनी । इनबिन एक छिन रहे न जीवन धन ब्रजचन्द मन आनन्दकरनी । श्रीविट्ठल गिरिधरन सहित आय भक्तके हेत अवतार धरनी २१० यमुना जो नाम ले सो सभागी । सोई रत रूपको सदा चिन्तन करे नेकु नहिं कलपरे जाहिलागी । पुष्टि मारग परम अतिहि दुर्लभ परम छांड़ि सगरे करम प्रेम पागी । श्रीविट्ठल गिरिधरनसी निधि अब भक्तको देतहैं बिनहिं मांगी २११

यमुने तुमसों एक कहौं सुनहीं । करि कृपा परम निशिबासर दीजिये तिहारे गुण गानको रहे उल्लसहीं । तुमसु पायेते सकल निधिपावहीं चरणकमल चित्त भ्रमर भ्रमहीं । कृष्णदासनि कहै कौनयह तपकियो तिहारे ढिग रहतहै लता द्रुमहीं ११२ ऐसीकीजै कृपा लीजिये नाम । यमुने जगवंदनी गुण न जात गोगिनी जिनके ऐसे धनी सुन्दर श्याम । देत संयोग रस ऐसे पियहैं जो बस सुनत सुयश तिहारो पूरेसब काम । कृष्णदासनि कहे भक्तके कारने यमुन एक छिन नहींकरेबिश्राम ११३ यमुना के नाम अघ दूरभाजे । जिनके गुण सुनिके लाल गिरिधरन पिय आय सन्मुख ताके बिराजे । तेहि छिन काज ताके जो सगरेसरत आइके मिलत ब्रजबधू समाजे । कृष्णदासनि कहे ताहि अब को निडर आकेऊपर यमुनेसि गाजे ११४ यमुनाके नाम लेहैं जो लेहैं । जिनको लगन लागी नन्दलाल सों सरबस देके निकट रैहैं । जिनहिं सुगम जानबात सबमें जानि बिना पहिँचानि कैसे जो पैहैं । कृष्णदासनि यमुना नाम नौका भक्त भवसिन्धु तेयों जो तरैहैं ११५ यमुने की आस अब करत हैं दास । मनक्रम वचन कर जोरिकै मांगत निशिदिन राखिये अपनेहीं पास । जहां अब रसिकबर रसिकनी राधिके दोउ जन संग मिलि करत हैं रास । दास परमानन्द पाय अब ब्रजचन्दहि मिराके नयनानन्द हास ११६ यमुने सुख कारनी प्राणपति के । पियजे भुलताजन्हें सुधि करि देत तिन्हें कहांलोंकहिये आतहि इनके हितके । पिय संग गानकरें अधिर रस उमंगि भरे देत तारी करें केत जितके । दास परमानन्द पाय अब ब्रजचन्द थाहि जानत अति प्रेम गतिके ११७ यमुने के साथ अब फिरत हैं नाथ । भक्त के मनके मनोरथ पूरण सबै कहांलों कहिये अब इनकी जो बात । बिबिध शृङ्गार भूषण अङ्ग अङ्ग सजे बरणि न जात शोभा बनी गात । दास परमानन्द पाय अब ब्रजचन्द राखे अपने शरण बहे जो जात ११८ यमुने पियको बश तुम कीने । प्रेम के फन्दते घेरराखे निकट ऐसे निरमोल नग मोल लीने । तुम जो पटाम्बर सहां अब धावत निशिदिन तिहारे रस रंग भीने । दास परमानन्द पाय अब ब्रजचन्द परम उदार यमुने जो दीने ११९ जगमें यहीसार भजन बारम्बार । श्रीयमुना

श्रीजी नाम जप निशिदिन जाते उतरेगो भवसागर पार। जाके भ-
जनते हरि हियमें बसो करें सदा रखैया अपनी पियुसार। कहत
ब्रजपति तुम सजन सों समुझाय परे। इनके चरणा बिन और नाहिं आधा-
र १२० राधे रसना गुण अपार क्यों और बरनो। सावन भलो तासो
भलो इनकेनाम जाके सुमिरनते होयगो तरनो। कृष्ण मनमें निश्चय
करिके करो सदा तट इनके निकट रहनो। कहत ब्रजपति तुम सजन
सों समुझाय जपो हरिनाम और कछु न करनो १२१ प्रिय संग रङ्ग
भरि करि बिलासे। सुरति रस सिन्धुमें अतिहि हरषित भई कामन
ज्यों फूलते रवि प्रकासे। तनते संगते आभूषे बरषा करति हैं करि
संग मृदुल हासे। कहत ब्रजपति तुम सजनसों समुझाय मिलें यमुनाम
इनहीं उपासे १२२ यमुना सी नाहीं कोऊ दुखकी हरनी। जाके स्नान
ते मिटतहैं सब पाप होतहैं आनन्द सुखकी करनी। महिमा अगाध
अपार इनके गुण सकल यश वेद पुराण बरनी। कहत ब्रजपति तुम
सजन सों समुझाय छूटे यमडर जो आवे इनकी शरणी १२३॥ राग राम-
कली चर्चरी॥ जयति भानु तनया चरण युगुल बंदे। जयति ब्रजराज
नन्दन प्रिये सर्वदा देति आनन्द ज्यों शरद चंदे। जयति सकल सुख
कारनी कृष्ण मनोहारनी श्रीगोकुल निकट बहत मंदे। जाके तट नि-
कट हरिरास मण्डल रच्यो तहाँ नितत तता थेई थेई दे। जयति
कालिंद गिरिनन्दनी देति आनन्दनी भक्तके हरें सब दुःखदन्दे। चित्त
में ध्यानधरि मुदित ब्रजपति कहैं जयति यमुने जयति नन्द नन्दे १२४
राग रामकली॥ श्री यमुने तुमसी और न कोई। करो कृपा निज दीन
जानिके ब्रजनिज वासो होई। राखो चरण शरण तरनि तनया ज-
नम आपदा खोई। यह संसार अपने स्वारथ को सुतपति सगो न
कोई। प्रेम भजन में करत बिघनता संत संतापत सोई। ताको संग
मोहिँ सपन न दीजो मांगत नयनन रोई। गरल पानते डारत अमृत
बिषया रसमें मोई। रसिक कहत दीन ह्वै याचूं लहरि समुद्र समो-
ई १२५ श्री यमुनाजी दीन जानि मोहिँ दीजे। नन्दके लाल सदा वर
मांगूं सब गोपिन की दासी कीजे। तुमहो परम उदार कृपानिधि
संत जनन सुखकारी। तुम्हरे बस बरतत राधाबर तट खेलें गिरिधा-

री। सब सखियन मिलि हरिसँग खेलैं अद्भुत रास बिलासी। तुम्हरे पुलिन निकट कुञ्ज द्रुम कमल पुहुप पर बासी। श्रम जल सोहत गात्र अतिरस भरे जल क्रीड़ा सुखकारी। सनुतारा मधि चन्द्र बिराजत भरि भरि छिरकत ब्रजनारी। रानीजूके पाइँलागि बिनतीकरि गृहको कारज दान कीजे। परमानन्द प्रभु सब सुखदाता इहरस नयन भरि पीजे १२६ श्रीयमुनाजी तिहारो दरशमोहिं भावे। श्रीगोकुलके निकट बहुत हो लहरनकी छबिआवे। सुखकरनी दुख हरनी यमुना श्रीमत आतहिन्हावे। मदन मोहन जूकी खरी पियारी पटरानी जो कहावे। वृन्दावन में रास रच्यो है मोहन मुरलि बजावे। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को वेद बिमल यश गावे १२७ यमुनाजी यह प्रसाद हों पाऊं। तुम्हरे निकट रहों निशि बासर राम कृष्ण गुणगाऊं। मज्जन करों बिमल पावन जल चिंता कलुष बहाऊं। तुम्हरी कृपा भानुकी तनया हरिपद प्रीति बढाऊं। बिनती करों यहै बरमांगूं अधम संग बिसराऊं। परमानन्द चारफल दाता मदनगोपले भाऊं१२८ यमुनाजी यह बिनतीचित धरिये। गिरिधरलाल मुखारबिन्द रति जनम जनम मोहिं करिये। बिषसागर संसार बिषम अति बिमुख सगाते डरिये। काम क्रोध अज्ञान तिमिर अतिडर अन्तरते हरिये। तुम्हरे निकट बसों निजजन सँग रूप देख मन ठरिये। गाऊं गुणा गोपाल लालके दुष्टबादते डरिये। बिबिध दोष हरिहो कालिन्दी नेक कृपाकरि ढरिये। गोबिंद सदा यहै बरमांगूं तुम्हरे चरणा अनुसरिये १२९ श्रीयमुनाजी अधम उधारनी मैं जानी। गोधन संग श्याम घन सुन्दरतीर त्रिभंगी ठानी। गङ्गा चरणा परसतें पावन हर शिर चिकुर समानी। सात समुद्र भेदि यम भगिनी हरि नखशिखलपटानी। आलिंगन चुम्बन रस बिलसत प्रेमपुंज ठकुरानी। गोविंद प्रभु रवि तनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खानी १३० श्री यमुनाजी तिहारो दरशहों पाऊं। श्रीगोबर्द्धन श्रीवृन्दावन ब्रजरज अंग लगाऊं। दिन दश पांच रहूं श्रीगोकुल ठकुरानी घाट नहाऊं। दासन ऊपर करो कृपा निज सन्तन के सँग आऊं १३१ श्रीयमुनाजी पतित पावन करेव। प्रथमहीं जब दरश दीनो सकल पापजु हरेव। भुज तरङ्गन परम

कीनो पय पानहै सुख भरेव। नाम लेतहि गई दुरमति स्यामसुन्दर वश
लेव। गोपकन्या कियो मज्जन लालगिरिधर वरेव। सूर श्रीगोपाल
निरखत सकल कारज सरेव १३२ श्रीयमुनाजी पतित पावन करन।
प्रथमहीं जाको दरश पायो कोटि कलिमल हरन। पैठत ही भुज
तरङ्ग परसत मिटत जियकी जरन। नाम उचरत शुद्धबाणी बुद्धिपो-
षत भरन। उपजै उग्र वैराग जाकूं खैंचि ल्यावै शरन। सूर हरि की
भक्ति दाता विश्व तारन तरन१३३ जगत में श्रीयमुनाजी परमकृपाल।
विनती करत तुरत सुनि लीनी भयेहैं मोपै दयाल। जो कोउ मज्जन
करत निरन्तर ताते डरत यमकाल। व्रजपतिको अति प्रियकालिंदी
सुमिरत होतनिहाल१३४ ॥ रासके पद ॥ राग रामकली ॥ गाऊं रसिकनंद
भूपालगुणअनन्त न पार कमलनयन पिययशोदादुलारु। प्रकटपुरुष
सारु पृथ्वी तलहूरैं भारु जानत महिमा जाके उरग हारु। रामकली
सकतारु नाचैं अमोघ विहारु कालिन्दी पुलिन सखी लोचन निहारु।
उत्तम भूषणावारु तन लेखिघनसारु वृन्दावन चन्द चहूंदिशा उजि-
यारु। मोहन नन्दकुमारु सुँगअङ्ग सुकुमारु गिरिवरधर यश त्रिलोक
विस्तारु। उभय करु उदारु व्रजभामिनि सिंगारु कृष्णादास प्रभु हरि
सर्व्वसु दातारु १३५ रास रस गोविन्द करता विहार। सूरसुताके पु-
लिन रम्य मह फूले कुंद मँदार। अद्भुत शत दल विकसित कोमल
मुकुलित कुमुद कल्हार। मलय पवन बहै शारद पूरणचन्द मधुप झं-
कार। सुघर राय संगीत कलानिधि मोहन नन्दकुमार। व्रजभामिनि
सँग प्रमुदित नाचत तन चर्च्चित घनसार। उभय स्वरूप सुभगता सीवां
कोककला सुखसार। कृष्णादास स्वामी गिरिधर पिय पहरे रत्नमय
हार १३६ गोविन्द करत मोहन मधान सप्तसुर गति भेद मिलवतवेणु
सुरति बँधान। तरनि जाकर लहर विरचित पुलिन केलि बँधान।
शारद रजनी बिमल उडुपति मलय पवन सुठान। राग बारि समुद्र तांडव
लास्य कला निधान। व्रजबधू सँग मुदित नाचत लेत अघ घर तान।
वशीकृत गण सिद्ध सुरगण थकित व्योम बिमान। कृष्णादास बिलास
रस गिरिधरन सब गुणजान १३७ ॥ रागरामकली। चर्चरी ॥ नृत्यत मोहन
रसिक सखन सहित ग्रगतातततथै तथैतत्ता। मृदङ्ग धुमु धुमु धुमु ताल

उपंग मिलि धुनि देत सप्त मधुरता। टिपारो सिरपीत अति लाल काछनी नवी किंकिनि झिनझिन गति लेत गावत सुरमता। गोविंद प्रभु गोप बालक जय जय प्रेम अनुरता १३८ रहेउ मोहिं श्रीवल्लभ प्रभु भावे। सुन मैया तुमो ढरमाखन दूध दहेउ जो छिपावे। तूतो करुणा कृपणा काहा काहूं नित उठि मोहिं खिझावे। मेरे प्राण जीवन धन गोरस मोते दूर दुरावे। वेतो खीर खाँड पकवान ले बिबिध लै प्रातहिं मोहिं जगावे। तेल सुगन्ध लगाइ प्रीतिसों ताते नीर नहावे। भूषण बसन बिबिध मनभाये पलटि पलटि पहिरावे। नैना आँजि तिलक मृग मदकरि दर्पण मोहिँ दिखावे। षटरस ब्यंजन मोहिं जिवावे हितसों पान खवावे। भँवरा चकई बिबिध खिलौना लेकर मोहिं खिलावे। बिबिध कुसुम अपने कर गुहिलै लै माला उरलावे। सुखद पर्यंक सँवारि मृदुल अतितापर मोहिँ सुवावे। डोल झुलावे रथबैठावे पालन हिंडोर झुलावे। ऋतुबसन्त जानि जिय अपने ले सुरङ्ग छिरकावे। जनम दिवस आवत जब मेरो आँगन चौक पुरावे। बाजे बहु बिधि द्वारे बाजे बन्दनवार बँधावे। मेरे गुण पुनि जनपै मोकों सप्त सुरनि जो सुनावे। हरदी दूब अक्षत दधि कुंकुम मङ्गल कलश भरावे। धेनु दिवावे द्विजनको मोपैं सुभग असीष पढावे। केतिक बात कहौं हौं हित की मोतें कहिय न आवे। मेरे प्रादुर्भाव दिवस दिन आनँद उर न समावे। नवदिन नये भोग करि मोकों हित सों भोग लगावे। घसि गुलाब के नीर सुचन्दन ले कपूर सो बसावे। शीतल बारि बयारि शीत अति मेवा देय रिझावे। शीतल नीर सुगंध सुवासित करि अधिवासन लावे। भरि भरि जलज नाय शीशपर मोतन ताप मिटावे। मेरे लिये पवित्रा राखो अति सुन्दर जो बनावे। सबहिन भांति प्रीति ब्रजजनकी आपें करि जो सिखावे। दशमी बिजय जानि रघुबर को अंकुर शीश धरावे। बहुबिधि पाक सँभारि मोहिँ हित मणिमय दीप दिवावे। शरदपूर रस दिन मेरो नटवर भेष बनावे। मोर मुकुट पीतांबर काछनी मुरली करहि गहावे। सुरभी बरदा न्योति कुहूकी निशि पुनि पुनि लाड लडावे। सुरपति मान भङ्ग प्रतिपद तब गो गिरिराज पुजावे। कातिक सुदी एकादशी के दिन कुंजमहल जो बनावे। पाद

सुरङ्ग बसन पाहरावत प्रवुर्विनि पर्व मनावे । अति गतिमन्द कोस जड़ कलियुग जन्महि वृथा गँवावे । रसिक कहै बल्लभ करुणाबिनु फल कबहू नहिंपावे १३९ कुँवरि राधिका तुव सकल सौभाग्य सीवया बदनपर कोटिशतचन्द वारों । खंजन कुरङ्ग शतकोटि नैननि उपर वारने करत जीयमें बिचारों । कदली शतकोटि जघन उपर सिंह शत कोटि कटिपर न्योछावर उतारों । मत्तगज कोटिशत चालपर कुम्भ शतकोटि इन कुचन पर वारिडारों । कीर शतकोटि नासा उपर कुन्द शतकोटि दशननि उपर कहि न पारों । पक्वकंदूर बंधूक शतकोटि अधरनि उपर वारि सोच गर्वटारों । नागशतकोटि बेनी उपर कपोत शतकोटिग्रीवापरवारिदूरि सारों । कमल शतकोटिकरयुगलपरवारों नाहिंन कोउ लोक उपमा उधारों । दासकुम्भन स्वामिनी सुजनशिख अङ्ग अङ्गत सुघरनि कहांलगि सँभारों । लालगिरिवरधरन कहत मोहि तोहिलौं सुख जालौं वह रूप सदा अक्षणा निहारों १४० ॥ मङ्गलआरती॥ रागरामकली ॥ मंगलमंगलं ब्रजभुवि मंगलं । मंगलमिह श्रीनन्दयशोदा नामसुकीर्त्तनमेतद्रुचिरोत्सङ्गसुलालितपालितरूपं ॥ ध्रुव ॥ श्रीश्रीकृष्ण इति श्रुतिसारंनामस्मार्त्त जनाशय तापापह मिति मङ्गलरावं । ब्रजसुंदरी वयस्य सुरभीवृन्द मृगीगण निरुपमभावामङ्गल सिंधुचया। मङ्गलमीषत स्मितयुतमीक्षण भाषणमुन्नत नासापुटगत मुक्ताफलचलनं । कोमल चलदंगुलिदलसङ्गत वेणुनिनाद विमोहित वृन्दावनभुविजाता । मङ्गल मखिलं गोपी शितुरोत मंथरगति विभ्रम मोहित रास स्थितगानं । त्वं जय सततं गोवर्द्धनधर पालय निजदासान् १४१ आरति कीजे श्यामसुंदर की । नन्द कुमार राधिकावर की । भक्ति करि दीप प्रेमकी बाती । साधुसङ्गति करि अनु दिनराती । आरति ब्रजयुवती मनभावे । श्यामलीला हित हरिवंश गावे १४२ आरति कीजे सुन्दरवरकी। नन्दकिशोर यशोदानन्दन नागर नवल ताप तमहरकी। नवविलास मृदुहास मनोहर श्रवणसुधा सुख मोहन करकी । बिहारी दास लोचन चकोरनित अंश प्रियाभुज धरकी १४३ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ सुभग श्यामके सङ्ग राधिका बिराजे । नैन आलसभरी सकल निशि सुखकरी कंठहार भुजधरी काम लाजे । सशिकर कञ्जा

स ते पीक दृगनसों मनो अतिहि रससें सजी रूप भ्राजे। छीत स्वामी गिरिधरन के मन बसी सबहीं मन हँसी सुखदियो आजे १४४ हरि खाली नाथ अम्बर दीजे। नन्द नन्दन कुँवर रसिकवर मनहरन सुनहु गिरिधर धरन गीति कीजे। सकल ब्रजनागरी दास तुम्हारी सदा तन साँझ प्रीत अति होत भीजे। छीत स्वामी अमित गुण गागनि आगरे विनती करति सब मानि लीजे १४५॥ राग रामकली॥ राधिका श्याम सुन्दरकी प्यारी। नखशिख अङ्ग अनूप विराजत कोटि चन्द द्युति वारी। एक सग संग न छोड़त मोहन निरखि निरखि बलिहारी। छीत स्वामि गिरिधर बश जाके सो वृषभानु दुलारी १४६ जगावति अपने सुतको रानी। उठो मेरे लाल मनोहर सुन्दर कहि कहि मधुरी बानी। माखन मिश्री और मिठाई दूध मलाई आनी। छगन मगन तुम करहु कलेऊ मेरे सब सुखदानी। जननि वचन सुनि तुरत उठे हरि कहत बात तुतरानी। नन्ददास कीनो बलिहारी यशुमति मन हरखानी १४७करत कलेऊ मोहनलाल। माखन मिश्री दूध मलाई मेवा परम रसाल। दधि ओदन पकवान मिठाई खात खवावत ग्वाल। छीत स्वामि वनगाइ चरावन चले लटकि पशुपाल १४८ राग रामकली। चर्चरी॥ नव कुंवर चक्र चूडा नृपति साँवरो राधिके तरुणिमनु पट्टरानी। ग्रामगृह आदि वैकुंठ पर्यंतलों लोक थानैत ब्रजराजधानी। मेघ छप्पन कोटि बाग सींचत जहाँ मुक्ति चारों जहाँ भरत पानी। सूर शशि पहरुवा पवन परजन्य इन्द्र चरण दासी भाट निगम बानी। धर्म कुतवाल शुक सूत नारद चारुवाल सनकादि वर चारि ज्ञानी। सत्व गुण पौरिया काल बँधुआ जहाँ डाडिये काम सुकृत निशानी। नील मर्कत धरे कुंज कुसुमित महल मध्य कमनीय से जहाँ ठानी। पल न बिछुरत दोउ जात नहीं तहाँ कोऊ व्यास महलनि लिये पीकदानी १४९॥ रागरामकली॥ बनि वृषभानु मानकी बेटी। निबिड़नि कुंज कुसुम पुंजनि पर श्याम वाम अँगलेटी। रति निशि जागी सोवत भोर किशोर कुँवरि गुजरेटी। पियके हियमें जिय ज्यों राजत नाहु बाहु बलभेटी। नैननि की सैननि कल मानो मनमथ अमिय अखेटी। लोभीलाल व्यासकीस्वामनि कंचनराशिसमेटी १५०

रचि अशोभित गन्ह नरेंद्र रानी करति मृगमदा मान । पीत नीरद
अङ्ग दिव्य दुकूल वर परिधान । गौति आरपीत कूरग अरुणांति अधर
कुङ्कुमा पान । स्वेदकन राजत वदन विधु पर सुधा बिंदु समान । केश
कुसुमनि कारतमणि ताटंक अतनकनि कान । पयोधर पथ अवल चा-
लक कृष्णा पत निज्ञान । सहस आनन कहिसके नहिँ व्यास भाग
वखान । अगल बंदत मात पितु गदाधर धरिध्यान १५१ खंजरीट
मोहे अलिकुल मोहे अम्बुज दलमोहे नैननि । सौभगता मृग शावक
मोहे मीन मोहे जलसैनति । मुकता मोहे मरकत मोहे विद्रुम मोहे
रस बैननि । प्रताप बल उडुराज मोहे नटवर मोहे गति नैननि । आ-
लस वलित ललित भुव पल्लव अलकावलि युत युत चैननि । बलि कृष्णा
दास आस पोरपूरणा गिरिधर मोहे सहसैननि १५२ ॥ राग रामकली चर्चरी ॥
नमो तरणितनया परम पुनीतजगत पावनी कृष्णा मनभावनी रुचिर
नामा । अखिल सुखदायिनी सब सिद्धि हेतु श्रीराधिका रवनरति
करन श्यामा । विमल जल सुवन नव काल मामोदयुत पुलिन अति
रम्य प्रिय व्रजकिशोरा । गोपगोपी नवल प्रेम रतिनंदिता तट मुदित
रहत जैसे चकोरा । लहरि भाँवरि ललित वालुका शुभग व्रजबालव्रत
पूरणाराम फलदा । ललित गिरिवर धरन प्रिय कलिंदनन्दिनी नि-
कट कृष्णदास विहरत प्रबलदा १५३ ॥ रागरामकली ॥ राधा पे हँग हेरी
तेरे । देखे हाल मथत दधि कीन्हों हरि मनों लिखे चितेरे । तेरो मुख
देखत शशि लाजे और कहो क्यों वाचे । नैनातेरे जलज ज्योति हैं
खंजनते अति नाचे । चपलाते चमकति अति प्यारी कहा करेगी
श्यामहिँ । सुनहु सूर कैसेदिन खोवति काज नहीं तेरे धामहिँ १५४
दूध दोहनी लेरी मैया । दाऊ टेरत सुनि मैं आऊं तबलों करि विधि
धैया । मुरली मुकुट पिताम्बर दे ग्वाहिँ ले आई महतारी । मुकुट धरेउ
शिरकटि पीताम्बर मुरली करलिय धारी । राधा राधा कहि मुरली
में खरिकहि लई बुलाई । सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि ऐसी बुद्धि
उपाई १५५ कुँवर कहेउ मैं जात महरि घर । प्रातहि आई खरिक
दुहावन कहति दोहनी लैकर । तब खरिकहि कोउ ग्वालगये नहिँ
तिहि कारण व्रज आई । जो देखौं तो आँगनहि बैठे गैया दुहत क-

कन्हाई । तबकी दोहनी तबकी दुहत गोहिं देखत अति सोचलागी । तबकी
राधिका तबकी सूर प्रभु देखि महरि अनुरागी १५६ दधिमथैनु
दूनावत पथारी । करति मनोरथ पूरता मनु वृषभानु सकारी नारी ।
दूध धार मुखपर छवि लागत सो उपमा अति भारी । मानों चन्द्रकलं-
कहि धोवत जहँ तहँ बुंद सुधारी । हाव भाव रस मगनभई दोउ छवि
निरखति ललितारी । सो दोउ सुख करत सूरप्रभु तोरी नहिं सुजन कं-
हारी १५७ नन्दनंदन यह बुद्धि उपाई । जे जे सखा प्रकृति के जाने
ते सब लये बुलाई । सुबल सुदामा श्रीदामा मिलि और महर सुत
आये । जो कछु मंत्र हृदयमें हरिके ग्वालन प्रकट सुनाये । ब्रजयुवती
नित प्रति दधि बेचन बन बन मथुरा जाति । राधाचन्द्रावलि ललिता-
दिक बहुतरुणी यक भांति । कालिन्दी तट कालि प्रातही द्रुमचढ़ि
रहो लुकाई । गोरस ले जबहीं सब आवैं मारग रोकहु जाई । भली
बुद्धि यह रची कन्हाई सखनि कहेउ सुखपाई । सूरदास प्रभु प्रीति
हृदय की सब मन गये भलाई १५८ प्रातहि उठो गोपकुमार । परस्पर
बोलत जहां तहां यह सुन्यो अनवार । प्रथमही उठि सखा आये नन्द
के दरबार । आइये उठिके कन्हाई कहेउ बारम्बार । ग्वालटेरन सुनि
यशोदा कुँवर दियो जगाय । देह आपुन गोत साथै उठे तब अकुलाय ।
मुकुट सिर कटि पीत अम्बर मुरलि लीनी हाथ । सूरप्रभु कालिन्द
तट गये सखा लीने साथ १५९ भली करी उठि प्रातहि आये । मैं
जानत सब सखनि उठी जब तब तुम मोहिं जगाये । अब आवति हैं
हैं दधि लीन्हें घर घर ते ब्रजनारि । हँसे सबै करतारी दै दै आनँद
कौतुक भारि । प्रकृति प्रकृति के जे सब राखे सखी पांचहजार । और
पठाय दिये सूरज प्रभु जेते अतिहि कुमार १६० कहा हमहिं रिस
करत कन्हाई । यह रिस जाय करो मथुरा पर जहँ है कंस कसाई ।
हम अब कहा जाय गोहरावैं बसति तुम्हारे गाउँ । ऐसे हाल करत
लोगनिके कौनरहे यहि ठाउँ । अपनेही घरके तुम राजा सबको राजा
कंस । सूरश्याम हम देखनचाहे अब सीखे ये गंस १६१ प्यारी पीतां-
बर उर झटक्यो । हरि तोरी मोतिनकी माला कछु गर कछुकर लट-
क्यो । हीरो ओकरन श्याम तुमलागे जाय गहीकर फेंट । आपु श्याम रिस

करि अंकम भरि भई प्रेमकी भेट। युवतिन घेरि लियो और को तब भरि भरि धरि अँकवारि। सखा परस्पर देखत ठाढे हँसत देत कि-लकारि। हांक दियो करि नन्द दोहाई आय गये सब ग्वाल। सूर श्यामको जानति नाहीं ढीठ भई है बाल १६२ हँसत कछिनसों कहत कन्हाई। मैयाकी बाबा की दाऊजू की सोंह दिवाई। कहति काहे हँसि हेरो काहे भौंह मरोरेउ। यह अचरज देखो तुम इनको कब कस बदन मरोरेउ। ऐसो बातनि सोंह दिवावति अधिक हँसी मोहि आवति। सूरश्याम कहि श्रीदामासों तुम काहे न समुझावति १६३ यह कहि उठे नन्दकुमार। कहा ढीठी रही बाला परेउ कौन बि-चार। दानको कछु कियो लेखो रहीं जहँ तहँ रोकि। प्रगट करि हमको सुनावहु मेटि जोरोरोकि। बहुरि यहि मग जाहु आयहु राति सांझ सकार। सूर ऐसो कौन जो पुनि तुमहिं रोकनहार १६४ राधा सों माखन हरि मांगत। औरन के मटुकिन को खायो तुम्हरो कैसो लागत। लै आई वृषभानुसुता हँसि सदल लली है मेरी। लै लीन्हों अपने कर हरिमुख खात अलप हँसि हेरी। सबहिनते मीठो दधि है यह म-धुरे कहेउ सुनाई। सूरश्यामप्रभु सुख उपजायो ब्रजललना मनभाई १६५ धनि नन्द भामिनी ब्रजनारि। खात लै दधि दूध माखन प्रगट जहां मुरारि। नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म आद त्रिपुरारि। शुक सनकमुनि सेउ न जानत निगम गावत चारि। देखि सुख ब्रजनारि हरिसँग अ-मर रहे भुलाय। सूर प्रभुके चरित अगणित बरणि कापै जाय १६६

रागरामकली चर्चरी॥ ग्वालिनी नन्दद्वारे नन्द गेह बूझै। इतहीते जाति उत उतहिंतते फिरतिइत निकसहु जाति नहिं नेक सूझै। भई बेहाल ब्रजबाल नँदलाल हित अर्पि तनमन सबै तिनहिं दीनो। लोककुललज्जा तजी लाज देखत लजी श्यामको भजो कछु डर न कीनो। भूलिगयी दधि नाम कहति लैहो श्याम नहीं सुधि धाम कहँहै कि नाहीं। सूर प्रभुको मिली भेंटि भलि अनभली चून हरदीरा देह छाहीं १६७॥

रागरामकली॥ तब एकसखी प्रीतम कहति। प्रेम तेने प्रकट कीन्हों धीर काहेन गहति। ब्रजघरनि उपहास जहँ तहँ समुझि मन किन रहति। बात मेरी सुनति नाहिन कहति निन्दा सहति। मात पितु गुरुजननि

जानयो भली खोइ महरनि। सूर प्रभुको ध्यान चितधरि अतिहि काहे
लहति १६८ एक गाउँ को बास धीरज कैसे के धरौं। लोचन मधुप
अटक नहिँ मानत यद्यपि यतन करौं। वे यहि मग नित प्रति आवत
हैं हौं दधिलै निकरौं। पुलकित रोम रोम गद गद सुर आनँद उमँगि
भरौं। पल अन्तर चलिजात कलप भर बिरहा अनल जरौं। सूर स-
कोच कुलकानि कहांलगि आरज पथहि डरौं १६९ मेरो मन हरि
चितवनि अरुझानो। फेरत कमल द्वार ह्वै निकसे करत शृङ्गार भु-
लानो। अरुण अधर दशननि द्युति राजत मोहन मृदु मुसकानो।
उपजि तनय सुत पांति कमलके बंदन मुकुरके मानो। यहि रस मगन
रहति निशिवासर हरितजि और न जानो। सूरदरश चित भङ्ग होत
क्यों जो जेहि रूप समानो १७० हौं सङ्ग सांवरके जैहौं। होनी होय
होय सो अबहीं यश अपयश काहुन डरैहौं। कहा रिसाय करैकोउ
मेरो कछु जो कहे प्राण तिहि देहौं। देहौं त्यागि राखिहौं यह व्रत
हरि रति बीज बहुरि कब पैहौं। का यह सूर अजिर अवनी तनुतजि
अकाश पिय भौन समैहौं। का यह ब्रजबासी क्रीडा जल भजि नन्द
नन्दन सब सुखलैहौं १७१ कब की मह्यो लिये शिरडोले। झूठे ही
इत उत फिर आवति यहां आनि पै बोले। मुंहलों भरी मथनियां
मेरी तोहिं रटत भइ सांझ। जानतिहौं गोरसको लेबो याही बाखरि
सांझ। इतनो आइ बात सुनि मेरी कहे बिलग जिनमाने। तेरे घरमें
तुहीं सयानी और बेंच नहिँ जाने। भ्रमतहि भ्रमत भरमि गइ ग्वालिनि
बिकल भई बेहाल। सूरदास प्रभु अन्तरयामी आइ मिले गोपाल
१७२ भई मनमाधवकी अवसेरि। मानवरे मुख चितवनि हाँसी ध्यान
न आवै फेरि। तब अकुलाय चली उठि बनको बोले सुनत न टेरि।
बिरहा बिवश चहुघा भरमति श्याम कहा कियो फेरि। आवहु बेगि
मिलहु नँदनन्दन दानन करहु निवेरि। सूरश्याम अङ्कम भरिलीनी
दूरिकियो दुख ढेरि १७३ यह कहि मौन साध्यो ग्वारि। श्याम
रस घट पूरि उछलत बहुत धरेउ सम्हारि। वैसेही ढँग बहुरि आई
देह दशा बिसारि। लहुरी कोउ नन्दनन्दन कहै पुकारि पुकारि।
सखी सों तब कहति तूरी को कहांकी नारि। नन्द के घरजाउँ किन

है जहाँ हैं बनवारि। देखि वाको चक्रत भई सखि निकसअम गहि सारि। सूरश्याम कहि सुनाऊं गये फिरकहडारि १७४ रागरामकली ॥ कहा कहति है री माता मोसों। ऐसे बोहिगई जो श्याम संग फिरै जो वृथा रिसकरति कहा कहु तोसों। काहे कौने बानबोलि हौं तेहि सात मेरे आगे कहै ताहि देखों। नातरिस करत माता कहे मारिहै भीति निलज तुम करत रेखों। तुमहि रिसकरति कछु कहा मोहिं नारिकी धन्य पितु माता भ्राता तुमहीं। ऐसो लायक नन्दमहर को सुत भयो तिनहिं मोहि कहति प्रभुसूर सुनहीं १७५ श्यामनजानि हिरदै चुरायो। चतुर बरनागरी महामनिमा लखिलियो प्रियसखी संग ताहि न जनायो। कृपणा ज्यों मस्तधन ऐसे दृढ़ कियो तनजननि सुनि बातहँसि कंठलायो। मांमदयो डारि कहि कुँवरि मेरी बावरि सूर प्रभुनाम भूलै डरायो १७६ संगब्रजनारि हरि रासकीन्हो। सब-निको आशपूरण करी श्यामलै त्रियनि पिय हेतसुखमानि लीन्हो। मेटि कुलकानि। नरियाद विधि वेदकी त्यागि गृह नेह सुनि लेखाय रे। फन्दी जैसे करी मनहिं सब जे भरी पाक काहुन करी आपभाई। ज्यों महाभक्त गजयूथ कारनो लिये कूल सब फारि इन काहु न मान्यों। सूर प्रभु नन्दसुत निदरि निगम रस कारे भ्रमा लगतो कहुं नको जान्यों १७७ रैनरस रास सुख कहतवीती। भोरभये गोपानन यमुनाजल अं-लिस न्हात सुख पावत अतिबढ़ी प्रीती। कृ कुचक सिर तर हों त अक हरिसंग रसिक एक जल मध्य कृष्णसों चढ़ी। कनकपद्म चरति माक संग भरि लै चलति एक सुख लरति अतिनेकढ़ी। काहुनहिं डरत जल थल क्रीडाकरति हरति मन निदरि ज्यों कन्तनारी। सूर प्रभु श्याम श्यामा संग गोपिका मेदी तनु साज भई अगन भारी १७८ रागरामकली ॥ श्यामाश्याम सुभग यमुना जल विभ्रम करत बिहार। पीत कमल इन्दीवर मानों भोरहिभये निहारि। श्रीराधा अंबुज कर भरि भरि छिरकत बारम्बार। कनक लता मकरंद भरत मानों हालत पवनसँचार। अतसी कुसुमकलेवरबूँदैं प्रतिबिम्बन मनोहार। ज्योति प्रकाश सुघनमें खेलत स्वाति सुवन आकार। धाइधरे वृषभानसुता हरि मोहे सकल सृंगार। विद्युत जलद सूर मनों मिलि श्रवत

मुक्तावलि धार १७९ रीझे श्याम नागरिरूप। नैननि लगु निहारि उर पर अवतंसीर अनूप। स्रवत जल कुच परत धारा नहीं उपमा पार। मनों ढाँपत राहु अमृत कनक गिरिपर धार। कञ्ज परसत श्याम सुन्दर नागरी रस भाइ। सूर प्रभु तन काम व्याकुल गये सब निज नाइ १८० श्यामा श्याम अंकमें भरी। उरज उर परसाइ भुजनि भुजा गाढे धरी। तुरत मनसुख मानि लीन्हें नारि तेहि रङ्ग धरी। परस्पर दोउ करत क्रीड़ा राधिका नव हरी। ऐसही सुख दियो मोहन सबै आनँद भरी। करति रङ्ग किलोर यमुना प्रेम आनँदभरी। रास निशि श्रम दूरि कीन्हो धन्य धनि यह घरी। सूर प्रभु रस निकसि आये नारिसँग सब खरी १८१ कहा करौंनीके करि हरिको रूप रेखनहिं पावति। संगहि संग फिरति निशि वासर नयन निमेष न लावति। बँधी दृष्टि ज्यों गुडी डोरि बश पाछे लागी धावति। निकट भये मेरो ये छायासोंको दुखउपजावति। नखशिख निरखि निहारेउ चाहति मन रुचि अति भावति। जानों नहीं कहांते निज छबि अङ्ग अङ्गमें आवति। अपनी देह आपुको बैरिनि दुरत न दुरे दुरावति। सूरश्याम सों प्रीति निरन्तर अन्तर मोहिं करावति १८२ मैं मन बहुत भांति समुझायो। कहा करौं दरशन रस अटक्यो बहुरि नहीं घर आयो। इन नैननि के मेह रूप रस उनमें आपु दुरायो। बरजत ही बैकाज सुपत ज्यों पलट्यो जो न सिखायो। लोक वेद कुल निदरि निडरह्वै करत आपनो भायो। सुख छबि निरखि चोंपि निशि खगज्यों हठि आपुनहिँ बँधायो। हरिको दोष कहा कहि दीजै यह अपनें बल आयो। अति बिपरीत भई सुनि सूरज सुमिरि सो मदन जगायो १८३ राधातैं हरिके रँगराची। तोतें और चतुर नहिँ कोऊ बात कहूं मैं सांची। तैं उनको मन नहीं चुरायो ऐसीहै तू कांची। हरि तेरा मन अबहिँ चुरायो प्रथमहिँ तू है नांची। तुम अरु श्याम एक हैं दोऊ बाकी नाहीं बांची। सूरश्याम तेरे बश राधा कहत लोक में खां-चो १८४ राधा हरि अनुराग भरी। गद गद मुखबानी परगासति देह दशा बिसरी। कहतियहै मन हरिहरि लैगये येहीपरनिपरी। लोक सकुच शंका नहिँ मानति श्यामहि रङ्ग ढरी। सखी सखीसों कहति

बावरी थीं हम को निदरी । सूरदास प्रभुसों रतिमानी भुरई हम सिगरी १८५ कृ तनाज कहांलों करिहैं । तुम आगे मैं कहौं न सांची अब काहू नहिं डरिहौं । लोक कुटुम्ब जगत कहियत पहिले सबहि निदरिहौं । अब यह दुख सहिजात न मोपै विमुख बचन सुनि मरिहौं । आपु सुखी तो सबहीं कैहै उनके मुख कह सरिहौं । सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि अब कैहों कछु लरिहौं १८६ ॥ राग रामकली । चर्चरी ॥ सुतासों कहति वृषभानु घरणी । कहां तू राधिका भोरते फिरति है तेरीगति मोपै नहिं जाति बरणी । तोरि मोतिसरी तब गुपत करि धरेउँ कहुँ यहि मिस सकुचि रही मुख न बोलै । मनों खञ्जन चपल चन्द फन्दा परे उडत नहिँ ताहिते कहुँ न डोलै । कहा तेरी प्रकृति परीहै लाडिली अबहिंते कहा तू जातगोरी । सूर कहै जननि बोल नहीं आजु तू परोसि घर होआई खोहिगोरी १८७ ॥ राग रामकली ॥ राधा अतिहि चतुर प्रबीन । कृष्णको सुखदै चली गृह हंस गतिकटि छीन । हारके मिस यहां आये श्याम मणि के काज । भयो सब पूरण मनोरथ मिले श्रीब्रजराज । गांठि अम्बर छोरिके मोतीसरी लीन्हों हाथ । सखी आवत देखि राधालई ताको साथ । युवति बूझति कहां नागरि गिरिगई यक दाम । सूरप्यारी कहि सुनायो मैं गई तेहि काम १८८ ॥ राग रामकली । चर्चरी ॥ जागिये प्राणपति रैनि बीती । चन्द्रकी द्युतिगई पहे पीरी भई सकुच नाह दई अतिहि भीती । मात पितु बन्धु गुरुजन अबहिँ जानि हैं लखे जिनि कहूं यह लाज भारी । सखिन आगे नहीं नहीं सब दिन कही माहिँ घेरे रहति सबै नारी । उठे मुसुकाय अकुलाय अतुराय कै निकसि गये श्याम ब्रजनारि जान्यो । सूरप्रभु नन्द नन्दन दरश देगयो निरखि यकटक रही पल भुलान्यो १८९ ॥ राग रामकली ॥ राधासखी मिलि मनभाई । जबतें इनसों नेह लगायो बहुतभई चतुराई । और भई इतनों तुमको सखिगृह जनसे निठुराई । काहूको मनहीं नहिं आनति हमहुं सबनि बिसराई । तुमहो कृपाल कृपाल हैं सऊ आप स्वारथीमाई । सूर परस्पर दम्पति आतुर चतुर सखी लखिपाई १९० यह सखी अबलों कहा दुराई । इते द्योस हम कबहुं न देखी अबज़ू कहांते आई ।

त्रिभुवनकी शोभा सबगुणनिधि है विधि एक उपाई। विद्यमान वृष-भाननन्दिनी सहचरि सब दुखदाई। अपने मन तकितकि तनु तौलति विधुजनु सुन्दरताई। दुसह रूपकी राशि राधिका कहोकौनपुरपाई। राचि रही रस सुरत सूर दोउ निरखत नयन निकाई। चीन्हे हो चलि जाहु कुञ्जगृह छांड़ि देहु चतुराई १९१ ऐसी कुँवरि कहां तुम पाई। राधाहूते नखशिख सुन्दरि अबलौं कहां दुराई। काकी नारि कौनकी बेटी कौन गांवते आई। देखी सुनी न ब्रज वृन्दावन सुधि बुधि हरत पराई। धन्य सुहाग भागयाको यह युवतिनके मनभाई। सूरदास प्रभु हरषि मिले हँसि लै उरकंठ लगाई १९२॥ राग रामकली। चर्चरी॥ नन्दनन्दन हँसे नागरी मुखचितै हरषि चन्द्रावली कंठलाई। बाम भुज रवनि दक्षिण भुजा सखी पर चले बन धाम सुखकहि न जाई। मनो बिधुदामिनी बीच नभघन सुभग देखि छबि काम रति सहित लाजे। किधौं कञ्चन लता बीचहि तमाल तरु भामिनी बीच गिरिधर विराजे। गये गृह कुञ्ज अलिगुञ्ज सुमननि पुञ्ज देखि आनन्द भरे सूर स्वामी। राधिका रमन युवती रमन मन रमन निरखि छबिहोत मन कामकामी १९३॥ रागरामकली॥ मन तो हरिही हाथ बिकान्यो। निकस्यो मान गुमान सहित वह मैं यह होत न जान्यो। नयननि साटि करी मिलि नयननि उनहीं सो रुचि मान्यो। बहुत यतन करिहो पचिहारी फिरि इतको न फिरान्यो। सहज सुभाय ठगोरी डारी शीश फिरत भरगानो। सूरदास प्रभु रसबस गोपिन बिसरि गयो तनुज्ञानो १९४ लोचन भये श्यामके चेरे। एतेपर सुख पावत कोटिक मोतन फेरि न हेरे। हाहा करत परत हरि चरणन ऐसे बश भये उनहो। उनको बदन बिलोकत निशि दिन मेरो कहेउ न सुनही। ललित त्रिभङ्गी छबि पर अटके फटके मोसों तोरी। सूरदास यह मेरी कीन्ही आपुन हरिसों जोरी १९५ श्याम रङ्ग रँगे नैन। धोये छुटत नहीं यह कैसेहु मिले पघिलि ह्वै मैन। यतीमे नाहिं टरत उहां ते मोसों लैन न दैन। सूरज प्रभु के सँग सँग डोलत नेकहुँ करत न चैन १९६ लोचन भृङ्ग कोश रसपागे। श्याम कमल पदसों अनुरागे। सकुच कानि बनबेलीत्यागी। चले उड़ाय सुरति रतिपागी।

मुकुलित पराग रसहि इन चाख्यो । भवसुख फूल रसहि इन नाख्यो । इनते लोभी और न कोई । जो पटतर दीजै कहि सोई । गये तर्बहित फेरि न आये । सूरश्याम बेगहि अटकाये १९७ नयन भये बश माहन ते । ज्यों कुरङ्ग बश होत नादके टरत नहीं ताग्रोहनते । ज्यों मधुकर बश कमल कोशके ज्यों बश चन्दचकोर । तैसेई येबश भये श्यामके गुड़िया बश ज्यों डोर । ज्यों बश स्वाती बूंदन चातक ज्यों बश जलके मीन । सूरज प्रभुके बश्य भये येसखी साग प्रतिछू नवीन१९८ नयना मान अपमान सहेउ । अति अकुलाय मिलेरी बरजत यद्यपि कोटि कहेउ । जाकी बानि परी सखि जैसी तेही टेक रहेउ । ज्यों मरकत मूठी नहिं छांड़त नलिनि सुवास गहेउ । जैसे नीर प्रवाह स-मुद्रहिं गांभ बहेउ सुबहेउ । सूरदास इन तैसिय कीन्ही फिरि मोतन न चहेउ १९९ सजनी मोते नयन गये । अबलों आश रही आवनकी हरिके अङ्ग छये । जबते कमल नदन उन दरश्यो दिनदिन और भये । मिलेजाय हरदी चूना ज्यों सबहि रङ्ग रये । मोको तजि भये आप स्वारथी वा रस मत्तभये । सूरश्यामके रूप समाने मानो बूंदतये २०० पिय निरखति प्यारी हँसि दीन्हों । रीझे श्याम अङ्गअँग निरखत प्यारो हँसि नागर उर लीन्हों । आलिङ्गनदे अधर दशन खंडितकर गहि चिबुक उठावत । नासासों नासा लै जोरत नयन नयन परसा-वत । यहि अन्तर प्यारी उर निरख्यो झझकि भई तब न्यारी । सूरश्याम मोको दिखरावत उर ल्याय धरि प्यारी२०१ श्याम नारि के बिरह भरे । कबहुँक बैठतकुञ्ज द्रुमन तर कबहुँक रहत खरे । कबहुँक तनकी सुरति बिसारत कबहुँक तन सुधि आवत । तब ना-गरिके गुणहिं बिचारत तेई गुण गुनि गुनि गावत । कहुं मुकुट कहुँ मुरलि रही गिरि कहुँ कटि पीत पिछौरी । सूरश्याम ऐसी गति भी-तर आई दुतिका गोरी २०२ ठाढ़े नन्दद्वार गोपाल । बोलि लीन्हे देखि ललिता सैनदे ततकाल । हँसत गये हरिगेह ताके कोउ न जानत और । मिली हरिको लाइ उरभरि चापि कठिन कठोर । कहेउ मेरे धाम कबहूं क्यों न आवत श्याम । सूर प्रभुकहि आजु नागरि आइ हैं हरियाम२०३॥ राग रामकली । चर्चरी ॥ बाम संग श्याम यथयाम जागे ।

कोक विद्या निपुण सकल गुणनमें सपुण सुरत संग्राम जुरि नहीं भागो। अङ्ग आलस भरे नैन निद्रा ढरे सेज शय्या परे निशा बीती। सूरप्रभु नन्दसुत चले अनुरागके गये तावाम रसकामजीती॥२०४॥ रागरामकली॥ आजुबन्यो विश्वरूप अगाध॥ पर उपकार श्याम तनु धारेउ पुरवत सब मन साध। धर्म नीति यह कहां पढीजू हमहूं बात सुनावहु। कहौ कहां काको सुख दीन्हें काहे न प्रकट बतावहु। धनि उपकार करत डोलत हौ आजु बात यह जानी। सूरश्याम गिरिधर गुण नागर अङ्ग निरखि पहिंचानी॥२०५॥ राग रामकली। चर्चरी॥ कहांहैं श्याम काहां गवन कीन्हों। कहां तुम रहत कबहूं दरशदेत नहिं धोखे गये आय हम मानि लीन्हों। नैन आलसभरे चरण डग लरखरे कहांहौ डरेसे कहौ मोसों। रैनिकहूँ बसे प्रिय कौनसों रसेहौ उर करज कसे सो कहौ गोसों। भलेजू भले नन्दलाल वेऊ भली चरण जावक पाग जिनहिँ रङ्गी। सूर प्रभु देखि अङ्ग अङ्ग बानक कुशल मैं रही रीझि वह नारि चङ्गी २०६॥ रागरामकली॥ असांनो दिददाहाल न जाना। दरशपियासे नैनबिहारी मिलि महबूबाहुण बलिहारि लुभाना। तो मैं वारिजासी वो आव पियारे मनदी आश पूजासी दरश देखासो। बलिहारियांदा प्राणबिहारी अरज हमारी सुन छिनजासी। तैनूकी परवाह नेह लगायन आय सांवल दरद बंदीदा हाल बिहारिन सुन इनकी सलाह बलिहारियां देदिलनुलगी तुझ दरशन दी चाह। प-लकादे पड़े पाय। धरि धरि जीव जिवाव बिहारी। किसन भाव पिया निरमोही अरज हमारी। हसन तुसाड़ा दिलबिच बसियां और न भावै प्यारी। बलिहारियांनु लगावे गया सांवल रङ्गकरारी। जियरा मोरारे निशिदिन अकुलात बिहारी दरशन बिन। गुरुजन डर बाहर कबहूं निकस न पाऊँ समुझि समुझि बलिहार रहां घर अरी देखे किन। नित दाना कर फेरावो नन्ददे। बलिहारियां तेनू की सिखलाया लोगाहँसै गुरुजन बहुतेरा वो नन्ददे। बैठे दंपति रति राजे कोटि वारोतन सुदेश अङ्ग अङ्ग भूषण बसन पहिरे बरन बरन। रौसिये कुञ्ज मृदुल सरस रसपुञ्ज तहां करत भ्रमरगुञ्ज जहांदोऊमिलि करत बातें मधुर मधुर हँसन मानो लागे फूल झरन। नील पीतपट

दुकूल कालिन्दीकूल मदन मवास कियो आस पास सखि समूह गावत कल मधुर सुरन। रङ्ग राग जमि रह्यो जात नाहिँ कापै कह्यो रीझि रीझि छबि निहारि लेत बलिहारि राधा मोहन दोऊ मनके हरन। काम की रति पाय परत। जीति लोक लोकपाल ब्रह्मादिक इन्द्रादि सुर नर सिद्ध गन्धर्व नागजीते अति मदबाढ़ि रहेउ ताहुको मनहाँसिन हरत। ब्रज युवती मिलि नाचत गावत रङ्ग उपजावत केलिकरत। वारि बिहारी बलिहारी तिहारी संग राधा प्यारी जी- यते न टरत। तिहारी लाल बाल औरे हाल समुझ न परत कैंकहा। ज्यों ज्यों सुधि आवत मदन जगावत अति दुखपावत ब्याकुल बिरह महा। गिनति बीती रैनि तारे सुनि श्याम नयन हमारे पलन पाय दीन भये हहा। जोपै जिवावो बलिहारि दरश देखावो सूनी सेज लेत देखो प्राण अहा। क्यों वो सुनदा श्याम प्यारा मेड़ी अरज। किकरा साड़ा बसन बिहारी बलिहारियां मनलगानी अपनी गरज। तेड़ीवो आशा बन्दिया में मेहर करो वो मिलि बलिहारियां नुईस्कतु साँड़े फंदियां। मुरलीबजाई क्योंरे तू औचक द्वारखड़ा कान्हा। मैनबानसी तानरसभरी सोवत जगाई क्योंरे। भोरभावते गुरुजनमें ते लाजगँवाई क्यों रे। मो सूधे हँसि बलिहारीअनोखे प्रीति लगाई क्योंरे। नन्ददे निमानायार वे सुनि बंशीवाले गलमेंडरी। अरज हमारी सुनिबलि- हारो की तकसीर पईमेंडरी। पलुडानु छेड़ वे मेंड़ो पनियानु जादिया आजिज होइया ब्रजमोहनतेड़े बलिहारियां दे पाय परदेसोंहि खा- दिया। लोगवाजागे क्योंकर आवों मितवा। ब्याकुल होत मुरलि सुनि जिअरा आन कान जब लागै। हियरा भरेउ उमँगिअनुरागन लाज नहीं मोहिँ त्यागै। कोईयतन मिलनको जाउँ बड़भाग मोहनरसपागे। तेडरे में वारि वारि जावां सुनिप्यारी जिवन हमारी। कुब्जमथन देवी सुरसेवी बलिहारियानु अनीजिवामीतोहिँ मिलवो बिहारी। आरति करत सकल सुर साधा। चिन्ततचरणमिटे दुखबाधा। मनकरि मा- रुतनन्दनगावो। सनमुखहोत चारिफलपावो। बालारकतन तेजबिरा- जे। शोभा सिन्धु छत्र शिरछाजे। सीताकी सुधि लङ्कामेंलायो। रावण को जिनगरब नवायो। महाबाहुबल बिदित जगत पर। राक्षस कुल

कम्पत जाके डर। केशरिनन्दन कपि कुलनायक। मंगलकरन सन्त सुखदायक। सीताराम भक्ति रति ताकी। लइ बलिहारि चरणरज ताकी। और सर्वसुख तजिये मन ब्रज बसिये कृष्णानाम कलिकीरत्ति गावन प्रेमपंथमें धंसिये। योग यज्ञ व्रत ध्यान न आवतकाहेकोकाया कसिये। धरमकरम बहुँकायेवौरे करमकीच क्यों फँसिये। पुलिनपवित्र बलिहारिपरसरज लैलै गिरधरघसिये। वृथा मोहमेरो किनरघुवर। मैं मेरो मायाको चेरो भयो रहो नाहीं यमको डर। कपट कुचाल करो करमवश सूझत नहिं तवचरण कल्पतर। जानकि मनभावनसुखसीमा करुणासिंधुअयोध्यानागर। जिन सुखपायोदशरथसुतगायो गयोपार भवसिंधु अगमतर। इह दीन जानि जन अपनो सुनो बलिहारि कृपालु धनुअधर। आनि जिपांसीमेंडा जीया। नन्दननन्दन प्यारे लाल दि-खोदी दारुव ललामी। जो तू सानू छाँड़ि पई तो बिरहा दे हाथ बिका-मी। बूझे निहाल असाड़ा नी सावल बलिहारियां देघर आमी। श्याम महोबत तेरो वो मन लीतानि सहर दी मुरली बजा बंदागा बन्दानी मोहन इत औल करिगयो फेरिबो। बटोही जागुरे कहां सोवे। शिर-पर काल चढ़ो मार साथ श्वास श्वास भरि क्यों दिन खोवे॥ २०७॥

इतिरागकल्पद्रुमनित्यकीर्त्तनान्तर्गतरागरामकलीसमाप्त॥

अथ राग बिभास प्रारम्भ॥

जागो जागोहो गोपाल। नाहिंन अतिसोइये भयोप्रातपरम शुचि-काल। फिरिफिरि जात निरखि मुख छिनुछिनु सब गोपनके बाल। बिनु बिकसित मनु कमलकोशते लैमधुकरकी माल। जो तुम मोहन पत्याउ सूर प्रभु सुन्दरश्याम तमाल। तो उठिये आपुन अवलोकिये तजि निद्रा नयन बिशाल १॥ रागबिभास ॥ जागिये ब्रजराज कुंवर कमल कोश फूले। कुमुदिनि मुख सकुचि रही भृङ्गलता भूले। तमचुर खगरोर सुनिये बोलतबनराई। रांभत गो मधुरनाद बछराहितधाई।

बिधुमलीन रबिप्रकाश गावत ब्रजनारी । सूरश्रीगोपाल उठे परममं
गलकारी २ प्रात भये कृष्ण राजीव लोचन । मग अवधा ठाढ़े री भोचन
बिकसत कमल रततज्ञति सेनी । उठोहो गोपाल शुद्ध तेरीबैनी । खी
खांड घृत भोजन कीजै । मधु दूध धौरीको पीजै । सुराभि आनि जशो
नन्दरानी । परमानन्द प्रभु सब सुखदानी ३ लालं नाहिंन अगाइ सकी
सुनु सुवाल सजनी । अपने आन अजहूँ कान्ह मानत सुख रजनी । जब
जब हों निकट जाउँ रहत लागिलोभा । तनकी सुधिबिसरि गई देख
तमुख शोभा । बचननको जिय बहुत करत शोचत ठाढ़ी । नयनन
नयनविचार परव निरखत रुचि बाढ़ी । यहिबिधि बदनारबिंद यशु
मति जियभावे । सूरदास सुखकीरास कहत न बनि आवे ४ भयो चा
री पहर । कान्ह कान्ह करि टेरनलागे बाबानन्दमहर । छाइचकुरा
भयो भांवरे रांभन लागींधेन । उठे बलभद्र वकरुवा होलन गोप
पूरेबेन । गोपबधू दधि मथन लागीं बिप्र पढ़न लागे बेद । परमानन्द
दासको ठाकुर गोकुलके दुखछेद ५ प्रात समय उठि सोवत सुतको
बदन उघारेव नन्द । रहि न सके अतिशय अकुलाने नयन निशा
के दन्द । शुभ्र सेज में मिले सुख विकरेव गये तिमिर मिटि मन्द ।
मानहुँ पयनिधि मथत फेनफटि दयो दिखाई चन्द । सुगत चकोर सु
उठिधाये सखि जन सखा मुकुन्द । रही न सुधि शरीर औरमनु पिव
किरन मकरन्द ६ भोरभयो जागो नँद नन्द । संगसखा ठाढ़े जगवन्द
सुरभिन पयहित बच्छ पिवाये । पक्षीयूथ दशो दिशि धाये । मुनिस
तको तमचुर सुर हारेउ । शिथिल धनुष रतिपति गहि डारेउ । निशि
निघटी रबिरथ रुचिराजी । चन्द्र मलिन चकई रति साजी । कुमुदिनि
सकुची बारिज फूले । गुंजत फिरत अलीगण झूले । दर्शनदेहु मुदितनर
नारी । सूरदास प्रभुदेव मुरारी ७ भोर भयो यशोदाजी बोलत जागो
मेरे गिरिधरलाल । रतनजटित सिंहासन बैठो देखनको आई ब्रजबा
ला । नियरे जाइ सुपेती खैंचत बहुरेउ ढांपत बदन रसाल । दूधदही
अरु माखन मेवा भामिनि भरि ल्याईहैं थाल । तब हरि हरषि गोदउठि
बैठे करतकलेव तिनकदे भाल । देवीरा आरति बारतहैं गावति गीत र
साल ८ जागो कृष्ण यशोदा बोले यहि अवसर कोउ सोवे हो ।

गावति गुण गोपाल ग्वालिनी हरषित दही बिलोवैहो । गोदोहन धुनि पूरि रहेउ ब्रज गोपीदीप सँजोयेहो । सुरभी हूँक बछरुवा जागे अनिमिष मारग जोयेहो । बेणु मधुर धुनि महुवर बाजत बेतगहे कर-सेली हो । अपनी गाय सब ग्वाल दुहत हैं तुम्हरी गाय अकेली हो । जागो कृष्ण जगत के जीवन अरुण नयन मुख सोहेहो । गोविंदप्रभुजू तुमतें धौरी ब्रजलोग वधू मनमोहेहो ९ चिरैया चुहचुहानी सुनि चकईकी बानी । कहति यशोदारानी जागो मेरेलाला । रविकी कि-रणजानि कुमुदिनिसकुचानी कमलनि बिकसानी दधिमथे बाला । सुबल श्रीदामा तोक उज्ज्वल बसन लियेद्वार ठाढे टेरतबाल गोपाला । नन्दलाल बलिहारी उठि बैठो गिरिधारी सब सुख देख्यो चाहेलोचन बिशाला १० उठि गोपाल भयो प्रात देखूं मुख तेरो । पाछे गृह काज करौं नित्य नेम मेरो । बिहत निशा अरुण दिशा प्रकट भयो भान । कमलनिके भ्रमरउडे जागिये भगवान । बंदीजन द्वारठाढेकरतहैं कबार । मधुरबैन गानकरत लीला अवतार । परमानंदस्वामी दयाल जगत मं-गलरूप । वेदपुराण गावतहैं महिमा अनूप ११ प्रात समय भयो साँवलिया हो जागो । नन्दयशोदा के मन आनन्द गाय दुहनको भाज-नमांगो । रवि के उदय कमल प्रकाशे भ्रमर उठिचले तमचुर बाम । गोपबधू दधि मथनलागीं । हरिजू की लीलारस पागीं । बिकसित कमल चलत अलिसेनी । उठो गोपाल गुहौंतेरी बेनी । परमानन्ददास मनभाये । चरणकमलरज देखन आये १२ उठो मेरेलाल गोपाल लाड़िले रजनीबीती बिमल भयोभोर । घर घर दधि मथति गोपियां द्विज करत वेदकी शोर । करोकलेऊ दधिअरु ओदन मिश्रीबांटि प-रोसोंओर । आश करत प्रभु सोहन तुमपर वारोंतन मन प्राण अकोर १३ प्रात समय उठि चलहु नन्द गृह बलराम कृष्ण मुख देखिये । आ-नँदमें दिनजाइ सखी जन्मसुफल करि लेखिये । प्रथम काल हरि आनँदकारी पाछे भवनकाज कीजिये । रामकृष्ण पुनि बनहिं जाइंगे चरण कमलरस लीजिये । एकगोपिका ब्रजमें सयानीश्याम महातम सोई जाने । परमानंद प्रभु यद्यपि बालक नारायण करिसोई माने १४ हौं परभात समय उठि आई कमल नयन देखन तुम्हारो मुख । गोरस

बेचन चली मधुपुरी लाभ होइ मारग पाऊं सुख। करत कलेऊ श्याम मनोहर नेकु चितै कीजै हमतन रुख। तुम अपने ग्वालहिं मिलि जैबो बिछुरे कासों कहौं यह रजनि जनित दुख। प्रीतिजु एक लाल गिरिधर सों यह मिस करि मिलबात जनाई। परमानन्द दास यह नागरि नागर सों मन लगि अरुझाई २५ मैं जान्यों जागे कन्हाई ताते यशुमति तेरे घर आई। मैं पिछवारे बैसेइ सुरनिसों किन हू मधुरी मुरलि बजाई। जनम सफल करि बिनती चितधरि अपने कान्ह किन देहो जगाई। लै उछंग मोहन को यशुमति आंगन ठाढी गोपीमुख देखत हँसत रसिक बलि जाई २६ प्रात समय घर घर ते देखनको आई गोकुल नारी। अपनो कृष्ण जगाय यशोदा आनँद मंगलकारी। सब गोकुल को प्राण जिवन धन या सुत पर बलिहारी। आशकरन प्रभु मोहन नागर गिरि गोबर्द्धन धारी २७ गोबर्द्धन गिरि सघन कन्दरा रैनि निवास कियो पिय प्यारी। उठि चले भोर सुरतिरस भीने नँदनंदन वृषभानदुलारी। उत बिगलित कच माल मरगजी अटपटे भूषण मरगजी सारी। इत हि अधर मसि पाग रही धसि दुहुँ दिशि छबि लागत अतिभारी। घूमत आवत रति रन जीते करिनी सँग गजवर गिरिधारी। चतुर्भुजदास निरखि दम्पति सुख तनमन धन कीनो बलिहारी २८ रजनी राज लियो निकुंज नगर की रानी। मदन महीपति जीति महारण श्रम जल सहित जम्हानी। परम सूर सौन्दर्य भृकुटि धनु अनियारे नयन बान सन्धानी। दास चतुर्भुज प्रभु गिरिधर रस सम्पति बिलसी ज्यों मन मानी २९ राधेजू हारावलि टूटी। उरज कमल दल माल मरगजी बाम कपोल अलक लटछूटी। बर उर उरज करज कर अङ्कित बाहु युगल बलयावलि फूटी। कंचुक चीर बिबिध रँग रञ्जित गिरिधर अधर माधुरी घूटी। आलस बलित नयन अनियारे अरुण उनींदे रजनी खूटी। परमानन्द प्रभु सुरति समय रस मदन नृपति की सेना लूटी ३० आजु श्यामाजूके नयनकी बातें सुनिरी सखी मोपै बरणी न जाई। सुधाकरण बिच युग शुभ खञ्जन किये पान मनो सोवत अघाई। मरकत बिद्रुम कमल कोश में कै जावक की रेख बनाई। आलस तिरछे चाहत बिच बिच कछु बिकसति अब लेति जँभाई। मन्मथ जयकरि हरि जीतन को दयो बाण भ्रु धनुष

चढ़ाई । देखि लाल लोचन बिघकित भई परम चतुरता सब बिसराई । सूरश्याम रस रीझि रहे तहँ तुम हम सहचरिकों न बड़ाई२१ काहेकों दुराव करति हारी देखिये फूल प्रकट हिये । तबर मधुप पिय मुख कमल आइ मकरन्द पिये । शिथिल अङ्ग निशि के जागे बिथुरी अलक ल्लार लिये । योवन के मदमाती ग्वालिनि डगत चरण धरणी दिये । नूपुर अरसात रुणित मानो रति केलि किये । कृष्णदास स्वामिनी गिरधरण रसिक रसिये २२ आजु पियसों नु मिलिरी मानो । श्रम जल कणभर बदन की शोभा निरखि नभसि उडुराज खिसानो । त्रिभुवन युवतिन को सुख सर्बसु जानति हों तुव मांझ समानो । कृष्णदास प्रभु रसिक मुकुट मणि सुबश कियो गोवर्द्धन रानो २३ आजु कछु देखियत है रगमगी काहे न सम्हारति छुटेइ अलक। अधरनि रङ्ग कंचुकी बन्द टूटे नयन राते आई आवेइ तिलक । मरकत खम्भ बाहु नँदनन्दन मिलि रहीरी हेम सलाक । रति रण रसजीत्यों काम छत्रपति ताहीते तेरी फूल किलक । कृष्णदास स्वामी सों प्यारी कीन्हेंते सुरतिरति हिँडोले झूलक । मोहन लाल गोवर्द्धनधारी बदन कोटिचन्द मलक२४ नवनि कुञ्जते आवति बनी राधा चाल सुहावनी मनको हरनि । बिकसति बदन कमलकी शोभा कहा कहों देखत उदित तरनि । तरुणा जलद नवश्यामके सङ्ग सरस भरि भेटत भूतल बजरनि । कृष्णदास प्रभु गिरिधर पियसों कीनीते रसिक रसीली बरनि२५ मैं तेरी अधिक चतुराई जानी तैंने कचुकी सम्हारी । आनंद रस बश देह भूलिगई मिलत गोवर्द्धन धारी । कहा कहूं शुभाराशि अङ्ग अँग चलति मधुरगति भारी । कृष्णदास प्रभु रसिकलालके तू अति प्राण पियारी२६ आईतू तिलककूं मिटाये । रतिरण गोपाल संग नखशर लाये । कपोलन पर पीक लागी नयन कषाये । हरि सों मिलि मदन जीत्यो दाय उपाये । कृष्णदास प्रभुसों मिली निशान बजाये । ऐसीको निमिष तजे गिरिधर पाये२७ तैं गोपालहेत कुसुम्भी कंचुकी रंगाय लई भली भई सुफल करी आजु निशि सोहावनी । रोम रोम फूली चाय चपल नयन भृकुटी भाय अभरन चाल-अङ्ग चाल डगमगी सुहावनी । सुभग सारी

झूमक तन श्याम पाट कुसुमनी बीतन मुख पचरङ्ग छोट ओढ़नी सुहावनी । सोहत अलक बिथुरे बदन मोहन लावन मदन कृष्णदास प्रभु गिरिवर केलि अति सुहावनी२८ कांचुकी के बन्द तरकि तरकि टूटे देखत मदनमोहन घनश्यामहिँ । काहेको दुराव करति हेरी नागरि उसँगत उरज दुरत क्यों यामहिँ । कछु मुसकात दशन छबि सुन्दर हँसत कपोल लोलभ्रू भामहिँ। रबि शशि युगुलपरे रतिफंदन श्रवणनि पालक ताटंक के नामहिँ । बदन कमल पर अलक मधुप बर खञ्जन नयनलेत बिश्रामहिँ । सुनि कृष्णदास रसिक गिरिधर सँग रँगित सुमुखि लजावति कामहिँ २९ झूमत अलक तेरे बदन कमल पर अधिक नीके लागति नयन आलसरी । कहा कहुं शोभा उरज युगुल नव लेचली रसिक बर मङ्गल कलसरी । जानो मैंने निधिपाइ निकुञ्ज मण्डप महँ जाके करतही नयन ललसरी । कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रतीति बाढ़ी नखपद पांति सोहे मोहन ललकरी ३० कंठन परे तेरे बदनकी ओप । झलकनि नव मोतिनहिँ लजावति निरखत शशि शोभा भइ लोप । पक्ष्मन लागनि चाहति पियतन उन्नत भौंह घटा तोप । चपल कटाक्ष कुसुमशर तानति फुरत अधर कछु प्रेम प्रकोप । प्रात समय आय श्याममनोहर तुमहीं लड़ावत अपनी चोप। कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर अति नागरवर धरे वेष गोप ३१ प्रात आवत बनी वृषभान नन्दिनी कांगात नूपुर चरण लटक मन्दालसी । सुरत सुखभाव अङ्ग अङ्ग भूषण बसन अलक फरकत कछु भाँति मंदालसी। अधर अञ्जनरेख प्रिया प्रीतम वेषसखी मंडल रसद नयन मंदालसी। कृष्णदासनि नाथ रसिक गिरिवर धरन मन हरेउ चारु चल भौंह मंदालसी ३२ अरुङ उदय नीके लागत सुनि सजनी हांहो तेरे नयन रसमसे । मानहुं शरद कमल संपुट महँ युग अलि मधु लम्पट बिवश बसे । श्याम संत आलस रस भावित भाव समूह कषाय कसमसे । सुनि कृष्णदास रसिक गिरिधर पिय सुखद सहज अञ्जन सों सस मसे ३३ ऐसी मानतिही अपने जिय महँ पियसों मिलतही करोगी लराई । देखत नन्दन धीरज न धरेउ मन लाल गिरिधर हों जानि पाई । कहा करों सरबसु चोरेउ सखिरूप दिखाय ठगोरी लाई।

कृष्णादास प्रभु रसिक शिरोमणि लै भुज बीच बातनि अरुझाई ३४ नयन मंदालस भरेहिं लसत बदन चन्द्रमहिँ प्रकाशित । रतिरस नहरनि सकल जनताके उरज युगल करनिनु उपदाशित । रति नव कौक कला परिपूरण भौंह रुचिर चित्रलेख बिकासित । सुनि कृष्णदास विविध युवतिन कै लै योवन गिरिधरन बिकासित ३५ सुरताल मे दुराव कित करत मानहुँ मिले गोबर्द्धनधारी । अधर सुरंग पीककपोलन नख पद उरजशोहत चरण रतिभारी । मरगजी ओढनीकंचुकी के बंद टूटे नीबी पट शोधन होइ सारी । कृष्णादास प्रभु गिरिधर संग जागी ताते उन रति फूल अङ्ग अङ्ग सुखकारी ३६ ॥ रागबिभास । धर्वंग ॥ लाल गिरिधर संग लाडिली भामिनी ललित रसरति केलि चारु सोहे । नव तमालहि मानों नवल मालित बेलि नवरङ्ग बिलास निधि आरोहे । कछुक मुसकात चमकत दशन झलमलनि अनुक मुक्ता मणिहार पोहे । सुनि कृष्णादास अङ्ग अङ्ग बैभव सुमुखि सघन वृन्दाबिपिन सार मोहे ३७॥ राग बिभास । जातिताल ॥ राधा रङ्गभरी नहिं बोलति । मोहन मदन गोपाल लालसों अपनो योवन तोलति । चाहति मिलन प्राण प्यारेको मेरो मन डकडोलति । छांड़हु बहुत चातुरी भामिनि कह हमसों झकझोलति । प्रात होन लाग्यो सुनि सजनी अबहीं तमचुर बोलति । कृष्णादास प्रभु गिरिधर पियहित शायंग नयन सतोलति ३८॥ राग बिभास ।झपताल॥श्यामसिन्धु संग चन्दनागि गन्ध पूजित पटपीत मदन लजावत सोभाग तरंगिमा । युवती सरित अनंग सम्मिलित शोभा सीमंत गुण गरिष्ठ भाव भाव सिन्धुसंगिमा । बदन कमल अलक मधुप नयन खञ्जरीट बीच अद्भुततिल कुसुमनाक भोहंगिमा । श्रवणश्रुति बिमोहन चल कुण्डल ताटंक गण्डमण्डित मुसकानि अधर रग रंगिमा । नखशिख भूषण अमोल मनहर मादक सुबास बैजयन्ती भूषित श्रीउर उतंगिमा । कृष्णादास प्रभु गिरिधर सुरतनाथ राधाबर बेणुगान तानशब्द थुंग थुंगिमा ३९ ॥ राग बिभास ॥ तेरे भावसे गोपाल प्यारी बोलत बन । चलहिं मिलहिं न राधिका नवसत साजे शिंगार तन । तव देही बिद्युत लता नन्द सुवन सांवल घन । सोहहिं किनकंठ लागि रति बिलास उल्लासित मन नवनि कुञ्ज

कूजत कलबेणु युवति ताप हरन । कृष्णदास प्रभु नटवर मोहन गि-रिराज धरन ४० ऐसेहू कहति तैसेई बनै । ऐसे जाने सखिनहि सकुचनि भामिनि अपने धनै । सुरत सुधानिधि प्रगाम मृदुल रसयामें कैसे कै सनै । कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर भुजा रसाल कोंप गनै ४१ गोपालै देखहि किन आईरी । आजु बने गोविंद नव कमल नयन ताके हौं बैन पठाईरी । तरणितनया पुलिन विमल शरद निशि सुखदाईरी । राकापतिकर रंजित कुसुमलता भूमि सुहाईरी । गोवर्द्धन धरन लाल गानमों बुलाईरी । कृष्णदास प्रभुको मिलनि युवतिनि सुखदाईरी ४२ सुन्दर नन्दनन्दन जोलौंपाऊं । अङ्ग सब लागि मदन मनोहर या जोबे को देखनिकारो दिवाऊं । मृगमद अगर कपूर कुंकुमा मिलेअरगजा देह बढाऊं । त्रिविध सुगन्ध सुमलयै मृदुमारुत सघननि कुंजनिसेज बि-छाऊं । रागरागिनी उरपसुलप सचतान तरंगकै मधुरेगाऊं । कृष्णदास प्रभुगोवर्द्धनधर रसिकशिरोमणि तुर्विधिरिझाऊं ४३ राग बिभासपटताल ॥ निशिहचंद पिउबेगिमिल करहिँ किनमोइचंद । बिरहभीर हरनुरसिक सुन्दरि गोविंद तू ब्रजसर की कुमुदिनी हरि वृन्दावन चन्द । बचन किरणि बिगतश्रमत पीवहिँ श्रुतिपुटस्यकंद । तूकरनीवरललना नन्द सुवन मदगयंद । कृष्णदास प्रभु गिरिधर रति सुख आनंदकंद ४४ ॥ रागबिभास । जतिताल ॥ हरिमोहन की मोहन बानक मोहनरूप मनोहर मूरतिमोहनमोहिँ अचानक । मोहनबरयँचंद शिरमयशा मोहननयन सलोल । मोहनतिन भौंह मनमोहन मोहनचारुकपोल । मोहनश्रवण मनोहर कुण्डल मधुमृदुमोहनबोल । कृष्णदासप्रभु गिरिवरन मनोहर नखशिख प्रेम कलोल ४५ ॥ राग बिभास । इकताला ॥ तरणितनया तट आवतहीं प्रात समयकदुक खेलतदेख्यो आनन्दकोकंदवा । नूपुरपद कुणित पीतांबर कटिबाँधे लालउपरनाशिरमोरनिकै चंदवा । पंक-जनयन सलोल मधुरमोहन बोलगोकुल सुन्दरीगण बिनोदसुकंदवा । कृष्णदासप्रभु हरिगोवर्द्धनधारी लाल चारुचित्तनि तोरेकंचुकीके बंदवा ४६ ॥ रागबिभास । जतिताल ॥ शोभावतिसीकरतिलाडिलीप्यारीरसि कगोपालहिभावति । सुराकी रसितालजतिप्रमुदित रागबिभासहि गावति । तान बँधान मन्नसुर सांचे गति बहुभांति मिलावति । कृष्णा-

दास प्रभु गिरिधर नागरके छबीले सुभग विकासित ४७॥ रागविभास॥ तेरेबदनकी शोभा तोहिपै कहतबनै ओमुख कीम होइ लख कोटिक। चिबुककपोल बिंदु छैलचतुर विधाता देखेजिनकोउ दियोचखौडा कोटिक। तिलकश्यामोलनाट भृकुटी उरज सुनट मणिनगमंग आभा-समकोटिक। कृष्णदास प्रभु गिरिधरन रसिकसंग सुरत हिंडोले प्यारी लिये निशिकोटिक ४८ रंगीले नयना तेरेहो कछ देखों गिरिधरन। शारद सुख सुंदर बर त्रिविध तापहरन। प्रथमप्रवेश अनियारे भाव विविध बरन। मीन कमल खंजन अलि मृगज भये शरन। औरोधारस लंपट कुचसरोज चरन। गाइक कृष्णदासहेत मुरलि तान हरन ४९॥ राग बिभास। एकताल॥ भौंह धनुषयुत नयन कुसुमशर जिहिकेलगतसो परि परिताने। सहजहि सुभगछबीली माई गोबर्द्धनधरजाकीमाने। हावभाव नव सुरत तरंगनि सब बिधिकोक कला स्वई जाने। कृष्णदास प्रभु युवति यूथपति करि लीन्हें। तिहि अपनोलाने ५०॥ रागविभास। जातिताल॥ इहमनकैसेक रहत रहत राख्यो। जिहिं मधुपति ह्वै गिरिधर पियको बदन कमल रस चाख्यो। जु कंचुकमें कीन्हों परवशहोइ शांतहीसत साख्यो। बार बार बहुविधि समुझायो ऊचौनीचो भाख्यो। कैहुन मानति महाहठीली कही तुम्हारी आख्यो। कहै कृष्णदास कहांलौं बरजौं पांच चोर मिलि चाख्यो ५१॥ रागविभास॥ बलि बलि जाउँ रसिक गिरिधरपिय नीके आयो प्रात तमचुरके बोले। इतो संकोच कौनको मानत अधिक लजाइ रहे बिनु बोले। सख्या बदे बोल सांचे किये अनतसिमें जान्यो करि है यहांरहि जोले। कृष्णदास प्रभु ऐसो कौन लोसों कामसके त्रिजग मों त्रिभुवन तकतोले ५२ आजु लालअति राजेबैठे बनि कमि छाजे सुधिन कंचुरी गात प्यारीप्रेम सगाना। लट-पटी पाग अरु शिथिल चिकुरचारु उपटत उरहार प्यारी कंठ लगाना। आलस अरुण रस भरेरी बिलोचन भरिभरि आवत प्रियसो अनुराग-ना। गोविन्द प्रभु प्रियजानि गिरिधारी सुरतिरंग रसविभो निशिजा-गना ५३ एक रसनाकहा कहों सखीरी ललनकी प्रीति अमोली। हँसनिखेलनि चितवनिजो छबीली अमृत बचन मृदुबोली। अतिरस भरे मदनमोहन पिय अपने करकमल खोलत बंद चोली। गोविन्द

प्रभु कीहो। बहुत कहा कहरी जेजे बातें कही मोसों अपनो हठ सों बो-
लौ ५४ न आज देखरी मनमोहन ये ब्रजवीरराजे । मदन मोहन पिय
मणिमंदिरते बैठवनि करि आयकाजे । लटपटपाग अरगजा माला
लटपटात मधुप मधुकाजे । गोविन्द प्रभुके ज्रुगशिथिल अरुण दृग
देखत बिथकित कोटिमदन लाजे५५रसमसे नन्द ललार आयेहो उठि
भोरे । अरुण नयन बैन मधुरा अटपटे देखियत अधरन रंग भोरे । कैतव
बाद कत करत गुसाईं तहीं जाहु जाके हो अति प्राणप्यारे । गोविन्द
प्रभु भले जु भले जानिपाये जैसे तन श्याम तैसइ मनकारे५६मदनमो-
हन पिय भयो न भोर। प्राचीदिशि नहिंअरुण देखियत अरु सुनियत
नहिं बनखग रोर। गृहितकंठ परस्परदम्पति बिश्लेषकातर अतिजोर।
गोविन्द प्रभु पिय रसिक शिरोमणि प्यारीके बचननि चितचोर५७
लालप्यारो अतिबिचक्षण बशकियेरीसुहाग। बिबिधकुसुमसुबासशी-
तल बिचित्र शय्या रची जाते मदनमोहन निशिजाग। बैठे कुंजकेद्वार
तवपथ जोवत भरि भरि आवत नयन बिशाल सुन अनुराग। दूतीके
बचन सुनि प्रेम ब्याकुलभई मिलिजाय गोविन्दप्रभुको न मिल्योहृदय-
दाग ५८ पक्क खजूर जंबु बदरीफल लेहो कोऊ कोन टेरीद्वार । बालक
यूथ संगबलमोहन चौके करत बिहार। सुन्दर कर जननीके नादिशि
धाये तबहीं नन्द कुमार। हीरा रतनसों पूरित भाजन ऐसे परम उदार।
उदरसों लियो लगायखात चलेमीठे परम रसाल। झूंठी गुठली मारत
गोविन्द हँसत हँसावत ग्वाल५९तेरेबारते जाउंमहरि यशोदाकेलाल।
छांड़े उन भावत कैसेनीके लागत मधुरे सुर गावत मुरली बजावत परम
रसाल। बिभासराग जमायो मधुर मधुर गायोप्रातशुभकाल। गोविन्द
प्रभुपिय सुघर शिरोमणि अहोश्याम तमाल६० जहांई नयना लगत
तहांई तासों खगत अङ्गअङ्ग माधुरी जुबरणीनजाई। सुन्दरभाल भ्रुव
कपोल नासिका देखतरहे जुलोभाई। हँसत ललनमुख दसन जुन्हाई
होति यह छबि कहा कहों देखि थोरीआई । गोविन्द प्रभु के जु
सुन्दरबानिक पर बलि बलि बलि बलि जाई ६१ तेरो मुख मानों
किशोरी शरदशशि। दशन ज्योति जुन्हाई बचन शीतलताई अमृत
हाससुहाई बोलत नयनमसि। कस्तूरी तिलक भाल मनु कलङ्क छबि

नहान माआमांग मङ्गलाह । गोविंद प्रभु नंदसुवन चकोर बरपान करत नरपाम मनमथ तापनसि ६२ इंदुकुमुदिनी सगेटी अरु चक्रवान प्रिय भेंटो मुकलित अति मरम कमल मुकलित भये नलिन । भयो प्रात मुक्ता गात मिथरो अति सोनो लागे बोलत तमचुर दीप ज्योति भई मलिन। जैसे जैसें रसिकराय नन्दगोप दुहतगाय जागे व्रजवासी माहिँ जात देखिवेहैं ग्वालिन। गोविंद प्रभु प्रेम मगन दम्पति अति कंठ लागत बहाय कृपा फिरिके मांग परिग्रचस मकेचलनि६३नवनिकुञ्ज महल रस दोनरी राजत रङ्गभीने। कुसुमितसेज भोर उठि बैठे आलस गत अंगनि भुज दीने। गोर श्याम तन नील पीत पट संभ्रम पलटि बसन तन लीने। पिय बिहारि प्रिय संग सुरत रँग सुभग सिन्धु लीलतादिक तृण कीने ६४ बनी पिय राधा माधव केलि। प्रात समय सखि नवनि कुञ्ज में बढ़ी परम रस बेलि। पिय की मुरली अपने अधर धरि लीन्ही तान नवेलि। मोहन रीझि बिवश ह्वै दीनी हीराहार हमेलि। निरखि कमल मुख कहत भले जू भले सकल कलाप्रवेलि। ऐसी कबहूं न मोपै बाजी कहे कराभ भुजा उर मेलि। ललिता निरखत ठाढ़ि ओटह्वै रहिमुख आंचर झेलि। भाग सुहाग कहत नहिं आवे बढ़्यो मन आनन्द रेलि६५अतिहो कठिन कुच उच्च दोऊ तु।।नि से गाढ़े उर लगायके भेटो कामहूक। खेलत में लरटूटी उरपर पीकपरी उपमा बरणन को भई मति मूक। अधरामृत रस ऊपरते अंचवायो अङ्ग अङ्ग सुख पायो गयो दुख टूक। छीत स्वामि गिरिधारी राज लूट्यो मन्मथ वृन्दाबन कुञ्जन में मैंहूं सुनी कूक६६ आजु किशोर कुंवरकान्ह देखिरी देखिआवत गावत भावत नयननि बयन पावत सकल अङ्ग अङ्ग। मुरली कुणित सुभग बदन मदन मोचन लोल लोचन मधुप टोल मधुर बोल गुञ्जत संग संग। चरण नूपुर कटि सुमेखल रति रस रस भरेरी श्याम कनक कपिस अम्बर समरकत मानभंग। छीतस्वामी गिरिधरन हरन तनके मनके संताप मेटिके बिरह बेदन प्रीति सों जीति अनङ्ग ६७ यमुना पुलिन सुभग वृन्दाबन नवललाल गोबर्द्धन धारी। नवल कुञ्ज नव कुसुमित दल नव नव वृषभान दुलारी। नवलहास नव नव छबि क्रीडत नवल बि-

लाल करत सुखकारी। नवल बिठ्ठलनाथ कृपाबल नन्ददास निरखत बलिहारी६८भोरही छबिसों प्रवीणा बीणा बजावति ठाढ़ी। ललित राग अनुराग ललित गति ललित गुणा आढ़ी। लाड़िलीलाल सकल में पौढ़े तिन्हें जगाय रिझायबे को परम प्रीतिगाढ़ी। नन्ददास दम्पति छबि निरखत अति उत्कंठा बाढ़ी६९ केलिकिये हरिनायक के संग भोरहि मज्जन को उठिआई। नीलकी चोलीमें देखियै यमुना जलमें जैसे चन्दकी छाईं। लटुकी अलकें बिथुरी जलते छिट की मुख ऊपर आईं। दोऊकर बार सम्हारि लिये निकस्यो मानो कोटि पहारको ताईं७०लोनीमा लालसों रतिआनि मैं लजौं आनि पग डगमग मगन परत सूधे। शिथिल बसन कबरी केश राजत आनन सुदेन ओगत कछु लटपटात बानी। यह छबि मोमन भाई मिटी है चपलताई पीक लीक अधरन लपटानी। मदन मोहन किशोर रिझाये श्यामा प्यारी धनि धनि धनि नव निकुञ्जन रानी७१प्रात समय नवकुञ्जके द्वारे ललिता ललित बजाई बीना। पौढ़े सुनत श्याम श्रीश्यामा दम्पति चतुर नवीन नवीना। अति अनुराग सुहाग लाड़िली कोटि कलान प्रवीन प्रवीना। बिहारी दास बलि बलि जोरीपर तन मन धन न्योछावरि कीना७२जागतही जागतबाईं निशि बीति हो देखि सखि सुखदैन। अपने २ सुख सहित हरषत करषत सखी भये मन सैन। बिथुरी अलक पलक आलस बलित नैन बैन। चारो पहर बिहरत यों सखी भोरभयो बिहारनि दासिके हँसि ढरैं उर सेन ७३ लाड़ित लाड़िली नवरङ्ग अपने लाल बिहारी के संग। अलसाने में जान प्राणप्रिया पति बिपरीत रतियों सुखदे अङ्ग अङ्ग। बिगलित कचकुसुम शिथिल पाग मरगजी संग। बिहारनि दासकी स्वामिनी श्यामहिँ देख सखी सुख प्रेमकी परनि ढरनि रंग अनङ्ग७४ रसिक लालके सगसंग जागीरी सुख चैनसों रैनि सगरी। शो। भितशोभ कुसुम शिथिल अलकैं तामें कछू कहँरी मांगमोती बगरी। अरुणनैन सलील मोहन मधुरे बोल रचीहै पीक कपोल प्रेम सुभगरी। सुवश किये बिहारीदास बलिबलि प्यारी सुरत निपुण नित सुहाग भाग अनुराग अगरी ७५ भोरहीं करसों कर जोरें अङ्ग अङ्ग मोरैं आलस

लत अँगाई। पियके अङ्क निशङ्क मर्द्ये निशि हुलास हुलसि बिलसी आनन्द में उनींदिये उठिआई। अङ्गराग अनुराग रही फबि छबि ब-रणी नहिंजाई। अति सुख भरिभरि उमँगि बिहारनि दासिसों कहति हँसेहैं लाड लड़ाई ७६ धनि सुहाग अनुराग तेरो तू सर्वोपरि राधेजू रानी। नख शिख अँग अँग बानी प्रीतम प्राण समानी रसिक कि-शोर सुरति सुखदानी। कोजाने बरणन बपुरा कबि अद्भुत छबिनहिं जात बखानी। बिहारीदास पियसों रतिमानी मैं जानि सयानी तोहिं सब निधि सुख सिरानी ७७ मुखपट ओटन करि प्यारी। काहेको झूठे रही झुक झुकति रसिकनी कहतहैं रसिकनि हारी। तू जु इती हठ करति चतुर प्रिया रतिके चिह्न देखाय निहारी। नवलकिशोरै मिलन किशोरी मानुतजि बिहारिनदासि बलिहारी ७८ करौंवालेऊ बलराम कृष्ण तुम कहति यशोदा मैया। पाछे बछरु ग्वाल सँगलेके चलहु चरावन गैया। पायसलितामिसि सुरभिनको हित करि भोजन कीजै। जगजीवन ब्रजराज लाड़िले जननीको सुखदीजै। शीश मुकुट अति छबि काछनी पीतबसन तनधारो। लेहु लकुट मुरली कर मो-हन मन्मथ बदनि वारो। मृगमद तिलक श्रवण कुंडल मणि कौस्तुभ कंठ बनावो। परमानन्द दास को ठाकुर ब्रजजन मोद बढ़ावो ७९ प्रातसमय उठि यशुमति जननी गिरिधर सुतको उबटि न्हवावति। करि शृङ्गार बसन भूषण सजि फूलन रचि रचि पाग बनावति। छुटे बदबागे अति शोभित बिच बिच चोव अरगजा लावति। सुथनलाल फुन्दना शोभित आजुकी छबि कछु कहत न आवति। विविध कुसुम की माला उरधरि श्रीकरमुरली बेतगहावति। लैदर्पण देखे श्रीमुख को गोविन्द प्रभु चरणन शिरनावति ८० सुभग शिंगार निरखि मो-हनको लै दर्पण कर पियहि देखावै। आपुन नेकु निहारिये बलिजाउँ आजकी छबि कछु कहत न आवै। भूषण रहे ठांवठांवहिं फबि अंग अङ्ग अति चितहि चुरावै। रोम रोम पुलकित तन सुन्दर फूलनरचि रचि पाग बनावै। अंचल फेरि करत न्योछावर तन मन अति अभि-लाष बढ़ावै। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरको रूप सुधा पिवत नैनपुट त्रिपत न पावै ८१ आजुको शिंगार सुभग सांवरे गोपाल को कहत न बनि

आये देखेंही नैनआवे । सुघरा सबभांति भांति अङ्ग अङ्ग अङ्गुतकांति लटपटी सुदेशपाग चित्तको चुरावे। मकर कुण्डल तिलकभाल कस्तूरी अति रसाल चितवनि लोचन बिशाल कोटि काम लजावे । कंठ श्री बनमाल फेंटा कटि छोरनको निरखि त्रिभुवन तियको ब्रजमन न आवे । मेरे सँग चलि निहारि कुंजमहल बैठे हरि हित की चित बात कहूं जो तेरे जियभावे । चतुर्भुज प्रभु गिरिवरधर कोटि मदन मूरति बड़भाग ताहि गिनों जो जातही लपटावे ८२ माई री आज और काल्हि और दिनप्रति औरहि और देखिये रसिक गिरिराज धरन। नितप्रति नव छबि बरणै सो कौन कवि नितही शृङ्गार बागे बरन बरन। श्याम तन अङ्ग अङ्ग मोहन कोटि अनङ्ग उपजी शोभा तरङ्ग विश्वके मनहरन। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरको रूप सुधा नैनपुट पान कीजे मेरे हिये सदा भरन ८३ ॥ अथ खण्डिता रागबिभास॥ मरगजी उर कुंदमाल लोचन अलसात लाल गमगत चरण धरनि धरत रैन जागे । शीशते खसि मोर मुकुट भृकुटीके तटआयो निकट शैल चपल चन्द्रिका सुबांधि पाट तागे। अलसी कुसुम तन सुभांति कहूं कहूं कुंकुमकी कांति मदन नृपतिपीक छाप युग कपोलनि लागे। छीत स्वामि गिरिवरधर सौरभ रससमग मधुप संगमयुत गानकरत फिरत आगे आगे ८४ ॥ रागविभास ॥ कमल नयन श्यामसुन्दर निशिके जागेहो आलस भरे । कर नख उर राजत मानों अर्द्धशशि धरे । लटपटी शिर पाग खिसत बदन तिलक टरे। मरगजी उर कुसुम माल सुघरा अङ्ग अङ्ग परे। सुरति रङ्ग उमगिरहे रोम पुलकि होतखरे। परमानन्द रसिकराय जाहीके भाग ताहीके ढरे ८५ सांवले भलेहो रतिनागर। अलके दुराये क्यों दुराये क्यों दुरत हो प्रीति जुभई उजागर। अधर काजर नैन रगमगे रची कपोलनि पीक। उर नख रेख प्रकट देखियतहै परी मदनकी लीक। पलटपरे पट तिलक गयो मिटि जहँ तहँ कंकण गाढ़े। परमानन्द स्वामि मधुकर गति भली आपनी चाढ़े ८६ आलस उनींदे नैनझूमतआवत मूंदे अधिक नीके लागत अरुन बरन । जागेहो सुन्दरश्याम रजनी के चारों याम नेकहु न पाये मानों पलक परन। अधरन रँगरेख उरही चिह्न विशेष शिथिल अङ्ग डगमगत चरनं। चतुर्भुज प्रभु कहाँ बसन

पर्तीत आये सांचो सकहो गिरिराजधरन ८७ सांझ जुआवन कहि
गये लाल भोर भये देखे। गनत नक्षत्र नैन अकुलाने चारिपहर मानो
युगते बिशेखे। कीन्हीं भली जुचिह्न मिटाये अधरनि रँग अरु उरनख
रेखे। कुम्भनदास प्रभु रसिक शिरोमणि गिरिधर तुम्हरे कैसे लेखे
८८ इतनी बार तुम कहाँ रहे। सगरी रैनि पथ चाहत चाहत नैनदहे।
कुम्भनदास प्रभु भये ताहीके वश जिनहीं गहे। गिरिधर पीयभले बोल
निबाहे सन्ध्या जु कहे ८९ निशिके उनींदे मोहन शयन रसमसे। काहे
को लजात कहहुवो कहा लालन कहाँ बसे। डगत चलत आलस जँ-
भात हो बदन रेख देखियत बसन खसे। कुम्भनदास प्रभु गिरिधर तुम
भुजबंधन करि उरहि लाये कसे ९० अरुण उनींदे आये हो रसमसे
निशिके चिह्न पिय कहा दुराये। नखपद प्राण प्यारीके सोहनकांति
न छपत छिपाये। कुंकुम रंजित उर बनमाला बिलुलित मुख मधुर
जनाये। गिरिधर नवकेलि कलारस प्रमुदित कृष्णदास अलिगाये ९१
रागबिभास। चर्चरी ॥ आजु सिगरी निशि कहाँ जागे लाल कहो जु सांचो
सुभग सांवरे माधो। घोष मथन शब्द प्राणपति गृह गृह रहेउ सोहन
भोर प्रकट भयो आधो। कमल बिकसित भये चकवाकी हँसी सुमुखि
पुलकित मुदित निजपति आराधो। बिधु सोहन बदन निरखि नभ
चन्द्रमा मलिन लज्जित भयो प्रेम गुण बाधो॥ रागचर्चरी॥ ताल धरि
मधुप गावत सुयशपिक निकर साधो। कहैं कृष्णदास गोबर्द्धन उद्धरन
धीर पिय सुन्दरी रूपगुण धन लाधो ९२॥ राग बिभास॥ भली कीन्ही
लाल गिरिधर भोर आये बोल सांचे। युवतिबल्लभ बिरध कहियत
साहिँ सो सब सुबिध बांचे। ताहीपैजु सिधारिये पिय जाही के तुम
रँगराचे। पहिले किहि सिख पठये मानहुँ मन्त्री सतेकाचे। अधमूचत
श्वास स्थिर नहीं निशि प्रिया रतिबंध पाचे। सुनहिं किन कृष्णदास
नागरि ज्यों नचाये त्योंहीं नाचे ९३ अधिक नीके लागति रगमगे
लाल आधी आधी बतियां कहत मेरे प्यारे। खेलत प्राणप्यारी सों
मोहन निशि जाग नैना रतनारे। मरगजी मृगमद तिलक माथे पर
कछुक जम्हात अधर मसिकारे। श्रमजल कण कपोल मंडलक र सेंदुर
रँगराते भौंह अनियारे। अंभरन बसन पलटि पहिरे अङ्गनूपुर कृणित

चरणा सोहैं भारें । सुनि कृष्णदास रसिक गिरिधर पीय पायहो नेक करहु न न्यारे ९४ आवत बने सुंदर नँदनन्दन लटपटी पाग डगमगाति चाल । अरुण कपोल अधर मसिकारे अधलनैन अमरीधेलाल । रति जय देखु लिलाति उरपद नख जीत्यो मदनगोपाल वा औरभाल । तजि न सकत सौरभ रस लंपट कुच कुंकुम रंजित बनमाल । पलटि धरे पट करहु कहाते गीथिल ग्रन्थि कटि किंकिणि जाल । छूटकेर स्वेद कणिका तन काहे लजात बिरह दिन आल । कृष्णदास प्रभु कितव दुरतहो मृगमद तिलक सरगजी भाल । मोहनलाल गोवर्द्धनधारी प्रकट भयो पिय सुयश बिशाल ९५ अरुण उदय सुरतकेलि रसलाल नीकी बनी नव निकुंज ते आवनी । बनमाल रस मत्तभृंग अलिमंडली तासों मिले श्रीमुखहि सरस गावनी । चरण नूपुर दीप्ति कटि क्षुद्रघंटिका मधुर मुखरति नील पटपर सुहावनी । रंगसगी ओढ़नी प्राण प्यारीकी सुरत अभिराम तन देह बिसरावनी । काम जय पत्रसम उरसि कामिनि लिखगो नख अंक पांति रसिकनि हृदय भावनी । शिथिल अलकावली गलित बरहापीड़ अरुण लोचन मोहमन्मथ नचावनी । श्रम स्वेदकणगात लाल गिरिधरनके निशिकथा सुमिरि मन रुचिर मुसुकावनी । मदन रस रहसि गाइके कृष्णदास कहा आपने पीतपट दिये पहरावनी ९६ काहेको दुरावत अपनी केलि जानेहो हरि प्रीतम नागर । सोहिं दिखावहु बांचि सुनावहु प्यारी करज अङ्क उर कागर । निशिकी बातैं सबै प्रकटभईं कत लजातहो कौतुक सागर । कृष्णदास प्रभु गिरिधर चंचल युवति तापहर सुयश उजागर ९७ संध्या बदे बोल मनमोहन प्रात आइ कीने सबसांच । तन मनउहैं अभासत प्रीतम काहेको लाल करतहो कपांच । यह तो बिथा सो जानें गिरिधर जाको लगी बिरहकी आंच । सुनि कृष्णदास जाउँ बलिताकी जिन लीने सरबसदे लांच ९८ बनेहो रसमसे आये प्रात । आलसभरे बदनकी शोभा निरखि लजित जलजात । संध्या बदे बोलकिये सांचे काहेको लाल लजात । कृष्णदास प्रभु गिरिधर बिनवत युवति स्रुगी तकि घात ९९ बनेहो रसमसे आये प्रात । प्यारी नखपद रत्नावलि रस रंचित नवरँग गात । नख रेखा मोहनि युवतिन मन प्रमुदित पु-

लक्क जम्हात। कृष्णादास गिरिधर चितचञ्चल ज्यों तरवरकेपात १००
बलि बलि जाउँ रसिक गिरिधर पिय नीके आयेतमचुर बोले। ऐसो
संकोच कौन कहौ मानत अधिक लजाये रहे बिनु बोले। कछु हु दे
मोल काँचे लिये आवत बश मैं जान्यों करिहैं यहाँ रहि जोले। कृ-
ष्णादास प्रभु ऐसो कौन तोसों कहिबको त्रिजगमोहन त्रिभुवन लक्क
तोले १०१ कौनके भोराये भोर आयेहो भवन मेरे ऊँची दृष्टिक्योंन
करो कौनते लजानेहो। जाही के भवन भावे ताही के धारिये पाय
काहे ऐसी चाउपरी कौन गहरानेहो। भोरी भोरी बतियन भोरवनलागे
मोहिग्रोगिरिधर तुमअतिही सयानेहो। कृष्णदासप्रभु छांड़ो अटपटी
रहेहो लाल आजहों तुम्हें देखि नीके पहिंचानेहो १०२ मदनमोहन
पिय आये प्रात। चारि याम जागे प्यारी सँग अरुण नयन आलस
जम्भात। बिन गुण मोतीमाल बिराजत अंजन अधर पीक लगिगात।
ब्रजपति पियतुम्हें ऐसीन बुझिय हमसों फिरि तुम हँसि मुसकात १०३
मदनमोहन पिय जागे रैन। आलस बश जम्हात शिथिल अंग अरुण
तिहारे नैन। उपटे उर हार प्रकट देखियत प्यारी कंठ लागि दियो
सुखचैन। ब्रजपति पियकी चाल लचनि पर कोटिक वारों मैन१०४
सुन्दरलाल गोवर्द्धनधारी कहँ तुम रैन बसे मेरेलाल। आलस नयन
बयन चलबोलत छूटेबंद डगमगति चाल। शारंग अधर सचिर बपु
नखछतकुच प्रसंग उर बिलुलित माल। कीर रथहीन मीन पति जीत्यो
चढ़ी धनुष मानों मोह बिशाल। नहीं सतभाय कहति प्रीतमसों फि-
रतहो पात पात अरु डाल। दास मुरारि प्रीति औरनि सों देखति
प्रकट तुम्हारे हाल१०५आये हो उठिभोर रसमसेनन्दलालारे। अरुण
नयन बयन अटपटे भयरा देखियत अधरन रंग भारे। कितव बिवाद
करत हो गुसाईं तहीं जाहु जाके अति प्राण प्यारे। गोबिन्द प्रभु भले
जु भले जानिपाये जैसे तन श्याम तैसेमन कारे १०६ निशाके उनींदे
अति छबि लागत भरे प्यारीरंग। आलस बलित ललित लोचन युग
भरि भरि आवत कुंज केलि सुधिके प्रेम उमंग। सुभग उरसि परबिन
गुण मोतीमाल कुंकुम स्रवित उपटे हैं कुच उतंग। गोबिन्द प्रभु कत
करहु दुराउ ऐसव कहत तुम्हारे अंग अंग१०७प्रिय बिनु जागत रैनि

गई । अवधि बदि गये न आये बड़ी बेर भई कछू कहत करत कछू कौन है सीख दई । सांचु नहीं एकोअंगकहा रीतिलई । कैसे कीजे प्रवास भये हो बियई । रसिक प्रीतम रावरीहै किनु किनु गतिलई १०८ ढीले ढीले पगधरत ढीली पाग ढरकिरही ढीले से ढहेसे ऐसे कौनपैढहेहो । गाढ़ेजुहीयके पीयऐसी गाढ़ी कौनभरि गाढ़ेगाढ़े भुजनसों गाढ़े कर गहेहो । लाल लोल लोचन उनींदे लागि लागिजात सांची कहो पीयहो तो लाल लहेहो । नन्ददास प्रभु सांचो क्यों नबोले भयो प्रातकहोबातप्यारे तुमरात कहाँरहेहो १०९ पागखसी सिर पेंचलटपटी घूमतनयनउनींदे उजागरि । पीक कपोल अधरमसि लागी कंकरा पीठि गड़ेउ अति सुन्दरि । जात उतेइत पांउचले क्यों बोलतहो तुतरातीतये दरि । प्रातसमयउठि कहत सूरप्रभु आवतहो अनुरागभरे हरि ११० चन्द्रावलि धाम श्याम भोरभयेआय । अति रिसकरि रही बाम रैनि जागि चारि यास देखै जो द्वार कान्ह ठाढ़े सुखदाये । मंदिरते रहि निहारि मनहीं मन देति गारि ऐसे कपटी कठोर आये निशि बीते । रिसनहीं सकी सम्हारि बैठी चढ़िद्वार बारि ठाढ़े गिरिधारी निरखि छबि नखशिखहीते । बिनुगुण बनी हृदय माल ताबिच नखछत रसाल लोचन दोउ दरशि लाल जैसे रुचि बाढ़ी । जावक रँग लग्यो भाल चंदन भुजपर बिशाल पीकपलक अधर झलत बास प्रीति गाढ़ी । क्यों आये कौन काज नाना करि अंग साज उलटे भूषण शिंगारि निरखतहो जाने । ताहीके जाहु श्याम जाके निशि बसेधाम मेरे घर कहा काम सूरदास गाने १११ मैं जानी पियबात तुम्हारी । भोर भये मेरेगृहआये ऐसेभोरे भारी । यहां आये सुख परसन मेरोहृदय टरत नहिं प्यारी । कपटचतुरई दूरि करौजू अपयश लेत रुतारी । कहा सांच मैं खोवत करते झूंठे कहां फबावत । सूरश्यामनागर नागरि वह हम तुम्हरे मन आवत ११२रैनि जागे रति रसपागे अनुरागे नवप्रियसंग । मोसन मुखकत आयेहो दहनि पिय रसमसे नयन अटपटात बैननि तहइँ जाहु जाके रंग । बिन गुन बनी माल पीक कपोलनिलाल जावक तिलक भाल कीन्हें रसबश अंग । सूरदास प्रभु तुम रजनी बिहाइ आये प्रात भये आये मेरे जीतिअनंग ११३ माई आज

खाल लटपटात आगे अनुरागे। शोभित भूषण अंग अंग आलस भरे रैन उनींदे जागे। लटपटी पाग पेंचपाग छूटे बंदनिवागे सूरश्याम रसिक राय रस वश कीन्हें सुभाय जागे जहां सोई तिया बड़भागी ११४ मंगल करन हरन मन आरति बारति मंगल आरति लाला। रजनी रसपागे अनुरागे जागेप्रात गात अलसात शिथिल वसन अरु मरगजी माला। बैठे कुञ्ज महल सिंहासन श्री वृषभान कुँवरि नँद-लाला। व्रजजन मुदित आट ह्वै निरखत निमिष न लागत नवनिकु-ञ्जलता द्रुमजाला ११५ रतन जटित कनकथाल मध्यसोहै दीपमाल अगरादिक चन्दन अतिबहु सुगन्ध माई। घननननन घंटा घोरझननन झांझ रट कीरतननन ततथेई थेई थेई करति हैं सकदाई। तननननन तान मान राग रंग सुर बंधान गोपी जन गावैं गीत मंगल बधाई। च-तुर्भुज गिरिधरन लाल आरती बनी रसाल वारत तनमन प्राण यशोदा नन्दराई ११६ मंगल आरती कीजे भोर। मंगल जनम करम गुण मं-गल मंगल यशोदामाखनचोर। मंगलमुकुट वेणु बनमाला मंगलरूप रचन मनमोर। जन भगवान जगत मयमंगल मंगलराधा युगुलकिशोर ११७ श्री गोपालजूकी आरती करतुहै। घंटा ताल पखावज बाजे प-ञ्चमुखी बाती बरतुहै। शिव विरंचि नारद इन्द्रादिक सब मिलिगा-वत बीन बजातु है। श्याम प्रभुको देखत सब तन मन धन वारिवारि डारतु है ११८ ॥ अथ समुदाय पद। राग बिभास ॥ श्यामसुन्दर प्राणप्यारे छिनछिन जनिहोहु न्यारे। नेककी ओट मीन ज्यों तलफत त्यों तल-फत नयनन के तारे। मृदुमुसकानि बंक अवलोकनि डग मग चलनि सहज में सुढारे। चतुर्भुज प्रभु गिरिधर बानिक पर. कोटिकन मनमथ वारे ११९ ॥ राग बिभास ॥ बरणत तउन बने मुनिसजनी रगमगो वेष बन्यो गोपाल को। रसना जो होहि लखिकोटिक रूप गोवर्द्धनधारी लालको। श्यामधाम कमनीय वरणासखिमनो तरुण घन तरु तमाल को। युवती लता गात अरुझानी पान करत मधु मधुप मालको। नख शिखमदन कोटिलावनछबिभूषण बसननयन विशालको। कृष्णदास प्रभुसुरति सुधानिधि ताप हरण तिय बिरह ज्वालको १२० श्यामा श्याम सेज उठिबैठे आरंभ परसपर करत बिहार। उन उनकी पहिरी

मोतिनकी माला उनउनको पहिरेउ नौसरकोहार । लटपोट पेंच सँ-
वारति प्यारी अलकैं सँवारत नन्दकुमार । सूरदासप्रभु नागरि नागर
निरखत भूषण करत सिंगार १२१ चिरई चुह चुहानी चन्दकी
ज्योति परानी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रवानकी । तारिका दु-
रानी तम घट्यो तमचुर बोले श्रवण भनक परी रागललित के तान
की । भृङ्गमिले भार्यां बिछुर जोरी कोकमिले उतरी पनिचा अब
कामके कमानकी । अथवत आये गृह बहुरि उवत भानु उठो प्राण-
नाथ महा आनन मणि ज्ञानकी । ब्रज घरघर ह्वैकरतन्त्रबाउ लोग
बारबार कहनि करनि दर्शन घरनि धरनि पग आनकी । सूरदासप्रभु
नन्दसुवन सिधारो धाम सुनत उठे छबि कृपाल कृपाके निधानकी १२२
काहेन सेइये गोकुल नायक । भक्तनको ठाकुर भगवान सकल सुखनि
को दायक । ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिकजाके आज्ञाकारी । सुरतरुकाम-
धेनु चिन्तामणि बरुण कुबेर भण्डारी । औरों नृपति कह्यो सबमाने
सन्मुख बिनती कीजै । तुम प्रभु अन्तरयामी व्यापक दुतिय शाखि
को दीजै । जनम करम अवतार रूप गुण नारदादि गुणगावैं । पर-
मानन्द दास श्रीपति यश अधम भले बिसरावैं १२३ बलिहारी पट
कमलकी जिन महँ शत लक्षण । ध्वज वज्रांकुश जव रेखा ध्यानकरत
बिचक्षण । तेचिन्तत त्रैताप हरत शीतल सुखदायक । नख मणिनकी
चन्द्रिका ज्योति उज्ज्वल ब्रजनायक । वृन्दावन गोसंग फिरत भूतल
कृत पावन । गङ्गादिक तीरथ प्रसाद भक्तन मनभावन । भक्तवास क-
मलानिवास माया गुण बाधक । परमानन्द ते धन्य जन्म जे सगुण
अराधक १२४ माईहो अनंदगुणगाऊँ । गोकुलकी चिंतामणि माधव
जो मांगों सो पाऊँ । जबते कमल नयन ब्रज आये सकल सम्पदाबाढ़ी।
नन्दरायके द्वारे देखो अष्टमहा सिधि ठाढ़ी । फूल्यो फल्यो सकल
वृन्दावन कामधेनु दुहिलीजै । मांगे मेह इन्द्र बरषावै कृष्णाज्ञपा सुख
कीजै । कहति यशोदा सखिन आगे हरि उतकरष जनावै । परमानंद
दासको ठाकुर मुरलिमनोहर भावै १२५ बिलगु जिन मानोरी कोउ
हरिको । भोरहिं आवत नाच नचावत खात दही घर घरको । प्यारो
प्राण दीजे जो पइये नागर नन्द महरको । कुंभनदास प्रभु गोबर्द्धन

धर रसिक राधिका वरको १२६ गखी तेरे चपल नैन मृग बड़े बड़े
तारे । हरि मुख निरखत मात पटनिमें निशिदिन रहत उघारे । जो
आगेते पंथ रोकते न अवता तोनजानोंकहां चलेजाते अपटारे । कुंभ-
नदास प्रभु गिरिधरन रसिक ये छपा रसभीने अति सुख बाढ़े भारे
१२७ तेरे मुखकी निकाई मोपै बरणी न जाई । अंगअंग छबिछाई
नैननिलागे सुहाई ऐसी रचिपचि बिधिबिधि केवनाई । भौंहन की कु-
टिलाई नैननि अरुणताई नासिका सुघनवनी अधर सुनाई । धोंधों
प्रभुकेमन ऐसी भाई कहत न कछु बनिआई और सोहेंकोसोहें तेरीये
दुहाई १२८कोड मैया बेर बेचनआई । सुनतहि टेर नन्दरावरमें भीतर
भवनबुलाई । मखत मानपरे आंगनमें करअंगुली बनाई । ठमक ठमक
चलतअपने रंग गोपीजन बलिजाई । लियेउठाय रिझाय करिगोपी
मुखचुंबत न अघाई । परमानन्द स्वामिआनंदे बहुत बेर जबपाई १२९
नन्द किशोर पेरी करन बोहनी न पाऊं । गोरस के मिस रसहि ढ-
ढोरत मोहत मोहन मीठी तानन कैसेकै दधि छिपाऊं । गोरस मेरो
घरहि बिकैहै काहे को वृन्दावन जाऊं । आशकरन प्रभु मोहननागर
यशुमति जाइ सुनाऊं १३० भोरही दानमांगत मोसों गिरिधर । प्रातहि
उठिके चलीओ नगरको बेंचन दधि मटुकीजरि शिरपर । जोतुम
हमसों आरि करहुगे तोहमसब मिलि उलटिआहिंघर । सांचोकहोधों
बातनजपत प्रभु तुमकौन देवपरीतिहारी मनुहर १३१ होंतौ लागि
रहीरीमाई । जलगृहमेंतेदांपलैनिकसे तबमैंबांहगहीरीमाई । हँसिदीनो
मेरोमुख चितयो मीठीसी बात कहीरी माई । ठगि सुरही चेटक सो
लागो परि गइ प्रीति सहीरी माई । बैठो नेकु जाउँ बलिहारी लाऊं
और दहीरी माई । परमानंद सयानी ग्वालिनि सर्वसु दे निबहीरी माई
१३२ सुन्दर सांवरे मुरली अधरधरी । सुनि सिद्ध समाधि टरी ॥ ध्रुव ॥
सुनि थके व्योम विमान । सुर बधू चित्र समान । ग्रह नक्षत्र तजत न
रास । वाहन बँधे धुनि पास । सुनि आनन्द उमँगि भरे । चल थके
अचल टरे । चल अचल गति विपरीत । सुनि बेणु कलपद गीत ।
झरना झरे पाषान । कन्दर्प मोहे गान । सुनि खगमृग मौनधरी । फल
तृणाहुँकी सुधि बिसरी । सुनि धेनु मृग थकि रहे । तृण दंतहु नाहिं

गाहे । बछरा न पीवें छीर । पछीगना सुनि धीर । द्रुमनि चपल भई
नवअंकुर प्रकट नई । तरुविटप चहलपात । डरि निकटको अकुलात
अंकुरित पुलकित गात । अनुराग नयन सुचात । सुनि चंचल पवन
थक्यो । सरिता जल चलि न सक्यो । सुनि थक्यो मंद समीर । उलट्यो
जु यमुना नीर । सुनि सुनि चलीं ब्रजनारि । सुत देह गेह बिसारि
मन मोहनरूप धरो । तब कामको गर्व हरो । नवनी न तन घनश्याम
नवपीतपट अभिराम । नवमुकुट नवबनदाम । लावण्य कोटिक काम
मन मोहेउ मदन गोपाल । तन सांवल नयन बिशाल । श्रीमदन मोहन
लाल । सँग नागरी नव बाल । नव कुंज यमुना कूल । देखत सूरदास
फूल १३३ चलोरी मुरली सुनिये कान्ह बजाई यमुना तीर । तजि लो
कलाज कुलकी कानि गुरुजन की भीर । यमुना जल थकित भयो
बछा न पीवें छीर । सुर बिमान थकितभये थकित कोकिल कीर।
देहकी सुधिबिसरि गई बिसरो तन को चीर । मात तात बिसरि गये
बिसरो बालक बीर । मुरली धुनि मधुर बाजे कैसे के धरों धीर।
सूरदास मदन मोहन जानतहो पर पीर २३४ गोकुल गाउँ रसीले
पियको । मोहन देखि मिटत दुख जियको । मोर मुकुट कुण्डल ब
नमाला । याछबिसों ठाढ़ेनँदलाला । कर मुरली पीतांबर सोहे । देखत
रति पतिको मनमोहे ॥ चाल ॥ देखत रति पति को मन मोहे चकित
सी डोलत फिरे । और कछु न सुहाय तनकोबैठि उठत गिरत फिरे।
मोह मदन बान समान लागे पीर नेकु न आवहीं । और कछु
उपाय नाहीं श्याम बेग बुलावहीं । मैं तो तजी लाज गुरुजन की । अब
मोहिं सुधि न परै या तनकी । लोक कहै यह भई मतिबौरी । सुत
पति छांड़ि फिरत बन दौरी ॥ चाल ॥ छांड़ि सुधि न सँभारत तन
कृष्ण छबि हृदय बसी । मदनमोहन देखि भावे बिहँसि कुंजनमेंबसी।
कुंजधाम किशोर ठाढ़े कमरि खोरि बनाय के । चन्द्रिकापर वा
रिडारों बलि गई या भायके । भारपरो यह घर घर बास । निलज्जत
कौन करै यह सास । इन नयनन बांध्यो प्रण भारी । निरखत रहत
सदा गिरिधारी ॥ चाल ॥ निरखिकों करे श्यामसुन्दर सहसकनक
प्रकाश री । कालिन्दी के तीर ठाढ़ो श्रवण सुनिये बांसुरी । मदन

सूरति श्याम देखत सखी मनकी आसरी। सूर हरि को सुयश गावत सदा चरणनिदासरी १३५ वृन्दावननवनिकुंजठाढ़े उठिभोर। बाहँजोरि बदन मोरि हँसत सुरत रतिको कोर कछु सकुचत पुनि लजात नैननि की कोर। करत कबहुँ बेणुनादअधरप्याय सुधास्वाद पसीगणप्रमुदित मन बोलत चहुँओर। रसिकप्रीतम छबिनिहारि उदयो अनुघनविचारि वारवारउमगिर नाचतहैं मोर १३६ आजु प्रभात लता मन्दिरमें सुख बरषत अति निरखि युगुल वर। गौर श्याम अभिराम रस भरे लटकि लटकि पग धरत अवनि पर। कुच कुंकुम रंजित मालावलि सुरतनाथ श्रीश्याम धामधर। प्रियाकेप्रेम अङ्कअलंकृतचित्रितचतुर शिरोमणि निजकर। दम्पति अति अनुराग मुदितकल गानकरत मनहरत परस्पर। हित हरिवंश प्रशंस पराइन गाइन अलि सुर देत सुघुर तर १३७ जोई जोई प्यारो करै सोई मोइ भावै। भावै मोहिं जोइ सोइकरै प्यारो। मोको तो भावती ठौर प्यारेके नैननिमें प्यारो भयो चाहै मेरे नैननि को तारो। मेरे तन मन प्राणहूं ते प्रीतम पीय अपने कोटिक प्राण प्रीतम मोसों हारो। हित हरिवंस हंस हंसिनी श्यामल गौर कहौ कौन करै जल तरंगनि न्यारो १३८ प्रात समय दोउ रस लम्पट सुरति युद्ध जययुत अतिफूल। श्रम वारिज घन बिन्दु बदन पर भूषण अङ्ग अङ्ग विधिकूल। कछु रहेउ तिलक शिथिल अलकावलि बदन कमल अलिभूल। हितहरिवंश मदन रँग रँगिरहे नैनबैन कटिशिथिल दुकूल १३९ आजु तो युवती तेरो बदन आनन्द भरेउ पियके सङ्गमके सूचत सुखचैन। आलस बलित बोल सुरङ्गरंगे कपोल विथकित अरुण उनींदे दोऊनैन। रुचिर तिलकलेश कीरत कुसुमकेश शिर सीमन्त भू-षित मानोतैन। करुणाकरउदार राखत कछु न तार दसन बसन लागत जबदैन। काहेको दुरत भीर पलटे पीतम चीर बश किये श्याम सखी सानमैन। गलित उरसि माल शिथिल किंकिनी जाल हित हरिवंश लता गृहमैन १४० प्यारे बोली भामिनी आजु नीकी यामिनी। भेंट नवीन मेघसों दामिनी। मोहन रसिक रायरी माई तासु जो मान करै ऐसी कौन कामिनी। हित हरिवंश श्रवण सुनत प्यारी राधिका र-मणसों मिलि गजगामिनी १४१ कौन चतुर युवती प्रिया जाहिमिलत

लाल चोर ह्वै रैन । दुरत क्यों दुरे सुनो प्यारे श्यामा देख दैन यों नैन। उर नख चन्द्र बिराजै पट ज्यों टपै से बैन । हित हरिवंश सुरति राधापति प्रमथित मैन १५२ प्रातसमय उठि हरिनाम लीजै । गोविन्दनाम लीजै आनन्द सुखमें दिनजाय । चक्रपाणि करुणामय केशव बिघ्नबिनाशन यशोदा माय । कलिमल हरन तरन भवसागर भक्त चिंतामणि कामधेनु । ऐसो सोरभ नाम कृष्ण को बंदनीक पावन पदरेनु। शिव बिरंचि इन्द्रादि देवता मुनिजन करत नामकी आस । भक्तवछल ऐसो नाम कल्पद्रुम बरदायक परमानन्ददास १५३ छबीलेलाल छबि तेरी मोहिं नीकी लागतहै हो तन मन जीववारोंरे । भोर भये आये मेरे आँगना हो पलकनसों पग झारोंरे । सुखदीजे रस लीजे रैनको है चितते नेक न टारोंरे । कृष्णजीवन लछिरामके प्रभु सङ्ग न बसत सिगारोंरे १५४ नैना मेरे घूंघटमें न समात । सुन्दर बदन नन्दनन्दन को निरखि निरखि न अघात । अति रस लुब्ध महामधु लंपट जानतनहीं एकौ बात । कहा करौं दरशन सुखमाते ओट भये अकुलात । बार बार बरजत हौं हारी तऊ टेव नाहिँ जात । सूर रसिक गिरिधर बिन देखे अलप कलप शतजात १५५ आँखियन वैहे टेवपरी । कहा करौं बारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भँवरी । चितवति रहति चकोर चंदलौं नहिं बिसरति मोहिं एकघरी । यद्यपि हटकि हटकि हौं राखति त्यों त्यों होति खरी । चुभि जुरही वा रूप जलदमें प्रेम पियूष भरी । सूरदास गिरिधर तन परसत लूटत निधिशतवारी १५६ राधे बसन श्याम तन चीन्हो । शारँग बदन बिलास बिलोचन हरिशारंग जानि रति कीन्हो । सुधा पान करके नीकी बिधि रहेउ शेष शशि मुद्रा दीन्हो। सूर सुबेष अहो रतिनागर भुज आकर्षि नाम कर लीन्हो १५७ राधे तू अतिरङ्ग भरी । मेरे जान मिली मोहन सों अञ्चल पीकपरी । छूटी लट टूटी नकबेसरि मोतिनकी दुलरी । मैं जानौं तैं फौज मदनकी लूटि लई अंगरी । अलसाँ नैन मुख शरद नासिका सत कुसुम गलित कबरी। सूरदास प्रभु गिरिधरके सँग सुरति समुद्र तरी १५८ श्याम श्यामासों अति रति कीनी । श्रमजल बुंद बदन यों राजत मनो शशिपर मोतिन लरदीनी । मुक्ताजाल टूटियाँ लागति जनु सुरसरी अधोगति लीनी।

सूरश्याम मन हरन रसिक बर राधा सङ्ग सुरत रसभीनी १४९ श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस दोउ करत शिंगार। यह पहिरी वाकी मोतिन माला उन पहिरो वाको नवसरहार। पेंच सँवारे वृषभान नन्दनी अलक सँवारत नन्दकुमार। हँसि मुसकाय करत दोउबातें बदन निहारत बारंबार। लटपटि पाग मरगजी माला कहि न जात शोभा सुखसार। श्रीभटके प्रभु युगुलकिशोर दूती मेरे आंगन करत बिहार १५० सखीरी और सुनहु यकबात। आज गोपाल हमारे आये उठत प्रातही प्रात। काहुके नैन उनींदे मोहन अपने घरको जात। आगे द्वार नन्द हुते ठाढ़े ताते गये न सकात। लटपटि पाग अटपटे भूषण आलस युत जंभात। मानो साह दगडते छांडे दे दे चुटकी गात। ऐसी भांति कहा हुते मोहन मैं बूझे मुसकात। ताते कछु उत्तर नहिंआये। सूरश्याम सकुचात१५१सुंदर घनश्याम लाल पंकजलोचन बिशाल आंगन ब्रजरानीजूके ठुमुक ठुमुक धावे। पहुंची करबनी चारों कंठमें बिचित्र हारु लटकन लटके सुढारु कहत न बनिआवे। रुनन झनन धरे पांइ निरखि मुदित यशुदा माइ किंकिनि कटि नूपुर धुनि श्रवण सुख बढ़ावे। श्रीबिठल बिहारी अङ्ग कोटि वारि वारि ठाढ़ी युवती अपार मनमें सचुपावे १५२ प्रात समय आवत आलस भरे युगुलकिशोर देखे कुंजन की खोरी। लटपटी पाग छूटे बंदपियके प्रियाकी बेणीबिथुर छुटीकच डोरी। ललितादिक देखति जु नैन भरि अति अद्भुत सुन्दर बरजोरी। बिट्ठल बिपुल पुहुप बरषत तब तृण टूटतहै अब होहोहोरी १५३ आज बनी लाड़िली प्रीतम सँग आवति। सोधें भीजी लट छूटी पियके अंश भुजा पाछे सखी सुघर बिभासहि गावति। श्रमजल बिंदु निशिके सुख सूचति मोहन बदनसों बदन मिलावति। बिट्ठल बिपुल कल रसिक बिहारीलाल आनन्द समुद्र मांथ मदन झिलावति १५४ आई भोरभये प्यारी छूटी लटबगरी। वहां जोरी लाल संग निशिकिये कुंजरंग सुबशकिये बिहारी कुंवरि अगरी। निशिके चिह्नफिके गौर श्याम तनछबि पदनख परवारों जेतीतेरी नगरी। बिट्ठल बिपुल केलि मनहुँ कञ्चनबेलि अरुझी कुंज तमाल आवैं कुंज डगरी १५५ प्यारी तेरी चाल चितवनि बांकी। बांके बसन अभरन बंकरख

वक्रसुभाव मिलनकी आंखी प्रिय बंककोरही आंखी। विट्ठल विपुल बिहारीआंके मिले ताते न फिरत निमांकी १५६ ज्योंहीं ज्योंहीं तुम राखतहौ त्योंहीं त्योंहीं रहियतहै हो हरि। और अचरचे पायधरो सुतो कहो कौनके पेठभरि। यद्यपिहो अनभायो कियो चाहो कैसे करि सकों जो तुम राखो पकरि। हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजबिहारी पिंजराके जनावर लों तरफराय रहेउ उड़िबे को कितो कुकरि १५७ काहूको बसनाहीं तुम्हारी कृपाते सबहोय बिहारी बिहारनि। और मिथ्या परपंच काहेको भाषिये सो तो है हारनि। जाहि तुमसों हितु तासों तुमहीं तुमरा सब सुखकारनि। हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजबिहारी प्राननिके आधारनि १५८ कबहूं कबहूं मन इतउत जात याते कौनहै अधिक सुख। बहुत भांतिनते घर आनि राख्यो नाहिँ तो पावतो दुख। कोटि काम लावण्य बिहारी तामें सुहचहो सबसुख लिये रहत रुख। हरिदासस्वामी श्यामा कुञ्जबिहारी दिन देखत रहो विचित्रमुख १५९ आइयेजू आइये जिनि दिखाइये सोसन रिस। शिथिल अङ्ग पगधरत डगमगे झूंठही करत मातेकोमिस। कच कुच, येहो मेरो जो समोभ करत तरसाये प्राण सगरी निस। गोविन्द प्रभु पियजान शिरोमणि औरनके मैं जाततिस १६० दोऊरी राजत हैं रंगभीने। नवल निकुंज महल रस कुसुमित सेज भोर उठिबैठे रस आलस अरुणि मुखदीने। गौर श्याम तन नील पीतपट संभ्रम पलटि वसन तनलीने। पीय बिहारी पिया संग अति विलसे अति सुरत रंग सुभगसिंधु ललितादिकदृगलीने १६१ चंचल लोचनलीभी चितचोरी। मोहनको मनऔंबश करलीनो ज्यों चकईसँग डोरी। जौलों न देखत सुखमूरति तौलौंपलक न लागत निमिषने और। नन्ददास प्रभु प्रेम मगनभये नागर नन्दकिशोर १६२ प्रातसमय जागी अनुरागी सोवत उठिरी श्यामसङ्ग की सँगिया। बीर सँवारत उठिरी दासियाकर बामभुजा लकुटी भरिरँगिया। भालमें सुहाग भारी कंचुकीकी छवि न्यारी पहिरे कुसुंभी सारीसोधे रँगबगिया। अग्रस्वामिनी लड़ाई बहुत कीनी बड़ाई फूली फूलीफिरे सब रैनि रंगरँगिया १६३ पिय औचक मूंदेरी पाछेते नयनहोजू निभमी वैठो। अछन अछन पगधरत धरणि पर आवत जाने सैन। हों

छतनकीं चौकिपरी आली छतिया भार परैन। जगन्नाथ कबिरा यके प्रभु रीझिहँसे तब हेऊँ हँसी वह सुख कहत बनैन १६४ आज निकुंज ते पाउ धारी। पिय अरुणात अरसात रसमसी ललन खवावत बीरी। सुरति शिथिल अँग अँग परस्पर भुजभरि लीन्ही श्यामरभोरी। बिट्ठल बिपिन बिनोद बिहारी नहिँ ललितादिक गोरी १६५ श्याम के भुजन बीच राखि है सुरत सीँचि सोई सुकुमारि जागी तमचुर बोलतें। हाहा कान्ह उदय भान अबहीं होयगोजान धुकर धुकर छाती गुरुजन डरतें। मधुर बचन कहेउ प्यारे को भलो मनायो चुंबन अकोर देत निरवारि गरतें। आंगन में ठाढे आय ललिता लेति बलाय सूरस्वामिनि राजे आनन्दके भरतें१६६ तेरेनयन लोनेरी जिन मोहे श्याम सलोने। अतिही दीरघ बिशाल बिलोल कारेभारे पियरसरिभये कोने। बदन ज्योति चन्दहुते निर्मल कुच कठोर अति ठोने बोने। तानसेन प्रभुसों रतिमानी कंचनकसोटी कसोने १६७ हों गई बछरा मिलावन श्यामने बानमारी। बरणी मुरछिपरी सुनुसजनी तनहूं की सुधिबिसारी। सखी एक जबजलमुख धोयो क्रमक्रम अँचरा सम्हारी। सूरके प्रभु बरजो इनअँखियनि तेसबहीतेन्यारी १६८ चले उठि कुंज भवनते भोर। डगमगात लटकात लरछूटी पहिरे पीत पटोर। अरुणा नयन आलस युत घूमत बिधुमुख चन्द चकोर। गिरि गिरि परत गलित कुसुमावलि शिथिल ग्रीग चकडोर। लपटित बसन रसन मणिभूषण कुण्डल से लटछोर। परमानन्द मिली गिरिधर सों रस सागर झकझोर १६९ गूजरी शशि बदनी सुन्दरि यौबनवाली। शिर कनक मटुकिया गोरस बेंचन चाली॥ छन्द॥ चली दधि बेंचन किशोरी कुंवरिहै गजगामिनी। नखशिख रूप अनूप सुन्दरि दशन द्युति मनु दामिनी। श्यामाप्यारी कुल उज्यारी बिमल कीरति ऊजरी। यौबन वाली सरस सुन्दरि चन्द्रबदनी गूजरी। वृन्दाबन भीतर श्याम मनोहर घेरी। हो तुम्हें जान न देहौं लेहौंदान निबेरी॥ छन्द॥ लेहौंदान निबेरि अपनो करौं नन्द दुहाइयां। जात चोरी बेंचि नितप्रति आजु पकरन पाइयां। बोलि ग्वाल लुटाय देहौं दधि करो जो भावेमना। घेरी मनोहर श्यामसुन्दरि ग्वालिनी

वृन्दावना। छांड़हुमेरो अँचरा हरजिनि करहु गोपाला। सुन्दर मन. मोहन श्याम अबार होति नँदलाला॥ छन्द॥ नंदलाल होत अबार प्रति छिन सघन बनमें अतिडरों। मेरे संग की सब बेंचिबगर्दी कहां उत्तर घर करों। कब कब तुम्हारो दानलागे बादि झगरो ठानहू। बलि. जाउँ मानो कहेउमेरो लाल अँचराछांड़हू। अति चतुर ग्वालिनि अंतर नेह बढ़ायो। श्यामसनोहर जियको प्यारोपायो॥ छन्द॥ पायो मनोहर श्यामसुन्दर सुरत सुखमानोरली। नवनेह अतिरसरंग बाढ्यो दानदे उठिघरचली। कहत श्रीहरिदास नागर कामिनी गुणआगरी। जिनि रसिक श्रीहरराय मोहे अधिक चातुर नागरी१७०॥ राग विभास॥ दधि मथति ग्वालिगति भेद सो ठाढ़ी यौवन मदकि झुकति नागलो. क लों बेनिरुरकत कटि छबि बाढ़ी। तन सुख सारि घनबेलि को लहँगा कंचुकी खसकि बनी उरोज गाढ़ी। सूर को प्रभु तहां फिरि फिरि देखत मानो सांचे भरि काढ़ी१७१ अतिहि अरुण हरि नयन तिहारे। मानहुँ रतिसों भये रगमगे करत केलि पिय पलक बिसारे। मंद मंद डोलत शंकित ह्वै शोभित मध्य महा रतनारे। मानहुँ उकसि कमल संपुट में उड़ि न सकत चंचल अलि बारे। हिलि मिलि तन बगरैनि जनावत रति रस चुगत भ्रमत अनियारे। मनहुं सकलयुग जीति करन को काम बाण खरसान सँवारे। अरपटात अरसात युगुल पुट कहुँघूमत कहुँकरत उघारे। मनहुँमत्त मरकत मणिआंगन खेलत खंजरीट चटकारे। बारबार अवलोकि कुरखियन कपटनेह मनहरत हमारे। सूरश्याम देखत सचुपावत दुखमोचन लोचन रतनारे १७२ उठ प्रात तोतरात कहत तोतरी तोतरी बात। मांगत हैं दधि माखन लाइहैं यशोदा मात। बाजत नूपुर सुहात नाचत त्रैलोकनाथ। देखत सब गोपी ग्वाल नयननि नाहित अघात। नंदसुवन सुखदाई चिरजी. वोरी कन्हाई। जीवति मुख चाहिचाहि या निधिको माई। बालके. लि देखिआई रोमरोम सचुपाई।श्रीवल्लभ हरखिनिरखि लेतहैंबलाई १७३ कटि पीतपट मुखमुरलि मुकुटशीश कांखलकुटनटवरको चटक। तिलकदारक कानकुंडल कपोल बनमालाकीलटक तामें चटक मटक। बपु घनघटा तामें मोतीहार बगठठा सुन्दर सुभगपग पांवरी खटक।

ब्रजकी भटक देखिबोरि करी मटक छोरी [illegible] पीत सनकी अटक १७४ गोलोकहीरी [illegible] । तेरी नवनीत [illegible] न पढे सुनेते न आवै। [illegible] सारा अगाधे गावदेव [illegible] वादबकही वेदव्यास जा [illegible] कीनो। वेदव्यास [illegible] नाई पढि मनताप नशाया। तिनपे मुनि शुकदेव परीक्षित राजाको जुसुनायो। यद्यपि नृपति सुनी अजली ना [illegible] कहेउ शुकदेवा। सर्वात्मा भावन ऊधो ज्यों ताते करी न सेवा। श्रीभागवत अमृत रस मथिके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम। कौर आवलों दूर ब्रजजन के हाथ दिये पुरुषोत्तम। [illegible] अरु शिगार [illegible] श्रीवल्लभ प्रकटायो। करी कृपा अपने जीवनपर जगजीवन स्वादचखायो १७५ गोहिं देख न बिलोवनदेहि। बारबार पांयपरति यशोदा का [illegible] कहेहि। बांधि कटिपट क्षुद्रघंटिका मुदित नंदकी रानी। कञ्चनचीर [illegible] सभा [illegible] वलय घोय मृदुबानी। इक इकतेहाइ देवदैत्य सब [illegible] सदराचल जानी। देखत देवलक्ष्मी कांपी भाजलगोपाल मथानी। श्याम ब्रजराज रसापति मतलभार उतारे। परमानन्ददासको ठाकुर ब्रजवासि जगत उधारे १७६ जान्यो जान्यो री प्राणनतेरो प्राणेश्वर बोलेकियो मान भयोहै बिहान। पियको तेरोई ध्यान तेरीसिख सुनिकान जामे बसे प्रान तासों कैसोजैं गुमान। सुनिरी मुरलीगान आजनीकी सौ-रीतान संकेत स्थलौरचौ कुसुम बितान। सूरदास प्रभुजान [illegible] मानि मदनमोहन तेरे सुखको निधान १७७ पियहृदय राखतही निशिदिन आजु कहां तू अति रुठीरी। बिच बिच नाहीं नाहीं करति सब तियन में तुमही कठिन कहीरी। [illegible] पर कीजे कृपा ऐसी अति तेरी किनहूं धीर सहीरी। रसिक प्रीतमसों मिलि परभात अति रुचि तोसों निबहीरी १७८ बारी कन्हैयारी मोहि भावै। अबकी मोटी तानगावै मुरली बजावै नयननिमांझ रिझावै। निरखि परखि देखि जियको भरमगयो सांवरी मूरति मेरे मनन चुरावै। अतिही अघगारो मैनको प्रभुप्यारो सब गोपिनको नायक कहावै १७९ आलीरी पीरी यह भईहै [illegible] हारकुञ्ज रैनके। नथखैंच्यो बदन निरखतही जीभोंजान्यो चन्द्रमातारी धोखे रैनके। नैन कुरङ्ग

आनि अंगरयौ [illegible] मनभावन आयौ [illegible] [illegible] [illegible] दौरको।
[illegible] प्रकास मोती [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]
भोसन पीयकौ सुखकोन के १८० ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] आवे। यमुना यमुना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] जो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करै। [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पावन
[illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] १८१ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]। और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १८२
[illegible] सब और आनन्दराधी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। और जीव
को औरन को गति मेरी [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] तुम
अतिहि पियारी तुम [illegible] [illegible] [illegible] १८३ [illegible] [illegible] कलि-
[illegible] [illegible] देखि प्रवाह प्रभाकर [illegible]। [illegible] ऐसो पापजात जित
तित बहे ज्यों मृगराज देखि मृग [illegible]। देवत पान पुरुषों पायत
अमानि कृतार्थ मन्या बहे अनन्या। ऐसो चाहि गङ्गाधरजू चरना धारना
अति प्रीति अनन्या १८४ ॥ [illegible] । [illegible] ॥ भागे [illegible] रथ
भागीरथजू को चल्यो जात पाछे पाछे आवति तरङ्ग रङ्ग भरि सङ्ग। अन
सलात अतिउज्ज्वल जल की थोभि अवनि स्वर्गलि मानो मोतीभरे मोती
मंग। जाइ परसे हैं भूप कवके असमरूप दौर दौर जाविदत [illegible] होत
सलिल संग। नन्ददास मानो ओविनके यश कूदे वैसे सुरपुर चले भरे
देवअङ्ग १८५ ॥ [illegible] । [illegible] ॥ जो भागीरथ नन्दो नमुनि चयचकोर चदनि
मरनाग बिबुध बंदनि जौजन्हु बालिका। बिष्णुपद सरोजजामि ईश
शीशपर बिभासि त्रिपथगाथ पुण्यपाथ पावकालिका। बिमल बि-
पुल बहसि बारि शीतल त्रयताप हारि भँवरवर बिहंगत्तर तरङ्ग मालिका।
नितजन पूजोपहार शोभितशोभा धवलधार भञ्जन भवभार भक्तकल्प
थालिका। निज तटवासि बिहङ्ग जलचर थिरपशु पतङ्ग कोट जटित

[illegible] पालिना । तुलसी [illegible] सुंदर रघुवंशमणि [illegible] कालिका१८६ ॥ [illegible] जग [illegible] । [illegible] पापी [illegible] परम पुनीत [illegible] । [illegible] १८७ श्रीवल्लभ [illegible] कोटि [illegible] । [illegible] प्यारी [illegible] १८८ श्रीवल्लभ [illegible] । प्रातसमै श्रीवल्लभ सुतको श्रीविट्ठल प्रभुको उठतही रटना लीजिये नाम । आनन्दकारी मङ्गलकारी अशुभ हरनजन [illegible] । [illegible] परलोकके अंश को काहि मनात तिहारे गुणग्राम । नन्ददास प्रभु रसिक शिरोमणि राजकरो श्रीगोकुल सुखधाम१८९प्रातसमय श्रीवल्लभ सुतको पवित्र विमल यश गाऊं । सुन्दर सुभग वदन गिरिधर को निरखि निरखि दृग दृगन सिराऊं । मोहन मधुर वचन श्रीमुख के श्रवणन सुनि सुनि हृदय बसाऊं । तन मन प्राण निवेद वेदविधि यह अपन-पौहो सुफल कराऊं । रहो सदा चरणन के आगे महा प्रसादको जूठन पाऊं । नन्ददास यह मांगत हौं श्रीवल्लभ कुलको दास कहाऊं १९० प्रात समय श्रीमुख देखन को सेवकजन ठाढे सब द्वार । जै जै जै श्री वल्लभ नन्दन दरशन दीजे परम उदार । सुन्दर श्याम सुभगता सींवा मेघ गम्भीर मधुर गिरिधार । नैनन निरखत होत परमसुख श्रवण सुनाये वचन सुढार । श्रवण मङ्गल जगमगन मङ्गल रस पुरुषोत्तम लीला अवतार । जन भगवान जाय बलिहारी अगणितलीला महिमा नहिं पार१९१प्रात समय उठिके जो सदा श्रीवल्लभनन्दनके गुणगैये । फिरि करजोरिरूप चिंतन करि उनहींके चरणन शिरनैये । सब सा-धनको आरहैपद बारबार अनुभैये । कहै हरिदासमानि सिखमेरो श्री विट्ठलके दास कहैये १९२ प्रातसमय उठिके जो सदा श्रीवल्लभनन्दनके गुण गाऊं । श्रीगिरिधर गोविंदजूको नामले श्रीबालकृष्णको ध्यान-धाऊं । श्रीगोकुलनाथजूको प्रणामकरिरघुनाथजू देखेनयन सिराऊं ।

श्रीयमुनाजलसंग खेलत घनश्याम रूपनकी प्रीति हिलकनि गिराऊं। यह अन्तःकरणकों हित करिके गाऊं तो परम पद पाऊं। बिनती करिकरि मांगत व्रजपति निशिदिन इनके दास कहाऊं १९३ प्रात सुमिरो श्री वल्लभ श्री विठ्ठलेश परम हितकारी। भक्तकृपा ज्ञान भजन सुखपावत कलिमल हरण प्रताप भरारी। आये छोंडि शरण नहिं कबहुं बांह गहेकी लाज बिचारी। आन आसरो छोंडि भजो पद हरिकेश प्रभु की बलिहारी १९४ प्रातसमय श्री वल्लभ सुतको परम पुनीत बिमल यश गाऊं। अम्बुज वदन सुभगनैना अति श्रवनन लै हिरदे बैठाऊं जब जब निकट रहत चरनन तर पुनि पुनि निरखि निरखि सुख पाऊं। विष्णुदास प्रभु करो कृपा मोहिं वल्लभनन्दन दास कहाऊं १९५ विशद सुयश श्री वल्लभ सुतको प्रात उठत अनुदिन नव गाऊं। कलिमल हरण चित्त धरि राखत उपजे पर सुख दुःख बहाऊं। भक्त भवँर औ भक्ति रस जाने माने मनसा तिनहू को छाऊं। छीन स्वामि गिरिधरके सुमिरण अष्ट महा निधिनवनिधि जो पाऊं १९६ श्रीवल्लभ सुत कमल प्रफुल्लित प्रगटे श्रीवल्लभ कुलको दिनेश। आनन्दे तिहुँपुर के सबजन आनंदे जिय मनका सुरेश। श्रीभगवान प्रसारकरन को निजजन सबको अति सुखदेन। जन त्रैलोक जाहिबलिहारी शीतल भये सुख निरखत नैन १९७ गायो न गोपाल मनलायो न रसाल लीला सुनि न सुबोधनि न साधु संग पायोहै। सोया नमबाद करि धरि अपबरि कबहुँन कृष्णनाम रसना कहायोहै। वल्लभ श्रीविठ्ठलेश प्रभु की शरणि आय दीन ह्वैके मूड छिन शीश न नवायो है। रसिक कहाय अब लाजहू न आवे तोहिं मनुष शरीर धरि कहा धों कमायो है १९८ गायो न गोपाल मन लायके निवारि लाजपायो न प्रसाद साधु मंडली न जायकै। धायो न धसकि वृन्दाविपिन के कुञ्जन में रहेउ न शरण जाइ विठ्ठलेश रायकै। नाथजू न देखि छक्यो छिनहू छबीली छबि सिंहपौरि परेवनाहिं शीशहू नवायकै। कहे हरिदास तोहिं लाजहू न आवै जिय जनम गँवायो न कमायो कछु आयकै १९९ रूपरस माधुरी भरेव सलोनो पियमुख देखे प्रभात बात कछू कछू रतिरी। अरसात गात औ जम्हात मिले जात हग उर भुज ग्रीवा छबि

रनउभरतिरी। कुण्डल कपोल अधर अरुण रहेलसि अङ्ग रङ्ग भीने रङ्गला ढरतिरी। प्यारेलाल वल्लभ रसिक पर तन मन रीझि रीझि अँखियाँ न्योछावर करतिरी२०० भोरही श्रीवल्लभ वल्लभ कहिये। आनंद परमानंद श्रीकृष्ण सुख सुमिरे अष्टसिद्धि पइये। और सुमिरो श्री बिट्ठल बिट्ठल श्री गिरिधर गोविन्द द्विजवर भूप। श्री बालकृष्ण गोकुल पति रघुपति यदुपति नवघन श्याम स्वरूप। पढो सुमार श्री वल्लभ बचनामृत जपो अष्टाक्षर मन्त्र करि नेम। अन्य श्रवण कीर्तन तजि निशिदिनसुनो सुबोधनी धरि जियप्रेम। और सेवो सदानंद य-शोमति सुत प्रेमभक्ति सहित जियजानि। अन्याश्रये समर्पित लेनो असद अलाप असद संहानि। नयनन निरखो श्रीकालिंदी और निरखो सुखद ब्रजधाम। यह सम्पति श्री वल्लभते पैये हरिजन नाहिँ काहूसों काम २०१ प्रातहिलीजै श्री वल्लभ नाम। श्री बिट्ठल श्री गिरिधर गोबिंद श्री बालकृष्ण सुखधाम। श्रीगोकुलनाथ अनाथ के तारन श्री रघुनाथ परिपूरण काम। विष्णुदास सुमिरो सुन्दर घनश्याम २०२ प्रात समय नँदनंदन श्यामा देखे मैं आवत कुंजगली। नव घनश्याम तरुण दामिनि मिलि राजत रूप अनूप अली। लटपटि पाग शीश करमुरली लोचनघूमत भाँति भली। शिथिलित चार मरगजी अँगिया काम कामिनी देखि छली। चारियाम निशि जागतबीती उर उमग्यो अनुरागबली। कज्जल अधर नैन बीरीरँग मदन नृपनि की चमूदली। सूरबदन पंकज रसपीके अलक मधुपकी पाँतिचली। प्रफुलित प्रीति परस्पर निरखति तरनि उदै जैसे कमलकली २०३ उनींदी आंखेंरंगभरी दुरतनहीं पट ओट। मीन खंजन मृगहीन भयेहैं और कमलदल वारि डारों लख कोट। दुरत मुरत झपकत अनियारी चंचल करतिहैं चोट। चतुरबिहारि प्यारीकी छबि निरखत बांधत सुखकी पोट२०४ पल झपकि झपकि आवत उनींदी अँखियां भई। अरबराइ उठे पट प-लटि परे पट फाटन क्योंन दई। नेक करो बिश्राम बाम बोलिये मे-रेहीधाम हों करो टहल जो तुमसोंहे चोपनई। सकुचो जिनिसांची मानिये चतुर बिहारी गिरिधारी पियजे नइ रिझवार रिझई २०५ सपनेहूं न बिछुरिये हो हरिसों मनयों बाछे। श्यामसुन्दर बहूनायक

सुखदायक सब दिनको गोरीं [illegible] न पूछियैं [illegible] जु
अनत रमके कौनो [illegible] दाव दूजो पाऊं। [illegible] प्रभु
बिछु [illegible] रूप आलीरी [illegible] २०६ प्रात
[illegible] आये [illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible] और
बिराजत [illegible] २०७ [illegible] आवत [illegible]
[illegible] । [illegible] शिथिल अंग [illegible] ।
[illegible] बिराजत ऊपर [illegible] चन्द [illegible] । छीत
स्वामि [illegible] गिरिधर [illegible] २०८ भोर
भये [illegible] । [illegible] अंगकी
शोभा पीक कपोल नयन आलस युत। कहा [illegible] सो कौन अब
जिन परसो मोहिं चले जाउ उत। जानी बात तिहारि सबकी छीत
स्वामि गिरिधरन कहे सुन २०९ लला जनि मेरी बांह गहो। मारगमें
लोग देखैं दूरि ठाढ़े रहो। मनमेंहि कौनबात मोहि क्यों न कहो। ढीठो
कहा देखु ऐसी नेकु लाज लहो। कहौंगी जाय [illegible] बाट रोकत
हो। कैसे हम आवहिं जायँ पनिघट पथहो। तुमहिं तो कछु नहीं
बिचारु लरिकाई पगहो। रसिक प्रीतम छांड़ि देहु हँसति हैं सबहो॥
२१० पैंजनी पकर मौनरही चूरी चुपकर सुनियें न बैन ब्रजराज ब्रज-
नारी के। मांझहीते सोये कि धोरी सबै समोये कहै कालिदास
को ये जानै चरित्र बिहारी के। करन के मनोरथ कारन करन चारु
चरन के संगी रंगी अति सुकुमारी के। जानिये न देहु हाहा एजू महँ
मुख रहै मुखरहै मूँद काहे नूपुर प्यारी के। सोवत ननद जेठानी
देवरानी मिलि सोइबे के निपट उसास लेतसास है। कालिदास कोऊ
रूप रेख देख पावत न योंहीं उन मानीकास कोजको बिलास है।
आली बनमाली कौन ख्यालीपरै एकदिन देखबिन कियोजात कासों
उपहास है। दूतीसंग रसिक मुरारी को पहुंचि रहै नारि सुकुमारी
जोबयार संगबास है। स्वामीकी कहाकहै सब नख्त बजाइ जाके भी-
तर सुहाई भांतिभांति के बहुत हैं। कालिदास लागेपुराय पौनके झ-

कोरिसे गाय जहँ आनंदसे ... रहतहै । अवल गतोंध सब्य अनुसोध
... नीको लगनलागी ... पुन अद्भुत है । पंचकोश भर जाको
... भर सब जीवन को पुंडरीक पटमें मुकत है २१२ न्यों जाह
... ऐश्वर्य ग्रनुपदारे रूपके निधान एक मोतन निहारिये । कहे
कालिदास ... सखि मोरमाधे मुकुट लकुट नाहिं ... ।
... कन्हैया पुन ... कन्हैया ... मेरीखोर लोचन ...
... । ... मेरीवाट अटकी है नेक
... २१२ ... आवत हैं ग्रीवन ग्रँ-
... करतिहैं । ... आवत सं ...
... इरतहै । ... भरें
... । ... है । कैसी कौन ... के
... २१३ ... किनलाग
... पीकी ... जिरावत । सुकोरिहै बैलें ... मैं
... आईहै ... ... । ... हरिहैं ...
... आवत । नीकेहैं प्यारेकहें ...
निजाई कहांगनभावन । ... कुबटा ...
कैं हसतो । नवबंन्नने अपना आठलैं ... बांहलालको उलट सुजान । ...
पक्व सी मयकारी निसवाक अथा बिनुवार दृग्वाखितुते । ...
तन देउजरि छोड़ि ... एकसी हँहउते २१४ ... को-
इल कुरंग तन कारो कियो कुहुकुहु ... बावरीवहली । ...
... विद्रुमभी हियाफाट दाड़िमलबषा ... । करी
चन्द्रमुखि तैं कलंकी कियो चन्द्र अब बोलि ब्रजचन्द वे किशोर आप
अवली । कारसोरडारे ब्रजराज वे पुकारकारे पुराडरीक बुड़ोयोरी क-
पूरखायो कारली । मयल नवोढ़ा ऊह ओढ़बो नवोढ़ आनें पीय पास
पीढ़नेकोसार कहा जानिहै । मेरे लायवेकीलाज कोजैमाज वलिजाऊँ
आतुर न हूजै इह अवहीं अयानीहै । ऊह रसरीति कहा जानतहै मेरे
लाल रसहीमें रसहीमों बातें कहे मानिहै । सैनाखी पढाई जब पहर
अढाई परतीतमैं बढ़ाई तब केहूं केहूं आनिहै २१५ आजलों अकूती
छाती काहके न रंगराती योवनके मदमाती मोहेमन रौनेको । खंजन

से नयनरारी चूनरी और चूरीदेखदेख सकुचाती बोलनाहिं मोनेकी। कौतिकमनो लोसों शर्ानयां चन्द्रमुखि हैतो चितचोर नन्दलाल को भौनेकी। झूठ नाहिं बोलत यदुनाथकी सौंमोबारबार याको ठगलाओ हों बियाही बिन गौनेकी। मेरीसी जो करि मेरीसी आंखिन जो त्रिलोकको आयेरीआयेचितै कौन देखयहै चितचोरचितनीतहैठाढ़ो। अलभनेमाई कान्हके भेव घर बाहर बैरीको बाढ़ी बाढ़ो। यहै मुख देखकहै दुखहाईरी लाजकरो और घूंघटकाढ़ो। जौकारिगाढ़ो२१६ तिय सांझसमय हरि आवन जानि शृंगार संवारि महासुखदै। अति आतुर दोबार निहार अहार बिचार मनो भवचित्त मुदै। सीगा वोदि प्रकाश प्रभाकरनाथ लखै बखवा नहिं होतु जुदै। निशिहू दिन कों सुख पाय भले चकई इमि चाहति चन्द्र उदै २१७ बिरह अनल बरी खरी प्रेममनकरी चटपटी परि बिन हरि अकुलातहै। मुखिबुधि हरि कुलकान लोकलाजटरी नार्थाचतधीर आश अति बिललातहै। हरि धरि दीरघउसासलैं उदास नरीतगि ठगसुरि स्वेदकंप भवगातहै। नैन जल चलै सरी पावसकी झरी जैसे रैतभरी घरी चलिजात दिनरात है २१८ सुख नेह नहीं सुधि देहनहीं तजिगेह नहीं न रहीं अटकी। टकी सकतके करि टेक विवेक न नेक लजै हटकी कटकी। चकिकै तकिकै छ तते ककिकै थकिनीय चितै सुखमा नटकी। फटकी मनतें झटकी तनतें भटकी अँखियां उटकी अटकी। सुन्दर सरोवरमें बांके हैं कमल किधों फूलन रबिस कैसे नयेनये जातहैं। दौरे मधुककेसात देखत दुरत जल कैधों खेलें खञ्जन खरेसैन चुगातहैं। कैधों मृगनाह सब शीश नाइनाइरहे किधों अलिराज माल केतुकी सहातहैं। नाथ इन खारिन सों आछकाहीं देखि काह लाज शीलजाति नैन लाजसों लजातहै॥ अथबारहमासातिख्यते॥ चैत्रवर्णन॥ सुफल फूलसोंहहो बेलसोहैं लपटने द्रुमन सीफ फूलित जहांहैं। भवँरमत्तबोलैं करैं खग कलोलैं सखीसाथ डोलैं रसिकरस महाहैं। नहीं गरम शीतल पवन त्यों त्रिबिध बल अचलसाथ सुखके सुखीसबतहांहैं। अहोनाथ मानो सुखद चैत जानो मनुथले मदनदंड बिरही कहांहैं॥ बैशाखवर्णन॥ विमलकूप सरहैं अचल प्रेमथरहैं बरुन नालकर नैन परसान लीजे।

ढिंढू मंद लाचे हिंचपञ्च मू मौंवेती भीजबांग लाली रमीमैं । मुदितर्देखि मांदें सगन भीति बांधी मंडित नाग माला सुमकरन्द पीजै। सुमतो पुदुमनि इक्षैग छयो मधुपकंज भेरे दुगन नाम कीजै ॥ ज्येष्ठ वर्णन ॥ तरनकेत्यमबै अनलको तनमें निकसिको भवनते दिनेरैनजानों। जहां तहां शीतल छंहैं विश्वन पीयल छुटैसिजल रसबरस मेघमानों। मघन कुंजन अनजन सरंजाग सनमान सखीसाथ जनके घनों केल ठानों। तजो छांह उगते बसोनाथ करनाथ सुखज्येष्ठकेहा कहांलों बखानों॥ आषाढ़ वर्णन ॥ घटा श्यामसावर लहरि दौरि बादर गरज फेन बूरवा चमलबीच सोहै। सुमन भूम मनहै लसै रेव मनहै आरोहति भरी छवि शुभ दृष्टिमोहै। कहिमद गवनसैनाहिं मकार दवनछांड़ नाभायें चलन इन्द्र मारुत गमोहै। सलिल अंसुवन नेह गंभीर पगनाथ आषाढ़ नानों उर्वि हूँ लसोहै॥ सावनवर्णन ॥ सुभाते अचल कंदरा बारि कैंसे मदन कूलसलं चारुहरिये बसुंधर। लखि मेहबुंदै छुटेंगे जलत्यों पुहुप वृन्द हरकी रसारँग पुरंदर। मारजधवा भवँरनादि बाजैंधनु इन्द्रवा सा। लसैजयो दुगनकों धनुर्धर। प्रियालैतड़ित साथ यों श्याम घननाथ सावन बनोहै मदन बाग सुन्दर॥ भादोंवर्णन ॥ लसै इन्द्रवधूपन्ति सा-रुन महावन जसैहै सोवर रसा चाप राजै। रुधिर सी वलित अंकुशौ दा-मिनी त्योंतड़े शुंडजल मदभरै मेघ छाजै। गरजै घोर धुरवाधु जोचित्त कंपैदेखि मददार रवगमैंन सशास काजै। हमोनाथ सुख सैनसज देखिये सोसें भादौं सघन हस्तिबिराजै॥ क्वारवर्णन ॥ सुमन सेतजेते धरा मखलेते बिछाये किधौं भूमही राल सेसा। सुधा वृष्टिकरपूरके सुरसरी फैल पारापरो पयरूपा बिसेसा। किधौंनाथ लैकर खरी शारदा जोरि अस्तुति लखयो सेनसीरोषजैसा। बिमल चांदनीशरदकी बिमलचांदनी है बिमल रूप सेसा बिमल साजतैसा॥ कार्तिकवर्णन॥ दरस भौनयोवन सो अंग अंग सोबन सनेहा सगुन ज्योतिसुखदायका। चाहि शिरपरबसै श्याम तम नाशक अभिराम शायक मदनके अनल पानका। नाट करतैं कुन्हैरात रसमें जगै कीर शोचे भसम के करन जायका। नाथनेह न घटै छबि प्रकाश न मिटै दीपकातिककिधौं युवनीनायका॥मार्गशीर्षव-र्णन॥ पावस सरमजै अपावन सलिल न्हातपावन रंग्ग चहैचारु सोहै।

श्यौं लोचनि रहौजब लौं [illegible] बिनाथ की [illegible] । जौ [illegible] ज्यौं [illegible] त स्यौं ज्यौं कुसंयोग [illegible] । [illegible] की बड़ी चाहकै ज्यौं बड़ो आरलौं नाथ किलमिल [illegible] है॥ [illegible] ॥ [illegible] व्यापकप्रीत । [illegible] । [illegible] पीयकोजाप न जाय । सर्पांकि समहि मारी रैनि [illegible] । [illegible] मोहिं नेकु न सुहाये । [illegible] सम आलिही जाये ॥ [illegible] ॥ [illegible] प्रीतिकार प्रीतकार और देखयो बहिप्रीतकार को [illegible] है। कुब्यो सूरजौ [illegible] को तेजकारकंदरनोकारन [illegible] है। बसे घरनिमंदन [illegible] के शंकालो अतलो [illegible] । [illegible] अति [illegible] माधवजु अहो माधही नाथ [illegible] ॥ फागुन बसाने ॥ बनबन सुमन अलिसपन घन चहुं [illegible] हँसै । छवि न [illegible] उमड़ [illegible] सेघ [illegible] में बसै । तिय [illegible] लैनों [illegible] नाथ [illegible] करै मास का पुन की [illegible] ॥ इति बारहमास । समाप्त ॥

अथ स्फुट लिख्यते । राग बिभास । [illegible] तड़ाकर [illegible] [illegible] सवारस मकूल केश छायोहै । भृकुटी [illegible] रति ज्ञाति लेउ रत रंग आड़ अधिक सोहायोहै । सीनसे नवीन नैन चारासे करनाफूल तामों भुकि भुकि आवे मिसलखि पायो है । ललित नि-चोलिन बीच फरकत ऐसे मानों मनमथ घेर जालमें [illegible] है । लागि मन सह और ऊठसी लगी है उरऔरे हैगई सुघर हीन शरीर है। हैहै गयो सोहिसो तो पकल है है कोउ केतको कहैहै न सुहैलै लगी रहै। जाहिलगी प्रेतताहि केतक दुःदेल याके लागी जिअ्यत याते अधिक अधीरहै । येरी मेरी बीर ऐसी छातीपर पीर तबहीं मिटैगी जोपै छाती पर पीर है ॥

इति राग कल्पद्रुम नित्यकीर्त्तनान्तर्गत रागविभास समाप्तम ॥

अथ राग पंचम प्रारम्भ ॥

आँखें रैन सब तुम सैना [illegible] । तुम कियो मधुपान घूमत [illegible] सब [illegible] । [illegible] पिय आँख पीर हमारे उर [illegible] कौन दियाये । नन्ददास प्रभु प्यारे श्याम घन बरसे [illegible] १ आलस औंदे नयन लाल तिहारे कहाँ तुम रैनि बिताये । पीक कपोल देखियत हे पिय अधरनि अंजन लगाये । [illegible] उर [illegible] गुलाल हृदय नख चिह्न दिखाये । नन्ददास प्रभु [illegible] भले सोरहो [illegible] २ प्यारे तेरी आनन हुग आलस युत राजत [illegible] । नव किशोर [illegible] अंग रैनरंग रसे । शिथिल [illegible] । पीक [illegible] कपोल पियमुख लगि हँसे । मैं [illegible] प्रीतम गुण ग्रसे । पिय बिहारीलाल ललित [illegible] कहाँते जु आये भोरभये नन्दलाल । [illegible] नयन बिसाल । लटपटि पाग अटपटी [illegible] माल । कृष्णादास प्रभु रसबस करि लीनो धन्य [illegible] ४ कौन पुण्य करी नारिहूं अवतरी [illegible] दीन थईभाव [illegible] । [illegible] अमर [illegible] हेतै कमला [illegible] लागे । [illegible] न जागे करी योग ध्यान धरी बहुत ये आदरी देह कष्टे । तोहे तेहरीं स्वपने न पेखिये प्रेम दृष्टे । शेष सिंहासन सहज शोहिये ससा भुवन बैकुंठ तनु मन्य भावे । तेहथी अधिक [illegible] मन्दिर माहेरु प्रेम प्रीताम्बरी पलंग आवे । भक्त बच्छलतनू बिरद पोतेबहेयेस कहेसमय वेदजाणो । नर सैयोंनु स्वामी सुख तणो सागर कीधों कृतारथने दीन जाणो ५ आज उजागर अङ्ग आलस भरेउ माहेरे मन्दिर केम आव्या । भुवन [illegible] भामिनी भोगिया साथ साहेलडी मनलाव्या । पीत पट बिसारेव नील अम्बर धारेव अधर अंजन तनी रेख लागी । धन्यतें पुण्य पूर्व तपकरि कामिनी तुम्हारे साथ जो रैनि जागी । अलस अलतालता रङ्ग सलता थया तिलक अर्द्ध रहेउं सुभग भाले । जुम जत केलिकरी गोल्लुं सोहें घणां अधर तणोधिक लोचन बिशाले । का-

रज कहो काई कारण समतणा गले पधारेउं प्रात पंनरा । मम हिया मलबूते नर सयों मग कहे हलोंन पधार जो कालें हला दे दलोया थले कुसुम माला वड़ें नांधि सबहूं अरलाज लोपी । जोड़ें नाहरे मन्दिर थिकोरा मकावके शुरे करसे पेली रोककोपी । तम्यो जगमाजी ने अन्यो वन बेलड़ी गोरगही सींच्यो तो स्याने रोपी । अमरजाया तथा फूल मकरन्दमा हृदय कमल माहांरहे उरे ओपी । पीतको तम्यो प्रेगता पाय पतन मन प्राणा पहुरहेरे मांपी । कांहवर मेंढां नाहरीरी सजेस उतरे तंमसुख सेन सम्मलेरे गोपी ७ ध्यानधरि आनन्दनन्दजी कुंवर गजेथकी अखिल आनन्द पाक्ये । अब महासिद्धि तेहारउ भीतर हेईहना दुझतारा पूरआक्ये । मोरना पिच्छनवो मुकुटमस्तक धरेउ मकराकार कुण्डल श्रवण झलके । नीलपट तिलक ते सुभग केसर तथा कंठ मुक्ता फलहार ललके । पीतांबर नवीन पटकाटिमें त्रिभङ्गी उभला बेणुबाये । कदमना द्रुमतले राधिका सब मन रंगरसीअन संगे अलापिगाये । वृन्दावन महामुरलिका धुनि सुनि गोपिका केरडा वृन्दआवे । नरसै थाने मने आनन्द अति घणो पुरुष मुक्ताफल लेई बधावे दरहत रजनीज्यारे पाछली यरुथरी साधु पुरुषे त्यारकूं नर हेवुं निद्राने परहरी सुमिरवा श्रीहरी वक सु समके हेवुं । योगिया होय तेने योग संभालवो भोगियाहोय तेने भोग तजवो । वेदियाहोय तेने वेदउचरवो वैष्णवहोय तेरगों विष्णुजपवो । सुकर्मी होय तेने सबलग्रन्थ साम्रवो दातारे दन्तधावनकरवुं । पतिव्रता नारिने कन्तने पूछवुं बचन कहेते शीशधरवुं । आपना धर्म थी कथाकहुं पीछबीमन शुद्धबद्ध वारी कपट मेहली । भरोनरमैयो हरिनी कृपाथकी जाताआवो रुडी वातमेहलीर आजकीबात्रिनकपरहो लालहोबोलिबोल गई । बिगलितकच सुमनपाग दरकिरकी वामभाग अङ्गअङ्ग अरसई । अरुण नयन अर्धनिजात अरु जँभात बारबार कपोलनि छबिछई । धनि सुहाग भागताको गोविन्द मुरलिके प्रभु संग सब निशि बितई १० मैया तेरोरी मोहन अतिही सयानो देत अटपटी गारी । कुञ्ज महल में अचरापकरो हँसि हँसि देदे तारी । गोरस ढोरे मनकी जोरे माट दहीके फोरे । ऊठांऊ की डोरी कोसे बाँधोची उदय भवन बन्द तरे । अधर पान परिरम्भन चुम्बन

काहा काहा लजानी। शुक नारद सों ओला अगोचर सुरकितकथर बानी१२ तुमसों बोलिबेकी नाहीं। घर घर गमन करत गिरिधर पिय चित नाहीं इकठाहीं। कहा कहूं सुन्दरघन तुमसों ओहोली मनमाहीं। छीतस्वामी प्यारी के बचनसुनि हृदय मांझ मुसुकाहीं १२ नन्दजी नू-आंगन परम सोहावनु अति रति आपनु छयाकोउं। यद्यपि वैकुंठ कैलास ब्रह्मासदन इन्द्रना लोकथी अधिक कोउं। सकल तीरथ जहां विट्ठल नागरके इन्द्र अजईशा जहांदेव मघवा। भक्तिबिना भूधरो न-ययनहिं कोयनै सकते सकपै अधिक डाला। मात उमाहँसे नाथसन्मुख थसे दास जिनके प्यारो प्रेम प्रीते। नरसैयानी स्वामी छयाजी बाल लीलार में यह जरीते १३ जिनिबोलो पियगोमों आज। जहां बसे निशि तहीं सिधारो मोतेकहांहै काज। सारी रैनि मोहिं मगजोवत गई दही मदनकी दाज। छीत स्वामि गिरिधर दृग जोरत आवत ना-हिंन लाज १४ अरुण नयन देखियत है आज। बसे जहां निशि तहीं सिधारो रसिकन के शिरताज। मगजोवत मोहिं रैनिबिहानी तुम्हें नहीं कछुलाज। छीतस्वामिसों कहतिभामिनी यहांनहींकछुकाज१५ हरिजूकी बालकलीला भावति। माखनदूधदहीकीचोरी सोईयशोदा गावति। शकट विभञ्जपूतना शोषण तृणावर्त बधकीनो। ऊखलबंधन यमलउधारन भक्तनकोसुखदीनो। बच्छचरावन मुरलिबजावन यमुना काछ बिहारी। परमानन्ददासको जीवन वृन्दावन संचारी१६ जागत जागत रैनिबिहानी। कहिगयेसांझ आवनेमेरे गृहबसेअनत रतिमानी। उरबिच नख क्षत प्रकट देखियत यहशोभा अतिबानी। भाल महा-वर अधरनि अञ्जन पीक कपोल निशानी। निशि सब जोवत बीती मोको आये प्रात यहजानी। चतुर्भुजप्रभु गिरिधर सिधारो तहांजो तुम्हरे मनमानी १७ प्रियसुतमुख विनोद वद बिपिनेकिंकिंबिहितं। पल्लवचयमति वल्लभमधुना कुत्र गिरिसिनिहितं। गैरिकचित्र बिचि-त्रत वदनं कुत्रकृतं ललितं। कचचय मनिचय संचकल्पं बर्हिपिच्छ कलितं। पायित मति धर्म निवारणाकृत ये निर्मलनीरे। उपविष्टविट पिच्छाये सुत कुत्र गोपसहितमितोसाया बदभुक्तंभवता वनसुहितेन। चारत मतिमति कोमल तृणावति देखे गोकुल मथ कुत्र कटकनिचय

मिलोस्तु [illegible] नयनं । दर्शय एव निर्जितशोभित [illegible]
[illegible] बाल कुंजे । पुंडितुव मि[illegible] [illegible] विपुले
कंथ्यकिनो [illegible] प्रयेन । [illegible] सके वरी
[illegible] । [illegible] गुहदा कपूं [illegible] सी रमसे । श्री
वल्लभ पद [illegible] सेवन विरचित पदार्थ १८ कुमार [illegible]
कुल नायक [illegible] पंवसुखायक । [illegible] मुनिसमि
[illegible] बहुसुखदायक । वदीविनय [illegible] विश्रांति
हृदयमतिसारं । चित्तमिलर यवतोयलसनिमति [illegible] तत्र सन्मानं
[illegible] कृष्णते सक्मति चिह्नव [illegible] । [illegible] कथं
मानये नाथवचन विनयं । [illegible] सुपरथो [illegible]
चित्तमिदं निजदृश [illegible] भवता सुन्दर सकलं । कुंकुम [illegible] वंशेषु
युत [illegible] हृदये । कथमेवकरणं घटनेयु [illegible] मुदितहृदये । नक्षं
भासिता सयामिनानि निखिलानिशि रहसि निकुंजे । [illegible] मबी
यताहृता [illegible] तिमिरपुंजे । [illegible] [illegible]
[illegible] । [illegible] कथमुनि युवंभवता वद युवती [illegible] । श्रीवल्लभ
पद कमलरेणु [illegible] हरिदास वरापिविपाके १९ [illegible] श्री [illegible]
बालक माता । प्रतिमुख मृदुल दुग्धदनं निजमुख [illegible]
सकल सुखदाता । ध्रुवं । प्रातकमलमें [illegible] वत दर्शित
न खलु [illegible] पुराखेलनीयं । ततो बालकैरखिल गोकुलजनैरिति
वदतिडिंभकिमितित्वरा विपिनचरतित्वया किमितिवदमधुर हृदय
तिप्रायशो [illegible] कुलपालकं । बीजयति दक्षिणाकरणा कमला [illegible]
त वामतोवदनमपि पालकं । मुखविगलितं पयोबिंदुचयमद्भुतप्रोक्षति
प्रवरतनरक्त दृष्टया । भवति सुखितापर निजसूनुदर्शने वदनलावण्य
पीयूषवृष्ट्या । लोकशिक्षामयो कथयति प्रियकथामत स्मितमुखमुख
दत्तनयना । [illegible] परभोजन विलंबनं भावित स्वच्छपर्यंक शयना ।
बा[illegible] [illegible] खलु गायति प्रागासदनानि रदनानि दृष्ट्वा ।
[illegible] करोतीह रोमांचति प्रतिपदं हसति रोदितपरं मनसि हृष्ट्वा । अंक
[illegible] मनुभावयति सुखनतं तांबूलमथमुखे दत्वा । उतसं-
गमा [illegible] मृदु [illegible] मुदा प्रयापयत वनावृन्दमत्रमत्वा । निजवदन

[illegible] शोभित मणिमकुट कृष्णरूप [illegible]। [illegible]
[illegible] भावसरसंगात भक्तिबन्ध [illegible] २० [illegible]
[illegible] कृष्णागतं। इतर युवतीजनित [illegible]
[illegible] सर्वोपरि [illegible]गतं। किशुगृह विस्मृत नाथमा[illegible] [illegible]
[illegible]गतं। याहि निजभवनमति भाग्यवत्यजनया। [illegible]-
हित [illegible]गतं। मानसुकूलांयतु सुभवती [illegible] कथमनु
कथारयसि [illegible] स्वागतं। अधिकसमाधिकं सपदि [illegible]मातके
[illegible] कृपयागतं। यन्तवसाकवं [illegible]लाकसं
[illegible]मागतं। तनमन [illegible] पुरुष हरे विरह
[illegible] महद्विरहागतं। परमहंवेद्यिनमनु[illegible] नहि विस्मरत्य
[illegible] गोकुलनृप हृदागतं। स्वमपि हि स्मारयतु मागतं। [illegible]
[illegible]गतं। यतदेवास्ति विज्ञापनं नाथ[illegible] तिष्ठ हृदये
सततमयनु यथागत। याहि कुरु[illegible] [illegible]-
मय परि[illegible]गतं। इति वचन [illegible] सजात
[illegible]गतं। प्रभवतु गोपिकाजन [illegible]
[illegible]गतं। देहि वल्लभचरणा [illegible] रेणुमति
विषयाग्निजनसंग दुर्गति विराधागतं। धर्मरहितं सहितं [illegible]कारकैर
[illegible]गतं २१ वंदत वल्लभवर तनुजं। भक्तिमा-
रगा [illegible] साधवरहित सकलमनुजं। सुन्दररूप विमोहित
भाव वशीकृत गोकुलनाथं। निरुपमभाव विभावित चतुरल संमनवि-
ट्ठलनाथं। हरिसम्बन्धवती समुदाय विविधसम्बन्धसहायं। अतुलवदन
तोषित तरुणीजनजीवनपति मतिमायं। मनवचोगोचर कीर्तिविज्ञा:
पित निजगाथा महिमानं। निजसेवक सेवित पदकमल युगाहित हृदया
लानं। प्रकटी कृतव्रत जीव सुखालय रसमय मंजुल रूपं। श्रीभागवत्त
विवृत बोधन निजजनमति शोधन भूपं। निज पीयूष विजित विधुमंडल
मंडित मदन सरोजं। अखिलमनोमोहन निजसुखमा विरहित मानस-
नोजं। मृगमद संभवहृज्ञतिलकशोभित सौभगनिधिभालं। कुंचितचि-
कुर समावृत वदन विनिर्जित मधुकर मालं। कृपयति समयि कदापि
हृदाकिंकरकर हरिदासे। भवतुपुरं गोपीपति चरणकमल भावंपद

बामें २२ सखी सखि गोकुलेशं । नन्दभवन भूयगा जनमुभिन दरस्यैषं ॥ ध्रु ० ॥ सन्दहास फुल्लिनास रुचिर मुखसरोजं । बदनचन्द्र किरण कांति रहितमान मनोज । बदन कमल मधुप बदति राजदलक पुंजं । वर मुक्ता तट बिलासि बहुविधि मधुगुंजं । मुरली मुख कमल मधुप चंचलतर नयनं । अनुपम निज निहितभाव सततकृतसृगनयनं । भूतत भूतमाट धिहितवं लसीपयिंदु । मुखजितपीयूष भरत चिह्न बिलसीदंदु २३ ॥

इति राग कल्पद्रुम नित्यकीर्तनान्तर्गत रागपंचम समाप्तम् ॥

अथ राग ललितप्रारम्भ ॥

राग ललित ॥ जागहु जागहु हो गोपाल । नाहिंन अति सोइयनु है प्रात परम सुचि काल । फिर फिर जात निरखि मुख छिनछिन सब गोपन के बाल । बिन बिकासे मानो कमल कोशन ते मधुकर की माल । जो तुम मोहिं पत्याउ न सूरप्रभु सुन्दर श्याम तमाल । तो उठिये आपु अवलोकिय तजि निद्रा नैनविशाल १ प्रातसमय आवत हरिराजत । इन्द्र जटित कुंडल सखि श्रवननि ताकी किरणि सूर तन लाजत । क तईरासि मोल हारग्रमें ता भूषण अवलंकृत छाजत । जलजनात सुत कंठनामधरि ताकी पंक्ति मुकुरसार राजत । पृथ्वीदुहित नात ताके कर मुखसमीप मधुरी धुनि बाजत । सूरदास प्रभु सुनहु मूढ़ हो भगतन बश अभगन ते भाजत २ आज अति शोभितहैं तनश्याम । मानहुं री जीते नँदनन्दन मनोसिज सों संग्राम । मुकुलित कचन समात मुकुट रुचि रोय करुणा दोउ नैन । श्रम सूचत गति भांति अलससब बोलत बनत न बैन । नखक्षत श्रोणित प्रस्वेद गातते चन्दनगो कछुछूटि । मदन सुभट के मार सुदेगमानो लगो कबच पटफूटि । दशन अंक सहपीक प्रकट भये सन्मुख सुभग प्रहार । सूरदास प्रभु परम शूर मैं जाने नंदकुमार ३ आये सुर तरंग रसमाते । मानहुं छिन बिश्राम निमितप्रिय श्रमित भयेहैं ताते । डगमगात मग धरत परतपग उठत न बेगि तहांते । ज्यों गजमत्त चरण

संकाल करगहि आनत ता ठांते। उर नख छन कंकण छत पाछे शोभितहैं लहिराते। मदन सुभट के बाण लागि तनु निकसिगये उहि घांते। सांचे करत बोल अपनेहैं टरत न मर्य्यादा ते। सूरश्यामकहांहगये आयहैं पशुबरे लेहि नाते ४ उनींदे कान्ह आयेरी मेरेनैनभरे रससाते। इतमन पायँधरत धरणोपर बैन बोलत अरुझाते। सबअँग शीतल श्रमजल भीजे बारम्बार झँपाते। काजर रेखरही अधरनपर काहेको श्यामलजाते। बिन गुणमाल बिराजे उरपर नखछत नाहिंछपाते। सूरदासप्रभु सांचीकहो तुम कौनत्रिया रँगराते ५ आजु श्यामजू के नैनकी बातें सुनुरी सखि मोपै बरणिन जाई। सुधा किरणबिच युग शुभ खंजन कियेपान मानोसोवत अघाई। चुंबन राग रंगीले रससे कहा कहूं सुन्दरि सुन्दरताई। मरकत बिद्रुम कमल कोणमें लेजावक की रेखबनाई। आलसतिरछे चाहत बिचहीबिच कछुक बिकाशत जब लेतजम्हाई। मन्मथ जैकरि हरिजीतन को दयोबाण भ्रुव धनुष चढाई। देखि लाललोचन बिथकितभये परम चतुरता सबबिसराई। सूरश्याम रसरीझिरहे तहँ तुम हम सहचरि कौनबडाई ६ भोरहुभये प्रकट श्यामाजू तउ रजनी मन आनति। पिय अँग रुचि लोचन पथ पूरित निशि अँधियारी मानति। अलि गण शोणि रटत निरजनि पर सुनि रसना रवदानति। पूरबछत करणो माधवसों आनँद शयन सुनावति। सूरदास सहचरि सब प्रमुदित बिरुध यतन करि भानति। दिन पुनि प्रकट बिनोद रजनीके तरनि उद्योत न मानति ७ कहां ते लायेहो इन साथ। आलस भरेरी जम्हात जेअखिनिपुनबसे तुमरेसँग मधुपगन्वले और न भावत गावत गुणगन साथ। हौं तुमसे सूधे ह्वै बूझति तुमतो उलटे होत रहत हमपर हम जो कहां भरिलीने बाथ। ब्रजपति रसिक २ तुम दोऊबेउ रसिक जिनकी ये चतुर्भुज सुनिपिय गोकुलनाथ ८ कहांते आयेहो उठिप्रात अङ्ग अङ्ग हो अरसात। सब अङ्गही अरसात नयना अरुण रगमगे दोउघूमत आवत सुधि न कछुतन चिह्नबने सबगात। लटलटोपाग मरगजीमाला पीतांबर उरपर जु बिराजत मन्दमन्द मुसकात। यहछवि निरखि निरखिके ब्रजजन हँसति परस्पर लेति बलैया फूले अङ्ग न समात९ आयेहो तुम प्रीतम प्रातही

रैनिहिं अनत बसे। रजनी सुख अनते जो हमसों बोल तिहारे नसे। अञ्जन अधर भाल जावक रंग प्यारी पग पीक धसे। अटपटे भूषण मरगजी माला आवे सिर पाग लसे। आलस वश श्यामगात चरणगति जित तित जात खसे। ब्रजपति पियललनाको बचन सुनि नयनन नेकु हँसे १० आये हो तुम श्याम कहांते भोरहि भवन हमारे। कहि गये हमसों बसे औरके सांचे बोल तिहारे। सगरीरैनि मोहिं मग जोवत गई बिरह बिथा भई भारे। ब्रजपति पिय तुम हो बहुनायक तउ मेरे नैननकेतारे ११ आयेहो मनभावन कहांतेभोरहिंनन्ददुलारे। तुमकियो रति सुखहमें दियो अतिदुख सांचेहो बोलतिहारे। तुमकियामधुपान हमें लो तिहारो ध्यान ऐसे कैसेबने प्राणप्यारे। अब तो सिधारो तहां रैन बसे हो जहां गोविन्द प्रभु पियहमारे १२ रङ्ग रसिक नन्दनन्दन रङ्गरसिक भामिनी मृगनैनी कमलनयननागर नागरी। गिरिधर कल हंस हंसनी मानो गोप तनया दोऊ सम तूल गुणन सागर नागरी। करत केलिबनविहार निरखि कोटि लज्जित मार नावत सिलि बदनचारु ललित रागरी। खगमृग पशु सुनत नाद पिवत अधर सुधास्वाद कृष्ण दास बदतबाद सुफल फागरी १३ प्यारी तेरे नयन रङ्गमगे निशिपिय संगजागे। असरा बरन शोभित आलस भरे अति रति रति रसपागे। पलकपीक भौंहें रसिरहीआली मानोकमल परागे। कृष्णदास गिरि-धरनपीयसंगहँसिहँसि सुखलागे १४ नींदनपरी रैनिसगरी कुँवरिया मेरी जुगई। याहीते झटपटात उठि आई चटपटी जीय में बहुत भई। तुम्हरो कान्ह पनिघट खेलतहै बूझहु महरि हँसिहँसि होइलई। बि-सरत नहीं नगीना चोखो जियते टरत न झलक नई। चतुर्भुज प्रभु गिरिधर चलो मेरे घर देहों दूधदधि चाहो जितई। मेरी व जीवनि मोहींको देहो तव चरणन की चेरी ह्वै होंयुरावितई १५ कहिधोंरी बनबेली कहूतें देखे नदनंदन। बूझोरी मालती कहांतें पायो तन चंद-न। कहिधों कुन्द कदम्ब बकुल चम्पक ताल तमाल। कहिधौं कमल कहां कमलापति सुन्दर नयन बिशाल। कहिधोंरी कुमुदनी कदलि कछु कहि कोविद करबीर। कहो तुलसी तुम सब जानत हो, कहँ घनश्याम शरीर। कहिधों मृगी मयाकरि हमपर कहिधों मधुप र-

माल। सूरदास प्रभुके पर्य्यंकतुम सब्ही सीतदयाल १६ नवललाल वृषभान दुलारी आवत कुञ्जभवन लेभोर। इन तनबनी सरगजी सारी पियउरमाल रही बिनुडोर। आलसबश अंशनि भुज धरि धरि आवत अति छवि पावत। मधुपमाल सौरभबश गुञ्जत सुयश तिहारे गावत। वृषभानपुर गईलाड़िली नन्द सदन गये श्याम। छीतस्वामि गिरिधरन रंगीले बिलसे चारोंयाम १७मेरे तुमआये भोरभये पियरैनि कहाँ गँवाई। कौन नारिके वशपरे मोहन सांचीकहो किन आनिपरी चतुराई। उरहिंहार बिनुडोर बिराजत शिथिल अङ्ग सब नखक्षत देत दिखाई। छीतस्वामि गिरिधर कहो मोसों रसिक शिरोमणि आवके पाग रंगाई १८राजतदोउ अति रङ्गभरे। सहज प्रीति विपरीति निशा सब आलस सेजपरे। अति रणवीर परस्पर दोऊ नेकहु कोउ न मुरे। अङ्ग अङ्ग अपने अस्त्रनिसों रति संग्रामलरे। सुभट सुरक्षि रहे सेजखेत पर इतउत कोउ न डरे। सूरश्याम श्यामारति रणते यक पग पल न टरे १९करि शृँगार दोऊ अरसाने। प्रथमबोल तमचुर सुनि हरषे पुनि पौढ़े दोऊ अरसाने। रतिरन जुझियाम त्रियलोके सेजपरे उठि पुनि मुसक्याने। मानोंशूर खेतसम लरिकै गिरेउठत फिरिबिरत लजाने२० बोलतमचुर चाख्यो यामको गजरमारेव पौनभयो शीतल तमितगासितानई। प्राची अरुणानी भान किरणा उजारीनभछिपे उडगण चन्द्रमा मलीनता लई। मुकुलें कमलनबछवन्धन बिछोई ग्वाल चरचली गाइ हिगपीतकरकोदई। सूरदास राधिकासरसबाणीबोलिकहैंजागो प्राण प्यारेजू सवारेकी समय भई२१ छोटी छोटी गोड़ियां अंगुरियां छोटी छबीली नखज्योति मोती मानो कंज दलनि पर। ललित आंगन खेलैं ठुमुक ठुमुक डोलैं झुनुनु झुनुनु बाजैं पैंजनी मृदु मुखर। किंकिनी कलित कटि हाटक रतनजड़ी मृदुकर कमलनि पहुंचियों रुचिरवर। पियरी पिछौरी झीनी औरन उपमाभीनी बाल दामिनीको मानो ओढ़े ठाढ़ावारिधर। उरबिच नख कंठकठुला झँडूलेबार बेनी लटकन मसिबुंदा मुनि मनहर। अंजन रंजित नयन चितवनि चित चोरै मुख शोभा परवारों अमित असमसर। चुटुकी बजावति नचावति नंद घरनि बाल केलि गावत मल्हावति प्रेमसों भर। किलकि किलकिहँसे दुहुं दुखदंतु-

लीलामैं सूरदासमनलोभैं तृतीयचनकर २२ आईहो गजगामिनि गजरा-
तस्यामसौं रंग भरिकै । चन्द्रउदय मुखदेखतहीरी कर दर्पण नितिबिम्ब
निहारि यों पीकलीक नयनछवि परिकै । पिकुरेअलक सुथरेमुख
ऊपरसनों सुधा पीवति अलि माल आनन्द हरिकै । सूरप्रभु रसिक-
राइरसबशकीन्हें बनाइ सुखदीन्हों मनअघाइ नवलानव रीझ मन ह-
रिकै २३ नवल निकुंजनवल रसदोऊ राजित रंगहि भीने । कुसुमन सेज
भोर उठि आवत आलसयुत अंशनि भुजदीन्हे । अरुण नयन नखरेख
बिराजत श्रमजलबसन पलटि तनु लीन्हे । सूरप्रभु पियाप्यारीको मुख-
निरखत सखिन सहित ललिता तृणकीन्हे २४ दोऊ बनते व्रजधाम गये।
रतिसंग्राम जीतिपिय प्यारी भूषण सजननये । वे व्रजगये आपु अपने
गृह चितते कोऊन टारत । मनसा बाचा कर्मना ये दोऊ एको पलन
बिसारत । जैसे मीननीर नहिं त्यागत खंडित हृद पूरन । सूरश्याम श्या-
मादोउ देखौ इत उत कोउ न अपूरन २५ रासरसिक श्रमित भई व्रज-
बाल । निशिसुखदै यमुनाजल लै गये भोरभयो तिहिकाल । मन का-
मना भये परिपूरण रही न एकोसाध । षोडश सहस नारिसंग मोहन
कीन्हें सुखआगाध । यमुनाजल बिहरत नंदनन्दन संग मिले सुकुमारि।
सूरधन्य धरणी वृन्दावन रवितनया सुखकारि २६ राधे छिरकत छैल
छबीली । कुचकुंकुम कंचुकि बंद टूटे लटकि रही लटगीली । बंदनभरता
टंक गंडपर रतन जटित मनिलीली । गतिगयंद मृगराज सुकटिपर शोभि-
त किंकिनि ढीली । मच्योखेल यमुना जल अंतर प्रेम मुदित रसभी-
ली । नन्दसुवन भुजग्रीव बिराजत भाग सुहाग भरीली । बरषत सुमन
देवगण हरषित दुन्दुभि सरस बजीली । सूरश्याम श्यामा रसक्रीड़त
यमुना तरंग थकीली २७ प्यारी चितैरही मुख पियको । अंजन अधर
कपोलन बंदन लाग्यो काहू तियको । तुरत उठी दर्पण कर लीन्हें देखौ
बदन सुधारौ । अपनो मुख उठि प्रात देखिकै तब तुम अनत सिधारौ ।
काजर बन्दन अधर कपोलन सकुचे देखि कन्हाई । सूरश्याम नागरि
मुख जोवत बचन कहेउ नहिं जाई २८ क्यों मोहन दर्पण नहिं देखो।
क्यों धरणी पग नखनकरोवत क्योंमोतन नहिंपेखो । क्यांठाढ़े बैठत क्यों
नाहीं कहापरी हम चूक । पीतांबर गहिकहेउबैठियेरहेकहा ह्वैमूक ।

उघरि गयौ उरते उपरैना नख छतबिन गुनमाल। सुरदेख लटपटी पागपर जावक की कजिलाल २९ भोरही प्रयामा प्रयाम खरे। जलद नवीन मिली मनोदामिनि बरषि निशान झरे। शिथिल बसन तनु-नील पीतद्युति आलस युत पहिरे। कछुक कुंद परति श्रमकनिका बादर बरसा करे। भूषण बिबिध भांति मिंडवारी रतिरस उमँगि भरे। काजर अधर तमोर नयनरंग अंग अंग झीलपरे। प्रेम प्रवाह चलीमनो सरिता टूटी मालगरे। शोभा अमित बिलोकि सूरप्रभु क्यों सुखजात तरे ३० ऐस्यहि ऐसे रैनि बिहानी। चन्द्रमलीन चिरैया बोली सुनी काककी बानी। बेलबँधे अनतहि काहूके मनकी आश भुलानी। कपटी कुटिल कूर कहजानें प्रयामनाम जियआनी। कोकिल प्रयाम प्रयाम अलिदेखो प्रयामरङ्गहै पानी। श्यामजलद अहि प्रयाम कहावत सूरप्रयाम सों बानी ३१ मैं जानी जहां रति मानी। तुम आयेहो मेरे ललना जब चिरियां चुचुहानी। मुखकी बातकहा कहौं ठानी बात नहीं पहिचानी। इतेपर अँखियां रसमसानी अरु पगिया लटपटानी। भालरंग बनानी जावक अधर अँजन ठकानी। बिनगुन बनी माला सब अँगअँग उलटिनिशानी। सूरदास प्रभु गुणनिधानी अन्तरगतिकी जानी। धनिजिय तुमको जो सुखदानी सँगजागत रैनबिहानी ३२ ऐसेहि सुखसब रैन बिहानी। भोर भयो निजधाम चले दोउ मनमन नारि सिहानी। प्यारीगई वृषभान पुरातन श्यामजात नंदधाम। प्रमुदा म-हल द्वारही ठाढ़ी उनदेखी वहबाम। प्रातचले बनते ब्रजआये मनमन करति बिचार। सुनहुं सूर सकुचत ठठुकत ता गृहगये नन्दकुमार ३३ बनतन ते आये अति भोर। रातिरहे कहुँ गायन घेरत आयेहो ज्यों चोर। अङ्ग अङ्ग उलटे आभूषण बनहूं में तुम पावत। बड़भागी तुम ते नाहिंकोई कृपा करत जहँ आवत। औचक आयगये घर मेरे दुर्लभ दर्शन दीन्हो। सूरप्रयाम निशि हो कहुँ जागे पावति अङ्ग अङ्ग ची-न्हो ३४ आजु अतिरैनि उनींदेलाल। तुम पौढ़ो मैं चरण पलोटों जिय जिनि जानो ख्याल। सुमन सुगन्ध सेजहै डासी देखति अङ्ग बेहाल। मेरेकहे न्हाउ कछु भोजन करो न सदन गोपाल। निशिश्रम भयो पीर मोहिं आवति सुनति परस्पर बाल। सूरप्रयाम सुनि बचन कपटप्रिय

भरिलीन्हों अँकमाल ३५ राधाहरिके गर्वभरी । मोरवमुकुटकी आश
जब जान्यो बैठीरही खरी । उतव्रजनारि सँग जुरिके वे हँसति करी
परिहास । चलो न जाय देखियेरी या राधाको उपहास । कैसो कर
शृंगार कौनविधि अङ्गदशा भईकैसी । सूरश्याम सँग निशि रसकी
निधरक ह्वैहै वैसी ३६ श्रीकृष्ण कृपाल कृपानिधि दीनबंधु दयाल । दा
मोदर बनवारी मोहन गोपीनाथ गोपाल । राधारमण बिहारी नटव
सुन्दर यशुमति बाल । माखनचोर गिरिधर मनहारी सुखकारी नँद
लाल । गोचारन गोविंद गोपपति जियभावन मंजुलमराल । छीतस्वा
मीके प्रभु प्रकट कलिमें बल्लभलाल ३७ हरिसों तू बैठी हैकपोलकर
मान नाहिंन नयननि नीरुढारति उससति छतियां करत थरथर । दृ
गनि पोंछिनाथ मनाय लईलैलै पगपरे निकुंजघर । तोरि गडुमा
गोविंदको प्रभु जानि रतिपतिको सुखद मन ३८ परिहरि कुमारी सारी
पियापिय मुख करषत । देखत निजरूप नयनन भरिभरि आँगआँग
रसत अरु परखत । बोलत तुतरात लागत सुहावन सींचे अजजन अमृ
तरषत । गोविंद [illegible] हरषत
३९ प्रातहि आयेहो नन्दलाल । जावक भाल अधर मसिअंजन पीक
लगाये गाल । लटपटि पाग उनींदे नयनन उरबिन मरगजी माल । छी
तस्वामि गिरिधरन बनीछबि चलत मन्दगति चाल ४० मृदुकपोलनोल
युगुल कुंडलाकृत शोभं । हीरककृत चिबुक भूषण भ्रिरचित विलोभं ।
कंठशोभि मुक्तामणि भूषणो द्योतग्रीवं । भाव भरतया वशीकृत युवती
जनजीवं । कटितट गतपीत वसन शोभित निजरूपं । पदनख सुखमा
विलास सुरनर मुनिभूपं । विज्ञापन मेतदेव मानय मम वचनं । श्रीवल्लभ
चरण कमल कृपयाकृत रसनं ४१ प्रिय सखि विरह विपिन विचरण
विरहि मनुज शरणं । गोकुल पतिपद भावना मतिमग्रिल शोकहरणं ॥
ध्रुवं ॥ विविध विटपयुत लतावृन्द संदर्शित जनितानंदः । शीतलीकृत नि
खिल शरीर पवन विचलित नव कुसुम मकरन्द । सुंदर मुदित मानस
घननाद विलासित श्रवणं । अद्भुत पक्षितयुग दर्शनकृत हृदयदुःख वि
नशं । फलित रसाल शीलशाखा गतपिक कूजित कलरवं । स्थलकमला
न्वित शोभायमित युवतिजन सरसमुखं । कीरित रसालोक चिन्तितहरि

रूप नाम गुणालं । संवर्द्धित हृदया हितराग गानकीर्त रसितनालं । गगन
स्थित मर्दिद घनघन वृन्द विलोकन कृत सुखदानं । कम्पित शाखाशत
मृदुपल्लव व्याहत विहित सम्मानं । विविधस्थल विरचित लीला विन्या-
स मधुमर निपुणा । प्रिय सन्निधि सुखानिचय विचारणा परमानम
रूपणा । ईदृश दशायुतं हरिदासं दर्शय गहन विहारं । हृदय निहितहरि
वल्लभ वरपद नख विद्युति मणिहारं ४२ मानिनिधि मासहसे किमिति
वियोगं कुसहरिणा सम्भोगं । वारयतदवर पर्यूषणा विषम दैतो भव
रोगं ॥ ध्रुवं ॥ निज हस्ताव चितानि मृदुलतर कुसुम रचित शयनेन ।
प्रतिपद मवलोकित पदविकृत चपल चकित नयनेन । भावित शयन
शयित भवती सन्दर्शन जनित सुखेन । कपयिष्यति दयितेतितोषभ
सन्तति हसितमुखेन । पुनरतिताल वृन्तकृतपवनविशेष वशित हृदयेन ।
श्रम बिंदुनि कलयता वदन कमल मनसा सदयेन । कुटलालक ततिन-
यन समागति रतिजागर भीतेन । मारसरैरति परुषतरै विरहविरह द-
शान तेन । मुख कमला हितगन्ध लोभ गुणाभर गणित यासेन । स्तन
तट लुलित हीरशोभा भरत ततस्मृत रासेन । सम्वाहित सरसिज सुंदर
भावितपद कमल युगेन । सकरुणा हृदय कमल सम्पादित भाव वदेक
युगेन । श्रीवल्लभ पदकमल विमलमति हरिदासे सदयेन । मनसा सखि
भावय निज भावंभाव वशो वियेन ४३ हरिमनुसर सरसिज नयने ।
कुरुशयनं हरिणासह सुन्दरि रचित कुसुमशयने ॥ ध्रुवं ॥ विरहभाव
समुदित हरितताप निवारित शीतगुणां । प्रत्यव टाटागति निरुपम सु-
खमा परिभावन निपुणां । चिरबम लोकित पद कमलाकृति तरु
पल्लव निचयं । चिन्तित चरणा चमत्कृति चित्रित दृष्टि रचितवि-
लयं । भाव वशाशय विहित विनोद विशेष निधान विचारं । भावति
रुचिरावयव विलोकन विहित नयन संचारं । भावति भवतीपरि
रम्भणा कृत सम्भ्रम जनित सुखं । मधुराधर पीयूष प्राशा सम्पुटित
सलोल मुखं । भावति मामा पतयन करयुग धृतपद कमल वरं । नख-
विधु करणा कौमुदी मोदविनोद विशेषपरं । अनुसंहित निजविरह द-
शासमुदितमानस संतापं । अन्वशयित तनुदाह विनाशक शीतलकमल
कलापं । शिशिरी शायविधान विहत निजजन्म सफल विनिवासं ।

श्रीवल्लभ वर चरण कमल परिमल सोभित हरिदासं ५५ मानिनि तवपद पतिताहं । अंगीकुरु गोकुल पति संगं येनसर्पादि भूषिता हरिताहं ॥ ध्रुवं ॥ नानय विनय वचन मति दानंतव मेलन करणोसुहिताहं नैव मुचित मतिरीयवती भवति कृपयादासी विहिताहँ । अवलोकयतिपथंतव सुन्दरिमान बारणे सखि निहिताहं । इति जानीहि चरण परि चरण निरंतर करण दोयरहिताहं । भवती रतिसंपादनकृतते निरुपधिगोकुलपतिरचिताहं । यदिनायासि तथैव भवासि तदानिनेकमध्य लिखिताहं । त्यजसि न मानमहो कथमपि तदितर युवतिभिरती वर्जिताहं । यदि न भवति ममविहित मिदं सखि किमु कथशामि मध्य वनिताहं । वदनामृतकर किरणचकोरं दर्शय सुखितं भूषिठिताहं । इतर सखीजन माहं कृति बहु वचन रचन शोचन मृदिताहं । जीवनमपि मम दुर्लभ मधुनायदिनिज संग भंग गमिताहं । कथमु दर्शयिष्यामि मुखंपुनरपि हरणा बहुधालपिताहं । इति सहचरिवचनानि हृदाकरार्य अतिवदति सखिसखि चलिताहं । श्रीवल्लभवर चरण रेणु हरिदास मदीय कृपा वर्णिताहं ५५ विरहे सुन्दरवर्षासमये । बंद जीवानि कथंमम बोधे रति शाइते रिह सखि विपरितेसदये । वर्षति जलदे विरहानलदे गोवर्द्धन शिखरे । पर पुष्टे शतद्युकूजति वदति केकि मुखरे । लमति भूमिरति हरितापवन विचलिते तृणनिचये । इन्द्रगोप केतव निजमल विलसदनु रागमये । विविधशिलासु यद्ध निज रूप युतासु विराजितनाथे । निजमुख दर्शन जनितानन्द विलास गीत गुणगाथे । नव घनमध्य शोभिता सुमुखि दृश्यतेसितवबक माला । मेघनाथ मनु गर्जितमुरली क्षरति रससुरशाला । उदयतिविद्या दतीवचंचला चालयतीहजनं । असितमेघगणविरचित तमसा बहुभीषयति वनं । रंजित रुचिर कुसुंभवसन परिधान विराजित रूपे । गायति मेघ समागम राग निरुपधि गोकुलभूपे । इति विज्ञापित मतिशय करुणो विरहित हरिदासेन । श्रीवल्लभ पद कमल पराग धारिणा विरचित बासेन ५६ सततं विचरति वृन्दाविपिने । गोकुलपति रति गोपाल बाल केरारूढे पिदिने । निजवदनेन वदतिनामानि गवामति रति वचनेन । मनसि मोदते विपुल रसागत सरस कुञ्जर वनेन।

निर्मलनीरधौत शिखरोपरि रुचिरशिला सुपविश्य । मुंक्ष्व भवनमगागत सन्नं निज गोपे पुनर्निविश्य । प्रत्यंगुलिदल बिबिध कलानि दधासि रुचिर हस्ते । मध्यमोदन तनुतेदृष्टं जननी छन्न शास्ते । बिपासि बिमल पानीयं यमुना या मञ्जलिबन्धेन । प्रीतीबिंबपश्यतिसुचिरं निजलोचन सबंधेन । मृदुबादयसि बेणुमतिमधुरं चलतिधेनुसंगे । हरसितापमथ काननदेशे बिरचित हृताभंगे । कनक चंपकगतफेन समूहं पिदधितगोज मथितं । शिशिरयती हबाल कुलहृदयं बहु बिरहा व्यथितं । श्रीब-ल्लभपद कमलपरागरागरञ्जितहृदयं । हरिदासे सुखितं भावैरपि कुरु दुर्जन बिलयं ४७ चरणांघ्रेहिसरमहृदये । व्यथते शिला त्वग मूलैरति पदमितिचिंतैक मये । नहिं समुचित मिहधरणी बिचरणं सुन्दरसति कमले । उद्भटभाव निरन्तर निर्गत नयननीर बिमले । श्रीरपि कुरुते सपदि सहायं यद्यपि बन चलने । तदपि बाधते मामक हृदयं चरणा

। इह

यदिगन्तुं क्षणा सुखमहसे करवै शापदिकरे । ब्रज संबंधि गवामनुरागिषु गोपीजनवृन्दे । धामयच्चेतसिचिन्तयसे लौकिकमतिमंदे । किमितबि भेयतामसहष्टे धातवितुं चरणं । फणिफणाधृतपवपद्मकिमद्भुतमेवत वामलकरणां । कर्द्दम जनितदुःखमर्दयसितपद जनितानन्देन । भूमेरिह बियोगे बिहितं किमुमयि गोबिंदेन । श्रीबल्लभपद कमल सदागति सं-गत गन्ध युतेन । योजय निजचरणं करुणामय दासहृदय हृदयेन४८ मित्र मायाहि करवै पयोसंयवं मिह भोजनीयंत्वया । पत्र बिरचित रुचिर पात्र निहितं हरेनुबिधेया समोपरिदया । शीतलं सयति ननु भाव सुन्दर हरे सुताबने यत्न बिहितं मया । किमितिह बिलम्बसे तिष्ठमसन्निधौ गोपसुतमण्डली बिहित बिनया । दर्शनानन्द गो-बिन्दसम्प्रति यथाभवति दुःखालिरचरचितबिलया । दृष्टतरनील म-णिसञ्जु मुख लसन मधुदरस्य करण परम शोभैक निचया । तिष्ठ कथ यामिपरमद्भुता मधकथा मयिकिमपि मधुबचन मुदितमथ चैकया । मामहह कानने करुणया योजय प्रणतपति गोकुलाधीशपद सेवया । आयामिकिमपि कथयामि तवकर्णयो रति शयित गुप्त मथलोक बिरचित भया । मंजुकुंजेरचय संकेत मद्भुतं शीघ्र मह मायामि च-

रणयति कृतरया । विजयिष्यामि परमति रमणा संभ्रमे दर्शनीयोऽ
भक्त कृपया । योजनीयोऽस्मिमनु प्रापदि भवता कदाकार्य करणो
सिकजन नाथसहितया । दर्शयिष्यति कदामत प्रभु स्वामिनी सह
मदनं पिहित विपरीत मिच्छया । मदभि नन्दन मयो दत्त मनसा क
दाकरयिष्यति सुरत संग्राम कृतजया । देहिनिज दास्यमिह वल्लभा
धीशपद कमलसेवन विहित भक्तिजफलाशया । सतत महितेपि हरि
दासके करुणा तव विलस विपिने सरस जित परीतयया ४९ जहाँ
शृणुमायाहिवनं किमुचित मिति गमनं । चारयामि विहिगोपै रभि
तो व्रजनृपधेनु घनं । ध्रुवं । करवै विविध जमन भयाभिरलंकरणं नव
देहे । रहसि विराजित विपुल विताने बसमासनकगेहे । अतिसुगन्ध सु
वर्त्तनमतिमाथ शुद्ध गन्धतैलं । स्नानमयो कुरुनीरैरुष्णौ रुचि कुरुचैलं ।
कच्छपदं परिधेहि तिलकमपि विपुल भाले । तनु मुष्णीयं शिरसि
विधेयं ग्रथितालकमाले । नूपुर युगयति चपलं पदयो रुतभुजयो रपि
धेयं । कंकण चयमथ मध्य संगदं गुच्छ महित मपिदेयं । हृदय मध्य
मणिमुक्ता जटितं पदकंनाथ विधेयं । मुक्ताकनक मालिका युगलं
जयजग दखिल भजेयं । उपविश पर्यंकेमृदुरम्ये कुरु सुन्दर शयनं । ननु
वैदर कृतसंगामर्दनं शिशिरीकुरुनयनं । इतिसरसं वचनंराधाया रति
रसभावयुतं । शृणु वल्लभ वरचरण कमल तल गत हरिदास नुतं ५०
हरि रिह दिवसे वसति वने । गोचारणमपि कुरुते गोपै रभितो विटप
घने । ध्रुवं । नैव रोचते किमपिसमुखि मम हरि विरहित सदने । वि
रह वह्निरपि तनतेदाहं हृदये नृपसदने । द्रष्टु मही कामयते नयनं गोप
नय वदनं । अतिकुल संदशाल कर्तात सहितं मुरध दुग्ध रदनं । नासा
सतत विहित दुरास देहकमल गन्धं । आदातुं तस्यानु तनुते सैवहृदयं
बन्धं । रसना कुरुतेसतत मनोरथ मधुररसं पातुं । वागपि रसमनु रा
गवती विदधाति मनोगातुं ५१ ॥

इति रागकल्पद्रुमनित्यकीर्त्तनान्तर्गतरागललितसमाप्तम् ॥

अथ राग षट् प्रारम्भ ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥

बनेआज नन्दलाल सखि प्रेममादक पिये संग ललना लिये यमुन तीरे । फूलीकेसार कमल मालती सघन मन्दमन्द सुगन्ध शीतल समीरे । नौतनशीश बरशतन कनकमण्डित बसन परमसुन्दर चरणपरसि माला । मधुर मृदुहास परकास दशनावली छविभरे इतरात दृगविशाला । किये चन्दनखौर बदनारबिन्द मकरन्दलुब्ध भ्रमर कुटिल अलकैं । हलत कुण्डल लटकिचलत जब श्यामघन मणिनकीकांति गलगण्ड झलकैं । एक चंपकतनी कण्ठारसमातीकरे राग पञ्चमसंग लागिसोहे । एक हरिमुख निरखि थरिरहीं ध्यानमन चित्रसम भई हरि हियोमोहे । एकदामिनिसी भुजमेलि ग्रीवा बातकहन मिसआय मुखमुखसों लायो । एक नवकुञ्ज में खैंचिरही कटिबन्ध आपनोलाल चितचोर पायो । एकश्यामहिँ हेरि सुभग लोचन भरि बिहँसि बोली भलेकान्ह कपटी । एक सोंधेंभरी छुटेबार नखरी चन्दमुखी बिनकंचुकीरीझि लपटी । एकश्यामा कनक कुञ्जबदनी प्रेम मकरन्द भरी हरिनिरखि बिकसी । ताकेरस लुभिरह्यो लपटि साँवरो भँवर प्राणप्यारी भुजनबीचिजुलसी । रसिकमणि रङ्गभरेबिहरे वृंदाबिपिन संग सखिमण्डली प्रेमपागी । कहैभगवानहित रामराय प्रभु सुमिरि सोइ जानेजाहि लगनलागी १ आजनंदलाल मुखचन्द नयनन निरखिपरम मंगलभयो भवनमेरे । कोटिकन्दर्प लावण्य एकत्रकरि वारौं तबहीं जबहीं नेकहेरे । सकलसुखसदन हरषितबदन गोपवर प्रबलदल मदन जनों संग घेरे । कहोकोऊ कैसेहूनाहिँ सुधिबुधि रहे गदाधर मिश्रगिरिधरनटेरे २ नवनब्रजराजको लालठाढोसखि ललितसंकेतबट निकट सोहे । देखुरीदेख अनिमेष या वेषको मुकुटकी लटक त्रिभुवनमोहे । स्वेदकणझलककछु झुकीसीपलकमानो प्रेमकीललकरसरासकीयें ।

परमवल्लभाराधा वृषभाननृपनन्दनीराधिकाश्यामपरवाहुदीये। सरिताजलि भूमिरहि नवलता कुसुमपुंज शुभ कुंजकोविकाहि न जाई। नंदनन्द चरणापर वारिल जोनियह मुनिनके मननमिलि पाँतिलाई। परमअ-द्भुतरूप सकलगुण भूप यहमदनमोहन बिना कछु न भावे। सन्यहरि-भक्तजिनकी कृपातेमनकृष्णगुण गदाधरमिश्रगावे ३ पाछिलीराति परछाहीं पालनकी मेरोलालजी रंगभीनो डोलतद्रुमद्रुम तरनि। बनहिं देखनको लागि अद्भुतमने जोतकी कोतसो निकसिरहोसबधरनि।कृष्ण के दरश को अंकिपरगजी भईरीमगनलबगाई हाँ मज्जन करनि। नूपुर धुनि सुनत चकितह्वै थकिरही परिगयो दृष्टिगोपाल सांवरेवरनि। उरकसी पागपर मोर चन्द्रिका बनी कमलदल नयन भृकुटिक छवि मनहरन। थाईसब गहन को रसवचन कहनको आवति छविनसी अति अधराशों धरधरन। रोमरोम रसि रहेउ मेरोमन हरिलियो नाहिं बि-सरत बांकी भृकुटिमें भुजभरन। कहैं भगवान हितरामराय प्रभुसों मिली लोक लज्जयागई भईहों परवश परन ४ मुकुटमाथेधरे खोरच-न्दन करे मालमुक्ता गरे कृष्ण हेरे। पीतपट कटिकसे कानकुंडल लसे निरखिनिखा उरवसे प्राणमेरे। मुरलिका मोहनी करकमल सोहनी ले कनकदोहनी खरिकानेरे। लाललोचनबने ललित रसमेंसने मैनसे अन-गने रमाजतेरे। किंकणी काछनीदेत शोभाघनी देखि कौस्तुभ मणी सुर छकेरे। प्रभु छबीलो रँगीलो रसीलो आली लगनकी मगनमें ब-सेरे ५ कृष्णकथा बिनु कृष्णनाम बिनु कृष्णभक्ति बिनु दिवस जात। ते प्राणी काहेको जीवत नहिं मुखबदत कृष्णकी बात। श्रवणकथा न श्यामसुन्दरकी रामकृष्ण रसना नस्फुरात। मानुषजन्म कहां पावेगो ध्यानधरे घनश्याम गात। जो यह लोक परम सुखराखत अरु परलोक करत प्रतिपाल। परमानन्द दासको ठाकुर अति गँभीर दीनानाथ द-याल ६ आज उठिभोर नवकुंज कानन सखी ठाढ़ी भई राधिका रंग भीनी। विलासमुख चन्दसङ्ग नवरङ्गप्रिय श्यामघन कामको सेनसब जीतिलीनी। सुभग बिकसित बदन नयन अति रसमसे मारिमुख हँसी कछु सकुच कीनी। श्रीविट्ठल गिरिधरन सँग नागरी जोरिसबरीति आ-नन्ददीनी ७ हैं बलीरीजाऊँ जहां मोहनमुरली मधुर मधुर धुनिबाजै

री। यमुना पुलिन सुभग वृन्दावन मदनगोपाल विराजैरी। मञ्जलनील घन वरण श्यामतन दशन दामिनी छविछाजैरी। मोरमुकुटकी शोभा निरखत इन्द्रधनुष द्युति लाजैरी। कुण्डल करण कंठ कौस्तुभमणि आनँदसुखहि प्रकासैरी। चरणाधरन कहत न बनिआवै कौतुक कुञ्ज बिलासैरी। घूंघरवारे अलकनि झलकै चन्दनतिलक ललाटैरी। अमल कमलदल मंजुलनयना जोहतहै मम बाटैरी। हरिठाढ़ेहैं कलपतरवर तरे मोहिँ देखि हँसि देहैंरी। अति ललचाय लटक सों चलैं जब सुधिबुधि सब हरिलैहैंरी। जाकोमन मिलिरहेउ कृष्णसों ताकी अकथ कहानीरी। कहैं भगवान हित रामराय प्रभु सुमिरन सांझ समानीरी ८ हों मिलीरी तहां जहां खोरि सांकरी सुन्दरश्याम सलोनारी। इतते हों जात उतते वे आवत ओढ़ेपीत उढ़ोनारी। हँसि मुसुकाय लटकि जबबोले पूछतहैं सधुको नारी। हौंसकुची मोपै उतरु न आयो इन ठग ठगी ढ़ढोनारी। चित्र लिखीसी रहगइ तासरा मनो पढ़िडारोटोनारी। घूंघटच्यापि चिबुक चितवनिमें भूलिगई सखिभोनारी। मातपितासुत बंधु खिजोरी मेरोमन मोह्यो मोहनारी। वंशीधर गिरिधर परवारों अब कछु और न होनारी ९ अरी मोरमुकुट कुण्डल झलकन अलकन उर सनमेरो मन जुहरो। मुरलीधुनि श्रवणन सुनि सजनी काम धाम सबको बिसरो। बावरे लोग सारभटको घरको नहिँ जानत पैंडपरेउ। भावेसो होय हरिसंग न छांड़ों यह व्रतजिय निश्चय जुधरेउ। काहेको लोगलाज आवे सखि काहूसों काहूको काजसरो। चन्द्र सखी सोई बड़भागिन बालकृष्ण प्रभु बारोबरो १० अरी आजसखी बनते बने आवत गावत श्यामसखा गनमें। गति गुञ्जत अमित गयन्दहू को लखि कौनरहे अपने मनमें। पगिया शिरलाल रही झुकभालसो पीत झँगा झलकै तनमें। ये उपाये उपजी जियमें मानो चपला लपटी श्याम घन में। घुंघरारी लटें लटकैं मुखऊपर राजतहैं रज गोधनमें। चित्रलिखीसी रही गइ ताछिन वृन्दावन प्रभु वृन्दावनमें ११ कान्हरकारो नन्ददुलारो सो नैननिको तारोरी। प्राणपियारो जग उजियारो मोहनमीत हमारोरी। दृगमें राजत हियमें छाजत एकछिना नहिँ न्यारोरी। मुरलीटेर सुनावत निशिदिन रूप अनूपम वारोरी। चरण कमल मकरंद

लुब्ध ह्वैमन मधुकर गुञ्जारोरी। रसरँग केलि छबीलेप्रभुसँग हितसे सदा बिहारोरी १२ आज ब्रजभूमि नवरङ्ग शोभाबनी रासखेलत नवसङ्ग प्यारी। माधुरी रूपरस केलि मोहावनी चन्द्रिका मोरछविकेन्यारी। हलत कुण्डल चिलक पीतपट अति सरस करकमल फूललीबिहारी। लगनमें मगनमोहन निरखिनेह सोरङ्ग रसमूल राधेबिहारी। सखा निर्तत घनी बनिठनी हितमनी बजत मुरली मधुरसुर सुखारी। युवतिके यूथमें प्रेमपूरन पगे युगुल जलप्रान जीवन अधारी। गगनसुरगगन देखनछयो ये अली शिव बिरंचि सबन सुधिबुधि बिसारी। छवि छबीली छबीले छकी होइ जब युवतिन आजु सर्बस्वहारी १३ निरखि त्रिभुवन धनी प्रेमपूरन सनी माधुरीरूप रसमें लुभानी। छवि छकी सांवरी अब कितै जाउँरी लगन मनमोहनी सुधि भुलानी। लागसी चित्त लुभ्यो नेह हियमें खुभ्यो लाज कुलकानि जियते छुड़ानी। अङ्ग सब रङ्ग हरिके रँगी ह्वै अँगी कोऊ कहो बावरी कोउसयानी। देखिसुन्दर बरनमन हरन सुखकरन नागरी नवलहित बनिके ठानी। रसिकजीवन छबीले प्रभु प्राणधनचरण बेशरण सुखमें समानी १४ जयति गोकुलानन्द गोविन्द गोपालिका तालिका तालगति निर्तकारी। हेमसणि मण्डलीमध्य घन नीलमणि मोहनी नन्दमन्दिर बिहारी। जयति बाल गोपाल सुबिशाल लोचन युगुल गरे रुचिर ब्याघ्र नखमणि मुरारी। सुगट कटि किंकिणी नाद उन्माद पद नूपुरा रुणित गति निर्तधारी। जयति लल्लाट पटघटित तिलक कस्तूरिका कुटिल अलकावली मुख बिकाशी। दच्छ दच्छिन हस्त यूपपर पायस बामकर नवनीत ब्रह्मराशी। जयति पूतना प्राणहत शकट उच्चाटकरि असुर तृणावर्त्त धरि मरणि आने। नीलगिरि श्रीजगन्नाथ शिशुरूप कृत को नमति दास माधव बखाने १५ सरस रसरङ्ग भीने नवलहरि रसिकबर प्रातःही जात इतगात सोहे। परम प्रीतिके रंग हिय हुलसिजागे रैनचैन चित्तनिरखि द्युति मनमोहे। मन्दमृदुल हँसनि छबि लसनि मुखमाधुरी ललितकच कुटिल दृगबङ्क भोहे। मदन गोपाल अवलोकि धीरज धरै कहोरी सजनी ऐसी बालकोहे। चकित चितवत चित्तकरत चंचल चपनि बिसरि गति बिबश बावरी होहे। शोभाको सदन सुख बदनकी ज्योतिलखि

होतिहै कोटि रविशशि लजोहे। लपटि उदगार उरहार कंचन बसन प्रेम शिंगार तनमन लगोहे। कोवलराम वृन्दावन जीवनि छकी सब सखी दृगनिसों रूपओहे १६ शरदरजनी रुचिर शशि सुखद चांदनी मुदित मोहन रसिक रासनाचे। लेतगति लटकि भ्रूमटकि मदन माद सों नवल नटवर ललित सुनप नाचे। रीझि भीजो कुंवरिलाल संग तालक्रम उच्चरे मधुरसुर सरस सांचे। उरपति लइहुरमई नईनई भांतिसो संगीतके रंगराचे। मनमें हितचन्द्र थकित खगमृग विवश बांसुरी धुनि सुनत मुनिन वाचे। कोवलराम वृन्दावन जीवन जन युगुलबर सदा विलसत दृगनि दरशायाचे १७॥ रागघट। चर्चरी॥ राधिकारवन गिरिधरन गोपीनाथ मदनमोहन कृष्ण नटवर विहारी। रासलीला रसिकव्रज युवति प्राणपति सकल दुखहरन गो गणनचारी। सुख करन जगतरन नन्द नन्दन नवल गोपपति नारि वल्लभ मुरारी। छीतस्वामी हरिसकल उद्धारहित प्रकट बल्लभ सदन दनुजहारी १८॥ रागघट॥ आज दधिमथन करे भामिनी प्रेमथीहरख आनन्द भरी गीतगाये। रईमाहें करी रज्जु वेहु करधरी धमरजो शबदते अति सुहाये। प्रेम पुलकित तनी कृष्णरस भासनी किंकिनीनाते अतिघाघ थाये। उर जना भारथी कटिते तचका करे सुन्दरी शोभाते कही न जाये। तेसमय कान्ह जी आवीने आंच का पंटोघर माहेन बनत खाये। युवति येजाणयूको धमीगयु औरं डेमेले मंथासते चालीधाये। सुन्दरी आवतीजुई श्रीकृष्णजी तजीने माखन ते सशुप लाये। नर सैयां स्वामी थी गोपी विनती करे मांजसी मांज सो चित्त चुराये १९॥

इति रागकल्पद्रुमनित्यकीर्तनान्तर्गत रागघटसमाप्त॥

अथ रागदेवगन्धार प्रारम्भ ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥

आजुअति राजत दम्पति भोर। सुरतरंगके रस में भीने नागर नन्द किशोर। अंशन परभुज दियो विलोकत इन्दु बदन विव ओर। करत पानरस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर। छूटी लटन लाल मन करष्यो ये बांके चितचोर। परिरंभन चुंबन आलिंगन सुरसंत कलघोर। पग डगमगत चलत बन विहरत नव निकुंज घनघोर। हित हरिवंशलाल ललना मिलि हियो सिरावत मोर १ ब्रजनव तरुणि कदम्ब मुकुटमणि श्यामाआजुबनी। नखशिखलौं अँग अंगमाधुरीमोहे श्याम धनी। योंराजित कवरी गूंथित कच कनककंजबदनी। चिकुर चन्द्रिकन बीचअर्द्धविधु मानो ग्रसतफनी। सौभग रसशिर श्रवतपनारी पिय श्रीमंत ठनी। भृकुटी कामको खण्ड नैन शर कज्जलरेख अनी। तरल तिलक ताटंक गंड पर नासा जलजमनी। दशन कुंद सरसाधर पल्लव प्रीतम मन सुमनी। चिबुक मध्य अति चारुह सहजसखि श्यामल बिन्दुकनी। प्रीतम प्राण रतन संपुट कुच कंचुकि कसि बतनी। भुज मृणाल बल हरति बलय युत पर ससरस श्रवनी। श्याम शीशतरु मनो मिडवारी रची रुचिर रवनी। नाभिगँभीर मीनमोहन मनखेलनको हृदनी। कृशकटि पृथु नितम्ब किंकिनि वृत कदलिखम्भ जघनी। पदअम्बुज जावकयुत भूषण प्रीतम उर अवनी। नव नवभाव विलोकि भामइभ विहरतहै बरकरनी। हित हरिवंश प्रशंसित श्यामा कीरति विशद घनी। गावत श्रवणनि सुनत सुखाकर विश्व दुरित दमनी २ देखत नव निकुंजसुति सजनी लागतहै अतिचारु। माधविका केतकी लताले रच्यो मदन आगारु। शरद मास राकानिशि शीतलमंद सुगन्ध समीर। परमल लुब्ध मधुव्रत विथकित नबदति कोकिल कीर। बहुविधि रङ्ग मृदुल किशलय दल निर्मित पिय सखि सेज। भाजन कनक विविध मधु पूरित धरे धरनि परहेज। तापर कुशल किशोर

किशोरी करत हास परहास। प्रीतम पाणि उरज बर परसत प्रिया दुरावति बास। कामिनि कुटिल भृकुटि अवलोकति दिन प्रति पद प्रतिकूल। आतुर अति अनुराग बिबश हरि धाय धरत भुजमूल। नागर नीवी बन्धन मोचत ऐंचति नील निचोल। बधूकपट हठिकोप कहति कल नेति नेतिमधुबोल। परिरम्भन बिपरीत रीतिगनि सरस सुरति निज केलि। इन्द्र नीलमणि मय तरु मानो लसत कनक की बेलि। रतिरन मिथुन ललाट पटलपर श्रम जलसीकर संग। ललितादिक अञ्चल झकझोरति मन अनुराग अभङ्ग। हित हरिवंश यथामति बर्णत कथा रसामृत सार। श्रवण सुनत प्राप्त करति राधापद अम्बुज सुकुमार ३ आजुबन क्रीड़ित श्यामा श्याम। सुभगबनी निशि शरदचांदनी रुचिरकुञ्जअभिराम। खण्डनअधर करतपरि रंभन ऐंचतजघन दुकूल। उरनख पातितिरैछी चितवनि दम्पति रसबसमूल। वेभुजपीन पयोधर परसत बामदिशा पियहार। बसननि पीक अलक आकरषत समर श्रमित सतसार। पल पल प्रबल चोपरस लम्पट अतिसुन्दर सुकुमार। हितहरिवंश आजुतनु दृटत होवलि बिशद बिहार ४ आजु बनराजत युगल किशोर। नँदनन्दन वृषभानु नन्दिनी उठे उनींदे भोर। डगमगात पगधरत शिथिलगति परसतनख शशिकोर। दसन बसन खण्डित मुखमंडित भालतिलक कछुथोर। दुरत न कच करजनिके रोके नयन अरुण अतिचोर। हितहरिवंश सम्हारन तन मन सुरति समुद्र झकोर ५ बनकी कुञ्जनि कुञ्जनि डोलनि। निकसतनिपटसांकरी बीथिनु परसतवांह निचोलनि। प्रातकाल रजनी सबजागे सूचत सुखदृग लोलनि। आलसबलित अरुण अतिव्याकुल कछु उपजति गतिगोलनि। निरखत भृकुटी बदन अम्बुजमृदु सरसहास मधुबोलनि। अलि आसक्त लाल अतिलम्पट बशकीने बिनुमोलनि। बिलुलित शिथिल श्याम छूटीलट राजत रुचिर कपोलनि। रतिबिपरीत चुम्बन परिरम्भन चिबुक चारु टक टोलनि। कबहुँक श्रमित किशलय शय्यापर मुख अञ्चल झकझोलनि। दिन हरिवंशदास हिय शोचत बारिदकेलि कलोलनि ६ प्रीतम दोउबने सरसजे बागे। नवनिकुञ्जते निकसि प्रातही पिय पाछे मन आगे। खण्डित अधर

पयोधर मंगिहृत्त गयउविराजत दागे। छूटी लट टूटी मोतीमाला अ
घुंघर छविपागे। नखशिख बिशिख कुसुम की सेना छूटे हेरनवाग
श्याम स्वामिनीको सुखसर्वस विलस्यो श्याम सभागे ७ कहांलौं अ
केदेहोंओट। चंचल चपल सुरङ्ग छबीलो आनि बन्यो सगजोट। खंज
मीन कमल अतिलाजत उपमाहीजैकोट। सूरदासप्रभु कहँलग बरण
नाहिंन रूपकोटोट ८ भली यह खेलिबेकी बानि। मदनगोपाल लाल
काहूकी नाहिंन राखत कानि। देखि यशोमति करतब सुतके यह
माट मथानि। फोरिढोरि दधि डारि अजिरमें कौनसहे दिनहानि।
अपने हाथले देतबनचरको दूधभात घृतसानि। जो बरजौं तो आंखि
दिखावे घरघर कूदनिदानि। ढाढी हँसत नन्दकीरानी मंदिकमल मुख
पानि। परमानन्ददास जानतहैं बोलि बूझिदे आनि ९ ढाढी यशोम
कहे। यह सब ब्रजके लोग लाल के मोहन लाग्यो रहे। जाके भवन
जात ना कबहूं सो झूंठे आनिगहे। एकगांठ एकवास बसैबो कैसेजा
निवहे। तुम जिनखीजो मातुयशोदा सबनिकी जीवनियहे। परमान
आंखि झरोखाकी झूटेढी दृष्टिचहे १० सुनहुवौं अपने सुतकी बात
देखि यशोमति कानि न राखत ले माखन दधि खात। भाजन भां
डारि सब गोरस बांटतहैं करिपात। जो बरजौं तो उलटि डरावत चपल
नयनकी घात। जो पावत मोलेत चपलहठि नेकहु नाहिं डरात। हैं
सकुचाति संचरकर धरिके रही ढांपि मुखगात। गिरिधरलाल हाल
ऐसे करि चलेधाय मुसुकात। चतुर्भुज दास मंगहों आयो बूझि सौंह
देसात ११ जो तुम सुनहु यशोदागोरी। नंदनन्दन मेरे मन्दिरमें आय
करतहैं चोरी। हौं भइ आनि अचानक ठाढी कहेउ भवन में कोरी।
रहे छपाय सकुचि सीचकहोय मनहुँ भई मतिभोरी। मोहि भयो मा
खन पछतावो रीती देखि कमोरी। जब गहिबांह कुलाहल कीनो तब
गहि चरणा निहोरी। लागे लेन नयनजल भरिभरि मैं हरि कानिन
तोरी। सूरदास प्रभुदेव निशदिन ऐसी ग्रलक सलोरी १२ हाहा औंर
सुनेगो कोऊ। बहुरि ग्वालि मुखते जिनि काढे जो हम जाने दोऊ।
बालककान्ह निपट भोरेन पांयनचलन सिखायो। तासों कहति भवन
अपनेमें चोरी माखन खायो। घरहूँ करत कालेऊ कमकम जो को

बहुत निहोरे। सो क्यों अनत सकुचको लरिका कंचुकि के बँदतोरे। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन चन्दकी भूठे हलावति खोरे। हैहैकाहू और गोपको इनहींके अनुहोरे १३ नितउठि देनउरहनो आवै। यहजुग्वालि योवन मदमाती भूंठेहि दोष लगावै। कहिधौं भाजन धरेपराये कहु मेरो मोहनपावै। लरिका अतिसुकुमार गहेकर हलधर सङ्गखिलावै। कबहुँक कहत कंचुकी फारी कबहुँक और बतावे। कबहुँक रहै मथानीलेके आँगन शोरमचावे। मन तेरो लाग्यो कमल नयन सों ऊतरु बहुत बनावे। चतुर्भुजप्रभु गिरिधर मुख यहिमिस सगास्नगा देखेभावे १४अरी मेरोइ तनकसो गोपाल कहां करि जाने दधिकी चोरी। काहे को आवति हाथनचावति जीभ नकरही थोरी। कब छीकेते माखन खायो कबदधि मटुकी फोरी। अँगुरिनकरि कबहूं नहिँ चाखत घरही भरी कमोरी। इतनी बात सुनी जब ग्वालिनि बिहँसि चली मुखमोरी। परमानन्द नन्दरानीके सुतसों जो कछु कहे सो थोरी १५ छोटारंचक माखनखायो। काहेकोहरुई होतरी ग्वालिनि सबब्रज गाजिहलायो। जाको जितनो तुम जानतहो दूनों मोपै लेहु। मेरो कान्हरहे इकलो तब सब अगोय मिलिदेहु। कमलनयन मेरी अँखियनतारो कुलदीपकब्रज गेह। परमानन्द कहति नँदरानी सुतप्रति अधिक सनेह १६ तुमनीके दुहिजानत गैया। चलिये कुँवररसिक नँदनन्दन लागों तिहारेपैया। तुमहिँ जानिकरि कनक दोहनी घरते पठई मैया। निकटहिहै यह खरिक हमारो नागर लेउँ बलैया। देखियत परमसुदेश लरिकई चित चुहट्यो सुंदरैया। कुंभनदास प्रभु मानलई रति गिरिगोवर्द्धन रैया१७ मोहनपरहो सतभाइ। कहतलाल नीके दुहिवेहों ग्वालि तिहारीगाइ। आतुर ह्वै दोहनी कनककी करते लीनी धाइ। देखोबेग पाटकी नोई बछरा चोखे जाइ। हँसि हँसि दुहत अरु कहत रसीलोबातें बहुत बनाइ। चतुर्भुज प्रभु सहजहि रतिजोरी गिरिगोवर्द्धन राइ १८ लालतुम कैसे दुहत हो गाइ। कहुँ बैठे कहुँ दूध दोहनी धार कहूं चलिजाइ। यह दुहिबो हम कबहुँन देख्यो ग्वालिकहत समुझाइ। जो कछु हुतो तनकसो वामें गिरतो दियो लुढ़ाइ। मेरी सास खरी रिसहारी अब क्योंहूँ देखि रिसाइ। श्रीबिट्ठल गिरिधरन लालपै सर्बस चलीहराइ१९

पिकोरी बाहन देहीं दान। सूधेभज तुमलेहु गोसाईं राखोकरम। रोसान सारत रोकिरहे नँदनन्दन अवगुणा रूपनिधान। मदन मोरि मुसकाः भामिनी नयनबाणा सन्धान। नन्दरायके कुँअर लाडिले सबके जीवः प्रान। परमानन्द स्वामि मोहनहो तुमसे कौन सुजान २० मोहन तुः कैसेहो दानी। सूधेरहो गहेपति अपनी तिहारे जीकी मैं जानी। हः गूजरी गँवारि अहीरी तुमहो शारँगपानी। मटुकीलईउतारि शीशते सुन्दरि अधिक लजानी। करगहि चीर काहां खैंचतहो बोलत चतुः सयानी। सूरदासप्रभुमाखन केहित प्रेम प्रीतिचितठानी २१ आजुदाः देखोंतेरो चाखि। कहियौं मोल कितेबेंचेगी सत्यबचन मुखभाखि। जोतूकहेसोई हौंदेहौं संगसखा सबसाखि। जो न पत्याइ ग्वालिन हः को कंठ शीशलेराखि। लेचल संगघर दामदेनको जनाओ नेकुकटाछि। कुम्भनदास प्रभु गोबर्द्धनधर रसबश लियोततताछि २२ रञ्चकमाखन देरीदहेउ। अद्भुत स्वाद श्रवण सुनिमोपै नाहिँन परत रहेउ। ज्योंः ज्योंकर अंबुज कुच झम्पति त्योंत्यों सरस लहेउ। नन्दकुमार छबीलो ढोटा अँचरा धाय गहेउ। हरि हठकरतदास परमानन्द यह मैं बहुतः सहेउ। इन बातनिखायो चाहतहो सबन ज्ञात रहेउ २३ किशोरी अङ्ग अङ्ग भेटो श्यामहिँ। श्यामतमाल तरलभुज मानो लतिका मिली ज्यों दामहिँ। गिरिवर धरन सुरतरतिनायक रतिजोल्यों संग्रामहिँ। सूरः हे उभय सुभटबिच क्योंजुबसे रिपुकामहिँ २४ किशोरी देखत नयन सिरात। बलि २ जाउँ मुखारबिन्द की चन्द मन्द ह्वै जात। श्याम कंचुकी तामें शोभित कञ्चन कलशनसात। मानो मदन दोऊ कुच ऊपर नीलवस्त्र फहरात। नकबेसरि औ उरझि पितास्बर देखत मुनि मुरझात। यह मुखदेखे सूरदास प्रभु उड़े पुरानेपात २५ सघन कुञ्जते उठेभोरहीं श्यामा श्यामखरे। ज लद नवीन त्रिया मिलि दा मिनिबरषि निशा उघरे। शिथिल बसन पचलील पिताम्बर आरसयुत प्रहिरे। कञ्चुकबूंद परत श्रम कणिका बादर बरषा करे। भूषण बि बिखहुती सिंदवारी अतिरस उमड़ि परे। प्रेम प्रवाह छुटी मानो सः रिता टूटी मालगरे। शोभा अमित बिलोकि सूर सुख नाहिँन जात तरे २६ देखिसखिचार चन्द्र यक ठौर। चितवत रही नितम्बिनपिय

संगसार मुताकी ओर। द्वै निसिनील प्रथामघन जैसेत्यों बिधुकी गतिगोर। ताकेमध्य चारशुक राजत द्वै फल आदचकोर। शशिशगोशशंगा प्रबाल कुन्दअलितहाँ अरुझिरो मनमोर। सूरदास प्रभु उभयरूप निधिबलि बलि युगल किशोर २७ यशुमति आनँद कन्द नचावति। पुलकि पुलकि हुलसाति देखि मन अतिसुख पुञ्जहि पावति। बाल युवाहू- द्वाकिशोर मिलि चुटकी दैदै गावति। नूपुरसुर मिश्रितधुनि उपजत शिव विरञ्चि बिस्मावति। कुञ्चित ग्रन्थित अलक मनोहर झपकि बदन पर आवति। जनु भगवान मनहुं घन विधुमित मकर चाँदनी लजावति २८ माँगतदधि माखन उठिप्रात। हौंदधि मथन करन को बैठी तहाँ आय अरसात। कहेउ यशोदारीयों रोहिणी हँसि हँसि बैठखात। ब्रजपति पिय और माँगत हैं कहि कहि तोतरिबात २९ तुमपै कौन दुहावत गैया। मधुभाव मचित अन्तर गति अति सुकाम की नैया। गूढ़ प्रीति तासोंमिलि कीजै जो होय तिहारी दैया। ज्यों भावे त्यों मिलत सबनि सों यहै सिखाई मैया। लेजु रहे कर कनक दोहनी दैदेहो अस पैया। परमानन्द स्वामीहठ माँगोज्यों घर खसम गुसैया ३० बसे मेरे नयननि में नँदलाल। साँवरी सूरति माधुरी मू- रति राजिव नयन बिशाल। मोरमुकुट मकराकृतकुण्डल चरण ति- लक दियेभाल। शंख चक्रगदपद्म बिराजत कौस्तुभमणि बनमाल। बाजूबन्द जरद के भूषण नूपुर शब्द रसाल। दास गोपाल मदनमो- हन प्रिय भक्तनके प्रतिपाल ३१॥ युगल गीत वर्णन। रागदेवगन्धार॥ क्यों बिसरै वह गाय चरावनि। बामकपोल बाम भुजपर करि दक्षिन भौंह उचावनि। कोमलकर अंगुलि गहि मुरली अधर सुधा बरषाव- नि। चढ़ि बिमानजे सुनत देवतिय तिनहु मोह उपजावनि। हारहास उरधिर चपलाउर अद्भुत रूप मिलावनि। दन्तधरे तिनरहति चित्र ज्यों गैयनु सुधि बिसरावनि। मोर मुकुट श्रवणनि पल्लव करि मल्ल स्वरूप बनावनि। चरणरेणु बंकत कम्पत भुज भरितन गमन थम्हा- वनि। आदि पुरुष जो अचल भीतहि संग सखा गुण गावनि। बन बन फिरत कबहुँ मुरलीकर गिरिचढ़ि गाय बुलावनि। लता बिटप मन माँह प्रकट ह्वै फलभर भूमि नवावनि। तरुलता हरित होत प्रति

अनवरत मधुधारा वरषावनि । सुन्दर रूपदेखि बनमाला मत्त मधु
प्रुर गावनि । आदर देत सरोवर सारस हंस निकट बैठावनि । वन
सँग अनगन पुहुप शोभागिरि शिखरनाद पुरवावनि । विविधभांति
धन रामन विचक्षण नूतन तान बतावनि । सुनत नाद ब्रह्मादिक सुर
गण अधिक चित्त मोहावनि । चलत ललित गतिहरत ताप ब्रजभूमि
शोक विनशावनि । ब्रजयुवती मनमें न उदयकरि धारन ठहरावनि।
दिव्य गन्ध तुलसी माला उर मनिगावर गाय गवावनि । बेणुनाद
जंत्रित करि सब हरिनी भौंह छिड़ावनि। कुन्ददास शृङ्गार सकल अँग
यमुनाजल उछरावनि । मुदित सकल गन्धर्व देवगण सेवा उचित क
रावनि । गिरिधर कहुहे ब्रज गैयन को आवत चरण छुवावनि । बेणु
बजावत ब्रज सुखदेवे गायनि लै ब्रज आवनि । गावत गोप विशद की
रति सँग सङ्ग फिरत बरभावनि । घूमतमत्त दृगदेत मान कछु श्रुतिकुंडल
भलकावनि । बदर सदृश आनन नवसचत विधु ज्यों अङ्क मिरावनि।
गुणगावत होय प्रकटरूपसे घोरवियोग बुझावनि । चारियाम हरि
के सँग क्रीडत लीलामांह समावनि । यह लीला चित बसो लसोनित
गोपीजन सुखपावनि । दीजे दास रसिकको यह फल ब्रजजन पदरज
धावनि ३२ जबते शरण शरणामें पायो । तबते भेंटभई श्रीवल्लभ निज
पति नाम बतायो । और अविद्या छांड़ि मलिनमति श्रुतिपतिसों दृढ
दृढायो । कृष्णदास सबयुग जन खोजत अब निश्चय मनआयो ३३ प्र
कटे श्रीवल्लभ राजकुमार । जैजै श्री गिरिधर श्रीगोविन्द बालकृष्णजू
उदार । गोकुलपति रघुपति श्रीयदुपति शोभितलल घनश्याम । करुणा
पति श्रीकल्याणरायजू रसिकजननि सुखधाम । श्री मुरलीधर प्रभु
बालक श्रीवल्लभ कुल सकल समान । विष्णुदास गोपाल लीला वपु
गावतवेद पुरान ३४ श्रीगोकुल युगयुग राजकरो । या सुखभजन प्र
तापते सरा इतउतनटरो । पावनरूप दिखाय प्राणपति पतितन पाप
हरो । विश्वविदित दीनगति प्रातनिजगतनेउधरो । श्रीवल्लभ कुल कम
लनि दीपक यश मकरन्दभरो । नन्ददास प्रभु सद्गुण सम्पन श्रीवि
ट्ठलेश बरो ३५ जेजन शरणागये तेतारे । दीनदयाल प्रकट पुरुषोत्तम
विट्ठलनाथ ललारे । जितनी रविछाया की कणिका तितने दोष द

मारे। तुम्हरे चरण प्रताप तेजतेतेते ततक्षणतारे। मालाकंठ तिलक माथेदे शंख चक्र वपुधारे। माणिकचन्द प्रभुके गुण में से महाप्रतित निस्तारे ३६ महा श्रीवल्लभ के हाथगाजो। चरण अम्बुज गहिमान ग्रन्थतजि स्वामी पदते भाजो। गीता भागवत निगमसे साखी लोकाहे कोलाजो। गीतगोविंद बिल्व मङ्गल सीवाको कहिसके अनदा जो। पुरुषोत्तम इनहींतेपैये यह दृढमति तुमसाजो। सगुणदास कहेयुवति सभामें गिरिधर महल विहाजो ३७ अपुनपै अपनी सेवा करत। आपुन प्रभु आपुन सेवक ह्वै अपनोरूप उर धरत। आपुन धरम करम सब जानत मर्यादा अनुसरत। छीतस्वामि गिरिवरन श्रीविट्ठल भक्त ब-कल वपुवरत ३८ हमतो श्रीविट्ठल नाथहि जाने। आनदेव सेवन कत करिये नहिं कछु उरमें आने। कोउ भजो सुरपति कोउ गणपति ब्रत कोउ भजो वेद पुराने। कोउ रविचन्द मंद शिव शंकर कोउ भजो प्रकट प्रमाने। कोउ भजो सनकादिक मुनिनारद कोउ भजो करम निदाने। कोउ भजो अंशकला अवतारे कोउ अच्छर सरथाने। कोउ भजो नेति नेति कहिनिर्गुण कोउ भजो पद निरवाने। कोउ भजो तंत्र मंत्र यंत्रन को फिरत सबै भहराने। कोउ भजो नव अरु सात पदारथ मुक्तिलेशके दाने। करुणानिधि गिरिधर भजि दृढ करि हरिलीला रसपाने ३९ श्रीवल्लभके नन्दन फिरिआये। वेई रूप वेई फिरि क्रीड़ा करत आपु मनभाये। वेफिरि राजकरत श्रीगोकुल वेई रीति प्रक-टाये। वेई शृङ्गार भोग क्षण क्षणके वेईलीलागाये। जे यशुमतिको आनँद दीनो सो फिरि व्रजमें आये। श्रीविट्ठल गिरिधर पद अम्बुज गोविंद उरमें लाये ४० प्रकट्यो प्राचीदिशि पूरणचन्द। योंहीप्रकटे श्रीवल्लभ गृह सुरनर मुनि आनंद। अद्भुत रूप अलौकिक महिमा जननि तात यों भाख्यो। छीतस्वामि गिरिधर श्रीविट्ठल लोकवेद मतिराख्यो ४१ यह कलि परमसुभग ज्ञन धनि श्रीविट्ठलनाथ उपा-सी। जो प्रकटे ब्रजपति विठलेश्वर तो सेवक ब्रजवासी। ब्रजलीला भूल्यो चतुरानन वत्स टारेउ ब्रतरासी। अबलौं शठ अब गनत अभागे करत परस्पर हासी। आत्मा सहित आप धायेहैं हित दियो नर प्र-काशी। देखियत लोक स्वरूप अलौकिक ज्यों गङ्गा सरितासी। पार

हरि सदन सदाहीर यशगावत भक्त मुक्तकीदासी । बदत न काहू भीष
मव वैभव ब्रजनानंद उपासी ४२ यशोदा कहा कहौंहीं बात । तुम्हा
सुतके करतब मोपै कहत कही नहिँ जात । भाजन फोरि ढोरि सब
गोरस लैमाखन दधिखात। जोबरजौं तो आँखि दिखावै रं बहुनाहि
सकाति । और अटपटी कहांलौं बरणौं छुवत पानिसों गात। चतुर्भुज
प्रभु गिरिधरके गुणहीं कहति कहति सकुचात ४३ ग्वालिनि तोहि
कहत क्योंआयो । मेरोकान्हनिपटबालक क्योंचोरी माखनखायो।
बूझि विचारि देखिजिय अपने कहाकहीं हौं तोहिँ । कंचुकि बं
तोरे यह कैसेसो समुझि परति नहिँ मोहिँ । चतुर्भुजदास लाल गि
रिधरसों झूठी कहति बनाय । मेरोश्याम सकुच को लरिका परघर
कबहूँ न जाय४४बालकहीते चोरीसहो जानत । माखन दूधधरेव अ
छांड्यो बहोरि अचानक भाजन भानत । अबकौं लाल अैसो सबैसमु
झ्यो अरु उलटे तुम कैसी बानत । कुम्भनदास प्रभु सँगलागी डोलति
गोवर्द्धनधर अजहुँ न मानत४५॥ रागदेवगन्धार ॥ अठताल ॥ मानिमानि
री मोहन द्वारठाढ़े । तेरी तो प्रकृति आन पियकीपीरी न जाने बातें
तो बहुत उफाने त्यों त्योंते हृदय आगरे कपाट दिये गाढ़े । तऊँ तैं
कारीतासीं बढ़िलग भारी ऐसेरी लालनपर तन मन धन वारि फीरि
प्राणदीजे काढ़े । सुनत वचन प्यारी कंठलागी गिरिधारी गोविन्द
प्रभुको हृदै प्रेमजलसों बुझायो आयेबिरहानलदाढ़े४६॥ रागदेवगन्धार॥
कछुव कहिय न जाइ तेरी उनकी विकटबात । आन आन प्रकृतिके
सेवनि आवे जो तू डारडार तोवे हेरी पात पात । अब कहा कहति
सोई जाय कहौं प्रीतम सों छांड़िदेउ इत उतकी पांच सात । अब एते
पर गोबिंद प्रभु सुमुख मनावत तेरी बातनिबातनि भयो प्रात ४७॥
रागदेवगन्धार ॥ षट्ताल ॥ लालनमुरली नेकबजाइये । विनती करत प्यारी
की सखी जानतहो सकल कलागुण निशिरभोर ढोठ्यो दीजत ताते
घोषराज कुंवर हमहुँ तानहैं सुनाइये । जैसे खगमृगद्रुम पशुबेली स
रितामोही तैसे हमारी सखिनको मनुरिझाइये । गोविन्दप्रभु सकल
कला प्रवीण ताते हमारे श्रवणनि सुख उपजाइये ४८ ॥ रागदेवगन्धार॥
लड़ैते देमेरो उरहार । जाय कहोंगी नन्दराय सों यह तेरो ब्योहार ।

दरीकुन्तकी बेसर कंकना मेरो गजमोहार। तेरे गरको मोल सबैई मेरो सहज सिंगार। बहुत मिलन को झगरो हान्यो उरगोवा कंचनहार। अरबरात अरबरात आई कुन्जनमें श्यामकियो निरवार ४९ कुञ्जभवनते चलन कीनिसबें धनदामिनि भोर। ब्रजतरुणी दृषभाननन्दनी नागर नन्दकिशोर। राजत हैं बनमाल ग्रीव उर बलीबलाका डोर। मनहुँ पाकशासन शरासनकी शोभाचन्द्रिका मोर। परभृतबैन हंस हांसी मन चातक नयन चकोर। मुरली अधर मधुरकल गरजत ललितताल मिलिघोर। बरसे प्रेमनीर सरसे दरसे अनूपमजोर। देखेप्रभु ऐसेमन-मोहन आवत ब्रजकीखोर ५० भले तुम आये मेरे प्रात। रजनी सुख कहुँ अनतकियो पियजागे सारीरात। झपिझपि आवत नयनउनींदे कहाकहूं यहबात। ज्यों जलरुहनकि किरणि चन्द्रको अति सभीत दुरिजात। कहुँचन्दन कहुँबन्दन लाग्यो देखियत सुन्दरगात। गङ्गा सरस्वती मानो यमुना अङ्गहिमाझ लखात। भलीकरी प्रगपाल नि-जाहे मेरेगृह परभात। छीतस्वामि गिरिधर सुनिबातें वदनमोरि मुसु-कात ५१ सांचे भये आये परभात। नंदनन्दन रजनी कहँजागे कहिये साँवलगात। पीककपोलनिलगी तुम्हारे जावकभाल लखात। उरहि बिराजत बिन गुणमाला मोतन लखि सकुचात। भलीकरी अबतहीं सिधारो जहां बिताई रात। छीतस्वामि गिरिधर काहेको झूठीसौहें खात ५२ मोहन करते दोहनिजीनी गोपद बछराजोरें। हाथ धेनुथन बजन बियातन छीर छाकि कलछोरें। आननरही ललित पय छींटें छाजतछबि तृणतोरें। मानहुँ निकसि कलंक कलानिधि दुग्धसिन्धु सखिखोरें। देखुँघट पट ओट नीलहँसि कुँवर मुदित मुखमोरें। मनहुँ शरद शशिकोमिलि दामिनि घेरिनलियो घचोरें। यहिबिधि रहसत बिलसत दम्पति हेत हिये नहिं थोरें। सूर उमँगि आनन्द सुधानिधि मनो निलाबलिफोरें ५३ अबहीं देखे नवलकिशोर। घरहीं आवतहि तनक भयेहैं ऐसे तनके चोर। काहुदिन करि दधिमाखन चोरी अब चोरत मनमोर। बिसराभई तनसुधि न सम्हारति कहतिबात भइभोर। यहबानी कहतहीं लजानी समुझिभई जियबोर। सूरश्याम मुख निर-खि चलीघर आनँद लोचन लोर ५४ युवती एक आवत देखी श्याम।

द्रुमकी ओटराइ हौ आपुन यमुनातट गइन्हाम । ... नागरि भरि नागरि जबहीं शीशउठायो । घरको चली ... ताणाके शिरते घट ढरकायो । चतुरग्वालि करगहेउ श्याम को कानक लकुटिया पाई । औरनि सों करिरहे अचगरी मोसों लगत कन्हाई । नागरि हँसिदेत ग्वालिकर रीतोघट नहिं लेहीं । सूरश्यामह्यां आनिदेहुभरी तबहिं लकुट करदेहों ५५ गोपिका अति आनन्दभरी । माखन दधि हरिखात सखनिसँग प्रीति आनन्दखरी । कररलेसै मुखपरश करावति उपमा बड़ी सुभाई । मानहुँ कंज मिलत शशिको लिये सुधाको करआई । जाकारण शिवध्यान लगावत ... सहसमुख गावत । सोई मधुप्रकट ब्रजभीतर राधामनहिं चुरावत५६ संग सब हँसति राधिका गोरी । ऐसे श्यामरहत ब्रजभीतर तुम्हें अति है भोरी । तुम उनकोकहुँ देखेहोकी सुनी कहतहौ बात । चतुराईनीके सोहियामें मुख मुरली मुसिकात । कबहुँ तोकहुँ मेरागयोरहीं तबहिं ... सूरश्यामको पीतांबर मोरिखेमोरिलीजो ... तुमको ऐसेश्याम ... । कहातरही जलमें सबतरुणी तबतुम नैना कहां खगे । अङ्गअङ्ग अवलोकन कीन्हे कौन अङ्गपर रहे पगे । भूल्यो ज्ञान ज्ञाननन भली नन्दसुवन उततें न डगे । जानति नहीं कहुं नहिंदेखे मिलिगइ ऐसे मनहुँसगे । सूरश्याम ऐसेते देखे मैं जानति दुख दूरि भगे ५८ ॥

अथ हिंडोला झूलैं श्रीराधाकृष्ण ॥

रागमलार ॥ हिँडोलनामाहिं झूलत गोकुलचन्द । सङ्गराधा परमसुंदरि ... अनन्द । हेमखम्भ कञ्चनके मनोहर रतनजटित सुरङ्ग । बनी चारि डाँडी परमसुन्दर निरखि लजित अनङ्ग । पटली पिरोजा लाल लटकत झूमता बहुरङ्ग । मरुवेसों मारिगको चुनीलागी बिचबिच हीर तरङ्ग । कल्पद्रुमतर छांह शीतल त्रिबिध मन्द समीर । बरलता लटकत आर कुसुमन परसि यमुनानीर । हंसमोर चकोर चातक कोकिला अलिभीर । नवनेह नवलकिशोर राधे नवल गिरिधर धीर । ललिता बिशाखा देहिँ झुमटा रीझअङ्ग न समाहिं । अतिलाडिली सुकुमारि डरपति श्याम उर लपटाहिं । गौरश्यामहिँ अङ्गमिलि दोउभये एकहि भांति । नीलपीत दुकूलद्युतिघन दामिनी दुरि जाति । कुंजपुंज कुजाय

भृंगनल चकरी चहुँओर। मनो कुमुदिनि कमलफूले निरखि युगुल
किशोर। व्रजवधू तृणतोरि डारति देत प्राण अकोर। जन सूरको व्रज
वासदीजै प्राण नव किशोर १ ॥ हिंडोलना रागदेवगन्धार ॥ हिँडोरे झूलत
श्यामा श्याम। व्रजयुवती मंडली चहूँधा निरखत विथकत काम। कोउ
गावत कोउनृत्य करुनाचत सब पूरवत मनसाध। कोउ सँग सचत कहत
कोउसचहो उपजो रूप अगाध। कोउ डरत हाहाकरि बिनवत प्यारी
अंकम लाय। गाढेगहिलीयो अपने भुजपुग्रकत अंकडराय। अबजिन
सचो पाय लागतिहौं मोको देहु उतारि। यहसुनि हँसत सचत अति
गिरिधर डरत देखि अतिनारि। प्यारी कहति हरिललितासों मेरी
सों गहिराखि। सूरहँसत ललिता चन्द्रावलि कहाकहत पियभाखि २
रागमलार ॥ यमुना पुलिन रचो हिँडोर। धायललना सङ्ग तरुणी तरुण
नन्दकिशोर। सखासङ्ग लेनवत मोहन सकदेति झुलाय। सकनिरखत
अङ्ग माधुरि एक इक उठिगाय। श्यामसुन्दर गोपिका गणघेरि रही
बनाय। मनो जलद कुमुदनी गण चहत लिये लुकाय। नारिसँग घन-
वारि गावत कोकिला घनघोर। दमत झालत मुकुट शिरपर मनो नि-
र्त्तत मोर। सुभग मुख दुहुँपास कुंडल निरखि युवती भोर। चक्रवाक
चकोर जोवन कोरहे हरिओर। थकितसुर ललना सहित नभश्याम
निरखि निहार। हरष सुमन अपार बरषत मुखहि जैजैकार। कहत
मनमन यहै बांछा भईतन हमहार। देहधरि प्रभुसूर बिलसत ब्रह्मपू-
रण सार ३ ॥ रागकेदारो ॥ हिँडोरैं झूलनआई। पँचरँग बरण पाटकी
डंडिया अतिहि कनक सों बनाई। झूलत युवती नन्दललन सँगएक
बैस इकदाई। सूरदास प्रभु मोहन नागर आपन झूल झुलाई ४ डोलत
नन्दनँदन डोल। कनक खंभ जराय पटली लगे रतन अमोल। सुभग
सरल सुदेश डंडीरचो बिचना गोल। मनहु सुरपति सुरसभातें पठैदयो
हिँडोल। जबहिं झंपत तबहिं कंपत रहसि लगत डरोल। त्रिदशापति
सजि चढे बिमानन निरखि देदै ओल। थके मुखकहि कछु न आवै
सकल सनमुख झोल। सखी पातनव साज कीनो बदत मधुरे बोल।
थको रतिपति देखि यहछबि इन्द्रभयो भ्रमभोल। सूर यहसुख गोप
गोपी पिवत अमृतओल ५ ॥ राग बिलावल ॥ नितधाम वृन्दावनश्याम

नित्त कृतराध। मनबास। नित्तराम जलनित्त बिहार। नित्त भोग ब्यंजित अभिराम। ब्रह्मरूप यई करतार। करन हरन ये त्रिभुवन धार। नित कुंजकुंज नित्त हिंडोर। नित्त त्रिविध समीर झकोर। सदा बसन्तरहत निहिपास। सदा हरख जहँ नहीं उदास। कोकिल कीर सदा यहरोर। मदन रूप मनमथ चितचोर। बिबिध सुमन बनफूलेडार। उनमत मधुकर भ्रमत अपार। नव पल्लव बन शोभाएक। बिहरत हरिसंग सखी अनेक। कुहू कुहू कोकिला सुनाई। सुनि सुनि नारि सबै हरखाई। बार बार सुनि हरिहि सुनावत। ऋतु बसन्त आई समुझावत। फागुचरित रस साध हमारे। खेलें सबमिलि सङ्ग तुम्हारे। सुनि सुनि सूर श्याम मुसकाने। ऋतु बसन्त आई हरखाने ६ ॥

अथ वसन्तलीला ॥

राग वसन्त ॥ देखत बन ब्रजनाथ आजु अति उपजतहै अनुराग। मानो मदन बसन्त मिलि दोऊ खेलत फूलेफाग। आंभ झालरन भेर निशान रूप भँवर भेरगुंजार। मानहुँ मदन मंडली रचिपुर बीथिन बिपुल बिहार। द्रुमशाखासेत पताका मंजरी उड़त अबीरकी नाईं। अपने अपने भेर मनोहर होरी हरखि लगाई। केकी काग कपोत और खग करत कुलाहल भारी। मानहुँ लैलै नाम परस्पर देत दिवावत गारी। कुंज कुंज प्रति कोकिल गुंजत अति रस बिमल बढ़ी। मानो कुलबधु बन लज्जित भई गृह गृह गावत अटन चढ़ी। प्रफुलित लता जहां जहँ देखियत तहां तहां अलि जात। मानहुँ बिटप बहुत अवलोकत परसत गणिका गात। बहुबिधि सुमन अनेक रंग छबि उत्तम भांति धरे। मनो रतिनाथ हाथस सबहुन लोने रंग भरे। और कहांलों कहों कृपानिधि वृन्दा बिपिन बिराज। सूरदास प्रभु सब सुख क्रीड़त श्याम तुम्हारे राज ७ आयो आयो पिय ऋतु बसन्त। दम्पति मनसुख बिरहि अन्त। फागु खिलावहु संग कन्त। हाहा करि तृण गहत दन्त। तुरत गई हरि लिये मनाई। हरख मिली उर कंठहि लाई। दुखडारो तुरतही भुलाई। सो सुख दुहुँके उरन समाई। ऋतु बसंतको आगमजानि। त्रियन राखो मान बानि। सूरदास प्रभु मिले आन। रस राखो रति रंग दान ८ आयो जान्यो हरि ऋतु बसंत। ललना सुखदीनो तुरन्त। फूले

बरन सुगन्ध पत्ताम । शीत सायक सुखको विलास । सबनारि चहूँ आन
पास । मुरली अमृत अधर भास । श्यामा श्याम विलासयन्क । सुखदा-
स्रदा गोपी अनेक । रससानहीं काहू छिनयन्क । अलख निरञ्जन विविध
भेक । फागु रसारस करत प्रकाम । युवती पूरवा करत काम । बासर ह्वै
सुखनैस याम । सूरश्याम बहु कांत बाम ९ ॥ धमारि राग आसावरी ॥ डफ
बाजन लागे हेली । चलहु चलहु जैये तहँरी जहँ खेलत श्याम सहेली ।
गिरिधर धन सुंदर साँवरो नहिं मिस देखनदाउ । ये गुरजन बैरीभयेअब
कीजै कौन उपाउ । आवहु बकुरा मेलिये बनकोदेहिं बिडारि । वे देहैं
हमको परौ हम देखें रूप निहारि । ओजत गागरि ढारिये यमुना जल
के काज । इह मिस बाहिर निकसिके जाइ मिलैं ब्रजराज । राग रंग
रसमस रहो सदराय दरबार । गावत सकल ग्वालिनी नाचत सकलगु-
वार । घरी घरी आनंद करि जीवन जान असार । खाय खेलि हँसि
लीजिये फाग पर्यो त्योहार । मुरली मुकुट बिराजही कटि पटि राजत
पीत । सूरज प्रभु आनँद भरे गावत होरीगीत १० बल्लभ राजकुमार
छबीले हो ललना। धनि धनि नन्द यशोमति धनि धनि गोकुलगाउँ ।
धन्य कुँवर दोउ लाड़िले मोहन जाको नाउँ । सखा नामलै बोलहीं सु-
बल तोष श्रीदाम । जहँ तहँ तैं उठि चलेबन बोलत सुंदरश्याम । गिरि-
धरधारी रसभरे मुरली मधुर बजाय । श्रवण सुनत गोपी सबै घर घर
ते चलिआय । वेष बिचित्र बनायके भूषन सजनि शृंगार । मन्दिर ते
साजि सब चलीं बालक बनबन बार । एक ओर युवती जुरीं एक ओर
बलबीर । नांसनमारमचीभली मनो रुपेसुभटरणधीर । सकलद्वअाई
सबैहो अपने अपने टोल । झूमकेती गावहींनकबिच बिच मीठे बोल ।
एकसखी तबसैन देहो लीने सुबल बुलाय । हाहा कोंहू भाँति कैनक
मोहन पहराय । बहुरि उलटि ब्रज सुंदरी मनमोहन लीने घेरि । नैनन
काजर दैचली हँसत बदन तनहेरि । रुंज मुरज डफ दुन्दुभी बाजैं बहु-
बिधि साज । बिचबिच भेरी झिलमिली घोष शब्द बहुगाज । यहि
बिधि होरी खेलहींहो सकल घोष सुखदाय । गिरिवरधारी रूप पर
सूरज जन बलिजाय ११ ॥ धमारि रागगोरी ॥ गोकुल सकल ग्वालिनीघर
घर खेलत फागु । तिनमें राधालाड़िली जिनको अधिक सुहागु । झूं-

इन मिलि गावतचलीं झूमत नन्ददुआर। आज परे... खेलि
मिलि सँग नन्दकुमार। मोहन दरश दिखावहदूरोतें नन्दकी आन
रसिकराय सुंदरवर राधा जीवन प्रान। यशुमति सुत चित चुभिरही
वह तुम्हरी मुसकानि। अबतो अनत कहाँ तुमजाई ... परम्पहचा
नि। तुरत श्याम धरिपाय राधाभरि अँकवारि। ... आरी
लै भरि धाई ब्रजनारि। भरहु भरहु सखि श्यामकों पीत पिछौरीपारि
देहगेहसुधि बीसरी नन्दनँदन अनुराग। सूर गुपाल रूपा ... यहरस
लहै न कोय। श्रीवृषभान किशोरी श्याम मगनमनहोय १२॥ धमा
राग कल्यान॥ ब्रजराज लडैते गाइये हो मोहन जाको नाउँ। खेलतफाग
सुहावनो रँग भीजि रहे सबगाउँ। ताल पखावज बाजहींहो डफ स
हनाई भेरि। अबला जुरत सब सुन्दरी झुंडन आईं घेरि। तहहि गो
सब राजहीं हो उत सबगोकुल नारि। अति ... देहिं पर
स्पर गारि। चोवा चन्दन छिरकहीं हो उड़त अबीर गुलाल। झूमि
परस्पर खेलहीं हो होलै बोलत ग्वाल। ... छलबल
पकरे छांडे पांय लगाय। दाऊ आजभले बने ... आय।
बहुरि सिमिटि सब सुन्दरी मिलि पकरे ... । ... बांधे
मुख माडिके रचिवेनी गूंथी माथ। तब ... बहुमेवा
दई मँगाय। पट भूषण पहराय सबनकों ... सूर बलिजाय १३
धमारि रागगौरी॥ ऊँचो गोकुल नगर जहां हरि खेलत होरी। ...
देखन जाहिँ पिया अपने की जोरी। बाजत ताल मृदंग और किन्न
की जोरी। गावत दैदैगारि परस्पर भामिनि भोरी। बुक्का सुरँगअबी
उड़ावत भरि भरि झोरी। इत गोपिनके झुंड उतहि हरि हलधरजोरी।
नवल छबीलेलाल तनी चोलीकी तोरी। राधाचली रिसाय दीठसों
खेले कोरी। खेलतमें कैसो मान सुनो वृषभान किशोरी। सूर सखी
उरलाय हँसत भुजगहि झकझोरी १४॥ धमारि राग नटनारायण॥ खेलत
फाग कहतहो होरी। बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ रुञ्ज मुरज बांसुरि
धुनि थोरी। अबला सुनाय गारिदै गावत ऊँचे तान लेत पियगोरी।
कुंकुम रंग भरे पिचकारी नीतन छिरकत नवलकिशोरी। यहिविधि
उमँगिचली रँग जहँ तहँ मन अनराग सरोवर फोरी। ... आनि

अबीर उड़ावत मानौं निकट जाय दुरिचोरी। मनहुँ प्रचंड पवनबश पङ्कज गगन धूरि शोभित चहुँओरी। कनक कलश कुंकुम भरिलीन्हे कस्तूरी मिलैके घरघोरी। खेलत परस्पर कीचमची घर अधिक सुगंध भयो ब्रजखोरी। ग्वालबाल सबसङ्ग मुदित मन जाययमुन जलन्हाय हिलोरी। नव भूषण आभूषण पहिरत औरन देत पिताम्बर छोरी। है सबसाज मीत आरती द्विज तिलक दूबदधिरोचन रोरी। सूरश्याम विप्रन बन्दीजन देत रतन कंचन की बोरी १५॥

इतिश्रीकृष्णानन्दव्यासदेवरागसागरोद्भवसूरसागररागकल्पद्रुम नित्यकीर्त्तनान्तर्गतवसन्तलीलासम्पूर्णम्।

अथ रागबिलावल प्रारम्भ॥

श्रीकृष्णायनमः॥

राग बिलावल॥ जागोहो तुम नन्दकुमार। बलिबलिजाउँ मुखारविंद की गोसुतमेलो खरिक सँभार। आजु कहा सोवत त्रिभुवनपति और बार तुम उठतसवार। बारंबार जगावतिमाता कमलनयनभयोभवन उज्यार। दधि मथिहौं माखन तुम्हैं दैहौं संगसखा ठाढ़े सिंहदुवार। उठि क्यों न मोहिं तुम बदन दिखावहु सूरदासके प्राणअधार १ नंद के उठेजनसोय। देखिमुखारविंदकी शोभा कहुकाकेमन धीरजहोय। मुनि मन हरत युवतिको बपुरी रतिपति मानजात सब खोय। ईषद हास दशन द्युतिदामिनि मानिकमोति धरे मानो पोय। नागर नन्द सुवन सुनु सजनी मारगजात लेत मनगोय। सूरश्याम मनहरन मनोहर गोकुलबसि मोहे सबलोय २ सोवत ग्वालिनि कान्ह जगाये। भोरभये हमआये दरशको जीवनजन्म सुफल करिपाये। उत्तम सेज अरु श्वेत बिछौना चहुँ दिशि खचि रचि आपु बनाये। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको पूरणचन्द्र प्रकट ह्वैआये ३ बाल गोपाल उठो मेरेतात। बलि बलि जाउँ मुखारबिन्दकी अमिय बचन बोलहु तुतरात। उनींदे

नैन विशालकि शोभा कहत न आवत मोतेबात। डारनके अजसखा पुकारत नैन मोड़ि आये परभात। दुहुँकर माटगहे नँदनन्दन छिटकि बुन्द दधि परत अघात। मानहुँ गजमुक्ता मरकत पर शोभित सुभग सांवरे गात। लीला एक रची मनमोहन दधि ओदन मांगन अरियात। लोटत सूरश्याम पुहुमीपर चारि पदारथ जाकेहाथ ४ भोरभयो नँदलालकिबानि। प्रातसमय जागनकीब अरिया ओढ़ेलटपीताम्बरतानि। मातयशोदा कबकीठाढ़ी भोजनखाहु दूधघृत सानि। उठोगेरे लालकलेऊ कीजै सुन्दरबदन दिखावहु आनि। सखाठाढ़ेसब तेराहे गऊन बनको चरावहु बानि। सूरश्याम अतिही अलसानेमातलखै अजहूँ निशि जानि ५ नन्दनंदन वृन्दावनचन्द। यदुकुल नभ तिथि द्वितीयदेवकी प्रगटे त्रिभुवन वन्द। ... गोरे ग्वाल ँदकन्द। आलस भरे उठे मनमोहन चलत ग्वाल सुनकान ओनन्द। पोंछि बदन अंबरसों यशुमति हृदय लगाइ उपज्यो आनन्द। गवालज युवति आई देखनको दरशन होत मिट्यो दुखदन्द। व्रजपति श्रीगोपाल परिपूरण जाको यश गावत श्रुतिछन्द ६ करत कलेऊ दोउ भैया। रोटी लोरि सानि माखनमें मिश्री मीत खवावत मैया। काचो दूध लयो धौरीको तातो करिमथि प्यावति घैया। करिकरि मंगल बीरा लै व्रजपति पाछे चले चरावन गैया ७ दोउभैया मांगत मैया पैदे मा माखनरोटी। सुनिके भावति बात सुतनकी झूठहु मामके कामअगोटी। बल गहेउ बदन नासिका मोती कान्ह कुँवर गही दृढ़ कर चोटी। मानहुँ हंस मोर भक्ष लीनो कबि उपमा जानहुँ जिन छोटी। यहछबि निरखि नन्द आनन्दे प्रेम मगनभये लोटकपोटी। सूरदास यशुमति सुख बिलसति भाग बड़े कर्मनकी मोटी ८ कान्ह माई मांगत हैं दधि रोटी। माखन सहित देहु मेरि माई सुपक सुकोमल मोटी। काहेको इतनी करतहो मोहन काहेको भूमें लोटी। जोचाहोसोलेहु तुरतही छांडो यहमति खोटी। करिमनुहारि कलेऊ दीनो मुखचुपरेउ अरु चोटी। गाय चरावन चले सूरप्रभु हाथ लकुटिया छोटी ९ करहु कलेऊ कान्हर प्यारे। माखनरोटी दयो हाथ पर बलि बलि जाउँहो खाहुललारे। देरत द्वार ग्वालहैं ठाढ़े आये तबके होत सबारे। खेलहु जाइ व्रजहिके भीतर दूरि कहूं जिनि जैहो बारे। टेरि उठे

बलराम श्यामको आवहु जाहिं धेनु बन चारे। सूरश्याम कानओं
मातमों गाइ चरावन चले कहत हहारे १० ॥ राग गुंडी विलावल ॥ भो
भयो मेरे लाडिले जागो कुंवर कन्हाई। सखा द्वार ठाढे सबै खेल
यदुराई। मोको मुख दिखराइये त्रयताप नशावहु। तवमुख चंद
कोर नयन मधुपान करावहु। तब हरिमुख पट दूरिकै भक्तन सुखक
री। हँसत उठे प्रभु सेजते सरवलिहारी ११ नंदमहरके भावते जाग
मेरे बारे। प्रातभयो उठि देखिये रवि किरणि उजारे। ग्वाल बार
सब टेरहिं गैयां बनचारन। लालउठो मुखधोइये लागी मदन उधार
न। मुखते पट न्यारोकियो माता करअपने। देखिबदन चकृतभई सौं
तुक की सपने। कहा कहां वह रूपको को बरनि बतावे। सूरश्या
के गुणअपार नन्दसुवन कहावे १२ ॥ रागविलावल ॥ उठे नन्दलाल सु
त जननी मुखवानी। आलस भरे नैन सकल शोभा की खानी
गोपीजन बिथकाहैं चितवति सब ठाढी। नैनकरि चकोर चन्द्र बद
ग्रीतिबाढी। माता जलझारीलै कमल मुख पखारेउ। नैनसुर पर
करत आलसहि बिसारेउ। सखाद्वार ठाढेसब टेरत हैं बनको। यमु
नातट चलहु कान्ह चारन गोधनको। सखा सहित जेंवहु सोमनका
कीन्हों। सूरश्याम हलधर संगसखा बोलिलीन्हों १३ जागिये गो
पाललाल ग्वाल द्वारठाढे। रैन अंधकार गयो चन्द्रमा मलीनभयो
तारा दीखियत नहीं तरनि किरनि बाढे। मुकुलित भये कमल और
कुंजकरत भृङ्गमाल प्रफुलित बन पुहुपडाल कुमुदिनि कोमल भी
गन्धहुता गानकरत मानदान नेमधरत हरत सकलपापबदत विप्रबे
बानी। बोलत नंद बारबार मुख देखें तवकुमार गाइनभई बड़ी बा
वृन्दावन जैबे। जननी कहति उठोश्याम जानत जिय रजनिताम सू
दासप्रभु कृपाल तुमको कछु खैबे १४ जागहुलाल ग्वालसब टेरत
कबहुं पिताम्बर डारि बदनपर कबहुं उघारि जननितन हेरत। सोव
तमें जागत मनमोहन बात कहत सबकी अब टेरत। बारम्बार जम
वति माता लोचनखोलि पलक पुनि घेरत। पुनि कहिं उठी यशो
दामैया उठहुकान्ह रविकिरणि उजेरत। सूरश्याम हँसि चितो मा
मुख पट करले पुनिपुनि मुख फेरत १५ दोउ भैया जेंवत माताके

पुनि पुनिकै दधिबयान ... और जननिपै मांगे । अति मीठो दधि
आन जमायो ... । देखोधौं दधिस्वाद आपलै ता पाछे
मोहिं देहु । बलमोहन दोउ जेंवत हाँसे मुख लूटति नंदरानी । सूर
श्याम अब कहत अघानो अचवन मांगतपानी १६ ॥ रागगूजरीबिलावल ॥
जननि जगावत उठो कन्हाई । प्रकट्यो तरनि किरणि गण छाई ।
आवहु चन्द्रवदन दिखराई । बारबार जननी बलिजाई । सखा द्वारे
सब तुमहिं बुलावत । तुमकारण हमधाये आवत । सूरश्याम उठि
दरशन दीन्हों । मातादेखि मुदितमन कीन्हों १७ ॥ अथ खण्डिता रागबिला
वल ॥ नाहिं नंदरात नैना रतनारे । जनु बंधूककुसुम बिशालपर सुन्दर
श्याम शिली मुखतारे । राजत अलक कुटिल कुंतलपर सोहत चितव
त चितहि बिसारे । शिथिलभौंह धनुधमदन गुण रहे कोकनद बान
बिसारे । मदेही आवत येलोचन पलक आतुर उघरत न उघारे । सू
रदासप्रभु सांइपै कहिये ऐसोको जासों रति रणहारे १८ ॥ रागबि
लावल ॥ आजुनिशि कहां हुते मोरेप्यारे । सोहैं तुम्हारी कहिन जात
अँखियं उनींदे नैनरतनारे । मंजुल अधर निमेष पीक रुचि प्रकट देखि-
यत तुम्हारे । हृदयहार बिनु गुणहि अलंकृत मृगमद तिलकलिलारे ।
बोलके सांचे आये भोरभये रतिनसेज दुखसाज सुतारे । सूरदास चतु
राई प्रकटभई आगेते कित होत नन्यारे १९ अति रसबश नैनारतनारे ।
छपत नछपेछपावत होकत जनु मन्मथ शिरबरत अंगारे । तबपालीहित
जानि भलीबिधि जेहुते हरिसंग दौरडारे । जबभये प्रकट प्रबीनतरु-
णातन तरुणाई तामस जनुतारे । पुनि शिव पूरब बैर समुझि करिम-
दन मुदित मादक बलभारे । अतिरिस भौंह शरासन युत करि आनि
कमल सायक शरन्यारे । समुझि परी सखिरति स्वरूपतुम रति पति
ज्योंनिशि बिलसन हारे । सूरदास धनिधन्य सुभामिनि जेहि अनुरा
गतिलक हरिसारे २० ललना आयेहो रैनिगंवाय । निशि भइ छीन
बोलत तमचुर खग ग्वालन धौरी गाय । अरुण किरणि पंकज दल
बिकसित मधुपलये रसजाय । चंद्रमलीन भानुकेप्रकटन कुमुदिनिगइ
कुम्हिलाइ । गृहते निकसि आंगनभइ ठाढी तुमबिनु कछुन सुहाइ ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनते मिलिके बिछुरिन जाइ २१ आज अति

शोभित हैं तनश्याम। मानहुरी औरी नंदनंदन मनसिज सों संग्राम। मुकुलित कंचनसमान मुकुट कोंचरांय अलसा सांइकोन। श्रमसूचितगोल भांति अलसबस बोलत बनतन बैन। नखक्षत ओंमा प्रस्वेद नासतेस ब्दनयो कछु छूटि। मदनसुभट केसरि सुदेशमानों लसोनाबच पटफू- टि। दशन अंकनद प्रीतिप्रकट भइ सन्मुख सुभग प्रहार। सूरदासप्रभु परमेश्वरमैं जाने नंदकुमार २२ आज और छबि नंदकिशोर। मिलि रसरुचि लोचनभयो अंतर चितवत चित्त तिहारी ओर। प्रकटित पीठ वलयकर कंकन देखियत हारहिये बिनडोर। बसननीलउरराले अनलग्न अंजन नैन तमोर। नख सिख लों सिंगार अटपटा पागे सनी पलाशेकोर। फूलेफिरत दिखावत औरन निडरभये डेढ़ँसनिकँकोर। देखनलगे कहत नहिं आवै बकपांख बदन कलिन कठोर। ताचरना क्यों न होय इतनातन सूरप्रहत देखेविन भोर २३ रतिसंग्राम वीरस्व मातें। अधोहीर सुरशिरोमणि मानहुं नाहिन संभारत गाते। औ करुणा भये ये लोचन अपने सहजविलातें। मानोंभोर नवाधोचन कों भयेक्रोज अतिराते। परिमललुब्ध जहां अलि बैठत उडिन सकत ता ठांते। मानो मन्मथ मार वाँधि रहे अमृतरस बालक खाते। औठजात अलसात उनींदे क्रमक्रम उड़त लहाते। मानहुं सुखेन्ज पादप कोउपर थकत नहीं ठहराते। डगमगात घूमत धायकसे सभासुभट सुरजाति सूरदास प्रभु रति रता झाले अब मकरंद की काते २४ माधव पीके अंखिन आये। नैनउनींदे पागलटपटी बिथुरे केश सुहाये। नखरेखा उर शोभितहै जानों द्वितियाचंद्र उगाये। जिअलित चरण धरत डगमगात किहिं यह चाल चलाये। निशा जागि तुम बसे सांवरे भोरइहां उठिआये। रसबश अनतरहे सूरजप्रभु तऊ मेरे मनभाये २५ अतिहि अरुण पियनैन तुम्हारे। मानहुं रति रस भये रगमगे करत केलि पियपलक बिसारे। मंदमंद डोलत पाँखनते शोभित मध्य म- नोहर तारे। मानहुं अरुण कमल संपुटते उड़िन सकत चंचल अलि- बारे। झिलमिलमात जागरन जनावत अतिरस चलतअरत अनियारे। मानहुं सकल युवति जीतनको कामबाण स्वरशान सँवारे। औठजात अलसात उनींदे कहुं मूंदत कहुंकरत उधारे। मनहुंमत्त मरकत म-

को नाम रवे नत बंजरीह चटसारे । बारबार अपनोंके परमकर्म क-
जोह म.हदल हसारे । सूरश्याम देखे नखुपार्श्व दुखमोचन लोचन
ननारे २६ रूसेहो पिकरूसेहो । उतरको उत्तर न देत देखे हितहीन
कूसेहो । वहुचितवनि न होय नयननकी वचननेहु उनहूसे हो । वह
ध्व श्यामल जिकास नहींरति गाथक चिभार विहुँसेहो । कोकछुगई
पदा दारते के ठग उग काहूसेहो । सेरेजानसूरप्रभु सांचेहु मदनचोर
जोल मूसेहो २७ तुमरीझे कौउनहि रिझाये । हाहापियपन प्रकं
गावहु कोकिल सौंहदिवाये । जावक भाल चिह्नमें ज.न्यो हृदको
जलभाये । अंजनअधर उरहि नखरेखा लटपटि पागभुहाये । बिन
गुन माल मिली कहं तुमको कंकनपीठ दिखावहु । सूरश्याम हम
सों क्यों जानति तुमहुं कोहिन सुनावहु २८ आजुहरि रैनि उनींदे आये।
अंजन अधर ललाट महावर नैन तँबोल बनाये । बिनुगुन माल बिरा-
जत उरपर चंदनरेख लगाये । मगनदेहु पिरवाग लटपटी जावक रंग
आये। हृदय सुभग नखरेख बिराजत कंकन पीठि बनाये । सूरदास
प्रभु इहै अचंभौ तीनि तिलक कहँ पाये२९ आजुहरि आलसभरे।
अहुके जोंह जोरि खंडावत बहुत जम्हात खरे । बैठोगेको पांव धा-
रये देखत नैन सिराने । सांझ आय यक दरशनदीन्हो कों अबहोत
जहाने । कबके ठारभये पियठाढ़े भोरे बड़े कन्हाई । सूरश्याम ह्वां
बसरसी वह त्यों तुम ऐसे नाथाहि ३० सौंह करनकोआईहतुम मेरे
जे । रैनिकरतसुख अनतहि ताकोमन भाये । अङ्ग अङ्ग भूषणा औरसे
जो कहुंपाये। दैखियकित यहरूप सो लोचन अरुनाये । पाग लटपटी
अहु जावक रँगलाये । मानकियोओोहि मानिनी अनिपांइपरायें।
चतुराई कहांपढ़ी उनहिं समुझाये । सूरदास प्रभु सांचले उपमा
बिगाये ३१ धन्य आजु यह दरश दियो । धन्य धन्य जासों अनु-
गो तन जासोंनाहिं थोर कियो । हमतो श्याम यह मलीभा नती भले
भी भलि मिलीकरी । यह मेरीजय अतिहि अचम्भित तौ लिछुरत
सों एक घरी । जाहुतहीं सुखदीन्हो मोको वे सुनिके रिस पावें.गी ।
श्याम अतिचतुर कहावत बहुरेउ मन न मिलावेंगी ३२ क्यों आये
भोरयहां । काहेको इतनों सरमाने रैनिरहे फिरजाहु तहां ।हम

को कहां फीको गरुआई उनहैं बड़े संभारोजू। उनआये यहां नाहींजा- न्यो अजहूंले पग धारोजू। हमहूं बोलि उहांहीं लीजो डर उनके ह- मईं ओसें। सूरश्याम तिनहीं सुखदीजे जो बिलसे संग तुमकोले ३३ रोम रसिकहूं जानिपरी। नयननते अब न्यारेहूजै तबहीतें अतिरिस न मरी। तुमयौवन अरुसी नवयौवन एते परसब गुनानि भरी। लाज नहीं मेरे गृह आवत जाहु जाहु करि नियमहरी। अञ्जन अधर क- पोलनि बंदन पीक पलक छबि देखिडरी। सूरश्याम रति चिह्न दि- खावन मेरेआये भलेहरी३४बारबार मैं कहतिहौं पियतहीं सिधारो। आंखेहो मन हरन को हरिनाम तुम्हारो। भली बनी छबि आजु की नयोंलेत जम्हाई। रैनि आजु सोये नहीं रतिकाम जगाई। वह रति तुम रतिनाथहो हमकासें भाये। सूरश्याम तुम बहुगुणीजे तुमहिं रि- झाये३५आइगईं ब्रजनारि तहां। सोहकरत प्रियप्यारी आगे आनंद निरह मनः। प्यारी हँसी देखि सखियनको अंतर निसहे भारी। नैन सैनदे अङ्ग अङ्ग निरखति पियशोभा अधिकारी। श्यामरहे मुखमूंदि सकुचिकै युवति परस्परहेरैं। सूरप्रभु अँग अँग अनूप छबि कहांपायो केहिकेरें ३६ तब नागरि कहति सखियनसों एतेपर ये सोहकरैं। द- रशनप्रात देतहैं हमको निशि औरनि के चितहरैं। तुमहीं देखलेहु अंगवानके एते पर क्यों नही परैं। कृपा करो आवतहौं सिधारो मो आंगते अनजुरैं। यहछबि देखि सनाथभई मैं अब ताही परजाइहरैं। सूरश्याम रिस देखिचले उठि कहो सखी अब ह्यां न फिरैं ३७ पिय छबि निरखत नागरी अंग दशा भुलानी। अंतर गत आनंद भरी लं- लिता हरषानी। सहचरि सों कहि सुमनले हरि फेंट भराये। अति अधीन पिय ह्वैगये बश परे पराये। मारग सुमन बिछावहीं पग नि- रखि निहारैं। फूले फूले सर धरे ललिता जुनिडारै। ऐसे बश पिय बामके सुखसूरज जानै। जे जेहि भावनि हरिभजे तेहि तैसे मानै ३८ लाल उनींदे भये। राजत हैं रतनारे नयना मानहुँ नलिन नये। पीक कपोल ललाट महावर बंदन बलित खये। जनुतन जामें सद्य अरुण दल कामके बीजबये। बिनु गुनहार पयोधर मुद्रा हृदय सुदेश ठये। अञ्जन अधर सुधामंड लिखयो रति दिसालेनगये। सूरश्याम बिधुरे

कच मुखपर नख नाराच्च हये। ताऊपर आनंद छन्द जनु मानहुं सम
जये ३९ नयन उनींदे भये रँगराते। मानहु सुरङ्ग सुमनपर मजनो कि
रत मृग मदमाते। प्रेम पराग पांवुरी पलदल प्रफुलित मनन ललाते
सुभग सुवास विशाल विलोकनि प्रकट प्रीतिकारिगताते। हेसोइ मास
मद जरहांवरि मिलत मुदित छविराते। सोचे सूरश्याम मानकी
हितसों केलि कलाते ४० काहेको पिय भोरहि मेरेगृह आये। इतो
गुण हमपै कहां जो रैनि रमाये। ताहीपै पग धारिय भये चकृत
जाने। बिन गुण गाड़िमाला रही नहिँ कहुंबिहराने। आये इहां सु
खदेनको ऐसो हितकारी। सूरश्याम तुमकाहे वेसीसी नारी ४१ कृपा
करी उठिभोरही मेरे गृहआयो। अब हमभई बड़भागिनी सिसिवि
देखायो। जावक भालमिसोहियो नीक बस पायो। नयन देखि च
कृत भई क्यों पान खवायो। अधरनि पर काजर बन्यो बहुरङ्ग क
ढायो। बंदन वेंदुली भालक भल आप बनायो। यह सोभो तुमही
कहो उरक्षतअरुनायो। सूरश्याम यपाराधिहो धनिधिधाहँतायो ४२
हरषि श्याम त्रिय बांहगहीरी। चूकपरी हमको यह सम सो आवन
को कहिगये हरी। रिसनि उठी झहराय झटकि भुज कुवरा कहा
पियअसरम नहीं। भवन गई आतुर ह्वै नागरि जो आई मुख मनकही।
मेरे महल आजुते आवो सोह नन्दको कोटि कही। सूरदास जबलों
जगजीऊं मिलो नहीं बरु कामदही ४३ बहुरि मिलहुगी कालिहहीं
चित समुझि सयानी। मेरो कहेउ न क्यों करे होहि अयानी।
अनलही औषधि अनल है सब जानरहीहो। काहेको हठ करतिहो
बेकाज बहीहो। धरणीधर व्याकुल खड़ेरी गर्बगहेली। सूर कहे
सुनि सांवलै मैं कहति सहेली ४४ नंदसुवन बहुनायकी अनतहिरहे
जाई। यह अभिलाष करति रही ताको बिसराई। बासर ऐसोही
गयो निशियाम तुलानी। नारिपरी अतिसोच में बिरहा अकुलानी।
आवन कहिगये सांझही अजहूंनहिँ आये। कीधौं कलहुंरासिरहेफ
न्दपरे पराये। वैहीहैं बहुनायको लायक गुणभारी। सूरश्याम कुछ
भवन सुखिकार पगुधारी ४५ भली कीनी आयेहो ललना हमारे भोर
भये भोरे। हमहिँ दिखाना रातिके चिह्न जानति हों उनकिये बहुत

निहोरे । काहेको होत उघारे प्रीतम लोक निहारि देखि है खोरे । रसिक प्रीतम तुम हाइँ सिखारो जाके निशिबास भये दर्शन लाल लाल डोरे ४६ भलीकरीजू आये सवारे । बहुरि प्रभातको उदयहोयगो प्रकट देखिये अङ्ग निसारे । पहिरे पीत नीलपट ओढ़े ऐसी को चतुर मनभावत । रते मान देह सुधि भूली तुमहीं आपुन को बिसरावत । पाउँ धारिये बहुत बेरभई करगहि कनक तलय भेठारे । परमानंद प्रभु तुमसे औरको सध्या वचन कहेनहिँ टारे ४७ रसिक शिरोमणि नन्दलाल रङ्गभीनेहो । लाडलडाई नवल बाल रङ्ग०। जावक लागी सोहे शिथिल पागरङ्ग ० । प्रिया मनायेभूरि भाग रङ्ग ० । रूपछके लोचन घुमात रङ्ग ०। प्रेमउमँगि रोंडात गातरङ्ग ०। उरसोहे मरगजी मालरङ्ग ० । मदनमत्त डगमगी चालरङ्ग ०। बाहु उगड्यो करोफूल रङ्ग ०। दियो है उर्होसोमो सुखको मूलरङ्ग ०। अलक निकसिरही शोभा देतरङ्ग ० । कामकेलिके विजय केतरङ्ग ० । महकिरही तन अति सुबासरङ्ग०। अलि गावतकीरति सराहरासरङ्ग ० । जाहीसेमिले हमें चैनरङ्ग ० । मोहनसकत यह गूढ़ैनरङ्ग ० । राम राय प्रभु सुनत हँसे रंगभीनेहो । कोउभाव बामके हियेबसे रङ्गभीनेहो ४८ रति रस केलिविलासहास । रँगभीनेहो । कोउसुन्दरि नारि केलगे गातरंगभीनेहो । अरुणनयनअतिरससमे । रङ्गभीनेहो । मनोभोरभये जलजात । लाल । रङ्गभीनेहो । बोलतबोलप्रतीतके । सुंदरसाँवलगात । लाल । प्रियाअधर रसपानमत्त । रङ्ग० । कहतकहूँबात । लाल । अतिलोहित दृगरगमगे । रङ्ग० । मनोभोरजलजात । लाल । चालशिथिलभ्रुवभाल शिथिल । रङ्ग० । शशि मुख शिथिल जम्हात । लाल । केशशिथिलखेसशिथिल । रङ्ग० । बय क्रमशिथिलसिरात । लाल । गोविंद प्रभु नंदसुत किशोर । रङ्गभीनेहो । बहुनायक विख्यात । लाल । रङ्गभीनेहो ४६ सांझके सांचे बोल तिहारे । रजनी अनत जागि नँदनंदन आयेहो निपट सवारे । आतुर भये नीलपट ओढ़े पीरे बसन बिसारे । कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धन धर भले बचन प्रतिपारे ५० तुम्हारे पूजिये पियपाय । कैसी कैसीउपजत तुम पै कहत बनाय बनाय । असन अधर क्यों श्याम भये क्योंपरे पट पलटाय । रुचिर कपोल पीक कहँलागी उरजयपत्र लिखाय । गिरधर

लाल जहां निशिजागे तहांदेहु सुखजाय । कुम्भनदास प्रभुकोहो : पटी अबको तुम्हें पतिआय ५१ कहोधों आज कहां बसे लाल भोर आये डगमगत पग । खरेमकारे क्यों उठे मोहन बोलत तमचुर खग कानन अधर लटपटि पागउर । बिलुलित कुसुममाल कुचपर खग अरुण नयन आलस जम्हातपिय रैनिकियो जग । रतिके चिह्न प्रकट देखियत काहेको दुरावकरत श्यामसुभग । कुम्भनदास प्रभु रसिक गिरिधर परेचतुरी नागरपग ५२ कहोधों कहां तुम रैनजागा लाल अरुण उदय आये । कौनसंकोच श्यामधनसुन्दर तमचुर बोल उठिधाये । आंखिदेखि कहा साखि बूझिये रतिके चिह्न तन प्रकट लगाये । कुम्भनदासप्रभु गिरिधर काहेकोदुरत पियजानिपाये ५३ ऐसी बातन लालकयों मनमाने । उतरु बनाय बनाय नागरिकोकहिये जे यह न जाने । रतिकोचिह्न प्रकट देखियतहैं कैसेदुरत दुराने । कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धन धरहो तुमखरे सयाने ५४ आज अरुण अरुण डोरे लाल के दृगन लागत हैं भले । वंदन परे पगन आलसाने कछुक दलितप चले । लाल औपगिया में न समात कुटिल अलक अली । नंददास मधु पुंज मानो मोवतले कलमले ५५ आवत लाल गोवर्द्धन धारी डगमगी चाल लटपटी पाग । आलसनैन सरस रस रंजित पिया प्रेम नवरस अनुराग । बिलुलितमाल मरगजी उरपर सुरत समरकी लागी परागा चुम्बन श्याम अधरकल गावतरति सुखभाव बिलाव बराग । पलनि परे पटनील सखीके रसगह झीलत मदन तड़ाग । वृन्दावन वीथिन अवलोकत कृष्णदास लोचन बड़भाग ५६ कहां अब दुरतपिय जान शिरोमणि रतिके चिह्न देखियत है न्यारे । अरुणनयन घूमत आलसमहँ कछुक जम्हात अधर मसिकारे । श्याम अंग नख पद न्यारे चंदन छींट बने मानों तारे । अवर अनेक कहां लों बरणों यह नागरता जु आये हो सवारे । मोहनलाल गोवर्द्धनधारी कटितट नील बसन बने प्यारे । कृष्णदास कहहु धों प्रीतम चतुर पीतपट कहां बिसारे ५७ मयाकीनो बलबीर आये तमचुर के बोल । नागर नंदलाल कुंवर पहिरे नीलनिचोल । मोहन रसमगे अलसात कमल नयन अति पातोल । अधरनि नख देखियनी अरुण श्याम कपोल।

मृगमदको तिलक रच्यो सिंदुर के भाल । ऊपर नखचिह्नरतन क्यों दुरत अगोल । कृष्णदास प्रभु गिरिधर मांगत मनभाल । अपनो पीताम्बर देलियो मनमाल ५८ मोहन कुंददाम उरपर कुचकुंकुम रंजितबनी । गंधलुब्ध अलि पांति न तजत केलि घनघनी । मोहनअधर श्यामसुख जम्हानि संगम प्रवासनी । अवर चिह्न अगणित पिय नगनो गगनागनी । कृष्णदासप्रभु नवरंग युवतिन चिन्तामनी । गोवर्द्धनधारी रसिकनि चूड़ामनी ५९ लाल तेरे चपलनयन अनियारे । नंदकुमार सुरत रसभीने प्रेमरंग रतनारे । कछुअम रीझे चकित चहूं दिशि नवबर योवनवारे । मानों शरद कमलपर खंजन मधुप अलक घुंघरारे । येजुमीन घनश्याम सिंधुमें बिलसत लेतझुलारे । गोवर्द्धनधर जान मुकुंदमणि कृष्णदास प्रभुप्यारे ६० सोईभली जिन तुम बिरमाये । पूजाकरि भामिनि सब निशिनव पदउरनख कुसुम चढाये । अरुण दिशा अबहीं नहिं देखो रटत मधुप कमलनि समुदाये । रूपनिधान रसिक नँदनंदन कब तसको नमवारे आये । संध्यावदे बोल मनमोहन कीनों भली और अवराये । आलस नयन जम्हात अधरबर रति के चिह्न नहिं दुरत दुराये । अपने पीतपट दिये सखीको छीनलये नील बसन पराये । कृष्णदासप्रभु गिरिवरधर पिय युवतिन सदसि उदार कहाये ६१ ॥ रागबिलावल । ग्रतिताल ॥ लालन तहाईं जाहु जीके रसलम्पटअति । आलस नयन देखियत रसभरेप्रकटकरत प्यारीरति । अधर दशन क्षतबसन पीकसह अरु कपोल श्रम बिंदु देखियति । नख लेखनि तनलिखी श्यामपर जयपताक रणजीत्यो रतिपति । कैतव बदत जोपिय हमसों जैसेतन श्याम तैसेई मनहो अति । गोविंद प्रभु पियपाग सँवारहु गिरति कुसुमशिर मालति ६२ ॥ राग बिलावल ॥ आजु खरेई शिथिल देखियतहो बहुरसभरे लाल । सब निशिजागे अति शिथिल अरुण दोऊ अम्बुजनयन बिशाल । शिथिल भयरा कटि बसत शिथिल अति शिथिल मरगजी माल । लटपटि पाग शिथिल अलकावलि बिगलित कुसुमगुलाल । शिथिल शिखण्ड शीश लटकि रहे आये भोर डगमगत चाल । शिथिलबेणु कछु कहत आनको आनगोविंदप्रभुपियहोबेहाल ६३ ॥ रागबिलावल । एकताल ॥ जानिपाये हो

ललना। बोलत्रलिल अलगुरलनि किरार। जाके बचन निरखि जसोमति आये तहाँ अनुसार। अपनी प्यारीके चलतके चिह्न हर्षहि निरखावत आये सेलखोन चाहुपर। गोविंद प्रभु सांवल तन सैनईंहा मन जननमतही बहु युवती प्राणाहर ६४ ॥ रागबिलावल ॥ बलिबलि पाउँ धरिये आजु कछु मेरोललहने। घुटरुनचलत और आनंदभरे। भई बहीबार पाउंधारिये हर्षनिकलउलैकारोकी उरनजा बाले कुंडल ढोले आनंदभरे। कहिन मकतलक बाल ललनजाके निरखि छबि लाजै मदन पलनिपरे। गोविंद प्रभु पिय चरणधरनिपरिकैबलदेउअकेकहरे ६५॥ अभिमाथनसमय ॥ रागबिलावल ॥ प्रातसमय दधि मथति यशोदा प्रमुदित कमलनयन गुणगावति। अतिहि मधुर गति कंठसुघर अति नन्दसुवनके चरितहि बढ़ावति। नीलवसन तनस-लिलसजलमनदामिनिबिच भुजदण्डचलावति। चंदनन्दनि लटललटकि छबीली मनहुं अमृतरस राहुचुरावति। गोरस मथत नादयक उपजत किंकिणि धुनिसुनि श्रवण रमावति। सूरश्याम अँचरा गहिठाढे का-मकसोटीकसि दिखरावति ६६ नन्दजूकेबारे कान्हछांडिदे मथनियां। बार बार कहै मातायशुमति रनियां। नेकुरहो माखनदेहौं मेरेप्राणधनियां। आरिजनिकरो बलिगईहौंन्योछावनियां। सुरनरमुनि जाको ध्यावैं धुनि जनियां। सूरश्याम देखि सब भलीगोपधनियां ६७ नेकुरहो माखनदेउंतुमको। ठाढ़ीमथति जननीदधि आतुर लवनी नन्दसु-वनको। मैं बलि जाउं श्यामघन सुन्दर भूखलगी तुमैंभारी। बातकहूकी बूझति श्यामहिं फेरकरत महतारी। कहत बात हरि कछू न समुझत झूठेहिभरतहुंकारी। सूरदास प्रभुकेगुण तुरतहिबिसरिगईनंदनारी ६८ बातनहीं सुतलायलियो। तबलों मथिदधि जननियशोदा माखनकरि हरिहाथदयो। लै लै अधर परसकरि जेंवत देखत फूल्यो मातहियो। आपुहिखात प्रशंसतआपुहि माखन रोटी बहुतप्रियो। जो प्रभु शिव सनकादिक दुर्लभसुतहित बस नदत्रियो। यहसुखनिरखतसूरप्रभुको धन्य धन्यपलसुफल जियो ६९ ॥ रागसूहा ॥ देरी मैयादोहनी दुहिहौं मैंगैया। माखनखाये बल भयो करिनंद दुहैया। कजरी सेंदुरीधूमरी धौरीमेरीगैया। दुहिल्याऊंमैं तुरतहीतू करिदेधैया। ग्वालिनकी सर दुहतिहूंबूझहु बलभैया। सूर निरखि जननी हँसी तबलेति बलैया ७०

रागबिलावल ॥ बाबा मोको दुहन सिखायो । तेरे मन परतीत न आवे दुहतअंगुरियन भाव बतायो । अंगुरिन भाव देखि जननी तब हँसिके श्यामहिँ कंठ लगायो । आठ बरष को कुँवर कन्हैया इतनो बुद्धि कहांते पायो । माताले दोहनी करदीन्ही तब हरि हँसत दुहन को धायो । सूरश्यामको दुहत देखि तब जननीमन अतिहरष बढायो ७१ जननि मथति दधि दुहत कन्हाई । सखा परस्पर कहत श्यामसों ह-महूंते तुम करत चढाई । दुहन देहु कछुदिन अरु मोको तब करिहो मोसम सरिआई । जबलों एक दुहोगे तबलों चारि दुहों तो नन्द दो-हाई । झूंठहि करत दोहाई प्रात उठि देखहिँगे तुम्हरी अधिकाई । सूरश्याम कहे कालिह दुहैंगे हमहु तुमहु मिलिहोइ लगाई ७२ उठी प्रातही राधिका दोहनी करलाई । महरि सुतासों तब कहेउ कहाँ चली अतुराई । खरिक दुहावन जातिहों तुम्हरी सेवकाई । तुम ठकु-राइनि घररहो मोहिँ चेरीपाई । रीतीदेखी दोहनीकत खोजतआई । कालिहगाई अबसेर के ह्वां उठरिसाई । गायगई सब चरायके प्रातहि नहिँआई । ताकारण मैं जातिहों अतिकरतचँडाई । यहकहि जननी सों चली ब्रजकी सुखदाई । सूरश्याम गृह द्वारही गौकरत दुहाई ७३ सुता महर वृषभानकी नंद सदनहिँ आई । गृह द्वारेही आजिर में गाऊ दुहत कन्हाई । श्याम चितैमुख राधिका मनहरष बढाई । राधामुख हरि देखिके तन सुरतिभुलाई । महरि देखि यहरीति सुतासोंहि लियो बुलाई । दम्पति को सुख देखिके सूरज बलिजाई ७४ आजु भोरही राधिका यशुमति गृह आई । महरि कहेउ हँसि दधि मथो वृषभान दुहाई । सुनि आयसु ठाढीभई करनेत सुन्हाई । रीतो माट बिलोवही चित जहां कन्हाई । उनकी गतिहों कहा कहों जिन बुधिचुराई । ल-ईया नोई वृषभ सों गइया बिसराई । यशुदा निरखे दूरिपे मनमें मु-सकाई । सूरदास दम्पति कथा मोपै बरणि न जाई ७५ महरि कह-तिरी लाडिली कैहि मथन सिखायो । कहुँ मथनी कहुंमाट है चित कहांलगायो । क्यों मेरेघर आयके तैं सब बिसरायो । मथन नहिँमोहिँ आवही तुम सोंहदिवायो । तिहिकारण मैं आयके तुव बोलरखायो । तब नन्दघर ना मथिदधियहिभांतिबतायो । हँसिबोली तब राधिका

का कहेउ अब मोहिं आयो। सरनिरखि मुखश्यामको तहँ ध्यान ल-
गायो ७६ दधि मथति ग्वालि गरबीलीरी। रुनक झुनक कर कंकन
बाजे बाहु डुलावति ढीलीरी। कृष्णा देनदास माखन मांगत नाहिंन
देति हठीलीरी। भरी गुमान बिलोवनि लागी अपने रंग रंगीलीरी।
हँसिबोल्यो नन्दलाल लाड़िलो कछुयक मानकहीलीरी। परमानन्द
नन्दनन्दनको सर्बस दियेहै छबीलीरी ७७ दधि मथनकौं नन्दरानी
हो। बारे कन्हैया आरि नहिं कीजे छांडि न देहु मथानी हो। बारो
मेरे मोहन कर पिरायँगे कौन चित्तमें ठानीहो। हरि मुसकाइ जननि
तन चितयो सुधि सागरकी आनीहो। जेगुरा सुर श्रुति छन्दनि गावै
नेति नेति मधुबानी हो। परमानन्द यशोदारानी सुन सनेह लपटानी
हो७८ प्रात समय उठि यशोमति दधिमंथन कीनों। प्रेमसहित नवनी
तले सुतके मुखदीनों। औटि दूध घैया कियो हरि रुचि सों लीनों।
मधुमेवा पकवानले हरि आगेकीनों। इहिबिधिनित क्रीड़ाकरै जननी
सुखपावै। गोविंद प्रभु आनन्द सं आंगन में धावै ७९ भल्यो दधिको
मंथन करिबो। देखत रसिक नन्दनन्दनको हुलसबो परसबिको। रहि
गइ चित चित्र जैसे यकटक नैन निमेषन परिबो। चत्रभुज प्रभु गिरि
धरन जनायो नाहींमें माखन माखन हरिबो ८० देखोरी माई कैसी
है ग्वालिनि उलटोरई मथनियां बिलावै। बिनुनेतकर चंचल पुनि
पुनि नवनीते ढकरावै। निरखि स्वरूप चोहटे चित लायो यकटक
गिरिधर मुखजोवै। कुंभनदास चितेरहीअकबक औरें भाजनधोवै८१
भरी आनंद में दधि मथति यशोदा कनक मथनिआं घूमें। निर्तत
कान्ह ललित लोचन पगपरत लटपटभूमें। चारुचौखट्टा मध्यकुटिल
कचतम मुक्ताताहू में। मनो मकरंद बिन्दुले मधुकर सुतहित प्यावत
झूमें। बोलत श्याम तोतरी बतियां हँसि हँसि दतियां दूमें। सूरदास
वारों छबि ऊपर जननि कमल मुख चूमें ८२॥ रागललित ॥ आज
सखीरी प्रातसमय दधिमथन उठी अकुलाई। भरिभाजन मणिखम्भ
निकटधरि नेतलियो करजाई। सुनत शब्द हरिता समीप हँसि उठि
आये हरुवाई। सोही बालबिनोद मोदअति नयननि निरखिदिखाई।
मुकीतन प्रतिबिम्ब बिलोकति रीझीसहज सुभाई। चितवनि चलनि

हरेव चितचंचल चितैरही चितलाई। माखनपिंड लियो दोऊकरतब ग्वालरही मुसकाई। सूरदासप्रभु सबसको सुख सबैन हृदयसमाई। ८३॥ राग बिलावल ॥ छबिसों डोलत भुज छबिसों डोलत कटिपर बेनी यों बिलोकिन परवारोंरी कोटि नांच। दधिको धूसर अरुधूलितवाल अरु धूलित घोटकाधूलितजे नूपुर करत सांच। गौरआरुक्त अति शोभित सुख असको बदन ऐसो मनहुं कनक लागीआंच। श्रीधीके प्रभु को मन मोहति गईकर भेद इहनेतकी खेंच खांच ८४॥ अथबाल लीला पद। रागबिलावल॥ आवत हरिके बालबिनोद। केशवराम निरखि सुख प्रहसित प्रमुदित रोहिणि मातयशोद। आंगन पंकराग तन शोभित चल नूपुर धुनिसुनि मनमोद। परम सनेह बढ़ावत मातनरंत्रकि २ बैठत उठिगोद। अतिशय चपल सदा सुखदायक निशिदिनरहत केलिरस ओद। परमानन्दप्रभु अम्बुजलोचन फिरिफिरिचितवत ब्रजजनकोद ८५ बालमदा गोपालकी सबकाहू भावे। जाके भवनमें जातहैं लै गोदखिलावे। श्यामसुन्दर मुख निरखिके अबिरल सचुपावे। लालबालकहि गोपिका हँसिभलो मनावे। चुटकी देदेप्रेमसगन करताल बजावे। परमानन्द प्रभु नाचहीं शिशु ताहि रुनावे ८६ बालविनोद गोपाल के देखत मोहि भावे। प्रेमपुलकि आनन्दभरि यशुमति गुणगावे। बल समेत घनसांवरो आंगनमें धावे। बदन चूमि कोरा लियो सुत जानि खिलावे। शिवबिरंचि मुनि देवता जाको पार न पावे। सो परमानन्द ग्वालिको हंसिभलो मनावे ८७ हरिको बिमल यश गावतिगोपांगना। मणिमय आंगन नन्दरायके बालगोपाल तहां करे रिंगना। गिर गिर उठत घुटुरुअनि टेकत जानिपाणि मोरो छगनको मङ्गना। धूसर धूर उठाइ गोदले मातयशोदाके प्रेमको भजना। त्रिपद पुहुमिना पीत बन आलसभयो अबतू कठिनभयो देहरी को लंघना। परमानन्द प्रभु भक्त वछलहरि रुचिर हारवर कंठ सोहैं बंघना ८८ मणिमें आंगन नन्दके खेलत दोउ भैया। गौरश्याम जोरी बनीबल कुंवर कन्हैया। नूपुर कंकण किंकिणी रुन झुनझुन बाजे। मोहि रहीं ब्रजसुंदरीसनसाकुतलाजे। संगसंग यशुमति रोहिणी हितकारन मैया। चुटकीदे देनवावही सुत जानि कन्हैया। नीलपीतपट ओढ़नो देखतमोहिंभावे।

बाललीला विनोदमों परमानन्द गावै ८९ यह तनवारि डारों कमल नयनपर सांवलिया सोहि भावैरे । चरणकमलकी रेणु यशोदा लैलै शिरसि चढावैरे । लै उछंगमुख निरखनलागी राईलोनउतारैरे । कौन सिरागी दृष्टि लगाई लैलै अञ्चर झारैरे । तूमेरोबालक तू मेरो ठाकुर तोहि विसभर राखैरे । परमानन्द स्वामि चिर जीवहु बार बार यों भाखैरे ९० तनक कनककी दोहनी देदेरी मैया । तात दुहन सिखवन कहेउ मोहिं धौरीगैया । हरि विषमासन बैठिके मृदुकर थन लीनों । धार अटपटी देखिके ब्रजपति हँसिदीनों । गृह गृहते आई सबदेख-न ब्रजनारी । सचकित तनमन हरिलियो हँसि घोषविहारी । छिज बुलाइ दछिणादई मंगल यशगावे । परमानन्द प्रभुलाडिलो सुखसिं-धु बढावे ९१ बाबाजी मोहिं दुहन सिखाऊ । गाईयक सूधीसी मिल वहु होनीके दुहुंके बलदाऊ । लैनोई मेली चरणनमें लाडिलो कुंवर नोवत बछराऊ । पाणि पयोधर धरे धेनुके भाजनबेगि भरेबडबदाऊ तब नन्दरानी नयन सिरानी छिजबुलाइ दछिणा दिवाऊ । वारिफेरि पीताम्बर हरिपर परमानन्द दासहि पहिराऊ ९२ बोलन लागेमैया मैया । बाबाकहत नन्दराईसों अरु हलधरसोंभैया । खेलत फिरत स-कल गोकुलमें घरघर बजत बधैया । परमानन्द दासको ठाकुर ब्रजजन केलिकरैया ९३ नन्दजूके लालनकी छबिआछी । चरण पैंजनियां घुमघुम बाजे चलत घूंठे गहिबाछी । अधर अरुण दवि मुखसों लप-ट्यो अति राजततन छीटेकाछी । परमानन्दप्रभु बालकलीला चितव-नका फिरि पाछी ९४ हरिलीलागावत गोपीजन आनन्दहीमें निशि दिन जाई । बालचरित्र विचित्र मनोहर कमलनयन ब्रजके सुखदाइ । दोहन मंडन खंडन लेपन गृह मज्जन सुतपति सेवा । चारियाम अव कास नहींछिन सुमिरन कृष्ण देवदेवा । भवन भवन प्रति दीप विरा-जित करकंकण नूपुरबाजै । परमानन्द घोष कुतूहल देखि भांति सुर-पति लाजै ९५ सोगोविंद तुम्हरो ब्रजबालक । प्रकटभये घनश्याम च-तुर्भुज धरे दनुज कुल कालक । कमलापति त्रिभुवन पतिनायक भुवन चतुर्दश नायक । सोईउत्पतिप्रलय कालकोकर्ता जाकेकिये सबैकुछ होई । सुनहुं नंद उपनंद कथाइह ईशक्षीर समुद्रकी बासी । वसुधाभार

उतारन आयो परब्रह्म बैकुंठनिवासी। ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिक निनतो के इहांलै आये। परमानंद दासको ठाकुर बहुत पुण्य तपके तुगपाये ९६ प्रात समय गोपीनंदरानी। बिलावल। धुनि उपजतातिहि औसर दधि मथन अरुसात मथानी। तिवछन लोल कपोल बिराजत कंकण नूपुर क्वनित सुक रस। रजवा करखत भुज लागति छबि गावत मुदित श्याम सुन्दरयश। चंचल चपल कुच हारावलि वेनी चाल खसित कुसुमाकर। सत्ता प्रकाश नाहिं दीप अपेक्षा गहज गावराजत ग्वालिनिघर। चढ़ि बिमान देवता गोकुल कुसुमावली बिशेखी। परमानंद घोय कुतूहल जहां तहां अद्भुत छबिपेखी ९७ आछे आछे बोल गड़े। कहा करों उत्तर नहिं निकसत श्याम मनोहर चतुर बड़े। मेरे नैक आवरीभासनि रहसि बुलावतकान्ह चढ़े। परमानंद स्वामी रतिनागर प्रीति बेधन कुंवर लड़े ९८ देखोमाई हरि जूकी लोटनि। यह छबि निरखि निरखि नंदरानी अंसुआपूरि ढरि परत करोटनि। परसत आनन मनुरबि कुंडल अंबुज श्रवत सीप सुत जोटनि। चंचल अधर चरण कर चंचल मंचल अंचल गहत बकोटनि। लेत छिड़ाइ महरि करसों कर दूरिभई देखति दुरि ओटनि। सूरनिरखि मुसुकाइ यशोदा मधुर मधुर बोलत मुख ओटनि ९९ माधव तनिक सो बदन तनिकसे चरण भुजतनिक करपर तनिक माखन। तनिकसो कपोल तनिक सी भृकुटी तनिक हँसनि हरिलेतहैं मन। तनिक से अधर तनिकसी दतिआं तनिकसे बसन तनिकसे अभरन। तनिकहि तनिकसूरनिरखारो। तनिक कृपाकीजै तनिक शरन १०० बालबिनोदआंगनमकी डोलनि। मणिमयभूमि सुभग नन्दालय बलिबलि गई तोतरीबोलनि। कठुला कंठ रुचिरकेहरि बजमाल लई नंद अमोलनि। बदन सरोज तिलक गोरोचनलटलटकनि मधुप गणटोलनि। लोन्योकर परसतआनन पर कछुकखात कछुलग्यो कपोलनि। कहै जन सूर कहांलोबरणोंधन्य नन्दजीवन जग तोलनि १०१ गोपाल दुरेहैं माखन खात। देखि सखी सोभा जु बढ़ीहै श्याम मनोहरगात। उठि अवलोकि ओट ठाढ़ीह्वै कहि बिधिहै लखिलेत। चकित नयन चहुंदिशा चितवत और सखिन को देत। सुंदर कर आननसमीप हरि राजत यहिआकार। जनु जल-

दहराज बेरु विधुसों लिये मिलत उपहार । गिरिगिरि परत बदन ते उर पर है दधिसुतके बिंदु । मानहुं सुभग सुधाकन बरषत प्रिय जन आगम इन्दु । बाल बिनोद बिलोकि सूरप्रभु थकितभई ब्रजनारि । फुरतनबचन बरजिबेकोमननरही बिचारिबिचारि १०२देखयोमैंदधिसुत मेंदधि जात । एक अचंभो सुनुरी सजनी रिपुमें रिपुजुसमात । तापर कीरजीट परपंकज पंकजकेद्वैपात । सुंदर बदन बिलोकिश्यामकोचितै नन्दमुसुकात । ऐसी प्रीति बढ़ीपशुपाले कहतकही नहिजात । ऐसो ध्यान धरतजे हरिको तिनहिं सूरबलिजात १०३ शोभितकर नवनीत-लिये । घुटरुनचलतरेणुतन मंडित मुखदधि लेपकिये । चारु कपोललो-ललोचन छवि गोरोचनको तिलकदिये । लटलटकन मानो मत्तमधुप गण मादक मधुहिंपिये । कठुला कण्ठ बज्र केहरि नख राजत रुचिर हिये । धन्य सूर एकोपल यह सुखका शत कलप जिये १०४ बाल बिनोदखरे जियभावत । मुखप्रतिबिंब पकरिबे कारणहुलसि घुटुरु-वनि धावत । कमल नयन माखन के कारण करि करि सेनबतावत । शब्दजोरि बोल्यो चाहतहरि प्रकटबचननहिं आवत । अनेक ब्रह्माण्ड खंडकी महिमा शिशुता माहँ दुरावत । सूरदास स्वामी सुखसागर य-शुमति प्रीति बढ़ावत १०५नंदधाम खेलतहरि डोलत । यशुमति करतरसोईं भीतर आपुन किलकत बोलत । टेरिउठी यशुमति मोहन कांह आवहु घुटुरुनि धाई । बैन सुनत माता पहिंचानी चले घुटुरुवनि धाई । लै उठाय अंचल गहि पोंछति धूरि भरी सबदेह । सूरजप्रभुयशु-मति रज झारति कहां भरी यह खेह१०६धनि यशुमति बड़ भागनी लिये कान्ह खेलावै । तनक तनक भुज पकरिकै ठाढ़े होन सिखावै लरखरातगिरिपरतहैं चलिघुटुरुवनिधावै । पुनि क्रम २ भुज टेकिकै पग द्वैक चलावै । अपने पांगन छब चलो मैं देखत धावै । सूरदास यशुमति यहैबिधि सों जुमनावै १०७ ॥ रागसूहो । बिलावल ॥ चलन चहत पांयन गोपाल । लै लगाय अंगुरीनंदरानी मोहन मूरति श्याम तमाल । डगमगात गिरिपरत पाणिपर भुज भ्राजत नंदलाल । जनु श्रीधर श्री-धरत अधोमुख मुकति मरीचि मानहुं नभिनाल । धूरिधौत तन नैननि अंजन चलत अटपटी चाल । चरण रुणित नूपुर धुनि मनोहरविहरत

है बालमराल। लट लटकनि मानो चारुअवाँड़ा मोद शोभा शिशु-
भाल। सूरदास ऐसो सुख निरखत जो जीजे जग में बहुकाल १०८
रागबिलावल॥ गहेअँगुरिया सुवन की नंद चलन सिखावत। अरबराय
गिरिपरतहैं कर टेकि उठावत। बारबार बकि श्यामसों कछु बोल
बोलावत। दुहुँघा द्वैदँतियाँ भईं अतिछवि मुखपावत। कबहुँ कान्ह
कर छाँडि नन्द पकरैं फिरि धावत। कबहुँ धरणीपर बैठि जात मन
मेंकछु आवत। कबहुँ गो लै हरषिके जियमें बहु भावत। सूरश्याम
सुखदेखि महर मन मोद बढ़ावत १०९ बलिबलि जाउँ मधुरसुर गा-
वहु। अबकि बेरमेरे कुँवरकन्हैया नन्दहि नाचि दिखावहु। तारी
दै अपने करकी परमप्रीति उपजावहु। आन जंतुधुनि सुनि डरपतकत
मोभुज कंठ लगावहु। जिनशंका जिय करहु लालमेरे काहेको भर-
मावहु। बाहुउठाय कालिहकी नाईं धौरीधेनु बुलावहु। नाचहु नेक
जाउँबलि तेरी मेरी साध पुरावहु। रतनजटित किंकिणिपगनूपुर अ-
पनेरंगबजावहु। कनकखम्भ प्रतिबिम्ब आपनो नवनवनीतखवावहु।
परमदयाल सूरके उरते हरिटारे नहिं भावहु ११० चलत श्याम पैरा-
जत पैंजनि पगचाय मनोहर। डगमगात डोलत आँगनमें निरखिवि-
नोद मगन मोहसुर। अरुमन मुदित यशोदा जननी पाछे फिरतिगहे
अँगुरीकर। मनहुँ धेनुतृण छाँडि बच्छहित प्रेमपुलकि चित स्रवत प-
योधर। कुंडल लाल कपोल बिराजत लटकन ललित लटुरियाभूपर।
सूरश्याम सुंदर अवलोकनि बिहरत बाल गोपाल नंदघर १११ कल
बलते हरि हारिपरे। नवलरंग नवीन जलदपर मानहुँ द्वै शशि आनि
अरे। तब गिरि कमठ सुरासुर सर्पहि धरत न मनमहँ नेकुडरे। तिन
भुज भूधरता भारपरत कर गोपिनके आधार धरे। बिम्ब बदन मानहुँ
मथि काढ्यो बिहँसनि मनहुँ प्रकाश करे। सूरश्याम दधि भाजन
भीतर निरखत सुख मुखते नटरे ११२ सिखवति चलन यशोदामैया।
अरबराय कर पाणि गहावति डगमगाय धरणीधर पैया। कबहुँकसु-
न्दर बदन बिलोकति उरआनँद भरि लेत बलैया। कबहुँक कुलदेवता
मनावति चिरजीवहु मेरो लालकन्हैया। कबहुँक बलकोटेरिबोलावति
यहि आँगना खेलहु दोउ भैया। सूरदास स्वामी सुखसागर अतिप्रताप

बलिहारि कन्हैया ११३ आनँदित हरि के बालविनोद । श्याम राम मुख निर-
खि निरखि सुख मुदित रोहिणी जननि यशोद । आँगन पंक दधि माखन मं-
डित चलत कुनित नूपुर मनमोद । परम सनेह बढ़ावत मातनि निर्वि-
कार बैठत चढ़ि गोद । आनँदकन्द सकल सुखदायक निशिदिन रहत
केलि रसओद । सूरदासप्रभु अंबुज लोचन फिरि फिरि चितवत ब्रज
जन कोद ११४ ॥ रागसूहोबिलावल ॥ आँगन श्याम नचावहि यशुमति नँद-
रानी । तारी दै दै गावहि मधुरे सुरबानी । पांयन नूपुर बाजहीं कटि
किंकिनि कूजे । नान्हीं नान्हीं पँड़ियन अरुनता फल बिम्बन पूजे ।
यशुमति गानसुने श्रवणन सो आपुहि गावे । तारी बाजत देखहिपुनि
तारी बजावे । केहरि नख ऊपर दरै रुचि शोभाकारी । मनहुँ श्याम
घन मध्यमें नौग्रह उजियारी । गभुआरेशिर केशहैं बने घुघरवारे ।
लटकन लटके भालपर बिधुमधि गणतारे । कठुला कंठ चिबुक तर
मुखदशन बिराजे । खंजन बिचशुक आनिके मानो परे डुराजे । य-
शुमति सुतहि नचावहि छबिदेखतिजियते । सूरदासप्रभु श्यामके सुख
टरत नहियते ११५ ॥ रागबिलावल ॥ माखन तनक चरणा अरु तनक त-
नक भुज तनक बदन बोलै तनकसे बोल । तनक कपोल तनकसे कर-
निपर तनक माखन लिये देखत तनक याके सकल भुवन । तनकसुने
जो यशको पावत परमप्रीति तनक कहततासो नन्दसुवन । तनक रीझ
पर देत सकलतन तनक चितौन चितके हरन । तनक हँसनि मुसकानि
तनक पुनि तुतरे बचन उचरन । तनकहि तनक तनक करि आवै सूर
हि तनकदीजे तनक शरन ११६ आजसखी मणिखंभ निकट जहँ है
गोरसकी गोरी । निज प्रतिबिम्ब निरखि सिखवत शिशु प्रकट करी
जिनचोरी । अर्द्ध बिभाग आजुते हमतुम भली बनी यह जोरी । माखन
लेहु कत बिडारत हो तुम बालक मतिभोरी । हीसा न लेहु सबै चाहत
हो यहैबातहै थोरी । मिश्री रुचिर और चाहतहो देउँ कहा भरिझो-
री । सुनिप्रिय बचन धीरज न रहेउतब रसिक हँसी मुखमोरी । सूर-
दासप्रभु सकुचि चलेहरि सघन कुंजकी खोरी ११७ बाल गोपाल
बिराजत आज । इन्दुबदन दधिबुंदपरे तनकर नवनीत मनोहर साज ।
किधौं प्रकट मकरंद कमल में उदित इन्दु नभमंडित समाज । कुंचित

केश भू... नवललन शिरन आवैंगे करनकी राज। चहुंकोदि जुगला-
नीत मुक्तावर कटिकिंकिनि नूपुर कलबाजे । ...गोपाल मदनमोहन
... । खेलतनत सकल जितारैं काज ११८ अड आगिनगोकुलनंदनारि ।
...गरौटी देत नन्यावनि जमदाता पुखलेत पसारि । शोभित बदन
कमल दल लोचन शोभितकेशमधुपअनुहारि । शोभितसकरकुंडल
छवि शोभित मृगमद तिलक लिलारि । शोभित गात चरण भुज
शोभितशोभित किंकिनि करतउचारि । शोभित निर्तकरत परमानँद
गोपवधू वर भुजा पसारि ११९ खेलत घर आंगन गोविंद । निरखि
निरखि यशुमति सुखपावति बदनमनोहर राकाइन्द। कौटकिंकिनी
चन्द्रमय मणिकी लट मुक्ताहल लाल । परम सुदेश कंठ केहरि नख
बिच बिच बज्र प्रवाल । करपहुँची पांयन पनसूरा तनराजत पटपीत ।
घुटुरुनचलतअजिरमेंबिहरत मुखमंडितनवनीत।सुरनियचरचरितका-
न्हरके बानीकहत न आवै। बालदशा अवलोकि सनकमुनि योगध्यान
बिसरावैं १२० सोभानिरखि जाउँ छबीलेलालकी । धूमरधूरि घुटुरु-
वनि डोलनि बोलनि वचन रसालकी । छिटकिरही चहुँदिशि जु लटु-
रियां लटकनि लटकन भालकी । मोतिन सहित नासिका नथुनीकंठ
कमलदल मालकी । कछुयक हाथ कछुक मुखमाखन चितवनि नैन
बिशालकी । सूरदास प्रभु प्रेममगनह्वै ढिग न तजत ब्रजबालकी १२१
बारबार यशुमतिसुत बोधति आउचन्द तोहिं लाल बुलावै। मधुमेवा
पकवान मिठाई आपुखात पुनितोहिं खवावै । हाथोंहूपर तोहिंलीने
खेलै नेकुनहीं धरणी बैठावै । जलभाजनमेंकरिके उठावै याहीमेंतू तन
धरिआवै । जलपुट आनि धरणीपर राख्यो गहि आन्यो वह चन्द
दिखावै । सूरदासप्रभु हँसि मुसकाने बारबार दोऊकर नावै १२२ ल्यों
गोरी मैया चंदहिल्योंगो । कहाकरौं जलपुट भीतरको बाहिरव्यौंकि
गहोंगो । यह तो कलमलात जल गहिआं कैसे कर जु गहोंगो । वह
तो निपट निकटही देखतबरजेहु न रहोंगो । तेरे प्रेम उदितभयो माता
बौराने न बहोंगो । सूरश्याम कहकर गहिल्याऊं शशितन ताप दहों-
गो १२३ लैहों हरि चन्दाले । कमलनयन बलिजांय यशोदा नीचे
नेकुचितै । जा कारण तुम सुनि सुन्दर सुत कीनी इती अने । धोइ

सुधाकर देखि दसोदस या भाजन मंहे । नभतें निकस आनि रास्यो है अलपुट यत अंजुलि । अब अपनेकर आछि मनोहर जाहि भावे ताहि दे । अगासन गनते बांह आन्यो है एकोतिक पठे । सूरदास प्रभु इनी बालको कत भेरोलाल हठे १२४ मोहन दधिकी छाक श्याम गात । व्रजजननीके करतले दोऊकरे कोर कछु डारत । उरपर कंचुकी लेके ..गावात । और आंगनमें होत बिलक्ष तब धरनीमिलोटिजात । रीमके श्रीराम मोआरति निहारि रानी यशुमति मात १२५ महामहोत्सव गोकुलग्राम । प्रेम मुदित गोपीयश गावति लेलै श्यामसुंदर को नाम । जहांतहां लीला अवगाहति खरिक खोरि दधिमंथन धाम । परमकुतहल निशि अरु बासर आनन्दहि बीतत व्रजयाम । नंदगोप सुत सब सुखदायक मोहनमूरति पूरणकाम । चतुर्भुजप्रभु गिरिधर आनंदनिधि नखशिख रूप सुभग अभिराम १२६ ढाढारी नवनीत प्रिया । दिन उठि देन उरहनो आवति चोरी लावति घोर भैया । तुम बलराम संग ..खिलै आंगन खेलो दाऊभैया । निरखि निरखि नयननि सचु पाऊं प्राणजीवन तन सांवरिया । जो भावे सोलेहु मेरेप्यारे मधुमेवा ..कुन्द धैया । चतुर्भुजप्रभु गिरिधर काढे घर तुमहुते कछु बहुत ग्रि- यार ..अकारनमों कहति यशोदा मैया । मेरेमोहन अनत न जइयेघर खेलो दाऊभैया । येतरुणी योजनमदमाती भावहिसोयलगावेदैया । तुमको देरे प्राणजिवन धन माथिके दूध पियाऊं धैया । चतुर्भुज दास गिरिधरन कहेउ तब होंबन जाउँ चरावनगैया । सुनि जननी अनआति हरखांनी मुखचुंबति अरुलेति बलैया १२८ घरघर डोलत माखनखात । वजावनात सबसखा संगलिये सुनेभवन घुसिजात । जबग्वालिनिजल भरि घरआई तबैभजें मुसुकात । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लालसों नाहिं नेकहू बसात १२९ मोहन चलत बाजत पैंजनीपग । शब्दसुनतचकित ह्वै चितवति त्योंत्यों ठुमकि ठुमकि धरतहैं डग । मुदितयशोदा चितवति शिशुतन लेउछंग लावेकंठ सुभग । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल को व्रजजननिरखति ठाढीडगरा १३० मैयामोहिं बड़ोकरिलेरी । दूध दही घृत माखनमेवा जबमांगों तबदेरी । कछू हौंस राखहु जिनिमेरी जोई जोई मोहिं रुचेरी । होहुँसबल सबहिँनमहँ जैसे सदारहौंनिरभे-

। रंगभूमिमहँ कसपछारो धीरिबहाऊं नेरी।

खा गरेउआं मथुराजेरी १३१ क्रीडत प्रात युगुल यदुबीर। माखन सांभा मातन मानति अंकत यशोदातीर. मध्यजननि मनगुखसंकरयन गंम्नत कान्ह खिरूयो गिरचीर। मनहुँसरमुनी मंगाउभय दुग्ककर मराल अप्नलील कठोर। सुन्दरश्याम गहे कमरी कर मुक्ता माल गही बल-बीर। तारनभक्तलयो आपापनु मानहुँलेत निबेरेमोर। सूरसुछबि इहै बरणि न आवे उपमा कहो परति नांहि धीर। कमक मनदन नित उठि आवत अरु गावत जाको मुनिकीर१३२बालदशा गोपालकी सबकाहू प्यारी। लैलै गोद खिलावहीं यशुमति महतारी। पीत भँगुलि तन सोहहीं शिर कुलह बिराजे। सुद्रघंटिका कटिबनीपांयन नूपुरबाजे। मुरि मुरि नाचे मोरज्यों सुरनरमुनि मोहे। कृष्णदास प्रभुनन्दके आं-गन मे सोहे१३३अमेलरिका कतहुँन देखेयातसुत्याजगांवकीमाई। मा-खन चोरत भाजनफोरत उलटि गारिदे मुरि मुसिकाई। तबहीं देनउर-हनोआई कहाकरोंजो ना कहिआई। सुनहु यशोदा तुम ठकुराइनि तुम मों कहत मेरी बौराई। पाछेठाढे मोहन चितवत धीरोहोते चोरो लाई। परमानन्द दासको ठाकुर पचयो चाहत चोरीलाई१३४ तेरो लालमेरो माखन खायो। धोन दुपहरी देखि घरसूनो ढोरि ढँढोरि अबहिं घरआयो। खोलि कपाट बैठि मंदिरमें सबदधि अपने सखनि खवायो। छींकेहुते चढि ऊखलपर अनभावतो धरनिढरकायो। दिन दिन हानिकहालों सहिये ये ढोटाजु भलेढँगलायो। परमानंदप्रभु ब-हुत बचातिहों पूत अनोखो तोहीं जायो १३५बहुतें उपजतयाढोटापै कैसीधों लेले आवत। हरि हरि हरिदेखोरी माईजागीयुवतिदुरावत। विद्यमान दधिदूध चुराये। फिरिफिरि मोहिंबिरावत। चतुरचोरविद्या संपूरणगाढिगाढिकौलिबनावत। जो न पतियाहु सोंहले मोसों सांची शपथ करावत। तेरे बच्छजात जेदेखिव तापर हाथ दिवावत। बदन मोरि मुसकाय चलीहैफिरिउरहनमिसआवत। परमानंददासको ठा-कुर श्याम मनोहर भावत १३६ भाजिगयो मेरो भाजन फोरि। कहा कहों सुनु मात यशोदा असखायो माखन सब चोरि। लरिका सात पचास सगलीने रोंके रहत गांउकी खोरि। मारग में कोउ चलन न

पावत लेत दोहनी हाथमरोरि । समुझि न परे याढोटाकी रारिछोत गोरस ढढोरि। आनँद फिरत फागुसों खेलत तारीदेदे हँसत मुखमोरि। को यह कुंवर कौनको ढोटा सबब्रजबांध्यो प्रेमकिडोरि। परमानन्द दासको ठाकुर लेत बलैया अंचलछोरि १३७ अथसमुदाय कीर्तन ॥ राग बिलावल ॥ आउगोपालशिंगारबनाऊं। अतिसुगंधकोकरोंउबटनो उष्णोदक नहवाऊं। अंगअँगोछि गुहूंतेरी बेनी फूलनरचि रुचिभाल बनाऊं। सुरंग लाल जरतारी चीरा रतनखचित शिरपेच बनाऊं। बागो लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरणा बिरचाऊं। पटुकासरसबैंगनी रँगको हसली हेम हूमेल घराऊं। गजमोतिनके हार मनोहरबनमाला लेउरपहिराऊं। लैदर्पणादेखोमेरेबारेनिरखिनिरखिउरस्न यनसिराऊं। मधुमेवा पकवान मिठाई अपने करलेतुम्हें जिवाऊं। विष्णुदास को यह कृपाफल बालचरित्र हों निशिदिन गाऊं१३८पीताम्बरको चोलना पहिरावति मैया। कनक छाप तापर दियो झीनी इकतैया। सूथन लाल चुनावकी जरकसी चीरा। हसुली हेम जरायको उरराजत हीरा। ठाढ़ी निरखे यशोमति फूलीअँग न समाय। काजरलैढिठुका दियो व्रजजनमुसिकाय। नंदबबामुरलीदई इकतानबजावे। गोइ सुने ताकोमनहरे परमानँदगावे१३९नयन देखुरीगिरिवरधर। सहचरि कहति हितियसहचरिसों प्रेममुदित प्यारी राधावर। भूषित भूषण अंग मनोहर कनक कान्ति नागरवर। चितवत रहत विश्वयुवतिनके सर्वसु देत उदार कमलकर। उपमा काहि देउँ को लायक बरनोकहा किशोर बैसबर। सुरतसंत लटकत व्रज आवत कृष्णादास बड़भागकलपतर १४० राधे बसन श्यामतन चीन्हो। सारँग बदन विलास विलोचन हरि सारङ्ग जानि रतिकीन्हो। सुधापान करके नीकीबिधिरहेउ शेष मुद्रा फिरिदीन्हो। सूरसुवेष आहिरति नागर भुजआकरष बामकर लीन्हो १४१कमलमुख देखत तृप्ति न होय। यहकहाजाने बात सुहागिनरही निशा भरसोय। ज्योंचकोर चाहतउडराजे रही चंदमुखजोय। नेकु अकोर देति नहिं राधे चाहति पियहि निचोय। हरितो अपनो सर्वसु दीनो एकप्राण वपुदोय। भजन भेदन्यारो परमानँद जानत बिरला कोय १४२ कमलमुख देखत कौन अघाय। सुनरी सखी

लोचन भूलि मैं मुदित रहे अरुझाय । मुक्तामाल लालउर ऊपर मनुफूलीबनजाय । गोबर्द्धनधर अंगअंगपर कृष्णदास बलिजाय १४३ गा.ई कौनगोपकेये दोउ नागर ढोटा । इनकी बात कछु कहत न आवे गुणनिबड़े देखतकेछोटा । अग्रज अनुज सहोदर दोऊ गौरश्याम शोभित शिरचोटा । सतदामबल उभय सुरतकी लीला ललित सवेंनिधि गोटा १४४तेंमेरीलाज गँवाई हो यशुमतिके ढोटा । देहविदेहकी ह्वैगई शिथिल धुंघटओटा । कमल नयन तुम कुवरहो हलधर ते छोटा । छौ नकछील रूपमें भई लोट कपोटा । श्री गोपाल तुमचतुरहो हम मतिकी मोटा । परमानन्द सो जानहीं जोहिप्रेम कि चोटा१४५ ॥ राग बिलावलगुंड ॥ सब गजराज कीसीचाल । भुजवर दंड शुंडकीशोभा हरि लीनी नँदलाल । चूरन कच कुंचित अनेक अंकुशा से लटकत भाल । चँवर चार अवतंस मंजरी मदकन श्रम जल जाल । गंधअंध आवत अलिघेरे गुंजत मंजु रसाल । मोरपक्ष फहरात बात वश जनो झलकतहै ढाल । धातु विचित्रबनी तनशोभा गलगलदा बनमाल । कटिकृत घर्मदाहदाहत है रदन कटाक्ष बिशाल । घनन घनन घंटिका रुणित कटि उपजत शब्द सुताल । खनन खनन संकलसे नूपुर बाजत लजत मराल । युवती हृदय सरस सरसिज में अनुखेले बहुकाल । मानो अंग अंग लपटाने उनके मनसे बाल । मुरली रवगुंजार सुनतही कांपत चित व्रजबाल । रस रूसनो गदाधरयों भयो बनबेली बेहाल १४६ ॥ राग सूहाबिलावल ॥ आजु शिंगार निरखि श्यामको नीको बन्यो श्याम मनभावत । यह छबि तनहि लखायो चाहत कर गहिके नखचन्द्र दिखावत । मुख जोरे प्रतिबिंब बिराजत निरखिनिरखि मनमें मुसकात । चतुर्भुज प्रभुगिरिधर श्रीराधा अरस परस दोउ रीझ रिझावत१४७ प्रातसमय नँदनंदन श्याम आवत देखे कुंजगली । नव घनश्याम तरुणि दामिनि मिलि राजत रूप अनूपअली । लटपटि पागशीशकर मुरली लोचन घूमत भांतिभली । शिथिलित चोर मरगजी अँगिया काम कामिनी देह छली । चारयाम निशि जागत बीती उरउमँग्यो अनुराग बली । कज्जल अधर नयन रँगबोरी मदन नृपतिकी सेनदली । सूर बदन पंकज रसपीके अलक मधुपकी पांति चली । प्रफुलित प्रीति परस्पर देखियत तरनि

उद्वैर्धां कमलकली १४८॥ राग गावकूरो ॥ देखुरी हरिके चंचल नारे। कमल मीन कहँकहां सोकहि खंजनहून जात उनहारे। वै देखियत अति कुटिल भ्रुव ऊपर कौंचित अलक मनो अलिवारे। बिडरत भजत सकुचत ज्यों हूं छांडि रथ जनु शशाङ्क शोभा लागरडारे। वेदे निमिष लसत मुरलीपर करमुख नयनबंक भयचारे। मनो जलरुहसों बैर तजे विधु करत नाद बाहन चुचुकारे। हरिको रूप सकल ब्रजमोहन सबयुवती जन प्राणधनवारे सूरसखी निजरही चिते तन मन क्रम वचन चित अनत न टारे १४९ ॥ राग सूहाबिलावल ॥ बनेहैं बिशाल कमलदल नयन। ताहू में अति चारु बिलोकनि गूढभाव सूचित सखिसेन। बदन सरोज निकट कुंचित मनहुँ मधुप आये रस लेन। तिलक तरुण शशि कहत कछुक हँसि मोहन मधुर मनोहर बेन। मदन नृपतिके देश महामद बुधिबल बसिन सकतहैं चैन। सूरदास प्रभु दूत दिनाहिं दिन पठवत चरित चुनौती देन १५० मनोहर नयन की यह भाँति। मानो दूरि करत बल अपने शरद कमलकी कांति। इन्दीवर राजीव कुशेशय जीत सबैगुण जाति। अति शोभा आनंदकन्द दुग फूले दिन अरु राति। खंजरीट मृगमीन बिराजत उपमाको अकुलाति। चितवनि चारु बिलोकनि चंचल सकोचित न समाति। अन्तर करत निमिषलों अन्तर युगनि समान बिहाति। सूरसखी अति रसिक राधिके निमिष करे अनखाति १५१ राग बिलावल ॥ आलस्युत देखियत जो भामिनी। राजतहैं रतनारे नयननि पियसँग जागतगई यामिनी। बांह उठाय जोरि जम्हानी ऐंड़ानी कमनीय कामिनी। भुज छूटत छबि यों लागत मनु दूटि भई है तूक दामिनी। कुच उतगपर रची कंचुकी शोभित त्रिवली उदर श्यामिनी। मानो मदन नृपतिके तम्बू हरिमन जितयो राधिका नामिनी। बिथुरी अलक शिथिल कचडोरी नखक्षत कुरिक्र मराल गामिनी। द्विगुणा सुरति करि श्रीगोपाल भजि प्रमुदित विद्यादास स्वामिनी १५२ जो रस रसिक कीरसुनि गायो। याही रस सराहत निशिवासर शेषसहस सुखपार न पायो। गावत शुकनारद मुनिशारद कमल कोशस्थ तउन चखायो। तरनि तनया तटनिकट बंशीवट वृन्दावन वीथी न बहायो। सो रस रसिकदास परमानँद लैराधा उरबीच दुरायो। यद्यपि रमा रहत

सूरश्याम नर निगमनि अगम अगाध बताये १५३ आनँद के निधि नन्दकुमार। परब्रह्म नरभेष नराकृत गोकुल लीना अवतार। ब्रजनारि आनँद लोचन आनँद मनमें आनँद आनँद मदीन। गोकुलआनँद गोपिन आनँद आनँद यशुदा आनँद सूरति। सब दिन आनँद धेनु चरावत बेणु बजावत आनँद कन्द। खेलत हँसत कुतूहल आनँद राधापति वृन्दावनचंद। शुकमुनि आनँद भक्तन आनँद निज जन आनँद हासविलास। चरणकमल मकरंद पानकरि अति आनँदपरमानँददास १५४ सेवा श्रीगोपालकी सेवत भावे। मनसा वाचा कर्मना उर आन न आवे। करि दंडवत सनेहसों सनमुख शिरनावे। लोचन भरिभरि भावसों हरिदरशन पावे। प्रेमनेम निश्चयकरि हरिके गुण गावे। यहप्रताप फल परशुराम हरि भक्त कहावे १५५ अहन होय जैसे माखनचोरी। जातकिते मल बांह छुडाये सूसबन कम्पति सब गोरी। तबलिख जिनन कुमार कान्हतुम अपने आन हमहुँ गति थोरी। अजभय कृपाल किशोर कान्हतुम हमहूँ सजगासमान किशोरी। नख शिखसे चितचोरि सकल अँगचोन्हे परकत करत मरोरी। सकसुनि सूर हरेउ मेरो सरबस अरु उलटो डोलों सँग डोरी १५६ ब्रजमेंखिलेलन जात बलैया। जबहीं मोहि देखि लरिकनसँग तबहिं खिझावत है बलभैया। मोसों कहत तात वसुदेवको देवकी तेरी मैया। मोललयो कछुदेत वसुदेवहि करिकरि यतन बड़ैया। अब बाबाकहि कहत नन्दको अरु यशुमतिसों मैया। ऐसे कहिकहि मोहिं खिझावत उठतमोहिं रिसिमिसैया। पाछेनन्द सुनतहें ठाढे तब हँसिहँसि उरलैया। सूर नन्द बलरामहिं हटक्यो सुनिमन हरष कन्हैया १५७ माखन खात पराये घरको। नितप्रति सहस मथानी मथिये मेघशब्द दधि माट घमरको। कितक अहीर जिवत घरमेरे दधिमथि लेत मखन को मटको। नवलख धेनुदुहत जिनकोनित बड़ोनामहै नन्दमहर को। ताके पूत कहावतहो तुमचोरी करत उघारत फरको। सूरश्याम तुम कितनो खैहो दधिमाखन मेरे जहँ तहँ ढरको १५८ नन्दघरानिसुत भलोपढायो। ब्रजवीथिनपुरघरनिघरनिमें बाटघाट सब शोरमचायो। लरिकन मारि भजत काहूको दधिदूध लुटायो। काहूके घर करत भँडाई मैंज्योंत्यों

झरि पकरि गुपायो। अबतो याहिजकरि कारिबांधो इनसब तुम्हरो
गाँउभजायो। सूरश्याम भुजगहि नँदरानी बहुरि कान्ह अपने हित
लायो ९५९ लालनवारी तेरेया मुखऊपर। माईमेरी दीठि जिनलागै
कबहुँसति बिंदुकाधी भूपर। सरबसु मैं पहिलेही दियो नान्हीनान्ही
दंतियां दूपर। अबकहा सूरकरो न्याछावर आपनेहो लालन लटूपर
९६० जब नँदलाल नैनभरि देखे। इकटक रही सँभार न तनकोमोहन
सूरति पेखे। श्यामबरन पीतांबर काछे अरु चन्दनको खोर। कटि
किंकिनि कलराव मनोहर सकल त्रियनके चितकेचोर। कुण्डलझ-
लकपरत गंडनिपर आइअचानक निकसेभोर। श्रीमुखकमल मंदमृदु
मुसकनि लेतकरयिमन नंदकिशोर। मुक्तमाल राजत उरऊपरचितयै
सखी जब इहिओर। परमानंद निरखि अँगशोभा ब्रजबनिता डारत
तृणतोर ९६१ बांधोंआज तोहिको कोरे। बहुत लँगरयो कीनीमोसों
भुजगहि अब ऊखलसों जोरे। जननी अतिरिस जानि बँधाये चितैब-
दन लोचन जलढोरे। ऊखलसों कटिसोंगहि बांध्यो दाम बहुत सब
तोरे। यहसुनि ब्रजयुवती सब धाईं कहतिकान्ह अब काहेन छोरे।
सूरश्याम को बहुत सतायो चूकपरी हमते यह भोरे ९६२ कहा करो
हरि बहुत खिझाई। सहिनसकी रिसहीरसमें भरिगइ दईबहुत ढीठयो
जुकन्हाई। मेरेकहे नाहिं यहमानत करत आपनीटेक। भोर उराहनो
लैलै आवति ब्रजकी बधूअनेक। फिरत जहाँ तहँ धूम मचावत घर
नहिं रहत सचेत। सूरश्याम त्रिभुवनके कर्त्ता तासों यशुमति कहतअ-
चेत ९६३ यशोदा तेरो मुखहरि जोवे। कमलनैन हरि हलकनिरोवे
बंधनछोरिरी जननीजसोवै। जोतेरोसुत खरोरीअचगरो आपनीकोख
कोजायो। कहाभयोजोघरकोढोटा चोरीमाखनखायो। तुरत दोहनी
दहि को जमायो जाखन पूजन पायो। ताघर देव पितर काहेको जा
घर कान्हर आयो। जाको नामलेत अघ भाजे कर्म फन्द सब काटे।
सोइहरि प्रेम दावरी बांधेजननी सांटिलिये डाटे। सूरदासप्रभु भक्तहेत
हौं देहधरे तुमपाये। दुखितजानि दोउसुतकुवेरके तिनहित आपबँधा-
ये ९६४ आहुचली अपने अपनेघर। तुमसबोहन मिलित ढीठऋयो यह
अभआई बंधनकोरन बर। मोको अपने बाबाकीसों कान्हहि अबनप-

ल्याउँ। भवनजाहु अपने अपनेसब लगत तिहारे पाउँ। मोको जनि बरजोरीकोऊ देखो हरिके ख्याल। सूरश्याम सोंकहति यशोदा बड़े नन्दकेलाल १६५ तबहिं श्यामइक बुद्धि उपाई। युवतीगई घरनिसब अपने गृहकारज जननी अटकाई। आपुनगये यमल अरजुनतर परसत पात उठे झहराई। दियेगिराय धरणि दोउ तरुवर तबकुवेरसुत प्रकटे आई। द्वैकरजोरि करतदोउ अस्तुति चारभुजा तिन प्रकट दिखाई। सुरधन्य व्रजजन्मलियोहरि धरणीकी आपदा नशाई १६६ धनिधनि भेनि ऋषि शापहि पाये। आदिअनादि निगमनहिं जानत सोहरि प्रकट देहधरि आये। धन्य नंद धनिमात यशोदा धनि आंगन जहँभौंन खिलाये। धनश्यामा जहँदाम बँधाये धनिऊखल धनिमाखन खाये। दीनबंधु करुणानिधान प्रभु राखिलिये शरणागत आये। सूरश्याम के चरण शीशधरि अस्तुति करि निजधाम सिधाये १६७ कौनमेरे आंगनहूँ जुगयो। जगमग ज्योति वदनकी माई सपनोसो जुभयो। हो दधिमथति भौन हौंन सजनी लेनुगई जु मथानी। कमलनैनकौनाईचितयो वह मूरतिमें जानी। करनहिं चलत देहगति थाकी बहुत खेदमें पायो। परमानन्दप्रभु चरणशरण गहि रहती कित गृह आयो १६८ नन्दके लाल हरेउ मनमोर। होंअपने मोतिनलर पोहति कांकरडारि गये सखिभोर। बंकविलोकनि चारु छबीली कुटिल कमान भौंह कीकोर। कहूँ काकोमन रहे श्रवणसुनि सरस मधुर मुरलीकी घोर। शशोविचित्र वदनके कारण तरसतहैं हग विहँग चकोर। सूरदासप्रभुके मिलिवेको कुचश्रीफलहो करत अकोर १६९ इन नैननिसोंमानोहारि। अनुदिनही उपरांत आनरुचि बाह्लीसब लोगनसों रारि। तदपि निडर चलिजात चपलदोउ घूघटसघन कपाट उघारि। निगम ज्ञान प्रतिहार महाबल लाज लकुटकर रहत निवारि। श्री गोपाल कौतुक मनअर्पी तबते चतुरनि भई चिन्हारि। सूरदास लोभनिकेलीने शिरपर सही जगतकी गारि १७० सखीहो जागते कोऊ दिग नाहीं उठिलागी अकुलान। मैंजान्यो सांचहि मिले माधव भूलिरही अनुमान। नींदहिमें मुरझाई मदनहो राखी प्रथम पंचसंधान। तामें तिमिर माईरी चपलछूटे छबिबान। कुरगाक्षि जैसे लक्ष्मणात

वहत्रवाको कछु आनन्द्यान । न्याऊं सजीवनमूरि मुकुटहि ज्योंनिरहै
तवप्रान १७२ रहीरी रथारिवि थावन मदमाती । मेरे कान राधे सं
लालहिं कंतले लगाय लखावति छाती । खवीजतते आवहीं राखेहैं ना-
न्हीनान्ही ओंठ दूधकि दाँती । खेलनदे घरजाहिं आपने डोलत कहा
फ्लो नलराली । उठिचली खारिवि लाल लगे रोवन तब यशुमतिलाई
भटुभाँती । परमानंद ओटदै अंचल फिरिआई नैनिन मुसकाती १७२
गावतगोपीमधुमृदुवानी । जाकेभवनवसत त्रिभुवनपति राजानंदयशोा-
दारानी । गावतवेद भारतीगावत गावतनारदादिमुनिज्ञानी।गावतगुण-
बकालगयागंध्रव गोकुलनाथ महातमजानी।गावत चतुरानन राजआनन
गावतशेष सहस मुखरासाम-आम वचनप्रीति पदअंबुज अबगावतपर-
मानँददास १७३ आगमन मिलिलागे दुखदैन । अपनि पियाजना कहा
कहौसखि विधना कियोकुचैन । लोचनभँवर भये उड़िबेको मदनक-
मल मधुलैन ।काननेसु व्रतलियो सुननको विनावदन विधुबैन । नासा
श्वसत वचननहि निकसत मनन करत कछुसैन । पगनि चलत इकपेड़
नाठिके तनपुर पराउमैन । अबलयाऊं व्रजनाथ निकटतेहि नीगांइके
सबै सहैन । सूरनिसथ समहात युगहियुग क्योंनिरमाऊरैन १७४ यह
चित कितकु आनि अटुराय ।तुमजुचले हम अबलनि पैते तरकिबांह
छिटकाय । कहियतहै अति चतुर सकल विधि जानत अवर उपाय ।
सोजानो जो अब रकोछिनु मको हृदयते जाय । सूरदास स्वामी श्री
पतिको भावत अन्तरभाय । सहि न सके रतिवचन उलटिहँसि लीनी
कंठलगाय १७५ श्यामातू अति श्यामहिं भावै । बैठत उठत चलत गो
चारत तेरोइनाम लैलै गावै । पीतपीत सुमन भूषणसाजि पीताम्बरउर
लावै । चन्द्रवदनि सुनिसोरचन्द्रिका शीश सुमुकुटबनावै । अतिआस-
क्त दरश संभ्रममिलि श्याआंग सचुपावै । विछुरत तोहिं क्वासिरावेक-
हि कुंजकुंज प्रतिधावै । तेराध्यान धरेतन निरखत बामर विरह न-
शावै । सूरश्याम रसराम रसिकमणि कैसेअंतर आवै १७६ मानिमा-
नवो सोनरही । मकुच समेत सखीओट आतुर ननकी गैलगही । विधु
मुख निरखि भंदकर लोचन पुनिविधु वदनचही । दरशपरश तदरू-
प आजुनिज भुजिमनल लेखिकही।पहुप सुरँग सारँगरिपु ओढ़िदिय

बन चतुरसखी। पानि सपरवान सोभा परस्पर मुसकाने तबही। तिन
तोरे ऽ दिन जात जितगुवा काढनि देखमही। सूरश्याम बहुरों मिलि
बिनसहु जाति अटलि अबही १७७ प्यारीदिन दूलह हो नंदलाल।
राधिकाविकाय तहांवने जहँ बनदु तही ब्रजबाल। गांधिनपाग यतिड-
ग्रसंगहो वसनसरगजे गातसो। मिलहो तुमरसभरे मानोउ धातमये जागेरा-
तो। नयननलोहे घूमरेहो चितवत चितहरिलेत। आईभगवानहितरासराय
प्रभुहँगत बधाईदेत १७८॥ रागकल्याण॥ सखीललीपुरनप्रकास्योहेहु। देखि
आननिपरपरखरे ताहिकहतसोपालहे। ब्रजबीथिन ब्रजपुरबलोहो
अहाँ तहाँहरिनाम। सगभाई समुझेनहीं ताहिसिखदेतिथकोगाम।
लज्जाहारि तरंगिनीहो गुरुजन बहिरोवार। दुहुकूलनि परमिल नहीं
ताहितुरत न लाईबार। सरितानिकट तडागकेदोनेकूलनिबदार। नाम
गिर्‌यो सरितामई अबकोनेनिवारैवार। दीपकतो मंदिरजरै होबाहर
लखै नकोय। तापरसत प्रजुलितभई अबगुन कहांतेहोय। पानकिये
ज्योंबारुणीहो मुखबोलतनसँभार। घरनिघरतपगडगमगे वाकोबिथुरी
अलकलिलार। कौनसुनेकासोंकहोंहो कौनेसुरतिसकोच। कौनेडरपथ
अपथको अबको उत्तमकोपोच। बिधुभाजनओछोरह्योहरिशोभासिंधु
अपार। उलटिसगनतामैभई अबकोननिकारनहार। चितचुरायो नंद
केहोसुर सोमधुरबजाय। तिहिलज्जायुगलाजियेसोलज्जागईहैलजाय।
प्रेमसगनभईग्वालिनीहो सूरदासप्रभुसंग। अवशानयनमुखनासिकाहो
ज्योंकंचुकी भुअंग १७९॥ रागबिलावल॥ कहाकरों बैकुंठहिजाय। जहां
नहीनंद जहँनयशोदा जहँनहिंगोपी ग्वालनगाय। जहँनहि जल यमुना
कोनिर्मल औरनहींकदमनकी छाय। परमानँदप्रभुचतुरग्वालिनी ब्रज
रजतजि मेरिजाय बलाय १८० अद्भुत एकअनूपमबाग। युगलकमलपर
गजबरक्रीडत तापरसिंहकरतअनुराग। हरिपरसरवर सरपरगिरिवर
गिरिपरफूलेकंजपराग। रुचिरकपोतबसततताऊपरतापरसकअमी फल
लाग। फलपरपुहुपपुहुपपरपल्लव तहांरहतशुकपिकमृगराग। खंजन
धनुष चन्द्रमा ऊपर तहांबसतइक मणिधरनाग। यहमरबिरसहोतनाहिं
कबहूं शोभाछिनहु करतनहिंत्याग। सूरदासस्वामिनीरसिकबर तुवहित
बाक्योसिंधुसुहाग १८१ ललितकथाइककहौंलडैतेनेसरुकुसुमहूछांडिदे

आरि। सूरजनअ नृपति दशरथके भयेसुभट सुंदरसुतचारि। तामेंबड़ो
रामचन्द्र राजा जनकसुताजाकेवरनारि। पंचवटीको चलेराजतजितात-
तवचन माथेपरधारि। श्रीवैकुंठनाथधरनीधरविहरत वनतापनअनुहा-
रि। मारेकुटिलमदलराक्षसअतिकानतबमतनिघन सघटारि। कपटरूप
रावणासीताको लेगयोलंक सिंधुकेपारि। जानकिहरणासुनतसूरजप्रभु
चौंकिउठे लियोधनुषसम्हारि॥१८०॥ सुनसुतएककथाकहुँप्यारी। कम-
लनयन मनआनंद उपज्योरसिक शिरोमणिदेतहुँकारी। दशरथनृपति
हुतेरघुवंशी तिनके प्रकटभयेसुतचारी। तिनमेंरामएकव्रतधारी जनक-
सुता ताकेवरनारी। तातबचनमानि राजतज्योहैभ्रातासहितचलेवन-
चारी। तिनउठिजाय कनकमृगमारेउ राजिवलोचन केलि विहारी।
रावणाहरणासीयकोकीनो सुनिनंदनंदननींदनिवारी। परमानंदप्रभुचा-
परहतकरलछमणदेहुजननिधुमभारी॥१८३॥ अथव्याहखेलराग बिलावल ॥अहो
मेरीप्राणपियारी। भोरहिखेलनकहांगईरी। कौनकुमकुमभालतिलक
किनकीनो। किन मृगमदको बिन्दादीनो॥उत्तर॥वैराजु मृगमददियो
माथे निरखिशशिमंशगपरेउ। इकशरदनिशिको कलापूरणा मानमद
दर्पउहरेउ। हौंरसुखहँसि कहतिजननी आनकजेनौकिनगुहै। सूरकेप्रभु
मोहिअचरजरचीकिनमनमथमई। नन्दमहरघरनीयासोहे। अरीबदन
जुफिरिफिरि जोहे। खेलतबोलि निकट बैठारी। कछु मनमें आनंद
कियो भारी। मनमें जो आनंद कियोभारी निरखि सुत विह्वलभई।
बवाजुकोनामबूझेउ तोहिहँसि गारीदई। पाटीजो पारिसँवारिभूषण
गोदमें मेवाभरी। सूरकेप्रभु हरषिमनमें विधनासों बिनती करी। यह
सुनि बात कीर्त्ति मुसकानी। मैं नँदरानी के जियकी जानी। मेरी
सुताहै रूप कि राशी। वे तो कान्ह बनबसी उदासी। कान्ह उदासी
बनोबसी रंग ढंग यह कावने। कनक मणि हीरा रत्न अमोलिक
कांच कंचनक्योंसने। ललिताविशाखासों कहेउझांकि लगीताजि तुम
कितरहो। सूरकेप्रभु तनयाकिर मानिमानिदीजोकही। दिन दशपांच
अटक जब कीनी। कुँवरिको कठता दिखाई दीनी। सुरझिपरी तन
सुधि न सम्हारे। कुंवरि को डसी भुजंगम कारे। कारे भुजंगम डसी
प्यारी गारड़ू हारे सबै। इक नन्द नन्दन मंत्र बिनु अलियह बिष

राख्यो नाहिं रबै। मनुहारि करि मोहन बुलायो सकल विधि देखतन-
मे। सूरके प्रभुजोरि अविचल जियो युग युग सनबसे। बिहँसि उठी
तन बदन पखारेउ। निरखि मोहन तन झँवरा सँभारेउ। फुरि बैठी
मनभयो हुलसा। कीर्त्ति गई अपने पति पासा। अपने जु पति पैगई
कीर्त्ति प्रीति रीति बढ़ाइयें। मंत्र कीनो ब्याहको सबसखा मंगलगा-
इये। वृन्दावन में रचेउ स्वयंम्बर पुहुप मंडप छाइयो। सूरके प्रभु
श्याम दूलह राधिकावर पाइयो। विधिवत्तविधि सब कीनी। मंडल
भोरके भांवरिदीनी। विविध भांति कुसुमनि बरषावैं। रहँ भामिनि
मिलि मंगल गावैं। गावैंजु भामिनि मिलिके मंगलकहइँ कंकन छो-
रहु। ऐसे नहीं गिरि उचकि लीनो लाल हँसि मनमोरहु। छोरेउ न
छूटे डोरना यह प्रीति रीति अनसन भई। सूरके प्रभु युवति जन मिलि
गारि मन भावति दई १८४ जिन व्रत धरिके देवी पूजी। तिनके मन
अभिलाष न दूजी। होंवै नन्दसुत होइ पति मेरे। जापे होय अनुग्रह
तेरे। करि अनुग्रह बर दियो जब बरष भर तों तपकियो। त्रैलोक
सुन्दर परम श्यामा शीलगुण नाहिंनखियो। उबटि खोरि शिंगार
सखियनि कुंजचोरी आनी। बरषभर जाको तपकियो सोघरी बि-
धिना आनी। मुकुट रचिके मोर बनायो। सो माथे धरि हरि बर
आयो। तनसांवरहे पीतदुकूले। जो हरदेखि घन दामिनिभूले। दामि-
नीघन छबिकोटि वारौं जब निहारों मुखछबी। कुण्डल बिराजत गंड
मंडित नहिं न शोभाशशि रवी। याछबि की उपमा को नाहींसकलहैं
गुणजाहीं। मानो मोर निर्त्तत संग डोलत मुकुटकी परछांही। गोपी
न्योते आई। मुरली धुनि पठेजु बुलाई। तहँ सबमिलि मंगल गाये।
बहु विधि फूलन मण्डप छाये। छाये जु फूल निकुञ्ज मण्डप पुलि-
नमें बन्दीरची। बैठे श्री श्यामा श्याम बर त्रैलोक की शोभा सची।
इत कोकिला गण करे कुलाहल उत सकल ब्रजनारी। आईंजुन्योते
दुहू दिशाते देत आनन्द गारी। रासमण्डलमें सब भुजजोरी। हरिहैं
सांवल राधा गोरी। पाणिग्रहण विधि जब कीनो। मण्डल भरि
भांवरी दीनो। दीनो जो भांवरि रासमण्डल प्रीति गांठि हृदय परी।
शरदनिशि पून्यो विमलशशि निकटछन्दाशुभघरी। गायगीत पुनीत

सखियनि बंदनाच मंगल सुनी । इत नन्दसुत वृषभान तनया रासमें जोरी बनी। मन मन मैन बराती । द्रुमफूले अनगन अन भांती । बन्दी-जन हरि यश गावें । मघवा बहुबादित्र बजावें । बाजे सु बाजे सकल नभसुर पुष्पअंजलि बरषहीं । सुनि दिवट व्योमनि मान दीपक जैसे मधुकर हरषहीं । सुनि सूरदासहि भयोआनँद पूजीमनकीआसा । श्री नन्द नन्दनलाल दूलह दुलहिनी श्रीराधा १८५ श्रीललिताजूके आजु बधायो श्री वृन्दावन ब्याह रचायो । आली न्योति पठाई । वे मंडल निधि न्योते ल्याई । ल्याईंजु न्योते साजि सखियनि मंडली अद्भुत रची । बांधि बन्दनवार चहुँ दिशा ब्याह बिधि बेली रची । सकल देवी पूजिललिता हरषि अति आनँद भरी। नवल राधे दुलहिनी को दूलह। बर पायोहरी। देवी बहु भांति पुजाई। बिधना बहुबिधि आ-शिषलाई। सोइराधे जिनहरि आराधे। प्रेमलगन सोइहरि मँगसाधे। साधि हरिसँग लगनललिता हरषि मंगलगाइयो । बिबिध कुसुम बिचित्रसों रचिमहा मंडप छाइयो। उबटि राधे दुलहिनी तन श्याम केउपटनकियो। शृंगार करि शिर गूंथिसेरी मुकुट मोहन के दियो। करसोंकरजोरि बैठाये। भांवरि देदै हँसिके फिराये। तबहँसिललि-तादइहैबधाई। बेलीफूलीअँगनसमाई। फूलीअँगनसमाइललितारंगभरि अँगअँग रहो। याब्याहको रसरीति सखिरी जातिनहि मोपैकहो। धनिधनि दिन यहराति धनि धनिधनि निजकुल शुभघरी। धनिधनि नंदकुमार दूलह दुलहिनी राधावरी। दूलहको होतसयानो। श्रीराधा जूके रूपलुभानो।छिनएक बिलंब न कीजे। आंचरसों जोरनोकरही-जे। कियेअंचरा जोरनोमिलि सखी चारुगोने किये । करि दिये कुंजप्रवेश दोऊधन्य ललिता कहियो। नवलसखी अनेक छबिपर वारने हों बलिजाई। आजुअचल सुहागकी कछु जात नहि मोपैकही १८६ ब्रजदूलहकी सुघरगोरी। बिधना मानो सांचे ढोरी। वाको लल-लितबदनमन मोहै। श्रवणकपोलचमकिचितपोहै। वाकेलोचनचंचल तारे। मानो बेनदीप उजियारे। वाके कानन की छबि ऐसी। काम कतरनी चंचल जैसी। वाके दन्त बतीशो हीरा। जीभ ललित रवाये मानोंबीरा। वाके अरुण अधर अतिदीसे। फलभरे जब हरेहरेहीसे।

फरावकरें सुर्दमहीमत हरषि आतिसुखपाइये । कैवैनन्द नन्दन प्राणपति कौसुघरथौरी गाइये । वाकेकेश आरसुढ़ार मनौ अकुलनौ दिवराई । सिर विराजत मनहु मावन मामसँ कूली आई । वाकी पीठको छिन सोहि लागो मिगिरनी मोही पूठी । भिलमिलाम प्रतिबिंब लापरमानो मैन घटाउठी । वाकौ पूंछ चवर अतिपाई । मनमथ मानो सांधे धरि काढ़ी । वाके कंचन नाल बनाये । चरवा धारवा चन्दा चलिभाये । वाके चारोम्बुर अतिभ लकें । दृग निरखत लागेंनहिं पलकें । वाकी कमल कबी नी काती । मवमल कीसी पमम सुहाती । वाकीचाल बिचक्षणा सोहे । देखतही सबके मन मोहे । वाके नर्वशिष रूप सुहायो । मवमली उर तान बनायो ॥ मखमली उरतान भलमलो पर रतनजटित लगामजी । जीनपरम प्रवी । जगमगे मनो मूरति कामजी । असवार नन्द किशोर दूलह निसमबहिन के हरें । हरषि राई लोन वारें आरती यशुमति करें । धनिमन्य यहसुखश्याम घन प्रभु सूरनि आतिसुखपाइये । मेरेनँद नन्दन प्राणपतिकी सुघर घौरीगाइये १८७ झूलतिजननीकहँहुतीप्यारी किनयहभागिलककरुचिदीन्हों किनकच गूथिमांग सिरपारी । नन्दघरनि यशुमति कहियतहैं सांसो कहेउ हमारी आरी । तिलचावरी मेलि गूंभा में फरिया फारि दई मोहिं भारी । मेरोनाम बूझि २ बाबाको तेरोनाम बूझिदईहांसिसुगारी । मोतनी चितैचितैढोटातन कछुमबिलातनओलपमारी । बोलिलिये वृषभान भावती हँसि हँसि बातें बूझि दुलारी । सूरदास रससिंधु बढ़्यो अति दुरुपति मनमें यहैविचारी १८८ ॥ अथकुञ्जमंगल । रागबिभावल ॥ सैयंश्रोसोई उठि फरकत बाहु सुलोचन बाम । सुन्दर शगुनभये आज सखिमेरे सुन्दर श्याम ॥ छन्द ॥ श्यामसुन्दर आइके रहसाइके थारे गाइ हैं । देआलिंगन प्रेमसों मनसुख समूह बरषाइहैं । सखिहिमन हुलसाति अतिही प्रेम पुंज बढ़ाइहैं । पूरण करिहैं मनोरथ सब आय संग लगाइहैं । भूषण बिबिध रचे अंग अंग प्रति कहे न जाई । कंचुकिकसि औ लई श्याम अंग भलके अधिकाई । अधिकाइ भलके सुरँग चूनरि लालरंग सुहावनी । पीत लहँगा बन्यो अतलस देखि मनको भावनी । दोउ जो लोचन आंजि सूक्षम नयन सेन बनावनी । दूरी दुहूं कर पहरि हरी

सुघरम फाब फबावनी । बेनीसुभग गुहीसुगन्ध तेल लगाइ के [illegible] । सबहिं बनाव कियो जाते हरन होय मन पीके । पीय के मन हरीं जैसे ऐसी मोतिन मांग भरी । टीका बनी बहु परम सुन्दर जटित नग जग मग करी । बेसरि रुचिर नासा बिराजै बनिक बनी अति कण्ठ सरी । हार हाटक जटित नग सब चलत मोती थर थरी । फूलन सेज रची परम मृदुल पयफेनु समान । तकिया रुचिर धरै गलमसुरी मानहुं म्नन्द भान । चन्दभानगम गलमसुरी मानों देतशोभा अतिघनी । चादर बिछाय लगाय सौरभ बहुसुवासन सोसनी । इहिबिधि मनोहर साजि बैठी महासुभट कंचनतनी । हुलसाति पुलकित मनहिंमनमें आइहैं त्रि-भुवनधनी । फूलहार जो धरीअपनेहाथ सुधारिसंवारो । नवलसाँवरु रूप बनीमनमथ कोटिदेउं बलिहार ॥ बलिहारि मनमथ कोटिकबिपर और उपमालाजही । छिनभवन छिनबाहर बिलोकति साजसबबिधि साजहीं । मुसकाति मनमन बिवशहैकै अद्भुत छबिछाजही । मंजुल मनोरथ करैति मनमन आइहैं पियआजही । प्राणपति आइगये नि-रखलही भईदीठ ठाढ़ी । हृदयलगाय लईआनन्द लहरि उमँगि अति बाढ़ी ॥ बाढ़ी जु आनन्द लहरि बहुबिधि श्यामसुन्दर बशपरी । रति-केलि भोगविलास सबनिशि जागियाकेसंगकरी । जोगाइहैं यहरास-कलीला परमरस आनन्दभरी । कहिसूर वाके सबमनोरथ पूरि हैं सबुहाहरी १८९ ॥ श्रीयमुनाजीकेपद ॥ रागबिलावल ॥ श्री यमुना करुणामई बिनती सुनिलीजै । दरशनते पावन सदा सुमिरत अघछीजै । मंजनसुख जलपावनी मनशुध करिलीजै । गावत वेदपुराण में यमते सुखलीजै । भावभक्ति बरदानहीं मोकोबर दीजै । श्रीबिट्ठल गिरिधरन के गाउ-गुण रसभीजै १९० श्रीयमुना गोपालहि भावै । जेयमुनाके दरशन-कीने कोटि जनमके पापनशावै । जे यमुना स्नान करत हैं धर्मराज लेखो न गनावै । जेयमुनाजलपान करतहैं बहुरो संकटओर न आवै । पद्मपुराण कथा सबऊपर धरणीसों बराह यशगावै । तेतीरथ येप्र-कट जगत में परमानन्द प्रसादेपावै १९१ ॥ श्रीगंगाजीकेपद ॥ रागबिलावल ॥ परमेश्वरी देवी सुनिबंदेपावन देवीगंगे । बामनचरणकमल नखरंजित शीतलबारितरंगे । मज्जन पानकरत जे प्राणी त्रिबिधताप दुखभंगे ।

सोरथराज प्रयाग प्रकट भयो जबबनी यमुना बेणीसंग । भगीरथराज
सागर कुलतारन बाल्मीकिकथगायो । तबनलाप हरिभक्त प्रेमरस ज-
लमग्नआनन्द पायो १९२ ॥ आरती रागबिलावल ॥ बाती कपूरकी ज्योति
जगमगे आरती बिट्ठलनाथ बिराजे । घंटा ताल पखावज आवज सप्त-
सुरनि नादसमाजे । याछबिकी उपमा कहाकहों कोटिकाम निरखत
लाजे । श्रीवल्लभ प्रेमप्रताप भरेनित आनन्द मंगल गोकुल गाजे १९३
श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम रूप । सुन्दर नयन बिशाल कमलसंग मुख मृदु
बोलत बचन अनूप । कोटिमदन वारों अंगअंग पर भुजमृणाल अति
परम स्वरूप । देवीजी बहुबारता प्रकटी दासप्रारब्ध लक्ष्मण सुतभूप
१९४ रूपस्वरूपश्रीबिट्ठलराय । वेदविदित पूरणपुरुषोत्तम श्रीवल्लभ
गृह प्रकटेआय । लटपटीपाग मयारसभीने अतिसुन्दरसब सहजसुभा-
य । अतिघामि गिरिधरन श्रीबिट्ठल अगणित महिमा कहीनजाय
१९५ श्रीवल्लभ सुत परम कृपाल । सेसेई श्रीगिरिधर श्रीगोविंद बाल
कृपालु नयन बिशाल । महा मोह दोष दुखीजन प्रकटभये यदुवंश
ईश । श्रीयअनेक किये कितारथ कोमलकर धरतपरशीश । जाको
दर्शन सुरनर को दुर्लभ शरणागतको सुलभ अपार । जनमसफलभव
बन्धन छूटे जिन श्रीमुख देख्यो एकबार । श्रीवल्लभ रघुपति श्रीयदु-
पति मोहन मूरति श्रीघनश्याम । जन भगवान जायबलिहारी यकसुनि
जपों तिहारो नाम १९६ धनिधनि माता तुलसीबड़ी । नारायण ले
माथे चढ़ी । जे कोउ तुलसीकी सेवाकरे । कोटिपाप छिनमें परिहरे ।
जेकोउ तुलसीको फेरीदेत । मनुजे जनम सुफल करिलेत । दानपुण्य
मेंतुलसी होय । कोटिकफल पावैनरसोय । जोघर तुलसी करतनिवास।
सोघर सदा कृष्णकोवास । कृष्णदास कहे बारम्बार । तुलसिकिमहि-
माअपरम्पार १९७ ॥ मलार रागबिलावल ॥ यमुनाजल घटभरि चली च-
न्द्रावलिनारि । मारगमें खेलतमिले घनश्याममुरारि । नैननिसों नैना
जुरे मनरहेउ लुभाय । मोहनमूरति जियबसी पगुधरेउ नजाय।तबकी
प्रीति प्रकटभई यह पहिलीभेंट । परमानन्द ऐसेमिले जैसेगुरचेंट१९८
सुन्दरढोटा कौनको सुन्दर मृदुबानी । भेदबतायो ग्वालिनि जायोनंदरा
नी । सुन्दरभालतिलकदिये सुन्दरमुसकानी । सुंदरनयननि हरिलियो

कमलिनिकी पानी । सूरदास तिहुंलोककी यात्रजमें आनी । परमानंद
स्वामीभति सबसुख लपटानी १९९ कमलनयन कमलापति त्रिभुवनके
नाथ । एक प्रेमते भक्तके जो सगहोय हाथ । सकल लोककी संपदा
सांचगो धरिये । भक्तिबिना मानेनहीं जोकेतिक करिये । वा भक्त
वत्सल कहिलहै जोगी चितराग । परमानन्द प्रभुसांवरो पैयत बड़भाग
२०० आवतभोर भये कुंजनते कहुंकहुं अरुझे कुसुम केशनमें । गतिर-
मरस शीशजोहे मारीनन ओ भी भूषण अटपटे अंगअंग छबिदेखियत
सुदेशमें । श्रोप में आपभई बिरह जो तापगई शरदचन्द नहिं रावत
लेशमें । चतुर्भुजप्रभु गिरिधरसंग निशिजागी युवति शिरोमणि घोष
देशमें २०१ सांवरगाजी तिलकुआवो अधरनिरगुथाई सगासगात ।
चपलनयन आलसहि जनावति भौंहभुजंगनि लसलसात । आन के
संग व्बहे चोलीके बन्ददूटे बदनओढ़ीपीत कछुअधरहि भांति । कुन्द
नव रेख बनी किसलय कामतनी मानहुँ कनकघट माणिक कांति ।
पलटियरे पट काहु कहींले बोलत बोलकछू अटपटाति । केश कुसुम
श्रीगोपद नख पूजत चलत मधुर गति डगमगाति । सुरत समर जीत्यो
मदनकुपसितेताहीते श्रविकफूलीअँग न समाति । कृष्णदास स्वामी लाल
लगोबड़े न धारी मंगरति बिलास सुखभले बीतीराति २०२ आईरति
रणजीते भामिनि चांपीकोछ कटितटपटपटक । रिझयो सकलकला
गुणानागर कछुतेरे नैननिमहँ चटक । भलेनख भलेगुणानिमें सखिक-
मलनयन सोरिजदी महटक । ऐसीकही अबहीं आवतिहौं आपुनचली
जहांबस हेरक । डगमग धरणधरत धरणीतल गजमद त्रमत निरखि
गतिकी लटक । चलत भुजंग निरखि भिरबेणी भूषण निरखि भ्रमत
भौंहाटक । मोहनलाल गोवर्द्धनधारी करवर कमल गही तुम्हारो
लट । कामकेलि शय्यापर नचाई कृष्णदास प्रभुसुरत रंगनट२०३ या-
हीपगाते सुनुहोप्यारी तू मोहन गोपालहि भाई । सकलशिंगार साजि
मृगनयनी अवसरभले बेगि चलिआई । लहँगालाल भुमुककी सारी
पचरंग पिरयोलनी बनाई । नवरंग उरतन सुखकी चोली कुसुंभीवरन
पियहेत रँगाई । मृगमद पत्रावलि कुचयुगबिच कुसुमनमाल अनूप
बनाई । करकर शिरस कनकमणि लंकन निरखत रतिपति रहेउलजा-

ई। कृष्णदास स्वामी सुखसागर तामें मखिननमें अरुझाई। मोहन लाल गोवर्द्धनधारी अपनी जानि हँसि कंठ लगाई २०४ ॥ राग बिलावल चर्चरी ॥ सुजुप्रीतमकी भावतीलाल भावती तेरो। मनहीमन मिलिरही कालिंदीकूल किशोरति रगमेरो। हिलग हृदय महँकि जानिये प्रभ-ता दूरिते नेरो। कृष्णदासनि नायकेल गिरिधर पायो रसिक सुखके री २०५ ॥ रागबिलावल ॥ अति रागमगी देखियत है प्यारी हँसति अरुनि अलसनी बोल। चुगमगि चलति प्रकटदशा हिमकर पद नख पूजत चंचललोल। गोरखंग महँ अधिकमने मखि कदम्ब कुसुम रंगपीननि चोल। पलटिपरे तेहूंनहिंजाने रसमें मगन मानोमदन कलोल। कृष्णदासस्वामी संगसजनी निशिझूली पियसुरत हिंडोल। मोहनलालगो-वर्द्धनधारी देखवंस तुलीनी मोल २०६ कहांलों बरनों तेरे बदन की ज्योति फ़टक ऊपरवारों कोटिचन्द्रअवशापाल तारक सोहत मानों रविलागी युगलपरे मनफन्द। उपमा कहत नवनै कमलकी नासशुक मोहित भौंह स्वच्छन्द। खञ्जन मीनन तजत अलक अतिअति शोभन लपट मकरन्द। कृष्णदासप्रभु गोवर्द्धनधर अवमिलेमें देखे टूटेकचुकि बन्द। भिन्नमेत बिहरत तुकरनी अतिनागर हरि मत्त गयन्द २०७ शोभा बरणिनजाइरी माई जोमुख जीमहोई लखकोरी। नन्दराइ की अँगुरीलागे गिरिधरपिय बलरामकी जोरी। बडेभाग देखेलोतन भई जीतक कहुं तेतीतेती थोरी। कृष्णदास बलिबलि चरणनकी तन मन फूल गावे नाचेहोरी २०८ कंचनमणि मरकत रसओपी। नन्दसु-वनके सङ्गसुखबर अधिक बिराजत गोपी। करत विधातागिरिधर पियहित सुरतध्वजा सुखरोपी। बदन कांतिके सुनुरी भामिनि सघन चन्द्र छीलोपी। प्राणनाथके चितचोरनको भौंहभुजंगम कोपी। कृ-ष्णदास स्वामी वशकीने प्रेमपुंज की चोपी २०९ कटितट सोहति है मणिदाम। पीतकाछ पर अधिक बिराजत न्याइ लजावत काम। कोहै न मोहन काचित मोहति चपल कुटिल भ्रूवाम। अनु कनुरटत बेणुकल कूजित सुनिराधे तवनाम। तेरे नीलपट ओढ़ि रसिकवरले-तादिवसके याम। कृष्णदासप्रभु गोवर्द्धनधर सुभगसींव अभिराम २१० कैसकमीलो लालरंगीलो देखनकिन काननआई। रूपनिधान रसिक

गिरिधरपिय हँसीको लेनबडाई । नवलनि धुं अवय न पिवसारी कि-
यिव ताता कुटुमनिकाई । पिकपाँवि अंगरारस औगोद । मलय पवन
बहेसु बसाई । रतिपति भूजबांधे सो ए हानके कामलपनले कैसौंइ छांडे ।
कृष्णदास प्रभुसुरन सखानिजे कुपति रमायन ओरति गाई २११ सांवरे
गोविन्दसँग रङ्गनिभिगाठी गोरेहलोचन उनींदे मानों बंधुकाके फूल ।
मनोंहि सुंदर सुजान सोहछकनाथ मिले सुरतके हिंडोलनाते लीलाप्रेम
भूल । मदनकला अतिरसाल संगीतकला सुनि पुनि रूपराशि ऐसी
कौन तेरेसमतूल । कृष्णदास स्वामिनी अंगोअंगसुघ राधिका बदनजोति
निरखि नभसि मघन चन्द्रमूल २१२ सखीरी तन लागेप्यारे अंगकीओ-
पमा रगमुनिमसि कान्हकी हुरावति । अबने सजान न मानत अबरकी
जैसेतैसे हसारत नयन चुरावति । बोल हार सुधी सुर्गीन सहँभोति-
नको वातनि बौरावति । घरकमंदरन अनंति नागरि मनकी प्रीतिआं-
खिन समुझावति । मोहनलाल गोवर्द्धनधारी सों रहसि मिलिकोकि-
लगुरगावति । कृष्णदासप्रभु नटवर नायक रसिक शिरोमणिमनुखिवरि
भावति २१३ सखीमन भावत मदनगोपाल । केलमनोहर हँसतमाधु
वर्तनि श्यामतमाल । नवीनकुसुम कमलदलअंबु जिन्दु अर्वाहि धारत
प्रतिपाल । वृन्दावनभूमि सुरत सुधानिधि कूजित मधुरमराल । कृष्ण-
दासप्रभु रसिकशिरोमणि चंचलनयन विशाल । नवभूषण कुचबिच
धरिराख्यो गोवर्द्धनधरलाल २१४ अलबेली आवहि रसमसी झूमि
उरसिबरलचकनहार । पीतकाछनी कटितट बांधे ताहमें गाती नन्द
कुमार । मोरचन्द्रिकामुकुटधरे शिरगुंजावलिभालकोविशालहि बार । पि-
यकोमुरली अपने अधरनधर करकूजित लोचनअनुसार । तनमयरसि-
कलाल गिरिधर सों देखत दुहुँ दिशि सुरत बिहार । कृष्णदासप्रभु
अपने रूपरस बशकियो सर्वसदान उदार२१५ पियके प्रीतिका फूल
जनावति रतिके नवलोचन दल । अरुणोदय सरसीरुह की ओजीति
चाहत तरुण तेजबल । मिटत नहीं अंजन अधर काहुरनसेजकी धी
सुकंठकाल । कृष्णदासप्रभु गिरिधरसंगम भीजेंउरन निज सुखसमतल
२१६ तेरे उर सोहत सुभ दुहुँ रिपिय सगामकी अमनउज्ज्वल । कुचनट-
परमंजरी बिराजत मनहुँ अनूपमदलीपी रतिसुख । सुमनक्रात जीत-

ति अम्बुज कर मोहति श्रीसखउर नाम कौलकुन्द। कृष्णदास प्रभु गिरिधर राधाके नागरी कियो मति सुरतपद छन्द २१७ हरिभजु भामिनी सुरंग सगरा ति। शरदकालकी घटा सदृशा तुक्तन गरजति अलमाती। हां पदे रंग रायपरि वीनअमृत मधुबानी। विरहअनल सचाकित प्रीतम रसिकराय सुखदानी। दूतधर्म अतिनिपुणा दूतिकासरलसुभावोहआनी। कृष्णदासप्रभु गिरिधर पियको रवकिकंठ लपटानी२१८ तेरे चपलनयन युगखंजन तेनीके। तापहरणा अलिविदित विभ्रमहुँ भेलन मानदलनागर फीके। श्यामप्रवंत राते अनियारे गिरिधर कुंवरनिभर सुखजीके। सुनिकृष्णा रासरस कौतुकवश प्यारीदु तरावति आपने पीके २१९ तेरे चरणानिकहो शरणा। राखो राखो दयाल कृपा करि रसिक गिरिवरधरणा। कामक्रोधज दावदाहेउ कुबिधिलाख्यो शरणा। कृपादृष्टि जियावन घनश्याम अंबुजचरणा। निरखि नखमणि ज्योतिनिर्भय मुदितअंतःकरणा। कृष्णदासनि तेरोई बलविरहजलनिधि तरणा२२० अधरदंततिलक और धकुमकोतामहूँ मृगमद रसबिंदु। मानहुँ शशि सकुलागि रहउ श्यामसुंदर कोचिबुक मोहनश्यामबिंदु। सखियनते दुराउकरत पोछत निचकुच युगमहँ श्रमजलबिंदु। कृष्णदास प्रभु गिरिधर जानी रीझिदियो चुंबन मोहन पीकबिंदु २२१ देखरी नटनागर गिरिवरधर। सहचरि कहति हितिय सहचरिसों प्रेममुदित प्यारी राधावर। भूषणभूषित अङ्गमनोहर बसनमनोहर कनककांतिहर। चितवत हरतविवश युवतिनके सर्वसुतनउदार कम नाकर। उपमा कहा कहों को लायक बरणों कहा किशोर वेषवर। सुरतअन्त लटकन ब्रजआवत कृष्णदास बड़भाग कलपतरु २२२ राधारङ्गभरी नहिँ बोलति मोहनसुदन गोपाललालसों अपनों जोवति तौलति। चाहति मिलन प्राणप्यारे को मेरोउ मन टकटोलति। काढ़िहूँ बहुत चातुरी भामिनि कत हमसों भकझोलति। प्रातहोन लाग्यो सुनुसजनी अबहीं तमचुर बोलति। कृष्णदासप्रभु गिरिवरधरहित सारँग नयनसलोलति २२३ सकोह हाथटके ठाढ़ो दधिमथनियाँ गोपालिये। झगरति झर बातें कहतिढीठभई दूजोकरहरिमुखनिपटनिकटकिये। चलतिफिरि चलति जाति नाहीं चलि जानतसतर भौंह किये। कृष्णदास प्रभु तन

झांकपरसति नयनओर बैन और हिये २२४ चलीजाति उतगोह की मुरिमुरिहेरि देखतिस्रत। कबहूं कैयहिमिस ठाढ़ीह्वै लावण्यहि सुधा-रति कबहूं ओढ़ति आंचरु बनाय बनायहिग जितचित। फूटें सोच सोचिसोच रहतिपुनिडगरति फिरिडगरति पुनि डगरतिअटपटाति कछु भलीनी भ्रमति चित। कृष्णदास प्रभुके रूप सुधा मन मधुप सो लालैसुरझि न सकति सकति अकतिहित २२५ काहेपांवति नाहिने छूटेकेश। शशिमुखपर घनधाराछूटी कछुकछुचलनी उरदेश। अंगअंग यहशोभा कहाकहूं निशिजागिआईओरही। कुम्भनदास अतिओपते ओप भई गोवर्द्धनधर मिलव्रजयुवति नरेश २२६ मोतिनमांग बिथुरी शशिमुखपर मनोनक्षत्र आये करन पूजा। अंचल फहरात उर पर-कासी काम भुजा। बिरह राहुते छूटि सकल कला बिमलभई देखत मुखजा। कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर अधरसुधा कियेपान कंठमेलि उदारभुजा २२७ तूलोआलस भरीदेखियत हेरीरसी। रजनी चौरिताते आंखिन लागी अरुअकेली भामिनि कुंजबसी। अरनिरी लेकसीकाहु जानी भवनको दिनगत होनसी। कुम्भनदास गिरिधरके कंठकी यह जानतिहों तेनो गिरीपाई मोतिनमाल लसी २२८ आज देखियतबदन हहडहेउ प्यारी रगमगे नयना तेरे रंगभरे। मानहुं शरद कमल ऊपर उन्मद युगुल खञ्जनलरे। रसिक शिरोमणि लाल सुशीतल कम झकोर उरधरे। कुम्भनदास कहि काहेन भूले गिरिधर पियसब दुखहरे २२९ काहेते आज बिथुरी प्यारी क्यों न बांधहि अलक। भौंह कमान नयन रतनारे मानों न लागी पलक। रतिरस सुखकी फूल जनावति मरालचंदकी चाल मलक। कुम्भनदास मिलीं गिरिधरकों मानों को-टिचन्दकी झलक २३० जानीमैं आजुमिली प्यारेसोंतें अपनो भाव-तोहीरीकियो। सकलरैनिरात रसरंग खेलत पलकन लागन दियो। कंठ लागिभुजा देशिरहाने रसिक लालकों अधरसुधा रसपियो। कु-म्भनदास प्रभुगिरिवरधरको अंकभरिभेट जुड़ायो हियो २३१ रसमसे मयनतेरे निशि के उनींदे काहेको दुरतिजु उलटी बातप्रातही जो सुनीदे। बदनआलसमें आलसकी जम्हायबोअति अलसातवचनकीदे। कुम्भनदास प्रभुगिरिधर मिलतेंतोहिं सकल अंगसेंदीहे २३२ सखीरी

सिलिता सरोवर जाहि। अपने रस ओसो नन्ददासकी निठुर चलति
गुनचाहि। सकुचत कमल अकाश पाइके अलि व्याकुल गुनगाहि।
तेरे हुजूर आनयह आति यह अपराध कोऊ कोटि अवगुनको अपनको
विधाता सरसरूप अनुसाहि। कुंभनदास प्रभु गिरिधर सागर देखो
उमगतािह २३३ नदनंदन के अंकतें मुरली सुन्दर चतुर हरीत। नूपुर
सुखसुदिके झकनझकन पगावरनि बरीत। कनक वलय कंकन भुजा-
निचुगडकेपकरति। कुंभनदास गिरिधरके मुंदित नयन देखति चकृत
मंदहास रसनागरतें डरति २३४ नागरनन्दकुमार मुरली हरत नवानी।
गिरिवरधरके अंकतें अचानक लई राधिका सयानी। व्रजयुवतीजन-
ननि मुदित करिनूपुर कंकनधानी। कुंभनदास मुसकानी नन्दानि
अकनहि अकनसयानो २३५ तेरेतनकी उपमाकोदेखौ मैं विचारके
कोउनाहिंन भामिनी। कहा अपुनो कनक कदलीकहौं केहरिराज का-
पोत कंपोक कहांचन्द्रमा और कहांचपुरी दामिनी। कहां कुंभ-
शुक बंधूककेकी कमलया आगे थोरेदिवस सबहि कामिनी। सोहन
रसिकगिरिधरनकहतराधापरम भावतीतूहै कुंभनदासस्वामिनी २३६
तोसोंजो रसमेंकछूहँसिके कहेउसखीरी तू करतिमान। इतनेही को-
काहे कोह्वमति गोवर्द्धनधारी प्यारो गुननिधान। मेरो कहेउ कोर-
छांडिअटपटी सुनुरीतजहि अपनोसयान। कुंभनदास स्वामी मों प्यारी
नकरिनिदान२३७जो तोसों बातकही पियतेरेसो तूकाहेका रिसानी।
प्राणनाथगों जीवपारे सोइअयानी। जाबिनु रहेबनपरेछिनतासोंकत
रूसियेसयानी। कुम्भनदास प्रभुगिरिधरनकहै सोईकीजिये ज्योंरहि
येहृदय लपटानी २३८ सुनिगोपाल सकब्रज सुंदरि तुमहिं मिलनको
बहुत करति। बारबार मोसोंकहतिरहतिहै वाकेजीयको होनकरति।
तुमहिं जपति रहति निसिवासर औरबात कछु जियन धरति। प्रथा
मस्वरूप चहुँटि चितलाग्यो लोकलाजतें नाहिंडरति। होतनचैनवाहि
एको छिन अति आतुरचित विरह भरति। कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धन
धर तुमकारन नवयौवन गरति २३९ तेरे नयन चंचलवदन कमलपर
मनोयुग खंजन करत कलोल। कुंचित अलक मनोरस लम्पट चलि
आये मधुपानिकटोल। कहाकहौं अँगअँगकी शोभा वहीन परसत

भालकपोल। कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धनधर देखत गाई अनुराग श्यामा २४०
न्हानका ल्योले अंबुआकी कमना। सम्मुखल्है निय ज्यौंकारनरीयोंन
तबअँगुरी दांतो बिलखाना। लोजत ललकारना हुँबाई धीनहैं और
चमना। कुंभनदासप्रभु गोवर्द्धनधर लाड़िलाल लखेहैं ऐंमना २४१
श्रुत्यर्थीय कहूंकहुलाजों नयनान अन्नीअंगनि सकुचाहि। मोहनलाल
गानकरनारी अंकुआसोलै लिये हुलाहि। मैनारवमसें अवरओरछाँव
चन्दनगयोनालयेसुक। कुंभनदासप्रभुओसिल भामिनीकहतलबनेचुंब
अंईभति सुक २४२ पियसँग जागी वृषभान दुलारी। आलसयश्रालस
सकुचाति अतिझंअशुदनते सबनिसवारी। मारगजात मिलीसखिओरें
तबहिँ सकुचिलत दयाबिसारी। छीतस्वामिनी मांकह भामिनीतोहिं
मिलेनिसि गिरिवरधारी २४३ राधानिशि हरिकै संगजागी। यमुना
पुलिन सघन कुंजनमें पियअँग मिलि मिलिकै अनुरागी। कुटिल अ-
लकतरारी जुबदनपर दोउकपोल पीकोलिनी पागी। छीतस्वामिनी
उमगि उमगिकै गिरिधरलाल उरसिनों लागी २४४ बालकृष्णजागेहृ
भोरभयारे। वैठीसिज कहतिहै जननी बारबार मुखकमल निहारो। सुन्यो
बचनमाताको जबहीं तांनक तनिक दोउनैन उधारे। लियेउठायअंक
भरि तबहीं उष्णोदकसोंबदन पखारे। माखनमिश्री और मलाई औ-
ट्योदूध तुमलेउ दुलारे। बिबधभांति पकवान मिठाई आननमेलअ-
पुनपाबारे। मुखपखारि अँगुली पहिराई शिरऊपर चौतनिजधारे।
डोलत अजिर मुदित मनमोहन ब्रजजन ओटभई जुनिहारे २४५ गोद
लिये जननी मुदितमन बालकृष्णको करत सिंगार। अंगुली लाल
जरी पहिनाई शिरकुलही धारति चकमार। हँसुली कराठजटित नग
मानिक अरु सोहत मोतिनके हार। बाजूबन्द लालभुज राजत अगम
गातहै परमसुढार। पहुंची हाथनि परम बिराजत ताकी शोभा को
नहिंपार। मानों अहिसुतके फरा ऊपर मणिकी ज्योतिभई उजि-
यार। कटिकरधनी बिचित्रबनी छबि पगनेहरि नूपुर झनकार। घु-
टरुन धावत मणिआंगनमें ब्रजपति देखि लजानोमार २४६ बालकृष्ण
को यशुमति लिये गोदखिलावे। सुंदर मुखछबि निरखिके मनमेंसु-
खपावे। चुचुकावे भुनभकरै बहुलाड़ लड़ावे। कबहुँक अँगरी लायके

[illegible] बिबाह । [illegible]
जनवीरन्ह स्नान पावत । [illegible] अतिकौतुकी [illegible]
ते । कतककुला हँसुलो बनी [illegible] सुहाते । [illegible] पुहुप [illegible]
देखनको आवै । [illegible] ३४७ [illegible]
काहू यक दिनकी लीला । [illegible] मुनि [illegible]
कहि कहि मानो । सुत [illegible] दशरथ तिनके [illegible] ।
रामभरत लक्ष्मण [illegible] । [illegible]
सभा [illegible] अरुताई [illegible] । [illegible]
[illegible] माला [illegible] । [illegible]
मातुलके पास। नृपमन [illegible] राजहू [illegible] ।
कैकयि [illegible] पिताकी आज्ञा [illegible] । [illegible]
सहित [illegible] । [illegible]
प्रियकेसँग रावण हरनिकयो तिहिकाल । [illegible]
चौंक कहे ३४८ सुनसुत [illegible] प्यारी । [illegible]
नयन [illegible] आनन्द [illegible] सिरीतहँ धारी । [illegible]
रमनी [illegible] । [illegible]
जब भाँतिभाँति [illegible] । तहाँ नृपति दशरथ रघुकुल [illegible]
[illegible] । कौशल्या कैकयी सुमित्रा तिनके [illegible]
धारी । चारिपुत्र [illegible] तिनमें [illegible] धारी । [illegible]
प्रगटकियो जानकी त्रिभुवनके सब भूपाल हँकारी । [illegible]
आये सुनत जनकपन तहँ धरनारी । [illegible] नृपनको जनक
सुता तिन तब बरनारी । [illegible] नृपतिके [illegible]
निवारी । वचनगाँठि नृपहीं यह लीनी रघुपतिके अभिषेक सम्हारी ।
तातबचन सुनि तज्यो राज्य जन भ्राता घरनि समेत बनचारी । उनके जात
पिता तनुत्याग्यो अतिव्याकुल करि जीव निसारी । चित्रकूटपर भरत
मिलन बनपरा पाँवरी दै करी कृपारी । युवती [illegible] कपटमृग [illegible]
जिव लोचन गर्वप्रहारी । रावणहरण कियो सीताको सुनि [illegible]
नयनीर निवारी । [illegible] लक्ष्मण [illegible]
सभारी ३४९ [illegible] किशोर [illegible] ।

अति अनुपम अनुरागपरम्पर अलिकुल मुरली पर गोरी। विद्रुम स्फटिक विविध निर्मित घर नवकपूर पराग न थोरी। कोमल किसलय सेनसुपेन लतागृह श्यामल निर्मलित गोरी। मिथुनहास परिहास परायन पीक कपोल कमल परजोरी। गौरश्याम भुज कलह मनोहर नीवी बंधन मोहनडोरी। हरिउर मुकरबिलोकि अपनपो बिभ्रम बिकल मानयुत भोरी। चिबुक सुचारु प्रलोई प्रबोधित पिय प्रतिबिम्बजनाइ निहोरी। नेति नेतिबचनामृत सुनि सुनि ललितादिक निरखत डुरि चोरी। हितहरिवंश करत करधुननि प्रणयकोपमाला बाल गोरी २५० अलिही अरुनाते नयन नलिनरी। आलसयुत इतरात रंग भरे भये निशि जागर मलिन मलिनरी। शिथिल पलकमें उठत गोलक गति बिंधे मोहनमृग सकत चलनरी। हितहरिवंशहंस कलगामिनि संभ्रम देत भंवरिन अलिनरी२५१श्रीराधामोहन की जोरी। इन्दुनील मणि श्याम मनोहर सातकुंभ तनगोरी। भाल बिशालतिलक हरि कामिनि चिकुर चन्द्रबिन्दु रोरी। गजनायक प्रभु चाल गयन्दनि गति वृषभान किशोरी। नील निचोल युवतिमोहनपट पीतअरुण शिर खोरी। हित हरिवंश रसिक राधापति सुरति रंगमें बोरी २५२॥ रागबिलावल। चर्चरी ॥ आजु नागरी किशोर भावती बिचित्र जोर कहा कहूं अंगअंग परम माधुरी। करत केलि कंठमेलि बाहुदंड गंड गंड परसि सरस रास मंडलीजुरी। श्याम सुन्दरी बिहार बांसुरी मृदंग तारमधुरघोष नूपुरादि किंकिनीचुरी। देखत हरिवंश आलिनिर्त्तनी सुगंधचारि वारिफेरि देतप्राण देहसों दुरी २५३मंजुल कलकुंजदेश राधाहरि बिशद बेशराकानभ कुमुदबंधु शरदयामिनी। सांवल द्युतिकनक अंग बिहरत मिलिएकसंग नीरदमणि नीलमध्य लसति दामिनी। अरुण पीत नवदुकूल अनुपम अनुराग मूल सौरभ युत शीत अनिलमन्द गामिनी। किसलय दलरचितसेन बोलत पिय चाटु बैन मानसहित प्रतिपद प्रतिकूल कामिनी। मोहन मन मथत मार परसत कुचनीबि हार वेपथयुत नेति नेति भामिनी। नर वाहन प्रभु सुकेलिबहु विधि भर भरति झेलि सुरति रसरूप नदी जगत पावनी२५४चलोहि राधिके सुजानते हित हरि निभान रासरच्यो श्याम

नटनागरि नंदनी। सूर्यास युवती समूह राग रंग अति कुतूहल बाजत
सुमन्द मुरलिकानि नन्दनी। वंशीवट निकट जहां परम रमणी भूमि
तहां सकल सुखदवहै मलयवायुमदनी। जाती ईषद विकाश कानन
अतिसै सुवाससरदकी निशि शरदमास विमल चांदनी। नरवाहन प्रभुनि-
हारिलोचन भरिघोषनारिनखशिख सौंदर्यकामदुख निकंदनी। वि-
लासय भुज ग्रीव मेलि भामिनी सुख सिंधुझीलनवनिकुंज श्यामकेलि
जगत बंदनी २५५॥ रागबिलावल ॥ निरखसखि शशिमुख नयन सिरात।
रति विपरीत मोतश्यामल परशोभित गोरेगात। लटसें लटपटसे पट
भ्रकुटिनुरमहँ नवउरजात। मुखमें अधरबाहुनि में सुदृढ़बँधेबलि जात।
चन्द्रबदन मा नन्दकिशोर चकोर पिय तन अघात। श्याम स्वामिनी
पियसंग विहरति आनभोर गदैलात २५६ श्याम गुजरी कहाँ अति कोमल
सरल किशोर। सुनि वृकुमारी महा अति कठिन कुटिल नखशिख
अँगातोर। कहा कपोलमृदुल मंजुल अतिकहां तुम नखरसकोर। कहां
विम्बाधरजलधर समकहां दशनअन्यारेओर। कहां कुंवरको सदय
हृदय कहां तव कुचपीन कठोर। कहां निरागमनाहु कहांदृढ़बाहन
बंधन जोर। कहां दीन आधीन कहां तुव बंक चितवनि चितचोर।
श्यामस्वामिनी रसिक प्रीतम के नाते कहे उसोथोर २५७ ठाढ़े दोऊ
कुंज महल के द्वारे। राधामोहन मोहिं लागत है तू देखियो नेकु न-
यन भरि शोभित अंग सुढारे। अति आतुर ताहीतन चितवत इकटक
पलक लगत नहिं लोचन मीनलगे ज्योंगारे। श्याम स्वामिनी चित-
वनही चुम्बत ललित बिहँसि उरसिपियलई बिहरत राखयो रँगवारे
२५८ मोहनकी देहीउलटीरचीरी। नयन नीर सरबूडतते बिरह दहन
ते जरत बचीरी। भई श्यामते पीन बरनि दुहि तकीशा प्रताप तची-
री। हा राधेबरअवगा सुनतत अजहुंन निठुर लचीरी। चन्दन चन्द
अनलबनपाज करि दुखकी राशि रचीरी। तो बिन अनत न शरण
शीतकह भीत सभा बिरचीरी। इतनी सुनि उठिचली अलीसंग सुगंध
नचीरी। श्यामस्वामिनी रति रसवर्षत सुखमें कीचरचीरी २५९ ऐसी
कुंवरिकहां पिय पाई। राधाहू ते नखशिख सुन्दरि अवलों कहांदु-
राई। काकीनारि कौनकी बेटीकौन गांउते आई। सुनीन देखी ब्रज

उर मानहु सुभ कंचन हरजितपराई। याको सुभग सुहाग भाग्यश्री अ-
नुभवति मनसाई। याहीके रस बस ह्वै तुम वृषभान सुता बिसराई।
यह बिनोद सुनि देखन आई रंचकि कंठ लपटाई। श्याम स्वामिनी
बिहँसि मिली तहां सरस सुगंधसचाई२६० कहे न पत्यैहै काऊ बात।
श्यामकाम बस सोवेहु राये रानीके से गात। जैसाई ध्यानधरेउ तैसाई
भये अधर गंडउरगात। नख शिख अंगअंग सोहियत देखत नैनसिरा-
त। वह सुरत रूप न ताहूमें सखि फूल करत मुसकात। राजमराल
गति निरखत मोहे रतिमनोमिज संघात। अपनी ओरहि सेव्यो चाहत
ललितादिक बलिजात। तुहीरसमें बिरस कियो अब कौन काज फ-
लितात। कंठबाहु धरि चली अली के सुनि अद्भुत अकुलात। श्याम
स्वामिनी परसत सादर धरनि गिरे लपटात२६१ नैननि निरखि नैननि
कोर। बैनकहत कापी पिय हियते बिहँसत कलहि किशोर। दुख
मेटत भेंटत तुमको नहिं चुंबन देत न थोर। कालिंदीतट धावत मन क-
रसहि ले कुचकोर अकोर। काकेपाय गहत गिरधारी कामी करत
निहोर। कालहि निकलकिये नंदनागर तुमपनिहो तुम चोर। निज
निहार आरोपि आन पर कोपि मान गढ तोर। श्याम स्वामिनी
बिहँसि मचाई सुरति समुद्र हिलोर२६२ संदेशो बोहेउ दूतिका आनि।
अगबोले सब अंग दिखाये नागरि लैहै जानि। बदन पसारि निरखि
बिनु चितयो शिर ऊपर धरिपानि। कानझकाय सारखेडनि नाच्यो
धरनि गिरो मुरझानि। पुलकित कंपित स्वेद सेदलन अँसुवनि व्याप-
पचानि। मुद्रित अधरा उसासा कंठ धरि कारति पट दुखदानि। बन-
माला तोरत करजोरत पाँइपरत मुसकानि। शीतल जलभरि कमल
उरोजभरि कदलि खंभ लपटानि। दश्यो बिपदा सुनिसुनिश्रवन तजि
छाँड़ि जीयको बानि। श्याम दासके समुझि बिनोदनि कुंवरि जि-
वायो आनि२६३ ये हरि मोसों न बिगारन कोतो सों न संवारनको
माहि तोहि परी होड। कौनधों जीते कौनधों हारे परी बदिन छोड़।
तुम माया नाजोपसारी बिचित्र मोहिजन मोको भूल्यो कोड़। कहि-
हरि दास हम जीते हारे तुम तऊ न तोड़ २६४ प्रिया पिय के उरकी
कोनि न गई न जाय मनते न्यारे। मानो दोउ नैनि इकठौरे ह्वै न भगे

शृंगार। चार लखनि आली औौर यूथ लसत परस्पर कमल [illegible] न-खसूरज गोरि शोभा श्रृंगार। हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजबिहारी पर-वारों कोटि अनंग श्रीरि ब्रह्मांड वारौंकर्यं श्रृंगार २६५ आवरी नई बेनबिंदी। अलकैनी ख़ेली पियकेसँग अलक लड़ैकान लाडुली। यदि किरनि तूनिहि आई लगी निवाई जानिसुकर पर तबहोंदौहूं रही अड़ी। विहारी दास रीतकौ बरने कवि जो छबि सोभन सांकरही २६६॥ राग बिलावल। चर्चरी॥ जोनि अवादै युगुल नवल निकुंजक। सुख। आलि श्रीमिनि सैन सैनन निर्दय प्राण जीवन मेंमन भवनद-नन्दुख। अमित अमितबिहार सुरतसुखदसुमा। रये सुकुमार तनमनहि दिये लियरहे रुख। श्रीबिहारिनि दासिलोललोचन लासिनराख सुखरानि हँसिमिलत सुन्दरसुमुख २६७॥ रागबिलावल॥ जागेजनहरये भनमाने। अनगरत जुगलकिशोरकिशोरी बड़भोरमें बतबलात उनमाने। ओढ़े उलटि बसन सुखशोभा पलटिलेत पहिरवाने। बिहारीदास दपतिकोमुख निरखतसखी वारति तनमनप्रान २६८ कुंजमें मरसयन प्रियापिय बनेहैं विचित्र वर बागे। चंदन बदन बिंदुब मतरंजन अंजन की छबि मानोंचित्र सों किये सुतन अंगअनगनिदागे। अपनेअपने रस आनन्द बिवश भये आलसबिनु अनुरागे। बिहारनि दा-सिपायोभागि जु इनकेमन पुनि हँसिहँसिहँसि उरलागे२६९ यांहीं मिसि हँसिकहतिहैं बातसुनति न तबनेहु नपत्यात। कोमलकरनमों मुखमूंदि राखत यवसानितनजात। बचन रचनबनतनाहि न पुलककमलयात। बिहारनिदासिके नैननिमें सुखसैननिलटपटात २७० आजुकी छबिअंग अंग रहीफबि बेसीमति कौनकीको बरनेकोगि। उपमा आहिन काहि बताऊं माऊंइन्हें सुनिजाहिंसबैदबि। हँसतखेलतमिलतसकल निशा गत लटकि चलत पगुधरतफबि। बिहारिनिदासमंगमसुखमूर्चातिदेखिरी देखआनन्द उदैरबि २७१ मानमी मनहरणा मनोहर। बचन रचन रचि राचिरहे जुरि कुंज कुटीतन मगन प्रेमभर। अंगअंग आलिंगन चुंबन हँसत रमत सहज सुंदरबर। बिहारीदासि दुलरावति गावति युगुलकिशोर सुयश सबोपर २७२ तूमनमोहनीरी मोहन मोहेरी अंग अंग। अगमनी अलकें झलकें बरउरपर कुटीलट मुखहँसत लासन दश

नाचनि मकुट भृकुटिभंग । मृगमदपत्रों श्यामकाम सजतजे बनबेली बास सौरभसुर शब्दसुनत फिरत भ्रंगसंग । बिहारिनिदासि स्वामिनी मुखरासि रहसि फिरि चितयो हितयोमानिआनि उरअंग रंग अनंग २७३ मुदित मोहन अंगमोहन को मनमोहनीतें मोहेउरी मोहनायदपि रहत हँसनखेलत अंगसंग निशिदिन छिनुन तजिमकत मोहन । अद्भुत रीतिनीति प्रियपै मनबच कर्मकिये कहति तुमसों सखी करपद पर अरोहन । बिहारीदास कोस्वामिनी सुनिरही मौनचितै सुफिकाति प त्यानि नसौहन २७४ मोहनलाल रसालसो मोहिं अनबोलेहु बोल्यो भावे । जब कबहुं होरहों मौनह्वै हँसि मनमोद बढ़ावे । तान अतीत अनागत अँगसँग मिलिमधुरेसुर गावे । बिहारीदास स्वामिनीके रस रसिक रसहीमें रसउपजावै २७५ बिहारिनि लाडिलीहौ लालहिसक ल सुखनिकी दानि । चितवनि चितपोषित सोभित तन मनमनसा-रस सानि । दरश परश रसहास परस्पर बिबिध बिहारबानि। अन्य जनम मानत अनुरागी जब इरलागतआनि । बिहरतबन रतिमानि निरन्तर निदरि लोककी कानि । बिहारनि दासि लड़ावनि छिन छिन हितगाढ़िपेकी जानि २७६ मेरीस्वामिनी प्रसन्न बदन सांवरोसु खरासि । इनहिं लड़ाऊं अनुदिन छिनछिन लहोंमावासि।फूलीफूली टहलकरों मनके मनोनिहुलासि।अनन्य श्रीहरिदासि बिपुलबलबिहा-रनिदासि २७७ सांवरो नवरंगु । लैसी ये तनघन दामिनी द्युतिकुंवरि किशोरी गोरीकोसंगु । यहरस रसिक उपासित स्वातिहि चातकले जलयाचत लगतनंगु । बिहारिनिदासि अनन्य भजनबिनु सावन आन करतन कछुढंगु २७८ प्रिया श्यामसँग जागी है।शोभित कनककपोल ओपपर दशनछाप छबिलागीहै। अधरनिरंगछुटीअलकावलिसुरतरंग अनुरागीहै । बिट्ठलबिपुल कुंजकी क्रीड़ा कामकेलि रसपागीहै २७९ रसिकरसीलीभांतिकबीलीनयनरँगीलो तूपियपैतेआई।अजकंचुकी छूटीचारुचारि चूरीफूटी आलसमदन लूटीलेल जम्हाई।डगमगाचरणा धरति मानोपिय अंकोभरति चितनहिं टरति वाहि छबिसें लुभाई।श्री बिट्ठल बेपउरबनी नखदेख रजनीके ज्योंप्रिय जानिमैंपाई २८० श्या-मचलहु लडैती प्रिया कुंजनि करहु केलि । श्याम तमाललाल नव

किआरोपाल सुमनु अलजल भये कनककीर्योति । विविध कुसुम प्रस-
र्चित थाकृन्दावन डोलत छुहाये लिकलवनु । रहे हैं फूलि । बिट्ठल
बिपुलनरमी अहारीतिहारिनिश्यमुनाके तीरसुखोवितासबंलिरूरआवत
लाडिली लालझूले । कुञ्जकेलि नवरंग बिहारी सुरत हिंडोरे झूले ।
निशिजागे अलसात रँगभगे पटपलटे गतिभूले । बिट्ठल बिपुल पुलक
लीलतादिक चितवत द्रुमफूले २८२ सुनहुरसिक कुन्जनको शोभा ।
कुंजकेलिभामिनी मनोहर परस्परभयेनाहिनअपनेलोभा । यहछविनित्य
नवीन युगल वर कुंमदल नित्यप्रति सलिलालस । बिट्ठलबिपुल बिनोद
बिहारी को गुण किये चालित रसनारस २८३ सुन्दरश्याम सुन्दर
बहुलीला सुन्दर बोलत बचनरसाल । सुंदर चारु कपोल अतिसुन्दर
उरजबनी सुन्दर बनमाल । सुन्दर चरण सुन्दरहै नखमणि सुन्दर
कुण्डल झलकत गाल । सुन्दर मोहन नयन चपल किये सुन्दरग्रीवा बाहु
बिशाल । सुन्दर मुरली मधुरबजावत सुन्दरराधे है गोपाल । सूरदास
दम्पति अतिराजत ब्रजकोआवत सुन्दरबाल २८४ तुमजागो मेरेला-
ड़िले गोकुलसुखदाई । कहति जननि आनंदसों उठो कुंवरकन्हाई ।
तुमको माखन दूध दही मिश्री हों ल्याई । उठिकै भोजन कीजिये
पकवान मिठाई । सखाद्वार परभातसों सबटेर लगाई । बनको चलि-
ये सांवरे दईतरनि दिखाई । सुनतवचन अतिमोदसों जागे यदुराई ।
भोजनकरि बन कोचले सूरज बलिजाई २८५ आजु प्रातही दुलरातवा-
त कहत बलरामसों भैया । जैमशु रुपिक दांय बोलतहै अरसपरस सुनिसु-
निसुखपावत भावत नन्दयशोदामैया । बचनरचन कहतसमुझिसमुझि
परतनाहिं कछुकौतकीच दाऊजन कहत मेरीगैया । रीझिरीझिहरषि
हरषि पुलकि पुलकि उरलावति चूमतिमुखबारबार लेतपुनिबलैया ।
बहुबिधि पकवानपान खीरनीर भोजनघृत माखनमिश्रीखवाय और
ल्यावतधैया । ललितललित ब्रजबनिता नन्दादामोदर हित चितवतहरत
लरत भूमपर नटवर दोउभैया २८६ माईकौन गोपके येदोऊ नागर
ढोटा । इनकी बात कहों सखीतोसों गुणनि बडे देखत के छोटा ।
अग्रज अनुज सहोदर जोरी गौरश्याम शोभित शिरचोटा । कृष्णदास
बलिबलि मूरतिपर ललाललित सबही बिधि मोटा२८७ नयननिकी

चंचलता कहा। कौने भौनेरंग कौनके श्री श्याम हमसों करत दुरावत।
और के बदन देखनको नैसलियां किधौं पलकनि सोंधरांखि प्यारी
ताके भारभरेनये आवत। मधुप रुन्दलुब्धसेजे समीप लिधा बसे स-
ग्लामो आवतरतिकीरति गावत। सूरदास मदनमोहनतन को प्रीति
प्रकटभई मुखनहिं बनतवनावत२८८ औरभये मुखदेखि लजाने। रसकी
कोति वालमुख सोहत अरुनयनन अरसाने। काजररेख बनीअधरनि
पर ललितकपोल पीकलपटाने। मधुपमनोकंजनिपरबैठेउडि न सकत
मकरंदलुभाने। देखतिहारअलंकारनिनयुता आयेभीति रचाधीर मया-
ने। सूरदास पियपांवधारिये जानति हींपरहाथ बिकाने २८९ कौने
पटको घूंघटतामांव डारेभारे लोइननीके लागेरी जियथंजन। कछु
कसकुच गुरुजनकी ताते ओटदिये अवलोकति पियतन चंचल मानहुं
जानपरे चकुलातखंजन। कबीभौंकी कबीली कुंखियांरी जिनकेक-
टाक्ष तरंगनिमें हरिकोमल लरयोकरन मंजन। अति चतुराईसों चतु-
रबिहारीके चितकोलागैरी निरखिनिरखि अनुरंजन २९० तुवमुख
और चन्द्रमाबिरंचि तुलाकरितोल्यो ओछोअकाश गयोभूकि घर-
नीरहेउ निकाईको भारीभयोरी पला। याहीते गौरयदन बढतहै
देखिदेखि तेरो बदन निर्मला। तोसम नाहिंन पूजिये सम्पनि ज क-
लंकी नामधरे न निशिभ्रमत फिरत न रहे अचला। तानसेन प्रभुसब
बशकरलिये रूपआगरी रूपकलार२९१ अहोदेहीगा गरिनागरिनारि
थोअवरे जैसेदेहोपागको राखेरहत चिकनियां। दुरिदुरि मुरिमुरि
बतियां करतिआगली पढिलीनसों दोउ करतारीभारति रुकनिसों
नयननैन बतियां। लाहीको लहंगा पचरंगचूनरि कंठकुरा और ता-
बीच मनियां। तानसेनप्रभु रीभिथकित भये तुहींसबनि में धनिध-
नियां २९२ चूनरी री प्यारी पचरंगपहिरे सुपनियां गगरियाभरे
आयतिहै सुदांऊहाथ चैथी धरे। गोरेभुजनमें गाढेबरा पुनिदंडनिमें
श्यामचुरी हथेरी लहल मेंहदी सों गहिरोईरंगकरे। श्रवासनि बेसरि
मोतीहालत मुखप्रस्वेद नैनाभौंह चढाये काननढीरे। गरे मोतिनलर
कुचउतंग नितंबभारी कटिछीनीचलत लफलफपरत उरबेनीपाटभी-
जेरीबहुत फुलेलधरे। जेहरिज्योति भूरज सोहोंउपरीपाय महावर

नवीनज्योति अरुणउदनागुलाये नागतरंको नभीयनती करतहैसोहेमि
दोला। हरे हरे २९३ नीलपट पहिरे कंचन थार थाल अलसात नवल
रा नवर यालला ल संग नागीपानी रसकेलिनिकसि नारीभई अधनद्
जनहार। भुजनि जोडी सेंदुरनि अन्हानि सब मुख अनि लोचन लाल
लजाति सखी लखि मुखसाशि निघुरे बार। अरुणनयन काजल छुत
बैनअधर अंजन नीं पीकछाप युग मृदुल कपोलनि नखछत उरउतु-
तंग सुभट कंचुकी कवचकसे छूटटूटे नीयागया मुक्ताहार। शिथिल
बसन कटिशिथिल रसन डगमगी चालउरमाल मरगजीचरणा महा-
वर कहुंकहुं छूट्यो यहछबि निरखिनिरखि लजजन बलिहार २९४
थिअंगअंगरंगभरे विराजत हरिछबिसों व्रजवनितानकेकरजारे। तेही
सोंचत गलेंलेतरेखा प्रसारत मोहित प्राणन्जगा चरन थोरे थोरे। क-
बहुं निरखत श्यामहि प्यारस्वत नयन और भौंहमोरे। नटवरभेष
धरो रामदासको प्रभु मोहन नायक जाको नितनितत शिव बिरंचि
सुरनरमुनि भाइभोरे २९५ व्रजते निकसि हरि बनको चलत केती
शोभारा जत गायनलेत संभारि। अपनी अपनी धेनुपाछे मिलवनमिस
देखनचली जे चातुरहीं व्रजनारि। सबनि पैते लेतबरसा बरसा निहैना
करत सौंपत सबग्वाल वृन्दहि आपुनही मुरारि। रामदास प्रभुवे च-
ले बालक संग मेघमर जैसे फांदत दादुर बोलत चातक नितत वही
अनुहारि २९६ हमपर यहकौ गई बो बाजन। लेहारें यशुदा के आगे
जेतुम फोरे भाजन। दुरीनात सब प्रकट करिदेत नेकहु आईलाजन।
रामदास प्रभुदुरे भवनमाहि आंगन लागी गाजन २९७ मोहन मोहेड
रीबातन कहिकहि थोरीथोरी बतियां। मांगतदान दियो सरबसुरिस
रोषगयो जियते मैंनजान्यें हेउगी कौन भतियां। अटपटाय शुरझा-
यरही देखत किशोर मोको भूलीरी सबै गतियां। रामदास प्रभु को
अंगअंगनार तातेभुजन चापिलै लगाई छतियां २९८ चितवत क्यों न
री तेरो चितवतु लागतुकहा। एकनिपै अगरि दान मांगत हरिलूटत
नेहुको अति कठिनकहा। उरध श्रोवकरि दृग सूधेकरि मुखपट उत
करि निरखि नयनभरि करतहहा। इनहुंको कितनीये कीजे प्यारी
बोंधीको प्रभुहेरी चतुरचहा २९९ नयननले अति रसमाते अरुणाम्ब-

हवा डोरि लगत सुहाते । कबहुं लजात कबहुं अनखात कबहुं पुनि पिय
मनमुख चितवत इतराते । कबहुंक सकाअ्क देखरहत कबहुंक आपु
नहीं मुरि मुरि मुसकाते । रसिक प्रीतम सँग निशिदिन विलसत नेकु
नहीं सकाते ३०० खेलत मैं को काको गुसैयां । हरिहारे जीते श्रीदामा
बरबसही कत करत रुसैयां । जातिपांति हमते बड़े नाहीं ना हम बसत
तुम्हारी छैयां । अति अधिकार जनावत याते जाते अधिक तुम्हारे
गैयां । रूठिकरै तासों को खेलै रहेबैठि जहँतहँ सब गोइयां । सूरश्याम
प्रभु खेल्यो चाहत दांवदियो करि नन्ददुहैयां ३०१ खेलत श्याम
पौरिके बाहर ब्रजलरिका सँगजोरत जोरी । तैसेइ आपु तैसेइ सब बालक
अति अज्ञान सबकी मतिभोरी । गावनहांकदेत किलकारत दुरिदेखत
नँदरानी । अति पुलकित गदगद मृदुबानी मनमन हर्ष सिहानी ।
माटीले हरि मेलि दई मुख तबहीं यशोदाजानी । सांटीलिये दौरि
भुज पकरे श्याम लंगरई ठानी । लरिकन को तुम सबदिन झुठवत
मोसों कहा कहौगे । मैं माटी नहिं खाई मैया मुखदेखो निबहोगे ।
बदन उघारि दिखाई त्रिभुवन बनघन नदी सुमेर । नभशशि रविमुख
भीतरहीं सब सागर धरणीफेर । यहदेखत जननी मनब्याकुल बालक
मुखका आहि । नयन उघारि बदन हरिमूंद्यो मातामन अवगाहि ।
झूठेलोग लगावतमोको माटी मोहिंन सुहावै । सूरदास सब कहति
यशोदा ब्रजलोगन यहभावै ३०२ कहतनन्द यशुमति सुनिबात । अ-
बं अपनेमन सोचकरत कत जाके त्रिभुवन पतिसों तात । गर्गसुनाइ
कही जोबानी सोइसोइ प्रकट होतहोजात । इनते औरनहीं कोउसम-
रथ येहैं सबहीके नाथ । मायारूप मोहनीलाई डारभूलेसबयेगाथ ।
सूरश्याम खेलत ते आये माखन मांगत देमाहाथ ३०३ तबहिं यशो-
दा माखन ल्याई । मैंमथिके अबहीं धरिराख्यो तुमहिंकाज मेरे कुं-
वरकन्हाई । मांगिलेहु येहीविधि मोसों सोआवै तुमखाहु । बाहर
कबहूं जाहुजनि खैहो डीठ लगैगी काहु । तनक तनक कछुखाहु ल-
लामेरा ज्योंबाढ़ि आवेदेह । सूरश्याम अब होहु सयाने बैरिनकेमुख
खेह ३०४ प्रथमकरी हरिमाखनचोरी । ग्वालिनिमन इच्छा पूरण
करि आपुभजे हरि ब्रजकीखोरी । मनमन रहेबिचार करतप्रभु ब्रज

घरघर सबगाउं। गोकुल जनमलियो सुखकारण सबकेमाखनखाउ। बालरूप यशुमति मोहिजाने गोपिन मिलि सुखभोग। सूरदास प्रभु कहत प्रेमसों येमेरे ब्रजलोग ३०५ सखासहितगये माखनचोरी। देखिश्याम गोखाक्ष पंथह्वै गोपीएक मथति दधिभोरी। हेरि मथानी धरी माटते माखनहो उतरात। आपन गई कमोरी मांगन हरिपाई घात। पैठे सखनसहित घरसूने माखनदधि सबखाये। छूंछीछांड़ि मटुकिया दधिकी हँसि सब बाहरआये। आयगई करलिये कमोरी घरते निकसे ग्वाल। माखनकर मुखदधि लपटानो देखिरहीनँदलाल। कहँआये ब्रजबालनकेसंग माखनमुखलपटानो। खेलततें उठिभज्यो सखायह यहिघर आय छिपानो। भुज गहिलियो कान्ह यक बालक निकसे ब्रजकी खोरी। सूरदास ठगिरही ग्वालिनी मनहरि लियो अजोरी ३०६ चकितभई ग्वालिनि वनहेरेउ। माखनछांड़िगाइ मथिजैसे कितते कियो अबेरउ देखेजाइ मटुकियारीती मैंराख्यो कहुँहेरि। चकितभई ग्वालिनिमनअपने ढूँढ़तिघर फिरफेरि। देखत पुनिपुनि घरके बासन मन हरिलियो गोपाल। सूरदास रसभरीग्वालिनी जान्यो हरिकोख्याल ३०७ ब्रजघरघर प्रकटी यहबात। दधि माखन चोरीकरिलै हरि ग्वालसखा सँगखात। ब्रजबनिता यहसुनि मनहर्षित सदन हमारेआवै। माखनखात अचानकपाये भुजभरि उरहिछुवावै। मनहींमन अभिलाष करतसब हृदयधरतयहध्यान। सूरदास प्रभुको घरलेकैदेहौ माखनखान ३०८ ग्वालिनि घरगयेजानी सांझकी अँधेरी। मंदिरगये समाइ श्यामतन लखिनजाइ देहमेह रूपकही कोकहै निबेरी। दीपक गृहदान करेउ भुजाचार प्रकटधरेउ देखत भईचकित ग्वालिनि इतउतकोहेरी। श्यामहृदय अतिविशाल माखनदधि बिंदजाल मनमोहेउ नंदलाल बालकही बेरी। युवती अति भईबिहाल भुजभरिदै अंकमाल सूरदास प्रभु कृपाल डारेउ तन फेरी। करसों करलै लगाइ महरिपै गईलिवाइ आनंद उरमेंनसमाइ बानहै अनेरी ३०९ यशुमतिलौं देखुआनि आगेह्वै लेपिकानि कान्हयांगहि ल्याई कुंवर आनको कि तेरो। अबलौं मैं डारी कानि सही दुखदहीहानि अजहूं जियजानिमानि कान्हहैअनेरो। दीपकहौं धरेउ

बारिदेखत मुख भईचारि हारीहो करति बरति दिनदिन को फेरो। देखियत नहिं भवन सांझलैभोइ तनतैभोसांझ छलमों कछुकरन फिरत महरिको जठेरो। हेरतलनकीदरहीश्रोभानहिं आलकहीकानोंइलघु- सुनलिखइ उड्डगगापथफेरो। उरहननहिं देहुंकाहिकहेतू इतनो रिसाइ नहींब्रजहि बासु सासु तेही विधिमेरो। यशुदा निरखे कुमार गोपी बरयो निहार भूलीभ्रम रूप मानों आनकोऊ हेरो। मन में बिहँसत गोपाल भक्तपाल दुष्टगाल जानैको सूरदास चरितकान्ह केरो ३१० महरि तुम मानहु मेरी बात। ढूंढि ढढोरि गोरस सब घरको हरेउ तुम्हारे तात। कैसे कहति लघोकोकेते ग्वालकांध देखात। घरनहिं पियत दूध धोरीको कैसे तेरो खात। असम्भाव बोलन है आई ढीठ ग्वालिनी प्रात। ऐसो नहीं अचगरो मेरो कहा बनावति बात। का मैं कहां कहति सकुचतिहौं कहादेखाऊं गात। हैंगुवानहै सूरके प्रभु के ह्यां लरिकाहूँजात ३११गये श्याम तेहि ग्वालिनिकेघर। देखी जायमथति दधिठाढ़ी आपुलगे खेलनद्वारेपर। फिरिचितई हरिदृष्टि परिगये बोलिलये हरि वे सूनेघर। लिये लगाय कठिन कुचके बिच गाढ़े चापिरही आपनकर। उमँगिअंग अँगियाउर दरकी सुधि बिसरी तनकी त्यहि अवसर। तब भये श्याम बर्ष द्वादश के रीझिलई युवती वा छबिपर। मनहरि लियो तनकसे ह्वैगये देखिरही शिशुरूप मनोहर। लै माखन मुख धरति श्यामके सूरज प्रभुरति पति नागर वर ३१२ ग्वालिनि उरहन के मिसआई। नंद नंदन तनमन हरिलीन्हो बिनुदेखे छनरह्यो न जाई। सुनहुमहरि अपने सुत के गुण कहा कहो क्यहिभांति बनाई। चोली फारि हारगहि तोरेउ इन बातनि कहा होत बड़ाई। माखन खाय खवावत ग्वालनि जो उबरेउ सो दियोलुटाई। सुनहु सूर चोरी सहिलीन्ही अब कैसे सहिजात ढिठाई ३१३ कबहिं करनगयो माखन चोरी। जानतिहौं जु कटाक्ष निहारी कामल नयन मेरो इतनीकिशोरी। दैदै दगाबुलाय भवनमें भुज भरिभेंटति उरज कठोरी। उर नख चिह्न देखावति डोलति श्याम चतुरभये तुम अतिभोरी। उरहन के मिस आवतिहो नित चितैरही जनु चन्दचकोरी। सूर सनेह ग्वालिमन अटक्यो अन्तरप्रीति जात

नाहिँ तोरी ३१४ कहाकहौं हरिकेगुण तोसों। सुनहु महरि अबहीं
अंबर जो रंगकीन्हे मोसों। मैं दधि मथति आपने मन्दिर गये तहां
यहिभांति। मोसों कहेउ बात सुनुमेरी मैं सुनिकै मुसकाति। बांह
पकरि चोली गहि फारी भरिलीन्ही इंकवारि। कहत न बनै सकुच
की बातें देखो हृदय उघारि। माखनखाय निदरि नीकीबिधि तेरे
सुतकी घात। सूरदास प्रभु तेरे आगे सकुचित कहेउ न जात ३१५
ऐसे हाल मेरे घरमें कीन्हेहों लैआईहों तुमहिं पैपकरिके। फोरे सब
बासन धरके दधिमाखन खायो जो उबरेउ सो ढारेउ रिस करिके।
लरिका छिरकि महीसों देखो उपज्यो पूतसपूत महरिके। बड़ोसाट
घरबरो बुगनिकोटूक टूकांकियो सखन पकरिके। पारिसपाट चलत
तब पायहों ल्याई तुमहीं पै पकरिके। सूरदास प्रभु ऐसे राख्यो य-
शुदा जैसे राखिये गजमत्तको जकरिके ३१६ श्यामसब भाजन फोरि
पराने। हांकदेत पैठत हैं पैना नेकन मनहिँडराने। छीके छोरिमारि
लरिकनको माखन दधि सबखाई। भवन रच्यो दधिकांदो लरिक-
नि रोवतपाये जाई। सुनु यशुमति सबही के लरिका तेरोसो कहूँ
नाहिँ। हाटनि बाटनि गलिन कहूं कोउ चलि नहिँ सकत डुराहिँ।
ऋतु बसन्तऋतुको खेलतकन्हैया सबदिन खेलत फाग। रोकिरहत गांह
गली सांकरी टेढ़ी बांधत पाग। बारेते सुतये ढँगलाये मनहीं मनहिँ
सिहाति। सुनहु सूरग्वालिनकीबातें सकुचि महरि पछिताति ३१७
दैमैया भँवरा चकडोरी। जायलेहु आरे पैराख्यो कान्ह सोतले रा-
खीकोरी। लैआये हँसि श्याम तुरतही देखि रहे रंग रंग बहुडोरी।
मैयाबिना औरको ल्यावै बारबार हरिकरत निहोरी। बोलिलये
सब सखा संगके खेलत कान्हनन्दकी पौरी। हँसेइ हरि तैसेइ ब्रज
बालककर भंवरा चकरिनकी जोरी। देखत जननि यशोदा यहसुख
बिहँसति बारबार मुखमोरी। सूरदास प्रभु हँसि हँसि खेलत ब्रज ब-
निता डारत तृणतोरी ३१८ कान्हउठे अतिप्रातही तलबेली लागी।
प्रिया प्रेमके रसभरे रति अन्तर खागी। श्याम उठत अवलोकि कै
जननी तबजागी। सुन्दर बदन बिलोकिकै अँगअँग अनुरागी। माता
बूझति सुवनको बलिगइ मेरेबारे। कहा आजुअचरज कियो तुमउठे

मचारे । झारि जलद तबनांह दिया छबिपर तनुवारेउ । अरुनागमजलौ प्रेमनां सुत वदन पखारेउ । वारिसुखारी अनुरई गार्गोरसखाके । सूरश्याम ऐसीदशा त्रिभुवन बशजाके ३१९ उत वृषभान सुताउठी यह भाव विचारे । रैनि बिहानी कठिन सों मनमथ बलभारे । श्रीवकीर्ति सारिते।रिके अँचरासों बांध्यो । इहैबहानो करिलिये। हरि मधु अनुराध्यो । जननीउठि अकुलाइ के क्यों राधा जागी । कहांचली उठि भोरही सोबैन मभागी । अबजननी सोऊं नहीं रविकिरण प्रकाशी । तुह उठति काहेनहीं जागे व्रजबासी । आप उठीआंगनगई फिर घरही आई । अबधौं मिलिहैं श्यामको पलरहे नजाई । फिरिफिरिअजिरहि भवनही ततबेली लागी । सूरश्यामके रसभरी राधा अनुरागी ३२० सुनुरीमाताकालिही मोतीसरी गवांई । सखिनसंग यमुनागईधौंउतहिं चुराई । कीधौंजलहीमेंगई यहसुधिनहिंमेरे । तबतेमें पछितातिहा कहीं नहिंडरतेरे । पलकनहीं निशिकहुं लगीमोहि यापथरितेरी । यहिडरतेमैं आजुही अतिउठीसवेरी । महरिसुनत चकितभई सुखउपालन आवै । सूर राधिका गुणभरी कोउ पारन पावै ३२१ धन्यकान्ह धनिराधागोरी । धनिबहभागनुहाग धन्ययहधन्य नवल नवलाबव जोरी । धनियहामिल निबन्य यह वैठनिधनि अनुराग नहीं रुचिजोरी । धनियह अरसपरस छबि लूटति महाचतुर मुख भारे भोरी । प्यारी अङ्ग अंग अलबेली पिय अवलोकत लगत ठगोरी । सूरदास प्रभु रीझि थकित भये नागरिपर डारत तृणतोरी ३२२॥ रागसूहो ॥ श्यामनिरखि प्यारीअंग अंग। अङ्कोच रहति सुखतन नाहिं चितवति जेह बसतरहतअनंतअनग। चपलनयन दीरघ अनियारे हावभाव नानागतिभंग। वारौमीनकोटि अम्बुज ।गा खं न वारत कोटिकुरंग। लोचन नहिं ठहरात श्यामके कहुं । नअनामुखरंगसूरदास प्रभुपिय प्यारीबश ज्यौंब्रमडोरीफिरत संगअंग ३२३ ॥ रागबिलावल ॥ सुनहु महरि तोरोलाड़िलो अतिकरत अचगरी । यमुना भरन जहँ हमगई तहँरोकत डगरी । शिरते नीर ढरायदै फोरीसब गगरी । गेडरीदई फटकारिकै हरिकरतहैं लँगरी। नितप्रति ऐसे ढँगकरै हमसोंकहैं धगरी । अब बसवास नहीं बने यह तुमब्रज नगरी । आपुगयो चढि कदमपर चितवत रहीं सगरी । सूर

[illegible] हमसों कौ झगरो ३२४ ओमुख श्याम पिया सँगकी [illegible]। [illegible] दुखमा हृदय काहूनहिँ राख्यो। [illegible]। अहंकहत सबनी अवलोके। सकुचि [illegible]। [illegible] पियहृदय निहारेउ। उनपतिलोंहि [illegible] बाढै। हरिपद शरणाश्रयपद [illegible] ३२५ [illegible]। कोउरीझत कोउ खीझतिबाम। काहूको [illegible]। काहूमुखपछिवौ आवतनाहिं। बहुनायक [illegible]। आकोप्रिय पावै नहिँ जाप। ताको ब्रजनारी पति [illegible]। [illegible] को अपमाने। काहूसों कहिआवत साँझ। रहत [illegible] घरमाँझ। काहूरैनि सब संग बिहात। सुनहुसूर ऐसे नँद [illegible] ३२६ घर घुलिकरौं श्रकलेश्याम। अरस परम सनोहन यहजा- [illegible]। [illegible] जाके भवन न आवत सोमन [illegible]। [illegible] औरहि काहूके रिस पावति कहिब [illegible]। [illegible] खंडित बचनकहत सुखहोत। [illegible] सूरप्रभु ताके आवत होत उदोत ३२७ ललिता को [illegible]। आजु चलौगे रैनितुम्हारे प्राणपियारीहौतुमबाम। यह [illegible] बहुनायकके भेदअपार। साँझ समय [illegible] नन्दकुमार। वहबैठीमारगहरिजो- वति [illegible] श्याम। सूरश्याम आवनकी आशा सेज [illegible] ३२८ ज्यावनहीं पियआवही क्योंकहाठगाने। मैं तबहीकी [illegible] आजुभुलाने। हौंनाहीं नहिँकहतहौंमेरी सौंकाहे। आवत्यौं चौंकतभये मोकों रिसदाहे। कहांरहे कासोंबनी तहँई पगुधारो। सूरश्याम गुणगावरे हृदय बिसारो ३२९ काहे को कहिगये आईहैं काहेझूंठी सौंहैंखाये। ऐसेमैं जानेनहिँ तुमकोयेगुण करि तुम प्रकट दिखाये। भलीकरी दरशन यहदीन्हौं जनमजनम के तापनशाये। तबचितयेहरिनेक त्रियातन तुमको हिरदयमाँझबसाये। सत्य कहत तोसोंहौं भल्यो इतनेहि सब अपराध समाये। सूरदाससु- न्दरी सयानी हँसिहँसिलीन्हेहरिअंकमिलाये ३३० नयनकोरिहरिके प्यारी बशकीन्ही। भावकरेउ अँखियान को ललिता लखिलीन्ही।

तरुनगण नितम्बनिकै हरिहित भोलसाथी। अलीकनी मनभावते पिय मैं बाँधे। दामनी रतिनाहैनी निधिमथुरा आडे। … मन्मथ फौजे आवत्यो … भये। भ्रात्मुमन्द पाछे… पुरसोत गुरुभाते। अंबहि… छीनगोरिनकी करुनासुनाये। और मारूम … लिखि धारि। कौन शोभन पियको दियो मुञ्ज सांवरोरी ३३१ उद्धकि पंचबिनायक प्याम। अतिहुल चंचलहुल उरमारि अति मदन संत तनु बाम। अतुल पनन जो नटवारी निजअभये पियकैन। हाथाकरति चरणा करतेकोति कहा करत ढँढ़ोरे। कहूरिमाम रसभरे परस्परसति विदरोति अथरे। सूरदास रतिपति निकुलकोर नागरही मुसक्याई ३३२ पियर्थ गोरीतनु आवताई। मकुचि उठीमाथोर पल्लोनिं प्रनाम कराय जाने। आजमान रीत अन्तरभाये पियप्यारी लालेरत। मधुरि मुरलिया कराकाल देरति भृकुटी बंकता फेरत। होमेनया किरित लुबाहिं मिस्या गे नीरि निकट क्लिरियौन्दी। मरुकरति पियसों कुथबाशाभाजु नुसंहिं मैं जानी ३३३ श्यारी सुनियति तनयाके ललताई नन्दकुमार। कुल नपत जो। ... बाढ़ना लाकोमुला संबकरत बिहार। मुराज्ञा अनगी ... बाहुलक संभजो शृंगार। चन्द्रचोहतर आवहिन है उघा ... बरसि सिंचार। रुकभ्रचकभी बोर अलाउ पांचभन्दरके कमलनमस्कार। सूरदास यहजुगल रूपको रमनराधिकाप्रथा उरधार३३४ देखिसखी पांचकमल हैशम्भु कमल अब्ज उरराजत जिनकरा नयनश्च चरन। एककमल प्यारीकर लीन्हो कमल सुकोमलअबा। युगलकमल मुखकमल विचारत प्रीति न क्रमहूभंगा। मदयुग कमल मुख्य कम्नु अव विकसत बहुविधि रंगतरंग। तिनमें लोनिकोसरुशी बशतीनि सुकरथपअंग। जेईकपिल सनकादिक दुर्लभ जिनहीं निकसी गंग। तेईकमल सूरजित विलसत निपट निरन्तरसंग३३५ देखसखि चारचन्द्रयक ठौर। निरखत बैठनितर्वनि पियमंग सरसुताकोओर। हैशशि प्रयाम नवलघन सुंदरहै कीन्हे बिधिभोर। तिनके मध्यचारशुक राजत हैफ लआठ चकोर। शशिगर्भ संगप्रबाल कुंदयालि अरुभि रहेउ मन मोर। सूरदासप्रभु अतिरति नागर ललिबलि युगलकिशोर३३६ देखु री प्रकटद्वादशमीन। षटइन्दु द्वादश तरणि शोभित बिमल उरगगा

गीत । अद्भुत अम्बुज [illegible] कौशिक ना [illegible] । [illegible] सि-
न्धु [illegible] वामिनी बसति [illegible] । [illegible] श्रीपति [illegible] राजत [illegible]
[illegible] । [illegible] गिरिधर कुंवरपर दूरजन [illegible] ३३७
देखु [illegible] । [illegible] बालोक बिराजत [illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible] प्रकाश कथाको [illegible]
३३८ [illegible] छिपावति । [illegible] मुक्ता-
को [illegible] । [illegible] दूहावति ।
नव [illegible] काहे [illegible] लगावति । [illegible]
कहेउ [illegible] भावति । सूरदास प्रभु [illegible]
लोचन [illegible] ३३९ [illegible] सुनि
[illegible] । [illegible] बिचारी ।
[illegible] ।
[illegible] । [illegible]
[illegible] । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको [illegible]
वो ३४० [illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible] बरोधमान
नहि [illegible] । अति सुपक्व सुरलीके [illegible] परत उर्माग
अनुराग । [illegible] कनकमय [illegible]
प्रताप [illegible] न मंदरि शुकमानि मरकट कोकिलकाग । [illegible]
नि [illegible] गुह्य [illegible] । सूरश्याम उठि भे-
दिपरम्पर [illegible] ३४१ [illegible] प्रीतम सुतरिपुबंधव
आयुन [illegible] बिलम्ब [illegible] । [illegible] माथे कोटि प्रका
श [illegible] । [illegible] सुतपति [illegible] भोजन न
सुहाई । [illegible] मानहु [illegible] । [illegible]
सुतापति [illegible] को मैं समुझावें । सूरश्याम [illegible]
[illegible] ३४२ [illegible] प्रकट
भयो । [illegible] छांडियो । प्रीतम

पति ताको पुनि वाहन ता वाहन धनसुत [illegible]। [illegible]सुत तात
कहतहैं तापर कामल सकलछयौ। [illegible]
मन मांझ रयो। शैलसुताको रूप [illegible] सुनयो।
सारँगसुत वाके सुतको [illegible]। [illegible] रविरथ
रविकेवश अजहुंनमोहन [illegible] ३५३ [illegible]।
जलजसुतके सुत कि [illegible]। [illegible]
उरपर इंद्रआयुध जानि। [illegible]
तानि। पिनाकी सुत तामुवाहन भक्ष को भक्ष [illegible]। [illegible]
रिपु मलयज हुता हुताशनजागि। [illegible] तजो
शिरवरि पानि। सूरदास [illegible] ३५४
कहियो अति अबलादुख पावै। [illegible] बारबार
समुझावै। सारँग रिपु तापति रिपुता रिपु ता रिपुतनहि [illegible]।
हरिवाहन वाहन पतिधाइक तासुतआनि बचावै। सुररिपुगुर [illegible]
तारिपु ताचहि बेगिदिखावै। [illegible]
तपनिबुझावै ३५५ कहांलौं [illegible]। [illegible]
न लागत श्यामसुत घर [illegible]। [illegible]
उदित सुरछिमाछिजाइ। गिरिजापति रिपु [illegible]
पिय कथासुनाइ। रविकरशशि बिरहा आपनआ[illegible] [illegible]
पाइनुलाइ। बेगहि मिलो सूरके स्वामी उरवि तनया पति मिलिहैं
आइ ३५६ गोरिपु तारिपुतामुत आयुधप्रीतम तहांनिहारे। [illegible]
संभव जानन ते तहँ रहे प्राण समारे। [illegible] गवन कियो [illegible]
स्वाद लुब्ध रस आल। [illegible] जोवति कलमलाइ अति
ब्याल। भोरभये पशु [illegible] निरहिनिरति मावै। यहिविधि
मिलहिं सरके स्वामी चतुर होइ सोजावै ३५७ सोचति राधालिखति
नखनि महि बचन कहत [illegible]। क्षिति पर कमल कमलपर
कदली कदली पङ्कज कियो प्रकाश। [illegible] अलि सारँग सारँगपति
सारँग रिपुकिओ ले कुल बास। तहँआरपंथ पिताधुन ऊदितवारिज
बिबरंगभव आश। सारँग मुख ते परत अंबुझरि मानोशिव [illegible]
तपन बिनाश। सूरदास प्रभु बिनु हरि हर रिपु दाहत अंग [illegible]

[illegible] सों हरि [illegible] । हरिवदन [illegible] मुदित जोवत हरि [illegible] । [illegible] को सुतहरि [illegible] [illegible] हरि अभिमान गवांये । अब [illegible] आये ३४६ सखीरी हरि [illegible] है प्यारी । [illegible] निकट [illegible] भई [illegible] । [illegible] पहुप [illegible] के [illegible] । [illegible] लपु रेख । घट [illegible] संघत [illegible] । [illegible] आनि मिलावहु हरत आरति [illegible] । [illegible] हरि आनँद रति मानि । यह [illegible] नहुँ बाढी । सूरदास मिलि रसिक [illegible] ३५० श्री नव नागरि प्यारी । [illegible] । बिहारिनि लाडिली प्यारी । तेरी कीरति [illegible] ॥ [illegible] रहेउ [illegible] काम [illegible] । अभिमान [illegible] ताहि ते नहि [illegible] । करो [illegible] परम उदार [illegible] बार बार सुनाइये । ललितादिक श्री [illegible] । श्री नव नागरि प्यारी । तेरी [illegible] । श्री बिहारिन लाडिली । सैसोय पहिरन भूखन [illegible] । सारी सों [illegible] प्रकट बेनी देखिये । [illegible] मानों भँवर पांति [illegible] । ललित कटि पर लाल लहँगा [illegible] कंचुकि कसतनी । प्रथम योवन ज्योति तनकी जात नहिं कवि पै भनी । श्री नव नागरि प्यारी । तू चन्द्रबदनी हे मृग नैनी । बिहारिन लाडिली प्यारी । लौंसये चंपक तन शुक पिक बैनी । वाणीसी पिक शुक नासिका प्यारी अधर बिंब बिलासिनी । कनक कुण्डल अलका झलके कपोल [illegible] दामिनी [illegible] ललित मुख भर पान बीरी नासिका मुक्ता हरे । चिबुक सांवल बिन्दुकी छबि कौनबिध सरबर करे । श्रीनव नागरी प्यारी । तेरी बंदो जग सब ताई बिहारिन लाडिली प्यारी । यह छबि [illegible] बरनी न जाई । बरनी न जाइ यह छबि [illegible] प्यास बढावही । दसन दामिनि अधर राते लाल

अति सुख पावहीं। गौर भाल मिथ्याल लोचन कपोलिन अति कांति राजहीं। भौंह काम कमान मानों बाण मन्मथ साजहीं। श्रीनवना-गरी प्यारी। तेरे छोटीछोटी लरवाल मोती। बिहारिन लाडिलीप्या री। तैसिये बीच गुंजाकी पोती। पीतपुंज जराय चौकीतेरी उर पर जगमगी। द्वै भुजा पर सघन फोंदा फूँद जिनि औरकी लगी। द्वै कर कंकण जटित दोऊ चारु चूरी विराजहीं। रतन जटित अमोल मुंदरी अँगुरियन छबि छाजहीं। श्री नवनागरी प्यारी। तेरे पांय नूपुर झनकार। बिहारिन लाड़िली प्यारी। तैसिये अनुरी चरण बिहार। मधुरी चरण बिहार यह गति राजहंसनि अरपिये। जघन सघन सरोज भारी देखि सिंह कटि उर पिये। किंकिनी किंकिनी प्यारी निकसही नीबी नी। झबा झलकेदेखि दोऊ रीझि रहे श्या-मलधनी। श्रीनवनागरी प्यारी। तू पिय तन देखि मुर मुसिक्यानी। बिहारिनि लाडिलीप्यारी। उन बंसीहू गिरत न जानी। नजरीं बगी गिरत करते पीत पट नखि भौं परेउ। रहे जैसे चित्र जैसे पगन पुहमी ते टरेउ। कुंजिजात कछु अगनकी सुधि साजत सोभित अंग। नृपति राजकुमार हो सखिभुजाभरि मानिनगहे। श्रीनवनागरी प्यारी। तेरे सुबस बसेजु कन्हाई। बिहारिन लाडिली प्यारी। अंग अङ्ग रहे अरुझाई। अङ्गअङ्ग लाल लुभायरहेब रसिक सिरमुकुट मणी। शुभ रूपशीलसुहाग सुन्दरि और सखि लगानतधनी। ब्रजराज नन्दलाल कि-शोरकेकोउ और चित नहिं आवहीं। बलिजाउँ श्रीवृषभानु नन्दनि नवहेतबेगुनजावहीं। श्रीनवनागरीप्यारी। तेकोश्यामसनोहरबोली। बिहारिन लाडिली प्यारी। तू उठिचलु नवल किशोरी। उठिचलु नवलकिशोरि राधेनवललाल बुलावहीं। सुन्दर श्याम सुजानहीं स-खिबारबार कहावहीं। छांड़मान सम्हारिप्यारी बारबार मनावहीं। बलिजाउँ श्रीवृषभानु नन्दनितो हेतमोहिं पठावहीं। श्री नवनागरि प्यारी। यशतेरो ही पियमनभावे बिहारिन लाड़िली प्यारी। तो यश आपुहिं श्रीमुखगावे। गाय तोयश आपुश्रीमुखसुनी तनमन रसि रही। धन्यतू धनिप्राण जीवन शपथकरि मोसों कही। ब्रजकरोबि-बिध बिहार भामिनि इतो गहरु न कीजिये। बलि बिप्णुदास बि-

[illegible] मोहन मुख्यकीजिये। ३५१ ॥ रागबिलावल ॥ व्रजकीरीति
[illegible]। जो [illegible] नन्द भवन में आवे ताको मनहरि लेत
[illegible]। कोउ अघनाउ सुख माखनखोहि तनकी कछा कहौं सुनिकाई।
[illegible] चलत छाँड़ि द्वारे निकल आत हँसत खेलत अँगनाई। मातु
[illegible] समर्थ गोद्वलुद्यो न समाई। प्रभुकल्याण गिरिधर
की [illegible] पलकदी घोष महेर नहिं जाई ३५२ हरिसूरति बिनुदेखे
कलनपरे। जानिकिते मेरी दृष्टिपरे मेरे नयननते न टरे। श्याम सुंदर
मनमोहन ललना प्राणजीवन धन क्यों बिसरे। रसिक गोपाल सनेह
न लहै देहसुरति लखिकौन करे ३५३ भोजनभयो भावतमोहन। तातो
[illegible] जाहुगमोहन। खीरखांड खीचरी सवाँरी। मधुर महेर गोपनि
[illegible]री। राय भोगलियो भातपसाय। घृत टटकौ [illegible]। सद
माखन तुलसी देडार्यो। घृत सुनाम कचोरनिनायो। पापरबरी अचार
परमशुचि। अद्रक अरु निबुआन ह्वै हैं रुचि। सूरन करि तरिसरस
सोरई। सेमभागरी भगति खोरई। भरता भटा खटाईकीनीं। भाजी
भली भांति दशकीनीं। सागुचना सरसा चौराई। सोवा अरु सरसौं
सरसाई। बथुवा भलीभाँति रचिरांध्यो। हींग लगाय लायदधि
सांध्यो। पोईपरवरसागफरीचनि। टेंटीडेंडस छौंकिलये पुनि। कंदूरी
और ककोराकौरे। कचरी चारि चचेंड़ा सोरे। बने बनाय करेला
कीन्हे। लोन लगाय तुरत तलिलीन्हे। फूले फूल सहिंजना छौंकि।
मनरुचि होय नाकके औंकि। फूल करीलकली पाकरिसम। फरी
अगस्तिकरी अमृतसम। अरु थोहा औंबिलोदई खटाई। जेंवत कटु
रसजाग लटाई। पेठा बहुत प्रकारनि कीन्हें। तिनतौ सबै स्वाद हरि
लीन्हें। खीरारामतोरैया तामें। अरु बिनरुचि अंकुर जियजामें। सु-
न्दररूप रतालू राता। तरिहैं लीन्हो अबहीं ताता। ककरी कचरा
अरुकचनारेउ। सरसानिमानिनि स्वादसँवारेउ। कथुकभांति केराकरि
लीनों। दैकरीब हरदी रँगभीनों। बरी बारिल अरुबरा बहुत बिधि।
खारे खाटे मीठे पयनिधि। पानी नारायतो पकोरी। डभकौरी सुं-
गळी सुठिमौरी। अमृत इडरह रहे रससागर। बेसन सालन अधिको
नागर। खाटीकढी बिचित्र बनाई। बहुतबार जेंवतरुचिआई। रोटी

सोंधर कीन्हे बेसन करि । [illegible] सैंधो मिलाय घोर । अरु कहि जूंधाकरि तुरत बनाई । [illegible] ढँपाई । [illegible] दूर करि खूपरी । बहु घृतपाक [illegible] । पूरि [illegible] । गङ्गाजल उज्ज्वल सुन्दर सारी । [illegible] लावनी [illegible] । [illegible] सुथाल सहज मनमोहै । माखनपुनि [illegible] साधिन्हीकी [illegible] सामर लीन्हें । लावन लाडू लागत नीके । सेव सुहारी घेवर घी के । धूंझाँदे लागा मसूरी । मेवाभरी कपूरन पूरी । शाशिसमा सुन्दर सजल अंदरसों । ऊपरकनी अमृत अनुकरसों । बहुत अलौन [illegible] । नाहिन घटत सुधाते थोरी । [illegible] हरषत [illegible] । मनहुँ बुद बुदा उपजे अमी । फेनोमिली घुरी पयसंगा । [illegible] भई [illegible] । गाढ़्यौ दहेउ अधिक सुखदाई । ताऊपर पुनि मधुर मलाई । [illegible] बोई अवटि है राखेया । सुरभिसुर मीठोरसचाखेया । बासौंधी बिंदन अतिसोंधा । [illegible] चकचौंधी । [illegible] बधी बगारी । भरहे उठत झारकोन्यारी । [illegible] कीन्हें । सब मोहन बालक संगलीन्हें । [illegible] सोंधौया । प्रेममुदित [illegible] है मैया । थारकटोरा जटित रतनके । [illegible] जतन के । पहिले पनवारो परुसायो । तब आपुन करकौर उठायो । जेंवत रुचि सबको अधिकैया । भोजनबहु बिसरत [illegible] । [illegible] कपूर रसरचयो । मोमोहन निजकर रुचिअँचयो । [illegible] मुदितमन लाडलडावे । [illegible] देवकीपावे । [illegible] जल ल्याई । भरेउचलू [illegible] । [illegible] पुरानेबीरा । [illegible] दुतिदांत [illegible] । मृग मद [illegible] करलीन्हें । [illegible] सों दीन्हें । चन्दन चौर [illegible] । अपनेकर [illegible] अँगवान्यो । तापाछे आपनहूं गायो । [illegible] बहुत [illegible] सुनिपायो । सूरदास देख्यो गिरिधारी । बोलिदई [illegible] । यह जेवनार सुनै जो गावै । सोनिज भक्ति अभय पदपावै ३५४ ॥ रागबिलावल ॥ देखिसखी ब्रजते बनजात । रानिहि यशुमति सुतकीछबि [illegible] हरि हलधरगात । नीलाम्बर पीताम्बरओढ़े शोभाकछु कहीनहिंजात । युगल जलदयुग तड़ित मनहं मिलि अरस परस जोड़त हैं नात । [illegible]

मकराकृतकुण्डल झलकत विविध कपोल इहिभाँति। मानहुं जलद
तुमु न रवितापर बन्द धनुषकी कांति। कटकछनीकर लकुट मनोहर
गोचारन चले मनअनुमानि। ग्वालसखाबिच श्री नंदनंदन बोलत ब-
चन मधुर मुसकानि। खिरकौं ब्रजकी युवती सब आपुसहीमें करत
विचार। गोधन सुरभिलिये सूरजप्रभु वृन्दावनगये करत विहार ३५५

अथाघासुरको वध ॥ राग बिलावल ॥ नँदसुत लाड़िले हो सबब्रज जीवन प्रान।
बारबार माता कहैहो जागहु श्यामसुजान ॥ ध्रुव ॥ यशुमति लेतिब-
लाइ भोरभयो उठो कन्हाई। संगलिये सबसखा द्वारठाढे बलभाई।
सुन्दरबदन देखाइये। हरोनयनकेताप। नयन कमल मुख धोइये कछु
करोकलेऊ आप। माखनरोटी लेहु सरमधि औंटि रैनिजमायो। षटरसके
मिष्टानसोइ जेंवहु रुचिआयो। मोसोंलीजै मांगके जोइजोइ भावे तो-
हिँ। संगजेंवहु बलराम तुमहोरुचि उपजावहु मोहिँ। तबहँसिचितये
श्यामसेजतें बदन उघारेउ। मानहुँ पयनिधि मथत फेनफट चन्दउजा-
रेउ। सखासुभग देखनचले मानहुँ नयन चकोर। युगुल कमलजनु इंदु
परहो बैठिरहेअतिभोर। तबउठिआये कान्हमातजल बदनपखारेउ।
बोलिउठे बलराम श्यामकल उठ्यो सँवारेउ। दाऊजकहि हँसिमिले
बाँहगही बैठाइ। माखनरोटी मन्दहेउ हो जेंवतरुचि उपजाइ। जल
अँचयो मुखधोइउठे बलमोहन भाई। गाइलई सबघेरि चलेबन कुंवर
कन्हाई। टेरसुनत बलरामकी आयेबालक धाय। लैआये सब जोरि
केहो घरते बछरागाइ। सखनि कान्हसोंकही आजु वृन्दावन जैये।
यमुनातट तृण बहुत सुरभि गण तहां चरैये। ग्वाल गाय सब लेगये
वृन्दावन समुहाइ। अतिहि सघनबन देखिके हो हरषिउठे सबगाइ।
कोउ टेरत कोउ हाँकि सुरभिगण जोरि चलावत। कोउ कोउ हेरी
देत परस्पर श्याम सिखावत। अंतरयामी कहतजीयमें हमहिँसिखा-
वत टेरि। कान्हकहत अबकेगईहो पुनिधौं लीजोफेरि। कोउमुरली
कोउबेणु शब्दशृंगी कोउपरे। क्रूरकियो मनध्यान असुरयक बस्यो
अघरे। बालबछरुवनि राखिहौं एकबेर लैजाउ। कछुक जनाऊं अ-
पुनपोहो अबलौं रहेउ सुभाउ। असुरकुलहि संहारि धरणी को भार
उतारौं। कपटरूप रचिरहेउ दनुज यहि तुरत पछारौं। गिरि समान

ग्वालन संग बैठो जमुनापार । सुरभी लिए सब मनमोहो बालगोपाल करिप्यार । बैठगये सुखपाय धेनु चरन लगाये । तोषन्नाराधन भोजनकर सुख धरि छाक मँगाये । अघ नामको दैत्य आयो तहँ आगे अघाय । मानहुँ पर्वत कन्दरासो मुखफैलायसमाय । तब सुखफैलाय असुर तम आँखनमोरेउ । अन्धकार इमिभयो मनोनिशि बादर घोरेउ । आतिकिन्हें सकुचाइकै ग्वालबच्छ सबताइ । आगि आगि कहि कान्हकहि उठे दौरि सब धाइ । सोर सोर कहि कान्ह अगर यह कन्दल गाऊँ । सनभावत सबहीप्रथम सुखभांतिरमाऊँ । जियत्याग यह सुमतही अघको उमें उखारि । बालहुनी देहधरी तब असुरन मथो सम्हारि । सब ग्वालन आघात अघासुर टेरि पुकारेउ । रहेउ असुर देहथापि व्याकुल सुरति पसारेउ । अहाहार गिरधारिके निकासे गोकुल राइ । बाहेर आवह निकसिकै हो मैं कोरलियो सहाइ । बालकन बछराधेनु सबै धीत मनोहरबाने । अन्धकार मिटिगयो देखि उजियार अनुराने । आये बाहर निकसिकै मनमनकियो हुलास । हमअघनाम ब्रातडरत हैं काकाज सब सुखपाय । धन्यकान्ह श्रीनन्द धन्यधन्य शुभ धनि महतारी । धन्य लयो अवतार कोषिधर्म जिहिकहतारी । गिरि दसान तनुधरि आग पन्नगको अनुहारि । हमदेखत पल एकमेंहो मारेउ भुज पछा-रि । हरि हँसिबोले बैन संगनोतुम नहिंहोते । तुम सब कियो सहाय भयो तबकारज मोते । हमहुँमिलि बैठिकै बन भोगावारेजाइ । बंशी-वट भोजन बहुत हो यशुमति दियो पठाइ । ग्वालपरम सुखपाइ कोटिमुख करत प्रणाम । कहा बहुत शोभयं सपत यशुदाकेधाम । चढि बिमान सुरदेखहीं गगनरहे भरिछाय । जैजै धुनिनभ करत दे हो ह-र्षितपुष्प बरसाइ । ब्रह्मसुनी यहबात अमरघर घरनि कहानी । गो-कुल लीन्हेंजन्म कौनयह हम नहिँजानी । देखोंइनको खोजलै शोच परेउ मनमाहिँ । सूरश्याम ग्वालनलये इते बंशीवटकी छाहिं ॥२५६॥

दरसहरणब्रह्ममोहनलीला ॥ रागबिलावल ॥ हरखभये नँदलालबैठतरु छांहकी ॥ ध्रुव ॥ बंशीवट सुखदयो और द्रुमपास चहूंहै । सखालये तहँगये धेनु बनचरत कहूंहै । बैठिगये सुखपाइकै ग्वालबाल लयेसाथ । कांवरि भोरी लयेसखाहोआनि नवायोमाथ । आनदये मधुछाकतुरत वृंदा-

बनआवे । अंजन लहनसकार यशोदा बने पठावे । श्यामकहेउ बन
जानकी मातासों अनुमान । उनते देखआयेमने हो देखनही सुखपाउ ।
कान्हदेखि सखाहाक पुलकि आँगनहु बलाये । हरिहँसि बोलत बैन
प्रेमजननी पहुँचायो । पीछेपहुँचे आयतुरत संगीचल्योपजोया । पारजाय
नीकेगवनबसो हो आजनहीं सुखबाग । बनमाजी बिविकरत कमल
के पातगँवाये । तोरे पात पलास दरसदोना बनाये । भाँति भाँति
भोजननहि पत्रिनमें सिखान । बनफल लये संगावजेहो लायलिये चक-
रिन्यान । नगरोजन हरिकरत संगमिलि सुखद सुखासा । श्याम कोबर
प्रखेन महरखुल अरु श्रीदामा । कान्हसबनि मिलिजात है सोहै कोर
छिड़ाय । औरनसंत बुलाइके हो इहाँकछाप मुसकाय । ब्रह्मा देखि
बिचारि सखि कोउ नहिंबताई । मोहिंपठयो जिहिसोंपिताहि ताहके
हौंजाई । देखोंधों यहकौनहै बालबच्छ हरिलेउँ । ब्रह्मलोक लैजाउँ
मो तातहिबिधि कौर दुखदेउँ । अन्तरयामी नाथ तुरतलीन सबकी
जानी । बालकहै दियपठै धेनुबन कहाँ हिरानी । जहाँ तहाँ बनढूँढि
कै फिरिआये हरिदास । सखासबन बैठारिकै हो आपुनगये उदास ।
हरिके बालक बच्छ ब्रह्मलोकहि पहुँचायो । फिरिआये जो कान्ह
काहूकोउ नहीं बतायो । जानगोइ सबसंतवै बिधिलेगयो हराय । प्रभु
तबहीं तेहिरूपकेहो बालकबच्छ बनाय । ताहेकीन्हें और ब्रह्महुहि
नाहिउपायो । अपनो करितेहि जानिकियो ताको मनभायो । उद्या-
तन मारन सबअंसन हरिकीनो ज्ञान । अनजाने बिधि यहकरी होनये
रचे भगवान । उहैबुद्धि उहै प्रकृति उहै पौरुषतन सबके । उहैनाम उहै
भेष धेनुबछरा मिलिसबके । श्यामकहेउ मनसखनको ल्यावहु गावन
फेरि । संध्याको आगमभयो हो ब्रज तनहूँको घेरि । सुनत ग्वालतैं
धेनुचलेबन वृन्दावनते । कान्हहिं बालक जानिडरे सब ग्वालनिमन
ते । नखशिखतैं श्यामको लखाभये चहुँपास । ब्रजधेनु आगे दियेहो
आवत करत विलास । बाजतबेणुबिषाणा सबैअपने रँगगावत। मुरली
धुनि गोरंभ चलत पगधूरि उड़ावत । मोरमुकुट सिरसोहई मनहुँ चंद-
कनसीत । आसपास नाचत सखाहो बिचहरि आवतगीत। देखिहर-
षि ब्रजनारि श्यामपर तनमन वारति । यकटक रूप निहारि रहीमि-

अति चितआरति । कहाकहैं छबिआजुकी मुखसोंकत ब्रजभूरि ।मा-
नहुँ पूरण चंद्रमाहो कहुँरहेउ अपूरि । गोकुल पहुंचेजाय सायंकालको
अपनेघर । गोसुत अरु नरनारि मिलि करिहैं अतिआदर । प्रेमसहित
येमिलतहैं जे उपजाये आजु । यशुमति मिलि सुतसों कहतिहै रैनिक-
रत किहिकाज ।मैंघर आवन कहेउ सखासंग कोउन आवैं। देखतवन
अतिअगमडरों बेनोहिंडरावैं।बारबार डरपाइकै लेबलाइ पछिताय।
कालिहुते वेईसबै होल्यावहिँ गाइ बराय । यहसुनिकै हरिहँसैका-
लिहमेरी जायबलैया । भूखलगी मोहिं बहुत तुरत दाहु दे कछुमैया।
माखन दीनो हाथकै यह तबलौं तुमखाहु । तातो जलहै धामको हो
तनकलेत सोन्हाहु । तब यशुमति गहिबांह बहींहार लेनन्हवाये । रो-
हिणि करि जेंवनार प्रथम बलराम बुलाये । जेंवतअति सुखपावही
परुसति माताहेतु । जैंउठे अँचवन लियोहो हुहंकर बीरादेत । श्या-
मउनींदे देखि मातरचि सेजबिछायो । तापर पौढेलाल अतिहि मन
हरष बढायो । अघमर्दन विधिगर्व हरत लागत न लागीवार । सूरदास
प्रभुचरितको पावतकोउ न पार ३५७ ब्रजकी लीलादेखिगर्व विधिको
गयो ॥ध्रुव॥ त्रिभुवननायक आनिभये गोकुल औतारी । खेलतवालन
संगरंग आनंदमुरारी । घरघरते छाकैचलीं मानसरोवरतीर । नँदनंदन
के संगचलेहो बालकसखाअहीर । व्यंजनसकलमँगाय सखनके आगे
राख्यो । खाटमीठेस्वादसबै रसलैलैचाख्यो । हरिखसोंजेंवतग्वाल सब
लैलै आपुनखात । भोजनको सबस्वादलहो कहत परस्परबात । देखत
गण गंधर्व सकल सुरपुरके बासी । आपुनमें वे कहत हँसत येई अबि-
नासी । देखिसबैअचरजभये कहेउब्रह्मसोंजाय । जाकोअबिनाशीकहे
हो सो ग्वालनसंगखाय । यहसुनिब्रह्माचल्यो तुरतवृन्दावन आयो ।
देखिसरोवर सलिल कमलतेहिमध्य सुहायो । परमसुभग यमुना बहै
तहांहै त्रिबिधसमीर । पुहुपलता द्रुमदेखिकैहो थकितभयो मतिधी-
र । अति रमणीय कदम्ब छांह रचिपरम सुहाई । राजत मोहनमध्य
अवलि बालक छबिपाई । प्रेमसमान ह्वैपरस्पर भोजनकरत गोपाल ।
लावहुगो सुतहेरिकै हो प्रभु पठये ह्वै ग्वाल । बनउपबनसबढूंढिसखाहेरि
फिरि आये । बछराभये अदृष्टकोउ खोजत नहिंपाये । सबैसखा बैठे

रह्लोसैसेयोवोंजाय । बछरूहरन हरिजानि जियहो आपभयेबछराय । अलगोबिंद भयेहूरि बालकनिकरेब बिसाला । कहेंतुरत मंगाइ आपुके जैहिंलाला । ब्रह्मलोकब्रह्माभयो जैसालक बछरासमा । प्रभुकीलीला-धाम नहीं बिधिकियोगर्व अतिअङ्ग । तबचिन्तामणिता चितैचित्त यक बुद्धिबिचारी । बालकबछरुअनादरसे ओही अनुहारी । करतकुलाहल सबगये ब्रजघरअपनेधाय । अतिआदरकरिकरिलियेहोअपनीअपनी माय । ब्रह्माकियो बिचार जायनिजगोकुल देखो । करिहैं शोकसंताप जाइपितु मातहि पेखो । आयेतहँबिधना चलेघरघर देखोआय । संध्या समय होत कौतूहल जहांतहां दुहिगाय । कीयह गोकुलऔर किधौं मैंही भ्रम भूल्यो । यहि अविनाशी होहि ज्ञानमेरोभ्रमभूल्यो । अंतर-यामीजानिधौं हरिबछरुलै आइ । जगतपितामह भ्रम्यो होगयोलोक फिरिधाइ । देख्यो जाय जगाय बाल गोसुत जहँ राख्यो । बिधिमन चकृतभयो बहुरिअनको अभिलाख्यो । छिनुभूतल छिनुलोक सोंछि-नुआवैछिनुजाय । ऐसेहिकरत बरषदिन बीते थकितभये बिधिपाय । तबजान्यो हरिप्रकट ज्ञानचितमें जबआयो । धिगधिगमेरी बुद्धि कृष्ण सों बैर बढ़ायो । लैगोसुत गोपाल शिशुशरणा गयो ह्वैमाय । चारिहु मुखअस्तुतिकरै प्रभु क्षमोमोर अपराध । अनजानतही करीतुमहिंसों मैंबरिआई । येमेरेअपराधक्षमहु त्रिभुवन केराई । ज्योंबालकअपराध शतजननी लेतिकन्हारि । शरणागये राखतसदा औगुणसकलबिसा-रि । ज्यों खद्योत उड़िजाइ ताहि क्यों तिमिर नशावै । दीपक बहुत प्रकाश तरणिसमक्यों कहिआवै । मैं ब्रह्माइकलोक कोज्यों गूलरि फलजीव । प्रभुतुम्हरे इकरोम प्रतिहो कोटिब्रह्म अरु शीव । मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया । मिथ्याहै यहदेह कहोक्यों हरि बिसराया । तुमबिनुजानैजीवसब उतपतिप्रलय समाहि । शरणामोहिं प्रभुराखिये होचरणनकी छांहि । कीजैमोहिं ब्रजरेणु देहु वृन्दावन बासा । मांगोंइहै प्रसाद औरनहिं मोरे आसा । जोइभावै सोइकरो लतासलिल द्रुमगेह । ग्वालबालकी भृत्यकरोहो मनहिं सत्यब्रतजेह । जो दरशन नरनाग अमर सुरपतिहु न पायो । खोजत युगगये बीति अन्तमोहूं न देखायो । यह ब्रजपारस नित्य है मैं अब समुझी आय ।

वृन्दावन रजह्वैरहा मोहिं ब्रह्मलोक न सुहाय। मांगत बारम्बार शेष ग्वालनि की पाऊं। आज्ञा लेय कछुगानि मच्छकरि उदर पुराऊं। अबमेरेनिज ध्यानयहै रहौं ठूंठनित खाय। और विभव कीजियेहै मैं नहिं छांडौंपाय। तबप्रभु बोले आप बचनमेरो अब मानो। और काहिविधिकरौं तुमहिंते कौन सयानो। तुम ज्ञाताकर्मधर्म के तुमते सब ससार। मेरी माया अतिअगम कोउ न पावै पार। श्रीमुख बाणीकहत बिलंब अबनेकु न लावहु। ब्रजपरिक्रमा करहु देहके पाप नसावहु। तुरतजाहु वोहलोकको विधिकीन्ही मनुहार। ब्रह्माकरि अस्तुति चलेहो हरिदीन्हेंा उरहार। धनिबछरा धनिग्वाल जिनहिंते दरशन पायो। रोमरोम भयोधन्य कृष्ण माला पहिरायो। धनियशुमति जिन बश किये अबिनाशी अवतार। धनिगोपी जिनके सदन हो माखन खातमुरारि। मथुरा आदिअनादि देहधरि आपुन आये। धनिदेवै बसुदेव पुत्रमांगे तुमपाये। चारिबदन मैं कह कहौं तुम्हरी महिमागाय। सहसाननं निशिदिन रहैहो तऊ न बरणी जाय। गाय चरावत ग्वाल संगकरत जोहिं ध्यान लगायो। ते ब्रजबासिन बश रहत अतिप्रेमबढायो। वृन्दाबनब्रजकोमहत कापै बरन्यो जाय। चतुरानन पदपरशिके होगये लोक सुखपाय। हरिलीन्हें अवतार पारशारद नहिंपावै। सतगुरु कृपाप्रताप कछूताते कहिआवै। सूरदास कैसेकहै महापतितअवतार। शेषसहस मुखजपत सदाहोयोउन पावतपार ३५८

माधोजू जो जनते बिगरै। तुमिकृपाल करुणामय केशवप्रभु नहिंचित्तधरै। ज्यों शिशुजननि जठरअंतरगत शत अपराध करै। तऊ तनय तनुपोषि पोषिचित बिराजित अंकभरै। द्विजरतना दांत दुखित होत तबतौ रिसकाहि करै। क्षसित छोभखीर मधु मिश्रित मुख समीप संचरै। यदपि विटप जरहतन हेतकरि करकुठार पकरै। तदपिसुभाव सुशीत सुशीतल रिपुतन माहिंपरै। धरविध्वंसि हलहरन कृषीकरि बैरबीजसंचरै। सोसन्मुख सुखसहित सतोगुण शशिबहु फरनिफरै। कारणाकरनअनन्त अजितकहि कोटिबधचरणापरै। यहकलिकाल चलत नहिंमोपै सूरशरणहिं धरै ३५९॥ अथकालीदमन बड़ी लीला॥ रागबिलावल। नारदकहि समुझाई कंसनृपराजको। तबपठयो ब्रज दूत पहुप

नि स्वामिनीं ॥ कुंभ ॥ तब पठयो ब्रजदूत सुनत नारदमुख बानी। बार बार ... सुख ... मानी। धन्य धन्य मुनिराज तुम भला ... कीन्ह। दूत गयो तुरतहीं चर्लिहंजाय ब्रज ओहि। ... कालिहै तु जाय कमल सूप कोटि मँगायो। पत्रलिख्यो लिखि नाथ कह्यो बहुभाँति जनायो। कालिह कमलनहिं आवहीं तौतुमकोनहिं चैन। सिरनवाइ करजोरिकै तो चल्यो दूतसुनिबैन। तुरतपठायो दूत नन्दघरहीमें पायो। कमलपुहुपकेभार कंसनृपवेगिमँगायो। कालिह न पहुँचे जाइकै तबबसिहो ब्रजलोग। गोकुलमें जो सुखकियो हो ते करिहै सोसोग। जो न पठावहु पुहुप कहोगे तैसी भोकौं। दावेगो नृप तोर वचन पैसो नहिं चोकौं। यह जानहु गोपनिसौं इनपकारि मँगावहु काजि। पुहुप बेगि पठये बनैहा और बसहु ब्रजपालि। यह सुनि नन्द डराय ग्वालिहसनमन अकुलाने। यह कारज क्योंहोय काल अपनो करिजाने। और महर सब ग्वालिकै लकैसो करैं उपाय। कालिह प्रात ब्रज मारिहैं हो बाँधि सबन लै जाय। ब्रजमोहनको नामधरेउ कहि पकरि मँगावन। ताते अति भयो शोच लगत सुनि मोहिं डरावन। यह सुनि मुरजाये सबनि मुखहिं न आवै बात। कहो कहाअबकीजिये हो कैसे मिटिहै घात। कै बालकनि भगाय जाहिंलै आनभमि पर। बरुहमकोलैजाय श्यामबलराम बचैंघर। महरिसबैब्रजनारिसों काढ़पूछतिको उपाउ। जलमाहें ते करवरटरी हो अबकेनहीं बचाउ। कोउकहै दामनृपति जितनोधनचाहै। कोउ कहै जैयेगरगामकैमिलि बुधि अवगाहै। यहीशोचसबपरिरहे कहूंनहीं निरवार। ब्रजभीतर नंदभवनमें हो घरघर यहै बिचार। अन्तरयामी जानि नन्दसों बूझत बात। कहाकरतहोशोच कहाकछुमोसोंतात। कहाकहोंमेरेलाड़िले कहत बड़ो सताप। मथुरापतिके जियकछु हो तुमपर उपज्यो पाप। कालीदहके पुहुप मांगपठये हमसोंउन। तबतें मो जियशोच जबहिं ते बातपरी सुन। जो नहिं पठवहुं कालिहहो तौ गोकुल देउ लगाय। मो समेत दोउ बंधुतुम कालिहहिं लेय बँधाय। यहकहि पठयो कंस तबहिं ते शोच परेउ सबहिं। प्रथम पूतना आय बहुत दुखदै जु गई तबहिं। तृणावर्तके घाततें बहुत बच्यो दुखपाय। शकटा केघातें बचे

हो अबको करैसहाय । अघाउदरतें बच्योबहुत दुख सहेउकन्हाई ।
बकारहेउ मुखबाइ तहां भयोबर्म्म सहाई । इतने करवर ह्वैटरे देवनि
कियेसहाय । तबतेअबगाढ़ीपरीहोसोकोकछु न सहाय । बालातुमहीं
कहतकोनधौं तोहिंउबारे । सोइब्रजभीतर प्रकट कंसगहिकोपपछारे ।
यह जबहीं हरिसों सुनी नन्द मनहिं पतिआय । मगन भिरत जोसंग
रहेउहो सो करि लेय सहाय । नन्दहि यहसमुझाय कान्ह उठि खे-
लन धाये । जहँ ब्रजबालकहुते तुरत तहँ आपुन आये । गोप सुतनिसों
यह कहेउ खेलें गेंद मँगाय । श्रीदामा यह सुनतही सो घरते लायो
जाय । सखा परस्पर मार करैं कोउ कानि न मानै । कौन बड़ो को
छोट भेद मनमांहिं न आनै । खेलत यमुना तटगये आपुहि लायेटारि ।
श्रीदामा के हाथतें लैगेंद दई दहडारि । श्रीदामा गहि फेंट कह उहम
तुम एकजोटा । कहाभयो जोनन्द बडे़तिनकेतुमढोटा । खेलतमें को
छोटबड़ो हमहुं महरके पूत । गेंददियोही पै बनैहो छाँड़िदेहुसतिधूत ।
तुमसों झूत्योकहाकरो झूत्यो नहिंदेख्यो । प्रथम पूतना मारिकागासु-
रशकटासुर पेख्यो । तृणावर्त पटक्यो शिला अघा बकासंहारि । तुम ता
दिन संगहि रहे अबधूत न कहत सम्हारि । ठढ़े कहा बतात कंस को
कमल देहु अब । कालिहहिपठयेमाँगि एहुपअब लेदेहो सब । बहुत अ-
चगरी जिन करो अजहूं तजोभ्रूबारि । पकरि कंस लैजायसो हो का-
लिहहि परेखभारि । कमल पठाऊं कोटि कंसको दोष निवारों । तुम
देखत फनिजाउं कंसजीवतधरिमारों । फेंट लियो तब झटकिके चढ़े
कदम परजाय । सखा हँसत ठाढे़ सबै हो मोहन गयेपराय । श्रीदामा
चलेरोयजायकहिहैं नँदआगे । गेंदलेहुतुम आय मोहिंडरपावनलागे ।
यहकहिकूदिपरे सलिलकीन्हें नटवरसाज । कोमल तनउरिकेगयो हो
जहँसोवत अहिराज । यहिअंतर नँदघरनिकहेउहरिभूखेह्वैहैं । खेलतते
अब आय भूखकहि मोहिंसुनैहैं । अतिआतुर भीतरचली जेंवनकारण
आप । छींकसुनतकुसगुन कहेउहोकहाभयोयहपाप । अजिरचलीपछि-
तातकौंआ कोबोलनिवारन । मंजारीगइकाटितबहिँनिकसतही बारन ।
मननीमिजग भयाकुलभई कान्हअबेरलगाय । कुसगुनआजु बहुतभयेबो
कपालकहैं होउभाय । श्यामपरे दहकूदि मातौं जयगयोजनाई । आतुर

आये नन्दद्वारहि बूझत दोउभाई। नन्दघरनिसों योंकहत मोकोलगत उदास। यहकहतरहीमनहँ गयेहो जहँ कालीकोवास। देख्योपन्नगजाय अतिहिनिर्भय ह्वैसोवत। बैठीतहँ अहिनारि डरी बालकके जोवत। भागु भागु सुत कौनको अतिकोमल तेरो गात। सब्दसुनतको नहींतू होविषज्वाला अतिजात। तब हरिकहेउ पुकारि नारि पति देहुजगाई। आयोंदेखन याहि कंस मोहिंदियो पठाई। कंसकोटि जरिजाहिंगे बिषकीएक फुंकार। कहेउ पुकारि फिरिजाहितू होअति बालकसुकुमार। यहिअन्तर संगसखा जाइकह्यो नन्दसुनायो। हमसँग खेलतश्याम जाइ दहमांझ धँसायो। बूड़िगयो उबक्योनहीं ताबातहि बड़िबेर। कूदि परेउ पालिकदँबते होयबबारि नकरी सबेर। धाइधाइ करि नन्दसुनत दौड़े यमुनातट। यशुमति सुनियह बात चलीरोवति तोरतिलट। ब्रजवासी नरनारिसब गिरतपरत चलेधाइ। बूडेउकान्ह सबनि सुनि हो अतिब्याकुल मुरझाइ। जहँतहँ परीपुकार कान्हबिन भई उदासी। कौन काहिसों कहै अतिहि ब्याकुल ब्रजबासी। नंदयशोदा अतिबिकल परतयमुनमें धाय। और गोप उपनंद मिलिगहो बांहपकरिलैआय। धेनुफिरतबिललाति बच्छथनकोउनलगावैं। नंदयशोदा कहत कान्ह बिनकौनचरावै। यहसुनिब्रजबासीसबैपरेधरणिअकुलाय। हायहाय करि कहत सबै हो कान्हरहेउकहँजाय। नन्दपुकारत रोइबुढ़ाईमोहिंछुड़ायो। काहुदिन मोहलगाइ आइ जल बीच भँड़ायो। यहकहि कैधरणी गिरत जनु तरुकाटि गिराइ। नंदघरनि तबदेखिकै होकान्हहिं टेरि बुलाइ। निठुरभये सुतगात तातकी छोहन आवति। यह कहिकै अकुलाइ जलहि भीतरको धावति। धरतिजाय यमुनासलिल माहि आनति ब्रजनारि। नेकरहौ मनधीरहौ हाकोहै जीवनहार। श्यामगये जलबूड़ि वृथा धृग जीवनजगको। फिरफोरति गिरिजाति अभुगतातोरतिअँगको। मूर्छिकैपरी तनसुधिगई प्राणरहेउ कहुँजाय। हलधरआये धाइकै होजननी गई मुरझाय। नाकमूँदि जलसींचि अंगनि जननी करिटेरेउ। वारबार झकझोरि नेक हलधर तन हेरेउ। कहत उठी बलरामसों बनहिं तज्यो लघुभ्रात। कान्ह तुमहिं बिनरहत नाहिं हो तुमसों क्यों रहिजात। अब तुमहू जिनि जाहु सखा इक देहु

पठाई । कान्हहिं ल्यावै मोहि आजु अवसेरि कराई । काके पठाऊँ औरिके मनमध शोक समाज । प्रान कन्हाया गयोहो भूमि है गइ साँझ । कबहुँकहति बलराम कान्हहिं मरोहि बतावति । कहँ खेलत हो लालसेरि यह कहति सुनावति । जोपिगयो दुख सोकते रोवतदेखे लोग । तबजान्यो हरिकह गिरेजहो उपज्यो बहुरि बियोग । धृगधृगनं- दहि कहेउ और कितमोबिन जीहो । मरतनहीं क्याहिमारि बहुरिब्रज बसिहो कीजो । येहि दुखमें मारन सुखमनकरि देखहु ज्ञान । व्याकुल धरनी गिरिपरेहो नन्दभये बिनुप्रान । हरिको अग्रज देखु सुरतही पिता जगायो । माताको परबोधि दुहुन धीरज धरवायो । मोहिं दुहाइनंद की अबहीं आवतश्याम । नाथिनागसों आइहैं होतब कहियोबलराम । हलधर कहेउ सुनाइ नन्द यशुमति ब्रजवासी । वृथा मरत केहि काज करो क्यों वह अविनाशी । आदि पुरुष मैं कहतहीं गये कमलकेकाज । गिरिवरको तुम डरतहो वह देवन शिरताज । वह अविनाशीआहि करो धीरज अपनोमन । काली छेदे नाक लिये आवत नित्तफन । बांधहि कमल पठायहै कालिहि पठवैं दीप । तबलगि धीरज धरोहो देखो नव तकनीप । सुनिहो अहिकी बामश्याम अहि कोंन जगावै । याजके बालक डरति कहापति क्यों न उठावै । कहां कंस कहँ उरग यह अबहिं दिखाऊँ तोहिं । दे जगाइ मैं कहतहीं हो तू नहिंजानति मोहिं । मैं जानतिहीं बाल फूंक यकमें जरिजैहो । छोटे मुख बड़िबात काहत अबहीं मरिजैहै । छोह लगति तोहिं देखि क्याहिंकाको बालक आहि । खगपतिसों सरवर करीहो तू बपुरो को आहि । बपुरो मो मों कहति तोहिं बपुरी करि डारौं । एक लात सों चापि खसम तेरे को मारौं । सोवत काहुन मारिये चलिआई यहबात । खगपति को मैहीं कियोहो कहति कहातू बात । तुमहिं बिधाता भये और कर्त्ता कोउनाहीं । अहिमारोगे आपु तनक से तनक सिवाहीं । कहा करौं कहत न बनै अतिकोमल सुकुमार । देती अबहिं जगाइकै होजरिबरि हैहोछार । तू येदेहि जगाइ तोहिं दूसरा कछुनाहीं । परी कहा तोहि नारि पाप अपने जरिजाहीं । हमको बालक कहतिहै आपु बड़ेकी नारि । बादत है बिन काजही हो वृथा बढ़ावति रारि । तू नहि

देत जगाय बहुत जो करतो ढिठाई। पुनि मरिहैं पछितांहि मातुपितु तेरे भाई। अबहू फिरि कोरनाहिं तू मरि लैहै सुख कौन। पांच बरष के गात को हौं आगे तोको होन। झिरकि नारि देयारि आपु आहि जाय जगायो। पगसों चापी पूंछ सबै अभिमान भुलायो। चरण सर्षकिसर नीकसी उरग गयो अकुलाय। कारी सबमें तब कढ़ी है यह आयो रिसाय। देख्यो नयनउघारि तहां बालक इकठाढ़ो। विषधर झरकी पूंछ पटकि सहस्रौ फण काढ़ो। बारम्बार फणाघात करि विष ज्वाला की झारि। सहस्रौ फणि फणि पूंकरै सो नेकु न तनहि लगारि। तबकाली खलकहत पूंछ चापी यहि पगसों। अतिहि डरयो। अकुलाय डरेउ बाहन हरि खगसों। यह बालक धौं कौनको कीन्हों युद्ध अघाय। दांवघात बहुतै कियो हो मुरत नहीं कन्हुराय। पुनिदेखै हरिओर पूंछचापी यहि मेरी। मनमन करत विचार लेउं याको मैं घेरी। दांव परेउ अहिजानिकै लियो अंगलपटाय। चरण लपेटे शिखालौं हो यहि अतिकरी ढिठाय। कहति उरग की नारि गर्व अतिही करिआयो। आय पहुंच्यो है कालबश्य पगझतहि चलायो। अहिनारिन सों यहकही मोहिं ममसरि कोउ नाहिं। एक फूंक विषज्वालकी हो जल डूबरि जरिजाहिं। गर्ववचन प्रभु सुनत तुरतही तन विस्तारेउ। हाय हाय करि उरग बारहीबार पुकारेउ। शरण शरण अब मरत हौं मैं नहिं जान्यों तोहिं। चट चटात अंग फूटही हो राखु राखु प्रभु मोहिं। श्रवण शरण धुनि सुनत लियो प्रभु तन-सकुचाई। क्षमहु मोर अपराध न जाने करी ढिठाई। ब्रज में कृष्ण अवतार है मैं जानी प्रभुआज। बहुतकिये फणाघात मैं हो बदनदुराबत लाज। रहेउ आनि इहिठौर गरुडकी त्रास गोसाईं। बहुत कृपामोहिं करी दरश दीन्हों जगमाईं। नाकफोरि फणपर चढ़े कृपाकरी दिवराय। फण फण प्रतिप्रति चरण धरेहो निर्त्तत हरष बढ़ाय। धन्य कृष्ण धनि उरग जानिजन कृपाकरी हरि। धन्यधन्य दिनआजु दरश सों पापगयजरि। धन्यकंस धनि कमलये धन्य कृष्ण अवतार। बड़ी कृपा उरगहिकरी हो फणप्रति चरण विहार। शेष करत जिय गर्व खंडकोभार सोगधरि। पूरणब्रह्म अनंतनामको सकैपारकरि। फण

फणाप्रति अति भारभर अमित अखंड में गात। उरगनारि करजोरिकै हो कहति कृष्णासोंबात। देखत ब्रज नरनारि नंद यशुदा समेत सब। संकर्षणासों कहत सुनोसुत कान्ह नहीं अब। यहि अन्तर जल कमल बिच उरुयो कछु अकुलाय। रोवतते बरजे सबैहो मोहन अग्रजभाय। आवत हैं वहश्याम पुहुप काली शिरलीन्हे। मात पिता ब्रज दुखित जानि हरि दर्शनदीन्हे। निर्त्तत काली फणनिपर दिव्यदुंदुभी बजाय। नटवर वपुकाछे रहैहो सबदेखे वहभाय। आवत देखे श्याम हरष कीन्हे ब्रजबासी। शोकसिन्धु गयो उतरि सिंधु आनंद प्रकासी। जल बूड़त नौकामिलै ज्यों तनहोत अनन्द। त्यों ब्रजजन हुलसे सबैहो आवतहैं नँद नंद। सुतदेखत पितुमातु राम आह्लाद पुलकित भये। उर उपज्यो आनंद प्रेमजल लोचन दुहुग्रये। दिव दुंदुभी बजावहि फणाप्रति निर्त्तत श्याम। ब्रजबासी सब कहत हैं धन्य धन्य बलराम। उरगनारि कर जोरि करतिअस्तुतिमुखठाढ़ी। गोपीजन अवलोकि रूपवढ़ अतिरति गाढ़ी। सुर अम्बर ललना सहितजय धुनि सुख मुखगाय। बड़ीकृपा यहि उरगकोहो ऐसीकाहु न पाय। कृपाकरी प्रहलाद खम्भते प्रकट भयेतब। कृपाकरी गजराज गरुड़ तजिधाय गये जब। द्रुपद सुताको करिकृपा बसन समुद्र बढ़ाय। नन्द यशोदहि जो कृपा हो सोइकृपा अहिपाय। तब काली करजोरि कहेउ प्रभुगरुड त्रासमोहिं। अबकरिहैं दण्डवत नयन भरि जब देख तोहिं। चरण चिह्न दरशन करत गहिरहैं तेरेपाय। उरग दीपको करिबिदाहो कहेउ करहुसुखजाय। प्रभुयाते सुखकहां जु चरण फण फणाप्रतिपरसे। रमाहृदय जो बसत सुरसरी शिरवहे हरसे। जनम जनम पावनभयो फणापद चिह्नधराय। पायँपरेउ उरगिनि सहित हो चल्योदीप समुहाय। कालीपठयोदीप सुरनि सुरलोक पठाये। आपुन आये निकसि कमल सब तटहि धराये। जलतेआये निकसितब मिलेसखा सबधाय। मात पिता दोउ धाइके लीने कंठलगाय। फेरिजन्म भयोकान्ह हृदयलोचन भरि आये। जहां तहां ब्रजगोपनारि आतुर ह्वै धाये। अंकम भरिभरि मिलत हैं मनो निधन धनपाय। मिलीधाय रोहिणी जननि चुंबत लेत बलाय। सखानौरि कै मिले गरेहरि हमपर रिसकरि। धनिमाता

मातपिता अन्यसों लिन इयहि अवतार। तुमब्रज जीवन प्राणहो यह सुनि हँसे गोपाल। कूदिपरे चढ़ि कदमते हो तुम देखन ये ख्याल। कालीलयाये नाथि कमलताही परल्याये। जैसी कहिगये प्रगास प्रकट सो हमहिँ दिखाये। कंस मरेउ निश्चय भई हमजानी व्रजराज। सिहिनि को छौनाभलो हो कहा बड़ो गजराज। हरि हलधरतनचाहि हँसे मनहीं मनदोऊ। बन्धु मिलत सब कहत भेद नहिँ जानै कोऊ। मातपिता व्रजलोग सों हरषि कहेउ नँदलाल। आजु रहो बसि सब इहां हो मेटहुदुख जंजाल। मुनि सबहिन सुखकियो आजुरहिये यमुनातट। शीतल सलिल सुगन्धपवन सुखतरु वंशीबट। नँदघरते मिष्टान्न बहुत षटरस लियेमँगाइ। महरगोप उपनन्दजे हो सबको दियेबँटाइ। दुखकीन्हों सबदूरि तुरतसुख दियोकन्हाई। हरषभये सबलोग कंसको डरबिसराई। कमलकाज व्रजमारतो कितनो लेयगनाय। नृपराजको अबडर कहा होप्रकट्यो सिंहकन्हाय। नन्द कहेउकरि गर्व कंस को कमल पठावहु। और कमल घरभरहु कमल कोटिकदै आवहु। यह कोरयो मेरोकही कमल पठाये कोटि। कोटिएक जलहीभरेहो यह बिनती इकछोटि। अपने सब जे गोप कमल तेहि साथ चलाये। सब सबके आनन्द कान्ह जलते बचिआये। खेलतखात अन्हातही बासर गयो बिहाय। सूरश्याम व्रजलोग को हो जहाँ तहाँ सुखदाय ३६१

अथ चीरहरण लीला॥ राग बिलावल॥ नन्द नँदनबर गिरिवर धारी। देखत रीझी घोषकुमारी। मोरमुकुट पीताम्बर काछे। आवत देख गायन पाछे। कोटि इन्दुछवि बदन बिराजै। निरखि अङ्गप्रति मनमथलाजै। रविशत छविकुंडल नहिं तूलै। दशन दमक द्युतिदामिनि भूलै। नयन कमल मृगशावकमोहै। शुकनासा पटतरको कोहै। अधर बिम्बफल पटतरनाहीं। विद्रुम अरु बंधूक लजाहीं। देखत रीझिरहीं व्रजनारी। देहगेहकी सुरतिबिसारी। यह मनमेंअनुमान कियोतब। जपतप संयम नियमकरैं जब। बारबार सोचतहि मनावति। नन्दनँदन पतिदेहु सुनावति। नेमधर्म तपसाधन कीजै। शिव सों माँगि कृष्णपति लीजै। बरसदिवसको नेमलियो सब। रुद्रहि सेवहु मनबच क्रमअब। दूढ़विश्वास व्रतहिको कीन्हों। गौरीपति पूजा मनदीन्हों। षटदशसहसजुरीं

सुकुमारी। अलसोंचत नीके तनुगारी। प्रातउठैं यमुना जलन्हावैं। शीत भीत कहुँ अंग न मोरैं। पतिके हेत नेम व्रतसाधैं। शङ्करसों यह कहि आवराधैं। कमलपत्र तू मोल चढ़ावैं। नैनमूंदि यह ध्यान लगावैं। हम को पतिदीजै गिरिधारी। बड़े देव तुमहौ त्रिपुरारी। और कछू नाहिं तुमसों मांगैं। कृपा हेतु यह कहि पालागैं। यमहि करत बहुत दिन बीते। प्रभुअंतरयामी मनचीते। एकदिवस आपुनआयेतहँ। सबतरुणी अस्नान करति जहँ। बसनधरे जलतीर उतारी। आपुन जल पैठीं सुकुमारी। कृपाहेतु अस्नान करैं जहँ। सबके पाछे आपुनहैं तहँ। सींजत पीटिप्रेम अतिबाढ़ी। चकितभईं युवती फिरिठाढ़ी। देखे नँदनंदन गिरिधारी। व्रतफल प्रकटभये बनवारी। सकुचिअंग जलबीच लुकावैं। बार बार हरि अंगमलावैं। लाजनहीं आवतिहै तुमको। देखत बसन बिना सबहनको। हँसतचले तब नन्दकुमारा। लोगन सुनवति करति पुकारा। हारचीर लैचले पराई। हांकिदियो कहि नन्ददुहाई। डारि बसन भूषण तबभागे। श्याम करन अब ढीठौलागे। भागेकहांबचौगे मोहन। पाछे आइगईं तुवगोहन। तनको सुधि सम्हार कछु नाहीं। बसन अभूषण पहिरत जाहीं। चीर फट्यो कंचुकि बँद छूटे। लेत न बनत हार लरटूटे। प्रेमसहित मुख खीझत जाहीं। झूठहि बार बार पछिताहीं। गईं सबै त्रिय नन्दमहर घर। यशुमति पासगईं सबदरदर। देखहु महरि श्यामके येगुन। जैसे हाल करे सबके उन। चोली छोरि हारदिखराये। आपुन भाजि इतहिको आये। यमुनातट कोउ जान न पावैं। संगसखा लिय पाछेधावैं। सुतको बरजहु हो नँदरानी। गिरिधर करतभली नहिंबानी। लाजलगत इकबात सुनावति। अञ्चल छोरि हियो दिखरावति। यहदेखत हँसिउठी यशोदा। कछुरिसकछु मनमें करिमोदा। आयगये तेहिसमय कन्हाई। बाँहगहीलै तुरतदिखाई। तनक तनककर तनक अँगुरिया। तुमयौवन भर नवलबहुरिया। जाहु घरहि तुमको मैं चीन्हीं। तुम्हरी जाति जानि मैं लीन्हीं। तुम चाहति सो यहां न य हैं। और बहुत व्रजभीतर लैहैं। बार बार कहि कहा सुनावति। इनबातनि कछुलाज न आवति। देखोरी ये भाव कन्हाई। कहांगई तबकी तरुणाई। महरि तुमहिँ कछुदूषणनाहीं। इ-

मको देखि देखि मुसुकाहीं। इनके गुणा कैसे कोउ जाने। औरै करत और
ठानै। देवगुरु जो तुमको भाई। नीको पति राखनि हमपाई। चलीं
सबै युवती घरघरको। मनमें ध्यान करत हैं हरिको। वरषदिवस तप पर-
णाकीनो। नदसुवनको तनमन दीनो। प्रातहोत यमुना फिरिआई। प्र-
थमरहे चढ़िकदम कन्हाई। तीर आइ युवती भईठाढ़ी। उरअंतर हरि
कीरतिबाढ़ी। कह्योचलैं यमुनाजल खौरैं। अँगअँग आभूषण सबछोरैं।
चोलीछोरैं हारउतारैं। करसों शिथिल केशनिरवारैं। इतउत चित-
वति लोगनिहारैं। कहो सबनि अबचीर उतारैं। बसन आभूषण धरे
उतारी। जलभीतर सबगईं कुमारी। माघ शीतको भीत न मानी। षट
ऋतुके गुण समकरि जानी। बारबार बूड़ै जलमाहीं। नेकहु जलको
डरपति नाहीं। प्रातहूते इकयाम नहाहीं। नेमधर्महीमें दिनजाहीं।
इतनोकष्ट करैं सुकुमारी। पतिके हेतु गोवर्द्धनधारी। अतितप करत
देखिगोपाला। मनमें कहेउ धन्य ब्रजबाला। हरि अन्तरयामी सब
जानें। सखासखनको यह सेवामानें। बनफल उनहिं प्रकट दिखराऊं।
बसन हरौंलै कदमचढ़ाऊं। तनसाधे तप कियो तुमारी। भजी मोहिं
कामातुरनारी। सोरह सहस्रगोप सुकुमारी। सबके बसन हरे बनवा-
री। हरत बसन कछुबार न लागी। जलभीतर युवती सब नांगी। भू-
षण बसनसबै हरिलाये। कदमडार जहँतहँ लटकाये। ऐसोनीप वृक्ष
विस्तारा। चीरहार सों कितकहजारा। सबै समाने तरुप्रति डारा।
यहलीला रचि नन्दकुमारा। हारचीर मानहुँ तरु फूल्यो। निरखि
श्यामआपुन अनुकूल्यो। नेमसहित युवती सब न्हाहीं। मन मन स-
विता विनय सुनाहीं। मूंदैं नैन ध्यान उरधारे। नँदनन्दन पति होहिं
हमारे। रविकरि विनय शिवहिं मनदीन्हें। हृदयमांझ अवलोकन
कीन्हें। त्रिपुरदहन त्रिपुरारि त्रिलोचन। गौरीपति पशुपति अघ
मोचन। गरल अशन अहिभूषण धारी। जटाधरण गङ्गाशिरधारी।
करति विनय यह मांगत तुमसों। करहु कृपा हँसिके आपुनसों। हम
पावैं सुत यशुमति कोपति। यहै देहु करिकृपा देवरति। नित्यनेम
करिचलीं कुमारी। एकश्याम तनको हिमजारी। ब्रजललना कह्यो
नीर जड़ाई। अतिआतुर होइ तटकोधाई। जलतें निकसि तरुणिसब

आईं। चीरअभूषण तहां न पाईं। सकुचगईं जलभीतर धाई। देखि कदँम तरु चढ़े कन्हाई। बारबार युवती पछिताहीं। सबके बसन अभूषण नाहीं। ऐसोकौन सबैलैभाग्यो। लेतहुनाहि बिलम्बन लाग्यो। माघतुषार युवति अकुलाहीं। ह्यांकहुँनंद सुवनतौनाहीं। हमजानति यहबात बनाई। अम्बर हरिलैगये कन्हाई। हौकहुँ श्याम विनय सुनिलीजै। अम्बरदेहु कृपाकरि जीजै। थरथर अङ्गकँपति सुकुमारी। देखि श्याममनहिँ संकसम्हारी। यहिअन्तर प्रभु बचन सुनायो। व्रतकोफल दरशन सबपायो। कहा कहति मोसों ब्रजबाल। माघ शीत कत होतिबिहाल। अम्बर जहां बताऊं तुमको। तोतुम कहा देहुगी हमको। तनमन अर्पण तुमहीं कीनो। जा कछुहुतो सो तुमहींदीनो। और कहाजु लैहो हमसों। हम माँगति हैं अम्बर तुमसों। यह सुनि हँसे दयाल मुरारी। मेरो कह्यो करो सुकुमारी। जलते निकसि सबै तट आवहु। तबहिँ भलेतुम अम्बर पावहु। भुजापसारि दीनह्वै धायहु। दोउकर जोरि जोरि तुमराखहु। सुनहु श्याम यकबात हमारी। नगनकहूं देखिये न नारी। यहमति आपकहांधौं पाई। आजुसुनीयह बात नवाई। ऐसीभाव मनहिं में राखहु। यहबानी मुखते जिनि भाषहु। हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई। बिनाबसन क्यों देहदिखाई। पुरुषजाति तुम तहँका जानो। हाहा यह मुखमें जिनि आनो। तौ तुम पैठीरहो जलहि सब। बसन अभूषण नाहिँ चहति अब। तबहिं देउँ जब बाहिर आवहु। बिनुबाहर आये नहिँ पावहु। कतहो शीत सहत सुकुमारी। सकुचदेहु जलहीमें डारी। करेउ कदमव्रत फरोग तुमारी। अबकहं लज्जा करतिहमारी। लेहुनआनि आपने व्रतको। मैं जानत या व्रतके व्रतकों। नीके व्रतकीना तनुधारी। व्रत ल्यायो धरि गिरिवरधारी। तुममन कामन पूरण करिहैं। रास रंग रचि रति सुखभरिहैं। यह सुनिकै मनहरष बढ़ायो। व्रतको परण हम फलपायो। छोड़हु तुम यह टेक कन्हाई। नीरमांझहमगई जड़ाई। भूषण सब आपुसहि लेहो। चीर कृपाकरि हमको देहो। हाहालागै पायँ तुम्हारे। पाप होतहै जाड़नमारे। अजहूँते हम दासि तुम्हारी। कैसेअंग दिखावें नारी। अंग दिखायहि अम्बर पैहो। नातरु वैसेहि

घोसगाँवैहो। मैं कहे निकसि सबआवहु। थोरेहि हमको भलो म-
नावहु। सुहावरी तरुणी मुसकानी। यह आपुन थोरी कोउ जानी।
जो जो कहौ सो तुमको सोहै। आजु तुम्हारे पटुतरकोहै। हमरीपति
सब तुम्हरे हाथा। तुमहिँ कहौ ऐसो व्रजनाथा। तपतनुगारि कियो
जेहिकारण। सोफलल्यो नीपतरु डारन। आवहु निकसि लेहुपट
भूषण। यह लागै हमको सब दूषण। अब अन्तरकौन राखति हम
सों। बारम्बार कहतहौं तुमसों। गोपिन मिलि यह बात बिचारी।
अबतौ टेक परे बनवारी। चलहुन जाय चीर अबलीजै। लाजछाँड़ि
उनको सुखदीजै। जलते निकसि तीरसबआईं। बारबार हरि हरषि
बुलाईं। बैठिगईं तरुनी सकुचानी। देहुश्याम हम अतिहि लजानी।
छाँड़िदेहु यह बात सयानी। वैसेहि करो कही जो बानी। करकुच
अंगढाँकि भईठाढ़ी। बदन नवाय लाजअति बाढ़ी। देहुश्याम अम्बर
अबडारी। हाहा दासी सबै तिहारी। ऐसेनहीं बसन तुम पावहु। बाँ
ह उठाय अग दिखरावहु। कहेउ मानि युवतिन करजोरि। पुनि पुनि
युवती करत निहोरे। धन्यधन्य [illegible] गोपाला। निश्चय व्रतकीन
व्रजबाला। आवहु निकट लेहु सब अम्बर। चोलीहार सुरंग पटम्बर।
निकट गईं सुनिकै यह बानी। तरुणी नगन अंग अकुलानी। भूषण
बसन सबन को दीने। त्रियकै कहत कृपा हरि कीने। चीर अभूषण
पहिरैं नारी। कहेउ तबहिं ऐसे गिरिधारी। तबहँसिबोले कृष्णमुरारी।
मैं पति तुम मेरी सब प्यारी। तुमहिं हेतु मैं बपु व्रज धारेउ। तुम
कारण बैकुण्ठ बिसारेउं। अब व्रतकरि तुम नहिं तनगारौ। मैं तुमतें
कहुं होत न न्यारौ। ज्याहिं कारन तुम अतितप साध्यो। तन मनकरि
मोको अवराध्यो। जाउसदन अब सब व्रजबाला। अंगपरशि मेटे जंजा
ला। युवतिन बिदा दई गिरिधारी। गईं घरनिसब घोषकुमारी। बस्त्र
हरण लीला प्रभुकीन्हो। व्रजतरुणिन व्रतकोफलदीन्हो। यहलीला
श्रवणनि सुनि भावै। और न सिखवै आपुन गावै। सूरश्याम जनको
सुखदाई। दृढ़ताई मैं प्रकटकन्हाई ३६० बसनहरे सबकदम चढ़ायो।
सोरह सहस गोप कन्यन के अंग अभूषण सहित चुरायो। अति बि-
स्तार नीपतरु तामें लैलै जहां तहां लटकायो। मनि आभरण डार,

डार प्रतिबिंबत कौबिकनकों अटकायो । पीताम्बर पाटम्बर सारी प्रीत
पीत चूनरी मरु लायो । सूरश्याम यूवतिन व्रत पूरण को फल नन्दकुमार
पाज लायो ३६१ ॥ रागसूहा ॥ आपु कदम चढ़ि देखत श्याम । बसन आभ-
रन सब हरि लीने बिनाबसन जल भीतर बास । मूंदत नयन ध्यान धरि
हरि को अंतर्यामी लीनों जानि । बारबार सविता सों मांगत हम पावैं पति
शारंगपानि । जलते निकसि आय तट देख्यो भूषण चीर तहां कछु नाहीं ।
इतउत हेरि चकित भईं सुन्दरि सकुचि गई फिरि जलहीं माहीं । नासि-
काप्रमाण नीर में ठाढ़ी थर थर अंग कँपत सुकुमारि । कोलै नायो वस्त्र आ-
भूषण सूरश्याम उर प्रीति बिचारि ३६२ ॥ रागबिलावल ॥ खीझत जात
माखन खात । अरुण लोचन भौंह टेढ़ी बार बार जम्हात । कबहुं रुनुझुनु
चलत घुटुरुन धूर धूसर गात । कबहुं झुकिके अलक खैंचत नयन जल
भरिजात । कबहुं तोतर बोल बोलत कबहुं बोलत तात । सूर हरि की निर-
खि शोभा निमिष तजत न मात १ माखन तनिक दैरी माय । खेलत
घुटुरुन फिरत आंगन धावत चरण चलाय । सुन्दर दंतियां अति बिरा-
जत बोलत हैं तुतराय । मोरमुकुट की शोभा निरखत सब बलि बलि जाय २
आज सुफल भयो जनम हमारो । नयन भरि देख्यों री नन्द दुलारो ।
वामकपोल वाम भुजदीने । अधरमधुर मुरली कर लीने । नयन कुरंग
रूप रस भरचो । आज हरि हम अपनो करि लेख्यो । नादबेद संगीत
सुनावै । चलत भुवन शिर चामर डुलावै । जनम जनम की पूजी मेरी
आस । जगन्नाथ मुख देख्यो माधोदास ३ बलि गई बाल रूप मुरारि ।
पांय पैंजनि बाजत रुनुझुनु नचावति नन्द नारि । कबहूं हरि को लिये
अँगुरिया चलन सिखावत ग्वारि । कबहूं हृदय लगाय हित करि लेत
अंचल डारि । कबहुं हरि को चितै चूमत कबहुं सिखवत गारि । कबहुं
लेकरि पाछे दुरावति यहां नहीं बनवारि । कबहुं अंगभूषण बनावति
राइ लोन उतारि । सूर सुर मुनि सबै मोहे निरखि यह अनुहारि ४
नन्दरानी के जुहारे भोरहि उठि पहाऊं । निरखत आनन्द भरति निर-
खि नयन सिराऊं । उज्जल तन थोरो थोरो रातो अंबर सोहै । अरुण
घनसे निकसि पूरण चन्द की छबि को कहै । ब्रह्म घनीभूत पतकर अँगु-
रिया लायो । मन्द मन्द चलन सिखवति तो अज फल पायो । रिझ

रिद्धि सिद्धि मोहित रमा टहलकरति फिरै । अर्थ धर्म काम मोक्ष भीख भिखारिन परे । नन्दजू कहत कहा मांगत महरि हौं रिसुनाइ । नन्ददास नन्दलाल को नेकहु तोरि न पाउ ५ खेलत श्याम बछावन संग । सुबल हलधर अरु श्रीदामा करत नाना रंग । हाथ तारीदेत भाजतसबै करिकरिहोड़ । बरजेहु हलधर श्याम तुमहीं चोटलागै गोड़ । तबकह्यो मैंदौरि जानत बहुत बलमोंगात । मेरी जोरिहै श्रीदामाहाथ मारे जात । बोलि तबै उठि श्रीदामा जाहु तारी मारि । आगे हरि पाछे श्रीदामा धस्यो श्याम हँकारि । जानिकै मैं रह्यौ ठाढ़ो छुवत कहा तुव मोंहि । सूरश्याम खीझे सखनिसों मनेहों कीन्हो तोहिं ६ मैयामैंनहिं माखन न खायो । ख्याल परे ये सखा सबैमिलि मेरे मुखलपटायो । देखतुही छींके पर भाजन ऊंचेधर लटकायो । हौं जु कहत नान्हे कर अपने मैं कैसे करिपायो । मुख दधिपोंछि बुद्धि एककीन्ही दोना पाछे दुरायो । डारिसांटी मुसुकात यशोदा श्यामहिं कंठ लगायो । बालविनोद भाय करिमोहेउ मातामनहिं रिझायो । सूरदास यह यशुमतिको सुख देवन दुर्लभ गायो ७ देखो माई या बालककी बात । बन उपबन सरिता सबमोहे देखत सांवलगात । मारग चलत अनीत करत हरि हठि करि माखन खात । पीताम्बर वह शिरसे ओढ़त अंचलदे मुसिकात । तेरी सौंह कहा कहूं उरहन देतलजात । जब हरि आवत तेरे आगे सकुचनि कछुउ न जात । कौन कौन गुणकहौंश्याम के नेक न काहु डरात । सूरश्याम मुख निरखि यशोदा कहति कहा ये बात ८ नेक मेरबारे कान्हछांड़िदे मथनियां । देखि देखिसुख लेत नन्दजूकी रनियां ॥ कंठ बघलीसोहे नाकनथुनियां । नयननते नीर मानों मोतिनकी मनियां । नेकुरहौदेउ माखन मेरेप्राणधनियां । आरिजनि करोमेरेकुलगनमनियां । सुरनरमुनिकाहूके ध्यान न आवनियां । सूर सुतदेखि रानी भूली सामधनियां ९ ॥

इति रागकल्पद्रुमनित्यकीर्त्तनान्तर्गतरागविलावलसमाप्तम् ॥

——*——

अथ सूरसागर राग सागर संग्रहकृत ॥

राग रागनीकृत तथा छपाई राग कल्पद्रुम प्रारम्भ ॥

—— ॐ ——

श्रीकृष्णायनमः ॥

राग कल्याण ताल तिताला ॥ पद पंकज बंदि त्रिभुवन स्वामी । सब
घट व्यापक जगत उधारन सुर नर मुनि जाको पार न पामी । मूकको
वाचाल पंगुगिरि लंघै अँधरे को सब कछु दरसामी । सूरदास प्रभु आप
पुजावो देहो सुमतिहरि गरुड़गामी ॥ रागिनी धनाश्री तालधीमा तिताल ॥ चर
णकमल बंदौंहरिराई । जाकीकृपा पंगुगिरिलंघै अँधरेको सब कछु
दरसाई । बहिरोसुने गूंगपुनि बोलै रंकचलै शिरछत्र धराई । सूरदास
स्वामी करुणामय बारबार नमोपद जाई ॥ श्रीभागवत वर्णन ॥ श्रीहरिभक्ति
माहात्म्य ॥ रागसारँग ॥ ताल धमाल ॥ कह्योशुक श्रीभागवत विचार । हरिकी
भक्ति युग युग बरतै आनधरन दिनचार । चिन्ता तजो परीक्षितरा-
जासुनि शुकबोध हमार । कमल नयन की लीलागावत कटेअनेक
विकार । खट्वांग दिलीप महूरतमें तरिगयेतुमरे हैं दिन सात सुमार ।
दृढ़ विश्वास करोउर अंतर हरिकोनाम अधार । सतयुग सतत्रेता तप
कीये द्वापर पूजासार । सूरभजन कलि केवलकीजै लज्जाकानिनिवार ॥
अथ दशम कथा प्रारम्भ ॥ कथा प्रसंग वर्णन ॥ रागिनीआसावरी ॥ तालधमाल ॥ बालविनोद
भावती लीला अति पुनीत मुनि भाषीहो । सावधान ह्वै सुनो परीक्षित
सकल देवमुनि साखीहो । कालिन्दीके कूल बसतहै मधुपुरि नगर र-
सालाहो । कालनेम उग्रसेन वंशकुल उपजे कंस भुपालाहो । आदिब्रह्म
जननी सुरदेवी नामदेवकी बालाहो । दई विवाह कंस बसुदेवहि अघ
भंजन उरमालाहो । हयगज रतनहेम पाटम्बर आनँद मंगलचाराहो ।
समुदित भई अनाहद बाणी कंसकान झनकारा हो । याके गर्भ अव-
तरे जोसुत करिहै प्राण प्रहाराहो । रथतेउतरि केशगहिराजा कियो
खड्ग पटताराहो । तब बसुदेव दीनह्वैभाषे पुरुष न त्रियबध करई हो ।
मोकोभई अनाहद बाणी ताते शोच न टरईहो । आगे दुसभले जो बि-

सुफल गृसाई बिनिकि निमरईहो । यहिमारि तांहिंऔर बिबाहूं अग्र शोच को सरईहो । बालक काज धर्मजिनि छांडौराजन ऐसीको जैहो । याकेगर्भ औतरेजेसुत मावधानह्वै लीजैहो । नाचाव्रन्द कंसकरि छांडे तब बसुदेव पतीजे हो । मानहु मृगी चरत गहनबन मे नयन नीर उर भीजे हो । पहिलोपुत्र देवकी जायोले बसुदेव दिखायोहो । बालकदेखिकंस हँसिदीन्हें सबअपराध क्षमायोहो । कंसकहा लरिकाई कीनी कहि नारद समुझायोहो । जाकोभरमकरत हो राजा मतिपहिलेही आयो हो । यहसुनि कंसपुत्र फिरिमांग्यो यहिबिधि सबन संघारेउहो । तब देवकी भईतनु ब्याकुल कहँलौं प्राणप्रहारेउहो । कंसबंशको नाशक-रनुहै कहँलौंजीव उबारौहो । यहदुख कबहों मिटिहै श्रीपति असुरहिं कहि सम्हारौहो । धेनुरूपधरि पुहुमि पुकारी शिवबिरंचिके द्वारा-हो । सबमिलि गयेजहां पुरुषोत्तम सेवत अगमअपाराहो । क्षीरसमुद्र मध्यतें यों कहि दीरघबचन उचाराहो । उरगौबरशिर असुरकुल मा-रौंधरि नरतनु अवताराहो । कूठो रूसक पवनपानि ज्यों तैसोइजनम निकारीहो । पाखंड धरम करत हैं पांवर नाहिंन चलततुम्हारीहो । मारगछांड़ि अमारगसों रति बुधबिपरीत बिचारीहो । अमृतछांड़ि बिषयबिष चाखत देतअधम पतिगारीहो । सुरनरनागतथा पशुपक्षी सबको आयसुदीनांहो । गोकुलजनमलेउसँगमेरेजो चाहत सुखकीना हो । जिहि माया बिरंचि शिव मोहे सोई ब्रह्मकरचीन्हो हो । देवी गर्भअकर्षि रोहिणीआपुबास करिलीन्होंहो । हरिके गर्भबासजननी को बदन उजारो लाग्योहो । मानहुं शरद चन्द्रमा प्रकट्योशोच ति-मिरतनभाग्योहो । तिहिक्षणकंसआनिभयोठाढ़ो देखमहातमजाग्यो हो । अबकीबेरमेरोअरिआयो आपुअपनपो त्यागोहो । दिनदश गये देवकी अपनो बदन निहारन लागी हो । कंसकाल जियजानि गर्भमें अतिआनन्दसभागीहो । सुरनर देवबंदना आयेसोवतते उठिजागीहो । अविनाशीको आगम जान्यो सकलदेव अनुरागीहो । कछु दिन गये गर्भ को आगम उर देवकी जनायोहो । कासोंकहों सखि कोउ नाहीं चाहतगर्भदुरायोहो । बुधरोहिणी असमोसंगम बसुदेव निकट बोलाये हो । सकललोक नायक सुखदायक अजन जन्मधरि आयेहो । माघे

मुकुट सुभग पीतांबर उरसोहत भृगुरेखाहो । शंखचक्र भुजचारि बिराजत अतिप्रताप शिशुभेयाहो । जननी निरखिभई तनव्याकुल यह न चरितकहुंदेख्योहो । बैठोसकुचनिकटपतिबोलेदुहुनपुत्र मुख पेख्योहो । सुनोदेव यकआन जनम की तोसोंकथा चलाऊंहो । तुममांग्यो मैं दयोनाथ है तुमसों बालक पाऊंहो । शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक योग जापहु न आऊं हो । भक्तिबछलमेरोहैबानो बिरदहि कहा लजाऊंहो । यहकहि माया मोहअरुझाये शिशु ह्वै रोवन लागेहो । अहोवसुदेव जाउलै गोकुल तुमहो परमसभागेहो । घनदामिनि धरनी मिलिगरजेमहाकठिन दुखभारेहो । लैवसुदेव धसेदहि सासहि तीनि लोकउजियारेहो । आगेजानु यमुनाजलबाढ़ो पाछेसिंहदहाडेहो । जानुजंघ कटिग्रीव नासिका बसुदेव मनहिं बिचारेहो । चरणपसारिपर्श्यो कालिन्दीतरवा नीरतेआगेहो । शेषसहसफनऊपर छायोगोकुल को अतिभागेहो । पहुंचेजाय महरिमंदिरमें मनहिं न शंकाकीनीहो । देखि पर्यंक योगमाया वसुदेवगोदकरलीनी हो । तुरतहिबेग मधुपुरी पहुंचे सकलप्रकट पुरकीनीहो । देवोगरभ जाइहै कन्या रायन बात पतीनीहो । यहसुनिकसखड्ग लैधायोतब देवीआधीनीहो । यह कन्या मोहिबकसि बन्धुत दासी जानिकर दीनीहो । क्रूरकंस मसबंश बिनाश न समभ्यो बिनासिकीन्हीहो । नहिं जानिये होयकछु कानोंअबिगत गतिकिन चीन्हीहो । पकरतकन्यागई अकाशहि दोउभुजचरणलगाई हो । गगनगई बोली सुरदेवी कंसमृत्यु नियराईहो । जैसे मीन जालमें क्रीडत गनेनआपुलखाईहो । तैसोइकंस कालडरुक्योहै ब्रजमेंयादवराई हो । जैसे ब्याल बेगको ढूके बेगइ चारांताकेहो । जैसेसिंह आपमुख निरखे परे कूप में डाकेहो । तैसेइ कंस परमअभिनायक भूल्यो राज सभाके हो । गतिकीगतिपतितेरी जाकेहाय मृत्युहैताकेहो । यहसुनि कंसदेवकी आगेरहे चरण शिरनाये हो । बहुअपराध करे शिशुमारे लिखो न मेट्योजायेहो । काकेशत्रु जन्मलीनोहै बूझहुमतोहुआइहो । चारिपहर सुखसेजपर निशिनेकहुं नींदनहिंआई हो । देशदेशके दूत बुलायो कासोंहै कलकैसीहो । अबगतिअजर अजीतअसरना करता को बलजैसीहो । दिनहींदिनसों पुरुषहोतहै बढतअसुर बलवैसोहो ।

अक्षतनहि लगामार कुम्भायोपालिकामाखनजैसोहो। जागी महरिपुत्र मुख देख्यो आनँद तूरबजाई हो। कंचनकलश होमद्विज पूजा चन्दन भवनलिपाई हो। बरसावरसा रँग ग्वालबने मिलिगोपिनमंगल गायो हो। बहुविधि व्योम कुसुमसुर बरषत फूलन मंडपछायोहो। आनँद भरि भरि करत कुतूहलप्रेममगन नर नारी हो। अभय कृष्ण निशान बजावत देत महरको गारी हो। नाचत महरि मुदित मनकीने ग्वाल बजावततारी हो। सूरदास प्रभु गोकुलप्रकटे मथुराकंस प्रहारीहो१॥ राग बिलावल॥ आनँद आनंदबढ्यो अति। देवनिदिवि दुन्दुभी बजाई सुनिमथुपुरी प्रकटेयादव पति। विद्याधरीकिन्नरी कंठवर उपजावत अनुराग अमितगति। गावत गगन धरिशाधुनि सुनियतगरजत घनते-हिकालजतनगति। बरषतसुमन सुदेश सरस सुर जयजय करतमानत रति। शिवविरंचिइन्द्रादि सनकमुनि फूलेसुख न समात मुदितमति२ राग केदारो॥ अहो पति कछु उपायसो कीजै। जेहि उपाव यहबालक अपनो शिखकंस सो लीजै। मनसा बाचा करमना तरपति कहेउ न पतीजै। बुधिबल छल करि यतन युगतियह काहि अनतही दीजै। नाहिनइतनो भागसुयश्रम नितलोचन पुटपीजै। बालकगयेकहा तुम करिहो तब बहुतै दुखभीजै। कंसदुष्ट नहिबूझै दुख सुखदूत कोउ नु पतीजै। तातै कहति पुकारि अबहितपाछेकहा ज्योंकीजै। सुनहुजो पियश्रमसुतको मुखनिरखिनिरखि सुखलीजै। सूरदासप्रभु मोहनमूरति कैसे आनिदीजै ३॥ रागबिहागरो॥ सुनु देवकीको हितूहमारे। असुरकंस अपयशबिनाशन शिरपरबैठे रखवारे। ऐसोको समरथ त्रिभुवनमेंजो यहबालक नेक उबारे। खड्गधरेआयो मोंदेखन अपने करतिहनमाहि पछारे। यहसुनतहि अकुलायगिरी धरणीनयन नीर भरिभरि दोउ-ढारे। दुखित देखि बसुदेव देवकी प्रकट भये धरिके भुजचारे। बोलत उठे प्रतिज्ञाप्रभु यह मोतेउबरे तबमोहिमारे। अतिदुखमें सुखमातहि सूरको प्रभुनन्दभुवन सिधारे४॥ रागकेदारो॥ देवकी मनमन चकितभई। देखहुआय पुत्रमुख काहेन ऐसीकहूं देखीनदई। शिरपर मुकुट पीत उपरना भृगुपद उरभुजचारिकरे। पूरबकथासुनाइकहीहरितुममांग्योयहिभेषधरे। छोरेनिगड सोवाये पहरु द्वारे कपाट उघारेउ। तुरत

गोहिं गोकुलहि आहुलै यह कहनहि शिशुभेयअंरउ । तबहीं रोइउठे
बसुदेव सुनि हरषवन्तनँद भवनगये । बालकधरि लैसूरदेवीको आय
सूर मधुपुरीभये ५ भादोंकी राति अँधियारी । द्वार कपाट कोटि भट
रोके दुहूँ दिशा कन्त कंस भय भारी । गरजत मेघ महा डरलागत
बीच बड़ी यमुनाजल कारी । तब तेइहै शोच जियमेरे क्योंदुरिहैश-
शिवदन उज्यारी । कंसपिय बोलवचन करिराखौ बरुदेत हैनतादिन
जियमारी । काहजाको ऐसोसुतबिछुरैसोकैसे जीवैमहतारी । कहि-
न बिलाप देवकी सो कहिदीनदयाल भीत भै हारी । कुटिगये निगड़
तबहिं गये गोकुल सूरसुमतिहै बिपरीतनिन्यारी ॥ सोरठा ॥ हरिमुखदेखि
होबसुदेव । कोटिकाम स्वरूपबालक कोउन पायेभेव । झरतारा प-
रेपहरू नींदआईगेह । दामिनी चहुंओरचमकै सघन बरषैमेह । चारि
भुजके चारिआयुध निमयके न पत्याउ । अजहुंमनपरतीत नाहीं नन्द-
घर लेजाउ । सिंहआगेशेषपाछे नदीहैभरपूरि । नासिकालोंनीरआयो
पारुपैलो दूरि । शोचते हुंकारि कीनो यमुन जान्यो भेव । पुलकिके
हरिचरण परसीतरिगयेबसुदेव । महरिढिग मनजानिराखेअमरअति
आनंद । सूरदास हुलास ब्रजहित प्रकटे आनँदकंद ७॥ रागमारु ॥ गौरी
गणेश सुर बिनऊंहो देवीशारद तोहिं । गाऊंहरिजीको सोहरो मन
आनन्दआवैमोहिं । बधावोहरिजूकोमसरहिबो रानीजायहैमोहनपूत ।
आनन्देसुरनरमुनिभयेनन्दसपूत । आठमासो चन्दनपियोहोनवमेंपियो
कपूर । दशयेंमास मोहनभयेमेरे अँगनारी बाजे आछेतूर । हरषी पार
परोसनीनये हरष नगरकेलोग । हरषी सखिय महेलरी सब आनन्द
भयोशुभयोग । बाजनबाजैंगहगहेहोमलिबाजैमंदिरभेरि । मालिनबांधे
तोरनेमेरेअँगनाबीरोपै आछेफेरि । अनगढ़ सोनोढोलनागढ़ल्यायो
चतुरसुनार । बीच बीच हीरालगे नँदलाल गरेकोहार । यशुमतिभाग
सुहागिनीजिनजायोहरिसोंपूत । करहुललनकीआरतीरीअनुदधिकादों
सूत । नावनिबोलहु नवरंगी लैआव महावरबेग । लाखटकाअरुभूमका
सारी देउंदाइको नेग । अगरचंदनको पालनो गढ़िईगुरु ढारसुढार ।
लैआयेगढ़ि ढोवनोविश्वकर्मासो सुतिहार । धन्यसुदिन धन्यसुघरि
धनिनक्षत्र सु जोतिषयोग । धन्यधन्य मथुरापुरीहो धनिधनि महरिके

जाग । मानि साँगिमाता हलकी धन्यनन्द बसुदेव कोआन । सोहत जसुमति अरुणी भाँनिजनन्दलिया जबकान । काहकु करे चोरा बरसाली जाँ गौनि । आति शाँत प्रतिमाय के सब बाजत धोतीतो पान । नग री आवोरी मिलि जाहु दरी की ध्यान । अघबादरी मबलो कर गावत किये हैं सिंगार । कोटि मुकुट शामलको शुभ साँकरो तन बनमाल । सूरदासप्रभुगोकुलजनमे मोहनमदन गोपाल ॥ राग आसावरी ॥ ब्रजभयो महरिके पूत तबयह बात सुनी । सुनिआनन्दे सबलोक गोकुल गनित गुनी । अतिपूरब पूर पुराय रूपकुल अतलथुनी । ग्रह लगन नक्षत्र बलशोधिकीन्हीं वेदधुनी । सुनिधुनि सार्द्र ब्रजनारि सहज सिंगारकिये तन पहिरि नूतनचीर कज्जल नयननिदिये । कसिकंचुकी तिलक लिलार शोभित हारहिये । कर कंकरा कंचनथार मंगल साजिये । शुभ स्रवन तरल तरिवना बेनी सिथिल गुहीं । शुभरवत शुगन सुदेशमाँगें प्रेम फूहीं । उरधकबुलकुडलन आनहिंबारीसनैंचमुहीं । सुरंगानि पै अंगन सेंदुर मांगकुही । ते अपने अपने मेरसिनकसी गौतिमली । मानोलाल मुनिशनकी पाँती पिंजरा चूरिचली । गुणगावतहिं मंगल गीती मिलिदश पाँचअली । मानोभोर भयेरविदेखि फूलीकमलकली । पियमे उझिके पहुँचीजाइ अति आनन्दभरी । लईभीतर भवन बुलाय सबै सिशु पा परी । इकबदन उघारि निहारि देहि असीस खरी । चिरंजीवौ यशोद नंदन पूरन कामकरी । धनिदिन है धनियह राति धनि धनि पहर घरी । धनि धन्य कोखि कन्हैया जिहि आनहि काटि धरी । चिरसखी धाय करि सुनिजाय की भुलहरी । सुनिग्वालनि गायबहोरि बालक गोछिसाये । मोकुलधार वीसर्वाई अंगन चित्रये । शिरदधि माखनमाट गावती गीतनये । डार भांभ मृदङ्ग बजावत धार नँदभवन गये । मिलि नाचत करत कलोल छिरकत हरदिदही । मानों बरसत भादोंमास नदीघृत दूधबही । जहां जहां चितजाइ कौतुक तहींतहीं । सबआनँद मगनगोपाल काहू सुधि नहीं । इकधाइ नन्दपै जाहिँ पुनि पुनि पायँपरैं । एक आप आपुहि मांझ हँसिहँसि अङ्क भरैं । यकअम्बर सकल उतारि देतनहिं सोच करैं । एकदधि अक्षत अरु दूब सबनिके शीशधरैं । तब न्हाइ नन्द सुरभि कुश अरुकुश हाथलिये । घसिचन्दन चारुमँगाइ विप्रन तिलककिये ।

दीसुख पिन्नपुजाय अन्तर शोचहरे । गुरुजन द्विज पहिराय सबनिके पायँपरे । गइयांगनी न जाहिं तरुनि सबच्छबढी । ते चरहिं यमुनके कच्छ दूनेदूधचढी । खुरतांबे रूपेपीठ सोने सींगमढी । तेदीन्हीं द्विजन अनेक हरषि आशीषपढी । तबअपने मित्रसुबन्धु हँसिहँसि बोलिलये । मथि मृगमद मलय कपूर सबनिके तिलक दये । उरमाला पहिराय बसन विचित्र ठये । दानमान परिधान पूरण काम किये । बर मागध बन्दीसूत आँगन भवनभरे । तेबोलहिं लैलैनाम कोऊ न बिसरि परे । जिन जो याचेउ जायरस नँदरायलरैं । मानों बरषत मासअषाढ दादुर मोररैं । तबअम्बर और मँगायसारी सुरँगघनी । तेदीन्ही बधूनि बुलाइ जैसी जाहिबनी । अतिआनन्दते बहुरि निजगृह गोपधनी । निकसी देतअशीष रुचि अपनी अपनी । घरघर भेरिमृदङ्ग पटहनिशान बजे । तब बांध्यो बन्दनवार ध्वजापर कलश सजे । ता दिनते वै लोग सुख सम्पति न तजे । कहिसूर सबनिकी यहगति जे हरिचरणभजे ६ गोकुल प्रगटभये हरिआय । अमर उधारन असुर संहारन अन्तरयामी त्रिभुवनराय । माथेपर धरि बसुदेव ल्याये नन्दमहर घरगये पहुँचाय । जागी महरि पुत्र मुख देखत पुलक अङ्ग उर में न समाय । गदगदकण्ठ बोलिनहिँ आवै हरषवन्तिह्वै नन्दबुलाय । आवहुकन्तदेव परसनभयो पुत्रभयो मुखदेखयो धाय । दौरिनन्दगे सुतमुख देख्यो सो शोभा मोपै बरणि न जाय । सूरदास पहिलेहि यहमांग्यो दूध पियावन जसोमति माय १० नन्दरायके नवनिधि आई । माथे मुकुट श्रवणमणि कुण्डल पीत बसन भुजचारु सुहाई । बाजत तालमृदङ्ग यंत्रगति चरचि अरगजा अङ्गचढाई । अक्षत दूब लिये शिरबन्दत घर घर बन्दनिवार बँधाई । छिरकत हरदि दही हियहरषत गिरत अङ्कभरि लेत उठाई । सूरदास सबमिलत परस्पर दानदेत नहिँ नन्दअघाई ११ ॥ रागगूजरी ॥ आजुबन कोऊ बेगि न जाई । सौ गैयां बछरा समेतसब आवहु चित्रबनाई । ढोटा ह्वैरे भयो महरके कहत सुनाय सुनाई । अपने अपने मनकोचिंत्यो नैननिदेखैंआई । एकफिरत दधि दूध बन्दवत एकचलत उठिधाई । एक परस्पर कहत बधाईआनँदउरनसमाई । तनकिशोरकोमल अरुबालक बढै चौगुनेबाई । सूरदास प्रभु गोकुल जनमे गनत न रानोराई १२ ॥

राग बिलावल ॥ ढोंटाके नंदमहर भये आई । महरि यशोदा ढोटाजायो घर
घर होतबधाई । द्वारेभीर गोपगोपिनकी महिमा बरनि न जाई । अति
आनन्द होत गोकुलमें रत्नभूमि सिब छाई । नाचत तरुणवृद्ध अरु
बालक गोरस कीचमचाई । सूरदास स्वामी सुखसागर सुन्दरश्याम
कन्हाई १३ हेरीबिन नंदघरमें इकपाय उपज्यो पूतकन्हाई । बाजत
बजनिसान पंचविधि रुञ्जमुरज सहनाई । महरिमहर ब्रजहाट लुटावत
आनँद उर न समाई । चलहु सखी हमहूं मिलिजैये बेगिकरी अतुराई ।
कोउ भूषण पहिरो कोउ पहिरत कोउ ऐसेहि उठिधाईं । कंचनथार
दूब दधिरोचन गावत चलीं बधाई । भाँति भाँति बनिचलीं युवतिगण
यह उपमा मोपैनहिं आई । अमर बिमानचढ़े सुरदेखत जैधुनि शब्द
सोहाई । सूरदासप्रभु भक्तहेतहित दुष्टन के दुखदाई १४ ॥ रागगूजरी ॥
सखीरी काहेको गहरु लगावति । सुधौंकहो इतनोसुख सुनिके क्यों
नाहिँन उठि धावति । आजुहि सुख विधाता कीनो मनचाहती अति
भावति । सुतको जनम यशोदाके गृह तालगि तुमहिं बुलावति । कं-
नकथार भरिले दधिरोचन वेगिचलौ मिलिगावति । साँचहु सुदिन
नन्दनायकको । हौंनाहिन बौरावति । आनँदउर अञ्चल न सम्हारति
शीशसुमन बरषावति । सूरदासशोभा त्यहिअवसर जहाँतहाँते आवति
१५ ॥ राग कान्हरो ॥ गोपी गावहिं मङ्गलचार बधावो ब्रजराज के । अब
भयो अमरसबकाज बधावो ब्रजराजके । रानीजायो है मोहनपूत बधावो
ब्रजराज के । बहुतनारि सुहाग सुन्दरि और घोषकुमारि । सजन प्रीतम
नाउँ लैलै देहिँ परस्पर गारि । आनन्द अतिशय भयो घर घर नित्त
ठाँवहिं ठाँव । नन्दद्वारे भेंटलैलै उमड्यो है गोकुलगाँव । साथिये श्यामा
दईँद्वारे सातसींक बनाय । नवकिशोरी मुदित ह्वैह्वै गहति यशोदाजू
के पाँय । चौकचन्दन लीपके आरतीधरी संजोय । कहति घोषकुमारि
ऐसो आनँद जो नितहोय । करिकरि अलंकृत गोपिका पहिरे अभू-
षणचीर । गायबच्छ सँवारिल्याये ग्वालनिकी भईभीर । मुदितमङ्गल
सहितलीला करहिं गोपीग्वाल । हरद अक्षत दूबदधिदै तिलककरहिँ
ब्रजबाल । एकहेरी देहिँ गावहिँ एकभेंटहिं धाय । एक एक न गनत
काहूहि एक खेलावत गाय । एक वृद्ध किशोर बालक एक यौवन

[illegible] । [illegible] [illegible] कीरति सब ब्रजलोग । [illegible] के हेत
[illegible] [illegible] । देखि बाजकी सम्पदाको फूलेहैं सूरदास २६
[illegible] ॥ आजु [illegible] ब्रजमें हो सोधो गावहिं मङ्गलचार । आई
[illegible] [illegible] ता ऊपर फलडार । अक्षत रोचन दूबलै बलिवहु
[illegible] भरैवार । थरथरनते गावतचलीं ब्रजबधु झुंडअपार । चलीं
[illegible] महरिके घर देखन नन्दकुमार । देखिमोहन आमापुरी सबै
देत असीस । [illegible] रिके लाडिलो हो जीवहु कोटिबरीस । महरिदान
[illegible] बहुतदीनों अरु दियो नँदराय । ऐसो सुखदेख्यो सदाजन सूरदास
कहेगाय २७ [illegible] यशोमति धनि जगपावन रे । धनि हरि
लिये अवतार [illegible] आवनरे । दशयेमास भा पूत जु सुनिन सुहा·
वनरे । [illegible] चतुर्भुज भावनरे । बनिबनि ब्रजसुंदरि चलिं·
[illegible] बधावनरे । कनकथार रोचन दधितिलक दँदावनरे । नन्दघर
[illegible] चलिआई ये महरिजहँ पावनरे । पाँइनपरीं सबबधुवा महरि दे·
[illegible] । यशुमति सुत धनिकोखि जहांरहे बावनरे । भलेहि सूरनभो
[illegible] अमरावनरे । धुमधुम ओवर्हि कान्ह सबनि मनभावनरे । [illegible]
[illegible] करत जु लुटावनरे । घरघर [illegible] नगर सुहा·
वनरे । अमरनगर उछाह अपसरा नचावनरे । ब्रह्म लीन्ह अवतारदुख
[illegible] । [illegible] जनु सावनरे । मागध सूतभाट धनलेत
[illegible] । चोवाचंदन अँबीर गलिन छिरकावनरे । ब्रह्मादिक सन·
कादिक [illegible] । कश्यपऋषि सुर तात सुलगन गनावनरे ।
[illegible] आनन्द [illegible] । सूरदास प्रभुजनमें भक्तहुलसावन
रे २८॥ [illegible] ॥ आजु हो निशानबाजै नन्दम हरके । आनन्द मगननर
गोकुल [illegible] । आनन्दभरि यशोदा उमगी अङ्ग न समात आनंदित
भईं गोपीगावति [illegible] । दूबदधि रोचना कनकथार लैलैचलिं मानो
इंदुबधू [illegible] पाँतिन [illegible] । आनंदितभये ग्वालकरत बिनोदख्याल
भुज भरिभरि धरि अंकभेंटै बरके । आनन्द मगन धेनुथन सबै पै फेन
उमग्यो यमुना जल उछलि लहरके । अंकुरित तरुपात उकटि रहे जे
गात बनबेलि प्रफुल्लित [illegible] कहर के । आनंदित विप्रसूत मागध
याचकगण उमगि असीसदेत तरह तरहके । आनन्द मगन सब अमर

[illegible] पुष्पविमान चढ़ेगगन पड़ाके । सूरदास प्रभु आइ गोकुल [illegible] कीर्तन करत दुष्ट जन मन धरके १९ ॥ राग आसावरी ॥ धन्य [illegible] भागनितहारो जिन ऐसो सुतजायोहो । जाके दरशपरशसुख [illegible] शिर नचायोहो । विप्रसुजन बंदी औचारणासबैनंद [illegible]आयेहो । करितव सुभग हरदिदोध छिरके हरय अशीष बधायो [illegible]। [illegible] सबलच्छन अविगत हैं अविनाशीहो । सूर-दास [illegible] सुनिसुनि आनंदित ब्रजबासीहो २० आजुबधावो श्री-[illegible]आयोहै मोहनपूत । कृष्णपक्ष भादौंनिशि आठैं नक्षत्र रो-[illegible] शुभकृत । बहुत नारि सोहाग सुंदरि और घोषकुमारि । सजन [illegible] लैलै देत परस्पर नारि । आनन्द अतिशय भयो घर घर [illegible] ठांवहिं ठांव । [illegible]द्वारे भेंटलैलै उमड्योहै गोकुलगांव । द्वार [illegible] देहिं ध्वजापताका [illegible] बनाय । नवकिशोरी मुदित ह्वैह्वै गहति [illegible] पाय । चारुचन्दन लीप के जो आरति धरेउ सँजोय । कहत [illegible] आनन्द संगल जो नित होय । मुदित मङ्गल सहित लीला [illegible] गोपीग्वाल । हरद अक्षत दूब दधिलै तिलक करत ब्रजबाल । [illegible] देहिं गावहिं एक भेंटहिं धाय । एक एक न गनत न काहु [illegible] खेलावत गाय । एक वृद्ध किशोर बालक एक यौवन योग । [illegible] जनम सु प्रेमसागर क्रीड़त है ब्रजलोग । प्रभु मुकुन्द को होत [illegible] करत भोग विलास । देखि ब्रजकी सम्पदा जनफूले हैं सूरदास २१ ॥ राग काफी ॥ पालनो अतिपरम सुंदरगढ़ि ल्यावरे बढ़ैया । शीतल चन्दन कटाउ धरि खरादि रंगलाव विविध चौकरी बनाव पचरङ्ग रेशम लगाव हीरा मोतीलाल मढ़ैया । विश्वकर्मा सुतिसार रच्यो है काम सोनार मणिगण लागे अपार नन्दमहर सतकाज अढ़ैया । आनि धरेउ नंदद्वार अतिही सुन्दर सुढार ब्रजबधू देखै बार बार शोभा नहीं वारपार [illegible] अन्यहै गढ़ैया । पालनों आन्यो अति मनमा-न्यो [illegible] सुदिन धरैया । सखियन संग लगवाय रंगमहलमें पौढ्योहै [illegible] कन्हैया । सूरदास प्रभुकीमैया यशुमति नन्दरानी जोड़सांगत [illegible]लेत बधैया २२ ॥ राग आसावरी ॥ कनक रतनमणि पालनोगढ्योका-[illegible]तहार । विविध खिलौना भांतिके गजमुक्ता चहुंधार । जननी

उबटिन्हवाय के अति क्रमसों लयेगोद। पौढाये पटपालने शिशु निरखि जननी मन मोद। देखो नन्दलाल मात सुकृत फल नन्दलाल। अति कोमल दिन सातके अधरचरण करलाल। सूरश्याम छवि अरुणता निरखि हरष ब्रजबाल २३॥ रागधनाश्री॥ यशोदा हरिपालनोंझुलावै। हलरावैदुलरायमल्हावैजोईसोइसोई कछुगावै। मेरेलालकोआवनिदरिया काहेन आनिसुवावै। तू काहेन बेगिही आवै तोको कान्ह बुलावै। कबहुं पलक हरिमूंदिलेतहैं कबहुंअधर फरकावै। सोवतजानि मौनह्वैकैरही करिकरि सैनबतावै। यहिअंतर अकुलाय उठेहरि यशुमति मधुरेगावै। जोसुख सुरसुर मुनिदुल्लभ सोनित यशुमतिपावै२४ रागजैतश्री॥ कन्हैया हालरोहो वारो। तेरेवदन इंदुपर अतिछवि अलसनिमारी। कमलनयन कोकपटकिये माइयहिव्रज आवैगो। पालागौं विधिताहि बकीज्यों तूतेहि तुरतविगो। सुनिदेवता बडेजगपावन तू पतिया कुलको। पैपांजहो वेगि यहबालक करदेमोहिंबडोको। यह सुख सूरदास के नयननि दिनदिन दूनोहो। दुतिया के शशिलौंहि बढै शिशु देखैजननी यूनोहो२५ मैंघरको ढाढीबाहिको मोसरिकरैनआन। सोईलेहों जोईमनभाई नन्दमहरकी आन। धन्यनन्दधनिधन्य यशोदा धनिधनिजायोपूत। धन्यतुम ब्रजबासी धनिधनि आनंदकरतअकूत। घरघरहोतअनंदबधाई जहँतहँमागधसूत। मणिमाणिकपाटम्बरअंबर लेतनबनत बहूत। हैगैमहन भंडारदियें सबफोरिभरे सैभांति। तबहींदेत तबहिं फिरिदेखत सम्पति घरन असाति। तेमोहिंमिले जातघरअपने मैंबूझी तवजाति। हंसिहंसि दौरिमिले अंकमभरि हमतुम एकैजाति। सम्पतिदेहुलेहु नहिंपरको अन्नवस्त्रकेहिकाज। जोमैंतुमसों मांगनआयों सोइलेहों नन्दराज। अपनेसुत को बदन देखावहु बडेमहर शिरताज। तुम साहिब मैं ढाढी तेरो प्रभुमेरे ब्रजराज। चन्द्रबदन दरशन संपति दै सोलैमैंघरजाउं। जोसंपति सनकादिक दुल्लभ सोसब तुम्हरे ठाउं। जाकोनेतिनेति श्रुति गावत तेइकमल पदध्याउं। हौं तेरेजनम जनमकोढाढी सूरजदास कहाउं२६ नन्दजु मेरे मनआनंद भयोहो गोबर्द्धनतें आयो। तुम्हरे पुत्र भयोहो सुनि के अति आतुर ह्वै धायो। बंदीजन अरुभिक्षुक सुनिसुनि जहांतहांते आये। एक पहिलेही आशालागी

बहुत दिनोंनिककेछाये। तेपहिरे कंचनमणिगण भूषण नाना बसन अनूप। मोहिंमिले मारगमें मानों जात कहूंके भूप। तुमतो परम उदार नन्दजी जिनजोमांग्यो सोदीन्हों। ऐसो और कौन त्रिभुवनमें तुमसरिसाजो कीन्हों। कोटिदेहु तोपरेउ रहौंगो बिनदेखे नहिंजैहौं। नन्दराय सुनि बिनतीमेरी तबहींबिदा भलैहौं हौं। दीजैबेगि कृपाकरिमोको जैहौंग्आये मांगन। यशुमतिसुत अपने पायँन चलिलेखत आवैआंगन। मदनमोहन मैयाकरिटेरै यहसुनिकै घरजाउं। हौंतौतुम्हरे घरकोढाढी सूरदास मोहिं नाउं २७॥ रागबिलावल॥ महरभवन ऋषिराजगयो। चरणधोय चरणोदकलीन्हो अरघासन करिहेतदयो। धन्य आजु बडभाग हमारे ऋषिआये अतिकृपाकरी। हमकहँ धन्यधन्य नन्दयशुदाधनि यहब्रज जहँ प्रकटहरी। आदि अनादि रूपरेखा नहिं इनते नहिं प्रभु और बियो। देवकी उरअवतार लेनकह्यो दूधपिवनतुमसोंगिलियो। बालककरि इनकोजिनजानो कंसबिध्वंस यईकरिहैं। सूरदेहधरिसुरनउधारन पुहुमीभारयई हरिहैं २८॥ अथपूतनाकोवध॥ रागआसावरी॥ प्रथम कंसपूतनापठाई। नंदघरानिसुतलिये जहंबैठी चलीचलीनिजधामहिंआई। अति मोहनीरूप धरिलीन्हों देखत सबही के मनभाई। यशुमति देखिरही वाकोमुख काकी बधू कौनदौंआई। नन्दसुवनतबहीं पहिंचानी असुरघरनि असुरनकीजाई। आपुन बज्रसमान भयेहरि माता दुखित भईभरपाई। अहोमहरि पालागन मेरी मैं तुम्हरो सुत देखनआई। यह कहि गोदलियो अपने तबत्रिभुवन पतिमनमन मुसकाई मुखचूम्यों गहिकंठलगायो बिषलपट्योअस्तन मुखनाई। पयसँगप्राण अंचै हरिलीन्हों योजन एक गिरी मुरझाई। त्राहि त्राहि करि ब्रजगण धाये असि बालक क्यों बचे कन्हाई। अति आनन्द सहित सुत पाये हृदय मांझ रहो लपटाई। करवर बडी टरी मेरेको घरघर करत अनंद बधाई। सूरश्याम पूतना पछारी यह सुनि जिय डरप्यो नृपराई २९॥ रागबिलावल॥ उबरेउ श्याम महर बड भागी। बहुत दूरि तें परेउआइघर देखोमैंकहु चोटनलागी। रोगजाउबलिजाउ कन्हैयाय इकहि कंठलगाई। तुमहींहोब्रजको जीवनधन देखतनैनसिराई। भली नहींतेरी प्रकृतियशोदा छांडिअकेलेजाति। गृहकोकाम इनहुंतेप्यारे

नेकहुनहीं डराति। भली भई अबकेहरिबाचे अजहूं सुरति अन्धारि। सूरदास झांकिकहेउ ग्वालिनी मनमनमहरिबिचारि३०॥ रागबिलावल॥ देखहुयह बिपरीतिभई। अद्भुतरूप नारि यक आई कपटहेतक्यों अहै दई। कान्हहि लेन सुमतिकी रातेरुचिकरि कंठलगाई। तब्बधिकि देहधरी योजनलौं श्यामरहे लपटाई। बड़ेभागहैं नंदमहरके बड़भागिनि नंदरानी। सूरश्याम उरऊपर उबरे यहसब घरघरजानी३१ नेकगोपालहि मोकोदेरी। देखोंकमल बदन नीकेंकरि तापाछे तूकनियां लैरी। अति कोमलकर चरणसरोजसु अधर दशननासा सोहैरी। लटकनि सीश कंठमणि भ्राजित मनमथ कोटिबारनेगैरी। बोधहुनिमा समान बिलोकत यहछबि कबहुंन पाईमेरी। निगम निअगमसुभातम बालक बड़ेभागपायेहैं तेरी। जिनकोरूप जगतके लोचन चन्द्र कोटिरबि आलयहैंरी। सूरदास बलिजाय यशोदा गोकुलनाथ पूतनाबैरी ३२ रूप मोहनी धरिव्रजआई। अद्भुतसाजि शिंगार मनोहर असुरकंसदै पानपटाई। कुचबिषलाइ पीसकपटकरि बालघातिनीपरमसोहाई। बैठी हुती यशोदामंदिर हलरावति सुतश्याम कन्हाई। प्रगट भई तहँ आनि पूतनाप्रेरितकाल अवधिनियराई। आवतिपीठ बैठनोदीनो कुशलपूंछि अति निकट बोलाई। पौढ़ेहरिअति सुभगपालने मैं सनातनकाज सिधाई। बालकलयो उछंग दुष्टमति हरषित अस्तन पानकराई। बदन निहारि प्राणहरिलीन्हे परदैलगी योजनउंचाई। सूरप्रभु गतिनाको दीन्हीं मातुमानिसुखमाय पठाई ३३ राजाको काज आजकरिआऊं। बिगसंहारो सकल घोष शिशु जोमुख आय सुपाऊं। मोहन मुरलि बसीठी पठयो मोतिसन्मुख ह्वैधायो। अंगसुभग सजे ह्वैमधु सूरति नैननि माह समायो। घसि चंदन कंकोल उरोजनिलै रुचिसों पय प्यायो। सूरगोचमन करेअबहींतो पूतनानामकहायो३४॥ रागसारंग॥ अथकागासुरआयो। कपटखरेव कागरूपएक दनुजधस्यो। नृपआयसुलैकरि माथेदै हरयवन्तउरगरबभस्यो। कितकबातप्रभुतुमआयसुलेयहजानेब सोंजानगस्यो। इतनीकहि गोकुलउड़िआयो आनंदगृह छाजरस्यो। पलनापर पौढ़े हरिदेखे तुरतआनि नैननितहिंअस्यो। कंठचांपिबहुबार फिरायोगहि पटक्योनृप पासपस्यो। तुरतकंस पूंछनतेहिलाग्योक्यों

आयो नाहिं काजसर्‌यो । बीते याम बोलिलव आयो सुनहु कंस तेरो आइ
मर्‌यो । धरे अवतार महाबलकोऊ एकौहिन्दार मेरो गर्वहर्‌यो । सूरदास
प्रभु कंसनिकंदन भक्तहेत अवतार धर्‌यो ३५ ॥ रागबिलावल ॥ सभामांझबैठि
नित्य अतिहि डरानो । सभामांझअसुरनिके आगे बारम्बार शिर सों
पछितानो । ब्रजभीतर उपज्यो रिपु मेरो मैं जानी यह बात । दिनहीं
दिन वह बढ़तु जातुहै मोको करिहै घात । दनुजसुता पूतना पठाई
शकटमांझसंहारी । चोंच मरोरि कागासुर दीन्हें मेरेहिंग पटकारी ।
अबहीं ते यह हाल करतुहै दिन दिन होत प्रकास । सेनापतिन सुनाय
बात यह नृप मन भये उदास । ऐसो कौन मारिहै ताको सोहिं करै
सो आई । वाकोमारि अपुनपौ राखै सुरनरनहिं सो जाई ३६ ॥ रागसूहो ॥
नृपति बात यह सबन सुनायो । सुन्यो बड़ीसेनापति कोऊ शकटासुर
सुनि गर्व बढ़ायो । दोउकर जोरिभयोतब ठाढ़ो प्रभुआयसु मैं पाऊं ।
यहांते जाय तुरतही मारौं कहौ तो जीवत ल्याऊं । यहसुनि नृपति
हरषमनकीन्हों तुरतहि बीरादीन्हों । बारम्बार सूर कहै ताको आप
प्रशंसाकीन्हों ३७॥ राग गुण्डमलार ॥ पलमेंचल्यो नृपआज्ञालीन्हों । गयो
शिर नायकै गर्वहि बढ़ाय कै शकट को रूप धरि असुर लीन्हों ।
सुनत नहरान ब्रजलोग चकृतभये कहा आघातधुनिकरतआवै । कोउ
आकाश चहुंपास दशहूंदिशा डरनर नारि सबसुधि भुलावै । आपधायो
जहां तहां प्रभुपरेपालने करगहे चरण अँगुठा चचोरैं । किलकि किल-
कत हँसत बालशोभा लसत जानि तहिं कंसरिपु आयोभोरैं । मे-
कफटकग्वालात भयो अति आघातगिरेउ भहरातशकटासंहारेउ । सूर
प्रभुनन्दलालदनुज मारेउख्याल मेटिजंजालब्रजजनउबारेउ ३८ ॥ महा-
तमशकटासुरमारि ॥ रागबिलावल ॥ करपग गहि अँगुठा मुख मेलत । प्रभु पौढे
पालने अकेले हरषि हरषि अपने रँगखेलत । शिवशोचत विधि बुद्धि
विचारत बटबाढ़्यो सायर जल झेलत । बिडरि चले घन प्रलय जानि
करि दिगपति दिग्दन्तीनसकेलत । मुनिमन भीतभये भुवकम्पित शेष
सकुचि सहसौफणपेलत । सोसुख सूरभये सबगोकुल किलकत कान्ह
शकट पगठेलत ३९ चरणगहे अँगुठा मुख मेलत । नन्दघरनि गावति
हुलरावत पलनापर किलकत हरिखेलत । जो चरणारबिन्द श्रीभूषण

जुवतेंसेके सुहावति । देख्यौ सोऊ एक पलकनमें सुखसैलनकी आवति । जो सुखमारकण्डेय रुकौ यु जनर सुनि चावत वियाद । यह सबहै मोहूं को दुल्लभ ताते होत सबाद । उकुलात सिन्धु चराचर काँप्यो कमठ पीठि अकुलाये । शेषसहस्र फणाडोलत लाग्यो हरिपीवत जबपाये । बढ्यो वृक्ष वटसुर अकुलाने गगनभयो उत्पात । महाप्रलय के मेघउठे करि जहाँतहाँ आघात । करुणाकरी छाँड़ि पगदीन्हे जानि सुरनि मन हर्षा । सूरदाँगोपी वसत सुरप्रभु सुरमुनि करत प्रशंसा ४० ॥ रागबिलावल ॥ यशोदा मदनगोपाल सोवावै । देखि स्वप्नगति त्रिभुवनकाँपत ईश विरंचि भ्रमावै । असित अरुणसित आलस लोचन उभय पलक परिआवै । जनु रवि शशि गत होत महानिशि दुरभ्रसिंधु छविपावै । श्वास उदर उस सतयोजन अगपवेत भँडार समावै । नाभिसरोज प्रकट पद्मासन उतरि तालुपछितावै । करशिर तरकरि श्यामसनोहर अलक अधिक सो भावै । सूरदास मानहुँ पन्नगपति प्रभुऊपर फणछावै ४१ राग सोरठ ॥ नान्हरिया गोपाल बेगि बड़ेसो काहे न होहु । यहि मुख मधुर वचन हँसि कबहूँ जननि कहोगे मोहु । यह लालसा बहुत मेरे जिय जो जगदीशकरै । मोदेखत कान्हर यहिआँगन पदद्वै धरणिधरै । खेलहिँ हलधर सङ्गरङ्ग रुचिनैन निरखि सुखपाऊं । छनछनक्षुधा आनि करै मनमोहन हँसिहँसि करलगाऊं । जाके शिव विरञ्चि सनकादिक मुनिजन ध्यान न पावै । सूरदास तिनको यशुमतिसुत हित अभिलाष बढ़ावै ४२ ॥ यहातितृणावर्त्तब्रजकोगया । रागसोरठ ॥ यशुमति मन अभिलाषकरै । कब मेरे लाल घुटुरुवनिरेंगै कब धरणी पगद्वैक धरै । कब द्वैदांत दूधके देखौं कब तुतरेमुख वचनझरै । कब नन्दहि बाबाकहि बोलै कबजननी कहि मोहिँ ररै । कबमेरो अँचरागहि मोहनजोइसोइ कहि मोसों झगरै । कबधौं तनकतनक कछुखैहै अपने करलै मुखहि भरै । कबहँसि बात कहेगो मोसों वाछवितें दुखदूरि हरै । श्यामअकेले आँगन छाँड़े आप गई कछु काज घरै । यहि अन्तर अँधवाहि उठ्यो यक गरजत गगन सहित घहरै । सूरदास ब्रजलोग सुनतधुनि जो जहँ तहँ सब अतिहिडरै ४३ ॥ रागसूहा ॥ अति बिपरीत तृणावर्त्त आयो । बात चक्रमिस ब्रज ऊपर परिनन्द पौरिके भीतर धायो । पौढ़िश्याम

नन्दके आँगन लेत उछरिआकाश चलायो । अन्तआथंभ भगासबगो कूल जो जहँरहेउ सुतकहँ छायो । यशुमति लायआप जो देखै श्यामश्याम कोह टर लगायो । आवहु नन्दयुकारि कयोकोमि तेरोपूत बचायोहि उड़ायो । यहि अन्तर आकाशते आवत पर्वतसम करि सबनिनतायो । मारो असुर शिलासों परव्यो आपचढ़े ना ऊपर भायो । दौरे नन्द यशोदा दौरी तुरतहि लै हित कंठलगायो । सूरदास यहकहति यशोदा जानोनोविधनहिं काभायो ५४ ॥ रागबिलावल ॥ उनरेउ श्यामसहरिबड़भागी । बहुतदूरिते परो आयधर देखों मैं कहुँ चोटनलागी । रोगजाउ बलिजाउँ कन्हैया यहकहि कंठलगाई । तुमहौंहो ब्रजको जीवनधन देखत नयन सिराई । भलीनहीं तेरी प्रकृति यशोदा छांड़ि अकेलेजाति । गृहको काम इनहूँते प्यारो नेकाहु नहीं डराति । भली भई कैसे हरि बाचे अजहूँ सारति सम्हार । सूरदास रिझि कहत ग्वालिनी नन्दमहरि निहार ५५ ॥ अथ अन्नप्राशन ॥ रागधनाश्री ॥ हरिकिलकत यशुमतिकी कनियाँ । निरखि निरखि मुख कहति लालसों सोनिधननिके धनियाँ । अतिकोमल तनुचितै श्यामको बार बार पछिताति । कैसे बच्यो जाउँबलि तेरी तृणावर्त के घात । ना जानो मैं कौनपुण्य ते कोकोर लेत महाई । वैसोकाम पूतना कीन्हों यह ऐसी करिआई । माता दुखित जानि हरि बिहँसे नन्हीं नन्हीं दँतुलि दिखाई । सूरदास प्रभु माता चितते दुखडारेउ बिसराई ५६ सुनसुख देखि यशोदा फूली । हरषति निरखति दूधकी दँतुली प्रेममगन तनकी सुधि भूली । बाहिर ते तबनन्दबुलाये देखोधौं सुखदाई । तनकतनकसी दूधदँतुलिया देखहु नैन सुफल करोआई । आनँद सहित महरतब आये मुखचितवत दोउ नैन अघाई । सूरश्याम किलकत द्विज देख्यो मनो कमल पर बीजु जमाई ५७ ॥ अथ अन्नप्राशनलीला ॥ रागबिलावल ॥ कान्ह कुँवरको करेपासनी कछुदिन घटि षटमासभये । नन्द महर यहसुनि पुलकित जिय हरि अनप्राशनयोगभये । विप्रबुलायनाउँलैबूझियो राशिशोधियकसुदिन धरो । आछोदिन सुनि महरि यशोदा सखिन बोलि शुभगानकरो । युवतिमहरिकोगारीगावति और महरिकोनाउँलिये । ब्रजघरघरआनंदबढ्यो अति प्रेमपुलक न समातहिये । जाको नेति नेतिश्रुति गावत

आवत शिवशुनि ध्यानधरैं। सूरदास तिनको ब्रजवनिता भकभकोरति
अरु अंकभरैं ४८॥ रागसारंग॥ आजु कान्ह करिहैं अनप्रासन। मनिमा
कंचनके थार भराये भाँतिभाँति के बासन। नन्दघरनि ब्रजबधू बुलाई
जे सब आपनी पाँति। कोउ जेंवनार करति गउघृतपक्व कटुरसके बहु
भाँति। बहुत प्रकारकिये सबव्यंजन अनेकवरन मिष्टान। अतिउज्ज्व-
लकोमल सुठिसुन्दर महरि देखि मनमान। यशुमति नंदहि बोलिक-
हेउ तब महर बुलावहु जाति। आपगाये नंदमहरघर लैआये सबसाति।
आदर कै बैठारि सबनको भीतरगये नँदराय। यशुमतिउबटि न्हवाय
कान्हको पट भूषण पहिराय। तनुझँगुली सिरलाल चौतनी करचूरा
दुहुंपाय। बार बार मुख निरखि यशोदा पुनिपुनि लेतबलाय। घरी
जानि शुतमुख जुठरावन नन्द बैठलै गोद। महरि बोलि बैठारि मंडली
आनँद करत बिनोद। कनक थार भरि खीरधरी लै तापर घृतमधुला-
ई। नँद लैलै हरि मुख जुठरावत नारि उठीं सब गाई। षटरस के प-
रकार जहां लगि लैलै अधर छुवावत। विश्वंभर जगदीश जगत गुरु
परसत मुख करुवावत। तनक तनकजल अधर पोंछिके यशुमति पै
पहुंचाये। हरषवन्त युवती सब लैलै मुख चूमत उरलाये। महर गोप
सब हिलि मिलि बैठे पनवारेपरसाये। भोजन करत अधिकरुचिउ-
पजी जो जेहि जेहि मन भाये। यहि विधि सुख विलसत ब्रजबासी
धनि गोकुलनर नारि। नंदसुवनके याछबिऊपर सूरदास बलिहारि ४९
हरिको सुख गोहिंभाय अनुदिन अतिभावैं। चितवत ब्रज युवतिन के
मनकृत बिसरावैं। बारबार लैउछंग रहतिलोभ लागे। निरखति निंदत
निमेषकरत ओटआगे। शोभित सुकपोल अधर अलपअलप दसना।
किलकत बिहँसत सुदेश मोहन मृदु रसना। नासा लोचन विशाल
सन्तन सुखकारी। सूरदासधन्यभाग जोवत ब्रजनारी ५०॥ रागधनाश्री॥
लाल तेरे मुख ऊपर वारी। बल कैसो मेरे नयननि लागे रोगन लाइ
तुम्हारी। सुन्दरताको पार न पावति रूपदेखि महतारी। उरअंतर
आनन्द बढ़ावन हँसतदेत किलकारी। अलपदशन तुतरातबोलविच
तहांनजातिबिचारी। सूरसिंधुकी बूंदभई मिलिमनसा मगन हमारी५१
ललनसैयाछबि ऊपरवारी। बलगोपाल लगैहत नयननिरोग बलाय

मनुहारी । कुंडल अलक मोहनमुख बिहँसनि भृकुटीबिकट निहारी। मनहुँ कमल अलिशावक पंगतिउड़त मधुपछवि भारी। लोचनललित कपोलनि काजर छवि उपजति अधिकारी। सुखमहँ सुखऔरौरुचि बाढ़त हँसत देत किलकारी। अलप दशन कलबल करि बोलनि बुधि नहिं परति बिचारी । निकसति ज्योति अधरनकेबिच मानो बिधुमें बिज्जुउज्यारी। सुन्दरताकोपारनपावति रूपदेखि महतारी। सूरश्याम की तन भई रीति मतिगति दृष्टिहमारी ५२ ॥ रागजैतश्री ॥ ललना हौं वारी तेरे या मुखपर। माई मेरे हृदयबिच बिलगौ तातै मोमोबंदा धौं भूपर। दमकतहैं द्वैदँतुलियां बिहँसत मानों सीपजघरकियो बारिजपर। लम्बुलघलटीधरघूँघुरवारे लटकनलटकिरहे ललार पर यकुपमाकापैकौहिआवै कछुक कहौं सकुचतहौं जियपर। नवतन चन्द्र रेख मधिराजत सुरगुरु शुक्रउदोत परस्पर। मैयाछबि पर तनमन वारे तनके गहुरुबहु होतहै भूपर। सूरकहा मैं करौं निछावर अपने लाल ललितलरखर बचनपर ५३ ॥ रागआसावरी ॥ जबते मैंबेलतदेख्योआंगन यशुदाकोपूतरी। तबतेगृहसों नातोटूटो जैसोकाचो सूतरी। अतिबिशाल वारिजलोचन पर शोभित काजर रेखरी। राखेहैं मकरन्दपालि मनो अलिकोकिलके बेयरी। राजतहैंद्वैकी दँतियांजगमगजगमगहोतरी। मनहुँमनोहर बिधुमंडलमें सीपरतनकीज्योतिरी। यवबासुनतउतकंठा मनकाकुबोलतहै तुतरायरी। सरप्रयासमुंदर मुखनिरखत आनँदउर न समायरी ५४ अद्भुत एक चितैयौं सजनी नंदमहरके आँगनरी। सोमैं निरखि अपुनपौखोयो गईमथानीमांगनरी। बालदशा मुखकमलबिलोकत कछु जननीसों बोलैरी। प्रकटतहँसत दंत मनुसिपजामनि दूरैकल बोलैरी। संदरभाल तिलकगोरोचन मिलिमसि बुंदका लाग्योरी। मनो मकरंदअचैरुचिकै अलिशावकसोइनजाग्योरी। कुंडललोलकपोलनि झलकत मनों दर्पनमेंझांईरी। रहीबिलोकिबिचारि चारुछबि परमित काहूँ न पाईरी। मंजुलतारेन की चपलाई चित चतुरानन करषेरी । मनोशरासन समर धरेकरभौंह चढ़ोशर बरषेरी। जलधि थकित जनु काग कपोत ज्यों कूलन कहु आयोरी। नाजानो केहिअंग मगनमन चाहि रहो नहिं पायोरी। कहँलगि कहौंबनाय बरणि जितनी छबि

निरखि लहारीरी। सूरश्यामको मुकरोमपरदेउँ आरावोंलहारीरी ५५ रागधनाश्री ॥ यशोदा चिरजीवो गोपाल। वेगिवढ़े बलसहित विरधल- अमहीर मनोहर बाल। उपजिपरे शिशुकर्म पुण्यफल समुद्रसीप ज्यों लाल। सब गोकुलके प्राणजिवन धन वैरनिके उरशाल। सूर कितो सुखपावत लोचन निरखत घुटरुन चाल। झारतरज लागहिं मेरे उर भागहि रोगदोष जंजाल ५६ ॥ रागबिलावल ॥ खेलत नँदआँगनगोविन्द। निरखि निरखि यशुमति सुखपावति वदनमनोहर चन्द। कटि किं- किणी चन्द्रमणिकी लटमुक्तावलि भालभाल। परम सुदेश कंठकेहरि नखविच विच बघू प्रवाल। करपहुँचियां पायपसमुरा तनुरंजित रज पीत। घुटुरुन चलत अजिर महँ विहरत मुख मंडित नवनीत। सूर निरखि कान्हको आनिक बाणीकहत न आवे। बालदशा अवलोकि सनकमुनि योगविरति विसरावे ५७॥ रागआसावरी ॥ घुटुरुनचलत श्याम मणि आँगन मात पिता दोउदेखतरी। कबहुँक किलकिलात मुख हेरत कबहुँ जननि मुख पेखतरी। लटकन लटकत ललित भाल पर काजरबिंदु भ्रुवऊपररी। यह शोभानयननि देखें जे बरहि उपमातिहुँ भूपररी। कबहुँक दौरि घुटुरुवनि लटकत गिरत उठत फिरि धावत री। इतते नंद बोलायलेत हैं उतते जननि बुलावतिरी। दम्पति होउ करत आपुसमें श्याम खेलोना कीन्हेंरी। सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सुत हित करि दोउ लीन्हेंरी ५८॥ रागबिलावल ॥ अथ बरगांठि कन्हैयाकी ॥ आजु भोर तमचुरकी कांईरोल। गोकुलमें आनन्द होतहै मङ्गलधुनि घहराने ढोल। फूले फिरत नन्द अतिसुख भयो हरषि मँगावत फूल तँबोल। तनकबदन दोउ तनक कर तनक चरण पोंछति पट झोल। कान्हगले सोहत कंठमाला अँगभूषण अरु अंगुरिन्ह रोल। शिर चौं- तरी डिठोना दिय आँखि आंजि पहिराइनि चोल। श्यामकरत माता सों झगरो अटपटात कलबल करि बोल। दोउ कपोल गहिके मुख चूंबत बरषग्रोस कहि करति कलोल। सूरश्याम ब्रजजन मनमोहन आनँद उठत हिलोल ५९ बरष गांठि सब सखिन बुलायो सुख करि कङ्कन गान करावो। चन्दन आँगन सबहिँ लिपावो मोतियनि तुम चौक पुरावो। उमग अँगनि आनन्द तूर बजावो। मेरे कहे तुम विप्र

सुनाओ शुभघरि एक आनि भराओ । बागे बीरे बनि बनि बनाओ आ-भूषण पहिराओ । अक्षतदूब मँगाओ ललनकी बरषगाँठि जुराओ है मोहिं मैननि लादे । नहवाओ । पंचरंग सारि मँगाओ भूषण पहिराओ नंद धन ठसक अङ्ग बताओ । नँदरानी सब सखिन बुलावति यहै रीति कहि कहि सुनावति । बाजकरी किन बिलम्ब काहे लगाओ यशुमति तब नन्दलालावति । लाललियें कनियाँ दिखावति लबालकीघरी सुरत आवति मैंतो न्हवाइ बनाओ । सूरश्याम मुखछबि निहारति तनमन पुबतीजन वारति अतिसुख भयो बरषगाँठि जुराओ ६० ॥ रागकान्हरो ॥ उमगनि उमङ्गे ब्रजनारि कान्हकी बरषगाँठि वरष वर्णन । गावत मङ्गलगान नीके सुर नीकीतान आनंद हरषनि । कञ्चनकी शोभित थार दधिरोचन फूलहार देखत चली नंदकुमार मिलिवेकी तरषनि । सूरदास प्रभुकी बरषगाँठि जोरत वहछबि परखिन तोरति अरसपर-सनि ६१ शोभितकर नवनीत लिये । घुटुरुन चलत रेणुतनु मण्डित मुखदधि लेपकिये । चारुकपोल लोललोचन हउ गोरोचनको तिलक दिये । लटलटकन मनमत्त मधुपगण मादक मधुहिपिये । कठुलाकंठ वज्र केहरिनख राजत रुचिरहिये । धन्य सूर एकौपल यहिसुखका शतकलप जिये ६२ बालबिनोद खरे जिय भावत । मुखप्रति बिम्ब पकरिबे कारण हुलसि घुटुरुवनि धावत । शब्दजोर बोल्यो है चाहत प्रकट वचन नहिंआवत । अनेक ब्रह्मखण्डको महिमा शिशुतामाँझ दुरावत । सूरदास स्वामीसुखसागर यशुमति प्रीति बढ़ावत६३ आँगन खेलत घुटुरुनि धाये । नीलजलद तनुश्याम राममुख निरखि जननि दोउ निकट बुलाये । बंधुक सुमन अरुण पदपङ्कज अंकुश प्रमुखचिह्न बनिआये । नूपुर कलरव मनों सुतहंसनि कर बेनी उदै बांहबसाये । कटि किंकिणि बरहार ग्रीवदर रुचिरबाहु भूषण पहिराये । सुभग चिबुक द्विज अधर नासिका श्रवण कपोल मोहिं सुठिभाये । भ्रू सुं-दर करुणारस पूरण लोचनमनहुँ युगल जलजाये । भालविशाल ल-लित लटकन मणि बालदशाके चिकुर सुहाये । मानहुँ गुरु शनि कुज आगेकरि शशिहि मिलन तुमते गण आये । उपमा एक अद्भुत भइ तब जब जननी पटपीत उढ़ाये । नील जलद ऊपर यों निरखत तजि

सुभाव मनुतड़ित छपाये। अङ्गअङ्ग प्रतिमारति कर मिलि छबिसमूह लै लै मनुछाये। सूरदास सो क्यों करि बरणौ जो छबि निगम नेति करि गाये ६४ ॥ राग कान्हरो ॥ सादर सहित बिलोकि श्याम मुखनन्द अनंदरूप लिये कनियां। सुंदर श्याम सरोज नीलतनु अँगअँग सुभग सकल सुखदनियां। अरुण तरणि नख ज्योति जगमगति रुनु झुनु करति पांय पैंजनियां। कनकरतन मणिजड़ित रचित कटिकिंकिणि कुनित पीतपट भनियां। पहुंचीकर पदिक उर हरि नख कठुला कंठ झुमनियां। कुटिल भृकुटि सुखकी निधि आनत कलकपोल की छबि न उपनियां। रुचिर चिबुकद्विज अधर नासिका अति सुन्दर राजत सो बनियां। भालतिलक मसिबिन्दु बिराजत शोभित शोभालाल चौतनियां। मनमोहन की तोतरि बोलनि मुनिमन हरन सुहस मुसकनियां। बालसुभाव बिलोकि बिलोचन चोरतचितहि चारुचितवनियां। निरखति ब्रजयुवती सबठाढ़ी नन्दसुवन छबि चन्दबदनियां। सूरदास अब निरखि मगनभये प्रेमबिवश कछुसुधि न अपनियां ६५ ॥ राग धनाश्री ॥ कहांलगि बरणौं सुन्दरताई। खेलतकुंवर कनक आंगनमें नैननिरखि छबिपाई। कुलहि लसत शिरश्याम सुभग अति बहुबिधि रङ्गबनाई। मानहुँ नवघन ऊपर राजत मघवा धनुष चढ़ाई। अतिसुदेश मृदुहरत चिकुर मनमोहन मुख बगराई। मानहुँ मंजुल प्रकट कञ्ज पर अलि अवली फिरिआई। नीलश्वेतपर पीतलाल मणि लटकन भालसराई। शनि गुरु असुर देवगुरु मिलि मनोंभौम सहित समुदाई। दूध दन्त द्युति कहि न जाति अति अद्भुत इक उपमाई। किलकत हँसत दुरत प्रकटत मनोंघनमें बिज्जुछटाई। खंडित बचन देत पूरत सुख अलप जलप जलपाई। घुटुरुन चलत रेणुतनु मंडित सूरदास बलिजाई ६६ ॥ राग नट नारायण ॥ हरि जूकी बालछबि कोटि मनोज शोभाहरनि। भुज भुजङ्ग सरोज नैननि बदन बिधुजित लरनि। रहे बिबरनि सलिलनभ उपमा अपन द्युति डरनि। मंजुमेचक मृदुलतनु अनुहरति भूषण भरनि। मनहुँ सुभग शृङ्गार शिशुतरुफरयो अद्भुत फरनि। चलतपद प्रतिबिम्बमणि आंगन घुटुरुवनि करनि। जलज सम्पुट सुभग छबिभरि लेत उरजनु धरनि। पुण्य फल अनुभवति सुतहि बिलोकि के नँद

दरसनि। सूरप्रभुकी बसी उर किलकनि ललित लरखरनि ६७ ॥ राग धनाश्री ॥ किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत । मणिमय कनक नन्दके आंगन मुखप्रतिबिम्ब पकरिबेहि धावत। कबहूं निरखि आपछांहीं को करसों पकरन चाहत। किलकि हँसत राजतद्वै दँतुली पुनि पुनि तेहि अवगाहत। कनक भूमिपर करपगछाया यह उपमाइकराजत। करकर प्रतिपद प्रतिमणिवसुधा कमलबैठकी साजत। बालदशा शुभ निरखि यशोदा पुनि पुनि नन्द बुलावत। अँचरातरलै ढांकि सूरके प्रभुको दूध पियावत ६८ ॥ रागबिलावल ॥ नन्दधाम खेलत हरिडोलत। यशुमति करत रसोई भीतर आपुन किलकत बोलत। टेरति उठि यशुमति मोपनकाहि आवहु घुटुरुनिधाय। बचन सुनत माता पहिंचाली चले घुटुरुवनि पाय। लियेउठाय अंचलगहि पोंछ्यो धूरिभरी सबदेह। सूरज प्रभु यशुमति रज झारति कहां भरी यह खेह ६९ ॥ रागसूहो ॥ धनि यशुमति बड़भागिनी लिये कान्ह खिलावै। तनक तनक भुज पकरिकै ठाढ़होन सिखावै। लरखरात गिरिपरत हैं चलि घुटुरुनि धावै। पुनि क्रम क्रम भुजटेकिकै पगद्वैक चलावै। अपने पायँन कबहिं चलो मों देखत धावै। सूरदास यशुमति यहैविधि सोंजु मनावै ७० ॥ रागकान्हरा ॥ हरिको बिमलयश गावति गोपांगना। मणिमय आँगन नन्दरायके बाल गोपाल तहांकरैं रङ्गना। गिरि गिरि परत घुटुरुवनि टेकत खेलत हैं दोउ छगन मंगना। धूसर धूरि धौत तन मंडित मात यशोदालेति उछंगना। बसुधा त्रिपद करतनहिँ आलस तिनहिँ कठिन देहरी उलंघना। सूरदासप्रभु ब्रजबधू निरखति रुचिर हारहिय सोहत बंधना ७१

अथ श्रीकृष्णपद चलन लीला ॥ राग सूहो ॥ चलन चहत पायँनगोपाल। लयेलगाय अँगुरी नँदरानी मोहन सूरति श्याम तमाल । डगमगात गिरि परत पाणिपर भुज भ्राजित नँदलाल। जनु श्रीधर श्रीवरत अधोमुख झुकत धरति मानहुँ नमिताल। धूरिधौत तनुनैननि अंजन चलत अटपटी चाल। चरणरुणित नूपुर धुनिमानों सर बिहरतहै बालमराल। लट लटकन शिर चारु चौंखड़ा सुठिशोभा शिशुभाल। सूरदास ऐसो सुखनिरखत जो जीजै जगमें बहुकाल ७२ ॥ रागसूहो बिलावल ॥ मणिमय आँगन नंदके खेलत दोउभैया। गौर श्वेत श्यामजोरीबनी बलकुँवरकन्हैया।

लटकनललितलटुरिया मसिबिन्दु गोरोचन । हरि नख उरअति राज
कुंभलनि दुख मोचन । धन्यधन्य यशुमति रोहिणी निरखति मैया ।
घुटुरुनिरेंगि चलावहिं सुतजानि कन्हैया । नील पीतपट ओढ़नी देखत
जियभावै । बालविनोद आनँदसों सूरज जनगावै ७३ ॥ राग धनाश्री ॥ आँ-
गन खेलें नन्दकेनंदा । यदुकुलकुमुद सुखद सुखद चारुचंदा । शङ्खचक्रमल
सोहत गोहैं शिशुभूषण सबको मनमोहैं । तनुद्युति मोर चन्द जिमि
झलकैं । उमँगि उमँगि अंग अंग छबिछलकैं । कटिकिंकिणी पगपैं-
जनिबाजैं । पंकजपाणिपहुँचियाराजैं । कठुला कंठ बघनहाँ नीके । नैन
सरोजमैन सरसीके । लटकन ललितललाटलटूरी । दमकतिहैद्वैदँतुलिया
रूरी । मुनिमनहरत मंजुमसिबिंदा । ललितवदनबलिबालगोबिंदा । कु-
लही चित्रविचित्रझंगूली । निरखियशोदा रोहिणीफूली । गहिमणि
खंभडिंभडगडोलैं । कलबल बचनतोतरे बोलैं । निरखत झांकि झांकत
प्रतिबिम्बहि । देतपरम सुख पितुअरु अंबहि । ब्रजजन निरखत हिय
हुलसाने । सूरश्याम महिमा को जाने ७४ ॥ राग बिलावल ॥ कालबल
ते हरि हारि परे । बहुतन रंगन बान जलदपर मानहुँ है शशिश्रानि
भरे । तबाधारि कमठ सुरासुर सर्पहि धरत न मनमँह नेकडरे । तिनभुज
भूषण भारपरत करगोपिनके आधारधरे । सिम्बलदन मानहुँ मथिवका-
ढ्यो बिहँसनि मानो प्रकाशकरे । सूरश्याम दधिभाजन भीतर निरखत
मुख मुखतें न टरे ७५ ब्रजमोहन करगही मथानी । परसत कर दधि
माटनेति चित उदधि शैल बासुकि भयमानी । कबहुँकअहुठ परगनहिं
बसुधा कबहुँ देहरि उलँगि न जानी । कबहुँक सुर मुनिध्यान न पावत
कबहुँखेलावति नन्दकिरानी । कबहुँक अखिल उदर नहिं तिरपति
कबहुँक दल माखनरुचि मानी । सूरदास प्रभु की यहलीला परत न
महिमा शेष बखानी ७६ सिखवत चलन यशोदामैया । अरबराइकर
पाणिगहावति डगमगाय धरणीधरपैया । कबहुँकसुन्दरवदन बिलो-
कति उरआनंदभरि लेतबलैया । कबहुँककुल देवतामनावति चिरजीवै
मो लाल कन्हैया । कबहुँक बलको टेरिबुलावति यहिआंगनखेलहु
दोउभैया । सूरदास स्वामी सुखसागर अति प्रताप बालकनंदरैया ७७ ॥
राग नट नारायण बलिगई बालरूप मुरारि । पायं पैंजनि रटति रुनुझुनु

नचावत नन्द नारि । कबहुंहरिको लायअंगुरी चलन सिखवति ग्वारि । कबहुंहृदयलगायहितकरिगावति मंगलचारि । कबहुंहरिको लैचुचुकारति कबहुंगावतिगारि । कबहुंलैपाछे दुरावति ह्यांनाहिं बनवारि । जो कछु सुखयशोमतिपावति राईलोनउतारि । सूरनरमुनि सबमोहे निरखियह अनुहारि ७८ ॥ राग बिलावल ॥ भावतहरिकोबालबिनोद । श्यामरामसुख निरखि प्रमोदित रोहिणीजननिय मोद । आंगन पंकपरस तनुमंडित चलतकुलात नूपुरसनमोद । परम सनेहबढ़ावत मनमल निर्विकार बैठत चाढ़िगोद । आनंदकंद सकलसुखदायक निशिदिनरहतकेलिरसमोद । सूरदासप्रभु अंबुजलोचन फिरिफिरि चितवत ब्रजजनकोद ७९ बाल बिनोदआंगनकी डोलनि । मणिमय भूमिनन्दआलय बलिबलि जाउं तोतरीबोलनि । कठुलाकंठ कंठुला के ढिग नखकेहरिभूषणहियलाल अमोलनि । बदनसरोजतिलकगोरोचन लटलटकनि मधुकर गतिडोलनि । करनवनीत परसआननसों कछुकखानकछु लयो कपोलनि । कहिजनसूर कहांलगिबरनो धन्यनन्द जीवनजगमोलनि ८० आंगन- नुरिया सुवनको नन्दचलन सिखावत । अरबराय गिरि परतहैं कर टेकि उठावत । बारबार बकिश्यामसों कछुबोल बुलावत । दुहुंघा द्वै दँतुलीभई अतिमुख छबिपावत । कबहुंकान्हकरछांड़ि नंदगहि हैकरि धावत । कबहुं धरणिपैबैठिकै मनमें कछु गावत । सूरश्याम मुख देखि महरिमन हरष बढ़ावत ८१ ॥ राग धनाश्री ॥ कान्हचलत पग द्वैद्वै धरनी । जोमनमें अभिलाष करतिही सोदेखति नंदघरनी । रुनुकुनुकु नूपुरधुनिबाजत यहअतिहै मनहरनी । बैठिजात पुनिउठत तुरत ही सोछबि जायन बरनी । ब्रजयुवतीसबदेखि थकितभइ सुंदरताकी सरनी । चिरजीवो यशुदाको नन्दन सूरदासकीतरनी ८२ ॥ रागगौरी ॥ भीतरपें बाहिरलों आवत । घरआंगन अतिचलत सुगमभय देहरिमें अटकावत । गिरिगिरि परतजात नहिं उलंघी अतिश्रमहोत नकावत । अहुठ परगबसुधा सबकीन्ही धामअवधि बिरमावत । मनहींमन बलबीर कहतहैं ऐसेरंग बनावत । सूरदासप्रभु आपनिमहिमा भगतन के मनभावत ८३ ॥ राग धनाश्री ॥ चलतदेखि यशुमति सुखपावै । ठुमुक ठुमुकधरि धरणीरेंगत जननी देखि दिखावै । देहरिलौं चलिजातबहुरि

फिरि फिरि इतहीको आवै। गिरि गिरि परत बनत नहिं साकल सुर मुनि सोचकरावै। कोटिब्रह्मांडकरत छिनभीतर हरत बिलंब नलावै। ताकोलिये नंदकीनारी नानारूपरवेलावै। तब यशुमति करटेकिश्याम को क्रमक्रमकरि उतरावै। सूरदासप्रभु देखिदेख सुरमुनिमनबुधिहि भँवावै ८४॥ रागभैरो॥ सोबल कहाभयो भगवान। जेहिबल मीनरूप जलथाहेउ लियेनिगम हतिअसुरपरान। जेहिबल कमठपीठपर गिरि धर सजलसिंधु मथिकियो बिधान। जेहि बलरूप बराहदशनपर धरी धराकरि पुष्पसमान। जेहि बल हिरणाकशिपु उरफारे भयेभक्त को कृपानिधान। जेहिबल बलिबंधनकरि पठये बसुधात्रैपद करीप्रमान। जेहिबल रावणकेशिरतोरे कियोविभीषण नृपतिसमान। जेहिबल जामवन्त मदमर्यो जेहिबल भूप बिपति सुनिकान। सूरश्याम अबधाम अवधिपर चढ़िनसकत प्रभुखरे अजान ८५॥ रागआसावरी॥ देखो अद्भुत अबिगतिकी गतिकैसोरूपधर्यो हरिहो। जलथल पंचचतुर अयउरमें सोअबकौन परेहैहो। जाकेसाल भयेब्रह्मादिक सकलबिश्व बसुसाधेहो। जिनकोखोज बिरंचि बिकलह्वैगहींअंत कहु साध्योहो। तिनको नार- छिनो ब्रजयुवती बांटत गामों बांध्यो हो। जिनश्रवणनि जनकी बि- पदासुनि गरुड़ासन तजिधायेहो। तिन श्रवणनिढिंग सुनत यशोदा हलरावैं गुणगायो हो। बिश्वभरण पोषण सब समरथ माखन काज अरेहैहो। रूपबिराट रोमप्रतिकोटिसों पलनामांझ परेहैहो। जिन भु- जनगहि रावण मारेउ हिरणयकश्यप उदर बिदारेहो। सोभुज पकरि पकरि ब्रजयुवती ठाढ़ेहाहु पियारेहो। जामुखको ब्रह्मादिक लोचन धांभुसमाधि लगायेहो। सोमुख चुम्बति महरियशोदा दूधलार लपटाये हो। सुरनरमुनिजाको ध्याननपावत शेषसहसमुख गायेहो। सोई सूर देहधरिआये गोकुलगोप कहायेहो८६ आनंदप्रेम उमंगियशोदा लाल- लरी खेलावै। शिवसनकादि शुकादि ब्रह्मादिक खोजत अंतनपावैं। गोदलिये हँसिकै हलरावति तुतरेबाल बोलावैं। दैकरतारि बजावति गावति राग अनूपमगावैं। कहुंकरपल्लव आनिगहावति आंगनमांझ रिगावैं। रातिपंगुभई बिसरीसोच शारदनिनाथन नेकु चलावैं। कबहूं हिलकैं किलकैं जननी मनका सुखसिंधु बढ़ावैं। मोहि रहीं ब्रजकी

युवलों यश सूरदास बलि॥थे ८७॥ रागसूहो॥ आंगन प्रयाग नचावई यशुमति नंदरानी। तारीदैदैगावई मधुरी सुरबानी। पायँन नूपुरबाजई कटिकिंकिराणी कूजे। नन्हींनन्हींसफडिआनि अरुणतालफलविम्बन पूजै। यशुमतिसमसुनै अवगात नव आपहुगावैं। तारीबाजतदेखदैपुनि खा-धुवजावैं। केहरिनखउरपरसुबैसुठि शोभाकारी। मनहुँ श्याम घनमध्यमें नवशशि उजिआरी। गभुवारे शिरकेशहैं वरघूंघरवारे। लटकनलटकै भालपर विधुमधि गनतारे। कलाकंठ चिबुकतरे मुखदशन विराजे। खंजनबिचशुक आनिकै मनो परेउ दुराजे। यशुमति सुतहिं नचावई छविदेखत जयते। सूरदास प्रभुश्यामकेसुखटरत न हियतेट८॥ रागललित॥ छोटीछोटीगोडियां अंगुरियाछोटि छबीली नखज्योति मोति मानो कंज दलनिपर। ललित आंगन खेलैं ठुमुक ठुमुकडोलैं झुंझुनु झुंझुनु बाजैपैंजनी मृदुमुखर। किंकिणी कलित कटि हाटकरतन जटितमृदु करकमलनि पहुँचिया रुचिरबर। पियरी पिछौरी झीनी और न उपमा कीनी बालक दामिनी मानों ओढे बारौ बारिधर। उरबघनख कंठ कठुल कुंडलधारबेनीलटकनमसिविंदामुनिमनहर। अंजन रंजित नैनचितवनि चितचोरै मुखशोभा परवारौं अमित असमसर। चुटकी बजावति नचावति नन्दघरनि बालकेलि गावति मल्हावति प्रेमसों भर। किलकिकिलकि हंसै द्वैद्वैदँतुलीलसैं सूरदास मनबसैतोतरे बचन बर ८९॥ रागबिलावल॥ माधवतनकसो बदन तनकसे चरणभुज तनक करनिपरतनकमाखन। तनकगातकोरहततनकिसे तनकरीझमें लागे तनकमोदन। तनककपोल तनकसीदतियां तनकहँसनिपरहरतहोमन। तनकहितनक जु सूरनिकटआवै तनकमयाकैदीजे तनकधारन ९० मा-धवतनक चरणअरु तनकभुज तनकवदनबोलैं तनकसेबोल। तनकक-पोल तनकसी दतियां तनकहंसनिपर लेतहोमोल। तनक करनिपर तनकमाखन लियेदेखत तनकजाके सकलभुवन। तनकसुने सुयशपा-वत परमगति तनक कहततासों नन्दसुवन। तनकरीझपर देतसकल-तनु तनकचितौनी चित्त वितके हरन। तनकहितनक तनककरिआवैं सूरतनक कोहदीजै तनकधारन ९१॥ ब्राह्मणकोप्रस्ताव॥ रागधनश्री॥ महराने ते पांडे आयो। ब्रज घरघर बूझत नँदरावर पत्रभयो सुनके उठि

आयो । पहुंच्योआय नन्दके द्वारे यशुमति देखि अनंद बढ़ायो । पांव धोय भीतर बैठारेउ भोजन को निजु भवनलियो । जो भावै सो भोजन कीजै विप्र मनहिं अति हर्ष बढ़ायो । बड़ी बैस विधि भयो दाहिनो धनि यशुदा ऐसो सुत जायो । धेनु दुहाय दूध लैआई पांडे रुचिकरि खीर चढ़ायो । घृत मिष्टान खीर मिश्रितकर परसि कृष्णहित ध्यान लगायो । नयनउघारि विप्र जो देखे खातकन्हैयादेखन पायो । देखहु आय यशोदा सुतकृत सिद्धपाक यह आनि जुठायो । महरि विनय करिदोउ करजोरी घृत मधु पय फिरि बहुत मंगायो । सूरश्याम कत करतअचकरी बार बार ब्राह्मणहिंखिझायो ९२ ॥ रागरामकली ॥ पांडे भोगन लावनपावै । करिके पाक जबहिं अरपतु हैं तबहिं तहिं छुइ आवै । इच्छाकरिमैं ब्राह्मणनिवत्यों ताकोश्याम खिझावै । वहअपने ठाकुरहि जैंवावे तू तबहीं छुइआवै । जननी दोष देति कतमोंको विधि विधान करि ध्यावै । नयन मूंदि करजोरि नामलै बारम्बार बुलावै । कहि अन्तर क्यों होयभक्तको क्यों मेरे मनभावै । सूरदास बलि बलि ताकी जो जनम पाय यशगावै ९३ ॥ राग बिलावल ॥ सुफलजन्म हरि आजुभयो । धनिगोकुल धनि नन्द यशोदा जाके हरि अवतारलयो । प्रगट भयो अब पुण्य सुकृतफल दीनबन्धु मोहिँ दरशदयो । बारम्बार नन्दके आंगन लोटत द्विज आनन्दभयो । मैं अपराध कियो बिनजाने को जाने केहि भेयजयो । सूरदास प्रभु जगत हेतबश यशुमति हित अवतार लयो ९४ ॥ रागधनाश्री ॥ अहोनाथ जेइ जेइ तेरे शरण आये तेइ तेइ भये पावन । महापतित कुलतारण एकनाम अघहजार तारण दुख बिसरावन । मोते कोहै अनाथ दरशनते भयोसनाथ देखत नयन जुड़ावन । भक्तहेत देह धरण पुहुमी को भारहरण जनम जनमको मु-क्तावन । अशरण शरणदीन बन्धु यशुमति सुखकारणदेहधरावन । हितके चितके मानत सबके जियकीजानत सूरदासप्रभु मनभावन९५ दयाकरिये कृपाल प्रतिपाल संसार उदधि जंजालते पारउधार । काहू के ब्रह्म काहूकेमहेश काहूके गणेश प्रभुमेरे तौ तुमहिँ अधार । दीन दयाल कृपाकरो मोको यह कहिकहि लोटत बारम्बार । सूरश्याम अन्तरयामी स्वामीहो जगत के कहा कहोंकरो निरवार ९६ ॥ राग

राग ॥ नन्दजूके बारेकान्हा छांड़िदे मथनियां। बारम्बार कहैमात यशुमति रमनियां। नेकुरहो माखनलयौ मेरे प्राण धनियां। आरि जनि करो बलिगई हों न्याकनियां। सुरनर जाको ध्यान धरै मुनि ज्ञानियां। ताको नन्दरानी मुखचूंबि लीन्हों कनियां। सहमाननगुण आगलल बनियां। सूरश्याम देखिसब भूलींगोप धनियां ९७ यशुमति दधिमथन करतिबैठी बरधाम अजिरठाढ़े हरि हँसत नान्हींसी दन्तिआनिछबिछाजै। चितवत चितलैतचोराय शोभा बरणिनजाय मुनिनके मनहरण को मनमोहनी दलसाजै। जननी कहतिनाचो तुम देहों नवनीत मोहन रुनुक झुनुक चलत पायँन चारु नूपुर बाजै। गावत गुण सूरदास यशबाढ़्यो भुव अकाश नाचत त्रैलोकनाथ माखन के काजै ९८ प्रातसमय दधि मथति यशोदा अतिसुख कमलनयन गुण गावति। नीलबसन तनुसजल जलदमनो दामिनि दिविभुज दण्डचलावति। चन्द्रवदन लटलटकि छबीली मनहुँ अमृत रसराहु चोरावति। गारस मथति नादयक उपजत किंकिणि धुनि सुनि श्रवत रमावति। सूरश्याम अँचरा धरिठाढ़े कामकसोटी कसि दिखरावति ९९॥ राग कान्हरो ॥ गोद खिलावत काहूसुनि बड़िभागिनिहो नन्दरानी। आनन्द की निधिमुख लालको ताहित निरखत है निशिवासर सोतो छवि क्योंहुन जात बखानी। गुणअपार बहु बिस्तार कहि न परत निगम बानी। सूरदास प्रभुकोलिये यशुमतिगोद खेलावति चितै चितै मुसुकानी १००॥ रागगौरी ॥ मेरो भाई श्याम मनोहर जीवनि। निरखि नयन भूलते बदनछबि मधुर हँसनि पयपीवनि। कुन्तल कुटिल मकर कुण्डल भुव नयन बिलोकनिबंक। सिन्धु सुधाते निकसिनयो शशि राजत मनोमृगंक। शोभित सुमन मयूर चन्द्रिका नीलनलिन तनु श्याम। मानहुँ छत्रसमेत इन्द्रधनु सुभगमेघ अभिराम। परम कुशल कोबिद लीलानट मुसुकनिमन हरिलेत। कृपाकटाक्ष कमलकर फेरत सूर जननि सुखदेत १०१ शोभा मेरे श्यामहिपै सोहै। बलिबलि जाउँ छबीले मुखकी यातर को कोहै। या छबिकी उपमा देवेको कबिन कहांकोहै। निरखत अङ्ग अङ्ग प्रतिबानिक कोटिवदन कोहै। शशि गण गारसचो बिधिआनन बंकनयन जोहै। सूरदास बलिजाय निर

खि सब सुरनर मुनि मोहै १०२ ॥ राग बिलावल ॥ बालगोपाल खेलो मेरे तात । बलिबलिजाउँ मुखारविन्द की अमृत बचन बोलहु तुतरात। छोटोमोट मधांदधि मोहन उबटि बुंद तनपरत अघात । मानहु राज मुक्ता मरकत परशोभित सुभग सांवरे गात । जननी प्रीति मांगत जा जीवन देमाखनरोटी उठिप्रात । लोटत सूरश्याम पुहुमी पर चारि प-दारथ जिनके हात १०३ दोउ भैया मैया सों मांगत देरी माखन अस रोटी । सुनिमाता यहभांति दुहुनकी भूँठहिधामके कामअँगोटी । बल राहेउ बलनि नासिका मोतीकान्ह गहीकर दुहसों चोटी । मानहुँ हंस मोरभख लीनोकवि उपमा बरणे कहाछोटी । यहछवि देख नन्दमन आनन्द अतिसुख हँसत जातिहैं लोटी । सूरदास यशुमति प्रमुदित भइ भाग बड़े करमनि की मोटी १०४ ॥ रागनटनारायण ॥ बरणो बाल भेष मुरारि । थकित जित तित अमरमुनि गण नन्दलाल निहारि । केश शिरबिनबपनके चहुंदिशा छिटकेभारि। शीशपरधर जटामानोंरूपरु-चित्रिपुरारि। तिलकललित ललाटकेशरिबिंदुशोभाकारि । रोयअरु-णातलीय लोचन रहेउमनु त्रिपुरारि । कंठकंठुला नीलमणि अम्भोज माल संवारि। गरलग्रीव कपोलउर यहि भावभये मदनारि । कुटिल हरि नखहियेहार के देखि हरषींनारि । ईशजनु रजनीशराखेशो भा-लहूते उतारि । मदन रजतनु श्याममंडित शोभयहि अनुहारि । मनहुं अंग विभूतिभ्राजित सिंधु सोमधि आरि । त्रिदशपति यशुमति सता-वति असनको करैआरि। सूरदास बिरंचि जाकोजपत यशमुख चारि १०५ सखीरी नन्द नन्दनदेख । धूरिधूसर जटाजरुली हरिके तन हर भेय । नीलकठुला पोहिमणिगणफणिशकज्यों लपटाय । खल खलाकर हंसत हरिहर नचत डमरुबजाय। जलजमाल गोपालपहिरे कहा कहीं बनाय। मुंडमाला मनोहरगरलशोभापाय । स्वातिसुतमालाबिराजति श्यामतनु यहिभाय। गौरिउर हरमनो गंगालईकंठलगाय। केहरिनख देखिहरषित रहीमनहिं बिचारि। बाल शशिमनो भालतेलै उरधरेउ त्रिपुरारि । अङ्गप्रति अवलोकि युवतीकरति हैं यहध्यान। सूरश्या-म बिलोकि भभकयो नगस नहिंसकान १०६ ॥ रागधनाश्री ॥ दधि सुत जामें नन्ददुवार। निरखिनयन अरुभ्यो मनमोहन रटतदेह बारम्बार।

दीरघमोल कहैं ब्यौपारी रहेठगे सबकौतुकहार । करउपमा लैयांगिद्धबह हरिकंठन मुक्तापरमउदार । मातुलनाथ धाये यशुमतिके आंगन भीतर भवनसंस्कार । शालग्रामनमय नलनीलन फूलनकमल न पावों पार । श्यामतनहीं सरससुरलमनुनि यशमातिक नाहिंपरतसंभार । सूरदास नपुत्रि यहलीला ब्रजबनिता पुहिगोहिबैहार १०७ कान्हरि कोटै पावहु लाके तेरी बेनीहा बढ़ै । मैसे देखि और ब्रजबालक त्योंबल बैधत हैं । यह सुनिकै हरि पीवनलागे ज्यों ज्यों लयो लढ़ै । अचवतपै नातो आव लाग्यो रोवत जीभ लढ़ै । पुनि पीवतही कचद कछौरतु झूठै जननि रढ़ै । सूर निरखि मुख हँसति यशोदा सो सुख उर न कढ़ै १०८ ॥

राग रामकली ॥ मैयाकब बढ़िहै मेरी चोटी । किती बेर मोहिं दूध पियत भई यह अजहूं है छोटी । तूजो कहति बलकीबेनी ज्यों ह्वै है लांबी मोटी । काढ़त गुहत न्हवावत जैहै नागिनिसी भुइं लोटी । काचो दूध पिवावत पोहन देत न माखनरोटी ॥ सूरश्याम चिरजीवौ दोउ हलधरकीजोटी १०९ ॥

रागआसावरी ॥ यशुमति जबहीं कह्यो अन्हवावन रोयगयेहरि लोटतरी । तेलउबटनो लैआगेधरि लालहि चोटति पोटति री । मैंबलिजाउं न्हांहिकनमोहन कतरोवत बलिजाऊंरी । पाछेधरि [illegible] ल्योचुरायकै उबटन तेलसमाजैरी । महरिबहुत बिनती करि [illegible] मानत नहीं कन्हाईरी । सूरश्याम अतिही बिरुझाने सुर मुनि [illegible] पाईरी ११० ॥

रागमारू ॥ कान्ह बलिजाउँ आरि न कीजैहो । जोई जोई भावै सोई लीजैहो । कहतियशोदा रानीहो । कोखिझवै सारंगपानीहो । जोमेरोलाल खिझावैहो । सोअपनोकियो भलैपावैहो । तेहि देहौं देश निकारीहो । ताको ब्रजनाहिन धारीहो । अतिरिसतें तनुछीजै हो । मुठिकोमल अंग पसीजैहो । बरजत बरजत बिरुझानेहो । करिक्रोध मनहिं अकुलानेहो । धरत धरत भुइंलोटैहो । माता को चीर निबड़ैहो । अंग आभूषण सब तोरेहो । नवनिधि भाजनफोरेहो । देखतजनजलतर सेहो । यशुदा के पायन परसेहो । महरि बांहगहि आनेहो । तबतेल उबटनो सानेहो । तबगारतपरत उठिभागेहो । कहुं नेकनिकट नहिं [illegible] हो । तबनंदघरनि चुचकारैहो । आवहुबलिजाउंतुम्हारेहो । नहिंआवहु तोभलेलालहो । पुनि जानौगे मदनगोपालहो । तुममेरी रिसनहिं जानत

रो। मोहिं तुम नहिं पहिचानत हो। मैं आजु तुम्हें गोहरावौं हो।
आता करिकरि अनुरागो हो। बाबा नंद उतहिते आये हो। कौनेहरि
आनिहि रिझाये हो। मुख चूंबि हरषि लैआये हो। लै यशुमति
पहुंचाये हो। मोहन कत खिझत अयानीहो। हियलाय लिये नंद-
रानीहो। क्योंहूं यतन यतन करि पायेहो। तन उबटन तेललगायेहो
तातो जल आनि न्हवाई हो। अन्हवाइ लियो अंगपोंछी हो। अतिसर-
स बसन तनु पोंछो हो। लै कर मुख कमल अँगोछोहो। खंजन दोउ
दृगभरि दीन्हों हो। भुव चारु चखौटा कीन्हों हो। अंगआभूषण
पहिराये हो। लावहि कनकमन ठहराये हो। ऐसी रिस न करौ मेरे
कान्हा हो। अब ब्याहु कुंवर कछु नान्हा हो। तुतराय कहेउ का हैरी
हो। जोसोहिं भावै सोदैरी हो। जोइ जोइ भावैमेरे प्यारे हो। सोइ
सोइ देहौं मैं ललारे हो। करौहै सिरावति सीराहो। कछुहठ न करौ
यदुवीरा हो। सद्यदधि माखनल्यौआनी हो। तापरमधुमिश्रीसानीहो।
खोवा मैं मधुरमिठाई हो। सोदेखतअति रुचिपाई हो। कछु बलदाऊ
कोदीजै हो। अरुदूध अंबौआ पीजै हो। सबहेरि धरीहै साढ़ो हो। लै
उपर उपरते काढ़ी हो। अतिघ्योंभरि सरससनाई हो। तेहिसोंठि मि-
रचरांच नाई हो। दूधवरा दहिरौरी हो। जोखातअमृतयककौरीहो।
सोंठ सुरस जलेबी बोरी हो। जेहि जेंवत नहिं रुचि थोरी हो। अरु खु-
रमा नरमसँवारे हो। जे सुख मेलत सुकुमारे हो। मोती लड्डू सोंठ सोठे
हो। वह खात न कबहूं ओठे हो। मितलड्डू लवंगन नाये हो। यते
करि बहु यतन बनाये हो। गुंझा बहु पूरण पूरे हो। भरिभरि कपूर
रसचूरे हो। अरुतौसिय दाजमपूरी हो। जो चाखत सुखदुख दूरी हो।
अरु हेसमिसुरस सँवारे हो। अतिस्वाद परमसुखकारे हो। चावरवरने
नहिंजाई हो। जेहिदेखत अतिसुख पाई हो। मालपुवा सनुमाने हो।
बेतमतुरत करिआनेहो। सुन्दर अतिसरस अंदरसेहो। ते घृत दधिमधु
मिलिसरसे हो। घेवरअति घिरत चभोरे हो। लैखांडडारतत बोरेहो।
माखुनि अतिशय रसजूरी हो। मधु परसि घृत बोरी हो। जब पूरीसुनी
हरि हरख्यो हो। तब भोजन परसद करख्यो हो। सुनि तुरत यशोदा
ल्याई हो। अतिरुचि समेतहरि खाईहो। बलदाउहि टेरि बुलाई हो।

यहसुनि हलधर सहँआयेहो। बहुविधि अर्ध मंगलगायेहो। ... दरायेहो॥ मनमोहन हल ... ।
शीतलजल लिये मँगाईहो। भोरहोरी यशुमति ल्याईहो। ... नंद नयनजुड़ायेहो। दोउकर ... पुनकानेहो। हँसि जननी ... रायो हो। तनकतनक ... धरेहो। ...
अनिलावधर्ह ... । ... धारीहो। हरिनन्द ... ॥ १२१
रागधनाश्री ॥ पाहुनो करिदै तनक महेउ। ... यशुमति विनय करेउ। ... व्याकुल मथति मथानी रीती दधि भुव ढरीका रहेउ। माखन ... जानि नन्दरानी ... कहेउ। सूरश्याम मुख ... भइ हुहुनिमें कोचमहेउ १२२ ॥ रागरामकली ॥ हरिअपने आगे कछुगावत। तनक तनक चरणन सों नाचत मनहीमनहिं रिझावत। बाँह उठाय काजरी धौरी गैयनि टेरि बुलावत। ... कबहुंक घरहीआवत। माखन तनकलेत कर अपने ... मुखमें नावत। कबहुंकाचते प्रतिबिम्ब खम्भकी लवनी ले खिवावत। देखि देखि यशुमति यह लीला हरष अनन्द बढ़ावत। सूरश्याम के बालचरित नितही नित देखत भावत ११३॥ रागविलावल ॥ ... मधुरसुर गावहु। ... बरकन्हैया नन्दहि नाच देखावहु। तारीदेहु आपने करकी परमप्रीति उपजावहु। ... मोभुज कंठलगावहु। जिनिसंका जियकरहु ... काहेको भरमावहु। बांहउठायकालिहकी नाई धौरीधेनु बुलावहु। नाचहुनेक जाउं बलि तेरी मेरी साध पुरावहु। रतनजटित किंकिणी पगनूपुर अपने रंग बजावहु। कनक खंभ प्रतिबिंबित शिशुयक लोनीताहि खवावहु। सूरश्याम मेरेउरते कहुंटारे नेक न जावहु ११४ अथ कनछेदन को प्रस्ताव ॥
रागधनाश्री ॥ कान्ह को कनछेदन हाथसुहारी भेलीगुरकी। बिधिबिहँसत हरिहँसत हेरिहेरि यशुमतिके धकधकी उरकी। रोचनभरिले देतसींकसों श्रवणनिकट अतिही चातुरकी। कंचनके द्वैदुरसंगाय लियेकहा कहेछेदन आतुरकी। लोचन भरिभरि दोउ माताके कनछेदन

नैननि प्रियमुरकी। रोवतदेखि जननि अकुलानी लियोतुरत नउवांको भुरकी। हंसतनन्द युवतीसबचितहिं सोंरकमांक चलीकांख भीतर दुरकी। सूरदास नन्दकरत बधाई अति आनन्द बालाब्रज परकी ११५ जबहिं राधे ऋदक्षेन हरिकी। सुरलिताखबकहति परस्परब्रजवासी दासी ममहरिकी। गोपी अमत भई दखावति हलरावति सुत लेति महरिको। औसुख मुनि जनध्यानन पावतसोसुख करतनंद शुभघरिको। भ०सिखासुता मामाकरत ज्यो ढाकरि दुरतहित बिलसनहित निको। सूरनंद ब्रजजन पोहगावत उर्मगिमनयो सुल सिंधु लहरिको ११६ ॥ अथ नन्दको प्रस्ताव ॥ रागकान्हरो ॥ ठाढी अजिर यशोदा अपने हरिहि लिये चंदा दिखरावत। रोवतकत बलिजाउं तुम्हारी देखो धौं भरिनयन जुड़ावत। चितै रहे तब आपुन शशितन अपने करलै लैजुबतावत। मीठो लगत किधौं यहखाटो देखत अति सुन्दरमन भावत। मनहींमन बुधि करत बिचारा सों कहिताहि मंगावत। लागी भूखचन्द मैंखैहों देहुदेहु रिस करि बिरुझावत। यशुमति कहतिकहा मैं कीन्हों रोवतमोहन अतिदुख पावत। सूरश्याम को यशुमति बोधति गगनन चिरइया उदर दिखावत ११७ कौहिंजोष करिकान्हहिंसमुझैहों। मैं भलीचंदबा दिखरायो ताहिकहतमोहिं देखैहों। अनहोनीकहुं भईकन्हैया देखीसुनी न बात। यह तो आहिखिलौना सबको खान कहत तेहितात। यहैदेत नवनीत मोको छिनछिन सांझसवारे। बारबार तुमसाखन मांगतदेउं कहां ते प्यारे। देखत रहौ खिलौना चंदा आरि न करो कन्हाई। सूर श्याम लिये हँसति यशोदा नंदहि कहति बुझाई ११८॥ रागधनाश्री ॥ आछो मेरो लाल हो ऐसी आरि न कीजे। मधु मेवा पकवान मिठाई जोइ भावै सोइ लीजे। सदमाखन साज्यो दहेउ घृत अरु मीठो पय पीजै। पालागों हठ जिनि करौ अति रीसन तनु छीजै। आन बतावत आन ही इनबातनि कैसे जीजै। सूरश्याम हठि चंदा मांगे चंदकहां ते दीजै ११९ ॥ रागकान्हरो ॥ बारबार यशुमति सुत बोधति आउ चन्द तोहिं लाल बुलावै। मधु मेवा पकवान मिठाई आपु न खैहै तोहिं खवावै। हाथहिपर तोहिं लीन्हे खेलैनेक नहींधरणी बैठावै। जलबासन करि कीजा उगावति यहिमें तनधरिआवै। जलपुट आनि धरणिपर राख्यो

बाँह आन दोषहर्यंद दिखावैं । सूरदास प्रभुहँसि मुसकाने बारबारदोऊ करनावैं १२०॥ रागगमकली ॥ ल्योंगो री मा चंदाल्योंगो । कहाकरोंजल पुट भीतरकोबाहिर चौंकिगहोंगो । यह तौ झलमलातझकझोरतकै सो कैसेकु लैहोंगो । वहतौ निपट निकटही देखत बरजे हौंन रहोंगो तुम्हरो प्रेम प्रकट मैं जान्यों बौराये न चहोंगो । सूरश्याम कहैं कर गहिल्याऊं शशितनदाप दहोंगो १२१ ॥ रागधनाश्री ॥ लालयहचंदालैहौ कमलनयन बलिजाय यशोदा नीचौनैक चितैहौ । जाकारण तुमसुनि सुन्दरवर कीन्हीं येति अनैहौ । सोईसुधाकर देखि दमोदर या भाजनमें हैं हौ । नभतेंनिकटआनि राख्योहै जलपुट यतनजुगै हौ । लैअपनेकर काढ़ि चन्दको जो भावैसोकैहौ । गगन मंडलते गहि आन्यौ हौ पक्षी एक पठैहौ । सूरदासप्रभु इतिकी बात को कत मेरो लाल हठैहौ १२२ रागबिलावल ॥ तुम्रमुखदेखि डरत शशिभारी । करकरिकै हरि हेर्योचाहै भाजत गगन पताल गयो अपहारी । वह शशितौ कैसेहु नहिंआवत यह ऐसी कछु बुद्धि बिचारी । बदन लखे विधु विधु शोकृत मनकैन कं अकुलाइ तउजियारी । सुनहु श्याम तुहिं शशि डरपतहै कहतयशो- मतिमुम्हारी । सूरश्याम बिरुझाने सोये लिये लगाय छतिया महता- री १२३ ॥ रागकेदारो ॥ यशुमतिलैपलिका पौढ़ावति । मेरो आजु अ- तिहि बिरुझानो यह कहि मधुरे सुरसों गावति । पौढ़ि गई आपुन हरषेकरि अंग मोरि तबहरि जमुहाने । करसों ठोंकि सुतहि दुलरावति चटपटाय बैठे अतुराने । पौढ़हु लालकथायक कहिहों अतिमीठीश्रव- णनिको प्यारी । यह सुनि सूरश्याम मनहर्षे पौढ़िगये हँसिदेतहुंका- री १२४सुनुसुत एककथाकहौं प्यारी । कमलनयनमन आनंद उपज्यो रसिक शिरोमणि देत हुंकारी । नगर एकरमणीकअयोध्या बड़ेमहल जहँअगमअटारी । बहुत गलीपुर बीच बिराजति भांति भांति सबहाट बजारी । तहांनृपति दशरथ रघुबंशी जाकेनारि तीनिसुखकारी । कौ- शल्या केकईसुमित्रा तिनकेजनमे भयेसुत चारी । चारि पुत्र राजाके प्रकटे तिनमें एकराम व्रतधारी । जनक धनुष व्रतदेखि जानकी त्रिभु- वन केसबनृपति हंकारी । राजपुत्र दोउऋषि लैआये सुनतजनक प्रण तहंपगुधारी । धनुष तोरि मुखमोरि नृपति को जनकसुता तिन लिये

बरनारी। परश्रंगुठा जयपीरघुपतिके लवकेकर्यो मुखमेलि निवारी।
बचन माँगि नृपसों यहलीन्हों रघुपतिके अभिषेक सम्हारी। तात ब-
चन सुनि तज्यो राजजिनि भ्राता घरनि सहित बनचारी। उनकेजात
पितातनुत्यागो अति व्याकुल करिजीव बिसारी। चित्रकोट गये भरत
मिलन जब पग पाँवरि दै करीकृपारी। युवती हेतकपट मृगमार्योरा-
जिव लोचन गर्वप्रहारी। रावणहरण कियोसीताको सुनि करुणा-
मयनींद बिसारी। सूरश्याम तब रटत चापको लक्ष्मणदेहु जननि भू-
मभारी १२५ यशुमति मनमन यहैबिचारति। झझकि उठ्यो सोवत
हरि अबहीं कछु पढ़ि पढ़ि तनुदोष निवारति। खेलतमें कोउडीठि
लगाई लैलै राईलोन उतारति। सांझहिते अतिही बिरुझानो चन्दहि
देखि करी अति आरति। बार बार कुलदेव मनावति दोउकरजोरि
शिरहि लै धारति। सूरदास यशुमति नँदरानी निरखि बदन त्रैताप
निवारति १२६ ॥ रागरामकली ॥ प्रातसमय उठिसोवतसुतको बदन उघा-
रेउनन्द। रहिनसकत देखनको आतुर नयन निशाके द्वंद। स्वच्छसे-
में ते मुखनिकसतगयो तिमिर मिटिमंद। मनपैनिधिसुर मथतफेनफा-
र्यो दिखाईचन्द। धारो चतुरचकोर सूरमुनि सब मखिसखासुछन्द
रही न सुधि शरीर धीरमति पिवत किरणि मकरंद। आलस बद
अलकशुचिज्यों अलिपानकरतमकरंद १२७॥ राग भैरव॥ उठहुनन्दकुमा
भयो भिनुसार जगावति नँदरानी। झारीके जल बदन पखारो कहि
कहि शारङ्गपानी। माखनरोटी अरु मधुमेवा जो भावै सो ल्योआनी
सूरश्याम मुख निरखि यशोदा मनहीं मनहिँ सिहानी १२८॥ रागबिला
वल॥ भोरभयेनिरखत हरिकोमुख प्रमुदित यशुमति हरषितनन्द। दि
नकर किरणि कमलजनु बिकसति निरखति अति उपजत आनन्द। बद
उघारि जगावत जननी जागहु मेरे आनँदकन्द। मानहुँ मथि सुर सिं
फेन फारि दई दिखाई नूतनचन्द। जाको ईश शेष ब्रह्मादिक गाव
नेति नेति श्रुतिछन्द। सोई गोपाल सुगोकुल भीतर सूरसो प्रगटपरमा
नन्द १२९ नन्दको लालउठै जबसोई। निरखि मुखारविन्द की शोभ
कहि काकेमन धीरजहोई। मुनिमन हरत युवतिजन कौतुक रति प
मान जातसब खोई। ईषदहास दशनद्युति दामिनि मानिक बोपि

अनु पोई । नागर नन्द सुवन लखि जननी मारग जात लेत मन गोई । सूरश्याम मन हरयो मनोहर गोकुल नहिंगोहं मनलोई १३० ॥

अथ सूरसागर बाललीला रागकल्पद्रुम ॥

अथ माटी भक्षण प्रारम्भ ॥

श्रीकृष्णायनमः

राग बिलावल ॥ खेलत श्याम पौरिके बाहर ब्रज लरिका सँग सोहत जोरी। तैसेइ आपु तैसेइ सब बालक अति अज्ञान सबकी मतिभोरी। गावत हांकदेत किलकारत युतिदेखत नँदरानी। अति पुलकित गद्गद मृदुबानी मन मन हरषि सिहानी। माटीलै हरिमेलि दई मुख तबहि यशोदा जानी। सांटीलिये दौरि भुजपकरेउ श्याम लँगरेउठानी। लरिकनको तुम सबदिन झुठवत मोसों कहा कहोगो। मैं माटी नहिं खाई मैया मुख देखे निबहोंगो। बदन उघारि दिखायो त्रिभुवन बन घर नदी सुमेर। नभशशिरवि मुखभीतरहैं सबसागर धरणी फेर। यह देखत जननी मन ब्याकुल बालक मुखका आहि। नयन उघारि बदन हरिमूंद्यो मातामन अवगाहि। झूंठेलोग लगावत मोंको माटीम्वहिं न सुहावै। सूरदास तब कहति यशोदा ब्रजलोगन यह भावै १ ॥ राग धनाश्री ॥ मोहन क्यों नहिँ उगिलै माटी। बार बार अनुरोच उपजावति महरि हाथ लियेसांटी। महतारीसों मानत नाहीं कपट चतुरईठाटी। बदन उघारि देखाय आपनो नाटककी परिपाटी। बड़ीबार भइलोचन मूंदे भरमित जननि मनफाटी। सूर निरखि ब्रजनारि थकितभइ कहत न मोठी खाटी २ ॥ राग रामकली ॥ मो देखत यशुमति तेरेढोटा अबहीं माटीखाई। यह सुनिकै रिसकै उठिधाई बांहपकरि लैआई। यककर सों भुज गहिकै गाढ़े यककर लीन्हीसांटी। मारतिहौं त्वहिँ अबहिँ कन्हैया बेगि न उगिलौ माटी। ब्रजलरिका सबतेरे आगे झूंठी कहत बनाई। मेरेकहे नहीं तू मानत दिखरावहु मुखबाई। अखिल ब्रह्मांड

खडकी महिमा दिखरायो मुखमाहीं। सिंधु सुमेर नदी वनपर्वत च-
कृतभई मनमाहीं। करतेसांटि गिरतनहिंजान्यो भुजा छांडि अकुलानी।
सूर कहै यशुमति मुँह मूंदहु बलिगई सारँगपानी ३ ॥ राग धनाश्री ॥ नं-
दहि कहो यशोदारानी। माटी के मिस मुख दिखरायो तिहूँ लोक
रजधानी। स्वर्ग पताल धरणी वनपर्वत वदनमांझ है आनी। नदीसु-
मेरु देखि चकृतभइ याकी अकथ कहानी। चितै रहे तब नन्द युवति
मुख मन मन करत बिनानी। सूरदास तब कहति यशोदा गर्गकही यह
बानी ४ ॥ रागबिलावल ॥ कहत नन्द यशुमति सुनि बौरी। ना जानिये
कहांते देख्यो मेरे कान्हहि लावतिढोरी। पांचबरषको मेरोकन्हैया
अचरित तेरीबात। बे काजहि सांटी लै धावति ता पाछे बिललात।
कुशल रहैं बलराम श्याम दोउ खेलत खात अन्हात। सूरश्याम को
कहा लगावति बालक कोमल गात ५ कान्ह नन्द सुधिकरी श्याम
को ल्यावहु बोलि कान्ह बलराम। खेलत बडीबार कहुँ लाई ब्रज
भीतर कान्हके धाम। मेरे सङ्ग आय दोउ बैठे उन बिन भोजन कौने
काम। यशुमति सुनत चली अतिआतुर ब्रज घर घर टेरत लै नाम।
आजु अबेर भई कहुँ खेलत बोलि लेहु हरिको कोउबाम। ढूंढ़िफिरी
नहिं पावति हरिको अति अकुलानी चितवत धाम। बारबार पछि-
तात यशोदा बासर बीति गये युगयाम। सूरश्यामको कहूँन पावति
देखे बहुबालक यकठाम ६ ॥ रागनटनारायण॥ कोउमाई बोलि लेहु गो-
पालहि। मैं अपने को पन्थ निहारति खेलत बेर भई नँदलालहि।
टेरत बडीबेर भई मोको नहिं पावत घनश्याम तमालहि। सिधजेंवन
सिरात नँदबैठे ल्यावहु कान्हबोलि तत्कालहि। भोजन करहिँ नन्द
संग मिलिकै भूखलगी ह्वैहै मेरेबालहि। सूरश्याम मगजोवति यशु-
मति आयगये सुनि बचन रसालहि ७॥ रागसारङ्ग ॥ नन्द बुलावत हैं
गोपाल। आवहुबेगि बलैयालेहौं मोहनश्याम तमाल। परसेथारधरेउ
मगजोवत बोलत बचनरसाल। भातसिरात तातदुखपावत क्योंनचलो
तत्काल। हौंवारी इन प्रतिपायँन पर दौरि दिखावहु चाल। छांड़ि
देहु तुमलाल लटपटी यहगति मन्दमराल। सो राजा जोअग्रम न प-
हुँचै सूरसुभवनउताल। जोजैहै बलराम अगमने तौहँसिहैं सबग्वाल८

[illegible] ॥ [illegible] । [illegible] कहूँ खेलत [illegible] । [illegible] दौरि [illegible] आगे [illegible] निकसे [illegible] । [illegible] नहीं [illegible] दौरि [illegible] । श्यामहिं [illegible] पायँ पावार । सूरश्याम [illegible] नन्द के [illegible] ८ ॥ [illegible] ॥ [illegible] । माखन ग्वाल [illegible] । [illegible] मुखभीतर सि- [illegible] । [illegible] कोठर दौरै । [illegible] । सूरश्यामको मधुर [illegible] कीनितात [illegible] १० [illegible] । [illegible] ग्वाल [illegible] । [illegible] बहु भाँतिन [illegible] । [illegible] हर्षि [illegible] । [illegible] सुखनावन छवि [illegible] । आपुन [illegible] नन्दसुखनावत [illegible] नन्दनियाँ । जारत नंदयशोदा [illegible] सोनहिं [illegible] । [illegible] नंद [illegible] लीनों मांगतसूर जुठनियां ११ ॥ [illegible] ॥ खेलत श्याम ग्वालन संग । सुबल हलधर अरु श्रीदामा करत नानारङ्ग । हाथ तारी देत भाजत सबैरोच करिढङ्ग । बरजे हलधर श्याम तुमजिनि चोट लागीहैअङ्ग । तब कहेउ मैं दौरिजानत बहुत बल मोगात । मेरी जोरीहै श्रीदामा हाथमारे जात । बोलि तबहिं उठेश्रीदामा जाहुतारी मारि । आगे हरि पाछे श्रीदामा धरेउ श्याम हँकारि । जानिकै मैं रहेउँ ठाढो छुवत कहा जुमोहिं । सूरश्याम खीझत सखनसों मनहिं कीनो कोहिं १ ॥ [illegible] ॥ सखा कहत हैं श्यामखिसियाने । आपुहि आय लुकिभये ठाढे अब तुमकाह रिसयाने । बीचहि बोलि उठे हलधर तब इनके माय न बाप । हारिजीति कहँ नेक न समुझत ल- रिकन लावत पाप । आपुनहारि सखासों झगरत यह कहि दियो पठाय । सूरश्याम उठिचले रोयके जननी पूंछतधायश ॥ [illegible] ॥ मैया मोहिँ दाऊ बहुत खिझायो । मोसोंकहत मोलकोलीन्हों तूकब यशुदा जायो । कहा करों यहि रिसके मारे खेलनहूं नहिँजात । पुनि पुनि कहत कवन है माता कवन है तेरोतात । गोरेनन्द यशोदा गोरी तुम

कत साँवलगात । सुतकी दैदै [illegible] हँसनभावै मुसकात । तुमतौं कैं। [illegible] । [illegible] को बहुभूत। सूरश्याम मोहिं गोधनकी सौंह मैं मातातू पूत ३ ॥ रागबिलावल ॥ खेलन अब मेरीजाय बलैया । जबहिं मोहिं देखत लरिकनसंग तबहिं खिझात बलभैया । मोसों कहत तात बसुदेवको देवकी तेरी मैया । मोललदै कछुदै बसुदेवहिं करिकरि यतन बढैया । अबबाबा कहिकहत नंदसों यशुमतिसों कहैमैया । ऐसे कहि सब मोहिं खिझावत तब उठिचल्यो खिसैया । पाछेनंद सुनत हैं ठाढे हँसत हँसत उरलैया । सूरनन्द बलरामहिं धिरयो सुनिमन हरष कन्हैया ४ ॥ रागरामकली ॥ खेलनचलो बालगोविन्द । सखा प्रियद्वारे बुलावत घोष बालक वृन्द । तृषित हैं सब दरश कारण चतुर चातृकदास । बरषि छवि नौवारि धरतन हरत लोचन प्यास । बिनय बचन सुनत कृपानिधि चले मनु हरि बाल । ललित लघु लघु चरण कार उर बाहु नयन बिशाल । अजिर पद प्रतिबिम्ब राजत चलत उपमा पुञ्ज । प्रतिचरण मानोहेमबसुधा देत आसन कुञ्ज । सूरप्रभुकी निरखि शोभा रहेसुर अवलोकि । शरद चन्द चकोर मानों रहे थकितबदन बिलोकि ५ ॥ रागधनाश्री ॥ खेलन को हरि दूरिगयोरी । सँगसँगधावत डोलतकहधौं बहुतअबेरभयोरी । पलकओट भावतनहिं मोको कहाकहौं तोहिंबात । नन्दहितात तात कहिबोलत मोहिं कहत हैं मात । इतनी कहत श्यामघन आये ग्वाल सखा सबचीन्हें । दौरिजाय उरलाय सूरप्रभु हरषि यशोदालीन्हें ६ रागबिहागरो ॥ खेलनदूरिजात कतकान्हा । आजु सुन्यों मैं हाऊ आयो तुमनहिं जानतनान्हा । यकलरिका अबहीं भजिआयो रोवत देख्यों ताहि । कानतोरि वह लेत सबनिको लरिका जानतजाहि । चलो न बेगि सवेरेजैयेभाजि आपनेधाम । सूरश्याम यह बात सुनतही बोलि लिये बलराम ७ ॥ राग जैतश्री ॥ दूरि खेलन जनिजाउ ललन मेरे हाऊ आयेहैं । तबहँसि बोले कान्हरिमैया इनको किन्हें पठाये हैं । यमुना केतट धेनुचरावत जहां सघन बनझाऊ । पैठिपताल व्याल गहिनाथ्यो तहां न देखेहाऊ । अबडरपत सुनि सुनियेबातें कहत हँसत बलदाऊ ।

सन्न रसातल गोग्रासनरसिंह लवकी सुवन भुलाऊ । स्वारथेर लौंगा मांधा-
सुर जलमें धरेउ लुकाऊ । मीनरूप धरिके जब मारेउ तबहिं रहे कहँ
हाऊ । मथिसमुद्रसुर असुरनकीलित मंदर नर्मोन्ह लमाऊ । कमठरूप
धरि धर्यो पीठपर सुखपायो सुरराऊ । जब हिरण्याक्ष जग अभि-
लाख्यो सबगौं आनि गहेराऊ । धरि वाराहरूप रिपु मारेउ लै छितिदन्त
अगाऊ । बिकटरूप अवतार धरेउ जबसो प्रह्लाद बचाऊ । नारसिंह
सब असुर बिदारेउ तहाँ न देख्यो हाऊ । बामनरूप धरेउ बलि छल
कर तीनिपद बसुधाऊ । अमजलब्रह्म कमण्डल राख्यो दरशि चरण
परसाऊ । मारेउ मुनि जिनही अपराधहि कामधेनु लै आऊ । इक्काइस
बार करी निक्षत्री तहाँ न देख्यो हाऊ । रामरूप रावण जब मा-
रेउ दशशिर बीसभुजाऊ । लंकराय भभीषण कीनो तहाँ रहे कहँ
हाऊ । भारी कामिनी उदर बिदारेउ तब जननी उरपाऊ । सुरश्रीमर
ब्रह्मलोक देखायो तबहूँ प्रतीति न आऊ । गूपनि भीमपैं मुक्त परस्पर
तहँ वह गाव बताऊ । तुरत चीरदुष्टको कियेअरि ऐसे त्रिभुवनराऊ ।
भक्तहेत अवतार धरेउ सब असुरनिमारि बहाऊ । सूरदास प्रभुकी यह
लीला निगमनेति कहिगाऊ ८ ॥ रागरामकली ॥ यशुमति कान्हहिँ यह
समुझावति । सुनहु श्याम तुम बड़े भयेअब बलकहि क्यों न कुड़ावति ।
ब्रजलरिकानिहिं पीअत देखैं हँसत लाज नहिं आवति । जैहैं बिगरि
दांतहैंआछे तातेकहि समुझावति । अजहूँ छाँडि कह्यो करिमेरो ऐसी
बात नभावति । सूरश्याम यह सुनि मुसुकाने अंचल मुखहिं लुकावति ९
रागसारंग ॥ खेलन जाहु ग्वाल तोहिँ टेरत । यह सुनि कान्ह भयो अति
आतुर द्वारेलन फिरि फिरि जब हेरत । बारबार हरि मातहि बूझत
कहि चौगान कहाँहै । दधि मथानिके पाछे देखो लै मैं धरेउ तहाँहै ।
लैचौगान बड़ो अपनेकर प्रभुआये घर बाहर । सूरश्याम बूझत सब
ग्वालनि खेलहिँगे केहिठाहर १० ॥ रागनट ॥ खेलतबने घोषनिकास ।
सुनहुश्याम चतुरशिरोमणि यहाँहै घरपास । कान्ह हलधरबीरदोऊ
अतिभुजा दुहुँजोर । सबल श्रीदामा सहित अरु सखभये यकओर ।
और सखा बटायलीन्हें गोपबालक वृन्द । चलेब्रजकी खोरि खेलत
अति उमगि नँदनन्द । बड़ा धरणी डारिदीनी लैचले ढरकाय । आप

आपनिअपनि निकसत कोउ कहूँ न जनाय । श्रीदामाको प्रभुभिमानै लै करी कछुमेल । सूरदास प्रभु कहत सुदामा कौनखेल्यो खेल ११ ॥ रागबिलावल ॥ खेलत में को काकोगुसैयां । जातिपाँति हमतें बड़ नाहिन हम बसत तुम्हारी छैयां । अतिअधिकार जनावतयाते जाते अधिक तुम्हारे गैयां । रूठिकरै तासों कहाखेलै रहेबैठि जहँ तहँ सबग्वैयां । हरि हारे जीतेश्रीदामा बरबसही कत करत रिसैयां । सूरश्याम प्रभुखेल्योइ चाहत दाँवदियो करि नन्ददुहैयाँ १२ ॥ अथ बेगा को बध ॥ रागमारू ॥ अद्भुत गति आनि ओ गजगेउ । अभासोंअर बैठत यारजनु है बोलत बोय भगेउ । सभा सभा जं सुभट दैत्यकुल बैठे सब उमराव । तिहूं भुवनभरि गर्भहूँ मेरो शोकमुश्किल ग्राय । अभसान मेरे सेवकनाहीं जाहि कहों कछुधाय । काहू पहुँचो ऐसोलायक तातें मोहिं पछिताव । नृपतिराज आयसुदै मोको ऐसो कौनविचार । तुम अपनेमन शोचतजाको असुरनको सरदार । औरनरि आबजाहि तनताको तिनकोहोत सँहार । मथुरापति यहसुनि हरषितभयो सनहिंमनो अतिभार । पूर्वेलकुच फरूगालगीगापर अजगरगजदाजपुआन । ऐसोको जो मोहिं न जानत तिहूंभुवन परिमान । असुरसंघारे महाबली सब कहो कीतिहीं वान । तनक तनकसों नहरतोहों करिग्राऊं जिनप्रान । यह कहि कंसगंवतो केशीतन कहैउजाय कौरकाज । तुमआगेते गाव जावत पुतना उनकेहत सुनिलाज । तोतें काकूहेदे पैठनत धरिआनहिं स्योंआज । कतबलछल करिमारि तुरतही मैंआपहु धनआन । अतिपरिक्रेत ह्वैकहेउ असुरसुत कितकबात यहआहि । कहोमारौं अबिल धरिलाऊं मनकपलकमहँ ताहि । आज्ञापाय असुर तब धायो मनमें यह अवगाहि । देखौंजाय कौनवह ऐसो कंसडरपतहै जाहि । यशुमति तब अकुलायपरी गिरिरतन की सुधि न रहाय । नन्दपुकारत आरत व्याकुल टेरतफिरतकन्हाय । नयोचरित कछुभाप पुत्रभयो व्रजजनसुख गयोभाय । बलमोहन ग्वालन बालकसंग खेलत देखेजाय । धायोसत्यो कोउरूप निशाचर हलधर सिनवताय । मनमोहन मनहींमुसकाने खेलत फलनि जनाय । है बालक बैठारि मधाने खेलरच्यो व्रजखोरि । औरसखा सबजुरिजुरिठाढे आपु तनुज मैंगजोरि । फलकोनाम जनाय कहाको हरिकोहृदयो झकोरि । कं

नचल्यौ जिमि सिंह महाबल सुनतहिं बोल्यो जिमि । सबकेआगे ह्वैकर
बपु करयो लैगयो पीठि चढ़ाय । उतरि परे हरि ता ऊपर ते कीन्हो युद्ध
अघाय । दाउघात सब लागत हैं तब हरि करत मरोरी । सबहिं असुर
कोपकर पीठधर घर गोपकरपछारी । कलबलकरि सो दनपछारनके हरि
जोबहु उपाये । सकहा यसुख भीतरनायो पछारि हिया भरि लाये । बहुरि
फेरि असुरगहि पटक्यो प्रचंड करयो आघात । दौरिपरे व्रजबासी मनि
के भीतर चल्यो परात । यहकोउ भलो नहीं व्रजआयो याते वहु तडरात ।
बालकाकंस असुरगहि पटक्यो नंदमहर केलाल । जो मथवा सब ऊँचे नभाये
आयभये नरनारि । धायेनन्द यशोदा धाई मिलपुनि कहा भोहारि । भ्या
भकाय मैं सखेलतहो यकलैगयो कांधेडारि । भाजनिये आहसों के
यह कपटरूप वपुधारि । दैत्यसँहारि कृष्णातहँ आये ब्रजजन सरनहिं
धाय । दौरिनन्द उरलाय मिलतभुज मिलीयशोदा माय । खेलन रहे
संग बालकनके लै उड़िगयो अकास । आपुनहीं गिरिपरो मरो बापर भे
उबरेउ मेरे पास । सुरडरात जियबात कहतजोहि आय रे कोबनास ।
सूरश्याम घरयशुमति लै गइ अंजन दियेहुलास २ ॥ रागमारू ॥ यशु-
मति बरुमति है गोपालहि । सांझहिकी बेरियाभइ कबिदरी मैं उरपोत
जंजालहि । जबते तृणावर्त ब्रजआयो तबते मो जियशंक । नैनोंनिमिष
होयपलकों में मन मनकरति अशंक । यहि अन्तर बालक सब आये
नंदहिकरत गोहारि । सूरश्याम को आय वत्स पैलैगयो कांधेडा-
रि २ खेलन दूरिजात कतप्यारे । जबते उनतभये । हे तेरो तबहीं ते य-
हिभांति ललारे । कोउआवत युवती मिसकरिके कोउलै जात बतास
कलारे । अबलगि बचेकृपा देवनकी बहुतगये मरियारे तुम्हारे । हा
हा करति पायँतेरे लागति अबजनि दूरिजाहु मेरेबारे । सुनहुसूर यशु-
मति सुतबोधति विधिके चरितसबै हैं न्यारे ३ ॥ रागकान्हरा ॥ आजुक-
न्हैया बहुत बच्योरी । खेलत रहेउ घोषकेबाहर कोउआयो शिशुरूप
रच्योरी । धर्मसहाय होत हैं जहँतहँ श्रमकरि पूरबपुण्य बच्योरी ।
सूरश्याम अबके बचिआये व्रजघरघर सुखसिंधु मच्योरी ४ बड़ेभाग्य
हैं महर महरिकी । लैगयो पीठिचढ़ाय असुरयक कहा कहौं उबरन
या हरिको । नन्दघरनि कुलदेव मनावति तुमहिं लाज सुतधनी पत्

को। जहँतहँ तुमहिं सहाय सदा हो जीवनि है यह श्याम सहरको। हरषभरे नँद करत बधाई दानदेत काहाकहैं अमरको। पंचशब्दध्वनि बाजत गावत नाचत मंगलचार नहरको। ठाढ़ेम भरिभरि लेत श्यामको व्रजनरनारि अतिहित हरषी। सूरश्याम संतनसुखदायक दुष्टन केउरपाल करयो ४ ॥ रागनट ॥ खेलतश्याम अपनेरंग। नन्दलाल निहारिशोभा निरखि थकितअनंग। चरणकी छबिनिरखि डरप्यो अरुण गगन छपाय। जानुकरभा की सबै रुचि निदरितहँ कँदाय। युगुलजंघनि खंभरंभा नहिनसमसरताहि। कटिनिरखि केहरिलजाने रहेवन घनचाहि। हृदय हरिनख अतिविराजत छबि न बरणीजाय। मनोबालक वारिघननव चंदलई देखाय। मुक्तमाल विशाल उरपर कछु कहौं उपमाय। मनोतारा गगनवेष्टित शिखागमल रहेउ छाय। अधरअरुण अनूप नासा निरखिजन सुखदाय। मनों शुक फलबिम्ब कारण लेन बैठ्योआय। कुटिल अलकनिबना पवनके मनोंअलि शिशुजाल। सूरप्रभुकी ललितशोभा निरखु री व्रजबाल ५ ॥ रागरामकली ॥ खरिकान नन्दघर आये। लैजलयमुना को न्हवाये अंगपुनन काहुपाये। पायँधोय मंदिरपगधारे प्रभु पूजा शिवजानि। कुश्मुनक पोपिपाडु सबधोये काज देवके कानि। बैठेनन्द करतहरिपूजा विधि न्यवत सों बहुभाँति। सूरश्याम खेलत ते आये देखत पूजा आति ७ ॥ राग गुर्जरी ॥ नन्दकरत पूजाहरि देखत घंटबजाय देवअन्हवाये। दलचन्दन लेपततासोपट अंतरदैके भोगलगायो। अँचवन दै बीरा आगे धरि आरतिकरीबनाई। कहतकान्ह बाबातुम अरप्यो देव नहीं कछुखाई। चितैरहे तब नन्द महरिमुख सुनहु कान्ह की बात। सूरश्याम देवन करजोरों कुशलरहैं जैसेगात ८॥ रागधनाश्री ॥ यशुदा देखतहोडिगठाढ़ी। बालदशा अवलोकि श्यामकी प्रेम मगन चितबाढ़ी। पूजा करत नंद जहँ बैठे ध्यान समाधि लगाय। चुपही आनि कान्हमुख मेल्यो देखो देव बड़ाय। देखें नन्द शिलानहिं आगे अमन अचरजआय। कहाँ गयो मेरे आगेहीतेको लैगयो उठाय। तब यशुमतिसुतवदन दिखावतदेख्यो बदन कन्हाय। मुखकरत मेलितदेवता राख्यो थाले सबै नसाय। बदनपसारि शिलाजबदीनों तीनोंलोक दिखाये। सूर निरखि मुखनन्द चकृत

मथे कहा नहीं कछु आये ९ ॥ रागआसावरी ॥ हँसत गोपाल नंदके आगे नंदस्वरूप न जान्यो री। निर्गुण ब्रह्म सगुणलीला धरि सोई सुत करि मान्यो री। एकसमय पनवाके अवसर नंदसगाई लगाई री। पातपात लै गोकुल भीतर घरघरहिं अरगाई री। ध्यावतिजमजीन कीन्हें भेद न म-निआगे नाहीं री। कहो गोपाल देखत आसनं यहविस्मयमनमाहीं री। मुखते काढ़िदयो यदुनन्दन तबहिं नंदके हाथरी। सूरदासप्रभुकी सुखसागर खेलरच्यो ब्रजनाथरी १० ॥ अथनंदजूकोवरुणलोकजानलीला ॥ रागबि-लावल ॥ आसशुक्ल एकादशिआई। विधिवतव्रत कीन्हों नँदराई। नि-राहार जलपान विवर्जित। पापरहितफल धर्महिं आर्जित। नारायण हित ध्यान लगायो। और नहीं कहुँ मनहिं बसायो। बासर ध्यानकरत सब बीत्यो। निशि जागरण करत मन चीत्यो। पाटम्बर दिव्य मंदिर छायो। पुहुपमाल मण्डली बनायो। देवसकल चन्दनहिं लिपायो। चौकादेइ बैठकी बनायो। शालग्राम तहां बैठायो। धूपदीप नैवेद्य चढ़ायो। प्रेमसहित करि भोग लगायो। आरतिकरि सब गायो नायो। बहु विन-तीकरि देव मनायो। पूजोआश जोजो मनभायो। बारबारहितकरी नँदपूजा। तुमतजि और न जानोंदूजा। तीनिय पहर जब रैनिबिताई। नन्दमहरि सों कहेउ बुलाई। दण्ड एक द्वादशी सकारे। पारन की विधि करहुसवारे। यहकहि नंदगये यमुनातट। लै धोतीझारीविधि कनघट। झारीभरि यमुनाजल लीन्हों। बाहर जायदेहकृत कीन्हों। लै मृत्तिका कर चरणपखारी। अति उत्तमसों करी सुखारी। अँचवन लेन निहुरे नँदपानी। जल बाजत दूतन तब जानी। नंदबाँधि लैगये पतालहि। वरुण पास ल्याये ततकालहि। जान्यो वरुण कृष्ण के तातहि। मनहींमन हरषित हिय चातहि। भीतर लै राखे नँदजीके। अन्तःपुर महलनि रानिन के। रानी सबै नंदको देख्यो। धन्य जन्म अपनोकरि लेख्यो। इनकेसुत त्रैलोक गुसाईं। सुर नर मुनि सबके हैं साईं। वरुण कहेउ मनहर्षबढ़ाये। बड़ीबातभइ नन्दहिल्याये। अंतर-यामीजानहिंबाता। अबहींआवतहैंजगताता। जाकोब्रह्माअन्तनपायो। ताको मुनिजन ध्यान लगायो। जाकोनेति निगम गावतहैं। जाको मुनिवर बनध्यावतहैं। जाको ध्यानधरे शिवयोगी। जाको सेवत सुर-

गोरसोनी । सो प्रभु अन्तर्यामी सब व्यापक । आहैं कंस वंशको घा-
यक । गुणातीत अविगत अविनाशी । सो ब्रजमें खेलत सुखराशी ।
जुगयशसंयुत नन्दहिल्याये । करुणामय अब आवतधाये । महरिकही
तबसब ग्वालनको । नहीं बारभइ नन्दमहरको । गये ग्वालतब नन्द
बुलावन । देख्योजाय यमुनजलपावन । जहँतहँ ढूंढि ग्वालनगआये ।
धोती अरु झारी तहँ पाये । मनमन शोचकरत अकुलाये । कही य-
शोदहि नन्द न पाये । धोतीझारी तटपरपाई । सुनत महरिमुख गयो
मुरझाई । निशा अकेले आजु सिधाये । काहू धौंजलचर धरिखाये ।
यहकहि यशुमति रोइ पुकारै । सो बरजतकत रैनिसिधारे । ब्रजजन
लोगसबै उठिआये । यमुनाके तटकहूं नपाये । बनबन ढूंढतगांवमझारे ।
नन्दनन्दकहिलोगपुकारे । खेलतते हरिहलधरआये । रोवतमातुदेखि
दुखपाये । कत रोवतिहै यशुदामैया । बूझत जननी सों दोउ भैया ।
कहतश्याम जनिरोवै माता । अबहीं आवत हैं नँदताता । मोते कोहि
गे अबहीं आवन । रोवै जनि मैं जात बुलावन । सबके अन्तर्यामी
हैं हरि । लैगयो बांधि बरुण नन्दहि धरि । यह कारज वाको हम
लीन्हों । वाके दूतनि नन्दन चीन्हों । बरुणलोक तबहीं प्रभुआये । सुनत
बरुण आतुरह्वै धाये । आनँदकियो देखि हरिकोमुख । कोटिजन्मके
गये सबैदुख । धन्यभाग मेरेबड़े आजू । चरणकमल दरशन शुभकाजू ।
पाटम्बर पांवड़े डसाये । मङ्गलनि बंदनवार बँधाये । रतन खचितसिं-
हासन धारेउ । तेहि पर कृष्णहिं लै बैठारेउ । अपने कर प्रभु चरण
पखारे । जे कमला उरते नहिंटारे । जे पदपरसि सुरसरी आई । तिहूं
लोक है बिदित बड़ाई । ते पदबरुणहाथलै धोये । जन्मजन्मके पातक
खोये । कृपासिंधु अवधारण तुम्हारी । यहिकारण अपराध बिचारी ।
आपु चले हरि नन्दहिदेखत । बैठे नन्दराज बरभेषत । नृप रानी सब
आगेठाढ़ीं । मुखमुखते सबअस्तुति काढ़ीं । पांयनपरीं कृष्णकेरानी ।
धन्यजन्म सबही कह बानी । धन्यनंद धनिधन्य यशोदा । धनि धनि
तुमहिं खेलावत गोदा । धनि ब्रज धनि गोकुल की नारी । पूरणब्रह्म
जहाँ बपुधारी । शेष सहस मुख बरणि न जाई । सहजरूप को करै
बड़ाई । देखि नन्दतबकरतबिचारा । यह कोउ आहि बड़ो अवतारा ।

नंदमहरि प्रीति हर्ष न लाग्यो । कृपासिंधु मैं पुत्र पायो । बकगाहि दीनो चोंचबहाई । वृन्दावन भक्तन सुखदाई । अरु नाथ्यो फणि कालि लै आये ॥ तहँ गोप सबदेखननाये । नंदहि छूटतहै सबबाला । हरषप्रीति हुलिबल भयेमुनिगाता । कालिंदि चकाचौंधा जलमैं कीन्हों । निशि दावानल मेघ यह लीन्हों । तीनिपहर निशि नारी विहाई । तब लीन्हों मैं बहोरि बुलाई । सब इंद्र हारची सुनाई । ता काननमैं करी चराई । रैन नंद हान गयो यमुनाजल । बरुणहि हारची कयुकपल । गयो यमुन भीतर कालिंदी भीर । नन्दआदुन तब सुहि लैगो चोर । तहाँते जायकृष्ण मोहिं ल्यायो । यह कोउ बडोपुरुषहि आयो । इनकी महिमा कोउ न जाने ॥ ब्रह्मा कोटि मुख इनहिं बखाने । गर्ग सहित पठ्यो बरसानि तब ॥ बदनबाररुचि मङ्गलघिर । गर्गकह्यो अलख्कोर मानो । इनको नरदेही अनिजानो । यशुमतिकोन चकित अकुलानी । कहा कहत यह अकथ कहानी । ब्रजजन नारि सुनत यहबाथा । इनते हरिभुवभयेमनाथा ॥ माया मोहकरि सबैभुलाये । नन्दहि बरुणालोकते लाये । नन्दयकादशि बरौबा सुनाई । कहत सुनत सबकेमनभाई । यहप्रताप नन्दहिदिखराई । सूरदासप्रभुगोकुलराई ११ ॥ रागकान्हरो ॥ नंदहिकहति यशोदा रानी । मोहिं बरजत निशिगये यमुनतट पैठे जाय अकेलेपानी । अबकी कुशलपरी परायनिते द्विजनिकरौंकछुदान । बोलिलेहु बाजने बजावहिं देहु मिठाई पान । गावति मंगल नारि बधाई बाजत नन्ददुवार । सुनहु सूर यह कहति यशोदा नंदबचे यहिबार १२ ॥ रागबिलावल ॥ कहत नंद यशुमति सुनिबात । अब अपने मन सोचकरत कित जाके त्रिभुवनपतिसों तात । गर्गसुनाय कही जो बाणी सोइसोइ प्रकटहोतहोजात ॥ इनते औरनहीं कोउ समरथ येई हैं सबहीके नाथ । मायारूप मोहनी लाई डारेभुले सबै येगाथ । सूरश्याम खेलतते आये माखनमाँगत दे मा हाथ १३ तबहिं यशोदा माखनल्याई । मैं मथिके अबहीं धरिराख्यो तुमहिकाज मेरे कुंवरकन्हाई । माँगिलेहु येही विधि मोसों सो आगे तुमखाहु । बाहिरकबहुं कछूजनिखैयो डीठिलगैगीकाहु । तनकतनक कछु खाहु लला मेरे ज्यों बढिआवै देह । सूरश्याम अब होहु सयाने बैरनके सुखदेहु १४ हरिके बालचरित्र अनूप । निरखिरहीं ब्रजनारी

मकरंद [illegible] [illegible]। [illegible] अलकें [illegible] [illegible] छवि [illegible] सुभाय। [illegible] [illegible] मधुप [illegible] सहाय। सजल [illegible] [illegible] नाम। [illegible] बनाय। युगलखंजन करत अवनित बीचकिय बनराय। अरुण अधर दशननि झाई कहौं उपमा थोरि। नीलपट बिच मोतिमालों मनो चंदनकोरि। सुभग बालमुकुंदकी छबि बरणिकापै जाय। भृकुटि पर मसिबिन्दुसोकर्यों सकै सूरजगाय १५॥ रागकान्हरा॥ सांझभई घरआवहु प्यारे। दौरत कहाचोटलगि जैहै पुनि खेलहुगे होत सकारे। आपुहि जाय बांहगहिल्याई खेलरही लपटाई। धूरि झारितातौ जलल्याई तेलपरसि अन्हवाई। सरसबसनतनपोंछि श्याम को भीतर गई लिवाई। सूरश्याम कछु करोबियारी पुनि राख्योपौढ़ाई १६॥ रागबिहागरो॥ बलमोहन दोउकरत बियारी। प्रेमसहित दोउ सुतनिजिवांवति रोहिणिअरु यशुमतिमहतारी। दोउभैया मिलिखात एकसँग रतनजटित कंचनकीथारी। आलससों करकौर उठावत नयननि नींद झमकिरहिभारी। दोउमाता निरखत आलसमुख छबिपर तन मन डारतिवारी। [illegible] सूर प्रभु यहउपमा कबि कहै कहारी १७॥ रागकेदारा॥ कौनेपानललारेदूध ल्याईहौं यशोदामैया। कनककटोरा भरिलीजै यहपय पीजै अतिसुखदेयकन्हैया। आछे मैं [illegible] अरुमिलीमिठैया। [illegible] न नन्हैया। बहुत यतनकरिकै राख्यो [illegible] लईते तुम कारण बलभैया। फूंकि फूंकिजननी पयप्यावति [illegible] आनँदउर न समैया। सूरदास प्रभुपयपीवत बलराम श्याम दोउजननी लेतबलैया १८॥ रागबिहागरो॥ कमलनयनहरि करौबियारी। लुचुईलपसी सद्यजलेबी सोइजेंवहु जोइ लगै पियारी। घेवर मालपुवा मोती लाडु सुघरकँजरी सरस सँवारी। दूधबरा उत्तम दधिरोटी गोल मसूरी की रुचि न्यारी। आछो दूध औटि धौरीको लै आई रोहिणिमहतारी। सूरदासबलरामश्याम दोउ जेंवहु जननि जाय बलिहारी १९॥ रागकेदारो॥ बलमोहन दोउ अति अलसाने। कछु कछुखाहु दूध लैआऊं सुखजम्हात जननी जियजाने। उठहुलाल कहिमुख पखरायो तुमकोलै पौढाऊं। तुमसोवहु मैं तुमहिं सुवाऊं कछुमधुरेसुरगाऊं। तुरतजाय पौढेदोउ भैयासोवत आईनिन्द।

सुखद [illegible] यशुमति [illegible] २० ॥ राग [illegible] बिलावल ॥ भोजन [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] प्रभु मैं [illegible] बलिहारी २१॥ रागभैरव ॥ जागिये ब्रजराज कुँवर कमल कोश फूले । कुमुद वृन्द सकुचित भये भृंगलता भूले । तमचुर खग शोर सुनहु बोलत वनराई । रांभति गोखीरदेन बछरा हित धाई । बिधु मलीन रविप्रकाश गावत नर नारी । सूरश्याम प्रात उठि अम्बुज कर धारी २२ कमलनयन श्यामसुन्दर कलेवा । माखनरोटी मधु जम्यो दधि भांतिभांति मेवा । [illegible] बिहदाख चिरौंजी किसमिस उज्ज्वल गरी बदाम । सफरी सेव छुहारे संघारे औखरबूजा जाम । अरुमेवा बहु भांतिभांतिके षटरसके मिष्टान । सूरदासप्रभु करत कलेऊ रीझे श्यामसुजान २३॥ रागरामकली ॥ आज मैं गाय चरावन जैहौं । वृंदावनके भांतिभांति फल अपनेकर मैं खैहौं । ऐसीबात कहौ जिनि बारे देखहु अपनी भांति । तनकतनक पगचलिहौ कैसे आवत ह्वैहै राति । प्रातजात गैयालै चारन घर आवत हैं सांझ । तुम्हरो कमलबदन कुम्हिलैहै रेंगत घामहि मांझ । तेरीसौंह मोहिं घाम न लागत भूख कहूं नाहिं नेक । सूरदासप्रभु कह्यो नमानत परे आपनी टेक २४ चलेसखा गायचरावनग्वाल । हेरोदेत सुनत लरिकाननको दौरिगये नँदलाल । फिरि इतउत यशुमति जो देखै दृष्टि न परै कन्हाई । जान्यो जात ग्वालसँग दौरेउ टेरति यशुमति धाई । जातचले वे ग्वालनिके पाछे बलदाऊ कहि टेरत । पाछे आवत जननी देखी फिरि फिरि इतको हेरत । बलदेख्यो मोहनको आवत सखा किये सब ठाढे । पहुँची जाय यशोदा रिस मैं दोउ भुज पकरे गाढे । हलधर कहै जानदे मोसँग आवहिं आजु सबारे । सूरदास बलसों कहै यशुमति देखेरहौ प्यारे २५॥ रागबिलावल ॥ खेलन कान्ह चले ग्वालन सँग । यशुमति यहै कहति घर आई देख्यो हरिकीन्हे जैसे रंग । देखहु जाय आज बनको सुख कहा परोसि धरेउ है । प्रातहिसो लाग्यो ओही ढँग अपनी टेक परेउ है । माखनरोटी अरु सीतलजल यशुमति दियो पठाय । सूरनन्द हँसि कहत महरि सों आवत कान्ह चराय २६ ॥ रागकान्हरो ॥ वृन्दावन देखत नँदनन्दन अतिहि परमसुख पायो । जहँ जहँ

गायचरत ग्वालन संगडोलत आपुनआयो। बलदाऊ मोको मिलछां-
डहु संग तुम्हारे आयो हो। कैसेहु आजु यशोदाछोड्योकाल्हि न आवन
पैहों हो। सोवतमोको टेरिलेहुगे बाबानन्ददुहाई। सूरश्याम विनती
करैबलसों सखनि समेतसुनाई २७॥ रागगोरी॥ आजुहरि धेनुचराये आ-
वत। मोरमुकुट बनमालाबिराजत पीतांबर फहरावत। जेहिजेहि भांति
ग्वाल सबबोलत सुनिश्रवनहिं मनरावत। आपुन टेरिलेत ताही सुर
हरषतपुनि पुनिभावत। देखतनन्द यशोदा रोहिणि अरु देखतब्रजलो-
ग। सूरश्याम गायनसँग आये मैयालीन्हे रोग २८ यशुमति दौरिलिये
हरि कनियां। आजुगयो मेरोगाय चरावन हौं बलिजाउँ निछनियां।
मोकारण कछु आन्यो नाहीं बनफल तोरि कन्हैया। तुमहिं मिले मैं
अतिसुखपायो मेरे कुँवरकन्हैया। कछुकखाहु जो भावैमोहन दरिहौं मा-
खन अरु रोटी। सूरदासप्रभु युगयुग जीवहु हरिहलधर की जोटी २९
माखन रोटी लेहु कान्हबार। ताता ताती रुचि उपजावै त्रिभुवन के
उजियारे। और लेहु पकवान मिठाई मेवा बहुविधि सारे। औट्यो दूध
मधुदधि घृत मधुरो च्यों खाहु मेरे प्यारे। तबहरि उठकैकरी बिया-
रीभक्तन प्राण पियारे। सूरश्याम भोजनकरिकै शुचि जलसों बदनप-
खारे३०॥ रागकान्हरा॥ पौढ़े श्याम जननिगुण गावति। आजुगयो मेरे
गाय चरावन काहे काहे मन हुलसावति। कौनपुण्य तपते मैं पायो
ऐसो सुन्दरलाल। हरषि हरषिकै देतिसखिनको सूरसुमन कीमाल ३१
अथमाखनचोरीकथन॥ रागगोरी॥ मैयारी मोहि माखन भावे। जोमेवा पकवान
कहत तू मोहिं नहीं रुचि आवे। ब्रजयुवती यकपाछे ठाढ़ीसुनत श्या-
मकीबात। मनमन कहतिकबहु अपनेघर देखौं माखनखात। बैठजाय
मथनियांके ढिगमैं तबरहौं छिपानी। सूरदास प्रभुअंतरयामी ग्वालि
मनहिंकीजानी १ गयेश्याम तेहि ग्वालिनि के घर। देख्योजाय द्वार
नहिंकोऊ इतउत चितैचले तबभीतर। हरिआवत गोपीजब जान्यो आ-
पुन रहीछिपाय। सूनेसदनमथनियांके ढिगबैठिरहेअरगाय। माखन
भरीकमोरी देखत लैलै लागेखान। चितैरहे मणिखम्भ छांहतनतासों
करैसयान। प्रथमआजुमैं चोरी आयो भलो बन्योहै संग। आपुखात
प्रतिबिंब खवावत गिरत कहत का रंग। जोचाहौसबदेउ कमोरीअति

मोतीकन भावत। तुमहिं देखि मैं अतिसुख पायो तुम मोअंग कहा ब्रजना-
रन। सुनिसुनिबातश्यामके मुखकी उमँगिहँसीं सुकुमारी। सूरदासप्रभु
निरखिग्वालिमुख तबभोजचलेमुरारी २ फूली फिरतग्वालि मनमेंरी।
पूछतिसखी परस्परबातें पायोपरेउ कछुकहूँ तैंरी। पुलकितरोमरोम
गदगद मुख बाणी कहत न आवैं। ऐसोकहाआहि सो सखिरी मोकों
क्यों न सुनावै। तनुन्यारो जो एक हमारो हमतुम एकैरूप। सूरदास
कहै ग्वालिनि सखिसों देख्यों रूप अनूप ३ ॥ रागगूजरी ॥ आजु सखी
मणिखम्भ निकट हरि जहँ गोरस की गोरी। निज प्रतिबिम्ब सि-
खावत ज्यों शिशुप्रकटकरैं जिन चोरी। अर्धविभाग आजुते हम तुम
भलो बनीहै जोरी। माखनखाहु कतहिंडारतहौ छाँडदेहु मतिभोरी।
बाँटनलेहु सबै चाहतहौ इहैबातहै थोरी। मीठोपरम अधिक रुचि
लागैदेहौं काढ़िकमोरी। प्रेमउमँग धीरज न रहेउ तब प्रकटहँसीमुख
मोरी। सूरदासप्रभु सकुचि निरखि मुख चले कुंजकीखोरी ४ ॥ राग
बिलावल ॥ प्रथमकरी हरि माखनचोरी। ग्वालिनि मन इच्छा पूरण
करिआपुभजे हरि ब्रजकीखोरी। मनमन यहै विचार करतप्रभु ब्रज
घर घर सब जाउँ। गोकुल जनम लियो सुख कारण सबके माखन
खाउँ। बालरूप यशुमति मोहिं जानै गोपिन मिल सुखभोग। सूरदास
प्रभु कहत प्रेम सों ये मेरे ब्रजलोग ५ ॥ रागरामकली ॥ करत हरि ग्वालन
संग विचार। चोरीमाखन खाहु सबमिलि करौ बालविहार। यह सु-
नत सबसखा हरषे भली कही कन्हाय। हँसि परस्पर देततारी सौंहक-
रि नँदराय। कहाँतुमयह बुद्धिपाई श्याम चतुरसुजान। सूरप्रभु मिलि
ग्वाल बालक करत हैं अनुमान ६ ॥ रागबिलावल ॥ सखा सहित गये
माखनचोरी। देख्यो श्याम गवाक्षपंथ ह्वैगोपी एकमथति दधिभोरी।
हेरिमथानी धरीमाटते माखनहो उतरात। आपुन गई कमोरी माँगन
हरि पाई ह्यां घात। पैठे सखन सहितघरसूने माखन दधि सब खाये।
छूंछीछाँड़ि मटुकियादधिकी हँसिसब बाहरआये। आयगई करलिये
कमोरी घरते निकसेग्वाल। माखनकर दधिमुख लपटानो देखि रही
नँदलाल। कहँआये ब्रजबालक लै सँग माखनमुख लपटानो। देखे ग्वा-
लतते उठि भाज्यो सखायहीघर आय छपानो। भुज गहिलियो कान्ह

एक बालक निकरे ब्रजकी खोरि । सूरदास ठगि रही ग्वालिनी मन हरि
लियो अँजोरि ७ चकृतभई ग्वालिनि तनु हेरेउ । माखन छांडि गई मथि
वैसेहि तबतें कियो अबेरेउ । देखैजाय मटुकिया रीती मैं राख्यो कहुं
हेरि । चकृतभई ग्वालिनि मन अपने ढूंढ़तिघर फिरिफेरि । देखति पुनि
पुनि घरकेबासन मन हरिलियो गोपाल । सूरदास रसभरी ग्वालिनी जा-
न्यो हरिको ख्याल ८ ब्रज घरघर प्रकटी यहबात । दधि माखन चोरी
करि लै हरि ग्वाल सखासँग खात । ब्रज बनिता यह सुनि मन हर-
षित सदन हमारे आवै । माखन खात अचानक पावै भुज भरि उरहि
छुपावै । मनहींमन अभिलाष करतसब हृदयधरत यहध्यान । सूरदास
प्रभुको घरतै लैदेहीं माखनखान ९ ॥ अथ धेनुचरावन ॥ रागसारंग ॥ मैया अप-
नीसब गायचरैहौं । प्रातहोत बलकेसँगजैहौं तेरेकहे नरैहौं । ग्वालबा-
लगैयनिकेभीतर नेकहु डरनहिंलागत । आजु न सोऊं नन्ददोहाई रैनि
रहौंगो जागत । और ग्वालसब गाय चरैहैं मैं घरबैठे रैहौं । सूरश्याम
अबसोयरहोतुम प्रातजान मैंदैहौं १ ॥ रागकेदारो ॥ बहुतै दुख हरि सोय
गयोरी । सांझहितें लाग्यो यहिबातहि क्रमक्रम करि समबोधलयोरी ।
एक दिवसगयो गाय चरावन ग्वालन साथ सबारे । अबतौ सोयरह्यो है
कहि कैसेहुं प्रातहि कहु बिचारे । यहतौ सब ग्वालनहिं लागौ संग
लैगये लिवाई । सूरनन्द यहकहतमहरिसों आवन दौफिरिधाई २ ॥ राग
ललित ॥ जागिये गोपाललाल आनँद निधि नन्दलाल यशुमति कहै
बारबार भोरभयो प्यारे । नयनकमलसे बिशाल प्रीति बापिका मरा-
ल बदनचन्द मदनउपर कोटिवारिडारे । उगत अरुण बिगत शर्वरी
शशि किरण हीनदीप मलिन क्षीन द्युति समूह तारे । मनहुँ ज्ञानघन
प्रकाश बीते सबभवबिलास आसत्रास तिमिर तोष तरणि तेज जारे ।
बोलत खग मुखर निकर मधुकर ह्वैप्रतीति सुनहु प्राण जीवन धनि
मेरे तुमबारे । मनोबेद बंदिमुनि सूतवृन्द मागध गण बिरद बदत जैजै
जैतकैटभारे । बिगसित कमलावली चले प्रपुंज चंचरीक गुंजत कल
कोमलधुनि त्यागिकंजन्यारे । मनों बिराग पाय सकल शोककूपगृह
बिहाय प्रेममत्तफिरत भृत्यगुनत गुणातिहारे । सुनतबचन प्रिय रसाल
जागे अतिशय दयाल भागेजंजाल बिपुलदुखकदम्ब टारे । त्यागिभ्रम

...मंद ... निरखिके सुखपावै अरु सूरदास अति आनन्द मंदमंदभावै ३॥ राग बिलावल॥ कबहुँ बोलत कान्हरप्यारे। माखन रोटीदेयो हाथपर बलि बलिजाउँ जो खाहु ना गारे। टेरतद्वार ग्वाल हैं ठाढे आये तनके भोर सवारे। खेलोजाय ब्रजहिके भीतर दूरिकहूँ जिनि जैहौवारे। टेरउठे बलराम श्यामको आवहु जाहिं धेनु बनचारे। सूरश्याम करजोरि मात सों गाय चरावन कहत हहारे ४॥ रागसारंग॥ मैया री मोहिं दाऊ टेरत। मोको बन फल तोरि देत हैं आपुन गैयनि घेरत। और ग्वाल सँग कबहुँ न जैहों वे सब मोहिं खिझावत। मैं अपने दाऊ सँग जैहौं बनदेखत सुखपावत। आगे दै पुनि ल्यावत घरको तू मोहिं जान न देति। सूरश्यामकहैं यशुमति मैया हाहाकरि करिकेति ५ बोलि लिये बलरामहिँ यशुमति। आवहु लालसुनहु हरिकेगुण कालिहिं ते लँगरैउ करतअति। श्यामहिं जानदेउ मेरे सँग तू काहे डरपावति। मैं अपने ढिगतेनहिँ टारत जिय प्रतीतिनहिँ आवति। हँसीसहरिबलकी बातैंसुनि बलिहारी यामुखकी। जाहुलिवाय सूरकेप्रभु को कहतजोर के रुखकी ६ अति आनन्दभयो हरिधाये। टेरत ग्वाल लाल मन आवहु मैयामोहिँ पठाये। उतते सखा हँसतसब आवत चलहु कान्ह बनदेखहु। बनमाला तुमको पहिरावत धातु चित्रतनु रेखहु। गाय लई सँगघेरि घरनते महरगोपके बालक। सूरश्यामचले गायचरावन कंसउरहि के सालक ७ चले बन धेनुचरावन कान्ह। गोप बालक कछुसयाने नन्द के सुतनान्ह। हरष मों यशुमति पठाये श्याम मनहिँ अनन्द। चले बल के साथ मोहन सङ्ग बालक वृन्द। सखा हरिको यह सिखावत छांडिकहुँ जिनिजाहु। सघन वृन्दावन अगमअति जाहुकहूँ भुलाहु। नेकहूं जिनिसङ्ग छांडो बनहिं बहुत डरात। सूरके प्रभुहँसत मनमें सुनतही यहबात ८॥ रागधनाश्री॥ हेरीदेत चले बनबालक। आनँदसहित जात हरिखेलत सङ्गचले पशुपालक। कोउ गावत कोउ बेणुबजावत कोउ नाचत कोउ धावत। किलकत कान्ह देखियह कौतुक हरषि सखा उर लावत। भलीकरी तुममोको ल्याये मैया हरषिपठाये। गोधनवृन्द लियेब्रजबालक यमुनातट पहुँचाये। चरति धेनु अपने अपने सँग अतिहि सघन बनचारो। सूरसङ्ग मिलि गाय चरावत यशुमति

को सुत बारो ९ ॥ अथ वृषभासुर बध ॥ रागधनाश्री ॥ यहि अन्तर वृषभासुर आयो । देख्यो नन्दसुवन बालकसँग यहै घातहै धायो । गये समाय धेनुपति ह्वैके मनमें दांवबिचारे । हरि तबहीं लखि लियो असुर को डोलत धेनुबिडारे । गैया भिझुकि चलीं जितकित सों सखा जहां तहँ घेरे । वृषभशृङ्ग सों धरणि उकासत बलमोहन तनहेरे । आपुहि चल्यो श्यामके सन्मुख निदरि आपु अगुसारी । कूदि परेउ हरि ऊपरआय के किये। युद्ध अतिभारी । धायपरे सबसखा हांकदै वृषभ श्यामको मारेउ । पांय पकरि भुजसों गहि फेरेउ भूतल माहिँ पछारेउ । परेउ असुर पर्बत समान ह्वै चकृत भये सब ग्वाल । वृषभ जानिकै हम सब धाये यहतो कोउ बिकराल । देखि चरित यशुमतिके सुतको मनमें करत बिचार । सूरदास प्रभु असुर निकन्दन सन्तनि प्राण अधार १ रागगौरी ॥ धन्य कान्ह धनि धनि ब्रजआये । आजु सबनि धरिके यह खायो धनितुम हमहिँ बचाये । यहऐसा तुम अतिहि तनकसे कैसे भुजनि फिरायो । पलकहि मांझ सबनिके देखत मारेउ धरणिगिरायो । अबलौं हम तुमको नहिं जान्यो तुमहो जग प्रतिपालक । सूरदासप्रभु दुष्टनिकन्दन ब्रजजनके दुखघालक २ ॥ रागकल्यान ॥ आवत मोहन धेनु चराये । कटि किंकिणि धुनि कंकण बाजत चलत चरण नूपुर रव राये । ग्वालमण्डली मध्य श्यामघन पीत बसन दामिनिहिं लगाये । गोरज बदन बिराजत मानों पङ्कज पर पराग उड़िछाये । गोप सखा आवत गुणगावत मध्य श्याम हलधर छबिछाये । सूरदास प्रभु असुर निकन्दन ब्रजआवत मन हरष बढाये ३ ये गोरेणु रंजित आवत मोहन लाल । श्यामसुभग तन तड़ित बसन सुर राज चाप बनमाल । गोरज रज मुखपर छबि लागत कुण्डल नयन बिशाल । बलमोहन बनते बन्यो आवत लीन्हें गैयाजाल । ग्वाल मण्डली मध्य बिराजत बाजत बेणु रसाल । सूरश्याम बनते ब्रजआयें जननि लये अँकमाल ४ ॥ राग रामकली ॥ तेरोमाई गोपाल रणसूरो । जहँ तहँ भिरत प्रचारि पैजकरि तहीं परतहै पूरो । वृषभरूप दानव यकआयो सो क्षणमाहिं सँहारेउ । पायँपकरि भुजसों गहिवाको भूतलमांझ पछारेउ । कहत ग्वाल यशुमति धनि मैया बड़ो पूतत्तैं जायो । यह कोउ आदिपुरुष अवतारी

माता मार आयो। [illegible] बन्दन बाँधिके [illegible] कौ ।
बार बार सूरके प्रभुको उबटि न लीयो लीजै ५ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
बार बार पोंछत मौं। [illegible] वृषभानुसुत की जब [illegible]
बानी। गोवर्द्धन भीतर आय समानो [illegible] । [illegible]
कालिको [illegible] पुष्यो [illegible] । सुनि यशुमति [illegible]
[illegible] । पर्वततुल्य देहधारीको [illegible]
बहात । [illegible] । सूरदास [illegible]
मोहेउ सबको मोहन नन्दकुमार ६ ॥ रागकान्हरो ॥ हँसि जननी सों बात
कहत हरि देख्यौ मैं वृन्दावन नीके । अति रमणीक भूमि द्रुमवेली
कुंजसघन निरखत सुखजीके । यमुनाकेतट धेनु चराई कहत बात [illegible]
मननीके । भूख मिटी बनफलके खाये मिटी प्यास यमुनाजल पीके ।
सुनति यशोमति सुत की बातें अति आनन्द मगन तनहीके । सूरदास
प्रभु विश्वंभरता जे चोर भये व्रजजन करहीके ७ ॥ अथ माखनचोरी ॥ राग
कान्हरो ॥ चली व्रज घरघरनि यहबात । नन्दसुत सँगसखा लीन्हे चोरि
माखन खात । कोउ कहति मेरे भवन भीतर अबहिं पैठे आय । कोउ
कहति मोहिं देखिद्वारे उतहिंधाये पराय । कोउ कहति केहि भाँति हरि
को देखौं अपने धाम । हेरि माखन देहुँ आछौ खाहिं जितनो श्याम ।
कोउ कहति मैं देखि पाऊँ भरि धरौं अँकवारि । कोउ कहति मैं बाँधि
राखौं कोसकै निरवारि । सूरप्रभुके मिलन कारण करत बुद्धि विचार ।
जोरिकर विधिको मनावति पुरुष नन्दकुमार १ ॥ रागबिलावल ॥ ग्वा-
लिनि घरगये जानी साँझकी अँधेरी । मन्दिरमें गयेसमाय श्यामलतन
लखिनजाय देहगेह रूपकी हो कोकहै निबेरी । दीपक पूर्णदान करेउ
भुजाचार प्रकटधरेउ देखत भई चकृत ग्वालि इत उत कोहेरी । श्याम
हृदय अतिविशाल माखन दधि बिन्दुजाल मनमोहेउ नन्दलाल बाल-
कही बेरी । युवती अति भई बिहाल भुजभरि दै अङ्कमाल सूरदास प्रभु
कृपाल डारेउ तनफेरी । करसों करलै लगाय सकारिपै गईलिवाय आ-
नँद उरमें नसमाय बातहै अनेरी २ यशुमति तू देखिआनि आपोह्नैलै
पिकानि बहियाँ गहिल्याई कुँवरआनि कोनिकतेरो। अबलों मैंकरी
कानि सहौदुख दहिहानि अजहुँ जिय जानि मानि कान्ह है अनेरो ।

[illegible] करत कहोत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तबही इसत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] छाँडि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] काहि न [illegible] नाहीं [illegible] ऐसी [illegible] । [illegible] [illegible] निहारि [illegible] मानों आनि कोऊ कैसो । [illegible] [illegible] सूरदास [illegible] कैसो ॥ [illegible] ॥ [illegible] । तब यह बुद्धि रची अपने [illegible] [illegible] । [illegible] कोउ नाहीं [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] अकेलो [illegible] [illegible] । [illegible] युवतीघर आइ देख्यो नन्दकुमार । [illegible] मन्दिर [illegible] निरखत बारम्बार ४ [illegible] घरद्वार रहे [illegible] । [illegible] [illegible] । पुनि [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] चौदह [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] न बोलत । [illegible] मन्दिर [illegible] । [illegible] उत्तर करिहों [illegible] । [illegible] यह [illegible] आयो । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] चतुरवचन [illegible] के [illegible] । [illegible] मैं जानी है आपुनि [illegible] सुनैयर । [illegible] छीके देख्यो दधि माखन हरिभीतर । [illegible] दधिमाखन पायो [illegible] अधरनिपर । सैनदेइ सबसखा बुलाये तिनहिंदेत भरिभरि अपनेकर । छिटकि रहे दधिबिन्दु हृदयमें इत उत चितवत करि मनमें डर । उठत ओटलै लखत सबनिको पुनि लै [illegible] देत ग्वालनि कर । उतभइ ग्वालि बहुरि देखति हरि मगनभई अति उर आनँदभर । सूरश्याम को निरखि थकित भइ कहत न बनै रही मनमेंघर ७ ॥ [illegible] ॥ गोपाल दुरेहैं माखनखात ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥ जो तुम [illegible]

हैं चोरी । [illegible]

[illegible] सकुचि रंचिकहूँ मानहुँ [illegible] । [illegible]

[illegible] बदन [illegible] । [illegible]

[illegible] बिहारी । [illegible]

सूरदास प्रभु देत [illegible] १० ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] मुख [illegible] । [illegible] ॥

[illegible] सुरनि [illegible]

दीनी रोय । ग्वालनि कांधे चढ़े तबहिं [illegible] । [illegible] ग्वाल

सखनि सों तब दीन्हों डारि । [illegible] दोऊ [illegible] सुहाय ।

फिरकि [illegible] सों [illegible] । [illegible] घर

को [illegible] कहेउ [illegible] । [illegible] पौरि ।

प्रेम अन्तर [illegible] । [illegible]

किया उर नखघात । [illegible] निवारि ।

सूरप्रभु [illegible] लयाइ [illegible] ११ ॥ [illegible] बिलावल ॥ [illegible]

तुम [illegible] । ढूँढ़ि ढूँढ़ि [illegible] । [illegible] ।

कैसे [illegible] । [illegible]

को कैसे तेरा खात । [illegible]

ऐसो नहीं अबलौं ऐसी कहा अनखाँति जात । कहा कीजै मैं कहति
लकुचोतिहि कहा तिहारे बात । है मुखारबिंद सुरप्रभुको आँखिनको
हैं लाल २२ ॥ राग ॥ यशुमति अबके गोपालहि बरजति क्यों जुनहीं ।
कहा कहै निशिदिनकी बातेबाहीं पहनसही । माखनखात दूधलै डारत
लेपत देह दही । तापाछे घरहू को लरिकन भाजत छिरकि मही । जो
कछुधरहि दुराय दूरिले जानत ताहीं तहीं । सुनोमहरितेरे यासुतसों हम
पचिहारि रहीं । चवनजात छिड़ाय मटुकिया रचिकरोंच बात कही ।
अपने जियकी इतलेबबों कछू कहीं सोसही । चोरि अधिक चतुराई
सीखी जाहि न कथा कही । तापरसूर बछरूआनि डोलत बनबन फिरत
बही २५ ॥ राग कान्हरो ॥ अबये झूठेइ बोलतलोग । पांचबरष अरुकछुक
दिनको कबभयो चोरी योग । यहि मिस देखन आवति ग्वालिनि
मुँह फाटे जुगँवारि । अनदोषेको दोषलगावति दईदेइगो टारि । कैसे
कर याको भुजपहुँचै कौन बेग ह्यांआये । ऊखल ऊपर आनि पीठ
लै तापर सखा चढ़ाये । जो न पत्याहु चलोसँग यशुमति देखोनयन
निहारि । सूरदासप्रभु नेकु न बरजों मनमें महरि विचारि २४ इन
अँखियन आगेतेहो मोहन पलकीजिन होहु न न्यारे । अति अलि जाउँ
बदन देखेबिनु तरसत हैं नयननकेतारे । ये सखासबै बुलाय सकारि
यहि अँगना खेलो दोउजारे । निरखति रहौं फणिकि की मणि ज्यों
सुन्दरश्याम विनोद तिहारे । दूधदही माखन सबमेवा व्यञ्जन मीठे
खाउखारे । सूरदासप्रभु आउ आइ मातुमाइलोग नाचिनेहु देवेप्यारे २५
राग नटनारायण ॥ ऐसे लागिहौ जो जितिजाहु कहूं । तेरेहि काजे गोपाल
सुनहु लाड़िलेलाल राखे भाजनभरि सुरसकहूं । काहेको पराये जाय
करत येतेउपायदूधदही घृत माखनचहू । करत कछू न कानि बकत
कहूँक बानि निपट निलजबैन चलहुबहू । ब्रजकीबाढ़ी ग्वारि हाटकी
बेचनहारि सकुचन देतिगारि झगरकहूं । कहांलौं कहौं रिस बकत
भईहौं कृष्ण यहीमिस सूरश्याम बदनलहूँ २६॥ राग धनाश्री ॥ चोरी करत
कान्ह धरिपाये । निशिबासर मोहिं बहुत सतायो अब हरि हाथहि
आये । माखनदधि मेरोसब खायो बहुत अचकरी कीन्हों । अब तौ
घातपरेहो ललना तुम्हैं भले मैं चीन्हौं । दोउभुज पकरि कहेउ कहँ

[illegible] शैंवाय । नैंनो मों मैं [illegible] बांधों [illegible] ॥ सू[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हरि [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] सूरदास बलिजाय १७ अर्गीत ग्वालि [illegible] [illegible] । [illegible] माखनकी चोरी देखतकोन रहे बनन लगाय । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] डोलति ग्वालिमाय । [illegible] इन्दु [illegible] [illegible] को मनहुँ [illegible] [illegible] [illegible] । निरखि श्याम [illegible] [illegible] भुजभरि [illegible] लीनों उरलाय । चितैरहीं युवती [illegible] नैन [illegible] चितहि चुराय । तनमन [illegible] गति बिसराई युवती [illegible] माखन [illegible] । सूरदास प्रभु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १८

रागललित ॥ देखीहरि [illegible] ग्वालिनि [illegible] ठाढ़ी । यौवन मदमाती [illegible] [illegible] [illegible] छबिबाढ़ी । दिनथोरी भोरी अतिकारी देखत श्यामभईबाढ़ी । [illegible] दोउ [illegible] [illegible] [illegible] । इतउत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । सूरदासप्रभु रीझि थकित [illegible] मनहुँ [illegible] १९ ॥ राग बिलावल ॥ [illegible] श्याम तोहि ग्वालिनि [illegible] । [illegible] जाय [illegible] [illegible] आपु [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । उ[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] रीझि रही युवती [illegible] पर । मन हरिलियो [illegible] [illegible] गये देखतही [illegible] । [illegible] मुख [illegible] श्यामके सूरज प्रभु [illegible] [illegible] २० ग्वालिनि उरहन के मिस आई । नन्दनँदन तन मन हरिलीन्हों बिनु देखेछन रह्यो न जाई । सुनहु महरि अपने सुतके गुण कहा कहौं कोहभाँति बनाई । चोलीफारि हारगहि तोरेउ इनबातन [illegible] होत बड़ाई । माखनखाय खवावत ग्वालन जो उबरेउ सो दियो लुटाई । सुनहु सूर चोरी सहिलीन्हों अब कैसे सहिजाति ढिठाई २१

राग [illegible] ॥ [illegible] [illegible] लगावत ग्वारि । खेलत ते [illegible] बोलिलयो दोउ भुजभरि दीन्हीं अँकवारि । मेरो कर अपने उर धारति आपुहि चोलीफारि । माखन आपुहि माहिँ खवायो मैंतो [illegible] डारि । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सुखवारि । सूरश्याम [illegible]

नैनिन मन मोहिड चितैरही [illegible] निहारि रहे [illegible] कारनगोधा भाखन चोरी । जानतिहौं जु कटाक्ष तिहारी कमल नयन मेरोतन क सोरी । हैंहेंगा मुलाय मुस्कनी सुजमति मेरति उरक कारी । तनक्य चिबुक देखावति डोलति श्याम [illegible] भये तुम आति भोरी । उरहन के मिस आवतिहै नित चितवै डे जनु चन्दचकोरी । सुबरनबेह ग्वालिनज अलकी अन्तर प्रीति जानि बांधिलीनी प्रेमनाहकी कबहुं न छोरी । सुनहु महरि अपनो सुत बरजो घर आँगन कीन्हें मोसों । मैं दधि राखति आ अने मन्दिर याके तहां गयो प्रातः । मोसों कहे उबात सुनगोरी मैं सुनिकी मुसकाति । नांहि पकीर ओलीजोरि फारी भरि लीन्हीं अँकवारि । कहत न बने सकुचकी बातैं देखो हृदय उघारि । आपसमाथ सिर धरि लीन्ही [illegible] लै सुनीको घात । सूरदास प्रभु तेरे आगे सकुचति कहेउ न जात २४ ॥ राग रामकली । चर्चरी ॥ ग्वालिनि आपुतन देखि मेरे लाल तन देखुरी । भीति जो होय तो चित्र अवरेखुरी ॥ ध्रुव ॥ कहाँ मेरो सांवरो गांवको बरसकी अजहुं यह रोयपय पानि मांगे । तुम महामत्त अति ढीठिसी सुन्दरी फिरति पैंड़ति गोपाल आगे । कहाँ मेरे लालकी तनकसी अँगुरियाँ स्वते बड़े नखनके छिद्र तेरे । मधुकरि मुदैं [illegible] आगबारे को भुजा पाइ कहाँ प्याम केरे । उघटौ गयन [illegible] ग्वालिनो मुखदेखे शोभा अधिक बाढ़ी । सकुचि सूरप्रभु देखे सांवरे अनउत्तर महरिके द्वारठाढ़ी २५ ॥ अथ गोचारण समय ॥ राग रामकली । चर्चरी ॥ जागिये गोपाललाल प्रकटभये हंसमाल मिटिगयो अन्धकार उठो जननि मुख दिखाई । मुकुलित भये कमल जाल कुमुद वृन्द बन बिहाल मेटहु जंजाल त्रिबिधताप तनमनाई । ठाढ़े सब सखा द्वार कहत नन्दके कुमार टेरत हैं बारम्बार आइये कन्हाई । गैयनि भई बड़ी बार भरि भरि पय थननि भार बछरागण करैं पुकार तुम बिनु यदुराई । ताते यह अटकपरी दोहनकाज सौंहकरी उठि आवहु क्यों न हरी बोलत बलभाई । मुखतेपट झटकि डारि चन्द्रवदन दै उघारि यशुमति बलिहारि वारि लोचन सुखदाई । धेनु दुहन चले धाय रोहिणी बोलई बुलाय दोहनी मोहिंदै मँगाय तबहीं लेआई । बछरा दियो थनलगाय दुहत बैठिके कन्हाय हँसत नन्दराय तहाँ माता दो ।

आई। दौरि गायकोहूँ फेरिआई फिरिआवत बैठे बालक यह कौतुकहीं सूर धाय नन्दघर जाई। फिर करत कहे आवत सुनाओ धेनुकको तोहि लिवाय गैया। तोहकों मँगाय विविध रस फिराई। जैसे ब्रजवासप्रगास करत न सकल बलराम संग सबै नहिं निहारत यकुटी लिये रहाई। ब्यारवारन सुखबकारि ग्वालबालनी हँकारि अहरवारन चलावति नारद हरिकों डारि। सुनहिंचतु नादकरत मुरलीसुरस्वर अंगसंगनवरत बल ज्यों बालसुघराई। वृन्दावन तुरतजाय बेनु सर्वत सुरवाग्यायपग्याम हरयपाच निरखत सुरत लीलाआई १ ॥ राग सारंग ॥ चलत बल वृन्दावन हरिराय। गवालनिमें कुंगहुबल सुदामा डारत हैं सुखपाय। क्रीड़ा करत जहाँ तहँ सब मिलि अति आनन्द बढ़ाय। जहांलिकिंगे गैया वन टोयिवत देखी अति बहुलाय। कोउगाये ग्वाल गाय बन चरत कोउ धाय लकुट नचाय। आपुहि गहे अवसर बन में कहु हलधर रहे आय। धेनुकबध कीतन अनुपालन अतिहि परम सुखदाय। सूरश्याम तहँ हैं निहारत गारा करो निरखाय २ ॥ अथ बत्सासुर को बध ॥ राग नटनारायण ॥ चलेचन्द बछरु चरावन ग्वाल। वृन्दावन सब छाँड़िके लगाये जहँ बनताल। परमसुन्दर भूमिदेखत हरष मनहिं बढ़ाय। अपुनहूँ मि तहाँ खेलनबछ दिये लगाय। जानिके हलधरआये नहँ बालबछरा पास। रोहिणी नन्दनहिं देखत हरषभये हुलास। तबहि बलराम ग्वालनसों नँदनन्दन के भाय। कहेउ बछरा हाँकिलावहु चलहु अहो कन्हाय। तासहाय तरुदनुज आयो धरे बछराभेष। फिरत ढूंढत श्यामको अति प्रबल बलकोदेख। सबै बछरू घेरिल्याये यह न घेरेजाय। दाऊकहे बालकनि टेरेउ वृषभ तुरत धराय। कहेउमन यह अबहिंमारो उठे बलहि सम्हारि। टेरिलये सब ग्वालबालक आपुगये प्रचारि। आगेहूँ इत का बिडारेउ पूँछ हाथ लगाय। पकरिके भुजमों फिरायो तालकतर आय। असुरलै तरुसों पछारेउ गिरेउ तरु भहराय। तालसों तरुताल लाग्यो उठ्योबन घहराय। बत्सासुर को मारि हलधर चले सबनि लवाय। सूरप्रभु को बीरजाको तिहूँभुवन बढ़ाय ३ ॥ राग सारंग ॥ बार बार हरिकहत सबहिंमन अबहीं रहे सँग चारतधेनु। ग्वालबालको कहुँबनदेखो टेरतनाम लेतसेन। आलसगात जानि मनमोहन बैठे छाँह

करतनधेनु । अकनि रहत कहुं सुनत नहीं कछु नहिं गउरांभत बालक बेनु । तृषावन्त सुरभी बालकगण कालीदह अँचयो जलजाय । निकसिआय सब तटभये ठाढे बैठिगये जहँ तहँ अकुलाय । बन घन ढूंढि श्याम तहँ आये गोसुत ग्वालरहे मुरझाय । मनमें ध्यानकरतही जान्यों काली उरगरहत ह्यांआय । गरुड़त्रासकार आयरहेउदुरि अन्तर्यामी सबके नाथ । अमृतदृष्टि करिचितै सूरप्रभु बोलिउठे गावत हरिगाथ ४ राग नटनारायण ॥ मोहिंबिन कांड़िआयेग्वाल । कहांहुते कहां आयनि कैसेकरे कैसे ख्याल । मुरछिकाहे गिरेधरणी कहा यह जंजाल । मैं यहां जो आयदेखौं परे सबहि बेहाल । आनिअँचयो जल यमुन को तबहिँ गये अकुलाय । निकनिकै जब कूलआये गिरे परे सब आय । प्राणबिन हम सबभयेते तुमहिं दियो जिवाय । सूरके प्रभु तुम जहँ तहँ हमहिलेत बचाय ५ ॥ रागगौरी ॥ बलदाऊकहि श्यामपुकारेउ । आवहु बेगि चलो घरजैये बनहीं में पुनि होत अँध्यारेउ । ल्याये बोलिसखा हलधरको हँसे श्याममुखचाहि । बड़ीदेरमें तुमहिं कन्हैया गाइन लेहु निबाहि । हेरीदेत चले सब बनते गोधनदिया चलाय । सूरदास प्रभु श्यामरामदोउ ब्रजजनके सुखदाय ६ वेमुरलीको टेरसुनावत । वृन्दावन बसि वासरासनिशि आगम जानि चले ब्रजआवत । सुबल सुदामा श्रीदामासँग सखामध्य मोहन छबिपावत । सुरभीगणा सबले आगेकारि कोऊटेरत बेणुबजावत । केकीपच्छ मुकुट शिरभ्राजत गौरीराग मिले सुरगावत । सूर श्यामके ललित बदनपर गोरज छबिकहँ चन्द छिपावत ७ हरिआवत गाइनके पाछे । मोरमुकुट मकराकृतकुण्डल नैन बिशाल कमलते आछे । मुरली अधरधरन सीखतहैं बनमाला पीताम्बरकाछे । ग्वालबाल सब बरण बरण बने कोटिमदन की छबिको बाछे । पहुँचेजाय श्याम ब्रजपुर में घरहिंचले मोहनबल आछे । सूरदासप्रभु दोऊ जननी लेति बलाय बोलि मुखबाछे ८ ॥ राग कल्याण ॥ आनँद सहित सबै ब्रज आये । धन्ययशोदा तेरोबारो हम सब मरत जिवाये । नरबपुधरे देव यहकोऊ आयलियो अवतार । गोकुलग्वाल गाय गोसुतको यहही राखनहार । पयपीवत पूतना निपाती तृणावर्त्त वहिभांति । वृषभासुर वत्सासुर मारेउ बलमोहन दोउ भ्रांति ।

[illegible] जसुमति सों यह औसर तनतें करि उपाय । सूरश्याम [illegible] [illegible] आलस [illegible] ॥ राग नागर ॥ कबहुं उरलीने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सूरश्याम आँखिनि [illegible] कन्हैया । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बुद्धि [illegible] कन्हैया । निरखि मैं अनुराग सुत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । सूर श्याम [illegible] सुमति [illegible] [illegible] कन्हैया १०॥ रागकान्हरो ॥ [illegible] [illegible] बात सुधानी । जागी नाहिं न मिटत काहूकी प्रात भी कबिहूं न जानी । [illegible] [illegible] ब्रजहरिको [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । कहां [illegible] श्याम ऊबरेउ केहि राखे [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] सुख मानुष [illegible] चलत कहानी । [illegible] [illegible] [illegible] बिन जानत सबकी [illegible] । लैतुलाय [illegible] साथ श्यामराम हरषित [illegible] । सुखिगये प्रात अवरालहि लाते [illegible] [illegible] । रोहिणी [illegible] [illegible] अङ्क [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] थारी में [illegible] मोहन रुचिमानी । [illegible] [illegible] [illegible] आँख [illegible] मुख [illegible] [illegible] लैपानी । [illegible] देखि [illegible] [illegible] मुख निरखि सिहानी । रतन जटित [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ११ राग बिलावल ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] मैं [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] निरखति मुखशोभा । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दाही । नयनसिलि बिचारकरति निरखत [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] यशुमति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आवे १२ ॥ रागसूहो ॥ नन्दभवनके भाखो [illegible] [illegible] । प्रातभयो उठि देखिये रवि किरणि उजारे । ग्वाल बाल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] मुखधोइये [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] माता [illegible] [illegible] । देखिबदन [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] वह रूपको [illegible] [illegible] बतावें । सूरश्यामके [illegible] [illegible] [illegible] कहावे १३ ॥ राग बिलावल ॥ उठेनंदलाल [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] नयन [illegible] शोभाकी [illegible] । गोपीजन [illegible] [illegible] [illegible] । नयन [illegible]

चकोरचन्द्र बदनप्रीतिबाढ़ी। माता जलझारीलै कमलमुख पखारेउ। नीरनूर परसकरत आलसहि बिसारेउ। सखा द्वारठाढ़े सबटेरतहैं बन-को। यमुनातट चलहु कान्ह चारन गोधन को। सखा सहित जेंवहु भोजन कछुकीन्हें। सूरश्याम हलधरसंग सखाबोलिलीन्हें॥ १४ भोजन भयो भावते मोहन। तातोई जेंयजाहुगे गोहन। खीर खांड खीचरी सम्हारी। मधुर महेरी गोपनि प्यारी। राय भोग लियो भात प-साय। मूंग ढरहरी हींग लगाय। सदमाखन तुलसीदै तायो। घृत सु-बास सु कचौरीनिनायो। पापरबरीअचार परमशुचि। अद्रकअरु नींबू आतिहूहै रुचि। सूरनकरि तरिसरस तरोई। सेमसींगरी छमकि छ-रोई। भरताभटा खटाई दीनी। भाजीभली भांतिलमकीनी। सागचना सरसा चौराई। सोआ अरु सरसों सरसाई। बथुवा भलीभांति रचिरां-ध्यो। हींगलगाय लायदधि सांध्यो। पोईपरवर साग फरीचुनि। टेंटी ढेंढसि छौंकिलिये पुनि। कंदूरी और ककोरा कौरे। कचरी चारि चचेंड़ा सौरे। बनेबनाय करेला कीन्हें। लोनलगाय तुरततलिलीन्हें। फूलेफूल सहिंजना छौंकि। मनरुचि होयनाजके औंकि। फूलकरील कली पाकरिसम। फरी अगस्ति करी अमृतसम। अरु यहि अंबिली दईखटाई। जेंवतयटरसजातलजाई। पेठाबहुत प्रकाररानिकीन्हें। तिनतो सबै स्वाद हरिलीन्हें। खीरा रामतुरैया तामें। अरु बिन रुचि अंकुर जियजामें। सुंदररूप रतालूराती। तरिहैं लीन्हेंअबहीं ताती। ककरी कचरा अरु कचनारी। सरस निमोंननि स्वादसँवारी। कयुकभांतिकेरा करिलीनो। दै करोव हरदीरँग भीनो। बरीबरिल अरुबराबहुतविधि। खारे खाटे मीठे पयनिधि। पानी नारायती पकौरी। डभकौरी मुंगकी सुठिसौरी। अमृत इडरहरहे रससागर। बेसनसालन अधिको नागर। खाटी कढ़ी विचित्र बनाई। बहुतबार जेंवत रुचि आई। रोटी रुचिर कनिक बेसनिकरि। अजवाइन सेंधोमिलयोधरि। अबहिं मँगाकरतुरत बनाई। जे भजिभजि ग्वालन सँगखाई। मांड़ो मांड़ि दुनैरे चुपरो। बहु घृतपाय आपुहि उपरो। पूरी सपूर कचौरी कौरी। सदल सउज्ज्वल सुंदर सौरी। लुचई ललित लापसीसोहै। स्वादसुबास सहज मनमोहै। साल पुवा माखनमथि कीन्हें। ग्राह ग्रसित रवि सामर लीन्हें। लावन

लाडू लागत नीके। सेवसुहारी घेवरघीके। गूंझागूंदे गोलमसूरी। मेवा मिले कपूरनपूरी। श्राखसस सुन्दर सजल अदरसो। ऊपर कनी अजनु जनु बरसो। बहुत जलेब जलेबी बोरी। नाहिंन घटत सुधाते थोरी। सेवत हरयिहोत हैं सभी। मनहुं बुदबुदा उपजे सभी। फेरीधुरी मिली पयसंगा। मिश्री मिश्रितभइ यकरंगा। साज्यो दहेउ अधिक सुखदाई। ता ऊपर पुनि मधुर मलाई। खोवाखोई अवटि कै राख्यो। सुहै मधुर मीठो रसचाख्यो। बासौंधी सिखरनि अतिसौंधी। मिलेमिरचि मेटति चकचौंधी। कांढि छबीली धरीधुंगारी। झरहे उठत झारकी न्यारी। इतनेयतनयशोदाकीनों। तबमोहन बालकसँगलीनों। बैठेआय हँसत दोउभैया। प्रेममुदित परुसति है मैया। थारकटोराजटित रतनके। भरि सब सालन बिबिध यतनके। पहिले पनवारो परुसायो। तब आपुनकर कौर उठायो। जेंवत रुचि अधिको अधिकैया। भोजनबहु बिसरत नहिंगैया। शीतल जल कपूर रस रचयो। सो मोहन निजकर रुचि अँचयो। महरि मुदित मन लाड़ लड़ावै। ते सुख कहां देवकी पावै। धारियाहि गडुआ जल ल्याई। भरेउ चुलू खरिका लै आई। पीरेपान पुराने बीरा। खातभई द्युति दांतनि हीरा। मृगमद कनकपूर करलीनों। बांटिबांटि ग्वालनकोदीनों। चन्दन और अरगजाआन्यो। अपने कर बलके अगवान्यो। ता पाछे आपुन हुलरायो। उबरेउ बहुत सखनिपुनिपायो। सूरदास देख्यो गिरिधारी। बोलि दई हँसि जूठन थारी। यहजेंवनार सुनै जो गावै। सो निजभक्ति अभयपद पावै

१५ देखिसखी ब्रजते बनजात। रोहिणी यशुमति सुतकी छबि और गौर श्यामहरि हलधर गात। नीलाम्बर पीताम्बर ओढे शोभा कछू कही नहिंजात। युगलजलद युगतडित मनहुँमिलि अरस परस जोड़त है नात। शीशमुकुट मकराकृत कुण्डल झलकत बिम्बकपोल यहि भांति। मानहुँ जलद युगलरबि तापर चन्द्रधनुषकी कांति। कटिककनी करलकुट मनोहर गोचारनचले मन अनुमानि। ग्वालसखाबिच श्रीनँदनन्दन बोलत बचन मधुर मुसकानि। चितैरहीं सबब्रजकी युवती आपुसहीमें करत बिचार। गोधन वृन्दलिये सूरजप्रभु वृन्दावन गये करत बिहार १६ ॥ अथ बकासुर बध॥ राग सारंग ॥ बन बन फिरत चरावत

[illegible]॥ धुप॥ प्रात [illegible] बहुसङ्ग बाल [illegible] । [illegible] आनि मोहन [illegible] सरतदेत । बोलिलावहु सुरभि [illegible] सब चले चलुन आतुरेत । सुनतहीं पुंजभांति ल्याये गायकरी यकठेत । हेरी देदे ग्वाल बालक [illegible] अनुनत गेत । बकासुर रचिरूपमाया रह्यो छल करि आय । चोंच यक पृथ्वी लगाई यक अकाश समाय । आये बालक आतुरैले पाछेआगे धाय । श्यामसों ले कहनलागे आगे एक बलाय । गिलहि आवत सुरभिलीन्हें ग्वाल गोसुतसङ्ग । कबहुँ नाहिं यहिभांति देख्यो आजुकैसो रङ्ग । मनहिं मन तब कृष्ण कह्यो यह बकासुर जो विहङ्ग । चोंचधरि बिडारिडारौं पलकमें करौंभङ्ग । गिरदरि चले गोपाल आगे बकासुरके पास । सखा सबमिलि कहनलागे तुम न जिय की आश । अजहुँनहीं डरात मोहन बचे कितनेगांस । तब कहेउ हरि चलो सबमिलि मारि करहिं बिनास । चले सब मिलि जाय देख्यो अगाकतन विस्तार । इतधरणि उत [illegible]सके बिच गुफा को आकार । बैठि बदन विदारिडारो अतिभये बिस्तार । सरल असुर विचार पारो नाको नन्दकुमार । सुनत धुनि सब ग्वाल डरपे अब न लहें श्याम । कहांहि बरजत गयो देखो किये ऐसे काम । देखि ग्वालन विकलता बन-काहि उठे बलराम । बकासुरको बदनफाड़्यो अबहि आवतश्याम । सखा तब हरिटेरि लीन्हें सबै आवहु धाय । चोंच फारि-बकासुरहि हारेहु तुमहुँ करहु सहाय । निकट आये गोपबालक देखि हरि सुखपाय । सूरप्रभुके चरित अगणित नेतिनिगम न गाय २७ ब्रजमें को उपज्यो यहभैया । सङ्गसखा सबकहत परस्पर इनके गुण अगमैया । जबतेंब्रज अवतार धरेउ इनको नहिं घातकरैया । कितक बातयह बका बिदारेउ धनिजसुमति जिनजैया । तृणावर्त पूतनापछारी तब अतिरहे नन्हैया । सूरदास प्रभुकी यहलीला हम कत जिय पछितैया २८॥ राग धनाश्री॥ बकाबिदारि चले ब्रजकोहरि । सखा सङ्ग आनन्द करत सब अँग अँग कामधातु चित्रितकरि । बनमाला पहिरावत श्यामहिं बार बार अँकवारि भरतभरि । आपुसमांझ परस्पर भेंटत ओर जातबलिहारि । सूरदासप्रभु तुम चिरजीवो ब्रजजनके सुखकारि । ग्वाल धरत भरिकंस निपातक गोकुल करये उधारि २९ ॥ रागगौरी॥ सन्ध्यासमय

गोधन। मनमोहन ब्रजबनते बनिआवत। गुंजाउर बनमाल मुकुटविभार ... । कोटि किरणि मणि मुख परकाशित उडुपति कोटि लजावत। ... सबबदन निहारत उर आनँद न समावत। ... खौरि ... देखतही मनभावत। सूरश्याम नागर नारिनको बासर विरह नशावत २० ॥ रागकान्हरो॥ आजु बने बनते ब्रज आवत। नानारङ्ग सुमनकी माला नन्दनन्द उरपर छबि पावत। सङ्ग गोप गोधन गणलीन्हें नानाभांति कौतुक उपजावत। कोउ गावत कोउ नृत्य करत कोउ कोउ घंट कोउ करताल बजावत। रांभति गाय बच्छहित सुधिकरि प्रेमउमँगि थनदूध चुचावत। यशुमति बोलि उठी हरषितह्वै कान्हर धेनु चराये आवत। इतनो कहत आयगये मोहन जननीदोऊ हिये लैलावत। सूरश्यामके कृत यशुमतिसों ग्वाल बाल कहि प्रकट सुनावत २१ ब्रजबालक सबजाय तुरतहीं सहरि राहरिके पाँयपरे। कैसे पूत अन्धो जगमाहीं धन्यकोख जेहि ऐसा जन्यरे। गाय लिवाजगाऐ वृन्दाबन चरतचली यमुनातट हेरि। असुर एक वत्सरूप धरिरह्यो बैठ्यो तीरआय मुखघेरि। चोंचएक पुहमी करिराखी एक रहेउ सो गगन लगाय। इम बरजत पहिले हरिखायो बदनचीर पल माहिं गिराय। सुनत नन्दयशुमति चकृतचित सुनतचकृत गोकुल नर नारि। सूरदासप्रभु मन हरिलीन्हों तबजननी भरिलइ अँकवारि २२ रागगौरा॥ तुमकत गाय चरावन जात। पिता तुम्हारो नन्दमहर सो जाके मां यशुमति सी मात। खेलतरहौ आपने घरमें माखनदधि भावै सो खात। अमृतबचन कहौ मुख अपने रोमरोम पुलकित सबगात। अब काहूके जाहु कबहुँ जनि आवतिहैं युवती इतरात। सूरश्याम मेरे नयननि आगेते कबहूँ कतहि जातहो तात २३ ॥ रागसारंग॥ मैया हौंन चरैहौं गाय। सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों मेरे पायँ पिरांय। जो न पत्याय पूंछि बलदाउहि अपनी सौंहदिवाय। यहसुनि माय यशोदा ग्वालन गारी देत रिसाय। मैं पठवति अपने लरिकाको आवै मन बहराय। सूरश्याम मेरो अति बालक मारत ताहि रेंगाय २४॥

अथ सूरसागर माखनचोरी राग कल्पद्रुम

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

रागधनाश्री ॥ मथुरा जातिहौं बेंचन दहियो। मेरेघरको द्वारसखीरी तबलौं देखे रहियो। दधि माखन द्वैमाटभरेहैं तोहिंसौंपि हौंसहियो। अवर नहींयाब्रजमें कोऊनन्दको आवत लहियो। बाकेबचन सुनत हैं बैठे मनहींमन दे बहियो। सूरदास लौं गईन ग्वालिनि कूदिपरे दैधहि-यो १ ॥ रागनट ॥ देख्यो जायश्याम घरभीतर। अबहीं निकसि कहत भइ सोईफिरि आई तुम्हारेडर। सखा साथके चमकिगये सब गहेउ श्याम करधाइ। औरनिजानिजानमें दीन्हेंतुमकहां जाहुपराई। बहुत अचगरी करत फिरतहौ मैं पायेकरि घात। बांहपकरि लैचली मह-रिपै करतरहत उतपात। देखौ महरि आपने सुतको कबहूं नाहिं न प-त्यात। बैठे श्याम भव नहीं अपने चितैचितै पछितात। बांह पकरि तू ल्याई का को अतिहि बेशरम ग्वारि। सूरश्याम मेरे आगे खेलत यौबन मद मतवारि २ रही ग्वालिनि हरिको मुखचाहि। कैसेचरित कियेहरि अबहीं बार बार सुमिरति करताहि। बांहपकरि घरते मैं ल्याई कहांचरितकीन्हें हैं श्याम। जात न बनै कहि न कछुआवै क-हति महरितू ऐसीबाम। जाहिग्वारि यौबनमदमाती झूंठदोषलगावति याहि। सूरदास प्रभुकेगुण ऐसे बुद्धिकरी तबजीतीताहि ३ ॥ रागगौरी ॥ श्यामगये ग्वारिघरसूने। माखन खाय डारिसब गोरस बासन फोरि कीनेदूने। बड़ो माट यक बहुत दिननि कोताहिकरेउ दशटूक। सो-वतलरिकनि छिरकि महीसों हँसतचले दै कूक। आयगई ग्वालिनि त्यहि अवसर निकसत हरि धरिपाये। देखे घर बासन सबफोरे दही दूध ढरकाये। दोउभुजधरिगाढ़े कर लीन्हें गई महरिके आगे। सूर-दास अब बसै कौन यहां पतिरहिहै ब्रजत्यागे ४ ॥ राग बिलावल ॥ ऐसेहाल मे घरमें कीन्हें हौं लैआईहौं तुमहिंपै पकरि के। फोरे सबबासन घर के दधि माखन खायो जो उबरेउ सो डारेडारिसकरिके। लरिकाछि-रकि महीसों देखौ उपज्यो पूत सपूत महरिके। बड़ो माट घरधरेउहो

थुनानि को टूकटूक कियो सखनि पकरि के। पारि सपाट चलत तब पाये हैं ल्याई तुमहीं पै पकरिके। सूरदास प्रभु ऐसे राखौ यशोदा जैसेरखिये राजमद को जकरिके ५ रागकान्हरो॥ करत कान्ह ब्रज घरनि अचगरी। खीजत महरि कान्हसों फिरि फिरि उरहन ले आवतिहैं सिगरी। बड़ेबापको पूत कहावत हम वै बासबसत यकनगरी। नन्दहु ते येबड़े कहेहैं फेरि बसैहैं यहब्रज नगरी। जननी के खीजत हरि रोये झूँठहि मोहिं लगावत धगरी। सूरश्याम मुख पोंछि यशोदा कहति सबै युवतीहैं लँगरी ६ ॥रागसारंग॥ नितहि नितहि उठि आवतिसबभोर। मेरे बारेहि दोष लगावति ग्वालिनि यौवन जोर। दूध दहीमाखनके कारण कबगयो तेरी ओर। धनमाती इतराती डोलति सकुचनहींकरे थोर। मेरोकन्हैया तनकसो तूहै कुचनिकठोर। तेरेमनको यही कौनहैं पायो आजकटकको छोर। कापर नयन चलावति आवति जाति नहीं ब्रज तिनको तोर। सुनहुसूर ग्वालिनिकी बातैं बसति कान्ह जीवनधन मोर ७॥ रागरामकली॥ अपनोगांव लेहु नँदरानी। बड़ेबापकी बेटी ताते पतहिं भलेपढावति पानी। सखाभीर लैपैठतघरमें आपखायतौसहिये। मैं जबचली सामुहें पकरन तबके गुण कह कहिये। भाजिगये दुरिदेखत कतहूं मैं घरपौढ़ी आई। हरे हरे बेनीगहि पाछेबांधेपाटीलाई। सुनिमैया याकेगुण मोसों इनमोहिंलयोबुलाई। दधिमेंपरीसेंतकीचीटीं मोपै सबैकढ़ाई। टहल करत याके घरकी मैं यहपतिसँग मिलि सोई। सूरबचन सुनिहँसी यशोदा ग्वालरही मुंहगोई ८ ॥रागसारंग॥ महरि तुम चहत कछुब्रज और। बातएक मैं कहीकिनाहीं आपु लगावति भोर। जहां बसे पतिनहीं आपनी तजन कहेउ सोठौर। सुत के भये बधाई पाईलोगनि खेदत होर। कान्हपठाय देतिघरलूटनकहत करेउ याठौर। ब्रज घर समुझि लेहुमहरिजो कहतिकियेकरजोर। नितप्रति हानि कहांलौं सहिये कहो महरि तुमबात। और कहा कहौं सूरश्यामके सबगुण कहत लजात ९॥ रागनट॥ लोगनिकहति भुकति तूबौरी। दधिमाखन गठबन्ध दे राखति करत फिरत सुतचोरी। जाके घरके हानिहोत नितसो नहिं आनि कहैरी। जाति पांतिके लोगनि देखत और बसैहैं नैरी। घरघर कान्हखानको डोलत अतिहि कृपिणता

तैहैरी । सूरश्यामको जब जोभावै सोई तबहीं तूदैरी १० ॥ रागरामकली ॥
सकारि तोहिं दही छापियामें पाई । दूधदहीहै निधिको तीनों छलक
धरत छुपाई । बालक बहुत नहीं री तेरे एकै कुंवर कन्हाई । सोऊतो
घरहीघर डोलत माखनखात चुराई । वृद्धवैस पूरे पुन्यनते तैं बहुतै निधि
पाई । ताहूके खैबे पीबेको कहाइती चतुराई । सुनहु न वचन चतुरनागर
के यशुमति नन्दसुनाई । सूरश्यामको चोरीकेमिस देखनकोयह आई ।
११ ॥ राग नट ॥ अनत सुत गोरसको कतजात । घरसुरभी नवलाख दु-
धारी और गनीनाहिँ जात । नितप्रति सबै ओरहनकेमिस आवतहैं उठि
प्रात । अबला ते अपराध लगावति बिकटबनावति बात । निपटनिधाक
निबादति सन्मुख सुनि ग्वाहिं नन्दरिसात । मोसों छापिया कहत तेरे
घर ढोटा कृतअघात । करि मनुहारि उठाय गोदलै बरजत सुतको मात ।
सूरश्याम नित सुनत उरहनो दुखपावत तेरोतात १२ ॥ राग धनाश्री ॥ प-
हिलो माखन मांगिलियो यशुमतिसों । माता सुनि तुरतहि लै आई
देखि खवाय मगनमन रतिसों । मैया मैं अपने कर खैहों बरिदे मेरे
हाथ । माखन खात चले उठि खेलन सखाजुरे सबसाथ । मथुरा जात
ग्वालिनी देखी घरचिलई हरिआय । सूरश्याम ता घरके पाछे दौरि
रहे अरगाय १३ ॥ राग धनाश्री ॥ भाजिगयो मेरो भाजनफोरि । लरिका
सहस एकसँग लीन्हें नाचत फिरत सांकरी खोरि । मारग तौ काहु
चलन न पावै धावत गोरसलेत अजोरि । सकुच न करत फगुआ खेलत
तारीदेत हँसत मुखमोरि । बातकहौं तेरेढोटाकी सब ब्रजको बँध्योप्रेम
की डोरि । दोनासों पहिनावत शिर पर जो भावै सो लेत हैं छोरि ।
आप खाय सो सब हम मानो औरनि देत सिकहरे तोरि । सूर सुतहि
बरजो नँदरानी अब तोरत चोली बँदडोरि १४ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम
सब भाजन फोरिपराने । हांकदेत पैठत पैलाने नेक न मनहिँ डराने ।
सींके छोरि मारि लरिकनको माखन दधि सब खाई । भवन मच्यो
दधिकांदो लरिकन रोवत पाये जाई । सुनि यशुमति सबहीके लरिका
तेरोसौं कहुँ नाहिं । हारनि वाटनि गलिनकहूं कोउ चलि नहिं सकत
डराहिं । कबहु आयेको खेल कन्हैया सब दिन खेलत फाग । रोकि
रहत गहि गली सांकरी टेढीबांधत पाग । बारेते सुत ये ढँगलाये मनहीं

मनहिँ सिहाति। सुनहु सूरग्वालिनिकी बातैं सकुचि महरि पछिताति १५ ॥ राग सारंग ॥ कन्हैया तू नहिँ मोहिँ डरात। षटरस धरेउ छाँड़िकत परघर चोरी करि करि खात। बकत बकत तोसों पचिहारी नेकहु लाज न आई। ब्रजपरगन सिकदार महर तू ताकी करत नन्हाई। पूत सपूत भयो कुलमेरे अब मैं जानी बात। सूरश्याम अबलौं तोहिंबकसी तेरी जानीघात १६ ॥ रागगौरी ॥ सुनुरी ग्वारि कहौं यक बात। मेरी सों तुमयाहि मारियो जबहीं पावहु घात। अब मैं याहि जकरिबाँधौं गी बहुतै मोहिं खिझाई। साँटिनमारि करौं पहुनाई चितवत बदन कन्हाई। अजहूं मानुकहेउ करिमेरो घरघर तू जनिजाहि। सूरश्याम कह्यो कहूं न जैहौं माता मुखतन चाहि १७ ॥

*

अथ सूरसागर यमलार्जुन रागकल्पद्रुम ॥

अथ दामोदर लीला ॥

*

श्रीकृष्णायनमः ॥

रागबिलावल ॥ ऐसीरिसमें जो धरिपाऊं। कैसे हालकरौं धरिहरिके तुम को प्रकट दिखाऊं। सँटिया लिये हाथ नँदरानी थरथरात सब गात। मारेबिना आजुजो छाँड़ौं लागे मेरेतात। यहि अन्तर ग्वालिन यक औरै धरेबाँह हरिल्यावति। भली महरि सूधो सुतजायो बोली हार बतावति। रिसमेंरिसअतिही उपजायो जानिजननि अभिलाय। सूरश्याम भुजगहे यशोदा अबबाँधौंकहिभाय १ ॥ रागधनाश्री ॥ यशुमति रिसकरि रज्जुअकरषे। सुतहि क्रोधदेखि माताको मनहीं मन अति हरषे। उफनत क्षीर जननि करि दुचिती यहि बिधि भुजा छुड़ायो। भाजन फोरि दही सब डारेउ माखन मुखलपटायो। लै आई जेवरि अब बाँधौं मरम जानि न बँधावै। आंगुरद्वै घटिहोत सबनि सों पुनि पुनि और मँगावै। नारदशाप भये यमलार्जुन इनकोअबजु उधारौं। सूरदासप्रभु कहत भक्तहित जन्मजन्म तनुधारौं २ देखि सखी यशुदा बौरानी। घरघर डोलतिलेतिदाँवरी बाँहगहे हरिकी बिततानी। जा-

नत नाहिं जगतपति माधव जिनते सब आपदा नशानी। जाकोनाम सकति पुनिताकी ताहिदेखि बांधतनँदरानी। अखिल ब्रह्मांडउदररहे जाके जिनकी ज्योतिजलथलहुममानो। मुखजम्हात त्रिभुवन दिखराये। अचरज कथा न जात बखानो। ब्रह्मादिक सनकादि शुकादिक भ्रमत रहत इनहूं नाहिंजानी। सूरदासस्वांहिं वेसिये लागति जो कछु कही गर्गमुखबानी ३ बांधौं आजु कवनतोहिं छोरे। बहुत लँगरयो कीनींमोसों भुजगहिरज्जुऊखलसोंजोरे। जननीअतिरिसजानि बँधाये चितै बदन लोचन जलधोरे। यह सुनिब्रजयुवतीसबधाईं कहति कान्ह अब क्यों नहिं छोरे। ऊखलसों गहिबांधि यशोदा मारनको सांटीकर तोरे। सांटीदेखि ग्वालिपछितानी बिकलभई जहँ तहँ मुखमोरे। सुनहु महरि ऐसी न बूझिये सुतबांधति माखनदधिथोरे। सूरश्यामको बहुत सतायो चूकपरी हमतेयहभोरे४॥ रागबिलावल ॥ यशोदा तेरो मुख हरि जोवे। कमलनयन हरि हिचकिन रोवै बंधन छोरिज सोवै। जो तेरो सुतखरो अचगरो अपनीकोखिको जायो। कहाभयो जो घरकेढोटा चोरीमाखनखायो। तुरतदोहनी दहेउजमायो जावन पूजन पायो। ता घरदेवपितरकाहेको जो घर ऐसोजायो। जाकोनामलेत भ्रमछूटैकर्म फन्दसब काटे। सो हरि प्रेमजेवरी बांधे जननि सांटलये डाटे। सूरदास प्रभु भक्तहेत ते देहधरतही आये। दुखितजानि दोउसुत कुबेरके ताहित आपुबँधाये ५ ॥ रागसारंग ॥ माईनेकहु न दरद करतिहिचकिन हरि रोवै। बज्रहुते कठिनहियो तेरोहै जसोवे। पलना पौढ़ाहि जिनहिं बिकट बाउकाटे। उलटे भुज बांधि तिनहिं लकुट लिये डाटे। नेकहु न थकित पानि निरदई अहीरी। अहो नन्दरानी सीख कौन पै लहीरी। जाको शिव सनकादिक सदा रहत लोभा। सूरदास प्रभु को मुख निरखि देखि शोभा ६ रागबिहागरो ॥ कुंवर जल भरि भरि लोचन लेत। बारिज बदन बिलोकि यशोदा कतरिस करति अचेत। छोरि उदरते दुसह दावरी डारिकठिन करबेत। कहि धौं तोहिं कैसे करिआवत शिशु पर तामस वेत। मुखआंसू उरमाखनके फणनिरखि बदन छबिदेत। मानहुँ स्रवत सुधानिधि मोती उडुगण अवलि समेत। सरबस तन मन धन न्योछावरि कीजै सूरश्यामके हेत। नाजानौं केहि

पुराय प्रकटभये याहि ब्रजनन्द निकेत ७ ॥ राग नट ॥ हरिके बदनतन धौं चाहि। तनक दधिकारण यशोदा इतोकहा रिसाहि। लकुट के डर डरत जैसे सजल शोभित डोल। नील नीरज दलमलो अलि ओसकन कृतलोल। बातकेबश मालजैसे प्रातपङ्कजकोश। नमितमुख बसिअधर सूचत सकुचमें कछुरोस। किंतिक गोरस हानिजाको करतिहौ अपमान। सूरप्रभुके रोम ऊपर वारिये तनप्रान ८ मुखछबि निरखि हो नन्दघरनि। शरद निशिको अंशअगणित इन्दुआभा हरनि। ललित श्रीगोपाल लोचनलोल आंसू ढरनि। मनहुँ वारिज विथकि विभ्रमपरे परबश परनि। कनक मणिमय जटितकुण्डल ज्योति जगमग करनि। मित्रलोचन मनहुँ आये तरलगतिद्वै तरनि। कुटिल कुन्तल मधुपमिलि मानों किया चाहत लरनि। बदनकांति बिलोकि शोभा सकै सूर न बरनि ९ ॥ राग धनाश्री ॥ कहौतो माखन ल्याऊँ घरते। जा कारण तू छोरति नाहिंन लकुट न डारति करते। सुनहि महरि ऐसी न बूझिये सकुचि गयो मुखडरते। मनहुँ कमल दधिसुत समयोंतकि फूलत नाहिं न सरते। ऊखललाय भुजाधरि बांधे मोहन मूरति बरते। सूरश्याम लोचन जलबर्षत जनुमुक्ता हिमकरते १० काहेलागी बाढ़ि बाढ़ि अब बात। ढोटा मेरो तुमहिं बँधायो तनकहि माखन खात। अब मोहिं माखन देतिमँगाये मेरेघर कछुनाहिं। उरहन कहिकहि सांझसवारे तुमहीं बँधायो याहि। रिसहीमें मोको गहिदीनो अबलागी पछितान। सूरदास अब कहति यशोदा बूझियो सबको ज्ञान ११ सुचित दै चितै तमैतन ओर। सकुचित शीत भीत ज्यों जलरुह तुव्कर लकुट निरखि सखिघोर। आनन ललित स्रवत अँसुवन अति अरुण चपल लोचन की कोर। डारत मनो मंडुलके सुधाविधु मण्डलते भरिउभय चकोर। कोमलनालते कलित युगलभुज ऊखलबांधे दाम कठोर। मनहुँ भुजङ्ग भिरत आंबोपर अरुझिरहे कंचुरि गरजोर। लघु अपराध देखि मन शोचतहैं समकुलिश कठिन उरतोर। सूरकहा सुतसों इतनी रिस बिलखति कहति न माखन चोर १२ चितै धौं कमल नयन की ओर। कोटिचन्द्र वारौं मुखछबिपर येहैं साहकि चोर। उज्वल अरुण असित दीसतहैं दोउ नयननि की डोर। मानहुँ सुधापान के कारण बैठे

निकट चकोर । काहे रिसाति यशोदा इनसों कौन ज्ञानहै तोर । सूर श्याम बालक मनमोहन नाहिँन तरुणकिशोर १३ कबके बाँधे ऊखल दाम । कमलनयन बाहिरकरि राखे तू बैठीसुखधाम । हैानिरदई दया कछुनाहीं लागिरही घरकाम । देखि क्षुधाते मुख कुम्हिलानो अति कोमल तनश्याम । छोरहुबेगि बड़ो बिरिया भई बीतिगये युगयाम । तेरीत्रास निकट नहिं आवत बोलि सकत नहिँराम । जन कारणभुज आय बँधाई बचनकियो अभिराम । तादिनमें यह प्रकट सूरप्रभु दामोदरसो नाम १४ यशोदातेरो भलोहियो है माई । कमलनयन माखन के कारण बांधे ऊखल लाई । जो सम्पदा देवमुनि दुर्लभ स्वपनेहुँ दे न दिखाई । याहीते तू गर्वभरीहै घरबैठे निधिपाई । तवकाहूको सुत रोवत सुनिकै दौरिलेति हियलाई । अब काहे घरके लरिकासों करति इती जड़ताई । बारम्बार सजल लोचनभरि रोवत कुँवरकन्हाई । कहा करौंबलिजाउँ छोरती तेरीसौंह दिवाई । जो मूरति जलथलमें व्यापक निगम न खोजतपाई । सो यशुमति अपने आंगनमें दै करताल नचाई । सुरपालक सबअसुर सँहारक त्रिभुवन जाहि डराई । सूरदास प्रभु की यह लीला निगमनेति नितगाई १५ ॥ राग नट ॥ देखुरी नँदनन्दनओर । त्रासते तनत्रसितभे हरितकत आनन तोर । बारबार डेरात तोको बरण बदनहिंथोर । मुखरमुख दोउनयन ढारत क्षणहिँक्षणकबिछोर । सजल चपलकर नयनकोपल अरुण ऐसे डोल । रसभरे अम्बुज भीतर भ्रमतजनु भयभोर । कछुक करुणाकर यशोदा कहतिनिपटनिहोरि । सूरश्याम बिलोकि यशुमति कहति माखन चोरि १६ तबते बांधे ऊखल आनि । बालमुकुन्दहि कततरसावति अति अँगकोमलजानि । प्रातकालते बांधे मोहन तरणि चढ्यो मधिआनि । कुम्हिलानो मुख चन्द्र दिखावति देखहुधौं नँदरानि । तेरी त्रासते कोउन छोरत अबछोरहु तुमआनि । कमलनयन बांधेई छांड़े तुमबैठी मनमानि । यशुमति के मन सुखकारणको आपुबँधावति पानि । यमलाअर्जुन मुक्तकरनको सूरश्याम यह ठानि १७ कान्हसों आवत क्यों न सात । लै लै लकुट कठिन अपनेकर परसति कोमलगात । वे देखियो तू चुवतनयन ते यों राजत उरजात । मनोमुक्ता चुगतते खञ्जनचोंच फटी न समात । डरनि

डोल डोलतहै यहिबिधि निरखि सुमुख सुनिबात। मनों सूर भृङ्गशंक शरासन उडिबेको अकुलात १८॥ राग रामकली॥ यशोदा यहि न बूझिये काम। कमलनयनकी भुजा देखितें बांधे हैंदाम। पुत्रहुते प्यारो कोउ हैरी कुलदीपक मणिधाम। देखहु चन्द्रवदन कुम्हिलानोहै निरमोही बाम। तू बैठी मन्दिर सुखछहियां सुतदुख पावतघाम। अतिसुकुमारि मनोहर मूरति ताहि करति तू ताम। यहिहै सब ब्रजको जीवन सुख पावतिहैं लै नाम। सूरदासप्रभु भक्तनि बशहैं सब जगके बिश्राम १९ राग धनाश्री॥ ऐसी रिसतोको नँदरानी। भली बुद्धि तेरेजिय उपजी बड़ी बैस अबभई सयानी। ढोटा एकभयो कैसेहुँकरि कौन कौन कर बर बिधिबानी। करम करम करि अब लै उबरेउ ताको मारि पितर दे पानी। को निरदई रहै तेरेघर को तेरेसँग बैठआनी। सुनहु सूरकहि कहि पचिहारीं युवतीचलीं घरन बिरुझानी २०॥ राग सारंग॥ हलधर सों कहि ग्वालि सुनायो। प्रातहिते तुम्हरो लघुभैया यशुमति ऊखल बांधि लगायो। काहू के लरिकहि हरि मारेउ भोरहि आनि रोवत गुहिरायो। तबहींते बांधे हरिबैठे सो हम तुमको आनि जनायो। हम बरजी बरज्यो नहिं मानति सुनतहिँ बल आतुर ह्वै धायो। सूरश्याम बैठे ऊखललगि माताडरते न अतिहि त्रसायो २१ यह सुनिकै हलधर तहँआये। देखिश्याम ऊखलसों बांधे तबहीं दोउ लोचनभरि आये। मैं बरज्यों कैबेर कन्हैया भलीकरी दोउहाथ बँधाये। अजहूं छांड़हुगे लँगरायो दोउकर जोरि जननिपै आयो। श्यामहिं छोरि मोहि बरु बांधो निकसत सगुण भलेनहिं पायो। मेरो प्राण जीवनधन कान्हा तिनकेभुज मोहिं बँधे दिखायो। मातासों कहाकरों ढिठाई सोयरूप कहि नाम सुनायो। सूरदास तबकहति यशोदा दोउभैया तुमएक हौ आयो २२ काहेको इतनो हरिबास्यो। सुनुरीमैया मेरे भैया कितनो गोरस नास्यो। जबरज्जु सों करगाढ़े बांधे छर छर मारीसांटी। सूने घर बाबानंद नाहीं ऐसे करि हरि डांटी। और नेकुछरि देखहि श्यामहिं याको करौं निपात। तू जो करै बातसो सांची कहाकहौं तोहिं मात। गाढ़ेबदत बास सब हलधर माखन प्यारो तोहिं। ब्रज प्यारो जाको मोहिंगारो छोरति काहे नजोहि। काकोब्रज माखनदधिकाको

कोहिबांधेजकरि बनाय।सुनतसूर हलधरकीबाणीजननी सेजुबताय२३ सुनहु बात मेरी बलराम। करन देहु मोहि इनकी पूजा चोरी प्रकटत नाम। तुमहीं कहो कमी काहेकी नवनिधि मेरे धाम। मैं बरजौं सुत जाहु कहूँ जिनि कहिहारी निशियाम। तुमहुँ मोहिं अपराध लगायो माखन प्यारो श्याम। सुनिमैया तोहिंछांड़िकहौं कहि को राखैतेरे नाम। तेरीसों उरहनलै आवति झूंठी ब्रजकी बाम। सूरश्याम अतिही अकुलाने कबबांधेहैं दाम २४ कहाकरों हरि बहुत खिझाई। सहिन सकी रिसही रिस भरिनई बहुतै ढीठ कन्हाई। मेरो कहेउ नेकु नहिं मानत करत आपनीटेक। भोरहोत उरहन लै आवत ब्रजकी बधू अनेक। फिरत जहाँ तहँ धूम मचावत घर नहिं रहत सवोक। सूरश्याम त्रिभुवनको कर्त्ता यशुमति कहति अनेक २५ निरखि श्याम हलधर मुसुकाने। कोबांधै कोछोरै इनको यहमहिमा येहिपै जाने। उतपति प्रलय करतहैं येई शेष सहस मुखसुयश बखाने। यमलार्जुन तोरि उधारण कारण करत आप मन माने। असुर सँहारन भक्तहि तारन पावन पतित कहावत बाने। सूरदासप्रभु भावभक्तके अतिमति यशुमति हाथबिकाने २६ ॥ राग रामकली ॥ यशुदा ऊखल बांधेश्याम। मन मोहन बाहरही छांड़े आपुगई गृहकाम। दह्यो मथति मुखपै कछु बकरति गारी दै दै नाम। घरघर डोलत माखन चोरत षटरस मेरेधाम। ब्रजके लरिकन मारि भजतुहैं जाहु तुमहुँ बलराम। सूरश्याम ऊखल सों बांधे निरखति ब्रजकी बाम २७॥ राग गूजरी ॥ यशोदा कान्हहूंते दधिप्यारो। डारिदेहि कर मथति मथानी तरसत नन्ददुलारो। दूध दही माखन लै वारै जाहि करति तू गारो। कुम्हिलानो मुखचन्द्रदेखि छवि काहेन नेक निहारो। ब्रह्मासनकशिव ध्यान न पावत सो ब्रजगेयनि चारो। सूरश्यामपर बलिबलि जैये जीवनप्राण हमारो २८॥ रा.धनाश्री॥ यशुमति किन यह सीखदई। सुतहिबांधि तू मथति मथानी ऐसी निठुरभई। हरेबोलि युवतिनको लीन्हों तुमसब तरुणिनई। लरिकन त्रास दिखावत रहिये कत मुरझाय गई। मेरे प्राणजीवन धन माधव बांधे बेर भई। सूरश्यामको त्रास दिखावति तुमकहा कहत दई २९ यशोदा तोहिं बांधत क्यों आयो। कसकयो नहीं नेकु मन तेरो

याहीको हौं जायो। शिवबिरंचि महिमा नहिं जानै सोतो गाय संग आयो। तातें पहिचानत नाहिंनकौन पुण्यते पायो। इतनीकहि उस कारत बाँहँगोरसहित बलकायो। कहाभयो जो घरके लरिका चोरी माखन खायो। अपनेकरकरि बन्धनकोरो प्रेमसहित उरलायो। सूर सुबचनमनोहर कहिकहि अनुजमूल बिसरायो ३०॥ राग आसावरी॥ जाहु चली अपने अपने घर। तुमहीं सबमिलि ढीठकरायो अब आई बंधन कोरनबर। मोहिंअपने बाबाकी सौंहै कान्हहिअब न पत्याऊं। भवन जाहु अपने अपने सब लागतिहों मैं पाऊं। मोको जिनि बरजो कोउ युवती देखोहरिके ख्याल। सूरश्याम सों कहति यशोदा बड़ेनन्द के लाल ३१ ॥ राग धनाश्री ॥हरिचितये यम लार्जुन तन। अबहीं आजु इनहिं उधारौं येहैंमेरेनिजजन। इनकेहेतु भुजाबँधवाई अबबिलब नहिंलाऊं। परस करौं तनुतरुहि गिराऊं मुनिबर शाप मिटाऊं। येसुकुमार बहुत दुखपायो सनकादिक सुतचारौं। सूरदास प्रभुकहत मनहिंमन करबंधन निरवारौं ३२ तबहिश्याम यकबुद्धि उपाई। युवती गईं घरनि सब अपने गृहकारज जननी अटकाई। आपुगये यमलार्जुन तरु पर परसत पातउठे झहराई। दिये गिराय धरणिदोउ तरुवर ह्वै कुबेरसुत प्रकटे आई। ह्वैकरजोरि करतदोउ अस्तुति चारिभुजा तिन्हप्रकटदिखाई। सूर धन्य ब्रजजनम लियोहरि धरणीकी आपदानशाई ३३ ॥ राग बिलावल ॥ धनिगोबिंद धनिगोकुल आये। धनिधनि नन्द धन्य निशिबासर धनि यशुमति जिनगोद खिलाये। धनिवह बालकेलि यमुनातट धनिबन सुरभीवृन्दचराये। धनियह समय धन्य ब्रजबासी धनिधनिवेणुमधुर धुनिगाये। धनिधनि अनख उरहनोधनिधनि धनि माखन धनिमोहन खाये। धन्यसूर ऊखलतरु गोबिंद हमहिं हेतुधनि भुजाबँधाये ३४ गोबिंद तुम्हारो स्वरूप निगमनेति नेतिगावैं। भक्तकेबश श्यामसुन्दर देहधारे आवैं। योगीजन ध्यानधरत सपनेहूं न पावैं। नन्दघरनि बाँधि बाँधि कपिज्यों नचावैं। गोपीजन प्रेमआतुर तिनको सुखदीन्हों। अपने अपने रसबिलास काहूनहिं चीन्हों। श्रुतिस्मृति सबपुराणकहतमन बिचारी। सूरदास प्रेमकथा सबहीं ते न्यारी। ३५॥ राग सोरठ ॥ जाको ब्रह्मा अंत न पावैं। तासोंनन्द कि नारि यशोदा घरकी टहल करावैं। सो

सनक नारद गणेश मुनि जाके गुण नितगावैं। निशिबासर खोजत प-
चिहारे मुनिमन ध्यान न आवैं । धनिधनिगोकुल धनि ब्रजबनिता निर-
खत श्याम बँधावैं । सूरदासप्रभुप्रेमहिंके बश संतन दरश दिखावैं ३६॥
रागकान्हरो ॥ धनिधनि धनिऋषि शापहमारे। आदिअनादि निगमनहिं
जानत तेहरि प्रकटदेह ब्रजधारे। धन्यनन्द धनिमात यशोदा धनि आं-
गन में खेलत बारे। धन्यश्याम धनिदासबँधाये धनिऊखलधनिमाखन
त्यारे । दीनबंधु करुणानिधिहौ प्रभु राखिलेहु हमशरणतुम्हारे।सूर
श्याम के चरण शीशधरि अस्तुतिकरि निजधाम पधारे। ३७॥ रागराम-
कली ॥ तरु दोउ धरणिगिरे भहराय। जरसहित अररायके अघातशब्द
सुनाय। भये चकृत लोग ब्रजके सकुचिरहे डरपाय। कोउरहे आकाश
देखत कोउ रहे शिरनाय। घरीलौं तकिगये जहँतहँ देहगतिबिसराय
निरखि यशुमति अजिर देखैं जहँ बँधे सु कन्हाय। वृक्ष दोउ धरापर
देखे महरि कियोपुकार। अबहिंआंगन छांड़िआई चप्योतरुके द्वार।
मैं अभागिनि बांधिराखे नन्दप्राण अधार। शोर सुनि नँदद्वार आये
बिकल गोपीग्वाल। देखितरु मनअति डराने हैं बड़े बिस्तार। गिरे
कैसे बड़ोअचरज नेकु नहीं बयार। दुहूं तरु बिच श्याम बैठेरहे ऊखल
लागि। भुजाछोर उठाय लीन्हों महरि के हैं भागि। निरखि युवती
अंग हरिके चोट जनि कहुंलागि। कबहुंबांधति कबहुं मारति महरि
बड़ी अभागि। नयनजलभरि ढारि यशुमति सुतहि कंठ लगाय। जरैं
रिस जिहिं तुमहिंबांधे लगे मोहिं बलाय। नन्द मोहिं कहाकहैंगे देखि
तरु दोउआय। मैंमरूंतुमकुशलरहो दोउश्याम हलधर भाय।आय जो
घर नन्द देखैं तरुगिरे दोउभारि। बांधिराखति सुतहि मेरे देत महरिहि
गारि। तातहित बश श्यामदौरे महरिलयो अंकवारि। कैसेउबरे कृष्ण
तरुते सूर लै बलिहारि३८॥ रागसारंग ॥ अबघर काहूके जनिजाहु। तुम्हरे
आजु कमी काहेकी कततुम अनतहिखाहु। जरैजेवरी जिन तुम बांधे
बरैं हाथ महराय। नन्द मोहिं अतित्रासतहैं तू बांधे कुंवरकन्हाय।बेगि
जाउ अपने हलधर की छोरतहैं तबश्याम। सूरदास प्रभुखात फिरो-
जिनि माखनदधितुबधाम३९ब्रजयुवती श्यामहिंउरलावति।बारम्बार
निरखि कोमलतनु करिबिनती बिधिको जु मनावति।कैसेबचे अगम

नन्द के तरु मुखलखमति यह कहि पछितावति। उरहन लैआवति जेहि कारण सो सुखफलपूरणकारि पावति। सुनहुं महरि इनको तुमबांधति भुजगहि बंधन चिह्न देखावति। सूरदास प्रभु अतिरति नागर गोपीह-रिधि हृदय लपटावति ४० ॥ पुनः यमलार्जुनकीलीला ॥ राग बिलावल ॥ ग्वालि उरहनो भोरहि ल्याई। यशुमति कहुं तेरोगयो कन्हाई। भलेकाम तैं सुतहि पढ़ायो। बारेहीते मूड़चढ़ायो। माखनमथि भरिधरीकमोरी। अबहीं सो हरिलैगयो चोरी। यहसुनतहि यशुमति रिसमानी। कहां गयो कहिमाअँग पानी। खेलत तेऔचक हरिआये। जननी बांहपकरि बैठाये। मुखदेखत तब यशुमति जानो। मांखन बदन कहां लपटानो। फिरिदेखे तो ग्वालिनि पाछे। मातामुख चितवतनहिंआछे। चोरीके-सब भाव बताये। माता सँटियाइकै लगाये। माखन खात जातपर घर को। बांधोंतोहि नेकनहिंघरको। बांहगहेढूंढतफिरतडोरी। बांधोंतोहिं सके को छोरी। बांधिपचीडोरी नहिंपूरै बारबार खीजति रिसझूरै। घरघर ते जेवरी लै आई। मिसहीमिसकरि देखनधाई। चकितभई दे-खतिढिगठाढ़ी। मनोचितेरे लिखिलिखि काढ़ी। यशुमति जोरिजोरि रजुबांध्यो। अंगुरिद्वै जेवरिघटिसाध्यो। जबजान्यो जननीअकुलानी। आपुबँधाये शारँग पानी। भक्तहेत दाबरीबँधाई। सनकादिकसुतकी सुधिथाई। माताहेत जनहिं सुख कारी। जानि बँधायो श्री बनवारी। मुखजमुहाइ त्रिभुवनदिखरायो। चकितहितुरतभये बिसरायो। बांधि श्याम बाहरलैआई। गोरसघरघर खातचुराई। ऊखलसों गहिबांधि कन्हाई। नितहिउरहनो सहेउ न जाई। यह कहिजात सकै फिरिआ-वै। रैनि दिना तू मोहिं न भावै। माखन दधि तेरे घरनाहीं। धासभ-रेउ चोरी करिखाहीं। नवलखुधेनु दुहतघरमेरे। केतेग्वाल रहत गो घेरे। मथत नन्दघर सहस मथानी। ताकेसुत चोरी की बानी। मोसों कहति आनि जब नारी। बोलिजात नहिं लाजनमारी। नन्दमहरकी करत नन्हाई। बिरधबैस सुतभयो कन्हाई। तुम्हरेगुण सबनीके जाने। नित बरजों कबहूं नहिंमाने। को छोरै जिनि ढीठ कन्हाई। बांधोदोउ भुज ऊखलताई। भवनकाजको गइ नँदरानी। आंगनछोड़े श्याम बि-

झे आई। तिनहिं यशोदा दयोबराई। चलीं

सबैमिलि सोचति मननें। श्यामहिं गहि बांध्यो यहि खसा में। हँसत बात यक कही कि नाहीं। ऊखलसों बांध्यो सुत बाहीं। कहा कहीं वा छबिकी माई। बांबी पर अहि करत तराई। कान्ह बदन अतिही कुम्हिलानो। मानहुँ कमलहि महिं तरसानो। दुरते दीरघ नैनचपल अति। बदन सुधासर मीनकरत गति। यह सुनि और युवति सबआई। यशुमति बांधे कतहि कन्हाई। भलीबुद्धि तेरेकछु उपजी। ज्यों ज्यों दिनीभई त्योंनिपजी। छोरो श्यामकरेउ मनलाहो। अति निर्दयीभई तुमकाहो। देखोश्याम और नँदरानी। सकुच रहेउ मुखसारँगपानी। बाहिर बांधि सुतहि बैठारो। मथतिदही माखन तोहिं प्यारो। छांड़ि देहु बहिजाय मथानी। सौंह दिवावति छोरहु आनी। हांसी करन सबै तुमआई। अब छोरों नहिं कुंवर कन्हाई। तुमहीं मिलि रसबाद बढ़ायो। उरहन देदै मूड़ीपरायो। सबहिन सौंखनसौंह दिवाई। चितै रहे मुख कुंवरकन्हाई। कब तुमको बोलाबोलाई। केहिकारण तुम धाई आई। कहाकरों बलिजाउँ कन्हाई। हमरेबश न तुम्हारी माई। मूरखको कोउकहा सिखावै। याकी मति कछुकहत न आवै। नारि गईं गिरिभवन आतुरी। नन्दघरनि अबभई चातुरी। ओछी बुद्धि यशोदा कीन्हीं। याकीजाति अबै हमचीन्हीं। यहै कहति अपने घर आईं। मानैनहिं कितनो समुझाई। मथति यशोदा दही मथानी। तबहिं कान्ह ऐसी मतिठानी। भक्तवछल हरि अन्तर्यामी। सनकादिक सुतसे दोउकामी। यहि अवतार कहेउ इन तारण। इनको दुख अब करौं निवारण। जो ज्यहिढँग त्यहिढँग सबलाये। यमलार्जुन पै प्रभु सबआये। वृक्षबीच ऊखलमें अटक्यो। आगे निकसि नेकगहिझटक्यो। अररात दोउवृक्ष गिरेधर। अति आघात भयो व्रजऊपर। भयेचकृत व्रजके सब बासी। यहि अन्तर दोउ कुंवर प्रकासी। शंख चक्र कर शारँगधारी। भक्तहेत प्रकटे बनवारी। देखिदरश मन हरखबढ़ायो। तुमहिं बिना प्रभु कवन सहायो। धनिव्रज जहां कृष्ण बपुधारी। धनि यशुमति ब्रह्महिं अवतारी। धन्यनन्द धनिधनि गोपाल। धनि धनि सब गोकुलकी बाल। धन्यगाय धनिद्रुम बनचारन। धनियमुना हरि करत बिहारन। धन्य उरहनो प्रातहि ल्याई। धनि माखन चोरत

दिबिराई। धन्यसुजन ऊखल गढ़िलायो। धन्यदाम भुजकृष्णबँधायो। गदगद कंठ चरण सुख भारी। शरण राखिलै गर्वप्रहारी। बार बार चरणन पर धाई। कृपाकरी भक्तन सुखदाई। साधुसाधु कहि श्रीमुख बानी। बिदा भये सनकादि बखानी। यमलार्जुन को तारि पठाये। नन्दद्वार दोउवृक्ष गिराये। निरखि यशोदा आंगन आई। दुहूँ वृक्ष बिचबचे कन्हाई। दौरिपरे ब्रजके नरनारी। नन्दद्वार कछुहोत गोहारी। देखे आनि वृक्षदोउ डारे। ये गुण यशुमति आहिँ तुम्हारे। तुरतछोरि ऊखलते ल्याये। देखत जननि नयन भरि आये। बज्रदेह हरिकीहै माई। जहांतहां बिधिहोत सहाई। प्रथम पूतना मारनआई। पयपीवत वह तहां नआई। तृणावर्त्त लेगयो उड़ाई। आपुहि गिरेउ शिलापर आई। कागासुर आवतनहिँ जान्यों। सुनीकहत ज्यों लेत परान्यों। शकटासुर पलनाढिग आयो। कोजानै किन ताहिगिरायो। खेलत में केशी यक मारेउ। घींचतोरि तेहि धरणि पछारेउ। ग्वालन सङ्गगये गोचारन। तहां बकासुर लाग्यो मारन। कौनकौन करवरहै भारी। यशुमति बांधि अजिरलै डारी। बहुतै उबरेउ आजु कन्हाई। ऊपर वृक्ष गिरेभहराई। काहु कहीं कहत न बनिआवै। तुरतआय हरिकौन बचावै। सबहिन मिलि यकमति मनभाई। पुण्यनन्दके बचे कन्हाई। मुखचूंबति उर लैलै आये। युवतिन किये आप मन भाये। जननीलै सुतकंठ लगावति। चोरीकी बातें समुझावति। मैं रिसहीरिस करति लालसे। भुजबांधे मन हँसति ख्यालसे। मैं बरज्यों तुम करत अचारी। उरहनको ठाढ़ीहैं सिगरी। बारबार देखत तनमाई। गिरत वृक्ष कहुँ चोट न आई। कहत श्याम मैं अतिहि डरानो। ऊखलमें मैं रहेउँ छिपानो। बात सुनतहि बूझति नँदरानी। कान्ह कहै सुखदरकी बानी। हरिके चरित कथा कोजानै। यशुमति अतिबालक करिमानै। अखिल ब्रह्माण्ड जीवके दाता। माखन को बांधति है माता। गुण अपार अविगत अबिनाशी। सो प्रभु घरघर घोष बिलाशी। ऊखल बँध्यो हेत भक्तनके। यइमाता यइपिता जगतके। यमलार्जुनको मोक्ष करायें। पुत्रहेत यशुदा घरआये। ऐसे हरिजनके सुखकारी। प्रकटे रूप चतुर्भुज धारी। जो जेहिभाव भजे हरितैसो। प्रेमबश्य दुर्बानिको।

जैसा। सूरदास यहलीला गावै। कहतसुनत सबके मनभावै। जोहरि चरित ध्यान उरराखै। आनँदसदा दुरित दुखनाशै १॥ राग धनाश्री ॥ माखनखात पराये घरको। नितप्रति सहस मथानी मथियै मेघशब्द दधि माट घमरको। कितने अहिर जिवत घर मेरे दधिमथि लै बेंचत महि दरको। नवलखधेनु दुहतही नितप्रति बड़ोनामहै नन्दमहरको। ताके पूत कहावतहौ तुम चोरी करत उघारत घरको। सूरश्याम कितनो तुम खैहौ दधि माखन मेरे जहँ तहँ ढरको २॥ रागरामकली ॥ मैया मैं माखन नहिँ खायो। ख्याल परे ए सखा सबैलै मेरे मुख लपटायो। देखितुही छीकेपर भाजन ऊँचेघर लटकायो। तुही देखि नान्हे कर अपने मैं कैसे सो पायो। मुखदधि पोंछि बुद्धि यककीन्हीं दोनापीछे दुरायो। डारि साँटि मुखचूमि यशोदा श्यामहिँ कंठलगायो। बाल बिनोद भावकरि मोहन माता मनहिँ रिझायो। सूरदास यह यशुमतिकोसुख देवन दुर्लभगायो ३ यशुमतितेरोबारो अतिही अचगरो। दूध दही माखनलै डारिदेत सगरो। भोर उठि नितप्रतिकरै मोसों झगरो। ग्वाल बाल सँगलिये घेरिरहे बगरो। हम तुम ये सबै एककोन ते अगरो। लिये दियो कछु सोउ डारिदेहु कगरो। सूरश्याम तेरोसुत गुणमें अति अगरो। चोली हार तोरि चोरलायो मेरोखगरो ४ देखो माई या बालककी बात। बन उपबन सरिता सरमोहै देखत सांवल गात। मारग चलत अनीत करत हरि हठिकै माखनखात। पीतांबर शिरतें वह ओढ़त अञ्चलदै मुसकात। तेरोसों कहकहौं यशोदा उरहन देत लजात। जब हरि आवत तेरेहि आगे सकुचि तनक ह्वै जात। कौन बुरा कहूँ श्यामके नेकु न काहु डरात। सूरश्याम मुख निरखि यशोदा कहति कहा ये तात ५॥ राग बिलावल ॥ नन्दघरनि सुत भलो पढ़ायो। ब्रजबीथिन पुरगलिन घरनिघर घाट बाट सब शोरमचायो। लरिकनि मारि भजतकाहूके काहूको दधि दूध लुटायो। काहूकेघर करत भँडाई मैं ज्यों ज्यों करि पकरि न पायो। अब तो इन्हहितकरि धरिबांधो यहिसब तुम्हरो गांव मँगायो। सूर एकभुज गहि नँदरानी बहुरि कान्ह अपने ढिगआयो ६॥ राग सारंग ॥ भूखो भयो आजु मेरो बारो। भोरहि ग्वालि उरहनो ल्याई बहिँ यहकियो पसारो। पहिले

रोहिणिसे कहिराख्यो तुरत करी जिवनार। ग्वाल बाल सब बोलि लये मिलि बैठे नन्दकुमार। भोजन बेगि ल्याव कछु मैया भूखलगी मोहिँ भारी। आजु सबारे कछुव न खायो सुनत हँसी महतारी। रोहिणि चितरही यशुमति तन शिर धुनिधुनि पछितानी। परुस न बेगि बेर कत लावत भूखोशारँग पानी। बहु व्यञ्जन बहुभांति रसोई षट रसके परकार। सूरश्याम हलधर दोउ भैया और सखा सबग्वार ७

नन्दभवनमें कान्ह अरोगे। यशुदा ल्यावे षटरस भोगे। आसनदे चौकी आगे धरि। यमुनाजल मेल्यो झारीभरि। कनकथारमें हाथ धोवायो। सहस्र यह भोजन तहँ आयो। लै लै धरति सबनके आगे। मातपरोसे जो हरि मांगे। खीर खांड़ घृत लावन लाडू। ऐसे होहिँ नहीं अमृत पाडू। और लेहु कछु सुत ब्रजराज। लुचुई लपसी घेवर खाज। पेठा पाग्यु जलेबी पेरा। गोंद पाकती नगिनि गिंदेरा। गूंझा इलाचीपाक अमिरती। मीरासँजाव लेहु ब्रजपती। छोलिधरे खरबूजा केरा। घृत जो बातकियो सुखभेरा। खारक दाख गरीचा गोरी। पोड़ बदामलेत बनबौरी। बेसन पूरी सुखपुरी बीजे। आछोदूध कमल सुखपीजे। मैया मोहिँ और किनल्यावे। बौरी को पय अति मोहिँभावे। बेला भरि हलधरको दीनों। प्रीततपय अस्तुति बलकीनों। ग्वालसखा सबहिन पै अँचयो। नीके औटि यशोदा रँचयो। दोना मेलि धरीहैं जुवा। हौस होय तो ल्याऊँ पुवा। मीठे अति कोमलहैं नीके। ताते तुरत चभोरे घीके। फेनीसेव अनरसे न्यारे। लैआऊँ जेंवहु मेरबारे। हलधर कहैंउ ल्याउरी मैया। भाको दे नहिँ लेत कन्हैया। यशुमति हरष भरी लै परुसति। जेंवतहैं अपनी रुचिसों अति। कान्हमांगि शीतलजलखियो। भोजन बीच नीरलै पियो। भात पसाय रोहिणी ल्याई। घृतसुगंध तुरतहि दे ताई। लीलवती चांवर दिबि दुर्लभ। भात परोसे माता सुलभ। मूंगमसूर उरद चँना दारी। कनकबरणाधरि फड़कि पछारी। रोटीबांटी पारीझोरी। यककोरी यकघिवन चभोरी। गाय्रो घिव भरि धरेउकचेरेउ। कछुमांग्यो कछुफेंटा छोरेउ। मीठेतेल चनाकीभाजी। सकमकूनी देसोहिँ साजी। मीठे चरफरे उज्ज्वलकौर। हौस होयतो मांगे और। मुगोहा पनौरा पनौरा पकौरा। ये कोरे भीजे गुरबौरा। पापरबरीमिथौरी

फुलौरी। कूरबरी काचरी पिठौरी। बहुत मिरचईं किये निमोना। बेसन के दशबीसक दोना। बनऔरी पीडिसा चिचीड़ीं। खीप पिंडालू कोमल भींडो। चौलाई लाल्हर अरुपोई। मध्यमेलि निंबुवनि हु निचोई। रुचितल जाल लोनिका पागी। कढी दयाल दूसरे मांगी। सरसोंमेथी सोवा पालिक। बथुवाबांधि लियो जु उत्तालिक। हींग हरदमूच छौंके तेले। अदरख और आंवले मेले। सालन सकल कपूर सुवासित। स्वाद लेतसुन्दर हरिग्रासित। अम्ब आदि दे सबेसँधाने। सबचाखे गोवर्द्धन राने। कान्हकहैहोंमातअघानों। अबमोकोशीतलजल आनों। अचवन लेतधोयकर मुख। शेष न बरने भोजनको सुख। उज्ज्वलपान कपूर कस्तूरी। आरोगतिमुखकीछबिरूरी। चन्दनअंग सखिनके चरच्यो। यशुमतिकेसुखको नहिंपरच्यो। मांगिजूंठ सूरजनलीन्हों। बांटिप्रसाद सबनकहँदीन्हों। जन्मजन्मबाढ्यो जूंठनको। चेरोनन्दमहरकेघरको ८ रागकान्हरो ॥यशुमतिकहत कान्हसों मेरेअपनेआंगनहींतुमखेलो। बोलि लेहु सब सखा संगके मेरो कहेउ बहुरि जिनि ठेलो। व्रजबनिता सब यों कहति लाजनि सकुचिजात मुखमेरो। आजुमोहिं बलराम कहत हैं झूंठे नामधरतहैं तेरो। जब मोहिं रिसलागति तब धावति बांधति मारति जैसेचेरो। सूरहँसति ग्वालिनिदैतारी चोरनाउं कैसेहुहरि फेरो ९ मोहिं कहत युवतीसब चोर। खेलतकहूंरहों मैंबाहर चितैरहत सब मेरीओर। बोलिलेत भीतरघरअपने मुखचूमति भरिलेत अंकोर। माखनहेरि देत अपनेकर कछुकहिकै बिधिकरतनिहोर। जहँ मोहिं देखति तहांटेरति मैं नहिंजात दुहाईतोर। सूरश्यामहँसि कंठलगायो वे तरुणीकहँ बालकमोर १० बोलिलेहु हलधरभैयाको। मेरेआंगन खेलकरहु कछु बयनन सुखदीजैमैयाको। मैं मूंदों हरि आंखतुम्हारी बालकरहैं लुकाई। हरषश्याम सबसखाबुलाये खेलहिंआंखिमुंदाई। हलधरकहेउ आंखिकोमूंदे हरिकहेउ मूंदे मातयशोदा। सूरश्यामको जननि खिलावति हरषसहित मनमोदा ११ हरि अपनी तब आंखि मुंदाई। सखासहित बलराम छुपाने जहँतहँ गये भगाई। कानलागि कहेउ जननियशोदा वा घरमें बलराम। बलदाऊको आवनदैहों श्रीदामा सों काम। दौरिदौरि बालक सबआवत छुवत महरिको गात।

सब आयेरहे सुबल सुदामा हारे अबके तात। और परिहरि सुबलहि धाया गहेउ श्रीदामा जाय। दैदै सौंहनन्दबाबाकी जननी ये लेआय। हँसि हँसि तारी देतसखा सब भये श्रीदामा चोर। सूरदास हँसिकहति यशोदा जीत्योहैसुतमोर १२ ॥ रागकेदारो॥ चलोलाल कछुकरोबियारी। रुचि नाहीं काहूपर मेरी तू कहि भोजन करउ कहारी। बेसन मिलै सरस मैदासों अतिकोमल पूरीहैभारी। जेंवहु श्याम मोहिंसुख दीजै तातकरी तुम लिये बियारी। निबुआ सूरन आंब अथानो और करौंदनकी रुचि न्यारी। बारबार तू कहति यशोदा कहिल्यावै रोहिणिमहतारी। जननीसुनततुरतलैआई तनकतनककरि कंचनथारी। सूरश्याम कछुकछुलैखायो जलअचयो अरु बदनपखारी १३ पौढ़िये लालमैं रचिसेजबिछाई। अतिउज्ज्वलहै सेजतुम्हारी सोवत अतिसुख दाई। खेलततुमहिं निशि अधिकगईहै नयननि नींद हमाई। बदनजम्हात अंगऐंडात जननि पलोटति पाई। मधुरेसुर गावतिकेदारो सुनत श्याम चितलाई। सूरदास प्रभु नन्दसुवनको नींदगई तब आई १४॥ राग बिलावल॥ जागिये गोपाललाल ग्वाल द्वारठाढ़े। रैनिअंधकारगयो चन्द्रमा मलीन भयो तारेगण देखियत नहीं तरणि किरणि बाढ़े। मुकुलितभये कमलजाल गुञ्जकरत भृङ्गमाल प्रफुलित बन पुहुपजाल कुमुदिनि कुम्हिलानी। गन्धर्व गुण गान करत स्नान दान नेम धरत हरत सकलपाप बदत विप्र वेदबानी। बोलत नंद बारबार मुख देखै तुव कुमार गायन भइ बड़ी बार वृन्दावन जैबे। जननि कहति उठो श्याम जानतजिय रजनि याम सूरदास प्रभु कृपाल तुमको कछु खैबे २५ कौन परी नँदलालहि बानि। प्रात समय जागन की बिरिया सोवत हैं पीताम्बर तानि। मात यशोदा कबकी ठाढ़ी दधि ओदन भोजन घृतसानि। उठो श्याम कछुकरो कलेऊ सुन्दरबदन दिखावहु आनि। संग सखा सब द्वारेठाढ़े मधुबन बेनु बजावन जानि। सूरश्याम अतिही अलसाने सोवत हैं अजहूं निशि मानि २६॥

अथ सूरसागर अघासुर बध राग कल्पद्रुम ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥

राग बिलावल ॥ नन्दसुत लाड़िलेहो सब ब्रजजीवन प्राण । बार बार माता कहैहो जागहु श्यामसुजान ॥ ध्रुव ॥ यशुमति लेतिबलाइ भोर भयो उठोकन्हाई । संगलिये सबसखा द्वारठाढ़े बलभाई । सुन्दरबदन दिखाइये हरो नैनकेताप । नयनकमल मुखधोइये कछु करो कलेऊ आप । माखनरोटी लैहौं सद्यदधि रैनजमायो । षटरसकेमिष्ठान सोय जेंवहु रुचिआयो । मोपैलीजै मांगिकै जोइजोइ भावै तोहिं । सँगजेंवहु बलराम तुम हो रुचि उपजावहु मोहिं । तब हँसि चितये श्याम सेजते बदन उघारेउ । मानहुं पयनिधि मथत फेन फटि चन्द उजारेउ । सखासुनत देखनचले मानहु नयनचकोर । युगुलकमल जनु इन्दुपरहो बैठिरहेअतिभोर । तब उठिआयेकान्ह मात जल बदनपखारेउ । बोलि उठे बलराम श्याम अत उठ्यो सवारेउ । दाऊजू कहि हँसिमिले बांह गही बैठाय । माखन रोटी सद्यदही हो जेंवत रुचिउपजाय । जल अँचयो मुखधोय उठे बलमोहन भाई । गायलई सबघेरि चले बन कुँवर-कन्हाई । टेर सुनत बलरामकी आये बालकधाय । लैआये सब जोरि कै हो घरते बछरा गाय । सखन कान्हसों कही आजु वृन्दाबनजैये । यमुनातट तृण बहुत सुरभिगण तहां चरैये । ग्वाल गाय सब लैगये वृन्दावन समुहाय । अतिहि सघनबन देखिकै हो हरषिउठे सबगाय । कोउ टेरत कोउ हांकि सुरभिगण जोरि चलावत । कोउ कोउ है परस्पर श्याम सिखावत । अन्तरयामी कहतजियहि मोहिंसिखावत टेरि । कान्ह कहत अबकेगई हो पुनि धौली जो फेरि । कोउ मुरली कोउ बेणु शब्द शृङ्गीकोपूरे । कृष्णकियो मनध्यान असुर यकबस्यो अधूरे । बाल बछरुबनि राखिहों सकबेरलैजाउं । कछुकजनाउं अपनपो हो अबलों रहेउं सुभाउं । असुर कुलहि संहारि धरणि को भार उतारौं । कपट रूप रचिरहेउ दनुज यहि तुरत पछारौं । गिरि समान

धरि अगमवन बैठ्यो वदन पसारि। मुखभीतर बनघन नदी हो माया छलकरि भारि। पैठिगये मुख ग्वाल धेनु बछरासब लीये। देखि माया बनभूमि रहे तृण द्रुम क्रयिकीये। कहनलगे सबआपुस में सुरभी चरें अघाय। मानहुंपर्बत कन्दरा हो मुखगये समाय। सबमुखगये समाय असुरतब चोंचसकोरेउ। अंधकार इमिभयो मनहुंनिशि बादर जोरेउ। अतिहिडठे अकुलाय कै ग्वालबच्छ सबगाय। त्राहित्राहि कहिकहि उठे हो परे कहांसब आय। धीर धीर कहि कान्ह असुर यह कन्दर नाहीं। अनजानत सबपरे अघामुख भीतर माहीं। जिय त्यागयो यह सुनतही अबको सकै उबारि। बातेदूनी देहधरी तब असुर न सक्यो सँभारि। शब्दकरेउ आघात अघासुर टेरि पुकारेउ। रहेउअधर दोऊ चापि बुद्धिबलसुरति पसारेउ। ब्रह्मद्वार शिरफोरिकै निकसे गोकुल राय। बाहिर आवहु निकसिकै हो मैं करिलियो सहाय। बालक बछरा धेनुसबै अति मनहिंसकाने। अंधकार मिटिगयो देखि जहँ तहँ अतुराने। आयेबाहिर निकसिकै मनसब कियेहुलास। हमअज्ञानकत डरतहैं हो कान्ह हमारेपास। धन्य कान्ह धनि नन्द धन्य यशुमति महतारी। धन्यलयो अवतार कोखिधनि जिहिंदइतारी। गिरिसमान तनुअतिअगमपन्नगकी अनुहारि। हमदेखतपलयकमें हो मारेउ दनुज प्रचारि। हरिहँसि बोले बैनसंगजो तुमनहिंहोते। तुमसबकियो सहाय भयोतबकारजमोते। हमहुं तुमहुं मिलि बैठिकैबनभोगिकरें सबजाय। बंशीबटभोजन बहुतहो यशुमतिदयो पठाय। ग्वालपरम सुखपाय कोटिमुखकरत प्रशंसा। कहाबहुतजोभयो सपत येकुई बंसा। चढिबि-मान सुरदेखहीं गगनरहे भरिछाय। जै जै ध्वनिनभ करतहैं हो हरषि पुहुप बरषाय। ब्रह्म सुनी यह बात अमर घर घरनि कहानी। गोकुल लीन्होंजन्म कौनयह मैं नहिं जानी। देखौंइनको खोजलै शोचपरेउ मनमाहिं। सूरश्याम ग्वालन लिये चले बंशीबटकी आहिं १॥

अथ सूरसागर बत्सहरण रागकल्पद्रुम ॥

ब्रह्म मोहनलीला ॥

—— ※ ——

राग बिलावल ॥ हरषभये नँदलाल बैठि तरु छांहकी ॥ ध्रुव ॥ बंशीबट अति सुखद और द्रुम पासचहूँ हैं। सखा लिये तहँगये धेनु बन चरत कहूँहैं। बैठिगये सुखपायके ग्वालबाल लियेसाथ। कांवरि झोरीलये सखाहो आन नवायो माथ। आनँद दै मधुछाक तुरत वृन्दाबन आये। व्यंजन सहस प्रकार यशोदा बनेपठाये। श्याम कहेउ बनचलतहीं माता सों समुझाय। उतते वे आये सबै हो देखतही सुखपाय। कान्ह देखि मधुछाक पुलकअँग अङ्ग बढ़ायो। हरिहँसि बोलत बैन प्रेमजननी पहुँचायो। नीके पहुँचे आय तुम भलो बन्यो संयोग। बार बार कहि सखनिसों हो आजकरैं सुखभोग। बनभोजी बिधिकरत कमलके पात मँगाये। तोरे पानपलाश सरस दोना बहुलाये। भांति भांति भोजनधरे दधिलवनी मिष्ठान। बनफल लये मँगायके हो लागे रुचिकरिखान। बनभोजन हरिकरत सङ्गमिलि सुबलसुदामा। श्यामकुंवर प्रसेन सहर सुत अरु श्रीदामा। कान्ह सबनि मिलिखातहैं लै लै कौर छँडाय। औरन देत बुलायके हो डहकि आपु मुखनाय। ब्रह्मादेखि बिचारि सृष्टि कोउ नई चलाई। मोहिँ पठयो जेहिसौंपि ताहिकह कैहोंजाई। देखौं धौं यहकौन है बाल बच्छ हरिलेउँ। ब्रह्मलोक लै जाउँगो हो यहि बुद्धिकरि दुखदेउँ। अन्तर्यामीनाथ तुरत बिधि मनकी जानी। बालकहैं दियेपठै धेनुबन कहां हिरानी। जहां तहां बनढूंढ़िके फिरि आये हरिपास। सखा सबनि बैठारिकै हो आपुनगये उदास। हरिलै बालकबच्छ ब्रह्मलोकहि पहुँचायो। फिरि आवै जो कौनकहूँ कोउ नाहिँ बतायो। जान्यों यह मनमें तबै बिधि लेगयो हराय। प्रभु तबहीं त्यहिरङ्ग रूपके हो बालक बच्छ बनाय। ताते कीन्हे और ब्रह्महरि नाल उपायो। अपनो करि तेहिजानि कियो ताको मन भायो। उचाटन मारन समर्थ मनहरि कीन्हों ज्ञान। अनजाने बिधि यह करी हो नये रचे भगवान। उहै बुद्धि उहै प्रकृति उहै पौरुष तन सबके। उहै

नाम उहै वेय धेनु बछरा मिलि सबके। श्याम कह्यो सब सखन को ल्यावहु गोधन फेरि। संध्याको आगम भयो हो ब्रजतन हांको घेरि। सुनतग्वाल लै धेनुचले ब्रज वृन्दावन ते। कान्हहिं बालक जानि डरे सब ग्वालहि मनते। मध्य किये लै श्याम को सखा भये चहुँ पास। बच्छ धेनु आगे कियेहो आवत करत विलास। बाजत बेगु बियाग सबै अपने रँगगावत। मुरलीध्वनि गोरंभि चलतपग धूरिउड़ावत। मोर मुकुट शिरसोहई मनहुँ चन्द्रकगगीत। आसपास नाचतसखा हो विच हरि गावतगीत। देखिहरषि ब्रजनारि श्यामपर तनमन वारति। थक टक रूपनिहारि रहीमेटति चितआरति। कहाकहैं छबि आजुकी मुख मण्डित खुरधूरि। मानहुँ पूरण चन्द्रमा हो कुहूँ रहेउ आपूरि। गोकुल पहुँचे जाय गाय बालक अपनेघर। गोसुत अरु नरनारि मिलींअतिही करि आदर। प्रेमसहित वे मिलतहैं जे उपजाये आजु। यशुमतिमिलि सुतसों कहति हो रैनिकरत किहिकाजु। मैं घर आवन कहेउँ सखा सँग कोउनहिं आवै। देखत वन अति अगमडरावै मोहिं डरपावै। बार बार उरलायके लै बलाय पछिताय। कालिहुते वेईसबै हो ल्यावहिं गायचराय। यह सुनिके हरिहँसे कालिह मेराजाय बलैया। भूँखलगी मोहिं बहुत तुरतही दे कछुमैया। माखन दीनों हाथपै यह तबलौं तुम खाहु। तातोजलहै घामको हो तनिक तेलसों न्हाहु। तबयशुमतिगहि बांह वहीं हरिले अन्हवाये। रोहिणिकरि जिवनार श्याम बलराम बुलाये। जेंवति अति रुचिपावहीं परुसति माताहेत। जेंयउठे अँचवन लियो हो डुड़ुँकर बीरादेत। श्यामउनींदे देखि मातरचि सेजबिछायो। तापर पौढ़े लाल अतिहि मनहरय बढ़ायो। अब मदन त्रिविगर्व हरत करत न लागीबार। सूरदास प्रभुचरितको पावत कोउन पार २॥ राग नट॥ विधि मनहींमन शोचपरेउ। गोकुलकी रचना सब देखत अति जियमाहिं डरेउ। मैं विरञ्चि विरच्यो जगमेरो यहकहि गर्वबढ़ायो। ब्रजनरनारि ग्वालबालक कहिं कौनेठाट रचायो। वृन्दावन बटसघन तरुवर तर मोहन सबै बुलायो। सखा सङ्ग मिलि करत वन भाँति विधि मन भमउपायो। यातें श्याम अतिहि अतुराने तुरत तहां उठि बालक बच्छहरे चतुरानन ब्रह्मलोक पहुँचायो। यह बिचारि

सबभये आपुही बधरंग प्रकृति करायो। सूरदास प्रभुगर्व बिनाशननव
कृति फेरिबनायो ३ तबहार हरेउ बिधिकोगर्व । बच्छबालक लैगयो
धरि तुरत कीन्हेंासर्व । ब्रह्मलोक दुरायआयो चरित देखतआप । ब-
च्छबालक देखिकैमन करत पश्चाताप । जबगयो बिधिलोक अपने
दृष्टिके फिरिआय । जानिजिय अवतार पूरण परेउ पांयनिधाय।
बहुत मैं अपराध कीन्हें क्षमा कीजैनाथ । जानियह मैं नहीं कीनो
जोरिकर रहेउमाथ। बच्छबालक आनिसन्मुख शरणहरण पुकारि।
सूरप्रभुके चरणगहि कहेउ निकट राखुमुरारि४॥ रागगौरी ॥ कौनसुकृत
इन ब्रजबासिनको बदत बिरंचि विशेष । श्रीहरि जिनके हेत प्रकटे
मानुषवेष॥ध्रुव ॥ ज्योतिरूप जगवास जगतगुरु जगतपिता जगदीश ।
योग यज्ञजपतपब्रतदुर्लभसो हरिगोकुलईश । यकयकरोमबिराटकोटि
सम अनन्तकोटि ब्रह्मण्ड । ताहिउछंग लियेमात यशोदा अपने भरि
भुजदण्ड। जाकेउदर लोकत्रय जलथल पंचतत्त्व चौखानि। सोबाल-
कह्वै झूलत पलना यशुमति भवनहिंआनि । क्षिति मिति त्रिपदकरी
करुणामय बलिछलि दयावतार । देहरीउलंघि सकतनहिं से प्रभु
खेलतनंद दुवार । अनुदिन सुरतरु पंचसुधारस चिंतामणि सुरधेनु ।
सोतजि यशुमति को पयपीवत भक्तनको सुखदेनु । रविशशिकोटि
करूप अवलोकत त्रिबिधताप क्षयजाय। सोअंजन करलैसुत कहिकछु
आंजति यशुमति माय । दाताभोक्ता कर्त्ता हर्त्ता बिश्वम्भर जगजानि।
ताहिलाय माखन की चोरी बांधे यशुमति रानि। वेदवेदान्त उपनि-
षद षटरस अर्पत भुगते नाहिं । सोहरिग्वाल बालमण्डलमें हँसिहँसि
जूठनिखाहिं। कमलानायक त्रिभुवनदायक सुख दुख जिनकेहाथ ।
कांधकमरिया हाथलकुटिया बिहरत बछरासाथ । बकीबकासुर श-
कट तृणावर्त्त अघ धेनुक वृषभास । कंसकेशि को यहगति दीन्हो
राखेउ चरण निवास। भक्तबछल हरिअंतर्यामी रहेसकल भरिपूर।
मारगरोकि रहेउ द्वारेपर पतित शिरोमणिसूर ५ ॥ रागगौंडमलार ॥ अ-
चरज यकदेखौ रेभाई। निर्गुणब्रह्म सगुण ह्वै जाई। आदिसनातन
घटघट बासी । पूरणब्रह्मपुराणबखान्यो।
चतुराननहूं अंत न जान्यो । गुणगण अगम निगम नहिंपावै । ताहि

यशोदा गोदखिलावै। सकनिरंतर ध्यावैं ध्यानी। पुरुष पुरातन हैं निर्बानी। जपतप संयम ध्यान न आवै। सोइनंदके आँगन धावै। लोचन श्रवणन रसना नासा। नापदपाणि न तलुपरगासा। विश्वभरण निजनामकहावैं। घरघर गोरस जायचुरावैं। शुकशारदसोकरहिं बिचार। नारद से पावहिं नहिंपार। अवरण वरण सुरति नहिंधारैं। सो गोपिन के बदननिहारैं। जरामरण ते रहेअमाया। मातपिता सुतबंधु न जाया। ज्ञानरूप हिरदै में बोलै। सो बछरुनके पाछेडोलै। धरजल अनल पवन नभछाया। पंचतत्त्व मिलिजगत उपाया। कालडरैजाकेडर भारी। सो ऊखलबांध्यो महतारी। मायाप्रकट सकल जगमोहै। कारण करणकरै सो सोहै। ब्रह्मादिक जाकोपार न पावैं। सो गोकुल में गायचरावैं। अद्वैतरहेसदा जलशायी। परमानन्द परम सुखदायी। लोकरचै राखै प्रतिपारैं। सोग्वालन सँगलीलाधारैं। गुणातीत अविगति न जनावै। यशअपार श्रुतिपार न पावै। जाकीमहिमा कहत न आवै। सोगोपिन निशिबासरभावै। जाकीमहिमालखै न कोई। निर्गुण सगुणधरेवपुदोई। चौदहभुवन पलकमेंटारै। सोबन बीथिन कुटीसँवारै। चरणकमल नितरमापलोवै। चाहतनेकनयनभरिजोवै। अगम अगोचर लीलाधारी। सोराधा बश कुंजबिहारी। भागबड़े जुसकल ब्रजबासी। जिनकेसंगरमैं अविनासी। सूरसुयश कहिकहा बखानैं। गोबिँद की गति गोबिँद जानै ६ ॥ रागबिलावल ॥ ब्रजकी लीलादेखि गर्ब बिधिको गयो ॥ ध्रुव ॥ त्रिभुवन नायक आनिभये गोकुल औतारी। खेलत ग्वालन संगरंग आनंद मुरारी। घर घर ते छाकेचलीं मानसरोवर तीर। नन्दनँदन के संगचले हो बालक सखाअहीर। व्यञ्जन सकल मंगायसखन के आगेराख्यो। खाटमीठस्वाद सबैरस लै लैचाख्यो। सोंधेसों जेंवत ग्वाल सबलैलै आपुन खात। भोजन कौ सबस्वाद ले हो कहत परस्परबात। देखतगण गन्धर्व सकल सुरपुर के बासी। आपुसमें वैकहत हँसत येई अविनासी। देखि सबै अचरज भये कहेउ ब्रह्मसोंजाय। जाको अविनाशीकहैं हो सो ग्वालनसँग खाय। यह सुनिब्रह्माचल्यो तुरत वृन्दावन आयो। देखिसरोवर सलिल कमल तेहिमध्य सुहायो। परमसुभग यमुना बहै तहँ बहै त्रिविध समीर।

पुहुप लताद्रुम देखिकै हो थकितभयो मतिधीर। अति रमणीक कदम्ब छांहरुचि परमसुहाई। राजत मोहन मध्य अवलिबालक छबिपाई। प्रेममगन ह्वै परस्पर भोजन करत गोपाल। लावहु गोसुत हेरिकै हो प्रभु पठये ढैंरबाल। बन उपबन सबढूंढ़ि सखाहेरि फिरि आये। बछराभये अदृष्ट केहुखोजत नहिँपाये। सबै सखा बैठे रहो मैं देखोंधौं जाय। बच्छहरण हरिजानिजिय हो आपगये बहराय। जब गोबिँद गये दूरि बालकन हरेउ बिधाता। लैहैं तुरत मँगाय आपुकै जैहैंताता। ब्रह्मलोक ब्रह्मागयो लैबालक बछरासंग। प्रभुकीलीला गनी नहीं बिधिकियो गर्व अतिअंग। तब चिन्तामणि चितैचित्तयक बुद्धिबिचारी। बालकबच्छबनाय रचेवेही अनुहारी। करत कुलाहल सबगये ब्रजघर अपने धाय। अतिआदर करि करि लिये हो अपनी अपनी माय। ब्रह्मा कियो बिचार जाय निज गोकुल देखौं। करिहैं शोकसन्ताप जायपितु मातहि पेखौं। आये तहां बिधिजाचले घरघर देख्योआय। संध्या समयहोत कौतूहल जहां तहां दुहिगाय। की यह गोकुलऔर किधौं मैंहीं भ्रमभूल्यो। यह अबिनाशी होहिँज्ञान मेरो भ्रम भूल्यो। अन्तरयामी जानिधौं हरेबच्छ लैआय। जगत पितामह संभ्रम्यो हो गयेलोक फिरिधाय। देख्योजाय जगायबाल गोसुतजहँ राख्यो। बिधिमन चकृतभयोबहुरि ब्रजको अभिलाख्यो। छिनभूतल छिनलोक में छिन आवै छिनजाय। ऐसेहि करत बरष दिनबीते थकितभये बिधिपाय। तब जान्योहरि प्रकट ज्ञान चित में जब आयो। धिगधिग मेरीबुद्धि कृष्णसों बैरबढ़ायो। लैगोसुत गोपाल शिशुशरण गयो ह्वैसाध। चारिहुमुख अस्तुति करै प्रभुक्षमो मोर अपराध। अब जानत हौं करी तुमहिँ सों मैं बरिआई। येमेरे अपराध क्षमहु त्रिभुवन केराई। ज्योंबालक अपराधशत जननी लेतिसँभारि। शरणागये राखत सदाहो औगुन सकल बिसारि। ज्यों खद्योत उड़िजाय ताहि क्योंतिमिर नशावै। दीपक बहुत प्रकाश तरणिसम क्यों कहिआवै। मैं ब्रह्मा यकलोकको ज्योंगूलर फलजीव। प्रभुतुम्हरे यक रोमप्रति हो कोटि ब्रह्मा अरुशीव। मिथ्यायह संसार और मिथ्या यहमाया। मिथ्याहै यह देह कहो क्योंहरि बिसराया। तुमबिन जाने जीवसब

उत्पति प्रलय समाहिँ। शरणमेंहिँ प्रभुराखिये हो चरण कमलकी छाहिँ। कीजै मोहिँ ब्रजरेणु देह वृन्दावनवासा। मांगों यहै प्रसाद और नाहीं मेरिआसा। जोइ भावै सोइ करो लतासलिल द्रुमगेह। ग्वाल बालको भृत्यकरो हो मनहिँ सत्यव्रत जेह। जो दरशन नर नाग अमर सुरपतिहु न पायो। खोजत युगगये बीति अन्तमोहू न दिखा-यो। यह ब्रजपारस नित्यहै मैं अब समुझोआय। वृन्दावन रज ह्वैरहौं स्वर्गहिँ ब्रह्मलोक न सुहाय। मांगत बारम्बार शेष ग्वालन को पाऊं। आँजुलियो कछुजानि भक्षकरि उदर पुराऊं। अब मेरे निजु ध्यानयहै रहों जूंठ नितखाय। और विधाता कीजिये हो मैं नहिँ छांड़ों पांय। तव बोले प्रभु आप वचन मेरो अवमानों। और काहि विधि करौं तुमहिँते कौनसयानों। तुमज्ञाता कर्म धर्मके तुमते सबसंसार। मेरी माया अतिअगम वहिकोऊ न पावैपार। श्रीमुखबाणी कहत विलँब अब नेकु न लावहु। ब्रजपरिक्रमा करहु देहके पाप नशावहु। तुरत जाहु वहिलोकको विधिकीन्हीं मनुहारि। ब्रह्माकरि अस्तुति चलेहो हरिदीन्हों उरडारि। धनिबछरा धनिबाल जिनहिँते दरशनपाये। उर मेरोभयो धन्य कृष्णमाला पहिराये। धनि यशुमति जिन वशकिये अविनाशी अवतारि। धनिगोपी जिनके सदनहो माखनखात मुरारि। मथुराआदि अनादि देहधरि आपनआये। धनिदेवै बसुदेव पुत्र मांगे तुम पाये। चारिवदन मैं कहा कहौं तुम्हरी महिमागाई। सहसानन निशिदिन रटै हो तऊ न गाई जाई। गाय चरावत ग्वालन संग करत जेहि ध्यानलगायो। तेब्रजबासिन संगरहत अतिप्रेम बढ़ायो। वृन्दा-बन ब्रजको महत कापै बरणयोजाय। चतुरानन पदपरसि कै होगयो लोक सुखपाय। हरिलीन्हों अवतारपार शारद नहिँ पावै। सतगुरु कृपा प्रताप कछुक तातै कहिआवै। सूरदास कैसे कहै महापतित अवतार। शेषसहसमुख जपतसदाहो सोऊ न पावतपार७॥ रागधनाश्री॥

माधवजू जो जनतें बिगरै। तउ कृपाल करुणामय कबहूं प्रभुनहिँ चित्त धरै। जो शिशु जननी जठर अन्तरगत शत अपराध करै। तऊ तनय तनु तोषि पोषि चित बिगशित अङ्क भरै। द्विज रसना दलि दुखित होत तव तो रिस काहिकरै। क्षमिकृत छोभखीर मधुमिश्रित

सुखसमीप सँचरै । यदपि बिटप जरहतनहेतु करि कर कुठार पकरै । तदपि सुभाव सुशील सुशीतल रिपुतनतापहरै । धर बिध्वंसि हल हतत क्षयीकारि बैर बीज सँचरै । सो सन्मुख सुखसहित सतोगुण शशि बहु फरनिफरै । कारण करण अनन्तअजित कहिकहि बिधिचरणपरै । यहँ कलिकाल चलतनहिँ मोपै सूरशरणहि धरै ८॥ रागसारंग ॥ माधव ख्वहिँ दीजै बृन्दावन की रेनु । जिन चरणनि डोलत नँदनन्दन दिन प्रति चारत फिरत धेनु । कहाभयो यह देव देह धरि अरु ऊँचो पद पायोऐन । सब जीवनि लै उदरसांझ प्रभु महाप्रलय जलकरत सैन । हमते धन्य सदा ये तृण द्रुम बालक बच्छ बिषान बेन । सूरश्याम जिनके सँग डोलत हँसि बोलत मथिरावत फैन ९ ऐसे बसिये ब्रजकी बीथनि । साधुनिके पनवारे चुनि चुनि उदरजु भरिये शीथनि । पैडें के सबटृक्ष बिराजत छायापरम पुनीतनि । कुञ्ज कुञ्जप्रति लोटिलोटि रति रजलागे रँगरीतनि । निशिदिन निरखि यशोदानन्दन अरु यमुना जल पीतनि । परसतसूर होत तन पावन दरशन करत अनीतनि १० धन्य यह वृन्दावनकी रेणु । नन्दकिशोर चराईगैयां मुखहि बजायो बेणु । मदनमोहन को ध्यानधरै जो अति सुखपावत चैनु । चलतकहा मन बसिन पुरीतन जहांलेनु नहिँ देनु । यहां रहउ जहँ जूठनि पावहुँ ब्रजबासीके ऐनु । सूरदास ह्यांकी सरवर नहिँ कल्पवृक्ष सुर धेनु ११ राग बिलावल ॥ आजु यशोदा जाय कन्हैया महादुष्ट यकमारेउ । पन्नग रूप मिले शिशु गोसुत यहि सबसाथ उबारेउ । गिरिकन्दरा समान भयो बड़ बड़ो अघबदन पसारेउ । निदरि गोपालपैठि मुखभीतर खण्ड खण्ड करिडारेउ । जाके बल हम गनत न काहू सकलभुवन तृणचारेउ । जीतेसबै असुर हम आगे हरि कबहूं नहिँ हारेउ । बरणगये सब कहत महरिसों अबहिँ अघासुरमारेउ । सूरदास प्रभु की लीला को काऊ भुलै न पारेउ १२ ॥ राग सोरठ ॥ गोबिँद चलत देखियत नीके । मध्यगोपाल मण्डली बिराजत कांधेधरि लियेछीके । बछरावृन्दघेरि आगे करि जनजन शृङ्गबजाये । जनु बन कमल सरोवर तजिकै मधुप उनींदे आये । वृन्दाबन प्रवेश अघमारेउ बालक यशुमति तेरो । सूरदास यह सुनत यशोदा चितै बदन सुत हेरो १३ ॥ राग नट ॥ यशुमति

मुनिमुनि चकृतभई। मैं बरजति बनजात कन्हैया काथैं करैदई। कहँ कहँ उबरेउ मोहन नेक न तऊडरात। आपु कहो तनय सों बातें सुनहु बनहुँ में घात। मेरो कहेउ सुने जो श्रवणनि कहत यशोदा खीझति। सूरश्याम कहेउ मनहिँ में तेहो यह कहि मन मन रीझति १४ हरि की लीला कहत न आवै। कोटि ब्रह्मांड क्षणहिँ में नाशे क्षणहीं में उपजावै। बालक बच्छ ब्रह्महरि लेगयो ताको गर्बनशावै। ऐसो पुरुषारथ सुनि यशुमति खीझति पुनि समुझावै। शिव सनकादिक अन्त न पावैं भक्तबछल कहवावै। सूरदास प्रभु गोकुलमें सो घर घर गाय चरावै १५ ॥ राग गौरी ॥ अघामारि आये नँदलाल। ब्रजयुवती सुनिकै उठिधाईं घर घर कहत फिरत यह ग्वाल। निरखत बदन चकृत भईं सुन्दरि मनहीं मन यहकरि अनुमान। कहति परस्पर सत्य बात यह कौनकरै इनको सरिआन। येईहैं रतिपतिके मोहन येईहैं हमरे पति प्रान। सूरश्याम जननी मनमोहन बार बार मांगत कछु खान १६ मांगिलेहु जो भावहि प्यारे। बहुत भांति मेवा सबमेरे षटरसके प्रकार हैं न्यारे। सबै जोरि राखति हित तुम्हरे मैं जानति तुव बानि। तुरत मथ्योमाखन दधि आछो खाहो देउंको आनि। माखन दधि मोहिँ लागतप्यारो और न भावै मोहिं। सूर जननि माखन दधिदीन्हों खात हँसत मुख जोहिं १७ ॥

इति बत्सहरण मोहलीला सम्पूर्णम् ॥

—※—

अथ सूरसागर राधा कृष्ण जू के ॥

प्रथम मिलन लीला प्रारम्भ ॥

※

अथ चकई भँवरा को खेल ॥

श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥

राग बिलावल ॥ देमैया भँवरा चकडोरी। जायलेहु आरेपर राख्यौ काल्हि मोलले राख्यो कोरी। लैआये हँसिश्याम तुरतही देखिरहे

रङ्ग रङ्ग बहुडोरी । मैया बिना और को ल्यावे बारबार हरि करत निहोरी । बोलिलये सब सखा संगके खेलत कान्ह नन्दकी पोरी । तैसेइ हरि तैसेइ ब्रजबालक कर भँवरा चकरिन की जोरी । देखति जननि यशोदा यहसुख बिहँसति बारबार मुखमोरी । सूरदास प्रभु हँसि हँसि खेलत ब्रजबनिता डारति तृणतोरी १ ॥ राग कान्हरो ॥ मेरे हियरे मांझलागे मनमोहन लैगये मनचोरि । अबहीं यह मारग है निकसे छबि निरखत तृणतोरि । मोरमुकुट श्रवणनि मणिकुण्डल उर बनमाला पीत पिछौरि । दशन चमक अधरनि अरुणाई देखत परी ठगोरि । ब्रजलरिकन सँग खेलत डोलत हाथ लये फिरत चकडोरि । सूरश्यामचितवत गो मोतन मननभईरी तनमनलयो अजोरि २ राग टोड़ी तबते फेरो जिउ न रहिसकत । जितदेखों तितहीं वह मूरति नयननि में नितलग्योई रहत । ग्वालबाल सब संगलये खेलतमें करि भाव चलत । अरुझिपर्यो मेरोमन तबते करचटकत चकडोरी हलत । अब मैं कहा करौं मेरी सजनी सुरतिहोत तब मदन दहत । सूरश्याम मेरोचित हरिलियो सकुच छांडि अब तोहिसों कहत ३ खेलत हरि निकसे ब्रजखोरि । कटि काछनी पितांबर ओढे हाथलिये भँवरा चकडोरि । मोरमुकुट कुण्डल श्रवणनिबर दशनदमक दामिनि छबि थोरि । गये श्याम रबितनया के तट अंगलसत चन्दन की खोरि । औचकही देखी तहँराधा नयनबिशाल भालदिये रोरि । नीलबसन फरिया कटिपहिरे बेणीपीठि रुरति झकझोरि । संगलडिकनी चली इत आवति दिनथोरी अतिछबि तनगोरि । सूरश्याम देखतही रीझे नयननि मिलि शिर परी ठगोरि ४ बूझतश्याम कौन तूगोरी । कहां रहति काकीहै बेटी देखी नहीं कहूं ब्रजखोरी । काहेको हम ब्रजतन आवति खेलति रहति आपनी पोरी । सुनति रहति श्रवणनि नँद ढोटा करत रहत माखन दधिचोरी । तुम्हरो कहा चोरि हमलैहैं खेलन चलो संगमिलि जोरी । सूरदासप्रभु रसिक शिरोमणि बातनि भुरै राधिका भोरी ५ ॥ रागधनाश्री ॥ प्रथम सनेह दुहुन मनमान्यो । नयन नयन बातैं सब कीन्ही गुप्तप्रीति शिशुता प्रगटान्यो । खेलन

हमारे आवहु नन्दसदन ब्रजगांव । द्वारेआय टेरि मोहिं लीजो

कान्हाई मेनाव । जो कहिये घरदूरि तुम्हारो बोलत सुनिये टेर। तुमहिँ सौंह वृषभान बबाकी प्रात सांझ यकफेर। सूधे निपट देखियत तुमको ताते करियतु साथ। सूरश्याम नागर उतनागरि राधा हरि दोऊ मिलि गाथ ६ सैननि में नागरि समुझाय। खरिक आवहु दोहनीले यहीमिस छललाय। गायगनती करनजैहें मोहिँले नंदराय। बोलि बचन प्रमाण कीन्हों दुहुंन आतुरताय। कनक बरण सुधार सुन्दरि सकुचि मुख मुसकाय। प्राणप्यारी नयनराचे अति बिशाल चलाय। गुप्तप्रीति न प्रकट कीन्ही हृदय दुहुनि छिपाय। सूरप्रभुके बचन सुनि सुनि कुंवरि रही लजाय ७॥ रागसारंग॥ गई वृषभानसुता अपनेघर। सङ्ग सखिनसों कहतिचली यहको जैहै खेलन इनके तर। बडीबेर भई यमुनाआये खीझत ह्वैहैं मैया। बचन कहतिमुख हृदय प्रेमदुख मनहरिलियो कन्हैया। माताकही कहरही प्यारी कहां अबेरलगाई। सूरदास तब कहति राधिका खरिक देखिहौंआई ८ रागरामकली॥ नागरि मनगई अरुझाय। अति बिरहा तनभई ब्याकुल घर न नेक सुहाय। श्यामसुन्दर मदन मोहन मोहनीसीलाय। चित्त चंचल कुंवरि राधा खानपान भुलाय। कबहुँ बिहँसति कबहुं बिलपति सकुचि रहति लजाय। मात पितुको त्रासमानति भई चिन्ता बाय। जननिसों दोहनी मांगत बेगिदेरी माय। सूरप्रभुको खरिक मिलिहों गये मोहिँ बुलाय ९॥ रागधनाश्री॥ मोहिँ दोहनी देरीमैया। खरिकमांझ अबहीं ह्वै आई अहिर दुहत अपनी सब गैया। ग्वाल दुहत सबगाय हमारी अपनी दुहि जब लेत। घरिक मोहिँलागे खरिका में तू आवे जनिहेत। सोचति चली कुंवरि घरहीते खरिकगई समुझाय। कबदेखों वह मोहन मूरति जिनमन लियो चुराय। देखे जाय तहां हरिनाहीं चकितभई सुकुमारि। कबहूंइत कबहूंउत डोलति लागीप्रीति खुमारि। नन्दलिये हरि आवत देखे तबपायो बिश्राम। सूरदासप्रभु अन्तर्यामी कीन्हों पूरणकाम १० नन्दगये खरिकहि हरिलीन्हें। देखी तहां राधिका ठाढी श्याम बुलायलई तेहिचीन्हें। महर कहेउ खेलो तुम दोऊ दूरि कतहुँ जनिजैहो। गनती करत ग्वाल गैयनिको मोहिँ नियर तुमरैहो। सुनिबेटी वृषभान महरकी कान्हाहि

लिये खिलाय । सूरश्यामको देखैरैहौं मारे जानिकहुं गाय ११ ॥ राग नट ॥नन्दबबाकी बातसुनोहरि । मोहिँ छांडि जो कहूंजाहुगेल्याऊंगी तुमको धरि । भलीभई तुम्हें सौंपिगये मोहिँ जान न देहौं तुमको । बांहतुम्हारी नेक न छांडों महर खीझि हैं मोको । मेरीबांह छांडिदे राधाकरत उपर फटघातें । सूरश्याम नागर नागरि सों कहत प्रेमकी बातें १२ बातनिलईं राधेलाय । चलहुजैये बिपिनवृन्दा कहत श्याम बुझाय । जब जहां तनवेषधारों तहां तुमहींपाय । नेकु कहुंनहिँकरौं अन्तरनिगमभेदनपाय। तुवपरशितनतपतिमेटों कामदेह गँवाय। चतुर नागरि हँसिरही सुनिचन्द्रबद ननवाय । मदनमोहन भावजान्यो गगन मेघछवाय। श्यामश्यामा गुप्तलीला सूरक्यों कहेगाय १३ ॥ रागमल्लार ॥ गगन गरज घहराय जुरीघटा कारी । पवन टूक झोरचपला चमकि चहुंओरसुवनतन चितै नन्द डरत भारी । कहेउ वृषभान की कुंवरि सों बोलिकै राधिका कान्ह घरलिये जारी । दोऊ गृह जाहु संगगगन भयो श्यामरंग कुंवरकर करगह्यो वृषभानवारी । गयेबन घनओर नवल नन्दकिशोर नवलराधा नवलकुंज भारी । अङ्ग पुलकितभये मदन तनमें गये सूर प्रभु श्याम श्यामा बिहारी १४ ॥ रागकामोद ॥ नयो नेह नयो गेह नयोरस नवलकुंवर वृषभान किशोरी । नयो पीताम्बर नई चूनरी नई-नईबूंदनि भीजति गोरी । नयेकुंज अतिपुंज नये द्रुम शुभग यमुन जल पवनहिलोरी । सूरदास प्रभु नवरस बिलसत नवलराधिका यौवनभोरी १५ ॥ राग नट ॥ नवल गोपाल नवलराधिका नवलप्रेमरस पागे । अंतर बनवन बिहार दोउ क्रीड़ आपु आपु अनुरागे । शोभित शिथिल बसन मनमोहन सुखवत श्रमके बागे । मानहुं बुझी मदनकी ज्वाला बहुरि प्रजारनलागे । कबहुंक बैठि अंशभुज धरिकै पीक कपोलनिपागे । अति रसरासि लुटावत लूटत लालचलालशुभागे। मानहुं सूरकल्पद्रुम की सखि ले उतरी फलआगे। बहिं खूटति रति रुचिर भामिनी तासुखमें दोउखागे १६ ॥ रागमल्लार ॥ उतारत हैं कंठहितेहार। हरि गर मिलत होतहै अन्तर यह मनकियो बिचार । भुजावाम पर कर छबि लागत उपमा अंत न पार । मनहुं कमल दल कमल मध्यते यह अद्भुत आकार । चुंबन अंग परस्पर जनुयुग चन्दकरत हितवार।

रसनवमन भरिचापि चतुर अतिकरत रङ्गविस्तार। गुणआगरनिधिरस सागरनिधि मानतसुख व्यवहार। सूरश्याम मानो रसरसिके रीझे नन्द कुमार १७॥ रागकान्हरा॥ नवलकिशोर नवल नागरिया। अपनीभुजा श्यामभुज ऊपर श्याम भुजा अपने उर धरिया। क्रीडा करत तमाल तरुगातर श्यामाश्याम उमँगिरस भरिया। मिलि लपटायरहेउर उर ज्यों मरकतमणि कंचनमणि जरिया। उपमा काहि देहुं को लायक मनमथकोटि वारने करिया। सूरदास बलिबलि जोरीपरनन्द कुंवर वृषभान कुंवरिया १८॥ रागगौरी॥ आजु नन्दनन्दन रङ्गभरे। बिबिध लोचन विशाल दोऊ के मनहीं मन चित्तहरे। भामिनि मिले परम सचुपाये संगल प्रथम करे। करसों कर जकरे कंचन ज्यों अंबुज उरज धरे। आलिंगन दे अधर पानकरि खञ्जनकंजलरे। हठकरि मानकियो भामिनि जबतबगहि पायँपरे। पुहुप मंजरी मुक्तमाल अंगअंग अनुराग भरे। रचना सूररची वृन्दावन आनंदकाज करे १९॥ राग नट॥ हरि हंसि भामिनिउरलाई। सुरतइंश गोपाल रीझेजानि अति सुखदाई। हरषि प्यारी अंगभरिभरि पियहि कंठलाई। हाव भाव कटाक्ष लोचन कोक कला सुभाई। देखि बाला अतिहि कोमल मुख निरखि मुसुकाई। सूरप्रभु रतिपतिके नायक राधिकासमुझाई २०॥ रागगौरी॥ श्रीराधा नागरि घरआई। तुरतगये नंदसदन कन्हाई। अंकमदैराधा घरपठई बादर जहं तहं दयो उड़ाई। प्यारीकी सारी आपुनले पीताम्बर राधाहिओढ़ाई। ज्योंदेखे यशुमति हरि ओढ़े मनयह कहति कहांधौं पाई। जननी नेतो तुरत लखिलीनो तबहिं श्याम यकबुद्धि उपाई। सूरदास सुतसों यशुमतिकहै फेरि ओढ़नियां कहां गंवाई २१ रागसारंग॥ पीत ओढ़नी कहां बिसारी। यहतो लाल ढिगन की ओरें है काहूकीसारी। हौंगोधन लैगयो यमुनातट जहांहुती पनिहारी। भीरभई सुरभी सब बिडरीं मुरली भलो संभारी। हौं लैभाज्यो औरकाहूकी सो लै गई हमारी। सूरदास प्रभुभली बनाई बलि यशुमति महतारी २२॥ राग धनाश्री॥ मैयारी मैं जानत वाको। पीतओढ़नियांजो मेरी लैगई लै आनों धरि ताको। हरिकी माया कोउन जानत आंखिमूरि सीदीनी। लालढिगनिकी सारीताको पीत ओढ़नी कीनी।

पीतांबर लै जननि देखावत लै आन्यो तेहिपास। सूर मनहिं मन कहति यशोदा तनिकपढ़ावत गास २३ श्यामहिंदेखिमहरि मुसकानी। पीतांबर काकेघरबिसरेउ काहूकी ढिगसारी आनी। ओढ़नी आनि देखाई मोको तरुणिगानकी सिखई बुधिठानी। घर लैलै मेरो सुतभोखतिये ऐसी सबदिन कीजानी। हरि अन्तर्य्यामी रतिनागर जानि लई जननीपहिंचानी। सूरनिरखिमुख सकुचि भगाने यहिलीलाको यहै सयानी २४ ॥ रागकल्याण ॥ सुन्दरि गई गृह समुहाय। दोहनी कर दूध लीने जननि टेरि बुलाय। प्रेम प्रीति निचोल हरिको कक्रुंवरेउ छिपाय। और की और कहति कछु मात मनहिं डराय। कुंवरको कहुं डीठि लागी निरखि के पछिताय। सूरतब वृषभान घरनी राधिका उरलाय २५ ॥ रागकान्हरो ॥ जननी कहति कहा भयो प्यारी। अबहीं खरिक गई तू नीके आवतही भई कौन बिथारी। एकबिटिनियां संगहुतीमेरे कारेखाई ताहि तहांरी। मोदेखत वहधरणि परीगिरि मैंडरपी अपनेजियभारी। श्यामबरण एकढोटाआयो यहनहिं जानति रहत कहांरी। कहतसुन्यों नंदको वहबारो कछुपढ़िकै तुरतहि वहिझारी। मेरोमन भरिगयो त्रासते अबनीको मोहिं लागत भारी। सूरदास अति चतुर राधिका यहकहि समुझाई महतारी २६ ॥ रागगौंडमलार ॥ कुंवरिसों कहत वृषभान घरनि। नेकुनहिं घररहति तोहिं कितकहति रिसनि मोहिं दहति बनभई हरनि। लरिकानि सबनि घरतोसी नाहिं कोऊ निडर चलति नभ चितै नतकै धरनि। बडीकर बरटरी सांपसों उबरीबातें कर तोहि लगति जरनि। लिखिमेटै कौनकर्त्ता जौन सोईह्वैहै होनहारीकरनि। सुताउरलाय तन निरखि पछिताय डरसिगई कुम्हिलाय सूर बरनि २७॥ रागगौंड महर वृषभानके यहै कुमारी। देवधामो करत हारहारे फिरत एत्रहै तीसरे यहैबारी। भई बरष सातकी शुभघरीजातकी प्यारी हुहूभ्रातकी बची भारी। कुंवरि देन्हवाअगई ततसुरझाय बसनपहिराय कछुकहति खारी। जाइ जानिखरिक तन खेलिअपने सदन यह सुतन हंसति मन श्यामनारी। सूरप्रभु ध्यानधरि हरषि आनन्दभरि गांव घर खेलिहो कहति कारी २८॥ रागआसावरी ॥ खेलनके मिसि कुंवरि

राधिका नन्दमहरि के आईहो। सकुच सहितमधुरे करिबोलीघर हो कुंवर कन्हाईहो। सुनत श्यामकोकिल धुनिबानी निकसे अति अतुराई हो। माता सोंकछु कलह करतरहे रिसडारेउ बिसराईहो। मैयारी तू इनको चीन्हति बारम्बार बताईहो। यमुनातीरकालिह मैं भूल्यो बांहपकरि लैआईहो। अबतो इहां तोहिंसकुचातिहो मैंदैहोंह बुलाई हो। सूर श्याम ऐसे गुण आगर नागरि बहुत रिझाई हो२९ को जाने हरिकी चतुराई। नयन सैन संभाषणकीन्ही प्यारीकी उर तपति सिटाई। मनहों मन दोउ रीझि मगनभये अति आनन्द उरमें न समाई। करपल्लव हरि भावबतावत यकहै देहबनाई। जननी हृदय प्रेम उपजायो कहति कान्ह सों लेहु बुलाई। सूरश्याम गहि बांह राधिका ल्याये महरि बिहँसिबैठाई ३०॥ रागसूहो॥ देखि महरि मनहीं जो सिहानी। बोलिलई बूझति नंदरानी कुंवर कहतिमधुरे मधुबानी। ब्रजमें तोहिंनहीं कहुंदखीकौनगांवहै तेरो। भलीकरी कान्हहि गहिल्याई भूलोतो सुतमेरो। नयन बिशालवदन अतिसुन्दर देखत नीकीछोटी। सूरमहरिसखिताको बिनवति भलीश्यामकी जोटी ३१ रागनट॥ नाम कहातेरोरी प्यारी। बेटीकौन महरकी है तू कहिमोसों को तेरी महतारी। धन्यकोख जेहि तो कोराखी धन्य घरीजेहि तू अवतारी। धन्यपितामाता धनितेरी छबिनिरखति हरिकीमहतारी। मैं बेटी वृषभान महरकी मैया तुमको जानति। यमुनातट बहुबेर मिलन भयो तुम नाहिन पहिंचानति। ऐसीकहि वाको मैं जान्यो वह तोबहुभरतारि। महरबड़ोलंगरसबदिनको हंसतदेतमुखगारि। राधा बोलिउठी बाबाकछु तुमसों ढीठ्यो कीनी। ऐसे समरथ कब मैं देखे हंसि प्यारी उरलीनी। महरि कुंवरि सों यहकहि भाषति आउकरों तेरीचोटी। सूरदास हरषि नंदरानी कहतिमहरिहमजोटी३२॥ रागगोरी यशुमति राधा कुंवरसंवारति। बड़ेबार शीमन्त शीशके प्रेमसहित लै लैनिरवारति। मांगपारि बेनीहि संवारति गूंथी सुन्दर भांति। गोरे भालबिन्द बन्दत मानों इन्दु प्रान्त रविकांति। सारीचीर नई फरियालै अपने हाथबनाई। अंचल सोंमुखपोंछि अंगसब आपुहि लै पहिराई। तिलचांवरी बताशेमेवादिये कुंवरिकी गोद। सूरश्याम राधातन

चितवत यशुमति मनमन मोद ३३ ॥ रागकल्याण ॥ खेलोजाय श्यामसंग राधा। यहसुनि कुंवरि हरषिमनराधा कीन्हेंमिटिगई अंतरबाधा। जननी निरखिचकृतरहीठाढी दम्पतिरूप अगाधा। देखतिभाव दुहुनिको सोई जो चितकरि अवराधा। संगखेलतदोउ भगरनलागे शोभाबढीउपाधा। मनहुं तड़ित घनइन्दु तरनि है बालक रतरस साधा। निरखत विधि तन भूलि परेउतब मनमन करतसमाधा। सूरदास प्रभु और रच्यो विधि शोच भयो तन दाधा ३४ ॥ रागबिहागरो ॥ बिधि के आन विधिकोशोच। निरखि तनु वृषभान तनया सकलमत कृदु पोच। रमागौरी उर्वशीरति इन्द्रबिभौ समेत। तुल्यदिन रतिकहा सारंगउपैमा नहिंदेत। चरणनिरखिनिहारि नखछबि अजित देख्योतोकि। चित्तगुरा महिमा न जानत धीररारवन रोकि। सर आनिबिरंचिबिरच्यो भक्तिनिजु अवतार। अवलकेबल सबलदेखि अधीन सकल शृंगार ३५ ॥ रागनट ॥ राधेमहरि सों कहि चली। आनि खेलत रहो प्यारी श्यामतुम हिलिमिली। बोलिउठे गोपालराधा सकुचि जिय कतकरति। मैं बुलाऊं नहीं आवति जननि को कत डरति। मैया यशोदा देखितोको करति कितनेकोह। सुनति हरिकीबात प्यारी रहीमुखतनजोह। हँसिचली वृषभान तनया भई बहुत अवार। सूरप्रभु चितते टरत नहिँ गई घरके द्वार ३६ ॥ राग बिहागरो ॥ बूझति जननि कहां हुतीप्यारी। कौन तेरे भालतिलक रचिदीन्हो किनकच गूंथि मांगशिरपारी। खेलतरही नन्दके आंगन यशुमति कहेउ कुंवरिह्यां आरी। तिलचांवरि गोददिखरावति फरियादई फारिनई सारी। मेरोनाम बूझिबाबा को तेरोनाम बूझिदई हँसिगारी। मोतन चितै चितैढोटातनकछुसबिता तनगोदपसारी। यहसुनि सुनिवृषभान मुदित चित हँसि हँसि बूझतबात दुलारी। सूर सुनत रस सिंधु बढ्यो अति दम्पति मनमन यहैबिचारी ३७ मेरेआगे महरि यशोदा मैयारी ताहिँ गारीदीन्हीं। वाकीघात सबै तू जानति वे जैसी मैं चीन्हीं। तोकों कहि पुनिकहेउ बबाको बडोधूत वृषभान। तब मैं कह्यउं डरयो काहुं तुमको हँसिलागी लपटान। भली कही तू मेरीबेटी लियोआपनोदाव। जा मोहिँ कहेउ सबैगुरा उनके हँसिहँसि कहति सुभाव। फेरि फेरि

बूझति राधा धौं सुनति हँसति सब नारि। सूरदास वृषभान घरनि यशुमति को गावति गारि ३८ ॥ राग गौरी ॥ कहत कान्ह यशुमति समुझाय। जहांतहां डारे रहति खिलौना राधाजिनि लैजाय चुराय। सांझसबारे आवनलागी चितैरहतिमुरलीतन आय। इनहींमेंमेरे प्राण बसतहैं तेरेभाये नेक नमाय। राखि छिपाय कहेउ करिमेरो बलदाऊ को जिनि पतियाय। सूरदास यहकहति यशोदाको लैहै मोहिँलगै बलाय ३९ ॥ राग आसावरी ॥ मेरे लाल को प्रेमखिलौना ऐसो को लैजैहैरी। नेक सुनत जो पैहैं ताको सो कैसे व्रजरैहैरी। अजहूं राखु उठायरी मैया मांगेतें कह देहैरी। आवतही लैजैहै राधा पुनिपाछे पछितैहैरी। बिनुदेखे तू कहा करैगी सो कैसे प्रकटैहै री। सूरदास तब कहति यशोदा बहुरिश्याम बिरुझैहैरी ४० ॥ राग नट ॥ सैंतति हरषि खिलौना हरिके। जानति टेव आपने सुत की रोवत है पुनिलरिके। धरिचौगान बेणुमुरलीधरि अरुभँवरा चकडोरी। प्रेमसहित लैलैधरि राखति ये सब मेरेकोरी। श्रवणन सुनत अधिक रुचिलागति हरिकी बतियांभोरी। सूरश्याम को कहति यशोदा दूधपियहु बलितोरी ४१ राग आसावरी ॥ आजुसवारे धेनुदुही मैं वहै दूध मोहिँ प्यावैरी। सुनि मैया मैं तोपयपीयो मोहिँ अधिक रुचि आवैरी। और धेनुको दूध न पीऊं जो करिकोटि बनावैरी। जननी कहति दूधधौरीको मोको मोह करावैरी। तुमतें और कौन मोहिँ प्यारो बारम्बार मनावै री। सूरश्यामको पयधौरी को माता ही लैआवैरी ४२ ॥ रागगौरी ॥ औटोदूध पियहु मेरेतात। तातोलगत बदन नहिंपरसत फूंकिदेतिहै यशुदामात। औटि धरेउ अबहीं ही मोहन तुम्हरेही हेतबनाई। तुम पीवहु मैं नयननि देखों मेरे कुंवर कन्हाई। दूधअकेली धौरीको यह तनको अति हितकारी। सूरश्याम पय पीवनलागे अति तातो दियोडारी ४३ ॥ राग बिलावल ॥ पय पीवत देखत बलराम। तातोलगत डारितुम दीन्हों दावानलहि अँचवत नहिंताम। कबहूं रहत मौन धरि जलमें कबहूं फिरत बँधावत दाम। कबहुं अघासुर बदन समाने कबहुँअँध्यारे जात न धाम। कबहुं करत असुरा सब बैपट कबहुंदेहरी उलँघि न जाय। यद दशसहस गोपिका बिलसत वृन्दाबन निशि रास रमाय। यहै जानि अवतार

धरत व्रज सुरनर मुनि यह भेद न पाय। राजाछोरि बन्दितें ल्याये तिहूँ भुवनमें बिदित बड़ाय। यइगोपी यइग्वाल यहैसुख यह लीला कहुँ तजत न साथ। युगयुग व्रज अवतार लेतहरि अखिल ब्रह्माण्ड खण्ड के नाथ। यईठांवयह वृन्दाबन यहयमुनायह कुंजबिहार। यहैबिहार बिहरत नितहीनित येईहैं जनके प्रतिपार। येईहैं श्रीपति बहुनायक येईहैं कर्त्तासंसार। रोमरोम प्रतिअण्ड कोटिरबि सुखचूमति यशुमति कइबार। यहै कंस कइबेर संहारेउ ब्रह्मधरेउ कृष्ण अवतार। माखन खात चुराय घरनि तें बहुत बार भये नन्दकुमार। आदि अन्त नहिँ कोऊ जानत हर्त्ता कर्त्ता सबकेसार। सूरदास प्रभु बालअवस्था तरुण वृद्धको करें निवार॥४४॥ राग केदारो॥ बलि बलि चरित गोकुलराय। दावानल को पानकीन्हों पिवत दूधसिराय। पूतना हठि प्राण सोखे अफन उर लपटाय। कहत जननी दूधडारत खिझत कछु अनखाय। धरेउ गिरिवर दोहनी कर धरत बाँहपिराय। शकट भंजन ग्रसत कुच युग कठिन लागत पाय। तृणावर्त्त अकाशतें पटक्यो शिलापर आय। डरत ललन हिँडोलझूलत खरेदेत बुलाय। बकासुर की चोंच फारी सखन प्रकट दिखाय। कीरपींजर गहतअँगुरी लाललेत भजाय। बिना दीपक सदनसूने कबहुँ धरत नपाय। अघासुर मुख पैठि निकसे बाल बच्छ जिवाय। यमला अर्जुन तोरितारे हृदय प्रेमबढ़ाय। हठतोरि पलाश पल्लव देहुदेत दिखाय। हरे बिधि बछबाल नवकृत हेत दौरी माय। चरत धेनु न मिली तिनको आप दौरे धाय। लिखो काजर नाग द्वारे प्रयास देखि डराय। नचत कालीनाग फनफन सुहत ताल बजाय। घोष नारि समेत मोहन रच्यो रास बनाय। ब्याह की जब कहत माता हँसत बदन दुराय। कहा बरणौं कोटि रसना भलीबुद्धि उपाय। सूर बालबिनोद बनकृत अङ्ग अङ्ग सुभाय ४५॥

—※—

॥ अथ सूरसागर गोवर्द्धनलीला रागकल्याण ॥

श्रीकृष्णाय नमः ॥

राग बिलावल॥ नन्दमहरसों कहति यशोदा सुरपतिकी पूजाबिसराई। जाकीकृपा बसत ब्रजभीतर जाकी दीन्हीं भई बड़ाई। जाकीकृपा अभै धन मेरे जाकीकृपा नवौनिधि आई। जाकीकृपा दूध दधि पूरण सहस मथानी मथत सदाई। जिनकी कृपा पुत्रभयो मेरे कुशल रहे बलराम कन्हाई। सूरनन्दसों कहति यशोमति दिनआयो अबकरो चँड़ाई१॥ राग गौरी॥ येईहैं कुलदेव हमारे। काहू नहीं और मैं जानति गोधन हैं ब्रजके रखवारे। दीपमालिकाके दिन पाँचक गोपनि कहौ बुलाई। बलि सामग्री करहिँ चँड़ाई अबहीं कहौं सुनाई। लई बुलाय महर महरानी सुनतहि आई धाई। नन्दघरनि तब कहति सखिन सों कतहो रही भुलाई। भूलीकहा कहौसो हमसों कहति कहाडरपाई। सूरदास सुरपतिकी पूजा तुम सबहिँन बिसराई२ चौंकिपरीं सब गोकुलनारि। भली कही सबहीं सुधि भूली तुमहीं करी सुधारि। कहेउ महरि सों करो चँड़ाई हम अपने घरजाति। तुमहूं करौ भोग सामग्री कुलदेवता अमाति। यशुमति कहेउ अकेली हौं मैं तुमहूँ सँग मोहिं दीजौ। सूर हँसति ब्रजनारि महरि सों ऐहैं साँच पतीजौ ३॥ राग कल्यान॥ कहि मोहिँ भली कीन्हीं महरि। राजकाजहि रहेउ डोलत लोभही के लहरि। क्षमा कीजै मोहिँ हो प्रभु तुमहिँ गयो भुलाय। ग्वालसों कहि तुरत पठयो ल्याउमहर बुलाय। नन्दकहेउ उपनन्द ब्रजके अरु महर वृषभान। अबहिँजाय बुलायल्यावहिँ करत दिन अनुमान। आयगये दिन अबहिँनेरे करतमन यहज्ञान। सूरनन्दबिनयकरत करजोरि सुरपति ध्यान ४॥ राग बिलावल॥ नन्दमहरि उपनन्द बुलाये। बहु आदर करि बैठकदीन्हीं महर महरिमिलि शीश नवाये। मनहींमन सबशोच करतहैं कंसनृपति कछु माँगि पठाये। राजअंश धन जो कछु उनको बिनुमांगे सो दै हमआये। बूझत महर बात नँदमहरहि कौनकाज हम सबनि बुलाये। सूर नन्द यह कहि गोपिन सों सुरपति पूजा के दिन

आये ५ ॥ हँसत गोप कहि नन्दमहरसों भलीभई यहबात सुनाई । हमहिँ सबनि तुम बोलिपठाये अपने हिय सब गये डराई । काहे को डरपौ हम बोलत हँसि तब बात कहत नँदराई । बड़ोसँदेह कियो तुम हमको ब्रजबासी हमतुम सबभाई । करौ बिचार इन्द्रपूजा को जो चाहो सो लेहु मँगाई । बरषद्योस को द्योस हमारो घरघर नेवज करहु चँड़ाई । अन्नकूट बिधिकरत लोगसब नेमसहित करि करि पकवान्ह । महरि बिनय करजोरि इन्द्रसों सूरअमरकरदीजै कान्ह ६ गावत मङ्गलचार महरघर । यशुमति भोजन करत चँड़ाई नेवज करिकरि धरत प्रयास डर । देखेरहो कुवँनकन्हैया कहाजाने वह देवकाज पर । और नहीं कुलदेव हमारे कै गोधन कै ये सुरपति बर । करत बिनय करजोरि यशोदा कान्हहि कृपाकरो करुणाकर । और देव तुमसम कोउनाहीं सूरकरो सेवा चरणनि तर ७ ॥ रागसूहो ॥ बाजत नन्द अवास बधाई । बैठे खेलतद्वार आपने सातबरषके कुँवरकन्हाई । बैठे नन्दसहित वृष-भानहि और गोपबैठे सबआई । थापेदेत घरनिके द्वारे गावति मङ्गल नारि बधाई । पूजा करति इन्द्रकी जान्यो आये प्रयाम तहांअतुराई । बार बार बूझत हरि नन्दहि कौन देवकी करत पुजाई । इन्द्रबड़े कुल-देव हमारे उनते सब यह होत बड़ाई । सूरश्याम तुम्हरे हित कारण यह पूजा मैंकरत सदाई ८ ॥ राग आसावरी ॥ नन्दकहेउ घरजाहु कन्हाई । ऐसेमें तुमजाहु जिनि कहूँ अहो महोसुत लेहु बुलाई । सोय रहो मेरे पलिकापर कहत महरि हरिसों समुझाई । बरषद्योसको महा महो-त्सव को आवै कौनेमिसु भाई । और महरिढिग प्रयामबैठिके कीनों एक बिचार बनाई । सपनोंआजु मिल्यो मोको यक बड़ोपुरुष अव-तार जनाई । कहनलगे मोसों ये बातैं पूजतहो तुमकाहि मनाई । गिरि गोबर्द्धन देवनिको मनसे बहु ताको भोगचढ़ाई । भोजनकरै सबनिके आगे कहत प्रयाम यह मन उपजाई । सूरदास प्रभु गोपन आगे यह लीला कहि प्रकट सुनाई ९ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनी ग्वाल यह कहत क-न्हाई । सुरपतिकी पुजाको मेटत गोवर्द्धनकी करत बड़ाई । फैलिगई यहबात घरनिघर हरि कहजाने देव पुजाई । हलधर कहतसुनहु ब्रज-बासी यह महिमा तुम काहु न पाई । कोउ कोउ कहत करौ ऐसेई

कोउ यह कहत कहै को भाई। सूरदास कोउ सुनिसुख पावत कोउ बरजत सुरपतिहि डराई १० मेरो कहेउ सत्यकै जानो। जो चाहोब्रज की कुशलाई तो तुमगिरि गोवर्द्धन मानो। दूधदही तुमकितनो लेहो गोसुत बढ़ैं अनेक। कहा पूजि सुरपतिसों पायो छांड़ि देव यह टेक। मुँहमांगे फल जो तुमपावहु तो तुम मानों मोहिँ। सूरदास प्रभु कहत ग्वाल सों सत्यवचन करिदोहिँ ११ छांड़िदेहु सुरपतिकी पूजा। कान्ह कहेउ गिरि गोवर्द्धनते और देवनहिँ दूजा। गोपनि सत्य मानि यह लीनों बड़ो देव गिरिराज। मोहिँ छांड़िये पर्वतपूजत गर्वकियो सुर-राज। पर्वत सहित धोय ब्रजडारौं देहुँ समुद्र बहाय। मेरीबलि औरहि लै अर्पत इनकी करौं सजाय। राखौं नहीं इनहिँ भूतलमें गोकुलदेउँ बहाय। सूरदास प्रभु याके रक्षक संगहिसंग रहाय १२॥ रागबिलावल॥ गोकुलको कुलदेवता श्रीगिरिधारीलाल। कमलनयन घनसांवरो बपु अति बाहु बिशाल। हस्त धरत ठाढ़े करत येहैं हरिके ख्याल। कर्त्ता हर्त्ता आपुहि आपुहिहैं प्रतिपाल। बेगिकरो मेरेकहे रचि पकवान रसाल। यह मघवा बलिलेतहै करत करत गतगाल। गिरि गोवर्द्धन पूजिये ब्रजजीवन गोपाल। जाके दीने होतहै धनगैयां गनजाल। सँग मिलि भोजन करतहैं जैसे पशुके पाल। सूरदास डरपत रहैं जातेंयम और काल १३ ब्रज घरघर अति होत कुलाहल। ग्वाल फिरत उमँगे जहँतहँ सब अतिआनन्द भरे जु उमाहल। मिलत परस्पर अंक्कम दैदै शकटनि भोजन साजत। दधि लवनी मधुमाट धरतलै श्याम संग सँग राजत। मन्दिरते लै धरत अजिरपर षटरसके जेवनार। डालनिभरि अरु कलशलये भरि जोरत हैं परकार। सहसशकट मिष्टान्न अन्नबहु नन्दमहर घरहीको। सूरचले सब लै गृहगृहतें सँगसुवन नँदजीको १४ अति आनँद ब्रजबासी लोग। भांति भांति पकवान शकटभरि लैचले छहों रसभोग। तीनलोकको ठाकुर संगहि तासों कहत सखाहमयोग। आवत जातहि डर नहिँपावत गोवर्द्धन पूजा संयोग। कोउ पहुँचे कोउ मगमें रेंगत कोउ घरते निकसे कोउनाहिँ। कोउ पहुँचाय शकट घर आवत कोउ घरते भोजन लैजाहिँ। मारगमें कोउ निर्त्तत आवत कोउ अपने रस गावत जाय। सूरश्यामको यशुमति टेरत बहुत भीरहै हरि

न भुलाय १५ ॥ राग कान्हरो ॥ शकट साजि सबग्वाल चले गिरि गोवर्द्धन पूजाके काज। घर घरते मिष्टान्न चले लै भांति भांति बहु बाजन बाज। अति आनन्द भरे गुणगावत उमडे फिरत अहीर। पैंडो नहिं पावत तहँ कोऊ ब्रजबासिन की भीर। एक चले आवत ब्रज तन को एक ब्रजतें बनकाज। सूरदास तहँ श्याम सबनि में देखतुहैं गिरिराज १६ ॥ राग नट ॥ चलीं घरघरनिते ब्रजनारि। मनहुँ इन्दु बधुनि पङ्गति लगति शोभाभारि। पहिरिसारि सुरंग पचरँग सप्तदश शृङ्गारि। इहै रक्षा सबनिके चित श्याम रूप निहारि। ललिता चन्द्रावलि सहित राधासँग कीरति महतारि। चले पूजा करन गिरि की सूर सँग नर नारि १७ बहुतजुरे ब्रजबासी लोग। सुरपति पूजिमेटि गोबर्द्धन पूजा के संयोग। योजनबीस एक अरु अगरो डेरायहि अनुमान। ब्रजबासी नरनारि अन्तनहिं मानों सिंधु समान। इक आवत ब्रजहीतें इतही इक इततें बृजजात। नन्दलिये सबग्वाल सरप्रभु आयगये तहँ प्रात। १८ ॥ राग आसावरी॥ नन्दकरत गिरिपूजाकी विधि। भोजन लै सबघरे छहोरस कान्हसङ्ग अष्टौसिधि। लैलै आवति ग्वाल घरनि तें भोजन बहुतप्रकार। व्यञ्जन देखि नन्द सुखपावत तुरत करौं जनिवार। जोइ जोइ हरि कहत करत सोइ सोइ पूजाकी बहुभांति। माखन दधि पै तक्रघरतले जोरि जोरि सबपांति। को बरणौ नानाविधि व्यंजनजेंवन ये ब्रजनारि। सूरश्यामकी लीला अद्भुत कहबरणौ मुखचारि १९ ॥ राग नट ॥ विप्रबुलाय लियेनँदराय। प्रथमारम्भ यज्ञको कीनों उठेवेद धुनिगाय। गोबर्द्धन शिर तिलकबन्दयो मेटिइन्द्र ठकुराई। अन्नकूट ऐसोरचिराख्यो गिरिकी उपमापाई। भांतिभांति व्यञ्जनपरुसायेकापै बरणोंजाय। सूरश्यामसों कहत ग्वाल गिरि जेंवहिंकहूँ बुझाय २० राग बिलावल ॥ इन्द्र शोचकरि मनहिंमन अपनेचक्रतहोत पुनिबुद्धि विचारत। कहाकरत देखोमैं इनको मोको बिलम्ब लगत नहिँ मारत। अबयेकरैं आपनेमनसुख मोकोअब न सँभारे। तबलौंरहोंपूजिनिबरेयें बचिहि न बेरहमारे। इतनोंसुख इनकेंकरि रहिहे दुखहै बहुतअगाध। सूरदास सुरपतिकी बानीमनहीं मनकी साध २१ ॥ रागगौरी ॥ चढि बिमान सुरराज नभदेखत। लीलाकरत श्यामनूतन यह फिरि फिरि

गिरिगोवर्द्धन पेखत। थकितभये सब जहँ तहँ मुनिगण ठौर ठौर नर नारी। चितवतहैं सब श्याम बदनतन गतिमति सुरतिबिसारी। पूजा भेटि इन्द्रकी पूजत गिरिगोवर्द्धन राज। सूरदास सुरपति गर्वितभयो मैं देवन शिरताज २२ कहत कान्ह नंदबाबा आवहु। भोजनधरो परुसि सब आगे प्रेमसहित गिरिराज मनावहु। औरनन्द उपनन्द बुलाये कहेउ सबनिसों भोग लगावहु। स्वप्ने में देख्यो मेरि मूरति यहै रूप धरि ध्यानमनावहु। यकमन यक चितकै अर्पणकरौ प्रकटलेत दिखरावहु। सूरदासप्रभु कहत सबनिसों अपने कर लैलै न जिवावहु २३ रागकेदारो॥ बिनती करत सकल अहीर। कलश भरिभरि ग्वाल लैलै शिखर ढारतक्षीर। चल्यो बहिचरु पासतेंपय सुरसरी जलढारि। बसन भूषन लैचढाये भीर अति नरनारि। मूंदि लोचन भोग अर्प्यो प्रेमसों रुचिभारि। सबनिदेख्यो प्रकटमूरति सहसभुजा पसारि। रुचि सहित गिरि सबनिआगे करनि लैलैखाय। नन्दसुत महिमा अगोचर सूरक्यों करगाय २४॥ रागनट॥ गिरिवर श्यामकी अनुहारि। करत भोजन अति अधिकई सहसभुजा पसारि। नन्दकोकर गहेठाढो यहै गिरिकोरूप। सखीललिता राधिका सों कहति देखि स्वरूप। यहै कुण्डल यहै माला यहै पीतपिछोरि। शिखर शोभा श्यामकी छबि श्यामछबि गिरिगोरि। नारि बदरौलारही वृषभान घर रखवारि। तहांते वह भोग अर्पित लियो भुजापसारि। राधिकाछबि देखिभूली श्याम निरखीताहि। सूरप्रभुवश भईप्यारी चकोर लोचनचाहि२५ राग धनाश्री॥ देखौरी हरिभोजनखात। सहसभुजा धरेउत जेंवतहैं इतहि कहत गोपनिसोंबात। ललिता कहति देखिहोराधा ज्योंतेरेमन बात समाय। धन्यसमय गोकुलकेवासी संगरहत त्रिभुवनकेराय। जेंवत देखि नन्दसुखपायो अतिआनँद गोकुल नरनारि। सूरदास स्वामी सुखसागर गुणआगर नागर दैतारि २६॥ रागबिलावल॥ यहलीला सब करत कन्हाई। उत जेंवत गिरि गोवर्द्धनसँग इतराधासँग प्रीतिलगाई। इत गोपन सों कहत जिवावहु उत आपुन जेंवत मनलाई। आगे धरे छहोरस व्यंजन बदरौला को लियो मँगाई। अमर बिमान चढे सब करि सुमनन बरखाई। सूरश्याम सबके सुखदाता भक्त

हेत अवतार सदाई २७ ॥ रागगौरी ॥ गोपिन सों यह कहत कन्हाई।
जो मैं कहत रहत भयोसोई सपनान्तरकी प्रकट बताई। जो मांग्यो
चाहेसो मांगो पावोगे जो जा मन आई। कहतनन्द सब तुमहीं दीनों
मांगत हैं हरिकी कुशलाई। करजोरे नँद आगे ठाढे गोवर्द्धन की
करतबड़ाई। ऐसो देव नहीं कहुँदेख्यो सहसभुजा धरिखात मिठाई।
सदातुम्हारी सेवाकरिहैं और देवनहिँ करों पुजाई। सूरश्याम को
नीकेराख्यो कहति सहरि ये हलधर भाई २८॥ रागनटनारायण ॥ अपने
अपने टोल कहत ब्रजबासियां ॥ ध्रुव ॥ शरद सुभग ऋतु जानि दीप
मालिका बनाई। गोपिनके उनमाद फिरत आनन्द कन्हाई। घरघर
थापे दीजिये घरघर मङ्गलचार। सातबरषको सांवरोहो खेलत नन्द
दुवार। बैठिनन्द उपनन्द बोलि वृषभान पठाये। सुरपति पूजादेत
जानि तहँ गोबिंद आये। बारबार हाहा करें कहि बाबा यह बात।
घरघर नेवज होतहैं हो कौनदेवकी जात। कान्हतुम्हारी कुशललागि
एक यतन बढाऊं। षटरस भोजनअन्न भोग सुरपतिहि चढाऊं। नंद
कहेउ चुचुकारि के जायदामोदर सोय। बरष दिवसको द्योस हैहो
महामहोत्सव होय। तब हरिमन्त्र बिचारि तुरत गोपनिसों कीनों।
एक पुरुषने आजुमोहिँ सपनान्तर दीनों। सबदेवनिको देवतागिरि
गोवर्द्धनराज। ताहि भोग किनि देहुले सुरपतिको कहकाज। बाढै
गोसुतगाय दूबदधिको कहलेखो। यहपरचौ बिद्यमान नयन अपने
सब देखो। तुम देखत बलखायगो मुँहमांगे फलदेय। गोपकुशल सब
चाहिये तो गिरि गोवर्द्धन सेय। गोपन करी बिचार सकल सबही
ब्रजसाजे। बहुबिधिले पकवान चलेसँग बाजनबाजे। एकबाटते उब-
टिचले एकनदी सुरभीर। एक नपैडो पावहींहो उमडे फिरत अहीर।
एक घरते उठिचले एक गृहको फिरि जाहिँ। गावत गुणगोपाल
उमँगि अङ्ग अङ्ग न समाहिँ। गोपनिको सागरभयो गिरिभयो मन्द-
रसार। रतनभई सब गोपिका हो कान्ह बिलोवनहार। एकचौरासी
कोशघिरे गोपन के डेरा। लाखों चौवनकोश आजु ब्रजबासबसेरा।
सबहिनके मन सांवरो देखो सबनि मँझारि। कौतुक भूले देवता हो
आयेलोक बिसारि। प्रथमदूध अन्हवाय बहुरि गङ्गाजल ढारेउ।

बड़ो देवताजानि कान्हको मतो बिचारेउ। देखिदेखाले आमुही नर नारी सबजाय। नन्दप्रतीत न मानहीं तुमदेखत बलखाय। लीनेविप्र बुलाइ यज्ञ आरम्भन कीन्हो। सुरपति पूजामेटि राज गोबर्द्धन दीन्हो। जैसोहै गिरिराजजू तैसोई अन्नकोट। मगनभये पूजा करैंहो नरनारी बड़छोट। बहुबिधि व्यंजनकिये कहांलोंनाम बखानों। भयोभातको कोट ओट गिरिराज छिपानों। बरा बिराजै भातपर चन्दहि पटतर सोय। यज्ञपुरुष भोजन करैंहो सब देवनि सुखहोय। जहां तहां दधि धरेउ कहो कह उज्जलताई। शिखर उदधि ह्वै रहेउ भात में देह छिपाई। बदरौला वृषभान के रही बिलोवन हारि। ताकी बलि वोही देवता हो लीन्हो भुजापसारि। सहस्रभुजा गिरिधरकरै भोजन अधिकाई। नखशिख सब अनुहारि मनहुँ दूसरो कन्हाई। राधासों ललिता कहैं रेरे हृदय समाय। गहे अँगुरिया नन्दकी हो ढोटा भोजन खाय। पीतदुमालौ श्वेतकंठ मोतिन की माला। भूषण भुजा अनूप श्यामतन नयन बिशाला। श्यामहि शोभा गिरिबनी गिरिकी शोभा श्याम। जैसे पर्बत भात को हो हिम भैया बलराम। लै सब भोजन अरपिगोप गोपिन करजोरे। बहुबिधि कीन्होस्वाद दास कछु बरणो थोरे। यहिबिधि पूजा पूजिकै बूझौ गोबिन्द जाय। सूरश्याम सबसों कहो हो लीला प्रकट सुनाय २९॥ राग गौरी॥ श्याम कहत पूजा गिरिमानी। जो तुम भाव भगतिसों अर्प्यौ देवराज सब जानी। तुम देखत भोजन सब कीन्हें अबतुम मोहिँ पत्याने। बड़ो देव गिरिराज गोबर्द्धन इनहिँ रहो तुम माने। सेवा भली करी तुम मेरी देव कही यहबाणी। सूरनन्द मुखचूंबत हरिको यह पूजा तुम ठानी ३०॥ और कछू मांगहु नन्द मोंसो। जो चाहो सो देहुँ तुरतही कहत सबै गोपिनसों बलमोहन दोऊ सुत तेरे कुशल सदा ये रैहैं। बाढैसुरभी बच्छधनेरे चरतवृण बहुतअघैहैं। इनकेकहे करी मेरीपूजा अब तुमसब घर जाहु। भोगप्रसाद लेहुकछु मेरो गोपसबै मिलिखाहु। सपनेमैंही कहेउं श्यामसों करहुहमारी पूजा। सुरपति कौन बापुरो मोते देव नहीं अरुदूजा। इन्द्रआय बर्षे जो ब्रजपर तुमजिनि जाहुडराई। सुनहु सूरसुत कान्हतुम्हारे काहिकै मोहिंसुनाई३१॥ रागसारंग॥ भलीकरीपूजा

तुममेरी। बहुतभावकरि भोजनअर्प्यो यहसबमानिलई मैं तेरी। सहस भुजा धरि भोजनकीन्हें तुम देखत विद्यमान। मोहिं जानत यह कुंवर कन्हैया यहै नहीं कोउआन। पूजाबनकी मानलई मैं जाहुघरन ब्रजलोग। सूरश्याम अपने कर लीन्हें बांटत जूठोभोग ३२ ॥ रागबिलावल ॥ बिनती करत नन्द करजोरे पूजाहम कह जानेनाथ। हमहैं जो असदामायाके दास दियो मोहिं कियोसनाथ। महापतितमैं तुम पावनप्रभु दरशन तुम्हरे पायोतात। तुमते और देवनहिं दूजा कोटि ब्रह्मारड रोमप्रतिगात। तुम दाता तुमहींहो भुगता हर्त्ताकर्त्ता तुमहीं सार। सूरकहा हमभोग लगावैं तुमहीं लेदीयो संसार ३३ यह पूजा मोहिं कान्हबताई। भूल्यो फिरत द्वारदेवनिके त्रिभुवनपति तुम को बिसराई। आपुहि कृपाकरी सपनांतर श्यामहिं दरशदियो तुमआई। ऐसेप्रभु कृपाल करुणामय बालककी अति करीबड़ाई। गिरिपायन हरिको लै पारतहलधरको पायनतर नाई। सूरश्याम बलराम तुम्हारे इनपर कृपा करो गिरिराई ३४ ग्वाल कहत धनि धन्य कन्हैया। बड़ोदेवता प्रकटबतायो यह कहि कहि सबलेत बलैया। धन्य धन्य गिरिराजनकी महिमा तुमसम और न दूजा। तुमलायक कछु नाहिं हमारे को जानेतुम पूजा। गोपसबै मिलि कहत श्यामसों जो कछु कहेउ सो कीन्हों। सूरश्याम कहिकहि यहबाणी देवमानि सुखलीन्हों ३५ ॥ रागसारंग । तालचर्चरी ॥ गोपउपनन्द वृषभानआये। बिनय सबकरत गिरिराजसों जोरिकरगये तनपाप सुवदरश पाये। देवदेवी बड़ेप्रकटदर्शनदियो प्रकटभोजनकिये सबनिदेख्यो। प्रकट बाणीकही गिरिराज तुमसही औरनहिं तिहुंभुवन कहूंपेख्यो। हँसतहरि मनहिं मन तकत गिरिराजतन देवपरसनभय करोकाज। सूरप्रभु प्रकटलीला कही सबनिसों चलेघरघरनि अपनेसमाज ३६ ॥ रागधनाश्री ॥ देखिचकित गण गन्धर्व सुर मुनि। धन्य नन्द को सुकृतपुरातन धन्य धन्य कहिकहि जयजयधुनि। धनिधनि श्रीगोवर्द्धनपर्वत करत प्रशंसा सुर मुखसुनिपुनि। आपुहिंखात कहतहैं गिरिको यहमहिमा देखी न कहूंसुनि। इहै कहत अपने ओंकनि धनि ब्रजबासी सबकीन्हे उनि। सूरश्याम धनि धनि ब्रज बिहरत धन्य धन्य सबकहत गुणनिगुनि ३७

रागनट ॥ चले व्रजघरनि को नर नारि। इन्द्र की पूजा मिटाई तिलक गिरिकेसारि। पुलक अंग न मात उरमें महरिसहित समाज। अबलौ हमलेव पायोगिरिगोवर्द्धनराज। इनहिंते व्रजचैनरैहैं मांगिभोजनखात। इहै घेरा चलत व्रजजन सबनिमुख यह बात। सबैसदननि आय पहुंचे करत केलि बिलास। सूरप्रभु यहकरी लीला इन्द्र रिसि परकास ३८

रागसारंग ॥ व्रजबासिन मोको बिसरायो। भलीकरी मेरी बलिजो कछु सो सब लै पर्वतहि चढ़ायो। मोसों गर्व कियो लघु प्रतिमा जानिये कहामनआयो। त्रिदश कोटिदेवनिको नायक जानिबूझिके इनन भुलायो। अब गोपन भूतलनहिं राखों मेरी बलि मोकों न चढ़ायो। सुनहु सूर मेरे मारत धों पर्वत कैसे होत सहायो ३९ प्रथमहिं देहों गिरिहि बहाय। बज्राघातहु करौं चित्रकूट देउँ धरणि मिलाय। मेरी इन महिमा न जानी प्रकट देउं दिखाय। जल बरषि व्रजधोइ डारों लोग देउं बहाय। खात खेलत रहे नीके करिउपाधि बनाय। बरष दिन मोहिंदेत पूजा सोउ दई मिटाय। रिससहित सुरपति कहतपुनि परौ व्रजपर धाय। सुनहु सूर कहतहै मघवा बेगिपरो भहराय ४० ॥

रागसारंग। चर्चरी ॥ सुनत मेघवर्त्त साजि सेन आये। जलवर्त्तधारि तवपवनवर्त्त वज्रवर्त्त अग्निवर्त्त जलद संग आये। घहरात गररात दररात घहरात तररात महरात माथनाये। कौन ऐसो काजबोले हमैंसुरराज प्रलयके साजहमकोबुलाये। बरषदिन संधेगदेत मोकों भोगक्षुद्र अति व्रजलोग गर्बकीन्हें। मोहिं दियो बिसराय पूज्यो गिरिवरजायपरो व्रजधाय आयसु दीन्हें। कितिक व्रजके लोग रिसकरत केहियोग गिरिलियो भोगफल तुरतपैहै। सूर सुरपति सुन्योकयो जैसो लुन्ये। प्रभुकहा सुनो गिरिसहितबैहै ४१ ॥ रागसारंग ॥ बिनती सुनहु देव मघवापति। कैतिकबात गोकुल व्रजबासी बार बार रिस करत जाहि अति। आपुन बैठिदेखिये कौतुक बहुते आयसुदीन्हें। छिनमेंबरषि प्रलयजलपौढ़े खोजरहे नहिंचीन्हें। महाप्रलय हमरे जलबरषै गगन रहे भरिछाई। अकै वृक्ष बट बचत निरंतर कहाब्रज गोकुलगाई। चलेमेघ माथे कर धरिकै मनमें क्रोध बढ़ायो। उमड़तचले इन्द्रके पायक सूरगगन रहे छायो ४२ ॥ रागगौडमलार ॥ मेघ दल प्रबल व्रजलोग

देखे। चकृत जहँतहँ भये निरखि बादरनये ग्वालगोपाल डरि गगन-पेखे। ऐसे बादर सजलकरत अतिमहाबल घहरात करिचहल दशोंदिश अंधकाल। चक्रतभयेनन्द सब महरचकृतभये चकृतनरनारिहारि करतख्याल। घटाघनघोर घहरात अररात गररात दररात ब्रजलोग डरपे। तड़ित आघात तरराति उतपातसुनि नारिनर सकुच तन प्राण अरपे। कहाचाहत होंन भई न कबहुं जो न कबहूं आंगन भौन विकल डोलै। मेटिपूजा इन्द्रनन्द सुतगोविन्द सूरप्रभु अनन्दकरै कलोलै४३॥ रागमलार॥ सैनसाजि ब्रजपरचढि धावहिं। प्रथमबहाय देहिं गोबर्द्धन ता पाछे ब्रजखोदि बहावहिं। अहिरनि करी अवज्ञाप्रभुकी सोफल उनकोतुरत दिखावहिं। इन्द्रहिपेलिकरी गिरिपूजा सलिल बरषि ब्रजनामसिटावहिं। बलसमेत निशि वासर बरषहु गोकुल बोरि पताल पठावहिं। सूरदास सुरपति आज्ञा यह भूतल कतहुं रहननहिं पावहिं ४४ बादर घुमड़िउमड़ि आये ब्रजपर बरषन कारे धूमरेघटा अतिही जल। चपलाअति चमचमात ब्रजजन सबडरतगात टेरतशिशु पिता मात ब्रजगलबल। गरजतधुनि प्रलयकाल गोकुल भयो अंधकाल चकृतभये ग्वालबाल घहरातनभ करतचहल। पूजामेटी गोपाल इन्द्र करत यहहाल सूरश्याम राखहुअब गिरिवरबल ४५ गिरिपरबरषनलागेबादर। मेघवर्त्त सैनसजि आय लैलै आदर। सलिल अखंड धार हूंढतहैं कीयेई मनसादर। मेघपरसपर यहैकहतहैं घोर करौ गिरि कादर। देखिदेखि डरपत ब्रज बासी अतिहीभये मनकादर। यहैकहत ब्रज कौन उबारै सुरपति कियो निरादर। मनमन शोच करत नर नारी कहा भई रहगादर। सूरश्याम देखेगिरिअपनो मेघन कीन्हों दादर ४६ गये बिललाय ब्रज नर नारि। बरतसैंतत धामबासन नहींसुरति सम्हारि। पूजिआये गिरि गोबर्द्धन देति प्रभुगनि गारि। आपुनोकुलदेव सुरपतिबरेउ ताहिबिसारि। दियो फल यह गिरिगोबर्द्धन लेहु गोदपसारि। सूर कौन उबारि लैहै इन्द्रचढेउ प्रचारि ४७॥ रागसोरठ॥ ब्रजकेलोग फिरत बिललाने। गैयनि लै बन ग्वाल गये ते धावत आवत ब्रजहि पराने। कोउ चितवत नभतन चकृतरहेउ कोउ गिरिपरत धरणि अकुलाने। कोउलैरहत ओटवृक्षनकी

अंब धुन्धदिशि विदिशि भुलाने। कोउ पहुंचे जैसे तैसे घर कोउढूंढत गृह नहिं पहिचाने। सूरदास गोवर्द्धन पूजा कीनीकरि फल लहेउ बिहानें ४८॥ रागगोरी॥ तरपत नभ डरपत सबलोग। सुरपति की पूजा बिसराई लेदीनों पर्वतको भोग। नंदसुवन यहबुधि उपजाई कौन देवकहे पर्वत योग। सूरदास गिरिबड़ोदेवता प्रकट होहिं ऐसे संयोग ४९॥ रागमलार॥ ब्रज नरनारि नन्द यशुमतिसों कहत श्याम एकाज करे। कुल देवता हमारो सुरपति तिन को मिलि मेटियरे। इन्द्रहि मेटि गोबर्द्धन थाप्यो उनकी पूजा कहा सरे। सैंतति धरति जहां तहं बासन लरिकन लैले गोदकरें। कोकरि लेयसहाय हमारो प्रलयकालके मेघअरे। सूरदास सबकहत नारिनरक्यों सुरपति पूजा बिसरे ५०॥ रागबिलावल॥ राखिलेहु गोकुलके नायक। भीजत ग्वालं गाय गोसुतसब बिषम बूंदलागत जनु सायक। बर्षत मुशलधार सेनापति महामेघ मघवाके पायक। तुमबिनु ऐसो कौन नन्दसुत यहदुख दुसह मेटिबे लायक। अघमर्दन बक बदन बिदारन बकी बिनाशन सुर सुखदायक। सूरदास तिनको काकोडर जिनके तुमसेसदा सहायक ५१ रागगोंडमलार॥ भारता राखिले नन्दतात। घटाआई गरजि युवति गई लरजिबीज चमकत तरजि डरत गात। और कोउनहीं तुमबनी जहां तहां बिकल ह्वै के कहीतुमहिं तात। सूरप्रभु सुनि हंसत प्रीति उरमें बसत इन्द्रको कसत हरि जगत धात५२॥ रागबिलावल॥ राखिलेहु अब नन्द किशोर। तुमजो इन्द्रकी पूजामेटी बरषत हैअतिजोर। ब्रजबासी सब यों चितवत हैं ज्यों करि चन्द्रचकोर। जिनि जिय डरहु नयन जिनि मूंदहु धरिहौं नखकी कोर। करि अभिमान इन्द्रचढ़ि आयो करत घटा घनघोर। सूरश्याम कहितुमसब राखे बूंदन आवै कोर ५३॥ रागगोंडमलार॥ गगन मेघ घहरात घबरात गात। चपला चम चमात चमकि नभ भहरात राखिले क्यों न ब्रजनन्दतात। सुनत करुणा बैनउठे हरि बल सेन नयनकी सैन गिरितन निहास्यो। सबनि धीरजदियो इचकि मंदरलियो कह्यो गिरिराज तुमको उबास्यो। करजकेअग्र भुजबाम गिरिवर धरेउ नाम गिरिधर परयोभक्तकाजे। सूरप्रभुकहत ब्रजबासि बासीन सोंतुम्हें राखि लियो गिरिराज राजे५४

रागगौरी ॥ श्याम लयो गिरिराज उठाय। धीर धरौ हरि कहत सबनि सों गिरि गोबर्द्धन कियो सहाय। नन्द गोप ग्वालनि के आगे देउ कहेउ यशप्रकट सुनाय। काहे को व्याकुल भये डोलत रक्षाकरेउ देवता आय। सत्यबचन गिरिदेव कहतहैं कान्हमोहिं करलैहि बनाय। सूरदास नारीनर ब्रजके कहतधन्य तुम कुंवर कन्हाय ५५ ॥ रागमलार बासकरजु टेक्यो ब्रजराज। गोपी ग्वालगाय गोसुत को दुखबिसरेउ सुख करत समाज। आनँद करत सबै गिरिवरतर दुख डारेउ सबही बिसराय। चकृत भये देखत यहलीला परशत सबै हरिचरणन धाय। गिरिवरटेकिरहे बायेंकर दक्षिण करलिये सखनि उठाय। कान्हकहत ऐसोगोबर्द्धन देखो कैसोकियोसहाय। गोप ग्वाल नन्दादिक जहँ लौं नन्दसुवन लिये निकट बुलाय। सूरदासप्रभु कहत सबनिसों तुमहूं मिलिटेको गिरिआय ५६ नीकेधरो नंदनन्दनबलबीर। गिरि जिनिपरै टरैनखते जिनि कौन सहै गोपीर। चहुंदिशिपवन झकोरत घोरतमेघ घटागंभीर। बनै बनै बरषत गिरिऊपर धार अखण्डित नीर। अन्ध धुन्ध अम्बरते गिरि पर परत बज्र के तीर। चमकि चमकि चपला चकचौंधति श्याम कहत मनधीर। करजोरत कुलदेवमनावत ब्रजके लोग अहीर। पय पकवान बिहान पूजि हैं लै दधि मधु घृत क्षीर। गोपी ग्वाल गाय गोसुत सब रहे सुखसहित शरीर। सूरश्याम गिरि धरेउ बामकर मेघ भये अति भीर ५७ गिरिवर नीके धरो कन्हैया। देखे रहौ टरै जिनि नखते भुजा तनकसी भैया। जबहीं गाढ़ परत ब्रज लोगनि तब करि लेत सहैया। जननि यशोदा करलै चापति अति श्रम होत न कन्हैया। देखत प्रकट धरे गोवर्द्धन चकृत भये नँद रैया। पिता देखि व्याकुल मनमोहन तब एक बुद्धि उपैया। आवहु तात गहौ गोवर्द्धन गोपिन संग लेवैया। जहां तहां सबहिन गिरि टेक्यो कान्हहि औत करैया। श्याम कहत सब नन्द गोप सों भलो लयो उचकैया। सूरदास प्रभु अन्तर्यामी नन्दहि हरष बढ़ैया ५८ ॥ रागकान्हरो ॥ गिरिवर धरौं सखाकर करते। रे भैया ग्वाल लकुटियनि टेको अपने अपनेभुजनके बलते। सात दिवस मूशल जलधारा बरषत है निशिदिनअम्बरते। अंतरिक्ष जलजात कहां यह क्रोधसहितफिरि

बर्षत झरते। गायगोप नन्दादिक राख्यो तृणावृंद सबनेक न थरते। सूर गोपाल राखि गिरिवरतर गोकुल ब्रजनारी नर घरते ५९॥ रागमलार॥ बरखत मेघ बर्त्त धरणीपर। मूशलधार सलिल बर्षत हैं बूंद न आवत भूपर। चपला चमकि चमकि चकचौंधति करति शब्द आघात। अवाभुन्व पवन बर्त्तत घन करतफिरत उत्पात। निशिसम गगन भयो अच्छादिक बरषि बरषि झरइन्द्र। ब्रजवासी सुख चैन करत करगिरिवर धरिगोबिन्द। मेघवर्षि जलसबैबुहाने दिविगुन-गये सिराय। बैसइ गिरि बैसइ ब्रजवासी दूनोंहरष बढ़ाय। सातदि-वस जल बरषि निशादिन ब्रज घरघर आनन्द। सूरदास ब्रजराखि-लियो हरि गिरिवर कर नँदनन्द ६०॥ बरषि बरषि घन ब्रजतन हेरत। मेघबर्त्त अपनीसेना को खीजतहैं फिरि टेरत। कहा बरषि अबलोंतुम कीने राखत जलहि छिपाय। मूशलधार बरषि ब्रजपाड़ौ सातदिवस भयेआय। रिस करिकरि गरजत नभतरपत चाहत ब्रजहिबहाय। सूर श्यामगिरिगोबर्द्धन धरि ब्रजजनको सुखदाय। बरषिबरषि सबहारे बादर। ब्रजके लोगनि धोय बहावहु इन्द्र हमहिं कीह आदर। कहा जायकैहैं प्रभुआगे करिहैं बहुत निरादर। हमपर्वत पर्वत जलसोखत ब्रजबासी सब सादर। पुनि रिस करत प्रलय जलबर्षत कहत भयेसब कादर। सूरगाय गोसुत सबराख्यो गिरिवरधरब्रज आदर६२॥ राग धनाश्री॥ कहा होतजल महाप्रलयको। राख्यों भैंति जेहि कारजजल को बचत नहीं बहुतनको। भुवपर एक बूंदनहिं पहुंच्यो निझरि गये सब मेह। बासरसात अखंडित धारा बरषत हारेदेह। नूरभयो बिनु नीरसबनिको नाम रहेउहै बादर। सूरचले फिरि अमर राजपै ब्रजते भये निरादर६३ रागमलार॥ मघवनि हारिमानि मुखफेरेउ। नीकोधोय बडो गोवर्द्धन जवनीके ब्रज हेरेउ। नीकी गाय बच्छ सब नीके नीके बालगोपाल। नीकोबन बैसौ ये यमुना मन मन भये बिहाल। गोकुल ब्रज वृन्दावन मारग नेकनहीं जल धार। सूरप्रभु अगाणित महिमा कहाभयो जलसार६४॥ रागनट॥ मघवनिजाय कहीपुकारि। दोनहूं सुरराज आगे अस्त्र दीन्हे डारि। सात दिन भरि बरषि ब्रजपर गई करी नेकनझारि। अखंड धारासलिल निझरेउ मिटीनहीं लगारि।

धरणि नेक नबूंद पहुंच्यो हरष ब्रज नरनारि। सूर मेघनि इन्द्र आगे करी यहै गोहारि ६५ ॥ रागगौरी ॥ तुम बर्षत ब्रज कुशल परेउ। तुम बर्षत जल महाप्रलयको यहकहि मनमन शोचकरेउ। एकघरीजाके बर्षेते गगन आच्छादित होय। ते मघवा बिह्वलभो आगे बातकहतहैं रोय। सातदिवस भरिबरषि सिराने तातेभयो निरास। सूरदाससुरपति शंकितभये सुरनि बुलाये पास ६६ असरराज सब असरबुलाये। आज्ञासुनत सकलघरघरतेआयगये कछुबिलंबनलाये। कौनकाजसुरराजहंकारे हमको आयसुहोय। देखहु मेघ बर्त्तकनिकी गति ब्रजते आये रोय। गोबर्द्धनकी करी पुजाई मोहिं डारेउ बिसराय। मेघबर्त्त जलबर्त्तपठायेआवो ब्रजहिबहाय। धारअखंडित बर्षिसातदिन ब्रजपहुंच्यो नहिं बुन्द। सुरन कही गोकुल प्रकटेहैं पूरणब्रह्म मकुन्द। मो सों क्यों न कहो तुम तबहीं गोकुलहै ब्रजराज। सूरदासप्रभु कृपाकरहिंगे शरण चलौ दिविराज ६७ ॥ राग सोरठ ॥ शरण गये जो होय सुहोय। वेकर्त्ता वेईहैंहर्त्ता अब नरहो सुखगोय। ब्रजअवतार कहेउहो श्रीमुख तेईकरत बिहार। पूरणब्रह्म सनातन वहीमैं भूल्यों संसार। उनकेआगे चाहूंपूजा ज्योंमणि दीपप्रकाश। रबिआगे खद्योत उजारी चन्दनसंग कुबाश। कोटिइन्द्र सणहीमेंराचे छिनमेंकरै बिनाश। सूररच्योइनहींसुरपति मैं भूल्यों तेहि आश ६८ रागसारंग ॥ प्रकट भये ब्रज त्रिभुवनराई। युगयुग रीति त्रिगुणबुधिव्यापी शरण चल्योसुरपति अकुलाई। स्वपनेकोधन जागिपरेउज्यों त्योंजानी अपनी ठकुराई। कहत चल्योयह कहाकियो मैं जगत पितासों करीढिठाई। शिवबिरंचि रबिचन्द्र बरुण यम लिये असरसब संगलगाई। बारबार शिर धुनतजात मग कैहों कहा बदन दिखराई। वेहैं परम कृपाल महाप्रभु रैहों शीशचरण परनाई। सूरदास प्रभु पितुमाता मैं ओछीबुद्धि करी लरकाई ६९ ॥रागकान्हरो ॥ सुरगणसहित इन्द्रब्रजआवत। धौलबरण ऐरावत देख्योउतरि गगनसे धरणि धसावत। अमरशिव रबिशशि चतुरानन हयगय बसहहंस मृगजावत। धर्मराजवनराजअनलादिव शारद नारद शिवसुत भावत। मेढामढी मगरगुडरारो मोर आखुमन वाहनगावत। ब्रजकेलोगदेखि डरपेमन हरिआगे कहिकहि जुनावत।

सातद्योसजल बरषिबढ़ानों आवतचल्यो ब्रजअन्नावत। घोराकरतजहाँ तहँठाढ़े ब्रजबासिन को नहींबचावत। दूरिहिते बाहन ते उतरेउ देवन सहित चले शिर नावत। आय परेउ चरणनि तर आतुर सूरदास प्रभु शीशउठावत ७० सुरपति चरणपरो गहिधाय। युग गुण छोड़ शेष गुण जान्यों आयो शरण राखि शरणाय। तुम बिसरेउ तुम्हरीही माया मो तुम बिनु नाहीं और सहाय। शरण शरण पुनि पुनि कहि कहि स्वहिं राखु राखु त्रिभुवनपति राय। मोते चूक परी बिनुजाने मैं कीन्हें अपराध बनाय। तुम माता तुमहीं जगधाता तुम भ्राता अपराधक्षमाय। बालक जननी सोंबिरुझैज्यों माताताकोलेतमनाय। ऐसेहि मोहिंकरो करुणाअब सूरश्याम ज्योंसुतहितमाय ७१ ॥ राग बिलावल ॥ व्याकुल देखि इन्द्रको श्रीपति उभय भुजाभरि लियो उठाय। अभै नृभैकर माथेदीनों श्रीमुखवचन कहेउ मुसकाय। कहाभयो करिक्रोध चढ़े ब्रज मैं तुरतहि करिलियो सहाय। हमको जानि नहीं तुम कीनो छिन जानेयह करी ढिठाय। अब अपने जियशोच करो जिनि यह मेरीदीनी ठकुराय। सूरश्याम गिरिधर सबलायक इन्द्रहि कहेउ करो सुखजाय ७२॥ रागनट ॥ सुरगण करत अस्तुति सुखनि। दरशतें तनताप खोये मिटे अघके दुखनि। अंगपुलकित रोम गदगद कहतबानी मुखनि। बामभुज गिरिटेकराख्यो करजलघुके नखनि। प्रेमके बश तुमहिं कीन्हें ग्वाल बालक सखनि। योगि जन बन तपत जपत नहिं पावतसखनि। धन्य नन्द धनि मात रशुमति चलत जाके सखनि। सूरप्रभु महिमा अगोचर जातकापै लखनि ७३ ॥ राग भैरों ॥ जै गोबिन्द माधवमुकुन्दहरि। कृपासिन्धु कल्याण कंसअरि। कृपनि पाल केशव कमलापति। कृष्णकमल लोचन अगतिन गति। रामचन्द्र राजीव नयनवर। शरण साधु श्रीपति शारँग धर। बनमाली बावन बिट्ठलबल। बासुदेवबासी ब्रजभूतल। खरदूषण त्रिशिरा शिरखण्डन। चरणचिह्न दण्डक भुवमण्डन। बकीदवन बकबदन बिदारण। बरुण बिषाद नन्दनिस्तारण। ऋषिमखत्राण ताड़का तारक। बनबसि तात बचन प्रतिपारक। गोकुलपति गिरिधर गुणसागर। गोपीरमणरास रतिनागर। रघुपति प्रबल पिनाक बिभञ्जन। जगहित जनकसुतामन

रञ्जन । कालीदमन केशिकर पातन । अघअरिष्ट धेनुक अनुघातन । करुणामय कपिकुल हितकारी । बालिविरोध कपट मृगहारी । गुप्त गोप कन्या ब्रजपूरण । द्विजनारी दरशन दुख चूरण । रावण कुम्भ-करण शिरछेदन । तरवर सात एक शर भेदन । शंखचूड़ चाणूर सं-हारन । शक्रकहै मेरोरक्षा कारन । उत्तर कृपा गीध कृतकारी । दरशन दै शवरी उद्धारी । जेपद सदा शम्भु हितकारी । जेपद परसि सुरसरी गारी । जे पद रमा हृदय नहिंटारी । जिन पदते तिहुंभुवन तियारी । जे पद वृन्दावनहिं बिहारी । जेपद पांडव गृह पगुधारी । जिन पद शकटासुर संहारी । जे पद अहिफणफण प्रतिधारी । जेपद भक्तनके सुखकारी । जिन पदरज गौतम त्रिय तारी । सूरदास सरणागत वेइ पद । करहु कृपा अपने जनपर सद ७४ ॥ राग आसावरी ॥ अस्तुतिकरि सुर घरनिचले । यहै कहत सबजात परस्पर सुकृत हमारे प्रकटफले । शिव बिरञ्चि सुरपति यह भाषत पूरण ब्रह्महि प्रकट मिले । धन्य धन्य यहदिवस आजुको जातहै मारग करतगिले । पहुँचेजाय आपने ओकनि अमरनारि अति हरख भरे । सूरश्याम की लीला सुनि सुनि अतिहित मङ्गल गानकरे ७५ ॥ राग मलार ॥ देखियत द्वै घनहैं उनये । उत मघवावश भक्तवश्य इतअति रोषभये । उत सुरचाप कलापचन्द्र इत तड़ितपट पीतनये । उत सेनापति बरषत येइत अमृतधार चितये । अति उतंग गिरिराज बिराजत करज उठायलये । मनो बिम्बमरकत बिच महानग चतुरनारि बनये । लुटत शक्रको शीशचरणतर युगुल सुराननते समये । मानहुँ कनकपुरी पतिके शिर रघुपति फेरिदये । भये प्रसन्न सकल सुरपुरके प्रमुदित फेरिदये । सूरदास गिरिधर करुणामय इन्द्रथापि पठये ७६ देखोमाई बादरकी बरियाई । मदनगोपाल धरो कर गिरिवर इन्द्रढीठ झरलाई । जाके राज सदासुख कीन्हों ताको सबन बड़ाई । सेवककरे स्वामिसों सरवरि इनबातन पतिजाई । इन्द्र ढीठ बलिखात हमारी देखे अखिल गँवाई । सूरदास तिनको काको डर जेहिबन सिंह कन्हाई ७७ ॥ रागसोरठ ॥ जहां तहां तुम हमहिँ उ-बारो । ग्वालसखा सबकहत श्यामसों धनियशुमति अवतारो । तृणा-वर्त ब्रजपर चढ़िआयो लागोदेन उड़ाय । अति शिशुतामें ताहि संहारो

गिरो शिला पर आय। फल जनाय बालक सँग खेलत केशी आयो
साथ। वाहि मारि तुम हमहिँ उबारो ऐसे त्रिभुवन नाथ। कागासुर
शकटासुर मारो पयपीवत दनुनारि। अघाउदरतें हमहिँ बचाये बका
बदन धरिफारि। कालीदह जल अँचेगयेमरि तबतुम लियो जिवाय।
सूरश्याम सुरपतिते राख्यो देतो सबनि बहाय ७८॥ राग बिलावल ॥ब्रज
युवती ब्रजनर ब्रजबासी कहत श्यामसरि कौन करै। ब्रज मारत ब्रज
नाथहि आगे बज्रायुध मन कोपकरै। बलसमेत बरष्यो ब्रजऊपर बल
मोहनकी सुधि न करै। हारिमानि हहरो हरिचरणन हरषि हरषि
अब हेतुकरै। गरज गरज गहराय गुसाकरि गिरिवो रोकहि पयज
करै। सूरश्याम गिरिधर करुणामय तुम बिनुको प्रभु क्षमाकरै ७९
राग मलार ॥ श्याम गिरिराजको धरो करसों। अतिहि विस्तार, अति
भार अति तुमवार बामभुज टेकि लघुजात करसों। कहत सब ग्वाल
धनि धन्य नँदलाल ब्रज धन्य गोपाल बल कौतिक करसों। धन्यय-
शुमति मात जन्योजिनि तुम तात चोरी माखन खात बांधे करसों।
कान्ह हँसिके कहेउ तुम सबनि गिरि गहेउ रहेउ ब्रजको बहेउ लकुट
करसों। सूरप्रभुके चरित कहावल गिरिधरत चरण रज लेत सुरराज
करसों ८०॥ राग सोरठ ॥ जब करते गिरि धरो उतारि। श्याम कहेउ
बहुरो गिरि पूजहु ब्रजजन इन सब लयो उबारि। यह सुनतहि मन
हरष बढ़ायो कियेपकवान सँवारि। बहुमिष्ठान बहुतविधि भोजनबहु
व्यंजन अनुहारि। परसि धरो गोवर्द्धन आगे जेंवत अति रुचि भारि।
सूरश्याम गिरिधर बर मांगत रवि सों घोषकुमारि ८१॥ राग नट ॥
करतें धरो धरणी धरनि। देखि ब्रजजन थकित ह्वैरहे रूप रतिपति
हरनि। लेत बैरन धरतजान्यों कहत ब्रजनर घरनि। तनुललित भुज
अतिहि कोमल कियो अति बलकरनि। मोर मुकुट बिशाल लोचन
श्रवण कुण्डल बरनि। नवजलद सुरचापकीछबि युगल खंजनतरनि।
बरषनिझरे मेघपायक बहुतकीन्हीं धरनि। सूर सुरपति हारिमान्यो
परो तब हरिचरनि ८२॥ राग सोरठ ॥ नीके धरणि धरो गोपाल। प्र-
लय जल घन बरषि सुरपति चरणपरो बेहाल। करत अस्तुति नारि
नर ब्रजनन्द अरु सबग्वाल। जहांतहां सहाय हमको होतहैं नँदलाल।

जाति पूजत डरत मनमें ताहि देख्योदीन। त्रिदशपति सुरनिको नायक सो तुमहिँ आधीन। सूरप्रभु करते गोवर्द्धन धरणि धरेउउतारि। देखि छबि अति नन्दसुतकी नारि तन मनवारि ८३॥ रागमलार॥ मेरे मोहन जल प्रवाह क्यों टारेउ। मेघवर्त्त जल बरषि सात दिन नेक न नयन उघारेउ। बूझति मुदित यशोदा जननी इंद्र कोप करि हारेउ। बारबार यह कहत कान्हसों कैसे गिरि नख धारेउ। सुरपति आय परेउ गहिपांयन ताको गरबगाडवारेउ। सूरश्याम जनको सुख दाता करतेधरणि उतारेउ ८४॥ रागसोरठ॥ मेरे सांवरे मैं बलिबलि गई स भुजा की। क्यों गिरि सबल धरेउ कोमलकर बूझतिहौं गतिताकी। इन्द्रकोप बरष्यो ब्रजऊपर यहि सब हे हठमारे। गोपी ग्वाल कहत नँद ढोटा मैं हम सबनि उबारे। थारतमोर दूध दधि रोचन हरषि यशोदा लाई। करि शिरतिलक चरण रज बन्दित मनोरंक निधि पाई। सब व्रज नारि चलीं गोकुल ते सांझ सांझ मुसकानी। फिरि फिरि दरशकरत येही मिस प्रेम तृषा न बुझानी। सूरदास सुरपति शंकित ह्वै सुरनि लिये सँगआयो। हो अज्ञान तुम हौ अबिनाशी प्रभु मैं तेरोमरम न पायो ८५ गिरिकर क्यों राख्यो दिनसात। अतिही कोमल भुजा तुम्हारी चापति यशुमति मात। ऊंचो अति बिस्तार भारबहु यह कहि कहि पछितात। वह अगाध तेरे तनक तनक कर कैसेराख्यों तात। मुखचूमति हरिकंठ लगावति देख हँसत बलभ्रात। सूरश्याम को कैतिकबात यह जननी जोरति है नात ८६॥ रागगौरी॥ पितामात इनके नहिं कोई। आपुहि कर्ता आपुहिहर्त्ताबिगुणरागयेते रहतहैं सोई। कितकबार अवतारलियो व्रजयेहैं ऐसो वोई। जलथल कीटब्रह्म के ब्यापक और न इनसर होई। बसुधा भार उतारन कारन आपु रहत तन गोई। सूरश्याम माता हितकारी भोजन मांगत रोई ८७॥ रागकान्हरो॥ जननी चापति भुजाश्यामकी ठाढे देखि हँसत बलराम। चौदह भुवन उदरजाके कहुं गिरिवर धरेउ बहुत करबाम। कोटि ब्रह्माण्ड रोम रोमनि प्रति तहां तहां निशि बासर धाम। जो आवत सो देखि चकृत ह्वै कहतकरे हरिऐसे काम। नाभिकमल ब्रह्मा जनावत जो बिश्राम। आवत जात बीचही भटक्यो

दुखितभयो खोजत निज धाम। तिन सों कहत सकल ब्रजबासी कैसे गिरि राख्यो करश्याम। सूरदास प्रभु जल थल व्यापक फिरि फिरि जनमलेत नँदधाम ८८॥

—※—

अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम॥

अथ श्री गोबर्द्धनकी दूसरी लीला॥

श्रीकृष्णाय नमः॥

रागबिलावल॥ नन्दहि कहति यशोदा रानी। सुरपति पूजातुमहिं भुलानी। यहनहिं भली तुम्हारी बानी। मैं गृहकाज रहिउँ लपटानी। लोभहिलोभ रहीहैं सानी। देवकाजकी सुधिबिसरानी। महरिकहति पुनि पुनि यहबानी। पूजाके दिनपहुंचे आनी। सूरदास यशुमतिकी बानी। नन्दहि खीझि खीझि पछितानी १ नन्द कहेउ सुधिभली दिवाई। मैं तो राज काज मनलाई। नितप्रति करत वहै अधमाई। कुलदेवता सुरनि बिसराई। कंसदई यहलोग बड़ाई। गांवदशक सरदार कहाई। जलधिबुन्द ज्यों जलधिसमाई। मायाजहँकी तहांबिलाई। सूरदास यह कह नँदराई। चरण तुम्हारे सदासहाई २ कहति महरि तब ऐसीबानी। इन्द्रहि कीदीनी रजधानी। कंसकरत तुम्हरी अतिकानी। यहप्रभुकीहै आशिष बानी। गोपिन बहुत बड़ाईमानी। जहां तहां यह चलति कहानी। तुमघरमें मथियेमथानी। ग्वालिनि रहति सदा बिततानी। अनउपजत उनहींके पानी। ऐसेप्रभुकी सुरति भुलानी। सूरनन्द मनमेंतब आनी। सत्यकही तुम देवकहानी ३ महरिलियो यकग्वाल बुलाई। गोप नन्द उपनन्द बुलाई। अरुआनहु वृषभानलिवाई। तुरतजाहु तुमकरहु चँड़ाई। यह सुनि ग्वाल चल्यो तहं धाई। नन्दमहरि को कहो सुनाई। बेककरहु अबजिनि बिलमाई। मोहिं कह्यो सबदेहु पठाई। यहसुनिके सबचले अतुराई। मनमन शोच करत पछिताई। कंस काज जिय सांझ डराई। राजअंश धन दियोचलाई। सूरनन्द गृहपहुंचे आई। आदरकरि बैठेनँदराई ४ गोप

सबै उपनन्द बुलाये। कौन काज को हम हँकराये। सुनतहि तहँ सब आतुर आये। कंस कछू कहिमांगि पठाये। यहैजानि अतिआतुर आये। सब मिलि कह्यो बहुत डरपाये। राजाहिराज अंशदे आये। ग्वाल कहत तुरतहि उठिधाये। महरकह्यो हमतुम डरवाये। हँसिहँसि कहत अनन्द बढ़ाये। हमतुम कहँ सुखकाज मँगाये। वारबार यह कहिदुखपाये। सूरनन्द पूजाबिसराये। यहसुनतहि शिर सबनि नवाये ५ पूजासुनत सनहिंसुख कीन्हें। भलीकरी हमको सुधिदीन्हें। यह बानी सबमुखते कीन्हें। बड़ोदेव सबदिन को चीन्हें। इनहींते ब्रजबासबसीन्हें। हमसब अहिरजाति मतिहीन्हें। पूजाकी बिधिकरत सबैमिलि। जैसिहिभांति सदाआईचलि। बिदामांगिनँदसोंघरआये। घरनि घरनियहबातचलाये। सूरदास गोपनिकीबानी। ब्रजनरनारि सबनि यह जानी ६ नन्दघरनि ब्रजबधूबुलाई। यह सुनतहि तुरतहि सबआई। कोनकाज हमसहरि हँकारी। तुम नहिंजानत यौवनभारी। बिहँसि कहति कहदेतिहो गारी। सुरपति पूजा करोसँवारी। देखो हमसब सुरति बिसारी। औरो हमहिं बूझिये गारी। यहसुनि हर्षित भइ नँदनारी। सखियन बचन कह्यो जबप्यारी। सूर इन्द्रपूजा अनुसारी। तुरतकरहु सबभोग सँभारी ७ घरनि चलीं सबकहि यशुमति सों। देवमनावत बचन बिनतसों। तुमबिनु और नहीं हमजाने। मुख मुख अस्तुति करति बखाने। जहां तहां ब्रजमंगल गाने। बाजतढोल मृदंग निशाने। बहुबहुभांति करतपकवाने। नेवजकरि धरिसांझबिहाने। छुवतनहीं देवकाजसकाने। देवभोगको रहतडराने। सूरदासहस सुरपति जाने। और कौन ऐसो ज्यहिमाने ८ नन्दमहर घरहोतबधाई। करत सबैबिधिदेवपुजाई। नेवज करति यशोदा आतुर। अष्टसिद्धि घरही अति चातुर। मैदा उज्ज्वल करिके छान्यो। बेसनदारि चना करवान्यो। घृत मिष्टान्न सबै परिपूरण। मिश्री करति पाक को चूरण। कन्दकरति मिठाईघृतपक। रोहिणि करति अन्न भोजन तक। संग और ब्रजनारी लागी। भोजन करती हैं बड़भागी। महरि करत ऊपर तरकारी। जोरत सबबिधि न्यारीन्यारी। सूरदास जो मांगत जबहीं। भीतरते ले देतहैं सबहीं ९ महरि सबै नेवजलै सैंतति। श्याम

छुवैं कहुँ ताको डरपति। कान्हहि कहति यहां जनिआवै। लड़िवनको यह देव डरावै। श्याम रहे आँगनहिं डराई। मनमन कान्ह हँसत सुखदाई। मैया री ग्वहिं देव दिखैं हैं। इतनो भोजन सब वै खैहैं। यह सुनि खीझति है नँदरानी। बारबार सुतसों बिरुझानी। ऐसी बात न कहो कन्हाई। तूकत करतश्याम लँगराई। करजोरति अपराध क्षमावति। बालकको यह दोष मिटावति। सूरदास प्रभुको नहिंजाने। हँसतचले मनमें न रिसाने १० युवती कहति कान्ह रिस पायो। जानदेव सुरकाज बतायो। बालक आय छुवै कहुँ भोजन। उनकी पूजा जाने कोजन। यह कहि कहि देवता मनावति। भोज सामग्री धरति उठावति। उनकी कृपाधाम धनमेरे। उनकीकृपा गऊ घनघेरे। उनकी कृपा पुत्र फलपायों। देखहु श्यामहिँ खीझि पठायों। सूरदास प्रभु अन्तर्य्यामी। ब्रह्मा कीट आदिके स्वामी ११ नंद निकट तब गये कन्हाई। सुनतबात जहँ इन्द्र पुजाई। महरनन्द उपनन्द तहांसब। बोलिलये वृषभान महर तब। दीपमालिका रचिरचि साजत। पुहुपमाल मंडली बिराजत। वरष सात के कुंवर कन्हाई। खेलतमन आनन्द बढ़ाई। घर घर देति युवति जनहाथ। पूजा देखि हँसत ब्रजनाथ। मो आगे सुरपतिकी पूजा। मोते और देवको दूजा। ग्रातग्रात इन्द्र रोमप्रति रोमनि। ग्रातरोमनि मेरे यक रोमनि। सूरश्याम ये मनमो बातें। लीन्हों भोग बहुतदिन जातें १२ सुरपति पूजा जानि कन्हाई। बारबार बूझत नँदराई। कौनदेवकी करत पुजाई। महर कह्यो तब कान्ह सुनाई। सुरपति सब देवनको राई। तिनकी पूजा करत सदाई। तुम्हरेहि हित मैं करत सदाई। जाते तुमरहो कुशल कन्हाई। सूर नन्दकहि भेदबताई। भीर बहुत घरजाहु कन्हाई १३ जाहु घरहि बलिहारी तेरी। सेजजाय सोवहु तुम मेरी। मैं आवत हों तुम्हरेहि पाछे। भवन जाहु तुम मेरे बाछे। गोपिन लीन्हें कान्ह बुलाई। मंच कहो यक मनहिँ समाई। आजु एक सपने कोउ आयो। शंख चक्र भुज चारिबनायो। मोसों यह कहिकहि समुझायो। यह पूजा किन्ह तुमहिं सिखायो। सूरश्याम कहि प्रकट सुनायो। गिरि गोवर्द्धन देव बतायो १४ यह तब कहनलगे दिखराई।

इन्द्रहि पूजे कौन बड़ाई। कोटि इन्द्र हम छण में मारैं। छणही में पुनि कोटि सँवारैं। जाके पूजे फल तुम पावहु। ता देवहि तुम भोग लगावहु। तुम आगे वह भोजन खैहै। मुख मांगे फल तुम को देहै। ऐसो देव प्रकट गोवर्द्धन। जाके पूजे बाढ़ै गोधन। समुझिपरी कैसी यह बानी। ग्वाल कही यह अकथ कहानी। सूरश्याम यह सपनो पायो। भोजन कीने देवहि खायो १५ मानहु कहेउसत्य ममबानी। जो चाहो ब्रजकोरजधानी। जो तू मुंहमांगे फल पावहु। तौ तुम अपने करहि जिँवावहु। भोजन सबखैहैं मुंहमांगे। पूजतसुरपति तिनके आगे। मेरीकही सत्यकै मानहु। गोवर्द्धनकी पूजा ठानहु। सूरश्याम कहिकहि समुझायो। नन्दगोप सबके मनआयो १६ सुरपति पूजा मेटि कन्हाई। गोवर्द्धनकी करत पुजाई। पांचदिनालौं करीमिठाई। नन्दमहर घरकी ठकुराई। जाके घर धनि महरियशोदा। अष्टसिद्धि नवनिधि चहुँकोदा। घृतपकबहुतभांति पकवाना। व्यंजनबहुको करै बखाना। भोगअन्न बहुभार सजाई। अपने कुल सब अहिर बुलाई। सहस शकटभरि भरतमिठाई। गोवर्द्धन को प्रथम पुजाई। सूरश्याम यह पूजाठानी। गिरिगोवर्द्धन की रजधानी१७ ब्रजघरघर सब भोजन साजत। सबकेद्वार बधाई बाजत। शकटजोरि लैचले देवबलि। गोकुल ब्रजबासी सब हिलिमिलि। दधिलीन्ही मधुमाजिमिठाई। कहँ लगि कहौं सबैबहुताई। घरघरते पकवान चलाये। निकसि गांवके खैंड़ेआये। ब्रजबासी तहँ जुरे अपारा। सिंधुसमान न वार न पारा। पैंडेचलन नहीं कोउपावत। शकटचले सबभोजन आवत। सहसशकट चले नन्दमहरके। अवर शकट कितने घरघरके। सूरदासप्रभु महिमा सागर। गोकुल प्रकटेहैं हरिनागर १८ यक आवतघरते चलिधाय। एकजात फिरि घरसमुदाय। यकटेरत यक दौरे आवत। एकगिरावत एक उठावत। एककहत आवहुरेभाई। बैलदेतहैं शकट गिराई। कौन काहिको कहै सँभारैं। जहां तहां सबलोग पुकारैं। कोउ गावै कोउ निर्त्तत्आवै। श्याम सखासँग खेलतभावै। सूरदासप्रभु सबकेनायक। जो मनधरैं सो करिबे लायक १९ सजिशृङ्गारचलीं ब्रजनारी। युवतिन भीरभईअतिभारी। जगमगात अगनित प्रतिगहनो। सबकेभाव

दरश हरि लहनो। यहिमिस देखन को सब आई। देखति यकटक कुँवरकन्हाई। बहनहिं जानति देवपुजाई। केवल श्यामहिं सों लव लाई। को मरजात कहांको बोलत। नन्दसुवनते चित नहिं डोलत। सूर भजै हरि जो ज्यहि भाऊ। मिलततताहि प्रभु तेहि सुभाऊ २० नन्दगोप उपनंद गये तहँ। गिरि गोवर्द्धन देव बड़े जहँ। शिखर देखि सब रीझे अनमन। ग्वालकहत आजुहि अचरज बन। अति ऊंचे गिरिराज बिराजत। कोटि मदन निरखत छबि लाजत। पहुँचेशकटनि भरिभरि भोजन। कोउ आये कोउ नहिं कहुँ खोजन। तिनके काज अहीर पठाये। बिलँब करहु जनि तुरत बुलाये। आवत मारग पाये तिनको। आतुर ह्वै बोले नँद जिनको। तुरत लिवाय तिनहिं तहँ आये। महर मनहिं अतिहर्ष बढ़ाये। सूरदास प्रभु तहँ अधिकारी। पूजत हैं पूजा परकारी २१ आय जुरेसब ब्रजकेबासी। डेरा परयउ कोश चौरासी। एक फिरत कहुँ ठौर न पावैं। ग्वलेपर आनन्द बढ़ावैं। कोउ काहूसों बैरन ताके। बैठत मन भावत जहँ जाके। खेलत हँसत करत हल। जुरे लोग जहँतहां अकूहल। नंद कह्यो सब भोगमँगावहु। अपने अपने सबलै आवहु। भोग बहुत वृषभानहिं घरको। को कहि बरणौ यतिहिंअवसरको। सूरश्याम जब आयसु दीन्हों। बिप्रबोलाय नंद तब लीन्हों २२ तुरततहां सब बिप्रबोलाये। यज्ञारम्भन तहां कराये। सामबेद द्विज गान करत तहँ। देखत सुर बिथके अम्बर महँ। सुरपति पूजा तबहिं मिटाई। गिरि गोवर्द्धन तिलक चढ़ाई। कान्ह कह्यउगिरि दूध न्हवावहु। बड़ो देवता इनहिं मनावहु। गोवर्द्धन दूधहि नहवाये। देवराजकहि माथ नवाये। नयोदेवता कान्ह पुजावत। नर नारी सब देखन आवत। सूरश्याम गोवर्द्धन थाप्यो। इन्द्र देखि रिस करि तब कांप्यो २३ देखि इन्द्र मन गर्वबढ़ायो। ब्रजलोगनि मोको बिसरायो। अहिर जाति ओछी मति कीन्ही। मेरी पूजा गिरि को दीन्ही। पूजत गिरिहिं कहा मति आई। गिरि समेत ब्रजदेउँ बहाई। देखौधौं कितनो सुख पैहैं। मेरे मारत काहि मनैहैं। पर्बत तब इनको क्यों राखत। बारंबार यह कहि कहि भाषत। पूजा गिरि अति प्रेम बढ़ाये। सपने को सुखलेत मनाये। सूरदास सुरपति की बानी। ब्रज-

गोरों परलैकैपानी २४ श्याम कह्यो तब भोजन ल्यावहु । गिरि आगे सब आनि धरावहु । सुनत नन्द तहँ ग्वाल बुलाये । भोग सामग्री सबै मँगाये । षटरसके बहु भाँति मिठाई । अन्नभोग अतिही बहुताई । व्यंजन बहुत भाँति परुसायो । दधि लोनी मधु माठ धरायो । दहीबरा बहुते परुसायो । चन्द्रहिसम पटतरते पायो । अन्नकूट जैसो गोवर्द्धन । अरु पकवान धरे चहुँकोदन । परसे भोजन प्रातहि ते सब । रबि माथे ते ढरकिगयो अब । गोपनि कह्यउ श्याम ह्यां आवहु । भोगधरयाउ सब गिरिहि जेंवावहु । सूरश्याम आपुनहीं भोगी । आपुहिमाया आपुहि योगी २५ कान्ह कह्यउ नँद भोग लगावहु । गोप सहां उपनन्द बुलावहु । नयन मूंदि करजोरि मनावहु । प्रेमसहित देवैहि चढ़ावहु । मन में नेक खुटुक जिनि राखहु । दीन बचन मुखते तुम भाषहु । ऐसी विधि गिरि परसन ह्वै हैं । सहसभुजाधरि भोजन खैहैं । सूरदास प्रभु आप पुजावत । यह महिमा कैसे कोउ पावत २६ श्याम कही सोई सोइमानी । पूजाकी बिधि अब हमजानी । नयनमूंदि करजोरि बुलायो । भाव भक्तिसों भोग लगायो । बड़ो देव गिरिराज सबनिके । भोजनकरहु कृपाकरि करिके । सहसभुजाधरिदर्शनदीनों । जैंजै धुनिसब देवनकीनों । भोजन करत सबनिकेआगे । सुर नर मुनि सब देखनलागे । देखि थकितसब ब्रजकी बाला । देखत नन्द गोपसब ग्वाल । सूरश्याम जनके सुखदाई । सहस भुजा धरे भोजन खाई २७ जेंवत देखनन्द सुख पाये । कान्ह देवता प्रकट दिखाये । ब्रजबासी गिरि जेंवत देखैं । जीवन जन्म सुफल करि लेखैं । ललिता कहति राधिका आगे । जेंवत कान्ह नन्द करलागे । मैं जानोहरिकी चतुराई । सुरपति मेटि आपुबलिपाई । उत जेंवत इत बातन लागे । कहत श्याम गिरि जेंवन लागे । मैं जो बात कही सो आई । सहसभुजा धरे भोजनखाई । औरदेवइनकीसरिनाहीं । इत बोधत उतभोजनखाहीं । सूरदासप्रभुकीयहलीला । सदाकरतब्रजमें यहकीला २८ यह छबिदेखि राधिका भूली । बातकहति सखियनिसों फूली । आपुहि देवा आपु पुजेरी । आपुहि जेंवत भोजन ढेरी । अति आतुर जेंवतहैं भारी । यक वृषभानि बिलोवनि हारी । नामताहि बदरौला नारी । ताकी बलि लइ भुजापसारी । उतगिरि सबै खात बलि

भारी। बदरौला की अति रुचिकारी। सूरदास प्रभुजेंवन हारी। गिरि वपुधरे सों कौन अधिकारी २९ इतहि श्याम गोपनि सँग ठाढ़े। भोजन करत अधिक रुचिबाढ़े। गिरितन शोभा श्याम बिराजै। श्यामहिं छबि गिरिवरकी छाजै। गिरिवर उरहि पितांबर डारै। मोतिन की माला उरधारै। अँगभूषण श्रवणनि मणिकुण्डल। मोरमुकुटशिर अलक हैं झुण्डल। छबि निरखति सब गोपकुमारी। गोवर्द्धन छबि श्याम तुम्हारी। सूरश्याम लीला रसनायक। जन्म जन्म भक्तन सुखदायक ३० भोजन करत देवभ ये परसन। मांगहु नन्द तुम्हारे जो मन। भलीकरी तुममेरी पूजा। सेवक तुमते और न दूजा। जोइ मांगौ सोइफल हम देहैं। जहाँ भाव ताही पैरैहैं। मैं सेवावश भयों तुम्हारे। जोफलचाहौ लेहुसवारे। यह सुनि चकृतभये नरनारी। भोजनकियो प्रथमही भारी। अवदेखौ मुखबात कहत हैं। ऐसे देव कहीं त्रिभुवन हैं। कान्ह कह्यो कछु मांगहु इनसों। गिरि देवता देव परसन सों। सूरश्याम देवता आपुहैं। व्रजजनके ये हरत ताप हैं ३१ नंद कह्यउ कह मांगौं स्वामी। तुम जानत सब अन्तर्यामी। अष्ट सिद्धि नवनिधि तुम दीनो। कहा सिंधु तुम्हरोई कीनो। कुशल रहैं बलराम कन्हाई। इनहीं कारण करत पुजाई। देवनिको मणि गिरिवर तुमहौ। जहां तहां व्यापक पूरण हौ। तुम हर्त्ता तुमकर्त्ता सबके। देखि थकित नरनारि नगरके। बड़ो देवता श्याम बतायो। प्रकट भयेसब भोजन खायो। सूरश्याम के जो मनआवै। स्वइ स्वइ नाना रूप बनावै ३२ मांगिलेहु कछु और पदारथ। सेवा सबैभई अवस्वारथ। फल मांग्यो बलराम कन्हाई। ये दोऊ रहैं कुशल सदाई। इनहीं ते तुम हमको जान्यो। तब तुम गिरि गोवर्द्धन मान्यो। करत अबिर्था इन्द्र पुजाई। मेरी दीनी है ठकुराई। कान्ह तुम्हारो मोकोंजाने। इनको रैहौ तुम सबमाने। इन्द्र आयचढ़िहैं व्रज ऊपर। यह कहिहैं नहिं राखौं भूपर। नेक कछू नहिं धासों ह्वैहैं। श्याम उठाय मोहिं तब लैहैं। सूरश्याम गिरिवर की बानी। व्रजजन सुनत सत्य करि मानी ३३ कौतुकदेखत सुरनर भूले। रोम रोम गद गदसबफूले। सुरबिमान सुमननि बर्षाये। जय धुनि शब्द देव नर गाये। देव कह्यो व्रज बासिन सों तब। पूजा

भलीकरी मेरोसब। जाहु सबै मिलिसदन करौसुख। श्याम कहे गिरि गोवर्द्धन मुख। ग्वाल करत अस्तुति सब ठाढ़े। भाव प्रेमसबके चित बाढ़े। भवन जाहु कहे श्री मुखबानी। भोजन शेष श्याम करआनी। बाँटि प्रसाद सबनिकोदीनों। ब्रजनारी नर आनँद कीनों। सूरश्याम गोपनि सुखकारी। चलो कह्यो ब्रजको नरनारी ३४ दोउ करजोरि भये सबठाढ़े। धन्यधन्य भक्तनको चाढ़े। तुम भोक्ता तुमही प्रभुदाता। अखिल ब्रह्माण्ड लोकके ज्ञाता। तुम को भोजन कौन करावै। हित केबश तुम को कोउ पावै। तुम लायक हमरे कछु नाहीं। सुनत श्याम ठाढ़े मुसकाहीं। ललितासखी देवता चीन्हें। चन्द्रावलि राधे काहि दीन्हें। देव बड़ो यह कुँवर कन्हाई। कृपाजानि हरि ताहि चिन्हाई। सूरश्याम कहिप्रकट सुनाई। भये तृप्त भोजन बनराई ३५ परसत चरण चलत सब घरको। जातचले सब घोष शहरको। सुख समेत मग जात चलेसब। दूनी भीर भई तबते अब। कोउ आगे कोउ पाछे आवत। मारग में कहुँ ठौर न पावत। प्रथमहि गये ठहर तिन पाये। पाछे लोगनिजिय पछिताये। घर पहुँचे अबहीं नहिंकोई। मारगमें अटके सबलोई। डेरा परयउ कोश चौरासी। इतनेलोग जुरे ब्रजबासी। पैंडे चलन नहीं कोउपावत। कातिकदूरिब्रजपहुँचत आवत। सूरश्याम गुणसागर नागर। नूतन लीलाकरी उजागर ३६ कोउ पहुँचे कोउमारग माहीं। बहुत गयेघर बहुतक जाहीं। काहूकेमन कहुं दुख नाहीं। परस्परहि हँसि हँसि लपटाहीं। आनँद करत सबै ब्रज आये। निकटहि आयलोग नियराये। भीरबहुत भइ खोरि जहां तहँ। जैसे नदी मिलत सागर महँ। नर नारी सरिता सबै आगर। सिंधु मनों यह भयो उजागर। गोप महरि सब रतन कुमारी। चन्द्रवदनि राधा सुकुमारी। सूरश्याम आये नँदलाला। पहुँचे घरनि आय नँदबाला ३७ बड़ो देवता कान्ह पुजायो। ग्वाल गोप हँसि अंक मिलायो। कान्ह धन्य धनि यशुमति जायो। धन्य नन्द जिन तुम सुतपायो। धनिधनि देवप्रकट दरशाये। माँगि माँगिके भोजनखाये। पूजा मेटि इन्द्र गिरि पूज्यो। परसन हमहिं सदा प्रभु हूज्यो। कहा इन्द्र बपुरो केहि लायक। गिरि देवता सबहि के नायक। सूरदास प्रभुके गुण ऐसे। भक्तनि बश दु-

सुनि को जैसे ३८ हरि सबके मनयह उपजाई। सुरपति निन्दत गि-
रिहि बड़ाई। बरष बरष प्रति इन्द्र पुजाई। कबहूं परसन भये न
आई। पूजिरहे सुआबिर्या सुरपति। सब मुख यह बाती घरघर प्रति।
बड़े देव ये गिरिगोबर्द्धन। यहैकहत गोकुल व्रजपुरजन। तहां दूतयक
इन्द्र पठायो। व्रजको सुख देखनवह आयो। घरघर बात कहत नर
नारी। दूत सुन्योश्रो श्रवण पसारी। मानत गिरि निन्दति सुरपति
को। हँसत दूत व्रज लोगनि मतिको। सूरसुनत दूतनि रिसपायो।
उठितुरतहि सुरलोकहि आयो ३९ ब्रह्म दई जाको ठकुराई। ताकी
मति इनके मन आई। शिव बिरंचि जाको कहेंलायक। जाके हैं
मघवा से पायक। यह कहतहि आये सुरलोकहि। पहुंचे जाय
इन्द्र के ओकहि। दूतनि बैसिय जाय सुनाई। पूंछि उठे व्रज की
कुशलाई। दूतनि व्रजकीबात सुनाई। तुमहिँमेटि पूज्यो गिरिजाई।
तुमहिँ निन्दि गिरिवरहि बड़ाई। यह सुनतहि रिस देहकँपाई। सूर-
प्रयास यह बुद्धि उपाई। ज्योंजाने व्रजमें यदुराई ४० ग्वालनिमोसों
करी ढिठाई। मोको अपनी जाति दिखाई। तेंतिसकोटि सुरनि को
राई। तीनभुवन भरि चलति बड़ाई। साहिब सों जोरो करे धाई।
ताको नहिँकोऊ पतियाई। इन अपनी परतीति चलाई। काहूइनहिँ
दियो बहँकाई। ऐसी मति इन अबकेपाई। काके शरण रहेंगेजाई।
इन दीनों मोको बिसराई। नन्द आपनी प्रकृत गँवाई। जानी बात
बुढ़ाई आई। अहिर जाति कोउ नहिँ पतियाई। मात पिता नहिँ
मानैं भाई। जानिबूझि इनकरी ढिठाई। मेरोबलि पर्वतहि चढ़ाई।
सूरदास सुरपति रिसपाई। कीड़ीतनज्यों पांख उपाई ४१ मोको निंद
पर्वतहि बंदत। चाराकपट पंछिज्यों फन्दत। मरणकाल ऐसी बुधि
होय। कछू करत कछू वे वह होय। खेलत खात रहे व्रज भीतर।
नान्हे लोग तनिक धन ईतर। समय समय बरषों प्रतिपालों। इनकी
बुधि इनको अबघालों। मेरे मारत कौन राखिहै। अहिरन के मन
यहै काखिहै। जो मन जाके सोइफल पावै। नींब लगाय आंब क्यों
खावै। बिषको वृक्ष बिषहिफल फलिहै। तासेंदाख लहो क्यों मिलि
है। अग्नि बरत देखत करनावै। कहाकरै तेहि आप्नु जरावै। सूर-

दास यह सब कोउजानै। जो जाको सो ताको मानै ४२ पर्वत परिह-लहि खोदि बहाऊं। बज्रनि मारि पताल पठाऊं। फूलि फूलि उयहि पजा कीन्हों। नेक न राखों ताको चीन्हों। नन्दगोप नअनन्नि यह देखैं। बड़े देवता को सुखपेखैं। निन्दत मोहिँकरैं गिरिपूजा। जासों कहत औरनहिँ दूजा। गर्बकरत गोबर्द्धनगिरिको। पर्वतसांझ आहि वह फिरिको। डूंगर को बल उनहिँ दिखाऊं। तापाछे ब्रजखोदि बहाऊं। राखोंनहिँ काहू सब मारों। ब्रजगोकुल को खोजनिवारों। को जानै कहँ गिरि कहँ गोकुल। भुवपर नहिँ राखों उनको कुल। सूरदास यह इन्द्र प्रतिज्ञा। ब्रजबासिन सबकरी अवज्ञा ४३ सुरपति क्रोधकियो अतिभारी। फरकत अधरनयन रतनारी। भृतनि बुलाये दै दै गारी। मेघन ल्यावहु तुरत हँकारी। एक कहत धाये सैचारी। अति डरपैं तनकी सुधिहारी। मेघवर्त्त जलबर्त्त बुलावहु। सेनासाजि तुरतलैआवहु। कापर क्रोधकियो अमरापति। महाप्रलय जियजानि डरेअति। मेघन सों यह बात सुनाई। तुरत चलो बोले सुरराई। सेना सहित बुलायेतुमको। रिसकरि तुरत पठाये हमको। बेगिचलहु कछु बिलम्ब न लावहु। हमहिँ कह्यउ अबहीं लै आवहु। मेघवर्त्त सब सैन बुलाये। महाप्रलय के जे सब आये। कछुहरषे कछु मनहिँ सकाने। प्रलय आयकी हमहिँ भुलाने। मेघवर्त्त जलबर्त्त बारिवर्त्त। अनिल-वर्त्त नलवर्त्त बज्रवर्त्त। बोलतचले आपन बानी। प्रभु सन्मुख सब प-हुँचे आनी। गरजि तरजि घहरातहि आये। सूरदेव कहि माथनवा-ये ४४ चितवत हो सब गये भुराई। सकुच कह्यो कापर रिसराई। क्षमाकरहु आयसु हम पावहिँ। जापर कहो ताहिपर धावहिँ। सैन सहित प्रभु हमहिँ बुलाये। आज्ञा सुनत तुरत उठिधाये। ऐसो कौन जाहि प्रभु कोपे। जीवनाम सब तुम्हरेहि रोपे। सूरकही यह मेघनि बानी। यह सुनि सुनि रिस कछुकबुझानी ४५ मेघनिसों बोलेसुरराई। अहिरनि मोसों करी ढिठाई। मेरी दीनी करत बड़ाई। जानि बूझि खहिँ दियो भुलाई। सदाकरत मेरी सेवकाई। अब सेवत पर्वत को जाई। यहीकाज तुमको हँकरायो। भली करी सेनालै आयो। गाय गोप ब्रज सबै बहावहु। पहिले पर्वत खोदि ढहावहु। जब यह सुनी

इन्द्रकीबानी। मेघनिकेमन धीरजभागी। सूरदास यहसुनिघनतमके।
कायर कोधकरत प्रभु यमके ४६ रिसलायकतापर रिसकीजै। जेहि
बिनते प्रभु देहीं छीजै। तुमप्रभु हमसेसेवकजाके। ऐसो कौनरहै तुम
ताके। किनहींमेंब्रजधोयबहावैं। डूंगरको नहिँनाउबचावैं। आपसमा
करिये दिखिराई। हमकारि हैं उनकी पहुनाई। यह सुनि कै हर्षित
चितकीनों। आदर सहित पानफिरदीनों। प्रथमहि देहुपहारबहाई।
मेरीबलि उनहीं सबखाई। सूर इन्द्र मेघनि समुझावत। हरषि चले
घन आदर पावत ४७ आयसुपाय तुरतही धाये। अपनी सेना सबनि
बुलाये। कह्यो सबनि ब्रजऊपरधावहु। घटाछोर करिगगनछपावहु।
मेघवर्त जलवर्तक आगे। और मेघ सब पाछेलागे। गरजि उठे ब्रज
ऊपर जाई। शब्दकियो आघातसुनाई। ब्रजकेलोगडरे अतिभारी।
आजुघटा दिखियतहै कारी। देखत देखत अतिअधिकायो। नेकहि
में रविगगन छपायो। ऐसे मेघ कबहुँ नहिँदेखे। अतिकारे काजरअ-
वरेखे। सुनहुँसूर यहमेघडरावन। ब्रजवासीसबकहतभयावन४८गरजि
गरजि ब्रज घेरत आवैं। तड़पि तड़पि चँपला चमकावैं। नरनारी सब
देखतठाढ़े। यहबादर परलयके काढ़े। दरदरात घह
गोपीग्वाल भये औरै गति। कहा होन अबहीं अब चाहत। जहँतहँ
लोगथहे चवगाहत। खन भीतर खन बाहर आवत। गगनदेखि धी-
रज बिसरावत। सूरश्याम वहकरी पुजाय। तातें सुरपति चढ़ेउ रि-
साय ४९ फिरत लोग जहँ तहँ बिततानें। कोहै अपने कौन बिरानें।
ग्वालगये जे धेनु चरावन। तिनहिँ पठाउ बनमांझपरावन। गायबच्छ
कोउ नहीं सँभारैं। प्रलयकालके जलद निहारैं। भागे आवत ब्रजही
तनको। बिपतिपरी अतिबल ग्वालनको। अन्धधुन्ध मगकहूं न सूझै।
ब्रजभीतर ब्रजही को बूझै। जैसे तैसे ब्रज पहिँचानत। अटकरही अट-
कर करिआनत। खोजत फिरैं आपने घरको। कहा भयो आघोय
घाहरको। रोवत डोलैं घरहि न पावैं। घरद्वारे घरको बिसरावैं। सूर-
श्याम सुरपति बिसरायो। गिरिके पूजे यह फलपायो ५० यमुना
जलहि गईंजे नारी। डारिचलीं शिर गागरि भारी। देखों मैं बालक
कतछाड्यो। एक कहति आंगन दधिमाड्यो। एक कहति मारग

नहिँ पावति । एक सामुहे बोलि बतावति । ब्रजकेबासी सब अकुलाने । कालिहि पूज्यो फल्यो बिहाने । कहारहे अब कुंवर कन्हाई । गिरि गोवर्द्धन लेहु बुलाई । जेंवन सहस भुजाधरि आवै । आवहु भुज हमको दिखरावै । येदेवता खातही लोके । पाछे पुनि तुम कौनकहांके । सूरश्याम सपनो प्रकटायो । घरको देव सबनि बिसरायो ५१ गरजत घन अतिही घहरावत । कान्ह सुनत आनन्द बढ़ावत । कौतुक देखत ब्रज लोगन के । निकट रहत सँगही सँग जनके । यकसैंतत घरके सब बासन । लीने फिरत घरहि के पासन । एक कहति जियको नहिं आशा । देखत सबै दुष्टकी नाशा । सूरश्याम जानत पे गासा । कह पानी कह करे हुतासा ५२ मेघवर्त्त मेघन समुझावत । बारबार गिरि तनहि बतावत । पर्वत पर बर्षहु तुमजाई । यहै कही हमपर सुरराई । ऐसेदेहु पहाड़ बहाई । नाउँरहे नहिँठौर जनाई । ताकोफल पावै गिरि-राई । जेंवत कालिह अधिक रुचिपाई । सलिल देहुजे तृषा बुझाई । खायोहै बहुपेट अघाई । दिनाचारि रहते जग ऊपर अब न रहन पावेंगे भूपर । सूरमेघ सुरपतिहि पठाये । ब्रजके लोगनि तुरहिँ बिहाये ५३ बरषत है घन गिरिके ऊपर । देखि देखि ब्रजलोग करत डर । ब्रजवासी सबकान्ह बतावत । महाप्रलय जलगिरिहि ढहावत । झरहरातझरपतझरलावत । गिरिहिधाय ब्रजऊपर आवत । बिकल देखि गोकुलके बासी । दरशदियो सबकोअविनाशी । अबिनाशीको दर्शनपायो । तबसबमन परतीत बढ़ायो । नन्दयशोदा सुतहित जाने । औरसबै मुखअस्तुतिगाने । बर्षतगिरि झरपतब्रजऊपर । सो जलजहँ तहँ परत है भूपर । सूरदास प्रभु राखिलेय अब । जैसेराखे अघावदन तब ५४ राखिलेहु अब नन्दकुमार । गोसुत गाय फिरत बिकरार । बर्षतबुन्द लगतजनु शायक । राखिलेहु ब्रज गोकुल नायक । तुमबिन कौन सहाय हमारे । नन्दसुवन अब शरण तुम्हारे । शरण शरण जब ब्रजजन बोले । धीरबचन देने दुख मोले । तब हँसिबोले कृष्णमुरारी गिरि करधरि राखौं नरनारी । सूरश्याम चितये गिरिवर तन । बिकलदेखिगो गोसुतब्रजजन ५५ गोवर्द्धन लीनों उचकाई । देखि बिकल नरनारि कन्हाई । अपने सुख ब्रजजन बिततायें । बूंद कयुक्त ब्रजपर

बर्षाये। वे डरपत आपुन हर्षतमन। राखेरहे जहांतहँ ब्रजजन। घरिक देखि मनहीं सुखदीन्हें। बामभुजा गिरिवर करलीन्हें। सूरश्याम गिरिकर ज्योंहिराख्यो। धीर धीरकहि सबसों भाख्यो ५६ श्याम धस्यो गिरिगोबर्द्धन कर। राखिलिये ब्रजके नारीनर। गोकुल ब्रज राख्यो सब घर घर। आनँद करत सबै ताहीतर। बर्षत मुशलधार। मघवाबर। बूंद न आवत नेकहु भूपर। धार अखंडित बर्षतहै झर। कहतमेघ धौं बहुब्रज गिरिवर। सलिल प्रलयको टूटत तरतर। बजत शब्द बदरनको धर धर। वे जानत जलजात है दरदर। बीचहि जरत जात जल अम्बर। सूरदासप्रभु कान्ह गर्वहर। बर्षत कहतगयो गिरिको जर५७बोलिलिये सब ग्वाल कन्हाई। टेकहुगिरि गोबर्द्धनराई। आजु सबैमिलि होहु सहाई। हँसतदेखि बलराम कन्हाई। लकुट लये करटेक न जाई। कहत परस्पर लेहु उठाई। बर्षत इन्द्र महाझरलाई। अतिजल देखि सखा डरपाई। नंद नँदन बिनको गिरिधारे। ऐसे बल बिनु कौन सँभारे नखके सिरे कौन पुनि राखै। बारबार कहि कहि यह भाखै। सूरश्याम गिरिवर करलीनों। बर्षतमेघचकृत मनकीनों५८ बात कहत आपुस में बादर। इन्द्र पठाये करिहम आदर। अब देखियत कछु होत निरादर। बर्षि बर्षि घनभे मन कादर। खीझत कहत मेघ सबहीसों। बर्षि कहा कीन्हों तबहीसों। महाप्रलयके जलकहँ सोवत। डारिदेहु ब्रजपर कहतोकत। क्रोध सहितफिरि बर्षनलागे। ब्रजबासी आनँद अनुरागे। ग्वालकहत तुम धन्यकन्हैया। बाम भुजा गिरि लियो उठैया। सूरश्याम सरि कोऊनाहीं। बर्षत घन गिरिदेखि खिसाहीं ५९ प्रलयमेघ आये उमडाने। आपसहीमें सबैरिसाने। सात दिवस जल बर्षि बुढ़ाने। चकृत भये तन सुरति भुलाने। फिरि देखत जलकहां डराने। महाप्रलयको सबनिभराने। भूरिभूरि बादर बिततानै। बूंदनहीं घननेकु बचाने। जलद आपुनको धृगकर माने। फिरि सबचले अतिहि बिकलाने। सूरश्याम गोवर्द्धनराने। सूरखइन्द्र अजहुँ नहिँमाने ६० मेघचले मुखफेरि अमरपुर। करीपुकार जाय आगेसुर। श्रमते टूटि गये सबके उर। जलबिन भये सबै घनधुंधर। कामारो की शरण गवारो। हमसों कहा कहेउ अवगारो। जहँ तहँ बादर रोवत

बोले। अमअपनो प्रभु आगे खोले। सातदिवस नहिँ मिटी लगारा। बर्ष्यो सलिल अखंडित धारा। महाप्रलय जलनेक न उबरेउ। ब्रज बासिन नीके ब्रब निबरेउ। वैसेइ गिरि वैसेइ ब्रजबासी। नेकबूंदनहिँ धरणि प्रकासी। सूर सुनत सुरपति परेउ उदासी। देखहु यों आये जलरासी ६१ चकृतभयो ब्रजबात सुनाई। पुनि पुनि पूछत मेघबुलाई। कहाँ गयो जल प्रलय कालको। कहा कहों सब तन बिहालको। कहाकरें अपनो बलकीनो। ब्याकुल रोय रोय तबदीनो। दराड सक बरषे मनलाई। पूरबाहोत गगन लों आई। पर्वतमें कोहै अवतारा। सुरपति मन यहकरत बिचारा। सूरइन्द्र सुरगण हँकराये। आज्ञा सु- नत तुरत सबआये ६२ सुरपति आगे भये सबठाढ़े। चिन्ता सबहिनके मन बाढ़े। कौनकाज सुरराज बुलाये। सकुच सहित पूछत सबआये। कहाकहों कछु कहत न आवै। मघवनिकी गति सुरनि बतावै। ब्रज बासी मोको बिसरायो। भोजनहै अब गिरिहि चढ़ायो। मोकोमेटि पर्वतहि थाप्यो। तब मैं थरथराय रिसिकांप्यो। सूरदास यहसुरनि सुनाई। लाकारज तुम लिये बुलाई ६३ सुरनिकही सुरपतिके आगे। सन्मुख होत सकुच हमें लागे। सकुचत कतसो बात सुनावहु। नीके करि मोको समुझावहु। नीकी भांति सुनो सुरराई। ब्रजमें ब्रह्म प्रकट भयेआई। तुम जानत जब धरणि पुकारी। पापहिपाप भई अतिभारी। पौढ़े शेषसंग अधिकारी। ते ब्रजभीतर रहे बपुधारी। ब्रह्मकथा कहि आदि पसारी। तिनसों हम कीनी अधिकारी। सूरदासप्रभु गिरिका धारी। यह सुनि इन्द्र डरेउ अतिभारी ६४ यहमोको तबहीं न सुनाई। मैं बहुतै कीनी अधमाई। पूरणब्रह्म रहे ब्रज आई। काहूने मोहिंसुधि न दिवाई। सुरनिकही नहिँ करी भलाई। यहसुनि अमरराये सरमाई। सुनहु राज हम जानि न पाई। अब सुनिये आपन मन लाई। ब्रजहि चलौ नहिँ और उपाई। स्वामिहैं प्रभु देवनके राई। वैहैं कृपासिंधु क- रुणाकर। क्षमा करहिँगे श्रीसुन्दरबर। और कछू मनमें जिनि आनहु। हम जो कहें सत्य करि मानहु। सूर सुरनि यह बात सुनाई। ऐरावत चल्यो अकुलाई ६५ जब जान्यो ब्रजदेव मुरारी। उतरि गई तब गर्बखुमारी। ब्याकुल भयो डरेउ जिय भारी। अनजानत कीनी

अधिकारी। बैठिरहे ते नहिँ बनिआवै। ऐसो को अब मोहिंबचावै। बारबार यहकहि पछतावै। जाउँ शरण बलमनहि धरावै। जायधरों चरणनि गिरधारों। कीमारैं कीमोहिँ उबारों। अमरनि कहेउ करहु असवारी। ऐरावतको लेहु हँकारी। सूरशरण सुरपति चल्यो धाई। लिये अमरगण संग लगाई ६६ करत बिचार चल्यो सनमुख व्रज। लटपटात पगधरत धरणिगज। कोटि इन्द्र वाकेरे मणिरज। व्रजअवतार लियो मायातज। उतरि गगनपुहुमीपर आये। व्रजबासिनसब देखन पाये। चकृतभये मन सबनि भमाये। ऐधौं कौन कहांते आये। कहतसुनी लोगन मुखबाता। येई हैं सुरपति सुरत्राता। देखि सैन्य व्रजलोग सकाता। यह आयो कीने कछुघाता। सुरपति सैन्य साजि व्रजआयो। सूरश्यामको देख डरायो ६७ निकटजानि त्यागयो बाहन को। व्रजबाहर राखे ताहन को। सकुचत चल्यो कृष्ण के सन्मुख। कछु आनन्द कछुक मनमें दुख। परेउधाय चरणन सुरराई। कृपासिंधु राखो शरणाई। किये अपराध बहुत बिनजाने। प्रभु उठाय लै हँसि मुसकाने। श्रीमुख कहेउ उठहु सुरराज। बदन उठाय सकत नहिँलाज। ये दिन वृथा गये बे काज। तुमको नहिँ जान्यों व्रजराज। सूरश्याम लीनों उरलाई। अशरण शरण निगम यहगाई ६८ हँसिहँसि कहत कृष्ण मुख बानी। हमनाहीं रिस तुमपर आनी। तुम कृत अति शंका जियजानी। भलीकरी व्रज बर्ष्योपानी। यहसुनि इन्द्र अतिहि सकुचान्यों। ब्रज अवतार नहीं मैं जान्यों। राखिराखि त्रिभुवनकेनाथा। नहिँ मोते कोउ और अनाथा। फिरि फिरि चरण धरत लै माथा। क्षमा करहु मोहिँ राखहु साथा। रविआगे खद्योत प्रकाशा। मणि आगेज्यों दीपकनाशा। कोटिइन्द्ररचि कोटिबिनाशा। मोहिंगरीब कौ केतिक आशा। दीनबचन सुनि भवकेबासा। क्षमाभरेजल परेउ हुतासा। अमरापति चरणनि तर लोटत। रहीं नहीं उर में कछु खोटत। उभय भुजा करिलियो उठाई। सुरपतिशीश अभय कर नाई। हँसिदीनी प्रभु लोग बड़ाई। श्रीमुख कह्यो करहु सुखजाई। जय जय धुनि देवनि सुखगाई। धन्य धन्य जनके सुखदाई। शिव बिरंचि चतुरानन नारद। गौरी सुत दोऊ संग शारद। रविशशि

बरुण अनल यमराजा। आजुभये सब पूरणकाजा। अशरणशरण सदातुव बानों। यहलीला प्रभु तुमहीं जानों। माता सों सुतकरै ढि-ठाई। माताफिरि ताको सुखदाई। ज्यों धरणी हलखोदि बिनाशै। सनमुख शतगुण फलहि प्रकाशै। कर कुठारले तरुहि गिरावै। वह काटै वह छायाछावै। जैसे दशनजीभ दलिजाई। तब कासों वहकरै रिसाई। धनिब्रज गोकुल धनि वृन्दाबन। धनियमुना धनिलता कुंज घन। धन्यनंद धनि जननि यशोदा। बालकेलि हरिके रस मोदा। अस्तुति सुनि मन हर्ष बढ़ायो। साधु साधु कहि सुरनि सुनायो। तुमहिं जाय जब मोहिं जगायो। तुमरेहि काज देह धरिआयो। तुम राखो असुरनि संहारौं। तनुधरि धरणी भार उतारौं। आवत जात बहुत श्रमपायो। जाहुभवन करिकृपापठायो। करशिरधरिधरि चले देवगन। पहुँचे अमरलोक आनँद मन। यहलीला सुरघरनि सुनाई। गाइ उठीं सुरनारि बधाई। अमरलोक आनंद भये सब। हर्ष सहित सुरपति आये जब। सूरदास सुरपति अति हरष्यो। जयजय धुनिसुमननि ब्रजबरष्यो ६९ हरि करते गिरिराज उतारेउ। सातदिवस जल प्रलय सम्हारेउ। ग्वाल कहत कैसे गिरि धारेउ। कैसे सुरपति गर्व निवारेउ। बज्रायुध जल बरषि सिरान्यो। परेउ चरण जब प्रभुकरि जान्यो। यह करतूति करत तुम कैसे। हमसँग सदारहतहौ ऐसे। हमहिं मिले तुम गाय चरावत। नंद यशोदा सुवन कहावत। देखिरहीं सब गोपकुमारी। कोटिकाम छबिपर बलिहारी। करजोरति रवि गोद पसारै। गिरिवरधर पतिहोहिं हमारे। ऐसो गिरि गोवर्द्धन भारी। कबलीन्हों कब धरेउ उतारी। तनक तनक भुज तनक कन्हाई। यह कहि उठीं यशोदा माई। कैसे पर्वत लियो उठाई। भुजचापति चुंबति बलिजाई। बारबार गिरिवर पोछताई। हसत देखि ठाढ़ बलभाई। इनकी महिमा काहु न पाई। गिरिवर धरो यहै बहुताई। इक इक रोम कोटि ब्रह्मण्डा। रविशशि धरणि धरति नवखण्डा। एब्रज जनम लियोके बारा। जहां तहां जल थल अवतारा। प्रकट होत भक्तन के काजा। ब्रह्मकीटसम सबके राजा। जहँ जहँ गाढ़ परै तहँ आवैं। गरुड़ छांडि ता सनमुख धावैं। ब्रजही में नितकरत बिहारण।

यशुमति भावभक्ति हितकारण। यहलीला इनको अतिभावै। देह धरत पुनि पुनिप्रकटावै। नेक तजतनहिँ ब्रजनरनारी। इनकेसुखगिरि धरत मुरारी। गर्ववन्त सुरपति चढ़ि आयो। बाम करज गिरि टेक दिखायो। ऐसे हैं भुज गर्ब प्रहारी। भुज चुंवति यशुमति महतारी। यह लीला जो नित प्रति गावै। आपुन सीखै और सिखावै। सुनै लिखै पढ़ि मनमें राखै। प्रेम सहित मुखते पुनि भाखै। भुक्ति मुक्ति कीं केतिक आसा। सदारहत हरि तिनके पासा। सहसानन जाको यश जानैं। शेष सहस मुख जाहि बखानैं। आदि अन्त कोऊ नहिँ पावै। जाको निगम नेति नितगावै। सूरदास प्रभु सबके स्वामी। शरण राखि मोहिँ अन्तर्य्यामी ७०॥ राग सारंग गिरिवर कैसे लियो उठाय। कोमल कर चापति महतारी यहकहि लेत बलाय। महाप्रलय जलतापर राख्यो ये गोवर्द्धन भारी। नेकनहीं डोल्यो करपरते मेरो सुत अहँकारी। कंचनथार दूबदधि रोचन सजितमोर लै आई। हरषित तिलक करतिमुख निरखति भुजभरि कंठ लगाई। रिसकरिके सुरपति चढ़िआयो देतो ब्रजहि बहाई। सूरश्यामसों कहति यशोदा गिरिवर बड़ो कन्हाई १ तेरे भुजनि बहुतबल होत कन्हैया। बारबार भुज देखि तनक से कहति यशोदा मैया। श्याम कहत नहिँ भुजा पिरानी ग्वालनि कियो सहैया। लकुटनि टेकि सबनि मिलिराख्यो अरु बाबा नँदरैया। मोसों क्यों रहतो गोवर्द्धन अतिहि बड़ो वहभारी। सूरश्याम यह कहि परमोध्यो देखि चकित महतारी २॥ रागकान्हरो॥ घर घरते ब्रजयुवती आवति। दधि अक्षत रोचन धरिथारनि हरषि श्याम। (खति छवि अँग अँग श्याम
रूप उरमाहिँ दुरावति। नंदसुवन गिरिवरेउ बामकर यह कहिके मन हरख बढ़ावति। इन्हहि पूजत सब जन्म गँवायो सो कैसेहु पग छुवन न पावति। सूरश्याम गिरिधरण सांगिवर करजोरत कहि विधिहि मनावति ३॥ राग बिलावल॥ घरनि घरनि ब्रज होत बधाई। सातवरष को कुंवर कन्हैया गिरिवर धरिजीत्यो सुरराई। गर्व सहित आयो ब्रजबोरन यह कहि कहि मेरी भक्ति घटाई। सातदिवस भरि बरषि सिरानों तब आयो पायन तरधाई। कहां कहां नहिँ संकट मेटत नर

नारी सब करत बड़ाई। सूरश्याम अबके ब्रजराख्यो ग्वालकरत सब नंद दुहाई४॥ रागनट॥ क्यों राख्यो गोबर्द्धन श्याम। अतिऊंचो विस्तार अतिहि वह लीनों उचकि करज भुज बाम। वह आघात महापरलय जल डरआवति मुखलेते नाम। नीकेराखि लियोब्रज सिगरो ताको तुमहिँ पठायो धाम। ब्रजअवतार लियो जबते तुम इहैकरत निशि बासरयाम। सूरश्याम बन बन हम कारण बहुत करत श्रमनहिं बि-श्राम ५ राखिलियो ब्रजनंद किशोर। आयो इन्द्र गर्ब करिके बड़ सातदिवस बर्षत भयो भोर। बाम भुजा गोवर्द्धन धारेउ अति कोमल नखहीकी कोर। गोपी ग्वालगाय ब्रजराखे नेक न आई बूंदझकोर। अमरापति तब चरण परोले जब बातैं गईं युग गुणाजोर। सूरश्याम करुणाकरि ताको पठैदियो घरमानि निहोर ६॥ श्रीहरि कान्हरो॥ आज दीपति दिव्यदीप मालिका। मनहुँ कोटिरबि चन्द्रकोटि छबिमिटि जोगई निशिकालिका। गोकुल सकल बिचित्रमणि मंडित शोभित झाक झव मालिका। गजमोतिन के चौक पुराय बिच बिच लाल प्रवालिका। बर शृङ्गार बिरचि राधाजू चली सकल ब्रजबालिका। झलमलदीप समीप सौंजभरि लेकर कञ्चन थालिका। करि प्रकट मदन मोहन पियथकित बिलोकि बिशालिका। गावत हँसत गवाय हँसावत पटकि पटकि करतालिका। नंदद्वार आनंद बढ्यो अति देखियत परम रसालिका। सूरदास कुसुमनि सुरबर्षत करसंपुट करि मालिका ७॥ रागकान्हरो॥ सुरभी कान्ह जगाय खरिकहि बलमोहन बैठेहैं हटरी। पिस्तादाख बदाम छुहारा खुरमा खाझागुंझा सटरी। घर घरते नरनारि मुदित मनगोपी ग्वालजुरे बहुठटरी। टेरि टेरि जब देत सबनिको लै लै नाम बुलाय निकटरी। देंत अशीष सकल ब्रज भामिनि यशुमति देतिहरद्र बहु पटरी। सूर रसिक गिरिवर चिर-जीवो नंदमहर को नागर नटरी ८ कान्ह जगाय गोपाल मुदित मन हटरी बैठे गोबर्द्धनधारी। हलधर संग सुबल श्रीदामा गोपग्वाल सब गये सिंगारी। देखन को उमहे सुरनर मुनिरावर मांझभीर भइभारी। जय जयकार होत चहुँदिशिते सुरपति करत कुसुम बर्षारी। कंचन रतन जटितहीरा नग बिसकरमारचि सुबिधि सँवारी। परम

बनी अति सुन्दरि जगमगाति कुहु तिमिर बिदारी। नन्दभवन भरि धरे बिबिधपक्क अगनित मेवागरी छुहारी। टेरिटेरि जब देति सबनि को शिव ब्रह्मादिक गोदपसारी। करति आरती मातयशोदा मंगल गावति सब ब्रजनारी। सूररसिक गिरिधर सुख बिलसत बरष बरष प्रतिपरब दिवारी ९ तातगोवर्द्धन पूजो जाय। मधु मेवा पकवान मिठाई व्यंजन बहुत बनाय। यह पर्वततरुणा ललित मनोहर सदा चरें सुखगाय। जैसे कान्ह कहेसो कीजै मघवा जाट खिसाय। भरि भरि शकटचले गिरि सन्मुख अपने अपने चाय। सूरदास प्रभु आप बलभोगि धरि स्वरूप हरिराय १० ॥ राग बिभावली॥ कहत गोपाल नन्द सों पूजहु गिरिराय। बहुबिधि व्यंजन साजिकै पकवान बनाय। करो मतो सब गोपते तुम बोलिपठाय। उपनन्द सहित वृषभानजू सब बैठे आय। कान्हकहेउ मोसों सपनेमें बोले गिरिराय। अरपो बलिमोको सबै बढ़ि हैं बच्छगाय। सबहिन मन आनँद भयो यह भलो उपाय। जाकेदीने बाढ़िहैं गोधन सुखपाय। चले सबौमिलि सौंजले बहुशकट जुराय। बिधिसों पूजापूजिकै सब भोगधराय। देखिइन्द्र अतिकोपि कै मेघनि झरलाय। सूरश्याम रक्षाकरि गिरिलियो उठाय ११ पूजा बिधि गिरिराजकी नँदलाल बतावैं। झुंडनि झुंडनि गोपिका मिलि मंगल गावैं। गङ्गाजल सों न्हवाइकै दूध धौरी को नावैं। बिबिध बसन पहिराय कै चन्दन लपटावैं। धूपदीप करि आरती बहु भोग भरावैं। तिलक कियो बीरादिये माला पहिरावैं। खरिकचले लहुरे बड़ेबेगि खिलावैं। फिरि गिरिवर भोजनकियो सुखसूर दिखावैं १२ रागमारू॥ माधवजू कांपत डरते अधिक हियो। तुम जु इन्द्रकी पूजा मेटी ताते कोप कियो। दामिनि खड्ग बूंद शायक जनु घन योधा लैं संग। ह्वैगयो बरस समीर हुहूं दिशि धनुष ध्वजा बहुरंग। शोभित सुभट पक्षारि पैज कर भिरत न॰ मोरत अंग। तुम्हरे कहत कियो नँदनंदन सुरपति को व्रत भंग। बर्षत प्रलय मेघ धरि अम्बर डरपत गोकुल गांउ। सुमिरत नाथशरण तुम बिनु हम और कौनपै जांउ। ज्यों तुम अनख ब्याल मुखराखे श्रीप्रति सुहृद सुभाय। हमरें तो तुमहीं चिन्तामणि सब बिधि ठौरउपाय। बालसमेत गोपाल बुलायो

अभैंकिये दै बांह। जनि डरकरहु सबैमिलि आवहु या पर्वतकीछांह। एकहाथ गोवर्द्धन राखो सातदिवस बलवीर। सूरदासप्रभु ब्रजबासिन के किये सकल दुखकीर १३ ॥ रागमलार ॥ आजु ब्रज महा घटन घन घेरो। राखहु नन्दनँदन यहि अवसर सब चितवत मुखतेरो। आये मेघ महापरलयके ब्रजपर कीन्हों डेरो। बर्षत महा असम सेनापति दिनते कियो अँधेरो। इतनी सुनत यशोदानन्दन गोबर्द्धन तनहेरो। चितवहि रहे सँभारि आपकर क्षितिते पकरि उखेरो। सात द्योस बर्ष्यौ निशिबासर हारिमानि मुख फेरो। श्रीपति सूर सहायभये जब बूंद न आयो नेरो १४ ॥ राग कान्हरो ॥ गोकुल जीवनि गोविँदमेरो। जाय लगाय रही तनमनधन दुख भूलत मुखहेरे। जाके बल हम गन्यो न सुरपति रहेउ सातदिन घेरे। जनहित नाथ गोवर्द्धन धारेउ राख्योकर नखकेरे। यश जाके ऋषिगर्ग बखानत निगम कहत नित टेरे। सोइ अब सूर सहित संकर्षण सेवहु यतन घनेरे १५ ॥ राग सारंगचर्चरी ॥ बिनय सब करत गिरिराज सों करजोरि कर गये तनपाप तब दरश पायो। बहुत ढीठ्योकरी शरणराखो हरी शक्र यों कहतहैं शरण आयो। देवाधिदेव तुम प्रकट दर्शनदियो प्रकट भोजन कियो सबनि देख्यो। प्रकट बाणी कही गिरिराज तुमसही औरनाहिँ तिहूंभुवन कहूंपेख्यो। हँसतहरि मनहिँमन तकत गिरिराजतन देवपरसनभयो करीकाजा। सूर हरि प्रकटलीला कही सबनिसों चले घरघरनि अपने समाजा १६ राग सारंग ॥ सबमिलिके कहो पूजो सांवरेकी बांहिँ। ग्वालगोपी गाय राखे सातदिन करि छांहि। इन्द्र कहा रिसाय कीन्हों गयो आपुन बलगाहि। आय तिनहूं पायँ पकरे समुझिके मनमाहिँ। पूतनादिक कितिक लीला करीहैं सबचाहि। हमारे घनश्याम राम हम और न जानैं काहि। सबै बात आश्चर्यते इनकी बिधिहू जाने नाहिँ। सूर प्रभु की प्रबल माया जानि बूझि भुलाहिँ १७ ॥ राग केदारो ॥ निहारी सबमिलि कान्ह निहारो। यशुमति उर लावति करपल्लव गहि सात दिवस गिरिधारो। पूजाबिधि मेटीसुरशक्रकी त्रिनजिय द्रोहबिचारो। छांडे मेघमत्त परलयके गरजिसघनद मुंडिधारो। अति आरति जानि ब्रजबासी शिशुगिरितन नेकु निहारो। अनयास असिछव सराक में

खेलत मांझ उपारो। सुरपति को कियो मानभङ्ग हरि ब्रज आपनो उबारो। सूरदास को जीवनि गिरिधर यशुमति प्राण दुलारो १८ ॥ राग मलार ॥ सुनहुँरी मेहतो आयो। घरको गाय बहोरो हौं मोहन ग्वालन टेरि सुनायो। कारीघटा सघन देखियत अतिगति पवन चलायो। चारों दिशा चितै किन देखहु दामिन कौधौंलायो। अति घनश्याम सुदेश सूरप्रभु करगहि शैल उठायो। राखे सकल सुखहि में ब्रज जन इन्द्र को गर्ब गँवायो १९ ॥ राग बिलावल ॥ हमारी बात सुनों ब्रजराज। सुरपतिको बलिभाग न दीजै पूजो यह गिरिराज। बर्षेमेह गायसुख पैहैं ह्वैहे ब्रज सुखकाज। सूरदासप्रभु नन्दकुंवर कहै वेही कोजैसाज॥

*

सूरसागर रागकल्पद्रुम॥

अथ फेरि गोचारन लीला॥

श्रीकृष्णायनमः॥

राग बिलावल ॥ जागहु लाल ग्वाल सब टेरत। कबहुँ पीतांबर डारि बदनपर कबहुँ उघारि जननितन हेरत। सोवतमें जागत मनमोहन बात कहत अबकी सवटेरत। बारम्बार जगावति माता लोचनखोलि पलक पुनिघेरत। पुनि कहिउठो यशोदा मैया उठहुकान्ह रविकरणि उजेरत। सूरश्याम हँसिचितै मातमुख पटकरलै पुनिपुनि मुखफेरत १ ॥ राग रामकली ॥ अबको टेरति कुंवरकन्हाई। ठाढे ग्वाल सखा सबटेरत अरु अग्रज बलभाई। दाऊजू तू ह्यां नहिँ आवत करौ सुखारीआई। माता दुहूँकरनि दतुवनिदै जलझारी भरिल्याई। उत्तम बिधिसों सुख पखरायो ओदे बसन अँगोछि। दोऊभैया कछुकरो कलेऊ लै बलाय कर ओंछि। सद माखन दधि तुरत जमायो मधु मेवा मिष्ठान। सूर श्याम बलिराम सङ्गमिलि रुचिकरि लागेखान २ ॥ राग बिलावल ॥ दोउ भैया जेंवत माआगे। पुनि पुनिलै दधिखात कन्हाई और जननि पै मांगे। अति मीठो दधि आज जमायो बलदाऊ तुमलेहु। देखोधौं दधि

स्वाद आपुले तापाछे मोहिँ देहु। बलमोहन दोउ जेंवत रुचिसों सुख लूटति नँदरानी। सूरश्याम अब कहत अघानो अँचवन मांगतपानी ३ राग रामकली ॥ हारे टेरत हैं सबग्वाल कन्हैया आवहु बारभई। आवहु बेगि बिलंब जनि लावहु गैयां दूरिगई। यह सुनतहि दोऊ उठिधाये कछु अँचयो कछु नाहिं। कितक दूरि सुरभी तुमछाडी बनतौ पहुँची नाहिं। ग्वालकहेउ कछु पहुँची ह्वै हैं कछु मिलि हैं मगमाहिं। सूरश्याम बलमोहन भैया गैयनि पूंछति जाहिं ४॥ राग बिलावल ॥ बनपहुँचत सुरभी लइजाई। जैहो कहां सखनिको टेरत हलधरसंगकन्हाई। जेंवत परखिलिये नहिं हमको तुम अतिकरी चँड़ाई। अब हम जैहैं दूरिचरावन तुम सँगरहै बलाई। यहसुनि ग्वालधाय तहँ आये श्यामहिँ अङ्क मिलाई। सखा कहत यह नंदसुवनसों तुमसबके सुखदाई। आजुचले वृन्दावन जैयेगैयां चरैं अघाई। सूरदास प्रभु सुनिहर्षितभये घरते छाक मँगाई५ चलेसब वृन्दावन समुहाई। नंदसुवन सब ग्वालन टेरत ल्यावहु गाय फिराई। अति आतुर ह्वै फिरे सखा सब जहँतहँ आयेधाई। बूझत ग्वालबात केहिकारणबोलेकुंवर कन्हाई। सुरभी वृन्द इतहि को हांको औरनि लेहुबुलाई। सूरश्याम यहकही सबनि सों आपचले अतुराई ६॥ राग धनाश्री ॥ गैयनि घेरि सखा सबल्याये। देखौ कान्हजात वृन्दावन यातेमन अतिहरष बढ़ाये। आपुसमें सब करत कुलाहल धौंरी धूमरि धेनु बुलाये। सुरभी हांकदेत सब जहँतहँ टेरि टेरि हेरीसुर गाये। पहुँचेआय बिपिन घनवृन्दा देखत द्रुम दुख सबनि गँवाये। सूरश्याम गये अघामारि जब तादिनते यहिबन अब आये ७॥ राग सारंग ॥ चरावत वृन्दाबन हरि धेनु। ग्वाल सखा सब संगलगाये खेलतहैं करिचेनु। कोउ गावत कोउ मुरलि बजावत कोउ बिषाण कोउबेनु। कोउ निर्त्तत कोउ उघटि तारिदै जुरि ब्रजबालक सेनु। त्रिबिधि पवन जहँ तहँ बहे निशिदिन सुभग कुंजघनऐनु। सूरश्याम निजधाम बिसारत आवत यहसुखलेनु ८॥ राग धनाश्री ॥ वृन्दावन मोको अतिभावत। सुनहुसखा तुम सुबल सुदामा ब्रजते बन गोचारण आवत। कामधेनु सुरतरु सुख जितने रमासहित बैकुंठभुलावत। यह वृन्दावन यह यमुना तट ये सुरभी अति सुखद चरावत। पुनिपुनि

कहत श्यामसों सुखसों तुम मेरे मन अतिहि सुहावत। सूरदास सुनि ग्वाल चकृत भये यहलीला हरि प्रकट दिखावत॥ राग बिलावल॥ ग्वाल सखा करजोरि कहत हैं हमहिँ कान्ह तुम जनि बिसरावहु। जहींजहीं तुम देह धरत हो तहीं तहीं जनि चरण छिड़ावहु। ब्रजते तुमहिँ कहूं नहिँ प्यारो यहै पाय मैंहूं ब्रज आवत। यहसुख नहिँ कहुं भुवन चतुर्दश यह ब्रजमें अवतार बतावत। और गोप जोबहुरि चलेघर तिनसों कहि ब्रज छांक मँगावत। सूरदास प्रभु गुप्त बातसब ग्वालनसों कहि कहि सुख पावत १०॥ राग गौरी॥ छबीले मुरली नेक बजावो। बलि बलि जातसखा यह कहि कहि अधर सुधारस प्यावो। दुर्ल्लभ जन्म दुर्ल्लभ वृन्दावन दुर्ल्लभ प्रेम तरङ्ग। नाजानिये बहुरि सब ह्वै हैं श्याम तुम्हारे संग। बिनती करत सुबल श्रीदामा सुनहु श्याम देकान। या यशको सनकादि शुकादिक करतअमर मुनि ध्यान। कब पुनि गोप भेष ब्रज धरिहो फिरिहो सुरभिन साथ। कबतुम छाक छीनके खैहो श्रीगोकुलके नाथ। अपनी अपनी कांध कमरिया ग्वालन दई डसाई। सौंह दिवाय नन्दबाबा की रहे सकल गहिपांई। सुनि सुनि दीन गिरा मुरलीधर चितये मुख मुसकाई। गुणगम्भीर गोपाल मुरलिका लीनी कंठ लगाई। धरिकर बेनु अधर मनमोहन कियो मधुर धुनि गान। मोहे सकलजीव जल थलके सुनि वारों तनप्रान। चपल नयन भृकुटी नासापुट सुनि सुन्दर सुख बैन। मानहुँ निर्त्तत भाव दिखावत गतिलिये नायक मैन। चमकत मोर चन्द्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल। मानों कमल कोशरस चाखन उड़ि आये अलिमाल। कुण्डल लोल कपोलनि झलकति ऐसी शोभा देत। मानहुँ सुधा सिंधुमें क्रीड़त मकर पानके हेत। उपजावत गावतगति सुन्दर अनाघात के ताल। रस सब दियो मदन मोहन को प्रेम हरष सब ग्वाल। लोलित बैजन्ती चरणनि पर श्वासा पवन झकोरि। मानहुँ सुधापियन आहिं आयो ब्रह्म कमण्डल फोरि। डोलति लता मरुत मन्दगति सुनि सुन्दर सुख बैन। खग मृगमीन अधीन भये सब कियो यमुन जलसैन। झलमलात भृकुटी पर रेखा सुभग सांवरे गात। मनों यदवधू एक रथ बैठी उदय कियो अधरात। बांके चरण कमल भुजबांके अवलोकनि ज्ञु-

अनूप। मानहुँ कल्प तरोवर बिरवा आनि रच्यो सुरभूप। अति सुख दियो गोपाल सबनिको सुखदायक जियजान। सूरदास चरणनिरज माँगत निरखत रूपनिधान ११॥ राग बिलावल॥ ग्वाल बिहार करतहैं कन्हैया हेरीदै। शुभगसाँवरे गातकी मैं शोभा कहत लजाहि। मोरपंख शिर मुकुटकी मुखमटकनि की बलि जाहि। कुण्डललोल कपोलनि भौंह बिहसनि चितहि चुरावे। दशन दमकि मोतिन लर ग्रीवा शोभा कहत न आवै। उर पर पदिक कुसुम बनमाला अङ्गद पाय बिराजै। चित्र बाहुपर रतन पहुँचिया हाथ मुरलिका छाजै। कटि पटपीत मेखला मुकुलित पैरनि नूपुरसोहै। आसपास सबग्वाल मण्डली देखत त्रिभुवन मोहै। सबमिलि आनँद प्रेम बढ़ावत गावत गुणगोपाल। यह सुख देखत श्यामसङ्गके सूरदास भयग्वाल १२॥ राग नट॥ श्याम कर मुरली अतिहि बिराजत। परसत अधर सुधारस प्रकटत मधुर मधुर सुरबाजत। लटकत मुकुट भौंह छबि मटकत नयन सैन अति राजत। ग्रीव नवाय अटकि बंशीपर कोटि मदन छबि लाजत। लोल कपोल झलक कुण्डलकी यह उपमा कछु लागत। मानहुँ मकर सुधासर क्रीड़त आपु नहीं अनुरागत। वृन्दावन बिहरत नँदनन्दन ग्वालसखा सँग सोहत। सूरदास प्रभुकी छबि निरखत सुरनर मुनि सब मोहत १३॥ राग सारंग॥ रीझत ग्वाल रिझावत श्याम। मुरली बजावत सखनि बुलावत सुबल सुदामा लैलैनाम। हँसतसखा करतारी दैदै नामहमारो मुरलीलेत। श्याम कहत अब तुमहुँ बुलावहु अपने करते ग्वालनि देत। मुरली लै लै सबै बजावत काहूपै नहिं आवै रूप। सूर श्याम तुमरेहि मुखबाजति कैसे देखो रागअनूप १४॥ रागटोड़ी॥ हरिसमान को बेनु बजावत। जगजीवनी बिदित मुनि नाचत बेनु सो बजावै। चतुरानन पञ्चानन सहसानन ध्यावैं। ग्वाल बाल लिये यमुना कच्छ बच्छ चरावै। सुर नर मुनि अखिल लोक कोउ पार न पावै। तारण तरण अगणित गुण निगम नेतिगावै। तिनको यशुमति अतिआनँददै कर ताल नचावै। सूरदासप्रभु कृपाल भक्तवश कहावै १५ कान्ह काँधे कामरी लकुट लिये कर घेरेहो। वृन्दाबनमें गऊचरावै धोरी धूमरि टेरेहो। लिये लवाय गौअनि बुलाय जहँ तहँ बन बन हेरेहो। सूरदास

प्रभु सकल लोकपति पीतांवर कर फेरेहो १६ सोई हरिकांध कामरी छाक लिये नांगेपायन गाअन की टहल करत हैं। रजडू पति दीशान पति नारीनर पति पसिनपति रविशशि जोहि डरतहैं। शिव विरञ्चि ध्यानधरत भक्तत्रिविध तापहरत तेहिहित वपु धरतहैं। सूरदास प्रभुके गुण निगमनेति गावत तेइवन विहरतहैं १७॥ राग नट॥ छाकलेन जो बाल पठाये। तिनमें बूझति महरि यशोमति छांड़ि कन्हैयाहि आये। हमहिँ पठायदयो नँदनन्दन भूखे अति अकुलाय। धेनु चरावतहैं वृन्दाबन हम यहि कारण आये। यहकहि ग्वालगये अपने गृह बनहीं खबर सुनाये। सूरश्याम बलराम प्रातही अचजेंवत उठि धाये १८॥ राग सारंग॥ और ग्वालगृह आय गोपालहि बेरभई। अतिहि बार भई लालनको अजहूँ छाक न गई। तवहींते भोजन कररिराख्यो उत्तमदूध जमाई। ना जानों कान्ह कौने बनचारत अतिहिं अवेर लगाई। राज करैं वे धेनु तुम्हारी नन्दहि कहति सुनाई। पोचकोभीख सूरबल मोहन कहति यशोदा माई १९ जोरति छाक प्रेम सों मैया। ग्वालनि बोलि लिये अचजेंवत उठि दौरे दोउ भैया। तवहींते मैं भोजनकीन्हों चाहति दियो पठाई। भूखेभये आजु दोउ भैया आपहि बोलि मँगाई। दधि माखन ताजो दधिमीठो मधुमेवा पकवान। सूरश्यामको छाक पठावति कहति ग्वाल यों जान २० घरहीको इक ग्वालि बुलाई। छाक सामग्री सबै जोरिकै वाके करदै तुरत पठाई। कहेउ ताहि वृन्दाबन जैये तु जानति सब प्रकृति कन्हाई। प्रेम सहित लैचली छाक यह कहि ह्वैहैं भूखे दोउभाई। तुरत जाय वृन्दाबन पहुँची ग्वालबाल कहुँ कोउ न बताई। सूरश्यामको टेरतिबोलति कितहो लालछाक मैं लाई २१॥ राग टोड़ी॥ आजुकौने धौं बन चरावत गाय कहां धौं भई बड़ी बेर। बैठे कान्हसुधिलेहु कौनविधि ग्वालि करति अवसेर। वृन्दावन आदि सकल बनढूंढ्यो जहँ गायनकी टेर। सूरदासप्रभु रसिकशिरोमणि कैसेदुरायेदुरत डूंगरिनकी ओटसुमेर २२॥ राग सारंग॥ छाकलिये शिरश्याम बोलावति। ढूंढतिफिरति ग्वालिनीहरिको कहूं भेद नहिँ पावति। टेरसुनत काहूको श्रवणनितहीं तुरत उठि धावति। पावति नहीं श्यामबलरामहि व्याकुल ह्वै पछितावति। वृन्दावन फिरि फिरि

देखतिहैं बोलिउठे तबबाल। सूरश्याम बलराम यहाँ हौ छाकलेहु किन लाल२३ हरिको टेरति फिरतिग्वारि। आयलेहु तुमछाक आपनीबालक बलबनवारि। आजुकलेऊ करत बन्यों नहिं गैयनसँग उठिधाये। तुम कारणबनछाक यशोदा मेरेहि हाथपठाये। यहबानी जबसुनी कन्हैया दौरिगये तेहिकाजु। सूरश्यामकहेउ नीकेआई भूख बहुतही आजु२४ राग सारंग॥ आई छाक बोलाये श्याम। यहसुनि सखा सबै जुरिआये सुबल सुदामा अरु श्रीदाम। कमलपत्र दोनापलास के सब आगे धरि परुसत जात। ग्वाल मण्डली मध्य श्यामघन सबमिलि भोजन रुचि करिखात। ऐसी भूख मांझ यह भोजन पठै दियो करि यशुदामात। सूरश्याम अपनें नहिं जेंवत ग्वालनिकरतें लैलैखात२५॥ राग नट॥ बिहारीलाल आवहु आईछाक। भई अबारगाइ बहरावहु बगदैगी रैहांक। अर्जुनभोज सुबल श्रीदामा मधु मङ्गल एकताक। मिलिबैठे सब जेंवन लागे बहुतबन्यों कहेंपाक। अपनी पत्रावलि सबदेखत जहँ तहँ फनीपिराक। सूरदास प्रभुखात ग्वालसँग ब्रह्मलोक यहधाक २६॥ राग कान्हरो॥ फिरतबन बंशीवट संकेत बट नट नागर कटि काछे खौर केशरि की किये। पीतबसन चन्दन तिलक मोरमुकुट कुण्डल श्याम घन यह छबिलिये। तन त्रिभङ्ग शुभगअङ्ग निरखि लजितरति अनङ्ग ग्वालबाल लिये संग प्रमुदित सबहिये। सूरश्याम अतिसुजान मुरली धुनि करतगान ब्रजजन मनको सुखदिये २७॥ राग सारंग॥ बहुतफिरी तुमकाज कन्हाई। टेरि टेरि मैं भई बावरी दोउभैया तुमरहे लुकाई। जे सबग्वाल गये ब्रजघरको तिनसों कहि तुम छाक मँगाई। नैनुदधि मिष्ठान जोरिकै यशुमति मेरेहाथ पठाई। ऐसी भूख मांझतलाई तेरी किहि बिधि करों बड़ाई। सूरश्याम सब सखनि पुकारत आवत क्यों न छाकहै आई २८ सखनि संगहरि जेंवत हैं छाक। प्रेमसहित मैयादै पठये सबै बनाये हैं इकताक। सुबल सुदामा श्रीदामा सँग सब मिलि भोजन रुचिकरि खात। ग्वालनि करतें छाक छिड़ावत मुखलै मेलि सराहतजात। जो सुखकान्ह करत वृन्दावन सोसुख नहीं लोकहूसाथ। सूरश्याम भक्तन बश ऐसे ब्रह्मकहावत हैं नँदतात २९ ग्वालमण्डली में बैठे हैं मोहन बटकी छैयां दुपहर की बेरियां सँगलीने। एक मथत

दोहनीदूध एक बटावत फबैना एकनि कर हरिभगरि भगरि लेत अखवनि आपनि कमरिन के आसनकीने। जेंवतहैं अरुगावत कान्ह सारङ्गकी तानलेत करछीने। सूरदास प्रभुकोसुख निरखतसुररीभि रीभि सुमननि वर्षत रसभीने ३० ग्वालनि करतेंकौर छिड़ावत। जूठौ लेत सबनिके मुखको अपनेंमुखलै नावत। षटरस के पकवान धरे सब तामें नहिँ रुचिपावत। हाहाकारिकरि मांगि लेतहैं कहत मोहिँ अति भावत। यहमहिमा एईपैजानैं जातेंआपुबँधावत। सूरश्यामसपनेनहिं दर्शत मुनिजन ध्यान लगावत ३१ ब्रजबासी पटतर कोउनाहिं। ब्रह्म- सनक शिवध्यान न पावत इनकीजूठनि लैलै खाहिँ। धन्यनन्द धनि जननि यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई। धन्य धन्य वृन्दावन के तरु जहँ बिहरत त्रिभुवनराई। हलधर कहत छाक जेंवत सँग मीठो लगत सराहत जाई। सूरदासप्रभु बिश्वम्भर ह्वै ग्वालनिकौर अघाई ३२ शीतल छहियां श्याम बैठेजानि भोजन की बिरियां। बामभुजा सखा अंश दीने अरु दक्षिणकर द्रुम डरियां। चलिजुनेक गाइन घेरोटेरो जू बलराम सों कहत बोलि लेहु अपने अरियां। सूरदास प्रभु बैठे कदमतर पीवतमथिमथिघरियां ३३ जेंवत छाकगायबिसराई। सखा श्रीदामा कहति सबनिसों छाकहि में तुमरहे भुलाई। धेनु नहींदेखि- यत काहूं नेरे भोजनही में सांभ लगाई। सुरभिकाज जहँतहँ उठिधाये आपु तहां उठिचले कन्हाई। ल्यायेग्वाल घेरिगो गोसुत देखिश्याम मन हर्ष बढ़ाई। सूरदास प्रभुकहत चलोघर बनमें आजु अबार कराई ३४ ॥ रागगौरी ॥ ब्रजहि चलौआई अब सांभ। सुरभी सबै लेहुआगे करि रैनिहोइ पुनि बनहीमांभ। भलीकही यहबात कन्हाई अतिहौ सघनरैनि उजियारी। गैयां हांकि चलाई ब्रजकोऔरग्वाल सबलिये पुकारी। निकसिगये बनतें सब बाहिर अतिआनन्द भये सबग्वाल। सूरदास प्रभु मुरलि बजावत ब्रजआवत नटवर गोपाल ३५ नटवर भेष धरे ब्रज आवत। मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल कुटिल अलकमुखपर छबिपावत। भृकुटी बिकट नयन अतिचंचल यहछबिपर उपमा यक धावत। धनुषदेखि खंजनबिबिडरपत उड़ि नसकत उड़बेअकुलावत। अधर अनूप मुरलिसुरपूरत गौरीरागअलापिबजावत। सुरभीवृन्दगोप

बालकसँगगावतअति आनंदबढ़ावत । कनकमेखला कटिपीतांबरनृत्तत
मंद मंद सुरगावत । सूरश्याम प्रतिअंग माधुरी निरखत ब्रजजनके मन
भावत ३६ ॥ राग कल्याण ॥ ब्रजतरुणी सबकहत परस्पर बनतेश्यामबने
घरआवत । ऐसीछबि मैं कबहुँ न पाई सखी सखीसेंप्रकट दिखावत ।
मोरमुकुट शिर जलजमाल उरकटितट पीतांबर छबिपावत । नवजल-
धरपर इन्द्रचाप मनोदामिनिछबि बगुक घनधावत । जेहि जुअङ्ग अ-
वलोकन कीन्हों सोतनमन तहँई बिरमावत । सूरदासप्रभु मुरलि अधर
धरे आवत राग कल्याण बजावत ३७ कमलमुख शोभित सुन्दरबेनु ।
मोहनराग अलापत गावत आवत चरयेधेनु । कुंचितकेश सुदेश बदन
पर जनुसाज्यो अलिसैनु । सहि न सकति मुरलीमधु पीवत चाहत अ-
पनो ऐनु । भृकुटिमनोंकर चाप आपुले भयो सहायक मैनु । सूरदास
प्रभु अधर सुधालगि उपज्यो कठिनकुचैनु ३८ ॥ राग नट ॥ माधो जूकी
बदनकी शोभा । कुटिल कुन्तल कमल प्रति मनोंमधुप रसलोभ । भृ-
कुटि इमिनव कंज पारस सदृश चंचलमीन । मुकुट कुण्डल किरणि
रबिछबि परस बिगशित कीन । सुरभिरेणु पराग रञ्जित मुरलिधुनि
अलिगुञ्ज । निरखि सुभग सरोज मुदित मरालसँग शिशुपुंज । दशन
दामिनि बिम्बमिलि मनो जलदमध्य प्रकास । निगमबानी नेति क्यों
कहिसके सूरजदास । ३९ देखिरी देखि मोहन ओर । श्याम सुभग
सरोज आनन चारु चितके चोर । नीलतनु मनोजलदकीछबि मुरलि
सुरघनघोर । दशन दामिनि लसत बसनन चितवन झकझोर । श्रवण
कुण्डल गण्डमण्डल उदित ज्यों रबिभोर । बरहि मुकुट बिशालमाला
इन्द्रधनु छबिथोर । बनधातु चित्रित बेष नटवर मुदित नवलकिशोर ।
सूरश्याम सुभाइ आतुर चितै लोचनकोर ४० ॥ राग गौरी ॥ रजनीमुख
बनतें बने आवत भावत मत्तगयन्दकी लटकनि । बालकवृन्द बिनोद
हँसावत करतल लकुटधेनुकी हटकनि । बिकसित गोपी मानों कुमुद
रसरूप सदा लोचनपुट घटकनि । पूरणकला उदितमन उडुपति तेहि
क्षण बिरह ब्यथाकी चटकनि । लज्जित मनमहँ निरखि बिमलछबि
रसिकरङ्ग भौंहनकी मटकनि । मोहनलाल छबीले गिरिधर सूरदास
बलिनागर नटकनि ४१ ॥ हमीर ॥ अहै कोउ जानेंरी वाकी चितवनि

में की चन्द्रिका में किधौं मुरली मांझ ठगोरी। देखत सुनत मोहिजात सुरनर मुनिमृग और मीन खगोरी। अरीसाथ जबते दृष्टिपरे मनमोहन गृहमेरो मनु न लगोरी। सूरश्याम बिनु क्षण न रहों मेरोमन उनहाथ पगोरी ४२॥ रागकल्याण ॥ लाल की रूप माधुरी नयननि निरखु नेकु सखीरी। मनसिज मनहरणहास सांवरो सुकुमार राम नखशिख अङ्ग अङ्गकी छवि शोभा कोधी बनखीरी। रँगमगी शिरसुरंग पागलटकि रही बामभाग चम्पकली कुटिल अलक बीच बीच रखीरी। आयत दृग अरुण लोलकुण्डल मण्डित कपोल अधर दशन दीपतिकी छबि क्योंहूं न जाति लखीरी। उभय उभय भुजदण्ड मूलपीन अंशसानुकूल कनक मेखला दुकूल दामिनी धरखीरी। उरपर मन्दार माल मुक्ता लर बर सुढार मत्तद्विरद हति अयनिकी देहसदा करखीरी। मुकुलित बय नवकिशोर रचनबचन चितके चोर माधुरी प्रकाश अनुप मंजुरी चखीरी। सूरश्याम अतिसुजान गावतकल्याण तान सप्तसुरनि कल इते पर मुरलिका बरखीरी ४३॥ राग गौरी ॥ ढोटा कौन को यहरी। श्रुतिमण्डल मकराकृत कुण्डल कनककण्ठ दुलरी। घन तन श्याम कमलदल लोचन चारुचपल दुलरी। इन्दुबदन मुसकानि माधुरी अलकनि अलि कुलरी। उरपर मुक्तामाल पीतपट मुरली सुरगोरी। पग नूपुर मणि जटित रुचिर अति कटि किङ्किणि रोरी। बालक वृन्द मध्यराजतहैं छबिनिरखत हुररी। सोई सजीवनि सूरदास की महरि रहे उरवी ४४ यह ढोटा नन्दको हैरी। नहिँ जानत बश ब्रजमें प्रकटो गोकुलरी। धरेउ गिरिवर बामकर जेहिँ सोईहै यहरी। दैत्यसब इनहीं संहारे आपु भुजबलरी। ब्रजघरनि जो करत चोरीखात माखनरी। नन्दघरनी जाहिबांध्यो अजिर ऊखलरी। सुरभिगणलिये बनते आवतसबै गुवाइनरी। सूरप्रभु ये सबहिं लायक कंसडरे जिनरी ४५ यशुमतिको सुत यहै कन्हाई। इन्हीं गोवर्द्धन लियो उठाई। इन्द्र परेउ इनहींके पाई। इनहींकी ब्रज चलति बड़ाई। बकी पिआवन इनहीं आई। योजन एक परी मुरझाई। इनहीं तृणावर्त्त लियो उड़ाई। पटक्यो दारशिलापर आई। केशीअसुर इन्हीं संहारेउ। अघाबकासुर इनहीं मारेउ। श्याम बरण तनपीत पिछौरी। मुरली राग बजावत

गोरी। देखिरूप चकितभइ बाला। तनकी सुधि न रही तेहिकाला। सूरश्याम सोजानतितीके। मँगनिभई प्रकृतिसुखजीके ४६॥ रागअड़ाना॥ श्यामसुंदर आवैबनते बनेआजु देखि देखि नैनरीझै। शीशमुकुटडोल श्रवण कुण्डल लोलभृकुटी धनुनैना खञ्जखीझै। दशनदामिनि ज्योति उरपर मालमोतिन ग्वालवाल सङ्ग आवै रङ्गभीजे। सूरप्रभु श्याम राम सन्तनि सुखदधाम अंगअंग प्रतिछबि निरखिजीजे ४७॥ रागकान्हरो॥ बिराजतरी बनमालगरे हरिआवत बनते। पुहुपनिसों पागलटकिरही वामभाग सो छबिटरत न मनते। मोरमुकुट शिरशिखराड गोरज मुख पर मराडतनटवर बपुवेषधरे आवतछबिते। सूरदास प्रभुकीछबि व्रज ललना निरखि थकित तनमन न्योछावरि करति आनन्दबरते ४८॥ रागसुघराई॥ आवत बनते देख्यों मैं गाइनमांझ काहूको ढोटारी एकशीशमोर पखियां। अतिही कुसुम अतिशीर जैसे दीरघ चंचल नयन मानोंरसभरी डोलतयुगल भृकुटियां। केसरकी खौरिकिये गुंजाबनमाल हिये उपमा न कहिआवै जेतीतेती नखियां। राजतपीतपिछौरी मुरलीबजावे गौरी धुनि सुनिभई चौरीरही एकअंखियां। चल्यो न परतपग गिरिपरी सूधेमग भामिनि भवनल्याई करगहे कखियां। सूरदास प्रभुचित चोरिलियोमेरे जान और न उपाय दायसुनों मेरी सखियां ४९॥ रागगौरी॥ बलमोहन दोऊ बनतेआये। जननि यशोदा मातरोहिणी हरषितदुहुनिदोउ कंठलगाये। काहेआजु अबारलगाई काहे कमलबदन कुंभिलाये। भूखे भये आजुदोउभैया प्रातकलेऊकरन न पाये। देखहुजाय कहाजेंवनकियो यशुमति रोहिणि तुरतपठाई। मैं अन्हवाथदेति दुहुनिको तुमभीतर अति करोचंडाई। लकुट लियो मुरलीकर लीन्हें हलधरदियो बिषाण। नीलाम्बर पीताम्बर दीन्हों सैंतिधरति करिप्राण। मुकुटउतारि धरेउमंदिर लै पोंछति है अंगवात। अरु बनमाल उतारतिगरते सूरश्याम की मात ५०॥ रागकल्याण॥ अंग आभूषण जननि उतारति। दुलरीग्रीव मालमोतिन की नूपुरलै भुजश्याम निहारति। छुद्रावली उतारतिकटिते सैंति धरति मनहींमन वारति। रोहिणि भोजनकरहु चंडाई बारबार कहिकहि कर आरति। भूखेभये श्यामहलधर आपुहिकहि अन्तरप्रेम बिचा-

रत। सूरदास प्रभुमात यशोदा पटलेदुहुनि अंग रज झारति ५१ रा दोऊमेरेगाय चरैया। मोलबेसाहि लिये मैं तुम को तबदोऊ रहे नन्हैया। तुमसों टहल करावति निशिदिन और न टहलकरैया। यह सुनि श्यामहँसे कहि दाऊ झूठेहि कहति है मैया। जानि परतनहिं साँचि झुठाई धेनुचरावत रहैझुरैया। सूरदास प्रभुहँसति यशोदा मैं चेरी कहिलेतबलैया ५२ यहकहि जननि दुहुन उरलावति। सुमना सुत अंगपरशि तराताजल बलि बलि गईकहि कहि के न्हवावति। शीतलजल कपूररस रचयो झारीकनक लये अंचवावति। भरेउचरू मुखधोयतुरतही पीरेपान बीरोमुखनावति। सूरश्याम सुखजानि मुदितमन शय्यापर संगले पौढावति ५३॥ रागबिहागरो॥ सोवतनींद आयगइ श्यामहिं। महरिउठी पौढाय दुहुनिको आएलगी गृहकामहिं। बरजतिहै घरकेलोगनिको अरुये लैलै नामहिं। गाढे बोलन पावतकोऊ डरमोहन बलरामहिं। शिव सनकादिक अन्त न पावत ध्यावत हैं निशियामहिं। सूरदास प्रभु ब्रह्मसनातन सोवतनंदके धामहिं ५४ देखत नन्द कान्ह अति सोवत। भूखेभये आजु बनभीतर यह कहि कहि मुखजोवत। कहेउ नहीं मानतकाहूकोआपुहठो दोउबीर। बार बार करसों तनपोंछत अतिहिप्रेमकी पीर। सेजमँगाय लई तहँ अपनी जहां श्याम बलराम। सूरदासप्रभुके ढिगसोये संगपौढि नंदबाम ५५ जागिउठे तबकुंवरकन्हाई। मैया कहाँगई मोंढिगते संगसोवत जान्यों बल भाई। जागे नन्द यशोदा जागी बोलिलये हरिपास। सोवत झझकिउठे काहेते दीपककियो प्रकाश। सपने कूदि परेउ यमुना दह काहूदियो गिराई। सूरश्यामसों कहतियशोदा जिनिहो लालडराई ५६॥ रागगौरी॥ मैं बरजूं यमुनातट जात। सुधिरहिगई न्हातकी जिनि डरपो मेरेतात। नन्दउठाय लियोकोराकरि अपनेसंगपौढाई। वृन्दाबनमें फिरतजहांतहँ केहिकारण तू जाई। अबजिनि जैहो गायचरावन तहँ कोउरहत बलाई। सूरश्याम दम्पतिबिच सोये नींदगई तब आई ५७॥ रागकल्यान॥ सपनो सुनिजननी अकुलानी। दम्पतिबात कहत आपुसमें सोवतसारंगपानी। याब्रजको शीवनियह ढोटा कहादेख्यो। गाय चरावनजाय न दीजे जाकोहै यहकाजु। गृह सम्पति

है तनकढिटौना इनहीं लो सुखभोग। सूरश्याम बनजात चरावन हँसी करत सबलोग ५८॥ रागभैरों॥ यहिअन्तर भिनुसार भयो। तारागण सब गगनछपाने अरुण उदित अंधकारगयो। जागीमहरि काजगृह-लागी निशिको दुखसब भूलिगयो। प्रातस्नान करन यमुनाको नन्द-हितुरत उठायदयो। मथन हारि सब ग्वालिबुलाई भोरभयो उठिसबो दहेउ। सूरनन्दघरनी आपुनहूं मथति मथानी नेकगहेउ ५९॥ राग सूहो बिलावल॥ जननि जगावति उठोकन्हाई। प्रकट्यो तरणि किरणि गण छाई। आवहु चन्द्रबदन दिखराई। बारबार जननी बलिजाई। सखा-द्वार सब तुमहिं बुलावत। तुम कारण हम धाये आवत। सूरश्याम उठि दर्शनदीन्हों। माता देखि मुदित मन कीन्हों ६०॥ रागरामकली॥ दाऊजूकहि श्यामपुकारेउ। नीलाम्बरपट ऐंचिलियो हरि मानोंबा-दरते चन्द्रउजारेउ। हँसतहँसत दोउ बाहरआये मातालै जलबदनपखा-रेउ। दँतवनलैदुहुकरी मुखारीनयननिको आलसजु बिसारेउ। माखन खाहु दुहुनकर दीन्हें तुरत मथ्यो मीठोअतिभारेउ। सूरदास प्रभुखात परस्पर माता अंतरहेत बिचारेउ ६१॥

अथ सूरसागर राग कल्पद्रुम॥

अथकालीदमनलीलाकोप्रसंग॥

श्रीकृष्णायनमः॥

रागबिलावल॥ नारदसों नृपकरत बिचार। ब्रजभे ये दोऊकोउअवता-र। नन्दसुवन बलराम कन्हाई। इनकीगति मैं कछू न पाई। तृणावर्त्त से दूतपठाये। तापाछे केशी चढिधाये। बकीपठाइ दई पहिलेही। ऐसेनि कोबल वैसेहि लेही। उनतेकछू भयोनहिं काजा। यहसुनिमोहि आवतलाजा। अब मनमेंतुम एकबिचारो। सूरश्याम बलरामहि मारो १ नारदमुनि नृपसों यहभाषत। वैहैंकाल तुम्हारे प्रकटे काहेको तुमउनको राखत। कालीउरग रहेउ यमुनामें तहांके कमल मंगावहु। दूतपठायदेहु ब्रजऊपर नन्दहि अतिडर पावहु। यह सुनिके ब्रजलोग

डरैंगे दोउ सुनिहैं यहबात। नन्दयशोदा बहुतडरैंगे येहैंकहैं। उपघात। यहसुनिकंस बहुत सुखपायो भलीकही यह मोहि। सूरदास प्रभु को मुनिजानत ध्यान करत मनजोहि २ ॥ रागसूहो ॥ कंस बुलाय दूत यक लीन्हों। कालीदहके फूलमंगाये पत्रलिखाय ताहिकर दीन्हों। यह कहियो व्रजजाय नंद सों कंसराज अतिकाज मंगाये। तुरतपठाय दि-येही बनिहै भली भांति कहिकहि समुझाये। यह अन्तर्य्यामी जिय जानी आपुरहे बनग्वालपठाये। सूरश्याम व्रजजन सुखदायक कंस काल जियहरष बढ़ाये ३ ॥ रागरामकली ॥ खेलनचले नन्दकुमार। दूत आवतजानिव्रजमें आपु दीन्होंटार। नन्दयमुना न्हायआये महरिठाढ़ी द्वार। नृपतिदूत पठाय दीन्हों चलो ब्रज अहंकार। महरपैठत सदन भीतर छींकबाईंवार। सूरनन्दकहत महरिसों आजुकहा बिचार ४ ॥ राग सारंग ॥यहसुनि कंस मुदित मनकीन्हों। दूतहिप्रकटकहीयहबाणी पत्रलिखाय नन्दको दीन्हों। कालीदहके कमल पठावहु तुरतदेखि यहपाती। जैसेकमल कालिहह्वां पहुंचे तूकहियो यह भांती। यहसुनि दूततुरतही धायो तबपहुंच्यो व्रज जाई। सूरनन्द करपाती दीन्हों दू-तकहेउ समुझाई ५ ॥ रागसूहो ॥ पाती बांचत नन्दडराने। कालीदह के फूलपठावहु सुनीसबनि व्रजलोग घराने। जोमोको नहिं फूलपठावहु तौ व्रज करौंउजारि। महरगोपउपनन्द न राखौंसबहिनडारोंमारि। पुहुपदेहु तौ बनै तुम्हारी नातरुगये बिलाय। सूरश्याम बलमोहनतेरे मांगों उनहिं धराय ६ ॥ रागबिलावल ॥ नन्दसुनत मुरझाय गये। पाती बांची सुनीदूत मुख यहबाणी सुनि चकृत भये। बल मोहन खुटकत वाकेमन आजुकही यह बात। कालीदह के फूल कहैंधौं को आनै प्रकितात। और गोपसबनन्दबुलाये कहतसुनौ यहबात। सूरसुनौनृपयहि ढंगआयो बलमोहनपरघात ७ ॥ रागजयतश्री ॥ आपुचढ़ेव्रजऊपरकालि। कहांनिकसि जैयेको राखै नन्दकहत हैं भालि। मोहिंनहीं जियको-डर नेकहु दोउसुतको डरपाऊं। गाउंतजौं कहुं जाउं निकसिलै इनहीं काजपराऊं। अबउबार देखतनहिं कतहूं शरणारखि कोलेई। सूरश्याम को बरजतिमाता बाहरजान न देई ८ ॥ रागआसावरी ॥ नन्दघरनि व्रज नारि बिचारति। व्रजहिबसत सबजन्म सिरानो ऐसेकंस करी नहिं

आरति। कालीदहके फूलमंगावत को आनेधौं जाई। ब्रजबासी नातरु सबमारौं बांधोंबलहि कन्हाई। यह कहतहि दोऊ नयन ढराने नन्द घरनि दुखपाई। सूरश्याम चितवतमातामुख बूझत बातबनाई ९ बुझहु जाय तातसोंबात। मैंबलिजाउं मुखारबिन्दकी तुमहिं काजकंस अकु-लात। आयेश्याम नन्दपैधाये जान्यो मात पिता अकुलात। अबहीं दूरिकरौंदुखइनको कंसहि पठयदेहुंजलजात। मोसों कहहुबातबाबा यहबहुतकरत तुमशोचबिचार। कहाकहों मैंतुमसेंप्यारेकंसकरतकछु तुमसोंझार। जबसों जन्मभयोहरितेरोकितनों करबरटरे कन्हाई। सूर श्याम कुलदेवनि तोको जहांतहां करिलियो सहाई १०॥राग बिलावल॥ तुमहिं कहत कोकरे सहाई। सो देवता संगही मेरे ब्रजते अनतकबहूं नहिंजाई। बड़ोदेवगिरिगोवर्द्धनहै जो पुरवे आशा मनभाई। वह देवता मनावहु सबमिलि तुरत कमल जो देइ पठाई। बाबानन्द झखत क्यहि कारण यहकहि माया मोह अरुझाई। सूरदासप्रभु मातपिताको तु-रतहि दुख डारेउ बिसराई ११॥ रागनट॥ खेलन चले कुँवरकन्हाइ। कहत घोषनिकासजैये जहांखेलैंधाइ। गेंदखेलत बहुत बनिहै आभानो कोउजाइ। घरहिगये सखा श्रीदामा गेंद तुरंतहिल्याइ। अपनेकरले श्याम देख्यो अतिहि हर्ष बढ़ाय। सूरके प्रभु सखा लीन्हे करतखेल बनाय१२खेलतश्यामसखालियेसंग। यकमारत यकलोकतगेंदहि यक भागत करि नानारङ्ग। मार परस्पर करत आपु में अति आनन्दभये मनमाहिं। खेलतहीमेंश्याम सबनको यमुनातटकोलीन्हेजाहिं। मारि भजत जो जाहि ताहिसोंमारतलेत आपनोदाव। सूरश्याम के गुणको जाने कहत और कछु और उपाव १३॥ रागगौरी॥ लैगयेतीरियमुन तट ग्वालनि। आपुनजात कमल के काजहि सखा लियेसँग ख्यालनि। जोरीमारि भजत उतहीको जाय यमुनके तीर। यकआवतपाछे उनहीं के पावत नहींअधीर। रौंटीकरत तुम खेलतहीमें परीकहा यहबानि। सूरश्यामसोंकहत ग्वालयह तुमहिँ भलेकर जानि १४॥ रागनट॥ श्याम सखा सों गेंद चलाई। श्रीदामा मुरि अङ्गबचायो गेंदपरयो कालीदह जाई। धायगह्यउ तब फेंटश्यामको देहु मेरो तुम गेंदमँगाई। औरसखा जनि मोको जानहुँ मोसों जनि तुमकरो ढिठाई। जानिबूझि तुमगेंद

गिरायो अब दीन्हेंही बनेकन्हाई। सूरसखा सब हँसत परस्पर भली करी हरिगेंद गवाई १५॥ राग सोरठ॥ फेंट छांडि मेरिदेहु श्रीदामा। काहेको तुम रारि बढ़ावत तनकबातके कामा। मेरीगेंद लेहु ताबदले बाहँ गहतहौ धाई। छोटोबड़ो न जानत काहूकरत बराबर आई। हम काहेके तुमहिं बराबरि बड़ेनन्दके पूत। सूरश्याम दीन्हेंही बनिहै बहुत कहावत धूत१६॥ राग कल्याण॥ तोसों कहा धुताई करिहौं। जहां करी तहँदेखीनाहीं कह तोसों मैं लरिहौं। मुखसँभारि तू बोलत नाहीं काहत बराबरि बात। पावहुगे अपनो कियो अबहीं रिसनि कँपावत गात। सुनहु श्याम तुमहूँ सरिनाहीं ऐसेगये बिलाई। हमसोंसरतहोत सूरजप्रभुकमलदेहु अब जाई १७॥ रागगौरी॥ हमहीं परसत रातकन्हाई। प्रथमहिं कंमल कंसको दीजै डारै हमहिं सराई। सांच कहौं मैं तुमहि श्रीदामा कमल काज मैं आयो। कहोकंस बपुरो केहि लायक जाके मोहिं डरायो। अघा बका केशी शकटासुर तृणावर्त्त शिला पर डारेउँ। बकी कपटकरि मारनआई ताको तुरत पछारेउँ। कालीदहजलछुवत सबैसब सोइ कालीधरि ल्याऊँ। सूरदास प्रभु देहधरेकी गुण प्रकट्यो यहिठाऊँ १८॥ राग सोरठ॥ रिसकरि लीनें फेंटछिड़ाई। सखासबै देखत हैं ठाढ़े आपुहि चढ़े कदम्बपर धाई। तारीदैदै हँसत सबै मिलि श्याम गये तुमभागि डराई। रोवतचले श्रीदामाघरको यशुमति आगे कहिहौं जाई। सखा सखा कहि श्याम पुकार्यो गेंद आपनी लेहु न आई। सूर श्याम पीताम्बर कांछे कूदिपरे दहमें भहराई १९॥ राग गौरी॥ हायहाय कहि सखनि पुकार्यो। गेंदकाज यहकरी श्रीदामा नन्दमहरको ढोटा मार्यो। यशुमति चली रसोईभीतर तबहिं ग्वाल यहछींकी। ठठुकि रही द्वारेपर ठाढ़ी बात नहीं कछुनीकी। आय अजिर निकसी नँदरानी बहुरो दोष्यमिटाई। मंजारी आगेहै निकसी पुनिफिरि आंगन आई। व्याकुलभई निकसिगइ बाहर कहांधौं गयो कन्हाई। बायें कागदाहिने खरसुर व्याकुल घर फिरिआई। क्षणभीतर क्षण बाहरआवति क्षण आंगन यहिभांति। सूरश्यामको टेरतिजननी नेक नहीं मनशांति २० देखे नन्दचले घरआवत। पैठतपौरि छींकभई बायें रोय दाहिनी धाय सुनावत। फरकत अवण श्वान द्वारेपर गररीकरत लराई। माथे

पर ह्वै काग उडानो कुसगुन बहुतक पाई। आये नन्द घरहि मनमारे
व्याकुल देखीनारि। सूर नन्द युवतीसों बूझतबिनुछबि बदननिहारि
२१॥ राग नट ॥ नन्दघरनीसों बूझतबात। बदन झुरायगयो क्यों तेरो
कहां गयो बलमोहन तात। भीतर चली रसोई कारण छींक परीतब
आंगनआय। पुनि आगे ह्वैगई मञ्जारी और बहुत मैं कुसगुनपाय।
सोईँ भये कुसगुन घरबैठत आजु कहा यहसमुझि नजाय। सूरश्याम
कहँगये अ जुधौं बारबार बूझत नँदराय२२॥ राग गौरी ॥ महरि महरसन
गये जनाय। क्षणभीतर क्षण आंगनठाढे क्षणबाहर देखतहैं जाय।
यहि अवसर सब सखा पुकारत रोवत आये ब्रजको धाय। आतुर
भये नन्द घरणीको महरि महरसों बातसुनाय। चकृतभये दोउ बूझन
लागेकहो बात हमको समुझाय। सूरश्याम खेलतहि कदमचढि कूदि
परे कालीदह जाय २३॥ राग सोरठ ॥ सपनो परगट कियो कन्हाई। सो-
वतही निशि आजु डरानो हमसों कहि यहबात सुनाई। धरणिपरी
मुरझाय यशोदा नन्दगये यमुनातट धाई। बालकसब नँदसङ्गहि धाये
ब्रजघर जहँ तहँ शोरमचाई। त्राहित्राहि करि नन्दपुकारत देखतठौर
गिरे भहराई। लोटत धरणिपरत जलभीतर सूरश्यामदुखदियो बुढा-
ई॥२४॥ राग गौरी ॥ ब्रजबासी यहसुनि सबआये कहांपस्यो गिरि कुँवर
कन्हाई। बालकले सोइ ठौर दिखाये सूनोगोकुल कियो श्याम तुम
यहकहि लोगउठे सबरोई। नन्दगिरत सबही धरिराख्यो पोंछत बदन
नीरले धोई। ब्रजबासी तबकहत नन्दसों मरणभयो सबहीको आई।
सूरश्याम बिनु को बसि है ब्रज धृगजीवन तिहुँभुवन कन्हाई २५ म-
हरि पुकारति कुंवरकन्हाई। माखन धस्यो तिहारेहि कारण आजु
कहां अवसेर लगाई। अति कोमल तुम्हरेहि मुखलायक तुमजेंवहु मेरो
नयन जुडाई। धौरी दूध औटही राख्यो अपने कर दुहि गये बनाई।
बरजति ग्वालि यशोदाको सब यहकहि नीकेहैं यदुराई। सूरश्यामसुत
बिरह मातके यह बियोग बरणयो नाहिंजाई २६ माखन खाहु लाल
मेरेआई। खेलत आजु अबार लगाई। बैठहुआय सङ्ग दोउभाई। तुम
जेंवहु मैया बलिजाई। सदमाखन अति हित मैं राख्यो। आजु नहीं
नेकहु तैं चाख्यो। प्रातहिते मैं दिये जगाई। दँतवनि करि जो गये

दोउ भाई। मैं बैठी तव पंथ निहारों। आवहु तुम पर तनमन वारों। व्रजयुवती सुनिसुनि यहबानी। रोवति धरणिपरीं अकुलानी। शोक सिंधु बूड़ी नँदरानी। सुधिबुधि तनकी सबै भुलानी। सूरश्याम लीला यहकीन्हो। सुखकेहेत जननि दुखदीन्हो २७॥ राग नट॥ चौंकिपरी तन की सुधिआई। आजु कहां व्रजशोर मचायो तबजान्यो दहगिरयो कन्हाई। पुत्रपुत्र कहिकै उठिदौरी व्याकुल यमुनातीरहि धाई। व्रज बनिता सब सङ्गहिलागी आयगये बल अग्रज भाई। जननी व्याकुल देखि प्रबोधत धीरजकरु नीके यदुराई। सूरश्यामको नेकुनहींडर जनि तू रोवै यशुमति माई २८॥ राग बिलावल॥ व्रजबासी सब उठे पुकारी। जलभीतर कहकरत मुरारी। संकटमें तुम करत सहाई। अब क्योंनहीं बचावत आई। मातपिता अतिही दुखपावत। रोयरोय सबकृष्ण बोलावत। हलधर कहत सुनहु व्रजबासी। वे अन्तर्यामी अबिनाशी। सूरदासप्रभु आनँदरासी। रमा सहित जलहीके बासी २९॥ रागसूहो॥ अतिकोमल तनु धरयो कन्हाई। गये तहां जहँ काली सोवत उरगनारि देखत अकुलाई। कहुउ कौनको बालक है तू बारबार कहि भागिन जाई। क्षणकहिमें जरिभस्म होइगो जबदेखै उठिजागि जम्हाई। उरग नारिकी वाणी सुनिकै आपु हँसे मनमें मुसकाई। मोको कंस पठायो देखन तू याको अब देहि जगाई। कहा कंस दिखरावत इनको एक फूंकहीमें जरिजाई। पुनि पुनि कहति सूर के प्रभुको तू अब काहेन जाइपराई ३०॥ राग गौडमलार॥ कहा डरकरों यहि फणिकको बावरी। कह्यउ मेरोमानि छांडि अपनीबानि अबहि परिहै जानि टेक सबरा- वरी। तोहिं देखि मोहिं मया अतिहोभई कौनको सुवन तू कहांआयो। मरो यहकंस निरबंश वाको होय कह्यो यह कंस तोको पठायो। कंस को मारिहों धरणि निरवारिहों अमर उधारिहों उरगधरनी। सूरप्रभु के बचन सुनत उरगिनि कहेउ जाय अब क्यों न मति भई मरनी ३१ रागमारू॥ झिरकिकै नारिदैगारि गिरिधारि तब पूंछपर लात दै अहि जगायो। उठ्यो अकुलाय डरपाय खगरायको देखिबालक अतिगर्व बढायो। पूंछराखी चापि रिसनि कालीकांपि देखै सब सांपि औ- सान भूले। पूंछलीनी झटकि धरणिसों गहि पटकि फूंकरेउ लटकि

धरि करक्रोध फूलै । करत फणाघात विषजात अतुरातअति नीरअरि-
जाल नहिंगात परसै । सूरके प्रभु श्याम लोकाभिराम बिनुजान अहि-
राज विषज्वाल बरसै ३२ ॥ राग नट ॥ इनको लै ब्रजलोक दिखाऊँ ।
कमलभार इनहीं पर लावौं इनको आपु जनाऊँ । मातपिता अतिही
दुखपावत दरशन कालल्हेउ ब्रजऊपर धाऊँ । मन मन करत बिचार
श्याम यह अबकी काली को दै मन हर्ष बढाऊँ । कमल पठाय देहु
अबहीं नृपराजहि दावि दिखाऊँ । सूरदासप्रभुकी यहबाणी ब्रजबा-
सिनको दुखबिसराऊँ ३३ ॥ राग कान्हरो ॥ उरगनारि सबकहत परस्पर
देखहु यहि बालककी बात । विषज्वाला जलजरत यमुनको याकेतन
लागत नहिंतात । यहकछु मंत्रतंत्रहै जानत अतिही सुंदर कोमल गात ।
यह अहिराज महाविषज्वाला कितनेकरत सहसफणा घात । छुवतनहीं
तन याकोविषकहुँ अबलौंबच्यो पुराय पितुमात । सूरश्यामसों दावबता-
यो कालीअङ्ग लपेटत जात ३४ ॥ राग बिलावल ॥ उरग लियो हरिको
लपटाई । गर्बबचन कहिकहि मुख भाषत मोको नहिंजानत अहिराई ।
लियोलपेटि चरणते शिखलौं अति यह मोसे करीढिठाई । चांपीपूंछ
लुकावत अपनी युवतिनको नहिंसकत दिखाई । प्रभु अन्तर्यामी सब
जानत अबगायौं यह सकुचि मिटाई । सूरदासप्रभु तनबिस्तार्‍यो काली
बिकलभयो तबजाई ३५ ॥ राग कान्हरो ॥ जबहि श्याम तन अति बिस्ता-
र्‍यो । पटपटात टूटत अँग जान्यो शरण शरण अहिराज पुकार्‍यो ।
यहबाणी सुनतहि करुणामय तबहिगये सकुचाई । यहै बचनसुनि द्रुपद
सुता सुख दीनो बसन बढाई । यहै बचन गजराज सुनायो गरुड़ छांड़ि
तहँ धाये । यहै बचन सुनि लाक्षागृहमें पांडव जरत बचाये । यहबाणी
सहिजातन प्रभुसों ऐसे परमकृपाल । सूरदासप्रभु अङ्ग सकोर्‍यो व्या-
कुल देख्यो व्याल ३६ ॥ राग गौरी ॥ नाथत व्याल बिलम्ब न कीनो ।
पगसोंचापि धौंचि बलतोर्‍यो फोरि नाक करसों गहि लीनो । कूदि
चढे ताकेमाथेपर काली करत बिचार । अवणहि सुनीरही यहबाणी
ब्रजह्वैहै अवतार । त्यइ अवतरे आइ गोकुलमें मैं जानी यहबात । अ-
स्तुति करन लग्यो सहसहुमुख धन्य धन्य जग तात । बार बार कहि
शरण पुकारेउ राखिराखि गोपाल । सूरदासप्रभु प्रकटभये जबदेख्यो

ब्याल बिहाल ३७ ॥ राग बिलावल ॥ देखि चरण मनहरख भयो । पुरण ब्रह्म सनातन तुमहीं ब्रजकथा अवतार लयो । श्रीमुख कहेउ अजहूँ सों तुमनहिं जान्यो ब्रज अवतार । और कौन जो तुमसोंबाचिहै सहस फणान के भार । अनजानत अपराधकिये बहुराखि शरण मोहिंलेहु । सूरदासप्रभु धनि मेरेफण चरणकमल जेदेहु ३८ ॥ रागगौरी ॥ अबकीन्हो प्रभु मोहिं अनाथ । कोटि कोटि कीटहु समनाहीं दरशन दियो जगत के नाथ । अशरण शरण कहावतहो तुम कहतसुनी भक्तनि मुखबात । ये अपराध क्षमासब कीजै धृगमेरी बुधि कहत डरात । दीनबचनसुनि काली मुखते चरणधरे फणि फणिप्रति आय । सूरश्याम देख्यो अहि ब्याकुल सुख दीने मेट्यो संताप ३९ यशुमति टेरत कुँवर कन्हैया । आगे देखि कहत बलरामहिं कहां रहेउ तुमभैया । मेरो भैया आवत अबहीं तोहिं दिखाऊँ मैया । धीरजकरहु नेकतुम देखहु यहसुनि लेति बलैया । पुनि यहकहति मोहिं परमोधत धरणिगिरी मुरझैया । सूर बिनासुत भइ अति ब्याकुल मेरो बाल कन्हैया ४० ॥ राग सोरठ ॥ ब्रजबासी सबभये बिहाल । कान्ह कान्ह कहि टेरतहैं ब्याकुल गोपीग्वाल । अब को बसै जाय ब्रज हरि बिनु धृगजीवन नर नारी । तुम बिनु यह गति भई सबनिकी कहांगये बनवारी । प्रातहिते जलभीतर पैठे होन लग्यो युगयाम । कमललिये सूरजप्रभु आवत सबसों कहिबलराम४१ राग नट ॥ आवत उरगनाथे श्याम । नन्द यशोदा गोप गोपिन कहत हैं बलराम । मोरमुकुट बिशाल लोचन श्रवणकुण्डल लोल । कटि पीतांबर बेष नटवर नृत्तफण प्रति डोल । देवदिवि दुन्दुभि बजावत सुमन गण बरषाय । सूरश्याम बिलोकि ब्रज जन हरष मनहिं बढ़ाय ४२ हलधर कहत श्याम यहआयो । मोर मुकुट पीतांबर काछे देख्यो अधिक निकट जबआयो । दिवि दुन्दुभी बजावत गावत फणिप्रति निर्त्तत श्याम । ब्रजबासी सबमरत जिवाये हरषि उठीं सबबाम । शोकसिंधु बहिगयो तुरतही सुखको सिंधुबढ़ायो । सूरदासप्रभु कंसनिकन्दन कमल उरगपर ल्यायो ४३ ॥ राग कान्हरो ॥ फणफणप्रति प्रति[illegible]नर्त्तत नँदनन्दन । जलभीतर युगयाम रहेकहुँ मिट्यो नहीं तनुचन्दन । उरहैकाछनी कटि पीतांबर शीशमुकुट अति सोहत । मनो गिरि ऊपर मोर अन-

न्दित देखत ब्रजजन मोहत। अम्बरथके अमर ललनासँग जयजयधुनि तिहुँलोक। सूरश्याम कालीपर निर्त्तत आवतहैं ब्रजओक ४४॥ राग सोरठ॥ गोपाल राय निर्त्तत फण पर ऐसे। मनो गिरिवर पर बारिद आये मोर अनन्दित जैसे। डोलत मुकुट शीशपर हरि के कुण्डल मण्डित गण्ड। पीतवसन दामिनि तनुघनपर तापर सुरकोदण्ड। उरग नारि आगे ठाढीहैं सुखमुख अस्तुति गावैं। सूरश्याम अपराधक्षमहु अब हम मांगे पतिपावैं ४५॥ राग कान्हरो॥ बहुतकृपा यहकरी गुसाईं। इतनी कृपाकरी नहिँ काहू जिनते राखि लिये शरणाईं। कृपाकरी प्रह्लाद भक्त को द्रुपदसुता पतिराखी। ग्राह मुखहि गजराज छुडाये वेद पुराणन भाखी। जो कछु कृपा करी कालीसों सो काहूनहिँ कीनों। कोटि ब्रह्मांड अङ्गप्रति रोमणि ते पग फणिप्रति दीनों। धरणी शिर धरि शेषगर्ब करि यहिभार अधिक संभारेउ। पूरण कृपा करी सूरज प्रभु फण फणप्रति पगुधारेउ ४६॥ राग सोरठ॥ ठाढे देखतहैं ब्रजवासी। करजोरे अहिनारि बिनयकर कहति धन्यअबिनाशी। जे पदकमल रमाउररार्खति परशिसुरसरी आई। जे पदकमल शम्भुकीसम्पति ते फणफण प्रतिधरे कन्हाई। जेपदपरशि शिला उद्धरिगई पाण्डव गृह फिरिआये। जे पदकमल भजन महिमाते जन प्रह्लाद बचाये। जे पद ब्रजयुवतिन सुखदायक वेपद तिहुं भुवन किये बावन। सूरश्याम तेपद फणफणप्रति निर्त्तत अहिकियो पावन४७ ऐसी कृपा करी नहिंकाहू। खम्भप्रगटि प्रह्लाद बचायो ऐसीकृपा न ताहू। ऐसी कृपाकरी नहिं गजको पायँपियादे धाये। ऐसी कृपातब हूं नहिंकीनी नृपति न बंदिछुडाये। ऐसी कृपाकरी नहिं तबहूं द्रौपदिनग्नि समयपति राखी। ऐसी कृपा करी न भीष्मपर सत्यप्रतिज्ञा भाखी। पूरणकृपा नन्द यशुमति को सो पूरण यहिपायो। सूरदास प्रभुधन्य कंसर्जान तुमसों कमलमंगायो ४८॥ राग कान्हरो॥ सुनहुकृपानिधि जिती कृपा तुम या कालीको कीनी। इतीबडाई कबहूं कैसो नहिं काहूको दीनी। जिनिपद कमल सुकृत जल परस्यो अजहूं धरेउ शिरशीश। तेपद प्रकट धरे फणफणप्रति धन्य कृपाजगदीश। एक अण्डको भारबहत है गर्बधरेउ जियशेष। यहिभरअधिक सहेउअपने

शिर अमित अराडभय मेथ । सुर नर असुर कीट पशु पक्षी सब सेवक प्रभुतेरे । सूरश्याम अपराध क्षमहुअब या अपने जन केरे ४९ चरण कमल बन्दों जगदीश जेगोधन के संगधाये । जेपदकमल धूरिलपटाने करगहि गोपिन उरलाये । जेपद कमल युधिष्ठिरपूजे राजसूयमें चलिआये । जे पदकमल पितामहभीषम भारतमें देखनपाये । जेपदकमल रमाउर भूषण वेदभागवत मुनिभाये । जे पदकमल शंभुचतुरानन हृदय कमल अंतर राखे । जे पदकमल लोकपावन त्रयबलिराजाकी पीठिधरे । तेपदकमल सूरके स्वामी कालीफणप्रतिनृत्यकरे ५० बन्दौं चरण सरोज तुम्हारे । सुन्दरश्याम कमल दललोचन ललित त्रिभङ्गी प्राणपियारे । जे पदपद्म सदाशिवके धनसिंधुसुता उरते नहिं टारे । जे पदपद्म तात रिस त्रासत मन बच क्रम प्रह्लाद संभारे । जे पद पद्म फिरत वृन्दावन अहि शिर धरि अगणित रिपु मारे । जे पदपद्म परशि व्रजयुवती सर्वसु दै सुत सदन बिसारे । जे पद पद्म लोक त्रयपावन सुरसरि दरश कटत अघ भारे । जे पद पद्म परशि ऋषिपत्नी नृप अरु व्याध अमित खल तारे । जे पदपद्म फिरत पाण्डव गृह दूत भये सब काज संवारे । तेइ पदपंकज सूरदास सुख करण बचनअहि फणप्रति धारे ५१ गिरिधर व्रजधर मुरलीधर । माधव पीताम्बरधर मुकुटधर गोपधर उरगधर । शंखधर शारंगधर चक्रधर गदाधर रसधर । अधरसुधाधर कंबुकंठधर कौस्तुभमणिधर बनमालधर । मोतीमालधर कटिकोंधनीधर भृगुरेखाधर पद्महस्तधर । लक्ष्मीधर अरु गुंज मालधर कालीफण प्रति चरण कमलधर । सूरदासके प्रभुजगत धर भगतधर दुष्टकंसके केशधर ५२सबैव्रजयमुनाके तीर । कालीनाग के फणपर निर्त्तितसंकर्षण कोबीर । लाग गान थेईथेइ करत उघटत तालमृदंग गंभीर । प्रेममगन गावतगण गन्धर्व व्योम बिमाननिभीर । उरग नारिआगे भइठाढ़ी नैनननि ढारतिनीर । हमको दानदेहु पतिछाड़हु सुन्दरश्याम शरीर । आये निकसि पहिरिमणिभूषण पीतबसन कटिचीर । सूरश्याम को भुजभरि भेटत अंकम देत अहीर ५३ गरुड त्रासते जो यहांआये । तौ प्रभु चरणकमल फणफण प्रति अपने शीशधराये । धरि ऋषि शापदियो खगपतिको यहांतब रहेउँ छिपाई ।

प्रभुबाहन डरभाजि बच्योअहि नातरु लेतेखाई। यहसुनि हाथ करी नँदनन्दन चरण चिन्ह प्रकटाये। सूरदास प्रभुअभय ताहि करिउरग दीप पहुंचाये ५४॥ राग कल्याण ॥ जय जय धुनि अमरन नभ कीनों। धन्यधन्य जगदीश गुसाईं अपनोंकरि अहिलीनों। अभयकियोफण चिन्ह चरणधरि जानि आपनोंदास। जलते काढि कृपाकरि पठयो मेटि गरुड़ को त्रास। अस्तुति करि अहिपति कुटुंब लैचल्यो आपने ओक। सूरश्याम मिलि मात पिता को दूरिकियो तनशोक ५५ रागनट ॥ लीनोजननी कंठलगाई। अंग पुलकित रोम गद्गद सुखेद आंसुबहाई। मैं तुमहिं बरजति रहों हरियमुन तट जिनिजाय। कंस कमल मँगाइ पठये तात गये डराय। मैं कह्यउं निशि सपन मोसों प्रकट भई सुआय। तात तू असगुण जो देखे सोऊ प्रकट लखाय। ग्वाल संग मिलि गेंद खेलत आये यमुना तीर। काहुलै मोहिं डारि दीनों कालिया दहनीर। यह कही तब उरग मोसों किन पठायो तोहिं। मैं कही नृप कंस पठयो कमल कारण मोहिं। यह सुनत डारि कमल दीनों मोहिं लियो चढ़ाय। सूर यह कहि जननि बोधी देख्यो तुमहीं आय ५६ रागगौरी ॥ ब्रजबासिन सों कहत कन्हाई। यमुना तीर आजुसुख कीजै यह मेरे मन आई। गोपन सुनि अति हरष बढ़ायो सुखपायो नँदराई। घर घरते पकवान मँगाये ग्वालनिदियो पठाई। दधिमाखन षटरस के भोजन तुरतहि ल्यायेजाई। मातपिता गोपी ग्वालिनिको सूरजप्रभु सुखदाई ५७ तुरत कमल अनदेहु पठाई। सुनहु तात अब विलम्ब न कीजै कंस चढ़ै ब्रज ऊपर आई। कमल मँगाय लिये तटऊपर कोटि कमल तब दिये पठाई। बहुत बिनयकरि पाती पठई नृपलीजै सब पुहुप गनाई। तैसो हमको आज्ञा दीजै बहुत धरे जलमांझ सजाई। सूरदासनृप तुव प्रतापते काली आय गयो पहुँचाई ५८॥ राग सोरठ॥ सहस शकट भरि कमल चलाये। अपनी संग सर और गोप जे तिनके साथ पठाये। और बहुत कांवरि दधि माखन अहिरण कांधे जोरि। नृपकेहाथ पत्र यहदीजो बिनती कीजोमोरि। मेरोनाम नृपतिसों लीजो श्याम कमल लैआयो। कोटि कमल आपुन नृपमांगे तीनकोटिहैं पायो। नृपति हमहिँ अपनो करिजानो तुम ला-

एक सुकनाहीं। सूरदास यह कहो नृपआगे तुमहिं छांडिकहँजाहीं ५९ रागनट॥ कमलनके भार दधि भार माखन भार लिये ग्वाल नृप द्वार आये। तुरतहि टेरि गनि कोटि शकटनि जोरिभये ठाढे पौरितब सु- नाये। सुनत यहबात अतुरात और डरातमन महलते निकसि नृपआपु आयो। देखि दरबार सबग्वाल नहिँ कहूँ पार कमल के भार शकटनि सजायो। चितहि चकृतभयो ज्ञान हरिहर लयो शोच मनमेंठयो कहा कीनें। गोप शिरढोरि नृपबोरि करजोरिकै पुष्प के काज प्रभु पत्र दीनें। यह कहेउ नन्द नृपबन्दि अहिइन्द्रपै गयो मेरो नन्दनाम लीनें। उठ्यो अकुलाय डरपाय तुरतहि धायगयो पहुँचाय तट आय दीनें। यह कहेउ श्याम बलराम लीजोनाम राजको कामयह हमहिं कीन्हो। और सबगोप आवतजात नृपबात कहतसब सूरमोहिं नहीं चीन्हो ६० राग बिलावल॥ ग्वालनि हरि की बात सुनाई। यहसुनि कंस गयो मुर- झाई। तब मनहीं मनकरत बिचारा। यहकोउ भलो नहीं अवतारा। यासों मेरो नहीं उबार। मोहिँ मारव मारे परिवार। दैत्यगयेते बहुरि न आये। कालीते ये क्यों बचिआये। ताहीपर धरि कमल लदाये। शकट सहसभरि ग्याल पठाये। एक ग्याल मैं उनहि बताये। कोटि श्याल मेरेसदन चलाये। ग्वालनदेखि मनहिँ रिसकांपै। पुनि मनमें यह अनुकार नांपै। आपुहि आपु नृपति तन त्यागयो। सूरदेखि कंस- लनि डरभाग्यो ६१॥ राग नट॥ भीतरलिये गोप बुलाय। हृदय दुख सुख हलभली करि ब्रजहिदिये पठाय। नन्दके शिर पांवदीनें गोप सब पहिराय। यहकहेउ बलराम श्यामहि देखिहौं दोउ भाय। अति पुरुषारथ कहौरे उनि कमल उनहीलाय। सूरप्रभुको देखिहौंमैं एक दिवस बुलाय ६२॥ राममारू॥ कमल शकटनिभरे व्याकुलमानो। श्याम के बचन सुनि मनहिँमन रहेउगुनि काठज्यों गयो घुनि तनु भुलानो। भयो बेहाल नँदलालके ख्याल ये उरगते बांचिफिरि ब्रजहि आयो। कहेउ दावानलहि देखो तरवरहि भस्मकरि ब्रजपलहि कहिपठायो। चल्यो रिसपाय अतुराय तबधायको ब्रजजनन वनसहित जारिजाऊँ। नृपतिके लिये पान मनकियो अभिमान करत अनुमान चहुँपासधाऊँ। वृन्दाबन आदि ब्रजआदि गोकुलआदि आदिकुन्यादि सबहोनजारौं।

चल्यो मगजात कहिवात इतरात अतिसूर प्रभुसहित संहारिडारौं ६३

रागगौंड़ ॥ कमल पहुँचायसब गोपआये। गयो यमुनातीर भई अतिही भीर देखि नँदतीर तुरतहि बुलाये। दियो शिरपाव नृपराव ने महर को आपु पहिरावनी सबदिखाये। अतिहि सुख पाइके लियो शिर नायके हरष नँदरायके मनबढ़ाये। प्रथास बलरामको नाम जब हम लियो सुनत सुखकियो उनकमलजाये। सूर नन्दसुवनदोऊ एक दिवस देखिहौं पुहुप लिये सुख पाय इन बुलाये ६४ ॥ रागधनाश्री ॥ यह सुनि नन्द बहुत सुखपाये। कमल पठाय दये नृपलीन्हें देखनको दोउ सुतन बुलाये। मेवा बहुत मानिहो लीनो ब्रजनारी नर हरष बढ़ाये। बड़ीवात भइ कमल पठाये मानहुँ आपुन जलते ल्याये। आनँदकरत यमुनतट ब्रजजन खेलत खातहि दिवस बिहाये। यहसुख प्रथास वन्हे कालीते यहसुख कंसहि कमल चलाये। हँसतकान्ह बलराम सुनत यह हमको देखन नृपति मँगाये। सूरदासप्रभु मातपिता हित कमल कोटि दै ब्रजहि बचाये ६५ ॥

अथकाली दमनबड़ी लीला ॥

राग बिलावल ॥ नारदकहिं समुझाय कंस नृपराजको। तबपठयोव्रज दूत पुहुपके काजको ॥ ध्रुव ॥ तबपठयो ब्रजदूतमुनी नारदमुख बानी। बार बार ऋषिराज कंसमुख अस्तुति गानी। धन्य धन्य मुनिराज तुम भलोमंत्र दियोमोहिं। दूतचलायो तुरतहि हो अबहिजाय व्रजजोहि। यहकहियो तु जाय कमल नृप कोटि मँगायो। पत्रदियो लिखि हाथ कह्यो बहुभाँति जनायो। कालिहकमल बाहिं आवहिं तो तुमकोनहिं चैन। शिरनवाय करजोरिकै हो चल्योदूत मुनिबैन। तुरतपठायोदूत नन्द घरहीमें पायो। कमल पुहुपके भार कंसनृप बेगिमँगायो। कालिहनपहुँचें आयके तबबसिहै ब्रजलोग। गोकुलमें जे सुखकिये हो ते करिहैंहो शोग। जो न पठावहु पुहुपकहोगे तैसीमोको। टारैंगे नृपठौर बसनपैहोनहिंओको। यहजानहु गोपनिसमेत पकरिमँगावहिकालि। पुहुपबेगि पठायेबनेहो औरबसो ब्रजपालि। यहसुनिनंदइराय अतिहि मनमन अकुलाने। यहकारज क्यों होयकाल अपनो करिजाने। और महर सब बोलिलै कैसोकरें उपाय। कालिहप्रात ब्रजमारिहैहो बांधि

सबनि लैजाय। बलमोहन को नामधरयो कहि पकरि मँगावन। ताते अति भयोशोचलगत सुनि मोहिं डरावन। यहसुनि शिरनाये सबनि मुखहिं न आवैबात। कहो कहा अब कीजिये हो कैसे मिटिहै घात। कोउ बालकन भगाय जाहि लै आन भूमिपर। बरुहम को लै जाय श्याम बलराम बचैंघर। महरि सबै व्रजनारिसों कहिपंकुत कोउपाउ। जन्महिते करवर टरीहो अबकी नहींबचाउ। कोउकहै देदेदाम नृपति जितनो धनचाहै। कोउ कहै जैयेशरण सबैमिलि बुधिअवगाहै। यही शोच सबपरिगरहे कहूंनहीं निरधार। व्रज भीतर नंदभवनमेंहो घरघर यहै बिचार। अन्तर्यामी जानि नंदसों बूझत बात। कहा करत हो शोचकहो कछु मोसोंतात। कहाकहों मेरेलाड़िले कहतबड़ो संताप। मथुरापतिके जियकछूहो तुमपरउपज्योपाप। कालीदहके पुहुपमांगि पठये हमसोंउनि। तबते मोजियशोच जबहिं तेबात परीसुनि। जौं नहिं पठवहि कालिहहीतो गोकुलदेउं लगाय। मोसमेत दोउबंधु तुमहो कालिहहिलेइ बंधाय। यह कहि पठयोकंस तबहिं ते शोच परेउ मोहिं। प्रथम पूतनाआय बहुत दुखदै जुगई तोहिं। तृणावर्त के घातते बहुत बच्यो दुखपाय। शकटाकेशीते बच्योहो अबको करैसहाय। अघाउदरते बच्यो बहुत दुख सहेउ कन्हाई। बकारहेउ मुखबाय तहांभयो धर्मसहाई। इतने करवरहैं टरे देवनकिये सहाय। तबते अबगाढ़ी परीहो मोको कछु न सुहाय। बाबातुमहीं कहतकौन यों तोहिं उबारै। सोइव्रज भीतर प्रकटकंस गहिकेश पछारै। यह जबहीं हरिसों सुनो नन्दमनहिं पतिआय। रागनिरत जो संगरहेउ होसो करिलेइ सहाय। नन्दहि यहसमुझाय कान्हउठि खेलनधाये। जहं व्रज बालक हुते तुरत तहँ आपुन आये। गोपसुतन सों यह कहेउ खेलैं गेंद मँगाय। श्रीदामा यह सुनतहीं हो घरते ल्यायोजाय। सखा परस्पर मारकरैं कोउ कानि न मानैं। कौन बड़ोको छोट भेद भेदानहिं जानैं। खेलत यमुना तटगये आपुहि ल्यायेटारि। श्रीदामाके हाथते लै गेंददई दहडारि। श्रीदामागहि फेंट कहेउ हमतुम यकजोटा। कहाभयो जो नन्द बड़े तिनके तुमढोटा। खेलतमें कहछोट बड़ो हमहूं महरके पूत। गेंद दियेही पै बने हो छांड़िदेहु मतिधूत। तुमसों झूठ्यो कहांकरों झूठ्यो

नहिं देख्यो। प्रमथ पूतना नारि काग शटकासुर पेख्यो। तृणावर्त्त पटक्यो शिला अघा बका संहारि। तुम तादिन संगही रहे अब धूत कहत न संभारि। टेढ़े कहा बतातकंसको कमलदेहु अब। कालिहहि पठयो मांगि पुहुप अबलै देहो जब। बहुत अचगरी जिनकरो अजहूं तजो झवारि। पकरि कंस लै जायगो कालिहहि परेखभारि। कमल पठाऊं कोटिकंसको दोयनिवारों। तुमदेखत पुनिजाउं कंसजीवत ध-रिमारों। फेटलियो तवझटकिके चढ़ेकदमपर जाय। सखा हँसत ठाढ़े सबै हो मोहनगयेपराय। श्रीदामा चलेरोय जायकहिहों नन्द आगे। गेंदलेहु तुम आय मोहिं डरपावन लागे। यहकहि कूदि परे सलिल कीने नटवर साज। कोमलतनु धरिके गये जहँसोवत अहिराज। यहि अन्तर नंद घरनि कहेउ हरि भूखेह्वैहें। खेलतते अब आय भखकहि मोहिं सुनैहैं। अतिआतुर भीतरचली जेंवन कारणआय। छींक सुनत कुशगुन कहेउ हो कहाभयो यहपाय। अजिर चली पछितात छींक को दोय निवारण। मंजारी गइ काटि तबहि निकसत ही बारण। जननी जिय व्याकुल भई कान्ह अबेर लगाय। कुशगुन आजुबहुतभये हो कुशलरहें दोउभाय। प्यास परे दहकूदि मात जिय गयो जनाई। आतुर आयेनन्द घरहि बूझत दोउभाई। नंदघरनिसों योंकहत मोको लगत उदास। यहिअन्तर हरितहं गयेहो जहंकालीको बास। देख्यो पन्नग जाय अतिहि निर्भय ह्वै सोवत। बैठी तहं अहिनारि डरी बा-लकके जोवत। भाग्र भाग्र सुत कौनको अतिकोमल तेरो गात। एक फूंकको नहीं तू है। विषज्वाला अति तात। तब हरि कहेउ प्रचारि पतिहिको देहि जगाई। आयो देखन याहि कंसमोहिं दियो पठाई। कंसकोटि जरिजाहिंगेविषकी एकफुंकार। कहेउकरिफिरि जाहितू हो अति बालक सुकुमार। यहिअन्तर सँग सखाजाय ब्रजनंद सुना-यो। हमसँग खेलत प्यास जाय दह मांझसमायो। बूड़ि गयो उचको नहीं ता बातहि बड़िबेर। कूदिपरेउ चढ़ि कदमते हो खबरि न करी सबेर। आहिआहिकरि नन्द सुनत दौरे यमुना तट। यशुमति सुनि यह बात चलीरोवत तोरतिलट। ब्रजबासी नरनारि सबआरत परत चले धाय। बूड़ेउ कान्ह सबनि सुनिहो अति व्याकुल मुरझाय। जहँ तहँ

परी पुकार कान्ह बिन भये उदासी। कौन काहि सों कहै अतिहि व्याकुल ब्रजबासी। नंद यशोदा अति बिकल परत यमुन में धाई। और गोप उपनंद मिलि हो बांहपकरि लेआई। धेनु फिरति बिललानि बच्छथन कोउ न लगावै। नंद यशोदा कहत कान्ह बिनकौन चरावै। यहसुनि ब्रजबासी सबै परे धरणि अकुलाय। हाय हायकरि कहति सबैहो कान्ह रहेउ कहँ जाय। नंद पुकारत रोयबुढाई मोहिँ छुडायो। कछुदिन मोहलगाय जायजल भितर भंडायो। यह कहिके धरणी गिरत जनु तरुकाटि गिराय। नन्दघरनि तब देखिकै हो कान्हहि टेरि बुलाय। निठुर भये सुत आजु तातकी छोह न आवति। यह कहिके अकुलाय जलहि भीतर को धावति। परति जाय यमुना सलिल गहिआनति। ब्रजनारि नेकरहौ सब मरहिँगी हो कोहै जीवनहारि। श्याम गयो जलबूडि वृथाधृग जीवन जगको। शिर फोरति गिरिजाति अभूयरा तोरति अङ्गको। मुरछिपरी तन सुधिगई प्राण रहेउ कहुँजाय। हलधर आये धायके हो जननीगइ मुरझाय। नाक मूंदि जल सींचि जननि जननी करि टेरेउ। बारबार झकझोरि नेक हलधर तन हेरेउ। कहतउठी बलरामसों बनहिँ तज्यो लघुभ्रात। कान्ह तुमहिँ बिनरहत नहिँ हो तुमसों क्यों रहिजात। अब तुमहूं जिनि जाहुसखा एक देहुपठाई। कान्हहि ल्यावैजाहि आजुअवसेरि कराई। छाक पठाऊं जोरिके मन मन शोकसमाज। प्रातकछू खायो नहीं हो भूखे ह्वै गई सांज। कबहुँ कहति बनगये कबहुँ कहिघरहि बतावति। कहँ खेलत हौ लाल टेरियह कहति बुलावति। जागिपरो दुखमोह ते रोवत देखे लोग। तब जान्यो हरि दहगिरेउ हो उपज्यो बहुरि बियोग। धृग धृग नन्दहि कहेउ और कितने दिन जीहौ। मरत नहीं मोहिँमारि बहुरि ब्रजबसिहौ कीहौ। ऐसे दुखमें मरणसुख मनकरि देखहु ज्ञान। व्याकुल धरणी गिरिपरे हो नन्द भये बिन प्रान। हरि को अग्रज बंधु तुरतही पिता जगायो। माताको परबोधि दुहुनि धीरज धरवायो। मोहिँ दुहाई नन्दकी अबहीं आवत श्याम। नाथिनाग ले आयहैं हो तब कहियो बलराम। हलधर कहेउ सुनाय नन्द यशुमति ब्रजबासी। वृथामरत केहि काज मरै क्यों वह अबिनाशी। आदि

पुरुष में कहत हीं गये कमल के काज। गिरिधरको तुम डरतहौ हो वह देवन शिरताज। वह अविनाशी आहिकरो धीरज अपने मन। कालीछेदे नाक लियेआवत निर्त्तत फन। कंसहि कमल पठाय हैं कालिहि पठवैं दीप। एक घरी धीरज धरी हो बैठी सब तरुनीप। सुनि हो अहिकी वामश्याम अहि क्यों न जगावै। बालक बालक करति कहापति क्यों न उठावै। कहाँकंस कहँ उरग यह अबहूँ दिखाऊं तोहिँ। देनगाय में कहतहीं हो तूनहिँ जानति मोहिँ। मैं जानति हीं बालफूंक यकमें जरिजैहो। छोटेमुख बड़िबात कहत अबहीं मरिजैहो। छोह लगति तोहिँ देखि मोहिँ काकोबालक आहि। खगपति सों सरबरि करीहो तूबपुरो को आहि। बपुरो मोसों कहति तोहिँ बपुरो करिडारों। एक लातसों चापि खसम तेरेको मारों। सोवत काहु न मारिये चलिआई यहबात। खगपतिको मैंहीं कियो हो कहति कहा तू बात। तुमहिँ बिधाताभये और कर्त्ता कोउनाहीं। अहिमारोगे आपु तनक से तनकसी बाहीं। कहा कहीं कहत न बनै अतिकोमल सुकुमार। देती अबहिँ जगायकै हो जरिबरि ह्वै हैछार। तूधोंदेहिजगाय तोहिँ दूषण कछुनाहीं। परी कहा तोहिँ नारिपाप अपनेजरिजाहीं। हमको बालक कहतिहै आपु बड़ेकी नारि। बाद करत बिनकाजहीं हो वृथा बढ़ावति रारि। तुहीं न लेहिजगाहि बहुत जो करत ढिठाई। पुनिमरि हैं पछिताय मात पितु तेरे भाई। अजहूँ फिरि करिजाहि तू मपिलैहै सुखकोन। पांच बरषकी सातको हो आगेतोकोहोन। झिरकि नारिदे गारि आपु अहि जाय जगायो। पगसों चापि पूंछ सबै औसान भुलायो। चरण मसकि धरणी दली उरग गयो अकुलाय। काली मनमें तब कही हो यह आयो खगराय। देख्यो नयन उघारि तहां बालक यकठाढ्यो। बिषधर भटकीपूंछ पटकि सहसो फण काढ्यो। बारबार फणघातकरि बिष ज्वालाकीभारि। सहसो फणफण फुंकरैहो नेक न तनहि लगारि। तब कालीमन कहत पूंछ चापी यहि पगसों। अतिहि उठ्यो अकुलाय डरेउ बाहन हरिखगसों। यहबातक धौं कौनको कीनो युद्ध अगाय। दांव घात बहुतै कियो हो सुरत नहीं यदुराय। पुनिदेखै हरिओर पूंछ चापी यहिमेरी। मनमन करत बि-

चार लेउँ याको मैं घेरी। दांवपरेउ अहिजानिकै लियो अङ्ग लपटाय। चरण लपेटे शिखालों हो यहिअति करी ढिठाय। कहति उरग की नारि गर्व अतिही करिआयो। अयो पहूँच्यों कालबश्य पग इतहि चलायो। अहिनारिन सों यह कही मोहिं समसरि कोउनाहिं। एक फूंक विषज्वालके हो जल डूंगर जरिजाहिं। गर्व बचन प्रभु सुनत तुरतही तनु बिस्तारेउ। हाय हायकरि उरग बारहीबार पुकारेउ। शरण शरण अब मरतहौं मैं नहिं जान्यों तोहिं। चटचटात अङ्ग फूटही हो राखु राखु प्रभु मोहिं। श्रवण शरण धुनि सुनत लियोप्रभु तन सकुचाई। समहु मोहिं अपराध न जानेकरी ढिठाई। ब्रजमें कृष्णअवतार है मैं जानी प्रभुआज। बहुतकिये फणाघात मैं हो बदन दुरावतलाज। रहों आनि-यहिठौर गरुड़की त्रासगुसाईं। बहुत कृपामोहिंकरी दरश दीनोंजगसाईं। नाकफोरिफणपरचढे कृपाकरी दिवराय। फणफण प्रति प्रति चरण धरेहो निर्त्तत हरष बढ़ाय। धन्य कृष्ण धनि उरग जानिजन कृपाकरीहरि। धन्यधन्य दिनआजु दरशसों पापगयेजरि। धन्यकंस धनिकमल येधन्यकृष्ण अवतार। बड़ीकृपा उरगहिकरीहो फणप्रति चरण बिहार। शेषकरत जियगर्व अण्डको भारशीशधरि। पूरणब्रह्म अनन्तनामकोसकै पार करि। फणफणप्रति अतिभार भर अमित अङ्गमें गात। उरग नारि करजोरिके हो कहति कृष्णसोंबात। देखत ब्रजनर नारि नन्द यशुदा समेत सब। कंससों कहत रखत सुन हो सुतकान्ह नहींअब। यहि अन्तर जलकमल बिचउठ्यो कछुअकुलाय। रोवतते बरजे सबै हो मोहन अग्रजभाय। आवत हैं वहश्याम पुहुप काली शिरलीने। मातपिता ब्रजदुखित जानि हरि दर्शनदीने। निर्त्ततकाली फणनपर दिवदुन्दुभी बजाय। नरवर बपुकाछे रहैं हो सबदेखैं वहभाय। आवत देखे श्यामहरष कीन्हों ब्रजबासी। शोकसिन्धु गयो उतरि सिन्धुआनन्द प्रकासी। जल बूड़त नौका मिलै जो न होत आनन्द। त्यों ब्रजजन हुलसे सबैहोआवतहैं नँदनंद। सुत देखत पितु मात रोम गद्गद पुलकित भये। उर उपज्यो आनन्द प्रेम जल लोचनदुहुँश्रये। देव दुन्दुभी बजावहीं फणप्रति निर्त्तत श्याम। ब्रजवासी सब कहत हैं हो धन्य धन्य बलराम। उरगनारि करजोरि करति अ-

कन्हैया अब न बाचिहैं सारतजारे। जेंवनकरण चली जब भीतर छींक परीती आङ्गसबारे। ताकोफल तुरतहि यकपायो सो उबरेउ भयो वर्म सहारे। अब सबको संहार होतहै छींकाकिये येकाज बिचारे। कैसेहु ये बालक दोउ उबरें पुनि पुनि शोचति परी खंभारे। सूरश्याम यह कहत जननिसों रहुरीमा धीरज उरधारे ५॥ रागगोंड॥ भहरात हहरात दावानल आयो। घेरि चहुँओर करिशोर अंधेर बन धरणि आकाश चहुँपास छायो। बरत बनबांस घर हरत कुशकास जरि उड़तहैं भांस अति प्रबलधायो। झपटि तलपट पटकि फलफुटतफटि चटकि चटकि द्रुम द्रुम नवायो। अति अग्नि झारभंभार धंधकारकरि उचटि अंगार झंझारधायो। बरतबनपात भहरात अररात तरुमहा धरणीगिरायो। भये बेहाल सब ग्वाल व्रजबाल तब शरणगोपाल कहिकै पुकारेउ। तृणाकेशीशकट बकीबक अघासुर बामकर राखिगिरिज्योंउबारेउ। नेकधीरजकरो जियहि कोउ जनिडरो कहीयह सबै लोचन मुदायो। मूठी भरिलियो सबनाय मुखहींदियो सूरप्रभुपियो व्रजजनबचायो ६ रागकान्हरो॥ अबकी राखिलेहु गोपाल। दशहुं दिशातें दुसह दावाग्नि उपजीहै यहिकाल। पटकतबांस कांसकुश चटकतलटकत तालतमाल। उचटत अति अंगार फुटतफर झपटत लपट कराल। धूम धूंधि बाढ़ी धुरअम्बर चमकत बिचबिच ज्वाल। हरनि बहार मोर चातक पिक जरतजीव बेहाल। जिनिजिय डरहुनयन मूंदहुसब हँसिबोले नंदलाल। सूरअनल सबवदन समानो अभय करे व्रजबाल ७॥ रागगोंड॥ दावानल अचै व्रजजन बचायो। धरणि आकाशलों ज्वालमालाप्रबल घेरिचहुँ पास व्रजबास आयो। भयेबेहाल सब देख नंदलाल तब हँसतही ख्याल ततकाल कीनों। सबन मूंदे नयन नाहिं चितये सैन तृणाज्यों नीरदव अचैलीनों। देखोअब नयनभरि बुझिगई अगिनिझार चितैनरनारि आनन्द भारी। सूरप्रभु सुखदियो दावानल पीलियो कहत सबग्वाल धनिधनि मुरारी ८॥ रागबिहागरो॥ चकृत देखि यहकहि नरनारि। धरणि अकाश बराबर ज्वाला झरटी लपटि करारि। नहिँ बरष्यो नहिँ छिरक्यो काहूकहांधोंगयो बिलाई। अतिआघात करत बनभीतर कैसेगयो बुझाई। तृणाकी आग बरतनाहिं बुझिगइ हँसि हँसि कहत

गोपाल। सुनहुसूर वहकरनि कहांनियह ऐसे प्रभुके ख्याल ६ ॥ राग बिलावल ॥ जाकोसदा सहाइ कन्हाई। ताहिकहो काकोडर माई। बन घर जहां संगहीडोलैं। खेलतखात सबनिसों बोलैं। जाकोध्यान न पावैं योगी। सो व्रजमें माखनकोभोगी। जाकीमाया त्रिभुवनछावै। सोय-शुमतिके प्रेमबँधावै। मुनिजन जाकोध्यान न पावैं। व्रजजनलैलै नाम बुलावैं। सूरताहि सुरअंबरदेखो। जीवनजन्म व्रजहिको लेखो १० ॥ राग कान्हरो ॥ व्रजबनिता सबकहति परस्पर नन्दमहरकोसुत बड़बीर। देखोधों पुरुषारथ इनकोअतिकोमल तनुश्याम शरीर। गयोपताल-उरग गहिआन्यो ल्यायो तापर कमल लदाय। कमलकाज नृपव्रज मारतहो कोटि जतन त्यहिदिये पठाय। दावागिनि नभ धरणिवरा-बर दशहुंदिशाते लीनोघेरि। नयनमुंदाय कहा तेहि कीनों कहुं नहीं जो देखेहेरि। येउतपात मिटत इनहींते कंसकहा बपुरोहैछार। सूर-श्याम अवतार बड़ो व्रज येही हैं कर्त्ता संसार ११ ॥ राग सोरठ ॥ अति सुन्दर नंदमहर ढिटौना। कपट रूपकी त्रियानिपाती तबहि रहे अति छौना। डार शिलापर पटकि तृणावर्त्त ह्वैआयो वहपौना। अघाबका-सुर तबहिसंहारेउ प्रथमकियोबनगौना। कमल काज नृपव्रज मारतहो दवा अचैकियोखौना। सूरप्रकट गिरिधरेउ बामकर मैं जानति बलि-धौना १२॥ रागमारू ॥ दवते जरत व्रजजन उबारेउ। पैठिजलगयेगहि उरग आन्यो नाथि प्रकट फणफणनि प्रतिचरण धारेउ। देखैं सुनिलोक सुर-लोक शिवलोकके नंद यशुमतिहेत बशमुरारी। जहांतहां करतअस्तुति सुखन देव नरधन्य जैशब्द तिहुं भुवनधारी। सुखकियो यमुनतट एक बासर रैनि प्रातहि व्रजगये गोपनारी। सूरश्याम बलराम नंदधामगये मात पित व्रज जनहि सुखद कारी १३ ॥ राग रामकली ॥ हरि व्रज जनके दुखबिसरावन। कहांकंस कब कमलमंगाये कह दावानल दावन। जल कबगिरे उरग कबनाथ्यो नहिं जानत व्रजलोग। कहांबसे यकदिवस रैनिभरि कबहिं भयो यहशोग। यह जानतहमऐसेहि व्रजमें वैसेहि करत बिहार। सूरश्याम जननीसों मांगत माखन बारम्बार १४ ॥ राग बिलावल ॥ नेकरहो माखनद्यों तुमको। ठाढ़ीमथति जननि दधिआतुर लवनी नंदसुवनको। मैंबलिजाउं श्यामघनसुन्दर भूंखलगी तुम्हैंभारी।

बातकहूंकी बूझति श्यामहि फेरिकरत महतारी। कहत बातहरि कछुनाहिं समुझत झूठेहि भरत हुँकारी। सूरदास प्रभु के गुण तुरतहि बिसरिगई नँदनारी१५ बातनहींसुत लायलयो। तबलोंमथिदधिजननि यशोदा माखन करिहरि हाथदियो। लैलैअधर परस करिजेंवत देखतफूल्यो मातहियो। आपुहिखात प्रशंसत आपुहि माखनरोटी बहुतदियो। जोप्रभु शिवसनकादिक दुर्लभ सुतहित बशकरि नंदत्रियो। यह सुख निरखत सूरप्रभुको धन्यधन्यफ ल सुफलजियो१६॥ रागसूहो॥ देरीमैया दोहनी दुहिहौं मैं गैया। माखन खायों बल भयोकरि नंद दुहैया। कजरी सेंदुरी धूमरी धौरी मेरीगैया। दुहिल्याऊं मैंतुरतही तू करिदैघैया। ग्वालनिकी सरदुहतहूं बूझहु बलभैया। सूर निरखि जननीहँसी तबलेति बलैया १७॥ राग बिलावल॥ बाबामोको दुहन सिखायो। तेरेमन परतीत न आवैदुहत अंगुरियन भाव बतायो। अंगुरियन भाव देखिजननी तबहँसिकै श्यामहि कंठलगायो। आठवर्ष को कुंवरकन्हाई इतनी बुद्धि कहांतेपायो। माता लै दोहनी करदीन्ही तब हरिहँसत दुहनकोधायो। सूरश्यामको दुहत देखितब जननी मनअति हर्ष बढायो १८ जननि मथतिदधि दुहतकन्हाई। सखापरस्पर कहत श्यामसों हमहूंते तुमकर चंढाई। दुहनदेहु कछु दिन अरुमोको तब करिहौ मोसम सरिआई। जबलों एकदुहोगे तबलों चारि दुहैंतो नंद दोहाई। झूठेही करत दोहाई प्रातउठि देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई। सूरश्याम कहेउ काल्हि दुहैंगे हमहुं तुमहुं मिलि होड़ लगाई १९॥

अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम॥

अथ गोदुहनलीलाको प्रसंग॥

राग बिलावल॥ उठी प्रातही राधिका दोहनी करलाई। महरि सुतासों तब कहेउ कहां चली चतुराई। खरिक दुहावन जातहों तुम्हरी सेवकाई। तुम ठकुराइनि घररहौ मोहिँ चेरीपाई। रीतीदेखी दोहनी कत खीझतधाई। काल्हिगई अवसेरके ह्वांउठे रिसाई। गाइगई सब ध्यायके प्रातहि नहिँआई। ताकारण मैं जातिहैं अतिकरतचँडाई। यहकहि जननी सों चली व्रजको समुहाई। सूरश्याम गृहद्वारहि गो

करत दुहाई। १ सुता महर वृषभान की नन्दसदनहि आई। गृहद्वारही अजिर में गौ दुहत कन्हाई। श्याम चिते मुख राधिका मन हरष बढ़ाई। राधा हरिमुख देखिकै तनसुरति भुलाई। महरिदेखि कीरतिसुता तेहिलियो बुलाई। दम्पतिको सुख देखिकै सूरज बलिजाई २ आजु राधिका भोरहीं यशुमतिके आई। महरिमुदित हँसियों कहेउ मथुभान दुहाई। आयसु लै ठाढ़ी भई करनेति सुहाई। रीती माट बिलोवही चित जहाँ कन्हाई। उनके मनकी कहा कहों ज्यों दृष्टि लगाई। लैयानोई वृषभसों गैया बिसराई। नैननि में यशुमति लखी दुहुँकी चतुराई। सूरदास दम्पति कथाकापै कहिजाई ३ महरि कहतिरी लाड़िलीको तोहिँमथन सिखायो। कहुँमथनी कहुंमाटहै चित कहाँ लगायो। क्यों मेरेघर आयकैतैं सबबिसरायो। मथन नहींमोहिँ आवही तुम सोंह दिवायो। तिहि कारण मैं आयकै तुवबोल रखायो। तब नन्दघरनी मथिदहेउ यहिभाँति बतायो। हँसि बोली तब राधिका कहेउअब मोहिँआयो। सूरनिरखि मुखश्याम को तहँध्यान लगायो ४ ॥ रागसूहो ॥ दुहतश्याम गैयाँ बिसराई। लैया लै पगबाँधि वृषभके दुहुनी माँगत कुंवर कन्हाई। ग्वालएक दुहनीलै दीनी दुहौ श्याम अबकरौ चँडाई। हँसत परस्पर तारीदैदै आजु कहाँ तुम रहे लुभाई। कहत सखा हरिसुनत नहींसो प्यारीसोंरहे चित अरुझाई। सूरश्याम राधातन चितवत बड़ेचतुरकी राइचतुराई ५ ॥ रागरामकली ॥ राधाढंग हैंरीतेरे। वैसेहाल मथत दधिकीन्हें हरिसनो लिखेचितेरे। तेरोमुख देखत शशिलाजै और कहौ क्योंबाचै। नयनातेरे जलजजीत हैं खंजन ते अतिनाचै। चपलाते चमकत अतिप्यारी कहा करैगी श्यामहिँ। सुनहु सूर ऐसेहि दिनखोवत काजनहीं तेरेधामहिँ ६ ॥ राग गूजरी ॥ मेरो कहेउ नाहिँ सुनति। तबहींते इकटक रहिहै कहा मनधौं गुनति। अबहींते तू करति येढंग तोहिँहै अब हौन। श्यामकोतू ऐसे ठगिलियो कछु न जानेजौन। सुताहै वृषभानकीरी बड़ो उनकोनाउ। सूरप्रभु नन्दसुवन निरखत जननि कहति सुभाउ ७ ॥ रागसूहो ॥ प्रकट प्रीति नहिँरही छिपाई। परीदृष्टि वृषभान सुताकी दोउअरुझै सो निवारि न जाई। बछराछोरि खरिकको कीन्हों आपुकान्हतन सुधि

बिसराई। नोवतवृषभ निकसि गैयागई हँसतसखा कहादुहत कन्हाई। चारेउनयन भयेसकठाहर मनहींमन दुहुरुचि उपजाई। सूरदासस्वामी रतिनागर नागरिदेखि गई नगराई ८॥ रागसारंग ॥ चितैबो छांड़िदेरी राधा। हिलिमिलिखेलि श्यामसुन्दरसों करति कामको बाधा। की बैठीरही भवन आपने ह्यांकाहेको आवै। मृगनयनी हरिको मन मोहति जबतूदेखि दुहावै। कबहुंक करते गिरति दोहनी कबहूं बिसरति नोई। कबहूं वृषभ दुहत हैं मोहन नाजानों काहेई। कौनमंत्र जानति तूप्यारी पढ़िडारति हरिगात। सूरश्यामको धेनुदुहनदे कहतियशोदा मात ९॥ रागधनाश्री ॥ धेनुदुहनदे मेरे श्यामहिं। जौआवै सहस रूपसों बनिआवति बेकामहिं। सूधेआय श्याम सँगखेलौ बोलौबैठे धामहिं। ऐसेढंग मोहिंनहिंभावै लेउ न ताकेनामहिं। घरअपने तूजाहि राधिका कहति महरि मनतामहिं। सूरआय तू करति अचगरी कोबकि है निशियामहिं १०॥ रागजैतश्री ॥ बारबारतू जिनिह्यां आवै। मैं कहा करौं सुतहिनहिं बरजति घरतेमोहिं बुलावै। मोसोंकहत तोहिं बिनु देखे रहत न मेरोप्रान। छोहलगत मोको सुनि बाणी महरि तुम्हारी आन। मुहपावति तबहींलों आवति औरें लावति मोहिं। सूरसमुझि यशुमति उनलाई हँसति कहति मैं तोहिं ११॥ राग गौरी ॥ हँसतकहेउ मैं तोसों प्यारी। मनमें कछू बिलगु जिनिमाने मैंतेरी महतारी। बहुतेद्योस आज तूआई राधे मेरेधाम। महरिबड़ी मैं सुघर सुनी है कछु सिखवो गृहकाम। मैयाजब मोहिंटहल कहतिकछु खीझत तब बाबा वृषभान। सूर महरिसों कहति राधिका मानों अतिहि अजान १२॥ राग रामकली ॥ दूधदोहनी लैरीमैया। दाऊदेरत सुनि मैंआऊँ तबलौंकरि बिधि धैया। मुरली मुकुट पीतांबर दे मोहिं लै आई महतारी। मुकुट धरेउशिर कटिपीतांबर मुरलीकर लियेधारी। राधाराधा कहिमुरली में खरिकहि लई बुलाई। सूरदासप्रभु चतुरशिरोमणि ऐसीबुद्धि उपजाई १३ कुँवरिकहेउ मैंजाति महरिघर। प्रातहिआई खरिकदुहावन कहति दोहनी लैकर। तब खरिकहि कोउ ग्वालगये नहिं तिहि कारण ब्रजआई। जो देखौंतो अजिरहि बैठे गैयादुहत कन्हाई। तनक दोहनी तनक दुहत मोहिं देखत अति रुचि लागी। तनक राधिका

तनक सूर प्रभु देखि महरि अनुरागी १४ ॥ राग गुर्जरी ॥ जाघर प्यारी आवत रहियो। महरिहमारी बातचलावत मिलन हमारो कहियो। एक दिवस मैंगई यमुनतट जहँउनि देखीआई। मोकोदेखि बहुत सुख पायो मिलिअंकम लपटाई। यहसुनिकै चली कुंवरि राधिका मनमें हर्ष अपार। सूरदास प्रभु करी सेनगति मोहन नन्दकुमार १५ सैन दै प्यारी लईबुलाई। खेलनके मिस करिके निकसे खरिकहि गये कन्हाई। यशुमतिसों कहि प्यारीनिकसी घरकोनाम सुनाई। करदोहनी लिये तहँआई जहँ हलधरको भाई। तहांमिली सबसङ्ग सहेली कुंवरि कहां तू आई। प्रातहि धेनुदुहावन आई अहिरनहीं तहँपाई। तबहिं गई मैं व्रज उतावली ल्याई ग्वाल बुलाई। सूरश्याम दुहिदेन कहेउसुनि राधागइ मुरझाई १६ ॥ राग धनाश्री ॥ धेनुदुहावन श्यामबुलाई। श्रवण सुनत तहँगई राधिका मनहरिलियो कन्हाई। सखी सङ्ग की कहति परस्पर कहँयह प्रीतिलगाई। कहां वृषभान पराये व्रजमें कहां दुहावन आई। मुखदेखत हरिको चकृतभइ तनकी सुधिबिसराई। सूरदास प्रभुके रसबशभई कामकरी कठिनाई १७ ॥ राग गुर्जरी ॥ गांवबसत ये ते द्योसनमें आजु मैं देखे। जेदिनगये बिन व्रजनाथहि तेई वृथाकरि लेखे। कहिये जो कछुहोय सयानी कहिबेको अनुमाने। सुन्दरश्याम निकाईको सुख मैं नाहीं येजाने। तबते रूप ठगौरी लागी युगसमान पल बितवति। तजि कुललाज सूर प्रभुके फिरि फिरि मुखतन चितवति १८ ॥ राग देवगन्धार ॥ मोहनकरते दोहनिलीन्ही गोपद बछराजोरे। हाथधेनुथन बदनबियातन क्षीरछांछि छलछोरे। आनन रही ललित पयछींटें छाजतछबि तरातोरे। मानहुँ निकसि कलंक कलानिधि दुग्ध सिंधु मथिखोरे। दे घूंघुटपट ओटनीलहँसि कुंवर मुदित मुखमोरे। मनहुँ शरदशशिको मिलिदामिनि घेरिलियो घनघोरे। यहिविधि रहसत बिलसति दम्पतिहेत हिये नहिंथोरे। सूरउमँगि आनन्द सुधानिधि मनो बिलावल फोरे १९ ॥ राग रामकली ॥ हरिसों धेनु दुहावत प्यारी। करत मनोरथ पूरणमन वृषभान महर की बारी। दूधधार मुख पर छबिलागत सो उपमा अति भारी। मानो चन्द कलंकहि धावत जहँ तहँ बुंदसुधारी। हावभाव रसमगनहैं दोऊ छबि निरखति ललितारी।

गोदोहन सुख करत सूरप्रभु तीनहुँ भुवन कहारी २० ॥ रागसूहो ॥ धेनु दुहत अतिही रतिबाढ़ी। एक धार दोहनि पहुँचावति एक धार जहँ प्यारीठाढ़ी। मोहन करतेधार चलतपय मोहनमुख अतिही छबिगाढ़ी। मनों जलधर जलधार वृष्टिलघु पुनि पुनि प्रेमचन्द्र पर चाढ़ी। सखी सङ्गकी निरखत यहछबि भईंब्याकुल मनमथकी जाढ़ी। सूरदासप्रभु के बशभईं सबभवन काजते भईंउचाढ़ी २१ ॥ राग बिलावल ॥ दुहिदीनो राधाकी गैयां। दुहनी नहींदेत करतेहरि हाहाकरति परतिहैपैयां। ज्यों ज्यों प्यारी हाहाबोलति त्यों त्यों हँसत कन्हैया। बहुरि करो प्यारी तुम हाहा देहों नन्ददुहैया। तबदीनी प्यारीकर दोहनि हाहा बहुरि करैया। सूरश्यामरस हावभावकर दीनीकुँवरि पठैया २२ चलन चहत पगचलै न घरको। छांड़त बनत नहीं कैसेहु मोहनसुन्दरबरको। अन्तरनेक करों नहिँ कबहूँ सकुचतहों पुरनरको। कछुदिन जैसे तैसे खोऊँ दूरि करों पुनि डरको। मनमें यह बिचार करि सुन्दरि चली आपने पुरको। सूरदासप्रभु कहेउ जाउघर घातकरेउ नखउरको २३ गिरदोहनी चली लेप्यारी। फिरि चितवति हरिसों निरखति मुख मोहन मोहनी डारी। ब्याकुलभई गईसखियनलों ब्रजको गये कन्हाई। और अहिरसब कहां तुम्हारे हरिसों धेनुदुहाई। यहसुनिके चकृतभइ प्यारी धरणिपरी मुरझाई। सूरदासप्रभु तब सखियनउर भरि करि कुँवरि उठाई २४ ॥

राग रामकली ॥ कोंहो कुंवरि गिरी मुरझाई। यह बाणी कहि सखियन आगे मोको कारेखाई। चलीलिवाय सुता वृषभानहि घरहीं तन समुहाई। डारि दियो भरिदूध दुहनियां अबहीं नीके आई। यह कारोसुत नन्दमहरको सबहम फूकलगाई। सूरसखिन मुख सुनी यह बाणी तब यहबात सुनाई २५ ॥ राग सारंग ॥ मोहिलई नयननिकीसैन। श्रवण सुनत सुधि बिसरी सबहीं लुब्धीमोहन सुखकेबैन। आवतहुते कुमार खरिकते तब अनुमानकियो सखिसैन। निरखत अङ्गअधिक रुचि उपजी नखशिख सुन्दर ताको ऐन। मृदुमुसकानि हरेउ मनमोहन तबते क्षण न रहत चितचैन। सूरश्याम यह बचन सुनायो मेरी धेनुकही दुहिदेन २६ ॥ राग धनाश्री ॥ सखियनि मिलि राधाघर ल्याईं।

देखहु महरि सुता अपनीको कहुँ अहिकारे खाई। हम आगेआवति यहपाछे धरणिपरी भहराई। गिरतेगई दोहनी धरिके आपुरही मुरझाई। श्यामभुवङ्ग डरेउहम देखत लावहु गुणीबुलाई। रोवति जननि कंठ लपटानी सूरश्याम गुणराई २७ ॥ राग सारंग ॥ प्रातगई नीके उठिघरते। मैं बरजी कहांजातिरी प्यारी तब खीझीरिस झरते। शीतल अङ्ग स्वेदसों बूडी शोचपरेउ मनडरते। अतिहि हठी तौ कहीनहिं मानति करति आपने मनते। औरै दशा भई क्षण भीतर बोले गुणी नगरते। सूरगारुरी गुणकरि थाके मंत्र न लागत थरते २८ ॥ रागनट ॥ चलेसब गारुरी पछिताई। नेक न मंत्रलगत काहूको समुझिनेकु नहिं जाई। बात बूझति संग सखियन कहौ हमहिं बुझाय। कहा कहि राव। सुनायो तुमसबनि सों आय। महा बिषधर श्याम अहिबर देख सबहींधाय। फूंक ज्वाला हमहुँ लागी कुंवरि उर पर खाय। गिरी धरणी मुरछि तबहीं लई तुरत उठाय। सूरप्रभुको बेगि ल्यावहु बडो गारुडि राय २९ ॥ राग आसावरी ॥ नन्दसुवन गारुरी बुलावहु। कहेउ हमारो सुनत न कोऊ तुरतजाहु ब्रज अब लै आवहु। ऐसे गुणी नहीं त्रिभुवन कहुँ हमजानतिहैं नीके। आवहिँ जौतो तुरत जिवावहिँ नेकु छुवतही उठिहै जीके। देखौधौं यहबात हमारी एकहि मंत्रजिवावै। नन्दमहरको सुत सूरजप्रभु जो कैसेहु करि यहांलों आवै ३० इसी है श्याम भुवंगम कारे। मोहनमुख मुसकानि मनहुबिष जात मैरसों मारे। फुरै न मंत्रयंत्र गदनाहीं चले गुणी गुण डारे। प्रेम प्रीति बिष हृदय सुलागी डारतहैं तनुजारे। निरबिष नहींहोति कैसेहु करि बहुतगुणी पचिहारे। सूरश्याम गारुरी बिनाको जो शिरगाडूटारे ३१॥ रागधनाश्री॥ बेगिचलो प्रिय कुँवरकन्हाई। जाकारण तुमयह बन सेयो सो त्रिय मदन भुवंगम खाई। नयन शिथिल शीतल नासापुट अंगतपति कछु सुधि न रहाई। सकु सकात तनुभीजि पसीना उलटि पलटि तनु तोरि जम्हाई १ बिन देखी मूरतिको जितकित उठिदौरी जिनिजहां बताई। ताहि कछू उपचारण लागत करमीडैं सहचरि पछिताई। बार बार बूझतिहैं ऐसे कमल नयनकी सुन्दरताई। जोपै सूरजिवायो चाहततौ ताकोनेक देहु दिखाई २॥ राग सारंग ॥ तनु बिषरह्योहै छहरि। नन्द

सुवन गारुरी कहतहैं पठैं धौं महरि। गई अवसान धीर नहिं भावै नहीं चहरि। ल्याऊँ गुणीजाय गोबिंदको बाढीहै लहरि। देखिउराहि बीचहीं खाई मतिहै जहरि। सूरश्याम बिषहर कहूँखाय यहकालि चलीडहरि ३ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ वृषभानकी महरि यशुमति पुकारेउ। पठै सुतकाज मैं कहति हौं तजिलाज पांय परति महरि करति आरेउ। प्रात खरिकहि गई आय बिह्वल भई राधिका कुंवरि कहँ डस्योकारो। सुनी यहबात मैं आय अतुरात ह्यां गारुरी बड़ो है सुत तुम्हारो। यह बड़ो धर्म नन्दघरनि तुमपायहो नेक काहेन हो सुत हँकारो। सूरसुनि महरि यह कहि उठी सहजही कहा तुम कहत मम अतिहिबारो ४ ॥ राग सुघराई ॥ कान्हहिपठै महरि कहति पांयनपरि। आजु कहुँकारे काहूखायहै कासकुंवरि। सब दिन आवै जाहि जहां तहां फेरि फेरि अबहिँ खरिक गईआय जियबिसरि। निशिके उनींदे नैना तैसेरहे ढरिढरि। किधौंकहूं प्यारीकोरी टटकी लागी जननजरि। तेरोसुत गारुरीसुन्योहै बातरी महरि सूरदास प्रभु देखै जैहैरी गरल झरि ५ ॥ राग आसावरी ॥ यंत्रमंत्र कहाजाने मेरो। यह तुमजाय गुणिन को बूझहु बिनकारण तुमकरतिहौ झेरो। आठवरषको कुंवरकन्हाई कहाकहत तुमताहि। किन बहकाय दईहै तुमको पकरि लै आवहु वाहि। घरमें रहत मैं कछू नहिं जानति अतिअचरज यह बात। सूर श्याम गारुरी कहांको कहँआई बितताति ६ ॥ राग टोड़ी ॥ महरि गारुरी कुंवरकन्हाई। एक बिटनियां कारेखाई ताको श्याम तुरतही ज्याई। बोलिलेहु अपने ढोटाको तुम कहिके नेकदेहु पठाई। कुंवरि राधिका प्रातखरिक गई तहांकहां धौं कारेखाई। यह सुनि महरि मनहिं मुसुकानी अबहिंरही मेरे गृहआई। सूरश्याम राधहि कछु कारण यशुमति समुझिरही अरगाई ७॥ रागआसावरी ॥ तबहरिको टेरत नंदरानी। भलीभई सुतभयो गारुरीआजुसुनी श्रवणनि यहबानी। जननी टेरिसुनत हरिआये कहाकहतरी मैया। कीरतिमहरि बुलान आईजाहु न कुंवर कन्हैया। कहूंराधिका कारेखाई जाहु न आवहु झारि। यंत्रमंत्र कछुजानतहौ तुम सूरश्याम बनवारि ८ ॥ रागगुर्जरी ॥ मैयाएक मंत्रमोहिं आवै। बिषहर खाय मरैजो कोऊ मोमें मरण

न पावै। एकदिवस राधासंग आईखरिक बिटीनी और। तहां ताहि
बियहरनेखाई गिरीधरगिरा वहिठौर। यहबाणी वृषभान घरनिकहि
यशुमति तब पतिआई। सूरश्याम मेरो बड़ो गारुरी राधा ज्यावहु
जाई ९॥ राग सुघराई॥ यशुमति कहेउसुत जाहुकन्हाई। कुंवरिजिवाये
अतिहि भलाई। अजहुं मेरेघर खेलनआई। जातकहूँ कारेतेहि खाई।
कीरति महरि लिवावनआई। जाहु न श्यामकरो अतुराई। सूरश्याम
को चली लिवाई। गयेवृषभान पुरहि समुहाई १०॥ रागरामकली॥ रो-
वति महरि फिरति बिततानी। बारबारलै कंठ लगावति अतिहि
शिथिल भईयानी। नन्दसुवन के पांयपरीलै दौरि महरि तब आई।
व्याकुलभई लाड़िली मेरी मोहनदेहु जियाई। कछु पढ़िपढ़ि करअंग
परसकरि बिष अपनो लियोझारि। सूरदास प्रभुवड़े गारुरी शिरपर
गाडूढारि ११॥ राग देवगन्धार॥ हरिगारुरी तहां तब आये। यहबाणी
वृषभान सुतासुनि मनमन हरष बढ़ाये। धन्य धन्य आपुनको कीनों
अतिहि गईमुरझाय। तन पुलकित रोमांच प्रकटभयो आनन्द आंसु
बहाय। बिह्वलदेखि जननिभई व्याकुल अंग बिषगयो समाय। सूर-
श्याम प्यारीदोउ जानत अन्तरगतको भाय १२॥ रागरामकली॥ लोचन
दियो कुंवरि उघारि। कुंवरिदेख्यो नन्दकोतब सकुच अंग सम्हारि।
बातबूझति जननिसोंरी कहाहै यहआजु। मरतते तूबचीप्यारी करति
है कहलाजु। तबकहति मोहिँ कारेखाई कछु न रही सुधिगात। सूर
प्रभु तोहिँजाय लीनोकही कुंवरिसोंमात १३ तबजोमन्त्रकियो कुंवर
कन्हाई। बारबारलै कंठलगायो मुखचूंब्यो दियोघरहि पठाई। धन्य
कोखि वहमहरि यशोमति जहां अवतरेउ यहैसुत आई। ऐसोचरित
तुरतही कीन्होंकुंवरि हमारी भलीजिवाई। मनहीमन अनुमानकियो
यहि विधना जोरीभली बनाई। सूरदास प्रभु बड़ो गारुरी ब्रजघरघर
यहघेर चलाई १४॥ रागसुघराई॥ भले भले हो कान्ह बिषहि उतारेउ।
आजुते गारुरीनाम प्रगट्यो तिहारेउ। जननी कहति मेरो सुतबारो।
युवति कहति हमतनधों निहारो। अबको निकरै सांझसबारो। जा-
न्योब्रज बसतकैठिन ऐसोकारो। यहनिज मन्त्रजिनि हियतेंबिसारो।
बहुरिकारोकहुं करैगोपसारो। सूरदास प्रभुसबहिन प्यारो। ताहीको

डसेजाके हियेहै उतयारो१५॥ रागरामकली ॥ नीकेविषहि उतारेउ श्याम ।
वड़ोगारुरी अबहींजान्यो संगहिरहतरकहीगाम । ऐसोमन्त्र कहांतुम
पायोबहुतकियोहैकाम । मेरीअतिराधिकाजियाई टेरतयोंकहिनाम ।
हमसमुझी यहबाततुम्हारीजाहुआपने धाम । सूरश्याममनमोहननागर
हँसिबश कीनीबाम १६ हँसिबश कीनी घोषकुमारि । बिबशभई तन
कीसुधि बिसरी मन हरिलियो मुरारि । गये श्याम व्रजधाम आपने
युवति मदन शरमारि । लहरि उतारि राधिका शिरते दई तरुणिन पै-
डारि । करतविचार सुन्दरी सबमिलि अबसेवहु त्रिपुरारि । विधिवत
भांतिकरोसबपूजा नेमधर्म संयमतनुगारि । मांगहु हरिहिंदेहुपति हम
को सूरशरण बनवारि १७ ॥ रागजैतश्री ॥ भवनरवन सबही बिसरायो ।
नन्द नन्दन जबते मनहरिलियो कहति वृथायह जन्मगँवायो । जपतप
व्रज संयम साधन ते प्रकट होतपाषान । जैसेहि मिलहिं श्यामसुन्दर
बर सोकीजै नहिंआन । यहैमन्त्र दृढ़कियो सबनिमिलि याते होयसो
होई । वृथाजन्म जनमेंजिनि खोवहु यहां अपनो नहिँकोई । तब पर-
तीति सबनिके आई कीनो दृढ़बिश्वास । सूरश्यामसुन्दर पतिपावैं यह
है मेरी आस १८ ॥

अथ सूरसागरवस्त्राहरणरागकल्पद्रुम ॥

अथव्रतचरिया ॥

अन्तर उरहन प्रत्युत्तर ॥

रागआसावरी ॥ गौरीपति पूजत व्रजनारि । नेम धर्मसों रहत क्रिया
जित बहुत करति मनुहारि । यहै कहति पतिदेहु उमापति गिरिधर
नंदकुमार । शरण राखलीजै शिवशंकर तन तरसावतमार । कमल
पुहुप मातुल पत्रफल नानासुमन सुबास । महादेव पूजति मन बचकरि
सूरश्यामकी आस १ ॥ राग रामकली ॥ शिवसों बिनय करति कुमारि ।
प्रीतभीतर जोरिकर मुख स्तुति करति त्रिपुरारि । व्रत संयम करति
सुन्दरि कृशभई सुकुमारि । कहौऋतु तपकरतनीके गृहको नेह बिसा-
रि । ध्यान धरिकर जोरिलोचन मूंदि यक यक याम । बिनय अंचल
छोरि रबिसों करति हैं सबबाम । हमहिँ होहु कृपाल दिनमणि तुम

बिदित संसार। कामअति तनदहत दीजै सूरश्याम भर्त्तार २ ॥ रागनट ॥ रबिसों बिनय करति करजोरैं। प्रभुअन्तर्यामी यहजानी हमकारण जप तप जलखोरैं। प्रकटभये प्रभुजलही भीतर देखि सखिनको प्रेम। मींजत पीठि सबनि के पाछे पूरण कीनोंनेम। फिरि देखे तो कुंवर कन्हाई मींजत रुचि सों पीठि। सूर निरखि सकुचीं ब्रजयुवती परी श्यामतन डीठि ३ ॥ राग देवगन्धार ॥ अति तप देखि कृपा हरि कीनो। तनकी जरनि दूरिभइ सबकी मिलि तरुणान सुखदीनो। नवल किशोर ध्यान युवतीमन मींजत पीठ जनायो। बिबश भईं कछु सुधि न संभारति भयोसबनि मनभायो। मनमन कहति भयो तपपूरण आनँद उर न समाई। सूरदासप्रभु लाज न आवति युवतिन मांझकन्हाई ४ ॥ राग सारंग ॥ हँसत श्याम ब्रजघरको भागे। लोगनिको यहकहि सुनावति मोहन करन लंगरई लागे। हम स्नान करति जल भीतर आपुन मींजत पीठि कँन्हाई। कहाभयो जो नन्दमहर सुत हमसों करत अधिकहै ढिठाई। लरिकाईं तबहींलों नीकी चारबरष की पांच। सूर श्याम जाइ कहैं यशुमतिसों श्याम करत येनाच ५ प्रेम बिबश सब ग्वालनिभईं। उरहन देनचलीं यशुमतिको मनमोहनके रूपरईं। पुलक अङ्ग अँगिया उरदरकी हारतोरिकर आपुलई। अंचल चोरि घातनख उरकरि यह मिसकरि नँद सदनगई। यशुमति माइ कहासुत सिखयो हमको जैसे हालकिये। चोलीफारि हार गहि तोर्यो देखो उर नख घातदिये। अंचलचोरि अभूषण तोरे घँरिखरत उठि भागि गये। सूर महरि मन कहति श्यामधौं ऐसेलायक कबहिँभये ६ ॥ रागगौरी ॥ महरि श्यामको बरजति काहेन। ऐसे हालकिये हरिहमको भईन कहुँ जग आहेन। और बातयक सुनहुँ श्याम की अतिही भयेहैं ढीठ। बसन बिना अस्नान करतिहम आपुन मींजत पीठ। आपुकहति मेरोसुतबारो हियो उघारि दिखाऊँ। सुनेहुँ न कहूँ कहतिहुन आवै तुमको कहा लजाऊँ। यहबाणी युवतिन मुखसुनिके हँसिबोली नँदरानी। सूरश्याम तुमलायक नाहीं बात तुम्हारी जानी ७ बातकहौ सोलहै बहेरी। बिना भीति तुम चित्र लिखतिहौ सो कैसे निबहैरी। तुम चाहति हौ गगन तरैया मांगे कैसेहु पावहु। आवतही मैं तुमलखि लीन्ही काहे मोहिँ

कहा सुनावहु । चोरीरही छिनाछो अब भई जान्यों जानतुम्हारो । और गोपसुत तिनहिं न देखो सूरश्यामहै बारो ८ यहि अन्तर हरि आयगये । मोरमुकुट पीतांबर काछे अतिकोमल छबिअङ्गभये । जननि बुलाय बांहगहि लीनी देखहुरी मदमाती । इनहींको अपराध लगावति कहा फिरहि इतराती । सुनिहैं लोग मष्टअबहूँ रहु तुमहिँ कहां की लाज । सूरश्याम मेरो माखनभोगी तुम आवति बेकाज ९ ॥ राग देवगन्धार ॥ अबहिँ देखे नवलकिशोर । घर आवतही तनक भये हैं ऐसे तनकेचोर । कछुदिन करी दधिमाखनचोरी अब चोरत मनमोर । बिवशभई तनसुधि न संभारति कहति बात भई भोर । यह बाणी कहत लजानी समुझिभई जियबोर । सूरश्याम मुख निरखि चलींघर आनँद लोचनलोर १० ॥ राग गौरी ॥ ब्रजघर गईं गोपकुमारि । नेकहुकहुँ मननहिँ लागत कामधाम बिसारि । मात पितुको डरु न मानति बदति नाहिँन गारि । हठकरति बिरुझाति लरजिय जननि जानति बारि । प्रातही उठिचलीं सबमिलि यमुनतट सुकुमारि । सूरप्रभु व्रतदेखि इन को नाहिँ न परति संभारि ११ यमुनातट देखे नँदनन्दन । मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल पीतबसन तनचन्दन । लोचन तृपित भयेदरशनते उरकी तपनि बुझानी । प्रेममगन तबभईं ग्वालिसब तनकी दशा हिरानी । कमलनयन तटपरहैं ठाढे सकुचिमिलीं ब्रजनारी । सूरदासप्रभु अन्तर्यामी व्रजपूरवा प्रणधारी १२ ॥ रागनट ॥ बनतनहिँ नदीयमुना को ऐबो । सुन्दरश्याम घाटपर ठाढे कहौकौन बिधिजैबो । कैसेबसन उतारि धरैंहम कैसे जलहि समैबो । नन्द नँदन हमको देखहिँगे कैसे करि जु नहैबो । चोलीचीर हारलै भाजत सो कैसें करिपैबो । अंक में भरि भरि लेत सूरप्रभु कालिहन यहिपथऐबो १३ ॥ राग रामकली ॥ कैसे बनै यमुनस्नान । नन्दको सुत तीरबैठ्यो बड़ो चतुर सुजान । हारतोरैं चीरफारै नयन चलैचराय । कालिहधोखे कान्हमेरी पीठमींजो आय । कहति युवती बात सुनि सब थकित भई ब्रजनारि । सूरप्रभु को ध्यान धरिमन रविहिँ बाँहपसारि १४ ॥ राग गूजरी ॥ अति तपकरति घोषकुमारि । कृष्णपति हम तुरतपावैं कामआतुर नारि । नयनमूँदति दरश कारण श्रवण शब्द बिचारि । भुजाजोरति अंकभरि हरि ध्यान उर

अँकवारि। शरद ग्रीषम डरतिनाहीं करतितप तनुगारि। सूरप्रभु सर्बज्ञ स्वामी देखिरीझे नारि १५ ॥ राग धनाश्री ॥ ब्रजललना रबिको कर जोरें। शीतभीत नहिँकरत छहोऋतु त्रिबिधिकाल यमुनाजल खोरें। गौरीपति पूजति तपसाधति करति रहति नितनेम। भागरहित निशि जागी चतुर्दशी यशुमति सुतके प्रेम। हमको देहु कृष्णपति ईश्वर और नहीं मनआन। मनसिबचसि कर्मणा हमारे सूरश्यामको ध्यान १६ राग रामकली ॥ नीके तपकीन्हों तनुगारि। आप देखत कदम पर चढ़ि मानिलेय मुरारि। बरषभरि व्रतनेम संयम इमिकियो मोहिँ काज। कैसेहू मोहिंभजैं कोऊ मोहिँ बिरदकी लाज। धन्य ब्रज इन कियो पूरण शीततपति निवारि। काम आतुर भजी मोको नवतरुणि ब्रज नारि। कृपानाथ कृपालभये तबजानि जनकी पीर। सूरप्रभु अनुमान कीन्हों हरौं इनकेचीर १७॥ राग बिलावल ॥ बसनहरे सब कदमचढ़ाये। सूर हँसिहँसि गोपकन्यनिके अभूषण सहित चुराये। अति बिस्तार नीपतरु तामें लैलै जहांतहां लटकाये। मणि आभरणडार डारप्रति देखतछबिमनहीं अटकाये। नीलांबर पीताम्बरसारी श्वेतपीत चुनरी अरुणाये। सूरश्याम युवतिन व्रतपूरणको फलकदम डार फल लाये १८॥ रागसूहो॥ आपु कदमचढ़ि देखत श्याम। बसन अभूषण सब हरि लीने बिनाबसन जलभीतर बाम। मूँदिनयन ध्यानधरि हरिको अन्तर्यामी लीन्हीं जानि। बारबार सबितासों मांगति हमपावें पतिशारँगपाणि। जलते निकसि आय तटदेख्यो भूषणचीर तहां कछुनाहिँ। इतउत हेरि चक्रतभई सुन्दरि सकुचिगई फिरि जलही माहिँ। नाभि प्रयन्त नीरमें ठाढ़ीं थरथर अंगकँपत सुकुमारि। कोलैगयो बसन आभूषण सूरश्याम उरप्रीति बिचारि १९॥ राग रामकली ॥ आवहु निकसि घोषकुमारि। कदम परते दरशदीन्हों गिरिधरणबनवारि। नैनभरि मैं तुमहिं देखौं करौंकृपा अपार। व्रत तुम्हारो भयोपूरण कहेउ नन्दकुमार। सलिलते सबनिकसि आवहु दृथासहति तुषार। देतहू किन लेहु मोसों चीरचोली हार। बांहटेकि बिनयकरौ मोहिँ कहौ बारम्बार। सूरप्रभु कहेउ मेरेढीआगे आनिकरौ शृङ्गार २० ॥ रागबिलावल ग्वालिनि अपने चीर लेउरी। जलनिकसिं तटह्वै करजोरि शीशदेउरी।

कतहो शीत सहति व्रजसुन्दरि व्रतपूरण भेरी। मेरेकहे आनि पहिरौ पटूक्शग तनुहेम जेरी। हौं अन्तर्यामी जानतसब अतियहपैज करी। करिहौं पूरणकाम तुम्हारो शरदरात ठहेरी। सन्तत सूरसुभावहमारो कतभैकामडरेरी। कौनहु भावभजैकोउ हमको तिनततनतापहरैरी२१ राग रामकली॥ हमारो अम्बर देहुमुरारी। लेसब चीर कदम चढ़िबैठे हम जलमांझ उघारी। तटपर बिना बसन क्योंआवें लाजलगतिहै भारी। चोलीहार तुमहिंको दीनों चीरहमहिँ देहुडारी। सुन्दरश्याम कमल दललोचन हमहैं दासि तुम्हारी। जो कछु कहौ सोई हम करिहैं चरण कमलपर वारी। अंग अंग कम्पत मन मोहन बिनती सुनहु हमारी। सूरश्याम कछुछोह करोजू शीतगई तनमारी २२ हाहा कहति घोष कुमारि। शीतते तनु कँपत थर थर बसन देहु मुरारि। मनहिँमन अतिही भयो सुख देखिके गिरिधारि। पुरुष स्त्री अंगदेखैं कहत दोयन भारि। नेकनाहिं तुम छोह आवत गईं हमसब मारि। सूरप्रभु अतिही निठुरहो नन्दसुत बनवारि २३॥ राग बिलावल॥ लाज ओटयह दूरिकरौ। जोइ मैंकहौं करहुतुमसोई सकुचिबापुरेहिकहाकरौ। जलतेतीरआय करजोरेहुमैं देखहुँ तुमबिनयकरौ। पूरणब्रतअबभयोतुम्हारो गुरुजन शंकादूरिकरौ। अबअन्तरमोसों जिनराखहु बारबारहठ वृथाकरौ। सूरश्याम कहेउ चीरदेतहौं मोआगे शृङ्गार करौ २४ ॥ रागगुजरी॥ जलते निकसि तीरसब आवहु। जैसे सवितासो करजोरैं तैसेहि जोरि दिखावहु। नवबाला हम तरुण कान्ह तुम कैसो अङ्गदिखावैं। येजलहीते बांहटेकि के देखहुश्याम रिझावैं। ऐसे नहीं रीझु मैं तुमको तटही बांह उठावहु। सूरदास प्रभु कहतहार चोली बस्तर तब पावहु २५ ॥ राग रामकली॥ हमारो देहु मनोहर चीर। कांपत दशन शीततन ब्यापत हम अति यमुनातीर। मानहिँगी उपकार रावरो करहु कृपा बलवीर। अतिहि दुखित बपु परसत मोहन प्रबलप्रचण्ड समीर। हम दासी तुमनाथ हमारे बिनती करति जलभीतर ठाढ़ी। मानहुँ बिकशि कुमोदिनि शशिसों अधिक प्रीतिउरबाढ़ी। जो तुमहमहिँ नाथकरि मानहु यहमांगे हम देहु। जलते निकसि आय बाहेर ह्वै बसन आपने लेहु। करधर शीशगईं संमुखहरि मनमहँ करि आनन्द। होयकृपाल

सूरप्रभु सबविधि अम्बरदीनों नँदनन्द २६ ॥ रागजैतश्री ॥ तरुणी निकसि निकसि तटआई। पुनिपुनि कहत लेहु पटभूषण युवती श्यामबुलाई। जलते निकसिभई सबठाढी करअङ्ग उरपर दीने। बसन देहुआभूषण राखहु हाहा पुनिपुनि कीने। ऐसे कहा बतावतिहौ मोहिं बांहउठाय निहारो। करसोंकर अङ्गउर नहिँ मूंदो मेरे कहे उघारो। सूरश्याम सोइसोइ हम करिहैं जोइजोइ तुम सबकेहौ। लागेदांउ कबहूं तुमसों हम बहुरि कहां तुम जैहौ २७ ॥ रागनट ॥ सोरह सहस घोषकुमारि। देखि सबको श्यामरीझे रही भुजा पसारि। बोलिलीन्हें कदमकेतर यहां आवहु नारि। प्रकटभई सबनिको हरि कामद्वंद निवारि। बसन भूषण सबनि पहिरे हरषभई सुकुमारि। सूरप्रभु गुणभरे हैं सब ऐसे तुम बनवारि २८ दृढ ब्रतकियो मेरे हेत। धन्य धनिकहि नन्दनन्दन जाहुसबै निकेत। करौं पूरण काम तुम्हरो शरदरास रमाय। हरष भई यहसुनत गोपी शीशरहीं नवाय। सबनिको अङ्गपरश कीनोंव्रत कियो तनुगारि। सूरप्रभु सुखदियो मिलिके ब्रजचलीं सुकुमारि २९ रागसूहो ॥ व्रत पूरणकियो नन्दकुमार। युवतिनके मेटे जंजाल। जपतप करि तनजिनि अवगारो। तुमघरनी मैं स्वामि तुम्हारो। अन्तर शोच दूरि करिडारहु। मेरोकहो सत्य उरधारहु। सूरदास तुम आसपुराऊँ। अंकमभरि सबको उरलाऊं। यहसुनि सब मनहर्ष बढायो। मन मन कहेउ कृष्ण पतिपायो। जाहु सबै घरको सुकुमारी। शरदरास देहौं सुखभारी। सूरश्याम प्रकटे गिरिधारी। आनँद सहितगईं घरनारी ३० राग आसावरी ॥ शिवशंकर हमको फलदीनों। पहुपपान नानाफल मेवा षटरस अर्पण लैलै कीनों। पांयपरी युवती सब यहकहि धन्य धन्य त्रिपुरारि। तुरतहि फलपूरण हमपायो नन्दसुवन गिरिधारि। विनय करतिसबिता तुम सरिको पय अंजुलि करजोरि। सूरश्याम पतितुम ते पायो यहकहि घरहि बहोरि॥ ३१॥

अथ सूरसागर राग कल्पद्रुम॥

अथचीरहरणलीला॥

रागबिलावल ॥ नन्दनन्दन बरगिरिवरधारी। देखतरीझेघोषकुमारी।

मोरमुकुट पीताम्बर काछे । आवत देखे गायन पाछे । कोटि इन्दु छबिवदन बिराजै । निरखि अङ्गप्रति मनमथ लाजै । रविशत छबि कुण्डल नहिँ तुलै । दशन दमक्द्युति दामिनिमलै । नयन कमलमृग शावकमोहे । शुकनाशा पटतरको कोहै । अधरबिम्बफल पटतरनाहीं । विद्रुम अरु बंधूक लजाहीं । देखत रीझिरहीं व्रजनारी । देह गेहकी सुरति बिसारी । यह मनमें अनुमान कियोतव । जपतप संयम नियम करैंअब । बारबार सवितहि मनावति । नन्दनन्दन पतिदेहु सुभावति । नेमधर्म तप साधनकीजै । शिवसों मांगिकृष्ण पतिलीजै । बरष दिवस को नेम लियोसब । रुद्रहि सेवहु मनबच क्रमअब । दृढ़बिश्वास व्रतहि कोकीन्हों । गौरीपति पूजामनदीन्हों । षटदश सहसजुरीं सुकुमारी । व्रतसाधति नीकेतनु गारी । प्रातउठे यमुना जलखोरैं । शीतभीत कहुँ अँग न मोरैं । पतिके हेतनेम व्रतसाधैं । शङ्करसों यहकरि अवराधैं । कमलपत्र मालती चढावैं । नयनमूँदि यहध्यान लगावैं । हमको पति दीजै गिरिधारी । बड़देव तुमहो त्रिपुरारी । और कछूनहिंतुमसोंमाँगें । कृष्णाहेत यहकरिहपालागें । ऐसेहिकरतबहुत दिनबीते । प्रभुअन्तर्यामी मनजीते । एकदिवस आपुनआये तहां । नवतरुणीस्नान करतिजहां । बसनधरे जलतीर उतारी । आपुन जलपैठीं सुकुमारी । कृष्णाहेतस्नान करैं जहां । सबकेपाछे आपु रहेंतहां । मींजतपीठि प्रीतिअतिबाढ़ी । चक्रतभईं युवती फिरिठाढ़ी । देखेनन्दनँदनगिरिधारी । व्रतफल प्रकट भयेबनवारी । सकुचिअंग जलपैठिलुकावैं । बारबारहरि अंकमलावैं । लाज नहीं आवतहै तुमको । देखत बसनबिना सबहमको । हँसतचले तब नंदकुमार । लोगन सुनवति करतिपुकार । हारचीरलैचले पराई । हांकदियो कहि नन्ददुहाई । डारिबसनभूषण तवभागे । श्यामकरन अवढीठो लागे । भागे कहां बचोगे मोहन । पाछेआयगई तुमगोहन । तनकीसुधि सँभारि कछु नाहीं । बसन अभूषण पहिरत जाहीं । चीर फट्यो कंचुकिबँदछूटे । लेत न बनतहारलरटूटे । प्रेमसहित सुखखीझत जाहीं । झूठेहि बारबार पछिताहीं । गईं सबैचलि नन्दमहरघर । यशुमति पासगईं सब दरदर । देखहु महरि श्यामके येगुन । जैसेहाल करे सबके उन । चोली चीरहार दिखराये । आपुनभागि इतहिको आये ।

यमुनातट कोउजान न पावै। संगसखा लिये पाछेधावै। सुतको बर-
जहु हो नन्दरानी। गिरिधर करत भली नहिँ बानी। लाज लगति
यकबात सुनावति। अंचल छोरिहियो दिखरावति। यहदेखति हँसि
उठी यशोदा। कछुरिस कछु मनमें करिमोदा। आयगये तेहि समय
कन्हाई। बाँहपकरिले तुरत दिखाई। तनक तनक कर तनक अँगु-
रिया। तुमयौबन भरनवल बहुरिया। जाहुघरहि तुमकोमैं चीन्हीं।
तुम्हरी जानिजाति मैं लीन्हीं। तुमचाहत सो इहांन पैहौ। और बहुत
ब्रजभीतर लैहौ। बारबारकहिकहा सुनावति। इन बातन कछुलाज न
आवति। देखौरी येभाव कन्हाई। कहांगई तबकी तरुणाई। महरि
तुम्हहिँ कछु दूषणनाहीं। हमको देखिदेखि मुसकाहीं। उनके गुण
कैसे कोउजानै। औरकरत औरै धरिठानै। देन उरहनो तुमकोआई।
नीकी पहिरावनि हमपाई। चलींसबै युवतीघर घरको। मनमें ध्यान
करतिहैं हरिको। वरषदिवस तप पूरणकीन्हों। नंदसुवनको तनमन
दीन्हों। प्रातहोत यमुना फिरिआई। प्रथम रहेचढ़ि कदम कन्हाई।
तीरआय युवती भईठाढ़ी। उर अंतर हरिसों रतिबाढ़ी। कहेउचलौ
यमुना जलखोरैं। अंगअंग आभूषण सबछोरैं। चोलीछोरैं हारउतारैं।
करसों शिथिलकेश निरवारैं। इतउत चितवति लोगनिहारैं। कहेउ
सबन अब चीर उतारैं। बसन अभूषण धरे उतारी। जलभीतर सबगईं
कुमारी। माघशीतको भीतनमानैं। षटऋतुके गुण समकरिजानैं।
बारबार बूड़े जलमाहीं। नेकहु जलसों डरपत नाहीं। प्रातहुते यक-
याम नहाहीं। नेम धर्महीं में दिनजाहीं। इतनो कष्टकरैं सुकुमारी।
पतिकेहेत गोवर्द्धन धारी। अतितपकरत देखि गोपाल। मनमें कहेउ
धन्यब्रजबाल। हरिअंतरयामीसबजानैं। क्षणक्षणकी यहसेवामानैं।
ब्रतफल इनहिँ प्रकट दिखराऊं। बसन हरेंलै कदम चढ़ाऊं। तन
साधे तपकियो कुमारी। भजोमोहिँ कामातुर नारी। सोरहसहस गोप
सुकुमारी। सबके बसन हरे बनवारी। हरत बसन कछुबार न लागी।
जलभीतर युवती सबनांगी। भूषण बसन सबै हरिल्याये। कदमडार
जहँतहँ लटकाये। सोभोनीप वृक्ष विस्तारा। चीरहारधौं कितक ह-
जारा। सबै समाने तरुप्रति डारा। यह लीलारचि नंदकुमारा। हार-

चीर जानहुँ तरुफूल्यो। निरखिश्याम आपुनि अनुकूल्यो। नेम सहित युवती सबजाहीं। मनमन सविता विनय सुनाहीं। मूंदे नयन ध्यान उरधारे। नँदनन्दन पतिहोइँ हमारे। रविकरि विनय शिवहि मनदीन्हों। हृदयमांझ अवलोकन कीन्हों। त्रिपुर बदन त्रिपुरारि त्रिलोचन। गौरीपति पशुपति अघमोचन। गरल अशन अहिभूषण धारी। जटाधरण गंगाशिर धारी। करति विनय यहमांगत तुमसों। करहु कृपा हँसिकै आपुनसों। हमपावैं सुत यशुमतिको पति। इहैदेहु करि कृपादेवरति। नित्यनेम करिचलीं कुमारी। एकयाम तनको हिमजारी। व्रजललना कहेउ नीर जड़ाई। अति आतुर ह्वै तटको धाई। जलतें निकसि तरुणी सबआई। चीरअभूषण तहां न पाई। सकुचि गईंजल भीतरधाई। देखिहँसे तरुचढ़े कन्हाई। बारबार युवती पछिताहीं। सबके बसन अभूषण नाहीं। ऐसोकौन सबैलै भाग्यो। लेतहु ताहि विलम्ब न लाग्यो। माघतुषार युवति अकुलाहीं। यहँकहुँ नंद सुवन तौ नाहीं। हमजानति यहबात बनाई। अम्बरहरि लैगये कन्हाई। हो कहुँश्याम बिनय सुनिलीजै। अम्बरदेहु कृपाकरि दीजै। थरथर अंगकँपत सुकुमारी। देखिश्याम नहिँसके सँभारी। यहिअंतर प्रभुबचन सुनायो। व्रतकोफल दरशन सबपायो। कहाकहति मोसों व्रजबाल। माघशीत कतहोत बिहाल। अम्बर जहां बताऊं तुमको। तौ तुम कहा देहुगीहमको। तनमनअर्पण तुमहींकीनों। जो कछुहुतो सो तुमहीं दीनों। और कहा तुलेहौ हमसों। हमसांगति हैं अम्बरतुमसों। यह सुनि हँसेदयाल मुरारी। मेरो कहेउ करौ सुकुमारी। जलते निकसि सबैतट आवहु। तबहिँ भले हम अम्बर पावहु। भुजा पसारि दीनह्वै भायहु। दोउकर जोरिजोरि तुम राखहु। सुनहुँश्याम यकबात हमारी। नग्नकहूंच्धखियत नहिँनारी। यहमति आप कहाँधौं पाई। आजुसुनी यहबात नवाई। ऐसीतुम मनहींमें राखहु। यहबाणी मुखते जिनि भाषहु। हमतरुणी तुम तरुण कन्हाई। बिनाबसन क्यों देहिँ दिखाई। पुरुषजाति तुमयहका जानों। हाहायह मुखमें जिनिआनों। तौतुम पैठिरहो जलही सब। बसन अभरण नाहिँचहति अब। तबहिँ देउ जब बाहेर आवहु। बिनबाहेर आयेनहिँ पावहु। कतहोशीत स-

हति सुकुमारी। सकुचिदेहु जलही में डारी। फरेउ कदमडार फरनि तुम्हारी। अबकह लज्जा करति हमारी। लेहौआनि आपने व्रतको। मैं जानत या व्रतके फलको। नीकेव्रतकीनों तनुगारी। व्रतलायोवरिगिरिवरधारी। तुममन कामन पूरण करिहैं। रासरङ्ग रचिरति सुख भरिहैं। यहसुनिकै मनहर्ष बढ़ायो। व्रतको पूरण फलहम पायो। छांड़हु तुम यहटेव कन्हाई। नीरमांझ हमगईं जड़ाई। आभूषण आपुनहीं लैहौ। चीरकृपाकरि हमकोदैहौ। हाहालागैं पायँतुम्हारे। पापहोतहै जाड़नमारे। आजहुते हमदासि तुम्हारी। कैसेअङ्ग दिखावैं नारी। अङ्गदेखायेहि अम्बरपैहौ। नातरु ऐसेहि घोसगँवैहौ। मेरेकहे निकसि सबआवहु। थोरेहिहमको भलोमनावहु। सुहां चहीं तरुणी मुसुकानी। यह आपुन थोरोकरि जानी। जोइजोइ कहौसो तुमको सोहै। आजुतुम्हारे पटतर कोहै। हमरीपति सब तुम्हरेहाथा। तुमहिँ कहौ ऐसी व्रजनाथा। तपतनुगारि कियो जेहिकारन। सोफललयो नीपतरु डारन। आवहु निकसि लेहु पटभूषण। यहलागै हमको सब दूषण। अबअन्तर कतराखति हमसों। बारम्बार कहतहैं तुमसों। गोपिनमिलि यहबात बिचारी। अबतो टेकपरे बनवारी। चलहु न जायचीर अबलीजै। लाजछांड़ि उनको सुखदीजै। जलते निकसितीर सबआईं। बारबार हरि हर्षिबुलाईं। बैठिगईं तरुणी सकुचानी। देहु श्याम हमअतिहि लजानी। छांड़िदेहु यहबात सयानी। वैसेहि करौ कहीजोबानी। करकुच अंगढांकि भईं ठाढ़ी। बदन नवाय लाजअति बाढ़ी। देहु श्यामअम्बर अबडारी। हाहादासी सबैंतिहारी। ऐसे नहीं बसन तुम पावहु। बांहउठाय अङ्ग दिखरावहु। कहेउमानि युवतिन करजोरे। पुनिपुनि युवती करति निहोरे। धन्य धन्य कहि श्रीगोपाल। निश्चय व्रतकीन्हों व्रजबाल। आवहु निकट लेहुसब अम्बर। चोलीहार सुरङ्ग पटम्बर। निकटगईं सुनिकै यहबानी। तरुणी नग्न अङ्ग अकुलानी। भूषण बसन सबनिको दीन्हें। प्रियके कहत कृपा हरिकीन्हें। चीरअभूषण पहिरेनारी। कहेउ तबहिँ ऐसे गिरिधारी। तबहँसिबोले कृष्णमुरारी। मैंपति तुम मेरीसबप्यारी। तुमहिँहेत यह व्रज वपुधारेउ। तुमकारण बैकुंठ बिसारेउ। अबव्रतकरि तुमहिततन

गारो। मैं तुमतें कहुँहोत न न्यारो। मोहिँ कारुणा तुमअति तपसाध्यो। तनमनकरि मोंकोअवराध्यो। जाउसदन अबसबव्रजबाला। अङ्गपरसि मेटे जंजाला। युवतिन बिदादई गिरिधारी। गईं घरनि सब घोषकुमारी। वस्त्रहरण लीलाप्रभुकीन्हें। व्रजतरुणिन व्रतको फलदीन्हें। यह लीला श्रवणन सुनिभावैं। औरन सिखवैं आपुनगावैं। सूरश्याम जनके सुखदाई। दृढताई में प्रकट कन्हाई २२॥

अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम॥

अथपनिघटकीलीला॥

रागअड़ाना॥ हौंगई यमुनजल लेनमाईहो सांवरे सेमोही। सुरंगके-शरि खोरि कुसुमकीदाम अभिराम कंठकनक की दुलरी ढुलकति पीतांबर कीखोही। नान्ही नान्ही बूंदिनमें ठाढोरी बंसुरिया बजावे गावै माला करी सोठीताननै तोलाकोछबि नेकहूनजोही। सूरश्याम मुरिमुसकानि छबिरी अंखियनिमें रहीतबन जानोंहोकोही १ चटकीलोपट लटपटानों कटिबंशीबट यमुनाकेतट नागरनट। मुकुटलटक अरु भृकुटी मटकादेखें कुण्डलकी चटकसों अटकपरी दृगन लपटे आछो चरणनिकंचनलकुट। चटकीली बनमाल करटेके द्रुमडाल टेढ़े ठाढे नन्दलाल छबिछाईघटघट। सूरदासप्रभुकी बानकदेखे गोपीग्वाल टारे न टरत निपटनिकट आवैं सौधेकीलपट २॥ रागसुघराई॥ बजावैं मुरली कीं तानसुनावैं यहिविधि कान्हरिझावैं। नटवरभेष बनाये चटकसों ठाढेरहे यमुना के तीर नितवन मृगनिकट बुलावे। ऐसोको जोजाय यमुनाते जलभरि घरहि लैआवै। मोरमुकुट कुण्डल बनमाला पीतांबर फहरावै। एकअंग शोभाअवलोकत लोचनजल भरिआवै। सूरश्याम के अंगअंगप्रति कोटिकाम छबिछावै ३॥ रागपूर्वी॥ पनिघट रोंकेहि रहतकन्हाई। यमुनाजलकोउभरन न पावतदेखतही फिरिजाई। तबहिं श्याम यक बुद्धि उपाई आपुनरहे छिपाई। तट ठाढेजे सखा संगके तिनको लियो बुलाई। बैठारे ग्वालन को द्रुमतर आपुन फिरि फिरि देखत। बड़ीबारभइ कोउनआई सूरश्याम मनलेखत ४॥ रागदेवगन्धार॥ युवतीएक आवतदेखी श्याम। द्रुमकी ओट रहे हैं आपुन यमुना तट

गइबाम। जलहलोरिगागरिभरि नागरिजबहींशीश उठायो। घरको
चलीजाय तापाछे गिरतेघट ढरकायो। चतुरग्वालिकर गहेउ श्याम
को कनक लकुटियापाई। औरनिसों करिरहे अचगरी मोसों लगत
कन्हाई। गागरिलैहँसिदेत ग्वालिकर रीतोघटनहिंलैहों। सूरश्याम
ह्यां आनिदेहुभरि तबहिं लकुट करदेहों ५ ॥ रागकल्याण ॥ लकुट करकी
हों तबदेहों जबमेरोघट भरिदेहो। कहाभयो जोनन्दबड़ वृषभान आ-
नहमहूं तुमसोहैं समसरिमिलि करिकैहो। एक गांव एकठांव बास
एक तुमकोहो क्योंमैंसैहों। सूरश्याम मैं तुमनडरैहों फेरिज्वाबमैं दै-
हों ६ घटभरिदेहु लकुट तबदैहों। हमहूंबड़े महरिकीबेटी तुम कोनहीं
डरैहों। मेरीकनक लकुटियादेरी मैं भरिदेहों नीर। बिसरिगई सुधि
तादिनकी तोहिं हरेसबन के चीर। यह बाणीसुनि ग्वारि बिबशभई
तनकीसुधि बिसराई। सूरलकुट करगिरत न जानीश्याम ठगोरीलाई
७॥ रागहमीर ॥ घटभरिदियो श्यामउठाई। नेकुतनकी सुधिनताके चली
ब्रज समुहाई। श्यामसुन्दर नयन भीतर रहे आनि समाई। जहां जहां
भरि दृष्टि देखे तहांतहां कन्हाई। उतहिते एक सखीआई कहति
कहा भुलाई। सूर अबहीं हँसत आई चलीकहां गँवाई ८॥ रागटोड़ी ॥
अरीहों श्याम मोहनी घालीरी। अबहिं गई जलभरन अकेली नँदन-
न्दन दृष्टि मेरीपरे आली फिरि चितवतिउर सालीरी। कहारी कहैं
कछु कहत न बनिआवैलगी मरमकी भालीरी। सूरदासप्रभु मन हरि
लीन्हों बिबश भईहों कासों कहों यह आलीरी ९ ॥ रागधनाश्री ॥ सु-
नत बात यह सखि अतुरानी। ताहि बांहगहिघर पहुंचाई आपचली
यमुना के पानी। देखे आय तहाँ हरि नाहीं चितवति जहाँ तहां
बिततानी। जलभरि ठिठुकत चली घरहितन बार बार हरिको पछि-
तानी। ग्वालिनि बिकल देखिप्रभु प्रकटेहर्षभयो तन तपति बुझानी।
सूरदास अंकम भरिलीनों गोपी अन्तर गतिकी जानी १० ॥ रागआसावरी
मिलिहरि सुख दियोतेहि बाला। तपतिमिटिगई प्रेमछाकी भई सबै
हाला। मगनहीं डगभरति नागरी भवनगई भुलाई। जलभरन ब्रजनारि
आवति देखि ताहि बुलाई। जातिकित है डगर छांड़े कह्यो इतको
आई। सूरप्रभु के रंगराचीचितै हरि चितलाई ११ ॥ रागधनाश्री ॥ काहु

तोहिं ठगोरीलाई। बूझति सखी सुनति नहिं नेकहु तुही किधौं ठग भूरीखाई। चौंकिपरी स्वपनेजनुजागी तबबाणीकहि सखिन सुनाई। श्यामबरण यकमिल्यो ढुटौना तेहिं मोको मोहनी लगाई। मैं जल भरे इतहिको आवतिआनि अचानकअंकमलाई। सूरग्वाल सखियनि के आगे बातकहहि सब लाजगँवाई १२॥ रागटोड़ी॥ आवतही यमुना भरे पानी। श्यामबरण काहूको ढोटा निरखि बदनघरगैल भुलानी। उन मोतनमें उनतन चितयो तबहींते उनहाथ बिकानी। उरधकधकी लगी तन ब्याकुल मुखसों फुरति न बानी। तब कहेउ मोहन मोहनीतू को है या ब्रजमेंही पहिंचानी। सूरदास प्रभु मोहन देखत जनु बारिद जलबूंदहिरानी १३॥ रागधनाश्री॥ नेक न मनते टरत कन्हाई। एक ऐसेहि छकिरही श्यामरस तापर यहिं यहबातसुनाई। वाको सावधानकरि पठयो चली आपु जलको अतुराई। मोर मुकुट पीतांबर काछे देख्यो कुंवर नंदकोजाई। कुण्डलझक तकत ललितकपोलन सुन्दर नयन बिशाल सोहाई। कह्यो सूरप्रभुये ढँगसीखे ठगत फिरत हो नारि पराई १४ कहा ठग्यो तुमरो ठगि लीन्हों। कौनहिं ठग्यो और कह ठगि हो औरहि के ठग तुमको चीन्हों। कहो नाम धरि कहा ठगायो सुनिराखी यहबात। ठगके लक्षण मोहिं बतावहु कैसे ठगनकेघात। ठगलक्षण हमसों सुनिये मृदु मुसकनि मन चोरत। नैन सैन दे चलत सूरप्रभु अङ्ग त्रिभङ्गकरि मोरत १५॥ रागसूहो॥ अतिहि करत तुमकान्ह अचगरी। काहूकी छीनत हो गिंडुरी काहुकी फोरत हो गगरी। भरनदेहु यमुना जल हमकोदूरिकरो बातेंय लंगरी। पैंडेचलन न पावत काऊ रोंकि रहत लरिकन लै डगरी। बाटघाट सबदेखत आवत युवती डरनि मरति हैं सिगरी। सूरश्याम तेहिगारी दीजै जो कोउ आवै तुम्हरीबगरी १६॥ रागरामकली॥ नीके देहु न मेरी गिंडुरी। लैजैहैं धरि यशुमतिआगे आवहुरी सबमिलि यकझुंडरी। काहूनाहिं डरात कन्हाई बाटघाट तुम करत अचगरी। यमुनादह इंडुरी फटकारी फोरी सब मटुकी अरु गगरी। भली करी यह कुंवर कन्हाई आजु मेटिहैं तुम्हरी लंगरी। चलीं सूरयशुमति के आगे उरहन लै तरुणी ब्रज सगरी १७॥ रागटोड़ी॥ आनि न देहु हिंडौना ढोटा इंडुरी पराई। तेरो

कोउ कहा करैगो लरिहै हमसों अहिनी माई। औरसंग की ओर गई
ते जलभरि घरिघरते फिरिआई। सूरश्यामइंडुरी दीजै न तौअशुमति
सों हमकेहैं जाई १८ ॥ रागधनाश्री ॥ आपुन चढ़े कदमपर धाई। वदन
संकोरि भौंह मोरतिहैं हांकदेतिकरि नंदुहाई। जाय कहौ मैया के
आगे लेहुमवै मिलिमोहिं बंधाई। मोको जुरि मारन जबआईं तब
दोनों गिंडुरीफटकाई। ऐसेकरि मोको तुमपायोमानों इनकीमैंकरौं
चेराई। सूरश्याम वे दिन बिसराये जब बांधेते ऊखल लाई १९ ॥ राग
आसावरी ॥ यहांई रहौ तौ बदौं कन्हाई। आपुगई यशुमतिहि सुनावन
दै गई श्यामहिं नंददुहाई। महरि मथतिदधि सदन आपने यहि अंतर
युवतीसबआई। चितैरही युवतिनको आवतकहाँ आवती भीरलगाई।
मैंजानति इनको हरि खिझई ताते सबउरहन लै धाई। सूरदास रिस-
भरी ग्वालिनी ऐसोढीठ कियोसुतमाई २० ॥ राग बिलावल ॥ सुनहुँ महरि
तेरोलाड़िलो अतिकरत अचगरी। यमुनभरन जलहमगईं तहाँरोकत
डगरी। शिरतैनीर ढरायदै फौरी सब गगरी। गिंडुरीदई फटकारिकै
हरि करतहै लंगरी। नित प्रतिऐसेहि ढंगकरैहम सों कहैधगरी। अब
बसबासनहीं बने यहतुव ब्रजनगरी। आपु गयो चढ़ि कदम कि चि-
तवत रहैंसिगरी। सूरश्यामऐसेसदा हमसों करैझगरी २१ ॥ रागरामकली
सुतकोवरजिराखहुमहरि। डगरचलननदेत काहुहि फोरिडारतढहरि।
श्यामके गुण कछु न जानति जाति हमसों गहरि। यहैलालच गाय
दशलियेबसतिहैब्रजथहरि। यमुनतटहरि देखिठाढ़े डरनिआवैबहरि।
सूरश्यामहिं नेकबरजहु करतहैं अतिचहरि २२ तुमसों कहतिसकुचति
महरि। श्यामके गुणनहीं जानतिजाति हमसों गहरि। नेकहूनहिंसु-
नत श्रवणनि करतिहैं हमचहरि। जलभरनकोउ नहींपावत रोंकिरा-
खतडहरि। अतिअचगरीकरतमोहन फटकि गुडरीदहरि। सूरप्रभुको
कहा सिखयो रिसनियुवतीझहरि २३ ॥ रागधनाश्री ॥ कहाकरों मोसों
कहोतुमहीं। जोपाऊंतो तुमहिं दिखाऊंहाहा करितबहीं। तुमहूंगुण
जानतिहौ हरिके ऊखलबांधे जबहीं। साँटियालै मारनजबलागी तबब-
रज्योमोहिंसबहीं। लरिकाईते करतअचगरी मैं जानेगुणतबहीं। सूर
श्यामके हालकरोंसो देखोगीतुम अबहीं २४ ॥ रागसारंग ॥ मैं जानतहौं

ढीटकन्हैया । आवनधों घरदेहु श्याम को जैसी करों सजैया । मोसें करत ढिठाईमोहन मैंवाकी हों मैया । और न काहूकोवह मानेकछु सकुचत बलभैया । अब जो जाउं कहां तेहि पाउं कासें देइ धरैया । सूरश्याम दिन दिन लंगर भयो दूरि करों लंगरैया १५ ॥ रागसूहो ॥ युवतिबोधि सबघरहि पठाई। यह अपराध मोहवकसोरी यहै कहतहीं मेरीमाई। इततेचली घरनि सबगोपी उततें आवत कुँवर कन्हाई। बीचहि भेंटभई युवतिनहरि नयननजोरत गयेलजाई। जाहुकान्ह महतारी टेरतिबहुत बड़ाई करिहम आई। सूरश्याम मुखनिरखि सिहारी मैं कैहीं जननी समुझाई २६ ॥ रागनट ॥ सकुचतगये घरको श्याम। डारहीते निरखिदेख्यो जननि लागी काम। यहैबाणी कहत मुखतेकहां गयोकन्हाई। आइठाढे जननिपाछेसुनतहैंचितलाई। जलभरनयुवती न पावैं घाटरोंकत जाय। सूरसबकी फोरिगागरि श्यामगयो पराय २७ यशुमति यहकहिकै रिसपावति। रोहिणिकरति रसोई भीतर कहि कहि तिनहिं सुनावति। गारीदेत बहूबेटीको वेधाईह्यां आवति। हाहा करति सबनिसों मैंहीं कैसेहुँखूंट छुडावति। जातिपांतिसों कहाअचगरी यह कहिसुतहि धरावति। सूरश्याम को सिखवतहारी मारेहु लाज न आवति२८ ॥ रागसारंग ॥ तूमोहींको मारनजानति। उनकेचरित कहा कोउजाने उनहिँकही तूमानति। कदमतीरते मोहिँबुलायो गढ़ि गढ़ि बात बनावति। मटकतगिरि गागरि शिरते अब ऐसी बुद्धिहि ठानति। फिरि चितईतू कहांरहेउ कहि मैं नहिँ तोको जानति। सूर सुतहि देखतही रिसगइ मुखचूंबति उरआनति २९ झूठेहि सुतहिलगावति खोरि। मैं जानति उनके ढंगनिकी बातैंमिलवत जोरि। वेयौबन मदमत सरसातीं कहमेरो तनक कन्हाई। आपुहिफोरि गागरीशिरते उरहन लीन्हेंआई। तू उनके ढंगजात कहतिहै वे पापिनि सबनारि। सूरश्याम तूकहेउमानि अबहैं सबढीठ गँवारि ३१ ॥ रागअड़ानो ॥ मोहन बालगोबिन्दा माई मेरोकहा जानेचोरि। उरहनलै युवती सब आवति झूठीबतियां जोरि। कोऊ कहति गिंडुरी मेरीलीन्हीं कोउ कहति गागरीगयेफोरि। कोऊ चोलीहार बतावति कान्हहु हयेभोरि। अब आवै जो उरहनलैकै तौ पठऊं मुहँमोरि। सूरकहा मेरो तनककन्हैया

आपुन यौवनजोरि ३१ ॥ रागकान्हरो ॥ ब्रज घरघर यहबात चलावत। यशुमति कोसुत करत अचगरी यमुनाजलकोउ भरननपावत। श्याम वरण नटवर वपुकाछे मुरलीराग मलार बजावत। कुण्डल छविरवि किरणिहुंते द्युति मुकुटइन्द्र धनुते सोभावत। मानत काहुन करतअचगरी गागरिधरि जलभुइँ ढरकावत। सूरश्यामको मात पितादोउ येहढँग आपुनहिं पढावत३२ ॥ रागगौरी ॥ करतअचगरी नन्दमहरको। सखालिये यमुनातटबैठो निबहतनहिँ सबलोग डगरको। कोउखीजो कोऊकिन बरजौ युवतिनके मनध्यान। मन क्रमबचन श्यामबरततहैं और न दूजोज्ञान। सुरतरु कामधेनु सुखत्यागो ब्रजयुवतिन के हेत। सूरभजे जिहिभाव कृष्णको ताकोसोइ फलदेत ३३ यमुनाजल कोउभरन न पावै। आपुन बैठ्यो कदमडारिचढि गारी देदै सबन बुलावै काहुकी गगरी गहिकै फोरत काहूशिरते नीरढरावै। काहूसों करि प्रीति मिलतुहै नयन सैनदै चितहि चुरावै। बरबशही अंकवार भरत धरि काहूसों अपनो मनलावै। सूरश्याम अतिकरत अचगरी कैसेहु काहू हाथ न आवै ३४ ॥ रागधनाश्री ॥ ब्रजखैंड़े कोउ चलन न पावत। ग्वालसखा सबलीन्हें डोलत देदैहांक जहांतहँ धावत। काहूकी गिंडरी फटकारत काहूकी गगरी ढरकावत। काहू को गारीदे भाजत काहूकोउढि अंक मिलावत। काहूनहिँ मानत ब्रजभीतर नंदमहरको कुंवर कहावत। सूरश्याम नटवर बपुकाछे यमुनाके तट मुरलि बजावत ३५ ॥ रागटोड़ी ॥ गोकुलके ग्वैंडेयक सांवरोसो ढोटामाई आंखिन के पैंडेपैठि जीकेपैंड़े परेउ है। कलनपरति क्षण गृहभयो समबनतन मन धन प्राण सर्बसुख हरेउ है। भवन न भावै माई अंगन न रहेउजाय करौं हायहाय देखो जैसेहाल करेउहै। सूरदासप्रभु नीकेगावत मधुर सुर मानहुंमुरलि मैं पीयूषरस भरेउहै ३६ ॥ रागगौरी ॥ राधासखिनलई बुलाय। चलहु यमुना जलहिजैये चलींसब सुखपाय। सबनि मिलियक कलश लीन्हों तुरत पहुंचींजाय। तहां देख्यो श्यामसुन्दरकुंवरि मनहरयाय। नंदनंदनदेखिरीझैं चितैरहे चितलाय। सूरप्रभुकीप्रिया राधा भरतिजल मुसुकाय ३७ घरहिचलीं यमुनाजलभरिकै। सखिन बीच नागरीबिराजति भईप्रीति उरहरिकै। मंदमंद गतिचलत अधिक

छबि अञ्चल रहेउफहरिकै। मोहनको मोहनीलगाई संगहिचलेउगारि
कै। बेनीकीछबिकहतनआवै रहीनितम्बनिढरिकै। सूरश्यामप्यारी
केबशभयेरोमरोम रसभरिकै ३८॥ रागजैतश्री ॥ गागरि नागरि लिये
पनिघटतेचलिआवै। ग्रीवडोलत लोचनलोलत हरिके चितहि चुरावै।
ठटकतिचलै मटकिमुंहमोरै बंकटभौंहचलावै। मनहुंकामसेनाअङ्गशोभा
अञ्चलध्वज फहरावै। गतिगयंदकुच कुंभकिंकिणी मनहुंघंटझहनावै।
मोतिनहार जलाजलमानों खुभीनदंत झलकावै। मानहुंचन्द महावत
मुखको अंकुशाकर बेशरिको लावै। रोमावली सुंडितिरनीलो नाभिस-
रोवरआवै। पगजेहरि जंजीरनि जकरेउ यहउपमा कछुपावै। घटजल
झलकि कपोलन कणी मानहुँमदहि चुवावै। बेणीडुलति दुहुनके तब
बिच मानों पूंछ हलावै। गज सिरदार सूरको स्वामी देखि देखि सुख
पावै ३९ गागरिनागरि जलभरि घरलीन्हें आवै। सखियन बीचध-
रेउ घटशिरपर तापर नयन चलावै। डुलतिग्रीव लटकति नकबेशरि
मन्दमन्द गतिआवै। भृकुटीधनुष कटाक्ष बाणमनों पुनिपुनि हरिहि
लगावै। जाको निरखि अनङ्ग अनङ्गत ताहि अनङ्ग चढ़ावै। सूरश्याम
प्यारीछबि निरखत आपुहि धन्य कहावै ४० सखियनि बीचनागरी
आवै। छबि निरखत रीझैनंदनन्दन प्यारीमनहिँ रिझावै। कबहुँक
आगे कबहुँकपाछे नानाभाव बतावै। राधा यह अनुमान कियो हरि
मेरे चितहि चुरावै। आगेजाय कनक लकुटीलै पंथ सँवारि बतावै।
निरखत जहां छांहप्यारीकी तहँलै छांह छुवावै। छबि निरखत तनु
वारि आपनों नागरि जियहिजनावै। ओढ़िओढ़नियां चलन देखा-
वत यहिमिस निकटहि आवै। बारबार शिरपर कर धरिधरि अति
अधीन ह्वैजावै। सूरश्याम ऐसे भावनिसों राधामनहिँ रिझावै ४१॥
राग सारंग ॥ लगलागन नहिँपावत श्याम। तब यकभाव कियेकछु ऐसो
प्यारीतब उपजायो काम। मिसकरि निकट आय मुखहेरेउ पीतांबर
डारेउ शिरवारि। यह छलकरि मनहरेउ कन्हाई कामबिबश कीनीं
सुकुमारि। पुलक अंग अँगिया दरकानी उर आनँद अंचल फहरात।
गागरितकि कांकरीमारे उचटि उचटि लागत प्रियगात। मोहनमन
मोहनी लगाई अखियनसंग पहुँची घरजाय। सूरदास प्रभुसों मन अटक्यो

देहगेहकी सुधि बिसराय ४२ ॥ राग नट ॥ यमुनातिरि सखी यमुनबेहारि। ताहिसब मिलि कहति आवहु काहू कहति निहारि। श्याम देति न हमहिँ नागरि रही बदन निहारि। दगिरही मन कहा सोचति काहू लियो कछुचोरि। भुजावारि करिरहेउ चलहि न आवै अबहीं खोरि। सूरप्रभुके चरित सखियन कहति लोचनिढोरि ४३ ॥ राग मलार ॥ मेरी गैलन छांड़ो सांवरो मैं क्योंकरि पनिघट जाउँरी। यहि सकुचनि डर-पतिरहों मोहिँबरे न कोऊ नाउँरी। जितदेखौं तित देखियेरी रसिया नन्दकुमार। इतउत नयन चुरायकै मोहिँ पलकनि करत जोहाररी। लकुटलिये आगे चलेहो पंथसँवारत जाय। मोहिँ निहोरो लायकैयह फिरि चितवै मुसुकायरी। यमुनाजलभरि गागरी लैसिर चलोउचाय। सो कंचुकि अँचरा उचै मेरो हियरा तकि ललचायरी। गागरि मारै कांकरिसों लागैमेरे गात। गैलमांझ ठाढ़ोरहै मोहिँ पंकुत आवतजात री। हौंसकुचनि बोलौंनहीं लोककाजकी शंक। मोतनकौं सैहरि चलै वहताहि भरत है अंकरी। निकट आय मुख निरखिकै चितवै बहुरि निहारि। अबढँग ओढ़ोओढ़नी पीतांबर मोपर वाररी। जबकहुँ लग लागेनहीं तब वाको ज्यों अकुलाय। तबहठि मेरी छांह सों वह राखै छांह छुवायरी। कोजानै कित होतहैरी घरन गुरुजनसोर। मेरोज्यों गांठी बँध्यो वा पीतांबर को छोररी। अबलों सकुच अटक रही अब प्रकटकरौं अनुराग। हिलिमिलिसे सँगखेलिहौं मानि आपनो भाग री। घरघर ब्रजबासी सबै कोउकिन कहै पुकारि। शुत्र प्रीति प्रकट करौं कुलकीकानि निवाररी। जबलगिमन मिलयोनहीं नच्योचोंप को नांच। सूरदासप्रभु मिलिरहै सबकरौ मनोरथ सांचरी ४४ ॥ राग काफी ॥ मोहनबिनु मननरहे कहा करौं माईरी। कोटिभांति करिकरि रही समुझाईरी। लोकलाज कौनकाज मनमें नहींआई। हृदयते टरत नाहिँन ऐसी मोहनी लगाई। सुन्दरबर त्रिभङ्गी नवरंगी सुखदाई। सूर दास प्रभु बिनमोसों कहेउ नेकन जाई ४५ ॥ रागसूहो ॥ नन्दको नन्दन सांवरो मेरो चितचोरे जाय। रूपअनूप दिखायकै वहऔचक मिलयो आय। मोरमुकुट श्रवणकुण्डल ओढ़नी फहराय। अधरन पर मुरली धरे मधुरतान बजाय। चन्दन की खौरिकिये काछनी बनाइ। सूरदास

प्रभु बैठे यमुनातट कन्हाइ ४६॥ राग गौरी॥ परी तबते ठगसुरि ठगौरी। देख्यो मैं यमुनातट बैठ्यो ढोटा यशुमतिकोरी। अतिसांवरो अरेउसा सांचे कीन्हें चन्दबदन खोरी। मनमथ कोटि कोटि गहि वारौं ओढ़े पीत पिछौरी। दुलरीकंठ नयन रतनारे मेंमन चितै हरेउरी। बिकट भृकुटिकी वोरकोरत्ते मनमथबाणधरेउरी। दमकतदशनकनक कुण्डल मुख मुरलीगावत गौरी। श्रवणन सुनत देहगतिभूली भईबिकल मति बौरी। नहिँ कलपरतबिना दर्शनते नयननिलागि गढ़ोरी। सूरश्याम चितटरत न नेकहुँ निशिदिनरहतलगोरी ४७॥ राग कल्याण॥युवती एक यमुनाजलको आई। निरखत अंगअंग प्रतिशोभा रीझेकुंवरकन्हाई। गोरेबदन चूनरीसारी अलकैं मुखबगराई। डारनि चारिचारि चुरी बिराजत करकंकन झलकाई। सहज शृङ्गारउठत योबनतन बिधिसे हाथबनाई। सूरश्याम आयेढिग आपुन घटभरि चलिहुमकाई ४८॥ ग्वारिघट शिरधरि चली झमकाई। श्यामअचानक लटगहि कहि- अति कहांचली अतुराई। मोहनकरि त्रियमुखकी अलकेंयह उपमा अधिकाई। मांझसमय सकुचत मानोपंकज बीचपरे अतिसमुदाई। मनहुंसुधा शशिराहु चुरावत धरेउताहि कर बरिआई। कुच परसे अङ्कमभरि लीनों दुहु मन हरष बढ़ाई। सूरश्याम मनों अमृत घटनि को देखतहे करलाई ४९ छांड़िदेहु मेरीलट मोहन। कुचपरसत पुनि पुनि सकुचत नहिंकत आईतजि गोहन। युवती आनिदेखि हैं कोऊ कहति बंककरि भौंहन। बारबार काहिबीर दोहाई तुम मानत नहिं सौंहन। इतनेहीं को सोंहदिवावत मैं आयोंमुख जोहन। सूरश्याम नागरिबश कीन्हीं बिवश चलीघर कोहन ५०॥ रागधनाश्री॥ चलीभ- वन मनहरिहर लीन्हों। पगद्वैजाति ठठुकि फिरि हेरति जिय यह कहतिकहा हरिकीन्हों। मारग भूलिगई जेहि आई आवत कोनहिँ पावति चीन्हों। रिसकरि खिझि खिझि के लट झटकति श्याम भुजनि छुटकायइन्हों। प्रेमसिंधु में मगनभई त्रियहरिके रंगभई अति लीन्हों। सूरदास प्रभुसों चित अटक्यो आवत नहिँइत उतही पतीन्हों ५१॥ रागगौरी॥ घरगुरुजनको दाससुधि जबआई। तबमारग सूझियो नयननि कछुजिय अपनेत्रिय गईलजाई। पहुँचीआय सदनज्यों त्यों

करि नेकनहीं चितटरत कन्हाई। सखीसंगकी बूझनलागीं यमुनातट अतिझेर लगाई। औरै दशा भईकछु तेरीकहति नहींहमसों समुझाई। कहाकहों कहत न बनिआवै सूरश्याम मोहनी लगाई ५२॥ रागसोरठ ॥ कैसेजल भरन मैं जाउँ। गैलमेरी परेउ सखीरी कान्ह जाको नाउं। घरहिते निकसत बनतनहिँ लोकलाज लजाउँ। तन इहाँमनजायअटक्यो नंदनन्दनठाउं। जो रहौंघरबैठिकै तौ रहेउनाहिंनजाय। सीखतैसी देहुतुमहीं करौंकहा उपाय। जातबाहिरबनतनाहींघर न नेकसोहाय। मोहनी मोहनलगाईकहतिसखिनसुनाय। लाजकानिमर्य्याद जियलों करतिहौं यहशोच। जाहिबिनतन प्राणछांडै कौनविधि यहपोच। मनहिं यहपरतीत आनोदूरिकरिहौंशोच। सूरप्रभुहिलिमिलिरहौंगी लाज डारौं मोच ५३॥ रागगौरी ॥ सखी वा यमुना के तट। हौं जल भरतिअकेली पनिघट गहीश्याम मेरीलट। लैगगरी शिरसारग डगरी उनपहिरेपीरेपट। देखतरूप अधिकरुचि उपजीका छबिबर्नौंकिशा रट। फूलेएक ग्वालिनिवेः भेंटतज्योंरशा जीतेफिरैं महाभट। सूरलहेउ गोपाल अलिंगन सुफल कियो कञ्चन घट ५४ ॥ रागआसावरी ॥ कहा कहौं सखिकहत बनेनहिँ नंदनंदन मेरोमन जुहरेउ। मातपिता पतिबंधु सकुचतजि मगनभई नहिँसिंधुतरेउ। अरुण अधर युगनयन रुचिर शर मदन मुरितमन संग लरेउ। देहदशा कुलकानिलाज रजसहज सुभाव रहेउ सुधरेउ। आनंद कंदचंद सुखनिशिदिन अवलोकत यह असल परेउ। सूरदास प्रभुसों मेरी गतिजनु लुब्धक करमीन चरेउ ५५॥ ॥ रागनट ॥ मेरोहरि नागरसों मनमान्यों। मनमोहेउ सुन्दरबरनायक भलीभई जगजान्यों। बिसरीदेह गेहसुधि बिसरी बिसरिगई कुलकी कान्यों। सूरआशपूरे या मनकी तबभावै भोजनपान्यों॥ ५६ ॥ राग-काफी ॥ मोहिँ साँवरे सजनबिन गृहबन कछु न सोहाय। यमुना भरन जल मैं गईतहांश्याम मोहनीलाय। ओढ़ेपीरो पामरी पहिरे लाल-निचोल। भौहैंकाट कटीलियां मोहिँमोल लयोबिनुमोल। मोर मुकुट शिर राजत हो अधरधरे मुरलीबैन। हरिकी मूरति माधुरी तातेलागि रहेदोउनैन। मदनमूरति के बशभई अबभलौ बुरौकहौ कोइ। सूरदास प्रभुकोमिलि करिमन एकैतनु दोइ ५७॥ रागरामकली ॥ मेरेजिय ऐसी

आनि बनिबिना गोपाल और नहिँ जानो सुनिमोसों सजनी। कहां कांच संग्रहके कीन्हेडारि अमोलमनी। बिषसुमेर कछुकाम न आवै अमृत एककनी। मनबच क्रममोहिँ और न भावैअब मेरेश्यामधनी। सूरदास स्वामीके कारणतजो जाति अपनी ५८॥ रागगुजरी॥ अबदृढ़ करिवारि यहबानि। कहाकीजै सो न काजिहि होय जियकी हानि। लोकलज्जा काचकिरचा श्यामकंचन खानि। कौनलीजै कौनतजिये सखितुम कहोजानि। मोहिंतो नहिँऔर सूझत बिना मृदुमुसुकानि। रंगकापै होतन्यारे हरद चूनेसानि। यहै करिहौं और तजिहौं परी ऐसीआनि। सूरप्रभु पतिबत्त राख्यो मेटिकैकुलकानि ५९॥ रागबिनावल॥ भक्तनिके सुखदायक श्याम। स्त्रीपुरुष नहींकछुनाम। संकट में जिनि जहांपुकारेउ। तहां प्रकटितिनको उद्धारेउ। सुखभीतर जिनसुमिरणा कीन्हों। तिनको दरशतहां हरि दीन्हों। दुखसुखमें जे हरिको ध्यावैं। तिनकोनेक न हरिबिसरावैं। चितदैभजै कौनहूँभाउ। ताकोतैसेइत्रिभुवनराउ। कामातुरगोपी हरिध्यायो। मन बच क्रम हरिसोंमन लायो। यटऋतु तपकीनों तनुगारी। होहिँहमारे पति गिरिधारी। अन्तर्यामी जानतमनकी। प्रीतिपुरातन सालीतबकी। बसनहरे गोपिनसुखदीनों। सुखदै सबकोदुखहरिलीनों। युवतिनके यहध्यान सदाई। नेकु न अन्तर होय कन्हाई। घाटबाट यमुना तट रोंकै। मारगचलत जहांतहँ टोंकै। काहूकी गागरि धरिफोरै। काहूसों हँसिबदन संकोरै। काहूको अङ्कम भरि भेंटै। काम बिथा तरुणिनकी मेटै। ब्रह्माकीट आदिके स्वामी। प्रभुहैंनिर्लोभीनिःकामी। भावबश्यसंगहिसँगडोलैं। खेलैंहँसैंतिननिसों बोलैं। ब्रजयुवती नहिँनेकबिसारैं। भवनकाजचितहरिसोंवारैं। गोरस लैनिकरी ब्रजबाला। तहांतिनहिँ देखेगोपाला। अङ्ग२ सजिशृङ्गारबर कामिनि। चलीमनहुँ यूथनिजुरिदामिनि। कटिकिंकिणनूपुरबिछिया धुनि। मनहुँमदनके गजघंटाधुनि। जातिमाट सटुकीशिरधरिकै। सुख सुख गानकरनि गुणहरिकै। चन्द्रबदनि तनअतिसुकुमारी। अपनेमनसा कृष्णपियारी। देखिसबनि रीझेबनवारी। तब मनमें यकबुद्धि बिचारी। अब दधिदान रचौं यकलीला। युवतिनसंग करौं यक क्रीला। सूरश्याम संग सखिन बुलायो। यह लीला कहिसुख उपजायो ६०॥

अथ सूरसागर राग कल्पद्रुम ॥

अथ राग मार्गरोद्भव दानलीला के कीर्त्तन ॥

राग बिलावल ॥ सुनतहँसी सुखहोय दानदहीको लयो ॥ ध्रुव ॥ प्रात होत उठि कान्हटेरि सवसखन बुलायो। तेइत्तेइ लीन्हेंसाथ मिलें जे प्रकृति नवायो। डगरिगये अनजानही गहेउजाय बनघाट। पेंडपेड़ तरु के लगेहो करे ठगनिको ठाट। इतहिग्वाल बनजुरे चलीं सबसखी स- हेली। शिरनिलिये दधिदूध सबैयोवन अलबेली। हँसतपरस्परआपु में चलीजाहिँ जियमोर। जबहिँ आनि घातहि परी तब छेंकि लिये चहुँओर। देखि अचानक भीरभई सबचकृत किशोरी। गईउतहिको मुरकिदई घूंघट मुखमोरी। शंकितह्वै ठाढ़ीभई हाथपांव नहिँडोल। मनहुँ चित्रकीसी लिखी हैं मुखहि न आवै बोल। तब उठि बोलेग्वाल डरो जिनि कान्ह दुहाई। ठगतस्कर कोउनाहिँ दान यदुपति सुखदाई। आवतजात नितहिरहो श्यामराज भे नाहिँ। जो कछु लागै दान को तुम घाटिदेहु तेहिमाहिँ। तब हँसि बोलीग्वालि नाम जब कान्ह सु- नायो। चोरीभरेउ न पेट आनि अबदान लगायो। तब उलटी पलटीफवी जब शिशुरहे कन्हाय। अब कछु वह धोखेकरौ तौ क्षणकमाहिंपति जाय। तबउठि बोलेकान्ह रहो तुम पोचि सदाई। महर महरि सुख पाय शंकतजि करहुढिठाई। अबवह धोखो मेटिकै छांड़ि देहु अभि- मान। करिलेखो अबदान कोहो दियहि पायहोजान। तबहँसि बोली ग्वालि डरनि तुमतजो ढिठाय। बहुतै नन्दनि काजभयो तुवतप अधि- काय। कालिहहि घरघर डोलते खातेदहेउ चुराय। रातिहिकछुसपनो भयो हैं प्रातभई ठकुराय। भलीकही नहिंग्वालि बातकोभेदनपायो। योवनके मदमत्त बातबोलत अधिकायो। तुमसेप्रजाबसायके राखेहैं यहिपाय। तेतुमहम सरवरभई अब मिलहुछांड़िचतुराय। तबझुकि बोलीग्वालिबातकिन कहौसम्हारे। ऐसोको वहिगयोप्रजाह्वै बसे तु- म्हारे। हमहुंतुमहु नृपकंसके बसेवासयहठाउँ। देखोवैंघरजायकै हम तजे तुम्हारेगाउं। गाउँहमारे छांड़िजायबसिहौ केहिकेरे। तीनिलोकमें कौन जो अबनाहिँनबशमेरे। कंसहिको गनतीगनै जाकोहमहिँ कहा-

हु। दियेदानये बाचिहौहो नातरुनहीं निवाहु। छोटेमुँह बड़िबात कहौ किनि आप सम्हारे। तीनि लोक अरुकंस कबहिँ बशभये तुम्हारे। यहवाणी तिनसों कहौ जो कोउहोय अजान। जैसेहो जो रावरे हो हमजानति परिमान। लेखो जैहौभूलि कहूंकी बातचलावत। सुनी न कबहूं बातयहै मन आवत जावत। भूठी में लीजे दानके दामसबै पर खाय। थैलीमांगि पठाइयेहो पीताम्बर फटिजाय। काहेको सतराति बातमें सांचीभाखत। भूठीतुम सबग्वारि बातमेरी गहिनाखत। कहेउ मानि लेखौकरौदेहु हमारोदान। सौंह बबा मोहिँ नंदकीहो ऐसे देहुंन जान। नंददुहाई देत कहा तुम कंस दुहाई। काहेको अठिलात कान्ह छांडो लरिकाई। पहिलो परिपाटी चलोनईचलै क्योंआज। नृपति जानिजो पावईहो पुनिपै होय अकाज। लरिका मोसों कहति नहीं देखी लरिकाई। पयपीवत संहारि पूतना स्वर्गपठाई। अघा बका शकटा तृणा केशी सुखकरनाय। गिरिगोबर्द्धन कर धरेउ हो यह मेरी लरिकाय। सबै भली तुमकरी हमहिँ अब कहत कहांहौ। हम कोहोति अबार दहीलै जाहि तहांहौ। हँसीपलक द्वैचारिकी बीतन लागेयाम। बनमें राखी रोंकिकैहो नारिपराई श्याम। हांसी करति हो तुमहिँ भलीगई बुधि ब्रजनारी। तुम हमको हम तुमहिंदई बिन काजहि गारी। बात कहौ कछुजानिकै वृथा बढ़ावति शोर। सदा जाहु चोरटिभई हो आजुपरी फगभोर। मांगिलेहु दधि देहिं दान को नाम मिटावहु। ऐसेदेहिँ न नेक कहा हमको डरपावहु। हमहिं कहतहो चोरटी आपुभये अबसाहु। चोरीकरत बड़ेभयेहो महीछांछलै खाहु। दहीलेतहौ छीनि दान अंगनिको लेहौ। लेहौ रूप निदान दान योबनपै कैहौ। तुमसब कंचनभारलै मेरेमारगजाहु। महीदही देखरावहु हो कैसेहोत निबाहु। जाहुभलेहो कान्हदान अँगअंगको मांगत। हमरो योबनरूप आंखि इनके गड़िलागत। सबैचलीं भहरायकै मटुकीशीश उठाय। रिसकरि कसि कटि पीतपटहो ग्वारिगही हरिधाय। मटुकी लई छिडाय हारचोली बंदतोरेउ। भुजधरि भरि अंकवारि बांहगहि कै भकभोरेउ। माखन दधिलिये छीनिकै कहेउ ग्वालसब खाहु। सुख भगरति आनन्द उरहिहो थिरवतहैं घरजाहु। देखो हरिके काम

हार चोलीबंदतोरी। हमकोभरि अंकवारि बांहधरिकै झकझोरी। यशुमतिसों कहिये चलो अबप्रकटी तरुणाय। दधिमाखन सबही-लिलये हो ग्वालन दिये खवाय। जाय कहो तुम भलीबात मैया के आगे। तुमको यौवन रूपदान देहों नहिमांगे। तुमजो कहो जायके जननीनहिं पतियाय। सूरसुनहुँरी ग्वालिनीहो आवहुगी पछिताय १ रागकाफी ॥ ऐसो दान न मांगिये जेतो हमपै दियो न जाय हो। बन में प्राय अकेली युवतिन मारग रोकत धाय हो। बाटघाट औघट यमुना तट बातैंकहत बनाय। कोऊ ऐसोदान लेतहै कौनै सिखै पठाय। हम जानति तुमयों नहिँरैहो रैहो गारीखाय। जोरसचाहो सोरस नाहीं गोरस पियहु अघाय। औरनिसों लैलीजै गिरिधर तब हम देहिँ बु-लाय। सूरश्याम कत करत अचगरी हमसों कुंवर कन्हाय २॥ राग नट॥ दानहुलेहु जान काहेको कान्हदेत हो गारो। जो कोउकछेडकरै हठ याही मारग आवै दै मारी। भलीकरी दधिमाखन खायो चोली हार तोरिडारी। यौवन दानकहूं कोउमांगत यहसुनिकै अतिलाज-लिसारी। होति अबार देहु घरजान हो पैयांलाग डरति हैं भारी। हमहिँ तुमहिँ कैसोहै झगरो सूरश्यामहम ग्वारिगँवारी ३॥ रागभैरों॥ भोरहीसों कान्ह करत मोसों झगरो। औरनि छांडिपरे हठ हमसों नितप्रति कलह करत गहिडगरो। बिन बोहनी तनकनहिँ देहौं ऐ-स्यहि छीनिलेहु किनसगरो। सबकोउजात मधुपुरीबेंचन कौनदियो दिखरावहु कगरो। मुखचूंबति हँसि कंठलगावति आपुहि कछहि न लाल अचगरो। सूरसनेह ग्वारि मन अटक्यो छांडिहुदियो परतनहिँ पगरो ४॥ रागकान्हरो॥ दानलेहीं सबअंगनिको। अतिमद गलितताल फलतेगुरु इनयुगउरज उतङ्गनिको। खंजन कंज मीनमृग शावक भँवर जवर भुव भंगनिको। कुन्दकली बंधूक बिम्बफल बरताटंक तरंगनि को। कोकिल कीर कपोत किशनता हाटक हंस फलंगनिको। सूर-दासप्रभु हँसि बशकीन्हों नायक कोटि अनंगनि को ५॥ रागकाफी॥ कान्ह भलेहो भलेहो। अंगदान हमसों तुममांगत उलटी रीति चलेहौ कौन दोषकियो माखन छीनों काहेको तुम औरहिभाव मिलेहो। दानलेहु कछु और कहतहौं कोनहिँ प्रकृति मिलेहो। हारतोरेउ चीर

फारेउ बोलत छिलेहो। ऐसे हाल हमारे कीन्हें जातिहुती दहि लेहो। हमहैं तुम्हरे गाँवकोकछुयाते गहिगहिलेहो। सूरदासप्रभु औरभयेअब तुमनहेहुपहिलेहो ६॥ रागपूर्वी ॥ तुमोसों दानमाँगिकैनलैहौनंदकेलाला। ऐसीबातनि झगरो ठानति हो मारग रोंको नहिँबाला। नन्दमहरकी कानिकरतहौं छांड़िदेहु ऐसोख्याला। मेरोकह्योमानमनमोहन नीको नहीं यहैचाला। सूरदास प्रभु मनहरि लीन्हों नेक हँसत भई ग्वालि बेहाला ७ यौवनदान लेहुँगो तुमसों। जाके बल तुम बदति न काहुहि कहादुरावति हमसों। ऐसेवन तुमलिये फिरतिहो दानदेति सतराति। अतिहि गर्बते कहेउ न मोसों नितप्रति आवति जाति। कंचन कलश महारसभारे हमहुन तनक चखावहु। सूर सुनहुं कतभार मरतिहो ह-महिं न मोल दिखावहु ८॥ रागकान्हरो॥ कहाकहत तुनन्ददुटौना। सखी सुनहुंरी बातें जैसीकरत अतिहि अचभौना। बदन सकोरत भौंह मरो-रत नयननि में कछुटौना। यौबनदान कहा धौं मांगत भई कहूं नहिँ होना। हमकहैंबात सुनहुंमनमोहन काल्हिरहे तुम छौना। सूरश्याम गारीकहदीजे यहसुधिहै घरखौना ९॥ रागपूर्वी॥ ऐसे जिनिबोलो नंद के लाला। छांड़िदेहु अचरा मेरोमोको जानत और सिबाला। बार-बारमैं तुमहिँ कहतिहों परिहो बहुरि जंजाला। यौवनरूप देखि ल-लचाने अबहींते ये ख्याला। तरुणाईतन आवन दीजे कतजिय होत बिहाला। सूरश्याम उरतेकर टारहु टूटैगी मोतिनकी माला १० ॥ राग सुघराई ॥ कहागति प्रकृति परीहो कान्ह तुम्हारे धरत कहा कतराखत घेरे। अबलों नहिँ यहबात आजुकी बनमें श्याम युवति सब नेरे। स-कुचतिहैं घरघर घेराको नेकलाज नहिँ तेरे। झकझोरत बहियां अं-कसदेकुच परसतहो मेरे। अतिहि अबेरभई घरछांडे चितै हँसत मुख तन हरिहेरे सूरदास प्रभु झुकतकहाहो चेरीहैं काहूकेरे ११॥ रागटोड़ी॥ कहाकहत तुमसों मैंग्वालिनि। दानदेहु घरजाहु चली सब अतिकत होत गँवारिनि। कबहूं बात नहीं घर खेवतकबहु उठतदे गारिनि। लीन्हे फिरति रूप त्रिभुवन को ये नोखी बनिजारिनि। पलाकरति देतिनहिं नीके तुमहो बड़ीबंजारिनि। सूरदास ऐसा गथजाकेताकेबुद्धि पसारिनि १२॥ रागपुरिया कान्हरो॥ कान्हअब नागरयोहै ठानी। माँगत

दानरही को अवलौलै कछु औरैठानी। औरनि सों तुमकहा लहेउहै सो सब हमहिँ दिखावहुआनी। मांगतहौ दधिसो हमदैहैं कहाकहत यहबानी। छाँड़िदेहु अँचरा फटि जैहै तुमको हम नीके पहिँचानी। सूरश्याम तुमरतिपति नागर नागरि अतिहि सयानी १३॥ रागकान्हरो॥ लैहों दान अंग अंगको। गोरेभाल लालसेन्दुर छबि मुक्तावर शिर सुभग मंगको। नकबेशरि कुटिलातरि बनकोवारहमेल कुचयुग उतंग को। कंठ श्रीदुलरी तिलरी उरमाणिक मोतीहार अतिरंगको। बहु नगलगे जराउकी अँगिया भुजबाजूबंद बहुरंगनको। दाननलेहैं तरुणी रीझतमन कहा बहु अङ्ग अनङ्गनि को। जेहरिपग जकरेउगाढ़े मनो मंद मंदगति यह मतंगको। यौबनरूप अंगपाटम्बर सुनहु सूर सबयह प्रसंगको १४॥ रागटोड़ी॥ अरीयह ढीठकान्हर बोलि न जाने बरबश झगरो ठाने। जोइ भावत सोइ कहि डारत ऐसो निधरक नहिं कहुं देख्यो रूप यौबन अनुमाने। अङ्गअङ्गके दानलेत नहिँ घरके को पहिँचाने। हम दधिबेंचन जातिहैं मथुरा मारग रोंकिरहत गहिअंचल कंस कि आनि न माने। ऐसीबात सम्हारिकहौ हरिहमतुमकोपहिँचाने। सूरश्याम जो हमसेमांगतसो पैहौ कहुं और त्रियनपै यहबाने गाढ़बाने १५॥ रागमलार॥ पीतबसन दुहु करनोलासी ताहि कामरी लकुटि भूलिगई। गोकुल के गायनको चुरायबो छाँड़िदीन्हों नवयभूनि संग नवलनेह आयो परम बिसासी। लकुटिया भूलिगई गोरस चुरायखाय बदन दुराय राखे मनन धरत वृन्दावनको बासी। सूरश्याम त्वहिँ घरघर सबजाने यहां कोहै तिहारीदासी १६ रागमलार॥ नंदमहरके सुवन करत हो अचगरी। वेबातैं भूलिगईं बनबन धेनुचरावत फिरत निशि बासर गावत बेणुबजावत दानी भये बाहर डगरी। बातें भूलिगईं बनमें पराई नारि रोंकि राखी बनचारि जानत नहिँ देतहोकौन ऐसीलंगरी। मांगत योबनदान भलेहौ जू भलेकान्ह मानतन कंसआन कोवसिहै ब्रजनगरी। कबहुं गहत दधिमटुकि अचानक कबहुं गहतहौ अचानक गगरी। सूरश्याम जहांतहां खिझावत ओमन भावतदूरिकरो लंगराई सगरी१७॥ रागपूर्वी॥ दधिमटकी हरिछीनिलई। हारतोरिचोलीबंदतारै योबनकेबलढीठभई। ज्योंहींज्यों हमसूधे बोलैं

त्योंत्यों अति सतरायगई । बादकरति अबहीं सोंबहुरौ बारबार कहि
दई । मेरोकहेउ न मानतिमूधे तुम्हरे मनकी जानिलई । सूरसुनहु मैं कहत
अजहूँलों प्रीतिकरौ जो भईसोभई १८ तुमकबसों भयेहौजू दानिदानि
दानी । मटुकीफोरि हारगहितोरेउ इनबातनि पहिँचानी । नन्दमहर
की कानि करतहौं नतुकरती मनमानी । भूलिगई सुधिवादिनकी जब
बांधे यशुदारानी । अबलों सही तुम्हारीढीठौ तुमयह कहत डरानी ।
सूरश्याम कछु कहत न बनिहै नृपपावै कछुजानी १९ ॥ रागकाफी ॥ क-
न्हैया हारहमारो देहु । दधिलवनी घृत जोकछु चाहौ सो तुम ऐसेहि
लेहु । कहाकरौं दधिदूध तुम्हारो मोसोंनाहीं काम । योवनरूप दुराय
धरेउहै ताहिको लेत न नाम । नीके मनहूं मांगत तुमसों बैर नहीं उर
राखति । सूरसुनहुरी ग्वारिअयानी अन्तर हमसों राखति २० ॥ राग
गौरी ॥ हमको लाज न तुमहिँ कन्हाई । जो हम यहि मारग सब आई
तौतुम हमसों करत ढिठाई । हाहाकरति पायँ तुमलागति रीतोमटुकी
देहु मँगाई । काकोबदन प्रातहोदेख्यो घरतेहम कौंकतहु न आई । उ-
तहि जातिही सखीमहे री मैंहींसबको इतहि फिराई । सूरश्याम अब-
सई हमहिंसब लागी तुमहिँ भलाई २१ ॥ राग बिलावल ॥ मैं भरुहाये पां
लागतिहौं । कनककलश रसमोहिँ चखावहु जो मैं तुमसों मांगतिहौं ।
बोलीढंग तुमरहु कन्हाई सबैउठी झिझकारि । लेहु अपीय सजनिके
मुखते कितहि दिखावत गारि । नीकेदेहु हारदधि मटुकी बातकहनि
नहिँ जानत । कैहैंजाय यशोदासों प्रभु सूरअचगरी ठानत २२ हारतोरि
बिथुराय दयो । मैयापैतुम कहनचलीकत दधिमाखन सबछीनिलयो ।
रिसकरिखाय कंचुकीफारी अबतौमेरो नामभयो । कालिहनहीं यहि
मारग ऐहौ ऐसोमोसों बैरठयो । भली बात घरजाहु आजु तुम मांगत
योबनदान नयो । सूरदास सुखहीं रिसयुवतिन उरउर अन्तरकामजयो
२३ ॥ रागनट ॥ मोहिं तोहिं जानिबी नँदनन्दन जब वृन्दाबनते गोकुल
जैबो । सखिन कहत छीनिलैमेरी मटुकिया मुँहमोरिबो गारि दैबो ।
आय अधिकाईसो लैबो एकगांव एकहिसँग बसिये कैसोरी यहमग
ऐबो । कैसेहार तोरि मैं डारेउ बसतनहीं रिसकरि खैबो । युवतिनको
मुखदेखि रहतहै ललचानेकौ ऐबो । सूरश्याम दधिमाखन लीन्होंहार

नदेहीं कानिहीं बैर समुझि कहिबो २४ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहु श्याम हम अबचली यशुमतिके आगे। तौनदियो हमको अबहिं तुमकोधारलागे। यकएक करि हियुरायके मोतिन लरतोरेउ। हँसिमेटी कुच परसिके गहिअंग झंझोरेउ। चलीमहरिपै सुन्दरी उरहन लै हरिको। अबहीं बोलि बँधाइये लंगर यह लरिको। गईनन्द यशुमति जहँ भीतर। देखि महरिको कहिउठी सुतकीन्हों ईतर। माहगचलत न पाइयेरी हरिके आगे। सूरदास प्रभु ग्रासतें ब्रजतजिहमभागे २५॥ राग नट ॥ अपनेरी कुंवर कन्हाईसों माईतु कहिन। बहुतबचतिब्रजकी कानिन हँसति कहा यहांते जाहिन। ऐसो भयो कुल कौन तिहारे योवन दान लियो मोपै चाहिन। अति उत्पात कहांलौंदीजे पीपरको बनदाहिन। आन कि आन कहत नित हमसों उनके मनकी कछुजानत नाहिन। काहू विलोकिन बानसिखायो मैं अब पहिंचानति ताहिन। बूझि धौं देखि इहां कौन सयानी हरि मेरोमन चुरवायो का पाहिन। जाइनमिलो सूरके प्रभुको अरुझे मनमों अरुझाइन २६ ॥ राग सुघराई ॥ यशुमति तेरो बारो अतिहै अचगरो। दूधदही माखनलै ढारिदियो सगरो। भोरहोत नितप्रति करै अति झगरो। ग्वाल बाल संग लये जाय गहै डगरो। नितहीं नित आयघरै हमारोई सगरो। लियोदियो कछुसोउ डारिदेहु कगरो। सूरदासप्रभु सब गुणन में आगरो। और कहुँजाय रहै छांड़ि ब्रजबगरो २७ ॥ रागसूहा ॥ मैं तुम्हरे मनकी सबजानी। आपुस में इतराति फिरतहौ दोष देतिहौ श्याम को आनी। मेरोहार कहँ दशहि बरषको तुम्हरो योबन उमदानी। लाज नहीं आवति इन लंगरनि कैसेधौं कहिआवति बानी। आपुहिहारै तोरि चोलीबँद उरनखघात बनाय निसानी। कहँ कान्हाकी तनक अँगुरिया यह कहि बारबार पछितानी। देखहु जाय और काहू को हरि पर रहत सबेइ डरानी। सूरदासप्रभु मेरोनान्हो तुमतरुणी डोलत अटिलानी २८ ॥ रागबिलावल॥ जबदधि बेंचन जाहि तब मारग रोकि रहै। ग्वालिनि देखत धायरी अंचल आयगहै। ध्रुव ॥ अहो नन्दकी नागरि ऐसी क्योंदीजे। एक ठौर बसिवास सुनहु ऐसी नहिँकीजे। सुतवैसो तुमतौ खीझतिहौ कोरहैं यहिगाउँ। जैहैं ब्रजतजि अनतहीहो बहुरि सुनो नहिँ नाउँ। कहा क-

हति डरपाय कछु मेरो घरिजैहै । तुमबांधति आकाश बातझूंठी को सेहै । योवन दिनदै सबहिको हम ऐसी इतराति । झूंठे कान्हहिं दोष देहो तुमहीं ब्रजतजि जाति । हमयह झूठाकहति औरसों बूझिनदेखो । हमसों मांगतदान करत कौड़िनको लेखो । सटुकोढारेशाशले मरकट लेइ बुलाय । महाढीठ मानेनहींहो सखन सहित दधिखाय । ग्वारिनि ढीठि गँवारि कान्हमेरो अतिभोरो । तेरेगोरस बहुत भयोरी मेरेथोरो । बोलिन जानत बावरीतुम सबभई गँवारि । ऐसो कैसे हरिकरैहो कहति बढ़ावति रारि । अहो यशोदा महरि पूतकी मामीपीवै । हमहिं कहाहैहोत बहुतदिन मोहन जीवै । सुतके कर्म न जानई करै आपनी टेक । हमझूंठी सबग्वालिनीहो सांचेकान्हर एक । कह गैयनकी चली कहा अब चली जातिकी । चकृत भईमैं तुमहिं कहति अनमिलत बात की । जैसी मोसों कहतिहो सुनिकै को पतिआय । कौन प्रकृति तुम को परीहो मोहिंकहौ समुझाय । अहोयशोदा बात काल्हिकी सुनी कि नाहीं । बंशीबटकी छांहि गहीहरि मेरीबाहीं । हैं। सकुची बोली नहीं बहुसखियनकी भीर । गहिबहियां मोहिँ लैचलोहो हंससुताके तीर । रीतेमत्त गुवालिफिरत योवन मदमाती । गोरस बेचनहारि गर्ब गूजरि इतराती । अनमिलती बातैं कहति सुनिहै तेरोनाह । कहमोहन कह तू रहेहो कबहिँगही तेरीबांह । सांचीसब मैं कहति झूंठ नाहिं कहिहैं तुमसों । सुतकी राखतिकानि बिलग मानतिहो हमसों । कुंजन में क्रीडाकरै मनो वाहिको राज । कंस सकुचिनहिँ मानईहो रहतभयो शिरताज । ऐसी बातें कहति मनहुँ हरि बरष तीस को । दुसह सहेउ नहिंजाय नेक डरकरि रहिईशको । धनिधनि तुमयह कहतिहो मोको आवतिलाज । माखन मांगत रोइकै तेहि देयदेत बिनुकाज । हमजानतहैं मंत्र यंत्र सीख्यो कहुँ टोना । बनमें तरुणा कन्हाइ घरहि आवत ह्वै छौना । एकदिवस किन देखहू अंतररहो छिपाय । दशकोहैधौं तीस को हो नयननि देखहुजाय । जाहु चली घर आपु नयनभरि हमदेख्यो है । तीसबीस दशवर्ष एकयक दिन लेख्योहै । डीठि लगावतिकान्हको जरैबरैवे आंखि । धिंगरीधिंगचाचरि करैहो मोहिँ बुलावति सांखि । धींग तुम्हारेपत धींगरी हमको कीनों । सुतको हटकति नाहिं कोटि

यह गारीदीनीं। महतारीसुतदोउ बने वे मगरोंकत जाय। इनहिंकहन दुख आइये तो सबको उठति रिसाय। कहाकरो तुमबात कहूँकी कहूँ लगावति। तरुणिगन यहै सोहाय मोहिँ कैसे यहभावति। बहुत उरहना मोहिंदियो अब ऐसे जिनिदेहु। तुम तरुणी हरि तरुण नहोंहो मन अपने गनिलेहु। निरउत्तर भइ ग्वालि बहुरि कहत न कछुआयो। मन उपजी कछु लाज गुप्त हरिसों चितलायो। लीला ललित गोपाल की कहतसुनत सुखदाय। दानचरित सुखदेखिकै हो सूरदास बलिजाय२९॥
पुनः रागरामकली॥ नँदनन्दन यकबुद्धि उपाई। जे जे सखा प्रकृतके जाने ते सब लिये बुलाई। सुबल सुदामा श्रीदामा मिलि और महरसुत आये। जोकछु मंत्र हृदय हरिकीनों ग्वालन प्रकट सुनाये। ब्रजयुवती नितप्रति दधि बेंचन बन बन मथुरा जाति। राधा चन्द्रावलि ललितादिक बहु तरुणी यकभांति। कालिन्दीतट काल्हि प्रातही द्रुमचढ़ि रहोलुकाई। गोरसलै जबहीं सबआवैं मारग रोंकहुजाई। भलीबुद्धि यह रची कन्हाई सखन कहेउ सुखपाई। सूरदास प्रभु प्रातहृदयही सब मन गये जनाई ३० प्रातहि उठी गोपकुमारि। परस्पर बोलत जहाँतहँ यहसुनी बनवारि। प्रथमहीं उठि सखा आये नन्दके दरबार। आइये उठिकै कन्हाई कहेउ बारम्बार। ग्वालि टेरन सुनत यशुदा कुंवर दियो जगाय। रहे आपुन मौनसाधे उठे तब अकुलाय। मुकुट शिर कटि पीत अम्बर मुरलि लीनींहाथ। सूरप्रभु कालिन्दि तटगये सखा लीन्हें साथ ३१ भलीकरी उठि प्रातहि आये। मैंजानत सब ग्वालि उठीं जब तब तुम मोहिँ बुलाये। अब आवति ह्वैहैं दधिलीन्हें घरघरते ब्रजनारि। हँसे सबै करतारी दै दै आनँद कौतुक भारि। प्रकृति प्रकृतिके जेसब राखे संगी पांचहजार। और पदाय दिये सूरज प्रभु जेजे अतिहि कुमार ३२॥ राग बिलावल॥ हँसत सखन यह कहत कन्हाई। जाय चढ़ो तुम सघन द्रुमन पर जहँ तहँ रहो छिपाई। तबलौं बैठिरहो मुख मूंदे जबजानहुँ सबआई। कूदिपरोगे द्रुमन द्रुमनते दै दै नन्ददुहाई। चकृत होहिँ जैसे युवतीगण डरनिजाहिँ अकुलाई। बेणु विषाण मुरलि धुनि कीजे शंखशब्द घहनाई। नितप्रति जाति हमारेहि मारग यह कहियो समुझाई। सूरश्यांम माखन दधिदानी यहसुधि नाहिन पाई ३३ श्याम

सखन ऐसी समुझावत । व्रजबनिता राधा ललितादिक इनको देखि बहुत सुख पावत । कालिह जात यहि मारग देखी तब यह बुद्धिउपाई । अब आवति ह्वैहैं बनि बनि सब मोहीं सों चितलाई । तुमसों कछू दुरावत नाहीं कहत प्रकट करिबात । सुनहुसूर लोचन मेरे बिनु राधामुख अकुलात ३४ व्रजयुवती मिलि करत बिचार । चलहु आजु प्रातहि दधि बेंचन नित तुम करति अबार । तुरत चलौ अबहीं फिरि आवैं गोरस बेंचि सवार । माखन दधि घृत साजति मटुकिन मथुरा जानबिचार । षट्दश सहित शृंगार करति है अँग अँगनिरखि संवारति । सूरदास प्रभु प्रीति सबन के नेकु न हृदय बिसारति ३५ ॥ रागधनाश्री ॥ युवतीअंग शृंगार संवारति । बेणीगुंथ मांग मोतिनकी शीश फूलशिरधारति । गोरेभाल बिंदुसेंदुरपर टीकाधरेउ जराव । बदनचन्द पर रबिपर तारागण उदित सुभाव । सुभगश्रवण तरिवन मणिभूषण यहउपमा नहिंपार । मनहुकाम बिबफांद बनाये कारण नंदकुमार । नासानथ मुक्ताकी शोभा रहेउ अधर तरजाय । दाडिमकन शुकलेत बन्योंनहिँ कनक फंदरहेउ आय । दमकत दशन अरुण अधरनि तर चिबुक दिठौना भ्राजत । दुलरी अरु तिलरी बंदनतर सुभग हमेल बिबिराजत । कुच कंचुकी हारमोतिनको भुजनिबिजैठा सोहत । डारनि चुरीकरनिफुंदनावनि कंजआशअलिजोहत । क्षुद्रघंटिकाकटिलहंगारँगतनुतनु सुखहेंसारी । सूरग्वालि दधिबेंचन निकसी पग नूपुर धुनि भारी ३६ ॥ रागनट ॥ दधिबेंचन चलीं व्रजनारि । शीशधरि धरिमाट मटुकी बड़ीशोभाभारि । निकसि व्रजकैगई खौंडे हरषभई सुकुमारि । चली गावति कृष्णको गुणहृदय ध्यानविचारि । सबनिके मनजोमिलें हरिकोउ न कहतिउघारि । सूरप्रभु घट घट सुब्यापी जानिलइ बनवारि ३७ ॥ रागजैतश्री ॥ हरिदेखी युवती आवति जब । सबनि कहेउतुम जाय चढ़ौद्रुम बैठिरहौ जहँतहँ दुरिदुरि सब । चढ़े सबै द्रुमडारग्वाल गणसुनत श्याममुखबानी । श्रोखेहि श्रोखेहि रहे सबै हमश्याम भली यहजानी । नौसतसाजि शिंगार युवति सबदधि मटुकी लिये आवत । सूरश्याम छबिदेखत रीझे मनमन हर्षबढ़ावत ३८ ॥ रागधनाश्री ॥ सखा अवर संगलिये कन्हाई । आपुन निकसि गये आगेको मारग रोंक्यो

जाई। यहिअन्तर युवती सबआई बनलागयो कछुभारी। पाछे युवति रही तिनटेरति अबहिंगई तुहारी। तरुणीजुरीं एक संगभईं सब इत उत ञलीं निहारन। सूरदासप्रभु सखालिये संगठाढ़े इहे बिचारत३९ रागगौरी॥ ग्वालनि जबदेखे नंदनंदन। मोरमुकुट पीताम्बर काछेखोरि किये तन चंदन। तब यह कहेउ कहां अब जैहौ आगे कुंवरकन्हाई। यह सुनिमन आनंद बढ़ायो मुखकहे बातडराई। कोउ कोउ कहति चलोरी जैंयकाहे फिरघर जैये। कोउ कोउ कहतचलोरी आगे इनसों कहाडरैये। कोउ कोउ कहति कालिहही हमको लूटिलियो नँदलाल। सूरश्यामके ऐसेगुणाहें घरहि फिरी ब्रजबाल४०॥ रागगौरी॥ ग्वालनसें नदियो तब श्याम। कूदिकूदि तुम परहु द्रुमनि ते जातचली घरबाम। सैनजानि सबग्वाल जहाँतहँ द्रुमद्रुम डारहलाये। बेणु बिषाण शंख मुरलीधुनि सबयक शब्द बजाये। चकृतभईं तरुतरु प्रति देखत डारनि डारनि ग्वाल। कूदि कूदिसब परेधरणि में घेरिलई ब्रजबाल। नित प्रतिजाति दूधदधि बेंचन आजुपकरि हमपाई। सूरश्यामको दानदेहु तब जैहौ नंददुहाई ४१॥ राग नट॥ ग्वालिनि यह भलीनाहिँ करति। दूध दधि घृत नितहि बेंचति दान देवे डरति। प्रातही लेजात गोरस बेंचि आवति राति। कहौकैसे जानिये तुम दानमारें जाति। कालिन्दी के तटश्याम बैठे हमहिं दियो पठाय। यहकह्यो हरिदान मांगहु जाति नितहि चुराय। तुमसुता वृषभान की येबड़े नंदकुमार। सूरप्रभु को नहीं जानतदान हाटबजार ४२॥ रागकान्हरो॥ यहसुनि हँसीं सकल ब्रजनारी। आनि सुनहुरी बात सकइन सिखईहै महतारी। दधिमाखन खैबेको चाहत मांगिलेहु हमपास। सूधेबातकहोसुखपावें बांवनकहत अकास। अबसमझी हमबात तुम्हारी पढ़ेसक चटसार। सुनहु सूरयह बातकहो जिनि जानति नन्दकुमार ४३॥ रागधनाश्री॥ बात कहत ग्वालिनि सतराति। अब जानी हम भांति तुम्हारी सूधे नहीं बताति। यहै बड़ो दुख गांवबासको चोन्हे कोउ न सकाति। हरिमांगतिहैं दान आपनो कहति मांगिकिनि खाति। हाटबाट सब हमहिं उगाहत अपनो दान जगात। सूरदासको लेखोदीजै कोउन कहै पुनिबात ४४॥ रागकान्हरो॥ कौनकान्हको तुमकह मांगत। नीकेकरि सबको हमजानत बातें क-

इत अनागत। छांडिदेहु हमको जिनिरोंकहु वृथाबढावति रारि। जैहै बात दूरिलों ऐसीपरिहै बहुरिखसारि। आजुहिदान पहिरि यहँआये कहा दिखावहुछाप। सूरश्याम वैसही चलो ज्योंचलत तुम्हारोबाप। ४५ कान्हकहत दधिदान न देहो। लैहोंछीनि दूधदधि माखन देखत ही तुमपरैहो। सबदिनको भरिलेहुं आजुही तबछांड़ोगो तुमको। उघटति हौ तुमसातु पितालों नहिजानौं तुमहमको। हमजानतिहैंतुमको मोहन लैले गोद खिलाये। सूरश्याम अबभये जगाती वे दिनसब बिसराये ४६ आजहुं मांगिलेहु दधिदैहैं। दूधदही माखन जो चाहौ सहजखाहु सुखपैहैं। तुमदानी ह्वैआये हमपर यहहमको नहिंभावति। करो तहांलों निबहैजोई जाते सबसुख पावति। हमको जानदेहु दधि बेंचन पुनि कोऊ नहिंलैहो। गोरसलेत प्रातहीसबकोउसूर धरेउपुनि रैहो४७दानदिये बिनजान न पैहो। जबदेहौं ढरकाय सबगोरसतबहिं दान तुम देहो। तुमसों बहुतलेबहै मोको यहलै ताहिसुनायो। चोरी आवति बेंचिजाति गोरस सब अंहुल्यो कहँपायो। मांगति छाप कहा दिखराऊं को नहिं हमकोजानत। सूरश्याम तब कहेउ ग्वारिसोंतुम मोंको क्यों मानत४८ ॥ राग रामकली ॥ कहाहमहिं रिसकरत कन्हाई। यहरिस जायकरो मथुरापर जहांहै कंसकसाई। हम अब कहाजाय गुहरावें बसति तुम्हारे गांव। ऐसेहाल करत लोगनिके कौनरहैयाहि ठांव। अपनेही घरके तुम राजा सबको राजाकंस। सूरश्याम हम देखतबाढे तबसींखे यहगांस ४९ ॥ राग सुहो ॥ जायसबै कंसहि गोहरावहु। दधिमाखन घृत लेत छिंडाये आजुहि मोहिं बुलावहु। ऐसे को कह मोहिंबतावति पलभीतरगहिमारों। मथुरापतिहि सुनहुंगीतुमहीं जब वाके धरिकेशपछारों। बारबार दिन हमहिंबतावति अपनोदिन न बिचारो। सूर इन्द्र ब्रज तबहिंकहावत करगिरिराखि उबारो५०॥ राग गुर्जरी॥ गिरिवरधर्यो आपनेघरको। ताहीकेबल दानलेतहो रोंकि रहतहो हमको। अपनेहीमुख बडेकहावत हमहूंजानति तुमको। यह जानति पुनि गायचरावत नितप्रति जातहो बनको। मोरमुकुट मुरली पीताम्बर देखे आभूषणको। सूरकांध कामरिहू जानति हाथ लकुटियाकरको५१ ॥ राग बिलावल ॥ यहकमरी कमरीकरिजानति। जाके

जितनी बुद्धि हृदयमें सो तितनोइ अनुमानति। याकमरीके एकरोम पर वारों चीरपटम्बर। सोकमरी तुम निन्दतिगोपी तीनिलोक आडम्बर। कमरीके बल असुरसंहारे कमरिहिते सबभोग। जातिपांति कमरी सबमेरी सूर सबहि यहयोग५२ धनिधनि यह कामरीहो मोहनलाल श्यामकी। यहैओढ़ि बनकोजातरहे सेजकरतहो तुम मेहबंदनिवारनरहे छांहघामकी। यहै ऊनकरतहो पुनि शिशिरशीत यहै हरति गैहनेलैहैधरति ओटकोट बामकी। यहैजाति यहैपांति परपाटी यहै सिखवति सूरदासप्रभुको यहै सबबिश्रामकी ५३ अब तुमसांची बातकही। येतेपर युवतिनकोरोंकत सांगत दानदही। जोहम तुमहिं कहेउ चाहतही सो श्रीमुख प्रगटायो। नीके जाति उघारी अपनी युवतिन भलेहँसायो। तुम कमरीके ओढ़न हारे पीतांबर नहिं छाजत। सूरश्याम कारे तन ऊपर कारी कमरी भ्राजत ५४ मोसों बात सुनहु ब्रजनारी। यक उपखान चलत त्रिभुवनमें तुमसों आजु उघारी। कबहूं बालकमुंह न दीजिये मुंह न दीजिये नारी। जोइ मन करै सोई करिडारै मूड़चढ़ति है भारी। बातकहति अठिलाति जाति सब हंसत देतिकरतारी। सूरकहा ये हमकोजानैं छांछहि बेंचनहारी ५५ यह जानतितुम नंदमहरिसुत। धेनुदुहत तुमको हमदेखति जबहिजात खरिकहि उत। चोरीकरत यहौपुनि जानति घरघरढूंढ़तभांडे। मारगरोंकि भये अबदानी वेढँग कबतेछांडे। और सुनहु यशुमति जबबांधे तबहम कियो सहाय। सूरदासप्रभु यहजानति हमतुमब्रज रहत कन्हाय ५६

राग आसावरी॥ कोमाता कोपिता हमारे। कबजन्मत हमको तुमदेख्यो हंसी लगति सुनिबाततुम्हारे। कबमाखन चोरीकरि खायो कबबांधे महतारी। दुहतकौन गैयाको चारत बातकही यहभारी। तुमजानति मोहिंनन्दढुटौना नन्दकहांतेआये। मैं पूरण अविगति अविनाशीमाया सबनिभुलाये। यहसुनि ग्वारिसबै मुसकानी ऐसेऊ गुण जानत। सूर श्याम जो निदरेउ सबही मात पिता नहिं मानत५७॥ रागसोरठ॥ तुमको नन्दमहरि भरुहाये। माता गर्भनहीं उपजेतो कहो कहांते आये घरघर माखन नहीं चुरायो ऊखल नहीं बंधाये। हाहाकरि यशुमति के आगे तुम को हमहिं छुड़ाये। ग्वालन संग संग वृन्दाबन तुमनहिं

गाय चराये। सूरश्याम दशमास गर्भधरि जननी नहिं तुमजाये ५८॥ रागटोड़ी॥ भक्तहेत अवतारधरो। कर्मधर्मके वशमें नाहीं योगयज्ञमनमें न करो। दिनगो हरि सूनी श्रवणनि भरि गर्वबचन सुनि दयनजरो। भाव अधीनरहो सबही और न काहूते नेकडरो। ब्रह्माकीट आदिलौ व्यापक सबको सुखदे दुखहिहरो। सूरश्याम तबकही प्रकटही जहांभाव तहंते नटरो ५९॥ रागधनाश्री॥ कान्ह कहांकी बात चलावत। स्वर्ग पताल सककरिराख्यो युवतिनको कहिकहा बतावत। जो लायक तौ अपने घरकोवनभीतरडरपावत। कहा दान गोरसके ह्वैहै सबै नलेहु दिखावत। रीती जानि देहु घरहमको इतनेहीं सुखपावत। सूरश्याम माखनदधि लीजे युवतिन कत अरुझावत ६० माखनदधि कहकरौं तुम्हारो। या ब्रजमें तुम बणिज करतिहो नहिँजानति मोको घटवारो। मैंमनमें अनुमानकरौं नितमो सोंकहँ तुमबणिज पसारो। काहेको तुममोहिं कहतिहो योबनधन ताको अधिकारो। कतकैसे घरजानि पायही मोको यह समुझाय सिधारो। सूरवणिज तुमकरति नवाई लेखालेहों आज तिहारो ६१॥ राग सूहो॥ खेलीकहौ बणिजको अटकी। सुखसुख हेरि तरुणि मुसकानी नैनसैन देदे सब मटकी। हमहूँ कहेउ दान दधि को कहमांगत कुंवर कन्हाई। अबलौं कहा मौनधरि बैठे तबहीं क्यों न सुनाई। हँसि वृषभानसुता तबबोली कौनबणिज हमपास। सूरश्याम लेखौ करि लीजे जाहिं सबै ब्रजबास ६२॥ राग बिलावल॥ कहो तुमहीं हमको कहा बूझति। लैलैनाम सुनावहु तुमहीं मोसोंकहा अरुझति। तुमजानति मैंहूं कछुजानति जो जो मालतुम्हारे। डारिदेहु जापर जो लागो मारगचलो हमारे। इतनेहीको शोरलगायो अब समुझी यहबात। सूरश्यामके बचन सुनहुरी कछु समुझतिहो घात ६३ इनहींधौं बूझहु यहलेखो। कहा कहेंगे श्रवणनि सुनिये चरितनेक किनिदेखो। मन मन हर्षभई सबयुवती मुख ये बात चलावति। ज्योंज्यों श्याम कहत मृदुबाणी त्योंत्यों अति सुखपावति। कोउ काहूके भेद न जानति लोक सकुच उर मानत। सूरदास प्रभु अन्तर्यामी अन्तर्गत की जानत ६४ कहो कान्ह कहां गयहै हमसों। जा कारण युवतीसब अटकीं सो बूझतिहैं तुमसों। लौंग दाख नारियर सुपारी कहलादे हमआवें। गहीं

मिरच पीपरि अजवाइनि यहसब बणिज कहावैं। कूट कायफर सोंठि चिरैता करजीरा कहुँदेखत। आल मजीठ लाखसेंदुर कहुँ ऐसेहिबुधि अवरेखत। बाइबिडंग बहेरा हर्रा कहुँ बैलगोन बेपारी। सूरश्याम लरिकाई भूली योवन भये मुरारी ६५॥ रागसूहा॥ कौन बणिज कहि मोहिँ सुनावति। तुम्हरो गथ लादो गयन्दपर हींग मिरच पीपरिकह गावति। अपनो बणिज दुरावतिहो मों आगे सब जानति तुवगाहि। ज्यों त्यों करि अवलोहि दुराये प्रकटकरो अवताहि। बहुत मोलकी वस्तु तुम्हारी कैसेदुरत दुराये। सुनहुँ सूर कछुमोल लेहिंगे कछुयक दान भराये ६६॥ राग टोडी॥ दधिको दानमोंटे यहठान्यों। सुनहुँश्याम अतिचतुर भयेहो आजुतुमहिं हमजान्यों। जो कछु दूधदही हमदेतीं लैजाते मिलिग्वाल। ताऊखोय डायसेबैठे हँसति कहति ब्रजबाल। यहसुनि श्याम सबनि करते दधिमटुकी लई छिंडाय। आपुन खाय सखनिको दीन्हों अतिमन हर्षबढाय। कछुखायो कछु भूढरकायो चितैरहीं ब्रजनारि। सूरश्याम बनभीतर युवती नयेढङ्ग करत मुरारि ६७ राग रामकली॥ प्यारी पीतांबर उरझटक्यो। हरितोरी मोतिनकी माला कछुगर कछुकर लटक्यो। ढीठ्योकरन श्याम तुमलागे जायगहो कटि फेंट। आपु श्याम रिसकरि अंकमभरि भईप्रेमकी भेंट। युवतिन घेरि लियो हरिको तब भरि भरि धरि अँकवारि। सखा परस्पर देखत ठाढे हँसत देत किलकारि। हांकदियो करि नन्ददुहाई आयगये सब ग्वाल। सूरश्यामको जानतनाहीं ढीठभईहै बाल ६८॥ राग भैरव॥ हम भई ढीठ भले तुम ग्वाल। दीन्हों ज्वाब दई को चैहो देखोरी यह है जंजाल। बनभीतर युवतिनको रोकत हमखोटी तुम्हरे येहाल। बात कहनको येऊ आवत बडेसुधर्मा धर्महिंपाल। साखिसखाकी येसिय भरिहो तब आवहुगे जीत भुवाल। आयेहैं चाढिरिस करिहम पर सूर हमैं जानत बेहाल ६९॥ राग बिलावल॥ जानी बात तुम्हारी सबकी। लरिकाईं को ख्यालतजो अबगई बातवह तबकी। मारग रोंकि रहे यमुनाको तिहि धोखेहो आये। पावहुगे पुनिकियो आपनो युवतिन हाथ लगाये। जो सुनिहैं यहबात मातपितु तो हमसों कह कैहैं। सूर श्याम मोतिन लरतोरी कौनज्वाब घरदैहैं ७०॥ रागनट॥ आपुन भई

सबै अबभोरी । तुमहरिको पीतांबर झटक्यो उन तुम्हरी मोतिनलर तोरी । मांगत दानज्वाब नहिंदेती ऐसी तुम योवनकी जोरी । डरनहिं मानत नन्दनँदनको करत आनियक झोराझोरी । यकतुम नारि गँवारि भलीहो त्रिभुवनमें इनकी सरिकोरी । सूर सुनहु लैहें छँडायसब सबहि फिरहुगी दौरीदौरी ७१ कहाबड़ाई इनकी सरमें । नन्दयशोदा के प्रतिपाले जानति नीकेकरमें । बसुदेवडारि रातिही भागे आयेहैं शुभघरमें । तुम्हरेकहे सबनि डरमान्यो डरकिगई अति डरमें । अङ्ग अङ्गको दानकहतहै सुनत उठी उरजरिमें । तब पीतांबर झटकि लयो मैं सूरश्यामको झरिमें ७२॥ राग गौरी ॥ याते तुमको ढीठकही । श्यामहिं तुमभइ झिरक निहारी येते परपुनि हारिनहीं । तबते हमको यारिदेतिहो कहाकहैं हमबहुतसही । बनिजकरति हमसों झगरतिहो हमकोदाहत आपु दही । समुझिपरीअब कछुजिय जान्योंताते ह्वैसब मौनरही । सूरश्याम ब्रजऊपरदानीयह मारगअब तुमनिबही ७३ ॥ राग कल्याण ॥ तुम देखत रैहो हमजैहैं । गोरस बेंचि मधुपुरीतेपुनि येही मारग ऐहैं । ऐसेही बैठेसब रैहो बोलेज्वाब न दैहैं । घेरि लैजैहैं यशुमति पैहरि तबधों कैसी कैहैं । काहेको मोतिनलर तोरी हम पीतांबर लैहैं । सूरश्याम सतरात येते परघर बैठेतबरैहैं ७४ मेरेहठक्यों निबहन पैहौ । अबतौ रोकिसबनकोराखोकैसेकरि सबजैहौ । सोंहकरतहौं नंदबबाकी मैंकहिहौंतबजैहौं । जो न मानिहौ कहेउ हमारो तौ पाछे पछितैहौ । आवतजात रहतियेही पथ मोसों बैरबढ़ैहौ । सुनहु सूरहमसों हठमांड़ति कौन नफाकरि लैहौ ७५ ॥ रागकान्हरो ॥ कौनबात यहकहत कन्हाई । समुझति नहीं कहा तुम मांगत डरपावत कहि नंद दुहाई । डरपायो तिनको जो डरपैतुमतेघटि हमनाहीं । मारगछांड़िदेहु मनमोहन दधि बेंचन हमजाहीं । भलीकरी मोतिनलर तोरी यशुमतिते हमलै हैं । सूरदास प्रभुयहै बनति नहिं इतनोधन कह पैहैं ७६ एक हार मोहिं कहाबतावति । नखशिखते अंगअंग निहारहु येसब कहति दुरावति । मोतिनमांग जराय कोटिको करणफूल नकबेसरि । कंठसिरीदुलरी तिलरीतर अवर हार यकनौसरि । सुभगहमेलकटावकी अँगिया नगन जरितकी देखो । क्षुद्रघंटिकापगनूपुर जेहरि बिछिया सबलेखो । नख

शिखलों शृङ्गारसकल अंग एक बतावति हार। कहतसूर लैहैं दान सबनिको भावेतहां प्रकार ७७॥ रागजैतश्री॥ याहूमें कछुबांटतिहारो। अचरज आय सुनहुरी माईभूषण देखि न सकत हमारो। कहागाढ़ाय दियेतुम आपुनको यशुमतिकोनंद। घाटचरेउतुम यहैजानिकै करति ठगनिकेछन्द। जितनोपहिरे आजुहम आईघरहैयाते दूनो। सूरश्याम हो बहुतलुभाने बनदेख्यो घों सूनो ७८॥ रागगौरी॥ बादकहा अबसबै हमारो। जबलों दाननहीं हमपायोतबलोंकैसेहोत तुम्हारो। आभूषण की कौन चलावत कंचनघट काहे न उघारो। मदनद्यूति मोहिं बाततु-लाई इनमेंभरेउ महारस भारो। एकओर अँगआभूषण सबएक ओर यह दान विचारो। सुनहुसूर कहावाद करैंहम दानदेहु पुनि जहांसि-धारो ७९॥ रागकल्याण॥ श्यामभये ऐसेतुमनागर। येते दिवस रहेअति छौना अबहो भये उजागर। कांधेकामरि हाथलकुटिया गायचरावन जाते। दही भातकी छाकमंगावत ग्वालनमिलि संगखाते। अब तुम कर नौतासीलीन्हें पीतांबरकटि सोहत। सूरश्याम अब नवलभयेतुम नवल नारि मनमोहत ८०॥ रागगौरी॥ दानदेत की झगरो करि हो। प्रथमहिं यह जंजाल मिटावहु तापाछे तुम हमहिं निदरि हो। कहत कहा निदरेसोहो तुम सहज कहति हमबात। आदिवृन्यादि सबै हम जानति काहको सतरात। रिस करिकरि मटुकी शिर धरिधरि डगरि चलींसब ग्वालिन। सूरश्याम अंचल गहिफेरको जैहौकहां बंजारिन ८१॥ रागकल्याण॥ अबतुमको मैं जानन देहौं। बहुत अचगरी करीनंद सुत जो कछुगयोसो तुमपैलेहौं। गोरस खाय बच्योसो ढारेउ मटुकी-डारी फोरि। देदैगारिनारि झकझोरी चोलीकेबन्दतोरि। हंसतसखा सब तारी देदै बनमेंरोंकीनारि। सुनत लोग घरके आवहिंगे सकिहो नहींसंभारि। घर केलोगनि कहा डरावति कंसहि आनिबुलाई। सूर सबै युवतिनके देखत पूजाकरों बनाई ८२॥ रागगौरी॥ जोतुमहींहौसब के राजा। तो बैठो सिंहासन चढ़िकै चमर छत्र शिरभ्राजा। मोरमु-कुटमुरली पीतांबर छोड़हु नटवर साजा। वेणु विषाण शंखक्यों पूर-तबाजै नौबति बाजा। यहजोसुनै हमहु सुखपावहिंसंगकरै सुखकाजा। सूरश्याम ऐसीबातैं सुनिहम का आवतिलाजा ८३॥ रागकल्याण॥ तु-

म्हारे चित रजधानी नीकी । मेरे दास दास दासिन के तिनको लागति फीकी । ऐसीकाहे मोहिं सुनावति तुमको यहैअगाध । कंसहिमारि छत्र शिरधारों कहातुच्छ यहसाध । तबहीं लगि यह संगतिहारी जब लों जीवतकंस । सूरश्याम के मुख यहसुनितब मनमन कीन्हेसंस ८४ राग जैतश्री ॥ भलीकरी हरिमाखनखायो । यहैमानि लीन्हीं अपने शिर उबरेउ सो ढरकायो । राखीरही दुराय कमोरी सोलै प्रकट देखायो । यह तीजौ कछुऔर मगावैंद नसुनत रिसपायो । दान दिये बिन जान न पैहौ कबमैं दान छिंडायो । सूरश्याम हठपरे हमारे कहौन काहल-दायो ८५ ॥ रागधनाश्री ॥ लैहौंदान इननिको तुमसों । मत्तगयंद हंसतुम सो है कहादुरावति मोसों । केहरिकनक कलसअमृतकेकैसे दुरेदुराव-ति । विद्रुमयहै बज्रके किणुका काहिनहमहिं सुनावति । खगकपोत कोकिलाकीर खंजनचंचल मृगजानत । मणिकंचनके चक्रजुरेहैं येते पर नहिंमानत । शायकचाप तुरै बनजातिहौ नितप्रति आवहु जाहु । दानदिये बिनु जान न पैहो दियेहि होत निबाहु । यह बनिजातिवृष-भानसुता तुम हमसों बैरुनढावति । सुनहुँ सूर येतेपर कहति हैं हमधौं कहा लदावति ८६ ॥ रागसोरठ ॥ यहसुनि चकृतभई ब्रजबाला । तरुणी सब आपुसमें बूझति कहाकहत गोपाला । कहातुरङ्ग कहा गजकेहरि कहा हंस सरबस सुनिये । कञ्चनकलश गढाये कबहम देखे धौं यह गुनिये । कोकिलकीर कपोत बननिमें मृगखञ्जन यकसङ्ग । तिनकेदान लेतहे हमसों देखहु इनके रङ्ग ॥ चन्दन और सुगन्ध बतावत कहा ह-मारे पास । सूरश्याम जो ऐसेदानी देखिलेहु हमपास ८७ ॥ रागगुणकरी ॥ भूलिरहे तुमकहा कन्हाई । ताकोनाम लेतहम आगे जे सपनेहूं दृष्टि न आई । हैवर गैवरसिंह हंसखग मृग कहहैं हमलीन्हें । शायकचाप तुरेसुनि चकृतचमरन देखेचीन्हें । चन्दन और सुगन्ध कहतहौ कंचन कलश बतावहु । सूरश्याम ये सब जो ह्वैहैं तबहिँदान तुमपावहु ८८ ॥ रागगुर्जरी ॥ इतनसबै तुम्हारेपास । निरखि देखहु अङ्ग अङ्ग चतुराई के गात । तुरतही निरवारि डारहु करति कहति अबेर । तुमकहौ कछु हमहुँ बोले घरहि जाउसबेर । कनक तरुपर तरुदेखहु सजे नवसतअंग । सूरतुमसों रूपयोबन धरेउ एकहिसंग ८९ ॥ राग बिलावल ॥ प्रकट करौ

सब तुमहिँ बताऊँ। चिकुरचौंर घूंघटहै बरबर भ्रुव सारंग दिखाऊँ। बाणकटाक्ष नयनखंजन मृगनासा शुक उपमाऊँ। तरवन चय अधर बिद्रुम छबि दशन बज्र कनठाऊँ। ग्रीव कपोत कोकिला बाणी कुच घटकनक समाऊँ। योबन मदरस अमृतभरेहैं रूपरङ्ग झलकाऊँ। अंग सुगन्ध बासपाटम्बर गनिगनि तुमहिँ सुनाऊँ। कटिकेहरि गयन्दगति शोभा हंससहित यकताऊँ। फेरिकिये कैसे निबहतिहो घरहिगये कहँ पाऊँ। सुनहुँसूर यहबनिज तुम्हारे फिरि फिरि तुमहिँ सुनाऊँ ९०॥ रागनट॥ मांगत ऐसोदान कन्हाई। अब समुझी हमबात तुम्हारी प्रकटी है कछुधौं तरुणाई। यहलालच अँकवारि भतरहो हारतोरि चोली झटकाई। अपनीओर देखिधौं लीजै तापाछे करिये बरिआई। सखा लिये तुमघेरत पुनिपुनि बनभीतर सब नारि पराई। सूरश्याम ऐसो न बूझिये इनबातन मर्य्याद नशाई ९१ हमपर रिसकरति ब्रजनारि। बात सूधे हमबतावत आपुउठति पुकारि। कबहुँ मर्यादा घटावतिक-बहुँ देदैगारि। प्राततें झगरो पसारेउ दान देहु नेवारि। बड़ेघरकी बड़ीबेटी करति तृथा झवारि। सूरअपनो अंगपावैं जाहुघर झखमारि। ९२॥ रागसारंग॥ तुमहिँ उलटिहम परसतराने। जो कछु हमको कहन बूझिये सो तुमकहि आगे अतुराने। यह चतुराई कहांपढी हरिथोरेहि दिन अतिभये सयाने। तुमको लाज होत की हमको बात परै जो कहुँ महराने। ऐसोदान और पै मांगहु जो हमसोंकहो छानेछाने। सूरदास प्रभुजान देहु अब बहुरि कहौगे कालिहबिहाने ९३ श्यामहिंबोलिलिये ढिगप्यारी। ऐसीबात प्रकट कहुँकहिये सखनमांझ कतलाजनिमारी। यक ऐसेहि उपहास करतसब तापरतुम यहबात पसारी। जातिपांति के लोग हँसहिंगे प्रकट जानि हैं श्यामभतारी। लाजनि मारत कतहो हमको हाहाकरति जाति बलिहारी। सूरश्याम सर्बज्ञ कहावत मात पितासों पावतगारी ९४ जबहिं ग्वालि यहबात सुनाई। सखासबनि तबहीं लखिलीन्हीं सदाश्याम की प्रकृति सुभाई। सुनहु ग्वालि यक बात सुनावें जो तुम्हरे मनआवै। तबप्रति अङ्गअङ्गकी शोभा देखतहरि सुखपावैं। तुमनागरी नवल नागर कै दोउमिलि करौबिहार। सूरश्याम श्यामा तुमएकै कहहँसिहै संसार ९५॥ रागनट॥ नन्दसुवन यह बात

कहावत। आपुन योबन दानलेतहैं तापर जोइ सोइ सखन बतावत। वे दिन भूलिगये हरितुमको चोरीमाखन खाते। खीजतही भरिनयन लेतहैं डरडरात भजिजाते। यशुमति तब ऊखल सों बांधतिहमहिँ छोडतीजाई। सूरश्याम अबबड़े भयेहौ योबनदान सोहाई ९६॥ रागटोड़ी॥ लरिकाईकी बात चलावति। कैसीभई कहाहम जाने नेकहु सुधिनहिं आवति। कबमाखन चोरीकरि खायो कब बांधे धौं मैया। भलेबुरे को मानापमानत हरषत हृदय कन्हैया। अपनीबात खबरिकरि देखो न्हात यमुनके तीर। सूरश्याम तबकहत सबनके कदम चढायेचीर९७ राग गुर्जरी॥ सबैरहीं जलमांझ उघारी। बारबार हाहा करि थाकीं मैं तटदिये हँकारी। आईं निकसि बसनबिनु तरुणी बहुतकरी मनुहारी। कैसेहाल भयेतब सबके सो दिन सुरति बिसारी। हमहिँ कहति दधि दूध चुरायो अरु बांधे महतारी। सूरश्यामके भेदबचन सुनि हँसी सकुचि ब्रजनारी ९८॥ राग सारंग॥ कहाभये अतिढीठ कन्हाई। ऐसीबात कहत सकुचे नहिं कहधौं अपनी लाज गँवाई। जाहु चले लोगनि के आगे झूठीबाणी कहतसुनाई। तुमहँसि कहत ग्वालसुनिके सब घर घरकहि हैं जाई। बहुरि होहुगे दशहि बरषके बातकहतहो बनैबनाई। सूरश्यामयशुमतिके आगे यहैबात सबकहैं सुनाई ९९॥ राग हमीर॥ झूठीबात कहा मैंजानों। जो हमको जैसेहि भजैरी ताको तैसेहिमानों। तुम तपकियो मोहिंको मनदै मैंहूँ अन्तर्यामी। योगीको योगी ह्वैदरशौं कामीको ह्वै कामी। हमकोतुम झूठेकरि जानति तौकाहे तपकीनों। सुनहुसूर कतनिठुर भईअब दानजात नहिंदीनों १००॥ रागगौरी॥ दान सुनत रिसहोत कन्हाई। औरै कहो सोसब सहिलैहैं जो कछुभली बुराई। महतारी तुम्हरीके बैग्रण उरहन देतरिसाई। तातेतुम दूनेशिर चढ़िके लेईचाल प्रकटाई। तुमनीके ढँगसीखे बनमें रोंकत नारिपराई। सूरश्याम हमको बिरमावत खोजत वहिलीमाई १०१ काहे को तुम झोरि लगावति। दानदेहु घरजाहु बेंचिदधि तुमहीं को यह भावति। प्रीतिकरो मोसोंतुम काहेन बणिजकरति ब्रजगांउ। आवहुजाहु सबै यहिमारग लेत हमारो नांउ। लेखाकरी तुमहिँ अपने मन जोइ देहो सोइलैहों। सूर सुभाव चलहुगी अब तुम पुनिधौं मैं कह कैहों १०२॥

राग कान्हरो ॥ सुनहु आनि हरिके गुणसाई। हमभईं बनिजारनि आपुन भये दानी कुंवर कन्हाई। कहा बणिज ले आईं हमवौं मांगत ताको दान। काल्हिहिके ढँगपुनिआयेहैं नहिंजानत कछुआन। तुमग्वालिनि येहीं मग आवति जानिबूझि गुणइनको। सूरश्याम सुन्दर बहुनायक सुखदायक सबहिनको १०३॥ रागटोड़ी ॥ काहेको हमसों हरिलागत। बातहि कछुलेखा सरनाहीं कोजाने कह मांगत। कहा सुभाव परेउ अबहींते इनबातन कहपावत। दानदान कहिकहा कहतहैं मन्द मन्द मुसकावत। पूरोदेहु बहुत अब कीनों सुनत हँसहिंगे लोग। सूरश्याम मारग जनिरोकहु घरते लीजहुवोग १०४॥ राग सूहो ॥ अबलौं यहै करो तुमलेखो। मोको ऐसीबुद्धि बतावति करकङ्कण दर्पणलेखो। आपुहि चतुरि आपुही सबकछु हमको कहति गँवार। औरहिलेत फिरौ इनके घर ठाढे ह्वै है द्वार। घाटछांड़ि जैहीं तबलेहीं ज्वावनृपति कहदेहीं। जादिनते यहिमारग आवति तादिनते भरिलैहौं। इनकेबुधि दानहम पहिरेउ काहेन घरघर जैहौ। सूरश्याम तबकहत सखनसों जानकौन बिधिपैहो १०५॥ रागटोड़ी ॥ भलीभई नृपमान्यों तुमहूँ। लेख्यो करो जायकंसहिपै चलैंसङ्ग तुमहमहूँ। अबलों हम यह जानीही घरहीं पहिरेउ तुमदान। काल्हि कहेउहो दानलेनको नन्दमहरकी आन। तो तुम कंस पठायेहो हो अबजानी यह बात। सूरश्याम सुनि सुनि यह बाणी भौंह मोरि मुसुकात १०६॥ राग आसावरी॥ कहा हँसत मोरतहो भौंह। सोई कहो मनहिं कह आई तुमहिं नन्द की सौंह। और सौंह तुमहिं गोधनकी सौंहमाय यशुमति की। सौंह तुमहिं बलदाऊकी है कहो आपने चितकी। बारबार तुमभौंह सकोरेउ कहा आपहँसि रीझे। सूरश्याम हमपर सुखपायो की मनहींमन खीझे १०७॥ राग रामकली॥ हँसत सखनिसों कहत मैयाकी बाबाकी दाऊजूकी सौंहदिवाई। कहति काहे हँसिहेरेउ काहेभौंह सकोरेउ। यह अचरज देखोतुम इनको कबहस बदन मरोरेउ। ऐसी बातनि सौंह दिवावत अधिक हँसीमोहिं आवति। सूरश्याम कहि श्रीदामासों तुमकाहेन समुझावति १०८॥ राग धनाश्री ॥ श्रीदामा गोपिन समुझावत। नंदलालसों कतझगरतिहो काहेको रारिबढ़ावत। हँसतश्यामके तुमकहँ जान्यों काहेसौंह दि-

वावै । तरुणिनको यह प्रकृति अनैसी थोरहि बात खिसावै । सान्हे मुखसों सोंह दिवावहु वे दानी प्रभु सबके । सूरप्रभुको दानदेहुरी सानहुँ ठाढे कबके १०९ ॥ राग जैतश्री ॥ हम जानति वे कुंवर कन्हाई । प्रभु तुम्हरे मुख आजु सुनी हम तुम जानत प्रभुताई । प्रभुतानहीं होत इन बातनि मांगत महिकोदान । वे ठाकुर तुम सेवक उनके जान्यो सबको ज्ञान । दधिखायो मोतिन लरतोरेउ घृतमाखन सो उलीजै । सूरदास प्रभु अपनो सदिको घरहिजान हम दीजै ११० ॥ राग सोरठ ॥ तुमघरजाहु दान को दैहे । जिहिबीरा दै मोहिंपठायो सो मोसों कहलैहै । तुमगृह जाय बैठि सुखकरिहौ नृपगारीकोखैहै । अबहीं बोलिपठावै गोरी तासन्मुखको जैहे । जानकहै तुमसों तुमजैहो विधना कैसीलैहै । सूरमोहिं अटक्यो है नृपवर तुमबिन कौन छुडैहै १११ ॥ राग जैतश्री ॥ नृपको नाम लेततेही मुख ज्यहिमुख निन्दा कालिहकरी । आपुन तो राजनके राजा आजु कहा सुधि मनहिँपरी । भलेश्याम ऐसी तुमकीनी कहा कंसको नाम लियो । जबहमसोंह दिवावनलागी तबहिं कंसपर रोषकियो । जाको निन्दबन्दि वैसोपुनि यहताको बहुते निदरै । सूरसुनो यहबात कालिहकीतबजानी इनकंसडरै ११२ ॥ रागआसावरी ॥ कहाकहति कछु जान न पायो । कब कंसहिं वैं हमकरजोरे कबवाको हम माथ नवायो । कबहूं सोंह करत देखेमोहिँ लेत कबहुँ मुखनांउ । निपटहिँ ग्वारि गँवारिभई तुवबसति हमारेगांउ । कहाकंस कितने लायकको जाको मोहिँ दिखावति । सुनहुसूर यहिनृपके डरहैं यह तुम्हरे मनआवति ११३ ॥ रागटोड़ी ॥ कौन नृपति जाके तुमहो । ताकोनाम सुनावहु हम को यह सुनिके अति पावतिभौ । यहसंसार भुवन चौदहभरि कसहि ते नहीं दूजोऔ । सोनृप कहांरहत सुनिपावे तब ताहीको मानैजो । कहानाम केहिगांउ कहैबलैगी झूठेहमहिं कहत धौंहो । सूरदास प्रभु बसतहै ताहीके ह्वै रहियेतौ ११४ ॥ रागधनाश्री ॥ मोसों सुनौ नृपतिके नाम । तिहूंभुवन में नामहै जाको नरनारी सबगाम । गंधर्वबश्य बाहीके और नहीं सरिताहि । उनकी अस्तुतिकरौं कहांलौ मैं सकुचतहौंजाहि । तिनहींको पठयोहोंआयो दियोदानको बीरा । सूरस्वरूप योवनबन सुनिके देखत भयो अधीरा ११५ ॥ रागगौरी ॥ पाई जाति

तिहारे नृपकी जैसेतुम तैसेवोऊ हैं। कहां रहै दुरिजाय आनलों हम तुम यकदिन जनमें दोऊ हैं। चोरी अपमारग घटबारेउ इनपटतर के नहिंकोऊहैं। प्यासबनी अब जोरी नीकी सुनहुसखी मानत तोऊहैं। यह अनुमान कियो ढंगगुणके सोऊ हैं। सूरश्याम जितने रंगकाछत युवतीजन मनके जोऊहैं ११६ ठगति फिरति ठगनी तुमनारि। जोइ आवति सोइसोइ कहिडारति जाति जनावति दैदैगारि। फँसिहारनि बटपारिनि हमभइ आपुनभये सुधर्मभारि। फंदाफाँसि कमान बान सों काहुडारत देख्योमारि। जाकेमन जैसेबरते मुखसोंवाणी करिदेत उघारि। सुनहुसूर प्रभुनीकेजान्यो ब्रजयुवती तुमसब बटपारि ११७ अपने नृपकोयहै सुनायो। ब्रजनारी बटपारिनिहैं सबचुगुली आपुहि जाय लगायो। रावाबड़ीबात यहसमुझी तुमकोहमपर धौंखिपठायो। फँसिहारिनि कैसे तुमजानी हमकहँ प्रकट दिखायो। ब्रजबनिता फँसिहारिनिज्यों सबसहतारी काहेन गनायो। फाँदिफाँसि धनुषबिष लाई सूरश्यामनहिं हमहिं बतायो ११८॥ रागभैरव॥ फंदाफाँसिबताऊं जो। आगनिधरे छपाइ जहँ जो प्रकटकरौं सब वादिहौंतो। प्रथमहिं प्रोथ मोहनी डारति ऐसेताहि करत बशहो। बियलाडू दरशावति लैपुनि देहदशासुधि बिसरतज्यों। तापाछे फंदागर डारति यहिभाँतिन करि मारतिहो। सुनहुसूर ऐसेगुण तुम्हरे मोसों कहा उचारति हौ ११९ ॥ रागसूहो ॥ प्रकट करौ यहबात कन्हाई। बानकमान कहां केहिमारेउ काकेगरहम फाँसिलगाई। काकेशिर हम मंत्रदियोपढ़ि कहांहमारे पासदिनाई। मिलवत कहां कहांकीबातें हँसति कहति अति राइसकुचाई। तबजानेसब हमहिं बतावहु कहोनहीं तो नन्द दोहाई। सूरश्याम तबकहेउ सुनहुगो एकएक करिदेउँ बताई १२०॥ राग टोड़ी ॥ मोसोंकहा दुरावति नारि। नयनसैनदै चितहि चोरावति यहै मंत्रटोना शिरडारि। भौंहधनुष अंजनगुण भृकुटी बाणकटाक्षनि डारतिमारि। तरवनि श्रवण फाँसिगर डारति कैसेहु नहीं सकति तरुवारि। पीनउरज मुखनयन चखावति यह विष मोदक जातनझारि। घाततछुरी प्रेमकीबाणी सूरदास को सकै सँभारि १२१ अपनो गुण औरनि शिरडारत। मोहनजोहन जंत्रमंत्रटोना तुमपर सबझारत। तनु

त्रिभङ्ग अङ्गअङ्गमोरनि भौंहबंक करिहेरत । मुरली अधरबजाय मधुर सुर तरुणीमन मृगघेरत । नटवरभेष पितांबरकाछे छैलभये तुमडोलत । सूरश्याम रावर ढंगऐसे औरनि को ठगबोलत १२२ जानीबात मौनधरि रहिये । इहैजानि हमपर चढ़िआये जोभावै सोकहिये । हमनहिँ बिलग तुम्हारोमान्यो तुमजिनि कछु मनआनो । देखोएक दोईजनि भायहु चारिदेखि दुइजानों । दोबलदेति सबै मोहींको उन पठयो मैं आयो । सूररूप योवनकी चुगुलीनयनन जायसुनायो१२३॥ रागबिलावल ॥ तबरिस करिके मोहिँ बुलायो । लोचनदूत तुमहिँ यह मारग देखत जाय सुनायो । सोसब महलनिते सुनिबाणी योवन महलनिआयो । अपनेकर बीरामोहिँ दीन्हों तुरतदान पहिरायो । बैठे हैं सिंहासन चढ़िके चतुराई उपजायो । मनतरङ्ग अज्ञाकरि मूततिनको तुमहिँ लगायो । तिनकोनामअनङ्ग नृपतिवर सुनहुबात सुखपायो । सूरश्याम मुखबात सुनत यह युवतिनतनु बिसरायो १२४ ॥ रागसूहो ॥ व्रजयुवती सुनि मगनभई । यहबाणी सुनि नन्दसुवन मुख मन व्याकुलतन सुधिहु गई । कोहम कहांरहति कहँआई युवतिन के यहशोच परेउ । लागी काम नृपतिकी सबसों योवन रूपहि आनि अरेउ । त्रसित भईतरुणी अनङ्गडर सकुचिरूप योवनहिँ दियो । सूरश्याम अब शरण तुम्हारे हृदय सबनि यह ध्यानकियो १२५ ॥ रागजैतश्री ॥ मन यह कहति देह बिसरायो । यहधन तुमहीं को सँचिराख्यो तिहिलीजो सुखपायो । योवनरूप नहीं तुमलायक तुमकोदेत लजाति । ज्यों बारिधि आगे जलकिणका बिनय करति यहिभांति । अमृतसर आगे मधुरंचक मनहिँ करति अनुमान । सूरश्याम शोभाकी सींवांको वाके पटतरको आन १२६ अन्तर्यामी जानिलई । मनमेंमिलै सबनि सुखदीन्हों तब तनकी कछु सुरतिभई । तबजानों मनमें हमठाढ़ी तनु निरख्यो मन सकुचिगई । कहति परस्पर आपुस में सब बाहरही हम काहिरई । श्यामबिना येचरित करैको यह कहिके तनु सौंपिदई । सूरदासप्रभु अन्तर्यामी गुप्तहि योवन दानलई १२७॥ रागरामकली ॥ यहकहि उठेनंद कुमार । कहाठगिसी रहीबातापरीकौन बिचार । दानको कछुकियो लेखो रही जहँतहँशोचि । प्रकटकरि हमकोसुनावहुमेटि जोरोदोचि ।

बहुरि तेहिमग जाहु आवहु रातिसांझ सकारि। सूर ऐसे कौनजो पुनि तुमहिं रोकनिहार १२८॥ रागगुजरी ॥ हमहिं औरसों रोकैकौन। रोकनहारे नन्दमहरसुत कान्हनाम जाकोहै तौन। जाकोहैबल काम नृपतिको ठगतफिरत युवतिनकोजौन। टोनाडारिदेत शिरऊपर आपु रहत ठाढ़ो ह्वैमौन। सुनहुश्याम ऐसीनबूझिये बानिपरी तुमको यह कौन। सूरदासप्रभु कृपाकरहु अबकैपैहिजाहि आपनेभौन १२९॥ राग सूहो ॥ दानमान घरकोसबजाहु। लेखो मैं कहुकहु जानतहौं तुमससुभै सबहोत निवाहु। पछिलोदेहु निबाहि आडुसब पुनिदीजो जब जानहु कालि। अब मैं भली कहत हौं तुमसों तुमसबमोको मानहुँ ग्वालि। वृन्दावन तुमआवत डरपति मैं देहौंतुमकोपहुँचाय। सुनहुसूर त्रिभुवन बश जाके सो प्रभु भये युवतिन बश आय १३०॥ रागटोडी ॥ को जानै हरिचरित तुम्हारो। अजहूंदान नहीं तुम पायो मनहरिलियो हमारो लेखोकरिलीजै मनमोहन दूधदही कछु खाहु। सदमाखन तुम्हरेहि सुखलायक लीजैदान उगाहु। तुमखैहौ माखनदधि रुचिसों हम सब देखि महासुख पावैं। सूरश्याम तुमअब दधिदानी कहि कहि प्रकट सुनावैं १३१॥ रागगौड़ ॥ कान्ह माखनखाहु हम सब देखैं। सद्यदधि दुग्धल्याई औटि अबहिँ हमखाहु तुम सुफलकरि जनमलेखैं। सखा सबबोलि बैठारि हरिसराडली बनहिँ के पातदोना लगाये। देतदधि परुसि व्रजनारि जैंवतकान्ह ग्वाल संगबैठि अतिरुचि बढ़ाये। धन्य दधि धन्यमाखन धन्य गोपिका धन्य राधावश हैं मुरारी। सूरप्रभुके चरितदेखिसुरगण थकित कृष्णसँग सुखकरतिघोष नारी १३२॥ राग जैतश्री ॥ माखन दधि हरिखात ग्वालसंग। पातन के दोना सबके कर लेपतुखित मुखमेलत रंग। मटुकिनते लैलै परुसति हैं हरखभरी व्रज-नारि। यहसुखतिहुंभुवनकहुँ नाहीं दधि जैंवत बनवारि। गोपीधन्य कहति आपुनिको धन्यदूध दधिमाखन। जाकोकान्ह लेतमुखमेलत कियो सबनि संभाषण। जो हम साधकरति अपनेमन सोसुखपायो नीके। सूरश्यामपर तनमन वारति आनन्दजिय सबहीके १३३॥ राग देवगन्धार ॥ गोपिका अति आनन्दभरी। माखनदधि हरिखात प्रेमसों निरखति नारिखरी। करलैलै मुखपरस करावति उपमा बढ़ीसुभाई।

मानहुँकंज मिलत शशिकोलिये सुवाकोर करआई । जाकारणशिव
ध्यानलगावत शेषसहसमुख गावत । सोईसूर प्रकट व्रजभीतर राधाम-
नहिँ चुरावत १३४ ॥ रागरामकली ॥ राधासों माखन हरिमांगत । औरं-
निकी मटुकिनकोखायो तुम्हरो कैसो लागत । लैआई वृषभानसुता
हँसि सदलवनीहै मेरो । लैदीन्हें अपनेकर हरिमुखखात अलप हँसि
हेरो । सबहिनते मीठोदधिहै यहमधुरे कहेउ सुनाई । सूरदास प्रभुसुख
उपजायो व्रजललना मनभाई १३५ ॥ रागनट ॥ गोपिनहेत माखनखात ।
प्रेमकेवश नन्दनन्दन नेकनहीं अघात । सबैमटुकी भरीवैसेहि प्रेमनहीं
सिरात । भावहृदय जानिमोहन खातमाखनजात । एकमिकर दधिदूध
लीन्हें एकनि करदधिजात । सूरप्रभुको निरखि गोपी मनहिँ मनहिँ
सिहात १३६ ॥ रागबिहागरो ॥ गोपीकहति धन्यहमनारि । धन्यदूध धनि
धनिधनिमाखन हमपरुसति जेंवतगिरिधारि । धन्यदिवस धनि निशा
धन्य वह धनिगोकुलप्रकटेबनवारि । धन्यसुकृतपाछिलोधन्यधनिनंद-
तात यशुमति महतारि । धनिधनिग्वाल धन्यवृन्दावन धन्यभूमि यह
अति सुखकारि । धन्यदान धनिकान्ह धन्यमग धन्य सूर तृण द्रुम-
बनडारि १३७ ॥ रागनट ॥ गणगंधर्व देखिसिहारि । धन्यव्रज ललनानि-
करते ब्रह्ममाखन खात । नहिनरेख न रूपनहिँ तनु बरणनहिँ अनु-
हारि । मातपितु दोउनाहिँ जाकेहरत मरतनजारि । आपुकरता आपु
हरता आपुत्रिभुवननाथ । आपुसब घटकेबिआपी निगम गावतगाथ ।
अंग प्रतिप्रति रोमजाके कोटि कोटि ब्रह्मांड । कीटब्रह्म पर्यंत जल
थल इनहिँतेयहमांड । बिश्वबिश्वम्भर एईग्वाल संगबिलास । सोइप्रभु
दधिदान मांगत धन्यसूरजदास १३८ ॥ रागरामकली ॥ कंसहेतहरि जनम
लियो । पापहिपाप धराभइभारी तब हमसबनि पुकारकियो । शेष
सैन जहँरमा संगमिलि तहँ अकाश भइयकबानी । असुरमारि भुव-
भार उतारो गोकुल प्रकटौंआनी । गर्भदेवकी के तनुधरिहौं यशुमति
को पयपीहौं । पूरबतप बहुकियो कश्यकारि इनको बहुत जवाहौं ।
यहबाणी कहिसूर सुरनिको अब कृष्णअवतार । कहेउ सबनि व्रज
जन्म लेहुसंगमेरे करहु बिहार १३९ ॥ रागगौरी ॥ ब्रह्माजिनहिँ यहआ-
यसुदीन्हों । तिनतिन संगजनम लियो व्रजमें सखीसखा करि परगट

कीन्हें। गोपीग्वाल कान्हदैनाहीं एकहु नेक न न्यारे। जहाँ जहाँ
अवतार धरत हरियेनहिँ नेकुविसारे। एकदेह बहुतकरि राखे गोपी
ग्वालमुरारि। यहसुखदेखिसूरके प्रभुकोथकित अमरसंगनारि१४०
अमरनारि अस्तुति करैंभारी। एकनिमिष व्रजवासिन को सुखनहिँ
तिहुँभुवन विचारी। धन्यकान्ह नटवर वपुकाछे धन्यगोपिकानारी।
यक यकते गुणरूप उजागरि श्यामभावतीं प्यारी। परसति ग्वालि
ग्वाल सबजेंवत मध्यकृष्ण सुखकारी। सूरश्याम दधिदानी कहिकहि
आनन्दघोष कुमारी १४१॥ रागबिलावल॥ धन्यकृष्ण अवतारते ब्रह्म-
लियो। रेख न रूप प्रकट दरशन दियो। जल थलमें कोउ औरनहिँ
बियो। दुष्टनि बधि संतनि सुख दियो। जो प्रभु नरदेही नहिँ धरते।
देवैगर्भ नहीं अवतरते। कंस शोक कैसे उर टरते। माता पिता दुरित
को हरते। जो प्रभु व्रजभीतर नहिँ आवैं। नन्दयशोदा क्यों सुखपावैं।
पूरब तप कैसे प्रकटावैं। वेदबचन कैसे ठहरावैं। जो प्रभुवेष धरैंनहिँ
बालक। कैसे मारहिं पूतना घालक। अंगुठा पिवत शकट संहारत।
तृणा अकाश शिलापर डारत। जो प्रभु व्रजमाखन न चुरावैं। क्यों
गोपिन को आपु जनावैं। भुजा उलूखल नहीं बँधावैं। यमलामोक्ष
कौनविधि पावैं। सो प्रभु दधिदानी कहवावैं। गोपिन को मारग अट
कावैं। करि करि लेखौ दान चुकावैं। आपुन खीझैं उनहिँ खि-
झावैं। व्रजबासीयों धन्य कहावैं। जहां श्याम दधि दान लगावैं।
मांगिखात आनन्द बढ़ावैं। युवतिनसों कहिकहि परसावैं। नेईहरि
नटवर वपुकाछे। मोरमुकुट पीताम्बरआछे। ग्वालसखाठाढ़े सबपाछे।
सूरश्याम गोपिन सुख साछे १४२॥ रागसूहो॥ यह महिमा एई पै जानैं।
योगयज्ञ तपु ध्यान न आवत सो दधिदानलेत सुख मानैं। खातपरस्पर
ग्वालनमिलिके मीठो कहिकहि आपुबखानैं। विश्वंभरजगदीश कहा-
वत ते दधिदोना मांझ अघानैं। आपुहिकरता आपुहिहरता आपु ब-
नावत आपुहिभाने। ऐसे सूरदासकेस्वामी तेगोपिन के हाथ बिकाने
१४३॥ रागरामकली॥ धनिबड़भागिनी व्रजनारि। खातलै दधिदूध मा-
खन प्रकट जहां मुरारि। नहींजानत भेदजाको ब्रह्मअरु त्रिपुरारि।
शुक सनकमुनि सउ न जानत निगमगावतचारि। देखिसुख व्रजनारि

हरिसंग अमर रहैभुलाय । सूरप्रभु के चरित अगणित बरणिकापै जाय १४४ ॥ रागबिलावल ॥ ब्रजबनितायह कहति श्यामसों माखनदूध दहेउ अरूल्यावे । सट्टकिनते हमदेहिँ खाहुतुम देखि देखि नयननि सुखपावै। गोरस बहुत हमारे घरघर दानपाछिलो लेहु । खायोजौन दानआजुहिको मांगतहैं सबदेहु । सबैलेहु राखहुजनिबाकी पुनिनपायहौमांगे। आजुहिलेहुसबैभरि देहैं कहतितुम्हारेआगे। कहोश्याम अबभाय हमारी मनहींभइ परतीत। जबचैहैं तबमाँगि लेहिँगे हमहिँ तुमहिँ भईप्रीत। बेंचहुजाय दूधदधि निधरक घाटबाट डरनाहिँ। सूर श्यामबशभईं ग्वालिनी जातबनत घरनाहिँ १४५ ॥ रागटोड़ी ॥ सुनहु सखीमोहन कहकीन्हों। एकएकसोंकहति बातयह दानलियोकीमन हरिलीन्हों। यहतौ नहींबदी हम उनसों बूझहुधौं यहबात। चकितभईं बिचारकरति यहबिसरिगई सुधिगात। डरपिजात तबहींसबसकुचति बहुरि मगन होयजाति। सूरश्यामसों कहौ कहा यह कहत न बनति लजाति १४६ ॥ रागधनाश्री ॥ श्याम सुनहु इकबात हमारी। ढीठोबहुत दईहमतुमसों सेवकशोहरि चूकहमारी मुखहीकही कटुक सबबाणी हृदय हमारिनाहिँ। हँसिहँसिकहतिरिखभावति तुमकोअति आनंदमन माहिँ। दधिमाखनकोदान औरजोजानोंसबैतुम्हारो। सूरश्याम तुमको सबदीनों जीवन प्राणहमारो १४७ नन्दकुमार कहायह कीन्हों। बूभत तुमहिँ कहोधों हमसोंदान लियोकैमन हरिलीन्हों। कछू दुराव नहीं हमराख्यो निकट तुम्हारे आई। तनमनप्राण समर्पण कीन्हों कुलकीकानि गँवाई। जोजासोंअन्तर नाहिँराखैसो क्योंअन्तरराखै।सूर श्याम तुम अन्तरयामी वेदउपनिषद भाखै१४८॥ रागटोड़ी ॥ सुनहुबात युवती इकमेरी। तुमतेदूर होतनाहिँ कतहूं तुमराख्यो मोहिँघेरी। तुम कारण बैकुंठतजतहौं जनमलेत ब्रजआय। वृन्दाबनराधा संगगोपी यह न बिसारेउजाय। तुम अन्तरअन्तर कहभाषति एकप्राणद्वै देह। क्यों राधा ब्रजबसे बिसारी सुमिरि पुरातन नेह। अबघरजाहु दानमैंपायो लेखोकियो न जाई। सूरश्याम हँसिहँसि युवतिनसों ऐसी कहत बनाई १४९ ॥ रागनटनारायण ॥ घरतन मनहिँ बिनानहिँजात। आपुहँसि हँसि कहतहौजू चतुरईकी बात। तनहिपरहै मनैराजा जोइकरै सोइ

होय। कहौघर हमजाहिँकैसे मनखरेउ तुमगोय। नयनश्रवणनिचोर सुधिबुधि रहे सर्नहिँ लुभाय। जाहिँ अवहोत नहिँलै घरपरत नाहिँन पाय। प्रीतिकरि दुविधा करीकृत तुमहिँ जान्योनाथ। सूरके प्रभु दीजिये मनजाय घरलों साथ १५० ॥ रागकान्हरो ॥ मनभीतर है बास हमारो। हमकोलैकरितुमहिँ छिपायो कहाकहति यहदोय तुम्हारो। अजहूं कहौरहैं हरिअनतहि तुमअपनो मनलेहु। अबपछितानी लोकलाज डरहमहिँ छांड़िलेदेहु। घरतीहोय जाहिते अपनी ताको कीजै त्याज। धोखेदियो बासमन भीतर अब समुझे भइलाज। मनदीन्हों मोको तबलीन्हों मनलेहों मैं जाय। सूरश्याम ऐसीजिनिकहिये हम यह कहोसुभाय १५१ तुमहिँबिना मनधृग अरु धृगघर। तुमहिँबिना धृगधृग मातापितु धृगधृग कुलकी कानि लाज डर। धृग सुतपति धृग जीवन जगको धृग तुम बिन संसार। धृग निशि द्योसपहर घरी पल धृग यह कहिये नन्दकुमार। धृग धृग श्रवण कथा बिनहरिकी धृग लोचन बिनरूप। सूरदास प्रभुतुम बिनुघरज्यों बनभीतर के कूप १५२ ॥

अथ बड़ी दानलीला ॥

रागबिलावल ॥ सुनि तमचुरकोशोर द्योसभयो जागरी। नवसतसाजि शृङ्गारचलीं नवनागरी ॥ ध्रुव ॥ नवसत साजिशृङ्गार अंगपाटम्बरसोहै। एकतेएक बिचित्ररूप त्रिभुवन मनमोहै। इन्द्रावृन्दा राधिकाश्यामा कामानारि। ललिताअरु चन्द्रावलीहो सखिनमध्य सुकुमारि १ कोऊ दूध कोउदही महेउलै चली सयानी। कोउमटुकी कोउमाटभरी नवनीत मथानी। गृह गृहते सबनिकसि चलींजुरीं यमुनतटजाय। सबनि हर्ष मनमें कियोहो उठींश्याम गुणगाय २ यहसुनि नन्दकुमार सैनदै सखाबुलाये। मनहर्षित भयेआपु जाय सबग्वाल जगाये। सैन बैनदै सांवरे राखे द्रुमन चढ़ाय। और सखा कछु संग लैहो रोंकिरहे मग जाय ३ एक सखी अवलोकि तबहिँ सब अली बुलाई। यहि बन में यकबार लूटि हम लईकन्हाई। तनक फेरि फिरिआइये अपने सुखहि बिलास। यह झगरो सुनिहोय गो हो गोकुल में उपहास ४ उलटि चलीं जब सखी तहाँ कोउ जान न पावै। रोंकिरहे सब सखा और बातनिबिरमावै सुबल सखा उठि बोलियो तुम ग्वालिनिहहरियोरा।

कैसे बात दुराति है हो तुम उनके संयोग ५ किनहुं शृङ्ग कोउ बेणु
कोऊबनपत्र बजाये। छांड़ि छांड़ि द्रुमडार कूदिधरणी धँसिधाये।
सखिनमध्य इतराधिका सखनमध्यबलबीर। झगरोठान्यो दानकोहों
कालिन्दीकेतीर ६ कहतनन्दलाल लाड़िले। देनागारि दधिदान कान्ह
ठाढ़े वृन्दाबन। औरसखा हरिसंग बच्छचारत अरुगोधन। वैबड़ेनंद
के लाड़िले तुमवृषभान दुलारि। दहेउ महेउके कारणो होकतहिब-
ढ़ावति रारि ७ कहति ब्रजनागरी। माँगे गोरसलेहु कान्ह हमसोंलै
खाहू। ऐसे ढोठेग्वाल कान्ह बरजत नाहिँकाहू। यहमग गोरस बेंचते
दिनप्रति आवनजान। हमहिँछाप दिखरावहु तुमकापर पहिरेउदान ८
कहत नंदलाड़िले। इतेमान सतराति ग्वारिहम जानि न पाये। अन
उत्तरकी खोरिबैनकत कहति कठाये। इतनी हमसोंको कहै या वृ-
न्दाबन बीच। पुहुमिमाट ढरकायहों तो मचैदहीकी कीच ९ कहति
ब्रजनागरी। अहोकन्हैया ढोठआहि तुम अजहूँबारे। गायचरावन
जातभये कबते अधिकारे। मात पिता जैसेचले तैसे चलिये आपु। क-
ठिन कंस मथुराबसे होको कहिलेय संतापु १० कहत नंदलाड़िले।
कहै न जाय उताल जहाँभूपाल तिहारो। होंवृन्दाबन चन्दकहाकरि
करै हमरो। शेषसहस फणनाथियो सुरपति कियोनिरंस। अनिल
पानकियो साँवरे हो केतक अपुरोकंस ११ कहति ब्रजनागरी। जाके
तुम सुकुमारताहि हमनीकेजानैं। जोपूछौ सतिभाव आदि अद्यावधि
भानैं। बातनिबड़े न हूजिये सुनहु श्याम उतपाति। गर्भसाटि यशुदा
कियो हो तब तुम आये राति १२ कहत नंदलाड़िले। सुरी ग्वारि मैं
मत्तकहतिकत बचन अनेरे। कबहरि बालकभये गर्भकब लियेबसेरे।
असुरभारपुहुमी भयो विधि कीन्हें ये ख्याल। कमल कोश अलि
भोर ये त्योंहीं तुम भोरये गोपाल १३ कहति ब्रजनागरी। तुमभोर
ये हौ नंद कहत हैं तुमसों ढोटा। दधि ओदन के काज देहधरि आये
छोटा। गढ़ि गढ़ि छोलहु रावरे भलो बनति है श्याम। ऐसी बातें
कहि कहि होभुरवत बनमें बाम १४ कहतनंद लाड़िले। जौं प्रभुदेहन
धरै दीनखलकोन उधारै। कंसकेश को गहिबिघन को कोटिक टारै।
कहानिगम कहिध्यावते कह मुनिजन धरते ध्यान। दरश परश बिनु

नाम गुणाको पावैपदनिर्बान १५ कहति ब्रज नागरी। जोदेदरशअस्त
परश नाम गुणाकेलि कन्हाई। तुम निरभय पददेत दियेहैं वेदवताई।
योग युगति तप ध्यावहीं अनगन दीनदयाल। जलतरंगज्यों मीनगति
हो बंधेकरम के जाल १६ कहत नन्दलाडिले। जटाभस्म तनदहै वृ-
थाकरि कर्म बंधावै। पुहुमि प्रदक्षिणा देहिगुफावसि मोहिं न पावै।
तजिअभिमानजे गावहीं गदगद गिरा प्रकाश। तासों मगनहों ग्वा-
लिनी होतेहि घटमेरोवास१७कहति व्रजनागरी। जोपैचांडिलेश्याम
करत उपहास घनेरे। हमअहीर गृहनागरी लोकलाजकेजेरे। तादिन
हमभईबावरी दियो कंठतेहार। तबते घरघेरा चल्योहोश्याम तुम्हारे
जार १८ कहत नंदलाडिले। सखा सबनि मिलिकहेउ ग्वारि यकबात
सुनावै। तीतन ज्योतिसुभाव रूप उपमाकोपावै। गुप्तप्रीति बिधना-
करी रसिक सांवरे योग। यहसंयोग सुनि ग्वालिनी हाम्यावे हँसैंगे
लोग १९ कहत व्रजनागरी। ऐसीबातें कान्ह कहत हम सों काहेते।
चोरीखाते छांछ नयन भरिलेतगाहेते। मुख ऊपर कहआनिये अन
ऊपरकी खोरि। जब यशुमति ऊखल बांध्योहो तबहम दीनों छोरि
२० कहत नंदलाडिले। बालक रूप अजान कहा काहु पहिंचानै।
अनउत्तरकोउ कहैभली अनभली न मानै। वे दिन समझहु ग्वालिनी
साखियमुन कोपानि। सबनि हहानोंसों कियो जबबसनदुरायेआनि।
२१ कहति व्रजनागरी। बहुत भयेहो ढीठदेत मुखऊपर गारी। जोहि
छाजै तेहि कहो कहांकोउ दासि तुम्हारी। तुमसों अब दधि कारने
कौनबढ़ावैरारि। यावन में इतरातहो रोंकिपराई नारि २२ कहत
नंद लाडिले। लियो उपरैनाछीनिदूरिडारनिअटकायो। दयो सखन
दधिबांटिमाटपुहमीं ढरकायो। पटपीतांबर सांवरेकरपलासके पात।
हंसत परस्पर ग्वाल सबहो बिमल बिमल दधिखात २३ कहत ब्रज
नागरी। कान्ह बहेरी देहु मही योवन केमाते। बसिये एकहि गांव
कानि राखतहैं ताते। तब न कछू बनिआइहै ह्वै है बिरंचिनिहारि।
इनग्वालनि कोबल देखिहौ जबधरिहैंलाडउतारि २४ कहत नंदला-
ड़िले। गहिअंचल झकझोरितोरि हारावलिडारी। मटुकीलईउतारि
मोरिभुज कंचुकि फारी। गुप्तसेन दे सांवरे कामरि धरीदुराय। वा-

कामरि केकारणो हो अभरण लियो छिंड़ाय २५ कहतब्रजनागरी। झीनी कामरि काज कान्ह ऐसी नहिं लीजे । कांचपोत गिरिजाय नंदघरगयो न पूजे। बिनहीं लीन्हेंआपिऐसी कामरिको तोल। शंख मुंदरिका जाय गिरिहो कान्ह तुम्हारो मोल २६ कहत नंदलाड़िले। शिव बिरंचि सनकादिआदि तिनहूंनहिंजानी। शेषसहसफण थक्यो निगमकीरति न बखानी। तेरीसों सुनि ग्वालिनी जो मेरेमत माहिं। भुवनचतुर्दश देखियेहो वा कामरिकी छाहिं २७ कहत ब्रजनागरी जिनहीं इतो प्रताप गायसोकहति चरावै। परदाराके जायआपु कत लज्जा पावै। घरके बाढ़ेरावरेबातें कहत बनाय। ग्वालन पैलै खात होहो जूंठीछाक छिनाय २८ कहत नंदलाड़िले। धेनुरूपसमदेहु करत कूतूहलन्यारे। गोकुल सुखविलास जानि कोसकै हमारे। यहवृन्दावन ग्वालिनी कित कित अमृत बेलि। तिहूं लोकमें जाइये हो मेरी रसकी केलि २९ कहति ब्रजनागरी। अबलों कीन्हीं कानि कान्ह अबतुमसोंलरिहैं। अधरनयन रसकोप बिरंचि अनतै उरकरिहैं। मों आगेको छोहरा औत्योचाहै मोहिं। काकेबल इतरातहो काढ़ैहौंगी नखशिखतोहिं ३० कहतनन्द लाड़िले। चितैबदनमुसुकात हाथदधि पूरण दोना। इत सुन्दरी बिचित्र उतहि घनश्याम सलोना। अतितामस तोहिं ग्वारिनी मैं सबजानत आदि। खोटी करनी जाहिकी हो सोइकरै उपादि ३१ कहतिब्रज नागरी। तोहिं न छांड़ों कान्ह दानतुमको नहिंदैहों। बिना कहे ब्रजलोग कहाकाहू पतिऐहों। लाजबही तुमआवहीं बोलत जबसतराय। कतहुं कंस सुनि पावई हो है बाहत फिरहुगे पाय३२कहतनन्द लाड़िले। सुनतहंसे नन्दलाल ग्वालिजिय तामसमान्यों। सींचतअमृतबैनकोप करयत्ननहिं जान्यों। कहां बसतिहै बावरो सुरीपर सुखगाँवारि। ब्रजबासी कहजान हीं हो तामसको ब्योहारि ३३ कहति ब्रजनागरी। जननी जनि परिहरी तात कुलधर्म नशायो। गोपराय केगेहपुत्र ह्वै नामधरायो। इतनेते इतना कियो खोटीकांछ पिवाय। तुमहिं देयनहिं लाड़िले हो ओछो गुण क्यों जाय३४कहत नन्दलाड़िले। अविगत अगमअपार आदि नाहीं अविनाशी। परम पुरुष अवतार है मायाजाकी दासी। तुमहिं मिले-

ओछे भये कहा रही करिमौन। तुमहरिआगे न्यावहै हो हैमहं ओछो कौन ३५ कहतब्रज नागरी। हमहिं ओछाई भई जबहिं तुमको प्रति पाल्यो। तुमपरेसबभांतिमातपितुसंकट घाल्यो। कहाचलत उपरावहै अजहूं खिर्सान गात। कंससोंहदै पूजिजै हो जिनिपटकेहै सात ३६ कहत नन्दलाड़िले। कंसकेश सुनिगहौं पुहुमि को भार उतारौं। उग्रसेनशिरछत्र चमर अपने करढारौं मथुरा सुरनिबसायहौं असुरकरौं यमहाथ। दनुजदमन बिरदावली हौंसांचो त्रिभुवननाथ३७कहतिब्रज नागरी। तब न कंस निग्रह्यो पुहुमिको भारउतारेउ। चोरीजाये मातु गोद गोकुल पशुचारेउ। अबबहुत बनिआवती दूधदहीके मात। जोऐसे बलवन्त हो तो मथुराकाढ्हेन जात ३८ कहत नन्दलाड़िले। जो जैहौं मधुपुरी बहुरि गोकुल नहिं ऐहौं। यहअपनों परताप नन्द यशुमतिहि सुनैहौं। बचनलागिमैंहूं कियो यशुमतिको पयपान। मोहिग्वाल जनि जानहू हो ग्वालिनि सुनहु निदान ३९ कहति ब्रजनागरी॥ तब दधि आगेधरेउ कान्हलीजे जो भावै। खायजाय मंजार काजसकौ नहिंआवै। हमअनखौथा बातको लेत दानकोनांउ। सहजभाव नित लाड़िले हो बसत एकही गांउ४०कहत नन्दलाड़िले॥ अभरणादियो मँगाय कियो गोपिन मनभायो। हिलिमिलि बढ़ोबिलास आपुहरि माठउठायो। नंदनन्दन छबिदेखिकै गोपिन बारेउ प्राण। कुंज केलि मनमेंबसीहो अतिगाई सूरसुजान ४१॥ राग बिलावल॥ जबहिं कान्हयह बात सुनाई। ब्रजयुवती अतिगईं मुरझाई। कंससंहारण मथुराजैहौं। बहुरोफिरिब्रजको नहिंऐहौं। देवकिगर्भबासहौं लीन्हों। तुमको गोकुल दर्शनदीन्हौं। नन्दयशोदा अति तपकीन्हौं। मोसों पुत्र मांगितब लीन्हौं। मोसों दूजो और न कोई। हरता करता मैंहीं सोई। तुमसों सुतमैं पानकराऊं। यह तुमसेमैं मांगे पाऊं। मोसों सुत तुमको मैं दैहौं। मथुराजन्मि गोकुलहि ऐहौं। नन्दयशोदा बदन बँधाये। ताकारण देहीधरिआये। यहबाणीसुनि ग्वालि झुरानी। मीनभयेमानो बिनुपानी। यहैकथा तबगर्गसुनाई। सोइआपु कहतरीमाई। नरदेही करिमोहिं न जानो। ब्रह्मरूप करि मोको मानो। षोड़शवर्षमिलैसुख करिहौं। मथुराजाय देव उद्धरिहौं। केशगहौं अरिकंसपछारों। असुर

कड़ोरियमुनमहँ डारों। रंगभूमिकरि मल्लनिमारों। प्रबलकुबलियादंत उखारों सुनहुनारिहरि मुखकीबानी। यहसुनिसुनि तरुणी अकुलानी। तनमनधन इनपर सबवारहुं। योबनदान देहुं रिस पारहुं। षोड़श बरस गये धों जैहैं। ब्रजते जाय मथुपुरी रैहैं। राजाउग्रसेन को करि हैं। कनकदण्डआपुन करधरिहैं। मातपिताबसुदेव देवकी। यशुमति धाय कहतहै इनकी। अब तिनके बंधन मोचहिंगे। दरश बिना पुनि हम लोचहिंगे। मथुरानारिनको सुखदैहैं। तबघटप्राणकहो बसरैहैं। कहत सखीयहबातसयानी। जानतिनहिं तुमकछुअयानी। योबनदान लेहिंगेतुमसों। चतुराई मिलवतहैं हमसों। इनकेगांस कहारीजानें। इनकी कही सकाजिनि मानों। जोचाहै सो दीजैइनको। ज्यों बिन देखे रहत न जिनको। आपुआपु यहबात बिचारों। नारि नारि मन धीरज धारों। आगेधरो दूधदधिमाखन। प्रथमहिं यहकीजैसंभाषन। बड़ेचतुर तुम कुंवर कन्हाई। तरुणि सबनि कहिअहै सुनाई। जानी बाततुम्हारे मनकी। दूरिनकीजै यहरिस तनकी। सबनि धखो दधि माखन आगे। लेहुसबै तुमबिनहींमांगे। तुम रिस करत देखिसुखपावैं। याते बारम्बार खिझावैं। तन योबन धन अर्पण कीन्हों। मनदैमन हरिको सुखदीन्हों। सुभग पात दोनाले हाथनि। बैठेसखा श्यामयक साथनि। मोहन खातखवावततनारी। मांगिलेत दधिगिरिवर धारी। आपुहि धन्यकहत ब्रजनारी। रुचिकरि मांगिखात बनवारी। और खाहु मोहनदधिदानी। यह कहि कहितरुणी मुसुकानी। सुखदीन्हों हरि अंतर्यामी। ब्रजयुवतिन के पूरण कामी। देखतरूप थकित ब्रज नारी। देहगेहकीसुधिहु बिसारी। सूरश्याम सबकेहितकारी। कहेउ जाहुघर घोषकुमारी १५४॥ रागरामकली॥ युवती ब्रजघरजानिबिचारति। कबहुं मटुकी लेतशीशपर कबहुं धरणि फिरिधारति। देखतश्याम सखासब देखत चित्तेरहे ब्रजनारि। रीती मटुकिन में कछु नाहीं सकुची मनहिं बिचारि। तब हँसिबोले श्याम जाहुघर तुमको भई अबार। सकुचति दान पाछिले को तुममैं करिहौं निरवार। यह कहि के हरि जबहिं सिधारे युवतिनदान मनाई। सूरश्याम नागर नारिनके चितलैगये चुराई १५५॥

अथ दानलीला का प्रस्ताव ॥

रागमल्हिया ॥ रीतो मटुकी शीशलै चलीं घोषकुमारी । एक एक की सुधिनहीं को कैसेनारी । बनहींमें बेंखलिफिरैं घरकीसुधि डारी । लोकवेद कुलकानिकी मर्य्यादा टारी । लेहुलेहुदधि कहतहैं बनशोर पसारी । इमसब थिरकार जानहीं तिनको दैयारी । दूधदहेउ नहिं लेहुरी कहि कहि पचिहारी । कहतसूर घरको नहीं कहां गई दई-मारी १ ॥ रागटोड़ी ॥ याघरमें कोउहैकी नाहीं । बारबार बूझति दृसन को गोरसलै हमजाहीं । आपुहि कहति लेहु नाहीं दधि और दुमनि तरजाति । मिलत परस्पर बिवश देखि तेहि कहति कहा इतराति । ताको कहति आपुसुधि नाहिंन सोपुनि जानतिनाहिं । सूरश्याम रस भरी गोपिका बनमें जोवति ताहि २ ॥ रागबिलावल ॥ रीती मटुकीशीश धरै । बनकीघरकी सुरति न काहू लेहुदही यह कहतफिरै । कबहुँक जाति कुंजभीतरको तहाँ श्यामकी सुरतिकरै । चौंकिपरति कछु तब सुधिआवति जहाँ तहाँसखि सुनतररै । तबयह कहति कहांमैं इनसों भ्रमि भ्रमि बनमें दृथामरै । सूरश्याम के रसपुनि छाकति वैसेहि ढंग बहुरि न ढरै ३ ॥ रागनट ॥ तरुणी श्यामरस मतवारि । प्रथम यौवनरस चढ़ायो अतिहिभई कुमारि । दूध नहिँ दधि नहीं माखन नहीं रीतो माट । महारस अङ्ग अङ्ग पूरण कहांघर कहँबाट । मात पित गुरुजन कहांको कौनपतिको नारि । सूरप्रभुके प्रेमपूरण छकिरहीं ब्रजना-रि ४ ॥ राग रामकली ॥ गोरस लेहुरी कोउआय । द्रुमन सों यह कहति डोलति कौनलेहि बुलाय । कबहुँ बंशीबट निकटजुरि होतठाढ़ी धाय । लेहु गोरसदान मोहन कहां रहे छिपाय । डरन तुम्हरे जाति नाहिंन लेत दह्यो छँड़ाय । माँगिलीजै दानअपनो कहतिहैं समुझाय । आइ हौ पुनि रिसकरत हरिदहेउ देतबहाय । एक एकहिबात बूझतिकहां गये कन्हाय । भईरस उन्मत्तगोपी तनकिसुधि बिसराय । सूरप्रभु के रङ्गराची जियगयो भरमाय ५ ॥ रागजैतश्री ॥ बैठिगईंमटुकी सबधरिकै । यहजानत अबहीं हैं आवत ग्वालसखा संग हरिकै । आँचरसों दधि माट दुरावति दृष्टिगई तहँ परिकै । सबनि मटुकिया रीतीदेखी तरु-णीगईं भभरिकै । कहिकहि उठीं जहाँतहँ सबमिलि गोरसगयो कहूँ

ढरिकै। कोउकोउ कहति श्याम ढरकायो जानदेहुरी जरिकै। यहि मारग कोऊजनि आवहु रिसकरि चलीं डगरिकै। सूरसुरतितनकी कछुआई उतरतकाम लहरिकै ६॥ रागनट॥ चक्रतभई घोषकुमारि। हम नहीं घरगईं तबतेरहीं बिचारि बिचारि। घरहिते हमप्रातआईं सकुचि बदन निहारि। कछु हँसति कछुडरति गुरुजन देतह्वैहैं गारि। जोभई सोभई हमकहँ रहीं इतनीनारि। सखा सँगमिलि खायदधि तबहीं गये बनवारि। यहांलोंकी बात जानत यह अचम्भव भारि। यहै जानति सूरकेप्रभु गयेशिर कछुडारि ७॥ रागधनाश्री॥ श्यामबिना यह कौनकरै। चितवतही मोहनी लगावत नेकहँसनिपर मनहिं हरै। रोंकिरह्यो प्रातहि गहि मारग लेखो करि दधिदान लियो। तनकी सुधि तबहींते भूली कछु पढ़िकै शिरनाय दियो। मनके करत मनोरथ पूरण चतुर नारि यहि भाँति कहै। सूरश्याम मनहरो हमारो तेहिबिनु कहि कैसे निबहै ८ मनहरिसों तन घरहि चलावत। ज्यों गजमत्त जाल अंकुशकर घर गुरुजन सुधि आवत। हरि रसरूप यहै मदआवत डरडारेउ जुमहावत। गेहनेह बन्धन पगतोरेउ प्रेम सरोवर धावत। रोमावली शुण्डिबिच कुचमनों कुम्भस्थल छबिपावत। सूरश्याम केहरि सुनिकै योबन गजदाप न पावन ९ युवति गईं घर नेकु न भावत। मात पिता गुरुजन पूछत कछु औरै और बतावत। गारी देत सुनतनहिं नेकहु श्रवणशब्द हरिपूरे। नयन नहीं देखत काहूको जोकहुँ होहि अधूरे। बचन कहति हरिहीके गुणको उतहीबचन चलावै। सूरश्याम बिनु और न भावै कोउ कितनो समुझावै १०॥ राग सोरठ॥ लोक सकुच कुलकानि तजी। जैसे नदी सिंधुको धावै वैसेहि श्यामभजी। मातपिता बहुत्रास दिखायो नेकु न डरीलजी। हारिमानि बैठेनहिं लागत बहुतै बुद्धिसजी। मानत नहीं लोक मर्य्यादा हरिके रङ्ग मजी। सूरश्यामको मिली ग्वालिनी चूनहरद ज्यों रङ्गरजी ११ बारबार जननी समुझावति। काहेको तुम जहँ तहँ डोलति हमको अतिहि लजावति। अपने कुलकी खबरि करोधों सकुचनहीं जिय पावति। दधिबेंचहु घरसूधे आवहु काहे भेर लगावति। यहसुनिके मन हर्ष बढ़ावति तबयकबुद्धि बनावति। सुनमैया दधिलाद लुढ़ायो तेहि

डरबात न आवति। जानदेहु कितनो दधिडारेउ ऐसे तब न सुनावति। सुनहुँसूर यहबात डरानी मातडरलै लावति १२ ॥ रागसारंग ॥ नेक नहीं मनघरसों लागत। पितामातु गुरुजन परमोधत नीके बचन बाणसम लागत। तिनको धृगधृग कहत मनहिँमन इनको बनै भलेही त्यागत। श्यामबिमुख नरनारि वृथासब कैसेमन इनसों अनुरागत। इनको बदन प्रात दरशोंजिनि बारबार बिधिसों यहमाँगत। यहतन सूरश्याम को अर्प्यों नेकटरत नहिँ सोवत जागत १३ ॥ रागधनाश्री ॥ पलक ओट नहिँ होत कन्हाई। घरगुरुजन बहुतौबिधि त्रासत लाजकरावति लाज न आई। नैन जहाँ दरशन हरि अटके बैन थके सुनि बचन सुहाई। रसना औरकछू नहिँ भाषति श्याम श्याम रटयहै लगाई। चितचंचल संगहि सँग डोलत लोकलाज मर्याद मिटाई। मन हरिलियो सूरप्रभु तबहीं ता वपुरेकी कहाबसाई १४ ॥ रागबिलावल ॥ चलींप्रातही गोपिका मटुकिनलै गोरस। नैन श्रवण मन चित्त बुद्धि ये नहिँ काहू बश। तनुलीन्हें डोलत फिरैं रसना अटक्यो यश। गोरसनाम न आवही को लेहै हरिरस। जीवपरेउ या ख्यालमें अरुणयो दिशा दस। बूझैजाय खग वृन्दज्यों पियछबि लटकनि लस। छाँड़हु दिये उड़त नहीं कीन्हें पावतस। सूरदास प्रभु भौंहकी मटकनि फाँसी गस १५ रागकान्हरो ॥ दधिबेंचन ब्रजग्वालिनफिरैं। गोरसलेन बुलावत कोऊताकी सुधि नेकहु न करैं। उनकी बात सुनत नहिँ श्रवणन कहति कहा ये घरनिजरैं। दूधदही यहांलेत न कोऊ प्रातहिते शिरलियेररैं। बोलि उठति पुनिलेहीं गोपालहि घर घर लोकलाज निदरैं। सूरश्याम को रूप महारस जाकेबल काहू न डरैं १६ गोरसको निजनाम भुलायो। लेहुलेहु कोऊ गोपालहि गलिन गलिन यहशोर लगायो। कोउकहै श्याम कृष्णहिं काहूं आजु दरश नाहीं हम पायो। जाके सुधि तनकी कछु आवति लेहुदही कहि तिन्हहिँ सुनायो। यह कहि उठति दान माँगत हरि काहूभई कि तुमहिँ चलायो। सुनहुसूर तरुणी योबनमद तापर श्याम महारस खायो १७ ग्वालिफिरति बेहालहि सों। दधि मटुकी शिरलीन्हें डोलति रसना रटगोपालहिसों। गेह नेह सुधि देह बिसरेउ हरि ख्यालहि सों। श्याम धाम निज बास रच्यो

मन रहित भई जंजालहि सों । छलकत तक्रउफनि अङ्ग आवत नहिँ जानति तेहि कालहिसों। सूरदास चितठौर नहींकहुँ मन लाग्यो नंदलालहिसों१८ ॥ रागमलार ॥ कोऊ माईलेहैरी गोपालहि। दधिकोनाम श्यामसुन्दर रस बिसरिगयो ब्रजबालहि। मटुकी शीश फिरति ब्रज बीथिन बोलत बचन रसालहि। उफनत तक्रचहूँदिशि चितवति चित लाग्यो नंदलालहि। हँसति रिसाति बुलावति बरजति देखहु उलटी चालहि। सूरश्याम बिनु ग्रवर न भावत या बिरहिनि बेहालहि १९ ॥ रागसुघराई ॥ छोंडी मटुकिया मधुरलै चलीरी गोरसबेचन रसाल। हरबराय उठिआइ प्रातते बिथुरी अलक अरु बसन भरगाजे तैसिय सोहति कुभिलानी माल। गेह नेह सुधि नेक न आवति मोहिरही तजि भुवन जंजाल। औरै कहति और कहि आवत मनमोहन के परी सुख्याल। जोई जोई बूझतिहैरी कहाहै यामें कहति फिरति कोउलेहु गोपाल। तन मनकी सब सुरत भुलानी रटना लगी कृष्णारमाल। सूरदासप्रभुके रसबशभई चतुर ग्वालिनी तनमन गतिमति भईबेहाल२० रागकान्हरो ॥ दधि मटुकी शिर लिये ग्वालिनी कान्ह कान्ह करती डोलैरी। बिवश भई तनु न सम्हारैरी गोरस सुधि बिसरिगई आपु बिकानी बिनुमोलैरी। जोइजोइ पूछत यामेंहैरी कहा लेहुलेहु करति फिरति टोल टोलैरी। सूरदासप्रभु के रसबशभईं ग्वालिन बिरहाबश तनुगति भईलैरी २१ ॥ रागधनाश्री ॥ बेंचतही दधि ब्रजकी खोरी। शिर को भारसुरत कहिआवत श्यामश्याम टेरत भइभोरी। घरघरफिरति गोपालहि बेंचति मगनभईं सबग्वालि किशोरी। सुन्दर बदन निहारन कारन अन्तरलगी सुरतिकी डोरी। ठाढ़ी रहति बिथकि मारग में माँझहाट मटुकी शिरफोरी। सूरदासप्रभु रसिक शिरोमणि चित चिन्तामणि लियो अजोरी २२ ॥ रागबिलावल ॥ नरनारी सब बूझति आई दहीमहो·मटुकी शिरलीन्हे बोलतिहौ गोपाल सुनाई। हमहिँ कहौ तुम करत कहायह फिरतहि प्रातहिते हौआई। गृहदारा कहुँ है की नाहीं पिता मातु पति बंधु न भाई। इतते उत उततेइत आवति बिधि मर्य्यादा सबैमिटाई। सूरश्याम मनहरेउ तुम्हारो हम जानी यह बात बनाई २३ ॥ रागधनाश्री ॥ कहति नन्दघर मोहिँ बतावहु। द्वारहि

नांभवानयकवृभांति वारवारकहे कहांदेखावहु। येहीगांव किधौंऔरै कहुं जहां महरकोगेहु। बहुतकूरतेमैं आईहौं कहिकाहिन यशलेहु। ग्वालिनीसंभ्रमभई ग्वालिनी छारेहीपरठाढ़ी। सूरदास स्वामीसोंअटकी प्रीतिप्रकट अतिबाढ़ी २४ ॥ राग रामकली। चर्चरी॥ ग्वालिनी नन्दद्वारे नन्दगेह बूझै। इतहीतेजातिउतउतहीते फिरतिइत निकरहूँजातिनहिं नेकसूझै। भई बेहाल ब्रजबाल नंदलालहित अर्पितनमन सबै तिनहिं कीन्हों। लोकलज्जा तजी लाजदेखत लजी श्यामकोभजी कछुडर न कीन्हों। भूलिगयी दधिनाम कहति लेहोश्याम नहींसुधिधामकहूंहै कि नाहीं। सूरप्रभुकोमिलीमेटि भलीअनभलों मेटि चून हरदीरंगदेह काहीं २५ तब यकसखी प्रीतमकहति। प्रेम ऐसे प्रकट कीन्हों धीर काहेनगहति। ब्रजघरन उपहासजहँतहँ समुझि मनकिनरहति। बात मेरी सुनतनाहिंन कहति निन्दा सहति। मातुपितु गुरुजननि जान्यों भलीखोई महति। सूरप्रभुको ध्यानचितधरि अतिहिकाहेवहति २६ राग धनाश्री॥ आपुकहावति बड़ीसयानी। अहतुकहति सबनि सों हँसि हँसिअबतू प्रकटहिभईदिवानी। कहांगईचतुराईतेरी अतिहीकाहेभई अयानी। गुप्तप्रीतिप्रकटतेकीन्हीं सुनतकछू घरघरकीबानी। एकहि बेर तजीमर्यादा मातपिता गुरुजनहिंभुलानी। सुनहुसूर ऐसीनबूझिये गोरसघरे मटुकीबिततानी२७॥ राग नट॥ सुनुरीग्वालिनि मुग्धगँवारि। श्यामसोंहित भलेकीन्हों अबकोसकै उबारि। छ्याबनकह प्रकटकी जे दियोताहिउघारि। अजहुंकाहेन समुझिदेखत कह्योसुनिरीनारि। ओछिबुधितें करीमजनी लाजदीन्हींडारि। लाजआवत मोहिंसुनिरी तोहिंकहति गँवारि। ख्वाबनाहिंन आवईमुख कहतिहोंजु पुकारि। सूरप्रभुको पाइकेयह ज्ञानहृदय बिचारि २८॥ राग कान्हरो॥ कछुकेहै की मौनहिं रैहै। कहाकहतहैं तोसों तबते ताको ज्वाब कछू मोहिं देहै। सुनिहैंमातपिता लोगनिमुख यहलीला उनसबनिजनैहै। प्रातहि ते आईघरिबेचन घरहिआजु जैहै किनजैहै। मेरोकहेउ मानिहैनाहीं ऐसेहिभ्रमिभ्रमि धौंबितैहै। मुखतेबोलि सुनों तेरीबानी भलीबुरी कैधौं कैहै। गुप्तप्रीति काहेनकरि हरि सों प्रकटकिये कछुनफाब-ह्वैहै। सूरश्यामसों प्रीति निरंतर लाजकिये अन्तरकछुहैहै२९ कहा

कहति तू मोहिंरीमाई । नँदनन्दन मनहरिलियोमेरो तबतेमोको कछु नसोहाई । अबलों नहिंजानत मैंकोहों कबतेंतू मेरेढिग आई । कहां गेह कहँमातपिताहैं कहांसजन गुरुजन कहँभाई । । कैसी लाज कानि है कैसी कहाकहतिहै ह्वैरिसहाई । अबतो सूर भजो नन्दलालहि की लघुता की होयबड़ाई ३० ॥ राग धनाश्री ॥ बारबार मोहिं कहा सुनावति । नेकहुंनाहिं टरतहिरदयते बहुतभांति मनकोसमुझावति । तूयगा कहादेति मोहिंसजनी तूतो बड़ीसुजान । अपनीसी मैं बहुतेकीन्हींरहत न तेरी आन । लोचन और न देखत काहू और सुनत नहिं कान । सूरश्यामको बेगिमिलावहु कहतरहतघटप्रान ३१ ॥ राग नट ॥ मेरेकहे में कोउ नाहिं । कहा कहूं कछु कहिनहिंआवै नेकहु नाहिंडराहिं । नयनये हरिदरशलोभे श्रवणशब्दरसाल । प्रथमहीं मन गयो तनतजि तबभईबेहाल । इन्द्रियनिपर भूपमनहै सबनिलियेबुलाय । सूरप्रभु को मिले सबयेमोहिंकहि गयेवाय ३२ ॥ राग गौरी ॥ कहाकरौं मनहींथिर नाहीं । तुमोसों यहकहत भलीरी अपनोचित मोहिंदेतिनहीं । नयन रूप अटकेनहिं आवत श्रवणरहेसुनि बाततहीं । इन्द्रीवायमिलीं सब उनके तनमेंजीवरहेउसंगहीं । मेरेहाथ नहींयेकोऊ घटलीन्हें यकरही महीं । सूरश्याम सँगतेकहुंटारत आनिदेहु जो मोहिंतहीं ३३ ॥ रागसारंग॥ बिकानी हरिमुखकी मुसकानी । परवश भई फिरत संग निशि दिन सहजपरी यहबानी । नयननिरखि बसीठी कीन्हों मनमिलयो पय पानी । गहिरतिनाथ लाज निजपुरते हरिकोसौंपी आनी । सुनिसखि सुमुखि नन्दनन्दनकी दासी सबजगजानी । जोइजोइ कहत करतसोई कृत आयसु माथेमानी । गई ज्ञाति अभिमान मोह मद पति परिजन पहिंचानी । सूरसिन्धु सरितामिलिजैसे मनसाबूंदहिरानी ३४ रागगौरी॥ अबतो प्रकटभई जगजानी । वामोहनसों प्रीति निरंतर क्योंकर हैगो छानी । कहाकरों सुन्दरसूरतिइन नयननमांझसमानी । निकसतनहीं बहुतपचिहारी रोमरोम अरुझानी । अबकैसे निवीरि जातिहै मिले दुग्ध ज्योंपानी । सूरदासप्रभु अन्तर्यामी उरअन्तरकोजानी ३५ कहा करैगो कोऊमेरो । हौंअपने पतिव्रतहि न टरिहौं जगउपहासकरैबहु तेरो । कोउकिनिलै पाछे मुखमोरै कोउकहै अवराखनायनटेरो । हौं

मतिकुशल नाहिंनेकाचो हरिसँगछांडि फिरों भवफेरो। अबतो जिय ऐसिय बनिआई श्यामबासमें करोंबमेरो। तिहिरङ्ग सूर रहेउ मिलि कैसन होय न श्वेतअरुरा फिरि पेरो ३६ ॥ रागधनाश्री ॥ माईरी गोविंदा सों प्रीति करत तबहीं काहेन हटकोरी। यह तो अब बात फैली भई कुंजवटकोरी। घरघर नितयहै घेरबागी घट घटकी। मैं तो यह सबै सही लोकलाज पटकी। मदके हस्ती समान फिरत प्रेम लटकी। खेलतमें चूकिजात होत कलानटकी। जल रजु मिलिगाँठि परी रसना हरिरटकी। छोरेते नहीं छुटति कयुकबार भटकी। मेटे क्योंहीं न मिटतिछाप परीटटकी। सूरदास प्रभुकीछवि हृदयमाँभ अटकी ३७ राग आसावरी ॥ मैं अपनो मनहरिसों जोरेउ। हरिसोंजोरि सबनिसों तोरेउ। नाचनचौ तब घूंघट छोरेउ। आगे पाछे नीके हेरेउ। लोकलाज सब फटकि पछोरेउ। माँभबाट मटुकीशिर फोरेउ। कहिकहिकासों करति निहोरेउ। कहाभयो कोऊमुख मोरेउ। सूरदास प्रभुसों चित जोरेउ। लोकवन्द तिनकासों तोरेउ ३८ सखीरी श्यामसों मनमान्यों। नीकेकरि चित कमलनयनसों घालि एकठोसान्यो। लोकलाज उपहास न मान्यो न्योति आपनेहिँ आन्यो। यागोबिन्द नन्दके कारण बैर सबनसों ठान्यो। अबक्यों जाति निबेरिसखीरी मिल्यो एक पय पान्यो। सूरदासप्रभु मेरेजीवनहैं.पहिलेहि पहिँचान्यो ३९ नन्दलाल सों मेरो मनमान्यो कहाकरैगो कोईरी। मैंतो चरणकमल लपटानी जोभावै सो होईरी। बापरिसाय माय घरमारे हँसे बिराने लोईरी। अब तो श्यामहिँ सों रतिबाढ़ी बिधनारचेउ संजोईरी। जातिमहति पतिजाइ न मेरी अरुपरलोक नशाईरी। गिरिधरवर मैं नेक न छाड़ों मिलों निशान बजाईरी। बहुरि कबहिँ यहतनु धरि येहो कहँ पुनि श्रीबनवारीरी। सूरदास स्वामीकेऊपर यहतनुडारौं वारीरी ४० ॥ राग सारंग ॥ करनदे लोगनको उपहास। मन क्रम बचन नन्दनन्दनको नेक न छाड़ौंपास। सब मधुवनको लोगचिकनियां मेरेभाये घास। अबतो यहै बसीरी माई नहिं मानों गुरुत्रास। कैसे रहेउ परैरी सजनी एक गाँवको वास। श्यामसिलनकी प्रीति सखीरी जानत सूरजदास ४१ रामरामकली ॥ एकगाँवको बास धीरजकैसेके धरों। लोचन मधुप अटक

नहिँमानत यद्यपि यतनकरौं। ऐसेहीसग नितप्रति आवतहैं हो दधिले निकरौं। पुलकित रोमरोम गद्गद सुरआनँद उमँगिभरौं। पलअन्तर चलिजात कलपवर बिरहा अनल जरौं। सूरसकुचि कुलकानि कहां लगि आरज पथहि डरौं ४२ मेरो मन हरि चितवनि अरुझानो। फेरत कमलद्वार ह्वै निकसे करत सिंगार भुलानो। अरुण अधर दशननि द्युतिराजत मोतनमुरि मुसकानो। उदधि तनयसुत पांतिकमल के बन्दन भुरवे मानो। गहिरस मगन रहति निशि बासर हरि तजि औरन जानो। सूरदास चितभङ्ग होत क्यों जो पशुहिरूप समानो ४३ होंसँग सांवरेके जैहों। होनीहोय होयसो अबहों यश अपयश काहू न डरैहों। कहा रिसायकरै कोउमेरो कछु जो कहै प्राणतिहि दैहों। दैहों त्यागि राखिहों यह व्रतहरि रतिबीजबहुरि कब बैहों। कायह सूरअजिर अवनी तनुतजि अकाश पियभौन समैहों। कायहब्रजबासी क्रीडाजल भजि नँदनन्दन सबसुख लैहों ४४॥ रागधनाश्री॥ तू मेरे हित कहति सहीरी। यहमोकोसुधि भलीदिवाई तनबिसरे मैं बहुत बहीरी। जबते दानलियो हरिहमसों हँसि हँसिरी कछु बात कहीरी। काके घर काके पितुमाता काके तनकी सुरति रहीरी। अब समुझति कछु तेरीबाणी आईहों लैमही दहीरी। सुनहुसूरप्रातहि तेआई यहकहि कहि जियलाज गहीरी ४५ सुनुरीसखी बात इक मेरी। तोसों धरों दुराय काहेको हितुजानहि सब चितकी मेरी। मैं गोरसलिये जाति अकेली कालिहकान्ह बहियां गहिमेरी। हारसहित अंचरागहेउ गाढ़े यक करगही मटुकिया मेरी। तबमैं कहेउ खीझिहरि छांड़हु टूटैगी मोतिन लरमेरी। सूरश्यामऐसे मोहिँरिझई कहाकहति तूमोसों मेरी ४६ तौन गोरसछांड़िदयो। चहुँफल भवतगहेउ शारंगरिपु बाजिधुरा अथयो। अमिय वचनरुचिरचित कपटहठि झगरो फेरिठयो। कुमुदिनप्रफुलित होजिय सकुचति लै मृगचन्द नयो। जानिनिशा शिशु रूप बिलोकत नवल किशोरभयो। तबते सूरनेकनहिँ छूटत मनअपनायलयो ४७॥ रागरामकली॥ यह कहिमौन साध्योरबारि। श्यामरस घटपूरि उछलित बहुत धरेउ सम्हारि। वैसही ढंग बहुरिआईदेहदशा बिसारि। लेहुरी कोउ नंन्दनन्दन कहै पुकारिपुकारि। सखी सो तब

कहति तरी कोकहांकी नारि। नन्दके घरजाहुँ कितहै जहां हैं बन-
वारि। देखिवाको चकृत भइसखि विकल भ्रम गहमारि। सूरश्या-
महिँ कहि सुनाऊं गये गिरकह डारि ४८॥ रागनट॥ सखि अकवांई
हरिपैधाय। तुरतही हरिमिले ताको प्रकट कही सुनाय। नारि यक
अति परमसुन्दरि बरणि कापैजाय। प्रातते गिरधरे मटुकी नन्दघर
भरमाय। लेहुगोपालको कहिदह्योगईभुलाय। सूरप्रभुकहुँमिलेताको
कहति करिचतुराय ४९॥ रागकान्हरो॥ नन्दग्राम को मारग बूझै कोउ
दधिबेचन हारी। सुनहु न श्यामकठिन तनुगोरे विधुबदनी अरुहाटक
हारी। अपयाको सुततांहि बिरंचै ताहिबिरंचि शीशपर धारी। क-
मल कुरङ्ग चलत अरुणा मख राख्यो निकट निषग सँवारी। बलि
मराल शावक तापाछे जावक मुकता चुनत बिसारी। सूरदास प्रभु
कहत बनेनहिँ सुखसम्पति वृषभान दुलारी ५०॥ रागबिलावल॥ शिर
मटुकी मुख मौन गही। भ्रमि भ्रमि बिवश भई नवबाला मनल
कान्हके रसउमही। तनकी सुधि आवति जब मनहीं तबहिँ कहति
कोउलेहु दही। द्वारेआय नन्दके बोलति कान्ह लेहुकिन सरसही।
इत उत ह्वैआवतिफिरि यहँहीमहरि तहांगलिहारिरही। और बुला
वति काहेन हेरति बोलति आनि नन्ददरही। अङ्गअङ्ग यशुमति लेहि
चरची कहाकरति यह ग्वारिवहो। सुनहुँ सूर यह ग्वारि बिवानी
कबकी येही ढंगरही ५१॥ रागरामकली॥ कबकी महेउलिये शिरडोलै।
झूठेही इतउत फिरआवति यहां आनिपैबोलै। मुँहलौंभरी मथनियां
तेरी तोहिँ रहतभइ साँझ। जानति हौं गोरसको लैवो याहीबाखरि
माँझ। इततो आइबात सुनुमेरी काहेबिलग जिनिमानै। तेरेघरमेंतुही
सयानी और बेंचिनहिँ जानै। भ्रमतहि भ्रमत भरमिगइ ग्वारिनिबि-
कलभई बेहाल। सूरदासप्रभु अन्तर्यामी आयमिले गोपाल ५२ भई
मन माधवकी अवसेरि। मौनधरे मुख चितवत ठाढी ज्वाब न आवै
फेरि। तब अकुलाय चली उठि बनको बोले सुनत न टेरि। बिरहा
बिवश चहुँयाभरमति श्यामकहा कियझेरि। आवहुबेगि मिलहुनंद
नंदन दाननकरो निबेरि। सूरश्याम अङ्कम भरिलीनों दूरिकियो दुख
देरि ५३॥ रागबिलावल॥ साँचीप्रीति जानि हरिआये। पूरण नेह प्रकट

दरशाये। लइ उठाय अङ्कम भरिप्यारी। श्रमि श्रमि श्रम कीन्हा तनु भारी। मुखमुख जोरि आलिङ्गन कीन्हों। बारबार भुजभरि उरलीन्हों। वृन्दावन घन कुंजलता तर। श्यामा श्याम नवल नवलावर। मनमोहन मोहनि सुखकारी। कोककला गुणप्रकटे भारी। छूटेबन्द अलकशिर छूटे। मोतिनहार टूटि सुख लूटे। सूरश्याम बिपरीति बढ़ाई। नागरि सकुचिरही लपटाई ५४ ॥ रागनट ॥ श्यामा श्याम करत बिहार। कुंज गृह रचि कुसुम शय्या छबि बरणि कोपार। सुरति सुखकरि अङ्ग आलस सकुचि बसन संभारि। परस्पर भुजकंठ दीन्हे बैठिहैं बरनारि। पीतकञ्चन बरन भामिनि श्यामतनु अनुहारि। सूरघर अरु दामिनी मिलिप्रकट सुख बिस्तारि ५५ ॥ रागकान्हरो ॥ राधेबसन श्यामतन चीन्हीं। शारंग बदन बिलास बिलोचन हरिशारङ्ग जानिरति कीन्हीं। शारङ्ग बचन कहति शारङ्गरिपु देराखति पटझीनी। शारङ्ग पाणि गहति रिपु शारङ्ग करते लीन्हें छीनी। सुधापान करि कुछ नीकी बिधिरहेउ शेषमुद्रापिफरिदीन्हीं। सूरसुदेश आहि रतिनागर भुजआकरषि बामकर लीन्हीं। ५६ तुमसों कहा कहीं सुन्दरघन। याब्रजमें उपहास चलतहै सुनिसुनि श्रवण रहत मनहीं मन। जादिन सबनबाछरानोये करि मो दुहिदईधेनु बंशीबन। तुम गहिबाँह सुभाय आपने हेंचितई हँसि नेक बदन तन। तादिनते घरमारग जित तित करति चवाव सकल गोपीजन। सूरश्यामसों साँचिपारिहो यह पति बरत सुनहु नन्दनन्दन ५७॥ रागभैरों ॥ कहाकहीं सुन्दर घनतुमसों। घेरायहै चलावत घरघर श्रवण सुनत जियमें खुनसों। बहिनी मातपिता बाँधव गुरुजन यहकहे मोसों। राधाकान्ह एकसंग बिलसत मनहींमन अपसोसों। कबहुँक कहै सबन परित्यागी बूझतिहीं अबशोसों। सूर श्याम दरशन बिनपाये नयनदेत मोहिँदोसों ५८ ॥ रागरामकली ॥ बात ये तुमसों कहत लजाऊं। सुनि न जात घरघरको घेरा कान्हा सुखन समाऊं। नरनारी सबयहै चलावत राधामोहन एक। मातपिता सुनि सुनि अतित्रासत मैं इक वे जु अनेक। आपु जबहिँ द्वारेह्वै निकसत देखत सबै सुगात। नींदति तुमहिँ सुनावत मोको सुनत न नेक सुहात। मृगनर मृगनारी मृगजीवन तुमहिँ बिमुख मृगदेह। सूरश्याम यहकोऊ

न जानत तनुह्वैगयो जरिखेह ५९ ॥ रागगुजरी ॥ श्याम यह तुमसों क्यों न कहीं। जहाँ तहाँ घरघरको घेरा कौने भाँतिसहीं। पिता कोपकर वारलेतकर बन्धु बधनको धावै। मात कहै कन्या कुलको दुखजिनि कोऊ जगजावै। विनती एककरों करजोरे याहिबीथी जिनिआवहु। जो आवहु तौ मुरलि मधुरधुनि मोजिनि कानसुनावहु। मन क्रम बचन कहतिहों साँचो मैं मन तुमहिँ लगायो। सूरदासप्रभु अन्तर्यामी क्यों न करहु मनभायो ६० ॥ रागरामकली ॥ हँसि बोले गिरिधर रसबानी। गुरजन खिझत कितहि रिसपावति काहेको पछितानी। देहधरेको धर्मयहैहै सजन कुटुम्ब गृहपानी। कहन देहुकहि कहाकरेंगे आगेहि सुरति हिरानी। लोकलाजकाहेको छाँडति ब्रजहीबसे भुलानी। सूर दास घटहेकरि बनये भेदनहीं कछुमानी ६१ ॥ रागजैतश्री ॥ ब्रजबसिका-के बोलसहीं। तुमबिनु श्याम औरनहिँ जानौं सकुचनि तुमहिँ कहीं। कुलकी कानि कहालें करिहैं तुमको कहा लहौं। धृग माता धृग पिता बिमुख तुवभावै तहाँ बहौं। कोउ कछुकरै कहैकछुकोऊ हरख न शोकगहौं। सूरश्याम तुमको बिनुदेखे तनमन जीवदहौं ६२ ब्रजहि बसे आपहि बिसरायो। प्रकृति पुरुष एकैकरि जानहु बातनि भेद करायो। जलथल जहाँरहौं तुमबिनुनहिँ वेद उपनिषद गायो। द्वैतन जीव एकहम तुमदोउ सुखकारण उपजायो। ब्रह्मरूप द्वितियानहिँ कोई तनमन त्रियाजनायो। सूरश्याम मुखदेखि अलपहँसि आनन्द पुंजबढायो ६३ रुखनागर मनहर्षभई। नेहपुरातन जानिश्यामको अति आनन्दमई। प्रकृति पुरुषनारी मैं वेपतिकाहे भूलिगई। कोमाता को पिता बन्धुको यह तौ भेंटिलई। जनम जनम युग युग यहलीला प्यारी जानिलई। सूरदास प्रभुकी यहमहिमा यातेबिवश भई ६४ ॥ रागसूहो ॥ सुनहुश्याम मेरीबिनती। तुमहर्ता तुमकर्ता प्रभुजू मात पिता कौनेगि-नती। मैंबर भेंटि चढावत रासभ प्रभुता मेटिकरत बिनती। अवलोकरी लोक मर्य्यादा मानहु थोरेही दिनती। बहुरि बहुरि ब्रजजन्म लेतहो यहलीला जानी किनती। सूरश्याम चरणनते मोकोराखत रहेकहाँ भिनती ६५ ॥ रागधनाश्री ॥ देहधरेको फल यह प्यारी। लोकलाज कुल कानि मानिये डरिये बन्धुपिता महतारी। श्रीमुख कहेउ जाहु घर सु-

न्दर बड़े सहर वृषभान दुलारी। तुव अवसेर करत सब ह्वैहैं जाहु बेगि देहैं पुनिगारी। हमहु जाहिँ ब्रजतुमहुँ जाहु अबगेह नेहक्यों दीजै डारी। सूरदास प्रभुकहत प्रियासों नेकनहीं मोते तुमन्यारी ६६ देह धरेको कारण सोई। लोकलाज कुलकानि न तजिये जाते भलो कहै सब कोई। मातपिता के मानेमाने मान कुटुम्ब सबलोई। तात मातहू को भावत तनुधरिकै मायावश होई। सुनि वृषभान सुता मेरीवाणी प्रीति पुरातन राखो गोई। सूरश्याम नागरिहि सुनावत मैं तुम एक न ह्वैहैं दोई ६७॥ रागमारंग॥ अबकैसे दूजेहाथ बिकाऊं। मन मधुकर कीन्हें वा दिनते चरण कमल जिनिठाऊं। जोजाने औरेकोउकर्ता तऊ न मन पछिताऊं। जोइनाके सोइसोई जाने अघतारण नरनाऊं। यापरतीति होय या युगकी परमित छुटत डराऊं। सूरदास प्रभुसिंधु चरणतजि नदीशरण कत जाऊं ६८॥

निज गृहगमन

रागबिलावल॥ घरपठईप्यारी अंकमभरि। करअपने मुखपरसिप्रिया के प्रेमसहित दोउभुज धरिधरि। संगसुख लूटिहर्षभरि हिरदय चली भवन भामिनि गजगतिढरि। अङ्गमरगजी सारीराजति छबिनिरखत रीझत ठाढ़ेहरि। बेनीडुलति चितवनि पर दोउछीन लंकपर वारों के हरि। फिरचितयो प्यारीतब पियतन दुहूनमन आनन्द हर्षकरि। राधा हरि आधा आधातन एकैह्वै ब्रजमें ह्वै अवतरि। सूरश्याम रसभरे उमँगि अङ्ग वहछबि देखिरहेउ रतिपतिडरि ६९ घरहिजात मनहर्ष बढ़ायो। दुखडारेउ सुखअङ्ग भरिभरि चलीलूटिसो पायो। कुंजभवन हरिसंग बिलसिरस मनको सुफल करायो। तहँयक सखीमिली राधाको कहति भई मनभायो। भौंहसकोरति चलति मन्दगति नेकु बदन मुसुकायो। सूर सुगन्ध चुरावनहारो कैसेदुरत दुरायो ७०॥ राग जैतश्री॥ कहफूली आवतिरी राधा। मानहुँ मिली अङ्कभरिमाधो प्रकटति प्रेम अगाधा। भृकुटी धनुषनयन शरसाधे बदन बिकासतिआधा। चंचल चपल बंक अवलोकनि काम नचावत ताधा। जेहिरस शिव सनकादि मगनभये शेष रहत दिनसाधा। सोरस दियो सूरप्रभु तोको शिवा न लहति अराधा ७१॥ रागसोरठ॥ राधेसो रसबरणिनजाय।

जोरसको सुरभान शीश दियो सुने पियो अकुलाय । पचिहारे सब ग्वाल कमलमुख चन्द वदन ठहराय। अजहुँ कवन्ध फिरत तेहिलालच सुन्दरिसेन बुझाय। मोहनते रसरूप आगरी कटिदिन जानुनिकाय। सूरजदास पपीहाकेमुख कैसे सिन्धुसमाय७२॥ रागनट ॥ मोसों कहादुरावति राधा। कहामिली नँदनंदनको जिन पुरई मनकीसाधा। व्याकुल भई फिरतिहौ अबहीं कामबिथा तनबाधा। पुलकित रोम रोम गद्गद अब अङ्ग अङ्ग रूपअगाधा। नहिँपावत जोरस योगीजन जप तप करत समाधा। सुनहु सूरतेहि रस परिपूरण दूरकियो तन दाधा ७३ ॥ रागआसावरी ॥ कहाकहति तूभई बावरी। तोसों कहत सुनै कोउऔरे कह कीन्हो चाहत उपावरी। सोतो साँचिमानि यहलैहै हसहिँ तुमहिँ बातैं सुभावरी। मेरी प्रकृति भलेकरि जानति मैं तोसों करिहौं दुरावरी। ऐसे कैसे होयसखीरी घरपुनि मेरोहै बचावरी। सूरकहति राधासखि आगे चकृतभई सुनि कथा रावरी ७४ ॥ रागसारंग श्यामकौन कारेकै गोरे। कहाँरहत काकेवह ढोटा वृद्धतरुण कीधौं हैं भोरे। यहँही रहत कि और गाँवकहुँ मैं देखे नाहीं कहुँ उनको। कहैनहीं समुझाय बात यहमोहिँ लगावतिहौ तुमजनको। कहाँरहैं मैंवैसोकिहिके तुम मिलवतिहौ काहेऐसी। सुनहु सूरमोसी भोरीको जोरिजोरि लावतिहौ कैसी ७५ जाहिचली मैं जानोतोको। आजुहि पढ़िलीनीं चतुराई कहाँ दुरावति मोको। यहिव्रज हमतुम नन्दनन्दन ते दूरिकहूँ नहिँजैहैं। मेरेफन्द कबहुँतोपरिहै मुजरा तबहींदैहैं। उनहिँ मिले बितपन्नभई अब वे दिनगये भुलाय। सूरश्याम संगते उठिआई मोसों कहति दुराय ७६ ॥ रागसोरठ ॥ हँसति कहति योंकी सतभाव। तेरीसों मैं कछु मन समुझति कहा कहेउ मोहिं बहुरि सुनाव। मेरी शपथ तोहिँरी सजनी कबहूं कछुपायो यहभाव। देख्यो नयनसुन्यो कहुँ श्रवणन झूंठेसहति फिरतिहौ दाव। यह कहती औरै जो कोऊ तासों मैं करती अफड़ाव। सूरदास यहमोहिं लगावति सपनेहुँ जासों नहिँ दरशाव ७७ ॥ रागधनाश्री ॥ राधेतेरो वरण बिराजत नीको। जब तू इतउत बंकबिलोकति होतनिशापतिफीको। भृकुटीधनुष नयनशर साधे शिरकेशरिको टीको। मनघूंघट पटते दुरिबैठो पारधि रतिपति-

हीको । गतिमें मतनागज्यों नागरि करेकहति हौंलीको । सूरदासप्रभु विविध भाँति करि मनरिझयो हरिपीको ७८ ॥ रागबिहागरो ॥ राजति राधे अलक भलीरी । मुक्तामांग तिलक पन्नगिनि शिर सुतसमेत भखु लेन चलीरी । कुंकुम आड़ श्रवण श्रमजल मिलि मधुपीवत छबिछीज भलीरी । चारुउरोज उपरयों राजत अरुझे अलिकुल कमल कलीरी । रोमावली त्रिवलि उरपरसत बंसचढ़े नटकाम बलीरी । प्रीति सुहाग भुजाशिर मण्डल जघन सघन विपरति कदलीरी । जावक चरण पंच शर शायक समर जीतिले शरण चलीरी । सूरदासप्रभुको सुखदीन्हों नखशिख राधे सुखनि फलीरी ७९ ॥ रागरामकली ॥ सजनीकत यह बात दुरैहों । ऐसीमोहिँ कहे जिनिकबहूं झूठेपर दुखपैहों । तातेप्रीतम और कौनहै जाकेआगेकैहों । मोको उचटाये कछुपैहै बहुरिनाँउ नहिँलैहों । यह परतीति नहींजिय तेरेसोकहु तोहिं चुरैहों । सूरश्याम धोंकहां रहतहैं मैंकाहेकोजैहों ८० ॥ रागधनाश्री ॥ चतुरसखी मनजानि लई । मोसों तो दुराव यहकीन्हों याके जियकछु त्रासभई । तब यह कहेउ हँसतिरी तोसों जनिमन में कछु आनै । मानोवात कहावै कहँ तू हमहूं उनहिँन जानै । अबहिँ तनिक तूभई सयानी हम आगेकी बारी । सूरश्याम ब्रजमें नहिँदेखे हँसत कहेउ घरजारी ८१ ॥ रागबिलावल ॥ सकुच सहित घरको गई वृषभान दुलारी । महरिदेखि तासों कहेउ कहां रहीरी प्यारी । घरतेोहिंनेक न देखेउँमेरीमहतारी । डोलतलाज न आवई अजहूंहैबारी । पिताआजु रिसकरत हैं देहकहतहैं गारी । सुताबड़े वृषभानकी कुल खोवनिहारी । बन्वव मारन कहत हों तेरे ढँगकारी । सूरश्याम संग फिरति है योवन मतवारी ८२ ॥ रागरामकली । चर्चरी ॥ कहां कहति हैरी माता मोसों । ऐसे बहिगई को श्यामसंग फिरै जो वृथा रिस करति कहकहूं तोसों । कही कौनेबात बोलिधौं तेहिसात मेरेआगे कहैताहि देखो । तात रिस करत भ्रात कहे मारिहैं भीति बिन चित्र तुम करत रेखो । तुमहिँ रिस करति कछु कहा मोहिँ मारिहो धन्य पितु मात भ्राता तुमहीं । ऐसोलायक नन्दमहरको सुतभयो तिनहिँ मोहिँकहति प्रभु सूर सुनहीं ८३ ॥ रागगुजरी ॥ काहेको परघर छगाछराजाति । घर में डारिदेति शिख जननी नाहिन नेक डराति । राधा कान्ह कान्ह

राधा ब्रज ह्वै रहेउ अतिहि लजाति । अबगोकुलको जैबो छाँड़ो अप-
यशहू न अघाति । वृषभान बड़ेकी बेटी उनके जाति न पाँति । सूर
सुता समुझावति जननी सकुचति नहिँ मुसुकाति ८४ ॥ रागकान्हरो ॥
खेलन को मैं जाँउनहीं । और लरकिनी घरघर खेलति मोहीं कोपै
करति तुहीं । उनके मातपिता नहिंकोई खेलति डोलति जहींतहीं ।
तोसी महतारी बहिजाय न मैंरहों तुमहीं बिनहीं । कबहूं मोसों कछू
लगावति कबहूं कहति जिनिजाउ कहीं । सूरदास बातैं अनखौहीं
नाहिन मोपै जातिसही ८५ ॥ रागसारंग ॥ मनमन जानिगई महतारी ।
कहाभई जो बाढ़िनेक गइ अबहीं तौ मेरीहै बारी । झूठीही यहबात
उड़ीहै राधाकान्ह कहत नर नारी । रिसकी बात सुताके मुख की
सुनत हँसत मनहींमन भारी । अबलौं नहीं कछू यह जान्यो खेलत
देखि लगावैं गारी । सूरजदास जननि उरलावति मुखचूंबति पोंछति
रिसटारी ८६ ॥ राग सूहो ॥ सुतालये जननीसमुझावति । संगबिटीननि
को मिलि खेलौ श्याम साथ सुनि सुनि रिस पावति । जाते निन्दा
होत आपनी जाते कुलको गारी आवति । सुनिलाड़िली कहतियह
तोसों याते रिसकरिके हौंधावति । अबसमुझीमैं बातसबनिकी झू-
ठेही ये बातउड़ावति । सूरदास सुनि सुनि येबातें राधामन अति हर्ष
बढ़ावति ८७ ॥ राग नट ॥ राधा बिनयकरत मनहींमन सुनहु श्यामअं-
तरकेयामी । मात पिता कुलकानिहिं मानत तुमहिं न जानतहौं जग
स्वामी । तुम्हरो नामलेत सकुचतहौं ऐसेठौर रहौंहौं आनी । गुरुपति
जनकी कानिमानियो बारम्बार कहीमुखबानी । कैसे संगरहौं बिमु-
खनिके यहकहिकहि नागरिपछितानी । सूरदास प्रभुकोहिरदयधरि
गृहजन देखिदेखि मुसकानी ८८ राग धनाश्री ॥ जब प्यारी मन ध्यान
धरेउ । पुलकितउररोमांचप्रकटभयो अंचलढारि मुखउघारिपरेउ । प्रेम
बिवश भईसुकुमारी कैसेहु मनधीरज नहिंआवै । चकितभई अँग अङ्ग
बिलोकत दुखसुख दोऊ मन उपजावै । पुनि मनकहति सुता काहूकी
कीधौं यह मेरीहै जाई । राधा हरिके रंगहिरांची जननीरही जियहि
भरमाई । तबजानी मेरीं यहबेटी जिय अपने तब जानलियो । सूरदास
प्रभुप्यारीको छबि देखिचहति कछुसीखदियो ८९ ॥ राग सोरठ ॥ राधा

दधिसुत क्योंनदुरावति। हौंजुकहति वृषभाननन्दनी काहे जीवसतावति। जलसुतदुखी दुखीहैमधुकर हैपच्छी दुखपावत। शारंग दुखी होत शारंगबिन तोहिं दयानहिंआवत। शारंगरिपुकी नेकओटकरि ज्योंशारंग सुखपावत। सूरदास शारंग केहिकारण शारंगकुलहिलजावत ९०॥ राग बिहागरो ॥ मेरीसीख काहेनकरति। अजहुंभोरीभईरैहै कहतितोसेंाडरति। शशिनिरखिमुख चलतनाहीं नयननिरखिकुरंग। कमल खंजन मीन मधुकर होतहैचितभङ्ग। देखिनासा कीर लज्जित अधर दशननिहारि। बिंब अरु बंधूक बिद्रुम दामिनीडर भारि। उर निरखिचक्रबाक बिथके कटिनिरखि मृगराज। चालनिरखि मराल भूले चलतते गजराज। अंगअंग अवलोकिशोभा मनहिंदेखि बिचारि। सूरमुख पटदेति काहेन बरषदशयुगभारि ९१॥ राग सुहो बिलावल ॥ अब राधा तू भईसयानी। मेरीसीखमानि हिरदयधरि जहंतहंडोलतिबुद्धि अयानी। भई लाजकी सामा तन में सुनि यहबात कुँवरि मुसकानी। हँसतिकहामें कहति भलोतोहिं सुनतिनहीं लोगनकीबानी। आजुहि ते कहुं जान न देहों मतितेरीकछु अकथ कहानी। सूरश्यामके संगन जैहों जाकारण तू मोहिं सुगानी ९२॥ राग नट ॥ भली बात बाबा आवनदेवै। कान्ह लगायदेत मोहिंगारी ऐसेबड़े भये कबते वै। कालिह मोहिं मारगमेंरोकी जातिरही सखियन सँग दधिलै। कहनलगी मेरो देहखिलौना तादिनलेभगी चुरायकै। छठिआठैं मोहिं कान्ह कुँवर सों तिनको कहति प्रीति तोसोंहै। सुरजननि सुनि यह बाणी प्रिय पुनि पुनि मुखनिरखति बिहँसतिहै ९३॥ रागगौरी॥ बड़ीभई नहिं गइलरिकाई। बारेहीके ढंग आजुलों सदा आपनी टेकचलाई। अबहीं सचलिजायगी तब पुनि कैसे मोसों जातिबुझाई। मानो हारि मानि मन अपने बोलिलई हँसिकै दुलराई। कराठलगायलई अतिहितसों पुनि पुनि कहि मेरी रिसहाई। सूरदास अति चतुर राधिका राखि लई नीके चतुराई ९४॥

इति दानलीलावड़ी समाप्तम॥

अथ सूरसागर राग कल्पद्रुम ॥

अथराधाजीको अनुरागलीलाको प्रसंग ॥

रागरामकली । चर्चरी ॥ श्याम नग जानि हृदय चुरायो । चतुर वर
नागरी महामणिगा लखिलियो प्रियसखी संगतेहि नहिँ जनायो । कृ-
पिसाइयों धरतधन ऐसे दृढ़कियोमन जननिसुनि बातहँसि कंठलायो ।
गाँसदियो डारिकाहि कुँवरि मेरीवारी सूरप्रभुनामझूठे उड़ायो १॥राग
कल्याण ॥ सखियन यहै विचार परेउ । राधाकान्ह एक भयेदोऊ हम
सों गोपकरेउ । वृन्दावनते अवहीं आई अतिजिय हरषबढ़ायो । औरै
भाव अङ्गछवि औरै श्यामहिँमिलि मनभायो तववह सखीकहति मैं
बूझी मोतन फिरिहँसि हेरेउ । जबहिँ कही सखिमिले तोहिँहरि तब
रिसकरि मुखमोरेउ । औरैबात चलावनलागी मैं वाको पहिँचानी ।
सूरश्यामके मिलत आजुही ऐसीभई सयानी २ ॥ रागसोरठ ॥ सुनहुसखी
राधाकी बातें । मोसोंकहति श्यामहैं कैसे ऐसी मिलई घातें । कैगोरे
कैकारे रङ्गहरि कैधौंवन के भोरे । साँचकहौ मोसोंतुम सब मिलिहौं
अतिकरति निहोरे । कैतूकहति बातहँसि मोसों कहिबूझति सतभाव ।
सपनेहूं उनको नहिँदेखे वाकेसुनहु उपाव । मोसों कहति कौनतोसी
प्रिय तोसोंबात दुरैहों । सूरकही राधामों आगे कैसे मुख दरशैहों ३
रागगौरी ॥ वहनिधरक मैं सकुचि गई । तबयह कहेउ जाय घरराधा मैं
झूठी तैं साँचिभई । त्योरीभौंहनि मोतनचितवै नेकरहौ तो करैखई ।
कामभँडार लूटिनीकेकरि निदरि गईमैं चकृतभई । घरधौं जायकहा
अब कैहैं अबकछु औरैबुद्धिनई । सूरश्याम अँगसँग रँगराची मनमाने
सुखलूटिलई ४ ॥ रागसूहोबिलावल ॥ सुनिसुनि बात सखी मुसकानी । अ-
वहीं जायप्रकट करिदैहैं कहाँरहै यहबातछिपानी । औरनिसों दुराव
जो करते तौ हम कहतीभली सयानी । दोइनआगे पेटदुरावति वाकी
बुद्धि आजुमैं जानी । मोहिँजातहि वह उघरि परैगी दूधदूध पानीसों
पानी । सूरदास अन्नकरि चतुराई हमहिँ दुरावति बातनठानी ५ ॥राग
रामकली ॥ अपनोंभेद तुमहिनहिँ कैहै । देखोजाय चरित तुमवाके जैसे
गाल बजैहै । बड़ेगुरुकी बुद्धिपढ़ी वह काहूको न पत्यैहै । एकोबात

मानिहैं नाहीं सबकीसौंहैं खैहै। मैं नीकेकरि बूझिरही हौं अबबूझै रिसपैहै। सुनहुसूर रसकी राधिका बातनि बैरबढैहै ६ ॥ रागबिलावल ॥ कहाबैरु वह हमसों करिहै। वाकीजाति भलेकरि पाई हमको कहा निदरिहै। कैहै कहा चोरटी हमसों बातहिबात उघरिहै। दूरिकरौं लँगराईवाकी औरेफँद जबपरिहै। हमसों बैरकियेका पैहौ काजकहा पूनि सरिहै। सूरदास मटुकी गिरलीन्हे बहुरेउ बैसहि ररिहै ७ ॥ राग गौरी ॥ चलहुसखी जैये राधाघर। बूझैबात कहाधौं कैहै निधरकहैकी मनमेंडर। कीधौं हमहिं देखि भजिजैहैकी हमकोउठि मिलिहै। कीधौंबात उघारि कहैगी कों मनहींमन गिलिहै। कीधौं हँसि बोलेकी रिसकरि कीधौं सहज सुभाई। कीधौं सूरश्याम रसमातो योवनगर्ब बढाई ८ युवतीजुरि राधाढिग आईं। लखिलीन्ही तब चतुर नागरी ये मोपर सबई रिसहाईं। आदर नहींकियो काहूको मनमें एकबुद्धि उपजाई। मौनगह्यो नहिं बोलत तिनसों बैठिरही करिके चतुराई। आपुहि बैठिगईं ढिगासिगरी तबजानी यहतो सुघराई। सूरदास वैसखी सयानी और कछूकी बातचलाई ९ ॥ रागजैतश्री ॥ चतुर चतुरकी भेंटभई। वहतो निठुर मौनह्वैबैठी इन सबहिन लखिताहि। सुहाचहीं युवतिन तबकीन्हो देखो उलटीरीति भई। कहा हमारोमन यहराखै अरु हमहींपर मतरगई। बूझहियाहि खूटधरिके तू कहा आज यह मौन लई। सुनहुँ सूर हमसों कह परदा हमकरि दीनों साँटि सई १० राग सारंग। चर्चरी ॥ राधिका मौनव्रत किनि सधायो। धन्य ऐसो गुरु कानके लागतहि मंत्रदै आजुहीयह लखायो। कालिह कछुऔर प्रातहिकछु औरही अबहिं कछु और ह्वैगई प्यारी। सुनत यहबात हम दौरि आईंसबै तोहिंदेखत चकृत भईंभारी। अब कहोबात यामौनको फल कहा सुनि जुलीजै कछु हमहिंजानें। कहो संगमभई सबै योवन नई अबहोहु गुरुहम तुमहिंमानें। देहि उपदेश हमहूंधरैं मौनसब मंत्र जबलियो तब हम न बोली। सूर प्रभुकीनारि राधिका नागरी चर्चि लीनों म्वहिंकरत ठोली ११ ॥ रागसारंग। चर्चरी ॥ कौगुरु को कहोको मौनकाढो। हमहिँ मूरुख बदति आप ये ढंगसदति पायअब मदति हटिकहति माडो। सकहिसंग हमतुम सदारहति हैं आजुही चटाकत

भईन्यारी। भेद हमसों कियो मौनव्रत कहँलियो औरदो कहायो देहिगारी। कहा त्वहिँ भयो तेरीप्रकृति कौनेहरी रीतियह नईतेहीं चलाई। सूरसुनि नागरी गुणनि की आगरी लिहुरई सों बातकहि सुनाई १२॥ रागगौरी॥ तुम प्रीतमकी बैरिनिमेरी। वासोंकहति मिली जो मारग यहिमोसों अतिकढ़ी अनैरी। कहतिकहा श्यामहिँ मिलि आई भौचकिरही सोंहत्वहिँ तेरी। मेरे अङ्गछबि और कहत कछु युवती सुनतरही मुखहेरी। मैं जिनको सपने नहिँदेखौं तिनकी बात कहति फिरिफेरी। सूरदास गुणभरी राधिका महिमा कोजाने यहि केरी १३॥ रागकल्याण॥ तुमसों कछु दुरावहै मेरो। कहांकान्ह कहँमें सुनुसजनी ब्रजघरघर यह चलतहै घेरो। और कहतसब मोहिँनव्यापै तुमहुँ कही यहबानी। आदर नहींकियो याहीते तुमपर अतिहि रिसानी। हमतो नहीं कहेउकछु तोसों ताहीपर रिसकरती। सूरत्वहिँ हमसों जोकहती तेरीधौं ह्वै लरती १४॥ रागरामकली॥ सखीतू राधहि दोयलगावति। तेरोश्याम कहां इनदेख्यो बातनिबैर बढ़ावति। हम आगे झूठीनहिँ कैहैं सखियन सैन बतावति। ऐसीबात अरीमुख तेरे कैसेधौंकहि आवति। भेदहिभेद कहतिहै बातें ऐसे सतहिँ जनावति। सूरश्यामतें देखेनाहीं कीधौं हमहिँ दुरावति १५॥ राग नट॥ काको काको मुखमाई बातनिकोगहिये। पाँचकीसात लगावो झूठी किबनावो साँची जो तनक होय तौलौंसब सहिये। बातनि गही अकाश सुनत न आवैसाँस बोलतकछू न आवै तातेमौन गहिये। ऐसेकहैं नर नारि बिनाभीति चित्रकारि काहेको देखेमैंकान्ह कहाकहौसहिये। घरघर यहैबैर वृथामोसों करैबैर यहसुनि श्रवणनि हृदयसहि दहिये। सूरदासकृतउपहास होयशिरमेरे नन्दसुवन मिलेंतौतापै कहाचहिये। रागसारंग। चर्चरी॥ दुरतनहिँ नेह अरु सुगन्ध चोरी। कहा कोउ कहै तु सुनतकाहे न रहैतनहिँ कतदहै सुनिसखी मोरी। लोगत्वहिँ कहत हैं पापको गहतहैं कहाधौं लहतहैं सुनहुभोरी। खरिकहू नहिँमिले कहै कह अनभले करतहै मिले तू दिननि थोरी। नन्दको सुवन अरुसुता वृषभानकी हँसत सबकहै चिरंजीवजोरी। सूरप्रभु कहांतू कहांअपने भवनमें लखीतोहिँ तोसी न औरी १७॥ रागबिलावल॥ कैसे हैं नन्दसुवन

कन्हाई । देखेनहीं नयनभरि कबहूं ब्रजमें रहत सदाई । सकुचति हीं यकबात कहति सो नाहींजात सुनाई । कैस्यहू मोहिँ देखावहु उनको यहमेरे मनआई । अतिही सुन्दरि कहियत हैं वै मोको देहि बताई । सूरदास राधाकीबाणी सुनतसखी भरमाई१८॥ रागधनाश्री ॥ सुनहुसखी राधाकी बानी । ब्रजबसिहरि देखेनहिँ कबहूं लोगहँसत कछु अकथ कहानी । येअबकहति दिखावहु हरिको देखोरी यहअतिहि अयानी । जोहम सुनतरही सोनाहीं अबऐसेहि यहबायु बहानी । ज्वाब न देत बनेकाहूवों मनमें काहुनमानी । सूरसबै तरुणी मुखचाहति चतुर चतुरईठानी १९ ॥ रागबिलावल ॥ सुनिराधे तोहिँश्याम दिखेहैं । जहँतहँ ब्रज ग्वालिन फिरत हैं जबहींवे यहिमारग ऐहैं । जबहीं हम उनको देखहिँगी तबहीं तोहिँबुलै हैं । उनहूंकहलालसा बहुत यहतो देखेसुख पैहैं । दरशनते धीरजजब ह्वैहैतब हमतोहिँ पत्यैहैं । तुमकोदेखि श्याम घनसुन्दर मुरली मधुर बजैहैं । तनुत्रिभङ्ग करि अङ्गत्रिभङ्गी नानाभाव जनैहैं । सूरदास प्रभुनवल कान्हबर पीताम्बर फहरैहैं २० ॥ राग केदारे चर्चरी ॥ नन्दनन्दन दरश जबहिँपैहो । एकद्वै तीनितजि चारबानी मेटि पाँचछः निदरि सातै भुलैहो । आठहूगाँठि परिहैं नवहु दशहु दिशि भूलिहो ग्यारहो रुद्रजैसे । बारहो कलाते तपनितनते मिटति तेरहो रतन मुखछबि न तैसे । निपुण चौदह बरणपन्द्रहो सुभग अति बयं षोड़शसत्रहोनरैहे । जपतअठारहु भेदउनीस नहिँबीसहू दिशातेसुखहि पैहे । नयन भरिदेखि जीवन सुफल करिलेखि ब्रजहि में रहतितै नहीं जाने । सूरप्रभु चतुर तुमहूं महाचतुरहो जैसीतुम तैसेवेऊ सयाने २१ राग देवगन्धार ॥ मनमन हँसति राधिकागोरी । ऐसेश्याम रहत ब्रजभी-तर बूझतिहै भइभोरी । तुमउनको कहुँदेखेहोकी सुनीकहति होबात । चतुराईनीकेगाहि राखी मुखमुरिकेमुसकात । कबहूंतो कहुँफंद परिहो तबहीं लीजैचीन्ह । सूरश्यामको पीताम्बरमेरी बेसरि लीजोछीन २२ रागनट ॥ यहसुनि हँसिचली ब्रजनारि । अतिहिआई गर्बकीन्हें गईघर झकमारि । कबहुं तो हम देखि हैं यकसंग राधाकान । भेद हमसे कियोराधा निठुरभई निदान । बसरसबदिन चारको कहुँहोतहै निरबाहु । कालिहदेखेंगी सबैधुनि सूरदुलहिनि नाहु २३॥ रागकान्हरो ॥ ऐसे

लियो चाहत राधासें। बैठीरहु अपनेघर चुपकी कामकहा काह्वा-
धासें। सनयह दूरिधरौ अपनोले अतिवर बालिगईकह कीन्हो।
कैसे निर्भयरही सबनिसें भेद न काहुनि दीन्हो । वह कैसे फँद परै
तुम्हारे वाकेघात न जानो। सूरसवै तुम बड़ी सयानी मोहिँ नहीं तुम
मानो २४ ॥ राग बिलावल ॥ फेरिपारि देखो मैं धरिहैं। सुनिरी सखी
प्रतिज्ञामेरी तेहिदिन तासोंलरिहैं। हमको निदरि रहीहै राधारिस
न रहीमैंजरिहैं। रातिद्योस मोहिँचैननहीं अबउनके देखतफिरिहैं।
सब मेरेमन धीरजएहै चोरीकरत पकरिहैं। सूरदास स्वामीके आगे
नीकेताहि निदरिहैं २५ ॥ रागनट ॥ गोपी यहैकरति चवाव। देखोधैं
चतुराई वाकी हमहिँ कियो दुराव। लरिकईते करति येढँग तबरहे
सतिभाव। अबकरति चतुराई जानो श्यामपाये दाव। कहांलों करि
है अचगरी सबै यक उपजाव। आजु वाचो मौनधरि ज्यों सदाहोत
बचाव। द्योसचारिक भोरपारहु रहो यक सुभाव। सूर कालिहहि
प्रकट ह्वैहै करनदै अफडाव २६ ॥ रागसूहो बिलावल ॥ कहाकहति तू बात
अयानी। तुमहीं कहति सबै वह जानति हमसबते वे बड़ी सयानी।
सातवर्षते यहढँगसीखो तुमतो यह आजुहिहै जानी। वाकेछन्द भेद
को जानेमीन कबहिभों पीवतपानी। हरिके चरित्तसबै उनसीखे दोऊ
हैं वे बारह बानी। कालिहगई वाकेघर सबमिलि कैसीबुद्धि मोहनी
ठानी। कितीकही नेकहु नहिँबोली फिरिआई तबहमहिँ खिसानी।
सूरश्याम संगतिकी महिमा कहूं कौनहोहूं न पत्यानी २७॥ रागमारू॥
तबहिँराधा सखियन पैआई। आवतदेखि सबनि मुखमूंद्यो जहँ तहँ
रही अरगाई। मुखदेखत सब सकुच गई यह कहाँ अचानक आई।
करतिरही चुगली हमयाकी तरुणी गई लजाई। अति आदर करि
बैठकदीन्हें कहेउ कहा तुमआई। कहांआजु सुधिकरी हमारी सूर-
श्याम सुखदाई २८ ॥ रागधनाश्री ॥ मैं कहा आजु न बैरी आई। बहुतै
आदर करति सबैमिलि पहुनेकी करिये पहुनाई। कैसीबात कहति
तू राधावैठन को नहिँ कहिये। तुमआई अपने घरते यहँ हमहुँ मौन
ह्वै रहिये। जानिलई वृषभानसुता हँसि कहेउ तरकतुमकीनो। सूर-
दास तादिन को बदलो दाँव आपनो लीनो २९ दावघाव सबही तुम

जानति। सदामानि तुमको हमआई अबहूं तैसे मानति। तुमयह बात गाँसि करिराख्यो हमको गई भुलाई। तादिन कहेउ नहीं मैं जानो मानिलई मतिभाई। चोरसबनि चोरैंकरिजाने ज्ञानीमन सबज्ञानी। सूरदास गोपिनकी बाणी राधासुनि मुसुकानी ३० ॥ रागमाल्हू। चर्चरी॥ सखी यहबात कहोतुम साँची। जाके हृदय जौनहै मुखते तौन कैसे हरिकौनकहि लीकखाँची। हर्षि ब्रजनारि भरिलेति अंकवारि सब कहति तू कहा यहबातजानै। हमहँसत कहति तूरिस कहा गहतिरी नागरी राधिका बिलगुमानै। तुमहिँ उलटी कहौ तुमहिँ पलटी कहौ तुमहिँ रिसकरति मैं कछुनजानो। सूरकेप्रभुको नाममेरोहिँ तुमकहेउ अबरायह सुन्यो तुम कछु न मानो ३१ ॥ रागटोड़ी ॥ पुनिकहियो अब न्हान चलौगी। तब अपनो मनभायो कीजोजब मोको हरिसंग मिलौगी। वहैबात मनमें गहिराखी मैं जानति कबहुँन बिसरैगी। बड़ी बार मोकोभइ आये न्हान चलतकी बहुरि लरौगी। गहि गहिबाँह सबनिकरि ठाढ़ी कैसेहु घरतेंनिकरौगी। सूरराधिका कहैसखिनसों बहुरि आयघर काजकरौगी ३२ ॥ राग सारंग। चर्चरी ॥ राधिका मिलि गोपनारी। चलीं हिलिमिलि सबैरहसि बिहँसति सबै परस्पर कुतूहल करतभारी। मध्यब्रजनागरी रूपरस आगरी घोषऊजागरी चलि कुमारी। बदनद्युति इन्दुरी दन्तछबि कुन्दरी कामतन सुन्दरी करनि हारी। अङ्गअङ्गसुभग अतिचलत गजराजगति कृष्णसों एकमति यमुन जाहीं। निकसि कोउजात कोउ ठठुक ठाढ़ी रहति कोउ कहतिसंग मिलिचलहु नाहीं। युवतीआनन्दभरी सबहिजुरिकै खरीनई छरहरी उठिबैसथोरी। सूरप्रभुसुनि श्रवण तहाँकीन्हों गवन तरुणि मनरवन सब ब्रजकिशोरी ३३ ॥

अथ यमुना स्नान तहाँ भगवद्दर्शन ॥

रागनट ॥ गईब्रजनारि यमुनातीर। संगराजति कुँवरिराधा भईशोभा भीर। देखिलहरि तरङ्गहर्षी रहतनहिँ मनधीर। स्नानको बेभईआतुर सुभग जलगम्भीर। कोउगई जलपैठि तरुणी और ठाढ़ीतीर। तिनहिँ लईबुलायराधा करति सुखतनुकीर। एकएकहि धरति भुजभरि एक छिरकति नीर। सूरराधा हँसतिठाढ़ी भीजिछबितनुचीर१ ॥ रागजैत

राधा जलविहरति सखियनिसँग। ग्रीवप्रयन्त नीरमेंठाढ़ी छिरकति जल अपनेअपने रँग। मुखभरिनीर परस्पर डारति शोभाअाय अनूप बढ़ीतब। मनहुँ चन्द्रगण सुधागंडूकनि डारतहैं आनन्दभरेसब। आई निकसि जानुहदिलोंसब अँजुरिनते लैलैजलडारत। मानहुसूर कनक बल्लीजुरि अमृत पवन मिस झारत २॥ राग नट॥ यमुनाजल विहरत ब्रजनारी। तटठाढ़े देखत नँदनन्दन मधुरमुरलि करधारी। मोरमुकुट श्रवणनि मणिकुण्डल जलजमाल अतिभ्राजत। सुन्दरसुभगश्यामतन नवघन बिचबक पांति विराजत। उरबनमाल सुमन बहुभांतिन श्वेत लाल सित पीत। मनुसुरसरीतीर शुकबैठे बरणबरण तजिभीत। पीताम्बर कटितट क्षुद्रावलि बाजति परमरसाल। सूरदास मनों कनक भूमिढिगबोलत रुचिरमराल३॥ राग बिहागरो॥ नटवरवेषकाछेश्याम। पदकमलनख इन्दुशोभा ध्यान पूरणकाम। जानु जंघ सुघटनिकरभा नहींरम्भातुल। पीतकटि काछनीमानहु जलजकेसर भुल। कनकक्षुद्रावलीपंगति नाभिकटिकेभीर। मनहुँहंस रसालपंगति रहेहैंह्रदतीर। झलकरोमावली शोभा ग्रीवमोतिनहार। मनहुगङ्गाबीच यमुनाचली मिलि त्रयधार। बाहुदंड विशाल तटदोउ अंगचन्दनरेनु। तीरअस्तन मालतीछबिब्रजयुवति सुखदेनु। चिबुकपर अधरनि दशनद्युति बिम्ब बिज्जु लजाय। नासिकाशुक नयनखञ्जन कहतकवि शरमाय। श्रवणकुण्डल कोटि रविछबि भृकुटि कामकोदण्ड। सूरप्रभुहैं नीप के तट शीशधरेंशिखण्ड४॥ राग पूर्वी॥ उपमा धीरजतज्यो निरखिछबि। कोटिमदन अपनोबल हारेउ कुंडल किरणछप्यो रवि। खंजनकंज मधुप बिद्रुमबिधु तड़ित न दीनरहत कहुँ येदबि। हरिपटतर दै वाहि लजावति सकुचनहीं खोटेकबि। अरुणअधर दशननि द्युतिनिरखत बिद्रुम शिखरलजाने। सूरश्यामइच्छावपुकछुयो पटतरमेटिबिराने५ रागगौरी॥ उपमा हरितन देखि लजाने। कोउजलमें कोउ बननिरहेदुरि कोउकोउ गगनसमाने। मुखनिरखत शशिगयो अंबरको तड़ितदशन छबिहेरि। मीनकमल कर चरण नयनडर बनमेंकियो बसेरि। भुजा देखि अहिराज लजाने बिवरनिपैठे धाय। कटि निरखत केहरि डर मान्यो बनबनरहेदुराय। गारीदेहिंकबिनको वर्णतश्रीअँग पटतरदेत।

सूरदास इसको बिरमावत नामहमारोलेतई ॥ रागसारंग ॥ ऐसोगोपाल निरखि तिल तिल तनवारौं । नवकिशोर मधुरमूरति शोभा उरधारौं । अरुण तरुण कंजनयन मुरली कर राजै । व्रजजन मनहरणबेणु मधुरमधुर बाजै । ललितबर त्रिभंग सुतनु बनमाला सोहै । अतिसुदेश कुशुमपाग उपमा कोकोहै । चरणारुणित नूपुर कटि किंकिनि कल कूंजै । मकराकृत कुंडलछवि सूरको न पूंजै ७ ॥ रागकान्हरो ॥ मोतिनकी माल मनोहर । शोभित श्याम सुभगउर ऊपर मनो गिरिते सुरसरी धसीधर । तटभुजदंड भँवर भृगुरेखाचन्दन चित्रतरङ्गनि सुन्दर । मणि की किरणि मीनतनु लाजत मकरमनहुँ आवत त्यागेसर । यज्ञोपवीत बिचित्र सूरसुनिमध्यधार धाराजु बनीबर । शंख चक्र गदपद्म पाणि मनो कमल कुलहंसनि कीनेघर ८ ॥ रागनट ॥ राधेनिरखि भूलीअङ्ग । नन्दनन्दन रूपपरगति मतिभई तनुपंग । इतसकुच अति सखिन को उतहोत अपनी हानि । ज्ञानकरि अनुमानकीन्हो अबहि लैहैंजानि । चतुर सखियन परखिलीन्ही समुझिभई गवाँरि । सबैमिलि इतन्हान लागीं ताहिदियो बिसारि । नागरीमुखश्याम निरखति कबहुँ सखि यनि हेरि । सूरराधा लखति नाहीं इनदई अवटेरि ९ ॥ राग कान्हरो ॥ तबजान्यो येन्हाति सबै । हरिप्रति अङ्गअङ्गकी शोभाअँखियनि मग ह्वै लेउ सबै । कमल कोशमें आनि दुराऊं बहुरि दरशधौं होयँकबै । यहमन करि युवतिन तनहेरति सकुचतिहैं पुनि नाहिँफबै । कहूं कहै तजो मर्य्यादा इनसों मैं करि गोप तबै । सूरश्याम तबहीं मनमान्यो संगहिरैहौं जायजबै १० ॥ राग गौरी ॥ चितैराधा रतिनागरओर । नयन बदन छबियों उपजत मनोंशशि अनुराग चकोर । सारस रस अचवन को मानों फिरत मधुप युगजोर । पानकरत कहुँ तृप्ति न मानत पल कनि देतअकोर । लियेमनोरथ मानिसकलज्यों रजनि गयेपुनिभोर । सूर परस्पर प्रीतिनिरन्तर दंपतिहै चितचोर ११ ॥ राग कल्याण ॥ यह कछुभोरेहि भायभई । निरखति बदन नन्दनन्दनको ओर हतीसुगई । हृदयजानि प्रेमांकुर जाम्यो सप्त पतालगई । सोइ स पसरि शिखर अम्बरलों सबजग छायलई । बचन सुपत्र मुकुर अवलोकनि गुणनिधि पुहुपमई । परस्परहि अनुराग सींचिसुख लगीप्रमोदजई । मनकैसकल

मनोरथ पूरणा शोभर भारनई। सूरदास प्रभु गिरिधर नागर मिलि रसरीति ठई २२ ॥ राग बिलावल ॥ चकृतभए आनंद अवधिसब। निरखि स्वरूप विवेक नयनभरि याहुनते नहिंऔर कछू अब। चंद चरण मृदुचारु चंदनख चलत चिह्न चहुँदिशि शोभा। चित चकोर रति करि सोईमतितजि समसघन विषयलोभा। जानु जवनद्वार आकार आ-कृति कटि प्रदेश किंकिणि राजै। हृदविधु नाभि उदर त्रिवली बर अवलोकित भवभय भाजै। उरग इंद्र अनुमान सुभग भुज पाणिपद्म आयुध साजै। कनक बलय मुद्रिका मोदप्रद सदासुखद संतनिकाजै। उर बनमाल विचित्र विमोहन भृगु भ्रमरी भ्रमको नाशै। तड़ित बसन घनश्याम सदृश तन तेज पुंज तमको नाशै। परम रुचिर मणि कंठ किरणगण कुण्डल मुकुट प्रभान्यारी। मृदु मुख मधुमुसकानि अमृत सम सकललोक लोचनप्यारी। सत्यशील संपन्न सुमूरति सुरनरमुनि भक्तनभावै। अङ्गअङ्ग प्रतिछबि तरङ्गसो सूरवरणि क्यों कहिआवै ॥ २३ ॥ रागरामकली ॥ चितवनि रोंकेहू न रही। श्यामसुन्दर सिन्धुसन्मुख सरिता उमगि बही। प्रेमसलिल प्रवाह भौंरति मितिन कहूं कही। लोभलहरि कटाक्षघूंघट पटकरारढही। थकेपलपथ नावधीरज परत नहिँ न गही। मिलीसूर सुभाव श्यामहिँ फेरिहून चही २४ ॥ रागजैतश्री ॥ देखहुरी राधा उत अटकी। कान्हि हमहिं कैसे निदरतिही मेरेचित्त वह टरत न खटकी। चितैरही थकटक हरिछीतन ना जानिये कवन अङ्गलटकी। न्हातरही कैसेसंग मिलिके चित चंचल बिरहाकी चट-की। बातकहति तुलसी मुखमेलै नयन सैनदैदै मुहमटकी। सूरश्याम के रूपभुलानी राधाके चित सुधिनहिँ घटकी २५ ॥ राग बिलावल ॥ चितै रहीराधा हरिकोमुख। भृकुटी बिकट बिशाल नयनयुग देखत तनहिँ भयो रतिपति दुख। उतहि श्यामथकटक प्यारीछबि अङ्गअङ्ग अव-लोकत। रीझि रहे उतहरि इतराधा अरस परस दोऊमिलि नोकत। सखिन कहेउ वृषभान सुतासों देखे कुंवर कन्हाई। सूरश्याम येई हैं ब्रजमें जिनकी होत बड़ाई २६ ॥ राग रामकली ॥ हमहिँ कहेउहो श्याम दिखावहु। देखहु दरश नयनभरिनीके पुनिपुनि दरशन पावहु। बहुत लालसा करतिरहीतुम वे तुम कारण आवैं। पूरीसाधमिली तुम उन

को याते हमहिँबुलावैं। नीकेसगुन आजु यहाँआई भये तुम्हारेकाज। सुनहुँसूर हमको कछुदैहो तुमहिँमिलें व्रजराज १७ राधाकहेउ आजु इन्हेंजानी । बारबार मैं हरितन चितई तबहीं ये मुसकानी । कालिह कहेउ मैं इनसों वैसे अबतो बात न ठानी । यह चतुरई परी मोहींपर मनमन अतिहि लजानी । मेरी बातगई इनआगे अबहिँ करति बिन पानी । सूरदासप्रभु कहाकहौं मैं अबतुम हाथबिकानी १८ मैं अतिही यह पोचिकरी । येमेरीमर्य्यादालेहैं तादिनइनसोंबहुत लरी । सुन्दर श्याम कमलदललोचन तुमअबहोहु सहाई । ऐसी कहोबात इनआगे मेरीपति जनिजाई । तब इकबुद्धिरची मनहींमन अतिआनन्द हुलास। सूरश्याम राधा आधातनु कीन्हीबुद्धि प्रकास १९ राधाचलहु भवनहिँ जाहिँ । कबहींकी हम यमुनाआईं कहतिअरु पछिताहिँ । कियोदरशन श्यामको तुम चलहुगीकी नाहिँ । बहुरि मिलिहौं चाहिराखौ कबहुँ सबमुसकाहिँ । हमचली घर तुमहुँ आवहु शोचभयो मनमाहिँ । सूरराधा सहित गोपी चलींव्रज समुहाहिँ २० ॥ राग बिलावल ॥ कहि राधा हरिकेसेहैं। तेरेमन भायेकी नाहीं कीसुन्दरकी नैसेहैं । की पुनि हमहिँ दुराव करौगीकी केहोवै जैसे हैं । कोहम तुमसों कहति रही ज्यों साँचकहो कीतैसे हैं। नटवर भेष काछनी काछे अङ्गन रतिपति जैसेहैं। सूरश्याम तुमनीकेदेखे हमजानत हरि ऐसे हैं २१ राधा मन में यहै बिचारति । येसबमेरेख्याल परीहैं अबमैं बातनिले निरवारति। मोहूंते ये चतुर कहावति ये मनहीं मनमोको नारति । ऐसेबचन कहोंगी इनसों चतुराई इनकी मैं झारति । जाके नन्दनन्दन शिरसमरथ वारवार तन मन धन वारति। सूरश्यामकेगर्ब राधिका सूधेकाहू तन न निहारति २२ राधाहरिके गर्बगहोली । मन्दमन्द गति मतमतंग ज्यों अङ्गअङ्ग सुखपुंज भरीली । पगद्वै चलति ठठुकि रहेठाढ़ी मौन धरे हरिके रसगीली । धरणी नख चरणन कुरुवात्रति सौतिन भाग सुहाग डहीली । नेकनहीं पियतेकहुँ बिछुरति तातेनाहिन कामदहीली। सूरसखी बूझै यह काहिहैं आजुभई यहभेंट पहीली २३ ॥ राग आसावरी ॥ क्यों राधा फिरि मौनधरेउरी । जैसे नौवा अम्ब झवावर ऐसेहिते यहमौन करेउरी । बातनहीं मुखते कहिआवति कातेरोमन

श्याम हरेउरी। जानिनहीं पहिँचानि न कबहूंदेखतहीं चित तिनहिँ डरेउरी। साँची बात कहौ तुम हमसों सुनि यहशोच परेउरी। सूर श्याम तनदेखिरहीकह लोचन यकटकते न टरेउरी २४ ॥ रागधनाश्री ॥ कहाकहति तुमबात अलेखो। मोसों कहति श्यामतुम देखे तुमनीके करिदेखो। कैसे वरण भेषहै कैसो कैसो अङ्ग त्रिभङ्ग। मोंआगे वह भेद कहौवों कैसोहै तनुरङ्ग। मैं देखेकी नाहीं देखेतुमसों बारहजार। सूरश्यामहै आँखियन देखति जाकोवार न पार २५ ॥ रागकान्हरो ॥ हम देखेयहिभांति कन्हाई। शीशशिखण्ड अलक बिथुरेमुख श्रवणनि कुण्डल चारुसुहाई। कुटिल भृकुटि लोचन अनियारे सुभग नासिका राजत। अरुण अधर दशनावलि की द्युति दाड़िम कनतनु लाजत। ग्रीवहार मुक्ता बनमाला बाहुदण्ड गजशुण्ड। रोमावली सुभग बग पंगति जातनाभ ह्रदकुंड। कटिपटपीत मेखला कंचन सुभग जंघयुग जानु। चरण कमल नखचन्द्रनहीं समयेसे सूरसुजान २६ ॥ रागबिलावल ॥ बनेहैं विशाल कमल दलनैन। ताहूमें अति चारु बिलोकनि गूढ़भाव सूचत सखिसैन। बदनसरोज निकट कुंचितकच मनहुँ मधुपआये मधु लैन। तिलक तरणि शशि कहत कछुक हँसि बोलत मधुर मनोहर बैन। मदन नृपति को देश महामद बुधिबल बसि न सकत उरचैन। सूरदास प्रभुदूत दिनहिँदिन पठवत चरित चुनौतीदैन २७॥ रागबसन्त ॥ मोहन बदन बिलोकत आँखियनि उपजतहै अनुराग। तरणिताप तल-फत चकोर शशि पियत पियूष पराग। लोचन नलिन नये राजत सखिपूरण मधुकर भाग। मानहुँ अलि आनन्दमिले मकरन्द पीवत ऋतुफाग। भवँरिभाग भृकुटीपरकुंकुम चन्दनबिन्दु बिभाग। चात्रिक सोम शुक्र धनुघनमें निरखत मनबैराग। कुंचितकेश मयूरचन्द्रिका मण्डल सुमन सुपाग। मानहुंमदन धनुष शरलीन्हें बरषतहै बनबाग। अधर बिम्बते अरुण मनोहर मोहन मुरलीराग। मानहुँ सुधा पयोधि घोरिघन ब्रजपर बरषन लाग। कुण्डल मकर कपोलन झलकतश्रम शीकरके दाग। मानोंमीन मकरमिलि क्रीड़त शोभित सदन तड़ाग। नासा तिलप्रसून पदवीपर चिबुकचारु चितलाग। दाड़िम दशन मंद गति मुसुकनि मोहन सुर नर नाग। श्रीगोपाल रसरूप भरीहैं सूरसनेह

सुहाग। ऐसे गोपालसिंधु अवलोकत इनअँखियन के भाग २८ ॥ राग धनाश्री ॥ हमदेखे यहिभाँति गोपाल। छन्दकपट कछुजानत नाहींमूधी हम व्रजबाल। झूँठीकीसाँची नहिँभावै साँचोझूँठी कबहुँनहोइ। साँचीकी झूंठी करिडारै यह तासोइजानै धनिजोइ। इतनिन मैं दुराव कछुनाहीं नाहीं भेदाभेद बिचार। सूरदासजे झूँठीसिखवैं तिनकी गतिजानै करतार २९ ॥ राग आसावरी॥ झूँठी बातनि होतिभलाई। चोर जुंवारि संग बहुकरिये झूँठेको नहिं कोउ पतियाई। साँचीकी झूँठी करिडारै पंचन में मर्यादाजाई। बोलिउठी यकसखी बीचते कहयह जानै लाजबड़ाई। यामेंकछू नफाहै उनको जातेमन ऐसीयेआई। सूर सुभाव परेउ ऐसोई कोजानैरी बुद्धिपराई ३० ॥ रागधनाश्री ॥ ऐसे हम देखे नन्दनन्दन। श्यामसुभग तन पीतबसनजनु मनहु जलद परतड़ित सुछन्दन। मन्द मन्द मुरलीरव गरजनि सुधावृष्टि बर्षत आनन्दन। बिबिध सुमन बनमाला उरमनु सुरपति धनुष नहीं यहि छन्दन। मुक्तावली बीच बगपंगति सुभगअङ्ग चरचित छबि चन्दन। सूरदास प्रभु नीपतरोवरतर ठाढ़ सुरनर मुनिबंदन ३१ ॥ राग देवगन्धार ॥ तुमको कैसे श्यामलगे। न्हातरहीं जलमें सबतरुणी तब तुमनैना कहांखगे। अङ्गअङ्ग अवलोकन कीन्होंकौन अङ्गपर रहेपगे। भलो न्हान ज्ञान तनुभूल्यो नन्दसुवन तहँतेन डगे। जानति नहीं कहूंनहिँदेखे मिलिगइ ऐसे सनहुसगे। सूरश्याम ऐसेतैंपेखे मैं जानति दुख दूरिभगे ३२ ॥ राग गौरी ॥ तुमदेखे मैं नहीं पत्यानी। मैं जानति तेरीगति सबही यहै साँच अपने मनआनी। जोंतुम अङ्गअङ्ग अवलोक्यो धन्यधन्य मुख अस्तुति गानी। मैं तो एक अङ्ग अवलोकत दोऊनयनगये भरिपानी। कुंडल झलक कपोलनि आभा इतनीहिँ मांझ बिकानी। यकटकरही नयन दोउछ्वे सूरश्यामको नहिँपहिँचानी ३३ ॥ राग नट ॥ अँखिया अजान भई। एकअङ्ग अवलोकत हरिके औरहुती सोगई। येभूलींज्यों चोर घरघर निधिनलई। फेरत पलटत भोरभयो छुटकाय दई। पहिलेहि रतिकरकन आरति करि ताहिरई। सूर सकति हठिदाय लगावति पीरनई ३४ ॥ राग सारंग ॥बिधातहिचूक परी मैं जानी। आजुगोबिंदहि देखिहों इहै समुझि पछितानी। रचिपचि शोचिसँवारि सकल अङ्ग

चतुर चतुरईठानी। दृष्टिनदई रोमरोमनिप्रति तितनेहिं कलानशानी। कहाकरों अति सुख द्वैनयना उमँगि चलत पलपानी। सूरसुमेरु समाय कहावों बुद्धिनशानि पुरानी ३५ बड़ोनिठुर विधनायहदेख्यो। जबतैं आजु नन्दनन्दन छबि बारबार करिपेख्यो। नखअँगुरी पगजानु जंघ कटि रचिकीन्हों गिरमान। हृदय बाहु करहस्त अङ्गअङ्ग मुखअति सुन्दरबान। अधर दशन रसना रसबाणी श्रवणनयन अरुभाल। सूर रोमभरि लोचनदेतो देखत बनत गोपाल ३६ ॥ राग धनाश्री ॥ द्वै लोचन तुम्हरे द्वैमेरे। तुमप्रतिअङ्ग बिलोकन कीन्हों मैं भइमगन एकअङ्गहि हेरे। अपनेभाग्य सखीरी तुमतनमें मैं कहु गनेरे। जोबोइये सोइपै-लुनिये औरनहीं त्रिभुवन भटभेरे। श्यामरूप अवगाह सिंधुते पारहोत चढ़ि डोंगिनकेरे। सूरदास तैसेयेलोचन क्रिपानाथ बिनाकोपेरे ३७ राग बिलावल ॥ सखी कैसे के कहौं हरिके रूपके रसही। अपनेहिं तनमें भेद बहुतबिधि रसना न जानत नयननकी दशाही। जिनदेखेते आहि बचनबिना जिनहिं बचन दरशन न तिसही। बिनबाणी अतिउमँगि प्रेमजल सुमिरि सुमिरि वा रूपयशाही। यहैसमुझि पछितात मनहिँ मन कहाकरोंमें बिधि न सही। सूरसकल अङ्गनिकी यहगति कहा रच्योबिधि छापदपसुही ३८॥ राग आसावरी ॥पावैकौन लिखेबिनुभाल। काहूको यदरस नहिंभावत कोउ भोजनको फिरत बिहाल। तुम ल-ख्योहरि अङ्गमाधुरी मैंनहिँदेखे कौनगोपाल। जैसेरंक तनक धनपावे ताहीमें बहहोतनिहाल। तुमहिंमोहिँ इतनो अंतरहै धन्यधन्य व्रजकी कुलबाल। सूरदास प्रभुकी तुम संगिनि तुमहिँमिले बहदरश गोपाल ३९ ॥ राग कल्याण ॥ सुनहु सखी राधाकी बानी। हमको धन्य कहति आपुनधृग तहँनिर्मल अतिज्ञानी। आपुन रङ्कभई हरि धृगको हमहिँ कहति धनवंत। यहपूरणाहमनिपट अधूरी हमअसंत यहसंत। धृगधृग हम धृग बुद्धि हमारी धन्य राधिका नारि। सूरश्याम को यह पहिँ-चान्यो हम भइअन्त गँवारि ४० ॥ रागकेदारा । चर्चरी ॥ धन्यराधा धन्य बुद्धि हेरी। धन्यमाता धन्यपिता धन्यभगति तुवधृग हमहिँनहिँ सम-दासि तेरी। धन्यतुवज्ञान धनिध्यानधनि परमाननाहिँ जानति आन ब्रह्मरूपी। धन्यअनुराग धनिभाग धन्यसोभाग धन्ययोबन रूपअति

अनूपी । हमविमुख तुम समुख कृष्णप्यारी सदानिगम मुख सहस अ· स्तुति बखानै । सूरश्यामा श्याम नवलजोरी अटल तुमहिँ बिनुकान्ह धीरज न आनै ४१ ॥ राग बिहागरो ॥ जैसेकहे श्याम हैं तैसे । कृष्णरूप अवलोकनि सखिरीनयन होयँजोऐसे । तैंजुकहति लोचन भरिआये श्यामकियोतहँठौर । पुरायस्थल जानिके बिराजे बातनहीं यह और । तेरेनयन बास हरिकीन्हों राधा आधाजानि । सूरश्याम नटवर बपु काछे निकसे उहिमगआनि ४२ अचानक आयगये तहँश्याम । कृष्ण कथा सबकहत परस्पर राधामिलि ब्रजबाम । मुरली अधरधरे नटवर बपु कटिकछनी परवारों काम । सुभगमोर चन्द्रिका शीशपर आय गये पूरण सुखधाम । तरुतमालतर तरुणकन्हाई दूरिकरन युवतिन तनुकाम । सूरश्याम बंशीधुनि पूरत राधा राधा लैलै नाम ४३ ॥ राग बिलावल ॥ थकितभई राधा ब्रजनारी । जोमन ध्यान करति अवलोकन तेइअन्तर्यामी बनवारी । रतन जटितपग सुभग पांवरी नूपुरधुनि कल परमरसाल । मानहु चरण कमल दललोभी निकटहिबैठे बालमराल । युगलजंघ मरकत मणिशोभा बिपरित भाँति सँवारे । कटि काछनी कनक क्षुद्रावलि पहिरे नन्ददुलारे । हृदय बिशालमाल मोतिनबिच कौस्तुभमणि अति भ्राजत । मानहुनभ निर्मल तारागण तामधिचन्द बिराजत । दुहुंकर मुरलिअधर परसाये मोहनराग बजावत । चमकत दशन मटकि नासापुट लटकिनैन सुख गावत । कुण्डल झलक कपो· लनि मानहुमीन सुधारस क्रीड़त । भृकुटीधनुष नयन खंजनमनु उड़ति नहीं मनब्रीड़त । देखिरूप ब्रजनारि थकितभइ क्रीटमुकुट शिरसोहत । ऐसे सूरश्याम शोभानिधि गोपीजनमन मोहत ४४ ॥ रागकल्यान ॥ जब ते निरखे चारु कपोल । तबते लोकलाज सुधि बिसरी दैराखे मन ओल । निकसे आनि अचानक तिरछे पहिरेपीत निचोल । रतन जटित शिरमुकुट बिराजत मणिमय कुण्डललोल । कहाकरों वारिज मुख ऊपर बिथके षट्पद गोल । सूरकहा करिये उतकर्षा बशकीने बिनुमोल ४५ बनेहैं बिशाल सुलोचन लोल । चितै चितै हरि चारु बिलोकनि मानहुं माँगत हैं मनओल । अधर अनूप नासिका सुन्दर कुण्डल मिलत सुदेशकपोल । मुखमुसकात महाछबि लागति श्रवण

सुनतसुधि मीठेबोल। चितवतरहत चकोरचन्द्रज्यों नेक न पलक ल-
गावतडोल। सूरदास प्रभुकेवश ऐसे दासीसकल भईबिनमोल ४६ ॥
राग पूर्वी ॥ तरुतमाल तरे त्रिभंगी तरुण कान्हकुँवरठाढ़ेहैं सांवरेबरन।
मोरमुकुट पीताम्बर वनमालाविराजित देखतब्रजजन मनहरन। सखा
अंश पर बामभुज दीन्हे मुरली अधरमालन बिश्वंभरन। श्यामकमल
नयनको कोकीन्हेंबश बिलोकनि श्रीगोवर्द्धनधरन ४७ ॥ राग भैरों ॥
जैसीजैसी बातकरै कहत न आवैरी। श्यामसुन्दर अति मनभावैरी।
मदनमोहन मृदुवेणु बजावैरी। तानतरंग सरस करिकरि रिझावैरी।
जंगम थावरकरै थावर चलावैरी। लहरि भवंगतजि हन्दुखआवैरी।
व्योमजन अतिगति फूलबरषावैरी। कामिनि धीरजधरि कुकोजुक-
हावैरी। नन्दलाल ललना ललचावैरी। सूरदास प्रेमहरि हिये न स-
मावैरी ४८ ॥ राग पूर्वी ॥ चारुचितौनि चंचल डोल। कहिन जात मन
में अतिभावत कछु जो एक उपजत गतिगोल। मुरली मधुर बजावत
गावत चलत करज अरुकुण्डललोल। सब छबिमिलि प्रतिबिम्बबि-
राजत इन्द्र नीलमणि मुकुट कपोल। कुञ्चित केश सुगन्ध सुवसमनो
उड़िआये मधुपनिकेटोल। सूर शुभ्रनासिका मनोहर अनुमानत अनु-
राग अमोल ४९ ॥ राग गौरी ॥ नन्दनँदन वृन्दावन चन्द। यदुकुल नभ
तिथिदुतिय देवकी प्रकटे त्रिभुवनचन्द। जठर कुहूते बिधुर बारुणी
दिशि मधुपुरी सुछन्द। बसुदेव शम्भु शीशधरि आने गोकुल आनँद
कन्द। ब्रजप्राची राकातिथि यशुमति शरदसरिसऋतु नन्द। उडगण
सकलसखा संकर्षण तम दनुकुलज निकन्द। गोपीजनतहँ धरिचकोर
गति निरखिमेटि पलद्वन्द। सूर सुदेश कलाषोडश परिपूरण परमा-
नन्द ५० नन्दनँदन मुखदेखौ माई। अङ्गअङ्गछबि मनहुंउयेरबि शशि
अरु अमर लजाई। खंजन मीन कुरंग भृङ्ग बारिजपर अतिरुचिपाई।
श्रुतिमण्डलकुण्डल बिबिमकरहि बिलसतमदन सदाई। कण्ठकपोत
कीर बिद्रुम पर दाड़िम कनन चुनाई। दुइशारंगबाहनपरमुरली आई
देतदुहाई। मोहे थिर चर बिटप बिहंगम व्योमबिमान थकाई। कु-
सुमांजलि बर्षत सुर मुनिसब सूरदास बलिजाई ५१ ॥ राग केदारो ॥ देखि
री देखि आनँदकन्द। चित्त चातक प्रेमघन लोचन चकोर सुचन्द।

चलतकुण्डल गण्डमण्डल झलक ललितकपोल। सुधासर जनुमकर क्रीडत इन्दु दराड हिंडोल। सुभग कर आनन समीप हरि मुरलिका यहिभाय। मनोउभैअम्भोज भाजन लेतसुधाभराय। श्यामदेहदुकूल द्युति छवि लसत तुलसीमाल। तड़ित घन संयोग मानों सैनका शुक जाल। अलक अविरल चारु हांस बिलास भृकुटी भङ्ग। सूर हरिकी निरखिशोभा भई मनसाभङ्ग ५२॥ राग मलार॥ देखोमाई सुन्दरता को सागर। बुधिबिबेक बल पार न पावत मगनहोत मननागर। तनुअति श्याम अगाध अम्बुनिधि कटिपटपीत तरंग। चितवत चलत अधिक छवि उपजत भँवरपरत प्रतिअंग। नयनमीन मकराकृत कुण्डल भुज बल सुभग भुजङ्ग। मुक्तामाल मिलीमनो सुरसरि द्वैसरिता लिये संग। कनकमुकुट किंकिणि मणि भूषण अवलोकनि सुखदेत। जनु जल-निधिमथि प्रकटकियो शशि श्री अरु सुवासमेत। देखिस्वरूप सकल गोपीजन रहीं बिचारि बिचारि। तदपि सूर तरिसकी न शोभा रही प्रेम पचिहारि ५३॥ राग नट॥ माधवजू के बदनकी शोभा। कुटिल कुन्तल कमलप्रति मनों मधुपरसलोभा। भृकुटि इमि नवकंज परसत सदृश चंचल मीन। मुकुटकुण्डल किरणि रवि छवि परम बिगसित कीन। सुरभिरेणु परागरंजित मुरलिधुनि अलिगुंज। निरखि सुभग सरोज मुदित मरालसम शिशुपुंज। दशनदामिनि बिम्ब मिलि मनों जलजमध्य अकास। निगमवाणी नेति क्यों कहिसकै सूरजदास ५४ राग गौरी॥ देखिसखी हरिको मुखचारु। मनहुं छुड़ायलियो नँदनन्दन वा शशिको सतसारु। रूप तिलक कच कुटिल किरणिछवि कुंडल कल बिस्तारु। पत्रावलि परिवेष सुमनशशि मिल्यो मनहुं गुडदारु। नयनचकोर विहंग सूरसुनि पियत न पावत पारु। अब अंबक ऐसो लागतुहै जैसे भूंटायारु५५॥ राग कान्हरो॥ देखुरी हरिके चंचलतारे। कमल मीनकी कहाइतीछवि खंजनहू न जात अनुहारे। वे देखिनि-रखि नमित मुरलीपर करमुखनयन एकभयेचारे। मनो सरोज बिधु बरु बंचिकार करतनाद वाहनचुचुकारे। उपमाएक अनूपमउपजति कुंचित अलक मनोहरभारे। बिडरत बिभ्रुकिजाति रथतेमृग जनुस-शंकि शशिलंगरसारे। हरिप्रति अंगबिलोकि मानिरुचि ब्रजबनितानि

आश बनवारे। सूरश्याम मुख निरखि मगनभई यह बिचारि चित अनत न टारे ५६ ॥ रागपूर्वी ॥ हरिमुख निरखत नयन भुलाने। ये मधुकर रुचिपंकज लोभी ताहीते जुडाने। कुण्डल मकर कपोलनि कें ढिग जनुरवि रैनि बिहाने। भृवसुन्दर नयननि गति निरखत खञ्जन मीनलजाने। अरुण अधर द्विजकोटि वज्रद्युति शशिगण रूपसमाने। कुंचित अलक शिलीमुख मिलि मानों लैमकरंद निदाने। तिलक लिलाट कराट मुक्तावलि भृयरा ससि में साने। सूरदासस्वामी अङ्ग नागरते गुणजात न जाने ५७ ॥ रागकेदारो ॥ देखिरी नवल नन्द किशोर। लकुट सों लपटाय ठाढे युवतिजन मनचोर। चारुलोचन हँसि बिलोकनि देखिकै चितभोर। मोहनी मोहन लगावत लटकि मुकुट झकोर। श्रवण धुनिसुनि नाद मोहत करत हिरदय फोर। सूरअङ्ग त्रिभङ्ग सुन्दर छबि निरखि तृणतोर ५८ ॥ राग कान्हरो ॥ व्रजबनिता देखति नँद नन्दन। नवघन नीलबरण ता ऊपर खोरिकिये तनु चंदन। कनक बरण कटिपीत पिछौरी उर भ्राजित बनमाल। निर्म्मल गगन श्वेतबादर तापर मनो दामिनी जाल। मुक्तामाल विपुलबग पंगति उडत सकभई ज्योति। सूरश्याम छबिनिरखत युवती हरष परस्पर होति ५९ ॥ रागसूहो बिलावल ॥ प्रातसमय आवत हरिराजत। रतन जटित कुण्डल सखि श्रवणन तिनकी किरणि सूरतन लाजत। सातें राशि मेलिद्वादश में कटिमेखला अलंकृत साजत। पृथ्वी मथो पिता सों लेकर मुख समीप मुरलीधुनि बाजत। जलधि ताततेहि नामकराठ के तिनकेपंख मुकुट शिरभ्राजत। सूरदास कहै सुनहुँ गूढहरि भक्तनि भजति अभक्तनभ्राजत ६० ॥ रागनट ॥ हरितन मोहनीमाई। अङ्गअङ्ग अनङ्ग सतशत बरणि नहिं जाई। कोउ निरखि बिथुरी अलकमुख अधिक सुखदाई। कोउ निरखि रहि भाल चन्दन एक चितलाई। कोउनिरखि रहिचारु लोचन निमिष भरमाई। सूरप्रभुकी निरखि शोभा कहत नहिँ आई ६१ ॥ राग गुर्जरी ॥ श्याम अङ्ग युवती निरखि भुलानी। कोउ निरखति कुण्डलकी आभा इतनेहिँ माँझदिकानी। ललित कपोल देखिकोउ अटकी शिथिलभई ज्योंपानी। देह गेहकी सुधिनहिँ काहू हरषति कोउ पछितानी। कोउ निरखतही ललित

नासिका यहकाहू लहिँजानी। कोउनिरखति अधरनकी शोभा फुरतिनहीं मुखबानी। कोउ चकृत भइ दशन चमकपर चकचौंधी अकुलानी। कोउनिरखति द्युतिचिबुक चारुकी सूरतरुणि बितानी ६२

राग बिलावल॥ श्यामहृदय बरमोतिन माला। बिथकित भई निरखि ब्रजबाला। श्रवण थके सुनि बचन रसाला। नयन थके दरशन नँदलाला। कंबुकंठ भुजदंड बिशाला। करकेयूर कुंचन नगझाला। पल्लवहस्त मुद्रिका भ्राजे। कौस्तुभमणि हृदयस्थल छाजे। रोमावली बरणिनहिँजाई। नाभिस्थलकी सुन्दरताई। कटिकिंकिणी चारुमणि संयुत। पीतांबर कटि तट छबि अद्भुत। युगल जंघकी पटतर कोहै। तरुणी मनधीरजको जोहै। जानुजघनकी छबि न सँवारै। नारिनिकर मनबुद्धि बिचारै। रतन जटित कंचनकल नूपुर। मंद मंद गति चलत मधुरसुर। युगल कमल पदनख मणिशोभा। संतनमन संतत जहँलोभा। जोजेहि अंगसु तहाँ भुलानी। सूरश्याम गतिकाहु न जानी ६३॥

राग केदारो। चर्चरी॥ श्यामसुख राशिरस राशिभारी। रूपकीराशि सुख राशियौवनवती थकितभइ निरखिनव तरुणिनारी। शीलकीराशि यश राशि आनंद राशि नीलनव जलद छबि बदनकारी। दयाकी राशि बिद्याराराशि नर्दयराशि दनुजकुल प्रहारी। चतुराईराशि छल राशिकलराशि हरिभजहिँ जेहिहेत तेहिदेनहारी। सूरप्रभुश्यामसुख धाम पूरणकाम लसत कटिपीत मुख मुरलिधारी ६४॥ रागबिहागरो॥

सुन्दरबोलत आवतबैन। नासानें तेहिसमै सखीरी सबतनु श्रवण कि बैन। रोमरोम में शब्द सुरति की नखशिखलों चखऐन। इतेमाननी ओचंचलता सुनी न समुझीसैन। तबते बिथकि ह्वै रही चित्रसी पलन लगत चितचैन। सुनहुसूर यहसाँच कि संभ्रससपन किधौं दिनरैन६५

राग मलार॥ नयनासाई भूले अनत न जात। देखुसखी शोभाजु बनीहै माधव तन मुसकात। दाड़िम दशन निकट नासाशुक चोंचचलाय न खात। मनोरतिनाथ हाथ भृकुटीधनु तेहिअवलोकि डेरात। बदन प्रभा मुखचंचल लोचन आनँद उर नसमात। मानहुँ भौंहजुवारत जीतेशशि न चलत मृगमात। कुंचितकेश मधुरधुनि मुरली सूरदास सुरसात। मनहुँ कमलपर कोकिल कूजत अलिगण उपर उड़ात ६६ राग कान्हरो॥

श्यामकमल पदनखकी शोभा। जेनख चन्द्रइन्द्र शिरपरसे शिव वि-
रंचिमन लोभा। जेनखचन्द्र सनकमुनि ध्यावत नहिँ पावत भरमाहीं।
तेनखचन्द्र प्रकट व्रजयुवती निरखि निरखि हरषाहीं। जे नखचन्द्र
फणीन्द्र हृदयते एकौनिमिष न टारत। जेनखचन्द्र महामुनि नारद प-
लक न कहूं बिसारत। जेनखचन्द्र भजन खलनाशन रमाहृदय जे पर-
सति। सूरश्याम नखचन्द्र बिमलछबि गोपीजन मिलि दरशति ६७॥
राग धनाश्री ॥ व्रजयुवतीहरि चरण मनावैं। जेपद कमल महामुनि दुर्लभ
ते सपनेहुँ नहिँपावैं। तनु त्रिभङ्ग युगजान एकपद ठाढे यक्रदरशाये।
अंकुश कुलिस वज्रध्वज परगट तरुणी मन भरमाये। वह छबि देखि
रही यकटकही यहमन करति बिचार। सूरदास मनो अरुण कमल
परसुखमा करत बिहार ६८॥ राग रामकली ॥ पियपद कमलको मकरंद।
मलिन मत्तमनो मधुप दर हरिप्रिय निरसकुमंद। अमृतहूंते अमलअति
निजद्रवेरूप अनन्द। परमशीतल जानि शंकर शिरधरेउ तजिचन्द।
सर्पशेल न कमलसागर नहिँ असुर सुरदंद। सूरपावन लोक बेजल सुर
सरी जसुछन्द ६९ ॥ राग बिलावल ॥ देखिसखी हरि अङ्ग अनूप। जानु
युगल शुठि जंघबिराजत कोबरणै यहरूप। लकुटी लयेलटकि भयेठाढे
एकचरणधरधारे। मनहुनीलमणिखम्भ कामरचि एकलपेटि सुधारे।
कबहुँ लकुटते जानुलोंहरि अपने सहज चलावत। सूरदास मानहुँ कर
भाकर बारम्बार डुलावत ७०॥ राग नट॥ कटितटपीत बसन सुदेश।
मनहुँ नवघन दामिनी तजिरही सहज सुबेश। कनकमणि मेखला
राजत सुभग साँवल अङ्ग। मनोहंस रसाल पंगति नारि बालक संग।
सुभग कटि काछनी राजतिजलज केशरखण्ड। सूरप्रभु अङ्ग निरखि
माधुर मदनतन बरेउदंड ७१ तरुणी निरखि हरिप्रति अङ्ग। कोउनि-
रखि नखइन्दु भूली कोउचरण युगरङ्ग। कोउनिरखि नूपुर रहीथकि
कोउनिरखि युगजान। कोउ निरखि युगजंघ शोभा करति मन अनु-
मान। कोउ निरखि कटिपीत कछनी मेखला रुचिकारि। कोउनि-
रखि हृदनाभ की थकिडारि तनमन वारि। चारु रोमावली हरिके
चारुउदर सुदेश। मनहुँ अलिश्रेणी बिराजतबने एकहिभेष। रही यक
टक नारिठाढी करति बुद्धि बिचारि। सूरआगम कियो नभते यमुन

सच्छमथारि ७२ रंजित रोमराजिव रेख। नीलघनमनु धूमधारा रही सूक्षमशेष। निरखि सुन्दर हृदयपर भृगुपाद परम सुलेष। मनहुं शोभित अभ्र अन्तर शंभुभूषण भेष। मुक्तमाल नक्षत्रगण सम अर्द्धचन्द विशेष। सजल उज्ज्वल जलदमलयज प्रबल निरन अलेष। केकिकच सुरचापकीछबि दशन तड़ित सुपेष। सूरप्रभु अवलोकि आतुर तजेनैन निमेष ७३ ॥ रागगौरी ॥ हरिप्रतिअङ्ग नागरि निरखि। दृष्टि रोमावली पररहि परश नाहिँन परखि। कोउकहति यहकाम सरनी कोउकहति नहिँयोग। कोउ कहति अलिबाल पंगति जुरेसक संयोग। कोउ कहति यहिकाम पठयो डसेजिनिये काहु। श्यामरोमावलीकी छबि सूरनाहिँ निबाहु ७४ ॥ राग आसावरी ॥ चतुरनारि सबकहतविचारी। रोमावली अनूप बिराजै यमुनाकी अनुहारी। उरकलिंदते धँसि जलधारा उदर धरणि परवाह। जातिचली अतितेजधारहे नाभीह्रद अवगाह। भुजा दंद तट सुभग घाटघट बनमाला तरुकूल। मोतिनमाल दुहूंघा मानों फेनलहरि रसफूल। श्यामरोमावलिकी छबि देखतिकरति बिचारि। बुद्धिरचति तरिसकति न शोभा प्रेमबिवश ब्रजनारि ७५ ॥ रागकल्याण ॥ रोमावलीरेख अतिराजत। सूक्षमशेष धूमकीधारा नवघन ऊपर भ्राजत। भृगुपद रेख श्यामउर सजनी कहा कहौं ज्योंछाजत। मनहुँमेघ भीतर शशिदुतिया कोटिकाम तनुलाजत। मुक्तामाल नंदनंदनउर अर्द्ध सुधा घटकांति। तनुश्रीखण्ड मेघ उज्ज्वल अति देखि महाबलभाँति। बरहा मुकुट इन्द्रधनु मानहुंतड़ित दशन छबि लाजत। यकटक रही बिलोकि सूरप्रभुके तनुकी कहहाजत ७६ ॥ राग आसावरी ॥ श्यामहृदय जलसुतकीमाला अतिहि अनूपम छाजैरी। मनहुं बलाक पांतिनवघन पर यह उपमा कछु भ्राजैरी। पीत हरितसित अरुण मालबन राजत हृदय बिशालैरी। मानहु इंद्रधनुष नभमंडल प्रकट भयोतेहि कालैरी। भृगुपद चिह्न उरस्थल प्रकटै कौस्तुभमणि ढिग दरशतरी। बैठी जनु यटबन्धु एकसंग अर्द्धनिशा मिलि बिहरतरी। भुजा बिशाल श्याम सुन्दरकी चन्दनखौरि चढ़ायेरी। सूरसुभग अँग अङ्गकी शोभा ब्रज ललना ललचायेरी ७७ ॥ रागमलार ॥ निरखिसखी सुन्दरताकी सींव। अधर अनूपमुरलिका राजत लटकि रहति अधग्रींव। मंदमंद सुरपूरत

मोहन रागमलार बजावत। कबहुँक रीझिमुरलिपर गिरिधर आपुहि रसभरि गावत। हँसत लसत दशनावलि पङ्क्ति व्रजबनिता मनमोहत। मरकत मणिपुटबिच मुक्ताहल बदनभरेमनुमोहत। मुखबिगसत शोभा यकआवत मनोराजीव प्रकास। सूरअरुण आगमन देखिकै प्रफुलित भये हुलास ७८॥ रागटोड़ी॥ गोपीजन हरिबदन निहारति। कुञ्चित अलक बिथुरिरहे भुवपर तापर तनमन वारति। बदन सुधासरसीरुह लोचन भृकुटीदोउ रखवारे। मनहुँ मधुप मधुपानहिँ आवत देखिडरत जियभारे। यकयक अलक लटकि लोचनपर यह उपमा इकआवति। मनहुँ पन्नगिनि उतरि गगनते दलपर फणहिँ रसावति। मुरली अधर धरिकल पूरित मंदमंद सुरगावत। सूरश्याम नागर नारिन के चंचल चितहि चुरावत ७९॥ राग बिलावल॥ देखि सखी यह सुन्दरताई। चपलनयनबिच चारुनाशिका यकटक नयनरही तहँ लाई। करति बिचार परस्पर युवती उपमाआनति बुद्धिबनाई। मानहुंखञ्जन बिच शुकबैठोयहकहिकै मनजातलजाई। कछुयकतिलप्रसूनकी आभा मद मधुकर जहँ रहेउ लुभाई। सूरश्याम नासिका मनोहर यह सुन्दरता उनकहँ पाई ८०॥ मनोहरहैं नयननकी भाँति। मानहुं दूरि करत बल अपने शरदकमलकी काँति। इन्दीवर राजीवकुसेशय जीते सबगुण जाति। अतिआनन्द सब्रीड़ाताते बिगसत दिन अरु राति। खञ्जरीट मृगमीन बिचारत उपमाको अकुलाति। चञ्चलचपल चारु अवलोकनि चित्त न सकसमाति। जबलगि परत निमेष अन्तरा युगसमान पलजाति। सूरदास यह रसिकराधिका निमिपर अतिअनखाति ८१ राग रामकली॥ आजु सखि देखे श्याम नयेरी। निकसे आय अचानक अबहीं इत फिरिफिरि चितयेरी। मैं तबते पछितातिय यहेतनु नयनन बहुतभयेरी। जो बिधना इतनीजानतहै कतदृगदोय दयेरी। सब देतेउँ लाखलोचनकहँ जो कोउ करत नयेरी। हरि प्रतिअंग बिलोकन को मन आपुन वे पठयेरी। अपनीचोप बहुतकहँपैये ये हरिसंग गयेरी। थकेचरण सुनि सूर मनोगुण मदनबाण बिधयेरी ८२॥ राग गुर्जरी॥ देखिरी हरिके चञ्चलनयन। खञ्जन मीन मृगज चपला इन पटतर एकैसैन। राजिवदल इन्दीवर सतदल कमल कुशेशय जाति।

निशि मुद्रित प्रातहि ये बिगसत ये बिगसत दिनराति। अरुणा श्वेत
सित झलक पुलकप्रति कोबरणो उपमाई। मनो सरस्वती गंग यमुन
मिलि आगम कीन्हें आई। अवलोकनि जलधार तेजअति तहां न
मन ठहरात। सूरश्याम लोचन अपारछवि उपमासुनि सरमात८३॥
राग सोरठ॥ देखिसखी मनमोहन मनचोरत। नयनकटाक्ष बिलोकनि
मधुरी सुभग भृकुटि बिच मोरत। चन्दनखौरि लिलाट श्यामकेनि-
रखत अतिसुखदाई। मानहुं अर्द्धचन्द्रतट अहिनी सुधाचुरावनआई।
मलयजभाल भृकुटिकीरेखा कबिउपमा यकल्यावत। मानों यकसँग
गंग यमुन नभ तिरछीधार बहावत। भृकुटी चारु निरखि ब्रजसुन्दरि
यह मनकरति बिचार। सूरदासप्रभु शोभासागर पावत कोउ न पार
८४॥ राग रामकली॥ देखिरी देखि कुण्डललोल। चारुश्रवणन ग्रहित
कीन्हे झलक ललितकपोल। बदनमण्डल सुधासरवर निरखि मन
भयो भोर। मकर क्रीडत गुप्तप्रगटत रूप जल झकझोर। नयनमीन
भुवंगिनी भ्रुव नासिकास्थलबीच। सरसमृगमद तिलकशोभा लसति
है लगकीच। मुखबिकास सरोज मानहु युवति लोचनभृङ्ग। बिथुरि
अलकें परींमानों प्रेमलहरितरङ्ग। श्याममुखछवि अमृतपूरणा रच्यो
काम तड़ाग। सूर प्रभुकी निरखि शोभा ब्रजतरुणि बड़भाग ८५॥
रागधनाश्री॥ हरिमुख निरखि नागरनारि। कमलनयनके कमल बदन
पर बारिज बारिज बारि। सुमतिसुन्दरी परसि प्रियारस लम्पटसां-
डोआरि। हारिजोहारि जो करतिबसीठी प्रथमहिंप्रथम चिन्हारि।
राखतिओट कोटियतननिकरि झुकिझुमि नाखति झारि। खञ्जन
मनहु उड़नकहँआतुर सकत न पंखपसारि। देखिस्वरूप श्यामसुन्दर
को रही न पलकसम्हारि। देखहु सूर अधिक सूरखन तऊ न माना
हारि ८६ हरिमुख किधौं मोहनीमाई। बोलत बचन मंत्रसो लागत
गति मति जातिभुलाई। कुटिल अलक राजत भुव ऊपर जहँ तहँ रहे
बगराई। श्यामफाँसि मनफँस्यो हमारो अबसमुझी चतुराई। कुण्डल
ललित कपोलन झलकनि इनकीमति मैं पाई। सूरश्याम युवतीमन
मोहत ये सब करतसहाई ८७॥ राग नट॥ निरखिरूप नागरिनारि।
मुकुटपर मनअटकिलटक्यो जातनहिं निरवारि। श्यामतनकी झलक

आभा चन्द्रिका झलकाय। बारबार बिलोकि थकिरहि नयननहिं ठहराय। श्याम मरकतमणि महानग शिखानृत्यत मोर। देखिजलधर हरयउरपर नहीं आनँदघोर। कोउ कहति सुरचाप मानों गगन भरो प्रकाश। थकित व्रजललना जहाँतहँ हरय कबहुं उदास। निरखि जो जेहिअंगराची तहीं रहीभुलाय। सूरप्रभु गुणराशि शोभा राशि जन सुखदाय ८८॥ राग केदारो॥ देखिरी देखि शोभा राशि। कामपटतर कहादीजे रमा जिनकी दासि। मुकुटशीश शिखण्डसोहै निरखिरही व्रजनारि। कोटिसुरको दण्डआभा झरकिडारोंवारि। केशकुञ्चित बिथुरधुवपर बीचशोभाभाल। मनहुँचन्दहि अवैजान्यों राहुघेरेउ जाल। चारुकुण्डल सुभगश्रवणन कोसके उपमाय। कोटि कोटि कला तरनि छवि देखि तनु भरमाय। सुभग मुखपर चारुलोचन नासिका यहि भांति। मनो खञ्जन बीच शुक मिलि बैठहैं यक पांति। सुभग नासा तर अधर छवि रस भरे अरुणाय। मनो बिम्ब निहारि सुखभुव धनुषदेखि डराय। हँसत दशननि चमकताई बज्रकन रचिपाँति। दामिनी दाड़िमनहीं समकियो अतिमन भ्रांति। चिबुक पर चितचित चोरावत नवल नंदकिशोर। सूरप्रभुकी निरखिशोभा भई तरुणीभोर ८९ तनुमन नारिडारतवारि। श्यामशोभा सिंधुजान्यों अङ्गअङ्ग निहारि। पचिरहीं मनज्ञान करिकरि लहति नाहिनतीर। श्यामतनु जलरासि पूरण महागुण गम्भीर। पीत पट फहराति मानों लहरि उठत अपार। निरखिछबि थकितीर बैठीकहूं वारनपार। चलत अङ्गविभङ्ग करिकै भौंहभाव चढ़ाय। मनोंबिचबिच भौंहडोलत चित परत भरमाय। श्रवण कुण्डल मकरमानों नयनमीन विशाल। सलिल झलकनि रूपआभा देखुरी नँदलाल। बाहुदण्ड भुजङ्गमानों जलधिमध्य बिहार। मुकुट मालमनो सुरसरी लेचली द्वै धार। अङ्ग अङ्ग भूषणबिराजत कनकमुकुट प्रभास। उदधिमथि नवप्रकट कीन्हों श्रीसुधापरगास। चक्रतभईंत्रियनिरखिशोभा देहगति बिसराय। सूर प्रभु छबिराशि नागरजाति ज्ञाननिराय ९० करिमन नँदनन्दन ध्यान। सेइचरण सरोज शीतल तजिविषय रसपान। जानुजंघ त्रिभङ्ग सुन्दर कलित कञ्चनदण्ड। काछिनी कटिपीत पटद्युति कमल केसरखंड।

मनुमराल प्रबालछौना किङ्किणी कलराव। नाभिह्रद रोमावली अ-लिचले सैनसुभाव। मणिकण्ठ मुक्तामाल मलयज अङ्गउर बनमाल। सुरसरी शशिनीर मानहु लताश्याम तमाल। बाहुपाणि सरोज पल्लव गहेमुख मृदुबेणु। अतिबिराजत बदन बिधुपर सुरभि मण्डित रेणु। अरुण अधर कपोल नासा परम सुन्दर नयन। चलत कुण्डल गण्ड मण्डलमनहुं निर्त्तत मयन। कुटिल कुचभ्रुव तिलकरेखा शीशशिखी शिखण्ड। मनोदमन हैशर संधाने देखि धनको अण्ड। सूरश्रीगोपाल की छबिदृष्टि भरिभरिलेत। प्राणपतिकी निरखिशोभा पलक परत नदेत ९१॥ ^{रागनट} ॥ सजनी निरखिहरिकोरूप। मनसिबचसिविचारि देखो अङ्गअङ्ग अनूप। कुटिलकेश सुदेश अलिगण बदन शरदसरोज। मकर कुंडल किरणकी छबि दुरत फिरत मनोज। अरुणअधर क-पोल नासा सुभग ईषदहास। दशन की द्युतितड़ित नवशशि भृकुटि मदनविलास। अङ्गअङ्ग अनङ्गजीते रुचिर उरबनमाल। सूरशोभा हृ-दय पूरण देत सुखगोपाल ९२ नयनन ध्यान नन्दकुमार। शीशमुकुट नियङ्गराजत नहिंन उपमापार। कुटिलकेश सुदेश भ्राजतमनहुँमधुकर जाल। रुचिरकेशरि तिलकदीन्हें परमशोभाभाल। भृकुटि बङ्कटचारु लोचन नहीं युवती देखि। मनो खञ्जन चापडरडरि उड़तनहिं तेहि लेखि। मकर कुंडल गण्ड झलमल निरखिलज्जितकाम। नासिका छबिकीर लज्जित कबिन बरणत नाम। अधर बिद्रुम दशन दाड़िम चिबुक है चितचोर। सूरप्रभु सुखचन्द्र पूरण नारिनयन चकोर ९३ राग कान्हरो ॥ अलकनिकी छबि अलिक लगावत। खञ्जनमीन मृगज लज्जित भये नयन नचावत गतिनहिंपावत। सुखमुसकानि आनिउर अन्तर अंबुज बुधिउपजावत। सकुचतअरुबिकसतवा छबिपर अनुदिन जन्म गवाँवत। पूरणनहीं सुभग श्यामल कायद्यपि जलधर ध्यावत। बसन समान होत नहिंहाटक अङ्गन झाप दै आवत। मुक्तादामबिलो-कि बिलखि किरअवलि बलाकबनावत। सूरदासप्रभु ललितत्रिभङ्गी मन्मथ मनहिं लजावत ९४॥ राग केदारो ॥ राय सो हमारे श्यामलाल हो नयन बिशालहो। मोहीतेरी चालहो तुमपूरण श्रीगोपाल हो॥ ध्रुव॥ मोरमुकुटडोलनि मुखमुरली कलमन्द। मनोतमाल सिखाशिखी

नाचत आनन्द। मकराकृत कुण्डल छबि राजत लोलकपोल। ईषद अधर मुसकानि बिच मधुरबोल। चपल चितवनि मनोहर राजत भ्रुव भङ्ग। धनुषबाण डारिकै बशहोत कोटिअनङ्ग। बदन सुधाको सरोवर कुटिल अलकपारि। ब्रज युवती मृगनीर चितिन को फँदधारि। पीताम्बर छबि निरखत दामिनि द्युति लजाई। चमकि चमकि सावन मनुघनमें दुरिजाई। चरण कमल अवलम्बित राजित बनमाल। प्रफुलित ह्वै लतामानोंचढ़ीतरुतमाल। सूरदास वा छबिपर वारौं तनुप्रान। गिरिधर पिय देखिदेखि कहाकरौं अनुमान ९५॥ रागसारंग॥ सुन्दर मुखकी हौं बलिबलि जाउं। लावनिनिधि गुणनिधि शोभानिधि निरखि निरखि जीवत सबगाउं। अङ्गअङ्ग अतिअमित माधुरी प्रकटित रसिम रुचिर ठाउंठाउं। तामें मृदुमुसकानि मनोहर न्याय कहत कबि मोहननाउं। नैनसैन दैदैजब हेरत ता छबिपर बिनमोल बिकाउं। सूरदासप्रभु मनमोहन छबि यह शोभा उपमा नहिंपाउं ९६ देखिसखी सुन्दर घनश्याम। सुन्दर मुकुट कुटिल कच सुन्दर सुन्दरभाल तिलक छबिधाम। सुन्दर भ्रुवसुन्दर अतिलोचन सुन्दरअवलोकनि बिश्राम। अति सुन्दर कुण्डल श्रवणनवर सुन्दर झलकनि रीझतकाम। सुन्दर चारु नासिका सुन्दर सुन्दर हृदय बिराजत दाम। सुन्दरभुजा पीन कटि सुन्दर सुन्दरजटित मेखलाग्राम। सुन्दर जंघजानु युगसुन्दर सुन्दर पदहिरदै बिश्राम। सुन्दरभक्त मनोरथ पूरण सुन्दर सुरउधारननाम। ९७॥ रागसूहो॥ मैं बलिजाउं श्यामसुख छबिपर। बलिबलि जाउं कुटिल कचबिथुरी बलिबलिजाउं भृकुटी ललाटतर। बलिबलिजाउंचारु अवलोकनि बलिहारीकुण्डलकी। बलिबलिजाउं नासिका सुललित बलिहारी वा छबिकी। बलिबलिजाउं अरुण अधरनकी बिद्रुम बिम्बलजावन। मैं बलिजाउं दशन चमकनिकी वारों तड़ित निवासन। मैं बलिजाउं ललितठोड़ीपर बलिमोतिनकी माल सूरनिरखि तनमन बलिहारीबलिबलि यशुमतिलाल ९८॥ रागसारंग। चर्चरी॥ देखिदेखिरी नन्दकुलके उधारी। मातपितु दुरित उद्धरन ब्रजउद्धरन धरणि उद्धरन गिरमुकुटधारी। पतितउद्धरन अपभक्तउद्धरन प्रभु दीनउद्धरन कुण्डलनिधारी। जगत उद्धरन तिहंलोक के उद्धरन गनहि उद्धरन पशुपीढ़ि

धारी । पूतना उद्धरन दनुजकुल उद्धरनतृणा उद्धरन मुख मुरलिधारी। शकट उद्धरन केशी प्रलम्ब उद्धरन बका उद्धरन अरुणा अंबर धारी । अघा उद्धरन ग्वालगायके उद्धरन वृषभउद्धरन बनमालधारी । बच्छ उद्धरन ब्रह्मउद्धरन येई प्रभुयज्ञ उद्धरन धरणी उधारी । कालीउद्धरन फनफन सहित उद्धरन दावाउद्धरन अगमलयधारी । ग्राहउद्धरन गज- राज उद्धरन ये शिलाउद्धरन कटिपीतधारी । यदुकुल उद्धरन द्रौपदी उद्धरन आपगतजय विजयके धारी । त्रासउद्धरन प्रह्लादके उद्धरनप्र- बलनरसिंह अवतारधारी। हिरणकशिपु उद्धरन हिरणयाक्षके उद्धरन वेदउद्धरन नवभुजाधारी । रावणउद्धरन कुम्भकरण उद्धरन येत्रिशिर उद्धरनप्रभुचक्रधारी । धर्मउद्धरन येइकर्मउद्धरन येसुभगकटिकिङ्किनी पीतधारी । सूरउद्धरन सुरलोकउद्धरन हरिवंश उद्धरन येईमुरारी ९९ राग धनाश्री ॥ नँदनंदन मुखदेखोनीके । अङ्गअङ्ग प्रतिकोटि माधुरी नि- रखिहोत सुखजीके । सुभगश्रवण मणिकुण्डल आभाझलककपोल- न पीके । दहदह अमृतमकर क्रीडत मनोंयह उपमा कछुहीके । और अङ्गकी सुधिनहिं जानेंकरें कहतिहोनीके । सूरदासप्रभु नटवरकाछे रहतहे रतिपतिवीके १०० ॥ रागरामकली ॥ देखुरीदेखि कुण्डलझलक । नयन हैंछबि धरोकैसे लगततापरपलक । लसत चारुकपोल दुहुंबिच सजल लोचनचारु । मुखसुधासरमीनमानो मकरसंगबिहारु । कुटिल अलक सुभायहरिके भ्रुवनिपररहेआय । मनोमन्मथ फांदिफंदनिमीन बिबितदल्याय । चपललोचन चपलकुण्डल चपलभृकुटी बंक । सखा व्याकुल देखिअपने लेतबनत न शंक । सूरप्रभुनँदसुवनकी छबिबरणि कापैजाय । निरखिगोपी निकरबिधकी बिधिहि अतिरिसपाय१०१ रागजैतश्री ॥ बिधना अतिही पोचकियोरी । कहाबिगारकियो हमवा- को ब्रजकाहे अवतार दियोरी । यहतौमन अपने जानतहै एते पर क्यों निठुर हियोरी । रोमरोमलोचन यकटककरि युवतिन प्रतिकाहे नदियोरी । अँखियां हैछबिकी चसकनि वह हमतो वाहति सबै पि- योरी । सुनसजनी येहकरनी अपनी अपनेही रिसमानिलियोरी । हम तो पापकियो भुगतेको पुरायप्रकट क्यों जात छियोरी । सूरदास प्रभु रूपसुधानिधि पुटथोरीबिधिहीनबियोरी१०२॥ रागधनाश्री ॥ सुनरीसखी

बचन यक मोसों। रोमरोम प्रतिलोचन चाहति है सावित हैं तोसों। मैं त्रिवनासों कहों कछुनाहीं नितप्रति तिनकोकोसों। येऊजो नीके दोउ रहते निरखि निरखि रतिहोसों। यकयक अङ्गअङ्ग छबिधरती मैं जुकहतितेरीसों। सूरकहातुम कहतिअयानी कामपरेउ सबजीसों। २०३ ॥ राग कान्हरो॥ कहकाहूको दोयलगावैं। निमिसों कहाकहति काहिबिधिसों कहनयननि पछितावैं। श्यामहिं तुमकैसे करिजानति येऊ निठुर कहावैं। सखा में और और अँगशोभा जो ये देखन पावैं। जबहीं यकटक करि अवलोकति तबहीं वै झलकावैं। सूरश्याम को छबितलखैको येई बैरबढावैं १०४ ॥ राग नट॥ लहनो कर्मके पाछे। दियो आपनो लहैसोई मिलै नाहिंबाछे। प्रकटहीं हैं श्याम ठाढे कौन अङ्ग किहिरूप। लहेउकाहू कहोमोसों श्याम हैं ठगरूप। प्रेमयाचक बनी हरिके रतनपुटकहलेहि। अमृतसिंधु हिलोरिपूरण कृपादरशन देहि। पाइये सोई सखीरी लिख्योजितनो भाल। सूरउत कछु कमी नाहीं छबिसमई गोपाल १०५ ॥ राग सूहो ॥ देखुसखी अधरनकीला- ली। मणिमरकत ते सुभग कलेवर ऐसेहैंबनमाली। मनों प्रातकीघटा सांवरी तापर अरुणप्रकाश। ज्यों दामिनि बिच चमकिरहतिहै फह- रत पीतसुबाश। कीधौंतरुतमाल बेलीचढि युगफल बिम्ब सुपाक्यो। नासीकीर आय मनो बैठोलेत बनतनहिं ताक्यो। हँसत दशन यक आभा उपजत उपमा यदपि लजाई। मनों नीलमणि पुट मुक्तागण बदनभरीबगराई। किधौंब्रजकनलालनगनि खचितापरबिद्रुम पांति। किधौंसुभग बंधूक सुमनतरु झलकत जलकनि कांति। किधौंअरुण अम्बुजबिच बैठी सुन्दरताई आई। सूरअरुण अधरनकी शोभा बर- णत बरणि न जाई १०६ ॥ राग धनाश्री ॥ श्यामरूप देखनको सावमेरी माई। कितनो पचिहारी रही देतनहिँ देखाई। मनतो निरखत सु- अङ्ग मैं रही भुलाई। मोसों यह भेदकहौ कैसे यहपाई। आपुन अङ्ग अङ्ग बिलोकि मोको बिसराई। बारबार कहत यहै तू क्यों नहिँ आई। कबहूं न जात साथ बाँह बुलाई। सूरश्याम छबि अगाध निर खत भरमाई १०७ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहुसखी मैं बूझति तुमसों काहू हरिको देखोहै। कैसोतनु कैसोरँग देखियत कैसे बिधिकर लेखोहै।

कैसोमुकुट तिलकहै कैसो सुभग भालभ्रुव नीकोहै। कैसेनयन नासिका कैसी श्रवणनि कुण्डल पीकेहैं। कैसे अधर दशनद्युति कैसी चिबुक चारु चितचोरतहैं। कैसे निरखि हँसत काह्नतन हँसतहुबदनसकोरत हैं। कैसी उरमाला है कैसी कैसी भुजा बिराजत हैं। कैसीकरपहुँची हैं कैसी कैसी अंगुरी राजत हैं। कैसी रोमावली श्याम की नाभिचारु कटि सुनियतु हैं। कैसे कनक मेखला कैसी कछनी यहमन गुनियत हैं। कैसे जंघजानु कैसेदोउ कैसे पदनख जानतिहैं। सूरश्याम अँगअँग की शोभा देखेकी अनुमानति हैं १०८॥ राग रामकली॥ ऐसे सुने नन्द कुमार। नखनिरखि शशिकोटि वारति चरण कमल अपार। जानु जंघनि हारिकर भाकरनि डारतवारि। काछनीपर प्राणवारत देखि शोभासारि। कटिनिरखि तनु सिंहवारत किंकिनी जुमराल। नाभि ह्रदलखि आपु वारत रोमवलि अलिमाल। ह्रदय मुक्तामाल निरखत वारिअवलि बलाक। करजकर परकमल वारतचलति जहँतहँ साक। भुजनिपर वरनाग वारत गयेभागि पताल। ग्रीवकी उपमा नहीं कहुँ लसति परम रसाल। चिबुकपर चित वारिडारत अधर अंबुजलाल। बंधूक बिद्रुम बिम्बवारत तेभये बेहाल। बचन सुनि कोकिला वारत दशन दामिनि कांति। नासिका पर कीर वारत चारु लोचनभांति। कञ्ज खञ्जन मीन मृग शावकनि डारति वारि। भृकुटि पर सुरचाप वारत तरणि कुण्डल हारि। अलकपर वारत अंध्यारी तिलकभाल सुदेश। सूरप्रभुशिर मुकुटधारी धरेनटवर भेश१०९॥ राग सारंग॥ ऐसी बिधि नँदलाल कहतसुने माईरी। देखै जो नयन रोमरोम प्रति सुभा ईरी। बिधना द्वैनयनरचे अङ्ग ठानिवान्यों। लोचन नहिँ बहुत दिये जानिकै भुलान्यों। चतुरता प्रवीणता बिधाताकीजान्यों। अबकैसो लागत हमहिँ बताव अयान्यों। त्रिभुवन पति तरुण कान्ह नटवर बपुकाछे। हमको द्वैनयन दियेतेऊ नहिँ आछे। ऐसे बिधिको बिवेक कहाकहेंवाको। सूरकबहुँ पाऊँजोकर अपनेताको११०॥ राग नट॥ मुखपर चन्द्रडारोंवारि। कुटिलकच भँवरवारोंभौंहपर धनुवारि। भाल केशरितिलक छबिपर मदनशतशतवारि। मनों चलिबाहसुधाधारा निरखिमनदेउ वारि। नयनखञ्जन मृग जुवारों कमलके कुलवारि।

चिबुकपर चितबित्तवारों प्राणवारोंवारि। निरखिकुंडल तरणिवा-रों कुचा ग्रयानि वारि। झलक ललितकपोल छवि पर मुकुट शत शतवारि। नासिकापरकीरवारों अधर बिद्रुमवारि। दशनएक नवज्र वारों बीज दाडिमवारि। मनोंसुरसरि यमुन गङ्गा उपमा डारोंवारि। सूरहरिकी अङ्गशोभा कोसके निरवारि १११ ॥ राग सोरठ॥ श्यामउर सुधानिधि देहमानों। मलय चन्दनतन लेप कीन्हें बरण बरण यह जानों। मलयतनु मिलिलसति शोभा महाजल गम्भीर। निरखिलो-चन भ्रमित पुनि पुनि धरतिनहिँ मनधीर। उरज भँवरी भँवर मानो नीलमणिकी कांति। भृगुचरण हृद चिह्नये सब जीवजल बहुभांति। श्यामबाहु बिशाल केशरिखौर बिबिध बनाय। सहज निकसे मगर मानो कुलजुखेलत आय। सुभग रोमावलीकी छबिबली दहतेधार। सूरप्रभुकी निरखिशोभा स्तुवति बारम्बार ११२ मनमधुकर पदकमल लोभानें। चित्तचकोर चंदनख अटक्यो यकटक पलक भुलानें। बि-नहींकहे-गईये उठिभोंते जातनहीं में जान्यों। अबदेखौ तनमें वैनाहीं कहा जियहिधौं आन्यों। तबतू फेरि तके नहिँ मोतन नख चरणनि हितमान्यों। सूरदास वैआप स्वारथी परवेदन नहिँजान्यों ११३ ॥ राग गौरी ॥ ब्रजललना देखति गिरिधरको। यकयक अङ्ग अङ्ग पर रीझी अरुरीझी मुरली धरको। मानोंचित्र कीसोलिखि काढी सुधिनाहीं मनवरको। लोकलाज कुलकानिभुलानी लपटी श्यामसुँदर को। कोउ रिसाय कोउकहेजायकछु न डरीकाहूडरको। सूरदास प्रभुसोंमनमानें जनम जनम परतरको ११४ ॥ रागधनाश्री॥ गोपी श्यामरंग भूली। पूरण मुख चन्द देखि नयन कमल फूली। कीधौं नवजलद स्वाति चातक मनलाये। कीधौंनारि टून्दही पहर बुन्दपाये। रबिछबि कुंडल नि-हारि पङ्कज बिकसाने। कीधौं चक्रवाकनि रतिके रसही रतिमाने। कीधौं मृगयूथजुरे मुरलीधुनि रीझे। सूरश्याम मुखकुराडल छबिभीजे ११५ ॥ राग बिहागरो ॥ श्यामभुजाकी सुन्दरताई। चन्दन खौरि अनूपम राजत सो छबिकही न जाई। बडे बिशाल जानुलों परसत यक उपमा मनआई। मनो भुजङ्ग गगनते उतरत अधमुख रहेउझलाई। रतनजटित पहुँचीकर राजत अँगुरी सुन्दर भारी। सरमनो फणि शिरमणि सोहत

फनफनकी छबिन्यारी ११६ ॥ रागमारू ॥ श्यामसखि नीके देखेनाहिं। चितवतही लोचनभरि आवत बारबार पछितांहिं । कैसेहु करि यक टक मैं राखति नेकहिमें अकुलाहिं । निमिष भनो छबि पर रखवारे ताते अधिक डराहिं। कहाकरे इनकाकह दूषण इनतौ अपनीकीन्हीं। सूरश्याम छबिपर मन अटक्यो उनसब शोभालीन्हीं ११७ ॥ रागगौरी॥ मनलोभ्यो हरिरूप निहारि। जादिनश्याम अचानक आये तबतेंबीहिं बिसारि । इन्द्रिनसंग लगायगयो है डेरा निकस्यो झारि । ऐसे हाल करतरी कोऊ रही अकेली नारि । फेरि न मेरीहु सुधि लीन्हीं आप करत सुखभारि । सूरश्याम उरहनोदेहीं पठवत कहेनहमारि ११८॥

अथ रागलीला ॥

राग रामकली ॥ पुनिपुनि कहतिहै ब्रजनारि । धन्य बड़भागिनी राधा तेरेबश गिरिधारि । धन्य नन्दकुमार धनितुम धन्यतेरी प्रीति । धन्य दोउतुम नबलजोरी कोककलानि जीति। हम बिमुख तुमकृष्णा संङ्गिनि प्राणयक द्वै देह । यकमन यकबुद्धि यकचित दुहुन यक सनेह । एक क्षण बिनु तुमहिं देखे श्यामधरत न धीर। मुरलिमें तुवनाम पुनिपुनि कहतहैं बलबीर । श्याममणिाते परखिलीन्हीं महाचतुर सुजान। सूर के प्रभु प्रेमबश कौन तो सरिआन १ ॥ राग बिहागरो ॥ राधापरम निर्मल नारि । कहतिहैं मनकर्मना करिहृदय दुबिधा टारि। श्यामकोयक तुमहिं जान्यों दुराचार न ओर। जैसेघट पूरण न डोले अधखुल्योडग डोर। धनीधन कबहूं न प्रकटै धरै अनत छपाइ । तौ महानग श्याम पायो प्रकटि कैसेजाइ। कहतिहैां यहबात तोसों प्रकट करिहैंनाहिं। सूरसखी सुजान राधा परस्पर मुसकाहिं २ ॥ रागगौरी ॥ श्यामकोतेंही पहिचाने । सांचीप्रीति जानि मनमोहन तेरेहाथ बिकाने । हमअपराध कियो कहि तुमसों हमहीं कुलटानारि। तुमसों उनसों बीचनहीं कछु तुमदोऊ बरनारि। धन्यसोहाग भागहै तेरो धनि बड़भागीश्याम। सूरदासप्रभुसो पतिजाके तैसी जाकेबाम ३ ॥ रागबेरठ ॥ राधा श्याम की प्यारी । कृष्णापति सर्बदातेरे तू सदानारी । सुनतबाणी सखीमुख की जियभयो अनुराग । प्रेमगद्गद् रामपुलकित समुझि अपनो भाग। प्रीतिप्रकट न कियोचाहे बचनबोलि न जाय। नंदनन्दन कामना यक

रहे नयननि छाय। हृदयते कहुँ टरतनाहीं कियो निश्चलवास। सूर प्रभु रसभरी राधा दुरत नहीं प्रकास ४॥ राग जैतश्री॥ सुनि सजनी मेरी इकबात। तूतो करति बडाई मन मेरो शरमात। मोसों कहति श्याम तुमगके यह सुनिकेशरमाति। एक अङ्गको पार न पावति बकतहोति भरमाति। यहमूरति है नयन हमारे लिखीनहीं करमाति। सूर रोम प्रतिलोचन देतो विधनापर तरमाति ५॥ राग कल्यान॥ जो विधना अप बश करिपाऊँ। तौसखि कहेउ होय कछुतेरो अपनी साध पुराऊँ। लोचन रोमरोम प्रतिमांगों पुनिपुनि त्रास दिखाऊँ। यकटकरहै पलकनहिँ लागै पद्धति नईचलाऊँ। कहा करौं छवि राशि श्याम घन लोचन द्वै नहिँ ठाऊँ। एतेपर ये निमिष सूरसुनि यहदुख कहासुनाऊँ ६॥ राग बिलावल॥ कहाकरौं बिधिहाथ नहीं। वहसुख यह तनु दशा हमारी नैननके रिस मरत सही। अङ्ग अङ्ग औसी विधि बनरे है नैना देखति जबहीं। ऐसोकौन ताहि धरिआनै कहाकरौं खीझतमनहीं। बडोसुजान चतुरईनीकी जगतपिता कहियत सबहीं। सूरश्याम अवतार जानिब्रज लोचन बहु न दिये हमहीं ७ अबसमुझी यहनिठुर बिधाता। ऐसेहि जगत पिता कहवावत ऐसे घातक सोहै धाता। कैसो ज्ञान चतुरई कैसी कौन विवेक कहांको ज्ञाता। जैसोदुख हमको यह दीन्हों तैसे याको होय निपाता। द्वै लोचन तन में करदीन्हें याही ते जान्यों पितु माता। सूर श्याम छबिते अघात नहिं बार बार आवत अकुलाता ८॥ राग सूहो॥ द्वै लोचन साबित नहिँ तेऊ। बिनु देखे कल परतनहीं सखा ऐसेपर कीन्हों यह टेऊ। बारबार छबि देख्यो चाहत साथीनिमिष मिलेहैंयेऊ। तूतो ओटकरत सरााहींसखा देखत ही भरिआवत द्वेऊ। कैसेमैंउनकोपहिंचानौं नयनबिना लखियेक्यों भेऊ। येतो निमिषपरत भरिआवत निठुरबिधाता दीन्हेंजेऊ। कहा भई जो मिली श्यामको तू जान्यो जाने सबकेऊ। सूरश्यामकोनाम श्रवणसुनि दरशन नीके देत न बेऊ ९ श्यामहिं मैं कैसे पहिंचानों। क्रमक्रमसों इकअङ्ग निहारति पलकओट ताकोनहिंजानों। पुनिलोचन ठहराय निहारति निमिष मेटि वह छबि अनुमानों। और भाव औरै कछुशोभा कहो सखी कैसे उरआनों। सखासरों अङ्गअङ्ग छबि

अगनित पुनि देख्यो फिरिकै हठठानों । सूरदास स्वामीकी महिमा कैसे रसना सकबखानें १० ॥ रागस रंग ॥ श्याम सें काहेकी पहिँचानि । निमिषनिमिष वहरूप नईछबिरतिकीजै जेहिजानि । यकटक रहति निरन्तर निशिदिन मनमति शोचतिसानि । एकौपल शोभाकी सीमा सकति न उरमहिं आनि । समुझि न परै प्रकटही निरखतआनँदकी निधिखानि । सखियह बिरह सँयोगकी समरस दुखसुखलाभकी हानि । मिटति न घृतते होम अग्नि रुचिसूर सुलोचन बानि । इतलोभी उतरूप परमनिधि कोउनरहत नितमानि ११ ॥ राग रामकली ॥ कहाकरों नीकेकरि हरिको रूपरेख नहिँपावति । संगहि संग फिरति निशिवासर नयन निमेष न लावति । बँधी दृष्टिज्यों गुडीडोरि वशपाछे लागीधावति । निकटभयेयेमेरीकाया मोकोदुखउपजावति । नखशिख निरखि निहारेउचाहति मन पूरति अति भावति । जानें नहीं कहांते निजछवि अङ्गअङ्ग में आवति । अपनोदेह आपुको बैरनि दुरत न दुरै दुरावति । सूरश्याम सें प्रीति निरन्तर अन्तर मोहिँ करावति १२॥ राग धनाश्री ॥ जो देखों तौ प्रीति करोंरी । संगहि रह्यो फिरयो निशिवासर चितनेक नहीं बिसरोंरी । कैसे दुरत दुराये मेरे उनबिनु धीरज नहीं धरोंरी । जाउ तहीं जहँरहे श्यामघन निरखति यकटक ते न टरोंरी । सुनिरी सखी दशा यह मेरी सो कहि धौं अब कहा करोंरी । सूरश्याम लोचन भरि देखों कैसे इतनी साध पुरोंरी १३ ॥ राग बिलावल ॥ हरि दरशनकी साधमुई । उडिये उडीफिरति नयननि सँग फरफूटे ज्यों आकरुई । जान्यों नहीं कहां ते आवति वह मूरति मनमाँह उई । बिन देखेकी बिथा बिरहिनी अतिज्वर जरति न जातिछुई । कछुव कहतिकछूकहिआवति प्रेमपुलक श्रमस्वेदचुई । सूखति सूरधान अंकुरसी बिनु बर्षा ज्यों मूलतुई १४ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनिरी सखीदशा यहमेरी । जबतेंमिले श्यामघन सुन्दर तबतेसब बिसरेरी । तरुणाउनकेसंगहि मोकोअंगनि प्रतिअनङ्गकीढेरी । चपलातस अतिहीचंचलतादशन चमक चकचौंधि घनेरी । चमकत अङ्ग पीत पट चमकत चमकत माला मोतिनकेरी । सूरसमुझि बिधनाकी करणी अतिरिसकरति सौंह मोहितेरी १५ ॥ राग सारंग । चर्चरी ॥ आजुके

योयको सखी अनितहीं जो लाखलोचन अँगअङ्ग होते। परती साव मेरेहृदय साँझकी देखती सबैछबि श्यामकोते। चित्तलोभीनयनद्वार अतिहीखचकूकदांवह सिंधु छविहै अगाधा। रोमजितने अङ्गनहोते मंगरूप ततीनिदरि कहतिराधा। श्रवणापुनिमुनिरूपदहैकैसे लहैनयन कछुगहैरसना न ताको। देखिकोऊहै कोउसुनिकेरहै जीभबिनु सोको कहानिहँनयननजाके। अङ्गबिनुहै सबैनहींएकै गावैसुनतदेखत जवैकहै न लोरि। कहैरसना सुनत श्रवणा देखत नयन सूरसब भेदगुरिया मनहिँ तोरे १६॥ राग धनाश्री ॥ इतनेहु में घटिताई कीन्ही। रसना श्रवणा न-यनके होतेकी रसनाहींको नहिँदीन्ही। बैरकियो बिधना रचि हम सों वाकी जाति अबैहम चीन्ही। जड़ते प्रकट भयोहै सुनियत तैसिय जड़ता आपुन लीन्ही। बारबहीं में सगनराधिका चतुर सखी तबहीं लखिलीनी। सूरश्यामके रङ्गहि राची टरति नहीं जलते ज्यों मीनी १७॥ राग सोरठ ॥ धन्यधन्य बड़भागिनि राधा। नवलश्यामनवलातुम हूहो दोउतुम रूपअगाधा। मैं जानी यहबात हृदयकी रहीनहीं कछु साधा। संगहि रहति सदा पियप्यारी क्रीड़ा करति उपाधा। कोक कला ब्युत्पन्न भईहो कान्हरूप तनुआधा। प्रेम उमँगि तेरेमुख प्रकट्यो अरसपरस अवराधा। सूरदास प्रभुमिले कृपाकरि गयेदुरित दुख दाधा॥ राग धनाश्री ॥ कहिराधिका बातअब साँची। तुमअब प्रकटकही मोआगे श्यामप्रेम रँगराची। तुमको कहां मिले नँदनंदन जब उनके रँगराची। खरिक मिलेकी गोरस बेंचत की यमुहर ते बाँची। कहे बने छांड़हु चतुराई बातनहीं यह काची। सूरदास राधिका सयानी रूपराशि रसपाँची १९॥ राग गौरी ॥ कबरीमिले श्याम नहिँ जानों। तेरीसों करि कहति सखीरी अजहूं नहिँ पहिँचानों। खरिक मिले की गोरस बेंचतकी अबहींकी काल्हि। नयननि अन्तरहोत न कबहूं कहति कहारी आलि। एकौ पलहरि होतनन्यारे नीकेदेखी नाहिँ। सूरदास प्रभु टरत न टारे नयननि सदा बसाहिँ २०॥ राग आसावरी ॥ श्याममिले स्वाहिँ ऐसेमाई। मैंजलको यमुनातट आई। औचक आये तहां कन्हाई। देखतही मोहनी लगाई। तबहींते तन सुरति गँवाई। सूधेमारग गई भुलाई। बिनदेखे कलपरै न माई। सूरश्याम मोहनी

लगाई २१ ॥ राग टोड़ी ॥ तबहींते हरिहाथ बिकानी । देहगेह सुधिसबै भुलानी । अङ्गअङ्ग शिथिलभई अलसानी । ज्यों त्यों करि गृहपहुँची आनी । बोलतहाँ अचानकबानी । द्वारेदेखें श्यामबिज्ञानी । कहाकहैं सुनसखी सयानी । सूरश्याम ऐसी सहिदानी २२ ॥ राग धनाश्री ॥ जादिन ते हरिदृष्टिपरेरी । तादिनतेइनमेरेनैननि दुखसुख सबबिसरेरी । मोहन अङ्ग गोपाललालके प्रेमपियूषभरेरी । बसेउहाँ मुसुकानि बाँहलै रचि रुचि भवन करेरी । पठवति हौ मन तिनहिं मनावन निशिदिन रहत अरेरी । ज्यों ज्यों मानकरति उलटावति त्योंत्यों होत खरेरी । पचि हारी समुझाइ शोचिपचि पुनिपुनि पाँयपरेरी । सो सुखसूर कहाँलों बरणों यकटकते न टरेरी२३ ॥ राग अड़ानों ॥ कोजानेहरिकहा कियोरी । मनसमुझै मुखकहत न आवै कछु यकरस लोचन जुपियोरी । ठाढ़ी हुती अकेली आँगना आनि अचानक दरश दियोरी । सुधिबुधि कछु न रही तेहि अवसर मेरो मनउन पलटि लियोरी । तासुखहेत दहति दुखदारुणा क्षणाक्षण जरत जुड़ात हियोरी । सूरसकल आनन उरअन्तर उपमाकोपावति न बियोरी २४ मेरोमन गोपाल हरेउरी । चितवतही उरपैठि नयनमगनाजानौं वहिकहा करेउरी । मातपिता पति बन्धु सजनसखि आँगनलौं सबभवनभरेउरी । लोक वेद प्रतिहार पहरुआ तिनहूँपै राख्यो न परेउरी । धरमधीर कुलकानि कुंचीकरि तेहितारो देदूरि धरेउरी । पलककपाट कठिन उरअन्तर येते यतनकछू न सरेउरी । बुधिबिबेक बलसहित सँच्योसचि सुधन अचल कबहूँ न टरेउरी । लियोचुराय चितैचित सजनी सूरशोच तनुजात जरेउरी २५ मेरोमन तबते न फिरेउरी । भयो जोसंग श्यामसुन्दरके तहँतेकहुँ न टरेउरी । यौवनरूप गर्बधनु सँचि सँचि हेंउरमें रुचिसों जो धरेउरी । कहाकहैं कुलशील सकुचसखि सर्बस हाथ परेउरी । बिनुदेखे मुख मन हरिको यह निशिदिन रहै अरेउरी । सूरदास अबकहा करौंहीं हृदय अतिप्रेमभरेउरी २६ ॥ राग सारंग ॥ यहसब मैंहीं पोचकरी । श्याम रूप निरखति नैननिभरि मोहनफंदपरी । वयकिशोर कमनया सुख मैं लुब्धतहू न डरी । अबछबि गड़िसमाय हियेमें ठौरतहूं न टरी । अति सुखदुख संभ्रम व्याकुलता बिमुमुख सनमुखरी । बुधिबिबेक बल ब-

चन छिबगह्वै आनँद उरभिरयो। अधविभील मलतलुनि सूरज आलु देनअरी। तद्यपिसुख दुरखिको बिलोकति उतहि आनगरी २७॥ राग आसावरी ॥सखिरीनाजानींतबहींते मोको श्यामकहावोंकीन्हीरी। मेरेदृष्टिपरे आदिनते ज्ञानध्यान हरिलीन्हीरी। द्वारे आअगये औचक ही मैं अङ्गनहीं ठाढीरी। मनमोहन मुखदेखि रहीतब कामकथ्याकानु बाढीरी। नयन सैन दैदै हरिलेतन कछुयकभावबतायोरी। पीताम्बर उपरैनी करगहि अपने शीशफिरायोरी। लोकलाज गुरुजनकीशंका कहत न आवै बानीरी। सूरश्याममेरे आँगन आये जातबहुत पछि- तानीरी २८॥ राग सोरठ ॥ मनहरिलीन्हें कुँवरकन्हाई। जबतेश्याम द्वारह्वै निकसे तबतेरोम्बहिँ घरन सुहाई। मेरे हेत आयभयेठाढे मोते कछुनभईरीमाई। तबहींतेव्याकुल भइडोलति बैरीभये मातपितुभाई। मोदेखत शिरपाग सँवारी हँसिचितये छबिकही न जाई। सूरश्याम गिरिधर वरनागर मेरोमन लेगये चुराई २९॥ राग धनाश्री ॥ प्रेमसहित हरितेरेआये। कछुसेवा तैंकरी कि नाहीं किधौंवैसही उनहिँ पठाये। काहेते हरिपाग सँवारी क्योंपीताम्बर शीशफिराये। शुभभाव तोसों कछु कीन्हें। घरआये काहे बिसराये। अतिही चतुर कहावतिराधा बातनहीं हरिक्यों न भोराये। सूरश्याम को बशकरिलेती काहेको रहत्ते पछिताये ३०॥ गुरुजन में बैठेआये हरिविन्दी सँवारनलिसपाइ लागी। चतुर नायकहु पागसखकी मनहीं मन रीझे शुभमेद प्रीति न जागी। हस्तकमल हरिहेरि हृदय धरे भामिनी उत आपु कंठलागी। सूरदास अतिचतुरनागरी पियअतिनगिर दुहुकहेउ मनमें सुहागभागी ३१ श्याम अचानक आयगयोरी। हेंाअपने गुरुजन में बैठी देखतही अनुराग भयोरी। तब यकबुद्धि करीमैं ऐसी बिन्दीसोंकर परस कि- योरी। आपु हँसे उतपाग मसकिहरि अन्तर्यामी जानि लियोरी। लैकर कमलअधर परसायो देखिहर्ष पुनिहृदय धरेउरी। चरणछुये दोउ नयन लगाये मैं अपने भुजअंक भरेउरी। ठाढेरहे द्वारअति हित करि तबहींते मनचोरि गयोरी। सूरजप्रभु कछुदोष न मेरो उत गुरु जन इतहेत नयोरी३२ करत कछूवे नाहिं बनी। हरिआये चितवतही रहिसखि जैसे चित्रवनी। अतिआनन्द हरषि आसन उर कमलकुटी

अपनी । न्योछावरि अंचलकी करहनि अर्द्धनयन जलधारघनी । गुरु जन लाजकछू न सक्यो काहिबुनि सनमुख सजनी । हृदय उमगि कुच कलश प्रकटभये टूटीतरकि तनी । अब उपजति अतिलाज मनहिंमन समुझत निजकरनी । सूरदास मेरीजड़ मतिगति प्रभुमग झांकगनी ३३ सेवामानिलई हरिमेरी । अबकाहे पछितात राधिका श्यामजातकर फेरी । गुरुजनसें भावहिकीपूजा औरकहौंकछुटेरी । मोहन अतिसुख पायगयेरी चाहतिहैं कहमेरी । तेरेबशभये कुँवरकन्हाई करतिकहा औसेरी । सूरश्याम तुमको अतिचाहत तुमप्यारी हरिकेरी ३४॥ राग कल्याण । आसावरी ॥ राधाभाव कियेयह नीको तुम बेंदी उनपाग छुही । ऐसेभेद कहाकोउ जाने तुमजानोंके शुभवही । तुमजुहार उनको जब कीन्हें तुमको उनहुँ जुहारकियो । एकैप्राण देहद्वै कीन्हे तुमवे एक नहींबियो । तुमपग परसि नयनपर राख्यो उनकरकमल हृदयधरेउ । सूरश्याम हिरदै तुम्हैंराखे तुम उनकोलै कंठभरेउ ३५ ॥ राग बिहागरो ॥ अरीमाई एकगाँवके बसत एकबार हरिकीन्हें पहिचानि । निशि दिन रहत दरशकी आशामिले अचानकआनि । भागदशा आँगनही आये सुन्दर सर्वसुजानि । नीकेकरि देखनहुँ न पाये बहि न जायकुल कानि । कल न परत हरिदरशन बिनुरी मोहिंपरी यहबानि । सूरज दास बिकानीरीहों नन्दसुवनके पानि३६कहाकरौं गुरुजनडरमान्यो । आयेश्याम कौनहित करिके में अपराधिनि कछू न जान्यो । ठाढ़े श्यामरहे मेरे आँगन तबतें मन उनहाथ बिकान्यो । चूकपरी मोको नबही अङ्ग कहाकरौं गइभूलि सयान्यो । वै इतहीको गयेहराथ मन मेरी करणी समुझि अयान्यो । सूरश्याम संगम उठिलाग्यो मोपर बारम्बार रिसान्यो ३७ ॥ राग सारंग ॥ अचानक आयेरी हरिमेरे चितैतब होरीछबि निहारि । कुण्डल लोल कपोल रहेकच श्रमजलसों मनु मकरंदजडारि । गुरुजन बिचमें आँगनठाढ़ी अति दरशन दीयो मायाकरि । सूरदास प्रभु अंतरयामी वेहँसि चितयेसुखकरि ३८॥ राग काफी ॥ में अपने कुलकानि डरानी । कैसेश्याम अचानक आये में सेवानहिंजानी । वहैचूक जियजानि सखीसुनि मनलैगये चुराई । तनते जातनहीं मैं जान्यो लियोश्याम अपनाई । कैसेठगत फिरतहरि घर

घर भूलिकियोअपराध। सूरश्याम मनदेहि न मेरो पुनिकरिहौअनु-राव ३९ सोहिसवारे सजनी तबते गृहमोको न सुहाई। डारअचानक कहुँ निकरेरी सुन्दरवदन दिखाई। ओढ़ेपीरी पासरीरी पहिरेलाल निचोल। भौंहें काट कटीलियां सखि वह कीन्ही विनुमोल। मोरमुकुट शिरसोहई अरु अधरधरे मुखबेन। मोहन मूरति हृदयबसे छबि लागिरही दुहनैन। श्यामरूप मेरोमनगोध्यो भलोबुरो कहैकोय। सूरदास प्रभु संगगये मनमनु उनहींको होय४०॥ राग गौरी॥ मोहनाबिन मन न रहे कहा करौं माईरी। कोटिभाँतिकरि करिकरि रही समुझाईरी। लोकलाज कौनकाज मानत यदुराईरी। हृदयते वह टरत नहींमुख सुन्दरताईरी। ऐसेहैं त्रिभङ्गी नवरङ्गी सुखदाईरी। सूरश्याम बिनुनरहौं ऐसी बनिआईरी४१ मनमेरो हरिसाथ गयोरी। डारेआय श्यामघर सजनी हँसि मोतनतें संगलयोरी। ऐसो मिल्योजाय मोको तजिमानों उनहिन पोषि जयोरी। सेवा चूकपरी जोमोतें मनउनको धों कहाकियोरी। मोकोदेखि रिसात कहत यह तेरोजिय कछु गर्व भयोरी। सूरश्याम छबिअङ्ग भुलानो मनक्रमवच मोहिँ छाँड़ि दयोरी ४२॥ राग रामकली॥ मैं मन बहुतभाँति समुझायो। कहाकरों दरशन रस अटक्यो बहुरि नहीं घटिआयो। इननयननि के भेद रूपरस उरमें आनि दुरायो। बरजतही वेकाज सुखतज्यों पलट्यो जो न सिधायो। लोकवेद कुलनिदरि निडरह्वै करत आपनोभायो। मुखछबि निरखि चौंधि निशि खगज्यों हठि आपुनपौ बंधायो। हरिकोदोष कहा कहिदीजै यह अपने वलधायो। अति बिपरीत भईसुनि सूरज सुरकामदनजगायो ४३॥ राग बिलावल॥ मनहिं बिनाकह करौंसहीरी। घरतजिके कोउरहत पराये मैं तबहींते फिरति बहीरी। आयअचानकही लैगयेहरि बारबार मैं हटकि रहीरी। मेरो कहेउ सुनत काहे को गैलगये हरिके उतहीरी। ऐसोकरत कहूंरी कोऊ करौं मैं हारि रहीरी। सूरश्याम को यह न बूझिये ढीठ किये मन को उनही री ४४॥ राग टोड़ी॥ माखन चोरी तेंसीखे करनलागे अबचितहूकी चोरी। जाके दृष्टिपरे नँदनन्दन फिरति सो मोहन डोरीडोरी। लोक लाज कुलकानि मेटिकरि बनबन डोलत नवलकिशोरी। सूरदास प्रभु

रसिक शिरोमणि देखेनिराम बानि भइभोरी ४५ ॥ राग आसावरी ॥ क्यों सुरझाऊंरी नन्दलालसों अरुझि रहेउ मन मेरो । मोहन सुरति कहुँ नेक बिसरति कहिकहि हारिरही कैसेहुँ करत न फेरो। बहुतयतनकरि घेरिघेरि राखति फेरिफेरि लरति सुनत नहिंटेरो । सूरदास प्रभुकेसँग रसभये डोलत निशिबासर कहुँ निरखत बायों न डेरो ४६ ॥ रागबिलावल॥ मैं आन्यो मनु रतन जान्यो । कदधौं गयो सङ्गहरिके वह कीधौं पंथ भुलान्यो । कीधौं श्याम हटकिहै राख्यो कीधौं आपु रतान्यो। काहेको सुधिकरी न मेरी मोपर कहा रिसान्यो । जबहींते हरि ह्यां ह्वै निकरे बैरु तबहिंते ठान्यो । सूरश्यामसँग चलन कहे स्वहिं कहेउ नहीं तबमान्यो ४७ ॥ राग गुर्जरी ॥ श्याम करत हैं मनकी चोरी । कैसे मिलत आनि पहिलेही कहिकहि बतियां भोरी। लोकलाजकी कानि गँवाई फिरति गुड़ी बशडोरी । ऐसेढङ्ग श्याम अबसीखे चोरभये चित कोरी । माखनकी चोरी सहिलीन्हीं बातरही यह थोरी । सूरश्याम भये निडर तबहिंते गोरसलेत अजोरी ४८ ॥ राग टोड़ी॥ सुनहुँसखीहरि करत न नीकी । आपु स्वारथीहैं मनमोहन पीरनहीं अरुनीकी । वेतो निठुर सदा मैं जानति बात कहति मनहींकी। कैसेहुँ उनहिं हाथकरि पाऊँ रिसमेटों सबजीकी । चितवत नहीं मोहिँ सपनेहूँ कोजानै उनही की । ऐसे मिले सूरके प्रभुको मानों मोललै बीकी ४९ ॥ रागआसावरी॥ माईरी कृष्णनाम जबते श्रवण सुन्योरी । तबते भूलीरी भवन बावरी सी भईरी । भरिभरि आवैं नयन चित न रहतचैन बैननहिँ सूधो भूली मनकीदशा सब औरे ह्वैगईरी। कौनमाता कौनपिता कौनबहिनी कौन भ्राता कौन ज्ञान कौनध्यान मदन हईरी। सूरश्याम जबते परेरी मेरी दृष्टिवाम कामधाम निशियाम लोकलाज कुलकानि नईरी ५० ॥ राग रामकली ॥ राधातें हरिके रँगराची । तातें और चतुर नहिं कोऊ बात कहौं मैं सांची । तैं उनको मननहीं चुरायो ऐसी है तू कांची । हरि तेरो मन अबहिँ चुरायो प्रथमहिँ तूहैनाची । तुम अरु श्याम एकहौ दोऊबाकीनाहीं बांची। सूरश्याम तेरेबश राधा कहत लीक मैंखांची ५१ ॥ राग जैतश्री ॥ तू काहेको करति सयानी । श्यामभये बश पहिले तेरे तब तू हाथ बिकानी । बाकीनहीं रही नेकहु अब मिलीदूध ज्यों

रानी। नन्दनँदन गिरिधर बहुनायक तू तिनकी पटरानी। तोसीको बड़भागिनि राधा यह जीकै कर जानी। सूरश्याम सँग हिलि मिलि खेलौ अजहूँ रहति दिवानी ५२॥ रागसोरठ ॥ मन हरि लीन्हों कुँअर कन्हाई। तबहीते मैं भई दिवानी कहा करौंरी माई। कुटिलअलक भीतर अरुझानों अब निरुवारि न जाई। नयन कटाक्ष चारु अवलोकनि मोतन गये बसाई। निलज भई कुलकानि गँवाई कहा ठगोरी लाई। बारम्बार कहति मैं तोकों तेरे हिये न आई। अपनीसी बुधि मेरी जानति उतनी मैं कहँ पाई। सूरश्याम ऐसी मतिकीन्हीं देहदशा बिसराई ५३॥ रागरामकली॥ राधा हरि अनुरागभरी। गद्गद मुखबाणी परकाशित देह दशा बिसरी। कहति यहै मन हरि हरि लैगये एही परनिपरी। लोकसकुच शंका नहिं मानत श्यामहिं रङ्गढरी। सखी सखीसों कहति बावरी यहिहमको निदरी। सूरदासप्रभु सुरतिमानी भुरई हम सिगरी ५४॥ राग सूहो॥ तुमजानति राधाहैछोटी। चतुराई अँग अङ्ग भरी है पूरणज्ञान बुद्धिकी मोटी। हमसों सदा दुराव करेउ यहि बातकहैं मुखचोटी पोटी। कबहूँ श्यामते नेक न बिछुरति किये रहति हमसों हठओटी। नँदनन्दन याहीके बशहैं बिवशदेखि बिन्दी छबिवोटी। सूरदासप्रभु वे अतिखोटे यह उनहूंते अतिहीखोटी ५५ राग बिलावल॥ सखीकहै तू बात गँवारी। याकी सरि कैसे कोउ ह्वै है जाबशहैं बनवारी। ब्रजभीतर यहरूप आगरी ब्रतलीन्हो दृढ़ गिरिवर धारी। प्रीतिगुनहै नीकी उनरो या पर मैं रीझी हों भारी। सांची कहौ नाहिँ ऐसोई पाछे मोको दीजै गारी। सूरदास राधा जो खोटी देखौ तो यह कृष्णपियारी ५६॥ रागगुर्जरी॥ सुनहुँसखी राधासरिको है। जोहरिहैं रतिपति मनमोहन याकोमुख सो जोहै। जैसे श्यामनारि यह तैसी सुन्दर जोरीसोहै। यह द्वादश वेऊ दशद्वैके ब्रजयुवतिनमन मोहै। मैं इनको घटिबाढ़ि नाहिँ जानति भेदकरै सो कोहै। सूरश्याम नागर यह नागरि एक प्राण तनदोहै ५७ सुनु सजनी ये ऐसे लागत। एकप्राण युगतनु सुखकारण एकौनिमिय न त्यागत। बिछुरतनहींसंग ते दोऊ बैठेसोवत जागत। पूरबनेह आजुकछुनाहीं मोसोंसुनहु अनागत। मेरोकहेउ सांच तुमजानहु कीजै आगत स्वागत। सूरश्याम राधावरऐसे

प्रीतिहि ते अनुरागत ५८ ॥ राग जैतश्री ॥ सखी सखी सों धनि धनि कहैं । इनको हम ऐसे नहिं जाने ब्रज भीतर ये गुप्त रहैं । धन्य धन्य तेरी मति सांची हमइनको कछु औरकहैं । राधा कान्ह एककहैं दोऊ तो इतनो उपहास सहैं । वे दोउ एक दूसरी तूहूं तोहूंको सखि श्याम चहैं । सूरश्याम धनिधनि अरु राधा धनि तुमहूं उनभेदलहैं ५९ धन्य धन्य यह तेरीबानी । तैंनीके हरिको पहिचाने अबहम तोकोजानी। राधा आधा देह श्याम की तू नीकी बिचबानी । राधाहू तें अधिक श्यामसों तेरीप्रीति पुरानी । जो हरिकी संगिनि तू नाहीं आदि नेह क्यों गानी । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि यह रसकथाबखानी६० राग पूर्वी ॥ साईं राधामोहन सहजसनेही । सहजरूपगुण सहजलाडिली एकप्राण द्वै देही । सहज माधुरी अङ्गअङ्ग प्रति सहज सदा बनगेही। सूरश्याम श्यामा दोउसहजी सहजप्रीतिकरिलेही६१ ॥ राग आसावरी॥ राधा नँदनन्दन अनुरागी । भव चिन्ता हिरदय नहिँ एको श्यामरंग रसपागी । हरदचून रँगपै पानीज्यों दुविधदुहूकी भागी । तनमन प्राण समर्पण कीन्हो अङ्ग अङ्ग रतिखागी । ब्रजबनिता अवलोकनि करि करि प्रेमबिबश तनत्यागी । सूरदास प्रभुसों चितलाग्यो सोवतते मनु जागी ६२॥ राग मारू ॥ गोपी श्यामरङ्ग राची । देहगेह सुधि बिसारि बढ़ीप्रीतिसांची । दुबिधाडर दूरिगई उघरिअङ्ग नाची । हरितजिजो औरभजै पुहुमिलीकखांची । मातपिता लोकभीत बांचीनाहिंसांची। सकुच जबहिं आवै उर बारबार झांची । अबतौ क्षणहू न छांडै ना-हिन मतिकांची । सूरश्याम पदपराग ताही में मांची ६३ ॥ राग मारू चर्चरी ॥ श्यामजल सुजल ब्रजनारि खोरैं । नदो माला जलजटित भुजा अति सबलधार रोमावली यमुनमोरैं । नयन ठहरात नहिं बहत अति तेजसों तहांगयोचित्त धीरजसँम्हारैं । मनगयोतहीं आपुनरहीनिकट जल एक अङ्गअङ्ग कबि सुधि बिचारैं । करत अस्नान सब प्रेम बुड़की देहिँ समुझिजिय होय भजितीरआवैं । सूरप्रभु श्याम जलराशि ब्रज भामिनी करतिअनुमान नहिंपारपावैं ६४ ॥ राग बिलावल॥ श्यामरँग राचीं ब्रजनारी । और रंगसब दीन्हेंडारी । कुसुम रंग गुरुजन पितु माता । हरि तरंग बहिनी अरु भ्राता । दिना चारि में सब मिटिजैहै ।

श्यामरंग अजरामर रैहै। उज्ज्वलरंग गोपिकानारी। श्यामरंगगिरि-वरके धारी। श्यामहि में सबरंग बसेरो। प्रकटावती हृदयकह फेरो। अरुता श्वेत सित सुन्दर तारे। प्रीतिरंग पीताम्बर धारे। नाना रंग श्याम गुणाकारी। सूरश्याम रँग घोष कुमारी ६५ ॥ राग बिहागरो ॥ श्याम सलोनेरूपमें अरी मनहरेउ। ऐसे लेहु है अटक्यो तेहिते फिरि नहिं सटक्यो बहुतयतन मैंकरेउ। ज्योंज्यों खैंचतित्योंत्यों मननहोत ऐमीबरनि धरेउ। मोसों बैरकरत उनको धौं देखौ जाय ढरेउ। ज्यों शिवकृत दर्शन रवि पाये देहीं गरनिपरेउ। सूरदास प्रभुरूप थक्यो मनु कुंजरपंकपरेउ ६६ ॥ राग देसाख ॥ निशिदिन यहै परी टेक माई। इननयननिकोरी नन्दलाल की लागीरहै लालसाई। मुरली रसभरी श्रवणनि जबतेरी परीकैसेहु टरतिनई। हृदयतेबिहरीपरी कैसेहुं टरति नहीं हिरदेते बिहारी यदुराई। कहाकहौं तोसों यह सजनी मनमेरो लैगयो चुराई। सूरश्यामको नामधरेउ पुनि धरेउ न जाय सुधि न रहै तनुमाई ६७ देखु सखी मेरोमन न रहै श्यामबिना। अतिहि चतुरजानि जानिमनि वह छबिपर मैं भईलिना। अपनीदशा कहौं मैं कासों बन बन डोलति रैनिदिना। मनतो चोरि लियो पहिलेही भूरि भूरि ह्वै रहौं छिना। वै मोहन मनहरत सहजही हरिलेताको करवछिना। सूर दासप्रभु रसिकरसीले बहुनायकहैं नावजिना ६८ ॥ राग सारँग ॥ नयननि नींदगई रैनिदिन पलपल छतियां लागधारहै धरको। उतमोहन मुख मुरलि सुनत सुधि न रही इतघेरा घरघरको। ननदी तौ न दिये बिन गारी नेकहु रहति सास सपनेहुमें आनि गोवति काननिमें लयेरहै मेरे पाइको खरको। निकसनहूं ना पाइयेरी कासोंदुख कहिये देखहुना पाइयेरी सूरदासके प्रभुतन मेरो जो ऐसोभयो जैसेहाथ पाथर तरको ६९ ॥ राग सुघराई ॥ मोहन मुरली बजाईहो रिझाई तिनहीं मोहीरी। सांझसमय देखेकन्हैया निकसेमेरे आंगन ह्वै तबतें चितवत पहपीरी भईरी। काकोदेह गेहसुधि काको कोहैहरि कैसे मैंहीरी। तेरे कहे कहति हौं बाणी मैं हरि हाथ बिकानी तबतें यकटकही जु रहीरी। मिलतनहीं नहिँसंगते त्यागत कहाकरौं बूझौं तोहीरी। सूरश्याम तब तें नहिंआये मन जबते हरिलीन्हे वेतो ऐसे हैं द्रोहीरी ७० ॥ रागअड़ाना ॥

ब्रजकीखोरि ढाढ़ोसांवरो डिठौना तिनहीं मोहीरीहोंमोंही । जबतेमैं देखे श्यामसुन्दरश्री चलि न सकतपग यहैक्रास नृपद्रोही । कोलैआई कौने चरण चलाई कौने बहियांगही सोधौं कोहोरी । सूरश्याम प्रभु देखे सुधिबुधि रहीनहिं अति बिदेह भई अब मैं बूझति तोही ७१॥ राग सुघराई ॥ आंखिनमेंबसे जियरेमेंबसे हियरेमेंबसत निशिदिनप्यारो। मनमेंबसे तनमेंबसे रसनामेंबसै अङ्गअङ्ग बसत नन्दबारो । सुधिमें बसै बुधिहूमें बसे उरमें बसत प्रियप्रेम दुलारो। सूरश्याम बनहूँमें बसत घरहू में बसत संग ज्यों त्यों जलतनहोत न्यारो ७२ ॥ रागसोरठ ॥ नँदनन्दन बिनु कल न परे। अतिअनुराग भरीं युवतीसब जहांश्याम तहँ चित्त टरे। भवनगई मनतहां न लागे सुरगुरुजन अतित्रास करे। वे कछुकहैं करैं कछुऔरै सासु ननदि तिनपर भहरे। यहै तुमहिँ पितमात सिखायो बोलकरति नहिं रिसनि जरे। सूरदास प्रभुसों चितअरुझेउ यहसमुझै जियज्ञान धरे ७३ ॥ राग जैतश्री ॥ सासु ननद घरत्रास दिखावै। तुमकुल बधू लाजनहिँ आवति बारबार यहकहि समुझावै। कबकोगई न्हान तुम यमुना यहकहि २ रिसपावै। राधाको तुमसङ्ग करतिहो ब्रजउप- हास उड़ावै। वेहैं बड़े महरकी बेटी तो ऐसी कहवावै। सुनहुँसूर यह उनहीं भावै ऐसे कहति डरावै ७४ ॥ राग सारँग॥ हमअहीर ब्रजबासी लोग। ऐसेचलौ हँसैनहिं कोऊ घरमें बैठिकरो सुखभोग। दही मही लवनी घृतबेंचो सबैकरो अपनो उद्योग। शिरपर कंस मधुपुरीबैठ्यो क्षणकहिमें करिडारे सोग। फूंकिफूंकि धरणी पगधारो अब लागी तुमकरनअयोग। सुनहुँसूर यह जानहुगी तब जबदेखो राधासंयोग७५ राग धनाश्री॥ तुम कुलबधू निलज जिनिह्वैहो। राधा कान्हकथा ब्रजघर घर ऐसे जिनि कहवैहो। यहकरणी उनतई चलाई तुमजिनि हमहिं हँसैहो। तुमहो बड़े महरकी बेटी कुलजिनि नासधरैहो। यह करणी उनहीको छाजै उनके सङ्ग न जैहो। सूरश्याम राधा की महिमा यहै जानि सरसैहो ७६ ॥ रागटोड़ी ॥ यह सुनिके हँसि मौन रहीरी। ब्रज उपहास कान्हराधाको यहमहिमा जानी उनहींरी। जैसीबुद्धि हृदय इनकीमां तैसिय मुखते बात कहीरी। रविको तेज उलूकनजानैतरणि सदा पूरण न भईरी। बिषकोकीट बिषहि रुचिमानै जानैकहा सुधा

रसहीरी। सूरदास तिलतेल सवादी स्वाद कहा जानै घृतहीरी ७७॥ राग सूहा॥ अरी जानि गोधनको मानै। नँदनन्दन नरसुर मुनिवन्दन तिन की महिमा कोउ न जानै। धनिराधा उपहास धन्य यह सदा श्यामही के गुणगानै। परमपुनीत हृदय अति निर्मल बारबार वा यशहि बखानै। श्याम कामकी पूरणहारी ताको कुलटाकरि पहिचानै। सूरदास ऐसे लोगनि को नाम न लीजै होत बिहानै ७८॥ राग बिहागरा॥ बिधना यह संगति क्यों दीनी। इनको नाम प्रात नहिँ लीजै कहा निठुरई कीनी। मनमोहन गोहन बिनु अबलौं मनुबीतै युगचारि। बिमुखनिमें ते कबधौं छूटौं कब मिलिहौ बनवारि। एकएक क्षणबिहात कैसेहुँ अब जो रह्यो न जाई। सूरश्याम दरशन बिनु पाये बार बार अकुलाई ७९॥ राग सोरठ॥ बिमुख जननको सङ्ग न कीजै। इनके बिमुख वचनसुनि श्रवणनि दिनदिन देही छीजै। मोको नेक नहीं ये भावत परवशको कह कीजै। धृग जीवन ऐसो बहुदिनको श्यामभजन पल जीजै। धृगयह गृह धृग ये गुरुजनको इनमें नहीं बसीजै। सूरदास प्रभु अन्तर्यामी यहैजानि मनलीजै ८०॥ राग नट॥ राधा श्यामरङ्ग रँगी। रोमरोमनि भिदिगयो सब अङ्गअङ्ग पगी। प्रीतिदै मनलैगये हरिनन्द नन्दन आपु। कृष्णारस उनमत्त नागरि दुरतनहिं परतापु। चलीयमुना जाति मारग हृदय यहै बिचार। सूरप्रभु के दरशपाऊं बिगस अगस अपार ८१॥ रागधनाश्री॥ चितको चोर अबहिँ जो पाऊँ। हृदयकपाट लगाय यतनकरि अपने मनहिँ मनाऊँ। जबहिँ निशंकहोति गुरुजन ते तेहिऔसर जो आवै। भुजनिधरौं भरि सुदृढ मनोहर बहुतदिननि को फल वे पावै। लै राखौं कुचबीच चापिकरि प्रतिदिनको तनताप बिसारौं। सूरजदास नन्दनन्दनको गृहगृह डोलनिको श्रमटारौं ८२॥ राग बिलावल॥ इतते राधाजाति यमुनतट उतते हरिआवत घरको। कटि काछनी भेष नटवरको बीचमिलो मुरलीधरको। चितैरही मुखइन्दु मनोहर वा छबिपर वारतितनको। दूरिहुँते देखतही जानै प्राणनाथ सुन्दर घनको। रोमपुलक गदगद बाणीकहि कहां जात चोरे मनको। सूरदासप्रभु चोरीसीखे माखनते चितवत धनको ८३ भुजापकरि ठाढे हरिकीन्हे। बाँहमरोरि जाहुगे कैसे मैं तुमको नीकेधरि चीन्हे। मा-

खनचोरी करतरहे तुम अबतो भये मनचोर । सुनतरही मन चोरत हैं हरि प्रकटलियो मनचोर । ऐसेढीठ भये तुमडोलत निदरे ब्रजकीनारि । सूरश्याम मोहूँ निदरौगेदेहु प्रेम की गारि ८४ ॥ राग ईमन ॥ मैं तुम्हरे गुणजाने श्याम । औरनिको मनचोरि रहेहौ मोरो मनचोरेउ किहि काम । वे डरपति तुमको धौंकाहे मोकोजानत वैसियबाम । मैं तुमको अबहीं बांधोंगी मोहिं बूझि जैहौ तब धाम । मैं लैहौं पहुनाई करि हौं राखौंअटकि घोष अतजाम । सूरश्याम यहकौन भलाईचोरजहां तहँ तुम्हरोनाम ८५ ॥ राग कल्यान ॥ ब्रजमें ढीठभये तुमडोलत । अबतो श्याम परेफँदमेरे सूधे काहेनबोलत । मनदीजे मरियादाऊहै रहतचतुर ई कीन्ह । दुखकरिदेहु कि सुखकरिदीजे अबतो बनिहैदीन्हे । ऐसे ढँग तुम करतकन्हाई जीतिरहे ब्रजगांउ । सूरआज बहुतेदुखपावे मन कारण पछितांव ८६ ॥ राग गोंडमलार ॥ सुनिरी कुलकीकानि ललनसों में झगरो मांडोंगी । मेरेइनके कोउबीच परौजिनि लैकरि अवरखांडोंगी । चतुर नायकसों कामपरेउहै कैसेके छांडोंगी । सूरदास प्रभु नँदनन्दनको रसलै डांडोंगी ८७ ॥ रागकान्हरो ॥ चोरीको फलतुमहिंदिखाऊं । कञ्चन खम्भडोर कञ्चनके देखौं तुमहिं बँधाऊं । खंडोएक अङ्गकछु तुम्हरोचोरी नांउमिटाऊं । जो चाहों सोइसोइ सबलैहौयह कहि डांडबनाऊं । बीच करनजो आवैकोऊ ताको सौंह दिवाऊं । सूरश्याम चोरनिके राजा बहुरि कहांमैंपाऊं ८८ ॥ रागनन्द ॥ रहुरी लाजनहिंकाज आजुहरि पायेकरनचोरी । मूसिमूसिलैगये मनमाखन जो मेरेबनहोरी । बाँधौंकञ्चन खम्भकलेवर उभयभुजा दृढडोरी । चापौंकठिन कुलिशकुच अन्तर सकै कौनधौंछोरी । खराडोंअधर भूलि रसगोरस हरै न काहूकोरी । डंडोंकाम डंडपरघरको नाउँ न लेय बहोरी । तब कुलकानि वानिभइ तिरछी क्षमि अपराध किशोरी । शिवपरपानि धराय सूरउरसकुचि मोहिंशिरढोरी ८९ ॥ रागबिहागरो ॥ बीचकियोकुललज्जाआई । सुनिनागरी बकसयहमोको सन्मुखआयेधाई । चूकपरीहरिते मैं जानी मन लैगयेचुराई । ठाढेरहे सकुचि तो आगेराख्यो बदनदुराई । तुमहो बडेमहरकी बेटी काहेगई भुलाई । सूरश्यामहैं चोर तुम्हारेछांडिदेहु डरपाई ९० ॥ रागगौरी ॥ कुलकी लाज

अकाज कियो। तुमबिनु श्यामसुहात नहींकछु कहाकरौं अतिजरत हियो। आपगुप्त करिराखी मोको मैं आयसु शिरमानि लियो। देह गेह सुधिरहत बिसारे तुमते हितनहिं औरबियो। अबमोको चरणन तरराखौ हँसिनंदनन्दन अङ्कछियो। सूरश्याम श्रीमुखकी बाणी तुम पै प्यारीबास जियो ९१॥ रागजैतश्री॥ मातपिता अतित्रास दिखावत। भ्रातासारण को मोहिंबिरखे देखेमोहिं न भावत। जननी कहति बड़े की बेटी तोकोलाज न आवत। पिताकहै कैसीकुल उपजी मनहींमन रिसपावत। बहिनी देखि देतिम्वहिंगारी काहेकुलहि लजावत। सूरदासप्रभुसों यह कहिकहि अपनी बिपति जनावत ९२॥ रागबिहागरो॥ सुन्दरश्याम कमलदल लोचन। बिमुख जननको संगतिको दुख कब धौं करिहौ मोचन। भवन मोहिं भाठोसोंलागत मरतशोचहीशोचन। ऐसीगति मेरी तुम आगे करत कहाजिय दोचन। धृग मातपिता धृग भ्राता देखतरहत मोहिंभरिलोचन। सूरश्याममनतुमहिं लुभानोहरदचूनरँग रोचन ९३॥ रागरामकली॥ कुलकी लाज कहालौं करिहौं। तुम आगे मैं कहौं न सांची अबकाहूनहिंडरिहौं। लोग कुटुम्बजगतजे कहियत पहिले सबहिनिदरिहौं। अबयहदुख सहिजात न मोपै बिमुख बचन सुनि मरिहौं। आपुसुखी तौ सबहीकेहै उनके सुखकहसरिहौं। सूरदास प्रभुचतुरशिरोमणि अबकैहौ कछुलरिहौं ९४॥ रागकान्हरो॥ प्राणनाथहो मेरीसुरति करौ। क्यों न मैं जु दुखपावति हौं अपने तन मन मेरीसूरतिकरौ। दीनदयाल कृपाकरौ मोको कामदन्द दुख और बिरहहरौ। तुमबहुरवनि रवन मैं जानति ओहीकेधोखे मोसोंकहेको लरौ। तन धन तुमहीं मेरेमोहन तेरोध्यान हृदयधरौ। सूरदासस्वामी तुमहौ अन्तर्यामी मनसाबाचा ध्यान तुमसों धरौ ९५ होंग्या मायाही लागी तुमकत तोरत। मेरो तौ मन तिहारे चरणनिही लागो धीरज क्यों रहै रावरे मुखमोरत। कोऊलै बनाइबातें मिलवति तुम आगे सो कनिआय मोसों अबजोरत। सूरश्याम पियमेरे तो तुमहीं जिय तुम बिन देखे मेरोहियो कोरत ९६॥ राग बिलावल॥ सुनहुँ श्याम मेरी इक बात। हरिप्यारीके मुखतन चितवत मनहींमनहिं सिहात। कहाक हति वृषभाननन्दिनी बूझतिहै मुसुकात। कनकबरण सुन्दरीराधिका

कटिकृश कोमलगात। तुमहीं मेरेप्राण जिवनधन अहोचन्द तुमभ्रात। सुनहु सूरजोकहतिरही तुमकहो न कहा लजात९७॥ रागमारंग । चर्चरी ॥ नागरी श्यामसोंकहतिबाणी । सुनहु गिरिवरन बर शीशशिखंडधर जपत सुरनाग नर सहस बाणी। रुद्रपति क्षुद्रपतिलोकपति वोकपति धरणिपति गगनपति वेदबाणी । सिंहके शरण जंबूक त्रासहिकरेंजन कृष्णराधा यकजगतवाणी । अखिलब्रह्मांडपति तिहुंभुवन अधिपती सकल श्रुति सारपति अगम बाणी । सूर प्रभु श्याम तुमहीं करुणा धाम करो मनकाम सुनि दीनबाणी ९८ विहंसि राधा कृष्ण अङ्क लीन्हीं ।अधरसों अधर जुरि नयनसों नयनमिलि हृदयसों हृदयलगि हरयकीन्हीं । कराठ भुजभुज जोरि उछङ्गलीन्ही नारिभवन दुखटारि सुखदियो भारी । हर्षिबोले श्यामकुंज मनधन धाम तहां हमतुमसँग मिलेंप्यारी । जाहुगृह परमधन हमहुं जेहैंसदन आयकहुं पास मोहिं सैन देहौ । सूर यहभावदै तुरतही गमनकरि कुञ्जगृह मदन तुम जाय रैहौ ९९ यहसुनत नागरी सायनायो । श्याम रसवशभरे मदन जिय दुरिडरे सुन्दरी बातको भेदपायो । खड़े ब्रजयमुन बिच दुहुनमनअति सकुच और कछु बनैनहिं बुद्धिठानी । तबहिं ब्रज नारि आवत देखि यमुनते एक ब्रजहिते राधा लजानी । श्याम हँसिके चले तुरत ग्वालनिमिले कहां सबरहे कहिहांकदीन्हें। भाव यह करिगये सूरप्रभु गुणनये नागरीरसिकजिय जानिलीन्हें१०० ॥ राग टोड़ी ॥ राधाहरि केभावहि जान्यो। यहैबात कहैंइनआगे मनहींमनअनुमान्यो । उन्हें देखि राधा सब ठाढ़ी श्यामपठाये टारि । बूझतही कछु बुद्धिरचैगी बड़ीचतुर यहनारि। इतवृषभानसुता मनशोचति मोहिंदेखिहरिसंग। सूरअबहिं बातनि करिधरिहै जानतिइनकेरंग१०१ ॥ रागसारंग । चर्चरी॥ चतुरबरनागरीबुद्धिठानी । अबहिंमोहिंबूझिहैं इनहिंकेहोकहा श्याम संग आजुमोहि अंकटजानी । भावकरिगयेहरि ग्वालबूझतरहे जानि जियलई अतिचतुर रानी । यहरचो बुद्धियक कहाये कहैं मोहिं मेरे मन येसबै घोषबासी । इतहुकी उतहुकी सबैजुरि एकठी कहतिराधा कहांजातिहेरी । सूरप्रभुको अबहिंदेखे हम तेरेढिग कहांगये तिनहिं पछितातिहेरी १०२ ॥ राग गुर्जरी ॥ कान्ह कहाबूझतहैं तुमको । ह्वाईं

ते लखिलीन्हीं तबहीं कहा दुरावति हमको। मनलैगयो चुराय तुम्हारो सो अपनो तुमपायो। अपनोकाज सारि तुमलीन्हों हम देखतहि पठायो। सदा चतुरई फबती नाहीं अतिही निदरि रहीहो। सूर श्याम सों कहांरहतहैं यहकहिकहि जु तहीहो१०३॥ राग अल्हिया॥ कहतरही तब राधिका जब हरिसँगदेखी। बेसरिलीजो छीनिकैमुख तन कहापेखी। देहोबेसरि कीनहीं कीलेहिं किंडाई। चतुराईप्रकटी अबै ऐसीहो माई। बारबार नागरिहँसे तरुणी वै हानी। ऐसेहि बेसरिलेहुगी सबभईअयानी। हमसूरख तुमचतुरहो कछुलाज नआवे। सूरश्यामसँग नहिंरही अबकहा दुरावे १०४॥ राग सोरठ॥ यहैकहन मोंको तुम आई। इतते ये उतते तुमसबमिलि काहे ऐसेवाई। बेसरि एक लेहुगीकोको पीताम्बर नदेखावहु। बेसरि अरु पीताम्बरलै तब घरघर जायसुनावहु। तारीएक बजतिकौहोऊ इतनोइज्ञानबिचारो। सुनहुसूर ये बेसरिलैहैं जान्यों ज्ञान तुम्हारो१०५॥ राग जैतश्री॥ सुनि राधा तोसों हमहारी। तेरेचरितनहींकोउजाने बशकीन्हें गिरिधारी। अबहीं कान्ह टारिकरिपठये चतुरइ आपसँवारी। अबहींप्रकट दुहुनि हम देख्यो जानति देहोंगारी। तोमेंबुद्धि अधिकहमदेखी बड़ी सयानी नारी। सूरश्यामके यहबुधिनाहीं जितनीहै तोंको री १०६ राग बिलावल॥ श्याम भले अरु तुमहुँ भलीहो। बेसरि छीनतिहो बिन काजहि जाहु न घरहिचलीहो। कैसेदौरिपरी मेरेपर मानहुसंगमिलीहो। और भई सब बनकी बेली आपुन कमल कलीहो। तब कहती गहिबाहँ दुहुन की जोतुम चतुर अलीहो। सूरदास राधा गुणआगरि नागरि नारिछलीहो१०७ अबहमसों सांचाकहो वृषभानदुलारी। काहुतो तोसों कहतहैं ठाढ़े गिरिधारी। हाहाहमसों सोइकहो देहो जनि गारी। हमको देखतहीगये उत ग्वालहँकारी। भेदकरै जोलाडिली ताहिं सोंह हमारी। तू ठाढ़ी काहेरही मगमेंरीप्यारी। सहज होय तूकहिअबै डरतेरिसटारी। सूरश्यामको भावतीकहै कहींकहा री १०८॥ राग सूहो॥ मैं यमुनातन जातसहीरी। उतते आवतदेखिसखिनको इनकारण ह्वांपरखिरहीरी। इततेआयगये हरि तिरछे मैं तिनहींतनचितैरहीरी। बूझनलगेकान्ह ग्वालनको तुमतौदेखे उनहिं

नहींरी । कछुउनसों बोलीनहिं सन्मुख नाहीं हां कछु वे न कहोरी । सूरश्याम गये ग्वालनि टेरत ना जानों तुम कहागहीरी १०९ ॥ राग टोड़ी ॥ तुम मेरीबेसरिको धाई । सकुचिगई सुनिसुनि यहबाणी तरुणिन राधा भलेलजाई । यहतौ बात लगति कछुसांची हमपरन्याय रिसाई । टेरतकान्ह गये ग्वालनिको श्रवणपरी धुनि आई । बेसरि नामलेत अरमानी तब राधा भहरानी । सूरदास ब्रजनारि सनहिंमन यह गुनिगुनि पछितानी ११० ॥ राग गुर्जरी ॥ राधा तू अतिही है भोरी । भूंठहि लोग उड़ावत घर घर हम जान्यों अब तोरी । कराट लगाय लई रिस छांडो चूकपरी हम ओरी । तुम निर्म्मल गङ्गाजल-हूते दुरति नहीं वह चोरी । घर जैहौ की यमुना जैहौ हम आवैं सँग गोरी । सूरदास प्रभु प्यारी राधा चतुर तिननि की थोरी १११ ॥ राग आसावरी ॥ अहो सखी तुम ऐसीहौ । अबलों तुम कुलटाकरि जानति मोंकोरी सब नैसीहौ । अपनेइ मन जैसी तैसेइ सब मोहूं जानति तैसी हौ । जोरीभली बनैगी हरिसों छाँह निहारौ कैसीहौ । अबलागी मोको दुलरावन प्रेमकरति हरि पैसीहौ । सुनहुँसूर तुम्हरे सखासंगमति बड़ी पटकी जैसीहौ ११२ ॥ रागटोड़ी ॥ हँसति नारि सब घरहि चली । हमजानी राधाहै खोटी हम खोटी राधिका भली । इतते युवतिजाति यमुना जे तिनको मगमें परखिरही । श्याम कहूँते आयकहे ह्वां चले गये उतहेरतही । इतनी तबहिँ नहीं यहजानी भूठेही सब अतिखगही । सूरश्याम अपनेरँग आये हम थाको नहिं भलीकही ११३ ॥ रागबिलावल ॥ राधा श्यामहैं नेहनी हरि राधा नेही । राधा हरिके तनुबसे हरि राधा देही । राधा हरिके नयनमें हरि राधा नैननि । कुञ्जभवन रति युद्धको जोरत बल सैननि । और न काहूको रुचै घरघर गये दोऊ । मातपिता रतिभावसों जानैं नहिँ कोऊ । कैसेहु करि करि दिन गयो निशि घटति न क्योंहूं । दोउरस बिरह मगन भये निशि भई अगोहूं । बिरह सरोवर बूड़ही अन्धकारसे बारा । सुधि अवलंबन टेकही कहुं वार न पारा । तमचुर टेर पुकारई बड़ो जिनि कोई । सूरप्रात नौका मिली आनँद मनहोई ११४ ॥ राग धनाश्री ॥ मनमृग बेध्यो मोहन नयन बाणसों । गूढ़ भावकी सैन अचानक तकितान्यो भृकुटी कमानसों ।

प्रथम नादबल घेरि निकटलै मुरली सप्तक सुर बँधानसों। पाछे बंक चिते मधुरे हँसि घात कियो उलटी सुठान सों। सूर सुमार बिथा या तनकी घटतिनहीं औषधी आनसों। ह्वैहै सुख तबहीं उरअन्तर आलिङ्गन गिरिवर सुजानसों ११५ ॥ राग बिलावल ॥ कान्हउठे अतिप्रातही तलबेली लागी। प्रिया प्रेमके रसभरे रतिअन्तर खागी। श्याम उठत अवलोकिके जननी तबजागी। सुंदरवदन बिलोकिके अङ्ग अङ्ग अनुरागी। माता बूझत सुवनको बलिगई मेरे बारे। कहा आजु अचरज कियो तुमउठे सवारे। झारी जल दँतवन दियो छबि पर तनुवारो। उत्तम जललै प्रेमसों सुत बदन पखारो। करी मुखारी अतुरई नागरि रसछाके। सूरश्याम ऐसी दशा त्रिभुवनबश जाके ११६ उत वृषभान सुता उठी यहभाव बिचारे। रैनि बिहानी कठिनसों मन्मथ बलभारे। ग्रीव मोति सरितोरिके अँचरा सों बांध्यो। यहै बहानो करिलियो हरि मनु अनुराध्यो। जननि उठी अकुलायके क्योंराधा जागी। कहां चली उठि भोरही सोवन सभागी। अब जननी सोऊंनहीं रविकिरणि प्रकासी। तुहूँ उठति काहे नहीं जागे ब्रजबासी। आपउठी आँगन गई फिरि घरही आई। अबधौं मिलिहौं श्यामको पलरहेउ नजाई। फिरि फिरि अजिरहि भवनहीं तलबेली लागी। सूरश्यामके रसभरी राधा अनुरागी ११७ ॥ राग रामकली। चर्चरी ॥ सुतासों कहति वृषभान घरनी। कहां तू राधिका भोरते फिरतिहै तेरी गति मोपै नहिं जाति बरनी। तोरि मोतिनसरी तब गुहनकारि धरेउ कहूँ यहीमिस सकुचि रही मुख न बोले। मनोखंजन चपलचन्द फन्दा परे उड़त नहिँ ताहिते कहूँ न डोले। कहातेरी प्रकृति परीहै लाडिली अबहिंते कहाँतू आहिगोरी। सूरकह जननिबोले नहीं आजु तू पकसि धरिहौ आयखायगोरी ११८ रागनट ॥ जननी पुनिपुनि ग्रीवनिहारे। देखौं नहीं मोतिसरि सालासो जिनि कतहूँ डारे। बोलैनहीं बातयह सुनिरहि मन लागी मुसकान। अबहीं मोकों खीझिपठैहे बनिहै ह्वांको जान। भली बुद्धि मेरे चित्त आई कृष्णप्रीतिहै सांची। सूरदास राधिकानागरी नागरके रँगराची ११९ ॥ राग सोरठ ॥ जननी अतिहिभई रिसहाई। बारबार कहै कुँवरि राधिकारी मोतिनसरि कहांगँवाई। बूझेते तोहिँ ज्वाब न आवै कहां

रही अरगाई। नोसरहार अमोलगरे कहँदेहु न मेरी माई। कालिहि तेरी तौगर तेरो डारि कहूँ तू आई। सुनहुँसूर माता रिसदेखत राधा हँसति डेराई १२०॥ राग बिलावल॥ सुनुरी माता कालिही मोतीसरी गँवाई। सखिन मिलि यमुनागई धौं उनहिँ चुराई। कीधौं जलहीमें गई यह सुधि नहिँ मेरे। तबते मैं पछितातिहौं कहति नहीं डर तेरे। पलकनहीं निशि कहुँलगी मोहिं सायथरी तेरी। यहिडरते मैं आजुही अति उठी सबेरी। महरि सुनत चकतभई मुखज्वाब न आवै। सूर राधिका गुणभरी कोउ पार न पावै १२१॥ राग सारंग। चर्चरी॥ क्रोधकरि सुतासों कहति माता। तोहिं बरजति मेरी अचगरी शिरपरी गर्वगंजन नाम है बिधाता। तेरो दोष नहीं भ्रमति तू जहँतहीं नदी डूगरनिबन पातपाता। मात पितु लोककी कानमानै नहीं निलज भइ रहन नहिं लाजगाता। भली नहिं उनकरी शीश तोकों धरी जगतमें सुतातू महर ताता। बात सुनिहैं श्रवण भाइ बिनहीं भवन सूर डारें मारि आजु भ्राता १२२॥ राग धनाश्री॥ जाहु तहीं मोतिसरी गँवाई। तबहीं तो घर पैठनपैहो अब ऐसेढँग आई। जो बरजौं आपुन सोइ सोइ करै देखोरी गुणमाई। एक एक नग शत शत दामन लाख टका दैल्याई। जाके हाथ परेउ सो देहै घरबैठे निधिपाई। सूर सुनतरी कुंवरिराधिका तो को नहीं भलाई १२३॥ रागटोड़ी॥ भरिभरि नयन लेतिहै माता। मुख ते नहिं आवै कछुबाता। रीती ग्रीव निहारति जबहीं। हियो उमगि आवतहै तबहीं। मोतिसरी मुखपरम बिराजै। मानोशशि पासबिच भ्राजै। मोतिसरि माला कहाँ गँवाई। ग्रीव बिना करिहै वह,माई। माधव देखि कहूँ धौं पावै। सूर जोरि कर बिधिहि मनावै १२४॥ रागगोंड मलार॥ कहाँ वह मोतिसरी जो गँवाईरी। बाबासों और लैहौं मँगाईरी। वे कहा करैंगी मैंतिराखैरी। तादिना तुहीं धौं एकतिक भाखैरी। नयनन भरिलेत कहा और नाहींरी। छांड़ि मोतिसरि को मोहिँ रिसाहींरी। संदूखनि भरि धरे जेते न खोलैरी। कहा मोसों खीझि बोलैरी। सुता वृषभानकी हर्ष मनहींरी। सूरप्रभु सैनदै बोलै बनहींरी १२५॥ राग गौरी॥ सुनुराधा अब तोहिँ न पत्यैहौं। औरहार चौकीहमेल अब तेरे कंठ न नैहौं। लाख टकाकी हानिकरी तैंसोजब

तोमें लैहों। हार बिना ल्याये लड़बौरी घरनहिं पैठनदैहों। जब दे-
खोंगी यहै मोतिसरि तबहीं तौ सचुपैहों। नातरु सूर जन्मभरि तोरो
नाम नहीं मुखलैहों १२६॥ राग कल्याण॥ सुनुरी राधा अति लड़बौरी
यमुनगई जब सङ्ग कौनही। बूझतिनहीं जाय अपननिको न्हातरही
तब कौन जौनही। काकोनाम धरौं तो आगे ललिता चन्द्रावलीनहीं
ही। बहुतरहीं सँग सखीसहेली कहाँ काहि मैं सैनसैनही। देखोंजात
यमुनतटही मैं जहँ धरिके मैं न्हात रहीही। सूर जननिसों कहति रा-
धिका मोतीसरि मेरिजाय नहींही १२७ जैहै कहां मोतिसरि मोरी।
अब सुधिनाहिं लईवाहीने हँसतचली वृषभान किशोरी। अबहीं मैं
लीन्हें आवतिहौं मेरेसँग आवै जिनि कोरी। देखों धौं कह करिहैं
वाको बडेलोग सिखिकरत हैं चोरी। मोको आजु अबेर लागिहै ढूं-
ढौंगी घर घर ब्रजखोरी। सूर चली निधरक ह्वै सबसों चतुरराधिका
बातन भोरी १२८ नन्दनन्दन बार बार रवनि पंथ जोहैरी। लोचन
हरि करि चकोर राधामुख चन्दओर देखत नहिं तिमिरभोर मनहीं
मन मोहैरी। नयन दोऊ भृङ्गरूप बदन कमल शरदनूप तरणिको प्र-
काश मिलन बिना चपल डोलैरी। लोचन मृग सुभग जोर जागरूप
भयेभोर भौंह धनुष शरकटाक्ष हरति दयाधि तोलैरी। कीधौं ये चक्षु
चारु प्यारी मुखरूप सारु श्याम देखि रीझै मन यहै सांच मानी।
सूरश्याम सुखद धाम राधाहै जाहिनाम आतुरपिय जानिगमन प्यारी
अतुरानी १२९॥ राग देवगन्धार॥ श्याम अति राधा बिरह भरे। कब
सदन कबहूं अँगनाही कबहूँ पौरि खरे। जननी आतुर करति रसो
देखिदेखि हरिगात। कहा अबेर करति तू अबरी भूखलगीअतिमात।
मैं बलिजाउँ श्याम घनसुन्दर अब बैठो तुमआई। सूरसखा सँग सबै
बुलावहु हलधर नहीं बताई १३०॥ राग बिलावल॥ महरि कहेउ नँद
लाड़िले सँगसखा बोलावहु। करो कलेऊ आयके हलधरहु बोलावहु।
हलधर लये बोलायकै मोहनकरि आदर। दाऊजू चलि जेंइये यहकहे
मनसादर। कान्हजाय तुम जेंवहू मोको रुचिनाहीं। सखा संग हरि
लैगये बैठे यकठाहीं। षटरस व्यंजनको गिनै बहुभाँति रसोई। सरस
कनिक बेसन मिलै संचि रोटी पोई। प्रेमसहित परसनलगी हलधर

की माता । ग्वालसखा सब जोरिके बैठे नँदताता । सखासबहि जेंवन लगे हरि आयसुदीन्हें । सूरदासप्रभु आपहू करकौरहि लीन्हें १३१ राग आसावरी ॥ नन्दमहरके घर पिछवारे राधा आय बत्यानीहो । मनो आंबुदल मौर देखिके कुहुँकि कोकिला बानीहो । झूठेहि नामलेति ललिताको काहेजाहु परानीहो । वृन्दावन मगजाति अकेली शिरलिये दही मथानी हो । मैं बैठीपरखति द्वारेहौं श्यामतबहिं तोहिंजानीहो। कोककला गुण आगरि नागरि सूरचतुरई ठानीहो १३२ ॥ रागरामकली॥ धौरी मेरी गाय बियानी । सखन कहेउ तुम जेंवहुबैठे श्याम चतुरई ठानी । गाय नहीं ह्वां बछरा नाहीं ह्वैहै राधा रानी । सखा हँसत म- नहींमन कहिकहि ऐसे गुणनिधि धानी । जननी भेद कछूनहिं जानै बारबार अकुलानी । सूरश्याम भूखो उठि धायो मरै न गायबियानी १३३ ॥ राग कल्याण । चर्चरी ॥ सैनदै नागरी गई बन धामको । तबहिंकर कौर दियो डारिनहिँ रहिसको ग्वालबाल जेंवत तजे मोहिगई श्याम को । चले अकुलाय बन धाय ब्याती गांय देखिहैं जाय मन हरय कीन्हें। प्रिया निरखतिपंथ मिलैकब हरिकंथ गयेहरिअन्त हँसिअंक लीन्हें । अतिहि सुखपाय अतुरायमिले धायदोउ मनो अतिरंक नव निधिहिपाई । सूरप्रभुकी प्रिया राधिका अतिनवल नवलनँदलालके मनहिँ भाई १३४ ॥ राग धनाश्री ॥ पिछवारे ह्वै बोलि सुनायो । कमल नयन हरि करतकलेऊ कर नाहिँन आननलों आयो । गाय एक बन ब्यायरहीहै याहिमिसि आतुर उठिधायो । बेणु न लयो लकुट नहिं लीन्ही हरबराय कोउ सखा न बुलायो । चौंकि परे चकित ह्वै जित कित सत्यआहिकी सपन भयायो । फूलेफिरतअंकनहिं गावत मानहुँ सुधा किरणि छबिछायो । मिलिबैठे संकेतलतातर कियेसबै जितनो मनभायो । सूरदाससुन्दरीसयानी उलटिअंक गिरिधर वियपायो१३५ राग देवगन्धार ॥ ऐदोउ राजत रतिरणधीर । महासुभट प्रकटे भूतल रूप- भानसुता बलबीर । भौंहनि धनुषचढाय परस्पर सजे कँवचतनचीर। दशनसन्धानसि शेष धरतनहिं कुचकटाक्षनिबीर । नखनेजा आछतउर लागे नेक न मानति पीर । मुरली अधरनिवारि चमूबलो रही सुभुज भटभीर । प्रेमसमुद्र छांडिमर्यादा उमँगिमिले तजितीर । करत बिहार

दुहूं दिशिते सनो सींचतसुधाशरीर। अतिबल यौवन धायरुविरचिर बन्दनमिलि अमनीर। सूरदास स्वामी अरु प्यारी विहरत कुञ्जकुटी-१३६॥ राग कान्हरो॥ नवलनिकुञ्ज नवलनवलामिलि नवलनिकेतनि रुचिर बनाये। विलसतविपिन विलास विविधवर वारिजबदन विकससचुपाये। लागतचन्द्र मयूखसुतौतनु लताभवनि रंधनि सगआये। मनहुं मदनबल्लीपर हिमकर सींचत सुधाधारसतनाये। मुनिमुनि शोचति श्रवण सुन्दरी मौनकियो शोदति मनलाये। सूरसखी राधामाधवमिलि क्रीडतहैं रतिपतिहिलजाये१३७॥ राग कल्याण। चर्चरी॥ हरषि प्रियप्रेम वियअंकलीन्हो। प्रियाविनवसनकरिहिउलटिरीर भजनिभरि सुरत रतिपूर अतिनिबल कीन्हो। अपने करनखनसों अलक कुरवारही कबहुंबांधे अतिहि लगतलोभा। कबहुंमुखमोरि चुम्बनदेतहरय है अधरभरि दशन वह उनहिंशोभा। बहुरि उपज्यो काम राधिकापति श्याम सगनरसताम नहिं तनुसम्हारै। सूरप्रभु नवल नवलानवल कुञ्जगृह अन्त नहिं लहत दोउ रति विहारै १३८॥ राग नट॥ नागर श्याम नागरिनारि। सुरतरति रणजीति दोऊ अङ्गमन्मथवारि। श्याम तन घननीलमानो तड़िततनुसुकुमारि। मनोमरकातकनकसंयुत खच्यो कामसँवारि। कोकगुणकारि कुशल श्यामा उतकुशल नँदलाल। सूर-श्याम अनङ्गनायक विवश कीन्हो बाल १३९॥ राग मलार॥ उलहरि आयो शीतलबूंद पवनपुरवाई॥ बाढेद्रुमसघनबन चहुंओर घटाछाई। तहां हरिआय सेज पातनकी बिछाय अनमने भये कन्हाई। भीजत देखी राधामाधव कारीकामरीओढाई। अतिदरेरकी भरेर टपकतसब अम्बरकांपत तनुवियको प्रिय हँसिके ग्रीवलगाई। भये एकठौर सूर श्याम भरीकौर अरशपरश रीझत उघरेनाहीं में समाई १४० दीजे कान्ह कांधेउको कम्बर। नान्हीनान्ही बूंद बरषनलागयो भीजतबार बार अकुलाय राधिका देखि मेघ आडम्बर। हँसि हँसि रीझि बैठि रहे दोऊ ओढ़ि सुभग पीताम्बर। शिव सनकादिक नारद शारद अंत न पावैं तुम्बर। सूरश्याम गति लखि न परत कछु ग्वाल ग्वाल तजे सम्बर १४१॥ राग गौरी॥ सुरतअन्त बैठे बनवारी। प्यारीनयन जुरति सन्मुख सकुचि हँसत गिरिधारी। बसन सम्हारि लेत गसे दोऊ

आनँदउर न समाई । चितवत दुरिदुरि नयन लजौंहीं सो छबिबरणि न जाई । नागरि अङ्ग मरगजी सारी कान्ह मरगजे अङ्ग । सूरज प्रभु प्यारी बश कीन्ही हावभाव रतिरङ्ग १४२ ॥ राग सोरठ ॥ रीझे श्याम नागरी छबिपर । प्यारी एकअङ्गपरअटकी यहगतिभई परस्पर । देह दशाकी सुधि नहिं काहू नयन नयन मिलि अटके । इन्दीवर राजीव कमलपर युगखञ्जन युगलटके । चकृतभये तनकी सुधि आई बनहीमें भइराति । सूरश्याम श्यामा बिहारकरि सोछबिकी इकभांति १४३॥ राग आसावरी ॥ कान्ह कहेउ बनरैनि न कीजे सुनहु राधिकाप्यारीहो। अति हित सों उरलाय कहेउ अब भवन आपने जारीहो । मात पिता जियजाने न कोऊ गुप्तप्रीति रसभारीहो । करते कौरडारि मैं आयो देखति दोउ महतारीहो ।तुम जैसी मोहिं प्यारीलागति चन्द्र चकोर कहारीहो । सूरदास स्वामी इनबातनि नागरिरिझई भारीहो १४४॥ राग कल्याण ॥ प्यारी उठि पिय के उर लागी । आलस अंग लटकि लट छूटी देखि श्याम बड़भागी । सुरत मोति निशि बीती मानो हँसनि प्रात भयो जागी । अति सुख कराठ लगायलई हरि अरश परश अनुरागी । नूतन मेघ नवेली दामिनि सहज भेटि मिलि पागी । सूरदास प्रभुको अङ्कभरि कामदन्द तनुत्यागी १४५ ॥ राग गैारी ॥ कहा करौं पगचलत न घरको । नयन बिमुखजन देखन जात न लुब्धे अरुण अधरको । श्रवण कहत वे बचन सुनेनहिं रिसपावत मोपरको । मनअटक्यो रससधुर हँसनिपर डरत न काहू डरको । इन्द्री अङ्गअङ्ग अरुझानी श्यामरङ्ग नटवर को । सुनहुँ सूरप्रभु रही अकेली कहा कहों सुन्दरबरको १४६ श्यामआवनी चितवनिबरजो अरुमुखकी मुसुकानि। तुम्हरे तनक सहज के कारण सबिधन सर्बस हानि । नयनन निरखि बसीठी कीन्ही मनुमिलयो पयपानि । गहि रतिनाथ लाज निजपुरते हरिका सैांपी आनि । सखिहोंक्यूकहति नन्दनन्दनकी दासी सबजग जानि । जोइजोइ कहत करति सोईकिन आयसु माथेमानि । साईत्यागि अभिमान मोहसब पतिपरिजन पहिँचानि । सूरसिंधु सरितामिलि जैसे मनसा बुन्द हिरानि १४७॥ राग बिहागरो ॥ अति हित श्याम बोलें बैन । तुववदन देखेविना येहम होत न नयन।पलकनहिँ चितते टरति

तू प्राण वल्लभ नारि। सुनत श्रवणन वचन अमृत हरष अन्तरभारि। मात पितु अवसेर करिहैं गमन कीजै गेह। सूरप्रभु प्रिय त्रिया आगे प्रकटि पूरणनेह १४८ श्याम प्रकटकीन्हों अनुराग। अति आनन्द मनहिँमन नागरि बदति आपनो भाग। सुन्दर घन उतब्रजहि सिधारे इतहि गवन करिनारि। दम्पति नयन रहेदोउ भरिभरि गये सुरतरति सारि। जननीमन अवसेर करतिही हरि पहुँचे तेहिकाल। सूरश्याम को मात अङ्कभरि कहति जाउँबलि लाल १४९॥ राग ईमन॥ मैंबलि जाउँ कन्हैयाकी। करते कौरडारि उठिधायो बातसुनी बनगैयाकी। सौरीगाय आपनी जानी उपजी प्रीति लवैयाकी। ताते जल समोय पयधौवति श्यामदेखि हित मैयाकी। जो अनुराग यशोदा के उर सुखकी कहनि नन्हैयाकी। यहसुख सूर और कहुँनाहीं सौंह करत बल भैयाकी १५० कान्हा प्यारे वारनेजाउँ श्यामसुन्दर सूरति पर। छबिसों छबीली लटकि बदनपर चन्द्रिका की लटकनि अति बिराजत मुरली सुभग धरेकर। सुन्दर नयन विशाल भौंह मुख चापमानो तिलक बिराजत ललित भाल पर। सूरश्याम मेरे अति बानक बन्यो बनमाला अतिही उरराजत कटितट सोहत पीताम्बर १५१॥ रागबिहागरो॥ वहतो मेरीगाय न होई। सुन मैया मैं वृथा भ्रम्यों बन जो देखौं नयननिभरि जोई। वृन्दावनढूँढ्यों यमुनातट देख्योंबन डुंगरन मझारि। सखासंग कोउ नहीं अकेला कांधकमरि करलकुटी धारि। वह तौधेनु और काहूकी युवती एकमिलीवैं कौन। सूरसंग मेरे वहुआई मोको वहि पहुँचायो भौन १५२॥ राग रामकली॥ राधा अतिही चतुर प्रबीन। कृष्णको सुखदे चलीगृह हंसगति कटिछीन। हारकेमिस यहाँ आई श्यामसखाके काज। भयोसबपूरण मनोरथ मिले श्रीब्रजराज। गाँठि अंचर छोरिके मोतिसरी लीन्हीं हाथ। सखी आवत देखिराधा लई ताकोसाथ। युवति बूझति कहाँ नागरि निशिगई एकयाम। सूर क्योंरो कहिसुनायो मैं गईतेहिकाम१५३॥ राग कान्हरो॥ऐसीरीजिवरन तू राधा। ब्रज घरघर बनबन डोलीतू नहीं कियो कहुँबाधा। मोकोसंग बोलि तूलेती करणीकरी अगाधा। प्रातहिते तुअब आवतिहैरैनियाम लगआधा। पायोहार किधौं पुनिनाहीं देखौंरी मोहिँ साधा। आचर

हेरिग्रीव दिखरायो दामिनि मोल उपाधा । मन मन कहति बातयह मिलवति गई श्याम अवराधा । सूरसखी लखिलीन्हो ताको यह तो है कछुदाधा १५४ ॥ राग धनाश्री ॥ कहिराधा किनहार चुरायो । व्रज युवती सबही मैं जानति घरघर लैलै नाम बतायो । श्यामा कामा रसिकाचतुरा नवला प्रमुदानारि । सुखमा शीला अवध अनन्दा वृन्दा यमुनासारि । कमला तारा बिमला चन्द्रा चन्द्रावलि सुकुमारि । अमला अबला कुंजा मुकुता हीरा नीलाप्यारि । सुमना बहुला चम्पा जुहिला ज्ञाना भाना भाम । प्रमा दामा रूपा हंसा रङ्गा हरषा नाम । द्रुमिला रम्भा कृष्णाध्याना मैना नयना रूप । रत्ना कुमुदा मोहा करुणा ललना लोभानूप । इतननि मैं कहुकौने लीन्हों ताको नाउँ बताव । सूरश्याम हैं चोर तुम्हारे मैं जानति सबदाव १५५ ॥ राग शंकराभरण ॥ सुरतरतिसानि आई पियपै तो गजगति गामिनी । मरगजे हार बिथुरे बार देखियत आयगये याम यामिनी । और शोभासुहाई अङ्गअङ्ग अरसाई बोलति है अलसामिनी । सूरदास प्रभु छबि निरखतरही रसबस ह्वैरी धन्य धन्य तुभामिनी १५६ ॥ राग कान्हरो ॥ उरधारीलटें छुटि आननपर भीजी फुलेलनिसों आली हरिसंगकेलि । सोधे अरगजा अरुमरगजीसारीरी केशरिखौरबिरज कहुँकहुँकुचनपर दरकीअँगिया घनबेलि । आलसहैं भरेनैन बैन अटपटात जात सेंडत जम्हात गात अङ्गमोरि बहियांझेलि । सूरप्रभु प्यारी प्यारे संग करि रस बिलास अरश परश दोऊ आंको मेलि १५७ ॥ राग ललित ॥ आईतू डगमगाति सेंडाति जम्हाति रगमगी रङ्गभरिके । चन्द्रउदय मुख देखतिहोरी दर्पण प्रतिबिम्ब निहारिवौ पीक लीक नैनछबि परिके । बिथुरे अलक सुथरे मुखऊपर सुधामनो पीवत अलिमाल अनंद भरिके । सूरज प्रभु रसिकराय रसबश कीन्हे बनाय सुख दीन्ह मन अघाय नवला नवरीझि मनहरिके १५८ ॥ राग बिलावल ॥ सुनरी राधा अबहिँ नई । बातें कहा बनावति मोसों हमहूंते तू चतुरदई । कहां ग्वालि कहँ हार तुम्हारो कहो जहां तू आजगई । मनहीं जानिलेहु मैं जान्यो जाके रँगतू सदारई । तेरेमनपर कटकरिहौं मैं ऐसीरी कबहूँ न भई । सूरश्याम सँग जबते कीन्हो तबहींते मैंजानि लई १५९ इन बातनि कछु पावतिरी । बिनुदेखे लोगनसों छनिसुनि

काहे बैर बढ़ावतिरी। मोको जहां अकेली देखति तबहीं ये उपजावतिरी। ब्रजयुवतिन की सङ्गति त्यागो पुनिपुनि क्रोध करावतिरी। कैसी बुद्धि तुम्हारी मनकी ऐसिय तुमको भावतिरी। सूरश्याम हमा दै बूझतिहीं कहततुमहूँ कहनावतिरी १६०॥ रागकेदारो। चर्चरी॥ करति अवसेर वृषभानु नारी। प्राततें गई बासरगयो बीति सब याम निशि गई धौं कहां बारी। हारके त्रासमें कुंवरित्रासी बहुत तेहिडर अजहुँ नहिं सदन आई। कहां मैं जाउँ कहँ धौं रही रूसिके सखिनसों कहति कहुं मिलीमाई। हार बहिजाय अतिगई अकुलाय कै सुता के नाह बकहिहै मेरे। सूर यहबात जो सुनै अबहीं महर कहैंगे मोहिं ये ढङ्ग तेरे १६१॥ राग सोरठ॥ राधा डरडराति गृहआई। देखतही कीरति महतारी हरषि कुंवरि उरलाई। धीरज भयो सुता माता जिय दूरि भयो तन शोच। मेरीको मैं काहेत्रासी कहा कियो यहपोच। लेरी मैया हार मोतिसरि जाकारण मोहिंत्रासी। सूर राधिकाके गुण ऐसे मिली आय अविनासी १६२॥ राग बिहागरो॥ परम चतुर वृषभानु दुलारी। यह मति रची कृष्ण मिलिबे को परम पुनीत महारी। उत सुख दियो नन्दनन्दन को इतहि हर्ष महतारी। हार इतो उपकार करायो कबहुँ न उरते टारी। जे शिव सनक सनातन दुर्लभ ते बश किये कुमारी। सूरदासप्रभु कृपा अगोचर निगमनिहू ते न्यारी १६३ रागसारंग। चर्चरी ॥ निगमते अगम हरिकृपा न्यारी। प्रीतिबश श्याम की रायकीरङ्क कोउ पुरुष को नारि नहिँ भेदकारी। प्रीति बसुदेव की गर्भ लीन्हो बास प्रीतिके हेत ब्रजवेष कीन्हो। प्रीतिकेहेत यशुमति कियो पयपान प्रीतिकेहेत अवतार लीन्हो। प्रीतिकेहेत बनधेनु चारत कान्ह प्रीतिकेहेत नँदसुवन नामा। सूरप्रभुको प्रीति राधिका जिय प्रीति प्रीतिके हेत दोउ श्याम श्यामा १६४ प्रीतिके वश्य येहैं मुरारी। प्रीतिके वश्य नटवर वेष धरेउहै प्रीतिवश करज गिरिराज धारी। प्रीतिके वश्य ब्रज भये माखनचोर प्रीतिके वश्य दाँवरि बँधाई। प्रीतिकेवश्य गोपी रमण नाम प्रिय प्रीतिवश तरु यमल मोक्षदाई। प्रीतिवश नन्द बन्धन वरुण सदनगये प्रीतिके वश्य बनधाम कामी। प्रीतिकेवश्य प्रभुसूर त्रिभुवन विदित प्रीतिवश सदा राधिका

स्वामी १६५ ॥ राग भैरव ॥ श्यामभये वश नागरिके। नयन कटाक्ष बंक
अवलोकनि रीझे घोय उजागरिके। चित मधुकर रस कमलकोश को
प्यारी बदन सुधागरि के। लोकलाज सम्पुट नहिँ छूटत फिरिफिरि
आवत नागरिके। मिलन प्रकाश मनावत मनमन कहाकहैं अनुरा-
गनिके। सूरश्याम बशबास भयेहैं धनि ऐसी बड़भागनिके १६६ ॥ राग
आसावरी ॥ श्याम भये वृषभानु सुताबश और नहीं कछु भावैहो। जो
प्रभु तिहूंभुवनको नायक सुरमुनि अन्त न पावैहो। जाको शिवध्या-
वत निशिबासर सहसानन जेहि गावैहो। सोहरिराधा बदनचन्दको न-
यन चकोर त्रषावैहो। जाको देखि अनङ्ग अनङ्गत नागरि छबि भर-
मावैहो। सूरश्याम श्यामाबश ऐसेज्यों सँग छाँह डुलावैहो १६७॥
राग जैतश्री॥ कबहुँश्याम यमुना तटजात। कबहुँकदम्ब चढ़त देखतमग
राधाबिनु अतिही अकुलात। कबहुँजात बन कुंजधामको देखि रहत
कछुनहीं सुहात। तब आवत वृषभानु पुराको अतिअनुराग भरेउ नँद
तात। प्यारी हृदय प्रकटही जानति तबमन माँझ सिहात। सूरदास
प्रभु नागरिके उर नागर श्यामलगात १६८॥ राग गुर्जरी ॥ राधाश्याम
श्याम राधारङ्ग। पिय प्यारीको हिरदय राखत प्यारी रहति सद
हरिसंग। नागरि नयनचकोर बदनशशि पियमधुकर अम्बुज सुन्द
मुख। चाहत अरश परश ऐसेकरि हरि नागरि नागरि नागर सुख
दुखसुख शोचि रहत मनहींमन तब जानत तनको यह कारन।
सूर कुलकानि मानिजिय दुखसुख दोउ फल करत बिचारन १६९

अथ यमुनाजी गमन स्वामिनीजी को तथा युगल समागम ॥

राग सूहो ॥ यमुनाचली राधिकागोरी। युवति वृन्दबिच चतुर नागरी
देखे नन्दसुवन तेहिखोरी। ब्याकुल दशा जानि मोहनकी मनहींमन
डरपी उन ओरी। चतुर कामफँद परे कन्हाई अबधौं इनहिँ बुझावै
कोरी। इत सखियन सों बात बनावति अति ह्वै गई तनकसी भोरी।
सूर उतहि हरिभाव बतावति धीर धरो मिलिहौ दोउ जोरी १ ॥ राग
धनाश्री ॥तब राधायक भाव बनावति। मुखमुसुकाय सकुचि पुनिलीन्हो
सहज चली अलकै निरवारति। एक सखी आवत जल लीन्हे तासों
कहति सुनावति। टेरिकहेउ तेरे जैसे मैंहीं यमुनाते आवति। तब सुख

पाय चलेहार घरको हरिप्रीतमहिँ मनावति। सूरजप्रभु व्युत्पन्नकोक गुण ताते हरिहार ध्यावति २॥ राग सारंग चर्चरी ॥ श्यामको भाव देगई राधा। नारि नागरिन काहू लख्यो कोउ नहीं कान्ह कछु करत है बहुत अनुराधा। चितै हरिबदन याको हँसत मैं लखीवै उतहिगये कछु हृदयकीये। भावती भावके सींगनाहीं सुने ये महाचतुर चतुरई लीये। आजुही रैनि दोउ संग ये मिलहिंगे हरेकाहि परस्पर मनहिँ जानी। सूर व्रजनागरी नारि नागरि फिरी व्रजतुरत लेगई यमुनपानी ३॥ राग टोड़ी ॥ भावदियो आवैंगे श्याम। अङ्गअङ्ग आभूषण साजति राजति अपने धाम। रतिरण जानि अनङ्ग नृपतिसों आपनृपति बलजोरति। अति सुगन्ध मर्द्दन अँग अङ्गनि उबटनभूषण खोलति। बीराहार चीर चोली छवि सैना सजि शृङ्गार। पान बचन संनास कवचदै जोरै सूर अपार ४॥ राग कान्हरो ॥ प्यारी अङ्ग शृंगारकियो। बेणी रची सुभग कर अपने टीकोभाल दियो। मोतियन माँगसँवारि प्रथमहीं केशरि आड़ सँवारी। लोचन आँजिश्रवण तरिबनि छबिको कविकहैनिर-वारी। नासा नथ अतिही छबि राजति बीरा अधरनि रङ्ग। नवसत साजि चीर चोलीबनि सूर मिलन हरिसंग ५॥ राग कल्याण ॥ नागरि नागर पन्थ निहारैं। उदयबाल शशि अस्तभयो अब जियजिय यहै बिचारैं। कीधौं अबहीं आवत ह्वै हैं की आवननहिँ पैहैं। मात पिता की त्रास उतहि इत मेरे घरहि डरैहैं। अङ्ग शृंगार श्याम हित कीन्हे वृथाहोन येचाहत। सूरश्याम आवैंकी नाहीं मनमन यह अवगाहत ६॥ राग बिहागरो ॥ राधा रचिरचि सेज सँवारति। भवन गवन करिहैं हरि मेरे हरषि दुखहि निरवारति। तापर सुमन सुगन्ध बिछावति बारम्बार निहारति। आवैंकबहुँ अचानकही जो सुभग पाँवड़े डार-ति। यह अभिलाषहि में हरिप्रकटे पुरुष भवन सकुचानी। वहसुख श्रीराधामाधव को सूर उनहिँ यहजानी ७ कहा कहौं सुखकहेउ न जाय। वह अभिलाष श्यामकी आवनिदुहुँ उर आनँद नहीं समाय। द्वादशकान्ह द्वादशी आपुन वहनिशि वै हरिराधा योग। वहरसकी झमकनि वहमहिमा वह मुसुकनि वैसोसंयोग। वेहितबोल परस्पर दोऊ ठठुकत कहत प्रेम सकुचानि। सूर श्यामकर बामभुजा धरि उ-

कुँवरलई वह मुख पहिँचानि ८ ॥ राग कान्हरो ॥ श्याम सकुचि प्यारी उरजानी । उरकुँवरलई बामाभुजकरिकै बारबार कहिबानी । निरखति सकुच बदन हरिप्यारी प्रेमसहित जुहरानी । करत कहा पिय अति उतावली मैं कहजाति परानी । कुटिल कटाक्ष बंककरि भृकुटी आनन मुरिमुसुकानी । सूरश्याम गिरिवर रतिनागर नागरि राधारानी ९ ॥ राग विहागरो ॥ नागर नागरि करत बिहार । काम नृपति सेनादुहुँ अङ्गनि शोभावार न पार । अधर अधर नयननि नयननि भुवभाल कियो यकठौर । मनो इन्दिवर कमलकुशेशय चारिभँवर रँगऔर । बदन भाल चिनिकै सम दोऊ अरश परश बरनारि । मनो बिंबिचंद चकोर परस्पर कमल अमल रविवारि । रतिआगम हित अतिउपजायो पियप्यारी मनएक । सूरदास स्वामी स्वामिनि मिलि कोक कलाजु अनेक १० ॥ राग केदारो । चर्चरी ॥ श्याम श्यामा परम कुशल जोरी । मनो नव जलद पर दामिनी की कला सहज गति मेटि अति भई भोरी । अलक आतुर बिथुरि श्याम मुख पर रहे मनो बल राहु शशि घेरि लीन्हो । चितै मुख चारु चुम्बन करति सकुच तजि दशन छतअधर पिय मगन दीन्हो । परतश्रम बुंदटप टपकि आनन बाल भई बेहालरति मोहभारी । बिधु परसदन्त बिभुतुराउ अमृत चुवत सुर बिपरीतरति पीउप्यारी ११ ॥ राग कुरंग ॥ कुञ्जके निकट कञ्जसुरत निरत सों सेजरा सुखगात । टूटिगई तनी चोली दरकि तरकिगई चारो याम रजनी बिहानीभोरै भोरे प्रात । आलस सों उठि बैठे अरश परश दोउ दम्पति मनमन अतिमुसकात । सूरआश पूरी श्यामाश्याम बनी जोरी निशिरस सुधिआये नयन नयननं लजात १२ ॥ राग ललित ॥ राजत दोउ रतिरङ्ग भरे । सहजप्रीति बिपरीति निशासब आलस सेज परे । अति रणवीर परस्पर दोऊ नेकहु कोउ न मुरे । अँगअँग बल अपने अरवनि सों रतिसंग्राम लरे । मगन मुरझिरहे सेज खेतपर इतउत कोउ न टरे । सूरश्याम श्यामा रतिरणते यकपग पल न टरे १३ ॥ रागविभास ॥ श्यामा श्यामसेज उठिबैठे अरशपरश पर करत बिहार । उन उनकी पहिरी मोतिनकी माला उन उनको पहिरेउ नौसर को हार । लटपट पेच सम्हारति प्यारी अलक सम्हारत नन्दकुमार । सूरदासप्रभु नागरिनागर

विधारिसि भूषण करत शृंगार १४ ॥ रागललित ॥ करि शृङ्गारदोउ अरसाने। प्रथमबोल तमचुर सुनिहरये पुनि पौढ़ि दोऊ लपटाने ॥ रति रणाबुद्ध याम त्रियलीके सेजपरे उठिपुनि मुरझाने। मानो सूरखेतसम लरिके गिरे उठत फिरि गिरत लजाने १५ बोले तमचुर चारयो याम को गजर बाजेउ पवनभयो शीतल तमितरामिता गई। प्राची अरुणानी भानकिरण उनारी नभ छपेउडुगण चन्द्रमा मलीनतालई। मुकुलेकमल बच्छबन्धन बिछोहीग्वाल चर चली गाय दुजपैती करकोदई। सूरदास राधिका सरसबाणी बोलि कहै जागो प्राणप्यारे जु सवारे की समयभई १६ ॥ रागविभास ॥ चिरई चुहचुहानी चन्दकी ज्योति परानी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रवान की। तारिका दुरानी तम घट्यो तमचुरबोले श्रवणभनकपरी रागललितके तानकी। भृङ्गमिले भार्या बिछुरि जोरीकोक मिले उतरी पनिचश्रव कामकेकमानकी। अथवत आयेगृह बहुरि उवनभानु उठो प्राणनाथ महाजारन सजिजानकी। ब्रजघर घर यहै करत चवावलोग बारबार कहनिकरनि डरनिघरनि बरनियण आनकी। सूरदासप्रभु नन्दसुवन सिधारोधाम सुनतउठे छवि कृपाल कृपाके निधानकी १७ ॥ राग रामकली। चर्चरी ॥ जागिये प्राणपति रैनि बीती। चन्दकी द्युतिगई पहैपौरी भई सकुच राहीं दई अतिहि भीती। मातुपितु बन्धुगुरुजन अबहिंजानिहैं लखैं जिनिकहूं यहलाज भारी। सखिन आगेनहीं नहीं सबदिन कही मोहिंपे रहति सबैनारी। उठे मुसुकाय अकुलाय अनुरायके निकसिगये श्यामब्रजनारि जान्यो। सूरप्रभु नन्दनन्दन रस देगये निरखि यकटक रहीमन भुलान्यो १८ राग बिलावल ॥ प्रकट दरश देगये कन्हाई। राधागृहर निकसतदेखे यह उनकी मनसाथ पुराई। शीशमुकुट मोतिन उरमाला पीतांबरपट सहज फिराई। श्यामबरणतन निरखिभुलानी अङ्गअङ्ग छबिकहेउ न जाई। करति शोच मन राधा अपने आलस भरे गये हरि माई। सूर श्याम निशिनेक न सोये यहै कहति पुनिपुनि पछिताई १९ श्यामगये देखे जिनि कोई। सखियनिसों निबहन पुनिपैहौं जिनि आगे राखयोंसर गोई। देखे आय द्वार ह्वैनागरि जहां तहां ब्रजनारि। सकुचिगई युवतिनके देखतदुख कीन्हो जिय भारी। मन चिन्ताअतिही उपजायो

बारबार पछितानी। सूरश्यामसों प्रीति गुप्तहीं आजु सबनि यहजा-
नी२० बारबार राधापछितानी। निकसेश्यामसदन मेरे ते इनअटकरि
पहिँचानी । नितहीनित बूझति ये मोसों मैं इनपर सतराति । अबतौ
हरि परकटहीदेखे पुनिपुनि कहति लजाति। यकऐसेहि झकझोरति
मोसों पायो नीकोदाव । सूरआजु केहिभांति दुरावौं शोचति करति
उपाव २१ शोचपरेउ मन राधिका कछुकहत न आवै। कछुहरषै कछु
दुखकरै मनमोज बढ़ावै। निशि रसरङ्गहिमें पगी तनसुधि बिसरावै।
कबहुँ बिचारति निठुर ह्वै सखि ज्वाब बनावै। अबहीं मोको बूझिहैं
युवती चतुरावै। तिन सन्मुख कैहैं कहा प्रभु सूरमनावै२२ ॥ रागनट॥
कबहूँ मगन हरिके नेह। श्यामसंग निशिसुरतको सुख भूलि अपनी
देह। जबहिँ आवति सुधि सखिनकी रहति अति शरमाय। तबकरति
हरिध्यान हिरदय चरणकमल मनाय। होयज्यों परमोध उनको मेरी
पति जिनिजाय।निदरि निदरि सबको रहीहैं आजुलौं यहिभाय।
अबहिँ अब जुरिआयहैं यहां तुमबिना न उपाय। सूर प्रभु ऐसी करौ
कछु बहुरि जाहिं लजाय २३॥ रागटोड़ी ॥ ज्वाबकहा देहौं मैं उनको।
की आवति अबहींकी सगाकहि चोर कहैंगी मोको । कैसेहू पतिरहै
बिधाता अब यह करो सम्हारि। घेरेहि रहति दुरावैं कबलौं ऐसी
नागरिनारि। नयनभये चकोररहतहैं मुखशशि पूरण काम । सुनहु
सूर यहदशा हमारी ये सब ब्रजकीबाम २४ ॥ रागजैतश्री॥ ये सबमेरेहि
खोजपरी। मैंतौ श्यामसिली नहिंनीके आजुरहीं निशिसङ्ग हरी। यु-
वतीहैं सबदई सबौरि घरबनहू मैं रहतिभरी। कैसेधौं यहसाध मिटैगी
कहांमिलैं जो सबघरी। प्रकटकरैं तौ बनति नहीं कछु रोक सकुच
कुललाज मरी। तेपरकट अबहीं इनदेखे सूरजप्रभु ब्रजराजहरी २५
राग धनाश्री ॥ तब नगरि मन हरष बढ़ायो। परम कुशल राधा हरि
प्यारी हिरदय बुद्धि उपायो। अब आवैं कैसेहु अँगबूझै ज्वाबमनहिं
ठहरायो। अति आनन्द पुलकतन कीन्हो शोच मोह बिसरायो। प्र-
कटगये जैसे नँदनन्दन वहैध्यान उपजायो। सूरदासप्रभु रूप बखान्यो
इनको जो दरशायो २६ ॥ रागललित ॥ राधा हरिके गर्वहरो। सखि-
यनको आगम जजान्यो बैठीरही खरी। उत ब्रजनारि सङ्ग जुरिकै

वै हँसति करति परिहास। चलौ न जाय देखियेरी वा राधाको उजु-
हास। कैसे बदन शृंगार कौनविधि अङ्गदशा भइकैसी। सूरश्यामसँग
निशि रसकीये निवरक ह्वै हैवैसी २७॥ रागजैतश्री॥ सुनो सखी राधा
के मनकी यहकरणी सखिनहिं जान्यो। जब हम जाति चलीयमुना
को तबहीं मैं वाको पहिंचान्यो। तबहिं सैनदे श्यामबुलाये गृह आ-
वनको भाव। उनके गुण यौं कोनहिँ जानत चतुर शिरोमणि राव।
सुनहु सखी अति नहींकीजिये झूठपरे अपनेहीं। सूरश्याम सुखहमहिँ
दुरावति आजुमिले सपनेहीं २८॥ रागसारंग॥ तुम जो कहति राधिका
भोरी। आजुरहै अब कहाँभुराई कौन दिननकी थोरी। जे छोटी तेई
हैं खोटी साजति माजति जोरी। बिन्दी भाल नयननित आंजति नि-
रखि रहति तनगोरी। चमकति चलैबदन मटकावै ऐसी योबनजोरी।
सूरसखी तेहिकहति अयानी मन मोहनहिँ ठगोरी २९॥ राग रामकली॥
राधाको मैं तबहींजानी। अपने करके मांग सँवारै रचि रचि बेणी
बानी। मुखभरि पान मुकुर ले देखति तिनसों करति अयानी। लोचन
आंजि सुधारति करजनि छांह निरखि मुसुकानी। बारबार उरजनि
अवलोकति उनते कौन सयानी। सूरदास जैसीहै राधा तैसी मैं पहिं-
चानी ३०॥ राग गोंडमलार॥ राधिका सदन ब्रजनारि आई। रही मुख
मूंदिके बचनबोलै नहीं नयन की सैनदे वै बुलाई। इनि तबहिं लखि
लई रचतिहै चतुरई बुद्धि रचिके अबहिं और कैहैं। चोर चोरी करै
आपने जांघ बल प्रकट कैहैं तुम्हैं नहिं पत्यैहैं। भौंह देखौं निरखि
ज्वाब करिहै कौन तुमहुँ राखति गर्वबोलि देखौ। सूरप्रभु संगते अ-
तिहि निवरकभई नयनमुख ओर तुमनहीं पेखौ ३१॥ रागसूहो॥ आजु
कहा मुख मूंदि रहीरी। सुनति नहींहो कुंवरि राधिका कापर रिस
करि मौनगहीरी। हमको यहकहिन सुनावति हमहैंतेरी सङ्गसखीरी।
यह कहिकहि मुसुकात परस्पर चतुरनारि वह तबहिँ लखीरी। की
यों ध्यान करति देवनको कीधौं ऐसी प्रकृति परीरी। सूरजबहिं आ-
वति हमतेरे तबतब ऐसी धरणि धरीरी ३२॥ राग बिलावल॥ बार बार
युवती सब राधासों भाखैं। तुम दुराव कत करतिहो हम तुमसों नहिं
राखैं। इतनो शोचपरेउ कहा मुख ज्वाब न आवै। हमतोहैं तेरीसखी

सो कहि न सुनावै । कछु दिनते तेरीदशा तन रहतिभुलाये । निठुर भई कापर इतो कहि सूर सुभाये ३३ ॥ राग गोंडमलार ॥ राधिका कहतिये करतिहांसी । रहति मुखमुख हेरिनयनकी सैन दै कहति मोसें कथा की उपासी । सुनहुरी सखी मैं तुमसोंकहैां कहा बूझति मोहिं कहति राधा । आजुहिप्रात एक चरित देख्यों नयो तबहिंते मोहिं यह भई बाधा । कहैां जो एककरि देखति नयनभरि भोरते भोर ह्वैरही माई। सूरप्रभु श्यामकी श्यामता मेघकीयहै जियशोच कछुनहिं सोहाई ३४ राग रामकली ॥ कन्धरकी घरमेर सखीरी । की सगसोपजकी बगपंगति की मयूरकी पीड़ पखीरी कीसुरचाप किधैांबनमाला तड़ित किधैां पटपीत । किधैां मन्द गरजनि जलधरकी पगनूपुर रवनीत । की जलधरकी श्याम सुभगतन यहै भोरते शोचति । सूरश्याम रस भरी राधिका उमँगि उमँगि रसमोचति ३५ ॥ तथा ॥ आजु सखी अरुणोदय मेरे नयननि धोखभयो । की हरि आजु पंथ यहिगवने कीसखि श्याम जलद उनयो । की बगपाँति भाँति उर पर की मुकुतमाल बहुमोल । कीधैां मोरमुदित नाचत की बरुह मुकुटकी डोल । कीघनघोर गँभीर प्रात उठि की ग्वालनि की टेरनि । की दामिनि कैांधति चहुँ दिशाकी सुभग पीतपट फेरनि । कीबनमालाहै उरराजत कीसुरपति धनुचारु । सूरदासप्रभु रसभरि उमँगी राधाकहति बिचारु ३६ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहुसखी राधा कहनावति । हमआई याके जेहिकारण सो यह प्रकट सुनावति । हमदेख्यो सोई इनदेखे ऐसेहि दोषलगावति।यह पुनीत हमहीं अपराधिनि तनअपराध बढ़ावति । इतनेहिं रहैौऔरजिनि भायहु अजहूंलाज न आवति । सूरश्याम राधा जो एकै उनहिंनहीं कहि आवति ३७॥ रागसूहो ॥ राधाको कछुऔर स्वभाव। हमदेखति हरिको औरहिअँग यह निरखति सतिभाव । यहहै बिनकलंककी साँचो हम कलंकमेंसानी। हम हरिकीदासी सरिनाहींयहहरिकीपटरानी।याकी अस्तुति हमकह करिहैं रसना एक न आवै। सूरश्याम कोई नहिंजानै भजनप्रताप बतावै ३८॥ रागगोंडमलार॥ राधिकाहृदयतेधोखटारो । नन्दकेलाल देखे प्रातकालते मेघनहिँ श्यामतनुकबिबिचारो । इन्द्रधनुनहीं बनदाम बहुसुमन के नहीं बंगपंक्ति बर मोतिमाला । सखी वह नहीं

शिरमुकुट शीखंडि पक्ष तड़ितनहिँ पीत पटछबि रसाला। मंद गर-जनि नहीं चरणनूपुर शब्द मोरहीं आजु हरिगवन कीन्हों। सूरप्रभु भा-मिनी भवनकर गवनमन रवन दुवके दवन जानिलीन्हों ३९ भोर ऊे गये तेऽश्यामसँघेरी। धोखमोहिँ भयो तवलखिनहिँ घनकारि नीलनव मेघछबि चिह्न लेरी। शिखीकी भांति शिरपीड़ डोलत सुभग चापते अधिक वनमाल शोभा। साँवरी घटापर पाँतिवगसे रुचिर मोतिवर दाम उनदेखि लोभा। तड़ित ते पीत पटकी चमक राजई गरज नहिँ प्रातही ग्वाल बोलें। सूरप्रभु सखी यहवात साँचीकही भवनवश मेघ ज्यों अंक डोलैं ४०॥ राग कल्याण॥ धन्यहो धन्यतुम घोषनारी। मोहिँ धोखोगयो दरश तुमकोभयो तुमहिँमोहिँ देखिरी बीच भारी। जा-दिना संगमैं गई अस्नानको यमुनकेतीर देखे कन्हाई। पीड़ शीखण्ड शिरवेष नटवर काछेअंक यकछटा में रहि भुलाई। यकदिवस आय ठाढ़े भये द्वारहरि आजुको हार ह्वैगये मेरे। सूरप्रभु तादिना तुमहिँ कहिदियो मोहिँ आजुमैं लखे सोउ कहेतेरे ४१॥ राग आसावरी॥ तुम कैसे दरशन पावतिरी। कैसे श्याम अंक अवलोकति क्यों नयननि ठहरावतिरी। कैसेरूप हृदय राखति हौ वै अतिहैं झलकावतिरी। मोको जहाँ मिलतहैं माई तहँ तहँ अति भरमावतिरी। मैंकबहूँनीके नाहिँदेखे कहकहीं कहत न आवतरी। सूरश्याम कैसे तुम देखति मोहुँ दरशन नहिँ आवतरी ४२॥ तथा॥ धन्यधन्य वृषभानकुमारी। धनि माता धनिपिता धन्य तुव जिनतोसी उपजाईबारी। धन्यदिवस धनि निशा तवहिँकी धन्यघरी धनि याम। धन्य कान्ह तेरेवश जेहैं धनि कीन्हे वश श्याम। धनिमति धनिरति धनि तेरोहित धन्यभक्ति धनि भाव। सूरश्याम पतिधन्य नारि तू धनि धनि एक सुभाव ४३॥ राग जैतश्री॥ तोहिं श्याम हमकहा देखावैं। तुमतेन्यारे रहतकहूँ वै नेकनहीं बिसरावैं। एकैजीव देह द्वैराची यहकहि कहि जु सुनावैं। उनको पट-तर तुमकोदीजे तुव पटतर वै पावैं। अमृत कहा अमृत गुण प्रगटै सो हम कहा बतावैं। सूरदास ज्यों गूंगेको गुण बूझति कहांबुझावैं ४४ रागटोड़ी॥ सुनि राधा यह कहा बिचारै। वै तेरे रँग तू उनके रँग अपनो मुखको कौन निहारै। जो देखै तौ छांह आपनी श्यामहृदय ह्वांछाया।

ऐसीदशा नन्दनन्दनकी तुमदोउ निर्म्मल काया । नीलाम्बर श्यामल तनुकीछवि तुवछवि पीतसुवास । घनभीतर दामिनी प्रकाशित दामिनि घन चहुँवास । सुनरी सखी बिलछकहौं तोसों चाहति हरिको रूप । सूरसुनहु तुमदोउ समजोरी यकयक रूप अनूप ४५ ॥ रागधनाश्री ॥ सुन ललिता चन्द्रावलि बात । मोसों श्याम नेहमानतहैं तुमसों कहति लजात । तुमतो सदा रहति हरिसंगहि भेदकहो यहमोहिं । हाहाकरति पायँहौं लागति शपथहै मेरीतोहिं । काहेको इतराति सखीरी तोते प्यारी कौन । सूरश्याम तेरेबश ऐसे ज्यों पंखा बश पौन ४६ ॥ राग नटनारायण ॥ पिय तेरेबश योंरीमाई । ज्यों सँगही सँग छांह देहवश प्रेम कहेउ नहिं जाई । ज्यों चकोरवश शरद चन्द्रके चक्रवाक बशभान । जैसे मधुकर कमल कोशपर त्योंबश श्याम सुजान । ज्योंचातक बश स्वाति बूँदके तनके बश ज्योंजीव । सूरदास प्रभु अति बशतेरे समुझि देखि धौं होव ४७ तूरीछांह किये हरिराखति । अपनेमन तू जानति नीके मुख मोसों यह भाखति । अतिबश रहत कान्हरी तोको मुकुट हाथलै देखौ । तैंसियहै मनमोहनकी गति उहैभावमनलेखौ । तुमबामांग अङ्गदक्षिण वै ऐसे करि यक देह । सूरमीन मधुकर चकोर के इतनो नहीं सनेह ४८ ॥

इहांते ठकुरायन सोभाय गर्वमन कीन्हों प्रभुह्वारेते फिरे
बिरह कथा ललितादिकसों ॥

राग देसाख ॥ नँदनन्दन बश तेरेरी । सुनु राधिका परम बड़भागिनि अनुरागिनि हरिकेरेरी । जादिनते तोहिं खरिकमिले हरि धेनु दुहावन आईरी । तादिनते बशभये कन्हाई कहा ठगौरी लाईरी । अब तू कहति कहा मों आगे बातनि मोहिं भुलावैरी । सूरदास ललिता को बाणी सुनि सुनि हर्ष बढ़ावैरी ४९ ॥ रागटोड़ी ॥ ललितामुख सुनिसुनि वै बानी । मैं ऐसी जियमें यहआनी । औरनहीं मोसरि कोउब्रजकी । हौं राधा आधा अँग हरिकी । अपनेहीं बश पिय को करिहौं । कहूं जात देखौं तब लरिहौं । घरघर सबैगईं ब्रजनारी । यहि अन्तर आये गिरिधारी । हरि अन्तर्यामी अबिनासी । जानि राधिका गर्वउदासी । सूरश्याम राधातन हेरेउ । नागरि देखतही मुखफेरेउ ५० ॥ रागसारंग॥

बरज्यो नहिं मानत उझकत फिरत हो कान्ह घर घर। तुम सिसही मिस देखत फिरत युवतिनके बदन कौनके बर। कोउ अपनेघर काम काज जैसे तैसे तुम आवतहो हो दरदर। सूरदासप्रभु अतिहि अचगरी देत डोलत नेकनहीं जियमेंडर ५१॥ राग बिलावल॥ यह जान्यो जिय राधिकाहारे हरिलागे। गर्बकियो जिय प्रेमको ऐसे अनुरागे। बैठि रही अभिमानसों यहठौर न पायो। हृदय श्याम सुखधामने अभिमान बसायो। जहां गर्ब अभिमानहै तहँ गोबिंदनाहीं। राधाके यह जानि के आपुन पछिताहीं। तहां नेकहू नहिं रहे नहिं दर्शन दीन्हें। सूर श्याम अन्तरभये जबगर्बहि चीन्हें ५२॥ रागधनाश्री॥ राधा चकृत भई मनमाहीं। अबहीं श्याम द्वारह्वै झांक्यो यहँ आये क्यों नाहीं। आपु न आय तहां जो देखे मिले न नन्दकुमार। आवतहैं फिरि गये श्याम घन अतिही भयो बिचार। सूनेभवन अकेलीमैंही नीके उझकि निहारेउ। मोते चूकपरी मैं जानो ताते मोहिं बिसारेउ। यक अभिमान हृदयकरि बैठी येतेपर झहरानी। सूरदासप्रभु गये द्वारह्वै तब व्याकुल पछितानी ५३॥ रागगौड़सारंग॥ मैं अपने जिय गर्बकियो। वे अन्तर्यामी सबजानत देखतही उन चरचिलियो। कासों कहौं मिलावै को अब नेक न धीरजु धरत जियो। वेतौ निठुर भये या बुधिते अहङ्कार फल यहैदियो। तब आपुनको निठुर करावति प्रीतिसुमिरि भरिलेतिहियो। सूरदासप्रभु वे बहुनायक मोसी उनको कोटितियो ५४॥ रागबिहागरो॥ श्याम बिरह बन मांझ हिरानी। संगी गये संग सब तजिकै आपुन भई दिवानी। श्याम धाममें गर्बहि राखति दुराचारणी जानी। ताते त्यागि गये आपुहि सब अङ्ग अङ्ग रतिमानी। अहङ्कार लम्पट अपकाजी सङ्ग न रहेउ निदानी। सूरश्याम बिनु नागरिराधा नागरचित्र भुलानी ५५ महा बिरहके मांझपरी। चकृतभई ज्यों चित्रपूतरी हरि मारग बिसरी। सँग बटपार गर्ब जब देख्यो साथीछोड़ि पराने। श्याम गहर अंग माधुरी तहँ वे जाय लुकाने। यह बनमांझ अकेली व्याकुल सम्पति गर्ब छुड़ायो। सूरश्याम सुधिटरति न उरते यहमनो जीव बचायो ५६॥ रागमारू॥ बिरहबन मिलनिसुधि त्रासभारी। नयनजल नदीपर्बत उरजभई मनोसुभग बेनीभई अहिनिकारी। नयनमृग श्रवण

बनकूप जहँतहँ मिलै अमगली सघन नहिं पारपावै। सिंहकटि व्याघ्र अँग अङ्गभूषण मनो दुमहभये भार अतिही डरावै। मारग कर अस्त्र हरि डर लहत कोउनहिं अङ्गसुख श्यामबिनु भयेऐसे । सूर प्रभु नाम करुणाधाम जाउँ क्यों कृपामारग बहुरि मिलै कैसे ५७ ॥ रागटोड़ी ॥ राधाभवन सखीमिलि आई । अतिव्याकुल सुधिबुधि कछुनाहीं देह दशा बिसराई । बांहगही तेहि बूझनलागी कहाभयोरी माई । ऐसी बिवश भई तुम काहे कहौ न हमहिं सुनाई । कालिहहि और बरण तोहिं देखी आजुगई मुरझाई । सूरश्याम देखेकी बहुरेउ उनहिं ठगौरी लाई ५८ ॥ रागहमीरी ॥ श्यामनाम चकृतभई श्रवण सुनतजागी । आये हरि यहै कहिकहि सखिन कंठलागी । मोतेयह चूकपरी मैंबड़ी अभागी । अबके अपराध क्षमहु गयेमोहिं त्यागी । चरण कमल शरण देहु बारबार मांगी । सूरदास प्रभुकेबश राधा अनुरागी ५९ ॥ रागबिहागरो ॥ सखीरही राधामुख हेरि । चकृतभई कछुकहत न आवै करन लगी अवसेरि । बारबार जलपरसि बदनसों बचन सुनावत टेरि । आजु भई कैसी गतितेरी ब्रजमें चतुरि निवेरि । तबजान्यो यहतौ चन्द्रावलि लाजसहित मुखफेरि । सूर तबहिं सुधिभई आपनी मेटीमोह अंधेरि६० रागजैतश्री ॥ कहाभई तू आज अयानी । अतिही चतुर प्रबीण राधिका सखियनमें तुमबड़ी सयानी । कहिधौं बात हृदयकी मोसों ऐसीतूकाहे चितताली । मुखमलीन तनकी गति औरै बूझति बारबार सों बानी । कहा दुराव करौंरी तोसों मैंतो हरिके हाथ बिकानी । सूरश्याम मोको परित्यागी जाकारण मैंभई दिवानी ६१ कृष्णकृष्ण कहति फिरे राधेआपहिकृष्णाहोरही। आपहिकृष्ण आपहीराधा कृष्णराधाहोरही॥

इतिश्रीकृष्णानन्दव्यासदेव रागसागरोद्भव सूरसागरराधाजूके अनुरागलीला रागकल्पद्रुम संपूर्णम ॥

अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

श्रीकृष्णानन्दव्यासदेवरागसागरोद्भवश्रीप्यारीजीके प्रेमअनुरागलीला ॥

तथा ॥ अब मैं तोसों कहा दुराऊँ । अपनीकथा श्यामकी करणी

तो आगे कहि प्रकट सुनाऊँ। मैंबैठीही भवन आपने आपुनहारदियो दरशाऊँ। जानिलई मेरे जियकी उन गर्व प्रहारणा उनकोलाऊँ। तब हौंतें व्याकुल भई डोलति चित न रहै कितनो समुझाऊँ। सुनहु सूर गृह वनभयो मोको अबकैसे हरिदर्शन पाऊँ ६२॥ रागनटनारायण॥ सखि मिलि करो कछू उपाव। मार मारन चढेउ बिरहिनि निदरि पायो दाव। हुताशनध्वज जातउन्नत बहेउ हरिदिशि बाव। कुसुमशर ऋतु नन्दबाहन हरषि हरषित गाव। बारिभव सुत तासुभवरी अब न क-रिहैं काव। बार अबकी प्राण प्रीतम बिजय सखा मिलाव। ऋतु बिचारि जुमानकीजै सोउ बहिर्किनि जाव। सूरसखी सुभावरैहो संग शिरोमणि नाव ६३॥ राग नट॥ मिलवहु पार्थ मित्रहि आनि। जलज सुतके सुत कि रुचिकर भई हितकी हानि। उदधि सुता सुत अवलि उरपर इन्द्र आयुधजानि। गिरिसुता पतिति लक कर्कस हनत शायक तानि। पिनाकीसुत तासु बाहन भक्षमख बिषखानि। शाखामृगरिपु बसन मलयज हितहुताशन बानि। धर्मसुतके अरिसुभावहि तजतधरि शिर पानि। सूरदास बिचित्र बिरहिनि चूक मन मन मानि ६४॥ रागटोड़ी॥ सुन सजनी करणी यहतेरी। हमसों भेदकरै हित उनसों ऐसे गुण उनकेरी। आजुहिते ऐसेढँग आये अबहींतो दिनहैरी। ऐसे टूटि परी उन ऊपर तुमहीं कीन्हेबैरी। अजहूँ कहेउ मानिहैमेरो कीधौंनहीं करैरी। सूरश्यामसों मानुकरौकिन काहे वृथामरैरी ६५॥ रागसोरठ॥ तैंहों उनको मूड चढ़ायो। भवन बिपिन संगहि सँग डोलै ऐसेहि भेद लखायो। पुरुष भवर दिनचारि आपने अपनो चाउसरायो। नँदनंदन बहुरवानि रवन वे यहैजानि बिसरायो। अपनी बात आपने करहै हम को तब न सुनायो। सुनहुसूर बिनु मानुकहो किनि अपनो पिय अप-नायो ६६॥ रागकान्हरो॥ रैनिमो जागत बिहानी मोहनसों मैं मानकियो ताते भई अधिक तनतपति। सेज सुगन्ध तलपबिषु लागत पावकहूते दाव सखीरी त्रिबिधि पवन उड़पति। ऐसो अति व्याप्यो हो मन्मथ मेरोई जियजानै मोहिं श्याम श्याम कहि रैनिजपति। बेगि मिलाव सूरके प्रभुको भूलि अभिमान करों अबहूं नाहिं मदनबामतेकम्पति ६७ रागधनाश्री॥ मानबिना नहिं प्रीति रहैरी। श्यामिमलेकी गतितेरीसी प्र-

कट देखिमोहिँ कहाकहैरी । अपनी चाड़मारि उनलीन्हें तूकाहे अब वृथा बहैरी । बैठीरहै न री दुढ़ह्वै फिरिफिरि काहे न तू मानगहैरी । अपनोपेट दियो तैं उनको नाक बुद्धि त्रियसबै कहैरी । सूरश्याम ऐसे हैं माई उनको बिन अभिमान लहैरी ६८ ॥ रागमलार ॥ सजों क्योंमानु मनु न मेरेहाथ सुरतिकरि उमँगि भरत । मोसों मानत बामश्याम गुण गुणि अभिलाष करत । जोमोको बिनमान आनबरत तिनबिनु मरत । अपमान चहूँ मुदितमूढ़ यश अपयशहू न डरत । रिसमें रसबिथुदै बिरचति हठिप्राण हरत । अब मैंतो रिस करत न रसबश मोहिंसों उलटी लरत । स्वारथ सबइन्द्री इन्द्रिनको समूहपर बिरहा धीरधरत । सूरदास बिरहा धीरजदैहैाघरही फटैरी कैसेरहेउ परत ६९ ॥ रागकान्हरो ॥ चारि चारि दिन सबै सुहागिलरी ह्वैचुकी वे स्वरूप अपनि । सोउ अपनेजिय मानकरैं माईहो मोहिंतो कूरति अतिकपनि । मेरो कहेउ करि मान हृदयधरि छांड़िदेहु अतितपनि । सूरश्याम तबहीं मानैंगे तब वोहि करैंगे जपनि ७० ॥ रागटोड़ी ॥ हमारी सूरति यों बिसारी बनवारी हम सर्बस दैदै हारी । पवनभये अपने सपनेहू वे मुरारि गिरिधारी । वे मोहन मधुकर समान अनंगबेली मनलावत धावत हम व्याकुल बिरह व्यापि दिनप्रति नीरजनयना ढारिढारी । हम तन मन दै हाथबिकानी वे अतिनिठुर रहत मुरारी । सूरदास प्रभु सुनहु सखी बहु रवनि रवन पिय हमएक ब्रतधरि मदनअगिन तनु जारि जारी ७१ ॥ राग गौरी ॥ मैं अपनीसी बहुत करीरी । मोसों कहाकहति तू माई मनकेसँग मैंबहुत लरीरी । राखौं अटकि उतहिको धावै उनके वैसिय परनि परीरी । मोसों बैर करै रति उनसों मोको छांड़ो हार खरीरी । अजहूँ मान करै मनपाऊं यहकहि इतउत चितैडरीरी । सुनहुसूर पांचनि मतएके मोहमें मैंहींरहीपरीरी ७२ मनहूं जिनिसुनै बातयह माई । कोरेलगयो होयगो कतहूंकहिदैहैं इहांजाई । ऐसेडरतिरहतिहैांवाकोचुगुलीजाय करैगो । उनसोंकहिफिरि ह्यांआवैगोमोसेंआनिलरैगो । पंचसंगलीन्हे वह डोलत कोऊमोहिंन मानै । सूरश्यामको उनहिं सिखायो वे इत को कहजानै ७३ ॥ रागईमन ॥ मेरोमन कहिबेकोहैं । जबहींते हरिदर्शन कीन्हेउनैननि भेदकियो पहलैं । इन्द्रिन सहित चित्तहूलैगाये रही अ-

केलीमेंहीं। येतेपर तुमसमानकरावति तौ मनदेहुँ न तुमहीं। मोको दूषरा देतिकहाहो तुमतो सबै अयानि। सूरश्याम को बेगि मिलावहु हारि आपनी मानि ७४ ॥ राग रामकली शारँगशारँग धरहि मिलावहु। शारँगबिनयकरत शारँगसों शारँगदुख बिसरावहु। शारँगसमयदहत अतिशारँग शारँगतिनहिँ दिखावहु। शारँगपतिशारँगधर जैहै शारँग जाइमनावहु। शारँगचरण सुभगकरशारँग शारँगनाम बुलावहु। सूरदास शारँग उपकारिणि शारँग मरत जियावहु ७५ ॥ राग बिहागरो ॥ मोतेयह अपराध परेउ। आये श्याम हारभये ठाढ़े मैं अपने जियगर्व धरेउ। जानिबूझि मैं यहकृत कीन्हीं सो मेरेही शीशपरेउ। मन अपने ढंगहि में मोसो बारम्बार लरेउ। मैं अति विमुख रहे ये सन्मुख नीके उनहिँ ढरेउ। सूरदास मन आप स्वारथी अपनो काजकरेउ ७६ राग सोरठ ॥ मनज्यों कहेउ करैरी माई। तेरो कही बात सबहोती मिलोगि उनको धाई। निलजभई तनु सुधि बिसराई गुरुजन करत लराई। इत कुलकानि उतहि हरिको रसमनतो अति अपडाई। आप स्वारथी सबै देखियत हैं मोको दुखदाई। सूरदास प्रभु चित अपनो करि तनकोहि गये रिसाई ७७ ॥ राग देसाख॥ मैं अबहोंकरौं मनपैमन न रहै। कोटियतन करिकरि पचिहारी मोहिँ बिसरिगये को उनसों जुकहै। मोकोनिदरि मिल्योहै हरिको येतेउरतनमदनदहै। सूरश्याम सँगनेक न त्यागत अतिजग बरु अपमान सहै ७८ मनहिँ कहौ करि मानुप्रेम तुम कहेउ करै। बारबार हरिसों गुहिरावत मोहिँ संगावत पुनिपुनि आनिलरै। घटहू में इन्द्रीबश वाकेलै निकस्यो मोहिँकोउ न डरै। सुनसजनी मैं रहीअकेली बिरहु दहेली इत गुरुजन झहरै। अब बिनु मिले बनतनहिँ आलीनिशिदिन पलपल रहेउ न परै। सूरश्याम बहुरवानि रवनज्यों भलहीरहैवै चितयह नहींधरै ७९ ॥ राग बिलावल ॥ भूलनहिँ अबमानु करौंरी। जातेहोय अकाज आपनो काहेहठया सरौंरी। ऐसे तनमें गर्व न राखौं चिन्तामणि बिसरौंरी। ऐसी बात कहै अबकोऊ ताके संगलरौंरी। आरजपन्थ चलेकह सरिहै श्यामहिँसंग फिरौंरी। सूरश्यामजोआपस्वारथी दर्शननयन भरौंरी८० ॥ रागआसावरी ॥ चूकपरीमोते मैंजानो मिले श्यामबकसाऊंरी। हाहाकरि दश-

नन तृणधरिधरि लोचन जलनि ढराऊंरी। चरणगहौं गाढ़ेकरि कर
सों पुनिपुनि शीशछुवाऊंरी। मुखचितऊं फिरिवरणि निहारौं ऐसे
रुचि उपजाऊंरी। मिलौंधाय अकुलाय भुजनभरि उरकौतपनिजना-
ऊंरी। सूरश्याम अपराध क्षमहुअब यह कहिकहि जुसुनाऊंरी ८१॥
राग गौरी॥ माईमेरोमन पियसों यौंलग्यो ज्यौं दरिलागीछाहिँ। मेरो
मन पियकेजीमें बसतु है पीको जिय मोमें नाहिँ। ज्योंचकोर चन्दा
को निरखै इतउत दृष्टि न जाहि। सूरश्याम बिनु क्षणक्षण युग सम
क्योंकरि रैनि बिहाहि ८२॥ राग जैतश्री॥ उनको यह अपराध नहीं।
वै आवत हैं मोकेमेरे मैंहीं गर्बकियो तनहीं। करेगर्बते सरेउ कछूनहिँ
एकभई तनुदशा नहीं। सुख मिटिगयोहिये दुखपूरण अबरैहों इनहीं
बिनहीं। अबजो दरशदेहिँ कैसेहू फिरतरहौं सँगहो सँगहीं। सूरदास
प्रभुको हियरेते अन्तर करौं नहीं क्षणहीं ८३॥ राग बिलावल॥ अबके
जोपाऊं तौहिरदय माँझ दुराऊं। हरिको दर्शनपाऊं आभूषण अंग
बनाऊं। ऐसाको आनि मिलावै ताहिनिहाल कराऊं। जो पाऊं तौ
मंगलगाऊं मोतियनचौक पुराऊं। रसकरि नाचौंगाउँ बजाऊं चन्दन
भवन लिपाऊं। मणि माणिक न्योछावरि करिहौं सोदिन सुदिन
कहाऊं। केतकि करणा बेलि चमेली फूलनिसेज बिछाऊं। तापर
पिय पौढ़ाऊं मैं अँचला बायु डोलाऊं। चन्दन अगर अपूर अरगजा
प्रभुके खौरिबनाऊं। जोबिधना कबहूं यहकरै तौ कामको काम पु-
राऊं। सूरश्याम बिनुदेखे सजनी कैसे मन अपनाऊं ८४॥ रागसंकीरण॥
अरीमोहिँ पिउभावैको ऐसी जोआनि मिलावै। चौदहबिद्या प्रवीण
अतिही सुन्दर नवीन बहुनायक कौन मनावै। नेकदृष्टि भरि चितवै
मोबिरहिनि कोमाई कामदन्द बिरह तपनि तनते बुझावै। सूरदास
प्रभुमोको करहिँ कृपाअब नितप्रति बिरह जलावैं ८५॥ रागबिलावल॥
धीरजकरुरी नागरी अब श्यामहिँ लाऊं। अतिव्याकुल जनिहोहिरी
सुखअबहिं कराऊं। देखिदशा सहिनहिंसकी मनहीं अकुलानी। मैं
राधाकी प्रियसखी यहकहि पछितानी। झूरिझूरि पियरीभईयहतौ
सुकुमारी। ऐसीचूकपरीकहा कैहौं गिरिधारी। प्यारीकोमुखधोयकै
पटु पोंछिसँवारेउ। तरकबातबहुतैकही कछुसुधि नसँभारेउ। सावधान

करिकैगई ल्याऊंगी घरको। सूरतहाँआतुरगई पायेहरिबरको८६॥
रागटोड़ी॥ ललितामुख चितवतमुसकाने। आपुहँसी पियमुखअवलोकत दुहुन मनहिंमन जाने। अतिआतुरधाई कहँआई काहेबदनभ्रुराये। बूझतहै पुनि पुनि नँदनन्दन चितवत नयन चुराये। तबबोली वह चतुर नागरी अचरजकथा सुनाऊँ। सूरश्यामजोचलहु तुरतही नयननिजाय दिखाऊं ८७ अद्भुत एक अनूपमबाग। युगुलकमलपर गजवरक्रीड़त तापर सिंहकरतअनुराग। हरिपरसरवर गिरिवर गिरिपर फूले कंजपराग। रुचिरकपोत बसत ताऊपर ताऊपर अमृत फललाग। फलपर पुहुपपुहुपपर पल्लव तापर शुकपिकमृगमदकाग। खञ्जनधनुषचन्द्रमा राजतताऊपर यकमणिधर नाग। अङ्गअङ्ग प्रति औरऔर छबि उपमा ताकोकरत न त्याग। सूरदासप्रभु पिवहु सुधारस मानो अधरनिके बड़ भाग८८बिराजत एकअङ्ग इतिबात। अपनेकरकरि धरेबिधाता षट खम्भ नव जलजात। द्वैपतङ्ग शशिबीस एकफणि चारि बिबिधि रँग धात। द्वैपक्ष बिम्बवती सबजकरा एकजलज परघात। यक शायक यकचाप चपलअति चिबुकमें चित्तबिकात। द्वैमृणाल मालूर उभय द्वै कदलिखम्भ बिनपात। यककेहरि यकहंस गुप्तरहै तिनहिंलख्यो यहगात। सूरदासप्रभु तुम्हरे मिलनको अति आतुर अकुलात ८९॥
रागसारंग॥ बरणौं श्रीवृषभानकुमारी। चितदैसुनहुँ श्याम सादर छबि रतिनाहीं अनुहारी। प्रथमहिँ सुभग श्यामबेणीकी शोभा कहौं बिचारि। मानो फणिक रहेउ पीवनको शशिमुख सुधानिहारि। कहिये कहा शीशसेंदुरको कितोरही पचिहारि। मानो अरुण किरणदिनकरकी पसरी तिमिर बिदारि। भृकुटी बिकट निकट नयननके राजत अति बरुनारि। मनहुँ मदन जगजीति जेरकरि राख्यो धनुष उतारि। ताबिचबनी आड़केशरिकी दीन्ही सखिन सँवारि। मानो बँधी इन्दु मण्डलमें रूपसुधाकी पारि। चपलनयन नासाबिच शोभा अधर सुरंग सुढार। मनोमध्य खंजन शुकबैठो लुब्ध्यो बिनहिं बिचार। तरिवन सुधर अधर नकबेशरि चिबुकचारु रुचिकारि। कंठसरी दुलरी तिलरीपर नहिंउपमा कहुँचारि। सुरँगगुलाल मालकुच मण्डल निरखत तनु मनुवारि। मानों दिशिदिशि निधुम अग्निके तप बैठे त्रिपुरारि।

जोमेरो कृत मानहुमोहन करिल्याऊँ मनुहारि। सूर रसिक तबहीं पै बदिहैं मुरली सकौ सम्हारि ९० ॥ रागधनाश्री ॥ प्रियामुख देखोश्याम निहारि। कहि न जाय आननकी शोभा रहीबिचारि बिचारि। नीलाम्बर घीरोदिक घूंघुट सन्मुख कियो सुधारि। मनो सुधाकर दुग्ध सिंधुते कढ्यो कलंक पखारि। भाललाल सेंदुर बिन्दीपर मृगमदकी छबि न्यारि। मनो बँधूक कुसुम ऊपरअलि बैठो पंखपसारि। चंचल नयन चहूँ दिशि चितवत जनु खंजन अनुहारि। मनहु परस्पर करत लराई कीर बचायेरारि। बेशरिके मुक्तामेंझांई बर्णबिराजति चारि। मानो सुर गुरु शुक्र भौम शनि चमकत चन्दसझारि। तरिवन श्रवण रत्नमणि भूषित शिर शीसन्त सँवारि। जनु युगभानु दुहूंदिशि उगये भयेदिवा तमहारि। सन्मुखदृष्टिपरे मनमोहन लज्जितभइ सुकुमारि। लीन्हीं उमगि उठाय अंकभरि सूरदास बलिहारि ९१॥ राग नट ॥ भुज भरिलई हिरदयलाय। बिरहव्याकुल देखिबाला नयनदोउ भरिआय। रैनिबासर बीचही में दोउगये मुरझाय। मनोवृक्ष तमालबेली कनक सुधा सिँचाय। हर्षडहडह मुसकिफूले प्रेमफलनि लगाय। कामगुरुझनि बेलितरुकी तुरतही बिसराय। देखिललिता मिलनि वह आनन्द नहीं समाय। सूरकेप्रभु श्याम श्यामा बिबिधि तापनशाय ९२ राग रामकली ॥ ललिताप्रेम बिबश भइभारी। वहचितवनि वह मिलनि परस्पर अतिशोभा बरनारी। यकटक अङ्ग अङ्ग अवलोकति उतबश भई बिहारी। वह आतुर छबि लेति देतिवे यकते यक अधिकारी। ललितासंग सखिन सों भाषत देखोछबि पियप्यारी। सुनहु सूरज्यों होम अग्निघृत ताहूते यहन्यारी ९३ ॥ राग धनाश्री ॥ देखिसखी राधा अकुलानी। तैसे अङ्गअङ्ग छबिलूटति मिलेहु श्यामको नहीं पत्यानी। जैसे तृषावन्त जलअँचवत वह तोपुनि ठहरात। यहआतुर छबिले उर धारति नेकनहीं तृप्तात। ज्यों चकोर यकटक निशि चितवत याकी सरिसे नाहिँ। ज्यों घृत होम बन्हि की महिमासूर प्रकट यामाहिँ ९४ ॥ राग केदारो ॥ अद्यापि राधिकाहरिसंग। हावभाव कटाक्ष लोचन करति नानारङ्ग। हृदय व्याकुल धीरनाहीं बदन कमल बिलास। तृषामें जलनाम सुनिज्यों अधिक अधिकहि प्यास। श्यामरूप अपार

इतउत लोमपुट बिस्तार। सूरमिति नहिँ लहत कोऊदुहुन बल अधि-
कार ९५ राधेहि मिलेहु प्रतीति न आवति। यदपि नाथ बिधुबदन
बिलोकति दर्शनको सुखपावति। भरिभरि लोचनरूप परमनिधि उर
में आनि दुरावति। बिरह बिकल मतिदृष्टि दुहूँदिशि सचि सरधा
ज्यों धावति। चितवति चकृत रहतिचित अंतर नैननिमेष न लावति।
सपनो आहि कि सत्य ईश यहबुद्धि वितर्क बनावति। कबहूं करति
बिचार कौनहौं को हरिकेहि भावति। सूरप्रेमकी बात अटपटी मन
तरङ्ग उपजावति ९६॥ राग रामकली॥ देखेहु अनदेखेसे लागत। यद्यपि
हूं रतिरङ्गभरेहैं यकटकरहे निमिषनहिँत्यागत। इतरुचि दृष्टि मनोज
महासुख उतशोभाशरा अमित अनागत। बाढेउबैरु करशा अर्जुनज्यों
दोमें एक भूलिनहिँ भागत। उत सन्मुख सो सावधानसजि इत सनाह
अङ्गअङ्ग अनुरागत। ऐसे सूरसुभट येलोचन अधिकाधिक्य श्यामसुख
मांगत ९७॥ राग कान्हरो॥ देखियत दोउ अहँकार परे। उत हरिरूप
नयन याकेइत मानहुँ सुभट अरे। रुचिर सुदृष्टि मनोज महासुख इन
इत एककरे। उनउत भयशाभेद व्यूहरचि अङ्गअङ्ग धनुष धरे। येअति
रतिरशा रोष न मानत निमिष निषंगहरे। बाहु बिथहिँ न बदत पुल
कारुह सबअङ्ग सुरसचरे। वैसो ये अनुराग सूरसजि छिनुछिनु बढ़त
खरे ९८॥ राग बिहागरो॥ नख शिखते अँग अंगरूप छबिदेखि नयन न
अघाने। निशि अरुदिन यकटकहीराखे पलकलगाय न जाने। छबि
तरङ्ग अगणित सरिता ये जलनिधि लोचनतृप्त न माने। सूरदास प्रभु
की शोभाको अतिहीलालचि रहललचाने ९९॥ राग बिभाष॥ ललिता
संग सखियनको लीन्हे। दम्पति सुखदेखत अतिभावत यकटक लो-
चन दीन्हे। प्यारीश्याम अङ्गकी शोभानिदरे देख्योचाहति। उतना-
गर नागरि नयननि को निदरिरूप अवगाहति। उत उदार शोभाकी
सीवा इतलोभहि नहिँपार। सूरश्याम अङ्ग अङ्गकी शोभा निरखति
बारम्बार१००॥ राग गौड़ मलार॥ निदरि अङ्गछबि लेतिराधा। यहक-
हत कितिक शोभा करेंगे श्याम मेटिहौं आजु मनसबै साधा। उतहि
हरिरूपकी राशिनहिँ पारकहुँ दुहुन मन परस्पर होड़कीन्ही। ये इ-
तहि लुब्ध वे उतही उदाररचि दुहुन बल अंतनहिँ परतचीन्ही। जुरे

रणवीर ज्यों एकते एकसरस सुरत कोउ नहीं दोउरूप भारी। सूर स्वामी स्वामिनी राधिकासरस निरखकोउ नहीं लखिलई नारी १०१
रागमारू ॥ रूपेरति संग्रामखेत नीके। एक एक रणवीरयोधा प्रबल सुरत नहिंनेक अति सबलजीके। भौंहको बड धार नयन धानुकी काम छटति मानो कटाक्षनि निहारे। हँसनि द्विज चमककरि बरनिलोहेन झलक नखनि छत घातनेजा सम्हारे। पीतपट डारि कंज की मोचि करनिसों कवच सन्नाहये टूटतनते। भुजाभुज धरत मानो द्विरद शुंडन लरत उरउरनिभिरे दोउजुरे मनते। लटकि लपटानि मानो सुभट लरि परे खेतरतिसेज रुचितामकीन्हे। सूरप्रभु रसिकप्रिया राधिका रसिकिनी कोकगुण सहित सुखलूटि लीन्हे १०२ ॥ रागनट॥ रसनायुगल रसनिधि बोलि। कनक बेलि तमाल अरुझी सुभुज बन्ध अखोलि। भृङ्गयूथ सुधाकिरनि मनो घनमें आवतजात। सुरसरीपर तरणितनया उमगितट न समात। कोकनदपर तरणितांडव मीनखञ्जनसङ्ग। करति लज्जा शिखर युगमिलि युगम संगम संग। जलदते तारा गिरत मनो परत पयनिधि माहिँ। युगभुजङ्ग प्रसन्न मुखह्वै कनक घट लपटाहिँ। कनक संपुट कोकिलारव बिवश ह्वै देदान। बिकच कंच अनारमिथ सर लसिकरत पयपान। दामिनी थिर घनघटाचर कबहुँह्वै यहिभांति। कबहुँ दिन उद्योत कबहूँ होत अति कहुँ राति। सिंह मध्य सनादमुनि गण सरस सरकेतीर। कमलमनो बिननाल उलटे कछुक तोक्षणनीर। अंशुशाखा शिखर चढि चढि करत नानानाद। मकर निज पद निकर बिहरत मीनपति अह्लाद। प्रेम हितकरि मिली सधार भईमानस एक। श्यामसर्नाके अङ्गचन्दन अमीके अभिषेक। सूरदास सखीशोभा मिलि करत बुद्धिबिचार। समोशोभा लगिरही मनो सुमनको संसार १०३ ॥ राग रामकली ॥ शोभा सुभग आननवोर। शसतेतनु असिततिरछे चितैदेत अकोर। निरखिसम करिकियो चाहत बदन बिधुकी जोर। तुलाबिच लोकेश तोले गरुअ आनन गोर। दरश पतिरुचि मुदितमन सिज चपत हृगहि चकोर। कोशक्रीडत मीनमानो नीरनीरज भोर। श्यामसुन्दर नयन युगवर झलक कज्जलबोर। सुधा शशिसंकेतमानो कूपदानवचोर। श्रवण मणिताटंक मंजुल कुटिल कुन्तलछोर। समर

संकट काम व्याकुल अलक फंदनिडोर। चिकुर अभिनव मोतिमंजुल तरललटि लटकातोर। जनु बिध्वंसित व्याल बालक असीकी भकझोर। स्वेद सीकर गराड मरिडत रूप अम्बुजघोर। उरसि ईषद योंश्रवत पीयूष कुम्भझकोर। हँसत दशनन चमकतनु पिय लसत कठिनकठोर। मुदित मधुकर बिन्दुगरा मकरन्द मध्य न थोर। निरखि शोभा समर लज्जित इन्दुभयो अमभोर। सूरधन्य सुनवकिशोरी धन्य नन्दकिशोर १०४॥ रागबिलावल ॥ धन्यकान्ह धनि राधागोरी। धनि वहभाग सोहाग धन्ययह धन्यनवलनवला नवजोरी। धनि यहमिलनि धन्ययह बैठनि धनिअनुराग नहीं रुचिथोरी। धनि यह अरस परसछबि लटकनि महाचतुर मुख भोरे भोरी। प्यारी अङ्ग अङ्ग अवलोकति पिय अवलोकत लगत ठगोरी। सूरदासप्रभु रीझि थकित भये नागरि पर डारत लटकातोरी १०५॥ रागधनाश्री ॥ नागरि छबिपर रीझेश्याम। कबहुंक वारतहैं पीताम्बर कबहुँक वारत मुक्तादाम। कबहुँक वारतिहैं करमुरली कबहुँक वारत मोहननाम। निरखि रूपमुख अन्तलहतनहिं तन मन वारत पूरणकाम। बारम्बार सिहात सूरप्रभु देखिदेखि राधा सोभाम। इनको पलक ओट नहिँ करिहैं मन यह कहत दिवस अरु याम १०६॥ रागसूहो बिलावल ॥ श्यामनिरखि प्यारी अँगअङ्ग। सकुचि रहत मुखतन नहिँ चितवत जेहिबश रहत अनन्त अनङ्ग। चपलनयन दीरघ अनियारे हावभाव नानागतिभङ्ग। वारोंमीन कोटिअम्बुजगरा खंजन वारत कोटिकुरङ्ग। लोचन नहिं ठहरात श्याम के कबहूँ अङ्ग नयन मुखरङ्ग। सूरदासप्रभु योंप्यारी ज्यों बशडोर फिरत सँगचङ्ग। १०७॥ रागटोड़ी ॥ श्याम भये राधा बश ऐसे। चातक स्वाति चकोर रहतज्यों चक्रवाक रविजैसे। नादकुरङ्ग मीन जलकीगति ज्यों तनुके बशछाया। यकटक नयन अङ्गछबि मोहे थकितभये पतिजाया। उठे उठत बैठे बैठत दोउचले चलत सुधिनाहीं। सूरदास बड़िभागिनिराधा समुझि मनहिँ मुसुकाहीं १०८॥ राग आसावरी ॥ निरखि श्याम प्यारी अँग शोभा मन अभिलाष बढ़ावतिहैं। प्रिया अभूषण मांगत पुनि पुनि अपने अङ्ग बनावतिहैं। कुराडलतट तरिवन लैसाजतनासा बेशरि धारतहैं। बेंदीभाल मांगशिर पारत बेनी गूंथि सँवारतहैं। प्यारी नय-

नन को अंजनलै अपने लोचन अंजतहैं। पीतांबर वोढ़नीशीशदै राधा को मन रंजतहैं। कंचुकि भुजनि भरत उरधारत कंठहमेल भ्रजावतहैं। सूरश्याम लालच त्रियतनुपर करिशृंगार सुख पावतहैं १०९॥ रागनट॥ श्यामा श्याम छविकी साध। मुकुट कुण्डल पीतपट छवि देखि रूप अगाध। प्रिया हाहा करत पुनि पुनि देहु प्रीतम मोहिँ। अङ्ग अङ्ग सँवारि भूषण रहति वह छवि जोहिँ। काछि कछनी पीत पट कटि किंकिणी अतिशोभ। हृदय वनमाला बनावति देखि छवि मनलोभ। श्रवण कुण्डल धारिशोभा शीश रचिशीखण्ड। सूरश्याम सुहागिनी रुचि कनक करलै दण्ड ११० तिहारी लाल मुरली नेकबजाऊँ। जैसी तान तुम्हारे मुखकी तैसिय मधुर सुनाऊँ। जैसे फिरति रंध्रमग अँगुरी तैसे मैहूं फिराऊँ। जैसेहि आपु अधरधरि फूंकत मैं अधरनि परशाऊँ। हाहा करति पायँ हौं लागति बांस बँसुरिया पाऊँ। सारँग नटपूर्वी मिलैके राग अनूप उपाऊँ। अपने भूषण मोको दीजै अपने तुमहिं बनाऊँ। तुमबैठो दृढ मानशाजिकै मैं गहिचरण मनाऊँ। यह अभिलाष बहुत मेरेजिय नयननि यहै देखाऊँ। सूरश्याम गिरिधरन छबीले भुजधरि कंठ लगाऊँ १११॥ रागगुर्जरी॥ मुरलीलई करते छीनि। ता समय छविकही जातिन चतुरि नारि नवीनि। कहति पुनि पुनि श्याम आगे मोहिंदेहु सिखाय। मुरलिपर मुखजोरि दोऊ अरुण परश बजाय। कृष्ण पूरति नाद उछरत प्यारि रिस करिगात। बार बारहि अधर धरि धुनिबजत नहिं अकुलात। प्रिया भूषण श्याम पहिरत श्यामभूषण नारि। सूरप्रभु करि मानबैठे त्रियकरत मनुहारि११२॥ राग बिलावल॥ कहति नागरि श्यामसों तजो मानु हठीली। हमते चूक कहापरी त्रियगर्ब गहीली। हँसतहिमें तुम रिसकियो कहप्रकृति तुम्हारी। बारबार करधरतिहै कहिकहि सुकुमारी। वृथा मानु नहिं कीजिये शिर चरणन धारति। आनन आनन जोरिकै पिय मुखहि निहारति। निठुरभई हो लाडिली कबके हमठाढ़े। तुम हमपर रिस करतिहो हमहैं तुवचाढ़े। श्यामकियो हठजानिकै यकचरितबनाऊं। सुनहु सूर प्यारी हृदय रस बिरह उपाऊं ११३॥ राग बिलावल॥ लाल निठुरह्वै बैठिरहे। प्यारी हाहाकरति न मानत पुनिपुनि चरण गहे।

नहिं बोलत नहिं चितवत मुख तनधरणी नखनि करोवति। आपु हँ-
सति पुनिपुनि उर लागति चकृत होति मुख जोवति। कहा करत ये
बोलतनाहीं पिययह खेल मिटावहु। सूरश्याम मुखचन्द कोटि छवि
हँसिके मोहिँ दिखावहु ११४॥ रागधनाश्री ॥ नागरि हँसति हृदय डर
भारी। कबहुँ अङ्कभरि लेति उरजबिच कबहुँ करति मनुहारी। मानु
करत नीकेनहिं लागै दूरकरौ यह ख्याल। नेक नहीं चितवत राधा
तन निठुरभये नँदलाल। शीशधरति चरणनलै पुनिपुनि त्रियको रूप
निहारत। सूरदासप्रभु मानुधरेउ दृढ धरणी नखनि बिदारत ११५॥
रागगोंड़मलार ॥ निरखि त्रिय रूपपिय चकृत भारी। किधौं वे पुरुष मैं
नारिकी वे नारि मैंहींहां पुरुषतनु धरिबिसारी। आपतन चितै शिर
मुकुट कुण्डल श्रवण अधर मुरलीमाल बनबिराजै। उतहि पिय रूप
शिर मांग बेनी सुभग भाल बेंदी महा बिन्द छाजै। नागरी हठ तजौ
कृपाकरि मोहिं भजौ परी कहचूकसो कहौ प्यारी। सूर प्रभु नागरी
रसबिरह मगनभइ देखिछबि हँसत गिरिराज धारी ११६॥ रागधनाश्री॥
निरखत पियप्यारी अङ्ग अङ्ग बिरहशोभा। कबहूं पिय चरणधरति
कबहूं भुज अङ्क भरति कबहूं जिय डरति बचन सुनिबेको लोभा। क-
बहुँ कहति पियासों पिय कबहुं कहत प्यारीहो हाहाकरि पायँपरत
बिकलभई बाला। कबहुँ उठति कबहुँ बैठि पाछे ह्वैरहति कबहुँ आगे
ह्वै बदनहेरि परीबिरह ज्वाला। काहे तुम कियोमान बोलेबिनजात
प्राण दम्पतिहैं सँग दशा ऐसी उपजाई। रीझेपिय सूरश्याम अंकम
भरि भईबाम बिरहदन्द मेटिहरष हिरदय उपजाई ११७ प्रिया पिय
लीन्ही अंकम लाय। खेलतमें तुम बिरह बढ़ायो गईकहा बितताय।
तुमहीं कहेउ मानु करिबेको आपुहि बुद्धि उपाय। काहे बिबश भई
बिनकारण ऐसीगई डराय। सुनिप्यारी यहभाव बतायो अन्तरगये
जनाय। बारबार आसिंगहा दीन्हो अबहिंरहीसुरझाय। सींचोकन-
कलता सूरजप्रभु अमृत बचन सुनाय। अति सुखदै दुखयों बिसरायो
राधारमणकन्हाय ११८॥ रागगोंड़मलार ॥ श्यामतन प्रियाभूषण बिराजै।
कनकमणि मुकुटकुण्डल श्रवणबनमाल अधर मुरलीधरे नारिछाजै।
निरखि छबि परस्पर रीझेदोउ नारिबर गयोतजि बिरहडर प्रेमपागे।

सूरप्रभु नागरी हंसति मनमन रसति बसतिमन श्यामके बड़ीभागे११९ रागनट॥ नागरि भूषण श्याम बनावत। श्रीनागर नागरि अँग शोभा कियो निरखि मनभावत। श्यामाकनक लकुटकर लीन्हे पीताम्बर उरधारें। उत गिरिधर नीलाम्बरसारी घूंघुट ओट निहारें। वचनपरस्पर कोकिलबाणी श्यामनारिपतिराधा। सूरस्वरूप नारिपतिकाछे पतिनारी तनुसाधा१२० नीकेश्याम मानुतुमधार्यो। तुमबैठे हृदमानु दानि मैं मेट्योमानु तुम्हार्यो। यह मनसाध बहुतहीमेरे तुमबिनु कौन निदारें। नागरिपिय तन अपनीशोभा बारहिबार निहारें। बेनीमांग भाल बेंदीछबि नैननिअंजनरङ्ग। सूरनिरखि पिय घूंघटकीछबि पुलकन मावति अङ्ग १२१॥ रागधनाश्री॥ कुञ्जबन गवन दम्पति बिचारें। नारिको वेषकरि नारिके मनहिंहरि मुकुरले भावती छबि निहारें। भामिनीअंग वहनिरखि नटवरवेष हँसतहीहँसत सबमेटिडारे। सहज अपनो रूपधरी मनभावती और भूषण तुरत अंगधारे। प्रियाकोरूप धरि सङ्ग राधा कुँवरि जात ब्रजखोर नहिं लखत कोऊ। सूरस्वामी स्वामिनी बने एकसे कौन घटतर अरश परश दोऊ १२२॥ राग गौरी॥ नँदनन्दन प्रियछबि तनुकाछे। मानो गोरि सांवरीनारी दोउजात सहजमें आछे। श्यामअङ्ग कुसुमीनइसारी फल गुञ्जा की भांति। इत नागरि नीलाम्बर पहिरे जनुदामिनि घनकांति। आतुरचलेजात बन धामहिं अतिमनहर्षबढ़ाये। सूरश्याम वा छबिको नागरि निरखति नैन चुराये १२३॥ राग कान्हरो॥ मनहींमन रीझति है राधा बारवार पियरूप निहारै। निरखति भालबिन्द सेंदुरको वा छबिपर तनु मनु धनु वारे। यहमनकहति सखी जनदेखें बूझेसे कहकैहैं। तिहूं भुवन शोभा सुखकीनिधि कैसे उनहिं दुरैहैं। पग जे हरि बिछियनि की झमकनि चलत परस्पर बाजत। सूरश्याम श्यामा सुख जोरी मरिग कञ्चनछबिलाजत१२४॥ राग कल्याण॥ श्यामाश्याम कुञ्जबनआवत। भुजभुज कंठ परस्पर दीन्हे यहछबि उनहीं भावत। इतते चन्द्रावली जातिब्रज उतते ये दोउआये। दूरिहिते चितवति उनहीं तन यकटक नयन लगाये। यकराधिका दूसरीकोहै याको नहिंपहिंचानो। ब्रज वृषभान पुरायुवतिनको एकएककरि मैं जानो। यहआई कहँ और

गांवते छवि सांवरी सलोनी। सूर आजु यह नईबतानी एकअङ्ग नव लोनी १२५॥ राग सोरठ ॥ राधासकुचि श्यामसुख हेरति। चन्द्रावली देखिकै आवत ब्रजहीको पियफेरति। जाहुजाहु मुखतेकहि भाषति करते कर नहिं छूटति। उतहि सखी आवत सकुचानी इतहि श्याम सुखलूटति। दुख सुख हर्ष कछू नहिं जानति श्याम महारस माती। सूरउतहि चन्द्रावलि यकटक उनहींके रँगराती १२६॥ रागगौरी ॥ यह वृषभानसुता वहकोहै। याकी सरि युवती कोउनाहीं यह त्रिभुवन मन मोहै। अतिआतुर देखनको आवति निकटजाय पहिँचानी। ब्रज में रहति किधौं कहुँ औरै बूझेते तब जानी। यह मोहनी कहां ते आई परमसलोनी नारी। सूरश्याम देखत मुसकानी करीचतुरई भारी १२७ इनते निधरक और न कोई। कैसी बुद्धि रची है नाखी देखी सुनी न होई। यहराधासे हाथबिधाता बुद्धिचतुरई बानी। कैसेश्याम चुराय चलीलै अपने भुषराठानी। और कहा इनको पहिंचाने मोपैलखे न जात। सूरश्याम चन्द्रावलिजाने मनहीं मन मुसकात १२८॥ रागकान्हरो॥ सकुच छांडि अब इनहिँ जनाऊं। येतौ चले आयने काजहि मैं काहेन समुझाऊं। मनहीं मन ये जीति जाहिंगे जानि बूझि निदराऊं। यह चतुरई काछिकै आये सो अब प्रकट देखाऊं। बड़े गुणाश्नकहावत दोऊ इनको लाजत जाऊं। सूरश्याम राधा की करणी महिमा प्रकट सुनाऊं १२९॥ राग गौड़सारंग॥ कहिराधा ये कोहैरी। अति सुन्दरि सांवरीसलोनी त्रिभुवनजन मनमोहैरी। और नारि इनकी सरि नाहीं कहो न हम तन जोहैरी। काकी सुता बधू है काकी काकी युवतीधौं हैरी। जैसी तुम तैसीहैं येऊ भलीबनी तुम सोहैरी। सुनहु सूर अति चतुर राधिका ये चतुर नीकि गोहैरी १३० ॥ राग ईमन॥ मथुराते ये आईहै। कछु सम्बन्ध हमारो इनसों ताते इनहिं बोलाईहै। ललिता सङ्ग गई दधिबेचन उनहीं इन्हें चिन्हाई है। उहै सनेह जानि री सजनी भवन आजुहम पाईहै। तबहींकी पहिँचानि हमारी ऐसी सहज सुभाईहै। सूरमोहि देखि यहांआवत आपुसंग उठिधाईहै १३१ रागसोरठ ॥ इनको ब्रजही क्योंन बुलावहु। कीवृषभान पुराकी गोकुल निकटहि आनि बसावहु। वोऊ नवलनवला तुमहूँहौ मोहनको दोउ

भावहु। मोको देखिकियो अतिघूंघट काहे न लाज छुड़ावहु। यहअ-चरज देखो नहिं कबहूं युवतिहि युवति दुरावहु। सूर सखी राधा सों पुनि पुनि कहति जु हमैं मिलावहु १३२॥ हमीर॥ सांवरे तनु कुसुमि सारि सोहतिहै नीकीरी। मानो रतिपति सँवारि बनीरवनि जीकीरी। राधाते अतिहि सरस श्यामदेखि पावैरी। ऐसी यह नारि औरनारि मन चुरावैरी। घूंघट पटबदन ढांकिकाहे इन राख्योरी। चितवहु मो तन कुमारि चन्द्रावलि भाष्योरी। आपुहि पटदूरिकियो तरुणि बदन देख्योरी। मनहींमन सुफल जानि जीवनजग लेख्योरी। नयन नयन जोरतमहि भावसों लजानेरी। सूरश्याम नागरि मुखचितवत मुसुकानेरी १३३॥ राग बिहागरो॥ मथुरामें बसबास तुम्हारो। राधाते उपकार भयो यह दुर्लभ दरशन भयो तुम्हारो। बारबार करगहि गहि निर-खति घूंघट ओटकरो किनिन्यारो। कबहुँककर परशति कपोलछुइ चुटकिलेति ह्यां हमहिं निहारो। कछु मैंहूं पहिंचानति तुमको तुमहिं मिलाऊँ नन्ददुलारो। काहेको तुम सकुचतिहो जूकहो कहाहै नाउँ तुम्हारो। ऐसीसखी मिली तोहिँ राधा तौ हमको काहे न बिसारो। सूरदास दम्पति मनजान्यो यासों कैसेहोत उबारो १३४॥ रागरामकली॥ राधासखि मिलिमन भाई। जबते इनसों नेहलगायो बहुतभई चतुराई। औरभई इनते तुमको सखि गृहजनसों निठुराई। काहूको मनमें नहिँ आनति हमहुँ सबनि बिसराई। तुमहो कुशल कुशलहैं येऊआप स्वा-रथी माई। सूरपरस्पर दम्पति आतुर चतुरसखी लखिपाई १३५ यह सखि अबलों कहादुराई। येते घोष हमकबहुँ न देखे अबजु कहां ते आई। त्रिभुवनकी शोभा सबगुण बिधि है बिधि एक उपाई। विद्य-मान वृषभान नन्दनी सहचरि सबसुखदाई। अपनेमन तकितकि तनु तोलति बियजनि सुन्दरताई। दुसहरूपकी राशि राधिका कहौकौन पुरजाई। राचिरहे रससुरत सूरदोउ निरखति नयन निकाई। चीन्हे हो चलिजाहु कुंजगृह छांड़िदेहु चतुराई १३६ ऐसी कुंवरि कहाँतुम पाई। राधाहूते नखशिख सुन्दरि अबलौं कहाँदुराई। काकी नारि कौनकी बेटी कौन गांवते आई। देखीसुनी न ब्रजवृन्दावन सुधि बुधि हरति पराई। धन्य सुहागभाग याको यह युवतिनके मनभाई। सूर-

दासप्रभु हर्षि मिले हँसि लैउन कंठलगाई १३७ ॥ रागगौड़मलार ॥ नँदनन्दन हँसे नागरी मुखचितै हर्षि चन्द्रावलि कराठलाई। बामभुज बनी दक्षिण भुजा सखीपर चले बनधाम सुख कहि न जाई। मनो बिम्ब दामिनी बीच नवघन सुभगदेखि छबि कामरतिसहितलाजै। किधौं कञ्चन लता बीच तमालतरु भामिनीबीच गिरिधरबिराजै। गयेगृह कुञ्जअलिगुञ्ज सुमननि पुंजदेखि आनन्दभरे सूरस्वामी। राधिकारवनयुवतीरवन मन रवन निरखिछबि होतमन काम कामी १३८॥ रागकेदारो ॥कुञ्जसोहावनो भवन। बनिठनि बैठे राधारवन। बरणबरणकुसुम प्रफुलित शशिकी किरणि जगमगात तैसेई बहै त्रिबिध पवन। अलिगण पिक मङ्गल गावति सुनि सुनि२ मनहिँ भावत देखतदम्पति बिबिसयन। सूरदास प्रभु पियप्यारी दोउराजत वारत रतिपति सयन १३९॥ राग बिलावल॥ सँग शोभित वृषभान किशोरी। शारँग नयन बयनबर शारँग शारँग बदनकहै छबिकोरी। शारँग अधर सुधरकर शारँग शारँगजति शारँग मतिभोरी। शारँग बरण पीठिपर शारँग शारँग गतिशारँग कटि थोरी। शारँग पुलिन रजनि रुचि शारँग शारँग अङ्गसुभग भुजजोरी। बिहरत सघनकुंज सखि निरखति सूरश्यामघन दामिनि गोरी १४० कुञ्जभवन राधा मनमोहन। रतिबिलास करिमगन भयेअति निरखति नयन लजोहन। बियतनुको दुखदूरि कियेपिय दैदै अपनी सोहन। बारबार भुजधरि अङ्कमभरि मिलिबैठे दोउ गोहन। पीताम्बर पटुसों मुखपोंछत हर्षि परस्पर जोहन। सूरश्याम श्यामामन रिझवत पीन कुचनि टकटोहन १४१॥ राग बिहागरो॥ बनहिँधाम सुखरैनि सुहाई। तैसिय नवल राधिका नागरि तैसेइ नवल कन्हाई। तैसेइ पुलिन पवित्र यमुनको तैसेइ मन्दसुगन्ध। तैसियकंठ कोकिलाकुहकनि तैसेइ सुखसनबन्ध। रतिबिहार करिपिय अरुप्यारी प्रातचले ब्रजधाम। सूरदास दोऊबहजोरी राजतश्यामा श्याम १४२॥ रागललित॥ नवल निकुञ्ज नवलरस दोऊराजत रङ्ग भीने। कुसुमनि सेजभोर उठि आवत आलसयुत अंशनि भुजदीने। अरुण नयन कुचरेख बिराजति श्रमजल बरुनपलटि तनुलीने। सूरजप्रभु पियप्यारीको मुखनिरखत सखिनसहित ललिताद्दगदीने १४३॥ राग केदारो ॥बरणबरणबादरमनह-

रणा उटेकरणा बनधामते निकसतदोउ येसेलागे । श्यामघटासध्यमानो दामिनीभामिनी राजति लाजति दुरिजातिकबहुँ प्रकट होतिहारीतामें अरुणा भये नयन सबै निशिके जागे । मोरमुकुट पीतबसन इन्द्र धनुष बीचबीच मन्द मन्द गर्राज बोलनि पियरङ्ग अनुरागे । सूरदासप्रभु पिय प्यारीकी छबि गावत पावत कबि उपमाजे तेउबडभागे १४४ ॥ राग अड़ानो ॥ वहजोरी निकसे कुञ्जते प्रात रीझि रीझि कहैजात । कुण्डल झलमलात झलकत बिबिगाल चकाचौंधीसी लगति मेरे इन नयनन आलीरपटत पलनहिँ ठहरात । राधामोहन बनेबन चपलाज्यों चमकि चमकि परीपूतरीन मैं समात । सूरदासप्रभु के वै बचन सुनहु मधुर मधुर अबमोहिँ भूलीरी पाँचओसात १४५ ॥ राग बिलावल ॥ नवल किशोर किशोरी वहाँजोरी आवत हैं रतिरङ्ग अनुरागे । कबहुँचरणा गति डगति लगति छबिनयन बेन अलसात जम्हात येंड़ात गातआनंद निशिसुख जागे । बानक देखत रीझिरहीहों चन्दनबन्दन मालबिना गुणाअञ्जन पीकपलनिलागे । सूरदास प्रभुप्यारी राजत आवतभ्राजत बनेहैं मरगजेबागे१४६॥ राग भैरों ॥सोहत घूँघरवालेवार अरुझिरहे मुक्ताफल निरवारत हैबार । रतिमानी सँगनन्दनंदनके छूटेबन्द कंचुकीटूटे हार । निशिके जागेदोउनयना ढरकिरहे चलति योवन मदभार । सूरश्याम सँगयह सुखदेखत रीझे बारम्बार१४७॥ रागसूहो ॥ नवलश्याम नवलासीश्यामा । दोउराजत वहाँ जोरीचलेजात ब्रजधामा । याछबि कीउपमादेबेको त्रिभुवननहीं उपामा । दामिनि घन पटतर देबेको सकुचत कबिलिये नामा । सुधाशरीर परस्परदोऊ सुखदायक दिनयामा । सूरदास प्रभुनागर नागरि जीते रति पति कामा १४८ ॥ राग ललित ॥ दोउबनते ब्रजधाम गये । रति संग्राम जीतिपिय प्यारी भूषण सजति नये । वे ब्रजगये आपु अपनेगृह चितते कोउ न टारत । मनबाचा कर्मणा एकदोउ एकौपल न बिसारत । जैसे मीननीर नहिँ त्यागत ये खंपिडत हैं खूरणा । सूरश्याम श्यामा दोउदेखौ इतउत कोउ न अधूरणा १४९ ॥ राग धनाश्री ॥ बहुरि फिरिराधा सजति शिङ्गार । मनहुँसुहृय पहिरावति अँगरज जीते सुरतअपार । कटितट सुभटनि देत रसन पट भुज भूषणा उरहार । करकंकण काजर नकबेशरि दीन्हो तिलक

लिलार। बीरा बिहँसि देति अधरनिको सन्मुख सहे प्रहार। सूरदास प्रभुकोजु बिमुखभये बाँधत कायरबार १५० ॥ राग कान्हरो॥ आजु अति राधा नारि बनी। प्रतिप्रति अङ्ग अनङ्ग जीतिरति बश त्रैलोक्यधनी। शोभित केश विचित्र भाँतिद्युति शिख शिखण्ड हरनी। रची माँग सम भाग रागनिधि कामधाम सरनी १५१॥

इतिश्रीकृष्णानन्दव्यासदेवरागसागरोद्भवसूरसागररागकल्द्रुम प्यारीजीकेअनुरागलीलासम्पूर्णम् ॥

अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

मुरलीनाद समय के कीर्त्तन ॥

राग बिहागरो ॥ अँखियनकी सुधि भूलिगई। श्याम अधरमृदु सुनत मुरलिका चकित नारिभई। जोजैसे सो तैसेहि रहिगई सुख दुखक-हेउ न जाई। लिखीचित्रकीसी सबह्वैगई यकटक पलबिसराई। काहू सुधि काहूसुधि नाहीं सहज मुरलिका आन। भवन रवनकी सुधि न रहीतनु सुनतशब्द वहुकान। अँखियनते मुरली अतिप्यारी वहवैरिनि यहसौति। सूरपरस्पर कहत गोपिका जहँउपजी उदभौति १॥ रागसा-रंग॥ अधर मुरली रटनलागी। जारस को यटऋतु तनु गारेउ सो रस पिवत सभागी। कहांरही कहँते यहआई कौनेयाहि बुलाई। चकित कहाभई व्रजबासिनि यहतो भली न आई। सावधान क्योंहोति नहीं तुम उपजी बुरीबलाय। सूरदास प्रभु हमपर याको कीन्हो सौति ब-जाय २ आवतही याके येढंग। मनमोहन बशभये तुरतही ह्वैगये अङ्ग त्रिभङ्ग। नाजानोयहटोना जानति करिहै नानारङ्ग। देखौचरित सजे हरि कैसे या मुरलीके संग। बातनिमें कहधुनि उपजावति गिरतजि तान तरङ्ग। सूरदासप्रभु इन्दु बदन में पैठोबड़ो भुजङ्ग ३॥ राग टोड़ी॥ मुरली सुनतदेह गतिभूली। गोपीप्रेम हिंडोले भूली। कबहुं चकितह्वै रहति सयानी। स्वेदचल्योहै जैसे पानी। धीरज धरियक इकहि सु-नावैं। यहकहिकाहि आपुहि बिसरावैं। कबहूंसुधि कबहूंसुधिनाहीं। कबहूं मुरलीनाद समाहीं। कबहूं तरुणा तरुणा मिलिबोलै। कबहूं रहैधीर नहिंडोलै। कबहूंचलति कबहुँ फिरिआवैं। कबहूंलाजतजि

लाज लजावैं। मुरलीश्याम सुहागिनिभारी। सूरकहति ऐसे ब्रजनारी ४ ॥ राग विहागरो ॥ अधरधरि मुरली श्याम बजावत। सारँगगौर नाट नट करिकै गौरीराग सुनावत। आपुभये रसबस ताहीके औरनिबश्य करावत। ऐसोको त्रिभुवन जलथल में जो शिरनहीं धुनावत। सुभग मुकुट कुंडलमणि श्रवणनि देखत नारिन भावत। सूरदासप्रभु गिरिधर नागर मुरलीधरण कहावत ५ ॥ राग पूर्वी ॥ श्याममुखमुरली अनुपम राजत। सुभग शिखण्ड पीडशिर सोहत श्रवणनि कुंडल भ्राजत। नीलजलद तन सुभग चापसुर मन्दमन्द रवगाजति। पीतांबर कटितड़ित भावजनु नारिबिबश मनलाजति। ठाढ़े तरु तमालतर सुन्दर नँद नन्दन बनमाली। सूरनिरखि ब्रजनारि चक्कतभई लगीमदनकी भाली ६ ॥ राग बिहागरो॥ मुरलीके बश श्याम भयेरी। अधरनते नहिँ करत न न्यारी वाके रङ्गरयेरी। रहत सदा तनसुधि बिसराये कहा करनधौं चाहति। देखीसुनी न भई आजुलो बाँसबसुरिया दाहति। श्यामहिँ निदरि निदरि हमहूं को अबहींते येरूप। सुनहु सूरहरिको मुहपाये बोलत बचन अनूप ७ मुरलीश्याम कहांते पाई। करतनहीं अधरनते न्यारीकहा ठगोरीलाई। ऐसीढीठ मिलतहीह्वैगइ उनके मनहीं भाई। हमदेखत यहपिवति सुधारस देखौरी अधिकाई। कहाभयो मुहलागी हरिके बचनन लियो रिझाई। सूरश्याम को बिबश करावति कहा सौतिसी आई ८ ॥ राग गुर्जरी ॥ श्याम मुरलीके मनहिँ ढरे। करपल्लव ताको बैठारत आपुन रहतखरे। बारम्बार अधर परसावत उपजावत अनुराग। जेबश करत देवमुनि गन्धर्व ते करि मानत भाग। बनमें रहति डरीको जानै कबआनीधौं जाय। सूरज प्रभुकी बड़ी सुहागिनि उपजीसौति बजाय ९ ॥ राग नट ॥ मुरलीभई सौतिबजाय। कबहुं बन में रहीबिडारी ताहियह सुधराय। बचनहीं हरिरिझै लीन्हे अधर पूरित नाद। दिनहिँ दिन अधिकान लागी अब करैगी बाद। सुनहुरी यहि दूरकीजै इहै करहु बिचार। अबहिँ ते करनी करी यह बहुरि कहा लगार। ढंग याके भलेनाहीं बहुतगई डराय। सूरश्याम सुजान रीझे देहगति बिसराय १० ॥ राग सोरठ ॥ मुरली दूरि कराये बनिहै। अबहींते ऐसेढँगयाके बहुरि काहि वह गनिहै। लागी हरिकर पल्लव

बैठन दिनदिन बाढ़ति जाति। अबहींते तुमसजग होहुरी मैंजु कहति अकुलाति। यहिब्रजमें नहिँभली बतानी देख्यो हृदय बिचारि। सूर श्याम वाहीके ह्वै गये सब ब्रजनारि बिसारि ११॥ राग बिहागरो ॥ अबहीं ते हमसबनि बिसारि। ऐसेवश्यभये हरिवाके जाति न दशाबिचारि। कबहूंकर पल्लव पर राखत कबहुं अधरलै धारी। कबहुँ लगाय लेत हिरदयसों नेकहु करत न न्यारी। मुरली श्यामहिँ अपने कीन्हे जे कहियत गिरिधारी। सूरदासप्रभुके तन मन धन बाँस बँसुरियाप्यारी १२॥ राग रामकली ॥ मुरलीभई श्याम तन मन धन। अबवाको तुम दूरिकरावति जाकेवश्य भये नँदनंदन। कबहूं अधर कबहुँ राखतकर कबहूं गावत कबहुं हृदयधरि। कबहुँ बजाय मगन आपुनहीं लटकि रहत मुखधरि तापर ढरि। ऐसेपगे रहतहैं जासों ताहिकरति कैसेतुम न्यारी। सूरश्याम हमसबनि बिसारी यहकैसे अबजाति बिसारी १३ राग सूहो ॥ मुरली हरिको भावैरी। सदारहति मुखही सों लागी नाना रङ्ग बजावैरी। छहराग छत्तीसरागिनी यकयकनीके गावैरी। जैसेही मनरीझत हरिको तैसेहि भांति रिझावैरी। अधरन को अमृत पुनि अँचवति हरिके मनहिँ चुरावैरी। गिरिधरको ऐसो बश कीन्हे रङ्ग भरे बचन सुनावैरी। इनको मनकर अपने कीन्हो नानानाच नचावैरी। सूरज प्रभु ढिगते कहिवाको ऐसो कौन टरावैरी १४॥ रागभैरव॥ मुरली हरिते छूटति है। बाहीके बशभये निरन्तर वह अधरनि रस लूटति है। तुमते निठुरभई वह बोलति तनते मन उबटावति है। आरजपथ कुलकानि मिटावति सबको निलज करावतिहै। निदरे रहति डरति नहिँकाहू मुखपाये बहुफूलतिहै। अब यहहरिते होति न न्यारी तू काहेको भूलति है। रोमरोम नखशिख रसपागी अनुरागिनिहरि प्यारी है। सूरश्याम वाकेरस लुब्धेजानी सौतिहमारी है १५॥ राग बिहागरो ॥ मुरली हमको सौतिभई। नेक न होति अधरते न्यारी जैसे टयाडई। यहां चर्वति यहँ डारत लैलै जलथलबननिबई। पुनि पुनि लेत सकुच नहिँ मानति कैसी भईदई। जारस को ब्रतकरि तनु गारे उकीन्ही रईरई। कहावरे वहबांस बासकीआस निरासगई। ऐसीकहूं भईनहिँ देखी जैसीभई नई। सुरबचन वाकेटोनासे ग्रथसनोज जई १६॥

राग सोरठ ॥ मुरली वचन कहति जनु टोना। जल थलजीव वश्यकरि लीन्हे रिझये श्याम सलोना। नेक अधरते करति न न्यारी प्यारी त्रियनि लजोना। ऐसीढीठ बदति नहिँ काहू रहति बनांनि बनजोना। ताकी प्रभुता जातिकही नहिँ ऐसीभई न होना। सूरश्याम मुखनाद प्रकाशत थकितहोत मुनि पौना १७ ॥ राग सारंग ॥ मुरली हमपर रोष भरी। अंश हमारो पुनि पुनि अँचवति नेकहु नहिंन डरी। बारबार अधरनिसों परसति देखति सबैखरी। ऐसी ढीठदरी नहिँह्यांतेज्यों हम रिसनिजरी। यहतौ किधौं अकाज हमारो अब हमें जानिपरी। सूरजप्रभु यहिनिठुर कराये ऐसी करनिकरी १८॥ राग धनाश्री ॥ मुरली के ऐसे ढँग माई। जबते श्यामपरे बशताके हमहिँ सबनि बिसराई। अपनो गुण यह प्रकट करायो निठुर काठकीजाई। अपनेहिं आगि दह्यो कुल अपनोसो गुणगुणि पछिताई। जैसे निठुर आपने घरको औरनि कहों ज्यों मानै। सूरबड़ो यह आपु स्वारथी निपट रागकरि गानै १९ ॥ राग कल्याण ॥ बाँस बंश बंशी सबबश्य जगत स्वामी। जाके बश सुरनर मुनि ब्रह्मादिक गुणि गुणि गुणन बासर निशि कथत निगम नेतिनेति बानी। याकीमहिमा अपार शिव न लहत वारपार करता संसारसार ब्रह्मरूप येहैं। सूरनन्दसुवन श्यामजे कहियत तत्त्व नाम अतिही आधीन वश्य मुरली केतेहैं २० मुरलीनहिँ करत श्याम अधरनिते न्यारी। ठाढ़े ह्वै रहत एकपायँ तनुत्रिभङ्ग करत भरत नाद मुरली धुनि पुहुमी वश्यसारी। थावर चराचर थावर जंगम जड़ जड़ जङ्गम सरिता उलटीप्रवाह पवन थकितभारी। मुनि मुनि धुनिश्रवण तान स्वेद गयेह्वै पषाण तरू डगर खग मृगनि सुधि बिसारी। उकठे तरुभये पात पाँथरपर कमलजात आरज पथ तज्योनात व्याकुल नर नारी। रीझे प्रभु सूरश्याम बंशीरव सुखद धाम बासरहू याम नहीं जाति कतहुँ टारी २१ ॥ राग सारंग ॥ यह मुरली मोहनी कहावै। सप्त सुरन मधुरी कहिबाणी जल थल जीव रिझावै। वहिंरिझये सुरअसुर निपटरचि तिनको वश्य करावै। पुटएकौ इतमद उतअमृत आपु अँचै अँचवाये। याके गुण ये सब सुखपावत हमको बिरह बढ़ावै। सूरश्याम याकी यह करणी श्यामहिँ नीके भावै २२ मुरलीते हरि

सबनि बिसारी। बनकीब्याधि कहाँ यहआई देखिसबैमिलि गारी। घरघरते अब निठुर कराई महा अपत यहनारी। कहाभयो जो हरि मुखलागीअपनो प्रकृति न पारी। सकुचतिहौ काहेतुम सजनी कहोन बात उघारी। नोखी सौति भईयहहमको और नहींकहूँकारी। इनहूंते अरु निठुरकहावति यहआई कुलजारी। सूरदासऐसीकोत्रिभुवन जैसी यह अन प्यारी २३ ॥ रागमारू ॥ आई कुलदाहि निठुर मुरली माय। याको रीझे गोपाल काहु न लखाय। जैसी यह करणीकरी तहींयह बताय। कैसे बशरहतभये यह तो दुनहाय। दिन दिन यह प्रबलहोत अधरामृतखाय। मोहन को यह तौ कछु मोहनी लगाय। कबहुँअधर कबहूं कर टारत न कन्हाय। सूरप्रभुको कछु ता बिनु और न सोहाय २४ ॥ राग बिलावल ॥ मुरली हरिको अपने बश कीन्हे माय। जोइ जोइ कहति सो करतहैं अति हरष बढाय। घर बन सङ्ग फिरै सदा कबहुँ करत न न्यारी। राधा आज्ञा देतहैं ताते यहप्यारी। सोवत जागत च-लतहू बैठत रसबासों। दूरि कौन सों होयगी लुब्ध हरि जासों। अब काहेको झखतिहौ वह भई लडैती। सूरश्याम की भावती यह अन्त चढैती २५ ॥ रागजैतश्री ॥ मुरली भय रहति लडै बौरी। देखति नहींनयन निशिबासर लावति कैसी ठौरी। कर पर धरि अधरनि आगे करि राखत ग्रीव निहोरी। पूरतनाद स्वाद सुखपावत तान बढावतगौरी। आयसु लिये रहति ताहीको डारी शीश ठगौरी। सूरश्यामकी बुधि चतुराई लीनी सबै अजोरी २६ ॥ रागगौरी ॥ मुरली प्रकटभई सो कैसी। कहा रहति कैसे यहआई गीधे श्याम अनैसी। मात पिता कैसेहैं वाके याकी गति प्रतिऐसी। ऐसे निठुर होहिंगेतेऊ जैसीकी यहतैसी। यह तुम नहीं सुनीहो सजनी याके कुलको धर्म। सूरसुनहु अबहीं सुखपैहो करणी उत्तम कर्म २७ ॥ रागभैरों ॥ याकोगुण में जानति हों। अब तो आय भई ह्यां मुरली वोही नातो मानति हों। हरिकी कानि करति वह कोहे कहाकरों उनमानति हों। अबहीं दूरिकरों शगार्यहिके नेक सकुच जिय आनतिहों। यातेलगी रहति मुखहरिके सुखपावति प-हिंचानतिहों। सूरदास यहनिठुर जातिकिन अब मैं यासों ठानति हों २८ ॥ रागनट ॥ सुनहुरी मुरली की उत्पत्ति। बनमें रहति बांसकुल या

को यह तौ याकी जाति। जलधर पिता धरणिहै माता अवगुण कहौं उघारी। बनहूं ते याको घरन्यारो निपटहि जहां उजारी। एकतेएक गुणनि हैं पूरे मात पिता अरु आप। ना जानिये कौन फल प्रकट्यो अतिही कृपा प्रताप। विश्वासी परकाज न जानै याके कुलको धर्म। सुनहुसूर मेघनिकी करणी अरु धरणीको कर्म २९ ॥ रागगौरी ॥ सुनहु सखी याको कुलधर्म। रहतप्रयास अधरनते लागी कोजानै यहमर्म। वे बर्षतजल धरणा संपूरण सरस लेत अवगाह। चातक सदा निराश रहत हैं एकबुन्दको चाह। धरणी जनम देति सबही को आपुन सदा कुमारी। उपजत फिरितहीमें बिनशत छोहनको महतारी। जा कुल में यहकन्या उपजी याके गुणनि सुनाऊँ। सूरसुनहु सुखहोय तिहारे मैं कहिके सुखपाऊँ ३० ॥ राग जैतश्री ॥ मातपिता गुणकहौं बुझाय। अब सुनहू के गुणसुनि लेहु न जाते अवण सिराय। उनके वे गुण निठुर कहावत मुरली के गुण देखौ। तब याको तुम औगुण मानो अब कछु अचरज पेखौ। जाकुलते उपजी ता कुलको जारिकरतिहै छार। तनहीं तनते अगिनि प्रकाशति ऐसी याकीभार। वह जो श्याम सुनै अवणनिभरि करते देहैंडार। सूरदासप्रभु घोखे याको राखत धरणी धार ३१ ॥ रागगौंडमलार ॥ यहमुरली सखि ऐसी है। रीझे श्याम बात सुनि मीठी नहिं जानत यह जैसीहै। देखौ याके भेद सखीरी कैसेमन दै पैसीहै। हमपर रहति सौंह सतराये चतुर चतुरई जैसीहै। योंगुण रहत चुराये हरिसों देखौ तुमऐसी सीहै। सुनहुसूर बैरिनि यहहमको प्रकटति ह्वै वैसीहै ३२ ॥ रागनट ॥ यह तौ भली उपजी नाहिं। निदरि बैठी सौति ह्वैके देखिदेखि रिसाहिं। कहा यांकी सकुचमानति कहो बात सुनाय। तबहिं बश करि लियो हरिको हम सबनि बिसराय। प्रबल पावस शरद ग्रीषम कियो तप तनगारि। तिनहिं तूलैं आपबैठी प्राणपति बनवारि। जो भई सो भईअब यह छोड़िदे रसबाद। सूरप्रभु के अधर लगिलगि कहाबोलति नाद ३३ ॥ रागकान्हरो ॥ ऐसीकही निदरि मुरलीसों कृपा तौ अबबहुत भई। सकुचेनहीं बनति री माई घर घर करिहैं दईदई। देखतिनहिं चतुराई वाकी मुह पाये ज्यों फूलि गई। अधर सुधा सर्बस जो हमारे सो याने सबलूटि लई। ओछी जाति

डोमके घरकी कहा मंत्रकरि हरिबश भये। सूरदासप्रभु बड़े कहावत ऐसी को धरि अधर लये ३४ ॥ रागबिहागरो ॥ याकी जाति प्रयासनहिं जानी। बिन बूझे बिनहीं अनुमाने करि बैठे पटरानी। बारम्बार लेत आलिङ्गन सुनिसुनि मधुरी बानी। गावँ नावँ नहिं बासवंशीको थाहि कहांते आनी। जिन कुलदाहत बिलँब न कीन्हो कौनधर्म ठहरानी। सुनहुसूर बहकरणी यहमुख जाति न कछू बखानी ३५ ॥ राग धनाश्री ॥ मुरली आप स्वारथिनि नारि। ताकी हरि परतीत करत हैं जीति न जानत हारि। ऐसे बश्यभये हरिवाके कहाठगोरी डारि। लूटतिहै अधरनिको अमृत खाति देतिहै ढारि। के बंकिमरे बनीहै जोरी लता तोरतिहै बारि। सूरश्यामको भले कहतिहैं देउँ कहा अबगारि ३६ रागसोरठ ॥ हम तपकरि तनुगारेउ जाको। सो फलतुरत मुरलियापायो करी कृपा हरिताको। कपटी कुटिल और नहिंकोऊ जैसेहैं ब्रजराज। जो सन्मुख सो बिमुख कहावै बिमुख करै सुखराज। बूझो बात नन्द नन्दनकी मुरलीके रँगपागे। सूरअधर रसआहि हमारे ताको बकसन लागे ३७ ॥ रागरामकली ॥ मुरली हमसों बैर दृढ़ायो। चली निपट इतराय नेकही हरि अधरनि परसायो। फूली फिरति श्याम कर बैठी योहीं गर्ब बढ़ायो। ज्यों निधनी धनपाय अचानक नयन अकाश चढ़ायो। सूरश्याम देखत सिहातहैं ताकोजाय रिझाये। त्रिभुवन पति श्रीपति जे कहावत तिन मुरली बश पाये ३८ ॥ रागनट ॥ मुरली अति चली इतराय। अक्षयनिधि जनुलूटिपाई क्यों नहीं सतराय। आदि ज्यों यहबड़ी होती चलति शीश नवाय। सबनि को लेसङ्ग चलती दौरि मिलतीधाय। बांसते उत्पत्ति जाकी कहाबुधि ठहराय। सूरप्रभुता बश्य जैसे रहे तन बिसराय ३९॥ रागबिहागरो ॥ श्याम सुहागिनी मुरली। भेदनाना करति हरषति सुनि हरषि उरली। सदातासों रहत पागे नन्दमधु सुरली। रैनिबासर टरति नाहीं रहति जहँ दुरली। भई बयाकुल चरित देखत नारिब्रज पुरली। सूर आरजपथ बिसारेउ भवन डर मुरली ४० ॥ राग केदारो ॥ मुरली सतेपर अतिप्यारी। यद्यपि नाना भांति नचावति सुखपावत गिरिधारी। रहत हजूर एकपग ठाढ़े आनतहैं अतित्रास। करते कबहुँ नेकनहिं टारत सदारहत ताप्पास। बार-

म्वार देत आयसु हरिपर राखति अधिकार। सूरश्याम को अपबश कीन्हो रहतरही बनझार ४१ ॥ रागगौरी ॥ मुरली श्यामहिँ मूड़चढ़ाई। बारम्बार अधर धरियाको कान्हा गर्वकराई। तबते गनति नहींयह काहू जबते उनमुहलाई। ना जानिये और कहकरिहै देखतनहीं भलाई। अपने बश्य कियो नँदनन्दन बैरिनि हमको आई। सूरजप्रभु एते पर माई मानत बहुत बड़ाई ४२ ॥ रागनट ॥ बड़ेकी जोमानियेकानि। कहा ओछे की बड़ाई जाहि ओछी बानि। बड़ो निदरै नहीं काहू ओछोई इतराय। नीरचारी नीचहीको चलै जैसेजाय। रहीबनमें घरहिल्याये महाबुरी बलाय। निदरिकरि यहसबनि बैठी सौति उपजीआय। दि-नहिदिन अधिकार बाढ्यो आगे रहत कन्हाय। सूरदास उपाधि बि-धना कहारची बनाय ४३ ॥ राग गौरी ॥ मुरली हमहिं उपाधि भई। नँद नन्दन हमसबनि भुलाई उपजी कहादई। कैसे अब यह दूरि होति है नोखी मिलीमई। देखोरी सम्बन्ध पाछिलो बरबिय बेलि बई। जारे जरै न काटे सूखे ह्वैगइ अमृत मई। सूरश्याम भरुहाई याको ब्रज में आनिठई ४४ दिनहिंदिन मुरली ढीठभई। रहति रही बनझार घात में सोई सुधामई। प्रकटहि भाग सुहागिनि हरिकी अनुरागीहरियाके। धन्यधन्य बशभये रहतहैं श्यामसुंदररी जाके। वाकोभाग सुहाग साँ-चिलो कबहुँसङ्ग नहिँत्यागतु। सूरश्याम राजा वह रानी वाको सरि को लागतु ४५ ॥ रागहमीर ॥ मुरलीकी सरि कौनकरै। नँदनन्दन त्रिभु-वनपति नागरसो जो बश्यकरै। जबहीं जगमन आवति तबतब अधरनि पानकरै। रहत श्याम आधीन सदाई आयसु तिनहिं करै। ऐसी भई मोहनीमाई मोहन मोहकरै। सुनहुसूर याकेगुण ऐसे ऐसीकरनिकरै४६ रागगौरी ॥ मुरली आपुन काज कियो। आपुन लूटति अधर सुधा हरि हमको दूरिकियो। नँदनन्दन सबभये बचनसुनि तिनहिं बिमोहकियो। थावरचर जङ्गम जड़कीने मदन बिमोह कियो। जाकीदशा रही नहिं तासें सबही चकृतकियो। सूरदासप्रभु चतुर शिरोमणि तिनको हाथ कियो ४७ मुरलिया श्यामहिं और कियो। और दशा औरै ह्वै मति गइ और बिबेकहियो। तबते निठुरभये हरिहमसों जबतेहि हाथलई। निशिदिन हम उनके सँग रहती मनों ह्वै गई नई। अहिऔरै करिडारे

भारे हमको दूरिकरी। घरकी बन बनकी घरकीन्ही सूरसुजान हरी ४८ ॥ राग कल्यान ॥ सजनी श्याम सदारी ऐसे। एक अङ्गकी प्रीति हमारी वे जैसेके तैसे। ज्यों चकोर चन्दाको चाहै चन्दा नेकु न मानै। जलके तीर मीन तनत्यागै नीरनिठुर नहिंजानै। ज्यों पतंग उडिपरत ज्योति तकि वाके नेक न भाय। चातक रटि रटि जलद मनावै जल वो डारत जाय। उनहू ते निरदयी बडे वे तैसिय मुरली पाय। सूरश्याम जैसे तैसी वह भली बनी अब आय ४९ ॥ राग रामकली ॥ मुरलीको मन हरिसों मान्यो। हरिको मन मुरलीसों मिलिगयो जैसे पय अरु पान्यो। जैसे चोरचोर सों तैसो ठगठग एकैजानि। कुटिल कुटिल मिलिचले एकह्वै दुहुनबनी पहिंचानि। ये बनबनानित धेनु चरावत वह बनहीं की आहि। सूरगढी जोडी बिधना की जैसी तैसी ताहि ५० ॥ रागधनाश्री ॥ काहेन मुरलीसों हरि जोरें। काहेन अधरनि धारें पुनिपुनि मिलीअचानकभोरें। काहेन तेहि करधरि राखेंकों नहिंग्रीवनवावै। काहेनतनुत्रिभङ्ग करिधारै ताकेमनहिं चुरावै। काहे न यों आवीन रहें ह्वैपे अहीर वहवेनु। सूरश्याम करते नहिं टारत रीवनचारत धेनु ५१ ॥ रागबिलावल ॥ वाहीके बल धेनुचरावत। वहै लकुटजाकी वह मुरली वार्ते वे सुखपावत। वह अतिनिठुर वे बातेंअतिही मिलिकैघात बनावत। बनहीं बनमें रहत निरन्तर ताहि बजावत गावत। वाकेवचन अमृतहैं इनको ताहिअधररसप्यावत। सूरश्याम बनवारी कहियत वह बनबांस कहावत ५२ ॥ रागरामकली ॥ वैरुसदा हमसोंहरिकीन्हो। प्रथमहिं रोंकिरहे गहिमारग दधिलैजान न दीन्हो। पुनिमनहरेउ भेदहीभेदहि इन्द्रीसंगहिलीन्हो। तापाछे ये नयन बुलाये उनउनहोंको चीन्हो। अब मुरलीबैरनि उपजाई निपटभईहम भीन्हो। सूरपरे हरिखोजहमारे ऐसे परमनगीन्हो ५३॥ रागबिलावल ॥ सुनिसजनी यह सांचीबातीबारेते नगधर कहवायो। धन्यधन्यकबिता पितुमाता जिनकहिकहि उपमा वहगायो। इन्दुवदन तनश्याम सुभगघन तड़ितवसन सतभाय बतायो। अलकभृङ्ग पदतरको सांचेकर मुखचरणकमल करिगायो। ये उपमा इनहींकोछाजे अबमुरलीअधरनि परसायो। सूरअङ्ग यहआहि हमारो मुरलीसबै अकेलेपायो५४

रागरामकली ॥ सजनी अबहिं समुझिपरी। अङ्ग अङ्ग उपमा जे हरिके कबिताबनैघरी। भवँरकुटिल कुन्तलकीशोभा सो हमसहीकरी। मुख छबि शशिपरतर धरि दीन्ही यह सुनि अधिक डरी। नवजलधर तनु कहियतशोभा दामिनि पटफहरी। सूरसहाय भलीयहमुरली अपने कुलहिजरी ५५ ताते मुरलीके बशश्याम। जैसेको तैसोय मिलाई ये बिधनाके काम। नेक न करत नियारी करते कुलआरिनिभइबाम निशिबासरवाकेरसपागे बैठे ढाढ़ेथाम। सूरदासप्रभुकी हितकारिणि इसपर राखतिताम। ५६ ॥ रागधनाश्री ॥ बिधना मुरलीसौतिबनाई। कुटिल बाँसकी बंश बिनाशिनि सबहि निराश कराई। जो यहठाट ठाटि बहिंराखयोकुलकी होतीकोऊ। तो इतनो दुखहमहिं न होत्यो औगुण आखर दोऊ। ये निर्दयी निठुर वह बनकी घरअबनहीं प्रकाश। सूरदास ब्रजनाथ हमारे जैसेभये उदाश ५७ ॥ रागसोरठ ॥ अब मुरलीपति क्यों न कहावत। राधापति काहेको कहिये सुनतलाज जियआवत। वह अनखाति नामसुनि हमरो इतहमको नहिंभावत। के मिलिचलैं फेरिहमहीं को के बनहीं किनछावत। का ओछेकी नाव चढ़बहे अपनी बिपतिकरावत। सुनहु सूरयह कौन भलाईहँसि हँसि बैर बढ़ावत ५८ ॥ रागनट ॥ और कहौ हरिको समुझाय। तब यह दुबिधा काहेराखत वाहीमिलिबेजाय। हमअपने मननिठुर करायो बात तुम्हारेहाय। भलीभई अब सकुचनलागी कबिगावतब्रजनाथ। अब मुरली पतिजाय कहावहु वह बाँसनि तुमकाठ। सूरदास प्रभुनहिं चतुराई मुरलीपढ़यो पाठ ५९ ॥ रागभैरव ॥ मुरलीको कह लागोरी। देख्यो चरित यशोदा सुतको वहयुवती अनुरागोरी। इतसद उनहिं कहतही दोबल देउचढ़ी वहपागोरी। करधरि अधरपरसिआलिङ्गन देत कहांगाठि भागोरी। वहलम्पट दूतिनि दुनहाई जानिबूझि जोखागोरी। सुनहु सूरयह यहइचाहै तापर येरिसपागोरी ६० ॥ राग सारंग ॥ बावरी जोबाँसुरी सोलरै। वहउनसों प्रेमनेमसों तुमसोंनाहिंन आली याते गिरिधारीलाल लैलैअधरधरै। जौलों मधुपिवति रहति तौलों जीवतिहै घरीघरी पलपल क्षणक्षण नहिंबिसरै। सूरदास प्रभु वाके रसबशभये रहतअली तातेवाकी सरबर कहौधौं कौनकरै ६१

रागविलावल ॥ वह मुरली बनझारकी बिनुल्याये आई। हमहींको दुख
देनको व्रजभयोकन्हाई। औरहितेहमसोंलरै करतेबरिआई। गागरि
फोरै घाटमें दधिमाट ढराई। पुनिरोंकतिहैं दानको अँगभूषणमाई।
सीखीचोरीआदितें मनलयोचुराई। पुनिलोचन अटकेरहे आजहुंनहिं
आये। हमसों उचटेरहत हैं मुरली चितलाये। दोष कहावाको सखी
इनके गुणऐसे। सूरपरस्पर नागरी कहैं श्यामअनैसे ६२ ॥ रागसोरठ ॥
सखीरीनखशिखछत्ते हरिखोंटे। ये गुणातबहीं तेजानत हमजब जननी
कहैछोटे। अंबरहरेजाय यमुनातटराखेकदमचढ़ाय। तबके चरितसबै
जानतिहैंकी हैंनिलजबनाय। जबहम तपकरिकरि तनुगारेउ अवर
सुधारसकाज। सो मुरलीनिदरे अँचवतिहैं ऐसे येब्रजराज। हमकोयों
औरनिको ऐसेनिधरक दीनोडारि। सूरइतेपर चतुरकहावतकहादी-
जियेगारि ६३॥ राग केदारो ॥ यहिवांसुरीमाई सबैचुराये हरितौचुराये
अकेले चीर। मनहिंचोरि चितवतहि चुराये गई लोकलाज कुलधर्म
धीर। तबतेभईव्याकुल अतिअकुलताआधीर। सूरदासप्रभु निठुरनि-
ठुरवह नहिंजानत परहृदयपीर ६४ ॥ राग गौरी ॥ तुमअब हरिको दोष
लगावति। नँदनन्दनखोंटेतूकीन्हे मुरली भलीकहावति। यहछिनारि
लम्पटअन्याइनि कुलदाहतिनहिंबार। मधुरमधुर बाणीकहिरिझये
तीन साजिशृङ्गार। वहैआय टोना शिरडारति सप्तसुरनि कल गान।
ऐसेबनमिलि आयकै ह्वैगयेश्यामअजान। पुरुषभँवर उनकोकहलागै
नारिभजै जबआय। सूरजप्रभु तब कहाकरैरी ऐसीमिली बलाय ६५
राग बिहागरो ॥ मुरलीको कोरसाधुरी। जिनरिझये मनहरणा हमारो
है मोहनीढरी। ऐसोकहू भई नहिंहोनी जैसी इनहिंकरी। अबजहँतहँ
धनि धन्य कहावति यह सुनि रिसनजरी। सूरश्याम अधरन के लागे
खोंटीभई खरी ६६ ॥ राग माढ़ ॥ मुरली नहिं धरत धरणि करते कहुँ
टरत नहीं अधरनि धरे रहत स्वरढरत श्यामभारी। कबहुँ नाद भरत
करत अपनोमन वश्य कहा कबहुँ रीझि मगनहोत देखत ब्रजनारी।
कबहुं लटकि जातगात तानिनि जबकहति बात सुनत श्रवण रसअघात
लागति अतिप्यारी। जा हित तप कियो गारि सोरस लै देत डारि ध-
रणि जल बिटुंपरबन द्रुमनिमें बिथारी। ऐसेढंग करै आय हमको उ-

उपजी बलाय ताको तुम भलीकहति नाहिं आदि जानी । देखो याके उपाय जयजय तिहुंभवनगाय सूरश्याम अपनोकरि दिनदिन इतरानी ६७ ॥ राग धनाश्री ॥ वृथा तुम श्यामहिं दोष न देत । जो कछुकहौ सब मुरलीको मनदेदेखो चेत । पहिलेहिआनि सुप्रीतिबढ़ाई कोजानै यहघात बनबोली हम धाईआईं गृहजनतजि पितु मात । जैसे मधुपरबालपटाने वैसइ याकेबोल । सूरसिली यहिभांति आयकै त्यों रहती निर्मोल ६८ ॥ राग नट ॥ मुरली प्रकटकीन्हींजाति । तबकही इतराय बोली बांसवंश कुजाति । अहो निशि रसअधर अँचवत तऊनहिं तृप्ताति । निदरिबैठी सबनिको यह पुलकि अँग न समाति । छवोऋतु तपकरिपची हम अधररसके लोभ । सूरप्रभुसो याहिबकस्यो कछु न कीन्होसोभ६९ ॥ राग सारँग ॥ क्यों तुम श्यामहिं दोषलगावति । क्यों मुरलीकी करतप्रशंसा यहतो मोहिं न भावति । याकीजरनि नहींजो जानति कहिकहि मैं समुझावति । कपटिनि कुटिल काठकी संगिनि ताको कहांबतावति । सूरश्याम इनहीं बहँकाये भई उदासिनि गावति ७० ॥ राग धनाश्री ॥ यहमुरली जरिगई न तबहीं । जब अपनी कुल दाह करायो तब कैसेनिबही । ऐसीचतुर चतुरईकीन्ही आपबची सब जारी । कैसेमिली सूरकेप्रभुको बिधनाकी गतिन्यारी ७१ ॥ रागसारँग॥ यह हमको बिधना लिखिराखी । नाम न गावँ कहां ते आई श्याम अधररस चाखी । यहदुख काहिकहैं कोजानै ऐसी कौननिवारै । जो रसघरेउ कपिराकीनाई सोसबऐसेहिडारै । यहदूषण वाहीकोकहिये केहरिहूलोंदीजे । सुनहुसूरकछुबच्यो अधररस सो कैसेकरिलीजे ७२ राग नट ॥ अधररस अपनोई करिलीन्हो । जोभावै सो अँचवति निधरक और सबनिको दीन्हो । मुरली हमहिं तुच्छकरि मानति बैरइते परमानै । जैसी वह तैसी सबजानति कुटिलकुटिल पहिंचानै । औगुण साधिगढ़ो नखशिखते तैसिय बुद्धिबिकासै । सूरदास प्रभुके मुखआगे मीठेवचन प्रकासै७३ ॥ राग गौरी ॥ यहमुरली ऐसीहै माई । निदरसौति यहभई हमारी कहाकहैं अधिकाई । ऐसे पियति अधररस निधरक फेरति आपुदुहाई । हमदेखति वह गरजतिबैठी जैसे बदनलगाई । या की श्याम प्रतीति करत हैं कछु पढ़ि टोनालाई । सूर सुनत ये वचन

माधुरी श्यामसखा बिसराई ७४ मुरली मोहनीभई। कीन्हीकरशोदेव दनुजपतिसोंबिधिवडलटिदई। उनपयनिधिहमब्रत सागरमथिपाईपियु-षनई। सिद्धि सुवा हरिबदन इन्दु छवि सों छलि छीनिलई। आपु ऊँचे ऊँचवाय सप्तसुर कीन्ही दिग्बिजई। एकहिपुट उतश्रमी सूरइत सदिरा मदनमई ७५ मुरलिया कपट चतुरईठानी। कैसे मिलिगइनँद नन्दनको उन नाहिंन पहिंचानी। इकवहनारि बचन मुखमीठे सुनत श्यामललचाने। जातिपाँतिकी कौनचलावै वाकेश्रङ्गभुलाने। जाको मनमानतहै तासों सो तहईं सुखमाने। सूरश्याम वाके गुणगावत वह हरिके गुणगाने ७६ मुरली यहतौभली न कीन्ही। कहा भयो जो श्याम हेतसों अधरनपर धरि लीन्ही। अँगुरी छुवत गह्यो यकपहुँचो कैसे दुरति दुराये। ओछी तनकहि में भरुहानी तनकहि बदनलगाये। जोकुल नेम धर्मकी होती दिनदिन हेतोभार। सूरदास न्यारेभये ह-मते डोलत नन्दकुमार ७७ यह मुरली कछु भलो न कीन्हो। अधर सुधारस ऋक्ष हमारो बाँटि बाँटि सबहिन को दीन्हो। बारिधि दशा द्रुमयोल सलिलपर खग सींचति बसुधा मृग मीनो। जाने स्वाद कहा श्रीमुखसों छूछोहियो सारखिन हीनो। जारसकी कालिन्दी के तट पूर्जातिगोरि भयोतन छीन्हो। सूरसो रस याहिपरसि कुटिल मति सब दिन के देखत हरिलीन्हो ७८ ॥ राग कान्हरो ॥ मुरली जो अधरन रट लागी। ज्यों मर्कटकर होत नारियर तैसे यहो अभागी। अमृत लेति रहे कह हिरदय द्रवत साँसके मारग। बैरु बिषय ऊँचवावति है यह लै डारति बनसागर। यह बिपरीति नहीं कहुँ देखी श्याम चढाई शीश। नातरु सूर देखित मुरलीको कहा बाहि करबीश ७९ ॥ राग गौरी ॥ अधर रस मुरली लूटि करावति। आपुन बारबार लै अँचवति जहाँ तहाँ ढरकावति। आजु महाचढि बाजी वाको जोइ जोइ करै बिराजै। करिसिंहासन बैठिअधर शिरछत्रधरे बहगाजै। गनति नहीं आपनेबल काहू श्यामहिँ ढीठ कराई। सुनहुसूर बनकी बन बासिनि ब्रजमें भई रजाई ८० ॥ राग बिलावल ॥ यह मुरली कुल दाहनि हारी। सुनहु श्रवण देवै सबनारी। कपटी कुटिल बाँसकी जाई। बनते कहा ...हि यहआई। जो अपने घर बैरु बढावे। तनकी तन अति आगि

लगावै। ऐसीकी संगति हरिकीन्ही। जातिनहीं वाकी उन चीन्ही। जैसे वे तैसी वहआई। विधना जोरी भलीबनाई। मुरली के सँगमिले मुरारी। भाग सुहागिनि पिय अनुप्यारी। ये कुलटा कलीटहैं दोऊ। यकते एकनहीं घटिकोऊ। अधरन धरत सबनि के आगे। करते नेक कहूँ नहिंत्यागे। इनकेगुणकहियेसा थोरे। सूरश्यामबंशीबशमोरे ८१ हरि मुरलीके हाथ बिकाने। वह अपमान करति न लजाने। वहऐसे करिलिये दिवाने। बारबार वा यशहि बखाने। ठाढ़े रहत न पायँ पिराने। ऐतेपर मन रहत डराने। आयसुदेत सुनत मुसकाने। जीवन जन्म सुफलके माने। वह गरजति वेहरे बताने। बारबार अधरन पर ठाने। त्रिभुवनपति जु कहियत बाने। ताते सबतनु दशा भुलाने। वा आगेहम सबनि सुगाने। वहगावति वेसुनत पगाने। सूरनेति निगमनि जेगाने। ते मुरली के नादठगाने ८२ मुरली निदरे श्याम को श्यामहिँ निदराई। मधुर वचन सुनिके ठगे ठग मुरलो खाई। रहतबश्य वाके भयेसब मेटि बड़ाई। वह तन मन धन ह्वै रही रसनारटमाई। वह तन कर वह अधरनि रहै देखो अधिकाई। वहै कहति सो सुनतहैं ये कुंवरकान्हाई। बनकी बाणुरी घर वह ठकुराई। सूरश्यामको ता बिना कछु नहीं सुहाई ८३ ॥ राग रामकली ॥ सखी री माधोहि दोष न दीजै जो कछुकरि सकिये सोईसब यामुरलीको कीजै। बारबार बनबोलि मधुरधुनि अति प्रतीति उपजाई। मिलि श्रवणनि मनमोहिँ महारस तनहु कि सुधि बिसराई। मुखमृदु बचन कपटचित अन्तरहम यहबात न जानी। तजितजि लोकलाज बिधिको वह बिधियहकही सुमानी। अब समुझी मिलि एकप्रकृति मुनिबिधिके सङ्गतिसाधी। सूरदास क्यों हू करुणामय परति नहीं आराधी ८४ ॥ राग धनाश्री ॥ श्यामहिँ दोषदेहु जनिमाई। कहाँजाहिरी बाँस जातिकिन कौने तोहिँ बुलाई। उनकी कथा मनहिँ दैराखौ याकी चलत ढिठाई। वे जो बुरे भले तौ अपने यह लंगरि हुँनिहाई। ऐसीरिस आवति है मोकोंदूरि करों भहराई। सूरश्यामकी कानि करतिहैं नातरु करति बड़ाई ८५ श्यामहिँ दोष कहा कहिदीजै। कहाबात मुरलीसों कहिये सब अपनेहिँ सिरदीजै। हमहीं कहति बजावहु मोहन यहनाहीं हमजानी। हमजानी यह बां-

मुरियाकोहरि जानें परशनी। बारेते मुह लागत लागत अब ह्वै गई सयानी। सुनहुसूर हम भोरीभारी याकीअकथ कहानी ८६ सुनुसखि बात एक तुम मोसों। तुमअपने शिरमानलई क्यों मैं वाहीकोकोसों। जो वहभली नेकहू होती तौमिलि सबनि बताती। वहपापिनी दाहि कुलआई देखि जरति मेरिछाती। वैसीको कहकानि मानिये वह हत्यारिनि नारी। सूरश्याम ये गुण कहजानें धोखे कीनी प्यारी ८७ राग आसावरी॥ बिनजाने हरियाहि बढ़ाई। वहतौ मिली बचन मधुरे कहिसुनतहि दईबड़ाई। रिझैलियो हरिको टोना करि तुरतहि बिलँबुन लाई। उन लैकर अधरन परधारी अनुपम राग बजाई। मानो एकहिसंगरहेते ऐसेमिले कन्हाई। सूरश्याम हमसबनिबिसारीजबहीं ते वह आई ८८॥ राग बिलावल॥ सुनसजनी यककथा कहोंरी श्यामकरैंसो कोऊ न करै। यहमहिमा कर्ताकी अगणित कौनेबिधि जो काहिदरै। बनझारनिकी घर बैठारी श्याम अधर शिर छत्रधरै। हमको घर कुलकानि छोंडाई ऐसी उलटी रीतिजरै। अधर सुधारस अपनो जानति दिनहींदिन यहआश भरै। सूरश्याम ताको करलीन्हे वहै सुधा सब ताहि झरै ८९॥ राग आसावरी॥ यह मुरली बहिगई न न्यारे। निदरे हमहिं सुधारस अँचवति टरति नहींकहुं टारे। देखो भाग जरतते उबरी मिलीआनि हरिपास। इनतौ ताहि लूटिसीपाई हमकरिदई निरास। अब यहभई श्याम परशनो श्यामभयो बशवाके। सुनहुसूर येचरित करतिहै लखै कौनगति ताके ९०॥ राग कान्हरो॥ मुरलीकहै सो श्याम करैंरी। वाहीके बशभये रहतहैं वाके रङ्ग ढरैंरी। घरबन रैनि दिना सँग डोलति करते करत न न्यारी। आईबन बलाय यहहमको कहा दीजिये गारी। अबलौंरहे हमारे माई यहि अपनो अब कीन्हे। सूर श्याम नागर वहनागरि दुहुनि भलेकर चीन्हे ९१॥ रागगौरी॥ मुरलिया हरिको कहाकियो। इनका नहीं और कछुभावे यों अपनायलियो। औरै दशाभई मोहनकी कहा मोहनी लाई। अधर सुधारस देत निरन्तर राखत ग्रीवनवाई। करजोरे अज्ञा प्रतिपालत कहारही दुखदाई। सुनहुसूर ऐसीनान्ही को काहे लाड़लड़ाई ९२ ज्योंज्यों मुरली महत दियो। त्योंत्यों निदरि श्यामको मिलितन बदन पियूषपियो। राखे

रहत पारिजापल्लव संग्रहिहोत न काजबियो । पीढति आपु अधर शय्या पर सकुचत नहींहियो । जगजान्यो रतिपति शिवजारो सो यहिशब्द जियो । मेटीविधि मर्य्याद सूर यहि जोइ जोइ कहेउ सो कियो ९३ मुरली महतादियो इतरानी । निदरि पियति पीयूष अधरको प्रथम नहीं यहजानी । करगहि रही टरति नहिँ नेकहु दूजो काम न होई । लाजनहीं आवति अति निधरक रहति बदनपर सोई । शिवकोदहेउ कामयहि जायो शब्दसुनत अकुलायो । आरजपथ विधिको मर्य्यादा सूर सबनि बिसरायो ९४ जबजब मुरलीके मुखलागत । तबतबकान्ह कमल दललोचन नखशिखते रसपागत । पलकहि मांझपलटि सेली धत प्रकटत प्रीति अनागत । दसन बसन फरकत नासापुट सुधि अरु चितवत त्यागत । बात न कहत रहत ठाढेह्वै नहिँ आलिङ्गन मांगत । सूरदास स्वामी बंशीबश मुरछे नेक न जागत ९५ ॥ राग रामकली ॥ जबहीं मुरली अधर लगावत । अङ्ग अङ्ग रसभरि उमगति है तातै पुनि पुनि भावत । औरै दशा होति पलकहिमें अगमप्रीति परकाशत । तब चितवत काहूतन नाहीं जबहि नादसुख भावत । ग्रीवनवाय देतहै चुंबन सुनि धुनि दशा बिसारत । सूर मुरछि लटकत ताही पर ताही रसहि बिचारत ९६ ॥ रागधनाश्री ॥ मुरलीतऊ गोपालहि भावति । सुनरीसखी यदपि नँदलालहि नानाभाँति नचावति । राखति एकपायँ ठाढेकरि अति अधिकार जनावति । कोमलतनु अज्ञा करवावति कटि टेढेह्वै आवति । भृकुटीनयन अधर नासापुट हमपर कोपकरावति । सूरप्रासनो जानिकोएक धरते शीश डुलावति ९७ ॥ रागरामकली ॥ मुरलीहरिको नाच नचावति । एतेपर यहबांस बँसुरिया नँदनन्दनको भावति । ठाढे रहत वश्यऐसे ह्वै सकुचत बोलत बात । वह निदरे आज्ञा करवावति नेकहु नहिं न लजात । जब जानति आधीन भयेहैं देखतग्रीव नवावत । पौढत अधर चलत करपल्लवरंध्र चरण पलटावत । हमपर रिसकरि करि अवलोकति नासापुट फरकावत । सूरश्याम जब जब रीझतहैं तब तब शीश डुलावत ९८ ॥ रागगौरी ॥ मुरली मोहे कुंवर कन्हाई । अँचवत अधर सुधाबश कीन्हे अब हम कहाकरैंरी माई । सर्बसहरि लै धरी सबनिको ऐसे नाहिंन देत दिखाई । गाजति बाजति बैठिदुहूँ

कर अपने कानन सुनत पराई। जेहि तनु अगिनि दहेउ अपनो कुल तासों कैसे होत भलाई। अब सुन सूरकवन बिधिकीजै बनकी ब्याधि सांझ घरआई ९९॥ राग जैतश्री॥ मुरलीमोहि लियो गोपाल। बशकरि आप अधर रस अँचवति करिपाये हरिख्याल। सर्बस अधर सुधारस सबको कोउ देखन नहिंपावति। आपुहि पियति अघात न तामें पुनि पुनि लोभबढ़ावति। दुहु कर बैठि गर्बसों गरजति बादति सुनि तिन बात। या कुल दाहिनि डरैतेकाते अतिहि निर्दईगात। कारेतेतपकियो जौनहित सो गँवाइ पछितानी। सूरदास प्रभु ब्याधि सांझ घर देखि देखि अकुलानी १००॥ रागगौरी॥ सखी मुरली भई पटरानी। अधर सुधासुख परत श्यामके सो पीवति इतरानी। मोहे पशुपक्षी द्रुमबेली यमुना उलटि बहानी। सुरनर मुनि बशभये नाद के सबै बश्य मन ध्यानी। तिहुँभुवनमें चलति बड़ाई अस्तुति मुखमुख गानी। सूरश्याम की अब अर्धङ्गिनि रहीरिझै लपटानी १०१ श्यामनृपति मुरली भइ रानी। बनते ल्याय सुहागिनि कीनी और नारि उनको न सुहानी। कबहुँ अधर आलिङ्गन कबहू बचन सुनत तनु दशा भुलानी। सूरदास प्रभु बनभीतरते तब अपने घरआनी १०२॥ मुरलीके बचन। रागसूहो॥ जब सुनिहौ करतूति हमारी। तब मनमन तुमहीं पछितैहौ वृथादई कहि याको गारी। तुमतप कियो सुन्यो मैं सोऊ रिसपावहुगी औरकहारी। मोसमान तपतुम नहिँकीन्हो सुनहुकरौ जिनि शोर वृथारी। मैं कह कहौं सुनहुगी तुमहू जगत बिदित यह बात हमारी। सूरश्याम आपु नहीं कहिये सुनत कहा मुसक्यात मुरारी १०३॥ रागसारंग॥ मोपर ग्वालि कहा सतराति। कहा गारीदेति मोको कहा उघटति जाति। जो बड़ी तुम आपुहीको तुमहिं होहु कुलीन। मैं बँसुरियाँ बांसकी तौ भई जो अकुलीन। पीरमेरी कौन जानै छांड़िइक करतार। सूर प्रभु सँगदेखि काहे खिझति बारम्बार १०४॥ रागआसावरी॥ मैं अपने बल रहति श्यामसँग तुम काहे दुखपावतिरी। मोपर रिस पावतिहौ पुनि पुनि कछुकह बरन करावतिरी। तुमहुँ करौसुख मैं बरजतिहौं ऐसेहि शोर लगावतिरी। कहा करौं मोहिं श्यामनिवाजी काहि नहिं दूरि करावतिरी। वृथा बैर तुम करती निशिदिन आको जन्म गँवावति

री। सूर सुनहु ब्रजनारि सयानी मूरख ह्वै समुझावतिरी १०५ ॥ राग रामकली ॥ सुनहु यकबात हो ब्रजनारि। रिसकिये पावति कहाहो कहा दीन्हेगारि। जाति उघरति पांति उघरति लेतिहौं सबमानि। तुमकहति मैंहूँ कहति सोइमोहिँ बनते आनि। कर्मको यहबहुत नाहींश्याम अधरन धारि। सूरप्रभु जो कृपा कीनी कहा रही बिचारि १०६ ॥ रागसारंग ॥ स्वार्थिनिकितहि बरहनोदेहु। बूझहु धौं यहबात श्यामसों जितदुख जुरेउ सनेहु। जनमतही हमभई बिरतिचित छांड़िग्राम गुरुगेहु। एकहि पायँ रहति नितठाढ़ी हिमग्रीषमऋतु मेहु। तज्यो मूल शाखा सुपत्रसब शोच सुखानी देहु। सुरो न तनुमन अगिन सुलाकत विकट बनायो बेहु। कतहो बकति बांसुरीजानै करिकरि तासमुतेहु। सूरश्यामको तुमहि रिझैकरि क्यों न अधर रसलेहु १०७॥ रागबिलावल॥ रिझैलेहु तुमहू किनि श्यामहिं। काहेको बकबाद बढ़ावति सतरहोति बिन कामहिं। मैं अनेक तपको फलु भुगवति तुमहुँ करौ फलुलीजै। तब जो बीच बोलिहै कोई ताहि दूरि धरि कीजै। अपनो भागु नहीं काहूसों आप आपने पास। जोकछु कहौ सूरके प्रभुको मोपर होति उदास १०८ मेरे दुखको ओरनहीं। षट्ऋतु शीत उष्ण बरषा मैं ठाढ़े पायँरहीं। कसकी नहीं नेकहू काटत घामे राखीडारि। अगिनसुलाक देत नहिं मुरकीबनै बनावति जारि। तुम जानति मोहिँ बांस बँसुरिया अगिनि झांपदै आई। सूरश्याम ऐसो तुम लेहु न खिझति कहाहो माई १०९ श्रम करिहौ जब मेरीसी। तब तुम अधर सुधारस बिलसो मैं ह्वै रैहौं चेरीसी। बिनाकष्ट यहफल न पायहो जानतिहो अब टेरीसी। षट्ऋतु शीततपनि तनु गारेउ बांस बँसुरिया केरीसी। कहा मौन ह्वैह्वै जो रहिहो कहा अवति अवसेरीसी। सुनहुसूर मैं न्यारी ह्वै हौं जबदेखौ तुम मेरीसी ११० ॥ राग सारंग ॥ मुरली तौ अधरनपर गाजति। कैसेबैठी दुहूं करनि चढ़ि अँगुरी रंध्रनि राजति। श्यामहिं मिलि हम सबनि देखावति नेकहु मन नहिं लाजति। नादत शब्द मोद सों उपजत मधुरे मधुरे बाजति। कबहुँ मौन ह्वैरहति कबहुँ कछु कहति रहतिनहिं हाजति। सूरश्याम वाको सुरसाजत वह उनहींते भ्राजति १११ ॥ राग नट ॥ मुरली तपु कियो तनुगारि। नेकहू नहिँ अङ्ग मुरकी

अब सुहागी जारि। शरद ग्रीषम प्रबल पावस खरी इक पग भारि। काहेहू नहिं अङ्ग मकोरेउ साहसिनि अतिनारि। रिझैलीन्हे श्याम सुन्दर देतिहौ करतारि। सूरप्रभु तपुढरेहैरी गुणनिकीनी प्यारि ११२ राग सारंग॥ मुरलिया ऐसे श्याम रिझाये। नँदनन्दनके गुणनहिं जानति अतिश्रमते यहिपाये। तुवव्रतको फलुवहै दिखायो चीरकदम्ब चढाये। कहेउ कहा सब वैसेहि आवहु युवतिन लाज छँडाये। तब देचीर अभयता बोले धनि धनि शब्द सुनाये। सुनहुसूर ब्रजनारीभोरी इतनेहि हरष बढाये ११३॥ राग बिलावल॥ मुरली जो तपु कियो कैसे तुमकरिहौ। षटऋतु एकपग क्यों रैहौ अबहीं लरखरिहौ। वहकाटत सुरकी जहिं तुमतौ सबमरिहौ। वहि सुलाक केसेसहेउ परसतही जरिहौ। तुम अनेक वह एक है वासों जिनि लरिहौ। सूरजप्रभु जेहि ढरिमिले नहिंजीतौ हरिहौ ११४ मुरलीकी सरिजिन करौ वह तप अधिकारिनि। एतेपर तुम बोलिहौ कहा भई बंजारिनि। धीर धरे मर्य्याद है नातरु लघु ह्वै हौ। नेक दशा की आश है ताहू ते जैहौ झगरो झगरोईरहै तेहिकहा बडाई। वह अपनो फलुभोगवै तुमदेखौ माई। देखौवाके भागको ताको न सराहौ। सूरदासझझकी कहानीके किनिचाहौ ११५॥ राग रामकली॥ मुरलीसों अब प्रीति करोरी। मेरी कहीमानि मनराखौ उतरिस दूरिकरोरी। तुमहिँ सुनी मुरलीकीबातें दीनहोय उतरानी। काहे न ढरें श्यामतापरकोक्यों न होय पटरानी। हमजान्यो यहगर्ब भरीहै साधन यातेओर। रिझैलिये हरिको तप केवल वृथाकरौ तुमशोर। सूरश्याम बहुनायक सजनी यहौ मिली इकआई। तुमअपने नेमही रहौगी नेम न करतेजाई ११६॥ राग कान्हरो॥ नेमहिंसों हरिआय रहैंगे। मुरलीसों तुमकछू कहौजिनि ऐसेहि तुमहिँ मिलैंगे। वै अन्तरयामी सब जानत घटघटकी जोरीति। जाको जैसो भाव सखीरी ताहिमिलै तेहिप्रीति। मातपिता कुलकानि लाजतजि भजी जनम ते जाहि। काहेको मुरली की डाहनि क्यों तजियैरी ताहि। सोरहसहस एकमनो आगरि नागरि राधाजानि। सूरश्यामको भजै निरन्तर जासोंहै पहिँचानि ११७ मुरलीकी जनिबात चलावहु। बहबल करति आपने तपको तुमकाहे बिसरावहु। कहारही एकहिं

पग ठाढ़ी कहाकोटि जो डारी। कहा सुलाक सह्यो उनगाढ़े करसों श्यामसँवारी। निमिष एकभरि कहसहेउ जो तुरत अधर मधुपीव। सूरसुनहु जिनिबात कहेते बड़ी आहिजो नीच ११८ हमते तपु मुरली न करैरी। कहा सुलाक सहेउ एकपल जो नितप्रति बिरह जरैरी। कियाशी करिके भइठाढ़ी तुरत अधर तटलागी। हमको दिन दिन मदनजरावत वाहीरस अनुरागी। यहैबात कर्महुँते मोटी तातेहम सरि नाहीं। सूरश्याम की महिमान्यारी कृपाकरी तामाहीं ११९तुम अपने तपुकी सुधिनाहीं बारेते तनुगार कियो। सँवत पाँच पाँचकी सब ये अजहूंलौं भयो प्रकटहियो। वहतुषार वह तर्पन तपस्या वह पावस झकझोरनि। वह लरिकई मातपितु कोहित वैसी प्रीतिहि तोरनि। तबहींते तनु बिरहजरतिहै निशिबासर यों जात। कैसे फलनि फलहि जागैगो सुनहुसूर यहबात१२०॥ राग गौरी ॥ मुरलिया एकैबातकही। भाग आपनो अपनेमाथेमानमनहिँसही। हमतेबहुत तपस्यानाहींबिरह जरी वह नाहीं। कहा निमिष करिप्रेम सुलाकी देखी गुणि जियमाहीं। बात कहति कछु निन्दति नाहीं भाग बड़ेहै वाके। सूरदास प्रभुचतुर शिरोमणि वश्यभये हैं जाके १२१ मुरलीसों कहकाम हमारो। अधर धरे शिर परकिन राखो तुम जिनि कबहुँ बिगारो। जाकारण तुम जनम भईब्रज ध्यावहु नन्ददुलारो। बीचहु कहूं औरसों अटके तामें कहा तुम्हारो। वह मुसुकनि वह श्यामसुभग छबि नयननिते जिनि टारो। सूरजप्रभु ब्रजनाथ कहावत ते तुम सखा न बिसारो १२२ ॥ राग बिहागरो ॥ मुरली श्याम बजावन लागे। अधर सुधारस दै वह पागी आपुन तारस पागे। धन्य धन्य वड़भागरि नागरि धनि हरिके मुख लागी। धनि वह वन धनि वह उपबन जहँ धनिधनि बँसुरि सुहागी। धनिवह रन्ध्र धन्य वह अँगुरी बारम्बार चलावत। सूर सुनति ब्रज-नारि परस्पर दुहुँ सुख दोऊ पावत १२३ ॥ राग पूर्वी ॥ मुरलिया कैसे बाजै रससानी गरजति धुंकार अमृतबानी। अधिक नाद प्रबाह तारे तारे भारेरीझे इतनो रस कहांते उपजै तौ इतनी नाहीं मुरलिया कैसे बानी। सप्त सुरनि गतिजति उपजति अतिबिपरित थावर पवनपानी। सूरश्याम गिरिधर बहुनायक याहीसों रैनि दिन रससानी १२४ ॥ राग

रामकली ॥ मुरलिया बाजत है बहुबान। तीनिग्राम इक्कीस मूर्छना उनचास कोटितान। सबैकला निरपन सुघरअति या समसरिको आन। अतिसुकराठ गावति मनभावति रीझे श्याम सुजान। ऐसी सोंनहिँबैरु कीजिये दूरिकरो रिसज्ञान। सूरश्यामके अधरनि राजति सबहीं अङ्ग निधान १२५ मुरलिया श्यामअधरपर बैसी। सुनहु सखी यहहै तेहि लायक अतिहि भली नहिँनैसी। कैसे नँदनन्दन करधारत जोपै होती गैसी। तुमहीं वृथाकहति जोईसोइ जैसीकी तैसी। सुनहु कहा कहि कहि सुखगावति हृदय श्यामके पैसी। सूरदास प्रभुक्यों न मिलैहरि तिहूंभुवन जेजैसी १२६ ॥ राग बिलावल ॥ आपु भलाई सबै भलीरी। जो वह भलीगुणनि करिपूरी तौ हरिश्याम मिलैरी। इकगुवती अरुमधुरेगावति बाणी ललित कहैरी। जबजब श्याम अधरपर राखत तब तब सुधा बहैरी। इते पर हमसों सन्मुख ह्वै तुम काहे रिसपावति। सूरदासप्रभु कमलनयन को इतेपर वह भावति १२७ ॥ राग रामकली ॥ मुरलीश्याम बजावन देरी। अवणनि सुधा पियावति काहे यहिजनि तू बरजेरी। सुनतिनहीं वह कहति कहा है राधा राधा नाम। तू जानतिहरिभूलिगये स्वाहिँ तूसके पतिबास। वाहीके मुखनाम धरावत हमहिँ मिलावत ताहि। सूरश्याम हमको नहिं बिसरो तुम डरपति होकाहि १२८ ॥ राग जैतश्री ॥ जब जब मुरली कान्हबजावत। तबतब राधा नाम उचारत बारम्बार रिझावत। तुम रवनी वै रवन तुम्हारे वैसेहि मोहजनावति। मुरलीभई सौति जो माई तेरीटहल करावति। वहदासी तुम हरिअर्द्धंगिनि यह मेरेमन आवत। सूरप्रकट ताही सों कहिकहि तुमको श्यामबोलावत १२९ ॥ राग ईमन ॥ यह मुरली ऐसी है माई। हमयासों रिस वृथाकरतिहो तब यहकदरि न पाई। बाणी ललित सुनतश्रवणनिहित चितमेरे अतिभाई। गाजति बाजति श्याम अधरपर लागत तानसोहाई। मैं जानीहै निठुरकाठकी नरमबाँसकी जाई। सूरदास ब्रजनारि परस्पर ताकी करति बड़ाई १३० ॥ राग कान्हरो ॥ अब मुरली कछु नीकेबाजति। ज्यों ज्यों अधरनि करपर बैठति त्यों त्यों अति अतिराजति। अबलों जानी बाँस बँसुरिया याते और न बंश। कैसे भाजिरजि चली सबनि को राधा करति प्रशंस।

यहकुलीन अकुलीन नहींरी धनि याके पितुमात। सुनहुसूर नाते की भैनी कहतिबात हरयात १३१॥ राग जैतश्री॥ मुरलिया मोको लागति प्यारी। मिली अचानक आय कहूंते ऐसीरही कहारी। धनिया के मातापितु धनियह धनियह मृदुमृदु बोलनि। धन्यश्याम गुणिगुणि कैल्याये नागर चतुर अमोलनि। यहनिर्मोल मोलनहिँ याको भली न याते कोई। सूरदास याके पटतरको तौ दीजै जो होई १३२॥ राग मलार॥ बंशीकर श्यामके अधर बिरमी। लेतिसर्बस युवति जनको बदन बिधुते अमी। पियतिन्यारे गरबडारे करतनाहिँ तमी। बोलि शब्द सुमन्न सुरमिलि नागर सुरगदमी। महाकठिनके बैरमें सुनिबाँस बंश जमी। सूर श्रीमुख परसि परसा नेकुनाहिँ नमी १३३ जादिनते मुरलीकर लीन्ही। तादिनते अबलानिसुख सुनि२ मनकीबात सबै लै दीन्ही। लोकवेद कुललाज काजको तजिमर्याद प्रीतिमिति कोन्ही। तबहींते सब सुधिबिसराई निशिदिन रहति गोपाल अधीनी। शरद सुधानिधि अंशको सींचत अमी प्रेमरस भीनी। ताऊपरशुभ दरशसूर प्रभुश्रीगोपाल दरशन रहछीनी १३४ देखहुरी इनमदन मुरलिका ने सुकसी सबजग मोहेउ। जेतेजीव जन्तु जलथल के नाद स्वादरस पो-हेउ। जेतीरथ तपकिये तरंगिा तट प्रगके पीठि न दीन्ही। तातीरथ के तपको फललै श्याम सुहागिनि कीन्ही। सुदिन सुघरी शील कुल छांड्यो अरु राधिके अनुराग। सुन्दरश्याम सुधारस सींचत मेटत प-हिलेदाग। घरगिघरी गोवर्द्धन राख्यो कोमल पाणि अधार। हरि अवलटोक रहत ठाढेहूँ तनक मुरलिके भार। निदरि हमें अधराधर पीवति पढी दूतिका माई। सूरश्याम कुञ्जनि ते प्रगटी चपरिसो ह्वै आई १३५॥ राग धनाश्री॥ बाजीहो वृन्दाबन रानी। धनिवै बंश दुख भंजनि गिरिवर करवर मोहन मानी। तरल रसाल अधर छबिकरलै मुरली सकल कहानी। कुञ्जखोह कहुँ करत तपीतप तिनतन तपति सिरानी। अम्बर घेरि घटाघनआये रही धारधरि पानी। बूझतबाल गोपाल सखाको छत्तिस कहांते आनी। सुखजनराज श्रीसुन्दर हरि मुख सूरसबै जगजानी १३६॥ राग सारंग॥ मुरलीकौन सुकृत फलपाये। अधरसुधा पीवति मोहनको सबै कलंक गँवाये। तन न ठौर मनगाँठि

प्रकटकी छिद्रविशाल बनाये। अन्तर शुन्य सदा देखियतिहै है कुल
वंश सुभाये। लघुता अङ्ग कछूनहिँ गर्कई निरखत नहीं निकाई। सूर
दास प्रभु पाणि परसि नित कामचली अधिकाई १३७ जबते मुरली
अधरनपरी। तबहींते मन औरभयो सखितन सुधि सब बिसरी। हौं
अपने अभिमान रूपयुत यौवन गर्वभरी। नेक न कहेउ करेउ दूतीको
बारहि आयढरी। बिन देखे यह श्याम मनोहर युगभरि जातघरी।
सूरदासयह आरज पथते कछुबन चाडसरी १३८॥ राग कल्याण॥ तब
लगि सबै सयान रहे। जबलगि नवकिशोर मुरली नहिँ बदन समीर
बहे। तबहीं लौ अभिमान चतुरई पतिव्रत फलनहि चहे। जबलगिश्र-
वण रन्ध्र मारगमिलि नाहिँन मनहिँ सहे। तबलगि तरलतरु चञ्च-
लता बुधिबल सकल अहे। सूरसखी जबते यह धुनिसुनि नाहिँन ब-
चन कहे १३९॥ राग सारंग॥ सुनहुरी मुरली अधर बजाई। मोहे सुर
नर नाग निरन्तर ब्रजबनिता मिलि धाई। यमुनानीर प्रवाह थकित
भयो पवन रहेउ मुरझाय। खग मृग मीन अधीनभये सब अपनीगति
बिसराय। द्रुमबेली अनुराग पुलकतन शशि थकि निशि न घटाई।
सूरश्याम वृन्दाबन बिहरत चलहुसखी सुधिपाई १४०॥ राग नट॥ हम
न भईं बड़भागिनि बँसुरी। कर अम्बुज में बाससदाईं जाको सखासुरा
पिवत अधर मधुरसुरी। मुरलीमनोहर नामकहावत तीनलोकबिदित
जग यशुरी। सूरदास प्रभु अधिक निठुर भये मुरली को दयोहमारो
सर्वसुरी १४१॥ रागसारंग॥ सखीरी मुरलीलीजैचोरि। जिनगोपालसब
अपनेमनसे प्रीति सबनिसों तोरि। एकहु पल नाहीं निशिदिनमें क-
बहूंधरत न छोरि। कबहूंकर कबहूं अधरनिपर कबहूं उरकटि ओरि।
जानतिहैं कछुमेलि मोहनी राखे सबअँग मोरि। सूरश्याम को मन
सुनि सजनी बांध्योनाद किडोरि १४२॥ रागगौरी॥ मुरलीकुंजनि कुंजनि
बाजति। सुनरी सखी श्रवणदै अब तू ज्यहिबिधि हरिमुख राजति।
करपल्लव जब धरत सबैले सप्तसुरनि कलसाजति। सूरदासयह सौति
शाल भइ सबहिनके शिरगाजति १४३ मुरलीबिधिहुते प्रबल प्रबीन।
कहिये कहा आहिको ऐसी कियो जगत आधीन। चतुरबदन उपदेश
बिधाता याकेथिरचर नीति। आठ बदन गरजत गरबीलो क्यों चली

यहिरीति। एकबेर श्रीपतिसिखये औन लियो गुणज्ञान । इनकैतो नँदलाल लाड़िलो लग्योरहत नितकान। अधरनिसाध पियति ब्रजकुलते नहिंन प्रयास तनत्याग । तदपिसूर यह नन्दसुवनसों याहीको अनुराग १४४ ॥ राग सोरठ ॥ मुरलीभई आजुतेअनूप । अधरबिम्ब बजाय कर धरिमोहे त्रिभुवनभूप। देखि गोपीग्वाल गोधन देखियह बनकूप। देखि मुनिजन नाग चंचल देखिसुन्दररूप। देखिधरत अकाश सुरनर देखि शीतल धूप। देखिसूर अगाध महिमा भयेदादुर कूप १४५ ॥ राग बिलावल ॥ अधर मधुर कहतहमराखी । संचितकिये रही सबराधेसकी न सकुचति चाखी । सहि सहि शीतजाय यमुनाजल दीनबचन बहुते दिन भाखी । तब अति क्षीण नहिंन हरिमुख सखि मनहीमन अभिलाखी। अबयहअमृत पियतसखिमुरली सबहिनके सिरनाखी। लयोछिंडायनिदरि सुनिसूरज धेनु धुरिदै आंखी १४६ ॥ रागकेदारो ॥ मुरली सबहिन को मनहरेउ। प्रथमहीं ब्रजनारियनके आनि गिरिधर बरेउ। तब न रहेउ गयो हमपै शब्द श्रवणनि परेउ । पति पुत्र पिता बिसारि अम्बर चलीं ग्रह तजिभरेउ। सिद्धचारण गुणी गंधर्व सुनत सब बिसरेउ। गगनसुनि मारुत न डोलत सिथिल शशि न टरेउ। सटकि सर्प दुरात धुनि सुनि कछु जु बंशी करेउ। त्रण तोरिकुंजन पुंज सुरभी सदनदेन चरेउ। चपल चितदैरहेउ कोकिल कीरनेकु न सुरेउ। ध्यान सों धरिरहे द्रु मसब नाद उरमें अरेउ। मृग मोर मधुप चकोर सरिता एक मतो करेउ। बेष अपनो छांड़िज्ञानी योग जप ब्रतधरेउ। थके थिरचर सुनअसुर नर लिये गृहन भरेउ। सूर मुरली अधरधारी प्रभु कामनाकेखरेउ १४७ ॥ रागनट ॥ सुनिकै कुंज काननि बैन। ब्रज बनिता बिसारि जो अंबर चलीं गृह तजि चैन। शब्द यहिबिधि भयो मोहन सूझि औरपरैन। सूरश्याम जो रसिक नागर सुभट सुर उरदैन १४८ ॥ रागरामकली ॥ मुरलीदिन दिन भली भई। बनकी रहन नहींअब यामें सबही पागिगई। अमृत समान कहतिहै बाणी नीके जानिलई। जैसीसंगति बुधि तैसी ये ह्वै गइ सुधा मई। जबआई तब औरै लागी सो निठुरई हई। सूरश्याम अधरनि के परशे शोभाभई नई १४९ ॥ रागगौंडमलार ॥ भली अनभली करतूति संगतिहुते बांस बन झारकी भई

मुरली। कहा तब लहतही निठुर आई जबहिं बचन अमृत कहति सुरनि मुरली। सुधा अधरनि संग भई आपुहि सुधा कहा अब प्रीतिमें गँवायो। सूर प्रभु मिले अरु हम मिलीं धायके इतेपर धन्य चहुंयुग कहायो १५० धन्य मुरली धन्यतप तुम्हारो। धन्यमाता धन्यभ्राता धन्य धन्य पिता धन्य तुव भक्ति सारो। धन्य वहबांस धनिधन्य जहँ तू रही धन्य बनझार तोते बड़ाई। धन्य तप कियो षटऋतु रही एकपग डुली नहीं धन्य मनकी दृढ़ाई। कटतहू मुरी नहीं रंध्रहू जरीनहीं नेमते टरीनहीं तेही जानै। तैसेही मिले प्रभु सूर तो को तुरत सींचि अमृत अधरनेइमानै १५१॥ रागहमीर ॥ आजुबजाई हो मुरली मनोहर सुधि न रहीकछु मों तनमनमें। मैं यमुना तट सहज जातिकान्ह ठाढ़े हो वृन्दावन में। नाना रागिनी गावत धरै अमृत अधरनि में। सूर निरखिहरिअंग त्रिभंगी वा छबि में गई मरि में १५२॥ रागपूर्वी ॥ मुरली बाजे राजेहो मुख मोहनके सुनिरीझिरही रसतानिनि। अतिदूरि रही रस धुनि सँग आईरी भई मगनदै काननि। तबते और कछू नहिं भावत वहछबि बाननि। सूरदास प्रभु नवल छबीले हरत नवल नारिनकेज्ञाननि १५३॥ रागकाफी ॥ माय मोहनाकी मुरलीमें मोहनी बसतु है। जबतेसुनी श्रवणा रहेउ न पर भवनदेहते मनहु प्राण अब निकसतु है। कहा करौं मेरी आली बांसुरीकी धुनि शाली मात पिता पति बंधु अतिहीतरसतुहै। मदन अगिनि अरु बिरहकी ज्वाला जरिजैसे जलहीनमीन तरहि दरशतुहै। अतिहि तपति छाती लागति है प्रेमकी कांती फूलनिकी मालामनो व्यालह्वै डसतु है। सूरश्याम मिलन को आतुर ब्रजकी बाम एकएकपल युगसम ज्यों बितबुहै १५४मोहन मन मोहिलियो ललित बेणुबजाईरी। मुरलीधुनि श्रवणा सुनत बिबशभई माईरी। लोकलाज कुलकी मर्य्यादा बिसराईरी। घरघरउपहाससुनत नेकहु न लजाईरी। और जपतप वेद पुराण कछुबैनसुहाईरी। सूरदास प्रभुकीलीलानिगम नेतिगाईरी १५५ सुनिआधीसी रातिमोहन मुरली बजावै। नींदउचटिगई मनमुरझानि प्राणानि और न भावै। मनहरिलियो देहगतिभूली गृह आँगन न सुहावै। सूरदास प्रभुमुरली ताननि देहदशा बिसरावै १५६॥ इतिरागकल्पद्रुमान्तर्गतमुरलीलीलासमाप्तम्॥

अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

रासलीला को प्रसंग ॥

राग केदारो ॥ आजु बन बेणु बजावत श्याम । यह कहिकहि चकृत भईं गोपी सुनत मधुरसुर काम । कोउ जेंवनार करति कोउबैठी कोउ ठाढ़ीहै धाम । कोउजेंवति कोउपतिहि जेंवावति कोउशृङ्गार में बाम । मानो चित्रकी लिखिकाढ़ी सुनत परस्पर नाम । सूरसुनत मुरली भईं बौरी मदन कियो तनताम १ जब हरिमुरली अधरधरी । श्यामल तन में रची रूपनिधि गिरिवर धरनबरी । उघटततान बँधान सप्तसुर सुनि रस उमगिभरी । आकर्ष्यो चितवित युवतिनको गति बिपरीतकरी । पियमुख सुभ्रविशाल सुरत संगीत समुद्रतरी । सूरदासत्रैलोक्य बिजय रतिपति मतिदर्पहरी २ मुरली अधरसजी बलबीर । नादसुनि बनिता बिमोहीं बीसरे उरचीर । खगनैन मूंदि समाधिरहे नयननि मिले तप धीर । झुलतनहिं द्रुमपत्र बेली थकित मन्दसमीर । मृगधेनु तृणतजि रहे मुख बछरा न पीवत क्षीर । सूरमोहन राग सुनिसुनि थकित यमुना नीर ३ ॥ राग बिहागरो ॥ बंशीरी बन कान्ह बजावत । आनिसुनहु श्रवणनि मधुरे सुर नाद मध्यलै नाम बुलावत । सुरश्रुति तान बँधान अमित अतिअतित अनागत ल्यावत । जुरियुग भुजाभार मौलशेषमथि बदन पयोधि अमृत उपजावत । मनमोहनी बेषधरिकै मनमोहतमनो मधुपान करावत । खग मृग मीन बशभये नादरस सगनहुते सदनहुँ जग ज्यावत । और कहाँ लगि कहौं सूर थिरचर मोहे कोइ पार न पावत । मानहुमूक मिठाईको गुणकहि न सकत मुखशीश डुलावत ४ राग सारंग ॥ मुरलीधुनि श्रवण सुनत भवन रहेउ न परई । ऐसीको चतुर नारि धीरजो मन धरई । सुर नर मुनि सुनत सुधि न शिवसमाधि टरई । अपनी गति तजत पवन सरिता नहिँ ढरई । मोहनमुख मुरलीमन मोहन बश करई । सूरदास सप्तसुरन सुधासार झरई ५ ॥ राग केदारो ॥ मुरली मोहन अधरधरी । आरजपथ बिसरी आतुरह्वैबनहुँ कि सुधि न करी । मदरिपु पट अटक्यो न सम्हारति उलटि न पलटि खरी । कबहुँक शिवशत बाँहन रविकि मिल्यो मनहूँ कि बुद्धि हरी । दूरि

गये कीरकपोत मधुपपिक सारँग सुधि न करी। उडुपति बिद्रुमबिंब लजाने दामिनि अधिक डरी। मिलिहैं श्यामहिं हंस सुतातट आनँद उमगिभरी। सूरश्यामको मिलीपरस्पर प्रेमप्रबाह परी ६ मुरली अति गर्ब काहूबदति नाहिँ न आजु। हरिको मुख कमल देखिपायो सुखराजु। बैठति कर पीठ ढीठ अधर छत्र छाँह। राजत अति चँवर चिकुर सदर सभामाँह। यमुनाके जलहि नाहिँ जलधिजान न देति। स्थावर चर जङ्गम जड़ करत ज्योति ज्योति। बिधि की बिधि मेटि करति अपनी नइरीति। श्रीपतिहू श्री बिसारि येही अनुराग। बंशी बशसकल सुरनरमुनिनाग ७ ॥ राग बिहागरो ॥ बंशी बनराज आजु आई रणजीते। मेटति है अपनेबल सबहिनकी रीते। बिडरे गजयूथ शील सैन तुरत भाजी। घूंघुट पट कवँच टूटि छूटे सब ताजी। काहूपति गेह तजे काहू तनप्रान। काहूमुख शरण लयो सुनत सुयश गान। कोऊ पद परसिगये अपने मन देश। कोऊरस रङ्गभरेते भये नरेश। देतिसबनि मारुत मिलि दशहूँ दिशि दुहाई। सूरज गोपाललाल बंशीबश माई ८ ॥ राग जैतश्री ॥ सुनियेहो धरिध्यान सुधारस मुरलीबाजै। श्याम अधरपर बैठिबिराजत सप्तसुरनि साजै। बिसरी सुधिबुधि गतिसबहिन की सुनिबेणु मधुर कलगान। मनगतिपङ्गुभई ब्रजजुवती गन्धर्ब मोहे गान। खगमृग थके फलनि तृण तजिके बछरा न पीवत छीर। सिद्ध समाधि थक्यो चतुरानन लोचन बहे सबनीर। महादेव की तारी छूटी अतिहू रहे अचेत। ध्यानटरेउ मुनिहों मनलाग्यो सुर सुनिभये अचेत। यमुना उलटि बही अतिब्याकुल मीनभये बलहीन। पशुपक्षी सबथकित भयेहैं रहे इकटक लौलीन। इन्द्रादिक सनकादिक नारद शारद सुनि आवेश। घोषतरुणि आतुरह्वै धाई तजि पति पुत्र अदेश। श्री वृन्दाबन कुंजकुंज प्रति अतिबिशाल आनंद। अनुरागी पियप्यारी के सँगरस सब रचे सानंद। तिहूंभुवन भरिनाद प्रकाश्यो गगन धरणि पाताल। थकित भये तारागण सुनिकै चंदभयो बेहाल। नटवर भेष धरे नँदनंदन निरखि बश्यभयो काम। उरबनमाल चरण पंकज लौं नीलजलद तनश्याम। जटित जराव मकर कुंडल छबि पीतबसन सो भाय। वृन्दाबन रसरास माधुरी निरखि सूर बलिजाय ९॥ रागकाफी ॥

बजाई बांसुरी ब्रजराज मोहे ब्रजराज । सुनिश्रवण भवननहिं रहिसकीं नहिंसुहात गृहकाज । मातुपिता पति बंधुकी तजीइन नयननिलाज । हरे भरेद्रुम भरेभये वृन्दावन बिपरीत । ललितलता सबनमित भयेहैं सुनि सुनि धुनि सुअतीत । गैयागोप गोठगृह अटके हंससुता भइथीर । गन गंध्रबसब थकितभयेहैं चलत न बिबिधि समीर । सुनि सुनि सकलब्रज बधूबाईं बिकल बावरीबेश । रहि न सम्हारहार उरअञ्चल छुटेकंचुकी केश । शिवबिरंचि शशिशेष शारदा मघवा मगनभये । रबिरथरोंकि रहे सुरपुर में बाजी बाग ओगये । सुर नर मुनि स्थावर जंगम सबहि मनभये पङ्ग । तजि धनधाम बामगृह अटकी सूरश्याम के सङ्ग १० ॥

राग रायसा सूहो ॥ मेरे साँवरे जब मुरली अधरधरी । सुनि धुनि सिद्धि समाधि टरी । सुनिथके देव बिमान । सुरबन्धु चित्र समान । गृह नखत तजत न राशि । बाहन बँधे धुनि फांसि । सुनि आनँद उमँगिभरे । चल थकिरसे अचल चरे । चल अचलगति बिपरीत । सुनि बेणु कल्पित गीत । झरना झरे पाषान । गन्धर्व मोहेगान । सुनिचंचल पवनथक्यो । सरिता जलचलि न सक्यो । सुनि थकित भयो समीर । उलट्यो जु यमुनानीर । धुनिसुनि चलीं ब्रजनारि । सुतदेह गेह बिसारि । सुनिखग मृग मौन धरी । फलतृणहुँ कि सुधि न करी । मृगधेनु चकृतरहे । तृण दन्तहूनि गहे । बछरा न पीवैं क्षीर । पक्षी मनों मुनिधीर । द्रुम बेलि चपलभईं । नवपल्लव पलटि नईं । जेबिटप चंचलपात । ते निकट को अकुलात । अंकुरित पुलकित गात । अनुराग नयन चुचात । मनमोहेउ मदनगोपाल । तनश्याम नैन बिशाल । नवनील घन तनश्याम । नवपीत पट अभिराम । नवमुकुट नव नव दाम । लावण्य कोटिक काम । मन मोहन रूपधरेउ । तब कामको गर्बहरेउ । श्री मदन मोहनलाल । नव नागरी सँग बाल । नवकुंज यमुना कूल । देखत सूरदास हियफूल ११

राग बिहागरो रायसा ॥ तोपर वारीहौं नँदलाल शरद चांदनी रजनी सोहै वृन्दावन श्री कुंज । प्रफुलित सुमन बिबिधिरङ्ग जहँ जहँ कूजत कोकिल पुंज । यमुनापुलिन श्याम घन सुन्दर अद्भुत रास उपायो । सप्त सुरनि बन्धान सहितहरि मुरलीटेरि सुनायो । थक्यो पवनसुर थकित भये सुनि धरणि उमँगि धर कांप्यो । खगमृग मीन जीवजल थलके

सबतन सुरति बिसारी। सूखे द्रुम पल्लव फललागे बनबन गारवाडारी। सुनि ब्रजबधू तज्यो आरजपथ सुतपति नेह न कीनो। प्रगट्यो अङ्ग अनङ्ग बिकलभइ तनमन हरिसब लीनो। यककेंवनार करतही छांडी यक जेंवत पति त्याग्यो। यकबालक पै पियत सुवावति प्रेमबिबश तनुजाग्यो। जो जैसे तैसे उठिधाईं तनमन सुरति बिसारी। मुरलि नाद करि टेरिलई हरि ब्रजनव तरुणि कुमारी। आंजत नयन अधर दुहुँके बिच शारँगसुत नहिंलाग्यो। मानहुँ अलिबैठे बन्धुकपर पियत सुमन रसपाग्यो। कटिकंचुकी उरज लहँगाकसि चरणान हार सँवारेउ। उलटे भूषण अङ्गनिसाजे फेरि न काहुनिहार्यो। चलीं सबै त्रिय आधी रतियां जहँनव कुंजबिहारी। आनिहजूरभईं काननमें जहांश्यामसुख कारी। देखिसबै ब्रजनारि श्यामघन चितये बुद्धिसँवारी। क्यों आईं वृन्दाबन भीतर तुमसब पियकी प्यारी। तुम कुलबधू भवनहीं नीकी रैनि कहा सबआईं। अपने अपने घरपति नसों कैसे निकसनिपाईं। बेणुशब्द श्रवणनमग ह्वैउर पैठि हमहिं लैआयो। आशातुम्हारी जानि चपल चित चंचल तुरत चलायो। अपनो पुरुष छांडि जो कामिनि अन्यपुरुष मनलावै। अपयश होय जगत जीवनभरि बहुरि अधमगति पावै। अजहुँ जाहुसब घोषतरुणि फिरि तुमतो भली न कीनी। रैनि बिपिन नहिबासकीजिये अबलनिको नहिँलीनी। घरकैसे फिरिजाहिं श्यामजू तनयइई सबत्यागीं। तुमतेकहो कौनयहां प्रीतम जासँग मिलि अनुरागीं। हमअनाथ ब्रजनाथ नाथतुम चरण शरण तकिआईं। निठुर बचन जिनिकहो पीयतुम जानत पीरपराई। दीनबचन सुनिश्रवण कृपानिधि लोचनजल बरषाये। धन्य धन्य कहि कहि नँदनन्दन हर्षित कंठ लगाये। हम कीनो अपमान तुम्हारो तुम नहिँ जिय कछु आन्यो। सरिता जैसे सिन्धुभजै हरितैसे तुममोहिँ जान्यो। द्वादशकोश रासपरमित भइ ताको कहा बखानो। बोलिलई ब्रजबधू बिहँसि सब तुम मण्डल बिधुमानो। पाणि पाणि सों जोरि युवति दुहुँ दुहुँ बिच श्यामबिराजै। कञ्चनखम्भ खचित मरकतमणि यहउपमा कछुछाजै। अँगप्रति कोटिकाम छबिलज्जित मधिनायक गिरिधारी। निर्त्तकरत रसबश भये दोऊ राधा मोहन प्यारी। ब्रजबनिता मण्डली बनी यों

शोभा अधिक बिराजै। नूपुरकटि किंकिनी चलितगति अरश परश पर बाजै। मोरचन्द्रिका शिरपर सोहै जब हरि रुणुभुणु नाच्यो। अङ्ग अङ्ग प्रति और और गति कोटिमदन छबि राच्यो। यमुनाजल उलटी बहिधारा चन्द्रारथ न चलावै। बानिक अतिहि बनेमनमोहन मन्मथ पकरि नचावै। निर्त्त करत रीझत मनमोहन राधा कंठलगाई। रासविलास करत सुखउपज्यो सबबश कियेकन्हाई। अन्तर्द्धानकरत दुखबाढ्यो राधावर सुखकारी। सूरदासप्रभु भक्त बश्यता प्रकट करी गिरिधारी १२ ॥ रागसोरठ ॥ शरद निशाकी रैनि सुहाईहो। वृन्दावन घनमें यदुपति राईहो। सप्तसुरनि विधिसों मुरलि बजाईहो। सुनिधुनि नारिचलीं ब्रजतजि आईहो ॥ छन्द ॥ धुनि सुनत व्याकुल भई युवती मदनतन आतुरकरी। विवशभई तनमन भुलानीं भवन कारज परिहरी। उलटे अभूषण सब बनाये अङ्गकी सुधि बीसरी। नन्दसुत चित बित चुरायो आयभई सबहाजिरी ॥ छन्द ॥ हाजिर आयगई जहाँ बनवारी हो। निशिकहां धायचलीं ब्रजघोष कुमारीहो। बचन सुनायेहो मो-हन नागरकी। पतिगृह त्यागी क्यों गुरुजन वा नरकी ॥ छन्द ॥ गृह पूतपति क्यों त्यागिआई नाहिंने शुभलीकरी। पापपुराय न शोचकीनो कहाजिय तुमयहधरी। अजहुँ घर फिरिजाहु कामिनि करहु सो जो हमकहेउ। लोकवेदनि विदितगायो पर पुरुषनहिँ धनिलहेउ। निठुर बचन सुनिकै ग्वारिनि निठुरभई। अतिमुरझाय रहीं सुधिबुधि सबै गई। विनय बचन कहिकै ग्वालिनि सुनाईहो। तुव चरणनि मनदै सब बिसराईहो ॥ छन्द ॥ तुव दरशको आशापथ ब्रतनेम दृढ़ यह है धरेउ। कौन सुतको मातुकोपति कौनप्रियको किनकरेउ। कहाँ पठ-वत जाहिं काके कहौ कहँ मनमानिहै। यहांबरु हम प्राणत्यागैं आइँ जहँ सोइ जानिहै ॥ छन्द ॥ हरिहँसि बोलेधनि ब्रजनारी। मैं बहुतकसी तुम ब्रतधारी। मुखकछु बहुत कही अन्तर तुमहिंरही। जब जहां देह धरी तबतहां तुमसङ्गही ॥ छन्द ॥ कहा कसिकोउ तुमहिं देखै कनक बारह बानिहो। मेरे तौ तुमहीं प्राणजानहुँ और मननहिँ आनिहो। तबहिँ हिलिमिलि रासकीनो युवति बहु मंडलिजुरी। कनक मरकत पचिरची बिचकान्ह बिच बिच नागरी। अद्भुत रास रचेउ गिरिधर

लाड़िले। श्रीवृषभान सुतासों हरि चाड़िले। अति आनन्द बढ़ेउ गोपी हरष भई। निर्त्ततरीझेहो भुजभरि श्यामलई। जलथल पवन थक्यो। खग मृग तरु बिथक्यो। देखत मदन जक्यो। चरणनि शरणतक्यो। जीवसब तिहुँभुवन मोहे अमर नभ बिथकित भये। चन्द्रमा रथ मध्य थाक्यो रासवश मोहन भये। और तरुफल और लागे और नयपल्लव कली। श्रीश्याम श्यामा रासनायक गोपिकागण मण्डली। रासरङ्ग रसअति बढ़ेउ मनगर्वित सुकुमारि। लेहु कन्ध प्रभु सों कहेउ अन्तर भये देत्यारि। अन्तरभये देत्यारी। श्रीराधा संगते डारी। प्रभुसन्तन के सुखकारी। दुष्टनमन गर्व प्रहारी। भक्तवत्सल बपुधारी। धरणि उधारन कारी। चहूं दिशि चितवत चक्रतह्वै सङ्ग श्याम कहुँ नाहिं। आपु अकेली देखिकै मुरछिपरी धरमांहिं। धरमुरछि परतनहिंजानी। दुखसागर मांझ समानी। हाकृष्णा कृष्णा रटलागी। हरि अधर पान अनुरागी। ललिता गहिबांह जगाई। तबचौंकि उठी अकुलाई। उह कहति उठी हरिआये। ज्यों मनोरंक निधिपाये। सावधान तेहिक्षण भई नयना दयेउघारि। ललिताको मुखदेखिकै भई बिरहतनभारि। अति बिकल भई बेहाला। कहुँ देखेहैं मदन गोपाला। मोहिं त्यागि गये नँदलाला। तन करत मदन जंजाला। मुख सुंदर बचन रसाला। बर लोचन कमल बिशाला। मिलि करहु न मोहिं निहाला। ढूंढति बन बीथिन ताला। चित और भयेहैं कृपाला। तू देखेहैं दीनदयाला। जहां तहां खोजत फिरी चरण चिह्न कहुँ पाई। बारबार अवलोकिकै नयन चले ढहराई। बनबेली बूझत जाई। कहुँ नाहिंन मिले कन्हाई। चम्पक बकुलबट बूझे। तन बिरह बिथा हियगूझे। खोजे बनबनबारम्बारा। कहिकहिसुख नन्दकुमारा। सोहिनँदनन्दन क्यों त्यागी। मैं अतिही परमअभागी। नँदनन्दन बशप्रेमके प्रकटभये तेहि काल। प्यारीकोमिलि सुखदियो मेटिबिरहदुखजाल। मिलिमनमोहन ब्रजबाला। फिरि आपुहिभये कृपाला। पुनि रासमण्डल बिधिठायो। सबकामहंददुखकाट्यो। सुरअसुर नारिनरमोहे। यहिरस रास बिलास सबपोहे। दिबिदुन्दुभि देव बजाई। सुरनारि सुमनबरषाई। जैधुनि लोकनिगाये। यशतिहुं भुवनभरिछाये। रसरासरसिक सुख

भारी। श्रीराधामोहनप्यारी। सहसानन कहत नआवै। जेहि निगम नेति नितगावै। सुख आनँद पुञ्ज बढ़ायो। कोजात सूरपैगायो१३॥

यहां ते ठाकुर ठकुराइन को बिवाह॥

राग सूहो॥ व्रतधरि देवी पूजी। जाकेमन अभिलाष न दूजी। दीजै नंदपूत पतिमेरे। जोपै होयँ अनुग्रह तेरे। तब करिअनुग्रह बरदियो। जब बरष भरिलो तपुकियो। त्रैलोकसुंदरपुरुष भूषण रूपगुण नाहिनबियो। इतउबटिखौरिशृङ्गारि सखियनि फिरिकुंवरि चोरीअनी। जाहितकिये व्रतनेम संयम सोघरी बिधना ठनी। मुकुट रचिमोर बनायो। माथेधरि हरिबर आयो। तन श्यामल पीत दुकूले। देखत दामिनि घनभूले। दामिनी घन कोटिवारों जब निहारों मुखछबी। कुण्डल बिराजत गण्डमण्डल नहीं शोभा शशिरबी। और कौन समान त्रिभुवन सकलगुण जामाहिँ। मनुमोर निर्त्तत संग डोलत मुकुट की परछाहिँ। गोपी सबन्योते आईं। मुरलीधुनि पठै बुलाईं। बिधि आनँदमङ्गलगाये। नवफूलन मण्डपछाये। छायेजुफूलन कुञ्जमण्डल पुलिनमें बेदीरची। बैठेजु श्यामा श्यामबर त्रैलोक की शोभाखची। उत कोकिला गणकरैं कुलाहल इत सकल ब्रजनारि। आईंजु न्योते दुहूंदिशाते देति आनँद गारि। रासमण्डल भुजजोरी। श्याम साँवरे राधागोरी। पाणिग्रहण बिधिकीनी। तबमण्डलभ्रमि भाँवरिदीनी। दीनी जो भाँवरि कुञ्ज मण्डल प्रीतिगाँठि हृदय परी। शरद निशि पून्यो बिमलशशि निकटवृन्दा शुभघरी। गायेजुगीत पुनीत बहुबिधि वेदरुचि सुन्दरधुनी। नन्दसुत वृषभान तनया रासमें जोरीबनी। मैमन्मथ सैन बराती। द्रुम फूले नानाभाँती। सुरबन्दीजन यशगाये। तहँ मघवा यन्त्र बजाये। बाजहिँजे बाजन सकल नभसुर पुहुप अंजुल बरषहीं। दिव्यदिव्य बिमानबैठे शब्द जैकार हरषहीं। सूरदासहिभयो आनँद पूजीमनकी साधा। मदनमोहनलाल दूलह दुलहिनी श्रीराधा १४॥ राग सारंग॥ कान्ह तुम्हारी माय महाबल सबजग अपबश कीन्हेहो। नेकचितै मुसकाय उनसबको मनहरि लीन्हेहो। कछुकुल कर्म न जानिये वाकेरूप सबै रँग राचेहो। जिनुदेखे सममुख सुने जगत न कोऊ बाचेहो। इन बातनि लाजनि मरिये कोउ पुरुष न बाँचत

पावेहो। जो कोऊ सोवै सुखमें तेहि सोवत जाय जगावेहो। पहिरे
राती कंचुकी शिरश्वेत उपरना सोहैहो। कटिनीतो लहँगा करेउसो
को जो निरखि न मोहैहो। चोरी चतुरानन ठगोसब अमर उपरना
रातेहो। अन्तरौटा अवलोकिके सबअसुर महामद मातेहो। एकनि
दै दरशनठगे निशि एकनिलैसँग सोवैहो। एकनिले मन्दिर चढैरचि
एकनि बिरचि बिगोवै हो। अकथ कथा वाकी सबै कछु कहैं तो
कहिय न जाईहो। छैलनि के सँगयों फिरै जैसे तनतन सँग परिछाँई
हो। मुनिताकी सब अपतई शुक सनकादिक मुनिजागेहो। नेकदृष्टि
पथ परिगई शंकर शिरटोना लागेहो। योग युगति बिसरी सबै उर
काम क्रोध मद जागे हो। लोकलाज सब छाँडिके उठिधाय चलेअँग
लागेहो। और कहाँलगि बरणिये भरिजल थल जिवजेतेहो। चतुर
शिरोमणि श्यामसुनो गनिकहैं कहाँलगि केते हो। यहि लाजनि
मरिये सदाजब सबकोउ कहततुम्हारीहो। सूरदासप्रभु बरजिके किनि
मेटहु कुलकी गारीहो १५ ॥ राग बिहागरो ॥ नहिंछूटै मोहन डोरनाहो।
प्रथम ब्याहकी रहेउ हो कङ्कणाचार बिचारि। रचिरचि पचि पचि
गूथि बनायो नवल निपुण ब्रजनारि। बडेहोहु तब छोरियोहो सुनिये
गोकुलराय। कै करजोरि करौ बिनतीकै छुवहु श्रीराधाजूकेपाय।
यह न होय गिरिको धरिबो हो सुनहु कुंवर गोपिननाथ। आपुन को
तुमबडे कहावत काँपन लागेहो दोउहाथ। बहुरि समेटि ब्रज सुन्दरी
मिलि दीनि गाँठि छुराय। छोरहु बेगि कि आनहु अपनी यशुमति
माय बुलाय। पचिहारे केसेहु न छूटत बँधी प्रेमकीडोरी। देखिसखी
यहरीति दुहुन की मुदितहँसी मुखमोरी। अबजनि करहु सहाय स-
खीरी छाडहु सकल सयान। दुलहिनि छोरि दुलहको कङ्कण बोलि
बबा वृषभान। कमल कमल करनि एहो पानिपिया के लाल। अब
कबिसाँचे से लगेरोम कटीले नाल। लीलारास गोपाल की जोरे र-
सिक बखान। सदारहे यह अबिचल जोरी बलिबलि सूर समान१६
राग सारंग ॥ तुमसों गारिकहा कहिदीजै हो यादव नंदने। युगबापनाउँ
कौनको लीजैहो यादव नंदने। युगबाप जाकोनाम कहिये जाति गो
तन जानिये। बिनुरूप बिन अनुहारि कैसेकै बियाद बखानिये। सब

सोधिरहे न सोविपायो बिनुसुने कहकोजिये। बलिजाउँ यादवराय तुमकोगारि कहकोहि दीजिये। तुम्हरीमाय सब कुलखोयेहो यादव नन्दने। सो को जो बलनविगोये हो यादव नन्दने। सोकोजुबलकरि ना विगोवै फिरति निशिबासर बनी। शिर श्वेत कटि पटलाल लहँगा नीलचोली बिनतनी। चलीमन्द मुसुकाय सुरनर नागभुज भीतरलिये। बलिजाउँ यादवनाथ तुम्हरी मायकुल बिनतुम किये। वै तौ भूलिरहे सब भोगी हो यादव नन्दने। बशकिये बोलन योगी हो यादव नन्दने। बशकिये बोलन बहुत योगी छत्रपतिकेते कहैं। और अगजग जीव जल थल बनके बुधिनहिँ सुथिल हैं। अतिखरे आतुर काम कातर देखिनित कौतुक नये। अकुलाय निशि दिन सङ्गताके फिरत भ्रम भूले भये। कछु कही न जायगति ताकी हो यादव नन्दने। वहफिरति सदन मद छाकीहो यादवनन्दने। फिरति है सद मदन छाकी निलज कुच ढाकेनहीं। नित निरखि निरखि जु छैलशोभा विकल ह्वै धावै तहीं। यक गिरिपरत अचेत उरझल मोह मद मनसा गही। मुखबरणि कथा अनेकताकी कहतहू न बनैकही। वह तौ नित नूतन रति जोरै हो यादव नंदने। चितवनि में चितचोरै हो यादव नंदने। चारु चितवनि चित चोरावै चलतधर धीरन धरै। फिरि नेमकि चोपलगाय चञ्चलतनहिँ तनअन्तरकरै। यकभौंहकी छवि निरखि ऐसो कौनजो ब्रततेटरै। यहिभाँति परम सुजान सुंदरि नित्य नूतन रतिकरै। अतिहिकहियति परम सयानेहो यादव नंदने। हो ठाकुर सब जग जाने हो यदव नंदने। सबही के ठाकुर कृपानिधि सुयश सब जग गाइये। अवलोक को उपहास आपुन बरजि गारि मिटाइये। कहकहैं यहचोप माधव और अंत न सूझई। प्रभुसूर चतुर सुजान यहिकुल अब न ऐसी बूझई १७॥ राग बिहागरो ॥ दुलह देखोंगी अबजाउँ। उतरे संकेत बट केहि मिस देखन पाउँ। फूलगंधि माला जैसे मालिनि ह्वै जाउँ। नँदनंदन प्यारेको बिरिजा करिलेउँ। तम्बोलिनि ह्वै जाउँ निरखि नयनन सुखदेउँ। वृन्दावनचन्दको मैं भूषण गढिलेउँ। सुनारिनि ह्वै जाउँ निरखि नयनन सुखदेउँ। चंदन अरगजा सुगंध केशरि घरलेउँ। गंधिनि ह्वै जाउँ निरखि नयनन सुख देउँ।

सनकादिक नारदमुनि शिव बिरञ्चि जाने। दुदुन्दुभी मृदङ्ग बाजेबर निशाने। तोरणा जब आयेहरि कीन्हो उछाहु। ब्रजको सबरीतिभई बरसाने ब्याहु। डोरनकर छोरनको आई सकल बधाई। फूली फिरैं सहचरी उर आनंद न समाई। गजवरगति आवनि पग धारनि गनि पाउ। लटकत शिर सेहरो मनो शिखी शिखगड सुभाउ। सोहत सँग नारि अङ्ग सबै छबि बिराजै। गजरथ बाजी बजाय चवँर छत्रसाजै। दुलहिनि वृषभानसुता अङ्गअङ्ग भ्राजत। सूरदासप्रभु दूलह देखौ ब्रज-राज राजत १८ वृषभान नन्दिनी अति छबि बनी। श्रीवृन्दाबनचंद राधा निर्मल चाँदनी। श्यामअलकबिच मोतीद्युतिमङ्गा। मनहुँ झलमलत शिवशीश गङ्गा। श्रवण ताटङ्कसोहै चिकुरको कांति। उलटि चल्योहै राहुचक्रकी भाँति। गोरेललाट सोहै सेंदुरको बिन्दु। शशिकी उपमादेति कबिको होयनिंदु। चपल उनीदे नयनलागत सुहाये। नासिका चम्पक कलीकोहै अलिधाये। बदन मञ्जन ते अञ्जन गये दूरी कलङ्क रहित शशि पुनि कलापूरी। शिरिते लटाभई यह हम सुनी। कञ्चन ताते ह्वैगिरि भये पुनी। कञ्चन से तनसोहै नीलाम्बर धारी। कुहूनिशामध्यमनो दामिनि उजियारी। नखशिखशोभामोपर बरणि न जाई। तुमसी तुमहीं राधा श्याम मनभाई। यहछबि सूरदास सादरह्वै बानी। नँदनंदन राजाधिराज राधिका देइरानी १९॥ राग देव गन्धार॥ दोउराजत श्यामा श्याम। ब्रजयुवती मगडली बिराजति देखत सुरनर बाम। धन्यधन्य वृन्दाबन को सुख सुरपुर कौनेकाम। धनि वृषभान सुता धनि मोहन धनि गोपनिको नाम। इनकीको दासी सरि ह्वै है धन्य शरद की याम। कैसेहु सूर जन्म ब्रज पावै यह सुख नहिँ तिहुँधाम २०॥ रागकेदारो॥ बिराजत मोहन मगडलरास। श्यामा श्याम सुधारस मानहुं क्रीडत बिमल बिलास। ब्रजबनिता सबयूथ मंडली मिलिकर परमकरी। भुजमृणाल भूषणयुत तोरण कंचनखम्भ खरी। मृदुपद न्यास मंद मलयानिल बिगलित शीशनिचोल। पीत अरुण सित श्वेतध्वजा चलशीत समीर झकोल। गिरत कुसुमकबरी शीशनते टूटतहै उरहार। शरदबुंद शिशु बरष चली मनो जहां तहां जलधार। श्रुति कुगडल वर गिरत न जानत हृदय अनंदभरे। चरण

परसते चलत चहुं दिशि मानहुं मीनतरे। दशनकुन्द दाडिम द्युतिदामिनि प्रकटित अरु दुरिजात। अधरबिम्ब मधुर अमीकन प्रीतम बदन समात। सुंदर बदन बिलोल बिलोचन अति गहि रङ्गरँगे। पुष्कर पुंडरीक पर मानहुं खञ्जन युगुल खगे। बिपुल पुलक कंचुकि बँद टूटे हृदय अनन्दभये। कुचयुग चक्रबाक करुणा मिटि अन्तर रैनि गये। पृथुनितम्ब कर भँवर कमल पद नख मणि चन्द अनूप। मनहु लुब्ध भयोबारि जलदते इन्दुकिये दशरूप। चरण रुनित नूपुर कटिकिंकिन कंकण करतल ताल। तरुणतनय समेत सहसमुख मुखरित मधुर मराल। तालमृदङ्ग उपङ्ग बांसुरी उपजत ताल तरङ्ग। निकट बिटपद्विज कुल कूजित मनो पैबल बढ़त अनङ्ग। सूरबिनोद सहित सुरललना मोहे खग नरनाग। बिथक्यो उडुपति चयोम बिम्बगति श्री गोपाल अनुराग २१॥ रागसूहो॥ रास रसिक गोपाल लाल ब्रजबाल सङ्ग बिहरत वृन्दाबन। सप्तसुरनि मुरली बाजति राजति अधरनि धुनि सुनि मोहे सुरनरगंधर्बगन। तरुणकान्ह तरुतमालके तटतरुणि गोपिकायूथ निकटपट पीतांबर नीलांबर तनतन। नृत्यकरत उघटत संगीतपद ताथेइ थेईता कहत सूरप्रभु निरखि परस्पर रीझत मन मन २२॥ रागमलार॥ मानो माई घनघन अन्तर दामिनि। घन अन्तरशोभित हरिभामिनि। यमुना पुलिनमालिका मनोहर शरद सुहाई यामिनि। सुंदर शशिगुण रूप रागनिधि आनँद मन बिश्रामिनि। रचे रासमिलि रसिक राय सों भेदभई बरचामिनि। रूपनिधान श्याम घन सुन्दर अङ्ग अङ्ग अभिरामिनि। खञ्जन मीन मयूर बिहँसि पिक भेद भई राजगामिनि। कोगति गनै सूरनागर सँग काम बिमोहेउ कामिनि २३॥ रागबिहागरो॥ आजु निशि शोभित शरद सुहाई। शीतलमन्द सुगन्ध पवनबहै रोम रोम सुखदाई। यमुना पुलिन पुनीत परमरुचि रचिमण्डली बनाई। राधाबाम अङ्गपर करधरि मध्यहि कुंवर कन्हाई। कुण्डलसँग तांटक एकभये युगुल कपोलन झाई। एक उरग मानो गिरिऊपर द्वै शशि उदय कराई। चारि चकोर परे सनुफन्दा चलत ह्वै चञ्चलताई। उडुपङ्गति जति रहेउ निरखि लजि सूरदास बलिजाई २४॥ राग केदारो॥ आजु हरि ऐसो रास रच्यो। श्रवण सुन्यो न कबहुँ अवलोक्यो यह

सुख सुखहि सच्यो। प्रथमहिं सबै समाज साजिसुर सब मोहे कोउ न बच्यो। सकहिसुर सुमार थावरचर कोजानै कोकबहिं नच्यो। गत गुणानन्द अभिमान अधिकरुचि लै लोचन मन तहइँ खच्यो। शिव नारद शारदा कहतयों हम इतने दिनबाद पच्यो। निरखि नयनरस रीति रजनिरुचि कामकटक फिरि कलहमच्यो। सूरधनुष धीरज न धरेउ तबउलटि अनङ्ग तच्यो २५ आजुहरि अद्भुत रास उपायो। सकहि सुर सब मोहितकीने मुरलीनाद सुनायो। अचलचले चल थकितभये सब मुनिजन ध्यान भुलायो। चंचल पवन थक्यो नहिं डोलत यमुना उलटि बहायो। थकित भये चन्द्रमा सहित मृग सुधासमुद्र बहायो। सूरश्याम गोपिन सुखदायक लायक दरश दिखायो २६ ॥ रागसोरठ ॥ मोहन यह सुख कहांधरेउ। जो सुखरास रैनि उपजायो त्रिभुवनमनहिं हरेउ। मुरली शब्द सुनतऐसो को जो व्रतते न टरेउ। बचे न कोउ मोहित सबकीन्हें प्रेम उद्योत करेउ। उलटि काम तन काम प्रकाश्यो अद्भुतरूप धरेउ। सूरदास शिव नारद शारद कहत न कहेउपरेउ २७ ॥ रागबिहागरो ॥ आजुनिशि रास रंग हरि कीनो। व्रजबनिता बिचश्याम मंडली मिलि सबको सुख दीनो। सुरललना सुरसहित बिमोहे रचेउ मधुर सुरगान। निर्त्तकरतउघटत नानाबिधिमुनि धुनि बिसरेउध्यान। मुरली सुनत भये सब व्याकुल नभधरणी पाताल। सूरश्याम को कौन कियेबश रचि रचि रासरसाल २८ ॥ रागकेदारो ॥ रासरस मुरलीही ते जान्यो। श्यामअधर पर बैठि नादकियो मारग चन्दभुलान्यो। धरणी जीव जल थलकेमोहे नभमण्डल सुरथाके। तृण द्रुम सलिल पवनगति भूल्यो श्रवण शब्द परेउजाके। बचेउ नहीं पाताल रसातल कितिक उदयलोंभान। नारद शारद शिवयह भाषत कछु तन रहेउ सयान। यह अपार रसरास उपायो सुनो न देख्यो नयन। बन मृग धुनि सुनि सुनि ललचान्यो श्यामअधर सुनिबैन। कहतरमासों सुनिसुनि प्यारी बिहरत हैं बनश्याम। सूरकहा हमको ऐसोसुख जो बिलसत ब्रजबाम २९ जीती जीती हारण बंशी। मधुकरसूत बदत बन्दी पिक मागध मदन प्रशंशी। मथ्यो मान बलदर्प महीपति युवति यूथगहि आन्यो। बनको दण्डब्रह्मण्ड भेदकरिसुरसन्मुख शरतान्यो। ब्रह्मादिक शिव

सनक सनन्दन बोलत जे जे आने। राधापति सर्वेश अपने दै हित ता हाथ निकाले। खगमृग मीन सुमारकिये सबजड़ जंगम जितभेष। छाजतछत मदमोह कवच कटि तजत न नयन निमेष। अपनी अपनी ठकुराईनकी काढ़तिहैं ध्रुवरेष। बैठि पीठि पानगरजतिहैं देखि सबन अवशेष। रविकैरथ लै दयोसोमको षटदश कला समेत। रचेउ यज्ञ रसरास राजसू वृन्दाबिपिन निकेत। दानमान परधान प्रेमरस बढ़ेउ माधुरी हेत। अधिकारी गोपाल तहांहै सूरसबन सुख देत ३०॥

यहांते श्रीगोपालजी के रासबिलासकी लीला॥

रागकेदारो॥ शरद सोहाई आईराति। चहुंदिशिफूलिरहीबन जाति। देखि श्यामके मनसुखभयो १ शशिगो मंडित यमुनाकूल। हरषित बिटप सदाफलफूल। त्रिविधपवन दुखदवनहै २ श्रीराधारवण बजायो बेनु। सुनिध्वनि गोपिन उपज्यो मैनु। जहां तहां ते उठिचलीं ३ चलत न काहूदियो जनाव। हरिप्यारेते बाढ़ेउ भाव। रासरसिकगुण गावहीं ४ घरडर बिसरी बढ़ेउ उछाह। मनचिन्त्यो पायोहरिनाह। ब्रज नायक सुन्यो ५ पतिसुतको छांड़ी हमआश। गोधन भतीकियो निराश। सांचोहेत हरिसोंकियो ६ खानपानतनकरन सम्हार। हिलगि छांड़ायोगृह ब्यवहार। सुधिबुधिमोहनहरिलियो ७ सज्जन अञ्जन अङ्ग शृङ्गार। पट भूषण छूटो परिवार। रासरसिक गुणगावहीं ८ एक दुहावतते उठिचली। पतिसेवा कछुकरी नभली। उत्कंठा हरिसोंबढ़ी ९ उफनत दूध न धरेउ उतारि। सीपी दुलहा चूलहैं डारि। पुरुषतजें जेंवत हुते १० पय प्यावत बालक धरिचली। पतिसेवा कछुकरी न भली। धरेउ रहेउ भोजनभलो ११ तेल फुलेल उबटना भूल। भाग्य न पायो जीवन मूल। रासरसिक गुणगायहीं १२ अंजन एक नयन बिसरेउ। कटिकंचुकि लहँगा उरधरेउ। हारलपटे चरण सों १३ श्रवणनि पहिरे उलटेहार। ताऊपर चौकी शृङ्गार। चतुर चतुरता हरिलिये १४ जाको मनमोहन हरिलियो। ताको काहु न कछू कियो। ज्योंपतिसों प्रिय रुचिकरै १५ श्यामहिं सांचेउ मुरली नाद। सुनि धुनि छांड़ेउ बिषय सवाद। रासरसिक गुण गाय हीं १६ मातु पिता पति रोंकी आनि। सही न प्रिय दरशनकी हानि। सबहिनको अपमानकरि १७

जाकोमन जासों अटक्यो। रहत न ताबिनु कोटि हटक्यो। कठिन प्रीति को फन्दहै १८ जैसे सरिता सिंधुहि भजैं। कोटि गिरि भेदत नाहिंन लजैं। ऐसी गति उनकी भई १९ इकजो गृहते निकसी नहीं। हरि करुणाकरि आयेतहीं। रासरसिक गुणगाय हीं २० नीरस कविन कहैं रसरीति। रसकी लीला रसपरतीति। यहमति शुकमुख जानिबी २१ ब्रजबनिता आई पियपास। चितये नयनन भृकुटि बिलास। हँसि पूंछी हरिमानदै २२ नीकेआई सारग मांझ। कुलकी नारि न निकसै सांझ। कहाकहैं तुम जो गहो २३ ब्रजकी कुशल कहो बड़भाग। क्यों तुम छांड़े सुवन सुहाग। रासरसिक गुण गाय हीं २४ अजहूँ फिरि अपने गृहजाहु। परमेश्वरकरिमानोनाहु। बनमें निशि बसियेनहीं २५ श्रीवृन्दावन देखयो आय। सुखद कुमोदिनि प्रफुलित जाय। यमुना जलही करघना २६ घरमहँ युवती धर्महिं फबै। ताबिनु सुतपति दुखितै सबै। यह बिधना रचना रची २७ भर्ताकी सेवा सतसार। कपट तजे झूठे संसार। रासरसिक गुणगायहीं २८ वृद्ध अभोगी जो पतिहोय। मूरख रोगी तजे न कोय। पतित बिलक्षकरि छांड़िये २९ तजि भर्ता रहि जारहि लीन। ऐसी नारि न होयकुलीन। यश बिहीन नरकहि परै ३० बहुतकहा समुझाऊँ आजु। हमहूँ कछुकरिबे गृहकाजु। तुमते को अति जानिहै ३१ श्रीमुख वचन सुनत बिलखाय। व्याकुलधरणि परीं मुरझाय। रासरसिक गुण गाय हीं ३२ दारुण चिन्ता बढ़ी न थोर। क्रूर बचनकहै नन्दकिशोर। और शरण सूझै नहीं ३३ रुदन करत नादबढ़ो गँभीर। हरिकरिया नहिँजानै पीर। कुचयम्भनि अवलम्बहै ३४ तुम्हरी बहुत पियाहै प्राण। बिनुअपराध न करहु निराश। कै तब रुखाई छांड़िये ३५ निठुर बचन अनि बोलहु नाथ। निजदासी जनि करहु अनाथ। रासरसिक गुणगायहीं ३६ मुखदेखत सुखपावत नयन। श्रवण सिरात सुनत मृदुबैन। सैननहीं सर्बस हरे३३७ मन्द हँसनि उपजायो काम। अधर सुधा धुनि करि बिश्राम। बरषि सींचि बिरहानला ३८ जबते हम देखे ये पाय। तबते और न कछु सुहाय। कहौ घोय हम जाहिं क्यों ३९ सजन बंधुकी करिहैं कानि। तुम बिछुरत पिय आतमहानि। रासरसिक गुणगायहीं ४० वे

जाय बोलाई नारि। सहिआई कुल सबकीगारि। मन मधुकर लम्पट भयो ४१ सोऊ सुन्दरि चतुर सुजान। आरजपंथ तजैसुनि गान। तिन देखत पुरुषउ लजै ४२ बहुत कहा बरणों यहरूप। और न त्रिभुवन सरिस अनूप। बलिहारी या रातिकी ४३ सुनि मोहन बिनती देकान। अपयश होय किये अपमान। रासरसिक गुणगायहैं ४४ तुमहमको उपदेशेउ धर्म्म। ताको कछू न पायोमर्म्म। हम अबलामति हीनहैं४५ दुखदाता सुतपति गृह बन्ध। तुम्हरि कृपा बिन सबजग अन्ध। तुमते प्रीतम और न कोय ४६ तुमसों प्रीति करहिं ये धीर। तितहिँन लोक वेदकी पीर। पाप पुराय तिनके नहीं४७ आस पास बंधी हम बाल। तुमहिँ बिसुखहूहैं बेहाल। रासरसिक गुणगायहैं ४८ बिरद तुम्हारो दीनदयाल। करसों कर धरि करि प्रतिपाल। भुजदराडनि खराडहु व्यथा ४९ जैसे गुणीदेखावे कला। कृपिरा कबहुँ नहिं माने भला। सदय हृदय हमपर करो ५० ब्रजकी लाज बड़ाई तोहिं। करहु कृपा करुणा करिजोहिं। तुमहिँ हमारे गतिसदा ५१ दीनबचन जब युवतिन कहे। सुनत श्रवण लोचन जलबहे। रासरसिक गुणगायहैं५२ हँसिबोले हरिबोली बोडि। करजोरे प्रभुता सबछोंडि। हौंअसाधु तुम साधुहौ ५३ मोकारण तुमभई निशंक। लोकवेद बपुराको रंक। सिंह शरण जम्बुक बसै ५४ बिनादान करिलीन्हो मोल। करत निरादर भई नलोल। आवहु हिलिमिलि खेलिये५५ ब्रजयुवतिन घेरेब्रजराज। मनहुँ निशाकर किरणि समाज। रासरसिक गुणगाय हैं ५६ हरि मुख देखत फूलेनयन। उर उमँगे कछु कहत न बेन। श्यामहिं गावत कामबश ५७ हँसत हँसावत करि परिहास। मनमें कहतकरैं अबरास। अञ्चलगहि चञ्चल चल्यो ५८ ल्यायो कोमल पुलिन सम्हारि। नख शिख भूषण अङ्ग सँवारि। पट भूषण युवतिन सजे ५९ कुच परसत पुजई सबसाध। रससागर मनो मगन अगाध। रासरसिक गुण गाय हैं ६० रसमें बिरस जु अन्तरध्यान। गोपिनके उपजै अभिमान। बिरहकथा में कौनसुख६१ द्वादश कोश रास परमान। ताको कैसे होत बखान। आसपास यमुना झिली ६२ तामें मानसरोवर ताल। कमल बिमल जल परमरसाल। सेवहिं खग मृग शुकभरे ६३ निकट कलप

तरु बंशीबटा। राधारति गृहकुंजन अटा। रासरसिक गुणगायहैं ६४ नवकुंकुम रज वर्षत जहां। उड़त कपूर धूरि तहँतहां। और फूल फल को गनै ६५ तहँ घनश्याम रास रस रचेउ। मरकत मणि कञ्चन सों खचेउ। अद्भुत कौतुक प्रकट कियो ६६ मण्डलजोरि युवति जहँबनी। दुहुँदुहुँ बीच श्यामघन धनी। शोभा कहत न आवई ६७ घूंघुट मुकुट बिराजत शीश। शोभित शशि मनो सहस बतीश। रासरसिक गुण गायहैं ६८ मणि कुण्डल ताटंक बिलोल। बिहँसत लज्जित ललित कपोल। अलक तिलक बेसरि बनी ६९ कंठ श्री गजमोतिनहार। चचरि चुरी किंकिणि झनकार। चौकी चमकत उरलगी ७० कौस्तुभमणि राजति रुचिपोति। दशन दमक दामिनिते जोति। सरस अधर पल्लवबने ७१ चिबुक मध्य श्यामल रुचि बिन्द। देखि सबनि रीझे गोबिन्द। रासरसिक गुणगायहैं ७२ सबनि बिमान गगनभरि रहे। कौतुक देखनसुर उमहे। नयन सुफल सबकेभये ७३ बाजे देवलोक निशान। बर्षत सुमन करत सुर गान। मुनि किन्नर जय धुनि करैं ७४ युवतिन बिसरो पतिगति गेह। प्रेममगन सब सहित सनेह। यह सुख हमको हो कहां ७५ सुन्दरता सब गुण की खानि। रसना एक न परत बखानि। रासरसिक गुणगायहैं ७६ नीलकंचुकी साडन लाल। भुजनि नवग्रहआ उर बनमाल। पीतपिछौरी श्यामतन ७७ अँगुरिन मुँदरी पहुँचीपानि। कटिकटि कछनी किंकिणिबानि। उर नितम्ब बेनीरुरै ७८ नाना बंधन सुघन जघन। पायन नूपुर बाजत सघन। नखन महाउर खिनि रहेउ ७९ राधामोहन मण्डल मांझ। मानहुँ राजित संध्या सांझ। रासरसिक गुण गाय हैं ८० पग पटकत लटकत लटबाहु। मटकत भौंहन हस्त उछाहु। अञ्चत चञ्चत झूमका ८१ निरखत दुरि दुरि नयनन सैन। मुख मुख बिहँसि कहत मृदुबैन। मिश्रित गंडप्रस्वेदकन ८२ चौरी डोरी बिगलित केश। झूमत लटकत मुकुट सुदेश। फूल खसत शिरते घने ८३ करुणाबंधु पावत यशगाय। रीझत मोहन कण्ठलगाय। रासरसिक गुणगायहैं ८४ बाजत भूषण तालमृदङ्ग। अङ्ग देखावत सरस सुधङ्ग। रङ्गरहेउ न कहेउपरै ८५ नूपुर किङ्किणि कञ्चन चुरी। उपजत मिश्रित धुनि माधुरी। सुनत

सिराने सबनसन ८६ मुरली मुरुज रबाब उपङ्ग । उघटतशब्द बिहारी संग । नागरि सबगुण आगरी ८७ गोपीमण्डल मण्डितश्याम । कनक नीलमणि जनु अभिराम । रास रसिक गुण गायहीं ८८ तिरप लेति सुन्दरि भामिनी । मनहुँ बिराजत घन दामिनी । या छबि की उपमा नहीं ८९ राधाकी गति परत न लखी । रससागर कौलौं बानखी । बलिहारी वा रूपकी ९० लेतिसुघरऔघर गतितान । देचुम्बन आकर्षति प्रान । भेंटतिमेटति दुखसबै ९१ राखति पियहि कुचनिबिच आनि । देअधरामृत शिरपर पानि । रासरसिक गुणगायहीं ९२ हर्षित बेणु बजायोछैल । चन्दहि बिसरी नभकीगैल । तारागण मनमें लजे ९३ मोहनधुनि बैकुण्ठहि गई । नारायण सुनि प्रीति जो भई । कहत बचन कमलासुनों ९४ कुञ्जबिहारी बिहरतदेखि । जीवनजन्म सुफलकरि लेखि । यहसुख तिहुँपुरहै कहाँ ९५ वृन्दावन हमतेअति दूरि । कैसे धौं उड़िलागै धूरि । रास रसिक गुणगायहीं ९६ कोलाहल धुनि दुहुँदिशि जाति । कल्पसमान भई सुखराति । जीवजन्तु भै मत्तसब ९७ उलटि बहेउ यमुनाकोनीर । बालक बच्छ न पीवैंक्षीर । राधारमन ठगेसबै ९८ गिरिवर तरवर पुलकित गात । गोथन थनते दूधचुचात । सुनि खग मृग मुनिब्रत धरेउ ९९ सहिभली भूल्यो गति पवन । सोवतग्वाल तजत नहिँ भवन । रासरसिक गुणगायहीं १०० रागरागिनी मूरति मन्त । दूलह दुलहिनि सरस लसन्त । कामकला सङ्गीत गुरु १०१ सप्तसुरन की जाति अनेक । नीके मिलवति राधा एक । मनमोहेंपियको सुघर १०२ चोंद धुवनिके भेदअपार । नाचति कुअँरि सिलेझपतार । कहेउ सबैसङ्गीत में १०३ सरस सुलयधुनि उघटत शब्द । पिकनि रिझावति गावत सुपद । रासरसिक गुणगायहीं १०४ चलतसुलय मोहतिगज हंस । हँसत परस्पर गावतवंस । तानमान मृगमनथके १०५ रोरीचन्दन चर्चितबाहु । लेतसुबास पुलकतननाहु । देचुम्बन हरि सुखलियो १०६ श्यामल गौरकपोल सुचार । रीझि परस्परलेतउगार । एकप्राण द्वैदेहहैं १०७ नाचत गावतगुणकी खानि । श्रमितभये टेकतपियपानि । रासरसिक गुणगायहीं १०८ पियगावत अतिनादहिभेत । मोरचकोर फिरतसँगहेत । घन जुनहाईहै सनो १०९

कचकुच बिच दरशोहँसि श्याम। चलतभौंह नयनन अभिराम। अं-
गनकोटि अनङ्गछबि ११० हस्तकभेद ललित गतिलई। अञ्चलउडत
अधिक छबिभई। कुच बिगलित मालागिरी १११ हरि करुणाकरि
लई उठाय। पोंछति श्रमजल करदलगाय। रासरसिक गुणगायहीं
११२ तिनहिँ लिवाय यमुन जलगये। पुलिन पुनीत निकुञ्जनि ठये।
अङ्गश्रमित सबकेभये ११३ जैसे मदगज कूलविदारि। तैसेसँगलै खेलैं
नारि। शङ्क न काहूकीकरी ११४ मेटीलोक वेद कुलमेंड़ि। निकसि
कुंवरि खेल्योकरि मेंड़ि। फबीसबै जो मनधरी ११५ जलथल क्री-
डत ब्रीड़त नहो। तिनकी लीलापरत न कही। रासरसिक गुणगाय
हीं ११६ कहेउ भागवत शुक अनुराग। कैसे समुझे बिन बड़ भाग।
श्रीगुरु शुक कृपाकरी ११७ सूर आसकरि बरणयो रास। चाहतहीं
वृन्दावनबास। श्रीराधा इतनी करिकृपा ११८ निशिदिन श्यामासे-
वहुँ तोहिँ। यहे कृपाकरि दीजैमोहिँ। नवनिकुञ्ज सुखपुञ्ज में ११९
हरिवंशी हरिदासी जहाँ। हरिकरुणाकरि राखहु तहाँ। नित बि-
हार आधारदै १२० कहत सुनत बाढै रसरीति। वक्ताश्रोता हरिपद
प्रीति। रास रसिक गुणगाय हीं १२१॥

यहांते विष्णुपदबन्द रासलीला॥

राग टोड़ी॥ मुरली सुनत भई सब बौरी। मनहुँ परी शिर मांझ
ठगोरी। जो जैसे सो तैसेसोरी। तनुव्याकुल सबभई किशोरी। कोउ
धरणी कोउ गगन निहारैं। कोउकर करते बासनडारैं। कोउ मनहीं
मन बुद्धि बिचारैं। कोउ बालक नहिँ गोदसँभारैं। घरघर तरुणीसबै
बिततानी। सुतपति आरजपन्थ भुलानी। मन मन कहति कौन यह
बानी। ढूंढतिघरणी फिरतिबिततानी। लैलैनाम सबनकोटेरैं। मुरली
ध्वनि घरहीकेनेरैं। कोउजेंवत पतिही तनहेरैं। कोउ दधिमें जावनपय
फेरैं। कोउ उठिचली जैसही तैसे। फेरि आय घरही में पैसे। घरपाछे
मुरलीधुनि ऐसे। आँगन गये नहीं वहतैसे। गृह गुरुजन तिनहूँ सुधि
नाहीं। कोउ कतहूं कोउ कतहूं जाहीं। कोउ निरखतनहिँ काहूमाहीं।
मुरछै मदन तरुणि सबदाहीं। व्याकुलभई सबै ब्रजनारी। मुरली सों
बोले गिरिधारी। चलीं सबै जहँ तहँ सुकुमारी। उपजी प्रीति हृदय

हरि भारी। मुरली श्याम अनूप बजाई। बिधिमर्य्यादा सबनि भुलाई। निशि बनको युवती सबधाई। उलटे अङ्ग अभूषण नाई। कोउ चलि चरणाहार लपटाई। काहू चौकी भुजनि बनाई। अँगियाकटि लहँगा उरलाई। यह शोभा वरणी नहिंजाई। कोउ उठि चलीजातिहैं कोऊ। कोउ मगगई मिली मगकोऊ। सूरदासप्रभु कुंजबिहारी। शरद रास रसरीति बिचारी १॥ राग गोंडमलार॥ शरद निशि देखि हरि हर्षपायो। बिपिन वृन्दाबन सुभग फूले सुमन रास रुचि श्यामके मनहिंआयो। परम उज्ज्वल रैनि छिटकिरही भूमिपर सदा फल तरुणप्रति लटकि लागे। तैसोई परम रमणीक यमुना पुलिन त्रिबिधबहै पवन आनंद जागे। राधिकारवण बनभुवन सुख देखिकै अधरधरि बेणु सुललित बजाई। नाम लैलै सकलगोप कन्यानिके सबनिके श्रवण यह धुनि सुनाई। सुनत उपज्यो मैनपरत काहु न चैन शब्दसुनि श्रवणभई बि-कलभारी। सूरप्रभु ध्यानधरिकै चलीं उठिसबै भवनजन नेह तजि घोष नारी २॥ रागबिहागरो॥ मुरली सुनत उपजीबाय। श्यामसों अतिभाव बाढ्यो चलींसब अकुलाय। गुरुजनन सों भेदकाहू कहेउ नहीं उघारि। अर्द्ध रैनि चलीं धरणिते यूथ यूथनि नारि। नंदनन्दन तरुणिबोलीं शरद निशिके हेत। रुचिसहित बनकोचलीं वै सूर भईअचेत ३॥ राग गोंडमलार॥ सुनत मुरली भवन डर न कीन्हो। श्याम पै चित्त पहुँचाय पहिलेहिं दियो आप उठिचलीं सुधि मन न दीन्हो। कहति मनकामना आजु पूरणकरें नंदनन्दन सबनबन बोलाई। जानि लायकभजीतरुणी सुत पति तजी काहू नहिँलजी अति प्रेमधाई। तज्यो कुलधर्म गोधन धर्पई तजे पगीरस कथाबिन कछु न भावै। सूरप्रभुसों प्रेम सत्यकरिकै कियो मनगयो तहाँ इनको बुलावै ४॥ राग सोरठ मुरली मधुरबजाई श्याम। मनहरिलियो भवन नहिँभावत व्याकुल ब्रजकीबाम। भोजन भूषणकी सुधि नाहींतनकी नहींसम्हार। गृह गुरुलाज सुतनसोंतोड्यो डरींनहीं व्यवहार। करत शृङ्गार बिवशभई सुंदरि अंगनिगईभुलाय। सूरश्यामवनबेणुबजावत चितहितरासरमाय ५॥ रागगोंडमलार॥ करति शृङ्गार युवती भुलाहीं। अंग सुधिनहीं उलटे भरणधारहीं। एकएकनि कछु सुरति नाहीं। नैनअंजन अधरअंजही हरषसों श्रवण ताटंकउलटे

सँवारें। सूरप्रभु मुख ललित बेणु धुनि बन सुनत चलीं बेहाल अंचल न धारें ६ ॥ रागनट ॥ हरिमुख सुनत बेणु रसाल। बिरह ब्याकुलभई बाला चलीं जहँ गोपाल। पय दुहावत तजिचलीं कोउ रहेउ धीरज नाहिं। एक दुहनी दूधजावे को सिरावत जाहिं। एक उफनतहीचलीं उठि धरेउ नहीं उतारि। एक जेंवन करत त्यागयो चढ़े चूल्हे डारि। एकभोजनकरिसँपूरण गईं बैसेहित्यागि। सूरप्रभुके पास तुरतहिं मन गयो उठि भागि ७ ॥ रागरामकली ॥ मन गयो चित श्यामसों लागयो। नानाबिधि जेंवनकरि परुस्यो पुरुषजेंवावत त्यागयो। इकपय पिवत चलीं तजि बालक छोहनहीं तबकीन्हो। चलीं धाय अकुलाय सकुच तजि बोलि बेणु धुनि लीन्हो। यक पति सेवा करत चलीं उठिब्याकुल तन सुधि नाहीं। सूर निदरि बिधि की मर्य्यादा निशि बनको सब जाहीं ८ ॥ रागजैतश्री ॥ जबहिं बन मुरली श्रवण परी। चकृतभई गोपकन्या सब काम धाम बिसरी। कुल मर्य्यादि वेदकी आज्ञा नेकहु नहीं डरी। श्यामसिंधु सरिता ललना गण जलकी ढरनि ढरी। अँग मरदन करिबेको लागीं उबटन तेल धरी। जो जेहि भांति चली सो तैसेहिं निशि बन को जु खरी। सुत पति नेह भवन जन शंका लज्जा नहीं करी। सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हो नागर नवल हरी ९ ॥ रागकेदारो ॥ सुनि मुरली शब्द ब्रजनारि। करतअंग शृङ्गार भूली कामगयो तनु मारि। चरणसों गहि हार बांध्यो नयन देखति नाहिं। कंचुकी कटिसाजि लहँगा धरति हिरदय माहिं। चतुरता हरि चोरि लीन्ही भई भोरी बाल। सूरप्रभु रति काम मोहन रास रुचि नँदलाल १० ॥ रागरामकली ॥ ब्रजयुवतिन मन हरो कन्हाई। रासरंग रसरुचिमनआन्यो निशिबन नारिबुलाई। तप तनुगारिबहुतश्रम कीन्हो सो फल पूरण देन। बेणु नादरस बिबशकराईं सुनि धुनिकीन्होगौन। जाकोमनहरि लियो श्याम घन ताहि सँभारे कौन। सूरदासज्यों नारि कन्त मिलि करे सुभावे जौन ११ ॥ रागधनाश्री ॥ चलीं बन बेणु सुनत जब धाई। मात पिता बंधव यक त्रासत जातकहां अकुलाई। सकुच नहीं शंका कहुँ नाहीं रैनि कहां तुम जाति। जननी कहति दईकीघाली काहेकी इतराति। मानति नहीं और रिस पावति निकसी नातो तोरि। जैसे

जलप्रवाह भादौंकी सो कासके बहोरि। ज्यों कंचुरी भुअंगम त्यागत मात पिता यों त्यागे। सूरश्यामके हाथ बिकानी अलिअम्बुज अनुरागे १२ ॥ रागगोंडमलार ॥ सुनत मुरलीसकि न धीर धरिके। चलीं पितु मात अपमान करिके। लड़त निकसीं सबै तोरि फरके। भईं आतुर बदन दरश हरिके। जाहि जो भजै सो ताहि राते। कोउ कछू कहे सबनिरस बाते। ता बिना ताहि कछु नहीं भावे। और जो जोरि कोटिकदिखावे। प्रीति की कथा वह प्रीतिजाने। और करिकोटि बाते बखाने। ज्यों सलिलसिंधु बिन कहुँ न जाई। सूर वैसी दशा इनहुँ पाई १३ ॥ रागसूहो बिलावल॥ घर घरते निकसीं ब्रजबाला। लै लै नाम युवतिजन जनके मुरलीमें सुनिधुनि तत्काला। यक मारग यक घरते निकरी यक निकरति यकभई बेहाला। यक नाहीं भवननते निकरी तिनपे आये परम कृपाला। यह महिमा ओहीपे जाने कबिसों कहा बरणि यह जाई। सूरश्याम रस रीति रास सुख बिन देखे क्यों आवै गाई १४ ॥ रागगोंडमलार ॥ रास रस रीतिनहिं बरणि आवै। कहां वैसी बुद्धि कहां वह मन लहो कहां यह चित्त जियभ्रम बुलावै। जो कहौकौन मानै निगम अगम जो कृपा बिन नहीं या रसहिपावै। भावसों भजै बिन भावमें ये नहीं भावहीमें भाव यह मन बसावै। यहै निजमंत्र यह ज्ञान यह है ध्यान दरश दम्पति भजन सरस गाऊं। यहै मांगौं बार बारप्रभु सूरके नयन यहां रहैं बरु देह पाऊं १५ सुनत बन बेणु धुनि चलीं नारी। लोक लज्जा निदरि भवनतजि सुंदरी मिलींबनजायके बनबिहारी। दरशके लहत मन हर्ष सबके भयो परश की साधअति करतिभारी। यहै मन बच कर्म तज्यो सुतपति धर्म्म मेटिभवधर्मसहि लाज गारी। भजै जेहि भाव ज्यों मिलै हरि ताहि त्यों भेदभेदा नहीं पुरुष नारी। सूर प्रभु श्याम ब्रजबाम आतुर काम मिलीं बनधाम गिरिराज धारी १६ ॥ रागसूहो बिलावल ॥ देखि श्याममन हर्ष बढ़ायो। तैसिय शरद चांदनी निर्मल तैसोइ रासरंग उपजायो। तैसिय कनक बरण सब सुन्दरि यह शोभा पर मन ललचायो। तैसोइ हंससुता पवित्रतट तैसोइ कल्पवृक्ष सुखदायो। करो मनोरथ पूरण सबके यक अन्तर यकखेल उपायो। सूरश्याम रचि कपटचतुरई युवतिनके मन

यहभरमायो १७॥ रागबिहागरो ॥ निशिकाहेबनको उठिधाई। हँसिहँसि श्याम कहत हो सुन्दरिकी तुम ब्रजमारगहि भुलाई। गईरही दधि बेंचन मथुरा तहां आजु अवसेर लगाई। अति भ्रमभयो बिपिन क्यों आई मारग वह कहि सबनि बताई। जाहु जाहु घर तुरत युवतिगण खीझत गुरुजन कहि डरवाई। की गोकुलते गमन कियोतुम इनबातनिहै नहीं भलाई। यहसुनिकै ब्रजबाम कहतभईं कहा करत गिरिधर चतुराई। सूर नाम लै सब जनजन के मुरलीबारम्बार बुलाई १८यह जनि कहौघोषकुमारि। हमचतुरईनहीं कीन्हीतुमचतुरसब ग्वारि। कहां हम कहँ तुम रहीब्रज कहांमुरलीनाद। करतिहौ परिहास हम सों तजौ यह रसबाद। बड़ेकी तुम बहू बेटी नाम ले क्यों जाय। ऐसे निशि बन दौरि आईं हमहिं दोष लगाय। भली यह तुम करी नाहीं अजहुँ घर फिरि जाहु। सूर क्यों तुम निदरि आईनहींतुम्हरेनाहु १९ रागजैतश्री ॥ मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं। बारम्बार कमल दल लोचन यह कहिकहि पछिताहीं। उनके लाजनहीं बन तुमको आवन दीन्ही राति। सब सुन्दरी सबै नवयौवनि निठुर अहीर कि जाति। की तुम कहि आईकी ऐसेहिकीन्ही कैसीरीति। सूर तुमहिं यहनहीं बूझिये बड़ीकरी बिपरीति २०॥ रागरामकली ॥ अब तुम कही हमारी मानो। बनमेंआय रैनि सुखदेख्यो यहैलहो सुखजानो। अबऐसी कीजो जनि कबहूं जानतिहौ मनतुमहूं। यहधुनि सुनैकहूं जो कोऊ तुमको लाजरु हमहूं। हमतौ आजु बहुत शरमानो मुरली टेरि बजायो। जैसोकियो लहेउफल तैसो हमहीं दोष न आयो। अबतुम भवन जाहु पति पूजहु परमेश्वरकीनाईं। सूरश्याम युवतिनसों यहकहिकहि अपराध क्षमाई २१॥ रागसूही बिलावल ॥ यह युवतिन को धर्म न होई। धृग सो नारि पुरुष जो त्यागै धृग सो पति जो त्यागै जोई। पतिको धर्म्म यहैप्रतिपालै युवती सेवाहीको धर्म। युवती सेवातऊ न त्यागै जोपति कोटि करैअसकर्म। बन में रैनि बास नहिं कीजै देख्यो सबो वृन्दावन आय। विविध सुमन शीतल यमुना जल त्रिविध समीर परसि सुखदाय। घरही में तुव धर्म सदाई सुतपति दुखीहोत तुमजाहु। सूरश्याम यह कहि परमोधत सेवाकरौ जाहु घरनाहु २२॥ रागबिहागरो ॥ यहिबिधि

वेद मारग सुनौ। कपट तजिपति करो पूजा कहातुम जियगुनौ। कंथ मानहुँ भवन रोगी और नाहिं उपाय। ताहितजि क्यों बिपिन आईं कहा पायो आय। बिरध अरु बिन भागहूको पतितजैंपतिहोय। जो पतिहुमूरखहोय रोगी तजै नाहीं जोय। यहै मैं पुनि कहत तुम सों जगत में यहसार। सूरपतिसेवाबिना क्यों तरौगीसंसार२३ कहाभयो जो हमपै आई। हमहूंको बिधिको डरभारी अजहूं जाहु चँडाई। तजि भर्त्तार और जो भजिये सो कुलीन नहिंहोय। मरेनरक जीवतयाजगमें भलोकहै नहिंकोय। हम जो कहतसबैतुम जानति तुमहूंचतुरसुजान। सुनहुसूर घरजाहु हमहुँ घर जैहैं होत बिहान २४ ॥ रागबिलवल ॥ निठुर बचनसुनि श्यामके युवतीबिकलानी। चकृतभईंसबसुनिरहीं नहिंआवै बानी। मनो तुषार कमलन परेउ ऐसे कुम्हिलानी। मनो महानिधि पायके खोय पछितानी। ऐसी ह्वैगइतनदशा पियकी सुनिबानी। सूर बिरहब्याकुल भईं बूड़ीं बिनपानी२५ ॥ रागमारू ॥ श्यामउर प्रीतिमुख कपटबानी। युवतिब्याकुलभईं धरणि सब गिरगईंआशगइ टूटिनहिं भेदजानी। हँसतनँदलाल मनमन करत ख्याल ये भईं बेहाल ब्रजबाल भारी। रुदन जल नदीसम बहि चल्यो उरज बिच मनो गिरिफोरि सरिता पनारी। अंग थकि पथिक नहिं चलत कोउ पन्थके नांवरस भावहरि नहींआनै। सूरप्रभु निठुर करिआ कहा ह्वैरहे उनहिं बिन और को खेदजानै २६ ॥ रागजैतश्री ॥ निठुर बचन जनि बोलहु श्याम। आशनिराशकरो जनिहमसों ब्याकुल बचन कहति हैं बाम। अंतर कपट दूरिकरि डारो हम तन कृपा निहारो। कृपासिंधु तुमको सब गावत अपनोनाम सम्हारो। हमको शरण और नहिं सूझै कापै हम अब जाहिं। सूरदास प्रभु निजदासिन की चूक कहा पछिताहिं २७ रागगौरी ॥ तुम पावत हम घोष न जाहिं। कहा जाय हम लैहैं ब्रजमें यह दरशन त्रिभुवनमें नाहिं। तुमहूं ते ब्रजहितू कोउ नहिंकोटि कहो नहिं मानै। काके पिता मातहैं काके काहू हम नहिं जानै। काके पतिसुतमोहिं कौन के घरहै कहां पठावत। कैसो धर्म पाप है कैसो आश निराश करावत। हमजानैं केवल तुमहीं को और वृथा संसार। सूरश्याम निठुराई तजिये तजिये बचन बिसार २८ ॥ रागजैतश्री ॥ तुम

हो अन्तर्यामि कन्हाई। निठुर भये क्यों रहत इतेपर तुम नहिं जा-
नत पीर पराई। पुनिपुनि कहत जाहु ब्रजसुन्दरि दूरिकरौ पिय यह
चतुराई। आपुहि कही करौपति सेवा ता सेवा कोहैं हमआई। जो
तुमकहो तुमहिं सबछाजे कहा कहैं हमप्रभुहि सुनाई। सुनहु सूरप्रभु
यह तनुत्यागैं हमपैघोष्रगयो नहिंजाई २९ ॥ रागबिहागरो ॥ कैसे हमको
ब्रजहि पठावत। मनतो रहेउ चरण लपटानो जो इतनी यहदेह चला-
वत। अटके नैन माधुरी मुसुकनि अमृत बचन श्रवणनि को भावत।
इन्द्री सबै मनहिंके पाछे कहो धर्मकहि कहा बतावत। इनको करि
आपने लयेतौ क्यों हमको नाहीं जियभावत। सूर सैनदै सर्बसलूट्यो
मुरली लैलैनाम बुलावत ३०॥ रागकान्हरो ॥ भवन नहीं अबजाहिं क-
न्हाई। सजन बंधुते भईबाहिरी अबकैसे वे करतबड़ाई। जो कबहुंक
वे लेहिं कृपा करि तौ धृग हम सब नारि। तुम बिछुरत जीवन धृग
राखैं कहो न आप बिचारि। धृग वहलाज बिमुखकी संगति धनि
जीवन तुमहेत। धृगमाता धृगपिता गेह धृग धृग सुतपतिहैं जेत। हम
चाहति मृदुहँसनि माधुरी जाते उपजी काम। सूरश्याम अधरन रस
सींचहु जरति बिरह सब बाम ३१ सुनहु श्याम अबकरत चतुरई क्यों
तुमबेणु बजाय बुलाई। बिधि मर्य्याद लोक की लज्जा सबै त्यागि
हमधाई आई। अब तुमको ऐसी न बूझिये आश निराश करौजनि
साईं। सोइकुलीन सोई बड़भागिनि जे तुव सन्मुखरहैं सदाई। तेधनि
पुरुष नारिधनितेई पंकज चरण रहे दृढताई। सूरदास कहि कहा
बखानै यहनिशि यहअँग सुन्दरताई ३२ ॥ रागरामकली ॥ बिनती सुनि
श्याम सुजान। अतिहिसुख अपमान कीन्हो दृढन इनते आन। अब
करो दुखदूरि इनको भजौतजि अभिमान। बिरह दन्द निवारिडारों
अधररसदै पान। मनहिं मन यह सुख करत हरि भये कृपा निधान।
सूरनिश्चय भजीमोको नहींजानतिआन ३३ ॥ रागबिलावल ॥ मोहिंबिना
ये और न जानै। बिधि मर्य्याद लोककी लज्जा तृणहूंते घटि मानै।
इनमोको नीकै पहिंचान्यो कपट नहीं उरराख्यो। साधु साधु पुनि
पुनि हरषित ह्वै मनहींमन यह भाख्यो। पुनि हँसिकहेउ निठुरताधरि
कैक्योंत्यागयो गृहधर्म। सूरश्यामरुख कपटहृदयरति युवतिनकेअति

धर्म३४ ॥ राग गोंडमलार ॥ तजौनँदलाल अतिनिठुरई गहिरहे कहा पुनि
पुनि कहत धर्म हम को । यहीढँग रहेवचन सबकटुकहे वृथायुवतिन
दहे मेटिप्रणको । विमुख तुमतेरहैं तिनहिं हम क्योंगहैं कलहहै तहां
दुखदेह भारी । कहा सुतपति मातपितकुल कहाकहा संसारबिन बन-
बिहारी । हमहिंसमझाय यहकहौ बनवारि कहा तुम कहानहिंमर्म
जानै । सुनहुप्रभु सूर तुमभले की वेभले सत्यकरिकहौ हमअबहिं मा-
नै ३५ ॥ राग रामकली ॥ तुमहिं विमुख धृग धृग नर नारि । हमतौ यह
जानति तुवमहिमा को सुनिये गिरिधारि । सांचीप्रीति करीहम तुम
सों अन्तर्यामी जानो । गृहजनकी नहिं पीरहमारे वृथाधर्म हठठानो ।
पापपुण्य दोऊपरित्यागयो अबजोहोय सो होई । आशनिराशसूरके
स्वामी ऐसीकरै न कोई ३६ ॥ राग जैतश्री ॥ आश जनितोरहु श्यामह-
मारी । बेणुनादधुनिसुनि उठिधाईं प्रकटतनामसुरारी । क्योंतुमनिठुर
नाम प्रकटायो काहे बिरदभुलाने । दीनआजु हमते कोउनाहीं जानि
श्याममुसकाने । अपने भुजदण्डनि करगहिये बिरहसलिल मैं फांसी ।
बारबार कुलधर्म बतावत ऐसे तुम अबिनासी । प्रीतिबचन नौका को
राख्यो अंकमभरि बैठावहु । सूरश्याम तुमबिन गतिनाहीं युवतिनपार
लगावहु ३७ ॥ रागनट ॥ चितदै सुनहु अंबुज नैन । कृपण को गथ भयो
तुमको सरस अमृत बैन । हमगुणी नवबाल रिझवति तुम तरुण धन
राशि । कैसेहू सुखदान दीजै बिरह दारिद नाशि । करहु यहप्रणनाथ
त्रिभुवन निठुर कोठीखोलि । कृपा चितवनि भुज उठावहु प्रेमबचननि
बोलि । दीनबाणी श्रवण सुनि सुनि द्रवे परमकृपाल । सूरसकहु अँग
न कांचौ धन्य धनि ब्रजबाल ३८ ॥ राग बिहागरो ॥ हरिसुनि दीनबचन
रसाल । बिरह ब्याकुलदेखि बाला भरे नयन बिशाल । चारु आनन
नीरधारा बरणिकापै जाय । मनहुँसुधा तड़ाग उछलै प्रेमप्रकट दिखाय ।
चन्दमुखपर निदरिबैठे सुभगजोर चकोर । पिवत मुख भरिभरि सुधा
शशि गिरत तापरभोर । हरषबाणी कहत पुनि पुनि धन्यधनि ब्रज-
बाल । सूरप्रभु करिकृपा जोहेउ सदयभये गोपाल ३९ श्यामहँसिबोले
प्रभुता डारि । बारम्बार बिनय करजोरत कटिपट गोद पसारि । तुम
सन्मुख मैं बिमुख तुम्हारो मैं असाध तुमसाध । धन्य धन्य कहिकहि

युवतिन को आप करत अनुराध। मोको भजी एकचित ह्वैके निदरि लोक कुलकानि। सुतपति नेहतोरि तिनकासों मोहिँ निजकरि जानि। जाकेहाथ पेड़ फलताको सो फल लहेउ कुमारी। सूर कृपा पूरण सों बोले गिरि गोवर्द्धन धारी ४० ॥ रागसूहो ॥ कहत श्याम श्रीमुख यह बानी। धन्यधन्य दृढ़नेह तुम्हारो बिनदामन मो हाथबिकानी। निर्दय बचन कपटके भाये तुम अपने जिय नेक न आनी। भजी निशंक आय तुम मोको गुरु गुरुजनकी शंक न मानी। सिंहरहै जम्बुक शरणागत देखी सुनी न अकथ कहानी। सूरश्याम अंकम भरि लीन्हो बिरह अगिनि झर तुरत बुझानी ४१ ॥ रागमारू ॥ कियो जेहि काज तप घोषनारी। देउँ फलहौं तुरत तुमलेहु अबघरी हरष चितकरहु दुख देहु डारी। रासरस रच्यो मिलिसङ्ग बिलसहु सबै बस्त्रहरि कहेउ जो निगमबारी। हँसत मुख निरखि बचन अमृत बरषि कृपारस भरे शार्ङ्गपानी। ब्रजयुवति चहूँपास मध्य सुन्दर श्याम राधिका बाम अति छबि बिराजै। सूर नव जलदतन सुभग श्यामलकान्ति इन्दु बहुकांति बिच सुभगछाजै ४२ ॥ रागनट ॥ हरिमुख देखि फूले नयन। हृदय हर्षित प्रेम गदगद नहीं आवतबैन। काम आतुर भजींगोपी हरि मिलैं तेहिभाय। प्रेमबश्य कृपाल केशव जानिलेत सुभाय। परस्पर मिलि हँसत रहँसत हरषि करत बिलास। उमगि आनँदसिन्धु उछलै श्याम से अभिलास। मिलति यकयक भुजनभरिकै रासरुचि जिय आनि। तेहिसमय सुखश्याम श्यामा सूर क्योंकहै गानि ४३ ॥ राग बिहागरो ॥ रासरुचि जबहिं श्याम मनआनी। करहु शृङ्गार सँवारि सुन्दरी हँसत कहत हरिबानी। जो देखैं अँग उलटे भूषण तरुणि तरुणि मुसुकानी। बारबार पियदेखि देखि मुख पुनिपुनि युवति लजानी। नवसतसाजि भईं सबठाढ़ी को छबि सकै बखानी। वह छबि निरखि अधीरज भइ तनु कामनारि बिततानी। कुचभुज परसि करी मन इच्छा कछु तन तृषा बुझानी। सुनहु सूर रसरास नायका सुन्दरि राधारानी ४४ ॥ राग सोरठ ॥ अञ्चल चञ्चल श्याम गहेउ। लैगये सुभग पुलिन यमुनाके अँग अँग भेष लहेउ। कल्पतरोवर तट बंशीवट राधा रति गृह धाम। तहाँ रासरस रङ्ग उपायो सँगसोहत ब्रजबाम। मध्य श्यामघन तड़ित

भर्म३४ ॥ राग गोंडमलार ॥ तजौनँदलाल अतिनिठुरई गहिरहे कहा पुनि पुनि कहत धर्म हम को । यहीढँग रहेवचन सबकटुकहे वृथायुवतिन दहे भेटिप्रणको । बिमुख तुमतेरहैं तिनहिं हम क्योंगहैं कलहहै तहां दुखदेह भारी । कहा सुतपति मातपितकुल कहाकहा संसारबिन बन-बिहारी । हमहिंसमभाय यहकहौ बनवारि कहा तुम कहानहिंमर्म जानै । सुनहुप्रभु सूर तुमभले की वेभले सत्यकरिकहौ हमअबहिं मा-नै ३५ ॥ राग रामकली ॥ तुमहिं बिमुख धृग धृग नर नारि । हमतौ यह जानति तुवमहिमा को सुनिये गिरिधारि । सांचीप्रीति करीहम तुम सों अन्तर्यामी जानो । गृहजनकी नहिं पीरहमारे वृथाधर्म हठठानो । पापपुराय दोऊपरित्यागयो अबजोहोय सो होई । आशनिराशसूरके स्वामी ऐसीकरै न कोई ३६ ॥ राग जैतश्री ॥ आश जनितोरहु श्यामह-मारी । वेणुनादधुनिसुनि उठिधाईं प्रकटतनाममुरारी । क्योंतुमनिठुर नाम प्रकटायो काहे बिरदभुलाने । दीनआजु हमते कोउनाहीं जानि श्याममुसकाने । अपने भुजदराडनि करगहिये बिरहसलिल मैं फांसी । बारबार कुलधर्म बतावत ऐसे तुम अबिनासी । प्रीतिबचन नौका को राख्यो अंकमभरि बैठावहु । सूरश्याम तुमबिन गतिनाहीं युवतिनपार लगावहु ३७ ॥ रागनट ॥ चितदै सुनहु अंबुज नैन । कृपरा को गथ भयो तुमको सरस अमृत बैन । हमगुणी नवबाल रिझवति तुम तरुण धन राशि । कैसेहु सुखदान दीजै बिरह दारिद नाशि । करहु यहयशनाथ त्रिभुवन निठुर कोठीखोलि । कृपा चितवनि भुज उठावहु प्रेमबचननि बोलि । दीनबाणी श्रवण सुनि सुनि द्रवे परमकृपाल । सूरएकहु अँग न कांची धन्य धनि ब्रजबाल ३८ ॥ राग बिहागरो ॥ हरिसुनि दीनबचन रसाल । बिरह ब्याकुलदेखि बाला भरे नयन बिशाल । चारु आनन नीरधारा बरणिकापै जाय । मनहुँसुधा तड़ाग उछलै प्रेमप्रंकट दिखाय । चन्दमुखपर निदरिबैठे सुभगजोर चकोर । पिवत मुख भरिभरि सुधा शशि गिरत तापरभोर । हरषबाणी कहत पुनि पुनि धन्यधनि ब्रज-बाल । सूरप्रभु करिकृपा जोहेउ सदयभये गोपाल ३९ श्यामहँसिबोले प्रभुता डारि । बारम्बार बिनय करजोरत कटिपट गोद पसारि । तुम सन्मुख मैं बिमुख तुम्हारो मैं असाध तुमसाध । धन्य धन्य कहिकहि

युवतिन को आप करत अनुराध। मोको भजी एकचित ह्वैके निदरि लोक कुलकानि। सुतपति नेहतोरि तिनकासों मोहिँ निजकरि जानि। जाकेहाथ पेड फलताको सो फल लहेउ कुमारी। सूरकृपा पूरण सों बोले गिरि गोबर्द्धन धारी ४० ॥ रागसूहो ॥ कहत श्याम श्रीमुख यह बानी। धन्यधन्य दृढ़नेह तुम्हारो बिनदामन मो हाथबिकानी। निर्दय बचन कपटके भाये तुम अपने जिय नेक न आनी। भजी निशंक आय तुम मोको गुरु गुरुजनकी शंक न मानी। सिंहरहे जम्बुक शरणागत देखी सुनी न अकथ कहानी। सूरश्याम अंकम भरि लीन्हो बिरह अगिनि झर तुरत बुझानी ४१ ॥ रागमारू ॥ कियो जेहि काज तप घोषनारी। देउँ फलहौं तुरत तुमलेहु अवधरी हरष चितकरहु दुख देहु डारी। रासरस रच्यो मिलिसङ्ग बिलसहु सबै बस्त्रहरि कहेउ जो निगमबारी। हँसत मुख निरखि बचन अमृत बरषि कृपारस भरे शारङ्गपानी। ब्रजयुवति चहूँपास मध्य सुन्दर श्याम राधिका बाम अति छबि बिराजै। सूर नव जलदतन सुभग श्यामलकान्ति इन्दु बहुकांति बिच सुभगछाजै ४२ ॥ रागनट ॥ हरिमुख देखि फूले नयन। हृदय हरषित प्रेम गदगद नहीं आवतबैन। काम आतुर भजींगोपी हरि मिलैं तेहिभाय। प्रेमबश्य कृपाल केशव जानिलेत सुभाय। परस्पर मिलि हँसत रहँसत हरषि करत बिलास। उमगि आनँदसिन्धु उछले श्याम से अभिलास। मिलति यकयक भुजनभरिकै रासरुचि जिय आनि। तेहिसमय सुखश्याम श्यामा सूर क्योंकहै गानि ४३ ॥ राग बिहागरो ॥ रासरुचि जबहिं श्याम मनआनी। करहु शृङ्गार सँवारि सुन्दरी हँसत कहत हरिबानी। जो देखै अँग उलटे भूषण तरुणि तरुणि मुसुकानी। बारबार पियदेखि देखि मुख पुनिपुनि युवति लजानी। नवसतसाजि भईं सबठाढ़ी को छबि सकै बखानी। वह छबि निरखि अधीरज भइ तनु कामनारि बिततानी। कुचभुज परसि करी मन इच्छा कछु तन तृषा बुझानी। सुनहु सूर रसरास नायका सुन्दरि राधारानी ४४ ॥ राग सोरठ ॥ अञ्चल चञ्चल श्याम गहेउ। लेगये सुभग पुलिन यमुना के अँगअँग भेष लहेउ। कल्पतरोवर तट बंशीवट राधा रति गृह धाम। तहां रासरस रङ्ग उपायो सँगसोहत ब्रजबाम। मध्य श्यामघन तड़ित

भामिनी अति राजत शुभजोरी । सूरदास प्रभु नवल छबीले नवल छ-
बीली गोरी ४५ ॥ रागटोड़ी ॥ जहां श्यामघन रास उपाये। कुंकुमजल
सुख वृष्टि रमाये। धरणी रज कर्पूर में भारी। विविध सुमन छवि
न्यारी न्यारी। युवतीजुरि मण्डली बिराजें। बिच बिच कान्ह तरुणि
बिच भ्राजें। अनुपम लीला प्रकटि दिखाये। गोपिनको कीन्हो मन
भाये। बिच श्रीश्याम नारिबिच गोरी। कनकखम्भ मरकत खचि
धोरी। शोभासिंधु हिलोरि हिलोरी। सूरकहा बरणों मतिथोरी ४६
रागगोंडमलार ॥ रासमण्डल बने श्यामश्यामा। नारी दुहुँ पास दुहुँ पास
गिरिधर बने शशिबीस द्वादश उपमा। मुकुटकी छबि कहा उपमाकही
नयन जानत नहीं देहजाने। सुभग नवमेघ ताबीच चपला चमकि नि-
रखि नितंत मोरहरषि माने। करति आनन्दपिय संगललना पुंज बहुत
रसरंग क्षण क्षणहिँ ओरैं। सूरप्रभु रासरस नागरी मध्यदोउ परस्पर
नारिपति मनहिं चोरें ४७ परस्पर श्याम ब्रजबाम सोहैं। शीश श्री
खण्ड कुण्डल जटित मणि श्रवण निरखि छबि श्याम मन तरुणि
मोहैं। नासिका ललित बेशरिबनी अधरतट सुभगताटंक छबि कहिन
जाय। धरणि पग पटकि करझटकि भौंहनि मटकि अटकि मनतहां
रीझि कन्हाय। तब चलतहरि मटकिरहीं युवती भटकि लटकि खटकि
छबि निवारैं। कहति प्रभुसूर बहुरेउ चलो वैसेही हमहुँ वैसेचलैं जो
निहारैं ४८ निरखि ब्रजनारि छबिश्याम लाजै। बिबिध बेणी रची
मांग पाटी सुभगभाल बेंदीबिन्दु इन्दुलाजै। श्रवणताटङ्क लोचनचारु
नासिका हंसखञ्जन कीर कोटि लाजैं। अधर बिद्रुम दशन नहींछवि
दामिनी सुभग बेशरि निरखि कामलाजैं। चिबुकतर कण्ठसरीमाल
मोतिन छबि कुच उमगत हेमगिरि अतिहि लाजैं। सूरकी स्वामिनी
नारि ब्रजभामिनी निरखि पियप्रेम शोभा सुलाजै४९ ॥ राग बिहागरो॥
बनि ब्रजनारि शोभा भारि। पगनि जेहरि लाल लहँगा अङ्ग पचरँग
सारि। किङ्किणीकटि क्वनितकंकण करचुरीझनकार। हृदयचौकि
चमकिबैठी सुभगमोतिनहार। कण्ठसरि दुलरीबिराजत चिबुकश्या-
मलबिन्द। सुभग बेशरि ललितनासा रीझिरहे नँदनन्द। श्रवण बर
ताटङ्क की छबि गोर ललित कपोल। सूरप्रभु बश अतिभयेहैं निरखि

लोचनलोल ५०॥ रागजैतश्री ॥ सुरगण चढ़े बिमानन देखत। ललना सहित सुमनगण बरषत जन्म ब्रजहि को लेखत। धनि ब्रजलोग धन्य ब्रजबाला बिहरत श्रीराधा गोपाल। धनि बंशीबट धनि यमुनातट धनि धनि लतातमाल। सबते धन्य धन्य वृन्दाबन जहां कृष्ण को बास। धनि धनि सूरदास के स्वामी अद्भुत राच्यो रास ५१॥ रागबिलावल ॥ नयन सुफल अब भये हमारे। देवलोक निशानबजाये बरषत सुमनसुधारे। जय जय धुनि किन्नर मुनिगावत निरखत योग बिसारे। शिव शारद नारद यहभाषत धनिधनि नन्ददुलारे। सुर शरणापति गतिबिसराये रही निहारिनिहारि। जातननेक देखि सुखहरिको आईलोकबिसारि। यह छबिहू त्रिभुवन कहुँ नाहींजो वृन्दावन धाम। सुन्दरता गुणरासकी सीवां सूरराधिका श्याम ५२॥ रागआसावरी ॥ हमको बिधि ब्रजबधू न कीन्हीं कहा अमरपुर बासभये। बारबार पछितातीं यहैकहि सुख होतो हरि संगरये। कहा जन्मजो नहीं हमारो फिरि फिरि ब्रजअवतारभलो। वृन्दाबनद्रुमलता हूजिये करतासों मांगियेचलो। यह बांछना होय क्यों पूरणदासीह्वैबरु ब्रजमें रलौं। सूरदासप्रभु अन्तर्यामी तिनहिं बिना कासों करलौं५३ ॥ रागबिहागरो॥ धन्यनन्द यशुदाकेनन्दन। धन्य खंड पीतशिर लटकनिकुंडल धनि मृगमदचन्दन। धन्य राधिका धनि सुन्दरता धनिमोहन कीजोरी। ज्यों घनमधमें दामिनिकी छबि यह उपमा कहैंथोरी। धनि मंडली जुरी गोपिनकी ताबिच नन्दकुमार। राधा सम सबगोपकुमारी क्रीडत रासबिहार। षट्दश सहस घोषसुकुमारी षट्दश सहस गोपाल। काहूसोंकहुँ अंतर नाहीं करत परस्पर ख्याल। धनिब्रजबास आशयहपूरणकैसे होत हमारी। सूर अमर ललनागण अम्बर बिथकी लोकबिसारी ५४॥ रागपूर्बी ॥ तरुतमाल गोपाल लाल बनमाल ग्रीवधर हृदय बिशाल। कबहुंक गोधन सँग लैबाल कबहुं फिरत संगसखा ग्वाल। धनि ब्रजनायक कियो महरि पोष्यिप्रीतिपाल। कबहूं बनि केहरि रहैं बनजाय गोरसदान लेत सँगाय पैंठपताल। नाथ्योकाली काल फणफण प्रति निर्त्तत बिबिध ताल। भूषणमुकुट जड़ेउ चुन्नी लाल धन्य सूरप्रभुता धरे राजैं संग बजाल ५५॥ रागकान्हरो॥ कुंडल लोलकपोल बिराजत दशन च-

सकल चंग्या जालीतलक शोभित शिर केशरि नयना विविध बने । कटि काछनी चन्दन खौरि श्याम बरण घनसुन्दर ऐसे नटनागर के डैंपेरी वारने । त्रिभंगीह्वैनृत्य करत ब्रजयुवतिन मंडलबिचदुहूं दुहूं बिच श्याम घने । मोरमुकुट शीशधर राजतहैं सूरप्रभु निरखिनिरखि अमर जयजय धुनि भने ५६ ॥ रागधनाश्री ॥ रासमंडल मध्य श्यामराधा । मनोघन बीच दामिनी कौंधति सुभग एकहैं रूप द्वै नहीं बाधा । नायकाअष्टद्वादश दिशा सोहहिं बनी चहुँपासब्रजगोप कन्या । मिले सब संगनहिं लखति कोउ परस्पर बनेघटदश सहस्रकृष्ण सैन्या । सजे शृङ्गार नवसातजग-मगि रहेउ अङ्ग भूषण रैनि बनी तैसी । सूर प्रभु नवल गिरिधर नवल राधिका नवल ब्रजसुता मण्डली जैसी ५७ ॥ रागगौरी ॥ युवति अंगछवि निरखत श्याम । नन्दकुमार श्रीअङ्ग माधुरी अवलोकति ब्रजबाम । परीदृष्टिकुच उचनि पियाकी वह सुख कहेउ न जाय । अँगिया नील माडनी राती निरखत नयन चुराय । वे निरखत केयुर भुजकी छबि पहुंचनिपहुँचीभ्राजति । कर पल्लवन मुद्रिका सोहति ता छबिपर मन लाजति । बदनबिंदु निरखत हरि रीझे शशिपर वारतिभास । नन्द-लाल ब्रजबाल सुछबि कों बरणो सूरजदास ५८ श्यामतन राजत पी-तपिछौरी । उर बनमाल काछनी काछे कटि किङ्किणि छबि रौरी । बेणीसुभग नितम्बनिडोलति मन्दगामिनी नारि । सूथनि जघन बाँधि नारा बँद तिरनी पर छबिभारि । नखनि रंग जावकको शोभा देखत पिय मन भावत । सूरदास प्रभु तन त्रिभङ्ग ह्वै युवतिन मनहिं रिझावत ५९ ॥ रागबिहागरो ॥ निर्त्तत श्याम नानारंग । मुकुटलटकनि भ्रकुटि मट-कनिधरे नटवर अङ्ग । चलति गतिकटि कुणित किङ्किणि घुंघुरु झन-कार । मनो हंस रसाल बाणी अरस परस बिहार । लसतिकर पहुंची उपाजय मुद्रिका अति ज्योति । भावसों भुज फिरत जबहीं तबहिंशोभा होति । कबहुं निर्त्तत नारि गतिपर कबहुं निर्त्तत आप । सूरके प्रभु रसिक की मणि रच्यो रास प्रताप ६० गति सुगन्ध निर्त्तति ब्रज-नारि । हाव भाव नयनन सैनन देदे रिझवति गिरिधारि । पग पग पटकि भुजन लटकावति फूंदा करनि अनूप । चञ्चल चलत झूमका अंचल अद्भुत है वह रूप । दुरि निरखत अँगरूप परस्पर दोउ मनहीं

मन रीझत । हँसिहँसि बदन बचनरस प्रकटत प्रवेत अङ्ग जल भीजत । देखी छूटि लटैं बगरानी मुकुट लटकि लटकानो । फूल खसत गिरते भये न्यारे सुभग स्वातिसुत मानो । गान करति नागरी रीझि पिय लीन्ही अंकमलाय । रसबसह्वै लपटायरहे दोउ सूर सखी बलिजाय ६१ ॥ रागगौरी ॥ निर्तत अङ्ग अभूषण बाजत । गति सुगन्ध शोभा बहु देखत यकतेयक अतिराजत। कहत न बनैरह्यो रसऐसोबरणतबरणि न जाय । तैसेइ बने श्याम तैसिय बनि गोपी छबि अधिकाय । कंकण चुरी किङ्किणी नूपुर पगजनि बिछिया सोहत । अद्भुत धुनि उपजत इन मिलिके भ्रोस भ्रमि इत उत जोहत । सुनि सुनि श्रवण रीझिमनहींमनराधा रासरसज्ञा। सूरश्याम सबको सुखदायक लायक गुणनगुणज्ञा ६२ ॥ रागकेदारो ॥ उघटत श्याम निर्तति नारि। धरे अधर उपंगउपजैं लेतहैं गिरिधारि। तालमृदङ्ग रबाब बीणा किन्नरी रससार। शब्द संगमृदंग मिलवत सुघर नंदकुमार। नागरी सब गुणनि आगरि मिलिचलतिपियसङ्ग । कबहुंगावतिकबहुंनिर्त्तति कबहुंउघटतिरङ्ग। मराडली गोपाल गोपी अङ्गअङ्ग अनुहारि । सूरप्रभु घनजवलभामिनि दामिनी छबि डारि ६३ ॥ रागबिहागरो ॥ निर्त्ततहैं दोउ श्यामाश्याम। अङ्ग मगन पियतेप्यारी अति निरखि चकृत ब्रजबाम । तिरप लेति चपलासी चमकति झमकत भूषण अङ्ग । या छबिपर उपमा कहुं नाहीं निरखत बिबश अनङ्ग । श्रीराधिका सकलगुण पूरण जाके श्याम अधीन । संगते होत नहीं कहुं न्यारे भये रहत अति लीन । रस समुद्र मानो उछलितभयो सुन्दरताकी खानि। सूरदास प्रभुरीझि थकितभये कहत न कछू बखानि ६४ ॥ रागकल्याण ॥ कबहुंपियहरषि हिरदय लगावैं। कबहुं लेलै तान नागरीसुघरअतिसुघर नन्दसुवनको मन रिझावैं। कबहुं चुम्बन देति आकर्षिजिय लेति करति बिनबेत बशहेत अपने। मिलति भुज कंठदै रहति अङ्ग लटकिकै जात दुख दूरि ह्वै झझकि सपने। लेति गहि कुचनि बिच देति अधरनि अमृत सक्र कर चिबुक यक ग्रीव धारै । सूर प्रभुको स्वामिनी श्याम सन्मुख ह्वै निरखि मुख नयन यकटक्क निहारै ६५ ॥ रागबिहागरो ॥ रसबस श्याम कीन्हे नारि । अधर रस अँचवत परस्पर संग सब ब्रज नारि। काम

आतुर भजी बाला सबन पुरई आश। एकयक ब्रजनारिइकइक आप करेउप्रकाश। कबहुं निर्त्तत कबहुं गावतकबहुंकोकबिलाश। सूरके प्रभु रासनायक करतसुखदुख नाश ६६॥ रागकल्याण॥हरिमुरलीनादश्याम कीन्हो। कर्षि मन तिहुँभुवन सुनत थकि रहेउ पवन शशिहि भूल्यो गमन ज्ञान लीन्हो। तारकागण लजे बुद्धि मन मन सजे तबहिं तन सुधि तजे शब्द लाग्यो। नाग नर मुनि थके नभ धरणि तनतके शारदा शम्भु शिव ध्यान जाग्यो। ध्यान नारद टरेउ शेष आसनचल्यो गई बैकुंठधुनि गगनस्वामी। कहत श्रीप्रिया सों राधिकारवण ये सूर प्रभु श्याम के दरश कामी ६७॥ रागबिहागरो॥ मुरलीधुनि बैकुंठगई। नारायण कमलासुनि दम्पति अतिरुचि हृदय भई। सुनहु प्रियायह बाणी अद्भुत वृन्दाबन हरि देख्यो। धन्य धन्य श्रीपति मुख कहि कहि जीवन ब्रजको लेख्यो। रास बिलास करत नँदनन्दन सो हमते अति दूरि। धनि ब्रजधाम धन्य ब्रजधरणी उड़ि लागी जो धूरि। यह सुख तिहूं भुवनमें नाहीं जोरि सङ्ग पल एक। सूर निरखि नारायण यकटक भूले नयन निमेष ६८॥ राग आसावरी॥ जो सुख श्याम करत वृन्दाबन सोसुख तिहुँपुर नाहींहो। हमको कहा मिलत रज उनकी यह कहिकहि अकुलाहीं हो। सुनहु श्रीप्रिया सत्य कहतहौं मोतेऔर न कोई हो। नन्दकुमार रासरस सुखबिन वृन्दावन नहिं होईहो। हर्ता कर्ताको प्रभु मैंहौं वह मोतेहै न्यारोहो। सूर धन्य राधाबर गिरिधर धनि सुख नन्ददुलारो हो ६९॥ रागकल्याण॥ जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो। जङ्गम जड़ थावर चरकीन्हे पाहन जलज बिकाश्यो। स्वर्ग पताल दशौ दिशि पूरण धुनि अच्छादित कीन्हो। निशिबर कल्प समान बढ़ाई गोपिनको सुख दीन्हो। मैमतभये जीव जल थलके तन की सुधि न सम्हार। सूरश्याम सुखबेणु मधुर सुनि उलटे सब व्यवहार ७०॥ रागपूर्वी॥ मुरली गति बिपरीति कराय। तिहूं भुवन भरि नाद समान्यो राधारमण बजाय। बछरायन नाहीं मुखपरसत चरति नहीं तृणधेनु। यमुना उलटी धार चली बहि पवन थकित सुनिबेनु। बिह्वलभये नहीं सुधि काहू सुर गन्धर्व नर नारि। सूरदास सब चकृत जहांतहँ ब्रजयुवतिन सुखकारि ७१॥ रागकेदारो॥ मुरली सुनत अचल

चले। थके चर जल झरत पाहन बिफल वृक्षफले। पय स्रवत गोध-
ननि थनते प्रेम पुलकित गात। झुरेद्रुम अंकुरित पल्लव बिटप चंचल
पात। सुनत खग मृग मौन साध्यो चित्रकी अनुहारि। धरणि उमगि
नमाति धरमें यती योग बिसारि। ग्वाल गृह गृह सहज सोवत उदय
सहज सुभाय। सूरप्रभु रसरासके हित सुखदरैनि बढाय ७२ ॥ रागबि-
हागरो ॥ दूलह दुलहिनि श्यामा श्याम। कोककला व्युत्पन्न परस्पर
देखत लज्जित काम। जा फलको ब्रजनारि कियोब्रत सो फलसबनि
दियो। मनकामना भयो परिपूरण सबही मानिलियो। राग रागिनी
प्रकट दिखाये गाये जो जेहिरूप। सप्तसुरन के भेद बतावति नागरि
रूप अनूप। अतिहि सुघरि पियको मनमोहति अपबश करति रिझा-
वति। सूरश्याम मोहन मूरतिको बारबार उरलावति७॥३ रागरामकली॥
श्यामा श्याम रिझावति भारी। मन मन कहति और नहिँ शोभी पिय
के कोऊ प्यारी।धुवाबिन्द धुरपद यश हरिके हरिही गायसुनावति।
आपुन रीझि कन्त को रिझवति यह जिय गर्व बढ़ावति। निर्त्तति
उघटति गति सङ्गति पद सुनत कोकिला लाजति। सूरश्याम नागर
नागरिबिच ललनामण्डलि राजति ७४ रिझवति पियहि बारम्बार।
निरखि नयन लजाति हरिहैं नहीं शोभा पार। चलि सुलप गज हंस
मोहति कोककला प्रबीन। हँसि परस्पर तान गावति करति पियहि
अधीन। सुनत बन मृग होत ब्याकुल रहत चक्रत आय। सूरप्रभु वश
किये नागरि महाजाननि राय ७५ प्यारी श्यामलई उरलाय। उरज
उरसों परश को सुख बरणि कापै जाय। कनक छबि तनु मलय ले-
पन निरखि भामिनि अङ्ग। नासिका शुभ बास लै लै पुलक श्याम
अनङ्ग। देत चुम्बन लेत सुखको मानि पूरणभाग। सूरप्रभु वशकिये
नागरि बदति धन्य सुहाग ७६ ॥ रागबिहागरो ॥ रीझे परस्पर बरनारि।
कंठ भुज भुज धरे दोऊ सकति नहिँ निरवारि। गौर श्याम कपोल
सुललित अधर अमृत सार। परस्पर दोउ पियरु प्यारी रीझि लेत
उगार। प्राण यक द्वै देह कीन्हे भक्ति प्रीति प्रकाश। सूरस्वामी स्वा-
मिनी मिलि करत रङ्ग बिलास ७७ गावत श्याम श्यामारङ्ग। सुघर-
हुती नागरी अलापति सुरहि धरत पियसङ्ग। तान गावति कोकिला

मनो नाद अलि मिलि देत। मोरसङ्ग चकोर डोलत आप अपने हेत। भामिनी अँग जोन्ह मानो जलद श्यामल गात। परस्पर दोउ करत क्रीड़ा मनहिं मनहिं सिहात। कुचन बिच कच परम शोभा निरखि हँसत गोपाल। सूर कञ्चन गिरि बिचनि मनो रहेउ है अँधकाल ७८ मोहन मोहनी रसभरे। भौंह मोरनि नयन फेरनि तहांते नहिंटरे। अङ्ग निरखि अनङ्ग लज्जित सकैनहिं ठहराय। एककी कहचले शतशत कोटि रहत लजाय। इते पर लट हस्ति गति छबि नित्त भेद अपार। उड़त अञ्चल प्रकटि कुच दोउ कनक घटरस सार। दरकि कंचुकि तरकि माला रही धरणी जाय। सूर प्रभु करि निरखि करुणा तुरत लई उचाय ७९॥ रागजैतश्री॥ प्रेम सहित माला कर लीनी। प्यारी हृदय रहति यह जानी भुवपर नाहिँ पतीनी। पीतबसन लै श्रम जल पोंछत पुनिलै कंठ लगाई। चरणन कर परसत हैं अपने कहत अतिहि श्रमपाई। कुचश्रम देखिपवन मुखहीके फूंकि भुरावत अङ्ग। सूरदास प्रभु भौंह निहारत चलत प्रिया के रङ्ग ८०॥ रागभैरव॥ हाहा हो पिय नित्त करो। ऐसेकरि मैं तुमहिं रिझाई त्यों मेरो मन तुमहुँ हरो। तुम जैसे समबाय करतहो तैसे मैंहुँ डुलाऊंगी। मैं श्रमदेखि तुम्हारे अँग को भुजभरि कंठ लगाऊँगी। मैं हारी त्योंहीं तुम हारो चरणचापि श्रम मेटोंगी। सूरश्याम ज्यों उछँगलई मोहिं त्यों मैंहूँ हँसि भेटोंगी८१ राग रामकली॥ नित्तत श्याम श्यामा हेत। मुकुट लटकनि भृकुटि मटकनि नारिमन सुखदेत। कबहुँ चलत सुगन्ध गतिसों कबहुँ उघटतबैन। लोल कुण्डल गण्डमण्डल चपल नैननि सैन। श्यामकी छबिदेखि नागरि रही इकटक जोहि। सूरप्रभु उरलाय लीन्हो प्रेम गुणकरि पोहि८२ राग कमोदमलार॥ अरुझि कुण्डल लटबेशरि सों पीतपट बनमाल बिच आनि उरझे हैं दोउजन। प्राणनसों प्राण नयन नयन सों अटकिरहे चटकीली छबिदेखे लपटात श्यामघन। होड़ाहोड़ी नित्त करैं रीझि रीझि अङ्कभरैं तताथेई थेईथेई उघटत हैं मगन। सूरदास प्रभु प्यारी मण्डली युवती भारी नारिको अञ्चल लैलै पोंछत हैं श्रमकन ८३॥ राग अड़ानो॥ मोहनलाल सङ्ग ललना यों सोहैं ज्यों तरुतमालन के ढिग सुभग सुमन जरद को। बदनकांति अनूपभांति नहिँ सम्हारति नीलां-

बर गगन में नवघन बिच प्रकट्यो शशिशरशशरदको। मुक्तालर तारागण प्रतिबिम्बित बेशरिको चूनो मिलिरङ्ग जैसे होत हरदको। सूरदास प्रभु मोहन गोहनकी छबिबाढी मेटत दुख निरखि नैन मैन दरदको ८४॥ रागपूर्वी॥ नँदनन्दन सुघरराय मोहन बंशी बजाय सरिगम पधनिसा सप्त सुरनगाय। अतित अनाघात सङ्गीत सुघर और तान मिलाय। सुरध्याय तालध्याय निर्त्तध्याय निपुणराय मृदङ्ग बजाई। सूरज प्रभु नवलबाल सकलकला गुणप्रबीण अरश परश रीझिरिझाई ८५ राग बिहागरो॥ पियसँग खेलत अतिश्रम भयो आवरी हांको बयारि। अपनो अञ्चल लै लै सुखउ सखीरी रुचिर बदन श्रम कनके वारि। निर्तत उलसिगये अँगभूषण बिछुरी अलक बांधों सँवारि। सुनहु सूर पियप्यारीको मिलन जाहि न सुहाय ताहि डारवारि ८६॥ रागकेदारो॥ प्यारी देखि बिह्वल गात। नन्दनन्दन देखिरीझे अङ्कभरि लपटात। कबहुँ लेहिं उछङ्ग बाला कहि परस्पर बात। प्रेम रसकरि मिले दोऊ नयनमिलिमुसुकात। रासरसकामना पूरण रैनि नहीं बिहात। सूर प्रभुसँग ब्रजतरुणि मिलि करत सुख न सिरात ८७॥ रागकल्याण॥ रच्यो रासरङ्ग श्याम सबही सुखदीन्हो। मुरली सुर करि प्रकाश खग मृग सुनि रसउदास युवतीतजि गेहवास बनहिं गवन कीन्हो। मोहेसुर असुर नाग मुनिजन गण भयेयाग शिवशारद नारदादि चकृत भये ज्ञानी। अमर गण अमर नारि आईं लोकनि बिसारि ओक ओक त्यागि कहति धन्य धन्य बानी। थकित भयो गति समीर चन्द्रमाभयो अधीर तारागण लज्जित भये मारग नहिंपावें। उलटि यमुन बहतधार बिपरित सबहीबिचार सूरजप्रभुसंगनारि कौतुकउपजावें ८८॥ रागटोड़ी॥ नन्दकुमार रासरसकीन्हो। ब्रजतरुणिन मिलिकै सुखदीन्हो। अद्भुत कौतुक प्रगटदिखायो। कियोश्याम सबहिन मनभायो। बिचगोपी बिच मिलिगोपाला। मणि कञ्चन सोहति शुभमाला। राधा मोहन मध्य बिराजें। त्रिभुवनकी शोभा ये भ्राजें। रासरंग रस राख्यो भारी। हावभाव नानागति न्यारी। निर्त्तत अङ्ग थकितभइँ नागरि। रूपगुणनकरि परमउजागरि। उरसिगश्यामश्यामा उरलाई। बारम्बारकहेउ श्रमपाई। कंठकंठभुजदोऊजोरे। घनदामिनि छूटतनहिंछोरे। सूरश्याम

युवतिनसुखदाई। राधाजिय अतिगर्वबढाई ८९ ॥ रागसूहो ॥ तब नागरि जियगर्वबढायो। मोसमानत्रिय और नहींकोउ गिरिधर मैंहीं बशकरि पायो। जोइजोइकहति करत सोईपिय मेरेहि हित यह रास उपायो। सुन्दरिचतुर और नहिंमोसी देहधरेकोभावजनायो। कबहुंक बैठिजाति हरिकरधरि कबहुं कहति मैं अतिश्रमपायो। सूरश्यामगहिकंठरही त्रिय कन्धचढो यहवचन सुनायो ९०॥ रागबिलावल ॥ कहै भामिनी कन्त सों मोहिंकन्ध चढावहु। नृत्य करत अति श्रमभयो ताश्रमहिं मिटावहु। धरणी धरत बनैनहीं पगअतिहिंपिराने। त्रियाबचनसुनि गर्व के पियमनमुसुकाने। मैंअबिगत अजअलखहौं यहमर्म न पायो। भाव बश्य सबपै रहेउ निगमन भरमायो। एक प्राण द्वै देहहैं दुबिधा नहिंयामें। गर्बकियो नर देहते मैं रहौं न तामें। सूरज प्रभु अंतर भये सँगते तजि नारी। जेजे जहां तहां रहीं सबघोष कुमारी ९१॥

यहांते ठाकुर अन्तर्द्धानभये॥

रागबिहागरो ॥ तब हरि भये अन्तर्द्धान। जब कियो मन गर्व प्यारी कौन मोसीआन। अति थकितभइं चलत मोहन चलि न सोपैजाय। कंठभुज गहिरही यहकहि लेहुजबहिं चढाय। गयेसङ्ग बिसारि रसमें बिरस कीन्हीबाल। सूरप्रभुहरि चरितदेखत तुरतभइं बेहाल १॥ राग टोड़ी ॥ श्यामगये युवतीसबत्यागी। चकृतभईतरुणीसबै निशिजागी। प्यारी संगन लेगये बिहारी। कुंजलता रुव तरुणी डारी। संग नहीं तहँगिरिवरधारी। चहूं दिशा तन दृष्टि पसारी। परींमुरझि तब सकल कुमारी। कामबेर लीन्हो शरमारी। कहि कहि कहांगये बनवारी। भइं व्याकुल सब सुरत बिसारी। नयन सजिलभीनो सबनारी। सूरसंग तजिगये मुरारी २ व्याकुलभईं घोषकुमारि। श्यामतजिसङ्गते कहांगये यह कहति ब्रजनारि। दशौंदिशि नभ द्रुमनि देखति चकित भइं बेहाल। राधिका नहिं तहांदेखीकहेउ वाकेख्याल। कछुक दुख कछु हर्ष कीन्हो कुंज लैगये श्याम। सूरप्रभु सँग देखि हमको करे ऐसेकाम ३॥ रागबिहागरो ॥नवकुञ्जनि चलीं ब्रजनारी। सदाराधा करति दुबिधा देति रसकी गारी। संगही लैगईं हरिको सुखकरति बयारी। जहांजैहैं ढूंढिलैहैं महा रसिक निवारी। चरणचिन्हनि चलीं

देखत राधिका जाहिं। सूरप्रभु पग दरशि गोपी हसहिं हर्षिमुसुकाहिं ४ ॥ रागकान्हरो ॥ हर्षि युवतिसब कहत परस्पर प्यारी वे अब कहां गये री। श्याम काम तनु आतुर उपमा बश्य भयेरी। पुनि देखियत चिह्न पग युवती पियपग चिह्न न पावैं। की पियको प्यारी उरलीन्हो यह कहि भ्रम उपजावैं। वै गिरिधर उरधरि क्यों लेहिं व वहि गिरिधर उरलीन्हो। सूरभईं आतुर व्रजनारी पियप्यारी पग चीन्हो ५ ॥ राग बिलावल ॥ जो देखे द्रुमके तरे मुरछी सुकुमारी। चकृत भईं सब सुन्दरी यहतो राधारी। याहीको खोजति सबै यहरही कहांरी। धाय परीं सब सुन्दरी जो जहां तहांरी। तनकी तनकहु सुधिनहीं ब्याकुल भईं बाल। यहतो अतिबेहाल है कहँ गये गोपाल। बार बार बूझत सबै नहिं बोलति बानी। सूरश्याम काहे तजी कहि सब पछितानी ६ ॥ रागभैरों ॥ क्योंराधा नहिं बोलतिहै। काहे धरणीपरी ब्याकुलह्वै काहे नयनन खोलतिहै। कनकबेलिसी क्यों मुरझानी क्यों बन मांझ अकेली है। कहां गये मनमोहन तजिकै काहे बिरह दहेली है। श्याम नाम श्रवणनि धुनि सुनिकै सखियनि कंठ लगावति है। सूरश्याम आये यह कहि कहि ऐसे मन हर्षावति है ७ ॥ राग बिहागरो ॥ कहांरहे अबलौं तुमश्याम। नयन उघारि निहारि रही तहँ जो देखै ब्रजबाम। लागी करन बिलाप सबनिसों श्यामगये मोहिं त्यागि। तुमको नहीं मिले नँदनन्दन बूझतिहै तबजागि। निरखि बदन वृषभानकुँवरिको मनो सुधाबिन चन्द। राधाबिरह देखि बिरहानी यह गति बिन नँद नन्द। या बन में कैसे तुआईं श्यामसङ्गहैं नाहीं। कछुजानति कहँगये कन्हाई तहां तोहिं लैजाहीं। मैं हठकियो वृषारीमाई जिय उपज्यो अभिमान। सूरश्याम ऊपर मोहिं आनी ह्वैगये अन्तर्ध्यान ८ ॥ रागकान्हरो ॥ मैं अपने मन गर्ब बढ़ायो। इहै कहेउँ पिय कन्ध चढ़ौंगी तब मैं भेद न पायो। यह बाणी सुनि हँसे कंठ भरि भुजनि उछङ्गि लई। तब मैं कहेउँ कौनहै मोसी अन्तर जानिलई। कहांगये गिरिधर मोको तजि ह्यां कैसे मैं आई। सूरश्याम अन्तरभये मोते अपनी चूकसुनाई ९ रागबिहागरो ॥ रुदनकरति वृषभानकुमारी। बारबार सखियनि उर लावति कहांगये गिरिधारी। कबहुँ गिरति धरणीपर ब्याकुल देखि दशा

ब्रजनारी। भरि अँकवारि धरति मुख पोंछति दोंत नयन जलढारी। प्रिया पुरुषसों भाव करतिहै जानें निठुर मुरारी। सूरश्याम कुलधर्म्म आपनी लये रहत बनवारी १०॥ रागगौरी ॥ नँदनन्दन उनको हम जानति। ग्वालन सङ्ग रहत जो माई यह कहिकहि गुणगानति। बनबन धेनुचरावत बासर त्रिया बधत डरनाहीं। देखिदशा वृषभानसुताकी ब्रजतरुणी पछिताहीं। कहा भयो त्रिय हठ जो कीन्हो यहनबूझियेश्यामहिं। सूरदासप्रभुमिलहु कृपाकरि दूरिकरोमन तामहिँ ११॥ राग कल्याण॥ राधिकासोंकहेउ धीरमन धरिरी। मिलेंगेश्याम ब्याकुल दशाजनि करै हरषजियकरोदुखदूरिकरिरी। आप जहांतहां गईं बिरह सबपगिगईं कुँवरिसों कहिगईं श्यामल्यावैं। फिरति बनबन बिकल सहस सोरह सकल ब्रह्म पूरण अकल नहींपावैं। कहांगये यहकहति सबैसग जो वहीं कामतनु दहति ब्रजनारि भारी। सूरप्रभु श्याम श्यामा चरित देखहीं गर्व अन्तर हृदयहेत नारी १२॥ राग बिलावल ॥ श्याम सबऽको देखही वे देखति नाहीं। जहाँतहाँ ब्याकुल फिरैं तनु धीरज नाहीं। कोउबंशीबटको चलेकोउ बनघनजाहीं। देखिभूमिवहरासकोजहँतहँ पगछाहीं। सदा हठीली लाड़िली कहिकहि पछिताहीं। नयन सजल जल ढारिकै ब्याकुल मनमाहीं। यकयक ह्वैबन ढूंढहीं तरुणी बिकलाहीं। सूरज प्रभु कहुँ नहिँ मिलैं ढूंढत द्रुमपाहीं १३ ॥ राग रामकली ॥ कहिधौंरी बन बलिकहूँ तैं देखेहैं नँदनन्दन। बूझहुधौं मालती कहूँतैं पायेहैं तनुचन्दन। कहिधौं कुंई कदम्ब बकुल बट चम्पक ताल तमाल। कहिधौं कमल कहाँ कमलापति सुन्दर नयन बिशाल। मुरली अधर सुधारसलै तरु रहे यमुन के तीर। कहि तुलसी तुम सब जानति है कहँ घनश्याम शरीर। कहिधौं मृगी मया करि हमको कहिधौं मधुप मराल। सूरदास प्रभुके तुमसंगी हैं कहँ परम दयाल १४ ॥ राग आसावरी ॥ कहुँ न देखोरी मधुबन में माधो। कहांधौं गवनकियो कहाँधौं बिलमिरहे नयनसरत दर्शनकी साधो। जबते बिछुरे श्यामतबते रहो न जाय सुनहुसखि मेरोई अपराधो। सूरदासप्रभु बिनकैसे मैं जीऊंमाई घटत घटत घटिरहेउ प्राणआधो १५ कहुँन पाऊंरी सब ढूंढति बन घनश्याम सुन्दर परवारों तनमन। नयनान चटपटी मेरे तबते

लखीरहत कहाँ प्राणप्यारो निरखनिनको मन। चम्पकजुही गुलाल बकुलबहुली तरुतरु प्रतिबूझति कहुँ देखेनँदनन्दन। सूरदासप्रभु राम रसिक बिनु राम रसिकिनी बिरह बिकलकरि भईहैं मगन १६॥ राग काफ़ी॥ कोउकहुँदेखेरी नँदलाल। साँवरो सलोने ढोटा नयन रसाल। मोरमुकुट उरबनमालबिशाल। पीताम्बर सोहैसोहै मनगोपाल। निशि बनगई जहाँ सबै ब्रजबाल। अन्तर्ध्यान भये रचि ख्याल। द्रुम द्रुम ढूंढत भईं बेहाल। सूरश्याम बिनबाला परीं बिरह जंजाल १७॥ राग बागेश्वरी॥ मोहनी मोहनके टेरे। होकान्ह येहीसँग येही मनमेरे। ऐसो सँगतजिदूरिभये क्योंसमुझि परीहरि गेयनिघेरे। चूकमानिहमलीन्ही अपनी कैसेहु लाल बहुरि फिरि हेरे। कहियत हो तुम अन्तरयामी पूरणकामसबकेरे। ढूंढतिहै द्रुमबेली बालाभई बेहाल करत औमेरे। सूरदासप्रभु रासबिहारी श्रीबनवारी वृथा करत काहे झेरे १८॥ राग अड़ाने॥ होकान्हये बातेंहैं तिहारी बनवारी सुखहीमें भयेन्यारे। एक संग एक समीप रहतहैं नितत तजि कहाँ सिधारे। अब करिकृपामिलव करुणामय कहियत है सुखकारी। सूरश्याम अपराध क्षमहु अब स-मुझी चूकहमारी १९॥ राग पसारी॥ केहिमारग मैं जाउँ सखीरीमारग बिसरेउ। नाजानो कित ह्वैगये मोहिँजात न जानिपरेउ। अपनो पिय ढूंढत फिरौंरी मोहिँ मिलिबेकोचाव। काँटालाग्यो प्रेमको पिय यह पायोदाव। बनडूंगर ढूंढतफिरी घरमारग तजिगाउँ। बूझैद्रुम प्रति रूखरा कोउकहै न पियको नाउँ। चकृतभईं चितवत फिरौंरी व्या-कुल अतिहि अनाथ। अबके जो कैसेहु मिलौ तौ पलक न तजिहौं साथ। हृदय माँझ पियघर करौंरी नयनन बैठक देउँ। सूरदास प्रभु संग मिलौंरी बहुरि रासरस लेउँ २०॥ राग स्वी॥ कान्ह प्यारो कहूँ पायोरी। श्याम श्याम कहि कहति फिरति यहधुनि वृन्दावन छा-योरी। गर्बजानि पिय अन्तर ह्वैरहे सो मैं वृथा बढ़ायोरी। अबबिन देखे कलन परत क्षण श्यामसुन्दर गुण गायोरी। मृगी मृगनि द्रुम खगरस सारस पिककाहू नहीं बतायोरी। सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि युवतिन टेरि सुनायोरी २१॥ राग बिहागरो॥ हो कान्ह मैं तुमहिँ चाहौं तुमकाहे नहिँआवो। तुमतन तुमधन तुममन भावो। कियो चाहौं

अरग परमाकरो नहीं माना। सुन्यो चाहैं अवण मधुर मुरली की तान। कुञ्ज कुञ्ज जपति फिरति तेरे गुणानकी माला। सूरप्रभु बेगि मिलौ मोहिं मोहन नँदलाला २२॥ रागकाफी॥ सखिमोहिं मोहनलाल मिलावै। ज्योंचकोरचन्दाको यक्रयक भृङ्गी ध्यानलगावै। बिनदेखे मोहिं कलन परैरी यहकहि सबनि सुनावै। बिन कारण मैं मानकियोरी अपनेहिंमन दुखपावै। हाहाकरि पायँनपरिराधा हरिहरि टेर लगावै। सूरश्यामबिनकोटिकरौं जोऔर नहीं जियआवै२३॥रागआसावरी॥ हौंतौढूंढ़ि फिरिआईमाईरी सिगरो वृन्दावन कहूँनहिंपाये नँदनन्दना। अनतौह रहेजाय कौनेधौं राखे छिपाय मोको न कछु सोहाय कहां जाय रहे कामकन्दना। मोहिंतें परीरी चूक अन्तर भयेहैं जाते तुमसों कहति बातें मैंहीं कियो दंदना। सूरदासप्रभु बिन भईहौं बिकलआली कहांरहे बनमाली सुर नर मुनिजन बन्दना २४॥ राग बिलावल॥ मिलहु श्याममोहिं चूकपरी। तेहि अन्तर तनकी सुधिनाहीं रसना रटलागी न टरी। धरणि परी व्याकुल भइ बोलति लोचन धारा अंशुझरी। कबहूँ मगन कबहुँ सुधिआवति शरण शरण कहि बिरहजरी। कृष्ण कृष्णकहि टेरि उठति है युगसम बीतति पलकघरी। सूरनिरखि ब्रज नारि दशा वह चकितभई जहँ तहांपरी २५ देखि दशा सुकुमारि की युवती सबधाईं। तरुतमाल पूंछतिफिरैं कहि कहि मुरझाईं। नँदनन्दन देखेकहूँ मुरली करधारी। कुण्डल मुकुट बिराजई तन श्यामलभारी। लोचनचारु बिशाल हैं नासा अति लोनी। अरुण अधर दशनावली छबि बरणि कोनी। बिम्ब प्रबारे लाजहीं दामिनि द्युति थोरी। ऐसे हरि हमको कहो कहुँदेखे होरी। अङ्ग अङ्ग छबि कहकहैं देखे बनिआवै। सूरश्याम पावैं नहीं कोकाहि बतावै २६॥ राग बिलावल॥ अति व्याकुल भईं गोपिका ढूंढ़ति गिरिधारी। बूझतिहैं बनबेलिसों देखे बनवारी। जाही जूही सेवती करुना कनिआरी। बेलिचमेली मालती बूझति द्रुम डारी। खूझा मरुआ कुन्द सों कहैं गोद पसारी। बकुल बदरि बट कदमपै ठाढ़ीं ब्रजनारी। बारबार हाहाकरैं कहुँहो गिरिधारी। सूरश्यामको नामलै लोचन जलढारी २७ कहूँ न पाये श्याम को बूझति बनबेली। सबैभई व्याकुल फिरैं तनमदन दहेली। मृगनारी

सों बूझहीं बूझै सुकुमारी। कमल सरोवर बूझहीं बिरहातनु मारी। कनकबेलसी सुन्दरी द्रुमके तरनारी। मनु दामिनि धरणीपरी कीधौं पनारी। इत उतते फिरिआवई जहँ राधा प्यारी। सूरश्याम अजहूँ नहीं करि मिलत कृपाली २८ करतिहैं रुचिर चरित व्रजनारि। देखि अतिही बिकल राधा यहै बुद्धि बिचारि। इक भई गोपाल की वपु इक भई बनवारि। इकभई गिरिधरन समरथ एकभई दैत्यारि। एक इकभई धेनु बकरा एक भइ नँदलाल। एक भइ यमला उधारण यक त्रिभङ्गि रसाल। एकभइ छबिरास मोहन कहत राधानारि. यककहति उठि मिलहु भुजभरि सूर प्रभु की प्यारि २९ ॥ रागजैतश्री ॥ सुनत धुनि श्रवण उठि मिलहु भुजभरि अकुलाय। जो देखै नँदनन्दनहिँ वै सखि-यन भेषबनाय। कहा कपटकरि मोहिं देखावति कहांश्याम सुखदाय। कृष्ण कृष्ण शरणागत कहिकै बहुरि गिरी भहराय। पुनि दौरीं जहँ तहँ व्रजबाला बनद्रुम शोर लगाय। सूरदास प्रभु अन्तर्यामी बिरहिनि लेहु जिवाय ३० ॥ राग कान्हरो ॥ कृपासिंधु हरिक्षमा करोहो। अनजाने मन गर्ब बढ़ायो सो अपने जनि हृदय धरो हो। सोरहसहस पीर तनु एकै राधा जिव सब देह। ऐसीदशा देखि करुणामय प्रकट्यो हृदय सनेह। गर्बहत्यो तनुबिरह प्रकाश्यो प्यारी ब्याकुल जानि। सुनहुँसूर अब दरशनदीजै चूकलई इनमानि ३१ ॥ रागबिहागरो ॥ राधे भूलि रही अनुराग। तरुतर रुदन करति अलसानी ढूंढ़िफिरी बनबाग। कबरी ग्रसित शिखण्डी थहिभ्रम चरण शिली मुखलाग। बाणीमधुरजानि पिक बोलत कदम करो रत काग। कर पल्लव किशलय कुसुमाकर जानि ग्रसित भय कीर। राकाचन्द्र चकोर जानिकै पिवत नैन को नीर। बिह्वल बिकलजानि नँदनन्दन प्रकट भये तेहिकाल। सूरश्याम हित प्रेमांकुर उर लाय लई भुज माल ३२ ॥ रागकान्हरो ॥ नँदनन्दन उर लाय लई। नागरि प्रेम प्रकट तनुब्याकुल तबकरुणा हरि हृदयभई। देखिनारि तरुतर मुरझानी देहदशा सब भूलिगई। प्रियाजानि अंकम भरिलीन्ही कहिकहि ऐसीकाम हई। बदन बिलोकि कंठउठि लागी कनकबेलि आनन्द जई। सूरश्याम फल कृपा दृष्टि भये अतिहि भई आनन्दमई ३३ प्रकटभये नँदनन्दन आई। प्यारीनिरखि बिरहअति

व्याकुल घरते गई उठाई। अभय भुजाभरि अंकम दीन्हे राखी कंठ लगाई। प्राणहुते प्यारी तुमभोरे यहकहि दुख बिसराई। हँमतभये अन्तर हम तुमसों सहजखेल उपजाई। धरणी मुरछि परी तुम काहे कहांगई चतुराई। राधा सकुचिरही मनजान्यो कहेउ न कछूबुहाई। सूरदासप्रभु मिलि सुखदीन्हो दुखडारेउ बिसराई ३४ ॥ रागसूहो ॥ अन्तरते हरिप्रकट भये। रहत प्रेमके वश्य कन्हाई युवतिन को मिलि हरषदये। वैसेइ सुखसबको फिरिदीन्हो वहैभाव सबमानि लियो। यहजानति हरिसंग तबहिंते उहैबुद्धि सब यहैहियो। वहै रासमंडल रस जानति बिच गोपी बिच श्याम धनी। सूर श्याम श्यामा मधि नायक उहै परस्पर प्रीतिघनी ३५॥ राग सारंग ॥ बहुरि श्यामसुखरास कियो। भुजभुज जोरिजुरीं ब्रजबाला वैसेहीरस उमगिहियो। वैसहि मुरलीनाद प्रकाश्यो वैसहि सुरनर वश्यभये। वैसहि उडगण सहित निशापति वैसहि मारग भूलिगये। वैसहि दशाभई यमुनाकी वैसहि गतितजि पवनथक्यो। वैसहि निर्त्तति रङ्गबढ़ायो वैसहि बहुरेउ काम जक्यो। वाहि निशा वैसहि मन युवती वैसहिहरि सबनि भजे। सूर श्यामवैसहि मनमोहन वैसहि प्यारी निरखिलजे ३६ ॥ राग बिहागरो॥ श्यामछबि निरखति नागरिनारि। प्यारी छबि निरखत मन मोहन सकत न नयनपसारि। पिय सकुचत नहिँ दृष्टिमिलावत सन्मुखहोत लजात। श्रीराधिका निदरि अवलोकति अतिहिहृदय हर्षात। अरश परश मोहन मोहनि मिलिसँग गोपी गोपाल। सूरदास प्रभु सब गुण लायक दुहुनके उरमाल ३७ रचि रसरास श्यामसुजान। प्रथममुरली नादकरि हरिहरेउ सबकोज्ञान। सबन उलटी रीतिकीन्ही देवसुर नर आदि। ब्रजवधूमन कामपूरण कियोपुरुष अनादि। सहजसुख निशि ग्वालसोवत सारची षटमास। हेत युवती सुख बढ़ावत कियो पूरण आस। मेटि अन्तर ध्यानको दुख वहै राख्यो भाव। सूरप्रभु महिमा अगोचर निगमअन्त न पाव ३८॥ राग नट॥ मोहनरचेउ अद्भुतरास। संगमिलि वृषभानतनया गोपिका चहुँपास। एकही सुर सकल मोहे मुरलिसुधा प्रकास। जलहु थलके जीव थकिरहे मुनिन मनहिं उदास। थकितभयो समीर सुनिके यमुन उलटीधार। सूरप्रभु ब्रजबाम मिलि

बन निशाकरत बिहार ३९ बिहरत रसरङ्ग गोपाल। नवलश्यामासंग सोहत नवल सब ब्रजबाल। शरदनिशि अति नवल उज्ज्वल सबलता बनधाम। परम निर्मल पुलिन यमुना कल्पतरु बिश्राम। कोशद्वादश रास परमिति रचेउ नन्दकुमार। सूरप्रभु सुखदियो निशिरसि काम कौतुकहार ४० ॥ राग ललित ॥ रासरमि श्रमित भई ब्रजबाल। निशि सुखदै यमुनाजल लैगये भोरभयो तेहि काल। मनकामना भई परिपूरण रही न एको साध। षोड़श सहस नारि सँगमोहन कीन्हो सुख अगाध। यमुनाजल बिहरत नँदनन्दन संगमिली सुकुमारि। सूर धन्य धरणी वृन्दावन रबितनयासुखकारि ४१॥ रागगौंडमल्लार ॥ संगब्रजनारि हरिरास कीन्हो। सबन की आशपूरण करी श्यामले त्रियन पतिहेत सुखमानि लीन्हो। मेटि कुलकानि मर्य्याद बिधि वेदकी त्यागि गृह नेह सुनि वेणुधाई। फबी जे जे करी मनहिं सबते.बरी शंक काहु न करी आप भाई। ज्यों महामत्त गज यूथ करिणीलिये कूलसरफारि डर काहिमाने। सूरप्रभु नंदसुत निदरि निशिरस करेउनाग नरलोक सुर सबै जानै ४२ ॥

अथ जलक्रीड़ा

रागगौंडमलार ॥ रैनि रसरास सुखकरत बीती। भोरभये गयेपावन यमुनाके सलिल न्हात सुखकरत अति बड़ी प्रीती। एक एक मिलति हँसि एकहरि संगहँसि एकजलमध्य यकतीर ठाढ़ी। एकएक डरति एकअंकभरिकै चलति एकसुख लरतिअति नेहबाढ़ी। काहुनहिंडरत जलथलहु क्रीडाकरत हरत मननिदरि ज्यों कन्तनारी। सूरप्रभु श्याम श्यामा संगगोपिका मिटी तनुसाध भइ मगनभारी १ ॥ रागसोरठ ॥ साध नहीं युवतिन मन राखी। मन बांछना सबन फलपायो वेद उपनिषद साखी। भुजभरिमिलीकठिन कुचचापेअधरसुधारसचाखी। हावभाव नयननिसैननि दै बचन रचनसुखभाखी। शुकभागवत प्रकटकरि गायो कछूनदुबिधाराखी। सूरश्यामब्रजनारि सङ्ग हरिबाकीरही न कांखी २ रागकान्हरो ॥ धनि शुकमुनि भागवत बखान्यो। गुरु की कृपा भई जब पूरण तबरसना करिगान्यो। धन्य श्याम वृन्दाबनको सुख संतभयेते जान्यो। जोरस रासरंग हरिकीन्हो वेद नहींठहरान्यो। सुर नर मुनि

मोहित सब कीन्हो शिवहि समाधि भुलान्यो । सूरदास तहँ नयन बसाये और न कहूं पत्यान्यो ३ ॥ रागधनाश्री ॥ मैं कैसे रसरासहिगाऊं । श्रीराधिका श्यामकीप्यारी तुमदिन कृपा बास ब्रज पाऊं । अन्यवेद सपनेहुं नहिं जानें दम्पति को शिरनाऊं । भजन प्रताप चरण महिमाते गुरुकी कृपा दिखाऊं । नवनिकुञ्ज बनधाम निकट यक आनँद कुटी रचाऊं । सूरकहा बिनतीकरि बिनवै लाभ जन्म यह ध्याऊं ४ रागबिलावल ॥ तुमहौं मोको ढीठकियो । नयन सदा चरणन तर राखे मुख देखत नहिं गनतबियो । प्रभु तुम मेरी सकुच मिटाई जोइ सोइ मांगत पेलि । मांगो चरण शरण वृन्दावन जहां करत नित केलि । यहबाणी भजनीक श्रवण बिन सुनत बहुत शरमाऊं । श्रीवृषभानसुता पतिसेऊं सूरज कत भरमाऊं५॥ रागबिहागरो ॥ रास रसलीलागाय सुनाऊं । यह यशकहे सुने मुख श्रवणन तिन चरणन शिरनाऊं । कहा कहौं बक्ता श्रोता फल इकरसनाक्यों गाऊं । अष्टसिद्धि नवनिधिसुख संपति लघुताकरि दरशाऊं । जो परतीति होय हिरदयमें जगमाया धृग देखै । हरिजन दरश हरिहिसमपूजै अन्तर कपट न भाखै । धनि बक्ता तेई धनि श्रोता श्याम निकट हैं ताके । सूर धन्य तिनके पितु माता भाव भजनहै जाके ६॥ रागबिलावल ॥ वृन्दावन हरिरास उपायो । देखिशरदनिशि रुचि उपजायो । अद्भुत मुरलीनादसुनायो । युवतिन सुनि तन दशा गँवायो । मिलिधाई मनकोफल पायो । जंगमचलजु चलनि थिरायो । उलटी यमुना धार बहायो । सुनि धुनि चंचल पवन थकायो । सुरनर मुनिको ध्यानभुलायो । चन्दगगन मारगबिसरायो । रूपदेखि मनकाम लजायो । रसमें अंतर बिरस जनायो । युवतिन के तन बिरह बढ़ायो । बहुरि मिले हित अति उपजायो । फेरि रास मण्डली बनायो । हावभाव करि सबनि रिझायो । कल्परैनि रसहेत उपायो । प्रातसमय यमुनातटआयो । नारिनके निशि श्रमहिं मिटायो युवतिन प्रतिप्रति रूपबनायो । शिव नारदशारद यहगायो । ध्यानदेउ चित तहांलगायो । राधाबरनिजनामकहायो । सूरदास कछुकछु कहि गायो । रमाकन्त जा सुखको ध्यायो । सो सुख नंदसुवन ब्रजपायो७ रागगौरी ॥ यमुना जल क्रीड़त नँदनन्दन । गोपीवृन्द मनोहर चहुं दिशि

मध्य अरिष्ट निकन्दन। पकरेपारिवा परस्पर छिरकत शिथिल सलिल भुजचन्दन। मनोयुवति पूजति अहिपतिको लयो अङ्कदे बन्दन। कच भरि कुटिल सुदेश अङ्कन चुवत अङ्गगति मन्दन। मानहु भरि मंडुप कमलपर डारत अतिआनंदन। भुज भरि अङ्क अगाध चलत लै ज्यों लुब्धक खगफन्दन। सूरदासप्रभु सुयश बखानत नेतिनेति श्रुतिछन्दन ८ रागकान्हरो॥ बिहरतहैं यमुनाजल श्याम। राजत हैं दोउ बांहांजोरी दम्पति अरु ब्रजबाम। कोउ ठाढी जलजानु जङ्घलौं कोउ कटि हिरदय ग्रीव। यह सुख बरणिसकै ऐसो को सुन्दरता की सीव। श्याम अङ्ग चन्दनकी आभा नागरि केशरि अङ्ग। मलयज पङ्ककुंकुमा मिलिकै जल यमुना इकरङ्ग। निशिश्रम मिट्यो मिट्यो तन आलस परसि यमुन भइ पावन। सूरश्याम जल मध्य युवतिगण जन जनके मन भावन ९ जलक्रीडा सुख अतिउपजायो। रासरङ्ग मनते नहिँ भूलत वहैभेद मनआयो। युवती कर करजोरि मण्डली श्यामनागरी बीच। चन्दन अङ्ग कुंकुमा छूटत जलमिलि तटभइ कीच। जो सुख श्याम करत युवतिन सँग सो सुख तिहुँपुर नाहीं। सूरश्याम देखत नारिनको रीझिरीझि लपटाहीं १० ॥ राग बिलावल॥ बिहरत नारि हँसत नँदनन्दन। अङ्कम भरिभरि लेत अनंदन। निर्मल देह छूट तनु चन्दन। अतिशोभा त्रिभुवनजगबन्दन। कञ्चनपीठि नारिअँग शोभा। वे उनको वे उनकोलोभा। कबहुँ अङ्कभरि चलत अगाधहि। अरश परश मेटत मनसाधहि। कोउ भाजै कोउ पाछे धावै। युवतिन सों काहि ताहि सँगावै। ताको गहि अथाह जल डारै। सुख व्याकुलता रूप निहारै। कंठलगाय लेत पुनि ताही। देत अलिङ्गन रीझत जाही। सूरश्याम ब्रज युवतिन भोगी। जाको ध्यावत शिव मुनि योगी ११ ॥ रागटोडी॥ ऐसे श्याम बश्यराधा के। नामलेत पावन आधाके। प्यारी श्याम अंजुली डारै। वा छबि को चितलाय निहारै। मनोजलद जलडारत हारै। मन मनहीं तनमन धनवारै। निरखि रूपनहिँ धीर सम्हारै। सूरश्यामको अङ्कम धारै १२ रागललित॥ राधे छिरकति छैल छबीली। कुच कुंकुम कंचुकि बँदटूटे लटकिरही लटगीली। बंदन शिर ताटङ्क गराड पर रतन जडित माणि लीली। गति गयन्द मृगराज सुकटि पर शोभित किङ्किणि ढीली।

मचेउ खेल यमुनाजल अन्तर प्रेम मुदित रसझीली । नन्दसुवन भुजग्रीव बिराजत भाग सुहाग भरीली । बरषत सुमनदेवगण हर्षित दुन्दुभिसरस बजीली । सूरश्याम श्यामा रसक्रीड़त यमुना तरँग थकीली १३ ॥ राग रामकली ॥ श्यामा श्याम सुभग यमुनाजल बिभ्रम करत बिहार । पीत कमल इन्दीवर पर मनो भौंरहि भये निहार । श्रीराधा अम्बुज कर भरिभरि छिरकत बारम्बार । कनक लता मकरन्द झरत मनु हालत पवन सँवार । अतसी कुसुम कलेवर बूँदें प्रतिबिम्बित मनुहार । ज्योति प्रकाश सुघनमें खोलत स्वातिसुवन आकार । धायधरे वृषभान सुता हरि मोहे सकल शृँगार । बिद्युत जलद सूर मनोबिधु मिलि श्रवत सुधाकी धार १४ रीझे श्याम नागरि रूप । तैसिय लट बगरी उर ऊपर श्रवत नीर अनूप । श्रवत जलकुच परत धारा नहीं उपमापार । मनो उगिलत राहु अमृत कनक गिरिपर धार । कुचन परसत श्यामसुन्दर नागरी शरमाय । सूरप्रभु तनुकाम ब्याकुल गये मनहिँ जनाय १५ श्यामाश्याम अङ्कम भरी । उरज उर परसाय भुज भुज जोरिगाढेवरी । तुरत मनमुख मानिलीन्ही नारितेरि रँगढरी । परस्पर दोउ करतक्रीड़ा राधिका नवहरी । ऐसही सुखदियो मोहनसबै आनँद भरी । करति रङ्गहिलोर यमुना प्रेमआनँद झरी । रासनिशि श्रम दूरिकीन्हो धन्यधनि यहघरी । सूरप्रभु तट निकसि आये नारि सँग सबखरी १६ ॥ राग गूजरी ॥ ठाढ़ेश्याम यमुना तीर । धन्य पुलिन पवित्र पावन जहाँ गिरिधर बीर । युवति बनिबनि भईठाढ़ी और पहिरे चीर । राधिका सुख श्यामदायक कनक बरण शरीर । लाल चोली लीलडँडिआ संग युवतिन भीर । सूर प्रभु छवि निरखि रीझे मगन भयो मनकीर १७ ॥ राग नट ॥ ललकत श्याम मन ललचात । कहत हैं घरजाहु सुन्दरि मुख न आवत बात । षटसहसदश गोपकन्या रैनिभोगई रास । एकसरण भइकोउ न न्यारी सबनि पुरईआस । बिहँसि सब घर घर पठाई ब्रजगईं ब्रजबाल । सूर प्रभु नँदधाम पहुँचे लख्योकाहु न ख्याल १८ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रजबासी सबसोवतपाये । नन्दसुवन ऐसी मतिठानी घरलोगन उनजाय जगाये । उठेप्रात गाथा सुखभाषत आतुर रैनि बिहानी । ऐंडत अङ्ग जम्हात बदन भरि कहत

सबै यहबानी। जोजैसे सो तैसेलागै अपने अपने काज। सूरश्याम के चरित अगोचर राखी कुलकीलाज १९॥ राग जैतश्री॥ ब्रजयुवती रसरासपगीं। कियोश्यामसबके मनभायो निशिरतिरङ्गजगीं। पूरणब्रह्म अलख अविनाशी सबनसंग सुखदीन्हो। जितनीनारि भेषभये तितने भेद न काहूचीन्हो। वह सुखटरत न काहूमनते पतिहित साधपुराई। सूरश्याम दूलह सब दुलहिनि निशिभाँवरि देआई २०॥ राग गुर्जरी॥ श्यामा श्यामके उरबसी। रैनि निर्त्तत भोरि पियमन तड़ितते छबि लसी। श्यामा तारथ लगन डोलति सबत्रियन में जसी। कोककला प्रबीण सुन्दरि कन्तगुण करकसी। करति सदन शृङ्गार बैठी अङ्ग अँग प्रतिरसी। सूरप्रभु आये अचानक देखि तिनको हँसी २१॥ राग रामकली॥ पिय निरखत प्यारी हँसि दीन्हो। रीझे श्याम अङ्ग अँग निरखत हँसि नागरि उर लीन्हो। आलिङ्गन दै अधर दशन खँडि करगहि चिबुक उठावत। नासा सों नासालै जोरत नयन नयन पर लावत। यहिअन्तर प्यारीउर निरख्यो झझकिभई तबन्यारी। सूर श्याम मोकोदिखरावन ल्याये धरिके प्यारी २२॥

यहांते मान राधा जी को॥

राग टोड़ी॥ अबजानी पियबात तिहारी। मोसों तुमसुहकी निरखत हो भावति है वह प्यारी। राखे रहत हृदय पर जाको धन्य भाग हैं ताके। ऐसी कहीं लखी नहिँ अबलौं वश्यभये यों याके। भलीकरी यहबात जनाई प्रकट देखाई मोहिँ। सूरश्याम यह प्राणपियारी उर में राखी पोहि २३॥ राग धनाश्री॥ सुनतश्याम चकृत भयेबानी। प्यारी पिय मुख देखि कछुक हँसि कछुक हृदय रिसआनी। नागरि हँसत हँसी उरछाया तापरअति झहरानी। अधर कांपिरिस भौंह मरोरयो मनहींमन गहरानी। यकटक चितैरही प्रतिबिम्बहि सौतिशालजिय आनी। सूरदासप्रभु तुम बड़भागीबड़भागिनिजेहिआनी२४ प्यारीसाँचु कहति की हाँसी। काहेको इतनो रिसपावत कत तुम होहु उदासी। पुनिपुनि कहति कहातबहींते कहा ठगीसीठाढ़ी। यकटक चितैरही हिरदयतन मनोचित्र लिखिकाढ़ी। समुझीनहीं कहा मनआई सदन बसै तुव आगे। सूरश्याम भये काम आतुरे भुजागहन पिय लागे २५

मोहिँकुओ जिनिदूरि रहोजू। जाकोहृदय लगाय लईहै ताकी बाँह गहौजू। तुम सर्वज्ञ और सबसूरख सोरानी अरुदासी। मैं देखति हिरदय वहबैठी हम तुमको भइहाँसी। बाँहगहत कछु शरम न आवत सुखपावत मनमाहीं। सुनहुसूर मोतन वह इकटक चितवति डरपति नाहीं २६॥ राग बिलावल ॥ कहाभई धनि बावरी कहि तुमहिँ सुनाऊं। तुमते कोहै भावती कोहि हृदय बसाऊँ। तुमहिँ श्रवण तुम नयन हो तुमहींप्राणअधार। वृथाक्रोधतिय क्योंकरौयोंकहिबारम्बार।भुजगहि ताहि देखावहू जो हृदय बतावति। सूरजप्रभु कहै नागरी तुमते को भावति २७॥ राग नट ॥ माधव नाहिन दुरति जो हृदय बसति। ऐसी ढीठि मेरेजान तुमहीं कीन्हो है कान्ह मोहन मुख देखत न त्रसति। झुकेते झुकति भाल भृकुटी कुटिल किये हखे रूखी ह्वैरहति हँसते हँसति। तबहींते यकटक चितवति वोहिजक वा उरते इतउत न धँसति। जाहीसों लगत नयन ताही सों पगतबैन नखशिखलों सबगात ग्रसति। जाकेहरिराचेरङ्ग सोईहै अन्तर संग काँचकी करोतीके जल ज्यों लसति। बिहँसिबोले गोपाल सुनिहो व्रजकिबाल उछंगलेतकत धरणि खसति। अपनी छाया निहारि काहेको करति आरि काम की कसौटी सूरसकते कसति २८॥ राग कान्हरो ॥ काहेको हो बात बनावत। अब तुमको पिय मैं पतिआतिहौं छाहँ आपनी धरणि बतावत। वा देखत हमको तुम भिलिहो काहेको अनखावत। जैहै कहूं निकसि हिरदयते जानिबूझि क्योंतेहि उचटावत। जो वहकहै करो तुमसोई कहामोहिँ पुनिपुनि समुझावत। सूरश्याम नागर वह नागरि भलेभलेजू मोहिँ खिझावत २९॥ राग गौंड मलार ॥ वृथाहठदूरि किनकरौ प्यारी। कहा रिसकरति छांह छाँह अपनी देखि उरकोउ नहीं रिस जरतिभारी। तुमहिँ धनरहति मन नयन में तुमबसति कनक सोकसि लेहु कहाबैठी। चतुरई कहँबुद्धि कैसी भई चूकसमुझेबिना भौंहऐंठी। यहसुनत रिसभरीरही नहिँतहाँखरी श्रोटह्वैझरहरीमानु कीन्हो। जाहु मनमन कहेउ मैं बहुतसुख लहेउ सौतिदिखराय मोहिँ सूर दीन्हो ३०॥ राग कल्याण ॥ कियो अतिमान वृषभान बारी। देखि प्रतिबिम्ब पिय हृदय नारी। मनहिँमन देतिअति ताहिगारी। कहाह्यां करत लैजाहु

प्यारी। सुनत यहबचन पियबिरह बाढ़ो। कियो अति नागरी मानु गाढ़ो। काम तनदहत नहिं धीरधारै। कबहुँ बैठतउठत बारबारै। सूर अति भये व्याकुल मुरारी। नयनभरिलेत अलदेतढारी ३१॥ राग बिहागरो॥ मानुकरेउ त्रियबिनु अपराधहि। तनुदाहत बिनु काज आपनो कहत डरत जियबादहि। कहाँरही मुखमूँदि भामिनी मोहिँचूक कछु नाहीं। झझकि रही क्यों चतुर नागरी देखि आपनीछाहीं। अजहूँ दूरिकरो रिसउरते हिरदय ज्ञानबिचारो। सूरप्रयाम कहिकहिपचि-हारे हठकीन्हो जियभारो ३२॥ रागसोरठ॥ श्यामकाम तनचपटकियो। मानुधस्यो नागरि जियगाढ़ो सूख्यो कमलहियो। व्याकुलभये चले वृन्दाबन मिली दूतिका आनि। बारबार हरिबदन निहारति सकै न दुख पहिँचानि। कैसीदशा आजु मैं देखति कहौ न मोहिँ सुनाय। सूरश्याम देखे तुमव्याकुल आये कहा गँवाय ३३॥ राग गौरी॥ व्याकुल बचन कहत हैं श्याम। वृथानागरी मानुबढ़ायो जोरकियो तनु काम। यह कहतहि लोचन भरिआये पायो बिरह सहाय। चाहत कहेउ भेद ताआगे बाणी कही न जाय। और सखी तेहिअन्तर आई व्याकुल देखिमुरारि। सूरश्याम मुखदेखि चकृतभइ क्यों तनुरहे बि-सारि ३४॥ राग बिहागरो॥ कहति दूतिकासखिनबुझाई। आजुराधि-का मानुकस्योहै श्यामगये कुम्हिलाई। करसों करधरि लाल गईले सखिन सहित बनधाम। सुखदै कहेउलिये आवतिहौं सँगबिलसाऊँ बाम। मोआगे की महरि बिरहिनी कहा करै बहमान। सुनहु सूर प्रभुकितिक बातयह करो न पूरणकाम ३५॥ राग भैरों॥ श्यामकुञ्ज बैठारिगई। चतुर दूतिका सखियन लीन्हे आतुरताई ज्ञातलई। म-नहींमन इकरची चतुरई यहैकहौंगी बातनई। अबहीं ले आवति हौं ताको इहौभई कछु बहुतदई। करिआई हरिसों परतिज्ञा कहाकहै वृषभानजई। सूरश्याम सों मानकस्यो है आजहि ऐसी कहाभई ३६ राग नट॥ सखियनि सँगले तहाँगई। दूतिका मुखनिरखि राधाजानि हिरदयलई। अतिचतुर वृषभानतनया सहजहि बोलिलई। सहजबचन प्रकाशकीन्हो कहा किरपा भई। तुरतही यह कहिसुनायो श्याम बोलत तोहिँ। सूरप्रभुबन बोलिपठायो तोहिँ कारणमोहिँ ३७॥ राग

टोड़ी ॥ काहेको बन श्यामबोलाई। याहीते तुमधाईआई । कहा कहीं तोकोरी माई । तुमहु भली अरु भलेकन्हाई । अबयक नई मिली है आई । ताहीको अबलेहिँ मिलाई । ताको राखैं हृदय दुराई । तोको ह्यांते टारि पठाई । सूरश्याम ऐसे गुसाराई । उनकी महिमा कही न जाई ३८ ॥ राग धनाश्री ॥ आजुकछु घर कलह भयोरी । तऊ आजुअन-मनी बतानी यहकछु मानु कियोरी । मोसों कछू कहेउ नहिँ मोहन सहज पठाई लैन । कहापुकार परी हरिआगे चलौ न देखौनैन । तेरो नामलेत हरिआगे कहत सुनाय सुनाय । सूरसुनहुँ काको काकोगथ लैधौंलियो छिँडाय ३९ ॥ राग सूहो ॥ वृन्दावन हरिबैठेधाम । काहेको गथहऱ्यो सबनिको काहे अपनोकियो कुनाम । डारिदेहु कहलियो पराये। मेरो कहेउमानरी बाम । तबहींते उनशोर लगायो तोको बोली हैं यहिकाम । चलौ तुरत जिनिदेरलगावहु अबहींआयकरौबिश्राम। सूरश्याम तेरीधांझगरत तूकाहे तिनसों करैताम ४० ॥ रागजैतश्री ॥ यह कछु नोखीबात सुनावति । काको गथ मैं धौं लीन्होहै बारबार बन मोहिँ बोलावति । मेरी धां हरि लरतकौनसों इतीमयामोहिँ कीन्ही। ऐसे हैं हरि तेरे माई मैं नीके करि चीन्ही । की बैठहुकी भवन जाहु की मैं उनपैं नहिँजाउँ। सूरदास प्रभुकोरी सजनी जन्म न लेहौं नाउँ ४१ रागगैरी ॥ मैं कह तोहिँ मनावन आई । प्रकट लिये सबको ब्रजबैठी कहा करति अधिकाई। जाय करो ह्यां बोध सबनिको मोपर कतसतरानी। श्यामलरत तबहींते उनसों तिनपर अतिहि रिसानी। बारबार तूकहा कहतिरी ब्रजकाको मैं लीन्हो। सूरदास राधा सब हरिसों ज्वाब नि-दरिकै दीन्हो ४२ ॥ रागसोरठ ॥ तैं कछु नहिँ काहू को लीन्हो । प्रकट कहौ तबहीं मानैगी ज्वाब निदरि मोहिँ दीन्हो । तब बदिहौं ऐसेहि ह्यां कैहै जहँ बैठे सबबैरी । मेरे कहे बहुत रिसपावति सम्पति सबकी लैरी । यकटक करि सब तोहिं दिखाऊँ कहि आवहु बनजाई । की दीजो की सब पुनि लीजो सूरश्यामपै आई ४३ ॥ रागसूहो ॥ जिनजिन जाय श्याम के आगे तेरी चुगली बहुतकरी । बारबार तिनसों हरि खीझे तेरी धां ह्वै मैंहुँलरी । श्यामभेदकरि मोहिँ पठाई तू मोहीं पर खरीपरी । जायकरौ रिसबैरिन आगे जाके जाके गथहिहरी । बरसा

अकाश बनहुँके आये देखत तिनके अतिहि डरी। सूरश्याम बिन न्यावचुकै क्यों तिनपर तू अतिही भुहरी ४४॥ रागधन.श्री॥ तेजन पुकारे हरिपै जाय। जिनकी यहसब सौंज राधिका तेरे तनते लई छिँड़ाय। इन्दुकहैहो बदन बिगोयो अलकन अलि समुदाय। नयननमृग बचनन पिकलूटे बिलपत हरिहि सुनाय। कमलकीर केहरि कपोत गज कनक कदलि दुखपाय। बिद्रुमकुन्द भुजङ्ग सङ्गमिलि शरणगये अकुलाय। अतिअनीति जियजानि सूरप्रभु पठये मोहिँ रिसाय। बन बोलीं ब्रजनाथ बेगिचलि अब उत्तर दै आय ४५॥ रागकन्हरो॥ मानु करौ तुम और सवाई। कोटि करो एकै पुनि ह्वैहो तुम अरु वै मनमोहन माई। मोहनसों सुनि नाम श्रवणहीं मगन भई सुकुमारि। मानु गयो रिसगयो तुरतही लज्जित भइ मनभारि। धायमिलीं दूतिका कंठसों धन्य धन्य कहिबानी। सूरश्याम बनधाम जानिकै दर्शनको अतुरानी ४६॥ राग बिलावल॥ हँसिकै कहेउ दूतिका आगे श्यामहिँ सुखदैरी तू जाय। करि स्नान अभूषण अँगभरि मैं आवति तो पाछे धाय। यह सुनि हरषभई अतिही सखिगई तहां जहँश्याम। अति व्याकुल तन की सुधिनाहीं बिह्वल कीन्हेकाम। की बनमें की घरहीबैठे की बासरकी याम। सूरश्याम रसना रटलागी राधा राधा नाम ४७॥ राग रामकली॥ श्यामनारिके बिरहभरे। कबहुँक बैठत कुंज द्रुमनतर कबहुँक रहतखरे। कबहुँक तनकी सुरति बिसारत कबहुँक तनसुधि आवत। तबनागरिके गुणहिं बिचारत तेइ गुण गुण गुणगावत। कहुँमुकुट कहुँ मुरलि रहीगिरि कहुँ पटपीत पिछौरी। सूरश्याम ऐसी गति भीतर आयदूतिका गोरी ४८॥ रागबिलावल॥ श्याम भुजा गहि दूतिका कहि आतुर बानी। काहेको कदरात हौ मैं राधा आनी। बिरहदूरि करिडारिये सुखकरो कन्हाई। प्रिया नाम श्रवणन सुन्यो चितये अकुलाई। मिले दूतिकहि अंक दै लोचन भरि आई। प्यारी प्यारी बोलिकै युवतिहि उरलाई। तबबोली हँसिदूतिका पिय आवत नारी। सूरश्याम सुनि बोलतबै हरषे बनवारी ४९॥ रागगूजरी॥ धीरधरो प्यारी अब आवति। मैं जो गई प्रतिज्ञा करिकै सो कहिबात जनावति। मन चिन्ता अबदूरिकरौजू कहौ न कहामोहिँदैहो। बनि आवति वृषभान

नंदिनी भुजभरि अङ्कम लैहौ। यह सुन्दरता और नहीं कहुँ बड़भागी सोपावै। सूरश्याम दूतिका बचनसुनि करयुग जोरिमिलावै ५० ॥ राग जैतश्री ॥ यह सुनिकै मनश्याम सिहात। पुलकत अङ्गरहत नहिँधीरज पुनि पुनि पंथ निहारत जात। कुञ्जभवन कुसुमनकी शय्या अपनेहाथ सँवारत जात। जो द्रुमलता लटकि तनुलागत लेऊँचे धरि पुलकित गात। प्यारी अँग अति कोमल जानत सेजकली चुनिडारत। सूरश्याम रीझत मनहीं मन सुधिकरि छबिहि निहारत ५१ ॥ रागकल्यान ॥ दूतिका हँसति हरि चरित हेरैं। कबहुँ कर आपने रचत सुमनन सेज कबहुँ मग निरखिकहँ भयोफेरै। काम आतुरभरे कबहुँ बैठतखरे कबहुँ आगे जाय रहत ठाढे। चतुर सखि देखि पुनि राधिकापै गईफेरक्यों करत धनकन्त चाढे। सुनत प्यारीहँसी पियाके मनबसी रूपगुणा करिजसी प्रेमरासी। सूरप्रभु नाम सुनि मदनतनु बल भयो अङ्गप्रति छबि उपर रमादासी ५२ ॥ रागधनाश्री ॥ धनि वृषभानसुता बड़भागिनि। कहानि-हारति अङ्ग अङ्गछबि धन्य श्याम अनुरागिनि। और त्रिया नखशिख श्रृङ्गार सजि तेरे सहजन पूरै। रतिरम्भा उर्बसी रमासें लोहिँनिरखि मनझूरै। ये सबकन्त सोहागिनि नाहीं तूहै सबहि प्यारी। सूरधन्य तेरी सुन्दरता तोसी और न नारी ५३ सहज रूप की राशि नागरी भूषण अधिक बिराजै। मुख सौरभ सों मिलित सुधा निधि कनक लता परछाजै। बन्दनबिंदुधार मिलि शोभित भ्रूमिलि नील अगाध। मनहु बालरबि रसभरि शंकित तिमिर कूटहै आध मागिाकमध्यपास चहुंमोती पँगतिन झलक सेंदूर। रैंग्यो तमतमाल तारागण उगततहँद्यो सूर। की मन्मथ रथ चक्रांकितरि बन बारिचित्तसें साज। श्रवणाकूप की रहन घंटिका राजत सुभग समाज। नासा नथ मुक्ता बिम्बाधर प्रतिबिम्बित असमंच। बिंध्यो कनक पासि शुक सुन्दर करक बीच गहि चंच। कहँ लगि कहैां भूषणन भूषित अङ्गअङ्ग के रूप। सूरस-कल शोभा श्रीप्रतिके राजिव नयन अनूप ५४ ॥ रागकान्हरो ॥ बिरा-जित राधारूप निधान। सुन्दरता को पुंज प्रकटही को पटतर बिय आन। सेंदुर शीशमांग मुक्तावलि कचकबैनी अबिनान। मनहुँ चन्द्र मुख कोपिहन्यो रिपु राहु बिषम बलवान। तरल तिलक ताटंक

पडेरा झलकत कल बिबकान। मानहु शशि सहाय करवे को रगा बिरचे द्वैभान। दीरघ नयन नासिकाबेसरि अरुगा अधर छबिवान। खंजन शुक नहिं बिंबसमिनको लज्जित भये अजान। को कहिसके उरोजन की छबि कञ्चन मेरुलजान। श्रीफल सकुचि रहे दुरिकानन सिखरिहबो बिहरान। रोमावलि त्रिबली छबिछाजत जनु कीन्ही यह ठान। छुद्राकटि सबल डंड बन्धनमनो बिधिदीन्हो बन्धान। अङ्ग अङ्गआभूषगा कीछबिकापै होयबखान। सूरदासप्रभुरसिकशिरोमगा बिलसहु श्याम सुजान ५५॥ रागनट॥ राधे देखितेरो रूप। पटइहोहरि शंकि मनुदल सज्यो मनसिजभूप। चाल राज श्रीफला नूपुर नीबिनव रुचि ढाल। किङ्किगाी घराटा घोष माधव भये भयबेहाल। कंचुकी भूषगा कवचसजि अति कुच कसे रगाबीर। अञ्चलध्वजा अवलोकि नाहीं धरतपियमनधीर। भौंह चापचढ़ायकीन्हो तिलकशर संधान। नैन कौतुक देखि गिरिधरतज्योहै मदमान। चँवर चिकुर सुदेश घूंघुट छत्र शोभित छांह। ज्यों कहौ त्यों हो मिलाऊं दै दया कर बांह। राधिका अति चतुर सुन्दरि सुनि सुबचन बिलास। सूर रुचि मनसा जनाई प्रकटि मुख मृदुहास ५६॥ रागकल्याण॥ आजु अञ्जन दियो राधिका नैन को। मृगमीन हीनगुगा लज्जित खञ्जनडोलअधिकचञ्चल सरस श्याम सुखदैन को। लसनि दाड़िम दशन भौंह मन्मथ फन्द सुलपलट लटकि रहि रहतनहिं चैनको। कसनि कंचुकिबन्द उर मुकुत माल मुखनिरखि उडुगराज तजिगयो सुर ऐनको। क्वनित नूपुर चरगा छुद्र कटि घंटिका कनक तनु गौर छबि उमगि उपरैन को। सूर सुनि श्रवगा उठि नवल गिरिधर सेज चलिहै गजगति मलपि मदन गढ़ लैन को ५७॥ रागटोड़ी॥ रसिक शिरमौरटेरि लगावत गावत राधा राधानाम। कुञ्ज भवनबैठे मनमोहन अलि गोहन सोहन बोलत सुख तेराई गुगा ग्राम। श्रवगा सुनत प्यारी पुलकित भई प्रफुलित तनु मनु रोम रोम सुखरासी बाम। सूरदास प्रभु गिरिवरधर को चली मिलन गजराज गामिनी झनक रुनक बनधाम ५८॥ रागकल्याण॥ नवल सुनि नवल पिय नव कुंजहेरी। भावते लालसों भावती केलिकरि भावती भावतो रसिक रसलेरी। त्यागिअभिमान गुगा रूप सौभाग्य रतिमा-

निनी मनुहारि मैन सुख देरी। एक व्रजबास आवत जात देखियत आवली जाति पति पेंडको घेरी। ललित उदार हित धीर करि कोर मति धीर तन मेरि मनमथन को मेरी। कला चौसाठि संगीत शृङ्गार रस कोक विधि बन्द प्रकट भेद सेरी। सुरत सागर साज अवरा यश रस लाजअङ्ग अनुकूल रतिराज रणजेरी। काम शर कनक कुच प्रकट भृङ्गी चिह्न दागिमें लै कन्त आपनो केरी। जासु आलाप सुनि दारुसे पल्लवे पुहुप मधु धार फर भार भरजेरी। मुरलिका गान तुवनाम मधुरा धुनी सुधा धुरा सिंधु नहिं गनत निज मेरी। हीनजल मीन ज्यों दरशबिन कलैमलै प्राण प्रीतम नहीं धीरज धरेरी। प्रीतिकी रीति गत होतिहेरी हरषि निरखि रति करि चिबुक अवनढेरी। तुव काम केलि बनी अकामिनि वृन्द चन्दचकोर चातिकस्वातिलेरी। सूर सुनि श्रवणतजि भवनकरि गवनमनरवरा तन तबहिंकलहंसगतिगेरी ५९
रामकान्हरो ॥ मनो गिरिवर ते आवति गङ्गा। राजतअतिरमणीक राधिका यहिविधिअधिक अनूपमअङ्गा। गौर गात अतिबिमलबारिबिधिकटि तट त्रिबलीतरल तरङ्गा। रोमराजि मनोयमुनमिलीअध भँवरपरतमानो भ्रुवभङ्गा। मणिगण भूषण रुचिर तीरबर मध्यधार मोतिन में सङ्गा। सूरदास मनोचली सुरसरी श्रीगोपाल सागरसों सङ्गा ६० ॥ रागसूहो ॥
नाहिंन नयनलगे निशि यहिडर। जबतेजायकह्यो हँसिहरिसों समर शोच उनके जिय धरधर। भौंहकमान तिलकभलुका करिरचि सुदेश श्रीमन्त सुरँग शर। बलय ताटंक चक्र नख नेजा दामिनिसे चमकत रद असिवर। राज उरोज बर बाजि बिलोचन बंकट बिशद बिशाल मनोहर। लाल ढाल अञ्चल चञ्चलगति चँवर चिकुर राजत ताऊपर। अङ्ग अङ्ग सजि सुभट सहायक बने बिबिधि भूषण बानेवर। कामिनि आजुहि आनि रहैगी काम कटक लै कुंज झगडतर। चरण रुणित नूपुर रणतुरा सुनत श्रवण काँपहिंगे थरथर। तब जानिबो किशोर जोर रुपिरहो जीतिकरि खेतसबे फर। सेंचिकरो जो कहौंकिशोरी वे जु भितर ह्वै रहेबैठि घर। यहै सतो सुखजोर होतही करहु पारलै पकरि पियहिकर। सहचरि चतुरायन लैआई बांह बोलिदै करिकै तबकर। रोय सुरत रणमिली अङ्कभरि लै लटकी दै दन्त पियाधर।

जुरत सुरत संग्राम मध्यो छवि छूटि छूटि कच टूटि हार लर। अति सनेह दुहुँ बिसरि देहभरि मैनमल्ल मुरझाय गिरे धर। बिबिधि बिशाल कलासु कोशबशा राधा नारी नँदनन्दन वर। निगमनि नेति कहेउ निर्गुण सो कह गुणाधि बर्णहिं सूरनर ६१॥ रागटोड़ी ॥ फूलन के महल फूलनकी शय्या फूले कुंजबिहारी फूली राधाप्यारी। फूले वे दम्पति नवल मगन फूले फूलेकरैं केलि न्यारी। फूली लता बेलि बिबिधिसुमनगण फूलें आनन दोउहैं सुखकारी। सूरदासप्रभु प्यारी परवारत फूलेफूल चम्पक बेलिनेवारी ६२॥ रागधनाश्री ॥ आजु रँगफूले कुंवर कन्हाई। कबहुँक अधर दशन भरि खराडत चाखत सुधा मिठाई। कबहुँक कुचकर परसि कठिन अति तहां बदन परसावत। सुख निरखति सकुचति सुकुमारी मनहींमन अति भावत। तब प्यारी कर गहि मुख टारति नेक लाज नहिँ आवत। सूरदासप्रभु कामशिरोमणि कोककला दिखरावत ६३॥ राग केदारो॥ पिय भावती राधा नारि। उलटि चुम्बन देत रसिकन सकुच दीन्हो डारि। परस्पर दोउभरे श्रम जल फूकफूक झुरात। मनो बुझी अनङ्ग ज्वाला प्रकट करतलजात। बहुरि उठे सम्हारि भट ज्यों अँग अनङ्ग सम्हारि। सूर प्रभु बन धाम बिहरत बने दोउ बरनारि ६४॥ राग रामकली ॥ बिहरत दोउ मन एक करे। एक भाव यक भये लपटिकै उर उर जोरिधरे। मनो सुभटरण एकसंग जुरि करिवर नहीं डरे। अधर दशन छत नखक्षत उरपर घायन फरकि परे। यह सुख यह उपमा पटतरको रति संग्रामलरे। सूर सखी निरखति अन्तरभइ रतिपति काजसरे ६५॥ रागकल्याण ॥ सकुच मन परस्पर बसन लीन्हे। प्यारिपिय निपुण अति कोकगुण काल में उनिवनहिं उनिकन्त अबल कीन्हे। स्वेदकन गराड मराडलनि नासा निकट पिय निरखि पीतपट पोंछि डारेउ। निरखि प्यारी पोंछि वैसेही प्रिय बदन कहु सकुचि कछु हरषिकै निहारेउ। नागरी डरनि पिय पीतपट उरधरे बहुरि जनि आपनो छांहदेखे। सूरप्रभु स्वामिनी अङ्ग छवि दामिनी झलकप्रति बिम्बपर मानपेखे ६६॥ रागरामकली ॥ सँग राजति वृषभानकुमारी। कुञ्ज सदन कुसुमन शय्या पर दम्पति शोभा भारी। आलसभरे मगन रसदोऊ अङ्ग अङ्ग प्रति जोहत। मनहुँ

गौर श्यामल रासिन पर उत्तम बैठे सन्मुख सोहत। कुञ्जभवन राधा मनमोहन चहुँपास ब्रजनारि। सूर रही लोचन यक टक करि डारत तन मन वारि ६७॥ रागनट॥ यकटक रहीं नारि निहारि। कुंज घर श्रीश्याम श्यामा बैठि करत बिहारि। नयनसैन कटाक्षसों मिलिकरत रङ्ग बिलास। तहीं शोभा पार पावति बचन मुख मुख हास। तरुणि श्रीवृषभानतनया तरुण नन्दकुमार। सूरसों क्यों बरणिभावै रूपरस सुखसार ६८॥ रागधनाश्री॥ चितै राधा रतिनागर वोर। नयन बदन छबिसों उपजत मनो शशि अनुराग चकोर। सारस रस अँचवन को मानो तृषित मधुप जुरजोर। पान करत कहुँ तृप्ति न मानत पलकनि देत अँकोर। लिये मनोरथ मानि परस्पर रजनिगई भयो भोर। सूर श्यामश्यामा आपुसमें करत रहत चित चोर ६९॥ रागरामकली॥ देख सखि पञ्चकमल द्वै शंभु। एक कमल ब्रज ऊपर राजत निरखत नयन अचम्भु। एक कमल प्यारीकर लीन्हे कमल सुकोमल अङ्ग। युगुल कमल सुत कमल बिचारत प्रीति न कबहूं भङ्ग। षट् युग कमल मुख सन्मुख चितवत बहुबिधि रङ्गतरङ्ग। तिनमें तीनि सोम बंशी बश तीनि सुकश्यप अङ्ग। जेइ कमल सनकादिक दुर्ल्लभ जिनसे निकशी गङ्ग। तेई कमल सूर नित चिन्तत निपट निरन्तत सङ्ग ७०॥ रागनट॥ देख सखि चारि चन्द यकठौरं। निरखत बैठि नितंबिन पियसँग सारसुता की वोर। द्वै सखि श्याम नवलघन सुन्दर द्वै कीन्हे बिधि गोर। तिनके मध्य चारि शुक राजत द्वै फल आठ चकोर। शशि शशि सङ्ग प्रवाल कुन्द कलि अरुझि रहेउमनमोर। सूरदास प्रभु अति रतिनागरबलि बलि युगुलकिशोर ७१ देखरी प्रकट द्वादश मीन। षट् इन्दु द्वादश तरणि शोभित बिमल उडगण तीन। षट् अष्ट अम्बुज कीर षट् मुख कोकिला सुर एक। दश दोइ बिद्रुम दामिनी षट् तीनि वयाल बिशेष। त्रिवलि षट् श्री फल बिराजत परस्पर बर नारि। ब्रज कुंवरि गिरिधर कुंवर पर सूरजन बलि हारि ७२ दम्पति कुंज द्वार खरे। शिथिल अङ्ग मरगजे अंबर अतिही रूपभरे। सुरतही सबरैनि बीती कोक पूरणरंग। जलज दामिनिसंग सोहत भरे आलसअङ्ग। चकृत ह्वै ब्रजनारि निरखति मनो चन्द्रचकोर। सूरप्रभु वृषभानतनया बिलसि

रतिपति जोर। ७३ ॥ राग ललित॥ भोरही श्यामा श्याम खरे। जलद नवीन मिली मनो दामिनि बरषि निशान भरे। शिथिल बसन तन नील पीत द्युति आलस युत पहिरे। श्रमजल बुन्द कहूं कहुं उडगण बदनिबरनिकरे। भूषण विविधिभांति मिडवारतिरति रस उमगि भरे। प्रेम प्रबाह चली मनो सरिता टूसी मालगरे। काजर अधर तमोर सैनरँग अँग अँग झीलपरे। शोभा अमित बिलोकि सूरप्रभुक्यों सुख जात तरे ७४ ॥ राग बिलावल ॥ जो सुख श्याम पियासँग कीन्हो। सो युवतिन अपनो करि लीन्हो। दुबिधा हृदय कछू नहिं राख्यो। अतिआनन्द बचनमुख भाख्यो। यहैकहति तबकीअबनीके। सकुचि हँसीनागरि सँगपीके। नयनकोर पियहृदय निहारेउ। उनपहिलेपीताम्बरधारेउ। सूरदास यहलीलागावै। हरिपदशरण अछैफल पावै ७५ ॥ रागनट॥ धनिब्रजसुन्दरी धनिश्याम। धन्यधनि वृषभानतनया राधिका जेहिनाम। गेहगेहनि गईं तरुणी श्याम गये नँदधाम। भवन गइ वृषभानतनया कोककला सुजान। करत मनकामना पूरण एक निशि सब बाम। सूर प्रभु जा सदन जातन सोकरत तनताम ७६ ॥

यहांते खंडिताबचन॥

रागबिलावल ॥ नानारँग उपजावत श्याम। कोउ रीझति कोउ खीझति बाम। काहूके निशि बसत बसाये। काहू मुखह्वैआवत जाये। बहु नायक ह्वै बिलसत आप। जाको शिव पावैं नहिं जाप। ताको ब्रजनारी पतिजानै। कोउ आदरकोऊ अपमानै। काहूसों कहि आवतसांझ। रहत और नागरिघरमांझ। कबहुंरैनि सबसंग बिहात। सुनहु सूरऐसेनँदतात ७७ अब युवतिन सों प्रकट श्याम। अरस परस सबहिन यह जानी हरिलुब्धे सबहिन के धाम। जादिन जाके भवन न आवत सो मनमें यह करति बिचार। आजुगये औरहि काहू के रिसपावति कहिबड़े लवार। यह लीला हरिके मनभावति खण्डित बचन कहत सुखहोत। सांझ बोलदै जात सूरप्रभु ताके आवतहोतउदोत ७८ ॥ रागरामकली ॥ ठाढ़े नन्दद्वार गोपाल। बोलि लीन्हो देखि ललिता सैन दैतत्काल। हँसतगयेहरि गेहताके कोउ न जानत और। मिली हरिकोलाय उरभरिचापि कठिन कठोर। कहेउमेरेधामकबहूं

क्यों न आवत श्याम। सूर प्रभु कहि आजु नागरि आयहैं हमपास ७९ ॥ रागबिलावल ॥ ललिता को सुखदै गये श्याम। आजु बसैंगे रैनि तुम्हारे प्राणपियारी है। तुमबाम। यह कहिकै अनतहि पगुधारे बहुनायक के भेद अपार। सांझ समय आवन कहिआये सोंह बहुत करि नन्दकुमार। वह बैठी मारग हरि जोवति यकयक पल बीतत यकयाम। सूरश्यामआवन की आशासेज सँवारतिब्याकुल बाम८० रागगोरी ॥ सांझहि ते हरिपंथ निहारै। ललिता रुचि करि धाम आपने सुमन सुगन्धन सेज सँवारै। कबहुंक होत बारने ठाढ़ी कबहुंक गनति गगन के तारे। कबहुंक आय गलीमग जोवति अजहुं न आयेश्याम पियारे। वै बहुनायक अनत लोभाने और बामके धाम सिधारे। सूरश्याम बिनु बिलपति बाला तमचुर जहँतहँ शब्द पुकारे ८१ राग भैरों ॥ ललिता तमचुर टेरसुन्यो। वै बहुनायकअनत लोभाने नहिं आये जियकहा गुन्यो। बिन कारण दै आशगये पियबारबार शिर शीश धुन्यो। सेज सँवारि पंथ निशि जोवत अस्त आनि भयो चन्द पुन्यो। तबबैठी मनमारि आपनो कछुरिस कछुमन शोचपरेउ। सूरश्याम भयते नहिं आये मात पिता को त्रास धरेउ ८२ ॥ रागजैतश्री ॥ शोच परेउनागरि मनमाहीं। की काहूके अनत लोभानेकी पितुमात त्रास मनमाहीं। वै निशिबसे महलशीलाकेसुख सबरैनि गँवाई। उठे अकुलाय भोर भयो जान्यो तब नागरि सुधिआई। सहज चले गोपी सोंकहिकैजियसकुचतअतिभारी। सूरश्यामललिता गृहआयेचितैरही मुख प्यारी ८३ ॥ राग ललित ॥ प्यारी चितैरही मुख पियको। अंजन अधर कपोलन बन्दनलाग्यो काहू त्रियको। तुरत उठी दर्पण करलीन्हे देखोबदन सुधारो। अपनो मुखउठि प्रात देखिकै तबतुम कहूँसिधारो। काजर बन्दन अधर कपोलन सकुचे देखि कन्हाई। सूरश्याम नागरि मुख जोवत बचन कहो नहिं जाई ८४ ॥

शीलाके गृहते ललिता के आये ॥

राग आसावरी ॥ दर्पण लै प्यारी मुख आगे कहति पिया छबि हेरौ जू। मेरीसों हाहाकहि पुनि पुनि उतकाहे मुखफेरौजू। सकुचत कहा बालके सांचे मेरेगृहतौ आयेजू। रैनिनहीं तौ अबजु कृपाभइ धनिजिन

स्वाँग करायेजू। मेरीऋही बिलग जनिमानो मैं तुव करति बड़ाईजू। सूरश्याम सन्मुख नहिँ चितवत रहे धरणि शिरनाई जू ८५ ॥ रागललित ॥ क्यों मोहन दर्पण नहिंदेखो ; क्यों धरणीपग नखन करोवत क्यों हमतन नहिं पेखो। क्यों ठाढ़े बैठत क्यों नाहीं कहापरी हमचूक। पीताम्बर गहि कहेउ बैठिये रहेकाह ह्वैमूक। उघरि गये। डरते उपरैना नखक्षत बिन गुणमाल। सूर देखि लटपटी पाग पर जावक की छबिलाल ८६ ॥ राग ईमन॥ ऐसी कहौ रँगीलेलाल। जावकसों कहँ पाग रँगाई रँगरेजिनि मिली को बाल। बन्दन रङ्ग कपोलन दीन्हो अधर अरुणभये श्यामरसाल। जिन तुम्हरी मनइच्छा पुरई धनिधनि पिय धनि धनि वह बाल। माला कहां मिली बिनु गुण की उरक्षत देखि भई बेहाल। सूरश्याम छबिसबै बिराजति इहै देखि मोको जंजाल ८७ ॥ राग बिलावल ॥ ज्वाब नहींपिय आवई क्यों कहां ठगाने। मैं तबहीं की बकति हौं कछु आजु भुलाने। हां नाहीं नत कहत हो मेरी सों काहे। आये क्यों चक्रतभये मोको रिसदाहे। कहांरहे काओं बन्यो तहईं पगु धारो। सूरश्याम गुण रावरे हृदय न बिसारो ८८ काहेको कहिगये आइहै काहे झूठी सौंहैं खाये। ऐसे मैं जाने नहिँ तुमको जो गुणकरि तुम प्रकट देखाये। भलीकरी दरशन यहदीन्हो जन्म जन्म के पाप नशाये। तब चितये हरिनेक त्रिया तन सब अपराध क्षमाये। सूरदास सुन्दरी सयानी हँसिलीन्हे पिय अङ्कमलाये८९ नयनकोर हरि हेरिकै प्यारी बश कीन्हे। भाव करेउ आधीन को ललिता लखिलीन्हे। तुरतगयो रिसदूरि ह्वै हरिकंठ लगाये। भली करी मनभावते ऐसेहु मैं पाये। भवनगई गहि बांह लै निशि जागेजाने। अङ्ग शिथिल निशिश्रम भयो मनहीं मनमाने। अंगसुगन्ध मर्दन कियो तुरतहि अन्हवाये। अपने कर अँग पोंछिकै मनसाध पुराये। चीर अभूषण अङ्गदै बैठे गिरिधारी। रुचिभोजन पियको दियो सूरज बलिहारी ९० ॥ रागकल्याण ॥ कियो मन काम नहिं रही बाकी। प्रिया रिस दूरिकै दियो रस पूरिकै अङ्ग बल दूरिकै गोप जाकी। नन्दसुत लाडिले प्रेमके चाडिले सो हृदय कहतहै नारिआगे। तुमपरम भावती प्राणहूँते खरी सुखनहीं लहत मैं तुमहिँ त्यागे। सुनहु धनतुमहिँ तन

तुमहिँ मनहीं बसौ और त्रियनाहिँ मो मनहिँ भावै। सूरप्रभुचतुरबर चतुरि नागरिनके चतुरई बचनकहि मन चुरावै ९१॥ राग भैरों॥ इहै भाव सब युवतिनसें। ऐसेइ बचन कहत सबआगे भलि रहति सनमोहनसें। बिनदेखे रिसभाव बढ़ावै मिलत आयहै सोंहनिसें। सुखदेखत दुखरहत नहींतन चितवत सुरिदोउ मोहनिसें। और त्रिया अँग चिह्न बिराजत रिस सनहींमन छोहनसें। सूरश्याम सबगोपकुमारी दरति नहीं कहुँ गोहनसें ९२॥ राग बिलावल॥ ललिताको सुखदै चले अपने निजधाम। बीचमिली चन्द्रावली उनदेखे श्याम। मोर मुकुट कछनीकछे नटवर गोपाल। रहीवदन तनुहेरिके अतिहित ब्रजबाल। गलीसांकरी कोउनहीं आतुर मिलिधाई। कहां कहां पिय रहतहो हमको बिसराइ। श्याम कहेउ हँसि बाममें तुम्हरे निशिबास। सूर हृदयकी कल्पना सुनिभई हुलास ९३॥ राग आसावरी॥ श्याम बामको सुखदै बोलेरैनि तुम्हारे आऊँगो। मातपिता जियत्रास धरतहौं तऊ आय सुखपाऊंगो। तुव मिलिबेकी साध भुजा भरि उरसें कुच परसाऊंगो। नयन बिशाल भारि उरबैठे ते तुव हाथ कढ़ाऊंगो। तुवतनु परसि कामदुख मेटौं जीवन सुफल कराऊंगो। सुनहुसूर अधरनि रस अँचऊं दुहुमन तृषा बुझाऊंगो ९४॥ रागगूजरी॥ सुनिसुनि बचननारि मुसुकानी। गईसदन अति ह्वै उतायली आनँद सहित लजानी। फूली फिरत कहति नहिंकाहू सीतसिल्यो जनुपानी। बारम्बार श्याम रति रसकी कहीप्रकट करिबानी। बासर कलप समान न बीतत कैसेहि रैनि तुलानी। सूरदेखि गतिगत पतङ्गकी अवधि जानि हर्षानी ९५ रागकल्याण॥ राधिकागेहहरि देहवासी। और त्रियघरनि घरतनुप्रकाशी। ब्रह्मपूरण द्वितियनहींकोऊ। राधिकासबै हरिसबै ओऊ। दीपसोंदीप जैसे उजारी। तैसेहू ब्रह्मघरघर बिहारी। खण्डितावचनहित यह उपाई। कबहूं जात कहूंनहिं कन्हाई। जन्म को सुफल हरि यहैपावै। नारिरसबचन श्रवणनि सुनावै। सूरप्रभु अनतहीगवनकीन्हो। तहां नहिंगयेजहँ बचनदीन्हो ९६॥ रागटोड़ी॥ श्यामगये सुखमाकेधाम। देखत हर्ष भई मन बाम। आतुर मंदिर गये समाई। प्यारी प्रेम उठी झहराई। श्यामभामिनीपरम उदारा। कोककलारसकरतविचारा।

बोलत पिय नहिँआवति पासा । गद्गद बाणी कहति उदासा । धाय जाय पति अंकमलाई । हाहा करि करि लेत बलाई । अति आतुर पतिकै गतिकामा । कहां प्रकृति पाई यह बामा । बांहगहत्त कीन्हो धनि माना । तब हरिकीन्हो एक सयाना । तब प्यारी चरणन शिर धारी । कामव्यथा जान्यो सुकुमारी । अलपहँसी मुखहेरि लजानी । सूरजप्रभु प्रिय मनकी जानी ९७ ॥ राग गौंड़मलार ॥ श्यामकर भामिनी मुख सँवारेउ । बसन तनु दूरिकरि सबलभुज अङ्कभरि कामरिस बाम पर निदरि धारेउ । अधर दशननि भरे कठिनकुच उरलरे परे सुखसेज मनएक दोऊ । मनो कुम्हिलाय रहे मैनसे मल्ल दोउ कोक परवीण घटि नहींकोऊ । अङ्ग बिह्वलभये नयन नयनन नये लजित रति अन्त प्रियकन्त भारी । सूरधनि धन्य सुखमा नारिवश श्याम धाम युगभई पतिते न न्यारी ९८ ॥ रागबिहागरो ॥ चन्द्रावली श्याममन जोवति । कबहुँ सेजकर भारि सँवारति कबहुँ मलय रज भोवति । कबहुँ नयन अलसात जानिके जलले पुनि मुख धोवति । कबहूँ भवन कबहुँ आंगन ह्वै ऐसे रैनि बिगोवति । कबहुँक बिरह जरति अति व्याकुल आकुलता मनमों अति । सूरश्याम बहु रवनि रवनपिय यहकहि तब गुणतो अति ९९ ॥ रागललित ॥ ऐसेहि ऐसे रैनि बिहानी । चन्दमलीन चिरैया बोलीं सुनी कागकी बानी । वे लुब्धे अनतहि काहूके मान कि आश भुलानी । कपटी कुटिल कूरकह जानै श्यामनाम जियआनी । कोकिल श्याम श्याम अलि देखौ श्याम रङ्गहै पानी । श्याम जलद अहिश्याम कहावत सूरश्यामसों बानी १०० ॥ रागगौंड ॥ बामसँग श्याम प्रिय यामजागे । कोकबिधि निपुण सकल गुणामें सपुन सुरत संग्राम जुरि नहींभागे । अंग आलस भरे नयन निद्राढरे नेकशय्या परे निशा बीती । सूरप्रभु नन्दसुतचले अकुलायकै गयेताधाम रसकामजीती १०१ राग बिभास ॥ चन्द्रावलि धाम श्याम भोरभये आयेजू । इत रिसकरिरही बामरैनिजागि चारोंयाम देखे जो द्वार कान्हठाढ़े सुखदाये जू । मन्दिर ते रही निहारि मनहींमनदेतिगारि ऐसेकपटी कठोरआये निशिबीते । रिसनहीं सकीसम्हारि बैठी चढी द्वार ठाढ़े गिरधारि निरखि छबि नखशिखहीते । बिनगुण बनि हृदयमाल ताबिच नखक्षत रसाललो-

चन दोउ दरशिसाज जैसीरुचिबाढी। जावक रँगलग्योभाल बन्दनभुज पर बिशाल पीकपलक अधर झलक बामप्रीतिगाढी। क्यों आयेकौन काज नानाकरि अङ्गसाज उलटे भूषणशिंगार निरखत हौंजाने। ताही के जाहुश्याम जाके निशिबसेधाम मेरेगृह कहाकाम सूरदासगाने१०२॥

मुखमाके गृहते चन्द्रावलि के आये ॥

राग बिलावल ॥ तहईं जाहु जहँरैनि बसे। काहेको दाहनहो आये अँग अँग देखत चिह्नजसे। अरगज अङ्ग अरगजी माला बसन सुगन्ध भरेसे हैं। काजर अधर कपोलनि बन्दन लोचन अरुण ढरेसे हैं। पलकन पीक मुकुर ले देखो सकौनहीं अनैसेहैं। सूरदास प्रभु पीठि बलय गडे नागरि अङ्गभरेसेहैं १ तहईं जाहु जहँ रैनिहुते। काह दुराव करतमनमोहन मिटे चिह्ननहिं अङ्गजुते। बिनहीं गुण उरहार बिराजत पठ्ठ चतुरि हिय लायसुते। बिथुरी अलक अटपटे भूषण कामकुटिल कुच बिच युगुते। सुरतनु रागरँगे अतिराजत भामिनि भवनभले भुगुते। सूर सुदेश अधर मधुफोके लोचन अलस उनीनउते २ पीताम्बर पटुकहा भयो। नीलाम्बर ओढेहो आये अति डहडहो नयो। तैसोइ अङ्गबसन रँग तैसोई कहाकहौं यहशोभा। तैसिय बनी मरगजी के गरि ताञिय के मनलोभा। एतेपर क्यों बोलतनाहीं कहा खोयसे आये। सूरश्याम यहअब मैंजानी नागरिचित्तचुराये ३॥ रागभैरों॥ जानतिहौं जैसे गुणनि भरेहो। काहेको दुरावकरत मनमोहन सोइ पै कहौ तुम जहां ढरेहो। निशि जागत निजभवन न भावत आलस सब अङ्गधरेहो। चन्दन तिलक मिल्यो कहँ बंदन काम कुटिल कुच उरउघरेहो। तुम अतिकुशलकिशोर नंदसुत कहोकौनके चित्त हरेहो। औचकहीजिय जानि सूरप्रभु सौंहकरन को होत खरेहो ४॥ रागबिलावल॥ तहईं जाहु जहँनिशाबसे हो। जानति हौं पिय चतुर शिरोमणि नागरि नागर राग रसे हो। घूमत हौ मनोंपिया उरगिनी नव बिलास अमसेज डसेहो। लटपटि पाग महाउर के रँग मानिनि पगपरशीश घसेहो। बिगलित बसनसरगजी माला पीठि बलय के चिह्न लसेहो। सूरदास प्रभुप्रिया बचन सुनि नागरि नगधर नेकहँसेहो ५ तहईंजाहु जहँरैनि गँवाई। काहेको मुह परसन आये जानतिहौं चतुराई। वाकेगुण मनते नहिँटारतनाहीं

बोलत बैन। या छबिपरमैं तनमन वारों पीक बिराजत नयन। अली करी यह दरश दिखायो ताते नयन सिराने। सूरश्याम निशि सुख ह्यां लूट्यो हमकोभयो बिहाने ६ ॥ रागभैरों ॥ हाहा हो पिय बातकहौ। आपु कछू जिय करत रहत हौ तो तुमसों सों मौन रहौ। कहाचूक हमको जियलागै छमिरहेहौ काहेजू। तबहींते वैसेहिहौ ठाढ़े मोतन को नहिंचाहेजू। अबहमको अपराध क्षमौगे कृपाकरो मुखबोलोजू। सूरश्याम अब तजो निठुरई गुड़ी हृदय की खोलो जू ७ ॥ रागबिलावल छूसेहो पिय छूसेहौ। उतरनको उत्तर न देत देखेहितहीन कछूसेहौ। वह चितवनि न होय नयननकी बचनन बहुतहँसेहौ। वहसुख कमलबिकाश नहीं रति शायक शिशिर बिदूसेहौ। कौछुटिरहईसंपदा करते को ठग ठगेकछूसे हौ। मेरेहु जान सूरप्रभु सांचेहु मदनचोरसिलिमूसेहौ ८ मदन चोरसों जानिमुसाया। अपनी लालीखोय पीककी लाली पलकनि पाये। ह्यांते गयेचतुरई लीन्हे सोसब उनहिंछिपाये। आलसअबल जम्हात अंगसब खंडत तन दरशाये। कंचन खोय कांचलैआये वित तौ भलो फबायो। सूर कहूं घरपर मन नाहीं जैसे हाल करायो ९ ॥ रागकाफी ॥ लालउनींदे लोचना आलस भरि आये। अरुझि कामकी बेलिसों कौनेबिलमाये। शिथिलपेंच शिरपागको जावक रँगभीने। पायँपरे अब बशकरेतबरस चसदीने। लालीमेरेलालकी सबतनुढोले। लालीलै लालनगये आयेमुखपीले। बिन गुणमाल हियेलसैपियप्रीति निशानी। सखि रसाल हम को दई तुमदेहुबिरानी। पग डगमग इत कोधरो उतको दशधाये। अभिअन्तर अंतरबसे पियमोमनभाये। उलटितहीं पगुधारिये जासों मनमान्यो। छपद कंच तजि बेलिसों लटि प्रेम न जान्यो। तब हँसिबोले श्यामजू तुम ते को प्यारी। तुम बिनु कलमोकोनहीं अतिही सुखकारी। बचन चतुरई छांड़िदेहु कहँपाँढ़ि आये। सूरश्याम गुणराशिहौ नीके प्रकटाये १० ॥ रागसुघराई ॥ आये लाल यामिनी जागेतेभोर। नीलकलेवर कोमल उरपग गड़िगयेकुच जु कठोर। निशिबसिरहे भामिनीकेगृह ह्यां उठिआये भोर। सूरदास प्रभु बचन बनावत अब चोरत मनमोर ११ आये लाल ललित भेष किये। पीक कपोल अधरपर काजर जावक भालदिये। चन्दन खोरि

मिटी अब आये कुंकुमरंग हिये। पीताम्बर कहँ डारि कौन को नी-
लांबरहि लिये। लाली दे पियरी ले आये देत पुलकि जिये। सूरदास
प्रभु नवल रसीले वोऊ नवल त्रिये १२॥ रागललित ॥ मैं जानी जहँ
रतिमानी। तुम आये हौ ललना जब चिरिया चुहचुहानी। मुखकी
बातकहाकहो ठानी बातनहीं पहिंचानी। इतेपर अँखियां रसमसानी
अरु पगिया लटपटानी। भाल जावक रंग बनाये अधर अंजन प्रकट
जानी। बिन गुण बनीमाल सबअङ्ग उलटीनिशानी। सूरदास प्रभुगुण
निजानी अन्तर्गत की जानी। धनि त्रिया तुम को जो सुखदीनो संग
जागत रैनिबिहानी १३॥ रागविभास ॥ मैंजानी पियबात तुम्हारी। भोर
भये मेरेगृह आये ऐसे भोरे भारी। ह्यांआये मुख परशत मेरो हृदय
टरत नहिं ध्यारी। कपटचतुरई दूरिकरोजूअयशलेत अरुगारी। कहा
सांचमें खोवत करते झूठेकहा फबावत। सूरश्याम नागरनागरि वह
हम तुम्हरे मन आवत १४॥ रागकाफी ॥ रैनि के रीझेकी बात कहो।
काहेकोसकुचत मनमोहनठाढ़ेक्यों न रहो। पीतांबर कहभयो तुम्हारो
कीधौं लियोगहो। नीलांबर पहिरावन पाई सन्मुख क्यों न चहो। तब
हँसिचले श्याम मंदिरतन कछुजिय लाजगहो। सूर श्याम ह्वांई अब
रहिये अति पुनीत तुम हौ १५॥ रागबिनावल ॥ तुम रीझे की उनहिं
रिझाये। हाहापिय यहप्रकट सुनावहु कोटिक सोंहदिवाये। जावक
भाल चिह्न मैं जान्यो हठकरि पायँ लगाये। नयननि पीक सया उन
कीन्हे अंजन अधर लगाये। बिन गुणमाल मिली कहुं तुमको कंकण
पीठि दिवावहु। सूरश्याम हमतो यों जानति तुमहूं कहि न सुनावहु
१६ आजु हरिरैनि उनींदेआये। बिन गुणमाल बिराजत उरपर च-
न्दनरेख लगाये। अंजन अधर ललाट महाउर नयन तमोर खवाये।
मगन देह शिर पाग लटपटीजावक रंग रँगाये। हृदय सुभग नखरेख
बिराजत कंकण पीठि बनाये। सूरदास प्रभुयहै अचम्भव तीनितिलक
कहँपाये १७ आजुहरि आलस अङ्गभरे। कबहुंक बांह जोरि ऐंड़ावत
बहुत जम्हातखरे। बैठोगेकीपायँधारियेदेखतनयन सिराने। सांझआय
यकदर्शनदीन्हो कोअबहोत बिहाने। कबके द्वारभये पियठाढ़ेभोरे भये
कन्हाई। सूरश्याम ह्यां सुरति करतिवह यहतुम झोर लगाई १८ सौंह

करनकोभोरहीं तुम सेरेआये। रैनिकरतसुख अनतहीं ताकेमनभाये। अङ्गअँगभूषण औरसेमांगेकहुंपाये। देखियकित यहिरूपको लोचन अरुणाये। पाग लटपटी सोहई जावक रङ्गलगाये। मान कियो वह भामिनी धनिपायँ पराये। यह चतुराई कहँपढी उनहीं समुझाये। सूरदास प्रभु सांचिले उपमा कबि गाये १९॥ रागगौरी॥ तुमको कमल नयन कबिगावत। बदन कमल उपमा यहसांची ताग़ुण को प्रकटावत। सुन्दर करकमलन की शोभा चरणकमल कहवावत। औरअंग कहिकहा बखानै इतनेहिंको गुणगावत। श्यामनाम अद्भुतयहबाणी श्रवणसुनत सुखपावत। सूरदासप्रभु ग्वाल सँघाती जानीजाति जनावत २०॥ राग बिलावल॥ तुम न्यायकहावत कमलनयन। कमल चरण कर कमल बदन छबि अरु जु सुनावत मधुरे बैन। गातप्रकट रतिरबिहि जनावत हुलसत आवतहौ अँकदैन। निशि द्वार कपाटसदलबधु मधुपनि पिवत परम चैन। मिलेहु मांझ उदास अनतचित बसतसदा जल सकुचैन। सूरकपट फलतबहिं पायहै अपनि अरपं जब देहैंमैन २१॥ रागभैरों॥ धीरधरो फल पावहुगे। अपनेहींसुखके पियचांडे कबहूंतो बश आवहुगे। हमसों कहत औरकी औरै इन बातन मन भावहुगे। कबहुं राधिकामान करैंगी अंतर बिरह जनावहुगे। तबचरित्र हमहीं देखैंगी जैसे नाच नचावहुगे॥। सूरश्याम अति चतुर कहावत चतुराई बिसरावहुगे २२॥ रागदेवगन्धार॥ यह कहि प्यारी भवनगई। रीझे श्याम देखि वा छबि पर रिससुख मूंदिरई। द्वार कपाट दियो गाढेकरि कर आपने बनाई। नेक नहीं कहुं संधि बचाई पौढिरही तबजाई। येअंतर्यामीपरमेश्वरजोकछुकरैंसोहोई। जहांनारि सुखमूंदि पौढिरही तहांसंग रहेसोई। जोदेखे ह्यांसंग बिराजत चलीभिया भुहराई। सकश्याम अँगनाहींदेखे यकगृहरहे समाई। उनको वै अति बिनय करतहैंइत अंकमभरिलीन्हो। सूरश्याम मनहरन कहावहुमन हरिके बश कीन्हो २३॥ रागकल्याण॥ तब नारि रिस भूलिगई। पुलकअङ्गअँगियाउरदरकीअङ्गअनङ्गजई। अङ्कमभरिपियप्यारीलीन्हो निशि सुख बासरदीन्हो। मान छंडायहुलास बढायोसुफल मनोरथ कीन्हो। तब निजधाम श्याम पगुधारे तहां सहचरी आई। सूरज

प्रभु रसभरी नागरीदेखिरही मनलाई २४ ॥ रागआसावरी ॥ चन्द्रावली हर्म्यमें बैठी तहां सहचरी आईहो। औरैबदन औरअँगशोभादेखिरही चपलाईहो। कहा आजु अति हर्षितबैठी कहा लूटिसी पाईहो। क्यों अंग शिथिल मरगजीसारी यहछबि कही न जाईहो। मोसों कहाटु-राव करति है कहा रही शिर नाईहो। मैं जानी तोहिंमिले सूरप्रभु यशुमति कुंवर कन्हाईहो २५ चन्द्रावली करति चतुराई सुनत बचन मुखमूंदि रही। ज्वाबनहीं कछुदेति सखीकोह्यांनाहीं कछु बैनकही। गूंगे गुरुकी दशा गई ह्वै पूरण श्याम सुहाग भरी। वहै ध्यान हरिके अनुरागी वहलीला चितते न टरी। तबबोली मोसों कछु बूझतिकहा कहींसुख बनैनहीं। सूरश्याम युवती मनमोहन तिनकेगुण नहिं परत कही २६ ॥ रागबिलावल ॥ हाहाकरि चन्द्रावलि सोंसोंहरिके गुण मैंहूंसुनि लेउं। श्रवणन मग सुनि हृदय प्रकाशों पुनिपुनिरी तोहिं उत्तरदेउँ। कै तोहिंमिलेतीर यमुनाके कीतोहिं मिले भवनहींमांझ। कह तोहिं मेरे गृह आये मानो अस्त होत रविसांझ। काहु बामके धाम बसे निशि भोर सदन गये मेरे आय। सूरश्याम जो चरित उपायो कहन चहों मुखकहेउ न जाय २७ ॥ रागगौरी अबतौ कहे बनैगीमाई। कहाँ श्याम अचरज सोंकीन्हो कहतकहेउ नहिंजाई। कैसेलाल अनततैंआये जैसे तेरे गेह। कैसे मानुकियो क्यों मिलिगये कैसेबढेउ सनेह। तब गद्गद बाणी मुखप्रकटी सुनुसजनी दैकान। सूरजप्रभुके चरित सुनाऊं जैसे बिसरेउ मान २८ मैं हरिसों हो मान कियोरी। आवत देखि आनि बनि तारत द्वारकपाट दियोरी। अपनेहीं कर शांकर सारी सखी सुसाधि सियोरी। जो देखोंतौ सेज सँवारति कांप्यो रिसनहिं वोरी। अबझुंकिचली भवनतेबाहरतब हठि लोटलियोरी। कहा कहौं कछु कहत न आवै तहँगोविन्द बियोरी। बिसरिगयो सबरोष हर्षमनपुनि फिरि मदन जियोरी। सूरदास प्रभु अति रतिनागर छबिमुख अमृत पियोरी २९ ॥ राग बिलावल ॥ तबहींते भयोहर्षहियो। वैसेआय चरित येकीन्हो सदनपैठि मनचोरि लियो। अङ्ग बामछबि लखि देखिके रिसउपजी जियभारी। कोधगयो उरआनँद उमग्यो सुखतनुदशा बिसारी। ऐसे चरित कौनको आवै जो कीन्हो गिरिधारी। सूरश्याम

रतिपतिकोनायक सबलायक बनवारी ३० ॥ राग भैरों ॥ नँदनंदन सुख दायककहैं। नयनसैनदैहरतनारिमनकामकामतनुदायककहैं। कबहू रैनि बसत काहूके कबहुँ भोरउठि आवत हैं। काहूको मनआपु चुरावत काहूके मन भावत हैं। काहूके जागत सगरीनिशि काहू बिरहजगा-वतहैं। सुनहुसूर जोइजोइ मनभावै सोइसोइ रङ्ग उपावतहैं ३१ ॥ राग बिलावल॥ अनतहि रैनिरहे कहुँश्याम। भोरभये आये निजधाम। ना-गरि सहज रही मनमाहीं। नंद सुवन निशि अनत न जाहीं। महर सदनकी सेरेगेह। हिरदय है पिय यहै सनेह। आयेश्याम रही मुख हेरि। मनमन करनलगी अवसेरि। रतिरस चिह्न नारिकेजानि। सूर हँसी राधा पहिँचानि ३२ ॥ राग रामकली ॥ आजुबने पियरूप अगाध। पर उपकार काज तनु धारेउ पुरवत सब मनसाध। धर्मनीति यह कहाँपढीजू मोहूंबात सुनावहु। कहौ कहाँ काको सुख दीन्हो काहे न प्रकट बतावहु। धनि उपकार करत डोलत हौ आजु बात यह जानी। सूरश्याम गिरिधर गुण नागर अङ्ग निरख पहिँचानी ३३ राग गूजरी ॥ पिय छबि निरखि हँसत पियभारी। कहाँ महाउर पाग रँगाई ये शोभा यक न्यारी। अरुण नयन अलसात देखियत पलक पीक लपटानो। अधर दशन छत बन्दन राजत बंधुकपर अलसानो। हृदय रुचिर मोतिनकी माला नख रेखी तेहितीर। बिन गुणमाल सूरके स्वामी कुंकुम श्याम शरीर ३४ ॥ राग बिलावल ॥ धन्यआजुयह दरशदियो। धन्य धन्य जासों अनुरागे तब जानी नहिँ और बियो। भलेश्याम बशभलो भावती भले भलीमिलि भलीकरी। यह मेरोजिय अतिहि अचंभित तौ बिछुरत क्यों एक घरी। जाहु तहीं सुख दीन्हो मोको वै सुनिकै रिसपावैगी। सूरश्याम अतिचतुर कहावत बहुरेउ मन न मिलावैगी ३५ क्योंआये उठिभोर यहाँ। काहेको इतनो श्रम माने रैनिरमे फिरि जाहुजहाँ। हमको कहाइती गरुआई तुमहीं क्यों न सम्हारोजू। उनआये ह्यां नाहीं जान्यो अजहूं लोपग धारोजू। ह-महूं बोलि उहाईलीजो डर उनको उमहूँकोहै। सूरश्याम तिनहीं सु-खदीजो जो बिलसे संग तुमकोलै ३६ ॥ राग रामकली ॥ उनहीं को मन राखे काम। ह्यां तुमतौ आये जो नाहीं बात सुनतहौ नाहीं श्याम।

देखौ अङ्गअङ्ग प्रतिशोभा मैंतो भूलीहैं यहिरूप। धनि पियबने बनी वेऊ हैं एक एकते रूप अनूप। सो छबि मोहिं देखावन आये मया करी बहुते हरिआजु। सूरदासप्रभु रसिकशिरोमणि बड़ो रसिकिनी बन्यो समाजु ३७॥ राग बिलावल॥ रसिक रसिकई जानिपरी। नयनन ते अवन्यारे हूजे तबहींते अति रिसनि भरी। तुम यौबन अरुसो नव यौवनि सतेपर सब गुणन भरी। लाजनहीं मेरे गृह आवत जाहुजाहु करि त्रिय भृहरी। अञ्जन अधर कपोलन बन्दन पीक पलक छबि देखि डरी। सूरश्याम रति चिह्न देखावन मेरे आये भले हरी ३८॥ राग धनाश्री॥ श्याम त्रिया सन्मुख नहिँ जोवत। कबहुँ नयन की कोर निहारत कबहुं बदन पुनिगोवत। मनमन हँसत असततन परगट सुनत भावतीबात। खण्डितबचन सुनत प्यारीके पुलकहोत सबगात। यह सुख सूरदास कछुजाने प्रभु अपने को भाव। श्रीराधा रिसकरत नि-रखिमुख सो छबिपर ललचाव ३९ पियको सुखप्यारी नहिँ जाने। जोइआवत सोइ सोइ कहिडारत जाहुजाहु तुमयाने। काहेको मोहिँ डाहन आये रैनिदेत सुखवाको। भली नबेली नोखी पाई जो जाको सो ताको। चन्दन बन्दन त्रियअँग कुंकुमा शोभितये ह्यां आये। सूर श्याम यह तुमहिँ बड़ाई औरनिको शरमाये ४०॥ राग बिलावल॥ औरन को छबि कहा देखावत। तुमहींको भावत मनमोहन हम देखत रिस पावत। आपुनको भइ बड़ी प्रतिज्ञा जावकभाल लगाये। याकोअर्थ नहीं कोउ जानत मारत सबन लजाये। पिय जियरक हम अतिसकु-चत हैं दर्पण ले मुख देखौ। सूरश्याम क्यों बोलत नाहीं क्यों हमतन नहिँ पेखौ ४१॥ राग गौरी॥ श्याम हँसे प्यारीमुख हेरो। रिसनि उठी भुहराय कहेउ यह बश कीन्हो मनमेरो। जायहुँसो पिय तेही आगे मैं रीझी अतिभारी। ऐसे हँसिकेताहि रिझावहु देउँकहा अबगारी। होत अबार गमन अब कीजे धरणी कहा निहारत। सूरश्याम मनकी मैं जानीताके गुणहि बिचारत ४२॥ रागदेवगन्धार॥ मैं जानी पिय मन की बात। धरणी पग नख कहाकरोवत अबसीखे ये घात। तुमजानें त्रिय हमहिं सयाने अरुसबलोग अयाने। रैनि बसतकहुँ भोर हमारे आवतनहींलजाने। यहचतुरई पढ़ीताहीपै सोगुणहमसे न्यारो। धनि

धनि सूरदास के स्वामी काहे हमन बिसारो ४३ मैं जानों हो जू लाल तहीं न सिधारिये जहां नयो नेहरा। मुहकीभलाई मोहूंसे करन आये जियकी जासों ताहीसों तुमबिन सूनो वाकोगेहरा। निशि के सुखकी कहेदेत अधरनयना उर नख लागे छबिदेहरा। बेगि सँवारो पावँ धरिये सूरके स्वामी न तरु भीजै गोपियरोपट आवतुहै पियमेहरा ४४ ॥ रागगोंडमलार ॥ ठाढ़े रहौ आँगनहींहो पिय जौलौं मेहु नख शिख भीजो। परनदेहु बड़ीबड़ी बूंदैं तुमचीर उतारि और बस्त्रपहिरौ तब गेह देहरी पावँदीजो। कहियेबात रैनिकी सांची ता पीछेसौंहैं कीजो। सूरश्यातुमहौ बहुनायक रेहसुधारि मो छूजो ४५ ॥ रागमलार मोहूंसों निठुराई ठानी हो मोहनप्यारे काहेको आवनकहेउ सांचेहो जु सांचे। प्रीतिके बचन बांचे बिरह अनल आंचे आपने गरज को तुम सकपायँ नाचे। भलेहौ जू जाने लाल अरगजी भीनी माल केशरि तिलक भाल मैन संचकाचे। निशिके चिह्नचोहे सूरश्याम रतिभीने ताहीके सिधायो पिय जाके रंगराचे ४६ ॥ रागमालकौशिक ॥ तुम जनि सकुचो मेरे प्यारेलाल जा तियसों रति मानी ताही के रहौ अब। मैं इतनेहीं भलोमान्यो प्रीतम जो मेरे आँगना पावँ धारे आपुन जब। नयन तृप्तभये दरश देखतही श्रवण तृप्त भये बचन सुने तब। सूरदास प्रभु चरण छुये कहति रोमरोम पुलकित अंगभये सब४७॥ रागकान्हरो नयन चपलता कहां गँवाई। मोसों कहा दुरावत नागर नागरिरैनि जगाई। ताहीकेरंग अरुणभयेहौ धनि यह सुन्दरताई। मनो अरुण अम्बुजपर बैठे मत्त भृङ्गरस आई। उड़ि न सकत ऐसे मतवारे लागत पलक झमाई। सुनहु सूर यह अंग माधुरी आलस भरे कन्हाई ५८ रागबिलावल ॥ नयनन की चंचलताकहा कहैं भीनेरँगकौनके हो श्याम हमहूं सों कतहौ दुरावत। औरनकेबदन देखिबे को नेम लियोताको पलकन राखे भार भरेनये आवत। पुहुपगन्ध लोभभँवरउड़ि न सकत फिरि बैठि जात समीप रति मानी संगलिये आवत रति कीरति गावत। सूरदास प्रभु प्यारी रसबशकीन्हे सुखकी हमहिं बनावत ४९ ॥ रागकान्हरो ॥ जाके रस रैनि आजु जागे हो लाल जाई। जावक तिलक भलादियोहै बूंद लालबिन गुणबनी माल कहत अनोखी अरु बातनि

बनाई । अधर अंजन दाग मिट्यो है पीक पराग और मिटी बदनकी ललाई । अङ्ग अङ्ग शिथिल भयेहो प्रेम सूरके स्वामी मिटिगई चन्द्र-ललाई ५० रङ्गभरिआयेहो मेरेललना बातें कहतहो अटपटी । अतिअल-सात जम्हातहो प्यारे पिय प्रकट त्रिया प्रताप छूटत नहीं न अंतरकी गटी । यह चतुरईअधिकाई कहां पाईश्याम वाके प्रेमके परेहौपटी । सूरदास प्रभु गिरिधर बहुनायक तन मन नयन चटपटी ५१ डोलत महल महल यहै टहल हम जानतितुम बहुनायकपिय । आयेहौसुरत किये हाटक रसलिये सकसकी धकधकी हिय । छूटे बन्दन अरुपा-गकी बांधनि लटपटे पेच अटपटे दियो । सूरदास प्रभु हौ बहुनायक मेरेपावँ धारे बैठो जुबैठो भली कियो५२ ॥ रागईमन॥ महलमहलअब डोलतहो ।यहै कामते धाम बिसरेउ बूझे काहेन बोलत हौ। बहुना-यकी आजु मैं जानी कह चतुराई तोलतहो। निशि रसकियो भोर पुनि अटके शिथिल अंग पग डोलत हो। हटके चिह्न पाछिले न्यारे धकधकात उर जोलत हो। जाहु चले गुण प्रकटसूरप्रभु कहचतुराई छोलतहो ५३ अङ्गअङ्गरङ्गभरे आये हो। रङ्गभरिपाग भालरङ्गशोभा रँग रँग नैन पगाये हो। रंग कपोल रँग पलकन शोभाअधरन श्याम रँगाये हो। नख क्षत रङ्ग चारु उर रेखा रति रङ्ग रैनि जगाये हो। कंकण बलय पीठि गड़िलागे उरउर छापबनाये हौ। सूरश्यामबामा रङ्ग पागे अनुरागे मन भाये हो ५४ ॥ रागबिलावल ॥ बारबार मैं कहति हौं पिय तहीं सिधारो। आयेहौ मनहरण को हरि नाम तुम्हारो। भलीबनी छबि आजुकी क्यों लेत जम्हाई। रैनि आजु सोयेनहींरति काम जगाई। वह रति तुम रतिनाथ हौ हम कैसे भावैं। सूर श्याम तुम बहु गुणीजे तुमहिं रिझावैं ५५ ॥ रागसोरठ ॥ सकुचत श्यामकहत मृदुबानी। किनदेख्यो किन कही बातयह मोहजूर कहैआनी। याते बचनबोलिनहिंआवतरिस पावतहो भारी। जोरिकहति बातेंतुवआगे खोटी ब्रजकी नारी। तुमहूंते ऐसी को प्यारी सौंह करों जो मानी। सुनहु सूर जो बूझति मोको मैं काहुन पहिँचानी ५६॥ रागभैरों ॥ बिन बोल पियरहियेजू। नाहीं कही हमैं कहतको अब ऐसेजिन दहिये जू। मौनरहे तो कछूगँवायो इनबचनन कह लहिये जू। एतेपर बकबा-

दन लागे कैसेरिस मनसहियेजू। सौंहकहा करिहैं सुनिपावै सन्मुखव्है धौं कहियेजू। सूरदासप्रभु रसिकशिरोमणि रसिकहि सबगुण चहियेजू ५७ ॥ रागबिलावल ॥ आइगईं ब्रजनारि तहां। सौंह करत पियप्यारी आगे आनँद बिरह महां। प्यारी हँसी देखि सखियनि को अन्तर रिस है भारी। नैन सैन दै अँग अँग निरखति पिय शोभा अधिकारी। श्यामरहे मुखमूँदि सकुचिकै युवति परस्पर हेरैं। सूरदासप्रभु अङ्ग अनुप छबि काहँपाये कहिकेरैं ५८ तब नागरी कहति सखियनिसों एते पर ये सौंहकरैं। दरशन प्रातदेतहैं हमको निशि औरनिके चित्तहरैं। तुमहीं देखिलेहु अँगबानक एतेपर क्यों सहीपरैं। कृपा करौं अबतहीं सिवारैं मोआगेते अनत टरैं। यहछबि देखिसनाथ भईं मैं अब ताही पर जायढरैं। सूरश्यामसों देखि चले डरि कहो सखी अब ह्यां न फिरैं ५९ ॥ रागबिहागरो ॥ श्यामगये तिय मान कियो। देखौ मोहिँ दोष तुम देती उन ऐसे मनचोरि लियो। जाहुसदन तुमहूं सब अपने मैं बैठी हौं धाम। जानदेहु अब ह्यां जनिआवैं ऐसेनको कहकाम। अनतहिबसत अनतही डोलत आवत किरणि प्रकाश। सुनहु सूर पुनि तौ कहि आवै तनगिगये तापास ६० ॥

यहांते राधा जीको मान ॥

रागबिहागरो ॥ यह कहिकै त्रियधाम गई। रिसनिभरी नखशिखलौं प्यारी यौवन गर्बभई। सखी चली गृह देखि दशा यहहठ करि बैठी जाई। बोलतिनहीं मानुकरि हरिसों हरि अन्तररहेआई। यहिअन्तर युवती सबआई जहां श्याम घनढारे। प्रिया मानुकरि बैठिरहीहै रिस करि क्रोध तुम्हारे। तुमआवत अतिही झुहरानी कहाकरी चतुराई। सुनत सूर येबात चकृतपिय अतिहि गये मुरझाई ६१ बहुरि नागरी मानकियो। लोचन भरिभरि ढारिदिये दोउ अति तनु बिरह हियो। देखतही देखत अति व्याकुल प्रिय कारण अकुलाने। वे गुण करत होय अबकांचे कहियत परम सयाने। यह सुनिकै दूतीहरि पठईदेखि जाय अनुमाने। सूरश्याम यह कहितेहि पठई तुतरतजैं जोहिमाने ६२

रागकेदारो ॥ दूतीदई श्याम पठाय। औरकछु मुखकहत बाणी तहांबैठी जाय। बियातन परबाहिनाहीं अपटि आवैंजाहिं। सौतिशाल सलाइ

बैठी डुलत इतउत नाहिँ। भीतिबिनु कह चित्रदेखैं रहीदूतीहेरि। सूर प्रभु आतुर पठाई करतिमन अवसेरि ६३ ॥ रागकान्हरो ॥ दूती मन अव-सेरि करै। श्याम मनावन मोहिँ पठईहै यह कतहूं तबते न टरै। तब कहि उठी मानु अति कीन्हो बहुतकरी हरिकहा करौं। ऐसे बिनवे नहीं जानिहैं अब कबहूं जिनि उनहिँ टरौं। मैं आवति यमुना तटतेब्रज सखी एक यहबात कही। सुनहु सूरमैं रहि न सकी गृह कहा श्याम की प्रकृति सही ६४ ॥ राग बिहागरो ॥ अबद्वारेते टरत न श्याम। अबपर घरको सोंह करतहैं भूलिकरो नहिँ ऐसोकाम। अब तू मानुतजौ जिनि उनसों यहैकहन आई तेरेधाम। अब समुझी औरौ समझैबे हम जब कहैं करै तबताम। अबमोको यहजानि परीहै काहूके न बसै कहुँयाम। सूरदास दूतीकी बाणी सुनति धरत मनहीं मन काम ६५ ॥ रागसूहो ॥ जबदूती यहबचन कहेउ। तबजाने हरिद्वारे ठाढ़े उरउमग्यो रिसनहीं रहेउ। काहेको हरिद्वार खड़ेहैं किनराखे कहिजोभि गरै। मौन गहेउ मैंहीं कहिआवत काहेको तू रिसनिजरै। चतुर दूतिका जानिलईजिय अब बोलीगयो मानसबै। सूर श्याम पै आतुर आई कहत आन की आनफबै ६६ ॥ राग केदारो ॥ काहि मनाऊँ श्यामलाल बालजोरैं नहिँ डीठि। मुखहू जो बोलै तौ मनहू की लहिये ऐसी निहारी अहीठि। अपनीसी बहुतकही सुनि उनि सबैसही बारकी बूंद ताको कहा करै बसीठि। सूरदासके पियप्यारी आपुहिजाय मनायलीजै जैसीबयारि बहै तैसी मोड़िये जुपीठि ६७ ललन तुम्हारी प्यारी आजु मनायो न मानति। झिंहरावत जानिका बैठी कियोजु इतरि तुमहीं लैकोकियो गुरा गानति। भरिभरि आँखियन नीरलेतिपै ढारति नाहीं अतिरिस कम्पतिअधर फरकिकरि भृकुटी तानति। सूरदासप्रभु रसिक शिरो-मणि आपुहि चलिये तौहोतौ भले मनावति ६८ ॥ रागपूर्बी ॥ हौंकैसेकै ल्याउ जो मरमपाउ श्यामवाको मान मानो गरबै भयो। तनु कञ्चन गिरि प्रकटकियो तामैंबसनकोट रचेउअञ्चलडेउढ़ी वोटदियो। बचन पौरियाबोलनखोलै मुखपौरिमूंदिरहेउ। मोहनभौंहकमान नयनारिस केबानतातेजाइ न निकटगयो। सूरदासप्रभु चतुरकहावत आपुहिच-लिये तौतुमहूं पैजायलयो ६९ ॥ रागनट ॥ बिहरति भानुसरजुकुमार।

कैसेहूनिकसतिनहींहै रहीकरि मनुहारि। मौनधारि अपाररचिअव-गाह आंशु जुवारि। मगन ह्वै वै डरत नाहीं थकित प्रकट पुकारि। सूरश्वाससरोज लोचन डुलनिजनु जलचारि। ग्राहक प्राणचाहकत-रत तहँडर डारि। चिकुरसइ बरागकर अरुझति सकति नहिं निर-वारि। नीलअंचलपत्र पदमिनि उरजजलज निहारि। रहेउरचिरुचि मान मानिनमन मरालमुरारि। सूरआपु न आनिये गहिबांहनारिनि-कारि ७०॥ रागबिहागरो॥ यह सुनिश्याम बिरह भरे। कहुं मुकुट कहुं करि पीताम्बर मुरछि धरणि परे। युवति भरि अँकवारि लीन्हीहैं कहांगिरिधारि। आपुहीचलिबांह गहिये अंकलीजै नारि। अतिहि व्याकुल होतकाहे धरौ धीरजश्याम। सूर प्रभु तुम बडेनागर बिवश कीन्होकाम ७१॥ रागरामकली॥ श्यामहिं धीरजदै पुनिआई। बाणी यहै प्रकाशत मुखसे व्याकुल बडेकन्हाई। बारम्बारनयन दोउढारत परे मदन जंजाल। धरणिपरहे मुरझाय बिलोकेकहा कहौं बेहाल। बैठीआय अनमनी ह्वै कै बार बार पछिताती। सूर श्याम मिलिकै सुखदेहि न जो तुमबडी सयानी ७२ तुहीं पिय भावति नाहिन आन। निशिदिन मनमन करत मनोरथ रसबस केलिनिदान। ध्यान बिलास दरश संभ्रममिलि मानत मानिनिमान। अनुनय करत बिवश बोलत है दै परिरम्भनदान। प्रथम समागमते नाना बिधि चरित तिहारेगान। सूरश्याम कुहबर अंतर सुनि सुयश आपने कान७३॥ रागसारंग॥ श्यामा तू अति श्यामहिंभावै। बैठतउठत चलत गउचारत तेरिय लीलागावै। पीतै पीतबसन भूषणसजि पीतधात अँगलावै। चन्द्रानन सुनि मोर चन्द्रिका माथेमुकुट बनावै। अतिअनुरागसैन संभ्रममिलि सङ्ग परम सुखपावै। बिछुरत तोहिंक्वासि राधाकहि कुंज कुंज प्रतिधावै। तेरो चरितलिखै अरुनिरखै बासरबिरहु गँवावै। सूरदास रसरास रसिक सों अंतर क्यों करिआवै ७४॥ रागबिहागरो॥ मनपछितावोई रहिजैहै। सुनिसुन्दरि यहसमय खोयते पुनि न शूल सहिजैहै। मानहु मैन म-जीठ प्रेमरङ्ग तैसेही गहि जैहै। काम हरय हररे हरि अंबर देखतही बहिजैहै। इतभेदकी बातसखीरी कतकोऊ कहि जैहै। परत भवनि खनि-कूपसरत्यों मदनअगिनि दहिजैहै ७५॥ रागकेदारो॥ तेरेरी नयन

सुहावने हो नेक न भावत न्यारेरी। पलक वोट प्राणजात तेरेरीध्यान चकोर चन्दा बरणानचितवनिपर चेरेरी। कमल कुरंगन मधुप उपमा नहिं आवै चंचल रहत चितेरेरी। सूरदास प्रभुकी तुहीं जीवनि कतहि करत बिय भेरेरी ७६॥ रागसारंग॥ जब जबतेरी सुरति करत। तब तब डब डवाय दोउ लोचन उमगि भरत। जैसेमीन कमल दलको चलै अधिक अरत। पलककपाट न होत तबहिंते निकसि परत। अंशुपरत ढरि ढरि उर ऊपर मुक्तामनहुं भरत। सहज गिरा बोलत न बनतहित हेरि हरत। राधा नयन चकोर बिना मुख चन्दजरत। सूर श्याम तुम्हारे दर्शन बिनु नाहीं धीरधरत ७७ बहुरि पछितैहेरी ब्रजनारि। देखिजाय ठाढे मगजोवत सुन्दर श्याम मुरारि। ऐसी निठुर नेक नहिं चितवति चंचल नयन पसारि। कहा गर्व या झूठेतन को देखि हाथलैबारि। तजि अभिमान मानिरी मानिनि मैं जु करति मनुहारि। सूर हंस स्वाती सुत धोखे कबहुंक खात जुवारि ७८ हरि तोहिं बारम्बार सम्हारै। कहि कहि सब युवतिन के नामहिं नहिं रुचि जेहि उरधारै। कबहुंक आंखिमूंदि करिचाहत चित धरि ठौर तिहारै। तब प्रसिद्धलीलाविहारते अबनहिं तुमहिंबिसारै। जो जाको जैसे करिजानै सो तैसे हितमानै। उलटी रीति तुम्हारी सुनि कै सब अबिरिजु करिजानै। क्यों पतिआ पठवै नहिं उनको बांचिसमुझि सुखपावै। सूरश्याम हैं कुंजधाम में अन्त न मन बिरमावै ७९ राधे हरितेरो नाम उचारैं। तुम्हरेहि गुण ग्रन्थितकरि माला रसना कर सों टारैं। लोचन मूंदि ध्यान धरि दृढकरि नेक न पलक उघारैं। अङ्ग अङ्ग प्रति रूपमाधुरी उरते नहीं बिसारैं। ऐसोनेस तुम्हारो पिय के कहजिय निठुर तिहारे। सूरश्याम मनकाम पुरावहु उठि चलि कहे हमारे ८०॥ रागकेदारो॥ जाके दरश को जग तरसत ताहि देरी दरश नेकदैरी। जाकी मुरलीकी धुनि सुर मुनि मोहैं ता तन नयन चितैरी। शिवबिरंचि जाको पार न पावत सो ता तेरे चरणन परसतुहैरी। सूर दासबश तीनिलोक जाके हैं सो तौ तेरेबश माईरी तू मुख धुनि सुनाय मोहिलैरी ८१॥ रागभोपाली॥ तुव कोहैरी कौने पठई तेरीको मानै। तूजो कहति श्याम को न देखे न सुने को पहिँचाने। और कहति कहिनेसु

लिये ह्यांको वैसी वेई जाने। सूरदासप्रभु रसिकबड़े तोको पठई अतिहि सयाने ८२ ॥ रागसारंग ॥ अति न हठकीजैरी सुनि ग्वारि। हौंजु कहति तू सुनि याते सुटसरै न सकोडारि। एक समय मोतिन के धोखे हंस चुगतहै ज्वारि। कामी कान्ह कुँवरके ऊपर सर्बस दीजै वारि। यह यौवन बरषाकी नदि ज्यों फोरति कतहि करारि। सूरदासप्रभु अन्त मिलहुगी येबीते दिनचारि ८३ ॥ रागरामकली ॥ कहा तुम इतनेहिँ को गर्बानी। योवनरूप द्योस दशहीको ज्यों अंजुलिको पानी। तृणाकी अग्निनि धूम को मन्दिर ज्यों तुषारकन पानी। रिसहो जरत पतङ्ग ज्योति ज्यों जानतिलाभ न हानी। करि कछुज्ञान अभिमान जानदे हैन कौन मतिठानी। तनु धनु जानिश्याम सुखदाये भूलति कहा अयानी। नवसे नदीचलति मर्यादा सुधिये सिन्धु समानी। सूर इतर ऊसर के बरषे थोरेहि जल इतरानी ८४ ॥ रागपुर्बी ॥ तू चलि प्यारीरी येतो हठ छांडि मानिनी। परम बिचित्र गुण रूप आगरी अतिही चतुर तिय भारीरी। मनमोहन तनु मदनदहतहै तोरि उनकि पियप्यारीरी। सूरदास प्रभु बिरह बिकलहैं नेकान निरखि निहारीरी ८५ ॥ रागबिहागरो ॥ बादि बकत काहेको तू कत आई मेरेघर। वे अतिचतुर कहाकहिये जिनि तोसी मुखलैन पठाई तनुबेषति बचनन भर। उतकी इत इतकी उत मिलवति समुझति नाहिन प्रीतिरीति कोहो तुम काहे गिरिवर धर। सूरदासप्रभु आनि मिलेंगे छुवैं पग अपनेकर ८६ ॥ रागमलार ॥ ज्यों ज्यों मैं निहोरो करौं त्योंत्यों यों बोलतिहैरी अनोखी रूपनिहारी। बहियां गहति सतराति कौनपर सगधरि डगरी कौनपर होति पोरी कारी। को कौन करत मान तोसी और प्रिय आन हठ दूरि करि धरि मेरेकहे आरी। सूरदास प्रभु तेरोपय जोवत तोहिँ तोहिँ रटलगी मदन दहत तनुभारी ८७ तूतो ग्वारि अहीरी तोसों वे कछु नँदनन्दन हँसि कहेउ इतनेहिं को तुव कबकी अनउत्तर बोलति कहेउ नहिं मा- नतिरी। श्यामसुन्दर हँसि हँसिदेत सुनि सुनि करति कानि यकटकहि गारिनिजु रहीरी। कहाकहौं हरिसों वे तोसी को मुह लगाई वारि फेरिडारी तोहिँपिय सकरोम परीरी। सूरदास प्रभु को कहा कहि बरणो एती कबहूं काहू की न सहीरी ८८ ॥ रागनट ॥ यकतो लालन

लाड़नि लड़ाई दूजे योवन बावरी । उनके गर्व जनि भूलि रहैरी हम सांच करिलीन्हे सुखअनेक दिनदिन चारिहोत अधिक चावरी । मेरो कहेउ तू मानरी माई सबत्रियानिको यहे सुभावरी । मैंजुकहति करि सूरश्यामसों हिलिरहिये उठत बैसको यहै दावरी ८९ ॥ रागकान्हरो ॥ राहिरी भामिनि मानु न कीजै । यहयौवन अंजुरी जल है जो गोपाल मांगै तो दीजै । क्षण क्षण घटति बढ़ति नहिं रजनी ज्यों ज्यों कला चन्दकी छीजै । पूरण पुण्य सुकृत फलतेरो काहेन रूपनयन भरिपीजै । सौंह करति तेरे पायँनकी ऐसे जियनि दशौ दिनदीजै । सूरसुजीवनि सुफल जगतको बैरीबांधि विवश करिलीजै ९० सुनिप्यारी राधिका सुजान । कहिवों कौन काज सरिहैरी यहि झूंठे अभिमान । जिनके चरण रमानित लालति सब गुण रूप निधान । तिनके मुखके बचन मनोहरसोतू करति न कान । परमचतुर सुन्दरि सुखकारी तोसीत्रिया न आन । कीजैकहा कृपिणकी सम्पति बिना भोग बिन दान । ऐसी व्यथाहोत निशि हरिको जनि हठिकरै बिहान । नाहिन कहत और के काढ सूरमदनके बान ९१ ॥ रागरामकली ॥ आजु हठिबैठी मानकिये । महाबोध रस अहतपत मिलि मनुबिष बिषम पिये । अबसुख रहति बिरह व्याकुल सिख सूरिमंत्र नहिं मानै । शुकनहिँ तजै सुमिरजाती ज्यों सुधिआये तनुजानै । एकलीक बसुधापर काढी भक्तन गोदपसारी जनुबोहित तजितकै परनको दधि ज्यों अवनि निहारी । ज्यों अति दीन दुखी सबही अँग कतहूँ शांति न पावै । तो बिन पियहि त्रिया प्रातहिते एकइबात मनावै । कबहुँक धकति धरणि श्रमजलभरि सहा शरद रविसाश । चातक भई चित्रपुतरी ज्यों जीवनकी नहिँ आश । तब उपचार कियो मैं करकस लैरस पारेउ कान । मुरछा जगी नहीं मुखबोली लैबैठी फिरिमान । हौंतो थकी करति बहु यत्ननि जीकी व्यथा न पाई । बूझहु लाल नवल नागर तुम एकै सैन बताई । शिव आकार दिखायो कछुयक भावदोय रसनाहीं । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि लैमेलौं पगछाहीं ९२ ॥ रागगन्धार ॥ पिया पिय नाहिँ सनायो मानै । श्रीमुख बचन मधुर मृदु मादक कठिन कुलिशते जानै । शोभित सहित सुगन्ध श्यामकच कलकपोल उरझाने । मानहुँ बेधत

प्रस्योकलानिधि तजत नहीं बिनदाने। बालभाव अनुसरति भरतिदृग अग्रअंशुकन आने। जनुखंजरीट युगल जठरातुर लेत सुभय अकुलाने। नयन निकट ताटंक गंडमंडल पर कबिनबखाने। जनु खद्योत चमकि चलिसकत न निशिगति तिमिर हिराने। यहसुनिकै अकुलाय चले हरि छत अपराध समाने। सूरदासप्रभु मिले परस्पर मानिनि मिलि मुसुकाने ९३ ॥ रागधनाश्री ॥ मानि मनायो मौन रही। सकुच समेत चली उठि आतुर बनको गेल गही। बिधुमुख निरखि बिमुखकरि लोचन पुनिबिधु बदनचही। दरशपरश तदरूप आजु निज भुव नख लेख कही। पुहुप सुरँग शारँग रिपु बोट दिखावतु चतुर लही। पाणि सुपरसत शोश परस्पर मुसुकानें तबहीं। तृण तोरेउ गुणजात जिते गुण काटति रेखमहीं। सूरश्याम बहुरेउ मिलि बिलसहु जाति अवधि अबहीं ९४ ॥ राग सारंग ॥ चली बन मौन मनायो मानि। अञ्चल ओट पुहुप दिखरायो धरोशीशपर पानि। शशितन चितै नयन दोउमूंदे मुखमहँ अँगुरी आनि। यह तो चरित शुक्रकी बातें मुसकाने जियजानि। रेखातीनि भूमिपर खांची तृणतोरेउ करतान। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बिलसहु श्याम सुजान ९५ ॥ राग गौंड मलार ॥ सैनदै कहेउ बनधाम चलिये श्याम यहै कारिकाम जबआनि मिलिहैं। भावही कहेउ मनभाव दृढ राखियो देउँसुख तुमहिं सँगरङ्ग रलिहैं। जानिपियअतिहि आतुरनारि आतुरी गईबन तोरतनु सुधिहेती। सूर प्रभु हरषभये कुञ्जनव तहाँगये सजतरतिसेजजे निगमनेती ९६ श्याम बनधाम मगबाम जोवैं। कबहुँ रचिसेज अनुमानजिय जियकरत लता संकेततर कबहुँसोवैं। एकक्षण एक घरीघरी एक याम बास यामएक बासरतेहोतभारी। मनहिंमनसाध पुरवतअङ्ग भावकरिधन्यभुज धन्य हृदय मिलेप्यारी। कबहिँ आवैंसाँझशोचअति जियमाँझ मैनखग इन्दुहै रहे दोऊ। सूरप्रभु भामिनी बदन पूरणचन्द रस परश मनहिं अकुलात बोऊ ९७ ॥ राग नटनारायण ॥ दूतीसङ्ग हरिके रही। श्याम अति आधीन ह्वैकै जाहुतासों कही। बेगिआनि मिलायमोको परम प्यारीनारि। देखिहरि तनुकाम व्याकुल चलीमनहिं बिचारि। गई तहँ जहँ करति राधा अङ्ग अङ्ग शृँगार। सूरके प्रभु नवल गिरिधर

सङ्गजानि बिहार ९८ ॥ राग बिहागरो ॥ राधासखी देखि हरषानी । आतुर श्याम पठाई याको अन्तरगतिकी जानी । वहशोभा निरखत अँग अँगकी राधारही निहारी । चकृत देखिनागरि मुखबाको तुरत शिँगार बिसारी । ताहि कहेउ सुखदेचलि हरिको मैं आवति हौं पाछे । वेसहि फिरी सूरके प्रभुपै जहाँकुञ्ज गृहकाछे ९९ ॥ राग केदारो ॥ दूती देखि आतुर श्याम । कुञ्जगृहते निकसिधाये कामकीन्हो ताम । बोलिउठी रसाल बाणी धन्यतुव बड़ भाग । अबहिँ आवति बनीबाला किये मन अनुराग । कहा बरणौं अङ्गशोभा नयन देखौ आज । सूर प्रभु नेकधरो धीरज करौं पूरण काज १०० ॥ राग ईमन ॥ बड़ेभाग के मोटेहो । ऐसीप्रिया औरकोपावै बने परस्पर जोटेहो । तैसिय नारि सुन्दरी छोटी तैसेइ तुमबलि छोटेहो । पूरब पुण्य सुकृत फलकी वह आपु गुणनिकरि ढोटेहो । परम सुशील सुलक्षण नारी तुमहिँ त्रिभङ्गी खोटेहो । सूरश्याम उनकेमन तुमहो तुमहू नायक कोटेहो १०१ राग काफी ॥ सुन मोहन तेरिप्राण प्रियाको बरणौं नन्दकुमार । जोतुम आदिअन्त मेरोगुण मानहु यह उपकार । चन्दमुखी मोहैं कलङ्कबिच चन्दन तिलक लिलार । मनुबेणी भुवङ्गिनि के परसत श्रवत सुधाको धार । नयन मीन सरवर आनन में चञ्चल करत बिहार । मानों करणफूल चाराको रवकतबारम्बार । बेसरिबनी सुभग नासापर मुक्ता परससुढार । मनोंतिलफूल सुघरबिम्बाधर दुहुँबिच बूँद तुषार । सुठि सुठान ठाढ़ी अति सुन्दरि सुन्दरताको सार । चुवतहि चुवत सुधारस मानों रहिगइबूँद मँझार । कण्ठश्री उरपदिक विराजत गजमोतिन के हार । दहिनावर्त्त देतमनों ध्रुवको मिलि नखतनकी मार । कुचयुग कुंभ शुण्डि रोमावलि नाभि सुहृदय अकार । जनुजल सोखि लियो संशयता यौवनगज मतवार । रतनजड़ित गजरा बाजूबँद शोभाभुजनि अपार । फूँदा सुभग फूल फूले मनों मदन बिटप की डार । छीनलङ्क नीवी किङ्किणि धुनि बाजत अति झनकार । मौरबाँधि बैठोजनु दूलह मन्मथ आसनमार । युगलजंघ जेहरि जरावकी राजत परम उदार । राजहंसगति चलति कृशोदरि अति नितम्ब के भार । छिटकि रहेउ लहँगा रँग ता सँग सारीतन सुकुमार । सूर सुअङ्ग सुगन्ध

समूहनि भँवर करत गुञ्जार १०२ ॥ राग जैतश्री ॥ नव नागरी हो सकल गुण आगरी हो हरिभुज ग्रीवाहो शोभासीवा हो । गौर श्याम छवि पावई भई सबतो मैं हे सखी यौवन कियो प्रवेश । कहा कहौं छवि रूपकी नख शिख अङ्ग सुदेश । श्रीपति केलि सरोवरी से सब जल भरिपूर । प्रकट भई कुच उंचस्थली सोख्यो यौवन सूर । छुटेकेश म-ज्जन समय देखि विरुध अहिमोर । भोर कुहू निशि मेरुते उतरि चले वहि ओर । शीश सचिक्कण केश हो बिच श्रीमन्त सवांरि । मानहुँ किरणि पतङ्गते भयो द्विधातम हारि । केशरि आड़ लिलाटहो बिच सेंदुरको बिन्दु । चक्र तरेउना नयनमृग रथबैठो जनुइन्दु । नयनन ऊपर कह,कहौं यों राजत भुवभङ्ग । युवा बनावत चन्द्रमा चपल होत सारङ्ग । चम्पककलीसी नासिका राजत अमल अदोश । तापर मुक्तायों बन्यो मनो भोरकन ओश । मुक्ताआप बिकायके हो उरमें छिद्रकराय । अधर अमृत हिततप करेउ अधमुख ऊरध पाय । अधरनि की छबि कहकहौं सदाश्याम अनुकूल । बिम्बपवारे लाजहीं हरषत फूलेफूल । पांतिकांति दशनावली रहे तमोल रँगभीजि । बन्दनसों शशि में बये मनोसे दामिनिके बीजि । गुंजा कीसी छविलई मुक्ता अति बड़भाग । नयननकी लइ श्यामता अधरनको अनुराग । बेसरि को मुक्तामणि धनिधनि नासा ब्रजनारि । गुरुभृगुसुत बिच भौमहो शशिसमीप ग्रह चारि । खुंटिला सुभग जरावके मुक्तामणि छबिदेत । प्रकटभयो घन मध्यते शशिमनों नखत समेत । सुन्दर सुभग कपोलहो रहे तमोर भरिपूर । कञ्चनसम्पुट ढेपला मानहुँ भरेसिंदूर । चिबुक डिठोना जवदियो मोमनधोखे जात । निकस्यो अलिशिशुकञ्जते मनहुँ जानि परभात । जेहिमारग बनबाटिका निकसति आनि सुभाय । मधुपकमल बनकांडिके चलत सङ्गलपटाय । जहां जहां तू पग धरे तहां तहां मन साथ । अतिअधीन पियह्वैरहे तनमनदे तवहाथ । देखिबदनके रूपको मोहन रहेउ लुभाय । यकटक रहै चकोर ज्यों दृष्टि न इतउत जाय । तोहिँ श्यामसोंहै सखी बढ़ी निरन्तर प्रीति । तू तनमन धनश्यामके तैं हरि पाये जीति । सतमोहन तू बशकरे अति प्रवीण नँदलाल । सूरदास गावै सदा कीरति बिशद बिशाल १०३ ॥ रागनट ॥ राधासंग ललितालिये ।

श्याम आतुरजानि बाला मदन आतुर किये। किंकिणी धुनिश्रवण सुबिहरि अतिहि पुलकित हिये। नारि आवत जानि गिरिधर नहीं धीरज जिये। चले आतुरधाय आगे सङ्ग सहचरि बिये। सूरप्रभु रति रङ्गराचे देखि रीझे त्रिये १०४ ॥ रागबिलावल ॥ पियछबि निरखत नागरी अँग दशा भुलानी। अन्तरगति आनँदभरी ललिता हरषानी। सहचरिसों कहिसुमन लैहरिफेंटभराये। अतिअधीन पिय ह्वैगये बश परे पराये। मारग सुमन बिछावहीं पग निरखि निहारैं। फूले फले धरधरैं कलियां चुनिडारैं। ऐसे बश पिय बामके सुख सूरज जानैं। जोजेहि भावनि हरिभजै तेहि तैसे मानैं १०५ ॥ रागपूर्बी ॥ पीछे ललिता ताआगे श्यामा प्यारी ता आगे पिउ मारगफूल बिछावत जात। कठिन कठिन कलीबीनि करत न्यारी न्यारी प्यारीके चरण कोमल जानि सकुचत अति गड़िबेहि डरात। दीरघलता अपनेकर निरवारत ऊँचे लैडारत द्रुमबेली पात। सूरदास प्रभुकी ऐसी आधीनता देखत मेरे नयन सिरात १०६ ॥ रागकान्हरो ॥ चौंड़े बार खंडिन परसत श्यामा पोछै अपने अञ्चलमें लिये। बेणी गुंथन मिसफूल सुगन्धफेंट भरेडोलत बोलत नाहिं न सकुचाहिये। अरु कुसुमी सारी में अलक झलक गोरेतनु मनों अहिकुल चन्दन बन्दन सों पूजाकिये। सूरदासप्रभु त्रिय मिलि नयन प्राण सुख भयो चितै कुरुखिअनि अनकनि दिये १०७ रागरामकली ॥ बरण बरण बनफूलि रहेउ। हरषित ह्वै वृषभान नन्दिनी सँग सबसखिन कहेउ। कुसुमकली देखत रुचि उपजी यहकहि तिनहिँ सुनावति। आपु न चुनति गोद लै धारति युवतिन कहति चुनावति। हँसति परस्पर देदैतारी श्यामलिये करबाहीं। सूरदासप्रभु कामआतुरे ओर ध्यान चितनाहीं १०८ डोलति बांकी कुञ्जगली। ब्रजबनिता मृगशावकनयनी बीनति कुसुमकली। कमल बदन पर बिथुरि रही लट कुञ्चित मनहुँ अली। अधरबिम्ब नासिका मनोहर दामिनिदशन छली। नाभि परसलौं सरस रोमावलि कुचयुग बीचचली। मनहुँ बिबरते उरगनिकरयोतकि गिरिके सन्धिथली। पृथुनितम्ब कटिछीन हंस गति जघनसघन कदली। सूरसुमोहन लालरसिक सँग बन घन मांझ रली १०९ ॥ रागपूर्बी ॥ सखियनसँग राधेकुंवरि बीनति कुसुमकलियाँ।

एकबहिक्रम एकहि वावकरूप गुणकीशीवां मनभावत सुन्दर श्याम लालकी करसोहति रँगीली डलियाँ। एक अनूपम मालबनावति एक परस्पर बेनीगुँथति आजति कुञ्जगलियाँ। सूरदासप्रभु सँगमिलि कौतुक देखत हरषि हरषि प्यारी अंकम भरियाँ ११० ॥ रागकल्याण ॥ लै गई धामवन श्याम प्यारी। रहेलपटाय दोउभुजनि पलटायकै कहेउ पिय बचन है निठुरनारी। बिहँसि वृषभानतनया कहति हम निठुर तुम सुहृद बातवे जनि चलायो। निठुर अरु सुहृदसो मनहिंमन जानि है कहावह कथाकी सुरति धायो। परस्पर हँसे दोऊ रसे रतिरङ्ग में करत मन काम फलपुरुष नारी। सूरप्रभु कोकगुणमें निपुण हैं बड़े काम बलतोरि रसरहेउ भारी १११ ॥ रागसूहो ॥ गिरिधर नारि अबल अतिकीन्ही। सबल भुजाधरि अंकम भरिभरि चापिकठिन कुच उर पर लीन्ही। कोक अनागत क्रीडापररुचि दूरिकरत तनसारी। कमल करन कुच गहत लहतएट देखौ वहछबि न्यारी। वारबार ललचात साधकरि सकुचति पुनि पुनि बाला। सूरश्याम यह काम करो जनि धनिधनि मदनगोपाला ११२॥ रागरामकली ॥ सुता दधिपतिसों कोधभरी। अम्बर लेतभई खिझि बोलहि शारँग रङ्गलरी। तब श्रीपति अतिबुद्धि बिचारी मणिलै हाथधरी। वै अतिचतुर नागरी नागरि लैमुखमांझ करी। चापत चरणशेष चलिआयो उदयाचलहि डरी। सूरदासस्वामी लीला उर अंकलागि उबरी ११३ सकुचि तन उदधिसुता मुसकानी। रबि सारथी सहोदर तापति अम्बर लेत लजानी। शारँगपाणि मूंदि मृगनयनी मणि मुखमांझ समानी। चरणचापि महिप्रकटकरी पिय शेषशीश सहुँदानी। सूरदास तब कहकरै अबला जबयह मतिहीठानी। कुच अंकमभरि चापि कठिनडरि श्यामकंठ लपटानी ११४ ॥ रागबिलावल ॥ वह छबि अङ्ग निहारत श्याम। कबहुँक चुंबनदेत उरज धरि अति सकुचति तनबाम। सन्मुखनयन न जोरति प्यारी निलजभये पिय ऐसे। हाहा करति चरण करिहेरत कहाकरत ढँगनैसे। बहुरिकामरस भरे परस्पर रति बिपरीति बढ़ाई। सूरश्याम रति पति बिह्वल करि नारिरही मुरझाई ११५ पिय प्यारी तन श्रमितभये। सकुचिउठी नागरि पटलीन्हो श्याम लजायगये। सावधान रतिअन्त भरे पिय प्यारी

तन नहिंहेरत। नागरि कुटिल कटाक्षनि हेरति भृकुटी बंकटफेरत। ऐसे गुण किनि तुमहिं सिखाये तिरणी कटि कसि दीन्ही। सूर कहति पियसों प्रियबातें आज तुमहिं मैं चीन्ही ११६ ॥ रागधनाश्री ॥ हरषि श्याम प्रियबांह गही। अपनेकर सारी अँगसाजत यह पकसाध कही। सकुचति नारि बदन मुसकानी उतको चितै रही। कोक कला करि पूरणरोऊ त्रिभुवन और नहीं। कुंजभवन सँग मिलि दोउ बैठे शोभा सकचही। सूरश्याम श्यामा शिर बेणी अपने करनगुही ११७॥ राग जैतश्री ॥ मोहन मोहनि अङ्ग शृँगारत। बेणी ललित ललित करगूथत निरखत सुन्दर मांग सवांरत। शीशफूल धरि पाटी पोंछत फुन्दनि झबानिहारत। बन्दन बिन्द जराय कि बेंदी तापर दनय सुधारत। तरिवन श्रवण नयन दोउ आंजत नासाबेसरि साजत। बीरी मुखभरि चिबुक डिठौना निरखि कपोलनि लाजत। नख शिख सजत शृंगार भावसों जावक चरणनि सोहत। सूरश्यामप्रिय अँगनि सवांरत निरखि आप मनमोहत ११८॥ रागललित॥ ऐसेहि सुख सबरैनि बिहानी। भोर भये ब्रजवास चलेदोउ मन मन नारि सिहानी। प्यारी गइ वृषभान पुरातन श्यामजात नँदधाम। प्रमदा महल द्वारहीठाढी उन देखी वह बाम। प्रात चले बनते ब्रज आये मनमन करति बिचार। सुनहु सूर सकुचत ठिठुकत गृह आये नन्दकुमार ११९॥

बहुरि खण्डितावचन॥

रागदेवगन्धार॥ कितते आये हो नँदलाल ऐसी कौन बाल जो धोखे तुमआये द्वारे ह्वै झांके। मिटतिनहीं चितवनि हित चितकी वहै टेव नित नितकी मैं पहिँचाने नयनबांके। कबहुँ जम्हात कबहुँ अँगमोरत अटपटात मुख बात न आवत रैनिकहूँ धौं थाके। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि रसिक रसिकई जानी नामलेहु रहेजाके १२०॥ रागललित बनतनते आये अतिभोर। रातिरहे कहुँगाइन घेरत,आयेहौ ज्यों चोर। अङ्गअङ्ग उलटे आभूषण बनहूँ में तुमपावत। बड़भागी तुमते नहिँ कोई कृपाकरत जहँ आवत। औचक आयगये गृहमेरे दुर्ल्लभ दर्शन दीन्हो सूरश्याम निशिहौ कहुँजागे पावति अँगअँग चीन्हो १२१॥ रागबिलावल॥ लाल उनींदे भये। राजत हैं रतनारे नयना मानहुँ नलिन नये। पीक

कपोल लिलाट महाउर बन्दन बलित खये। जनु तन जामेसद्य अरुण दल कामके बीजबये। बिन गुणहार पयोधर मुद्रा हृदय सुदेश ठये। अंजन अधर सुसंच लिख्यो रति दिक्षा लेनगये। सूरश्याम बिथुरे कच मुखपर नख नाराच हये। ताऊपर आनंद इन्दु जनु मानहुँ समर जये १२२॥ रागबिभास ॥ रैनिजागे रतिरस पागे अनुरागे नवप्रिय सङ्ग। मे सन्मुख कत आयेहो दहन पिय रसमसे नयन अरपटात बैनंनि तहांई जाहु जाके रङ्ग। बिनगुण बनी मालपीक कपोलनिलाल जावक तिलक भाल कीन्हे रस बशअङ्ग। सूरदास प्रभु तुम रजनी बिहायआये। जीतिअनङ्ग १२३॥ राग बिलावल ॥ सुनतसखी तहँ दौरिगई। सुनेश्याम सुखमाके आये धाई तरुणिनई। कोउ निरखतिमुख कोउनिरखति अँग कोउनिरखति रँग और। रैनिकहूं फिरि परे कन्हाई कहतिसबै करिरोर। तब कहिउठी नारि सुखमा यह भाग हमारो आये। सूर श्याम धनिबास तुम्हारो जिन निशिबश करिपाये १२४॥ रागबिभास॥ माईआजु लाल लपटात आये अनुरागे। शोभित भूषण अङ्गअङ्ग आलसभरे रैनि उनींदे जागे। लटपटी शिर पेंचपाग छूटे बन्दनि बागे। सूरश्याम रसिक राय रसबश कीन्हो सुभाय जागे जहाँ सोई त्रिया बड़भागे १२५॥ राग भूपाली ॥ होमाई आजुअनत जागेरी मोहन भोरहीं मेरे कीन्हेहैं आवन। शोभित भूषण अङ्ग अङ्ग आलसभरे लै लै आगे अनमिली मिलावन। अब कैसे पतिआतिहो प्रीतम साँचेही सोंहनि बोलनि बाहन। सूरश्याम रसिकराय जावक चिह्नलाय अब आये मोहिं असल सलावन १२६॥ राग सुघराई ॥ आजुबन्यो नवरङ्ग पियारो। व्रजबनिता मिलिक्यों न निहारो। लटपटिपाग महाउर पागी। कुंवरि मनावति अति बड़भागी। पीककपोल अधर मसिलागे। आलस बलित सबै निशिजागे। कहुँचन्दन कहुँबन्दनकी छबि। रैनिरङ्ग अँगअङ्ग रहेउफबि। सूरश्याम के यहछबि देखो। जीवनजन्म सुफल करिलेखो १२७ आजु बने नवरङ्ग छबीले। डगमगात पग अँग अंग ढीले। जावकपाग रँगीबौं कैसे। जैसी करी कहौविध तैसे। बोलत बचन बहुत अलसाने। पीक कपोलनिसों लपटाने। कुमकुम हृदय भुजनिछबि बन्दन। सूरश्याम नागरिमन फन्दन १२८॥ राग गौरी ॥ आजु

बने बनते ब्रज आवत। यद्यपि हैं अपराध भरे हरि देख तऊ मोहिँ भावत। नखरेखा मुक्तावलिके तट अङ्ग अनूपलसी। मनोंसुरसरी ईश शीशते लै बिधुकला धँसी। केलिकरत काहू युवतीकर कुमकुमभरि उर दीन्हो। मनोंभारती पञ्चधारह्वै नभते आगम कीन्हो। बीचबीच कमनीय अङ्गपर श्यामलरेख रही। सूरसुता मनों कनक भूमिपर चारि प्रवाहबही १२९॥ राग रामकली ॥ आँखिशोभा अनुपम अतिराजै। नयनकोन की अञ्जनरेखा पटतर कहूं न छाजै। खञ्जरीट मनोशसित पन्नगी यह उपमा कछुआवै। दुग्धसिंधुकी गरल कलाज्यों कोटिक भ्रम उपजावै। की सुरसरिता सूरतनय तट की पर्यापर्वात भुवङ्गिनि। की अपमानमानि सागरते उलटी यमुन तरङ्गिनि। शम्बरारिको सुयशकी प्रकट एकही काल। किधौं रुचिर राजीव कोशते निकसि चल्यो अलिमाल। सूरदासदामिनि हितकरको हरिहलधरकोजोरी। राधावर निशि रसिकशिरोमणि कबि कुलपरी ठगोरी १३०॥ राग अड़ाना ॥ लाल आवैंहो उनींदे आपुन पौढ़िये पलिका हो पलोटि हौं पाय। मेरी सकुच जियमें कत आनतिहो तो अन्तःकारिनि हौ तुम जिनिजानौ मोसों औरनिकेसे सुभाय। यह अचरज आवत इनबातन मानु करतनहिँ मानत मोसों आये मानमनाय। सूरश्याम ता बामहिँ बशकर लीन्हो कराठलगाय १३१॥ राग ललित ॥ आजुअति रैनिउनींदे लाल। तुम पौढ़ौ मैं चरण पलोटों जिय जनि जानो ख्याल। सुमन सुगन्ध सेजहैदासी देखति अङ्गबेहाल। मेरेकहेन्हाउ कछु भोजनकरौ मदन गोपाल। निशिश्रमभयो पीरमोहिँ आवति सुनति परस्परबाल। सूरश्याम सुनि बचन कपट प्रिय भरि लीन्हो अंकमाल १३२॥ राग बिलावल ॥ श्यामहिँ सुखदे राधिका निजधाम सिधारी। चितते कहुँ उतरत नहीं श्रीकुञ्ज बिहारी। रैनि बिपिन रतिरस रहेउ सो मनहिं बिचारै। पियसँगके अँग चिह्नजे दर्पणहिंनिहारै। यहि अन्तर चन्द्रावली राधागृह आई। अङ्ग शिथिल छबि देखिके जहँ तहँ भरमाई। कहेउ चहति कहतिन बनै मनमन अनुमानै। सूरश्याम सँग निशिबसी निश्चय यह जानै १३३॥ राग आशावरी ॥ चन्द्रावली सखिन सँग लीन्हे। राधाके गृहआईहो। आजु अङ्गशोभा कछु औरै हरिसँग रैनि पुराई

हो। अबतौनहीं दुरावरहेउ कछु कहोसाँच हमआगेहो। अधरदशन छत उरजनि नखछत पीक पलक दे आगे हो। हमजानी तुम कहौ प्रकटकरि श्यामसंग सुखमानो हो। सुनहुसूर हम सखी परस्परक्यों न रैनि यशगानोहो १३४ कहतिसखिनसों राधिका तुमकहतिकहा री। मेरीसोंकी हँसतिहो सुनिचकृतमहारी। पीककपोलनयोंलग्यो मुखपोंछनलागी। कहाँश्याम कहँ मैंरहीकबयों निशिजागी। उरज करज निज करजको गरहार सँवारत। सहज कछुक निशि मैं जगी वचनन प्रारमारत। कहतिऔरकी औरई मैं तुमहिँदुरैहौं। सूरश्यामसँग जोमिलौं तुमसों नहिँ कैहौं १३५ आजुबनी नवरङ्ग किशोरी। रसिक कुंवरमोहन बिनजोरी। बिथुरीअलक शिथिलकटिडोरी। कनकलता मनोपवन झकोरी। अधर दशन छतकछुछबि थोरी। दर्पणलै देखो मुखगोरी। सुखलूटत अतिहीभइभोरी। सूरसखीडारत तृणतोरी१३६ ^{रागटोड़ी} ॥ आजु बनी वृषभान कुमारी। गिरिधर बर राधा तू नारी। हमसों करति दुरावदृथारी। इन बातनि तू लहति कहारी। आलस अङ्ग मरगजीसारी। ऐसी छबि कहिकालि कहांरी। सूरदास छबि पर बलिहारी। धन्य धन्य तुमदोउ वरनारी १३७ ॥ रागनट ॥ मैंजानी हैरीतेरे जियकी बात भाई अरु गातचिह्न कहेदेत माई। आलस तन मोरे भुजजोरे जम्हाईरी अटपटातभारी लागत मोहिं सुहाई वाहीपियके मनभाई। बैनथैन नैनसैन देखिये रसीले शिंगार हारबार बिथुरि रहेरी रतिके पति देति क्यों न जनाई। सूरदासप्रभुकी सुनजरिआली तेरे अङ्गअङ्गभयेउद्योत वह हिलनि मिलनि खिलनिको तेरेप्रेमप्रीति जनाई १३८ ॥ रागसूहो ॥ मोहंन दुरत हरिपियको परस। उपजतुहैमन को अति आनँद अवरनि रँग नयननको अरस। अंचलउड़त अधिक छबि लागत नख रेखाउर बनीवरस। मनोजलधरतर बालकलानिधि कबहुं प्रकटि दुरिदेतिदरस। बिथुरी अलक सुदेश देखियत श्रमजलतै सिद्योतिलकसरस। सूरसखीबूझेहु नहिं बोलत सो काहे यों रहीहँ कौनतरस१३९॥ रागबिलावल ॥ तोहिं छबिराजैरीब्रजराजकेसङ्गजागेकी। करसों करजोरि मिलिजम्हात अरु ऐंडातिहोति द्युतिमुरिहरी अलक लसिआगेकी। कबहंकबहं पलक झपकिझपकिआवतते मनभावति

अँखियां अरुणा भई प्रेमपागेकी। सूरदास प्रभुकोजुप्रकट उमगादेखति श्यामसुन्दर उर लागेकी १४० ॥ रागदेसाख ॥ अरी मैं जानिपाये चिह्न दुरैनदुराये । अतिअलसात जम्हातिप्यारी श्यामकेकामपुराये । कहा दुराव करतरीप्यारी कोटिकरै मुखनयनभुराये। सुमनहारसों मरगजि डारी पियसँग रैनि जगाये । प्रकट नहीं तू करति डरति केहि सुरति । सूरश्यामसोंहि रस बसकीन्हो जातन मन बिसराये १४१ ॥ रागटोड़ी ॥ लालसोंरति मानी जानी कहेदेत नैनारी रङ्ग भोये। चञ्चलअञ्चलकरतहि दुरावति रूपराशिअतिमानहुमीनमहाउर धोये । पीक कपोलन तरिवनके ढिग झलमलात मोतिनछबि जोये। सूरदास प्रभु छबिपर रीझे जानतिहौं निशि नेक न सोये १४२॥ रागरामकली ॥ मोसोंकहा दुरावति प्यारी । नंदलाल सँगरैनि बसीरी कोककला गुणभारी । लोचन पलकपीक अधरनको कैसे दुरत दुराये। मनो इन्दुपर अरुणारहे बसि प्रेम परस्पर भाये । अधर दशन छतकी अतिशोभा उपमा कही न जाई । मनोकीर फलबिंब चोंचदै भख्यो न गयो उड़ाई । कुचनख रेख धनुषकी आकृत मनो शिवशिर शशि राजै। सुनत सूर प्रिय बचन सखीमुख नागरि हँसि मन लाजै १४३ ॥ रागधनाश्री ॥ प्यारी सुनतसखी मुखबानी हँसिमुसुकायरही। नैननिरही लजायमुदितचित मानो बातसही। तोसोंकहा दुराव करौंरी तूप्राणन ते प्यारी । कहाकहौंवहमिलनि श्यामकी क्रीड़ाकहतिउघारी । रति सुखअनन्त रची यक लीलाकहौं कि धरौं दुराई । सूरदास प्रभुके गुण आली चितही रहेउ समाई १४४ ॥ रागसोरठ ॥ राधा अबजानि कछूदुरावै । हाहा करि चरणन शिरनावति अपनीसौंह दिवावै। वहैकथा मोसोंकहिप्यारी चरित कहा हरि कीन्हो। जारसमें तू मगनभई है कौनअङ्ग सुखदीन्हो।उछलितभयो सुधाउरघटते सुखमारग न सम्हारै। सूर श्याम रसढकी राधिका कहत न बनै बिचारै १४५ ॥ रागगोंड ॥ श्याम रतिअंतरयहकीन्हो । कहतपुनिपुनि कहा अम्बरतजहु मैं रही सकुचि गहि आपलीन्हो । कियो तब मैं कहालरी शारङ्गसों शारँगधर धरिशा चरण चापी । शेष सहसोंफणन मणिनको ज्योतिअति शसते कंठ लपटाय कापी । रहीउनकीटेक चलैमेरीकहा धरनगिरि-

राज भुज सबल धारी। सूर प्रभुकी सखी सुनहु गुणरौनि के वे पुरुष में कहा करौं नारी १४६ धन्य धन्य वृषभान कुमारी गिरिवर धर बशकीन्हेरी। जाइजोइसाधकरी पियरतिकीसोसब उनकोदीन्हे री। तोसी त्रिया और को त्रिभुवन पुरुष श्यामसे नाहीं री। कोककला पूरण तुमदोऊ अबन कहूंहरि जाहींरी। सेसेबश तुमभये परस्पर भासों प्रेमदुरावैरी। सूरसखी आनँदन सम्हारति नागरि कंठलगावै री १४७
रागबिलावल ॥ श्याम गये वृन्दा के धाम। कामके गृह निशि बसे पुरयो मनकाम। सांझगये कहिआइहैं बहुनायकनाम। सेजसँवारति आश लै सेसेहि गइयाम। अरुण उदय द्वारेखड़े देखत भयताम। रिसनिरखी झुहराग्रके मनहींमन बाम। चिह्न और अँगनारिके बिनगुण उरदाम। सूरदास प्रभु गुणभरे आलस तनुझाम १४८ आजु और छबि नंदकिशोर। मिलिरिस रचि रोचनभये लोचन चितवत चित्तपराये बोर। शोभित पीठि प्रकटकरकंकण शोभित हार हिये बिनडोर। शोभित पीत बसन दोउराते अधरन अंजन नयन तमोर। नखशिख ज्यों शिंगारअटपटे पाये मनहुँ पराये चोर। फूलेफिरत दिखावत औरनि निडर भये हैं हँसनिश्रकोर। कहत न बनै सुनतहु न आवै वैसँधिबरणत कविन कठोर। अचरज क्यों न होत इनबातन सूरग्रहण देखे बिन भोर १४९ ॥रागसूहो॥ अतिहि अरुणहरि नयनतिहारे। मानहुरति में भाइ रगमगे करत केलि पिय पलक न पारे। मन्द मन्द डोलति शंकितसे शोभितमधुप मनोहरतारे। मनहु कमल संपुट महँ बींधेउड़ि न सकत चञ्चल अतिवारे। झलमलात जागि रैनि जनावत रतिरस मत्तभ्रमत अनियारे। मानहु सकल जगत जीतनको काम बाम खरसान सँवारे। अटपटातअलसात पलकपट मूंदत कबहुंककरत उघारे। मनहु मुदित मरकत मणि आंगन खेलत खंजरीट चटकारे। बारबार अवलोकि राखियत कपटनेह मनहरत हमारे। सूरश्याम सुखदायक लोचन दुखमोचन लोचन रतनारे १५० ॥ रागबिलावल ॥ नहिं न दुरत नयना रतनारे। मनो बँधूक कुसुमन पर शोभित सुन्दर श्याम शिली मुख तारे। कुटिल अलक रहि बिथुरि बदन पर सकुचि सहित हरि नर मुनि हारे। भौंह शिथिल मनु मदन धनुष गुण गारे कोकनदयान

बिसारे। मुरेड आवत आलसके बस छीन भये उसरत न उघारे। सूरदास प्रभु छोड़ पै कहीं तुम को भामिनि जहाँ रतिरण हारे १५१ रति संग्राम वीर रसमाते। हैं हरि सूर शिरोमणि अजहूं नहिं न सम्हारत ताते। आनहिं वरण भये दोउ लोचन अपने सहज बिनाते। मानहु भोरपरी योधनकी भये क्रोध अतिराते। परिमल लुब्ध मधुप जहँ बैठत उडिन सकत तेहिठांते। मनहु मदनके हैं शर फावे फोंक बाहिरो घांते। बैठिजात अलसात उनींदे क्रमक्रम उठत तहांते। मनो मूर्च्छा कटाक्ष नाटसल कटि न सकत हियराते। डगमगात घूमत जनु घायल शोभा सुभट कलाते। सूरदास प्रभु रतिरण जीते अब सकात धौं काते १५२ नयन उनींदे भये रँगराते। मनहु सुरंग सुमनपर सजनी फिरत भृङ्ग मद माते। प्रेम पराग पाखुरी पल दल प्रफुलित मदन लताते। सुभगसुबास बिलासबिलोकनि प्रकट प्रीतिकरिताते। तैसोइ मारुत मंद जम्हावरि मिलत मुदित छबियाते। सींचेसूरश्याम मानिनि के हितसों केलि कलाते १५३ ॥ रागरामकली ॥ आये सुरतरंग रसमाते। मानहु रण बिश्राम निमित पिय श्रमितभये हैं ताते। डगमगात मग धरत परतपग उठत न बेगि तहांते। मनुगज मत्त चरण संकर कर गहि आनत तेहि ठांते। उर नख छत कंकण छत पाछे शोभित है रुहि राते। मदन सुभट के बाण लागि मनो निकसि गये वहि घांते। सांचे करत आपने बोलन टरत न मर्यादाते। सूरश्याम कहिगये आइहैं पगधारे तेहि नाते १५४ रागबिलावल ॥ अरुण नयन राजत प्रभु भोरे। रति सुख सुरतकिये सखि सँगमनो जात समर मन्मथ शर जोरे। अति उनींदेअलसात मंदगति गोलकचपल शिथिल कछु थोरे। मनहु कमल के कोश तमी तम उठत रहत छबि रिपुदल दोरे। शोभित सुभगसजल प्रतिकोर संगम छबि तारे कनडोरे। मनो भारतिके भँवर मीन शिशु जात तरल चितवत चितचोरे। बरणि न जाय कहां लग बरणों प्रेम जलधि बेलावर बोरे। सूरदास सों कौन त्रिया जिनि हरि के अङ्ग अङ्ग बल तोरे १५५ काहेको पिय भोरही मेरेगृह आये। इतने गुण हमपै कहां जे रैनि रमाये। ताही के पग धारिये चकृतमैं जाने। बिन गुण गडिमालारही नहींकहुं बिहराने।

आये हौ सुख देनको ऐसेइ हितकारी। सूरश्याम तुम योग को को वैसी नारी १५६ कृपाकरी उठि भोरही मेरे गृहआये। अब हम भईं बड़भागिनी निशि चिह्न दिखाये। जावक भालनमों दियो नीकेबश पाये। नयन देखि चकृत भई क्यों पान खवाये। अधरनपर काजर बन्यो बहु रंग कहाये। चंदन बिंदुली भालकी भुजआप बनाये। यह मोसों तुमहीं कहो उरझन अरुनाये। सूरश्याम यश राशि हौ धनि त्रियासहाये १५७॥ ^{रागभैरव} ॥ जाहु तहींकह शोचतहौ जा सँग रैनि बिहात न जानी भोरभये तेहि मोचतहौ। औरन को सतयुग बीतत है तुम निहचीते नागर हौ। झूमत नयन जम्हात बारहीं रतिसंग्राम उजागर हौ। मैं अब कहत तुम्हारे हित की ताहीके गृह सोयरहौ। सूरश्यामवैसी त्रियको वह रस वाहीबिन न लहौ१५८हमहींपरपिय रूसे हौ। बोलत नहीं मूक क्यों ह्वै रहे अँग रँग हीन कछूसे हौ। तब निरखत औरहिं हित कीधौं कहूं तुम लूसेहौ। तब हँसि बदन मिलत आजुहि कछु और भये निठुरसेहौ। डगमगात पग उतहि परतहैं चित चंचल उतहूसे हौ। सूरदास प्रभु सांच भाषिगये त्रिया अङ्कबल मूसे हौ १५९॥ रागबिलावल ॥ हरषि श्याम त्रिय बांह गही। चूकपरी हमको यह बकसो आवनको कहिगये सही। रिसनि उठी झहराय झटकि भुज छुवत कहा पिय शरम नहीं। भवन गई आतुरह्वैनागरि जो आई सुख सबै कही। मेरेमहलआजुते आवहु सोंहनन्दकी कोटि कही। सूरदास जबलों जीऊं मैं मिलों नहीं बरु काम दही १६०॥ रागनटनारायण ॥ नागरिनिठुर मानगहेउ। पीठिदै रिसकांपिबैठी फिरि न उतहि चहेउ। श्याम मन अनुमान कीन्हो रिसनि व्याकुल नारि। तनकही रिस खोय डारो यह प्रतिज्ञा धारि। सखी एक स्वभाव अपनी गये ताके गेह। यह चरित सब कहेतासों चतुरि लख्यो सनेह। गई आतुर नारि ताके लखे नयननि कोर। चकृत बाला नन्दसुतबिन लहेउ हठकोछोर। भुजागहि करिहिकियो कारी सही ब्रजकीगवारि। सूरप्रभुसों मानकीन्हो हृदय देखि बिचारि १६१॥ रागकान्हरो ॥ बाँह गहेउ गहि आंगन ल्याई। बहुनायक उनको नहिं जानत बड़ो चतुर होभाई। मैं जो कहति श्रवण सुनि चित धरि यौवन धनसपनेको।

हँसि कहि जाय अबहिं मैं लाऊं मन न धरो अपने को । तुहीं गहति किन बांह जायके मोसों बांह गहावति । सुनहु सूर मैं सौंह करी है तु मोहिं तिनहिं मिलावति १६२ कहा कहति तू मिलहिं रही है । मोसों करति कहा चतुराई उन यहभेद कही है । जो हठ करेउ भली नहिं कीन्ही ये दिन ऐसे नाहिं । की यहई पिय कौन बुलावे की तहई चलि जाहिं । वे सब गुण लायक तू नागरि यौवन दिन है चारि । सूरश्याम को मिलि सुख लही न पुनि पछितैहै नारि १६३ बहुरि पछितैहै री व्रजनारि । देखिजाय ठाढ़े मगजोवत सुन्दरश्याम मुरारि । ऐसी निठुर नेक नहिं चितवत चंचल नैन पसारि । कहा गर्ब या झूठे तनको देखि हाय लै बारि । तजि अभिमान मानि री मानिनि मैं जु करति मनुहारि । सूर हंस स्वातीसुत धोखे कबहुंक खात जुवारि १६४ ॥ रागकेदारो ॥ मोसों मानि भावै न मानि लाल मनाय हैरी तेरी आंखिन में पैयतु है । कत सकुचत मैं तो सब जानत ऐसे प्रीति क्यों दुरैयतु है । मेरो बिलग मानतियह जानत या बातनमेंकछु पैयतुहै । सूरश्याम न्यारे न बूझिये यह मोसों नहिं भावे काहे को अनखैयतुहै१६५ ॥ रागबिलावल ॥ बहुरि मिलौगी कालिही चित समुझि सयानी । मेरो कह्यो न क्योंकरै क्यों होहि अयानी । अनलहि औषध अनल है सब जानि रही हो । काहेको हठ करतिहो बे काज बही हो । घरघरघर बयाकुल खड़ेरी गर्ब गहेली । सूर कहेउ सुनि मानिले मैं कहति सहेली १६६ ॥ राग सोरठ ॥ श्याम धरेउ त्रिय मोहन रूप । दूती प्रिया सङ्ग यक लीन्हो अङ्ग त्रिभंग अनूप । अन्तर द्वार आय भये ठाढ़े सुनत त्रियाकीबातें । सरस बचनजु कहति सखिआगे कहो मिलों केहि नातें । कपटी कुटिल कूर कहि आवत यह सुनि सुनि मुसकात । सूरदास प्रभु हैं बहुनायक तुहींकहत यह बात१६७ ॥ रागमलार ॥ जौलौं माई हौं जीवन भरि जीऊं । तबलग मदन गोपाल लालके पन्थ न पानी पीऊं । करौं न अंजनधरौं न मर्कत मृगमद तन न लगाऊं । हस्तबलय कटिनापद मेचक कंठ न पोतबनाऊं । सुनो न श्रवणन अलिपिक बाणी नैनन नव घन देखौं । नील कमल करधरौं न कबहूं श्यामसरीसी लेखौं । इतनी कहतहिं आय गये मोहन लिये

प्रिय दूतीसंग। छूटिगई रिसटेकमानुकी निरख रसिकके अङ्ग। अति रति लीनभईभामिनि सँग तब करगहि लीन्हो। सूरदासप्रभु रसिक शिरोमणि मिलि जु सुवा सुखदीन्हो १६८॥ रागधनाश्री॥ कवि गावत हरिमोहन नाम। गाढ़ोमान दूरिकरि डारेउ हरषभई मनवाम। ऐसे चरित और को जानै धन्य धन्य नँदलाल। जो ये गुण तो हरत वि-यतमन अति हर्षित भइँ बाल। मिल्यो कामतनु ताम तुरतही रिझई मदन गोपाल। सूरश्याम रसबस करिलीन्ही यहै रच्यो इक ख्याल १६९॥ रागगौंडमलार॥ श्याम गुणराशि मानिनि मनाई। रहेउ रस पर-स्परमिल्यो तनुबिरहझर भरो आनन्द प्रिय उर न माई। कबहुँ रति स-हज कबहूं करत बिपरीत बासरहुते सबरैनि बीती। श्रमित दोउ अङ्ग भयेअतिहिबिह्वलपरे सेजरतिजीति बढ़ीप्रीती। भोरभये चलेनिजसदन पितमातु के फिरे सकुच देखि नंदद्वारे। सूरप्रभु श्याम सकुचिगये प्रम-दावाम कहति ये गुण भले हरि तुम्हारे १७० कहां हैं श्याम कहांगवन कीन्हो। कहांतुमरहत कबहूंदरश देतनाहिं धोखेगये आय हममानि लीन्हो। नयन आलसभरे चरण डगलरखरे कहा हो डरेसे कहो मोसों। रैनिकहुंबसे प्रियकौन मोंरसेहो उरकरज कसेसो कहो गोसों। भलेजु भले नन्दलाल वेऊभली चरण जावक पाग जिनहिं रंगी। सूरप्रभुदेखि अङ्गअङ्ग बानककुशलमें रही रीझिवहनारि चंगी १७१॥ रागकल्याण॥ सुनत हँसिचले हरि सकुचि भारी। यह कहेउ आजु हम आय हैं गृहतुवतरक जिनि कहाहम समुझि डारी। नारि आनँदभरी रागसी ह्वै ढरी द्वार अपने खरी अंग पुलकी। गये कहि सूरप्रभु रैनिबसिहैं आजु सजति शृङ्गार कछु सकुच कुलकी १७२ अङ्ग शिंगार सुन्दरि बनावै। मिलैंगी श्यामनिजुधाम करि आजुही रैनि बिलसौं काम मन मनावै। सरससुमनाजात शीशकरसों करति सो-मंत अलक पुनिपुनि सँवारै। मांगसूवीपारि निरखिदर्पण रहतिगंथि कवरीछांहपाटी निहारै। कमल खंजनमृगजमीन लोचनजीतिआरङ्ग सुतलेति तहां आंजै। हारउरधरति नखशिखहु भूषण भरति सूरप्रभु मिलन हित नारिराजै १७३॥ रागधनाश्री ॥ बिधुबदनी अरु कमल नि-हारै। सुमनासुत लै कमलनि मज्जति धनपति भ्रासको नाम सँवारै।

तरनिसुता तात वनिता सुत ता छवि कमल न रचि रवि ग्रन्थित चारै। कमल कमल पररेख बनावति सारँग रिपुपाहन गतिटारै। उरहारा-वलिमेलति कमलन मनहुं इन्दु पारसढिगपारै। सूरश्यामके नामहिं प्रीति न कमलापतिके पदहि बिचारै १७४॥ रागआसावरी॥ अङ्गशृंगार सँवारि नागरी सेज रचति हरि आवैंगे। सुमन सुगन्ध रचति तापर लै निरखि आपुसुख पावैंगे। चंदन अगर कुंकुमामिश्रित अमतेअङ्ग चढ़ावैंगे। मैं मन साध करौंगी सँग मिलि वै मनकामपुरावैंगे। रति सुख अंतभरैंगी आलस अंकम भरि उरलावैंगे। रसभीतर मैं मानक-रैंगी वैगहि चरण मनावैंगे। आतुर जब देखौं पिय नयनन बन र-चना समझावैंगे। सूरश्याम युवतीमनमोहन मेरेमनहिंचुरावैंगे १७५ रागबिलावल॥ नन्दसुवन बहुनायक अनतहि रहे जाई। वह अभिलाष करतरहीताको बिसराई। बासरऐसेहीगयोनिशियाम तुलानी। नारि परी अति शोच में बिरहा अकुलानी। आवन कहिगये साँझही अ-जहूंनहिंआये। काधौंकतहूं रसिरहे की फँदपरे पराये। वेईहैं बहुना-यकीनायकगुणभारी। सूरश्याम कुमुदाभवनसुविकारिपशुधारी १७६ रागकेदारो॥ रहेहरिरैनि कुमुदागेह। परस्परदोउप्रेम भीजेचढ्योअतिहि सनेह। एकक्षणा यकयाम बितवति काम रस बसगात। ताहि बीतत यामयुगसम गनततारागात। उनहिंवैसे याहिऐसे रजनिगइभयोभोर। सूरमोसों करि चतुरई गये नन्दकिशोर १७७॥ रागनट॥ कुटिलाई करी हरि मोसों। चित्तभरी सुन्दरी करतिमनशोसों। कहिगयेनिशि आइहैं हरि अंत बिरमे जाय। रैनि बीती उदित दिनकर देखि त्रिय मुरझाय। भवनहींमनमारि बैठी सहजसखि यकआय। देखितनुअति बिरहबाला कहति बचन सुनाय। बोलिढिग बैठारि ताको पोंछिलो-चनलोर। सूरप्रभु के बिरह व्याकुल सखी लखि मुखओर १७८॥ राग गौरी॥ आजुबिन आनँदको मुखतेरो। कहांरही मनुमारि भोरही अति व्याकुल मनमेरो। मोसोंगोप करै जनि सुन्दरि नहिंपावति वहभाव। सुनौंबात कैसी उपजीहै कछुजनि करैदुराव। तबमधुरी बाणीसों बोली कहा कहौं रीताहिं। तेरेश्याम भले गुणनागर कपटीकुटिल कठोरहिं। निशि बसिबेको अवधि बदी मोहिं सांझगये कहि आवन। सूरश्याम

अनतहि कहुं लुब्धे नयन भयेरोउ सावन १७९ ॥ रागसोरठ ॥ ऐसेगुनी हरिकेरीनाई । मैं पहिंचानि रहीहैं नीके कुटिल शिरोमणिताराई । अब मोसों उनसों कहबानि है कछु मैं गईबुलावन । आपुहि कालिह कृपा यह कीन्ही अजिरजु करिगये पावन । तोकोमिलैं कहूंमेरीसों तिनसों यह तू कहियें । सूरदासप्रभु बोलत सांचे लाजकछूजिय गहिये १८० ॥ रागबिहागरो ॥ सखीरी और सुनहुयककबात । आजुगोपाल हमारे आये उठि करिबहि मिसप्रात । कतहूं रैनिउनींदेमोहन अपने गृहते जात । आगेहार नन्दहैंठाढ़े तातेगये न सकात । डगमगात मग धरत परतपग आलसवन्त जम्हात । मानहुंमदन दंड दै छांड़े चूसकोदै दै मात । जो कहेउ कहांरहेहो मोहन तो सन्मुख मुसकात । तातेकछू न उत्तर आयो सूरश्याम सकुचात १८१ ॥ रागकेदारो ॥ तबहरि यह चतुराईकरी । कहेउ मेरेधाम आवनदार देगये हरी । आपही श्रीमुख गायेकहिसही कैथीपरी । सेजरचि सब रैनिजागीतबरिसानि हैंजरी । श्याम देखे द्वारठाढ़े मनहिं मन झुरिहरी । कहतिसूर सुनायहरिको धन्य यह शुभघरी १८२ ॥ राग बिलावल ॥ यहै कही कहि मौनरही । मनमग काहति दरश अब दीन्हे निशिसब विरह डही । मधुरे बचन सुनाय सखी सों रिसबश भरे कही । आये तहां जाहु ताहीके चतुर त्रिया हिगही । वाबिनुउनको कौन मिलेगी नहिंकोउ फिरति बही । सूरज प्रभु इतको जनि आवैं पगुधारैं उतही १८३ ॥ रागकान्हरो ॥ सखी निरखि अँग अंग श्यामके । कहुं चन्दन कहुं बन्दन रेखा कहुंकाजर छबि लखतिबानके । आलसभरे नयन रतनारे चतुरनारि संगजगेयामके । अपने मनहरि शोचकरत यह परी त्रियाअङ्क कठिन तामके । मानुकिशो मोतनफिरि बैठी आयेहैं यहसुनतनामके । सूरश्याम यक बुद्धिबिचारी मनमोहन रतिसहितकामके १८४ ॥ रागसूहा ॥ श्यामसैन दै सखी बोलाई । यहकहि चलीजाय गृहअपने तू तो मानुकियोरी माई । अन्तर जायभये हरि ठाढ़े सखी सहज निकसी तहँजाई । मुख निरखत दोउहँसे परस्पर भवन जाहु मैं लेउँमनाई । अङ्कदिखाय गई हँसि प्यारी सुरत चीन्हि नीकी सुघराई । सूरज प्रभु गुणापलरहे को जानिबूझि कीन्ही रिसहाई १८५ ॥ रागगौरो ॥ सखी गई कहिलेहु

सनाई। जानति सखि विद्यासखि गुणसखि चतुरनसखि चतुराई।
प्रियाहृदय यहबुद्धिउपाई यहँतो नहींकन्हाई। आतुरचली यमुनजल
खोरन काहू सङ्ग न लगाई। पहुंची तरुणि तरणितनया तट न्हाय
चली अतुराई। सूरश्याम सारगभये ठाढ़े बालक सोहन राई १८६॥
रागबिलावल॥ पांचबरष के लालह्वै त्रिय मोहन आये। नागरिआगेह्वै
गई तब बोलि सुनाये। कहाकहांरी जातिहै काकी तू नारी। मोहिं
पठाई श्याम लेनजाकी तू प्यारी। यह सुनि नारि चकतभई आपुन
तहँ आये। तब करसोंकर गहिलियो देखत मनभाये। अगम चरित
प्रभुसूर केत लखे न कोई। श्यामनाम श्रवणनि परेउ हरषी सुखजो-
ई १८७॥ रागरामकली॥ हरषी निरखि रूपअपार। गहेउ करसों सदन
ल्याई जानि गोपकुमार। श्याम सोको बोलिपठई कहतहैंयहलाल।
भवन लै इनभेद बूझौ सुनौ बचनरसाल। हृदय आनँदभई बाला प्रेम
रसबेहाल। कुंवरि अंतहपुर गईलै रच्योहरि तहँ ख्याल। तरुण ह्वै
कर उरजपरसे दियो अञ्चलडारि। सूरप्रभुहँसि लईप्यारी भुजन अं-
कमधारि १८८॥ रागटोड़ी॥ सुखनिरखत त्रियचकतभई। जोदेखैअति
तरुण कन्हाई यह को लखैदई। छांड़िदेहु ऐसे मनमोहन हँसि सब
लजित भई। ऐसे छन्दरचत धनि धनि पिय कीन्हो करणिनई। अं-
कमभरि त्रिय कंठलगाई कुचउर चांपिलई। सूरश्याम मानिनि मन
मोहन रति रस सों भोगई १८९॥ रागबिलावल॥ श्यामसनाथ मानिनी
हरषित भइ अङ्ग। रैनिबिरह तनुकोगयो जो करै अनंग। सुतासहर
वृषभानकी सुधिकीन्ही श्याम। सुखताको देहरिचलेप्यारीकेधाम।
प्यारी आवतपिय लखीचितईसुख मुसकाय। जिय डरपैमोहिं देखि
कै सो सुख कह्यो न जाय। अब न पियहि उचढाय हों मोको रस
मात। त्रास करत मेरी जिती आवत सकुचात। आनि द्वार ठाढ़े भये
नायकबहु नाम। सूरजप्रभु अङ्ग सहजही निरखत रुचिबाम १९०॥
रागगौंडमलार॥ श्याम डरबास निज धामआये। उतहिप्रमुदा धाम सखी
सहजहि गई अङ्ग के चिह्नकछु और पाये। देखि हरषी नारि सकुच
दीन्हीडारि अतिहि अनन्द भरी श्याम रङ्गी। सखिबूझति ताहिहँ-
सति ता मुखचारि श्यामको मिलीरी बनी चंगी। कहन लागि कहा

कहति तू आजु मोहिं नाहिं नाहीं करति दुरत कैसो। मिले प्रभुसूर तोहिंजानि यहचतुरई नहीं तू करति नहिंलखतजैसे १९१॥ रागसूहो॥ नैना तो अति रंगीले चिकुर छूटे छबीले काजर पीक लागी ले आरसी देखि। मरगजे बसन अधर दशननि छत कहुंकहुं नीकीलागीचन्दन रेखि। काहेको तू मोहिं दुरावतिजानी अरगा परगाछनि शोध। सूरदास प्रभु नंदसुवनसङ्गअबहीं सुरतरङ्ग कोसोभेय१९२॥ रागबिलावल॥ अबतू कहा दुरावैगी। मोहिं कहतिनहिं काहि कहैगी कबलों बात लुकावैगी। मोसी और कौन पिय तेरे जासोंप्रेम जनावैगी। मेरीसों उनकी सों तोकोकहा दुराये पावैगी। औरनि सी मोहूं को जानति मोसों बहुरि रमावैगी। सूर श्याम तोहिं बहुरि मिलैहैं आखिर तो प्रकटावैगी १९३ प्रमुदाअति हर्षितभई सुनिबात सखीके। रोमरोम पुलकित भई उपजी रुचि हीके। कहत अबहिं ह्यांते गये नन्दसुवन कन्हाई। चरित कहाउनके कहौं मुखकहेउ न जाई। सांझगये कहि आय हैं मोसों रीआली। अनतबिरमि कतहूं रहे बहुनायकख्याली। रैनि रही मैं जागिकै भोरहिं उठिआये। मानकियो रिसपायकै पल माहिं छिंडाये। अगलितात गुणा प्रभुसूरके कहि तोहिंसुनाऊं। अबहिं चरित करिकै गये तेईगुणगाऊं १९४॥ रागरामकली॥ आजुसखी यमुना मग मोहन मोहिँ छँदी छँद लाई। को तू आहि कौनकी बनिता बात एक सुनि पाई। बिहँसि कहेउ मोहिँ श्याम पठाई सुनत बिरह गति भूली। रति जल जलज हियो हुलस्यो मन पुलक पांखुरी फूली। जानि कुमार गहेउ करसों कर ल्याऊँ भवन बुलाई। नैन मूंदि अञ्चल गहि डारेउ मैं माधव मिलिआई। छैलछबी उरबदन बिलोक्यो सकुचि रही मुसकाई। छांड़हु सूरश्याम यह तुम्हरो आवन जानि न जाई १९५॥ रागधनाश्री॥ आवतहीं मैं तोहिँ लख्योरी। तुमहूँ भली उनको मैं जानति अधर बिम्ब मनो कीर भख्योरी। अङ्ग मरगजी पटोरी देखो उर नख छत छबि भारी। धनि वे नन्दसुवन धनि नागरि कियो सुरत रणहारी। हँसत गई सखि भवन आपने मन आनन्दबढ़ाये। सूरश्याम राधिका धामके द्वारे शीश नवाये १९६॥ रागबिलावल॥ भलीकरी पिय ऐसेहू मेरे गृह आये। लीन्हे कंठ लगायकै बड़भागिनि पाये। कहा शोच जिय

करतहौ भुजगहि करलीन्हो। गई भवन भीतर लिये तहँ बैठक दीन्हो।
श्यामसकुच अंग हेरहीं नागरि पहिंचानी। चिह्न निहारत डर कहा आवतही जानी। या छविपर उपमा कहौं जो त्रिभुवन होई। तुमजानति यह रूपको अरु लखै न कोई। चन्दन बन्दन पान रङ्ग अधरन करज छवि। सूरश्याम उर करजको को बरणिसकै कवि १९७ काहेकोपिय सकुचत हो। अब ऐसो जनि कामकरो कहुँ जो अतिही जिय सकुचत हो। अबकी चूक नहीं जिय मेरे और दिननको जानिरहो। सौंहकरौ मेरी सों आगे डर डारो जनि मौन गहौ। यह सुनि श्याम हरषि कुच परशे बारबार शिव सौंह करी। सूरश्याम गिरिधर गुणनागर बात आजते सहीपरी १९८ श्यामसों कुच परश कियो। नन्दसदनते अबहीं आवत और त्रियनको नेम लियो। ऐसी शपथ करो काहेको जोकछु आजु करी सो करी। अब जो कालिहते अनत सिधारो तब जानौंगे तुमहिं हरी। मैं सतिभाव मिलीहँसि तुमको कहा आजुको सौंहकरौ। सूरश्याम जो भई सु भई जु अबते सबको नेमधरौ १९९ ॥ रागगौंडमलार॥
अहो राजत राजीवनयन मोहन छवि उरगलता रँगलाग। जेहिवनिता रसबस कीन्हे निशि प्रकट होत अनुराग। शिथिल अङ्ग अरु शिथिल पाग बनि शिथिल चरण गति आज। मनहुँ सेजरे बाहुते उठिआवत हो गजराज। भालमध्य जावक रँग देखत लागतिहै मोहिँ लाज। तुम अपने जिय सों जानतहौ तिलक लोक त्रयराज। हंस बन्धुवर लोचन ललना निलित निशा कृतकाज। बदन चन्द बिय सन्निध जानि नहिं बढ़त किरणमें लाज। भवन जीव सुत लग्यो अधर पर यहछवि कही न जाय। मनो बँधूक सुमन ऊपर बिय अलि सुत बैठे आय। कुचकुंकुम अवलेप तरणिकिये शोभित श्यामलगात। गतपतङ्ग राकाशशि बिय सँग घटा सघन सोभात। श्याम हृदय लच्छन ताऊपर लगीकरज छत रेखा। मनहु बसन्तराज रुचि कीरति आन किशलतरु भेखा। काम बामबर लिये पंच चितवत प्रति अँग अङ्ग लाग। अब न जान गृहदेउँ पियारे जब आये तब भाग। ता दिनते वृषभाननन्दिनी अनत जानतहिँ दीन्हो। सूरदासप्रभु प्रीति पुरातन यहिविधि रसबस कीन्हो २०० ॥

यहांते बड़ो मान ॥

रागबिलावल ॥ सखियन संग लै राधिका निकसी ब्रजखोरी। चली यमुन स्नानको प्रातहि उठि गोरी। नन्दसुवन जा गृहबसे तेहि बोलन आई। जाय भई द्वारे खड़ी तब कढ़े कन्हाई। औचक भेंट भई तहां चक्रत भये दोऊ। यं इततें वे उतहितें नहिँ जानत कोऊ। फिरी सदन ले नागरी सखि निरखत ठाढ़ी। स्नान दानकी सुधिगई अतिरिस तनु बाढ़ी। श्यामरहे सुरझायकै ठगमूरी खाई। ठाढ़े जहँके तहँ रहे सखियन समुझाई। इतनेहींके ह्वैगये गहि बांह ले आई। सूरज प्रभुको लै तहां राधा दिखराई १॥ रागरामकली ॥ राधहि श्याम देखो आय। महा मान दृढ़ाय बैठी चितै कापै जाय। रिसहि रिस भइ मगन सुन्दरि श्याम अति अकुलात। चक्रत ह्वै झकि रहे ठाढ़े कहि न आवै बात। देखि व्याकुल नन्दनन्दन सखी करत बिचार। सूर दोऊ मिलैं जैसे करौं सोइ उपचार २॥ रागकान्हरो ॥ सखी यक गई मानिनि पास। लखति नहिँ कछु भाव ताको मिटि न मनकी आस। कहौं कासों कौन सुनिहै रिसन नारि अचेत। बुद्धि शोचत तिया ठाढ़ी नेक नहीं सुचेत। श्याम व्याकुल अतिहि आतुर यहि कियो दृढ़ मान। सूर सहचरि कहति राधा बड़ी चतुर सुजान ३ नाहीं हैरी अति हठ नीको। मोसों कहेउ सुनहु ब्रजसुन्दरि मानि मनाओ नागर पीको। सोइ अति रूप सुलक्षण नारी रीझे जाहि भावतो जीको। प्यासे प्राणजायँ जो जल बिन पुनि कहकीजै सिन्धु अमीको। तौ जो मान तजहुगी भामिनि रविकी रश्मिसकास फनफीको। कीजैकहा समय बिन सुन्दरि भोजन पीछे अचवन घीको। सूर स्वरूप गरब यौवनके जानतिहौं अपने शिर टीको। जाके उदय अनेक प्रकाशत शशिहि कहा डर कमल कलीको ४॥ राग सारंग ॥ चितई चपल नयन की कोर। मन्मथ बाण दुसह अनियारे निकसे फूटि हिये वहि ओर। अति व्याकुल धुकि धरणि परे जिमि तरुण तमाल पवनके जोर। कहुँ मुरली कहुँ लकुट मनोहर कहुँ पट कहुँ चन्द्रिका मोर। क्षण बूड़त क्षणहीं क्षण उछरत बिरह सिन्धुके परे झकोर। प्रेम सलिल भीज्यो पीरोपट फट्यो निचोरत अँचराछोर। फुरै न बचननयन नहिँ उघरत मानहुँ कमलभये बिनभोर।

सूर सु अधर सुधारस सींचहु मेटहु सुरछानन्दकिशोर ५ तेरे नयन कि-
शोरी बान। यामारे ज्यों सुरछि परेधर क्योंकरि राखे प्रान। खगपर
कमल कमलपर कदली कदलीपर हरिठान। हरिपर सर सरवर पर
कलसा कलसापर शशिभान। शशिपर बिम्ब कोकिला ताबिच कीर
करत अनुमान। बिचबिच दामिनि द्युति उपजति है मधुपयूथ अश-
मान। तू नागरि सब गुरान उजागरि पूरणकला निधान। सूरश्याम
तुव दर्शन कारण व्याकुलपरे अजान ६ ॥ रागमलार ॥ यह ऋतु रूसिबे
की नाहीं। बरषत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरषि मिलाहीं। जेत-
नाल ग्रीषम ऋतुडाहीते तरुवर लपटाहीं। जलबिन सरितापयपूरण
ह्वै मिलन समुद्रहिंजाहीं। यौवनधनहै द्योसचारि को समुझि चतुरि
मनमाहीं। सूरसुनत उठिचलहु राधिका दे दूती कहैबाहीं ७॥ रागसोरठ॥
राधेहरि रिपु क्यों न छिपावति। मेरुसुता पति पति ताके सुत ताको
क्यों न मनावति। हरिबाहन ता बाहन उपमा सो तैं धरे दृढ़ावति।
नवअरुसातबीस तेहि सोहत काहे गहरुलगावति। शारङ्गवचन कहेउ
करि हरि को शारङ्ग वचन न भावति। सूरदास प्रभु दरश बिना तुव
लोचन नीर बहावति ८ राधे यामें कहा तिहारो। मुख हिमकर त-
नुहाटक बेणी सो पन्नग अङ्गकारो। गति मराल केहरिकटि कदली
युगुलजंघ अनुहारो। नयन कुरङ्ग वचन कोकिल के नासा शुक क-
कहगारो। विद्रुम अधर दशन दाड़िम कन करो न तुम निरवारो।
सूरदास प्रभु त्रिभुवन पतिको एकन उनहिं उबारो ९ पोच पिशुन
लख दशन सभासद प्रभु अनंग मंत्रीबिन भीति। सखिबिनमिले तरुन
बनिसेहै कठिन कुराज राजकी ईति। मन्दहास मुखमंद बचन रुचि
मंदचाल चरणान भइ प्रीति। नखशिख ते चितचोर सकल अङ्ग अ-
सराजत सब प्रजा बसीति। तेरी तन धन रूप महागुण सुन्दर श्याम
सुनी यह कीर्ति। सु करि सूरजेहि भांतिरहे पति जिनि बल बांधि
बढ़ावहु छीति १० ॥ रागबिलावल ॥ यहितेरे वृन्दाबन बाग। सुनि रा-
धिका कदंब बिटपकी शाखाएकअमी फललाग। श्यामअरुणकछु
अधिक प्रीतिछबि बरणि जायँनहिं अङ्गविभाग। अति सुपक्व मुरली
के परसत चुइचुइ परत उमगि रसराग। व्रज बनिता बरबारि कनक-

सथ रोंके रहत सुधा हुरनाग। तुव प्रताप कुइ सकत न सुन्दरि शु-कसुनि मर्कट कोकिल काग। मैं मालिनि यत्ननि जलजुगयो सींचत सुहत परे कर दाग। सूर सश्रम उठि भेंटि परस्पर हिय पियूष पाये बड़भाग ११ ॥ रागरामकली ॥ रसिक राधे बोली नंदकुमार। दरशन को तरसत हरि लोचन तू शोभाकी धार। खंजरीट मृगमीन मधुप मिलि रंभारचि अनुसार। गौर मकुचि शशि बिरथकियेरथ मेरुलुख्यो बड़ि तार। कौन हेततेंमिल्यो सितासितबिछुरी कौनबिचार। मन्दाकिनि मानोंशिरधरिकै रुदन करीपुकार। राख्यो मेलि पठौतें परवन हरजु कियेबिनहार। सूरदासप्रभुसों हठकीन्हे उठिचलिक्यों न सवार१२ रागबिलावल ॥ जल सुत प्रीतम सुतरिपु बंधव आयुध अनल न बिलसुभ-येरी। मेरु सुता पति बसतहै माथ कोटि प्रकाश सरसाय गयोरी। मारुतसुतपति अरिपुरबासी पितु बाहन भोजन न सुहाई। हरसुतबा-हन असन सनेहीमानहुं अनलदेह दोलाइ। उदधिसुतापति ताकरबा-हन ताबाहन कैसेसमुझावै। सूरश्याम मिलि धर्मसुवन रिपु ता अवता-रहि सलिलबहावै १३ ॥ रागकान्हरो ॥ मोहननीकोरी अतिनीको। तासों न रूसनकीजै हितुके मनाय लीजैहँसत हँसतदूरिकरै लेनरिस जीको। अतिहि मानिनीजेजे तेतेउ मैं मनाय दइअतिहि कठिनहठ देखगोरीतो तियाको। दूसरी यामिनी गई त्योंत्यों तू हठीलीभई सूर निरखि मुख देखो प्यारी पीको १४ ॥ रागबिहागरो॥ औरसखी यकश्याम पठाई। हरिको बिरह देखिभइ ब्याकुल मानु मनावन आई। बैठीआय चतु-रई काके तहँकछु नहीं लगार। देखति हैंकछु औरदशा तब बूझति बारम्बार। मन मन खिझति मानिनी याको कौने यहां पठाई। सूर सबनि कछुमानु मनायो सो सुनिके यह आई १५ ॥ रागमलार ॥ सुनरी सयानी तिय रूसिबेकोसैनलियो पावस दिनन कोऊ ऐसोहैकरतरी। दिशिदिशि घटाउठी मिलिरी पियसों रूची निडर हियोहै तेरोनेक न डरतरी। चलियेरी मेरीप्यारी मोकोमान देनहारी प्राणहुंते प्यारी पतिधीर न धरतरी। सूरदास प्रभु तोहिं दियोचाहै हितचित क्यों न मिलतेरो नेम टरतरी १६सेजरचि पचिसाज्यो सघनकुंजनिकुंजचित परयान लाग्यो छतिया धरकि रही। हाहाचलि प्यारी तेरो प्यारो

चौंकि चौंकि परै पातकी खरक पियहिय मैं खरकि रही। बातन धरत कान तानतहै भौंहबानउत न चलतिबाम अँखिया फरकि रही। सूरदास मदन दहत पियप्यारी सुनि ज्यों ज्यों कहा त्यों त्यो बरुउ-तको सरकि रही १७॥ रागकेदारो॥ तू तो मो मों बातन कहति माई चलैगीकहांते। काहेको गहरु कीजै बिनुरथकहालीजै दीजैजायउतरु मैं आई हौं जहांते। अनोखी मानिनी यह पाहन पूतरी भई बैन न बदति और जारत तहांते। आई हौं शपथ खायजातन परत पाय सूरदासप्रभु नवल पहांते १८॥ रागसारंग॥ हौंतो दुहुंनिचकडोर कीन्ही। उतते ये पठवत इत वै नहिं मानत हौ दुहुन चकडोर कीन्ही। क्रोध भेय मुख सुदेश नयननि छबि न कहि आवै आतुर ह्वै उठिधाईरावरे लीन्ही। तामरस लोचन हावभाव बिनाकरै मानैं न मानिनि मान रङ्ग भीनी। सूरज प्रभुराय शिरोमणि आपुहि चलि देखौ क्यों न नायका नबीनी१९हौं पिय रीझिआई। गईही मानु छिडावनपिया रीझि आई। ऐसीछबि राजतिहै मोपै सो बरणि नहिंजाई। आपुहि चलिये बदनदेखियेजौंलौंरहे निठुराई। सूरश्याम प्यारी अतिराजति रावरीदुहाई २०॥ रागकल्याण॥ मैं तुम हँसत खे ललछांडिगई अब न्यारे न्यारे अनबोले ह्वै रहे दोऊ। इततुमरूखे ह्वै रहेगिरिधर उत अनमनी अञ्चलउरमाय मुखजंग लगायरहीं वोऊ। नीची दृष्टिकरि धरणी नख करोवति एहोपिया तबहीं यकटक घंघटतनचित रही आहिकहाहौं करौंअबसोऊ। सूरदासप्रभुप्यारे अङ्कभरिजायलीजैछांडोछांडोकहन देहुऔरनमानैकोऊ २१॥ रागईमन॥ अजहूंरैनितीनियामहै जू। काहेको हरबरात श्याम जू। मैं तौवाकी प्रकृति लई लखिकै बातजो पै रिस देखिहौं तो घरिकु लागिहै तिहारी प्यारी लाडिली बामहैजू। पैज-किये जातितांहि अबलिये आवतिहौं मेरे तो तिहारेसुख सुखहै याते कौन कामहै जू २२॥ रागसारंग॥ जहां बैठे माधव तहां तू बुलाय राधे यमुना निकट शीतलछहियां। आछी नीकीलागति कुसुमीसारीगो-रेतनु परम चतुरि चलीहरि पहियां। दूती एकगई मोहन पै जायक-हेउपिय कहियां। सूरदास सुनि चतुर राधिका श्याम रैनि वृन्दावन महियां २३॥ रागईमन॥ रसमें रिसकीबात। बेरस कीजैन भामिनीहौं

पठई तोहं लैन सांवरे तोहिं बिन कछु न सुहात। हाहा करति तेरे पायँनपरतितेहीं सखासखा निशिघटतिजात। सूरश्याम तेरोमगजोवत अति आतुर अकुलात २४ ॥ रागबिहागरो ॥ उतरुन देति मोहनीमौन ह्वै रहोरी। सुनि सब बात नेकहू न मटकीरी। अब यों चलेगी कबरज-नीगईरी सब शशिबाहन धरणी वे देखलटकी। नैनारी करें अलोल धरेंरी पाणिकपोल भुवनख लिखैतिलहूं न कछुभटकी। मुग्ध बधूरी शठकाहेको परीहै हठपरम भावती तू नागरि नटकी। ध्रुव समान आ-येजुसप्तमुनि बहुरिबेर रहेउहे तमचुररटकी। सूरसखीजायबॉलराधिका कुंवरिचलि आजु छबिनीकी तैसे आछे नीलपटकी २५ सबेरी सबवि-हानी तोहिं मनावतिराधारानी। शुक्रउदै होनलाग्यो जागेतमचुरहारि आई जु मृगानी। प्रफुल्लितकमल गुंजारकरत अलिपीरी पहुफटी कु-मुदिनी कुम्हिलानी। सूरश्याम बनमुरछि परे हैं मानिनि वारोंमोंपर क्यों भृकुटरानी २६ श्यामप्यारी बोलन लागे तमचुरघटिगई रजनी। अरीवे मनमोहन ब्रजनायक ठाढ़ेसजनीठेठाढ़ेहैं हरिकुञ्जकु द्वारे ललित बेन बजाय हो। श्रवण सुनत कैसे रहति कैसे तोहिं गेह सुहाय हो। तुम कुंवरिवृषभानु कीकछुनेह प्रीति न जानहू। कहिपठई हरितोहिं काहे न चितआनहू। नन्दनन्दन कहेउऐसे ह्यां सुन्दरिआय हो। और नहिं कछु काजबनमें नेक मधुर सुर गायहो। सूरप्रभुहि बिचारि मन में प्रीति सों उरलाइये। यह पुनि पुनिमैं कहति राधिका मनवांछित फलपाइये २७॥ रागकेदारो ॥ मोहन तेरे अधीन भये रिस कवते की-जतुरी गुणआगरी नागरी। तेरे अनउत्तर सुनिसुनि श्याम हँसि हँसि देत नेक चितै इत नागरी। तेरोई भाग सोहाग तेरोई अनुराग तेरेही माथे रती तू रूप उजागरी। सूरदासप्रभु तेरो मग जोवत तुहींतुहींरट लागी जैसे मृगनि भली बागरी २८॥ रागनट ॥ कुञ्जसदन में ठाढ़ेदेखों आँखियनभरि तब मैं जाऊंगी बलि। मोपै न देखेपरे खरेतुम डारिगहे अकेले नेक तू ठाढ़ीहो ढिगचलि। तेरोरी बदनप्रफुल्लित अम्बुजहरि जुके नैना मैं देखे अति आतुर अलि। सूरदास नन्दनन्दन प्यारेन्यारे नेक न कीजैहाहा दूरिकरों मानेमलि २९ ॥ रागकेदारो ॥ तेरे मानिबेहु तेरीमानु नीकोइ लागत ऐसेरहिये जौलौलालहि लैआऊं। औरनकी

हांसीखेल तिहारी रुखाई साईबिरहमें वहरजन सुख सयान आ-
निषिजाऊं । उलटि पिय पै जाउं नौतन खोग बनाउं सोरह कलाको
साधि कलिनिधिलाऊं । सूरदास प्रभु गिरिधरन सों हिलिमिलि पिय
मिलिवो सो सहज सरूप अनूपमपाऊं ३० ॥ रागबिहागरो ॥ काहेतिश्याम
सों आयसमायो न मानै जू । कहांरही मन घालि कहा अनुमानै जू ।
कहा सजनसैघालि बैठीभेद मैं नहिं लखिसकी । आयजो बड़वहां बैस
जात आवत मैं थकी । नेकहू जो कहेउं मानै कोटिभांतिन मैं कही ।
हाहा करिमनुहारि सुनतही रिसगही । कहा बैठे चले बन है आपहू
नहिं मानि हो । तुम कुंवर घरही के बाढे अब कछु जिय आनिहो ।
बेगिचलिये अनखिजैहे तुमयहां वह जरति है । वाकेजिय कछु और
कपटकरि धरतिहै । राधिका चित अतुरजानोजाय तांहिपाही रहो ।
कहाजोमुखफेरिबैठी मधुरमधुर बचनकहो । सूरप्रभुअबलैनाचे कोऊ
जैसो तुमकह्यो । कहियत गुणापरबीरा कोधबिधभक्यो ३१ ॥ रागबिहागरो
सुनियह श्याम बिरहभरे । बार बार गगन निहारत कबहूं डोलखरे ।
मानिनी नहिं मानसोच्यो दूसरी निशि आजु । तबपरे मुरझाय धरणी
काम करेउ अकाजु । सखिनतब भुजगहि बचाय कहाबारे होत । सूर
प्रभु तुम चतुर मोहन मिले अपने गोत ३२ ॥ रागबिलावल सूहो ॥ श्याम
चतुरई कहां गँवाई । अबजानेघरके बाढे हौतुम ऐसेकहँरहे मुरझाई ।
बिना जोर अपनी जांघन के कैसे सुख कियो चाहत । आपुन दाहत
अचेत भये क्यों उतमानिनि मन काहे दाहत । वहीं रहौ कहैगी क-
तहूं जायरहे बहुनायक । सूरश्याम मनमोहन कहियत तुमोहौ सबही
गुणा के लायक ३३ ॥ रागरामकली ॥ तब हरिरच्योदूत रूप । गये जहां
मानिनी राधा त्रियास्वांग अनूप । जायबैठे कहत सुखयह तू यहांबन
श्याम । मैं सकुचि तहँगईनाहीं फेरिकहियत बाम । सहजबातें कहत
मानो अब भईकछुऔर । तू यहां वै वहांबैठे रहति एकहिठौर । कहो
मोसों कहा उपजी वै रटति तुवनाम । सुनति है कछु बचन राधा सूर
प्रभु बन धाम ३४ राधे सैं अति मान करेउ । यहकहि हरि पछितात
मनहिंमन पूरब पाप परेउ । पहिलो अपनी कथा बताई जब त्रियभेष
धरेउ । तब तेहि रूप अनूप सुमुखि सुनि त्रिभुवन चित्त हरेउ । मोहे

असुर महामद माते सुरमुख अमृत भरेउ। शिवगण सहित समेत महा
मुनि को व्रत नेम हरेउ। तो तनुकी छबि निरखि सूर शिव छतज्यों
ज्ञान धरेउ। जेहि जारेउ आकास सो माखवतेरेई हठमान जरेउ ३५
रागबिहागरा॥ इतो श्रम नाहिंन तबहुं भयो। सुनि राधिका जितो श्रम
मोको ते यहि मानु दयो। धरणीधर विधि वेद उधारो मधु सो शत्रु
हयो। द्विज नृप कियो दुसह दुख मेट्यो बलि को राज लयो। तोरेउ
धनुष स्वयंबर कीन्हो रावण अजित जयो। अघ बक बच्छ अरिष्ट
केशि मथि दावानल अंचयो। त्रियवपु धरेउ असुर सुर मोहे को जग
जोनइयो। ज्ञानो नहीं कहा या रसमें जेहि धार सहज नयो। गुरुसुत
मृतक काज निजु आये सागर सोंवलयो। सूर सुवन अब तोहिं सना-
तन मोहिं सब बिसरि गयो ३६॥ रागबिहागरो॥ राधिका तजि मानुमया
कर। तेरे चरण शरण त्रिभुवनपति भेटि कलप तू होहि कलपतर।
जिनके चरण कमल मुनि बंदतसो तेरो ध्यान धरैं धरणीधर। कहो
बावरी कहा तैं कीन्हो प्रीतम पठै दियो बैरिनि घर। सुन नागरि मैं
श्री नागर वर तुम सुन्दरि वै श्रीसुन्दरवर। वै हरि तो दुख हरण सबनि
को तू दुखभानदुली हरिको हर। जो भृकुटि कछू कहेउ आनो है उनहिं
लाजि सखि मोहीं सों डर। तबहीं सूर निरखि नयनन भरि आयो
उघरि लाल लोचन जलधर ३७॥ रागबिलावल॥ श्यामचतुरई जानति हौं।
ये गुण तुम अजहूं नाहिं छांडे इन छन्दनि मैं मानति हौं। तुमरस बाद
कारन अवलानी जानत लेउ पहिचानति हौं। वे बातैं अब दूरि गईं जु ते
गुण गुनि गुनि मानति हौं। यह कहि बहुरि मानु गहि बैठी जियही
जिय अनुमानति हौं। सूरश्याम जोई मनभावै यहैबात कहि मानति हौं ३८
राग बिहागरो॥ यह कहि बहुरि मान कियो। रिसनि घरघर होत बाला
योग नेम लियो। कहति मन मन बहुरि मिलि हौं अब न करौं बिलास।
ध्यान धरि विधिको मनावै लेति ऊरध श्वास। त्रिया को जिनि जन्म
पाऊँ जनिकरै पति नारि। जन्म तौ पायो गो मांगौं सूर गोद पसारि
३९॥ रागबिलावल॥ श्याम चले पछिताय कै अति कीन्हो मान। व्याकुल
रिसतनु देखि कै भज्यो सयान। बैठे शीश नवाय कै बिन बीरजप्रान।
दूती तुरत बुलाय कै पठई दै आन। बिरहा के वश हरि परे बि

अनुमान । धीरधरौ मैं जातिहौं करिये कछु ज्ञान । सावधान करिकै गई दूतिका सुजान ; सूरमहा वह मानिनी मानोपाख्यान ४० ॥ रागधनाश्री॥ अंश पराये देदेरी । मेरी शिखसुनि रसिक राधिका मनमें न्याय चितैरी । आप आपनी तिथि वा इन्दुहि अँचवत अमरसबैरी । हर सुरेश सुर शेय समुझिजिय क्यों प्रभुमान करैरी । वह जूंठो शशि जानि बदनविधु रच्यो बिरञ्चि यहैरी । सौंप्यो सुपतबिचारि श्यामहित सो तू रहिलटिलैरी । जाकी जहां प्रतीति सूरसों सर्बसतहां सचैरी । सिद्ध सुधानिधि अर्पि अबहिं उठि बिधि पुनिपुनि न पचैरी ४१ ॥ रागबिहागरो राधिका हरि अतिथ तुम्हारे । रति पति असन काल गृह आये उठि आदर करुकहे हमारे । आसन आधी सेज सरकिदे सुखपैहैं पदहरषि पखारे । अर्घादिक आनन्द अमृतमय ललित लोन लोचन जलधारे । धूप सुबासन तत्सरा बशकरि मनमोहन हँसि दीप उजारे । बचनरचन भुवभङ्ग अँबरअँग प्रेम मधुररस परसिनिनारे । उचित केलिकटु तिक्त त्यागिपटु अमल उलटि अंकम हठिहारे । नखक्षतक्षार कषाय कचग्रह चुम्बनसर्पि समर्पि सँवारे । अधर सुधा उपदंश सोंचशुचि बिधुपूरशा सुखबास सचारे । सूर सुकृत सन्तोष श्यामको बहुतपुराय यहब्रत प्रति पारे ४२ ॥ रागधनाश्री ॥ अब मोहिँ जानि ऐसोकीजे । सुन राधिका कहत माधव यों बूझयो दण्ड सो लीजे । उर उर चापि बांधि भुजबन्धन नख नाराच सरस तकिदीजे । भौंह चढ़ाय रिसाय दशन दसि अधर सुधा अपने सुखपीजे । अब जनिकरै बिलम्ब भामिनी सरिसकरी जेहि गात पसीजे । ग्रन्थ गुननिगहि जूंठ गांठिदे छूटिन कबहूँ श्रमजल भीजे । सुनि सखि समुखि पाय लागतिहौं दम्पति अरस परस तनुकीजे । सूरश्याम सँगमिलि रस बिलसहु जीवन सुफल यहै सुनिलीजे ४३ ॥ रागगौंडमलार ॥ गहेउ दृढ़मान वृषभान बारी । डुलै बरु स्वर्ग सुरपति सहित सुरनिहौं डुलै कञ्चन मेरुपहि निहारी । रैनि रबि उदय बासर चन्द होय बरु डुलै सब नखत यहहोय भाखै । धरणि पलटै सिन्धु मर्य्याद को तजै शेषाधार डुलैनहिँ मानुराखै । बांझ सुत जनै उकठेकाठ पल्लवैं बिफल तरुफरै बिन मेघपानी । सूरयह सुनहु बरु अचलचल चलैको कहति बानी ४४ ॥ रागदूतीकान्हरो॥ थकै मनहींमन दूती यह अनुमानकरै । कासों

कहौं सुनै को मेरी कैसे कहेउ हरै। हरिपठई मोको आतुरकरि यह जिय शोचकरै। कैसे बचन कहौं या आगे यह अनुमान करै। चतुर चतुरईफवै न यासों सुनिरिस अतिहिकरै। सूरसहजही मानु मनाऊँ सो यह कबहुँ करै ४५॥ रागमलार॥ मानि मनावों राधाप्यारी। दहित मदन दहतन नायकहो पीर पीरते न्यारी। तू जु कहतही और रूसने अब कहि कैसे रूसी। बिनहीं शिशिर तमक तामसते तुवमुख कमल बिदूसी। सुनियत बिरद रूप रस नागरि लीन्ही पलटि कछूसी। तेरे हती प्रेम सम्पतिसखि सो सम्पति केहिमूसी। उनतन चितै आप तन चितवहु अहोरूपकी राशी। पिय अपनो न होइ तऊ जो ईश सेइये काशी। तुमतौ प्राण प्राणवल्लभके वै तुमचरण उदासी। सुनिहैकोऊ चतुरनारि कत करत प्रेमकी हांसी। ज्योंज्यों मौनभई तुम उनके बाढ़ी आतुरताई। कान्हआनि बनितारत सुनिसुनि जियपैठी निठुराई। हिये कपाट जोरि जड़ताके बोलत नहीं बुलाई। हो राधा राधा रटलागी चितचातकी कन्हाई। जोपै मानत भांवरिमान न होई। हियते बादि प्रेमचितवतिहो अन्तभावतौ सोई। जो गोरी पियनेह गरबतौ लाख कहै किन कोई। काहू लियो प्रेमपरचौ वह चतुर नारिहै सोई। कत होरहीनारि नीचीकरि देखत लोचनफूले। मनहुँ कुमुदरुचि उड़पतिसों किये ऊरधमुख ह्वैफूले। वेतौ हित वृषभाननन्दिनी सेवत यमुनाकूले। तेरेतनक मान मोहनके सबै सयानपभूले। अहो इन्दुबदनी सुनिसजनी कत पलकन पलजोरे। तुवमुख दरश आशके प्यासेहरिके नयन चकोरे। तेरेबल भामिनी बदतनाहिँ उपजत कामहिलोरे। सुनियतहते चतुरि नागरिते तनक मानभये भोरे। तब दूती फिरिगई श्यामपै श्याम वहां पगु धरिये। जोहि हठ तजै प्राणप्यारीसों यतन सवारो करिये। वै वैसे तुम ऐसे वैसे कहो काज कह सरिये। कीजै कहा चांड़ अपनी कत यहां ससूसनि मरिये। अपनी चोप आप उठिआये ह्वै रहे आगे ठाढ़े। भूलिगये सब चतुर सयानपहुते जो बहुगुण गाढ़े। डोलत नहिं बोलैं न बुलाये मनहुं चित्र लिखिकाढ़े। परो न काम नारि नागरसों हैं घरही के बाढ़े। निबह्यो सदा औरही को हठ यह परकीर्ति तुम्हारी। आपुनहीं आधीन ह्वै ठाढ़े देखि गोबर्द्धनधारी। प्राणहिं पियहि

लसनो कैसो सुनि वृषभान दुलारी । कहूं न भई सुनी नहिं देखीरहे तरङ्ग जलन्यारी । रिस लसनो मिलन पलकनको अतिकसुम्भ रङ्गजैसो । रहै न सदा छुटत सगा भीतर प्रात वासन्निय तैसो । वेहैं परम मलीन किये मन उठि कहि मोहन वैसो । घर आये आदर न चूकिये बैठो दूध अँचैसो । वेतौ भँवर भावते बनके और बेलिको सैसो । कीजै मान मदनमोहनसों बातकहैं हँसिनैसी । तुमजानहुं को लाल तुम्हारो तुमहिं उनहिं है जैसी । वाहीते तुम गर्व भरी हौ वै ठाढे तुम वैसी । यौवनजल बरषा कि नदी ज्यों चारदिनाको आवै । अन्त अवधि होतौं नाले जो कोटिक लहरि उठावै । बल्लभको बल्लभको मिलिबो तुमहिं कौन समुझावै । लै चलिभवन भाव तेहि भुजगहिको कहि गारि दिखावै । झुकिठेलो ह्यांते सरिहांती कौने सिखैपठाई । लै किन जाहि भवन अपने ह्यां लइन कौनसों आई । कांपत रिसन पीठिदै बैठी सहचरि और बुलाई । कछु सीरी कछु तातो बातन कान्हहिं देतिदुहाई । कबहुंक लैभरि दर्पण मोहन ह्वै रहे आगे ठाढो । पटअन्तर नहिं विम्ब निहारतइते मानमन गाढो । तलफतफिरैं धरैं नहिं धीरज विरहअनल को डाढो । इत नागरी उतहि वै नागर इन बातन को बाढो । बडी बडाई को प्रतिपालै बडो बडाईकीजै । ताको बडोमडो शरणागत बैठ बडे सों कीजै । तू वृषभान बडे की बेटी तेरे ज्याये जीजै । राखहु बैर लिये गहिमोसों बैरहि पीठि न दीजै । भामिनि और भुवंगिनिकारी इनके विषहि डरइये । राचेहूं विरचेसुखनाहीं भूलि न कबहुंपत्यइये । इनके वश मनपरे मनोहर बहुत यतन करिपइये । कामी होय काम आतुर तेहि कैसेकै समझइये । जेजे प्रेमछके मैं देखे तिनहि न चातुरताई । तेरेमान सयानसखीताहिं कैसेकैसमुझाई । परिहैकोधर्मचिनगि भाँवरि में बुझिहै नहीं बुझाई । हौं जु कहति तैं बाद बावरी लगाते आगि उठाई । बहुरेउ भये सहचरी मोहन ताकि आपनी घातें । लागे कान सखीके धोखे कहत कुञ्जकी बातें । सुचिकरि देखि लसनो उनको जबखाईहाहातें । आपपीर परपीर न जानतिभली यौवननातें । कहूं न भयो सुन्योनहिं देख्यो तनुतेप्राण अबोलैं । हौतकहांहै आल सहूं सिस सगा घूंघट पटखोलैं । पावति कहा मानमें प्यारी कहागवां

बनितौ हँसिबोलौं। काहिकहैं प्राणनाथतुम प्यारी फिरि होंहुं सनडोलैं।
ललना रही श्रीमि औषधिये धरि नेक न दया दयानी। प्रकट्यो जानि
मनमोहन तनु मानजान अभिरानी। हितकी कहै अनखलागति है
तनु मानु भयो रुखानी। मनकोचोप मानुकी जतुकर थोरेही सरभानी।
रहीमूंदि पलसों छबिमानिनि नेक न बदन उघारै। हरिहित वचन र-
साल कठिनउरसों पाहन बुन्दउतारै। धरे ग्रीवपट सन्मुख ठाढे नेक न
कोपनिवारै। जा आधीन देव सुरनर मुनिसो दीनता पुकारै। सखसावैं
सखा सेवा नजावैं कमलभृङ्गकी नाहीं। सखा पायँनतल हाथ पसारैं
छूवनपावैं छाहीं। सखा सखा लैंहिंबलाय वामकी लालचकरि लल-
चाहीं। कहे आनकी आन सौंहदै सखा सखा हाहा खाहीं। कबहुँक
निकट बैठि कुसुमावलि अपनेकर पहिरावैं। जोइ जोइ बात भावतीहि
भावै सोइ सोइ बात चलावैं। जितही जित रुख करै लड़ैती तितही
आपु न आवैं। नाचत माके डरनि भुवनि त्रियतेहि नेकुसमान नचावैं।
जिन नयनन देखत दुखभूले ते दुख नयन समोवैं। जो मुख सकल सु-
खनिको दाता सो मुख नेक न जोवैं। जेहिललाट त्रिभुवनको टीको
सो पाइँन ललसोवैं। राचहिँजाहि सनकअरु शंकर बिरचे ताहि बि-
गोवै। सतेमान भये ब्रजमोहन बोलत कछुक डराई। दीपकप्रेम क्रोध
मारुतभगा परसत निबुझिडराई। इतनागरी नवलनागर उतभिरेसुर-
तरणाधोऊ। नयन कटाक्षबाण असिवर नखवरधि निदाने दोऊ। टूटे
हार कंचुकी दरकी धाइनछुरे न कोऊ। प्रकट्यो तेजतरणि पदवीको
लाजलजाने दोऊ। यह डरवहत पितम्बर वोढे कहा कहौं चतुराई।
भुरयो काम प्रेमहूँभुरयाभुरईवैस भराई। पति अरु प्रिया प्रकट प्रति
बिम्बत ज्यों जलदर्पणझाई। अब जिनिकहे हियेमें कोहै बहुरि परै
कठिनाई। कर जोरे बिनती करैं मोहन कहौ-तो पद शिरनाऊं।
सेवकहौं निजुप्राणप्रियाको यहकहि पत्रलिखाऊं। तेरीसों वृषभान
नन्दिनी अनुदिन तुवगुणगाऊं। अबजिनि मानुकरै मोसोंहो यहैसौंज
करिपाऊं। हँसिकरि उठिप्यारी उरलागी भानमैन दुखपायो। तुम
मनदेहु आनिबनिता तौ मैं मन काहि लगायो। लै बलाय उरलाय
अङ्कभरि पछिलोदुख बिसरायो। श्यामसमानहै प्रेमकसौटी प्रेम है सान

सहायो। छूटेबन्द छुटी अलकावलि मरगज तनकेबागे। अञ्जन अधर भालजावक रँगपीक कपोलन पागे। बिनगुणमाल पीठिगड़ि कङ्कन उपटिउठे उरलागे। रसिकराधिकाके मुखकोसुख लूटेउ श्यामसभागे। नवलगोपाल नवेलीराधा नये नेहबश कीन्हो। प्राणानाथ सों प्राण पियारी प्राणपलटिसो लीन्हो। बिबिधि बिलास कलारसकीबिधि उभयअङ्ग परवीन्हो। अतिहित मानुमान तजिमानिनि मनमोहनसुख दीन्हो। राधाकृष्ण केलिकौतूहल श्रवणसुनै जेगावैं। तिनके सदास-मीप श्यामजू नितहि अनन्द बढ़ावैं। कबहुँ न जाहि जठर पातक जिनको यहलीला भावै। जीवन मुक्तिसूरसोजगमें अन्तपरमपद पावै ४६॥ रागगौंडमलार॥ राधिका बश्यकरि श्यामपाये। बिरहगयोदूरि त्रियहरष हरिकेभयो सहसमुख निगमजिन नेतिगाये। मानुतजि मा-निनी मैनकोबलहत्यो करततनुकन्तके त्रासभारी। कोकविद्यानिपुण श्याम श्यामाबिपुल कुञ्जगृह द्वारठाढ़े मुरारी। भक्तहितहेत अवतार लीलाकरत रहत प्रभुतहाँ निजुध्यान जाके। प्रकट प्रभुसूर ब्रजनारिके हितबन्धु देतमन कामफल संगताके॥

अथ गुरुमान लीला॥

सखिनसंग वृषभान किशोरी। चलीन्हान प्रातहि उठिगोरी। जाके घर निशिबसे कन्हाई। ताघर ताहि बुलावन आई। ठाढ़ीभई द्वारपर जाई। कढ़े तहांते कुंवरकन्हाई। औचक मिले न जानत कोऊ। रहे चकृत इतउततो दोऊ। फिरीसदनको तुरतहि प्यारी। न्हानजान की सुरत बिसारी। भई बिकल तन रिस अतिबाढ़ी। रहिगईं सखी नि-रखि सब ठाढ़ी। रहिगये ठाढ़ श्यामढंगसे। सकुचाने उरशोचपगेसे। जबदेखे हरि अतिमुरझाये। तबसखियन गहिभुज समुझाये। उलटि भईं सब हरिकी घाईं। देकेबांह प्रिया जहँ ल्याईं। देखिश्याम आये जहँ राधा बैठी मानदृढ़ाय अगाधा। रिसही के रस मगनकिशोरी। भई श्याममति देखतभोरी। ठाढ़े चकृत चित अकुलाहीं। मुखतेबचन कहे नहिंजाहीं। ब्याकुल लखिनँदलालको सखियन कियोबिचार। अब दोऊ जैसेमिलैं करियेसो उपचार। अतिरिसनारि अचेतको सुनि है कासों कहैं। इतये धरणि नहिंचेत परी रूठावन वानइन। प्यारी

निकटगईं सबआली। ठाढ़ेपौरिरहे बनमाली॥ कहति मानकीन्हो तैं प्यारी। न्हानजानते फिरीकहारी॥ तोहिँ लखतहीरी गिरिधारी। अतिहि डरे तन सुरति बिसारी॥ मुरछि परे धरणी अकुलाई। तरु तमाल जनुगयो झुराई॥ तैं ऐसे चितयो कछु उनको। नेकहु चैन रहेउ नहिँ तिनको॥ तेरेनयनअरी अनियारे। किधौंबाण खरसान सवांरे॥ भौंह कमान तान यों मारे। क्योंकरि राखे प्राणपियारे॥ घायल जिमि मुर्च्छित गिरिधारी। अमीवचन अबसींचु पियारी॥ बहुनायक वे तू नहिँ जानै। तिनसों कहाइतो दुखमानै॥ बाँहगहौ हरिको ढिगलावैं। अबवे निज अपराध क्षमावैं॥ गहति बाँह तुमहीं किन जाई। मोसों बाँह गहावन आई॥ कालिहहि सौंह मोहिँ उनदीन्ही। आजहि यहकरणी पुनिकीन्ही॥ दोहा॥ देखिचुकी उनके गुणन निज नैन सुखपाय। तिन्हैं मिलावति मोहिँ अबबांहगहावतिआय॥ सोरठा॥ सखीं न तिनसों भूल अबजौलौं जीवनजियौं। सहौं बिरहको शूल बकता कं

चौपाई

कबहूँ नैन न अञ्जन लाऊँ। मृगमद भूलि न अङ्ग चढ़ाऊँ॥ हरबलय पटनील न धारौं। नैननकारे घनन निहारौं॥ सुनौं न श्रवणन अलि पिकबानी। नीलजलज परसौं नहिँपानी॥ सुनतप्रियाकी बातसुहाई। हरषत ठाढ़ेपौरि कन्हाई॥ सखी कहति यों हठनहिँ लीजै। हरिसों मान न कीजै॥ तूहै नवल नवल गिरिधारी। यहयौबन चारी॥ सरासरा ज्यों करको जलछीजै। सुनरी याकोगर्ब न कीजै॥ नँदनन्दन मुखशशि सुखकारी। तू करिनयन चकोरि पियारी॥ हुतो प्रेमघन तौ यहभारी। सोअब कहतें कियोकहारी॥ कहति हतीरूसौं नहिँ कबहीं। सोअब रूसतहै जबतबहीं॥ सुनिहैसुघर नारिजो कोई। करिहैहँसीप्रेमकोसोई॥ दोहा॥ मानकियो जो भावतेसोनभावतोहोय। उरतेरिसवत प्रेमकत अन्तभाव तौ सोय॥ सोरठा॥ लाखकहौ किनकोय पियसनेहजोगोयहै। चतुरनारिहैसोय लियेप्रेमपरचौ किनहुँ॥ चौपाई॥ तुमवैएकनदोयपियारी। जलतेतरँगहोयनहिँन्यारी॥ रसरूसनो ओस कण जैसो। सदा न रहै चाहिये तैसो॥ तजि अभिमान मिलहि पिय प्यारी। मानु राधिका कही हमारी॥ चुप न रहति कह करति मना-

वन। तुम आईहो बात बनावन॥ बहुत सहीघर आईयातें। सुरतिदिवावति पिछली बातें॥ मोसोंबात कहतिहो काकी। जाहु घरन अब कछुहै बाकी॥ कोउनकी नहिँबात चलावत। हैंवे अब तुमहींको भावत॥ तुम पुनीत अरुवे अतिपावन। आईहो सबमोहिँ मनावन॥ यह कहि रही रोष भरिभारी। गईं सखीये जहाँ बिहारी॥ कहेउ जाय हरिसों हरुवाई। आजचतुरई कहाँ गवाई॥ बिनतिन जांघन चलहि ललारे। कैसे चहत कियोसुख प्यारे॥ होमनमोहन तुम बहुनायक। नागर नवल सकल गुणलायक॥ तबबोले हरि दोउ करजोरी। तेरी सों वृषभानकिशोरी॥ तू ही हित चित जीवन मोको। सदाकरत आराधन तोको॥ तुमम तिलक तुहीआभूषण। पोषण तेरेइबचन पियूषण॥ तेरोइ गुणमैं निशिदिन गाऊँ। अब तजमान हृदय सुखपाऊं॥ करजोरे बिनतीकरि भाख्यो। कहत शीश चरणन पराख्यो॥ यह सुनि कछुप्यारी मुसुकानी। तबबोली उठिसखी सयानी॥ सुनहु श्याम तुमहो रसनागर। रूपशील गुणप्रीति उजागर॥ तुमते प्रियानेकनहिँ न्यारी। एक प्राणद्वै देहतुम्हारी॥ प्यारी में तुम तुममें प्यारी। जैसे दर्पणछाँह बिहारी॥ रसमेंपरे बिरस जहँआई। होयपरीति तहँ अतिकठिनाई॥ अबकेहसब देति मनाई। परशोप्यारी चरण कन्हाई॥ अब रुठायहो जोगिरिधारी। रामराम तौ बहुरि हमारी॥ दोहा॥ जबपरशे प्यारीचरण परमप्रीति नँदनन्द। छुट्योमानहरषीप्रिया मिट्योबिरह दुखदन्द॥ सोरठा॥ उरआनन्द बढ़ाय प्रेम कसौटीकसि पियहि। अवगुण मनबिसराय मिली प्रियाउठिश्यामसों॥ चैापाई॥ हरषिमिलेदोउ प्रीतम प्यारी। भईंसखी सबनिरखि सुखारी॥ तबदोउ उबटि सखिन अन्हवाये। रुचिर शृंगारशृंगार बनाये॥ मधुरमिष्ट भोजन मनभाये। दोउन एकैथार जिमाये॥ दियेपान अचवन करवाये। सुमन सुगन्ध मालपहिराये॥ लेबीरा अपनेकरप्यारी। दीन्हो बिहँसि बदनगिरिधारी॥ तबहिँ सुफल हरिजीवन जान्यो। परमहरष उरअन्तर आन्यो॥ मिलि बैठेदोउ प्रीतम प्यारी। तब सखियन आरती उतारी॥ अति आनन्द भरे दोउ राजें। अरश परश निरखति छबि छाजें॥ पाये बश करि कुञ्जबिहारी। बिहँसि कहेउ तब पियसों प्यारी॥ सुनहु श्यामबरण

ऋतु आई। रचहु हिँडोरो शुभ सुखदाई॥ हेमनपिय यहसाधहमारे। सबमिलि झूलहिँसंग तुम्हारे॥ सुनितिय बचन श्यामसुखपायो। ऐसे कहि हरिमान छुड़ायो॥ छन्द ॥ तियमानहरि ऐसे छुड़ायो भक्तहित लीलाकरी। निगम नेति अपार गुणा सुखसिन्धु नटनागर हरी॥ यह मान चरित पवित्र हरि को प्रेम सहित जु गावहीं। करहिँ आदर मानतिनको सन्तजन सुख पावहीं॥ दोहा ॥ राधारसिक गोपाल को कौतूहल रसकेलि। ब्रजवासी प्रभुजनन को सुखद कामतरु बेलि॥ सोरठा ॥ सुफल जन्म है तास जे अनुदिन गावत सुनत। तिनको सदा हुलास सूरदास प्रभुकी कृपा॥

इतिश्रीकृष्णानन्दव्यासदेव रागसागरोद्भवसूरसागरराग कल्पद्रुमरासलीला और मानलीलासम्पूर्णम्॥

अथ सूरसागर रागसंग्रह कृत॥

राग सागरोद्भव रागकल्पद्रुम॥

अपनो दीनत्व प्रभुजीको माहात्म्य तथा विनयपत्रिका प्रारम्भः॥

राग बिलावल ॥ करणी करुणासिन्धुकी कहत न बनिआवै। कपट तरे परसेवकी जननी गतिपावै। दुखितगजेन्द्रहि जानिकै आपुनउठि धावै। कलिमें नाम प्रकटनीच ताकी छानि छवावै। उग्रसेनकी दीनताप्रभुके जियभावै। कन्समारि राजाकियो आपुनशिरनावै। वरुणा पाशते ब्रजपतिहि क्षणमें छिटकावै। बहुत दोष मो सूरकहँताते गहरु लगावै१माधवबेभुज कहाँदुराये। जिन्हींभुजन गोवर्द्धन धारेउ सुरपति गर्ब नशाये। जिन्हीं भुजन काली को नाथ्यो कमलनाल लै आये। जिन्हीं भुजन प्रह्लाद उबारेउ हिरणयाक्ष को धाये॥ जिन्हीं भुजनगज दन्त उपारेउ मथुरा कंस ढहाये। जिन्हीं भुजन दांवरी बँधाये यमला मुक्ति पठाये। जिनहीं भुजनअघासुर मारेउ गोसुतगाय मिलाये। तिहि भुजकी बलिजाय सूरजन तिनको तोरि दिखाये २ अपने जाने मैं बहुत करी। कौन भांति हरि कृपा तुम्हारी सु कछु न स्वामी समुझि परी। दूरिगयो दर्शनके कारण तुव महिमा बिभुता बिसरी। मनसा बाचाकर्म अगोचर सो मूरति नहिं नयनधरी। गुणबिन गुणी स्वरूप

रूप जिन नाम बिना श्री श्याम हरी। कृपासिन्धु अपराध अपरमित क्षमहु सूरते सब बिगरी ३ चकईरी चलि चरण सरोवर जहां न प्रेम वियोग। जहँ भ्रम निशा होतिनहिं कबहूं वे सायरसुख योग। सनक शेष आदिक शिव मुनिजन नख रबि प्रभा प्रकास। प्रफुलित कमल निमेष न शशि डरु गुंजत निगम सुवास। जिहि सर सुभग मुक्ति मुक्ता फल सुकृत बिमल जल पीजै। सोइ सर छांड़ि कुबुद्धि विहंगन यहां कहां रहि कीजै। तहँ श्री सहस सहितनित क्रीड़ा शोभित सूरजदास। अब न सुहाय विषय रस छीलर वा समुद्रकी आस ४ तुम्हरो नाम तजि प्रभु जगदीश सुतो कहौ मेरे और कहा बलु। बुधि विवेक अनुमान आपने सुधैं करहुसब सुकृतिनको फलु। वेदपुराणस्मृतिसन्तनको यह आधारमीनको ज्यों जलु। अष्टसिद्धि नवनिद्धि सूरके सम्पतिबिनु सुख कछू कहाललु ५ ॥ रागधनाश्री ॥ सो कहा जुमैं न कियोजोपै तुम सोइ सोइ चितधरिहौ। पतितपावन बिरद प्रकट कौनभांति करिहौ। जबते जग जन्म पायो जीव नाम कहायो। तबते सबऔगुण करि गुणना कहिआयो। सुकृती शुचि सेवकजन काहेन जियभावै। प्रभु की प्रभुताई यहैदीन शरणपावै। स्वादलम्पटसन्तनिन्दक कपटी गुरुद्रोही। जेते कछु अपराध कहियत लागै सबमोही। श्यामसुन्दर कमलनयन सकलअन्तर्यामी। बिनती कहा करै सूर कूर कुटिल कामी ६ पतित पावनहरि नाम तुम्हारो कौनेहु धरेउ। हौंतौ दीनदुखित संशयरत हारे रटत परेउ। जीव यातना योनि रुधिर जल जब जब जठर जरेउ। तबहूंते तुम निकट तज्यो नहिं शत अपराध भरेउ। गज गणिका नृग गीध व्याधते मैं घट कहा करेउ। विद्यमान सम शूल सहत हैं काल कुलिश न डरेउ। एते कोटि कुटिल करुणामय तिनते कहा सरेउ। ना जानौं यह सूर महाशठ कौन दोष बिसरेउ ७ ॥ रागसोरठ ॥ और न जानै जनकी पीर। जब जब दीन दुखित भये तब तब कृपा करी बलबीर। गज बलहीन बिलोकि बहुत दिशि तब सुख शरण परो। करुणासिंधु दयाल दरश दै सब सन्ताप हरो। मागध मथेहते नृप बन्धन मृतक बिप्रसुत दीन्हो। गोपीगाय गोप गोसुत लगि सातद्योस गिरि लीन्हो। श्रीनृसिंह वपुधारि असुरहति भक्त बचन प्रतिपारो। सुमि-

रत नाम द्रुपदतनया कहँ पट समूह तन धारो। मुनि मद मेटि दासव्रत राख्यो अम्बरीष हितकारी। लाक्षागृह बनबसत सैन्यते पांडव बिपतिनिवारी। बरुणपाश व्रजपति मुकराये दावानल दुख टारो। गृह अपने बसुदेवदेवकी कंसमहाखल मारो। सोइश्रीपति युगयुग सुमिरण बश वेद विशद यश गावै। अशरण सूर शरण याचतहै कोऊ सुरति करावै ८॥ रागधनाश्री ॥ माधव गज ग्राहते छुड़ायो। निगमनहूं मनबचन अगोचर प्रकटस्वरूप दिखायो। शिवबिरञ्चि सुरपति सब देखत बहुत दिनन दुखपायो। बिन बदले उपकार कृपण को काहू करत न आयो। चितवतही चितमें चिन्तामणि चक्रलिये करधायो। अति करुणा कातर करुणानिधि गरुड़ो जिहि बिसरायो। सुनियत यश युगयुग जन कारण कबहूं गहरुनलायो। ना जानिये सूरयहि औसर कौन दोष बिसरायो ९ जैसे तुम और बहुत खलतारे। चरण प्रताप भजनमहिमाको को कहिसकै तुम्हारे। दुखित गयन्ददुष्टमति गणिका नृगहि कूपते उधारे। बिप्र बजाय चल्यो सुतके हित काटि महा अघ भारे। गीध व्याध गौतमतिय मृगकपि यहि धों कह व्रत पारे। कंस केशिकुबलय बलमुष्टिक सब सुखधाम सिधारे। स्तनबिष बांटि लगायचली ब्रज बकी कवन गति पाई। रजकप्रलम्ब द्रोण दुश्शासनभक्त भजन फलदाई। नृप शिशुपाल बिषय रस बिह्वल सर अवसर नहिं जान्यो। अघ बक वृषभ तृणावर्त्त धेनुक गुणनहिं दोष न मान्यो। पांडुबधू पटहीन सभामहँ कोटिन बसनपुजाये। बिपतिकाल सुमिरण तेहि अवसर जहां तहां उठि धाये। गोपि गाय गोसुत जल त्रासित गोवर्द्धन कर धारेउ। सन्ततदीन हीन अपराधी काहे सूर बिसारेउ१० काहूके कुल नाहिं बिचारत। अविगति की गति कहीं कौन सों पतित सबन को तारत। कौन जाति की पांति बिदुरकी जिनके प्रभु ब्योहारत। भोजन करत तुष्टघर उनके राज मान मद टारत। ओछे जन्म कर्मके ओछे ओछेही बोलावत। अनत सहाय सूरके प्रभुकी भक्तहेत पुनि आवत ११॥ रागसारंग ॥ गोबिंद प्रीति सबनकी मानत। जो जेहिभाय करै जनसेवा अन्तरगत की जानत। बेर चाखि कटु तजि लै मीठे भिलड़ी दीन्हे जाय। जूठन की कछु शङ्क न कीन्ही भक्ष किये

सद भाय। सन्तत भक्त मीत हितकारी श्याम बिदुरके आये। प्रेमहिं बिकल बिदुरअर्पितप्रभु कदली छिलटाखाये। कौरव काजचले ऋषि आपुन शाकके पत्र अघाये। सूरदास करुणानिधान प्रभु युगयुग भक्त बढ़ाये १२॥ रागधनाश्री ॥ तेऊ चाहतकृपा तुम्हारी। जिहिकेबश अनमिष अनेक गण अनुचर आज्ञाकारी। प्रवहतपवन भ्रमत दिनकर दिन फणपति शिर न डुलावै। दाहक गुण तजिसकत न पावक सिंधु न सलिल बढ़ावै। शिवबिरंचि सुरपति समेत सबसेवत पद प्रभु जाने। जोकछुकहत करनसोइकीजतु करियतु अति अकुलाने। तुमअनादि अविगतअनन्त गुणपूरणपरमानन्द। सूरदासप्रभु सकल असंयम सघवा चरितनिकन्द १३ दयानिधि तेरीगतिलखिन परै। धर्मअधर्म अधर्मधर्मकरि अकरनकरन करै। जय अरु बिजय पाप कह कीन्हो ब्राह्मण शापदिवायो। असुर योनिदीन्हीताऊपर धर्मउछेद करायो। पितावचन खंडते पापी सो प्रह्लादेकीन्हो। तिनकेहेत खंभतेप्रकटे नरहरिरूप जुलीन्हो। द्विजकुल पतितअजामिलविषयी गणिका प्रीतिबढ़ाई। सुतहितनाम नरायण लीन्हों तिहि ध्रुवपदवीपाई। यज्ञ करत बैरोचनको सुतवेद बिहितबिधिकर्म। त्यहि हठि बांधि पतालहिदीन्हो कौन कृपानिधि धर्म। पतिव्रताजालन्धरयुवती प्रकटसत्यतेटारी। अधमपुंश्चलीदुष्टग्राम की सुवा पढ़ावत तारी। दानी धर्म भानुसुत सुनियत तुम ते विमुख कहावैं। वेद बिरुद्ध सकल पाण्डवसुत सो तुम्हरे जिय भावैं। मुक्ति हेतु योगी बहुश्रम करैं असुर बिरोधे पावै। अकथितकथित तुम्हारी महिमा सूरदास कहगावै १४ ॥ रागकेदारो ॥ है हरि नाम को आधार। और यहकलिकाल नाहिंन रहेउ बिधिव्योहार। नारदादि शुकादि शंकर कियो यहै बिचार। सकल श्रुति दधि मथत पायो इतनो यह घृतसार। दशहुंदिशि गुणकर्म्म रोक्यो मीनको ज्यों जार। सूरहरिके भजनकरते मिटिगयो भवभार १५ ॥ रागदेवगन्धार ॥ मेरेजिय ऐसी आयबनी। छांड़ि गोपाल औरै जो सुमिरौं तौलाजैजननी। बिषको मेरु कहालै कीजै अमृत एककनी। मन क्रम बचन और नहिं चितवौं जब कब श्याम धनी। कह लै करौं कांच को संग्रह छांड़ि अमोलमनी सूरदास भगवन्त भजन बिनु तजीजाति अपनी १६ ॥ रागसारंग ॥ जित

जिनहीं के सङ्ग उरगायो। तिहि तुमपै गोबिन्दगुसाईं सबनिअपनपो पायो। अजामील मुख मित्र हमारो सो मैं चलत बुझायो। कहांक-हांलौंकहैांकृपणाकी तिनहूं श्रवण सुनायो। व्याधगीधगणिकाजिहि कागरहोतिहिंचिठि न चढायो। मरियतलाज पांचपतितनमेंसूरसमो बिसरायो१७॥ रागसारंग। चर्चरी॥ नाथशारङ्गधर कृपाकरि दीनपरडरतु भवत्रासते राखिलीजै। नाहिंनजप नाहिंन तप नाहिंन सुमिरण भजन शरण आये की लाज कीजै। जीव जलथल जितेभेष धरधरतिते र-चित दुर्गम अधम अटलभारी। मुशल मुद्गर हनत त्रिविध कामें गनत मोहिंदंडदेतयमदूत भारी। वृषभधेनुक प्रलम्बकेशि चाणूर मल्लपूतना रजकसे दुष्टतारे। अजामिल गजगणिका ते कर्म घटिकिये जु अवसूर चितते बिसारे १८॥ रागधनाश्री॥ जो जग और बियोहोंपाऊं। तो यह बिनती बारबार की हैं कत तुमहिं सुनाऊं। शिवबिरंचि सुर असुर नागमुनि सुतोयांचि जन आयो। भल्यो धम्यो तृषातुर मृगलों का-हूश्रम न गवांयो। अपथसकल चलि चाहिचहूंदिशि भ्रमउघटत मति मंद। थकित होत रथ चक्रहीन ज्यों निरखि कर्म गुणफन्द। पौरुष रहित अजित इन्द्रिन बश ज्यों गजपंक परेउ। बिषयासक्तनटीको कपि ज्यों जोइजोइ कहेउसुकरेउ। अपनेहीं अभिमान दोषतेरविहि उलूक न मानत। अतिशयसुकृत रहित अघ व्याकुल तृषाश्रमित रज छानत। सुनि त्रयतापहरण करुणामय संततदीनदयाल। सूर कुटिल राखो शरणाई यहि व्याकुल कलिकाल १९ कबहूं नाहिंन गहरु कियो। सदा सुभाव सुलभ सुमिरण बश भक्तन अभय दियो। गाय गोप गोपीजनकारण गिरिकर कमललियो। अघ अरिष्टकेशी का-लीमथि दावाअनलपियो। कंसबंश बधि जरासन्ध हति गुरुसुतआनि दियो। करयतसभा द्रुपदतनया को अम्बरआनि छियो। सूरश्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो। काके शरण जाउँ यदुनन्दन नाहिंनऔर बियो २०॥ राग धनाश्री॥ हौंहरि सब पतितन को नायक। कोकरिसकै बराबरि मेरी एतेमनको लायक। जे तुम अजामील सों कीन्ही सो पाती लिखिपाऊं। होय विश्वासभलो जिय अपने औरौ पतित बुलाऊं। सिमिटि जहांतहँते सबकोऊ आयजुरैं यकठौर। अब

के इतने आनि मिलाऊं बेरदूसरी ओर । होड़ाहोड़ी मन हुलासकरि करें पापभरिपेट । सबहि मिलेकरि पायनपारौं यहैहमारीभेंट । ऐसी कितिक बनाउँ प्राणपति सुमिरोंहै भयो आड़ो । अबकीबेर निबेरि लेहु प्रभु सूरपतित को ताड़ो २१ ॥ राग देवगन्धार ॥ जोपै यहै बिचार परी । तौकतकलि कल्मष टूटन को मेरिये देहधरी । जो नाहीं स्वसमानी कीजतु जगत माहिँ कतकीन्हो । काम क्रोध मद लोभ मोहके बाँधि हाथकरि दीन्हो । मनसा और मानसी सेवा क्यों अगाध करि जानो । होहुप्रकट करुणामय केशव बहु अपराध न मानो । काको गृहदारा सुत सम्पति जासों कीजे हेतु । सूरदासप्रभु दिनदिन मरिबो यमको लेखो देतु २२ ॥ राग कान्हरो ॥ तुम्हरीकृपा गोबिन्द गुसाईं हैं अपनेअज्ञान न जानत । उपजत दोष नाहिँसुनि समुझत रबिकेकर नहि उलूक न मानत । सबसुखनिधि हरिनाम महामणि सोपायो नाहिंन पहिँचानत । परमकुबुद्धि तुच्छरस लोभी कौड़ीलगि मगमग रजछानत । शिवकोधन सन्तनको सर्बस महिमा वेदपुराण बखानत । इते मानइन सूरमहाशठ सोइनग बदलि विषय घर आनत २३ जोपैतुमहीं बिरद बिसारो । तौ कहौ कहाँ जाय करुणामय कृपण कर्मको डारो । दीनदयाल पतितपावनयश वेदबखानत चारो । सुनियतकथा पुरातन दिशि दिशि व्याध अजामिल तारो । रागद्वेष बिधिअबिधि अशुचिशुचि जिहिप्रभु जहाँसम्हारो । कियो न कबहुँ बिलम्बकृपानिधि सादर शोचनिवारो । इहिलगु नामरूप गुणगण सबअज आपुन तनधारो । सूरदासस्वामी यहमनअघु करत करत अवहारो २४ ॥ राग कल्याण ॥ सबनि सनेहो छाँड़ि दियो । हा यदुनाथ जरा तनग्रास्यो प्रतिभो उतरिगयो । सोइ तिथिबार नक्षत्र लग्नसोइ करणयोग सोइ ठाटठयो । अबवेआंक फेरिनहिँ बाँचत गतस्वारथ समयो । बरसद्योस में होत पुरानो फिरिफिरि सबकोउ लिखतनयो । डरोरहत निर्मल देशज्यों अतियहि तापुतयो । सोइधनधाम नामसोकुल सोइ सोइयह बर्णजाहि सब बिढ़यो । अबहीं सबको बदन स्वानलों चितवत दूरि भयो । दारासुत हितचित सज्जनसब काहुन शोचलयो । संवत दोष बिचारि सूर थकि जे हरिशरण गयो २५ जैसेहिराखौ तैसेहि रहौं ।

जानत हौ दुख सुख सब जनको मुखकरि कहाकहौं। कबहुँक भोजन देत कृपाकरि कबहुँक भूख सहौं। कबहुँक चढ़ौं तुरङ्ग महागज कबहुँक भार बहौं। कमल नयन घनश्याम मनोहर अनुचर भयो रहौं। सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि तुम्हरे चरण गहौं २६ आजु हौं एकको देकर टरिहौं। मोहिँ कहा डरपावत हौ प्रभु अपने पूरेपर लरिहौं। हौं तौ पतित सात पीरीको जो जिय ऐसी धरि हौं। हौंतो फिर वेसोई ह्वै हौं तुमहिं बिरद बिनु करिहौं। अब तौ तुम परतीति नगाईक्योंमनमानै हियरा। सूरदास सांची तब थपिहौंजो हँसिदेहौ बीरा२७मैं अघसागर पैरि न लीन्हो। उनपतितनकी देखादेखी पाछेशोच न कीन्हो। अजामील गणिकाहि आदि दै पैरि पारि गहि पीलो। मंगलगाय बीचही छांडेउ निपटबि नाथ अकेलो। सो देखत सब हँसतपरस्पर तारी देदै भीटि। कीनी कथा पाछिलनुकी सी गुरु दिखायपुनिईंटि। भवनगँभीरनीरहीसूझत क्योंकरिउतरो जात। नहीं अधार नाम अवलम्बनु तिन हित डुबकी खात। तुम कृपाल करुणामय केशव अबहीं बूड़त मांह। कहत सूर चितवौ करिहौ कै तुमदौरिपकरिहौ बांह२८तुम्हारे आगेहौंनच्यो। सुनियेदीनदयाल देवमणि बहुबड़ रूप रच्यो। कियो स्वाँग जलहू थलहू महँ सके तौ न बच्यो। शोधिसबै गुणगूढ़दिखायेअन्तरहो जुसच्यो। रीझतनहीं गोविन्द गुसाईं क्यों कुब्जाय यच्यो। इतनौ तौ कहौ सूरपूरो दै काहे मरत पच्यो २९॥ रागबिलावल॥ अब कै माधव मोहिं उधारि। मगन हौंतु भवसिंधुमें कृपासिंधुमुरारि। नीरअतिगम्भीर मायामोह लहरितरंग। लरेजात अगाधको बहु गहेग्राहअनङ्ग। मीनइन्द्रीअतिहि काटत मोट अघशिरभार। भौंये न पाई जातजितकित मोहअरुझे सिवार। क्रोध दम्भ भयान तृष्णा पवन अतिझकझोर। नाहिंचितवन देत सुतत्रिय नाम नौका ओर। परेउबीच बिहालबिह्वल सुनहु करुणामूल। प्रयाम भुज गहि काढ़ि डारहु सूर ब्रजजन कूल ३०॥ रागधनाश्री॥ अब हौं नाच्यो बहुत गोपाल। काम क्रोध को पहिरि चोलनाकंठ विषयकी माल। महा मोहके नूपुर बाजत निन्दा शब्द रसाल। भ्रम भोयो मन भयो पखावज उरप असंगत चाल। तृष्णानाद करति घटभीतरनाना

बिधिके ताल। मायाको कटि फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियेभाल। कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहिं काल। सूरदास की सबैअबिद्या दूरिकरहु नँदलाल ३१॥ रागसारंग ॥ माधव मोहिंकाहेकी लाज। जन्म जन्म ह्वैरही मैं ऐसो अभिमानी बैकाज। कोटिक कर्म किये करुणामय यादेहीकेसाज। निशिबासर बिषयारस रुचिते कबहुं न आयेबाज। बहुत बार जलथलजग जायेभ्रमि आयो दिन देव। अवगुण की कछु सकुच न शंका परिआई यह टेव। अब अनखाय कहौ घर अपने राखौं बांधि बिचारि। सूर स्वानके पारनहारे आवतहैं दिनगारि ३२॥ रागकेदारो ॥ कृपा अबकीजिये बलिजाउँ। नाहिंन मेरे अनतकहूं अबपद अम्बुज बिनठाउँ। हौं अशुची अकृती अपराधी सन्मुख होत लजाउँ। तुमकृपाल करुणानिधि केशवअधम उधारण नाउँ। काके द्वार जाय हौं ठाढ़ो देखत काहि सुहाउँ। अशरण शरण बिरद ब्यापक तुव हौं कुटिल काम सुभाउँ। कलुषी परममलीनदुष्टहौं सेंत्यउतौ न बिकाउँ। सूरपतित पावन पद अम्बुज पारश क्यों परसाउँ ३३॥ रागकान्हरो ॥ ऐसी कब करिहौ गोपाल। मनसानाथ मनोरथ दाता हो प्रभु दीनदयाल। चितचरणन नीरन्तर अनुरत रसना चरित रसाल। लोचन सजल प्रेमपुलकित तन करकंजलि दलमाल। ऐसीरहत लिखत क्षण क्षण यम अपने भायोभाल। सूर सुयश रागी न डरत मन सुनि यातना कराल ३४ ॥ रागकेदारो ॥ थोरेजीवन भयोतन भारो। कियो न संत समागमकबहूं लयो न नाम तुम्हारो। अति उनमत्तनिरंकुश मैगलनिशि दिनरहेउ अशोच। काम क्रोध मदलोभ मोह बशरहूं सदन असपोच। महा मोहअज्ञान तिमिर में मगन भयो सुख जानि। तैलकवृष यों भ्रम्यो भ्रमहिं भ्रम भज्यो न शारंगपानि। गीध्यो ढीठ हेम तस्कर ज्यों अति आतुर मति मन्द। लुब्ध्यो स्वादुलीन आमिषज्यों अवलौं क्योंनहिं फन्द। ज्वाला प्रीति प्रकट सम्मुखह्वै हठि पतंग बपु जारो। बिषयाशक्त अमितअघ व्याकुलभे हम कछु न सम्हारो। ज्यों कपि शीत हुताशनगुंजा सिमिटि होत लै लीन। त्यों शठ वृथातजै नहिं आँश हठ रहेउ बिषय आधीन। सेंबर फल सुरङ्ग शुक निरखत मुदित भयो खगभूप। परसत चोंच

मूलउधवत मुखतृण छादित पशु कूप। औरकहांलगि कहौं कृपानिधि या तनके कृतकाज। सूर पतित तुम पतित उधारन गहो बिरदकी लाज ३५ ॥ रागधनाश्री ॥ प्रभु मेरे औगुण न बिचारो। धरि जियलाज शरण आयेकी रबिसुत त्रास निवारो। जो गिरिपति मसिघोरि उदधिमें लै सुरतरु निजहाथ। ममकृत दोष लिखैबसुधा भरि तऊनहीं मिति नाथ। कपटी कुटिल कुचील कुदर्शन अपराधी मतिहीन। नाहिंन और कियो कोउ ऐसो जाहि भजौं हौं दीन। योग यज्ञ तपब्रत नहिं कीन्हो वेद बिमल नहिं भाख्यो। अति रसलुब्ध स्वान जूंठनि ज्यों अनत नहींमन राख्यो। जिहिजिहि योनि फिरौं शंकटमें तिहि तिहि यहै कमायो। काम क्रोध मद मोहग्रसितह्वै बिषयपरम बिषखायो। तुम अनन्तअनादि परिपूरण अघमोचन सुखराशि। भजन प्रताप नाहिंनेजान्यो बँध्योकालकी फांशि। तुम कृतज्ञ सबही बिधि समरथ अशरण शरण मुरारि। कृपानिधान सूर बूडतहै लीजे भुजा पसारि ३६ बिनती जन कासों करै गोसाईं। तुम बिन दीन दयाल देवमणि सब फीकी ठकुराई। अपनेसे कर चरण नैन मुख अपनीसी बुधिवाईं। काल कर्म बश फिरत सकलप्रभु ते हमरीसी नाईं। पराधीन पर बदन निहारत मानत मोह बडाई। हँसेहँसै बिलखै दुखबिन दुख ज्योंजल दर्पणझाईं। लियो दियो चाहै तौ कोउ प्रभु सुनि समरथ यदुराई। देव सकल व्यापार परस्पर ज्यों पशु दूध चराई। तुम बिन और कोऊ न कृपानिधिपावै पीर पराई। सूरदासके त्रासहरण को कृष्णनाथ प्रभुताई ३७ ॥ रागनट ॥ हैं प्रभु मोहूंते अति पापी। घातक कुटिल चबाई कपटीमोह क्रोध संतापी। लम्पटधूतपूत दमरीको बिषम जाप नित जापी। काम बिबश कामिनिहीं के रस हठकरि मनसा थापी। भक्षअभक्ष अपय पीवन को लोभलालसा धापी। मन क्रम बचन दुसहसबहिनसों कटुकबचन आलापी। जेते अधम उधारे प्रभुतुम मैं तिहिकी गति मापी। सागर सूर बिकार जलभरो बधिक अजामिल बापी ३८ बहुरि की कृपा कहा कृपाल। बिद्यमान जन दुखित जगतमें तुम प्रभुदीनदयाल। जीवत यांचत कन निर्धन करदर दरदर बिहाल। तनछूटेते धर्मनहीं कछुजोदीजैमणिलाल। कहदाता

जुद्दवै नहिंदर्शन देखिदुखित कलिकाल । सूरश्यामको कहानिहोरो चलतवेद की चाल ३९ मेरेहृदय नाहिंन आवत होगोपाल होइतनो जानत । कपटीकपिरा कुचीलकुदर्शन दिनउठि विषयबासना बानत । कदली कराठ कुसाधु असाधुहि केहरिके सँग धेनु बयाने । यहविप- रीति जानि तुम जनकी अन्तर दै बिच रह्यो लुकाने । जो राजासुत होयभिखारी लाजपरेते जायबिकाने । सूरदासप्रभु अपनेजनको कृपा करहु जो लेहुनिदाने ४० कहावत ऐसे त्यागीदानि । चारिपदारथ दये सुदामहिं अरु गुरुको सुतआनि । रावणके दशमस्तक छेदे कर गहि शारँगपानि । बीभीषण को लंकादीन्ही पूरबली पहिंचा- नि । मित्रसुदामा कियो अयाचक प्रीति पुरातनजानि । सूरदाससों कहानिठुरई नयननहूं ते हानि४१ ॥ राग धनाश्री ॥ नाथजू अबके मोहिं उबारो । पतितनमें बिख्यात पतितहौं पावननामतुम्हारो । बड़ेपतित नाहिंन पासगहूं अजामील को हौं जु बिचारो । भाजैनरक नाउँमेरो सुनि यमबांदियो हठतारो । सुद्रपतित तुम तरे रमापति अब न करो जियगारो । सूरदास सांचो तुबमाने जो होय ममनिस्तारो ४२ बा- दिहि जनमगयो सिराय । नाहरि भजन न गुरुकीसेवा मधुबनबसो न जाय । श्रीभागवत श्रवण नहिंकीन्हो कबहूं रुचि उपजाय । सा- दरह्वै हरिके भक्तनके कबहूं न धोयेपाय । रिझयेनहिं कबहूं गिरि- वरधर बिमलबिमलयशगाय । प्रेम सहित पगबांधि घूंघुरू सको न अङ्ग नचाय । अबकी बार मनुष्य देह धरि कियो न कछू उपाय । भवसागर पद अम्बुज नौका सूरैलेहु चढाय ४३ ॥ राग सारंग ॥ छांड़ि मन हरिबिमुखन को संग । कहाभयो पयपान कराये बिषनहिंतजत भुवङ्ग । जाकेसंग कुबुद्धीउपजै परत भजनमेंभङ्ग । काम क्रोध मदलोभ मोहमें निशिदिन रहत उमङ्ग । कागहि कहा कपूरखवाये स्वान न्ह- वाये गङ्ग । खरको कहा अरगजा लेपन मरकट भूषण अङ्ग । पाहन पतित बाण नहिं भेदत रीतो करतनिषंग । सूरदास खल कारी का- मरि चढ़त न दूजो रंग ४४ ॥ राग बिलावल ॥ तेरोतब तिहिंदिनके हितू हरि बिन सुधिकरि कृपण तिहि चितआनि । जब अतिदुखसहि क- ठिन कासगहि राख्यो हो जठरल सो नितसानि । जहां न का

रामदुःसह दारुण तनसकलविधि बियम खलखानि। समुझिबों जिय माहिं को न सकत नहिं बुधिबल कुलतिहिं जायो काकी कानि। वैसी आपदाते राख्यो तोख्योपोख्यो जियदयो मुख नासिका नयन पद पानि। सुनि कृतघ्न निशिदिन को सखा आपु अब जो बिसारी करी वे पहिंचानि। अजहुं संगरहत प्रथम लाजगहतु सन्ततशुभचाहतु प्रियजन जानि। सूरसुहृदसाग ईश्वर अन्तर्यामी सुनि शठ शठ झूठो हठ कपट न ठानि ४५॥ राग नट ॥ जौलों सत्यस्वरूप नसूझत। तौलों मन मणिकराठ बिसारे फिरत सकल बनबूझत। अपनोहींमुख मलिन मन्दमति देखत दर्पण मांह। ता कालिमा मेटिबे कारण पचत पखारतछांह। तेलतूल पावकपट धरिधरि बनहिंन बिना प्रकाशत। कहतबनाय दीपकीबातें कैसेहो तमनाशत। सूरदास जब यह मतिआई वे दिनगये अलेखे। कहजाने दिनकरकी महिमा अन्धनयन बिनुदेखे४६ ॥ राग केदारो ॥ दिनदशलेहु गोबिंद गाय। मोहमाया लोभलागो कालघेरे आय। नीरमेंजस उठत बुदबुद देखलेबिरलाय। दिखतको क्षितिजन्म झूठो काक श्वान न खाय। कर्मकागद बांचि देखो जो न मन पतिआय। अखिल लोकहि भटकिआयो लिख्यो मेटि न जाय। स्फुरति के दशद्वारछूंवे वृद्धहि जरा आय। सूर हरि को भजनकीजै जनम पातकजाय ४७॥ राग धनाश्री ॥ रे मन रामनाम सुमिरण बिनु जनमबादिखोयो। रञ्चएकके सुखकारण अन्तकाल बिगोयो। साधुसंग भगति बिना तनु अकारथ जाय। जुआरी ज्यों हाथझारि ज्यों चले छिटकाय। सुतदारा देहगेह सम्पति सुखदाई। इनमें कछुनाहिं तेरोकाल अवधिआई। काम क्रोध लोभ मोह तृष्णा मनमोहेउ। गोबिंद गुणचित बिसारि कौन नींदसोयउ। सूर कहैं सचु। रामनाम निजकरणी औरसकलबन्ध४८॥

रागकेदारो ॥ रे मन गोपाल सों करु हेतु। नामकी दृढबारि करि लै उबरै तेरो खेतु। मनसुवातन पींजर रे बँध्योरहत निकेतु। काल फिरत बिडालतनुधरि अबधरे तोहिँ लेतु। बिषबिदारणसेय हरिको उतरे सागरु सेतु। सूरभजु गोविन्दको यों गुरु बताये देतु४९॥ रागसारंग ॥ भजन बिनुजीवतहैं जैसेप्रेत। मलिन मन्दमति डोलत घरघर उदरभरनके हेत।

मुख कटुवचन बकतनितनिन्दा सुजन सुखदुखदेत। कबहुं पापके पावत पैसागाडिधूरि तहँदेत। गुरु ब्राह्मण अच्युतजन सज्जनजातनक बहुनि-केत। सेवानहींगोबिंद चरणकीभवन नीलकोखेत। कथा नहींगुणगीत सुयश हरि साधन देव अनेत। रसना सूर बिगारे कहँलों बूड़त कुटुं-ब समेत। ५० तबते गोबिंद क्यों न सम्हारो। भूमिपरे ते शोचनला-ग्यो महाकठिन दुखभारो। अपने पिण्ड पोषिबे कारण कोटिसहस जियमारे। उन पापन ते क्यों उबरैगो लोहथम्भ झँकनारे। अपने लोभ लालचकेकारणकाहु पापते न हारे। सूरदासयमकंठ गहेते नि-कसत प्राण दुखारे ५१ इन राजस गुणको न बिगोयो। हिरण्यक-श्यप हिरण्याक्ष आदिदैरावण कुम्भकरण कुलखोयो। कन्तकेशि चाणूर महाबल करनरजी यमुना जल बोयो। यज्ञ समय शिशुपाल सुयोधनआनआपने ज्योतिसमोयो। ब्रह्मा महादेव सुरसुरपति नाचत फिरत महा रस भोयो। सूरदास जे चरण शरण रहे ते जन निकट नींदभरिसोयो ५२ हरिकेजनसबते अधिकारी। ब्रह्मा महादेवते को बड़ताकी सेवाकछु न सुधारी। याचकपै याचककहयांचै जो यांचै तो रसना हारी। गणिका पूत शोभनहिं पावत जिनके कुलमें कोउ पितारी। तिनकी साखि देखहु हिरण्याक्ष सरावण कुटुंब सहित भयेख्वारी। जन प्रह्लाद प्रतिज्ञापारी बीभीषण आहुकराजारी। शि-लातरी जलमांझ सेतुबँध बलिघह चरण अहल्या तारी। जे रघुनाथ शरण तकिआये तिनकी सकल आपदा टारी। जिहि गोबिंदअचल ध्रुव राख्यो ग्रहदहनावर्त्ति देलबिसारी। सूरदास भगवंत भजन बिनु धरतीजननिबोझ कतमारी ५३॥ रागबिलावल॥ मनरेकरुमाधवसोंप्रीति कामक्रोध मदलोभ मोहतूछांड़िसबैबिपरीति॥ ध्रुव॥ भौंराभोगीबन भ्रमैरे मोहु न मानैमापु। सबकुसुमनि नीरसुकरैरे कमल बँधावै आपु। सुनि परासत पिय प्रेमकीरे चातक चितवै बारि। घनआशासबदुख सहै पै अनत न यांचैबारि। देखहुकरणीकमलकीरे कीन्हों रबिसों हेत। प्राण तजे प्रेम न तज्योरे सूख्यो सरहि समेत। दीपकु पीर न जानहीरे पावकु परेपतंग। तनतो तिहिज्वाला जरेउरेचित न भयोरस भंग। मीन बियोग न सहिसकै रे नीर न पूछैबात। देखित ताकीगति

हिरे रति न घटी तनजात। परनिपरेवाप्रेमकी रे चितुलैचढतअकाश। तहँचढ़ि ताहि जु देखहीरे भोंभरि तजत उसाश। सुमिरि सनेह कुरङ्ग को रे अवगनि राचेउ रागु। धरणि सक्योपगुपङ्गमना रे सरस न सुखउरलागु। देखिजरनि जड़नारिकी रे जरतिप्रेतकेसङ्ग। चितानचितफीकोभयो सुराची पियकेरङ्ग। लोकवेद बरजोले रे नयननि देख्योवाधु। चोर न जिय चोरी तजै रे बरुसब सहै निवाधु। सबरस को रस प्रेम है रे बिषयी खेलै सारि। तन मन धन यौवन खस्यो रे तउ नहिं मानी हारि। ते जुरतन पायो भलो रे जान्यो साधुनसाजु। प्रेमकथा अनुदिन सुनीरेतऊब उपजी लाजु। सदासँघाती आपनोअरु जियको जीवन प्रान। सुतौ बिसारेउ सहजही रे हर ईश्वर भगवान। बेद पुराणनि सुनिसबै रे सुरतरु सेवैंजाहि। महामोह अज्ञानमें रे क्यों न सम्हारे ताहि। खगमृग मीनपतंग लों रे मैं सोधे सबठौर। जलथल जीवजितेकिते रे कहूंकहां लगिऔर। प्रभुपुराणपावन सखारेप्राणनहीं के नाथ। परम दयाल कृपाल कृपानिधि जीवन जिहिके नाथ। गर्भवास अतिपास में रे जहां न सकोअंगु। सुनिशठ तेरे प्राणपति रे तहँउँन छांड्योसंगु। दिनराखत पोषत रहेरे जैसेचोलीपान। वा दुखते तोहिं काढ़िकै रे गहिदीनो पयप्रान। जिहिंजड़ते चेतन कियोरे रचि गुणतत्त्व बिधान। चरणचिकुर करनख दिये रे नयन नासिकाकान। असन बसन बहुबिधि दये रे अवसर अवसर आनि। मातपिता भैया मिलेरे नइरुचिनइपहिंचानि। सजन कुटुम्ब परिकरबढ्योरे सुत दारा धनधाम। महा मोह बिषयी भयोरे चित आकरप्यो काम। खानपान परिधानमें रे यौवन गयोसबबीति। ज्योंबिटपत्र् बियसंग बस्यो रे भोरभये भयो भीति। जैसे सुखहोधन बढ्योरे तैसेतनहिं अनंग। धूम बढेउ लोचन खसेरे सखा न सूझोसंग। यम जान्यो सबजग सुन्यो रे बाढ्यो अयश अपार। बीचनकाहू तब कियो जबदूतन दीन्हीमार। कोजाने केवार मरेउरे ऐसेकुमति कुमीच। हरिसों हेतु बिसारिकै रे सुखचाहतहै नीच। जोपैजियलज्जानहीं रे कहाकहोंसौबार। सकहि अंकु न हरिभज्यो रे सुनिशठ सूरगँवार ५४॥ पञ्चमनामी ॥ जन्मसिराने अटके अटके। सुत सम्पति गृह राजमान को फिरी अनतही भटके।

कठिन जवनिका रचीमोह की तोरीतो न जाय चटके। नाहरिभजन न तृप्ति विषय करि रह्यो बीचही लटके। सब जंजाल सु इन्द्रजाल सम ज्यों बाजीगर नटके। सूरदास शोभा न शोभियत पिय बहु न धन मटके ५५ यह सब मेरी ये कुमति। अपनेहीं अभिमान दोषदुख पावत अति जैसे केहरि उझकि कूपजल देखि बिनुप्रति। कोप परो मद मर्म न जान्यो भईहै सुगति। ज्यों गजशोल फटिक में देख्योदशननि हति। जो तू सूर सुखहि चाहत है तो करु विषय बिरति ५६ हौं महापतित अरु दूजे अभिमानी। परमारथ सों बिरति विषय रति भावभगति में कबहुं न जानी। निशिदिन दुखद मनोरथ करि करि धावतहू तृषा न बुझानी। शिरपर काल नीच नहिं चितवत आयु घटत अँजुरीको पानी। विमुखनिसों रतिजोरि साधुनि सों मानो न हुती कबहुं पहिंचानी। तिनबिनु प्राण रहत निशिवासर जिहिं सब दिन रसरीति बखानी। माया मोह लोभके लीने जानि न वृन्दावन रजधानी। नवलकिशोर जलदतन सुन्दर बिसरेसूर सकल सुखदानी ५७ इतने दिन हरि सुमिरण बिनखोये। परनिन्दा रसना के रसमें अपने करतलबोये। बिबिधरुचिर अँगअँगदे सद न बसनबनायेधोये। तिलक चटकदे चले स्वामिह्वै विषयिनके मुखजोये। सबजग कांपत काल व्यालडर सुर ब्रह्मादिक रोये। सूरदास अधमन की को गति उदरभरे भरिसोये ५८॥ राग बिलावल॥ हरिके जनकी अतिठकुराई। महाराज ऋषि सुर नरवर मुनि देखत रहत लजाई। निर्भय देशराज ताहीको लोगनमन उत्साह। काम क्रोध मद लोभ मोह मिलि भये चोरते शाह। दृढ़ विश्वास किये सिंहासन तापर बैठे भूप। यश सों बिमल छत्र शिर शोभित राजत परम अनूप। हरि पद पंकज प्रिया प्रेमरस ताहीके रँगराते। मंत्री ज्ञान न अवसर पावत कहत न बात सकाते। अर्थ धर्म दोउरहे दूरिदुरि काम मोक्ष शिरनायो। बिनय बिबेक बिचित्रपौरिया समय न काहू पायो। अष्ट महा सिधि आगे ठाढ़ी करजोरे डरलीन्हो। छरीदार बैराग बिनोदी झोरिके बाहर कीन्हो। मायाकाल कछू नहिं व्यापे या रसरीति जुजाने। सूरदास नरतन तो पायो गुरुप्रसाद पहिंचाने ५९॥ राग सारँग॥ आपनी भक्ति दे

हे भगवान । कोटि जो लालच दिखावें नाहिने रुचिआन । महामा-
चलु मरणको कछु शोच नाहींमोहिं । कियेप्रण हों रहतहारे आजु
ते थकतोहिं । जादिनते अहजन्मपायो यहै याकोरीति । विषयविष
हठि खात टरत न करतकछु अनीति । यथा किन्नरयूथ किंकर तऊ
टरी न टेक । कोपिगयो यमपुरी तहाऊं परेउधारअनेक । नाहिन काचो
मुनिकृपानिधि कहत कहा रिसाय । सूरप्रभु यह तुम्हैं निहारो डारि
हौं कठुराय ६० ॥ रागधनाश्री ॥ माधवतोहूं सकुचशरण आवेकीहोत
जु निपट निकाज । यद्यपि बाल बिहुन बैभवसों सोऊ करत कृपा तो
लाज । तृणाधुत सलिल बहत बर पोथतु पकरत सोउ नरजात । नदि-
कर वृक्ष मूल आश्रित हित तऊ आप अकुलात । तुम प्रभु अजित
अनाथ लोकपति हौं अज्ञान मतिहीन । कछुअनहोत निकट उतलागत
मगन होत उत दीन । परिहस प्रबल शूल निशिबासर ताते यह कहि
आई । सूरदास कृपाल शरणागत भये सु कौन जिहि रति पाई ६१ ॥
रागसोरठ ॥ पतित पावन दीनदयाल अनाथ के नाथ । सन्तत सब लो-
कन श्रुति गावत यहगाथ । मोते न कोउ पतितनको अनाथ कोदीन ।
काहेन मोहिं तारिये जन कवन अँगहीन । द्विज गणिका गतिदायक
गजमोचन ऋषिशाप । अर्जुन संताप चाणहरण अविताप । मनसा
बाचा कर्म्मना कछु कहत नाहिंन राखि । सूर सकल अन्तर के तु-
महीं हो साखि ६२ ॥ रागबिलावल ॥ जन्म जन्म जबजब जिहि जिहि
युग जहां जहां जन जाय । तहां तहां तव चरण कमल रति जोवैं
सुदृढ़ रहाय । श्रवणसुयश शारंगनादबिधि चातक बिधि मुखनाम ।
नयन चकोर संत संतत शशि कर अर्चन अभिराम । सुमति स्वरूप
सञ्चतु श्रद्धा बिधि उर अम्बुज अनुराग । तिन प्रति ध्वनि अलि गुञ्ज
मनोहर आवत प्रेम पराग । औरै सकलसुकृत श्रीपति हित प्रति फल
रहत सुप्रीति । नीतिनई सुखदुख सूरजप्रभु दीजै भजन प्रतीति ६३ ॥
रागसारंग ॥ तुम्हरी भक्ति हमारे प्राण । छूटिगये कैसे जन जीवहिं ज्यों
प्राणी बिन प्राण । जैसे गगननाद मुनिशारंग बधे बधिक बिनबान ।
ज्यों चितवै शशिओर चकोरहि देखतही शशुमान । ज्यों पतंगदीपक
सों लोभ्यो पानी मीन सुठान । सूरदास प्रभु हरिगुण मीठे नितप्रति

सुनियत कान ६४ यहै करत अनेक जन्मगये मन सन्तोष रखायो। सुनि दिन दानि दुराशा लाग्यो सबै लोक फिरिआयो। सुनि सुनि स्वर्गरसातलशीतल तहांतहां उठिधायो। काम क्रोधमद मोहअगिनि ते काहु न तनक बुझायो। स्रक् चंदन बनिता बिनोद सुख यह दव जड़नि बुतायो। मैं अजान अकुलाय अधिकलै जरत मांझ घृतनायो। भ्रमिश्रव हारेउँ हियराये देखि अनल जगछायो। तुम्हरि कृपाबिन सूरश्याम प्रभु काहू श्रम न नशायो ६५॥ रागधनाश्री॥ ताते जानि भजे बनवारी। शरण आयेकी तापनिवारी। जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पारी। हिरण्यकशिपुकी देह बिदारी। ध्रुव निर्भयपद दियोमुरारी। अम्बरीष की गर्भवतिटारी। द्रुपदसुता जब प्रकट पुकारी। गहतचीरहरि नाम उबारी। गजगणिकाका गौतमत्रिय तारी। सूरदास शठ शरण तुम्हारी ६६ भक्तिबिना जो कृपा न करते तौहौं आश न करतो। बहुतपतित उद्धारकिये तुम हो ताको अनुसरतो। मुख मृदुवचन जान मतिजानहु शुद्धपन्थ पगधरतो। सुजनवेष रचनाप्रति जन्मन आयो परधन हरतो। कर्मबासना कबहूं छांडी शाप पाप आचरतो। धर्म ध्वजाअन्तर कछुनाहीं लोकदिखावत फिरतो। परत्रिय रति अभिलाष निशादिन मनपिटरीलै भरतो। दुर्मति अतिअभिमान सानबिन सब साधनते टरतो। उदर अखात बिवर पूरणहित मित्र बन्धुहोंलरतो। रसना स्वाद शिथिल लम्पट ह्वै अघटित भोजन निरतो। यह व्यवहार लिखाय प्रतिदिन पुनिजीयो पुनिमरतो। रबिसुतदूत बारि नहिं सकते कपट सनो उरबरतो। साधुशील सद्रू प पुरुषको अपरस बहु उचरतो। औघड़ असत कुचीलन सों मिलि मायाजलमें तरतो। कबहुंक राजमान मदपूरवा कालहुते नहिं डरतो। मिथ्याबाद आप यश सुनिसुनि मूंछहिपकरि बिगरतो। यहिबिधि उच्च अवच्चतनधरि धरि देशहिदेश बिचरतो। तहँ सुखमानि बिसारि नाथपद अपने रंग बिहरतो। अब मोहिं राखिलेहु मनमोहन अधमअङ्क पदपरतो। खर कूकरकी नाईं मानि सुख बिषय अग्निमें जरतो। तुम गुणकी जैसे मति नाहिन हों अघकोटि बिचरतो। तुम्हैंहमैं प्रतिबादभयेते गौरव ताकोगिरतो। मोतेकछू न उबरीहरिजू आयो चढ़तउतरि तो। अजहूं

पतित सूरपद तजतो जो औरहु निस्तरते। ६७ अद्भुत यश बिस्तार करनको हमजनको बहहेत। भक्तपावन कोउ कहत न कबहू पतित पावन कहिलेत। जयबीजयकी कथा न कछु वै दशमुखबध बिस्तार। यद्यपि जगत जननको कर्त्ता मुनि सब उतरतपार। शेषनाग के ऊपर पौढत तेतिक नाहिं बड़ाई। यातुधान कुच गिरि मरकत तब तहांपूर्णता पाई। धर्मकहे शरशयन गङ्गसुत तेवुक नाहिं सँतोय। सुतसुमिरत आतुर द्विज उधरत नामभयो निर्दोय। धर्मकर्म अधिकारिन सों नहिं तुम्हरे ना कछु काज। भूभर हरण प्रकट तुम भूतल गावत सन्त समाज। भारहरण बिरदावलि तुम्हरी मेरे क्यों न उतारी। सूरदास सत्कार कियेते ना कछु घटै तुम्हारी ६८ हरिजू हैां याते दुखपात्र। श्रीगिरिधरण चरण रति न भई तजि न बिषयरसमात्र। हुतोआलय तब कियो असद्व्यय करी न ब्रजबन यात्र। पोषे नहिं तुव दास प्रेम सों पोष्यो अपनोगात्र। भवनसँवारि नारिरस लोभ्यो सुत बाहनजन भ्रात्र। महानुभावपद निकट न परशे जान्यो न कृतबिधात्र। छलबल करि जिततित हरि परधन धायो सबदिन रात्र। शुद्धाशुद्ध बहु बोझ बहेउशिर छमि जो करेउ लै दात्र। हृदय कुचील काम भू तृष्णा जल कलिमल दैपात्र। ऐसेकुमति जाट सूरजको प्रभुबिनको न उधात्र ६९ महा पतितपावन जानि शरणआयो। उदधि संसार शुभ नाम नौका तरन अटल अस्थान निजनिगमगायो। व्याध अरु गीध गणिकाअजामिल द्विजहि चरण गौतमनारि परशि पायो। अन्त औसर अर्द्ध नाम उच्चारकरि सुमिरतहि गजग्राहते छुड़ायो। अबल प्रह्लादबलि देत सुखहीन चित दास ध्रुव तवचरण शीश नायो। पांडुसुत बिपति मोचक महादासके द्रौपदीचीर नाना उढ़ायो। भक्तबत्सल कृपानाथ अशरण शरणभार भूतलहरण जनसुहायो। सूरप्रभु चरणचित चेत चिन्तनकरत ब्रह्म शिव शुक सनकसङ्क धायो ७० प्रभुहैां सबपतितनकोटीको। और पतितसब द्यौसचारिके हैांतोपतित जन्महीको। बधिक अजामिल गणिकातारी और पूतनाहीको। मोहिं छांडितुम और उधारे मिटैशूल कैसेजीको। कोऊ न समरथ सेवकरनको खैंचि करतहैां लीको। मरियत लाज सूरपतितनमें कहत सबनमें नीको ७१

राग रामकली ॥ अनाथके नाथ प्रभु कृष्णस्वामी। श्रीनाथ शारंगधर कृपा करि मोहिं सकल अघहरण हरि गरुड़गामी। परेउ भवजलधिमें धरि हाथकाढ़ि समदोष जनिधरो चितकाम कामी। सूर बिनतीकरें सुनहु नँदनन्द तुम कहाकहौं खोलिकै अन्तर्यामी ७२॥ राग धनाश्री ॥ऐसेप्रभु अनाथके स्वामी। कहियत दीनदास परपीरक सबघट अन्तर्यामी। करतबिबस्त्र द्रुपदतनयाको शरणशब्दकहिआयो। पूर्णअनन्त कोटि परिबसनन अरिको गर्वगँवायो। सुतहित बिप्र कीरहितगणिका पर-स्वारथ प्रभुपायो। क्षणचिन्तन बनशाप संकटते गजग्राहते छुड़ायो। तब तनबदन देखि अबिगतको जनलगि बेयबनायो। जेजनदुखी जानि भयेते रिपुहति २ सुखउपजायो। तुम्हरिकृपा यदुनाथगोसाईं किहि किहि श्रमु न गँवायो। सूरदासअन्ध अपराधी सो काहेबिसरायो ७३ दीन जन क्यों करिआवै शरण। भूल्यो फिरत सकल जल थल मग सुनि त्रैतापहरण। ममअनाथअबिबेक नयनबिनु हस्तशब्दसुनिधावै। पद पदपरतकर्मतम कूपहि को करिकृपाबचावै। नहिंकर लकुटि सु-स्मृति सतसंगति किहिअधार अनुसरई। प्रबल अपार मोहनिधि दश दिशि सुधो कहा अबकरई। अघटित रतनभीर सुमृतखनिनिगमपेन नहिंपावै। सूरश्याम पदनख प्रकाशबिनु क्योंकरितिमिर नशावै७४ रागबिलावल ॥ तुम्हरो नाम तजि प्रभुजगदीशहलेकहो मेरेऔरकहाबलु। बुधि बिबेक अनुमान आपुने सुधोकरहु सबसुकृतनि को फलु। वेदपु-राण सुमृतिसंतनकी यहआधार मीनकोज्योंजलु। अष्टसिद्धिनवनिद्धि सूरके संपतिबिनु सुखकछूकहालल ७५॥ रागधनाश्री ॥ मेरोमनमतिहीन गुसाईं। सबसुख निधिपद कमल बिसारे श्रमत श्वानकी नाईं। वृथा भ्रमित भाजन अवलेहत सूनेसदन मशान। यहिलालच अटक्योकैसेहु तृप्ति न मानत मान। जहँजहँ जात तहाँ तहँ त्रासत करत मिलत पद त्रान। कौन काज कारण कुबुद्धिशठ भटकत सतेमान। परम दयाल विश्वपालकप्रभु सकल हृदय निजनाथ। ताहिछांड़ि यह सूरमहाजड़ भ्रमत भ्रमित कै साथ ७६ मोसो पतित न औरहरे। जानतहो प्रभुअं-तर्यामी जो मैं कामकरे। ऐसो अन्ध अधम अबिबेकी खोटनि करत खरे। बिषयीभजे बिरक्तन सेये मन धनधाम धरे। ज्योंमाखी मृगमद

मणिडततनपरहरि पूरुयपरे। त्योंत्योंमूढविषयगुं जागहि चिन्तामणि बिसरे। कुवरि करेउ पापराड कामबश भूपभवन निसरे। एकै इहै जानिअवलम्बन वैसेहि पतिततरे। हारे त्रासकरत यमकिंकरसुनिममनाम डरे। सूरपतिततुम पतित उधारन बिरदकी लाजधरे ७७॥ रागकान्हरो॥ ठाकुर भलेबुरेतौतेरे। हमरे कुलकीलाजबड़ाई बिनती सुनो प्रभुमेरे। आनन्दे सबरंक भिखारीमें सबछांडेउ होतअनेरे। सबतजि तुमशरणागत आयों दृढ़ करिचरण गहेरे। तव प्रसाद हमबदत न काहू निडर भये घड़घेरे। सूरदास प्रभु तुम्हरि कृपाते पायेसुख जु घनेरे ७८॥ रागधनाश्री॥ तुम कब मोसों पतित उधारेउ। काहेको हरि बिरद बुलावत बिनुमसकतिकोतारेउ। ब्याधगीध पूतनाजोतारी तिनको कहानिहोरो। गणिका तरी आपनी करणी नामुभयो प्रभुतेरे। अजामीलद्विज जन्मजन्म को हुतोपुरातनदास। नेकचूकते यहगतिकीनीपुनि बैकुण्ठहिवास। भक्तजानिकै सबजनतारे तो क्यों जायेखूट। तबजानिहैं जु मोहिं तारिहौ सूरकूर कबिटूट ७९ मैं तो अपनी कही बड़ाई। अपने कृततेहैं नहिं बिरमतु सुनि कृपाल ब्रजराई। जीवन तजे स्वभावजीव को लोकबिदित दृढताई। तो क्यों तजैनाथ अपनोप्रण हमप्रभु की प्रभुताई। पांचलोक मिलिकहेउ तुम्हारो नहिंअंतर मुखताई तब सुमिरण छलदुर्भर के हित माला तिलकबनाई। कांपनु लागी धरा पापते ताड़िनि देखुजुड़ाई। आपुन भये उधारण जगको मैं सुधि नीकेपाई। अबमिथ्या तव जाप ज्ञान सबप्रकटभई ठकुराई। सूरदास उद्धार सहज गति चिन्ता सकलगँवाई ८०॥ रागनट॥ जाके हरिजूकोबरू ताकेधौं कौनकोडरू। काहे जियमें शोच कीजैको हैहो ऐसोअवरू। सब हिन के नाथ जीवन याही के हाथ वे अजर अमर अजित अकाथ। सोई बसतसाथ शरणसेदा अनाथ बदतवेद बिदुष देखौधैं गावतगाथ। सुनौ धैं जिनकी भांतिसकल चलतनीति अपनेचित चकितरहत। रवि न तपत अतिबायु न तजतगतिडोलत न शेषशिर सिंधु न बढ़त। कालके मारन हारप्रकट धरणि बसि अनाथ अभय करि इहांहुलसत। प्रकट सूरके स्वामी अखिल अंतर्यामी असुर अवद्ध दुष्ट अजहूं असत ८१॥ रागकान्हरो॥ सोइ रसना जो हरिगुणगावै। नयननकी छबि यहै चतुर-

तासोइ मुकुन्दमकरंदहिध्यावै। निर्मलचित्ततोतेईसांचोकृष्णाबिनाजेहि अवरु न भावै। श्रवणनि कोजुयहै अधिकाई हरियश नितप्रति श्रवणनचावै। करतेईजु श्याम जु को सेवै चरणनिचलि वृन्दावनधावै। सूरदासकहै बलि ताकीहैं जो संतन सों प्रीतिबढ़ावै ८२ ॥ रागधनाश्री ॥ रेबौरे छांड़ि विषयको रचिबो। कत तु सुआ होत सेंबरको अंत कपास न पचिबो। अनन्त तरङ्ग कनक कामिनि ज्यों हाथरहैगो पचिबो। तजिअभिमान कृष्णकहि बौरे न नरकज्वाला तचिबो। सद्गुरु कहेउ कहोहैं तोसें कृष्णरतनधन संचिबो। सूरदास स्वामी सुमिरण बिनु योगी कपि ज्यों नचिबो ८३ सबै दिनएक से नहिंजात। सुमिरण भगतिलेहु करिहरिको ज्योंलगितन कुशलात। कबहुंक कमलाचपलपायकै टेढ़ेटेढ़ेजात। कबहुंकमगमगधूरि टटोरत भोजन को बिलखात। बालापन खेलतहो खोयो भक्तिकरत अरसात। सूरदास स्वामी के सेवत पैहो परमपदतात८४॥ रागगूर्जरी ॥ हरिरसकबहुंतो जायलहिये। बादबिबाद गरबईरषता यतोदगड सबसहिये। कोमल बचन दीनता सबसों सदामुदित चितरहिये। शोकगये उपज्योरहै आनन्द येसेधर्म निबहिये। इतनो जो उपजेमनमहियां यहसुख कहँलोंकहिये। सूर सुकृत तेहि अध महासिधि जो भुगते सोहइये ८५ ॥ रागसारंग ॥ देखो हरिको एकसुभाय। इतेगँभीर उदार उदधिप्रभु जानशिरोमणिराय। राईजितनी सेवाकोफलमानत मेरुसमान। समुझिदास अपराध सिंधु समबूंद न एकौमान। दृष्टिपरएको होतचरणपर जानतहैं जियऐसी। बिनुखहुभये कृपा या मुखकी जबचितवो तबतैसी। भक्तबिरह कातर करुणामय डोलत पाछेलागे। सूरदास ऐसे प्रभुकोकत दीजत पीठि अभागे ८६ ॥ रागकेदारो ॥ तुम्हरो कृष्ण कहतकहजात। बिछुडे मिलन बहुरिकब ह्वैहै ज्यों तरुवरके पात। शीत बायु कफ कण्ठ बीरुध्यो रसना टूटीबात। प्राणलिये यमजात मूढ़मति देखतजननीतात। क्षण यक माहँ कोटियुगबीतत नरककी पाछेबात। यहजगप्रीति सुवासेमर ज्यों चाखतही उड़िजात। यमकीबांध नियरनहिं आवत चरणनचित्तलगात। कहत सूर बिरथा या देही इतनो कतइतरात ८७ जोसनकबहुं हरिकोयांचै। आनप्रसंग उपासनछांड़ै मनक्रमवच अपने उरसांचै।

निशिदिननाम सुमिरियशुगावै कल्पन मेटि प्रेमरससांचै। यहब्रतधरै लोकमहँ निचरै समकरिगनै महामणिकांचै। शीत उदय सुख दुख नहिंजानै आयेगये शोकनहिं गांचै। जायसमाय सूरमहँनिधि मैं बहुरि न उलटि जगत महँनांचै ७८॥ रागधनाश्री॥ सोइभलो जोहरि यशगावै। श्वपचगरिष्टहेत रजसेवक बिनुगोपाल द्विजजन्मनभावै। योग यज्ञ जपतपतीरथभ्रमे जहँजहँ जायतहां डहकावै। हायअटल भगवन्त भजनते अन्य आशा नश्वर फलपावै। कहूं न ठौर चरणपंकजबिनु जो दशहूदिशिफिरिफिरि आवै। सूरदास प्रभुसाधु संग ते आनन्द अभय निशानबजावै ८९॥ रागनट॥ मन क्रम वचन तू गोबिन्द सुधि करि। शुचिरुचिसाधु समाधि आनिउर दीनबंधु करुणामयउरधरि। मिथ्या बाद बिबादछांड़ि तू बिषय लोभ मम माया परिहरि। चरण प्रताप आनिउरअंतर औरै सुखयासुख के तरहरि। वेदहि कहेउ सुमृतियों भाष्यो पावन पतितनाम निजनरहरि। जाकोसुयश सुनत अरु गावत जायपाप कापैयक भरहरि। अजहूं चेतिमूढ़चहुं दिशिते आयोकाल अगनि ज्यों झरहरि। सब यह जालजँजाल परैगो हरि बिनुकौन करै गोधरहरि। अतिभयभीत निरखि सागरतन धन ज्यों आनिरहेगोकर हरि। सूरकाल बरब्याल ग्रसत है श्री गोबिंद प्रतिपरिकिनधरहरि ९०॥ रागसोरठ॥ अबमन मानिधौं रामदुहाई। मन वचक्रम हरिनाम हृदयधरि ज्यों गुरु वेद बताई। महागर्त दशमास गर्भबसि अधमुख शीश रहाई। इतनी कठिन सहीतैं कतको अजहुं न तू समुझाई। मिटिगये रागद्वेष सब तनके जिनहरि प्रीति लगाई। सूरदास येनाम कि महिमा पतित परम गति पाई ९१॥ रागसोरठ॥ करुमन हरिसों नेह सांचो। निपट कपटकी अटपटी छांड़िदे इन्द्रियबशराखहि किनपांचो। सुमिरणकथा सदासुखदायक बिषय परमबिषबांचो। सूरदास प्रभु हितकै सुमिरौ जीत्यो आनन्द करि कै नांचो ९२॥ रागकल्याण॥ धोखेही धोखे डहकायो। समुझि न परी बिषय रसगीधो हरिहीरा घरमांझ गँवायो। ज्यों कुरंग जलदेखि पिवनको प्यास न गईदशौंदिशि धायो। जन्मजन्म बहुकर्म कियेहैं जन जनपै आपुनप बँधायो। ज्यों शुकसेंबरसेइ आशा लगिनिशि बासर हठिचित्त लगायो। रीतो

परी जबैफल चाख्यो उड़िगयो तुलतवारो आयो । ज्यों कपि डोरि बांधि बजीगर कन कनको चौहटे नचायो । सूरदास भगवन्त भजन बिन कालव्याल पै डसवायो ९३ ॥ रागगुर्जरी ॥ प्रभुबिन कोऊकाम न आयो । यहझूठी मायाकेलोने रतनसो जन्मगँवायो । कञ्चनकलश बिचित्र चित्रकिये रचिरचिभवन बनायो । तामेंते ततक्षणगहिकाढ्यो पलुयक रहन न पायो । हौं तुम्हरेसंग आऊंगी कहि त्रियधुति धुति-धन खायो । चलतहरी मुखमोरि चोरिसब एकोपगु नाहिंन पहुंचा-यो । बोलि बोलिसुत स्वजन मित्र जन लीन्हो सुयश सुहायो । परेउ जु काजअन्त अन्तक सों उहि ढिग आनि बँधायो । कोटि जन्म भ्रमि भ्रमिहैं हारेउ हरिपद चित न लगायो । और पतित तुम बहुत उबारे सूरकहा बिसरायो ९४ रे मन मूरुख जन्म गँवायो । करि अभिमान बिषयसों राचेउ श्याम शरण नहिँ आयो । यह संसार फूल सेंबरको सुन्दर देखि भुलायो । चाखन लाग्यो रुई उड़िगई हाथ कछू नहिं आयो । कहाभयो अबके मन शोचे पहिले नाहिं कमायो । कहतसूर भगवन्त भजन बिनु शिरधुनिधुनि पछितायो ९५ ॥ राग सारंग ॥ फिरि फिरि सो इहै करतु । जैसे प्रेमपतँग दीपकसों पावकहूं न डरतु । भव दुखकूप ज्ञानकरि दीपक देखत प्रकटपरतु । कालव्याल रजतमविष ज्वाला कतजड़ जन्तु जरतु । अबिहित स्वादु बिवाद सकल मति इन लगि भेयु भरतु । यहिबिधि भ्रमतु सकल निशिदिनगत कछू न काज सरतु । अगमसिन्धु यत्ननि सजि नौका हठि क्रमभारभरतु । सूरदास के यहैव्रत कृष्ण भजि भव जलनिधि उतरतु ९६ ॥ राग केदारो ॥ रहेउ मन सुमिरणको पछितायो । वहतन रचिरचि के बिरचेउ कियो आपु मनभायो । मनक्षत नदी तरंगते जबहीं बहेउ चल्यो जुसवायो । मेल्योकाल लालजब खैंचेभयोमीनकोहायो । कीरपढ़ावत गणिका तारी अजामील सुखपायो । ऐसो सूरगुण नाहिंन दूजो दूरिकरै यम दायो ९७ ॥ राग धनाश्री ॥ भक्ति कबकरिहै जन्मसिरानो । कोटि य-तनकीने मायाको तऊ न मुग्ध अघानो । बालापन खेलतही खोयो तरुणभये गर्वानो । कामक्रोध लोभके वलहार चेत्यो नहीं अयानो । वृद्धभये कफकंठ बिरुंध्यो शिर धुनि धुनि पछितानो । सूरश्याम के

नेक बिलोकत भवनिधि जायतिरानो॥९८ इतउत चितवत जन्मगयो। इनमाया तृष्णाके काजे दुहूं दृग अन्धभयो। जन्मकष्टते मातु दुखित भइ अतिदुख प्राणनहेउ। वोत्रिभुवनपति बिसरिगयेत्यों सुमिरतक्यों नरहेउ। श्रीभागवत सुन्योनहिँ कबहूं बीचहि भटकि मुयो। सूरदास कहै सबजग बूडेउ युगयुग भक्तजियो ९९ सबैदिनगये बिषयके हेत। देखतही आपनपौ खोयो केशभये सबश्वेत। रूँध्यो श्वास मुखबैन न आवत जैसे चन्दगहेउ शिरकेत। तजिगंगोदक पीयकूपजल पूजतहारे प्रेत। करिप्रमोद गोबिन्द बिसारे बूडेउसबनिसमेत। सूरदास कछुखरचु न लागत कृष्ण सुमिरि किनलेत १००॥ रागसारंग॥ जोहितन हरि भजिबोनकियो। सोतन शूकर श्वानमीन ज्यों यहिसुख कहाजियो। जो जगदीश ईश सबहिनको तहीं न चित्तदियो। प्रकटजानि यदुनाथ बिसारेउ आशासब्यपियो। चारि पदारथके प्रभुदाता तिन्हैं न मिल्यो हियो। सूरदास रसना बश अपने हरिन नाम लियो १०१॥ रागधनाश्री॥ हरिसोंमीत न देख्यो कोई। बिपतिकाल सुमिरततिहि औसर आनि तिरीछो होई। ग्राहगहे गजपति मुकरायो हाथ चक्रलै धाये। तजि बैकुंठ गरुडतजि श्रीतजि निकट दासके आये। दुर्बासाको शापनिवारेउ अम्बरीष पतिराखी। ब्रह्मलोक पर्यन्त फिरेउतहँ देवअनल मुनि साखी। लाक्षा गृहते जरत पांडुसुत बुधिबल नाथउबारे। सूरदास प्रभु अपनेजनके नाना त्रासनिवारे १०२ हरिजूतुमते कहा न होय। बोलै गुंगपंगु गिरिलंघै अरु आवै अन्धा जगजोय। पतित अजामिल कबि जातिनहूं तो कलिमल सब धोय। रंकसुदामा कियो इन्द्रसम पांडव हित कौरव दलखोय। बालक मृतक जिवायदये गुरु जो आईदरबारे रोय। सूरदास प्रभु इच्छापूरण श्रीगोपाल सुमिरहु सबकोय १०३॥ रागबिलावल॥ क्यों तू गोबिंदनाम बिसारेउ। अजहू चेति भजनकरि हरि को कालफिरत शिरऊपर भारेउ। धन सुत दारा काम न आवै जिनहिँलागि आपनपौ खोयो। सूरदास भगवन्त भजनबिनु चल्यो पछिताय नयन भरि रोयो १०४॥ रागधनाश्री॥ माधवजू जो जनते बिगरै। तुनि कृतज्ञ करुणामय केशव प्रभुनहिँ जीयधरै। ज्यों शिशु जननी जठरांतरबसि शतअपराधकरै। तउ सेवै तनु तोयि पोयिकै बिबिकर

अङ्कभरै। द्विजरसना वलिदुखित होत तब ता रिसकारि करै। क्षमि शत क्षोभक्षीर मधु सिंचित मुखसमीप मचरै। यद्यपि विटप जड़रतन हितकारि करकुठार पकरै। तदपि सुभाव सुशील सुशीतल रिपुतन तापहरै। घरविध्वंसि हलहतन क्षमीकारि बैरबीज सँचरै। सो सन्मुख सुखहितहि सत्वगुणा शिशुगुण फरनिफरै। कारण करण अन्तअज अजशिव अपभेदीनडरै। यहकलिकाल व्यालमुख ग्रसित सूर शरण उबरै१०५ माधवमन सद्यर्दितजी। ज्यों गजमत्तजानि हरितुमसों बात बिचारिसजी। माथेनहीं महावत सतगुरु अंकुश ज्ञानदुत्यो। वायेअवश बनीअति आतुर शंकर सुसंगकुल्यो॥ इन्द्रीयूथसङ्गलिये बिहरत तृष्णा कानन माहे। क्रोधशोच जलसों रतिमानी कामभक्षहित जाहे॥ और अधार नाहिँ कछु सकुचत भ्रमगहि गुहा रहे। सूरश्याम के हरि करुणामय कवनहिँ बिरदगहे १०६ हमैं नँदनन्दनमोललिये। यमकी फांसिकाटि मुकराये अभय अजात किये। मूड़मुड़ाय कंठ बनमाला चक्र के चिह्नदिये। माथे तिलक श्रवण तुलसीदल मटिव अंगबिये। सबकोउ कहत गुलाम श्यामके सुनत सिरात हिये। सूरदास प्रभु जू केचेरे जूठन खायजिये १०७ गति अविगति जानी न परै। अति अ-गाधमग अगम अगोचर बुधिबल क्यों पसरै। कबहुंक रंककरंकतेराजा करिशिर छत्रधरै। कबहुंक तृण डूबत पानीमें कबहुंक शिलातरै। प्रबल प्रचण्ड महा बपुशायक केहरि भूखमरै। अनायास बिनउद्यम अजगार सहजहि पेटभरै। सागर में सागर करिडारै ठांठांनीर भरै। सू-रपतित तरिजाय क्षणक में जो प्रभु नेकुढरै १०८॥ रागटोड़ी॥ भंगोन निर्भय चरण कमल मकरंद गहेजहँन निशाको त्रास। जहँविधिभान समानएक रस सो वारिज सुखबास। जहँ किंजल्क भक्तिनव लक्षण काम ज्ञानसरसक। निगम सनक शुकनारद शारदमुनिमन भँवर अ-नेक। शिवविरंचि खंजन मनरंजन क्षणक्षण करत प्रबेश। अखिल कोशतहँ बसहिं सुकृतजल प्रकटित श्याम दिनेश। सुनि मधुकर भ्रम-तजीकुमुदिनीको राजिव शुभकरिकैआस। सूरजदास प्रेमसमयप्रफुल्लित तहँचलिकरहिंनिवास१०९ अजहूं सावधान करिहोहि। मायाविषम भुजंगिनि को बिष उतरेउ नाहिंन तोहिं। कृष्णासुमंत्र शुद्धवनमूरी जि:

नियम सरतशिवाया। बारबारअवशान नीकहहोइ गुरुगारुडीसुनायो। जाग्यो मोहमेरु अतिबूडी सुयश गीतके गाये। सूरदाई अज्ञान मूरछा ज्ञान सुभेषज खाये ११० मन तासों कोटिक बार कही। समुझि न शरण गयो गोबिँदके उरअँग शाल सही। सुमिरण कथा और गुरुसेवा एकौ नाहिं गही। लोभी लम्पट बिषयी व्यभिचारी ऐसेही निबही। तजिमणि कनक अमोलक हीरा कांच कि किरच गही। जैसेजानि बिबेक चतुर तुम तजिपय पिवत मही। आदि ब्रह्म रबि शेष ईश मिलि सोधी सरस बही। सूरदास भगवन्त भजन बिन सच त्रैलोक्य नही १११ गोबिँद भजन करहु यहि बार। ईश्वर पार्वती उपदेशत तारकमंत्र जपो तेहि द्वार। काहेको अश्वमेधयगकीजै गया श्राद्ध काशीकेदार। रामकृष्ण अभिधाम न पटतर जो तनगारै हेमहत सार। प्राग कल्प माघे करवत दै चन्दा तरणि ग्रहण लखबार। सूरदास भगवन्त भजनबिन यमके दूत कौनटारै मार ११२ जाघटअन्तर हरि सुमिरे। तासों काल रूठिका करिहै जो चितचरणधरे। कोप्यो तात प्रह्लाद भक्तको नामहिं लेतडरे। खम्भ फोरि नरसिंह प्रकटभये असुरके प्राणहरे। सहसबर्ष गज युद्धकरतभये क्षण यक ध्यानधरे। चक्र धरे बैकुंठते धाये वाकी पैज सरे। अजामील द्विज सह अपराधी अन्तकाल बिगरे। सुतसुमिरत नारायण बाणी पार्षद धायपरे। जहँ जहँ दुसहकष्ट भक्तनको तहँतहँ सारकरे। सूरजदासश्यामसेये एते दुस्तर पार तरे ११३ भजहु न मेरो श्याम मुरारी। सब सन्तनके जीवनहैंहरि कमलनयन प्यारो हितकारी। यासंसार समुद्र मोह जल तृष्णातरँग उठतितेभारी। नाव न पाइसुमिरण हरिको भजन रहित बूडत संसारी। दीनदयाल अधार सबन को परम सुजान अखिल अधिकारी। सूरदास कह तुम यांचे जन जन को याचक होत भिखारी ११४ रे मन कृष्ण नाम कहिलीजै। गुरुके बचन अटल करि मानहु साधु समागम कीजै। पढ़िये सुनिये भक्ति भागवत और कहा कथि कीजै। कृष्ण नाम बिन जन्म बादिही वृथा जिवन कह जीजै। कृष्ण नाम रस बह्योजातहै तृषावन्तह्वै पीजै। सूरदास हरिशरण ताकिये जन्म सुफल करिलीजै ११५ भक्ति बिन शूकर कूकर जैसे। बिगबगुला

अरुणीव घूघुआ आयजन्म लियो तैसे । ज्योंलोमरीबिलाउ मोरचूक झोरत रहत अंदरनि धैसे । ताहि न अवधिन सुत दारावै उनै भेद कहौ कैसे । जीव मारिके उदर भरतहैं रहत अशुद्ध अनैसे । सूरदास भगवन्त भजनबिन जैसे ऊंट खर भैसे ११६ हरिबिन अपनोको संसार । माया लोभ मोह यों चाढे कालनदी की धार । ज्यों जन संगति होत नाव में रहत न परशे पार । तैसे धनदारा सुखसम्पति बिछुरतलगै न बार । मानुषजन्म नामनरहरिकोपैये नबारम्बार । येतन क्षणभंगुरकेकारण कह करै गर्व गवांर । जैसे अन्धा अन्धकूप में गनत न खाल पनार । तैसेहि सूर बहुत उपदेशहि सुनि सुनि गे कै बार ११७ गर्व गोबिन्दै भावत नाहिं । कैसी करी हिरण्यकशिपु को रती न राखी राखिन माहिं । जगजानी करतूति कंसकी नरकासुर मारेउबलबाहिं । बरुण बिरंचि शक्रशिव मनसिज नरतरणकी मनसा गहिगाहिं । यौवनरूप राजधनधरती जियजानत तैसी जलदकीछाहिं । सूरदासहरिभजेनजेते बिमुख अन्त अन्तकपुर जाहिं ११८ यहि बिधि बहुत जन्म बौरायो । बिमुख भयो हरि चरण कमल तजि मन सन्तोष न पायो । जब जब प्रकट भयो जल थल तब अनेक भांत बपुधारेउ । कामक्रोध मदअन्ध बिषयनितहि रचे अटल अघभारेउ । मृग कपि बिप्र गीधगणिकागज कंस केशि खलतारेउ । अघ बक वृषभ बकी धेनुकहति भवजलनिधि तेनिवारेउ । शंखचूड़ मुष्टिकप्रलम्बमथि व्याधतृणावर्त्ततारे । रजचा-णूरदवन दवनाशन व्यालमथन भवहारे । जन दुखजानियमलद्रुमभंजन अतिआतुरह्वै धाये । गिरिकरधारि इन्द्रमद मर्द्यो दासनसुखउपजाये । रिपु कचदहत द्रुपदतनया जब शरण शब्द करहाई । मृतक जिवाय गुरुके सुतको व्याध परमगतिपाई । नन्द बरुणबन्धनभयमोचन सूर कुटिलशरणाई । किहिमिस भज भगवन्तशरणको सबकोइभईबड़ाई ११९ नाहिंन छांड़त मान मन्दभागी । यहिमति चितवहु रूपधरे भृगु सोई लोभालकलागी । फिर रुचिकरे बेलि बिषयावन भ्रमर बिकल बिषजागी । अतिरुचि अरुणअमल हरिपदनख अम्बुज जलकोत्या-गी । कहि गुणज्ञान ग्रन्थ पचिहारे कछुहू समुझि न आयो । अति कासी अभिमान अन्ध अपमारग स्वादचखायो । नाहिं अनाथ बन्धु

कोऊ मम जिह्वियहबात जनावै। सूर सुदीनदयाल नामले बारबारगु-हरावै १२० मोसोंपतित न और गुसाईं। ये औगुण सोपै कबहूंनहिं छूटे बहुत पचेउ अबताईं। जन्म जन्म हौं रहेउ भ्रमित ह्वै कपिगुञ्जा की नाईं। तापरशतगयो शीत न कबहूं लैलै निकट तपाई। लुब्ध्यो जाय कनक कामिनिज्यों शिशुदेखतजलझाई। जिह्वास्वाद मीनलों डारेउ सुभियो नहीं फँदाई। मुदित भयो सपनेमें जैसे पाये निधिहि पराई। जागिपरे कछुहाथ न लाग्यो ऐसिसूर प्रभुताई १२१ मनवश होत नाहिं जियमेरे। जिह्विवातन तूबहेउ फिरतहै सोइसोइ लैलैप्रेरे। कैसेकरौं कहौंकैसे यश औरहिऔर खचेरे। तुमतो सिलगावतकोठे शिर बैठे देखत नेरे। कहा करौं यह चरेउ बहुत दिन बिन अंकुशहि मुकेरे। अबके सूरदासप्रभु आपुन परोहाथहौंतेरे १२२ ते दिनबिसरि गये यहँ आये। अतिउनमत्त मोह मद छाक्यो फिरत लटैं बगराये। तब तिन दिन निजजननि जठरमें बस्यो बहुतदुख पाये। सोइतू कहो तबहुं तो कौनसँग खानपान पहुंचाये। सोइ चितधरो जु पिता प्राणपति जीयतुजाके ज्याये। सूर सुमृग जो सहत फिरतहै बिषम बिषय शर खाये १२३ ॥ राग केदारो ॥ मेरी कौनगति ब्रजनाथ। भजनबिमुख अरु शरण नाहिंन फिरत विषयिन साथ। हौं पतित अपराधपूरण भरेउ कर्मबिकार। कामकुटिल अरु लोभ चितवनि नाथ तुमहिं बिसार। उचित अपनीकृपाकरहू तऊ जान्योजाय। सोउकरहु जेचरण सेवै सूरजूठनि खाय १२४ ॥ राग मलार ॥ ऐसेइ करत अनेक जन्म गये मन सन्तोष न पायो। दिनदिन दीनदुराशा लागी सकललोक फिरि आयो। सुनिसुनिस्वर्ग रसातल भूतल तहींतहीं उठिधायो। कामक्रोध मद लोभ अग्निते जरत न काहु बुझायो। स्रक्चन्दन वनिताबिनोद सुख जिहुजल जइनि बतायो। मैंअजान अकुलाय अधिककरि जरत माहँ घृतनायो। भ्रमिभ्रमि हौंहारे अबश्रीपति देखिअनल जगछायो। सूरदासपै तुम्हरि कृपाबिन क्यों भ्रमजात गवांयो १२५ ॥ रागधनाश्री ॥ प्रीतम जानिलेहु मनमाहीं। अपने सुखको सबजग बांध्यो कोउकाहू को नाहीं। सुखमें आय सबैमिलि बैठत रहत चहूंदिशि घेरे। बिपति परी तब सबसँगछांड़ैं कोउ न आवैनेरे। घरकीनारि बहुतहितजासों

अरुगीध घूघुआ आयजन्म लियो तैसे । ज्योंलोमरीबिलाउ मोरटक झोरत रहत अंदरनि धैसे । ताहि न अवधिन सुत दाराबे उने भेद कहो कैसे । जीव मारिके उदर भरतहैं रहत अशुद्ध अनैसे । सूरदास भगवन्त भजनबिन जैसे ऊंट खर भैंसे ११६ हरिबिन अपनोको संसार । माया लोभ मोह यों चाढे कालनदी की धार । ज्यों जन संगति होत नाव में रहत न परशे पार । तैसे धनदारा सुखसम्पति बिछुरतलगे न बार । मानुषजन्म नामनर: नबारम्बार । यतन क्षणभंगुरकेकारण कह करे गर्ब गवांर । जैसे अन्धा अन्धकूप में गनत न खाल पनार । तैसेहि सूर बहुत उपदेशहि सुनि सुनि गे के बार ११७ गर्ब गोबिन्दे भावत नाहिं । कैसी करी हिरणयकशिपु को रती न राखी राखिन माहिं । जगजानी करतूति कंसकी नरकासुर मारेउबलबाहिं । बरुण बिरंचि शक्रशिव मनसिज नरतरुणकी मनसा गहिगाहिं । यौवनरूप राजधनधरती जियजानत तैसी जलदकीछाहिं । सूरदासहरिभजेनजेते बिमुख अन्त अन्तकपुर जाहिं ११८ यहि बिधि बहुत जन्म बौरायो । बिमुख भयो हरि चरण कमल तजि मन सन्तोष न पायो । जब जब प्रकट भयो जल थल तब अनेक शांत बपुधारेउ । कामक्रोध मदअन्ध बिषयतिहि रचे अटल अघभारेउ । मृग कपि बिप्र गीधगणिकागज कंस केशि खलतारेउ । अघ बक वृषभ बकी धेनुकहति भवजलनिधि तेनिवारेउ । शंखचूड़ मुष्टिकप्रलम्बमथि व्याधतृणावर्त्ततारे । रजचाणूरदवन दवनाशन ब्यालमथन भवहारे । जन दुखजानियमलद्रुमभंजन अतिआतुरह्वै धाये । गिरिकरधारि इन्द्रमद मर्द्यो दासनसुखउपजाये । रिपु कचदहत द्रुपदतनया जब शरण शब्द करहाई । मृतक जिवाय गुरुके सुतको व्याध परमगतिपाई । नन्द बरुणबन्धनभयमोचन सूर कुटिलशरणाई । किहिमिस भज भगवन्तशरणको सबकोइभईबडाई ११९ नाहिंन छांड़त मान मन्दभागी । यहिमति चितवहु रूपधरे भृगु सोई लोभालकलागी । फिर रुचिकरे बेलि बिषयाबन भ्रमर बिकल बियजागी । अतिरुचि अरुणअमल हरिपदनख अम्बुज जलकोत्यागी । कहि गुणज्ञान ग्रन्थ पचिहारे कछुहू समुझि न आयो । अति कासी अभिमान अन्ध अपमारग स्वादचखायो । नाहिं अनाथ बन्धु

कोऊ मम जिहियहबात जनावै। सूर सुदीनदयाल नामलै बारबारगु-
हरावै १२० मोसोंपतित न और गुसाईं। ये औगुण मोपै कबहूंनहिं
छूटे बहुत पचेउ अबताईं। जन्म जन्म हौं रहेउ भ्रमित ह्वै कपिगुञ्जा
की नाईं। तापरशतगयो शीत न कबहूं लैलै निकट तपाई। लुब्ध्यो
जाय कनक कामिनियों शिशुदेखतजलभाईं। जिह्वास्वाद मीनलों
डारेउ सुझियो नहीं फँदाईं। मुदित भयो सपनेमें जैसे पाये निधिहि
पराई। जागिपरे कछुहाथ न लाग्यो ऐसिसूर प्रभुताई १२१ मनवश
होत नाहिं जियमेरे। जिहिबातन तुबहेउ फिरतहै सोइसोइ लैलैप्रेरे।
कैसेकरौं कहोंकैसे यश औरहिऔर खचेरे। तुमतो सिलगावतकोठे
शिर बैठे देखत नेरे। कहा करौं यह चरेउ बहुत दिन बिन अंकुशहि
मुकेरे। अबकै सूरदासप्रभु आपुन परोहाथहौंतेरे १२२ ते दिनबिसरि
गये यहँ आये। अतिउन्नमत्त मोह मद छाक्यो फिरत लटैं बगराये।
तब तिन दिन निजजननि जठरमें बस्यो बहुतदुख पाये। सोइतू कहो
तबहुं तो कौनसँग खानपान पहुंचाये। सोइ चितधरौ जु पिता प्राण-
पति जीयतुजाके ज्याये। सूर सुमृग जो सहत फिरतहै विषम बिषय
शर खाये १२३ ॥ राग केदारो ॥ मेरी कौनगति ब्रजनाथ। भजनबिमुख
अरु शरण नाहिंन फिरत विषयिन साथ। हौं पतित अपराधपूरण
भरेउ कर्मबिकार। कामकुटिल अरु लोभ चितवनि नाथ तुमहिं बि-
सार। उचित अपनीकृपाकरहू तऊ जान्योजाय। सोउकरहु जेचरण
सेवै सूरजूठनि खाय १२४ ॥ राग मलार ॥ ऐसेइ करत अनेक जन्म गये
मन सन्तोष न पायो। दिनदिन दीनदुराशा लागी सकललोक फिरि
आयो। सुनिमुनिस्वर्ग रसातल भूतल तहींतहीं उठिधायो। कामक्रोध
मद लोभ अग्निते जरत न काहु बुझायो। स्रक्चन्दन बनिताबिनोद
सुख जिहुजल जड़नि बतायो। मैंअजान अकुलाय अधिककरि जरत
माहँ घृतनायो। भ्रमिभ्रमि हौंहारे अबश्रीपति देखिअनल जगछायो।
सूरदासपै तुम्हरि कृपाबिन क्यों श्रमजात गवांयो १२५ ॥ रागधनाश्री ॥
प्रीतम जानिलेहु मनमाहीं। अपने सुखको सबजग बांध्यो कोउकाहू
को नाहीं। सुखमें आय सबैमिलि बैठत रहत चहूंदिशि घेरे। बिपति
परी तब सबसँगछांड़ैं कोउ न आवैनेरे। घरकीनारि बहुतहितजासों

रहत सदा सँगलागी। जब इनहंस तजी यहकाया प्रेत२ कहिभागी। याबिधिको व्योपारबन्यो जग तासों नेहलगायो। सूरदास भगवन्त भजनबिन नाहकजन्म गवाँयो १२६ सोप्रभु मेरेहिदोषनिवारे। किये अपराध अनेकजन्मके नखशिख भरे बिकारे। धरणीपात सिंधुजल पूरण गिरि कज्जल मसिडारे। सुरतरुवर की शाखा लैकरि लिखत शारदा हारे। पतित पावन हरि नाम तुम्हारो वेद बखानत चारे। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को करत फिरत हेरि हारे १२७ हरि बिन मीत नहीं कोउ तेरे। सुनि मन कहत पुकारि हौं तोसों भजि गोपाल कह मेरे। या संसार विषय विष सागर रहतसदा सब घेरे। सूरदास प्रभु अन्त काल में इनबिन कोउ न आवतनेरे १२८ दीनको दयाल सुन्यो अभय दान दाता। सांची तुम्हारी बिरदावलि जक्त के पितु माता। व्याध गीध गज गणिका इन में कोऊ ज्ञाता। सुमिरत तुम तबहीं आये त्रिभुवन बिख्याता। कंस केशि दुष्ट मारि मुष्टिक कियो घाता। अपने ध्रुवकाज राज कैतिक यह बाता। तीन लोक बिभवदियो तन्दुलके खाता। सर्वस प्रभुरीझि देत तुलसी के पाता। सूरजेहि त्यागिमांगि तनमन अनुराता। अपनी प्रभु भक्तिदेत जासों आननाता १२९ करे गोपालके सबहोय। जे अपनो पुरुषारथ मानें अतिही झूंठोसोय। साधन मंत्र यंत्र उद्यमबल ये सब राखेधोय। जो कछुलिखि राख्यो नँदनन्दन मेटिसकै नहिंकोय। दुखसुख लाभअलाभसइज तुम कतहु मरतहौ रोय

चरण मनपोय १३० ॥ रागमलार ॥ आंधरेकी दई चलावै। नाहिंन पूतपिता समकोऊ जलमें शैल तरावै। जो अरिकोटि होयँ बहुतेरे कोन सीर सरपावै। जाहि सहाय होय श्रीपतिको बिनुहीं बयाई ध्यावै। काहेको चिन्ताचित कीजे जो चरणन चितलावै। संकट सूर सहाय होय प्रभु बसन प्रवाह बढ़ावै १३१ ॥ रागबिलावल ॥ जहां जहां सुमिरे तुमजेहि बिधि तहींतहीं उठिधायेहो। दीनउधारण भक्त कृपानिधि वेदपुराणनि गायेहो। सुत कुबेरकेमत्त विषयमद नयननि छायेहो। द्विजके शापते भये यमल तरु तिहिलगि आपु बँधायेहो। परममलीन दीन द्विज देखत ताकेतन्दुल खायेहो। देसम्पति वाकी

पलोके मनअभिलाष पुजायेहो। कलानिधान सकलगुण सागर गुरु धौं कहा पढ़ायेहो। तिहिउपकार मृतकसुत यांचे ते यमपुरते ल्याये हो। कतमोसे अपराधी माधव कोतिक सुगति पठायेहो। सूरदासप्रभु करुणासागर पावन बिरद कहायेहो १३२॥ रा० आसावरी॥ सोइप्रभुकरो कछु दीनदयाल। जाते जनसरण चरण न छांडै करुणा सागर भक्त कृपाल। इन्द्री अजित बुद्धि विषयेरत मनकी अनुदिन उलटीचाल। कामक्रोध मदलोभ महाभय अहर्निशि नाथ रहत बेहाल। योगयज्ञ जपतप तीरथ व्रत इनमें एको अंग न भाल। कहाकरों किहि भांति रिझाऊंहों तुमको सुन्दर नँदलाल। सुन समरथ सर्वज्ञ कृपानिधि-अशरण शरण हरण जगजाल। कृपानिधान सूरकी यहगति कासों सपन कहै यहिकाल १३३॥ राग धनाश्री॥ गुसाईं दीनके दयालसुनो परम दानिदाता। जाकी यह सांची बिरदावलि भक्तनके पितुमाता। कंसकेशि मुष्टिक मुर मधुकैटभ घाता। धाये गजराज काज केतिक यहबाता। गणिका द्विजब्राध्य अधम इनमें कोउज्ञाता। आनकहत नाथ कहेउ जान्यो नहिंजाता। गौतमकीबामतरी तनकु परशताता। और कुटिल तारितारि कहाहौं गर्बाता। रीझिदेत सर्बस तुम तनक तुलसि पाता। कहाभयो दोउलोक दये तन्दुलके खाता। मांगत है सूरत्यागीजिहिं तनुमनुराता। अपनो प्रभु भक्तिदेहु जासों तुमनाता १३४ रा० गौरी॥ अबमोहिँ शरण राखिलेहु नाथ। कृपाकरो जुगुरुजन पठये वहै जातनहिँ हाथ। अहंभावते तुम बिसराये इतने झूठे साथ। परेउ जु भवसागर प्राकृतबश बांध्यो फिरेउ अनाथ। भ्रमित भयो जैसे मृग चितवत देखिदेखि भ्रमपाथ। जन्मत लिख्यो सन्तकी संगति कहेउ सुन्यो गुणगाथ। कर्मधर्म तीरथबिनु राधन ह्वैगये सकलअकाथ। अभय दानदै अर्पन भुजाधरि सूरदासके माथ १३५॥ रागसारंग॥ मेरीजिय ऐसी आनिबनी। छांड़ि गोपाल और जो सुमिरौंतौ लाजैजननी। मन क्रम बचन और नहिँ चितवौं जबकब प्रयासबनी। विषको मेरु कहा लै कीजै अमृत एककनी। कहलैकरौं कांचको संग्रहत्यागि अमोलमनी। सूरदास भगवन्त भजनको तजीजाति अपनी १३६ अन्त के दिन को है राम। मातापिता बन्धुसुत तौलग जौलगु जियको काम। आ-

मिय रुधिर अस्थिअँग जौलों जौलों कोमल चाम। तौलगु यह संसार सगोहै जौलगुलेहि न नाम। इतनी जो जानत मनमूरख मानत याही धाम। छांडि न कहत सूरसब भवडरु वृन्दाबनसों ठाम १३७॥ रागगौरी॥ मोहनके मुखऊपर वारी। देखतनयन सबैसुख उपजत बार बार ताते बलिहारी। ब्रह्माबाल बछरुआ हरिगये सो ततक्षण सारिखेसवांरी। कीन्होकोप इन्द्र बरषाऋतु लीलालाल गोबर्द्धनधारी। पांडव जरत देखि पुरुषोत्तम प्राणनाथ द्रौपदी पुकारी। तीनलोकके तापनिवारण सेवक सूरश्याम सुखकारी १३८ हरिदासनकी सबै बड़ाई। अम्बरीष हित द्विज दुर्बासा चक्रछांडिके कूपपराई। दानवदुष्टअसुरको बालक ताहित सबमर्यादा ढाई। भक्तराज कुन्तीके सुतहित रथचढ़ि आपुन लीनिलड़ाई। शिवब्रह्मा जाको बरदीन्हो अन्त सबनिकोखोजकढ़ाई। हरिपद कमल प्रतापतेजते ध्रुवपदवी लैशिखर चढ़ाई। अजामील गणिकारत द्विजसुत सुत सुमिरत यमत्रास पड़ाई। गजदुख जानितबहिं उठिधाये ग्राह सुखनिते बिपति छिड़ाई। सब आंगिरस देव यजनको कर्मग्रंथि द्विजसकल मिटाई। नारी ब्रजपति नासनेह सुनिरसना ना अर्पणको धाई। कौरव राजपंथ रचनाकरि श्रीपतिको शोभा दिखराई। आपुन बिदुर सदन पगुधारे सदाबभाव साधु सुखदाई। सकल लोक कीरति सचिगावै हरिजन प्रेमनिशान मढ़ाई। कहँ लौं कहौं कृपासागरको सूरदासजाहिन सुघराई १३९ तुम्हरो सकबड़ी ठकुराई। प्रतिदिन जनजन कर्म सवासन नाम हरे यदुराई। कुसुमित धर्म कर्म कुमारग जेकोउ करत बनाई। तदपि बिमुख पांती युग नीयत भक्ति हृदय नहिँ आई। भक्तिपन्थमेरे अतिनियरी जब तब कीरति गाई। भक्तयधिकार सूरलखि पायो भजनछाप नहिं पाई १४०॥ रागधनाश्री॥ ऐसे भगवन्त भक्त हितकारी। जहांजहां जिहिकाल सँभारे तहँतहँत्रासनिवारी। धर्मपुत्र जबयज्ञ उपायो द्विजमुख होइपनु लीन्हो। अश्वनिमित्त उत्तरदिशिके पथ गमन धनंजय कीन्हो। अहिपति सुता सुवन सन्मुख ह्वै बचन कहेउ यकहीनो। पारथ बिमल बभ्रुबाहन को शीशखिलौनादीनो। इतनीसुनत कुन्ति उठिधाई बरषतलोचन नीर। पुत्र कबन्ध अंकभरि लीनो धरत न क्षण यकधीर। लैलैशोश हृदय

लपटावत चुम्बति भुजागँभीर। त्यागतप्राण निरखि शायकअनुगति गति विकल शरीर। ठाढे भीम नकुलसहदेवा अरु भूपति सब विष्णु समेत। पौढेकहा समर शय्यासुत उठिकिन उत्तरदेत। कथितभये कछु मंत्र न फुरई कीने मोह अचेत। पारथ बैठि बन्धुको गर्भहि फुरई हों कुरुखेत। काको बदन निहारि द्रौपदी दीनदुखी संभारि हैं। काकी ध्वजा बैठि कपि किलकहि किहि भय दुर्जन डरि हैं। काके हित श्रीपति यहँ ऐहैं को संकट रक्षाकरिहैं। को कौरव दल सिन्धुमथन करि या दुखपार उतरिहैं। चिन्ताहानि चितै अन्तरगति नागलोक को धाये। पारथ शीश शोधि अकुल तब यदुनन्दनलाये। अमृत गिराबहुबरषि सूरप्रभु भुजगहि पार्थ उठाये। अश्वमेध बभ्रुवाहन सौं सुफलयज्ञ हितआये १५१ अधमकोजु देखी अधमाई। तुमत्रिभुवन-पतिनाथ हमारो मोपैकही न जाई। जबते जन्ममरण अन्तरहरि करत न अघहि अघाई। अजहूं लौं मनमगन कामरत विपरीत नहिं उपजाई। परमअज्ञान तजि नहिं जड़मति यहबड़ि मूरखताई। पांचौ देखि ठलेहैंठगु हठहि ठगोरी खाई। स्मृति वेदपंथहरिपुरके तातेदियो भुलाई। कंटककुटिल कर्वनिकाननमधु सोतोदियोदिखाई। अब कहु कहीं सबै जानतहौ मेरीकुमति कन्हाई। सूरपतितको नाहिंकहूं गति राखिलेहुशरणाई १५२ ते जन चाहैं कृपातुम्हारी। जिनकेवश अनेक अनर्मिषगण अनुचर आज्ञाकारी। सुनियुतरहे सतश्रुतिसार। जेमत तुमको जननि प्रकट्योजानि जगआधार। विपुल विथा विलास मन गतिमोह तनजंजार। नजतिभ्रम श्रम शोक दुखसुख क्षमाचरणाधार। और अखिल उपाय अनुदिन यागव्रत तप दान। सूरदास अनेकविधि नहिं चरण भजन समान १५३ अपने को कौन आदर देय। ज्यों बा-लक अपराध कोटिकरै मात न मारैतेय। ते बेली कैसे दहियतहैं जे अपनेरस भेय। श्रीशंकर बहुरतन त्यागिकै विषहिकंठ लपटेय। माता अक्षत क्षीर बिनु सुतमरै अजाकंठ कुचसेय। यद्यपिसूर महापतित है पतितपावन तुमतेय १५४ ऐसेमाधवमीतहमारे। सदा सहाय कियो सुख दीयो संकट हुये रखवारे। जिन लाक्षा गृह जरत उबारे द्रौपदि लाज निवारी। बसन प्रवाह बढेउ अम्बर ते जब काहि नाथ पुकारी।

जिन भारत पारथ रथ हांक्यो द्विजहि प्रतिज्ञा कीनी। टूटत बज्र बाणावलि छूटतपीठि आनि प्रभु दीनी। आपुन करतहरत पुनि आपुन और न दूजो कोई। रथ पर बैठि बट प्रत्र शयनकरि प्रलय करतहैं सोई। ते कछुकरि अभिमान आपनो बोल्यो बचनअनेरो। तातेसूर प्रभु बलकरि राख्यो गर्वप्रहारेउ तेरो १४५ ॥ रागभैरव ॥ ऐसेहि बसिये ब्रजकीबीथनि। साधुनके पनवारे चुनिचुनि उदर जु भरिये सीथनि। पैंडेसेके बसन बीनितन छाया परम पुनीतनि। कुंजकुंजतर लोटि लोटि रचि रजलागे रंगीतनि। निशिदिन निरखि यशोदा नन्दन अरुयमुना जल पीतनि। दर्शन सूरहोत तन पावन दर्शन मिलत अतीथनि १४६ ॥ रागआसावरी ॥ हरिजू मोसों पतित न आन। मनक्रम बचन पाप जे कीन्हे तिनको नहीं प्रमान। चित्रगुप्त यमद्वार लिखत हैं मेरे पातक झारि। तिनहूं त्राहि करी सुनिये गुणा कागद दीन्हेडारि। औरन को यमके अनुशासन किंकर कोटिक धावैं। सुनि मेरो अपराध अधमई कोउ निकटनहिं आवैं। हौं ऐसो तुम वैसे पावन गावतहैं जे तारे। अवगाहो पूरण गुण स्वामी सूरसे अधम उधारे १४७ ॥ रागसारंग ॥ अब हौं हरि शरणागत आयो। कृपानिधान सुदृष्टिहेरिये ये पतितन अपनायो। ताल मृदंग पांच इन्द्रिन मिलि बीणा बेणु बजायो। मन मेरे नट के नायक उन तिनहीं नाच नचायो। उघट्यो सकल संगति भवसागर अंगनअङ्ग बनायो। काम क्रोध मदलोभ मोहके तान तरंगन गायो। सूर अनेक देहधरि भूतल नानाभाव दिखायो। नाच्योनाच लक्षचौरासी कहूं न पूरो पायो १४८ ॥ राग जेतश्री ॥ अबहौं सब दिशि हेरि रहेउ। कोऊ नहिं राखत करुणामय अतिबलग्राह गहेउ। सब स्वारथी असुर सुर नर मुनि कत श्रम आनि करे। तारण उदित तिमिर नहिं नाशै बिनरवि रूपधरे। इतनी सुनिआये कमलापति निजकर चक्रलये। हति गजग्राह सूरके स्वामी सब सुख आनि दये १४९ ॥ राग धनाश्री ॥ कहै शुक श्रीभागवत बिचारि। हरि की भक्ति युगहि युग बरधे और धर्म दिनचारि। चिन्तातजो परीक्षितराजा सुनिशिष सांच हमारि। कमलनयन की लीलागावत टरिगये नेक बिकारि। सतयुग सत त्रेता तपकीनो द्वापर पूजा चारि। सूरभजन या कलि में

कीजै लज्जया कानिनिवारि १५० ॥ राग जंगला ॥ तुम्हारोकृत्या कहत कह जात। बिछुरे मिलन बहुरि कबऐये ज्यों तरुवर के पात। प्रीत बात कफ कंठविरोध्यो देखतजननीजात। सगायक माहिं कोटियुग बीतत नरकी कितनीबात। यह जगप्रीति सुआ सेंवर ज्यों चाखतही उडिजात। सूरदास ओछेजीवनको काहेकोइतरात १५१॥ रागबिलावल॥ गोबिंद भजन करो यहि बार। शंकर पार्वती उपदेशत तारक मन्त्र अपार। अश्वमेधयज्ञ जो कीजै गयाश्राद्धकाशी केदार। रामनाम सर तेउ न पूजो ज्यों तनगारेहै मार। सहसवार जीवतहै बरसों चक्रव्रत रजधार। सूरदास भगवन्त भजन बिन होत यहै यमद्वार १५२ रे मन सुमिरि हरिहरि। सतयुग माहिं नामसार परतीतकरिकरि। हरिनाम हरणाकुशबिसारो उठोबरबरबरि। प्रह्लादहेत जनअसुर मारेउ नाहिं डरडरडरि। गज गीध गणिका व्याधके अघ गये गिरिगिरिगिरि। चरणअम्बुज बुद्धिभाजन जल भरिहिभरिभरि। द्रौपदीके लाजकारण दावपरपर परि। पांडुसुतके बिघ्नटारे गये टरि टरि टरि। करण दुर्योधन दुशासन शकुनिअरअरअरि। सुतहेत अजामिल नामलीन्हो गयो तरतरतरि। चारिफल के दानिहैं प्रभुरहे फरफरफरि। सूर श्री गोपालहिरदय राखि धरिधरिधरि १५३ ॥ राग धनाश्री ॥ बिचारतही लागे दिनजान। सजलशरीर काकही दीनो कोमल केहिबिधि राखे प्रान। योग न यज्ञ ध्याननहिं सेवा सतसंगति नहिंज्ञान। जिह्वा स्वाद बिषयके कारण आपघटे दिनमान। औरउपाय नाहिं रे बौरे सुनतो यह देकान। सूरदास अब होत बिलम्बन भजले शारँगपान १५४ ॥ राग धनाश्री ॥ अब मैं जानी देहबुढ़ानी। शीश पांवधरि कह्यो न मानै तनकीदशासिरानी। आनकहत आनेकहिआवत नयननाकबहेपानी। मिटिगइ चमकदमक अँगअँगकी गई जुमति हेरानी। नाहिंरहीकछु सुधि तनमनकी हैहैं बातबिरानी। सूरदासप्रभु अबहिं चेतलो भजले शारँगपानी १५५ मन तोसों केतिकही समुझाई। नँदनन्दनकेचरण कमलभजि तजि पखंड चतुराई। सुख सम्पति दारा सुत हैं जग झूठ स्वप्न समुदाई। क्षण भीतर येते वे श्याम बिन अन्त नहीं सँग जाई। जन्मत मरत बहुत युग बीते अजहूं लाज न आई। सूरदास भगवन्त

भजनबिन झूठेजन्म गँवाई १५६ ॥ राग बिलावल ॥ जेहितन हरिकेभजन कियो । यहलोक परलोक सुफलहोताको धन्यजियो । सन्तसमागम श्रीगुरुसेवा अमृतरस जो पियो । सूरदास धनिभागताहिके हरिचरणनचितदियो१५७ ॥ रागमारू ॥ अवसर हारेउ रे तेहारो । मानुषजन्म पाय नरबौरे हरिको भजनबिसारो । रुधिर बूंदते साजि कियो तन सुन्दररूपसँवारो । जठरअग्नि अन्तर ऊरधमुख जिनदशमासउबारो। अन्ध अचेत मूढमति बौरो सो प्रभु क्यों न सम्हारो । पहिरिपटम्बर करिआडम्बर यहतन हठ शिंगारो। काम क्रोध मद लोभ त्रियारति बहुबिधि काजबिगारो । मरण बिसारि जीवनहिं जान्यो बहु उद्यम जियधारो । सुतदाराकेमोह अँचैविष हरिअमृत फलडारो । झूठसांच करि मायाजोरी रचिरचिभवनउसारो । कालघरी पूरणभइजादिन तनहो त्यागि सिधारो । प्रेतप्रेत तेरोनाम परेउनट भारीबांधिनिकारो । जेहि सुतकेहित बिमुख गोबिन्द ते प्रथमें मुख जिनजारो । भाई बंधु कुटुम्ब सहोदर सबमिलि यहै बिचारो । जैसे कर्म तहो फल तैसे तिनको तोरि उखारो । सतगुरुको उपदेश हृदयधरि जिनदुखसकल निवारो । हरिभजु बिलँबछांड़ि सूरजप्रभु ऊँचे टेर पुकारो १५८ ॥ राग बिलावल ॥ भृङ्गरि भजु चरणकमलपद जहँ निशि को नहिं त्रास । जबबिधुभान समानएकरस सूरजरिज सुखरास । जहँ कंजलजा भक्ति होत नहिं लक्षण काम ज्ञान रसअङ्ग । निगम संग सुख शारद नारद भँवर सुभृङ्ग अनंग । शिव बिरंचि खंजन मनरंजन क्षण क्षण प्रकट प्रवेश । सुनुमधुकर भ्रम त्यागि कुमुन्दन नाहिन तहँ राकेश । सहसन्न क्रीडा करत रमायुत कोटिक सूर्यप्रकाश । सूरजप्रभु सुगंधमें प्रफुलित तहँचल करिये बास१५९ ॥ रागबिहागरो ॥ भजु मन चरण संकटहरण । सनक शंकर ध्यान ध्यावत निगम अशरण शरण । शेष शारद कहें नारद सन्त चिन्तत चरण । पद पराग प्रताप दुर्लभ रमा वोहित फ- रण । परशगंगाभई पावन तिहूंपुर धरधरण । चित्तचेतन करत अन्तः करण तारण तरण । गयेतारि लै नाम केतेसंत हरिपुरधरण । जासु पदरज परशि गौतम नारिगति उद्धरण । जाकि महिमा प्रकट कहत न योय पर्णायिर धरण। सोई कृष्णपद मकरंद पावत और नहिंशिर

परण। सूरप्रभु चरणारबिन्दते मिटै जन्म औ मरण१६०॥ रागबिलावल॥ जादिन सन्त पावने आवत। तीर्थ कोटि अस्नान करन फल जैसो दर्शन पावत। नित बिनोद दिन दिन प्रति उनके चरणकमल चितलावत। मनबच कर्म और नहिंजानत सुमिरत औ सुमिरावत मिथ्या बाद उपाधि रहतहीं बिमल २ यश गावत। सूरजदास भक्ति कर तिनके जे हरि सुरन करावत १६१॥ रागबिहागरो॥ गर्बगोबिन्दहि भावत नाहीं। केशी करि हिरण्यकश्यप सों प्रकटहुये सण माहीं। जगजानै करतूतिकंसकी वृषभासुर मारो पलमाहीं। ब्रह्मा इन्द्रादिक पहिंचाने गर्ब आदिके माहीं। यौवनरूप राज धन धरती जैसे जलद कि छाईं। सूरदासहरि भजो गर्बतजि बिमुख अगतिको जाईं १६२ सुनिनृप लारयो करनबिचार। झूठेनाते जगतकेसुत कलत्र परिवार। चलत न कोऊ संग चलैगो मोरिरही मुख नारि। गाढे आवतकाम रामही देखो सूर बिचारि १६३॥ रागझँझोटी॥ जादिन मनपंछी उड़िजैहैं। तादिन तेरेतनु तरवर के सबैपातझरिजैहैं। या देहीको गर्ब न करिये स्यार काग औगिद्धखैहैं। तीननामतन बिष्ठाक्रमि ह्वै नातन खाक उड़ैहैं। कहँवह नीर कहां वह शोभा कहँ रंगरूप दिखैहैं। जिन लोगनसों नेहकरतुहैं तेही देखि घिनैहैं। घरके कहत सवारे काढो भूत होय धरिखैहैं। जिन पुत्रनहिं बहुत प्रति पालेउ देवीदेव मनैये। तेइले बांसदियो खोपरी में शीशफाट बिखरैये। अजहूं मूढ़करोसतसङ्गति संतनमें कुछपैहै। नरबपु धरन जननहीं हरिको यमकी मारणखैहै। सूरदास भगवन्त भजनबिनु वृथासुजन्म गँवैहै १६४॥ रागकान्हरो॥ धनिशुक मुनि भागवत बखान्यो। गुरुकी कृपाभई तबपूरण तबरसना कहि जान्यो। धन्यश्याम वृन्दावन को सुखसंतन यातेजान्यो। जो रस रासरंग हरिकीन्हो वेदनहीं ठहरान्यो। सुरनर मुनि मोहित सब कीन्हें शिवहि समाधि भुलान्यो। सूरदास तहँनयनबसाये और कहूं चितनहिंठान्यो १६५ अबिगति गतिकछु कहत न आवै। जो गूंगो मीठे रसको फल अंतरगतहीभावै। परमस्वादसबसों निरअन्तरअमित तृप्ति उपजावै। मनमाने को अगम अगोचर सो जानै सो पावै। यहै हिये सूरजप्रभु सगुणलीला पदगावै १६६॥ रागबिहागरो॥चौ-

परि जगत गईयुग बीते। गुणपांसा कसअंगदशा चौसरि न कबहूं जीते। दिशफर चार मनोरथ घरफिरि फेरिफेरि गुण आवै। काम क्रोध मिलि लोभके संगम खेलत हारि न पावै। मातगर्भ स्थिति पाइपिता दशमास उदरसे डारै। जनमछठी छक और बधाई दुइछक दुइपुनिपारै। मुण्डनकरनबेध व्रतबंधबिवाहगवनगृहबासी। आलिंगन चुम्बन परिरंभन नखछत चारु परस्पर हांसी। केतकि करणाबेलि चँबेली सुमन सुगन्ध सिंचाये। रचहि तलप निशिभोग चतुरसम बहुत एकादश पाये। उर परशत सबअंग बिलोकत क्रीडत सुखसुख जीके। चोलीचीर अलक भूषण फिरि साजतपिय भवनी के। नख शिख साजिशृंगार सकल त्रिय सुन्दर बदननिहारत। बिबिध बिलास सकल कौतुकरस छदश अंकभरि डारत। यौबनमद जनमद मादकमद धनमद बिधमद भारी। कामबिबश परनारि भजत दुइ पंचशरहि फिरि मारी। पौरि पगारि महल मन्दिर रचि राजत अंग अटारी। भीतर भवन विचित्र बिराजत पंचदुवा दशद्वारी। अश्वी बगाज श्यो-हार ग्रामपति हय बांधत दरहाथी। करि अभिमान हरीसों बेमुख संग नहीं कोउ साथी। रतन रजत कंचन मुक्तामणि माणिक संचित कँसिकँसि। छह सुनि गुणन छहो रस बिलसत कहत अठारह हँसि हँसि। परिवाते पंचमी दशमि कहुं पोतदका नित कीन्हा। पंजा तीनिपरे नीकीबिधि बिप्रति भोजन दीन्हा। स्वजन सम्बधि परिवार दासदासीजन सबको हितकारी। दाव घाव गति देखि करति रति पंजा पारत न्यारी। संध्या तिमिर इन्दु दुविधा दुइठोक निगम पथ चालत। श्रवण पुराण शिला तुलसीदल पूजित दुखितहि पालत। पंचबरष दशबरष औरछक युगखेलहु खिलवारी। शिशुगइ जीतकि-शोर कालहति मनुकांची कारिडारी। पुनि पौछक चौरी छक पंजा साजि सारिसँख फोरेउ। तिलनेदाउँ बहुरि फिरिखेलो तरुणबिरधयुग जोरेउ। अमावस पूनोंसंक्रांति ग्रहण द्विजकर प्रभवोमेलत। एकादशी द्वादशी संयम कछुदेत छकखेलत। मंगल बुधगुरु शुक्रभान शशिशांति करत ग्रहनीके। राहुकेतु चन्द्रमा सुसंयुत छतन परत हितजीके। सैन उठान असदविना जन उपवासन तनसाधे। दुई चौदशी जनम निशा

शिव पांचचारि मनबांधे। द्वारावती गोमती पुष्कर तीर्थ प्रयाग अन्हाये। गई न मनकी कठिन मलिनता कहाभयो भ्रमिआये। बारह बन ब्रजके परिदक्षिण पंचद्वादशे पेयत। जपतप संयम नेम धरमव्रत करिकरि कष्ट सकेलत। लोचन श्रवण त्वचा ऐजारें सर्बस कानहिं कांधे। बुधिबुधि सुमति सुरंजगई दशनिब जुराजुग बिधिबांधे। धरत चरण निरलरत लकुटले चलन नवल कइ कांपत। कासस कफ कस्तन गिरिधरधुक तदाबिछुरत भायत। सुतबनिता हित पांचो नेह्न नाते सबहीं टूटे। दावकुदाव परे दुइपंचत जोरामिलु युगफूटे। बालक तरुण बिरध अबजर जितिसारी ढिगढारी। सूरसकथों नामबिनानर फिरि फिरि बाजीहारी १६६ ॥ रागधनाश्री ॥ जन्मगँवायो उठायबाई। भजेचरण श्यामसुन्दरके रहेउबिलोकत झाई। धन यौबनमद ऐंडेइ ऐंडोताकत फिरेपराई। लालचुलुब्ध श्वान झपटन ज्यों तेऊ हाथ न आई। रंचकरचि सुखकांच लागिकत कंचन राशि गँवाई। सूरदास प्रभु छांडि सुधारस मरतबिषय बिषखाई १६७ सो कहाज़ु मैं नकियो जे चितवरिहो। पतितपावन बिरद प्रकटको निर्पाति करिहो। जननी अठराह सुचित तिनको दुख दीन्हो। सुधि तेल तमार गतिहि अपने गवन कीन्हो। जबते जग जन्म पाइ जीवनामु कहायो। तबते मोहिं औगुणगभको औरनकहा आयो। असत संगत स्वादलम्पट कपटी गुरु द्रोही। जेते अपराध काहि अन्तलागत सबमोही। सुकृती शुचिसेवक रुचिकहि न जीवभावे। प्रभुको प्रभुतावहै जुदीन शरणापावै। श्यामसुन्दर कमल नयनसकल अन्तरयामी। बिनतीकहो कौन सूरकूरकुटिलकामी १६८ राग सोरठ॥ ज्यों प्रभुमेरो दोषबिचारो। कियोअपराध अनेक जनम भरि नटवर रूप धरेउ अधिकारो। पुहमीपयसिंधु मसि करिके गिरिकंचन मिलिगारो। सुरतरवरकी शाखालेखनि लिखत शारदा हारो। पतित उधारन बिरद बिदित जग वेदपुराण पुकारो। सूरश्यामहो पतितशिरोमणि तारिसको तौतारो १६९ ॥ रागधनाश्री ॥ जनम तो ऐसेहि बीतिगयो। जैसेरंक पदारथपायो लोभबिसाहिलयो। बहुतकजन्म पुरीषपरायण शूकर श्वानभयो। अबमेरी मेरीकरि बौरे बहुरो ——— । नरकोनाम पारगामीहो सोतुहिँ श्याम ———

नारिकेलि कपिकर ज्यों पायोनाहिं पयो। रजनीगत बासर मृगतृष्णा में हरिको न बयो। सूर नन्दनन्दन जिनिबिसरेउ आपुहि आपहयो १७०
अब मोहिं भीजत क्यों न उबारो। दीनबन्धु करुणानिधि स्वामी जन के दुःखनिवारो। ममताघटा मोहकीबुन्दै सलितामें न अपारो। बूड़त कबहुँ थाहनहिं पावत गुरुजन ओटअधारो। गरजत क्रोधलोभकेनारो सूझत कहुं न उधारो। तृष्णातड़ित चमंकि संगाहीं क्षण यह निशि यहतन जारो। यहभव जल कलिमलहि गहेहै बोरत सहस पुकारो। सूरदास पतितनको संगी बिरदहि नाथसम्हारो १७१ ॥ रागटोड़ी ॥ गोबिंदपदभजु मनबच क्रमकरि। शुचिशुचि सहस समाधिसाधिशठदीनबंधु करुणामय उरधरि। मिथ्याबाद बिबाद छांड़ि शठ बिषय लोभ मदमोहै परिहरि। चरण प्रताप आनि उरअन्तर और सकलसुखया सुत तरहरि। वेदनिकहेउ समृति इमिभाष्यो पावन पतित नामहैनिज हरि। जाके सुयश सुनत अरु सुमिरत जैहैं पाप वृन्द तजि नरहरि। परम उदार श्यामसुन्दरबर सुखदाता सन्तनहित हरिधरि। दीनदयाल गोपाल गोपपति गावतगुण आवर्तहिग दरहरि। अजहुँ मूढचेतै चहुं दिशितै उपजीकली अगिनि झकझरहरि। जबयमजाल पसारि परैगो हरि बिनु कौनकरैगो धरहरि। सूरकाल बलव्याल ग्रस्यो जिनि श्री पतिचरण परहिंकिनि फरहरि। नाम प्रतापआनि हृदयमहँ सकल बिकार जाहिंसब टरहरि १७२ ॥ रागपुरीया धनाश्री ॥ अब शिरपरी ठगौरी देव। ताते बिबशभयो करुणामय छांड़ि तिहारी सेव। माया मन्त्र पढ़त मन निशिदिन मोह मूरछा आवत। ज्यों मृगनाभि कमल तजि अनुदिन निकट रहत नहिं जानत। भ्रमसद मलकामी तृष्णारस बेग न क्रमैगहेउ। सूरएक पलगहरु न कीन्हो कहियुग इतै रहेउ१७३ माया देखतही जुगई। नाहरि हित नहिं तूहित इनमें एकौ तो न भई। जो मधु मायो सर्बनिरन्तर बनकी ओटलई। ब्याकुलहोतहरेज्यों सरबर आंखिन दूरिदई। सत सन्तान सजन बनिता रति घन समानउनहीं। राखे सूर पवन पायगडहात करिजो प्रीति नहीं १७४॥ रागआसावरी ॥ वृथाही जन्मलियो संसार। कबहू भक्ति न कीन्ही हरि की बिषय लिये शिरभार। युगयुग जपतप नाहीं कीन्हे अल्प मिती आसार।

प्रकटे नर नहिं दुर्ल्लभ पाये जन्म यश हार। कामक्रोध मदलोभ मोह में हों निशि दिन रहो जार। सूर हरिको सुयश गावहु जाते मिटहि भवभार १७५ ॥ रागधनाश्री ॥ काया हरिके काम न आई। भावभक्ति जहँ हरियश सुनियत तहांजात अलसाई। लोभ उतर ह्वै कामसनोरथ तहां सुनत उठिधाई। जबलग श्याम अङ्ग नहिंपरशत अन्धे ज्यों भरमाई। सूरदास भगवन्त भजनबिन विषय परम बिषखाई १७६ ॥ राग सोरठ ॥ ऐसी मूढ़ता या मनकी। परिहरि नाम भगत सुरसरिता आश करत आसनकी। योग कसौटी फटिकमें कांडीमान सनायो तनकी। टूटत दशन न जानत री रसमयी अतिहि छबि अंगनकी। धूम समूह निरखि चाह क ज्यों तृषाहोत अतिघनकी। नाहिंन तहँ शीतलतादेखत हानिहोत लोचनकी। कहलों कहौं कुचाल आपनी जानतहो गति जनकी। सूरदास प्रभुहरहु दुसह दुख लाजकरो निजपनकी १७७ ॥ राग केदारो ॥ तुमहिं अछत कहा दुखदयाल। दीनजानिके हरत नाहिंने कहा जिये बहुकाल। सत छूटे धन धर्मगँवायो कहादिये सांशालाल। कनक मांगि तप छिजित दिनैंदिन हारे रटत बिहाल। सूरश्यामको करौ निहोरो चलत वेदकी चाल १७८ ॥ रागधनाश्री ॥ मोते औरकौन है पापी। घातक कुटिल चबाई कपटी लोभमोह सन्तापी। लम्पट धूत पूत कौडीको विषय बास जब आपी। दुसहकर्म कीन्हे निशि बासर कटुक बचन आलापी। सबमिक अपयश्च पकहो करि न लालसा बापी। यकमति बारमुखिन के सँगमें गमनओर मनव्यापी। जितने पतित पधारे सुमिरत तिनकी गतिमें मापी। सागरसूर बिकार भरेउ जैसे ब्याध अजामिल वापी १७९ तुमतजि भूल्योभूल्यो डोलत। लालचलगे कोटि देवनके फिरत कपाटन लोलत। ज्यों तजि सर्बस कीन्हे चाहे तब लग दुहूंकी प्रीति। फल मांगत ही हेत सुकर सुख यहदेवन की रीति। तजि कञ्चनहिं कांचमणि अनुचित या माया के लीन्हो। चारिपदारथको प्रभुदाता सोउ बिसर्जनकीन्हो। तुमकृपाल करुणामय केशव अखिललोक के नायक। सूरदास फिरि दृढकरि पकरे अब ये चरण सहायक १८० ऐसेहि जन्म बहुत बौरायो। बिमुखभयो हरि चरणकमल तजि मन सन्तोष न पायो। जबजब प्रकट

किये जल थल तबतब अनेक बपुधारे। काम क्रोध मद लोभ महा-तम रचे अटल अघभारे। प्रकटे बिप्र गीधगणिकाका गजकोधि कंसखल तारे। अघ बक वृषभ बकी धेनुकहति द्यालहरण दुख टारे । शंख चूड़ मुष्टिक प्रलम्ब बधि तृणावर्त संहारे । कालीदमन पियो दावा-नल भवजल जलधिउबारे। जनदुख जानि युगल द्रुम भंजन अति आ-तुर ह्वै धाये। कर गिरिधरि बासव मदमर्दन सन्तन सुख उपजाये। रिपु कचगहत द्रुपदतनया तब शरणशरण कहि भाखी। पांडवबधू द्रुपदतनया की सभामांझ पति राखी। मृतक जिवायदियो गुरुको सुत व्याध परम गतिपाई। नन्द बरुण भवबन्धन मोचन सूरपतित शरणाई १८१ दयानिधि तेरी गति लखि न परै। अकरन करन करनअकरनजो करनहिंकरनकरै। जय अरु बिजय पाप कहकीन्हो ब्राह्मण शापदेवायो। असुर योनि ता ऊपर दीन्हो धर्मउ छीणक-रायो। पितावचन मेटै सोइ पापीसो प्रह्लादहि कीन्हो। ताके काज खम्भसों प्रकटे नृसिंह रूप तब लीन्हो। यज्ञकरत बैरोचनको सुतवेद बिधिबिधिबिधिकर्मा। तेतुमबांधि पताल पठायेकौन दयानिधि कर्म्मा। दानिसुधर्म भानुसुत कहिये ते तुमबिमुख कहाये। अधर्मधर्मसों पांडव सुत ज्यों सो तुम्हरे मनभाये। पतिब्रता जालन्धर युवती ते तुम ब्रतते टारी। अधमयोनि की मर्मपूछरी सुवा पढ़ावततारी। मुक्तहोत योगी जन श्रमकरि असुर बिरोधे पावै। अकथ कथा करुणामय तेरी सूर कहा कहि गावै १८२॥ रागगौरी ॥ कोको न तरेउहरिनामलेत। पतित अधम गणिकाकाहे केत। सुआ पढ़ावत गणिकातारी। ब्याधतहां सरि-घातहि डारी। अन्तर दाहको मिटै उपाय। कोइयक हरि जन मांग्यो दास। तारे खग मृग पशूपखान। तारे इन्द्रउ लिये बिमान। कोउ योग युक्त कोउ भक्तीभाई। ध्यान ध्यान कोउ गुरु लखाई। कोउ पूजाकरि यज्ञअचार। कोउअस्नान धन देतअपार। चिन्ताचित सबमेटहुमान। सूरदासहरि परगटवान१८३॥ राग धनाश्री ॥ जिनतनना हरिभजनकियो। शूकर खग कूकर खगमृग मानो यहि सुख कहा जियो। जो जगदीश ईश सबहिन को कबहु न लागु हियो। निपट निकट यदुनाथ बिसारो माया मदहि पियो। चारि पदारथके प्रभुदाता नहिंचितचरणदियो।

सूरदास भगवन्त भजनबिन वृथाहि जन्मलियो १८४ हरिराजिनि परेउ हरि मेरो। मायाजल बूड़तहौं तकितट चरण शरण धरि तेरो। भ-वसागर बोहित बपु मेरोलोभ पवन दिशि चारो। सुत बनधाम तृषा हित औरै लुट्यो बहुत बिधि भारो। अब भुवभँवर परेउ ब्रजनायक निकसन की सबबिधि की। सूर शरद शशि बदन दिखाये उठैलहर जलनिधिकी १८५॥ रागकान्हरो॥ जो अपने मन हरिसों रांचे। आन उपाय प्रसङ्गछांड़िकै मन बच क्रम अनुसांचे। निशिदिन नाम लेतहै रसना फिरि जु प्रेमरस माचे। यहि बिधि सकल लोकमेंबांचै कौन कहै अब सांचे। शीत उष्ण सुखदुख नहिंमानत हर्षशोक नहिंबांचे। जाइ समाइसूर वा निधिमें बहुरि जगत नहिंनाचे १८६॥ रागधनाश्री॥ मैं हरि उघारि दावँ दै हारेउ। आशा भंग भईका मोपै बचन पायजु तिहारेउ। हारि मानि उठि चलेदीन ह्वै जानि आपनोकैद। समुझि लेहु तुमइतनोमोपै बचन तिहारेवेद। उत्तरनको उत्तरनहिं आवैतबहौं मिलि उड़िजाते। तुम्हरी कीरति बातब्रह्मकी अधर बघन मदमाते। अपनी चालि जोरि मनहींमनचले बधीठोतेरी। सूर सकहुअंग न कांपै मैं देखयो टकटोरी १८७॥ राग कान्हरो॥ दीनजनकैसे आवैशरणा। भूले फिरत सकल जलथल मग सुनहु ताप त्रयहरणा। परमअनार्थविवेक नयनबिन निगमनयन नहिंपावै। पग २ प्रतिक्रम कूपमोहतमकोकरि कृपा बतावै। नहिंकरलकुट सुमति सतसंगतिजेहिअवार अनुसरिये। प्रबल प्रस्वेद कुमति दशहदि मे सुधो कहौ कह करिये। उद्भटआन देव याचत नहिंसुकृत शब्द सुधि पावै। सूरश्याम पदनख प्रतापबिन को यह तिमिर मिटावै १८८॥ रागसोरठ॥ देखो ऐसो हरिसुभाव। बिनगंभीर उदारउदधि प्रभुजानि शिरोमणि राव। बदनप्रसन्न कमल पद सन्मुख देखत हैं जैसे। बिमुख भयो कि कृपा वा मुखकी फिरि चितवोतौ तैसे। सरसों इतनी सेवाके गुण मानत मेरु समान। मानत सकुच सिंधु अपराधहि बूंदआपनेजान। भक्तबिरहकातर करुणामय डोलत पाछेलाग। सूरदास ऐसेप्रभुको दये पीठिपीठि अभाग १८९॥ रागपरज॥ पतित पावन हरि नाम तिहारो कौने धो धरो। हौंतौ दीन दुखित संशयरत द्वारेरटत परो। जीवयोनि यातना रुधिर जीव सकु

अवजन जठर जरो । तबहीं तजतुम निकट बिसारो ग्रात अपराध भरो । विद्यमान अवभूत सकल यम काल कलश निदरो । औरो कोटि कुटिल करुणामय तिनते कहा सरो । ना जानौ वह सूर महाशठ कौन दोष बिसरो १९० ॥ रागधनाश्री ॥ जगतपति नाम सुन्यो हरितेरो । मन चातककजल तज्यो स्वाति हित एकरूप व्रतधारो । नेकबियोग गिनत नहिं मानत प्रेमकाम बपुहारो । राकानिशि केतेअन्तर शशि निमिष चकोर न लावत । निरखि पतंगध्यान नहिं छांड़त यदपि ज्योतितनु तावत । कीन्हे नेह निवाहि जीवजड़ तेइत उतनहिं चाहत । जैहैकाहि समीप सूरनर कटि बचन न दोउदाहत १९१ ॥ रागबिहागरो ॥ जोपैराम नाम धन धरतो । टरतौ नहीं जन्मजन्मान्तर कहा राज यम करतो । लेतो करि व्योहारसबनिसों मूलगांठि में परतो । भजन प्रताप सवाई घृतमधुपावक परे न जरतो । सुस्मृतगौ बेदविधि बैठो बिप्रपरोहन भरतो । सूरचले बैकुंठपैठिकै को बिचकौन जाअरतो १९२ रागसोरट ॥ गोबिन्द हैं सनकेसांत । गजअरुअज प्रह्लादद्रौपदी सुमिरतहीं निश्चीत । लाक्षागृह पांडवन उबारे शाकपत्रमुखनाये । अंबरीषहित शापनिवारे व्याकुल चलेपराये । नृपकन्याको व्रतप्रतिपारो कपटभेषइकधारो । तामेंप्रकटभये श्रीपतिजू अरिगणगर्भप्रहारो । कोटिध्यानवै नृपसैनासब जरासंध बँधछोरै । भगवतिबिरहके अंतहिपाये गर्भअसुरबलनाशोरै । गुरुबांधव हितमिले सुदामहिं तन्दुल पुनिसों यांचत । प्रेमबिकलताल-खिगोपिनकी बिबिध रूपधरि नाचत । संकटहरणचरणहरिप्रकटे वेद बिदित यशगावै । सूरदासऐसेप्रभु तजिकैघरघर देवमनावै १९३ ॥ राग रामकली ॥ अजनाथअनाथहिकेसंगी । दीनदयाल दुखितकरुणामय जन हितकारणप्रभुबहुरंगी । पारथपतिकौरवजू सभामेंपठबोलेन कहेउहरि संगी । अवगाहुनत बरुणा सरिताअति बाढ़ो बसनउमंगी । कहाकूबरी शीलरूपगुण बशभये ललितत्रिभङ्गी । गजग्रासे ज्योंउग्र बिनाबल बिलपतबिकल गातगतिखङ्गी । भक्तबछल कृपानिधि केमात्र प्रेमिनके प्रभुअङ्गी । आयेधाय गरुड़हीतजिकै करधरन रथरखङ्गी । अवलोकहु प्रतिज्ञाप्रभुकी तहांपरम ओपद परनङ्गी । सुनतहि श्रवण सूरआति गरजत जगयश अधम अनङ्गी १९४ ॥ रागकदारो ॥ प्रभुतुम दीनके दुखहरण ।

ामसुन्दर मदनमोहन बानअशरणशरण। दूरिदेखि सुदाम आवत धाय परस्यो चरण। लक्ष्मी बहुलक्ष दीन्हें दानअव ढरढरन। बधे कौरव भंजकीन्हें भयेगिरिवर धरन। सूरप्रभुकी कृपाजापर भक्तजन सबतरन १९५ ॥ रागधनाश्री ॥ हैंतौसब पतितनको राजा। निन्दापरमुख पूररहीजग यह निशान निजुबाजा। तृष्णादेहसुभूतमनोरथ इन्द्रीक्षयी हमारे। मंत्रीकामसुमतिदेबेको क्रोध हरत प्रतिहारे। गजहंकारचढ्यो दिगबाजइ लोभछत्र धरिशीश।भुवपतिजानि भजेयोनिज भवतजिसत संगत प्रतिईश। मोहमदी जीतेसबगावत बन्दीदोय अपार। सूरबिरद निजुगढ़ गहिराख्यो अनतकालकोवार १९६ अवहौं कहौ कौनदर जाउँ। तुमजु गोपाल चतुरचिन्तामणि दीनबन्धु सुनिनाउँ। मायाकपट रूपकौरव अतिलोभ मोहमद भारी। परबशपरी सुनहु करुणामय मनमति पतिवियभारी। क्रोधदुशासन गहेलाजपट सरणअधिकपति मेरी। सुरनरमुनि कोउनिकट न आवत सूरसमझि हरिचेरी १९७ ॥ रागनट ॥ मनबशहोत नाहिंनेमेरे। जिनबातनिते बहेउफिरतहैं तेई बात अनेरे। कासोंकहौं करौंकछु औरै औरै आनतघेरे। तापर दोय लगावनको शिर बैठो देखत नेरे। कहाकरौं फिरिबरो बहुत दिन अंकुश बिनामुकेरे। अबके सूरदास याकेबश द्वारपरो हौंतेरे १९८ जोपै मन कालिमा न छूटै। तौकहयोग यज्ञतपुकीन्हे बिनकन हितयहिकूटै। कहस्नान क्रियातीरथ के अङ्गभस्म जटतूटै। कहपुराण पढ़िभयो अठारह ऊर्द्धधूमके छूटै। मनशोभाकी बहुत बड़ाई इतने कछू न छूटै। सूरदास तबहीं तमनाशै ज्ञानअगिनि झरफूटै १९९ मेरी बेरहै क्यों शोचि। कोटिके अघ त्रास फटबहु उयोंदियो गजमोचि। कौनकरणी करीबढ़ि मोसोंकरी फिरिकांधि। न्यावकी खुनुसो न कीजै चूकपल भर बांधि। मैं कछू करबे न छांड्यो या संसारहि पाइ। दीनदयाल कृपासिंधु भक्तनके सुखदाइ। तऊमेरोसुख मानतनाहीं करत न लागी बार। सूरप्रभु यहजानि पदवीचले बेलहिआर २०० ॥

इतिश्रीकृष्णानन्दव्यासदेवरागसागरोद्भवसूरसागररागकल्पद्रुम अपनीदीनताप्रभुजीकोमाहात्म्यविनयपत्रिकासंपूर्णम् ॥

——*——

श्रीरागसागरोद्भव श्रीकृष्ण गोकुल ते मथुरा पधारे सो लीला प्रारम्भ ॥

रागधनाश्री ॥ कछुसकब्रज औरो रहो हरिहोरिहो । अबजनि मथुरा जाहुपरब करहुघर अपने हरिहो । कुशलक्षेम निरबाहु अहोहरि होरिहो । ऐंठेउर उनमानकेहरि ०। सबनकियो मतिएक अहोहरि० । ऋतुराजहि देखनचली फूलत कुसुम अनेक । मानोरति बहुरूपधरि पति पईं जातिसटेक । नवेचवल नवनागरी नवयौवन नवभूप । नयोनेहनित नाहुसों नवसत सजे अनूप । दशोदिशो दिशा वोथि में घरघर करहिं अनन्द । नरनारी मिलियांचहीं यशवृन्दावनचन्द । एकादशि यक प्रीतिसों चलींयमुनके तीर । बरण बरण बनिबनि चलीं पीतअरुण तनचीर । द्वादश अभरण द्वादशी साजिचलीं ब्रजनारि । हरिहलधरहिं सुनावहीं देहिँ नन्दकोगारि । तेरसि तियसें तनभई खेलत प्रीतमसङ्ग । भरत भरावत लाजहीं लज्जित कोटिअनङ्ग । चौदशिचतुर सखी मिलि हलधर पकरे धाइ । मुखमांडे छांडे नहीं काजर देहिं बनाइ । पून्यो पूरण प्रीतिकरि हरिआये हरिचाइ । बलभैयाको छांडहु फगुवादेहु सँगाइ । मोहनपकरे करी हमहीं देव सँगाइ । नन्द छिड़ावहु श्यामको याजगमें यशुले यशुमति धरि वृषभान को फगुवा हमरो देहु । यशुमति हँसि सखिनसों राधेलीन्हीबोल । मेवामिश्री बहुरतन दईसबन भरिचोल । होरीहर्षिहलायके मोहनभूलेडोल । गावतसखी निशंकह्वैकहिकहि अमृतबोल । पाटसिंहासन बैठकरि अरुअभिषेक कराइ । राजकरहु नितलाड़िले सूरदास बलिजाइ १ ॥ रागकान्हरो ॥ अहोनृप ह्वै अरिप्रकट भये । बसेनन्दगृह गोकुलधनके दियो सुदिनगये । तुमहूंको दुख बहुत जन्मको रथमारग आरोपे । तादिनते शिशुसम देवकी तेरेही कर सोंपे । जोपरि राजकाज सुखचाहै बेगिबुलाय न लीजै । हारिजीति दोउनकी विधियशाह्वै है सोईकीजै । ऐसेकहि बैकुंठसिधारे काशनिशा विकराई । सूरश्याम कृतकोवैइच्छा मुनिमनयहैउपाई२॥ रागकल्याण ॥

तुम बिनु औरै हितू न कोऊ। सुनि अक्रूर तुरत नृपआयसु नन्दमहरसुत ल्यावहु दोऊ। सुनिकै यह बचन रोम हरषिततनु प्रेमपुलकि मनकछू न बोल्यो। यह आयसु पूरण सुकृत बश सो काहूपै जाय न तोल्यो। मौनदेखि परिहँस नृपभाषोमनहुंसिंहमृग आयतुलानो। यहिक्रम बिनु वे सुत अहीरके रैकातरुकत मनहिं सकुचानो। आयसु पाइ श्रेष्ठ रथ करगहि अनुपम तुरंग साजिधृत जोरेउ। सूरश्यामको मिलनि सुरति करि मनुनिरधनि निधि पाइ बिमोरेउ३॥

नारदने कंसको समुझायो॥

रागबिलावल॥ फागरंग करि हरिरस राख्यो। रहेउ न मन युवतिन के काख्यो। सखासंग सबको सुखदीन्हो। नरनारिनमन हरि हरि लीन्हो। जोइयहि भाव ताहिहरि तैसे। हितकोहित कैतवको नैसे। महरि नन्द पितु मातु कहाये। तिनहीं के हिततनु धरिआये। युग युग यह अवतार धरतहरि। हर्ताकर्ता बिश्वरहेभरि। धरणी पापभार भइभारी। सुरन लिये सँगजाइ पुकारी। त्राहित्राहि श्रीपतिदैत्यारी। राखिलेहु मोहिंशरणाउधारी। राजसरीतिसुरनिकहिभाषी। भयेचन्द सूरज तहँ साखी। क्षीरसिन्धु अहिशयन मुरारी। प्रभु श्रवणनि तहँ परी गुहारी। तबजान्यो कमलाकेकन्ता। दनुजभार पुहुमीसेमन्ता। सिंधुमध्य बाणीपरगाशी। भुवअवतार कहेउ अबिनाशी। मथुराजन्मि गोकुलहिआये। मातपिता सुतहेतकहाये। नारदकहि यह कथा सुनाई। ब्रजलोगन सुखदियो कन्हाई। नन्दयशोदा बालक जान्यो। गोपीकामरूपकरिमान्यो। प्रथमपिवतपयबको बिनाशी। तुरत सुनत नृपभयोउदाशी। यहिअन्तरजे दनुजसँघारे। यहिअन्तरलीलाबहुबारे। को महिमाकहि सकैतुम्हारे। बालतरुणसुखन्यारेन्यारे। धन्यधन्य ये ब्रजके बासी। बशकीन्हे जिन ब्रह्म उदासी। अकलकला नियसहु ते न्यारे। ते युवतिन सङ्गवननि बिहारे। आज्ञाइहै मोहिंप्रभुदीन्हो। यह अवतार जबहिंभुवलीन्हो। दैत्य दहनसुरके हितकारी। अबसारौ प्रभुकंसप्रचारी। यहसुनिहँसेसुरनिकेनाथा। जबनारद गाईयहगाथा। श्रीमुख कहेउ जाय समुझावहु। नृप आयसु करि मोहिं बुलावहु। अंचलजोरि देव मुनि हरषे। कृपावचन तिनसों हरिबरषे। तुरत चले

नारदनृपपासा। यहैबुद्धि मनकरत प्रकासा। संकर्षण हृदये प्रकटाई। जो बाणीऋषिगयेसुनाई। आदिपुरुष अद्वैतविचारी। शेषरूपहरिके सुखकारी। हरिअन्तर्यामी जगताता। अनुज हेतुजग मानत नाता। यहैबचन हलधरकहि भाख्यो। मुनिधुनि श्रवण हृदय हरिराख्यो। तुमजनमे भुवभारउतारन। तुमहौ अखिललोकके तारन। तुमहौसब संसारकोसारा। जलथल जहांतहां बिस्तारा। तबहँसिकहेउ भ्रातसों बानी। जो तुमकहत बातमैं जानी। कंस निकंदन नाम कहाऊं। के-शगहैं पुहुमीघिसलाऊं। यहिअन्तरगयेमुनि नृपपासा। मनमारे मुख-करे उदासा। हरषिकहेउ मुनिनिकटबुलाये। आदरकरिआसनबैठाये। कैसेमुख क्यों मनऋषि मारे। कहाचिन्ता जियबढ़ी तुम्हारे। नारद कहेउ सुनोहो राऊ। कहबैठे कछुकरौउपाऊ। त्रिभुवनमें तुमसरिको ऐसो। देखौ नन्दसुवन ब्रजवैसो। करतकहा रजधानी ऐसी। यह तुम को उपजी कछुनैसी। दिनदिन भयो प्रबलयहभारी। हमसब हितकी कहैं तुम्हारी। तबगर्बित नृप बोले बानी। कहाबात नारदतुमजानी। कोटि दनुज मोसरि मोपासा। जिनको देखि तरनि तनुत्रासा। कोटि कोटि तिनके सङ्गयोधा। कोजीवै तिनके तनुक्रोधा। मल्लनि के बल कहा बखानो। जिनकेदर्शन कालडरानो। कोटिधनुर्द्धर संतत द्वारे। बचैकौन तिनकोजु हँकारे। एक कुवलया त्रिभुवन गामी। ऐसेऔर कितिक हैं नामी। ग्वाल सुतनकी कथाचलावहु। यहबाणी कहि कहा सुनावहु। प्रजालोग ब्रजके सबमेरे। सेवा करत सदारहैं नेरे। तातेसकुचतहौं उन काजा। बालक सुनत होतजियलाजा। भलीकरी यहबात सुनाई। सहज बुलाय लेउँ दोउ भाई। और सुनहु नारदमुनि मोसों। श्रवणनिलागिकही कछुतोसों। कितिकबातबलराम कन्हा-ई। मो देखत अतिकाल डराई। आजु कालिह अब उनहिं बुलाऊं। कहि पठऊं ब्रजसहित सँगाऊँ। औरप्रजा ब्रजआनि बसाऊं। अपने जियकी खुटुक मिटाऊं। तिनपर क्रोधकहा मैं पाऊं। रङ्ग भूमि चरण रुदाऊं। मेरे समसरिके वै नाहीं। यह सुनिके नारदमुसुकाहीं। सत्यवचन नृपकहत प्रचारे। अबजाने उनितौतुममारे। यहकहि बैकुण्ठ सिधारे। त्रिभुवन में को बलहि तुम्हारे। कंस परेउ मन यहै

बिचारा। रामकृष्ण बधयहै खभारा। दनुज हृदय हरियहै उपायो। नारद कही सुनत मनआयो। अबनारन नहिं यहरु लगाऊं। मथुरा जहांतहां बेलछाऊं। चक्रचक्रात जियबहुरिसम्हारे। कोमारोंसो बुद्धि बिचारे। सूरजप्रभु अबिगतिअबिनाशी। कंसकालयहबुद्धिप्रकाशी १॥

कंस के मनकी बिचार ॥

अक्रूर को बुलाय श्री गोकुल भेजेइत्यादिप्रसङ्ग ॥

रागसोरठ ॥ नृपति मनयहै बिचार परेउ। क्यों मारों दोउ नन्द ढुं-टौनाएही अरनिअरो। कबहूं कहतआपचढ़ि धाऊंयहै बिचार करो। सात दिवस में बधीपूतना यहसुनि मनहिंडरो। पुनिसाहस जियजिय कहि गर्थ्यो ताको काल सरेउ। सूरश्याम बलराम हृदय ते नेकनहीं बिसरेउ २ सहर ढुटौना शालिरहै। जनमहिं ते अपडाव करतहै सुनि सुनि हृदय कहै। दनुज सुतापति लैहि सँहारी पयपीवत दिनसात। गयोप्रतिज्ञाकरिकागासुर आयगिरोमुरछात। तृणाशकटसुरगमाहिं सँघारो केशीहन्यो प्रचारि। जेजेगये बहुरि नहिं देखे सबहिन डारे-मारि। ज्यों ज्यों करिरनि दुहुंन सँघारो बातनहीं कछुऔर। सूरनृ-पति शोचत यहमन मन यहैकरत मनदोर ३॥ रागमारू ॥ नंदसुतसहज बुलायपठाऊं। श्यामराम अतिसुन्दर कहियत देखन काज मँगाऊं। जेहै कौन प्रेमकरि ल्यावैभेद न जानैकोई। सहर सहरिसों हितकरि ल्यावै महाचतुर जो होई। यहि अन्तर अक्रूर बुलायो अति आतुर महराज। सूरचले मनशोच बढ़ाये कौनहै ऐसो काज ४॥ रागधनाश्री ॥ अतिआतुर नृपमोहिंबुलायो। कौनकाज ऐसोहै अटक्यो मनमनशोच बढ़ायो। आतुरजायपौरिभये ठाढ़े कहेउ पौरियाजाय। सुनत बुलाय महलहीलीन्हो सुफलकसुत गयेधाय। कछुंडरकछुजिय धीरज धारे गयोनृपतिके पास। सूरशोच मुख देखि डरानो ऊरध लेत उसास ५॥ राग मारू ॥ चर्चरी ॥ शोचमुखदेखि अक्रूरभरमें। माथकरनाय करजोरि दोऊ रहे बोलिलीन्हो निकटबचननरमें। आपुहीकंस तहँ दूसरो कोउ नहींत्रास अक्रू रजिय कहाकैहै। नृपति जियशोच जान्योहृदयआपने करतकछु नहीं यों प्राण लैहै। निकट बैठाय सबबात तेही कहेउ गये जेभाषि नारद सबारे। सूरसुत नन्दके हृदय शालतसदा मन्त्र यह और

नहिँ इन्हैमारै ६ ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ सुनहु अक्रूर यहबात निश्चय करो आजुमोहिँ भोरते चैननाहीं । श्यामबलराम यहनाम सुनिताम मोहिँ काहु पठवहु जाहितिनहिँ पाहीं । प्रीति करिनन्दसों सहसबातें कहै तुरतल्यावै दुहुनि नृपतिबोलै । देखिवे साध बहुत सुनिगुणा विपुल अतिहि सुन्दर सुनेदोउ अमोलै । कमल जवते उरग पीठिल्याये सुने यहै बकशीश अब इनहिँदेहैं । सूरप्रभु श्यामबलरामको डरनहीं वचन इनके सुनत हरष पैहैं ७ ॥ राग सोरठ ॥ यह बाणी कहि कंस सुनाई । तब अक्रूर हिये भयो धीरज डरडारो बिसराई । मनमन कहत कहाचित बैठो सुनि सुनि ऐसी बानी । अपनो काज आपही बोल्यो इनकी मीचु तुलानी । हरषि बचन अक्रूर कहै तब तुरत काज यह कीजै । सूरजाहिँ आयसु करिपाऊं भोरपात तेहिदीजै ८ ॥ रागबिलावल ॥ तब अक्रूर कहत नृपआगे धन्यधन्य नारदमुनिज्ञानी । बड़ेशत्रु व्रजमें दोउ हमको सुनहु देव नीकी चितआनी । महाराज तुम मारिको ऐसो तऊ जगत यह चलत कहानी । अब नहिँ बचे कोध नृपकीन्हो जैहै सयाक तवाउयों पानी । यहसुनि हर्षभयो गर्बीनो जबहिँकही अक्रूर सयानो । कालिह बुलाय सूर दोउ मारौं बारबार भाषत यह बानी ९ कंसनृपति अक्रूर बुलाये । बैठिएकांत मन्त्र दृढ़कीन्हो राम कृष्णदोउ बन्धु मँगाये । कहूं मल्लकहुँ गजदैराखे कहूं धनुषकहुँ बीर । नन्दमहरि के बालक मेरे करषत रहत शरीर । उनहिं बुलायबीचहीमारौं नगर न आवन पावैं । सूरसुनतअक्रूर कहत नृप मनमनमौज बढ़ावै१० यहै मंत्रअक्रूरसोंनृपरैनिबिचारी। प्रातनन्दसुत मारिहौंयहकहेउप्रचारी। करि बिचार गुणग्राम लौं मंदिर पगुधारे । कहेउ जाय अक्रूर सों भये आलसभारे । तुरतजाय पलका परो पलकन झपकानो । श्याम राम सपने खड़े तहँ देखि डरानो । अति कठोर दोउ कालसे भरम्यो अति झझक्यो । जागि परो तहँ कोउ नहीं जियहीजिय समक्यो । चौंकि परो सँग नारिके रानी सब जागीं । उठीं सबै अकुलायकै तब बूझन लागीं । महाराज झझके कहा सपनेक्योंसंके । सूरअतिहि व्याकुल भयेथरथर उरढंके ११ महाराज क्यों आजुही सपने झझकाने । पौढ़े अबहीं आयकै देखेबिलखाने । कहा शोच ऐसोपरो ऐसो पहुमीको ।

काकीबुधि मनमेंकरी कहिये अपजीको । रानीसब व्याकुलभईंकछु भेद न पावैं । तब आपुन सहजहि कहेउ वह नहीं जनावैं । सावधान करि पौरिया प्रतिहार जगावै । सूरश्याम बलश्यामके नहिं पलकलगावै १२ ॥

नन्दजीको स्वप्नभयो ॥

रागबिलावल ॥ उत नन्दहि स्वप्न भयो हरि कहूं हिराने । बलमोहन कोउ लैगयो सुनिकै बिलखाने । ग्वालसखा रोवत कहैं हरि तौ कहुंनाहीं । संगहि संगखेलतरहे यह कहि पछिताहीं । दूतएक सँगलैगयो बलराम कन्हाई । कहा ठगौरीसी करी मोहनीलगाई । वाहीके दोउ ह्वै गये हम देखत ठाढे । सूरजप्रभु वे निठुर ह्वै अतिही गये गाढे १३ ॥ रागसोरठ ॥ व्याकुल नन्द सुनत यह बानी । धरणी मुरछि परी अति व्याकुल विवश यशोदारानी ॥ व्याकुल गोपि गाय सब व्याकुल व्याकुल ब्रजकी नारी । सुनीबात बलराम श्यामको लैगयो दूत एक दुखकारी । धरणी परत उठति पुनि धावति यहि अन्तरनंद जागे । धकधकात उरनैनस्रवतजलसुतअंग परशनलागे । सुसकतसुनि यशुमति अतिआतुर कहा महर भ्रमपायो । सूरनन्द घरणीके आगे यहभ्रमन

कंसको स्वप्नभयो ता उपरांत को वृत्तान्त ॥

रागकल्याण ॥ एक याम नृपको निशि युगते भइ भारी । आपन सौसब मारो । कबहु उठतबैठत पुनिकबहुं सेज

कबहुं अजिर ठाढो ह्वै ऐसे निशि खोवै । बारबार ज्योतिषिसों घरी बूझि आवै । एक जाय पहुंचैनहीं अरु एक पठावै । ज्योतिषि जिय त्रास परेउ कहा प्रात करिहै । सूरक्रोधभरेउ नृपति काके शिरपरि है १५ व्याकुल ते रैनि कटी बची घरी बाकी । एकएक लगी याम याम ऐसी गतिताकी । कोजैहै ब्रजको मनकरै कोहि पठाऊं । जासों कहि नन्दसुवन आजही मँगाऊं । अब नहिं राखौं उठाय बैरी नहिं नान्हो । मारौं राजपै ऊँदाय मनहीं अनुमान्हो । पठऊं अक्रूरहि कौ ऐसो नहिं कोऊ । सूरजाय गोकुल ते ल्यावै ठगि दोऊ १६ ॥ रागबिलावल ॥ अरुण उदय अतिही अक्रूर बुलाये । आपकहेउ प्रतिहार एक सुनिकै तब धाये । सोवत जाय जगाय कैकहि बात प्रकाशा । आयसु

माथे मानि कै उठि चले उदासा । नृपति द्वारपर खड़ो देखत शिर-
नायो । कहिखवासमों सैनदै शिर पाग मँगायो । अपने कर करिकै
दियोसुफलकसुत लीन्हो । हाथजोरि नृपतिकोपरणाम जु कीन्हो ।
सुखअक्रूर हर्षितभयो हिरदय बिलखानो । असुरत्रास जिय अति
परेउ कहा कहै सयानो । तुरतहिं रथ पलनाय कै अक्रूरहि दीन्हो ।
आयसु शिर पर मानिकै आतुर ह्वै लीन्हो । बिलम्ब करहु जिनि
नेकहू अबहीं ब्रज जाहु । सबैकाज सरिआवहु जिनि रैनि बसाहु १७
सुनहु देव यक बात जनाऊं । आयसुभयो तुरत लै आवहु ताते फेरि
सुनाऊं । बलमोहन बनजात प्रातही जोउनकोनहिं पाऊं । रैहौंआज
नन्दगृह बसिकै कालिह प्रातलैआऊं । यह कहिचले नृपतिहूमान्यो
सुफलकसुत रथ हांक्यो । सूरदास प्रभुध्यान हृदयधरि गोकुल तनको
ताक्यो १८ ॥ रागगौरी ॥ सुफलकसुत मन करेउ बिचारा । कंस नृबंश
होयहत्यारा । नगर सांझरथ कीन्हो ठाढ़ो । शोच परेउ मनमनअति
गाढ़ो । मंत्र कियो निशि मेरेसाथ । ल्यावन कहेबल अरु ब्रजनाथ ।
गजमुष्टिक चाणूर निहारेउ । व्याकुल नीरनैन दोउ ढारेउ । अतिबा-
लक बलराम कन्हाई । कहाकरौं कछु नाहिं बसाई । कैसे आनिदेउँ
मैं जाई । सो देखत मारै दोउभाई । मारै मोहिं बन्दिलै मेलै । आगे
को रथ नेक न ठेलै । सूरदास प्रभु अन्तरयामी । सुफलकसुत मन पू-
रण कामी १९ ॥ रागकल्याण ॥ सुफलकसुत हृदय ध्यान कीन्हो अबि-
नाशी । हरन करन समरथ सब घटघटके बासी । धन्यधन्य कंसहि
मोहिं जिनपठायो । मेरो कारिकाज मृत्यु आपको बुलायो । यहगुनि
रथ हांकिदियो नगर परेउ पाछे । कछु सकुचत कछु हरषत चल्यो
लागि काछे । बहुरि शोच परेउ दरश दक्षिण मृगमाला । हरष्यो
अक्रूर सूर मिलिहैंगोपाला २० ॥ रागटोड़ी ॥ दक्षिणादरश देखिमृग-
माला । अति आनन्दभयो तेहिकाला । याही बनमिलिहैं गोपाला ।
श्याम जलदतन अंग रसाला । तादर्शन ते होउं निहाला । बहु दिनके
मेटौं जंजाला । मुख शशि नयन चकोर बिहाला । तनु त्रिभंगसुन्दर
नँदलाला । बिबिधि सुमन हिरदय शुभ माला । सारमहूर्ते नयन बि-
शाला । निश्चय भयो कंसको काला । सूरज प्रभु त्रिभुवन प्रतिपा-

ला २१ ॥ रागआसावरी ॥ दाहिनोहों देखत मृगनकी मालहि। मनो यह
गोकुल अब हिये बनइनि भुज भरिके भेंटों गोपालहि। निरखि तनु
त्रिभंग पुलकितसकल अङ्गअङ्ग नरराग्रांकुर जैसेपाय पावसकालहि।
परिहौं पायँन जाय भेटिहौं अंकमलाय मूलते जमी जो बेलि चढ़ति
तमालहि। परशि प्रेम आनन्द सींचि कै कामना कन्दकरिहैं प्रकट
प्रति प्रेम प्रबालहि। बचनरचन हास सुखद सुख निवास कंस फल
फलित फलअमल रसालहि। स्फुरति शुभ सुबाहु लोचन अब उछाहु
फलिके सुकृतफल फलि लेइ कालहि। निगम कहत नेति शिव न
सकत वेति सूरसुहृदयलगायलेहोंता दयालहि२२ ॥ रागकान्हरो ॥ आजु
जाय देखिहौं वे चरणा। शीतल सुभग सकल सुख दाता दुसह दवन
दुखहरणा। अंकुश कुलिश कमलध्वज चिह्नित अरुणाकंजके रङ्ग। गो
चारत बनजात पाइहौं गोपसखनकेसङ्ग। जाको ध्यानधरत सुरमुनि
जन शिव विरंचि सब ईश। तेईचरण प्रकटकरि परशौंइनकरअपने
शीश। निरखि स्वरूप रहै नहिं सकिहौं रथते उतरिहौं धाय। सूर-
दासप्रभु उभय भुजाभरि हँसि भेंटिहैं उठाय २३ ॥ रागनट ॥ जब शिर
चरणन धरिहौंजाय। कृपाकरि मोहिंटेकि लैहैं करनि हृदयलगाय।
अंग पुलकित बचन गदगद सनहिं सनसुख पाय। प्रेमघट उच्छलित
ह्वै है नयनअश्रु बहाय। कुशल बूझत कहिन सकिहौं बारबार सु-
नाय। सूरप्रभु गुणाख्यान अटक्यो गयो पंथभुलाय २४ ॥ रागआसावरी ॥
मथुराते गोकुल नहिं पहुंचे सुफलकसुत को सांझभई। हरि अनुराग
देहसुधि बिसरी रथबाहन की सुरति गई। कहां जात कित मोहिं प-
ठायो कोहौंमैं यहिशोच पस्यो। दशहूं दिशा श्यामपरि पूरण हृदय
हरष आनन्द भस्यो। हरि अन्तरयामी यह जानी भक्त बछल बानो
जिनको। सूरमिलै जोभाव भक्तके गहर नहीं कीन्हो छिनको २५ ॥
रागकल्याण ॥ वृन्दाबनग्वालनिसङ्ग गैयनिहरिचारैं। अपनेजन हेत काज
व्रजकोपगुधारैं। यमुना करिपार गाय श्याम देत हेरी। हलधर सङ्ग
सखा लये सुरभी गणघेरी। धेनुदुहन सखनिकहेउ आपुदुहन लागे।
वृन्दाबन गोकुल बिचयमुना के आगे। भक्तहेत श्रीगोपाल यह सुख
उपजायो। सूरज प्रभुको दरशन सुफलकसुत पायो २६ ॥ रागकान्हरो ॥

सुफलक सुतहरिदरशनपायो। रहि न सक्यो रथपरसुखव्याकुल भयो वहै मनभायो। भुवपरदौरिनिकट हरिआयो चरणनिचित्तलगायो। पुलक अङ्गलोचनजलधारा श्रीगृहशिर परशायो। कृपासिंधुकरिकृपा मिलेहँसि लियोभक्त उरलाय। सूरदास यहसुख सोइजानै कहीं कहा मैं गाय २७॥ रागकेदारो ॥ चर्चरी॥ हरषि अक्रूर हरि हृदय लायो। मिले तेहि भाव चितवनि चितेप्रेमसों भगत बछल नामतौ कहायो। कुशल पूछतप्रसन्न बचन अमृतरसन सुनिपुलक अङ्गअङ्ग कीन्हो। चितेआनन चारुबुधिउरबिस्तार दनुज अबदलोयह ज्वाबदीन्हो। भेदहीभेद शब्द इतबाणी कही तुरतबोलहेत इहैवाके। सूरभुजफरकि मनमें न उछाह लै धरणि उद्धार हितबसौताके २८॥ रागबिलावल॥ श्यामइहै कहिके उठे नृपहमहिं बुलाये। अतिहिकृपा हमपरकरीजो कालिह मँगाये। सङ्गसखा यह सुनतही चक्रितमनकीन्हो। कहा कहत हरि सुनतहो लोचनभरिलीन्हो। श्यामसखनसुख हेरिकै तब करी सयानी। कालिह चलौ नृप देखिये शंका जियआनी। हर्षभये हरि यह कहैमन मनदुख भारी। सूरसङ्गअक्रूरके हरि ब्रजपशुधारी २९॥ रागरामकली॥ अतिकोमल बलरामकन्हाई। दुहुन गोदअक्रूर लियेहँसि सुमनहुंतेहरुआई। ग्वाल सङ्गरथ लीन्हे आये पहुंचे ब्रजकीखोरि। देखत गोकुललोग जहां तहँ नन्दउठे सुनि शोरि। निशि सपनेको त्रसित भये अति सुन्यो कंसको दूत। सूरनारि नर देखनधाये घरघर शोर अकूत ३०॥ रागसारंग चर्चरी॥ कंसनृप अक्रूर ब्रज पठाये। गयेआगे लेननन्द उपनन्दमिलि श्याम बलराम उन हृदय लाये। पकरि स्यन्दन लियो देखि हरष्यो हियो कहत सब मनहिं मनकहां आयो। राज के काजकोनाम अक्रूरयाहि किधौं कर लेनको नृप पठायो। कुशल तेहि बूझि लैगये निजधाम ब्रज श्याम बलराम मिलिगयेवाको। चरणपखरायकै सुभग आसन दियो बिबिधि भोजन हर्षि दियो ताको। गयो अक्रूर तहँ तुरतदोउ सङ्ग लै नारिनर लोग ब्रज सबै देखे। मनो आये सङ्ग देखि ऐसे रङ्ग मनहिंमन बरबपर करत भाखे। सारिजेवनार अँचवनकरि भये शुध दियो तंबोर नन्द हरषि आगे। सेज बैठारि अक्रूरसों जोरिकरकृपा कहँ करी तब कहन लागे। श्याम बलरामको कंस बोले नन्दलैसुतन

इसपास बेग आवै। सूरप्रभु दरशकी साध अतिहि मोहिं कहेउ समुझाय जनि गहरु लावै ३१ ॥ रागकान्हरो ॥ सुन्यो ब्रजलोग कहत यह बात। चकृतभये नारीनर ठाढे पांच न आवैं सात। चकृत नन्द यशुमति भई चकृत सनहीं मन अकुलात। दै दै सैन श्याम बलरामहिं सबै बुलावत जात। परब्रह्म अविगत अविनाशी मायारहित अतीत। सबो पहिंचानि कहूंको करत सबै मनभीत। बोलत नहीं नेक चितवत नहिं सुफलकसुत सों पागे। सूर हमहिं हितकारि नृप बोले यहै कहत ता आगे ३२ ॥ रागबिहागरो ॥ व्याकुलभये ब्रजके लोग। श्याम मन नहिं नेक आनत ब्रह्मपूरण योग। कौन माता पिता कोहै कौन है पति नारि। हँसत दोउ अक्रूर के सङ्ग नवल नेह बिसारि। कोउ कहत यह कहां आयो क्रूर याको नाम। सूरप्रभु लै प्रात जैहै और सङ्ग बलराम ३३ चलन चलन श्याम कहत लेन कोऊ आयो। नन्द भवन भनक सुनी कंस कहि पठायो। ब्रजकी नारि गृहबिसारि व्याकुल उठिधाईं। समाचार बूझनको आतुर ह्वै आईं। प्रीतिजानि हेत मानि बिलखि बदन ठाढी। मानहुं वे अतिबिचित्र चित्र सी लिखि काढी। ऐसी मति ठौरठौर कहत न बनिआवै। सूरश्याम बिछुरेदुख बिरह काहि भावै ३४ ॥ रागकान्हरो ॥ चलत जानि चितवत ब्रजयुवती मानहुं लिखी चितेरे। जहां नन्दसुत तहां एकटक जोवत फिरत न लोचन फेरे। बिसरि गई गति भांति देहकी सुनत न श्रवणनि टेरे। मिलि जु गये मानो पयपानी निरवत नहीं निवेरे। लागे सङ्ग मदोनमत्तके ज्यों घिरत न कैसेहु घेरे। सूरप्रेमअंकुश आशा तजि बाहिनि इतउत नेरे ३५ ॥ रागसारंग ॥ सब मुरझानीरी चलबे की सुनत भनक। गोपीग्वाल नयनजलढारतगोकुल ह्वै रहेउबुन्दढनक। यहअक्रूर कहां ते आयो दाहनलाग्यो देह कनक। सूरदास स्वामीके बिछुरत घटत नहीं चहे प्राण तनक ३६ ॥ रागरामकली। चर्चरी ॥ देखि अक्रूर नरनारि बिलखै। धनुर्भंजन यज्ञहेत बोले इनहिं और डरनहिं सबन काहि संतोषै। महरि व्याकुल दौरि पायँगहि लै परी नन्द उपनन्द संग जाहु लैकै। राजको अंश लिखिदेहु दूनो देउमैंकहा करौं सुन दुहुन दैकै। कहत ब्रजनारि नैनन नीर ढारिकै इननि को काज मथुरा कहा है।

सूरनृप क्रूर अक्रूर क्रूर भये धनुष देखन कहत कपट महा है ३७॥ रागसारंग ॥ व्रजवासिन के सर्वस श्याम। रे अक्रूर क्रूर बटमारे जीके जी मोहन बलराम। अपनो लागलेहु लेखोकोहि जे कछु राजअंशके दाम। और महर लै सङ्ग सिधारो नगर कहा लरिकन को काम। संतत साधु परम उपकारी सुनियत बड़ो तिहारो नाम। सूरदास प्रभु पठै मधुपुरी को जीवै सपा वासर याम ३८ नहीं कोउ श्याम राखै जाइ। सुफलकसुत वैरीभयो मोकोकहति यशोदामाइ। मदनगोपाल बिनाघर आंगन गोकुल काहि सुहाइ। गोपीरहीं ठगीसी ठाढ़ीकहा ठगौरी लाइ। सुन्दर श्याम राम भरि लोचन बिनदेखे दोउभाइ। सूर तिनहिं लैचलेमधुपुरी हिरदय शूलबढ़ाइ ३९॥ रागसोरठ ॥ मोहनइ-तनो मोहिं चित धरिये। जननी दुखित जानिकर कबहूं मथुरागमन न करिये। यह अक्रूर क्रूरकृत पहिले तुमहिं लेनहै आयो। तिरछे भये पुरुबुले पातक बिधि यह ठाट बनायो। मोसों सातताल व्रजपति सों कहत रहत दोउभाई। तिहि मुख चलन कहत सुनि जीवति मोसों कछु न बसाई। सूर स्वरूप बिलोकि यशोदा धरणिपरी मुरझाई। बलिबलि जाउँमुखारबिन्द की बरजति रहीं कन्हाई४० यशोदाबार बार यह भाखै। है कोऊ व्रजहितू हमारो चलत गोपालै राखै। कहा काज मेरे छगन मगनको नृप मधुपुरी बुलाये। सुफलकसुत मेरे प्राण हरणको कालरूप ह्वै आये। बरु यह गोधन कंसलेइ सब मोहिं बन्द लैमेलै। इतनेमांगतिकमलनैनस्वरिअँखियनआगेखेलै। कोकरकमल मथानी गहिहैको दधिमाखनखैहै। बहुरेउ इंद्रबरषिहैव्रजपरकौन मेरु कर लैहै। बासर रैनिबिलोके जीऊं संगलागि हिलराऊं। हरिबिछुरत असुरहैकर्मबश तौकिहि कंठलगाऊं। टेरटेरिधर परतियशोदा अधर बदन बिलखानो। सूर सुदशाकहांलगि बरणों दुखितनन्दकीरानी। ४१॥ रागसूहो॥ सुफलक सुतकेसंगते हरिहोत न न्यारे। बारबार ज-ननी कहै मोहिँ तज्यो न दुलारे। कहा ठगोरी यहकरी मेरे बालक मोहेउ। हाहा करिकरि मरतिहों मोतन नहिँ जोहेउ। नन्दकहेउ पर मोधिके सँग मैं लैजैहों। धनुषयज्ञ दिखरायके तुरतै लै ऐहों। घर घर गोपनसों कहेउ कर भार जोरावहु। सूर नृपतिके द्वारको उठि प्रात

चलावहु ४२ ॥ रागबिहागरो ॥ यशुमति अतिही भईबिहाल। सुफलकसुत यह तुमहिँ बूझिये हरतहै। मेरेबाल। येदोउभैया व्रजजीवन हैं कहति रोहिणी रोय। धरणी गिरति फिरति अतिव्याकुल कोहराखतनाहिँ कोय। निठुर भये जबतें यहआयो घरहू आवत नाहिँ। सूरकहा नृप पासतुम्हारो हम तुमबिनुमरिजाहिँ ४३ ॥ राग सोरठ ॥ कन्हैया मेरीछोह बिसारी। क्योंबलराम कहतनाहीं तुममैंतुम्हरी महतारी। तब हलधर जननी परमोधत मिथ्यायह संसार। ज्योंसावन की बेलि फफँडि कै फलतीहै दिनचार। हमबालक तुमको कहसिखवैं कहूं तुमहिँते जात। सूरहृदय धीरज अबधारो काहेको बिलखात ४४ यहसुनि गिरी ध- रणी झुकिमात। कह अक्रूर ठगौरी लाई लियेजात दोउतात। वृद्ध समयको हरत लकुटिया पापपुण्य डरनाहीं। कछुनफा तुमकोहै यामें सोचौधीं मनमाहीं। नाम सुनति अक्रूर तुम्हारो क्रूरभये हो आई। सूर नन्दघरणी अति व्याकुल ऐसेहि रैनिबिहाई ४५ ॥ राग भैरो ॥ भोर भयो ब्रज लोगनिको। ग्वालसखा सखि व्याकुल सुनिकै श्यामचल- तहैं मधुपुरको। सुफलकसुत स्यन्दन पलनावत देखे तहँ बलमोहनको। यह सुनि घर २ ते उठिधाईं नन्दसुवन मुख जोहन को। शोर परी गोकुलमें जहँतहँ गायफिरतपयदोहनको। सूर बयक्कर भार सम्हारत महर चलत हरि गोहनको ४६ ॥ रागरामकली ॥ चलन कहियत हैं हो हरि आज। अबहींगई श्रवण सुनि आईकरत गमनको साज। कोउ यककंसकपट करिपठयेकछु संदेशदेहाथ। सोलैचल्यो हमारो जीवन सबनिधि अपने साथ। अबयह भूलन जात सखीरी सहिरहिये करि लाज। धीरज अवधि आशदै सबको सैनजनाय चले ब्रजराज। छांड़ो जगजीवन की आशा की छांड़ो कुलकानि। कहिये बिनती कमल नयन सों सूरसमय अहजानि ४७ चलत हरिमृग जु रहेतन प्रान। कहँ वह सुख अब उदो दुसह दुख उरकरि कुलिश समान। चितवत नयन चकोर सुधाबिधु देखहु मुखछबि आन। कहँवह कंठ श्यामसुन्दर भुज करति अधररस पान। जाकोजग उपहास कियोतब छांडेउ सबअभि- मान। सूर सोनिधि बिछुरत हैं हमते कठिन है कर्म निदान ४८ सुनेहैं श्याम मधुपुरी जात। सकुचनि कहि न सकति काहूसों गुप्तहृदय की

बात। शङ्कित बचन अनागत कोऊ कहिजुगई अधरात। नींद न परै घरैनहिंरजनी कबउठि देखौंप्रात। सुफलकसुत हम ऐसीचांड़ी ज्यों जल पुरइन पात। सूरश्याम सँगते बिछुरत हैं कब ऐहैं कुशलात ४९ अगिनिहुंते बिरहागिनि ताती। माधव चलन कहत मधुबन को सुनततपी अतिछाती। न्याइहि नागरि नारि बिरहबश जरति दिया ज्यों बाती। जेजरिमरी प्रकट पावकपरि तेबिय अधिक सुहाती। ढारति नीर नयन भरि भरि बढ़ि आकुलता मदमाती। सूरब्यथा सोईपै जानै श्याम सुभग रङ्गराती ५०॥ रागआसावरी॥ श्यामगये सखि प्राणरहैंगे। अरग परग ज्योंबातैंकहियत तैसेहिबहुरि कहैंगे। इन्दु बदन खग नयन हमारे जाननि और चहैंगे। बासर निशिकहुं होत न न्यारे बिछुरत हृदय सहैंगे। सककहैं तुम आगेबागी श्याम न जायरहैंगे। सूरदास प्रभु यशुमतिको तजि मथुरा कहा लहैंगे ५१॥ रागसोरठ॥ गोपाललालको अलम्बन प्रान। क्रूरबचन उरक्रूर क्रूर सङ्ग लागे मथुरा जान। क्रूरनाम गुणक्रूर क्रूरमति काहे गोकुल आये। क्रूर कंस नृपबेक जानिमेरि निधिको लेन पठाये। बारबार जननी कहिमोसों माखन मांगत जौन। सूरतिनहिं लेबेकोआये करिहौ सूनोभौन ५२॥ रागकल्याण॥ श्याम चलतचाहत कहेउ सखी एक आई। तबमोहन रथबैठे सुफलकसुत चढ़नचहत यहसुनि सबचकित भई बिरहदौं लगाई। धुकिधुकिसबधरणिपरी ज्वालाझरलतागिरी मनों तुरत जलद बरषि सुरनि नीर परशी। धाईंसब नंदद्वार बैठेरथ दोउ कुमार यशुमति लोटति भुवपर निठुर रूप दरशी। कौन मात कौनपिता आप ब्रह्मजगधाता राखयोनहिं कछूनात नेकनेह नाहीं। आतुर अक्रूरचढ़ै रसना हरिनामरढ़ै सूरजप्रभु कोमलतनु देखि चैन नाहीं ५३॥ रागबिलावल॥ आतुररथ अक्रूरचढ़े। तब रसना हरि नाम भाषिकै लोचननीर कढ़े। महरिपुत्र कहि शोरलगायो तरु ज्यों धरणिलुढ़ाई। देखतनारि चित्रसी ठाढ़ीचितये कुंवर कन्हाई। इतने में कहदियो सबनिसोंमिलिहैं अवधिबिताई। तनक हँसे हरिमनयुवतिनको निठुरठगौरी लाई। बोलतनहींरहींसबठाढ़ी श्यामठगी ब्रज। सूरतुरतमधुबनपगुधारे धरणीके हितकारि ५४ कान्ह कहा

धौं कहेउ। बेगि सुबचन सुनाय सखीरी नाहिन परतुरहेउ। कह मैं करौं घायते लै निधि दूतदूरिनिबहेउ। हौंमति हीनकरी बिधितेहि सरा भूली मथति दहेउ। सबै अयान भईं तिहि औसर काहू रथ न गहेउ। सूरदास प्रभु वृथा लाजकरि दुसह बियोगसहेउ ५५ ॥ रागसारंग ॥ हरि बिछुरत फाट्योन हियो। भयो कठोरबज्रते भारी रहिकै पापीकहा कियो। घोरि हलाहल सुनिमेरि सजनी औसर तब न पियो। मनसुधिगई सँम्हार न तनकी क्रूरदावअक्रूर दियो। कछुन सुहाय जबैनिधि बिछुरी भवन काजको नेमलियो। निशिदिन रटत सूरबलिहारी मरिबो यत्नानि जातजियो ५६ ॥

अथगोकुलसों हरिजूके मथुराचलन समयकीलीला ॥

रागधनाश्री ॥ बिरह अनल अग्निहुं ते ताती। माधव चलन कहत मधुवनको सुनत कँपतिहै छाती। धनितेनागरि नहिंमानतिहै देहजरत जिमिबाती। सबसँग मरहिंप्रकट पावक जरि वहजिय जानसुहाती। जानैकौन कहासुख बिकसत बिकलभई मदमाती। सूरदास सोई पै जानै जो यहरस रङ्गराती ५७ गोपाल इतनो मोह न धरिये। जननी दुखित जानि नँदनन्दन मथुरा गमन न करिये। वहअक्रूर क्रूरभयो हमकहँ लेन यहांलों आयो। तिरछोभयो करसबलपुरको बिधिसंयोगबनायो। चलन जानिआयेब्रजबासीरहि न देहसुधिज्ञान। गोकुल के यहलोग बनेहरि तज्योबुद्धि अरुध्यान। फिरिचितयो तबअवधि बद्योहरि रहेउ प्राणपति आस। सूरदास प्रभु को निहारि कै आईं सब ब्रजबास ५८ बिन परवाह उपगारे कहेउ। कह जानैं यह राह रमापति कबधौं सौंध लहेउ। दुसह दशन धुकिकरत चापकै परशि न परत सहेउ। यह शशि अब ऐसो लागतबिन माखन प्रेमदहेउ। शरद चन्द ज्यों उगत गगन में राधाआनि गहेउ। ताके बीचन बीच नयन मिलि अंजन रूपरहेउ। बिरह संधिबलि पायसनो हठिहै तिय बदन गहेउ। सकलगुणनि भयसूरज प्रभुमुख छबिसों अधिकदहेउ। ५९ परम बियोगिनि सबमिलि ठाढ़ी। ज्यों जलहीन दीन कुमुदि निगत रबि प्रकाशकी डाढ़ी। जिहिबिधि मीनसलिल सों बिछुरत अति अधीन कुम्हिलानी। सूखो अधर कहत नहिं आवै बचनरहित

मुखबानी। उन्नत श्वास बिरह बिरहिनिउर कमलबदनबिलखानी। भीजत नयन निमेष लगाहिं लगा मिलन कठिन जियजानी। बिनु बल बुद्धि चकृत डोलति है चल न सकत पचिहारी। सूरदास प्रभु अवधि कहौतौ प्राण तजति ब्रजनारी ६०॥ रागगौरी॥ हरिबिन कौन सों कहिये। जो अक्रूर बोयेहैं तिनके सोईगुण शुभिारहिये। कासे कहूं कहा कोउ करिहै नाहक अनल जु दहिये। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश का मधुको जो बत रहिये ६१॥ रागषट॥ चलनचलन कहत हैं श्यामलेनकोउ यह आयो। नन्दभवनमें सुनरीसखिकपटीकंस दूतपठायो। ब्रजकीनारि गृहबिसारि सकल उलटी जु धाईं। पूछनकोसमाचार यशुमतिपै आतुर ह्वै आईं। जियहिजानि शोचमिलिबिलखिबदन सबहीठाढ़ीं। मानहुँ वे अति चित्रचितै लिखिहैंकाढ़ी। ऐसेही गतिठौरठौर कहत नबनिआवै। सूरदास बिछुरन बिपति बिरहकाहु न आवै ६२॥ राग नट॥ तब न बिचारीरी यहबात। चलत न फेंट गह्यो मोहनको अबकहरी पछितात। निरखि निरखि मुखरहीमौन ह्वै चकृत भई बिलखात। जबरथ भयो दृष्टि अगोचर लोचन अति अकुलात। सबै अज्ञानभईं वहि औसर अतिहिगा गहिछुतमात। सूरदासस्वामी के बिछुरे कौड़ीभरि न बिकात ६३॥ राग सिन्धजंगला॥ चलनजानि चितवत ब्रजयुवती मानोलिखी चितेरनि हो। जोइ जोइ जहँसोइ इकटक ठाढ़ीं फिरति नहींमन फेरनि हो। बिसरी मतिगति बचन बिकल चित अवणनि सुनत न टेरनि हो। गयोयमुन मिलये मीनज्यों निबरतनाहिँ निबेरनि हो। सूरदास आशा अंकुशबश उलटे प्रभुको हेरनि हो ६४॥ रागपूर्वी॥ देखुवे आवत हैं बनमाली। जिन पहिले पौढ़त पलनाहीं पय प्यावत पूतनाबिघाली॥ अघबक वृषभ बकरा केशीसुत जलते काढ्यो काली। जिन हठि मारि प्रलम्ब तृणावर्त्त इन्द्र प्रतिज्ञा टाली। एतेपर अजहूं नहिँ समुझत कपटी कंस कुचाली। अब बिधुबदन बिलोकि सुलोचनि श्रवण सुनतही आली। धन्य सु गोकुल नारि सूर प्रभु प्रकट प्रीति प्रतिपाली ६५॥ राग धनाश्री॥ सुन्योश्याम मधुपुरी जात। कहि न सकति लाजनकाहू सों गुप्त हृदयकी बात। शोचत चपल आनि उर अन्तर कहि जु गये

अधरात। नींद न परै घटै नहिं रजनी कब उठि देखों प्रात। सूरदास प्रभुसंगहि बिछुरे कौनकहै कुशलात ६६ मथुराकेद्रुम देखियत न्यारे। इतनीदूरि संदेह मिलनको सुनियत टेरपुकारे। तुमबिन श्याम मनोहरमूरति मदनबाण हममारे। सूरश्यामबिन भयो गेहबन गगन गनत निशितारे ६७॥ रागपूर्वी॥ कहूंजात देख्यो पियमेरो। जबते हरिमधुबनहिं सिधारे कबहुं कियो नहिंफेरो। पथिक न चलत सँदेशन पावत मगजोहत भइडेरो। एकबार हरिदर्शन दीजै योग युगति नहिं हेरो। ता बिन कौनकरै जो सूरज युवतिन प्रेम निबेरो ६८॥ रागधनाश्री॥ उमगिचले दोउ नयन बिशाल। सुनिसुनि वे संदेश श्यामघन सुमिरतही गोपाल। आननते रजनीके अन्तर जलचर शोभित काल। मानहु युग जल श्रीयुग्म सुमिरत बाढ़ो शीश मुनाल। लोचन जल भीज्यो युग सुमिरत उरमोतिनकी माल। मानो अवधि इन्द्ररस मानव अमोग्रोसकन भाल। कीन्ही गोपिनसों अब ऐसी करि करि उलटी चाल। सूरदास यहकपट सँदेशन क्यों निबहै वहबाल ६९॥ रागकालिंगरा॥ मनहु प्रीति अति भई पातुरी। अनुज सहित बलराम हमारे कमलनैन देखी मिलि न जातरी। अरश परश कछु समुझत नाहीं या ब्रजकोप भली कि वातुरी। कञ्चनकांच कपूर करपरी हीरा सम कैसेपोत बिकातरी। वे दोउ हंस मानसरवरके भीलर सुकमली न कैसे न्हातरी। सूर श्याम मुक्ताफल भोगी को रति करति उत्तारिकन पातुरी ७०॥ रागधनाश्री॥ मोहन नेक नन्दतन हेरो। राखत हेत तात जननी सों मदन गोपाल लालमुख फेरो। बिछुरन भेंटदेहु ठाढ़ेह्वै निरखो घोषजन्मको खेरो। सबसों सखा बुलाय संगके अपनी गाय आनि तुमघेरो। पाछे चढहु बिमान मनोहर बहुरो यदुपति होत अबेरो। गयेन प्राण सूर यह सुनिकर कौन यतन यशुमति बहुतेरो ७१ मेरी बज्र की छाती बिदरि बिदरि नहिंजाती। हरिहि चलत चितवत मगठाढ़ी पछितातो। विद्यमान बिरहशूल उरमें जु समाती। आवनकी आशलगी अबहिं ही पत्याती। ज्यों ठगनिधि हरबेको रञ्चकगुरु देहि किहि भांती। इमि फिरि मुसकानो सूर मनसा भइमाती। चितवत मनसा इकभइ जागत अकुलाती ७२॥ रागमारू॥ बहुतदुख पैयतहैं री यहबात। तुम जु सुनतहो

माखन मधुबन सुफलकसुत सँगजात । मनसिज व्यथा दहत दावानल उपजी है यहगात । सूधोकहो तब कैसेकीजिये निजुचलिहो उठिप्रात । जोपै यह्न किया चाहत है मीचु बिरह शिरघात । सूरश्याम तो तब लक राखी गिरिकरले दिन सात ७३ ॥ रागबिहागरो ॥ भवन भयानक लागै माय श्यामबिना । देखिहौंजाय काहिलोचनभरि नन्दकेअँगना । लैगये अक्रूरक्रूर ताहिको आजके प्राणधना । कौन सहाय करै गृह अपने मेटै बिघनघना । काहि उठाय गोदकरि लीजै करि करि मना मना । सूरदास मोहन दरशनबिन सुखसम्पति सपना ७४ ॥ रागकामोद ॥ नन्दहरि तुमसे कहाकहेउ । सुनिसुनि निठुर बचन मोहनके क्योंकरि इन्दसहेउ । छांडिसनेह चलेमन्दिर कत दौरि न चरण गहेउ । फाटि न गई बज्रकी छाती कतयहशूल सहेउ । सुरतिकरति मोहन की बातैं नयननिनीर बहेउ । सुधि न रही अति गलितगातभयो जनु डसि गयो अहेउ । कृष्ण छांडि गोकुलकत आये चाखन दूध दहेउ । तजे न प्राण सूर दरशनलों हुतो जन्म निबहेउ ७५ ॥

अथ मथुरामें पहुंचे सो लीला ॥

रागगौरी ॥ वहदेखो आवत बनमाली । घनतन श्याम पीतपट सुन्दर शोभित नयन बिशाली । जिनपहिलेही पलना पौढ़त पयपीवत पूतना बिघाली । अघ बक बच्छ अरिष्ट केशि मथि जलते काढ़ेउ काली । जिहि अति शकट प्रलम्ब तृणावर्त्त इन्द्रप्रतिज्ञाटाली । इतनेपर अन्वो मानत नहिँ कपटी कंस कुचाली । अब बिधु बदन बिलोकि सुलोचनि श्रवणनि सुनत जुआली । धन्यतीय गोकुलकी नारी सूरजप्रकट प्रतिज्ञा पाली ७६ ॥ रागश्री ॥ वह देखो दोउ आवत जन गौर श्याम तन । नील पीत पट मानहु मिलि दामिनि घन । लोचन बङ्क बिशाल कमल दल चितवत चितै हरत सबके मन । कुण्डल किरणि दिपत अति कञ्चन जटित लालमणि लाल मीन तन । चन्दन चित्रबिचित्र अङ्ग लिखि कुसुम सुबास दये नँद नन्दन । बलि बलि जाउँ चले जिहि मारग सङ्ग उड़ाय लये मधुकरगन । धनि वह भूमि पावँ जिहि धारे जीतहिँगे रिपु आजु रङ्गरन । सूरदास प्रभु नगर नारि मिलि लेति बलाइवारि अम्बर तन ७७ ॥ रागमारू ॥ नन्दमहर के ढोटा जिनकी सुनियत भरि बड़ाई ।

जन्मलहो विषकुच लगायके आय पूतना हतिदुखदाई। सुन्दर श्याम सुदेश पीतपट भुज चन्दन चरचित कीन्हो। नटवर भेषधरे बालक सो राज हति दन्तन लीन्हो। लोचन चारु चरण कटि किंकिणि बनमाला उरसोहै। कर कंकण मणि कंठ मनोहर कामदेखि मनमोहै। चन्द्र चकोर मेघ चात्रिकलों अवलोकत मनलायो। सूरदास संतनहित कारण श्याम मधुपुरी आयो ७८ वे माधव जिनि मधुमारेउ। मथुराजन्मि गोकुलहि आयो नन्ददुलार बहुत सारेउ। केशी तृणावर्त्त अघबकसुर हति पूतना बिसुहिधारेउ। इन्द्रकोपि बरष्यो बरमेघन होतप्रलय ब्रज को टारेउ। कंसराज हठि इन्द्ररच्योहै रङ्गभूमि अतिरण मारेउ। सूर श्याम भये मथुरापति ज्यों बहुत जनमते तारेउ ७९ ॥ रागसारंग ॥ मेरेकमल नयन प्राणते प्यारे। इनको कौन मधुपुरी पठवै रामकृष्ण दोऊ जन बारे। यशुदाकहै सुनहु सुफलकसुत मैंपयान यत्ननिकरि हारे। यहकह जानहिं सभाराजको गुरुजन बिप्र जिवावन हारे। मथुराअसुर समूह बसत हैं करि कृपाण योधा हथियारे। सूरदास स्वामी ये लरिका इनकब देखेमल्ल अखारे ८० ॥ रागकेदारो ॥ हरिबिन कौनकहै केहिसुनिये। मनसिज ब्यथा आइ ज्यों बिषकी उरअंतर कहुँगुनिये। कालन भौन रैनिनिशिबासर सुखहू कबहि न लहिये। मुकइभये अब जगमें पशु ज्यों कंसके दुःख न सहिये। कबहुँक जिय ऐसी उपजति है जाय यमुनजल गहिये। सूरदासप्रभु कमलनयन बिनु कोलौं जीवन रहिये ८१ मथुराके द्रुम देखियतन्यारे। इतनीदूरि सँदेहमिलनको सुनियत टेरपुकारे। आवत नहिं संदेश न भेजत माधव नन्द दुलारे। तुमबिन श्याममनोहर मूरति मदनबाण हरिसारे। सूरश्याम बिनभये गेहवन गगन गनत निशितारे ८२ ॥ रागनट ॥ कहूंजात देखयो पियमेरो। जबतेहरि मधुबनहिँ सिधारे कबहुँकियो नहिंफेरो। पथिक न चलत सँदेशन पावत मगजोवत भरेडेरो। एकबार दरशन हरिदीजो योगयुगति नहिंहेरो। ताबिन कौनकरे जो सूरज युवतिन प्रेमनिबेरो ८३ मो कोना हरिबार भई। जबतेहरि मधुबनहि सिधारे तबते सुधि न लई। कहकीजे सङ्गति जो नीचकी मनअति दुखितभई। चन्दनचाय अगिन समलागत यहबिधि सबेगई। सूरदासप्रभु दरशन दीजै नेकजुमैयाठई।

तेरीगतिमोको है सुमिरण अब कछु मानमई ८४ ॥ रागधनाश्री ॥ केतिक दूरिगयो रथमाई । नँदनन्दनके चलत सखीरी मोहूँ मिलन न पाई । एकहुद्योस द्वारनँद जाके तहाँरैनि बिनु आई । आज बिधाता मतिहु रिसानी भवन काजबिसराई । जबचलबेकी साजकरतु तबकाहुनबात चलाई । बिधना सकल अकेली कीन्ही शूलसही नहिँजाय । सूरदास प्रभुकहा जानिजिय जलनिधि दइहै बहाय ८५ ॥ राग जंगला ॥ पाछेही चितवत यह लोचन आगे परत न पायहो । मन माधव लैगये मधुपुरी कहाकरौं ब्रजजायहो । पवन सुभरी पताका अम्बरभई न रथके अङ्ग । धुरी न भई चरण लपटानी जाति उहाँ लौं सङ्ग । काबिधि भई करों हौं कैसी कबरी मिलैं गोपाल । सूरश्याम बिन रही ठगीसी मुरछित परी बिहाल ८६ ॥ रागधनश्री ॥ हरि ज्यों जहां तहां सो ठाढी । हरिके चलत देखियत ऐसी मनहु चित्रलिखि काढी । सूखेबदन श्रवतनैनन जल धाराअति बहुबाढी । कांधे हाथधरे चितवत हैं मानोद्रुम बेली धेंदाढी । नीकी नहींकरी सुफलकसुत छांड़िदूध बिनसाढी । सूरदास अक्रूर कृपाते सही ब्यथा अतिगाढी ८७ ॥ राग जंगला ॥ चलनजानि मोहन ब्रजयुवतिन मानोबनी चितेरतिहो । जोजैसे सोतैसे अटकी फिरति न लोचन फेरति हो । बिसरी गति मति बिकल बिरहिनी श्रवणनि लोचन टेरतिहो । गयो जुमनमिलि पयपानी ज्यों निबरति नहींनिबेरतिहो । लगीसङ्गयोगति यशुमति ज्यों घिरति न क्यों पै घेरतिहो । अबकाहिसूरप्राण अंकुशबश उलटि प्रभूको घेरतिहो ८८ ॥ रागधनाश्री ॥ कहाजानि अब लालन मेरे । हौंअनाथ दुखपायों अतिही मनबचक्रम नहिंफेरे । चितवतरही चकोर चन्द ज्यों अबलनकी गतिहेरे । श्यामसुन्दर कमलनैन अतिहि दृष्टिकरि चरणन हेरे । सो सब छांड़ि और जो धावत सकल जन्मभरि टेरे । सोसुख अब गोपी सबलूटत महाकर्म के बेरे । सूरदास जासों सुखपावै सो सुख छांड़ि और नहिंमेरे ८९ ॥ राग जंगला ॥ श्याम चलनअब सुनियत आजकौनकुटिल यह ब्रजआयो । नन्दभवनमें सुनकसुनी अब कंसजु दूत पठायो । ब्रज की नारिन यहै बिचारेउ सकल सिमटि करिआई । बूझत समाचार आतुर ह्वै गृह गृह ते उठिधाई । प्रीति जानि शोच मानि बिलखि बदन बाढी ।

समहुं वे सखी लिखिलिखिचसहु लिखिकाहीं। येभीछवि ठौरठौर कहत
नबनिआवै। सूरदासबिरहनियाकहो काहिभावै९०॥ राग नट॥ हरिसे
प्रीतम क्यों बिसराई। मिलन दूरिमन लगत चन्दपर चित चकोर
पछिताई। जलमेंरहै जलहितेउपजत बिन जलही कुम्हिलाई। प्रकट
न प्रीतिकरैपरदेशी सुखकोऊ देशबसाई। सोइ गोकुलहै सोइ गोब-
र्द्धन काहि न करिबह छाई। बरषा दुखितदेखि बादर अति बरषा
ऋतु बरषाई। सूरदासप्रभु तुम्हरे दरशबिनुदुखकयों हिये बसाई ९१
सखीरी ज्यों कुरुक्षेत्र कुमानो। तबते दुखदीन्हो जब बांधेताकोफल
अबजानो। बिनुकीतिचकपरी अब समुझी लेतजुलनपरमाती। सुन्दर
श्याम जबैते बिछुरे बिरह दहतहै छाती। हमअबला अतिदीन हीन
मति वे सबही विवियोग। सूरबदन देखेजिय हरषत हरत शरीर ह-
रोग ९२॥ रागमारू॥ सुन्योबसुदेव नन्द सुवनआयो। त्रियासों कहत
कछु सुनत हैरीनारि रातिहु सुपने कैसेपायो। गये अक्रूर श्रीकृष्ण
लैनको आज्ञापाय तुरतआयो। दन्तगज तोड़के धनुष बिडार के रङ्ग
भूमि रणजीति पायो। मुष्टि चाणूर शल्ल तोशल मारकर केशगहि
कंसमोको जो मारेउ। कहेतीय सुनहोकंसजाय मिलोकाहेबैरबिसा-
रेउ। दिये लोचनढारि तू कन्त कहामान कहाहम पापकरि जन्म
लीन्हो। सोतो देखतभये येअजराजतेबचो अबहीं मनजान चीन्हो।
छांड़ बंधते बसुदेव देवकी तोहिं लाज न सरियत भूले। सूरलिखि
कर्मसों होईवाही निबिहोनी होयसो मिटै न मूले९३॥ रागरामकली॥
तब बसुदेवहरषितगात॥श्यामरामहीं कंठलगाये आनन्देदोउ भ्रात।
अंबरदेव दुन्दुभि शब्दभयो अतिही जय जय कार। दुष्टदलि सुखदये
संतनि इहिबसुदेव कुमार। दुखगयो हुलास मन अति नगर के नर
नारि। भयो पूरण सकल काजहि कलशमंगल बारि। तुरत बिप्रन
बोलिपठये धेनुकोटि मँगाय। सूरके प्रभु ब्रह्मपूरणपाय हर्ष बढ़ाय
९४॥ रागपरज॥ रानिन परमोधि श्याम महलद्वार आये। काल
बंधनेमि उग्रसेन सुनत धाये। झुकि चरण परेउ आय त्राहि त्राहि
नाथा। बहुतै अपराध परे क्षमहुं मोहिं नाथा। महाराज कहि श्री
मुख लिये उरहि लाई। हमरो अपराध क्षमहु करी हम ढिठाई।

तबहीं सिंहासन पै उग्रसेन धारे। छत्र शिर धराय चँवर अपने कर ढारे। ठाढे आधीन भये देवदेव भाखे। अपन जानके प्रसाद सादर ऋषि राखे। मोको कह एतो प्रभु विश्वम्भरन स्वामी। घट घट की जानतहो तुम अन्तरयामी। तो फिरि नृपकहत कहि तुमकेईकेती। सेवा तुम जेती करी देही पुनि तेती। रजकधनुषगज मल्लनिशंकमारि काजा। सूरजप्रभु सोहत भये उग्रसेन राजा ९५॥ रागसारंग ॥ मथुरा लोगन बातसुनी उग्रसेन को राज दियो। सिंहासन बैठारि कृपाकरि आप हाथ हरि चँवर लियो। मात पिताके संकट हरिहैं देवनजय धुनि शब्द कियो। रानीसबै सरततेराखी उनलेप्रभुनहिं औरबियो। अबहीं सुनि बसुदेव देवकी हर्षित ह्वै है दुहुन हियो। सूरदास प्रभु आय मधुपुरी दर्शनते पुरलोक जियो ९६॥ रागपूर्वी ॥ मथुराके लोगन सचुपायो। नटवर भेषधरे नंदनन्दन सङ्ग अक्रूर के आयो। प्रथमहिं रजक मारि कर अपने गोपवृन्द पहिरायो। तोरि धनुषशाला नटनागर सब जग खेल खेलायो। रणभुवि मुष्टि चाणूर बली अति भुजसों तारबजायो। नगरनारि गारीदैकहहीं अ जशुति युद्ध बनायो। बरषहिं सुमन अकाश महाधुनि दुन्दुभि देव बजायो। चढ़िकर अमर बिमान परम सुख कौतुक इन्द्र आप आयो। कंस मारि सुर राजी करिकै उग्रसेन शिर नायो। मात पिता बन्धन ते छोरे सूर सुयश गायो ९७॥ रागनट॥ मथुरा घरघर सुनि यह बात। रजक धनुष गज मल्लनमारो तनकसे नन्दके तात। धन्यमात धनिपिता धन्यगृह धन्य धन्य वहरात। जबकि लियो अवतार धरणिमें धन्य बनी सो मात। हंसकेसे जोटदोऊ अवरदियो निपात। सूरयोधा सबैमारे कहा जानत घात ९८॥ रागकान्हरो॥ माधव वे भुज कहा दुराये। जिहिभुजते आघासुर मारेउ अरु सबगोसुत ग्वालबचाये। जिनभुजते प्रह्लाद उबारे हरिनाकुशको उदरबिगारेउ। जिनभुजले दांवरी बँधाये जिन यमलार्जुन मुक्तिपठायउ। जिनभुजते बलियाचकह्वैकै हरिजू बामन ह्वैकैआये। जिन भुजते लंकागढ ढायो रावणशीश तबै लैढाये। आनि बिभीषण प्रभु जू निवाज्यो सुस्थिर राज तिन्हैं देआये। जिन भुजते भारत हठ ठान्यो कौरव पांडव आनिलराये। जिन भुजते अंडा भरुही को सकल

युद्ध सभा माहिं बिलाये। जिनभुजते सबदेव उबारेउ मुनिह्नै निपुनजु आये। जिनभुजते पृथिवी हलराये महाशब्द झंकते जु उठाये। जिन भुजते बलिजाइसूर अब रंगभूमि तृण तोरि लँघाये ९९ ॥ रागपूर्वी॥ देखन मन्दिरपर जु चढ़ी। यदुपति पूरणचन्द बिलोकति जनुपुर उदधि तरंगबढ़ी। दरशनकी प्यासी अतिआतुर निशिबासर गुणग्राम रढ़ी। रही न लाज मोहिं मुख चितवत सबनि सुनाइ अशीष पढ़ी। रही देहकी खेह करमबश जनुपट घटिका अनलडढ़ी। सूरदास प्रभु कृपा बिलोकनि मनहुँ बिधातैं फेरि मढ़ी १०० ॥ रागकल्याण॥ खेलत गजसँग श्याम रामकुँवर दोऊ। क्रोध द्विरद ब्याकुलअति इनकोरिस नेकनहीं चक्रतभये योधानहूँ देखत सबकोऊ। श्यामकर्टाकि पूँछलेत हलधर करशुंडिदेत महल महल नारिचरित देखत यह भारी। ऐसे आतुरगोपाल चपलनयन मुखरसाल लिये करबेणु लकुट लाल मनो नितकारी। सुरांगना ब्याकुल बिमान मनमन सबकरैंगान बोलतयह बचन अजहु मारेउनहिं हाथी। सूरजप्रभु श्यामराम अखिललोकके बिश्राम पुरपूरण काम करन नामलेत साथी १०१ ॥ रागसोरठ ॥ तब रिसकियो महावत भारी। जोनहिं आजुमारिहों इनको कंसडारिहै मारी। अंकुश राखि कुम्भ पर करष्यो हलधर करहै किलकारी। धायो भवनहुंते अतिआतुर धरणी देतखभारी। जब हरि पूंछगह्यो दक्षिणकर कम्बुकतर गिरधारी। पटक्यो भूमिफेरिनहिं सटक्यो महा कुवलया भारी। दुहुंकर द्विरद दशनयक यक छबिसो निरखत पुर नारी। सूरदास सुरनर सुखदायक मारोनागपछारी १०२ ॥ रागटोड़ी॥ हँसत हँसत श्यामप्रबल कुवलया सँहारेउ। तुरतदन्त लयेउखारि कन्धनिपर धारेउ। निरखत नरनारि मुदित चक्रत गजमारो। अतिही कोमल अजान सुनत नृपति जीयमें सँकारो। तनुबिन ज्यों भये प्राण सखनि प्रेमआये। देखतही शंकितभये कालनिरखि भाये। कंसआन घेरिलियो दोउमन मुसक्याये। असुरबीर चहुं पास जिनके मुख अकाशमल्ल करतगास नाशब्रह्मको बिचारे। सबै कहत भिरहु श्याम सुनत रहत सदानाम हारजीत घरहीमें कौन काहि मारे। हँसि बोले श्यामराम कहासुनत रहेनाम खेलनको हमहिंकाम बालकसँगडोले।

सूरनन्दकेकुमार यहै राजसों बिचार कह्यो कहत बार बार प्रभु ऐसे बोले १०३ ॥ रागकल्याण ॥ रंगभूमि आये अतिनन्द सुवनबारे। निरखत ब्रजनारि नेहउरते न बिसारे। देखोरी मुष्टिक चाणूर इनहँकारे। कैसे अबबचै नाथ उर्द्धश्वास डारे। रजक धनुष योधा हति दन्तगज उपारे। निर्दय यह कंसइनहिं चाहतहै मारे। कहां मल्ल कहां अतिहिकोमल अँगबारे। कैधौजननी कठोर कीन्हे जिनन्यारे। बारबार सबै कहति भरिभरि दोउतारे। सूरजप्रभु बलमोहन उरते नहिंटारे १०४ ॥ रागमारू ॥ नवलनन्द नन्दन रंगभूमि आये। संगबलराम अभिराम शशिसूर जो अपनी आपछबिसों सुहाये। हारगजराज लखि पीतपट कटि कसत मन्दमृदुहँसत अतिलसतभारी। कछुकहो परतोत गर्जहि फिरिहेरिके पेंचदैछबीली पगिया सँवारी। गर्बके गिरिमनो चलत पायँन तैसेही कुबलया प्रबल सिरसहिवायो। बालकनि बच्छ ज्यों पूंछधरि खेलिये तैसे हरिहाथ हाथी गिरायो। गहि पटकि पुहुमि पर नेकु नहिँ मद कियो दन्तफिरि नालसे ऐंचि लीन्हो। कन्धधरि चलेदोउ बीर नीके बने निरखि पुरजन प्राणवारि दीन्हो। धौलसे मल्ल सबै धाइ आये धरनकौड़ भूलेगाड़ थरथराने। कंसके प्राणभयभीत पिँजराचले नव बिहंगम भरत फरफराने। मधुपुरीकी युवतीसबै कहतिअति रतिभरी देखरी देख अँग अँग लुनाई। सुनत अवशनि रही देखरी तब सही मधुर मूरति सुरनपति न पाई। निपट स्मर दोऊ निरखि देखरी बिधि बड़ो क्रूर किधौं हम अभागी। परमहंस ब्रह्मरिपु रिपुदमन देवभक्त जननके आनन्द अनुरागी। अबलसों अबल भये सबलसों सबल भये ललिततनु ज्योति अतिही प्रकाशी। ज्ञानकरि ध्यानकरि जिन जैसी लईमानि मातपित दुखदूरि सूर अबिनाशी १०५ ॥ रागसोरठ ॥ मथुरा ऐसी आजुबनी। मानोपतिको आगमजान्यो सजेशिंगार घनी। भूषण चित्र बिचित्र देखियत शोभित सुन्दर अङ्गनि। मानोकोटिकशी कटि किंकिणि उपबन बसन सुरङ्गनि। ध्वनि अतिसघन करालघोषमें पायँन नूपुर बाजत। उर अञ्चल चञ्चल अति राजत धामनि ध्वजा बिराजत। ऊंचे अटन नक्षत्रनकी छबि जनुयुवती मणि फूली। कनक कलश कुच प्रकट देखियत आनँद कंचुकि भली। बिद्रुम फटिक पा-

नची ऊपर आलरंध्र की रेख। मनहुँ तुम्हारे दरशन कारण नयननि तजी निमेख। अवलोकहु यहि भांति रमापति पुरी परम सुविस्तार। सूरदास प्रभु कंसमारिकै होहु यहांकेभूप १०६॥ रागधनाश्री ॥॥ कुब्जा हरिकी दासी आहि। जैसे आप भाग गोकुलरहे तैसे राखी ताहि। रूप रतन दुरायर्याह राख्यो जैसोदीन न काहीं। जैसे छाप अमोल रतन परि कहजानेजो कारमाही। वैसेहि रही कूबरीदासी अविनाशी की आहीं। सूरदास प्रभु कंसमारिकै लई आनि तिहि नाहीं १०७॥ रागशंकराभरण ॥ अति हित चञ्चल जानि लई। मन भांवरि करि अति नागर वर रसबस मोललई। परमानन्द सांवरे ऊपर तनमन बिसारि गई। राधाश्याम प्रीति उरअन्तर सर्बस प्रीतिहई। आवनजान गवन कत कीन्हो हरि सब भांति ठई। गोपीनाथ प्राण के रस बस जानी जाय दई। गिरिधर लाल रसिक के ऊपर कुब्जा वारि गई। मानत नाहिं लई सांवरको सकल प्रीति क्षण मांहभई। माननि मानकरत गोपी हमें दुख सब भांति बई। सूरदास चिन्तामणि चित धरि अब कित प्रीति गई। मेरेमन बचकर्महिं सांवरे और न मानमई १०८॥ रागिनी भूपाली ॥ आनंदही हर्ष बढ़ो अति। देववृन्द चरणारबिन्द ज्यों मथुरा प्रकट भयो पति। गावत गुण गन्धर्व जु पुलकित रसिक सूर जो अति रति। बिद्याधुरवर कंठकू ततिअति तालउघटयतननि जति। शिव बिरंचि सनकादिक आगे चितवतसमान रहेउ रति। कमल नयन शशि बदन बिलोकत देखि बदन जु विचित्र रति। श्यामसुभग जो पीत बसन द्युति और आनि जोरे अति। नखमणि मुकुटबिभाव मुदित ज्यों चितै न मानतिमनयति। सूरदास प्रभु कियो कृपा अति भुज के चिह्न दुरावति १०९॥ रागगोंड ॥ क्रोध गजगजपाल कीन्हो। गरजिघुमरात मदभारगगननिग्रवणापवनते बेगितिहि समयचीन्हो। चकतों असत चक्रतभये देखि सब चहू ओरेखिये नन्दढोटा। चमकि गये बीर सब चकीं चोंधी लगी चितै डरपे असुर घटा घोटा। लाल अम्बर धौलबरन बलराम तनु पीतअम्बर श्याम अङ्गशोभा। सूर प्रभु चरित पुर नारि देखत महल महल पर आशिर्बाद देत लोभा ११० कहत हलधर कहेउ मान मेरो। अखिल ब्रह्मांड के नाथ छांहें खरे

मारि गजजीव अब लेहुं तेरो। यह सुनत रिस भरो दौरिबे को करो शुण्ड झटकत पटकि कूक पारो। घातमन करेलै डारिहैं दुहुंनिपर दियो गजपेलि आपुन हँकारो। लपक लीन्हो धाय दबकि उर रहे दोउ भ्रम भयो गजहिं कहां गये वैधों। अरो दै दशन धरणीकोटबीर दोउ कहत अबहीं याहि मारिकैजैं। संगदै हांकठाढे श्याम पाछेते रामभये आय आगे। उतहि वे पुच्छ गहि जाय यह शुण्ड कै फिरत गज पास बहु हँसन लागे। नारिमहल निरखिसबै आर्तहि डरीं नन्द के नन्द दोउ गज खिलावैं। सूरप्रभु श्याम बलराम देखतिभ्रसतिबचैं ये कुंवरबिधि सों मनावैं ११। ॥ रागकल्याण ॥ भले नन्दके छोहरा रे डर नहीं कहा जो मल्ल मारे बिचारे। बारहीबार दै हांक गये कहां अब आपने सबअसुरन हँकारे। पौरि गाढीकरे द्वारबीरन कहे आय ललकारि इन मारिदेवै। बहुरिघरजाहुगे धेनु दुहि खाउगे जानदेहु तुमहिं प्राण लेवै। कोउ न टरे वहां लौंदै आवतकहां पग है धरणि हरी सन्मुखै आयो। चक्रत गयो सोच दर्शनभयो कहारी सोच यह कहि सुनायो। श्याम बलराम के नाम लैलै कहत साथ आई लेन तुमहिं बाजे। सूरप्रभु देखि नृपक्रोधकीर धरी यककटि पीतपट देव राजे ११२ ॥ रागमारू ॥ देखि नृप तमकि हरि चमकित हैं शेंदमारि लीन्हे गहि बाज जैसे। धमकि मारो धाय तमकि हृदयधरो झमकि गहि केशलै चले घेंसे। ठेलि हलधर दियो झेलि तब हरिलियो म-हलके तरे धरणि गिरायो। अमर जय धुनि भई बाक त्रिभुवन गई कंस मारो निदरदेवरायो। धन्यबाणी गगन धरणिपाताललों धन्य हो धन्य बसुदेव ताता। धन्यअवतार लियोसुरन उपकार दै सूरप्रभु धन्य बलराम भ्राता ११३ जयजय धुनि तिहुंलोक भई। मारि कंस धरणी तब उधरी ओक ओक आनन्दमई। रजकमारि कोदण्ड बिभंज्यो खेलत गजकर प्राणलियो। मल्लपछारि तुरत संहारे सबन मान सुरलोक दियो। पुर नरनारिन को सुख दीन्हो जो जैसो फल सोइ लहेउ। सूर धन्य यदुबंश उजागर धन्यधन्य धनि घुमरि रहेउ ११४ आजु तो निशान बाजे बसुदेव रायके। मथुराके नर नारी उठे सुख पायके। अमर बिमान सबै कहैं हरखाय कै। फूले मात पिता

दोउ आनन्द बढ़ाय कै। कंसको भण्डार देत सबै लुटाय कै। धेनु जे सकल राखे नन्द ये नाय कै। तांबे रूपे सोने सजि राखे बनायकै। मागध सङ्गनजन लेत मनुभायकै। अष्टसिद्धि नवनिद्धि आगेठाढ़ीं आ-यकै। सबतिलक बिप्रन बन्दिदई दिवायकै। सब पुरनारि आईं म-ङ्गल गायकै। अम्बर भूषण पठैदई उन्है पहिरायकै। अखिलभुवन जन कामना पुरायकै। पुरजन धन देतहैं लुटायकै। सूरजन दीनद्वारे ठाढ़भये गायकै। कछु कृपाकरि दीजै मोहिंको दिवायकै ११५ जब यदुकुलपति कंसहि मारो। तिहूंभुवन भरि शोर परो है तुरत मंचते धरणि गिरायो। ऐसेहि मारत बिलम न लायो। केशगहे पुहुमी घि-सरायो। डारियमुन जलबीच बहायो। जाके मुह तिहुंभुवन डराई। ताको मारो हलधर भाई। जाके धनुष टकोरत हाथा। आसन डारि भजे सुरनाथा। मारत ताहि बिलम नहिंकीन्हो। उग्रसेन को राज्य सुदीन्हो। जयहो जयबसुदेव कुमारा। जयहो जय तुम नन्ददुलारा। सुरदेवी देवैं धनि मैया। धनि यशुमति त्रिभुवनपति धैया ११६ ॥ रागधनाश्री ॥ धनि अक्रूर मधुपुरि लैआये। सूर असरजयजय धुनिगाये। दनुजबंश निरबंश कराये। धरणी गिरते भारगँवाये। मातपिता ब-न्धनते छुडाये। यहबाणी सुरलोकनि गाये। जो जैसो तैसे तिहिभाये। सूरज प्रभु सबके सुखदाये ११७ ॥ रागबिलावल ॥ कंस मारि सुर काज कियो। मात पिता बन्धनते छोरे दुखबिसरे आनन्द हियो। उग्रसेन को धायमिले हरि अभय अचलकरि राजदियो। असुरबंश निरबंश सराकमें एकौनहिं कोउ और बियो। मिली कूबरी चन्दनदैकै ऐसेहि हरिको नामलियो। सुनहुसूर नृपपास जातिहै बीचमुक्त अतिदरश दियो ११८ ॥ रागमारू ॥ कूबरी पूरब तप करि राख्यो। आये श्याम भवन ताहीके नृपति महल सबनाख्यो। प्रथमहिं धनुषतोरि आवत हैं बीच मिली वहधाय। तिहि अनुराग बश्यभये ताकेसो हितकह्यो न जाय। देवकाजकरि आवन कहिगये देगये रूपअपार। कृपादृष्टि चितवत श्री श्रीभई निगम न पावत पार। हते दूरि दिन नीके पाछे ऐसे दीनदयाल। सूरसुरनके काज तुरतही आवत तहँ गोपाल ११९ रागजैतश्री ॥ यहै कहत बसुदेव त्रिया। जनि रोवहुहो बारबदै सोंहनोर

मुख धोवहु नारी। कहियतहै गोपाल हरण दुखगर्व प्रहारी। कबहुं प्रकट वे होहिंगे कृष्ण तुम्हारे तात। आजु कालिह हरि आय हैं यह सपनेकी बात। अब जिन होय अधीर कंसके आय तुलान्यो। देखत जाय बिलाय भार तिनुका करिजान्यो। ऐसो सपनो मोहिं भयोरी बिथा सत्यकरि मानि। त्रिभुवनपति तेरे सुवनहैं तोहिं मिलेंगे आनि। यहि अन्तर हरि कहेउ मात पितु कहां हमारे। तहँ लैगये अक्रूर प्रयास बलराम पधारे। बर्जीशला द्वारे दियो दरशनते गयेछूटि। स-हज कपाट उघरि गये तारा कूंजी खूटि। जो देखे बसुदेव कुंवर दोउ काके आयो। दर्शनदियो तिहिभेष प्रथम जो दरश दिखायो। पाय मिले पितु मातको यहकहि मैं तुवतात। मधुरे रोवन दोउलगे सुनिहै कंसडरात। तुरत बन्दते छोरि कहेउ मैं कंसहि मार्यो। योधा सुभट सँहारि मल्ल कुबलया पछार्यो। जिय अपने जनि डरकरो मैं सुततुम पितु मात। दुखबिसारि अब सुखकरो अब काहे पछितात। निश्चय जननी जानि कंठधरि रोवन लागी। तब बोले बलराम मात तुमते को भागी। बारबार देवैकहै कौनगोद खेले नाहिं। द्वादशबर्ष कहां रहे मात पिता बलिजाहिं। पुनि पुनिबोधत कृष्णलिखयो नहिं मेरेकोई। जोइ जोइ मनकी साधकहो मैं करिहौं सोई। जो दिनगये सो गये तब अब सुख लूटो मात। तातनृपति रानी जननि जाके मोसो तात। जोइ मन इच्छाहोय तुरत देखो मैं करहूं। गगन धरणि पातालजात कतहूं नहिँ डरहूं। माता हृदये तब कहो मनमन बढेउ अनन्द। महर सुवन मैं तौ नहीं मैं बसुदेवको नन्द। राजकरौ दिन बहुत जानिके है अब तुमको। अष्टसिद्धि नवनिद्धि दोउ मथुरा घरश्को। रमा शिव-कनी दोउ करि कर जोरे दिनयाम। अब जननी दुखजनि करो करो न पूरण काम। धनि यदुबंशी प्रयाम यहै युग चलत बड़ाई। शेष रूप मैं राम कहत नहिँ बात बनाई। सूरज प्रभु दनु कुल दहन हरन करन संसार। ते पाये सुत तुमहिँ करि करो न सुख बिस्तार १२०
राग काफी॥ किये सुरराज गृहचले ताके। पुरुष अरु नारिको भेदभेदो नहीं कुलिन अकुलीन अब तरो काके। दास दासी कौन प्रभुनि प्रभु कौनहै अखिल ब्रह्मारड यक रोम जाके। भाव साँचो हृदय जहां

हरि तहांहै कृपा प्रभुकी साथ भाग वाके। दास दासी श्याम भजनहुँ ते जिये रमा सम भई सो कृष्णा दासी। मिली वह सूरप्रभु प्रेम चन्दन चरचि कियोजप कोटितपकोरिकासी १२१ कुबजासदन आये श्याम। करि कृपा हरि गये प्रथमहिँ भई अनुपम बाम। प्रीति के बश दीन बन्धव भक्तवत्सल नाम। मिली मारग सतय लैके भये पूरणा काम। उर्वसी पटतर नहीं नहिँ रमाके मन ताम। सूर प्रभु महिमा अगोचर रमादासी धाम १२२॥ राग धनाश्री॥ मथुरा के नरनारि कहैं। कहां मिली कुब्जा चन्दन लै कहा श्याम तिहि कृपा चहैं। कहा तपस्या करि यह राख्यो जहाँ तहाँ पुर यहै चले। कछु नहिँ आवत हरि देखी यहै करी प्रभु हेत भले। तबहिँ कृपाकरि सुन्दरि कीन्ही यह महिमा मोहिँ कहिनहिँ आवै। सूरजदास भाग कुबरीको को न ताहि के पटतर पावै १२३॥ रागगोंडमलार॥ हर्ष नरनारि मथुरापुरीके। शोच सबको गयो दैत्यकुल सब हयो तिहुँभुवन जय जयो हर्षकरिके। निदरिमारो कंस प्रकट देखत सबै अतिहि दिन अल्प के नन्द ढोटा। नयन दोउ ब्रह्मसे परम शोभा लसे भक्तके यथा शुभ हंस जोटा। देव दुन्दुभि बजी अमर आनँदभये पुहुपगणा बरषहींचेत जान्यो। सूर बसुदेवसुत रोहिणीनन्द धनिधनि मिल्यो भार भुवअखिल जान्यो १२४ रागमारू॥ तुरत मारोकंस देवनाथा। निदरिमारो असुर पूतना आदिते धरणि पावनकरी भई सनाथा। लोक लोकन बिदित कथा तुरतहि गई करन अस्तुति जहँ तहाँआये। देव दुंदुभि पुहुप वृष्टिजय धुनिकरे दुष्ट यहमारि सुरपुर पठाये। केश गहि करषि के यमुनजल डारिदे सुन्यो नृपनारि पति कृष्णा मारो। भई ब्याकुल सबै हेत रोवनलगीं मरणाको तुरत जोहर बिचारो। गये तहां श्याम बलराम बोधी सबै कहत सब नारि तुमकरो तैसी। सुनहु नृपबाम वह काम ऐसोइ रहेउ जानि यह बात कांे कहत ऐसी। मरति काहे कहा तुमहिँ कह वह भई जानि अज्ञान तुमहोत काहे। सूरनृप मारिहार बचनकी सत्यता हरष ह्वै श्याम मुख रामचाहे १२५॥ रागमारू॥ एही सुत नन्दअहीर के। मारेउ रजक बसन सबलूट्यो संग सखा बलबीरके। कांधे धारि दोउजन आये दन्तकुवलिया पीरके। पशुपति सयडलमध्य मनोमनि

क्षीरधि नीरधि सीरके। उठि आये तजि हंस मानसनो मान सरोवर तीरके। सूरदास प्रभुताप निवारन हरनसन्त दुखपीरके १२६ ॥ राग गौंड मलार ॥ बोलिलीन्हे कंसमल्ल चाणूरको कह्यो करत क्योंबिलम कीन्हो। बंश निरबंशकरि डारिहौं क्षणक में गारि दैदै ताहित्रास दीन्हो। शत्रुनान्हो जानिरहे अबलोंबैठि जनक आपनेको मारि डारो। द्विरदको दन्त उपटाय तुमलेतहो यहैबल आजु काहेनसम्हारो। भलीनहिं करीतुम राखिराख्यो उनहिंहै वहीकहि तुरततेहि पठायो। क्रोधकछु त्रासकछु शोचकछु शोककरि साहसै करतरँगभूमिआयो। परस्पर कहि सबनि नृपति त्रास्योमोहिं सुनहूँरेबीर अबलों न मान्यो। श्याम बलराम इनदुहुनि को मारकर होयसो होययह कहत रान्यो। निरखि दोउ बीरतन डरेदोउ मनहिंमन वहीबुधिकरो ज्यों नाशकीजै। लखति पुरनारिप्रभु सूरदोउ मारिहैं कहत है नृपतिपशु सुयशलीजै १२७ ॥ राग कल्याण ॥ देखोरी मल्लइन्हे मारन को दौरे। अतिही सुन्दरकुमार यशुमति रोहिणीबार बिलपति वह कहतिसबै लोचनढोरे। कैसेहू बचैं आज पठये धौं कौनकाज निठुर हियेमाता को लाभही पठायो। एतौ बालक अजान देखौ उनको सयान कहा किये ज्ञानयहां काहेको आयो। कहांमल्ल मुष्टिकसे चाणूर शिलाभञ्जनसे कहत भुजागहि पटकन नन्दसुवन हरये। नगरनारि व्याकुल जियजानत प्रभु सूरश्याम गर्बहरन नामध्यान करिकरि वे हरये१२८ राग धनाश्री ॥ कहत पुरनारि यहसनमों हमारे। रजकमारेउ धनुषतोरि द्वैखण्ड करेउ हत्यो गजत्यों इनहिं कौनमारे। असित अति बारीबैस मल्लज्योंज्यों कहे लरतनहिं श्याम हमसङ्ग काहे। परस्पर सतीकरत मारिडारो इन्हे लखत यहचरित दुहुमुखनि चाहे। कहाहम कहैंयह होन चाहत कहा अबहिं मारत दुहुन हमहिं आगे। सूर करजोरि अंचरछोरि बिनवैं बचैंये आजुबिधि यहैमांगे १२९॥ राग गौंड मलार॥ सुनहो बीर मुष्टिक चाणूर तुम हमहिं नृपपासनहिं जानदैहो। घेरि राखे हमहिंनहीं बूझत तुम्हें जगत में कहा उपहास लैहो। सबै कह यहै भली मति तुमपैहै नन्दकुंवर दोउ मल्लभारे। यहैयश लेहुगे जीव नहिँ देहुगे खोजहीपरे अबतुम हमारे। हमनहीं कहत मनमनहिँ जो

यहैवसि कहत हो कहा तो करै तैसी। सूर हमतन निरखि देखिये आपको बाततुम मनहिँ यह बसीनैसी १३०॥ राग टोडी॥ जबहींश्याम कही यहबानी। वहसुनिकै युवती बिलखानी। मल्लनि कहेउ हसहिँ तुमदेखो। अपने बल अपनो तनुपेखो। चितयेमल्ल नन्दसुत ओधा। कालस्वरूप बज्रकी योधा। भुजपेंठी रजअङ्ग चढायो। गांस धरोहरि ऊपर आयो। श्याम सहज पीताम्बर कांधे। हलधर निरखत लोचन आंधे। तबचाणूर कृष्णपर धायो। भुजा जोरिकै श्रँगबल पायो। प्रथम भयो कोमल तनताको। शिथिल रूपमन मेलतवाको। तबचाणूर गर्बमन लीन्हो। दुर्गप्रहार कृष्णपर कीन्हो। फूलहुते अतिसम करि मान्यो। तिहि अपनेजिय मारेउ जान्यो। हरख्यो मल्लमारि भयो न्यारो। कहन लग्योमुख अहो बिचारो। हँसत श्यामघन देखेठाढे। शोचपरेउ तब प्राननि गाढे। फिरिकहि कहिहरि मल्ल हँकारेउ। मनहु गुहाते सिंह पुकारेउ। हांक सुनत सबकोंड़ भुलान्यो। थरथराय चाणूर सकान्यो। सूरश्याम हरि महतम जान्यो। निश्चय मृत्यु आपनी मान्यो १३१॥ राग गौंड मलार॥ गहेकर श्याममल्ल अपने धाय झटकि लीनोतुरत तेहिपटकि धरणी। भटको अति शब्दभयो पटक नृपकेहिये अटकि प्राननि परेउ चटक करणी। लटक निरखन लग्यो मटकसब भूलिगई हटक डारिदेहु यहैलागी। झटकि कुण्डल निरखि अटक ह्वैकै गयो गटकि मलसो रहेउ मीचजागी। मल्लजेजे रहे सबै मारे तुरत असुरयोधा सबैतो सँहारे। धाय दूतनि कहेमल्ल कोउ नहिँ रहे सूर बलराम हरिसब पछारे १३२ भिरेउ चाणूरसो नन्दसुतबाँधि कटपीतपट फेंट नवरङ्ग राजे। द्विपदन्त करकलित अरुभेष नटवर ललित मल्लउर सल्ल तलतालबाजे। पीनभुज नीलजै लछिकरञ्जित हृदय नीलघन शोततन तुंगछाती। देखिरहि मेखरति प्रेमनर नागरी बदतितजि भीररति रीतिराती। मत्तमातङ्ग बलअङ्ग दम्भोलिदल काछनीलाल गलमाल सोहै। कमल दलनैन मृदुबैन बंदित बदन देखि सुरलोक नरलोक मोहै। बाहुसों बाहुउर जानसों जानुनी चरणसों चरणधरि प्रकटपेलैं। परस्पर जब करत मोहन अरुमल्ल दोउ देखत नारिपुरनर मध्यझेलैं। घूमदे घुंघरनि भीडभइ बन्धु जन सुभट पदघातिगा

धरणि धरति सोलैं । चितसोंचित मनबन्धु मन बन्धसों दृष्टिसोंदृष्टि नहिँ सूरडोलैं १३३ ॥ राग मारू मथुराके लोगन सचुपायो । नटवर भेष काछि नँदनन्दन सँग अक्रूर ले आयो । प्रथमहिँ रजक मारि मनमोहन गोपवृन्द पहरायो । धनुषतोरि लीला नटनागर तत्रगजखेल खेलायो । रङ्गभूमि मुष्टिक चाणूरहि भुजबल तालबजायो । नगरनारि दें गारिकन्सको अजगुत युद्धबनायो । गनगन्धर्व और देवतनसें कौतुकअम्बर छायो । मारेउकंस काजसब सारेउ उग्रसेनि मनभायो। हरषे बसुदेव देवकी आनन्द मङ्गल बधायो । मात पिता की बन्दि छुड़ाई सूर सुयश यशगायो १३४ ॥ रागधनाश्री ॥ आजु परमदिन मङ्गलकारी । लोक लोक को टीको आयो मुदित सकल नरनारी । शिव सुरेशशेष अरु नारद चन्द्रानन करधारी । हरिकर पाटबन्ध नौछावर करत रतन पटसारी । बाजत ढोल निशान शंखधुनि बहुत कुलाहल भारी । अपने अपने लोग चलेसब सूरदास बलिहारी १३५ जो पैराखति हौ पहिँचानि । तो अबके वह मोहनमूरति मोहिँ देखावहु आनि । तुम रानी बसुदेव गेहनी हों गँवार ब्रजबासी । पठैदेहु मेरोलाल लड़ैतो वारों ऐसी हांसी । भलीकरी कन्सादिक मारे सबसुर काजकिये । अबइन गैयन कौन चरावै भरिभरि लेतहिये । खानपान परिधानराजसुख जो कोउकोटि लड़ावै । तदपि सूर मेरोबारे कन्हैया माखननहीं सचुपावै १३६ ॥

श्रीकृष्णकेवचननन्दप्रति ॥

रागनट ॥ तुममेरी प्रभुता बहुत करी । परम गँवार औरपशु पालक नीचदशा ते ऊँचधरी । रोगदैत्य सन्ताप जनम के प्रगटतही तुम सबै हरी । अष्ट महासिधि और नवौनिधि करजोरे मेरेद्वार परी । तीनि लोक अरुभुवन चतुर्दश बेदपुराणन शाखधरी । सूरदास प्रभु अपने जनको देत परमसुख घरीघरी १३७ ॥ रागबिहागरो ॥ जाहु ब्रजकहुँ फिरहु नन्दराई । हमहिँ तुमहिँ सुततात को नातो और परेउ है आई । तुमकीन्हो प्रतिपाल हमारो भूलन जियते जाई । जहाँ जहाँ हमरहे तुम्हारे डारहु जिनि बिसराई । जननि यशोदा ग्वालसखा सब मिलियहु कण्ठलगाई । सुदिन साधि सोधिकर देखो मेरोई गुणगाई । माया

मोह मिलन अरु बिछुरन ऐसेही दिनजाई। सूरदास प्रभु निठुर बचन सुनि नैननिनीर बहाई १३८ ॥ पुरिया धनाश्री ॥ फेरिनन्द उत्तर नहिँ दीन्हो। रोमरोम भरिगये बचन सुनि मनहुँ चित्रलिखि कीन्हो। यह तो परम्परा चलिआई सुख दुख लाभ अरुहानि। हमपर दया सया करि रहियो सुत अपनो जियजानि। कोजलपै निरखै काके पल लागे निरखि बदन गिरनायो। दुःख समूह निदोपरि पुरके चलत कंठभरि आयो। अधर पाद भुवमयी कोटिगिरि जोसँगि गो-कुल पैठो। सूरदास अम कवग कुलिशतेअजहुँ रहततन बैठो १३९ ॥ रागसोरठ ॥ नन्द बिदाह्वै घोष सिधारे। बिछुरन मिलनरची बिधि ऐसे यहसंकोच निवारे। कहियो जाययशोदा आगे नयन नीर जिन डारो। सेवा करि जान्यो सुतअपनो करि प्रतिपाल हमारो। हमहिं तुमहिं कछु अंतरनाहीं तुम जो ज्ञान बिचारो। सूरदास प्रभु यह बिचारि कै उह जिनि प्रीति बिसारो १४० ॥

अथ नन्दरायजी अरुश्रीकृष्ण के प्रतिबचन ॥

गोपालराय हो न चरण तजिजैहैं। तुम्हैंछांडि मधुबन मेरे मोहन कहा जाय ब्रज लैहैं। उत्तरु कहा देहैं यशुमति को जब सन्मुख मैं जैहैं। प्रात समय सोवत उठि जननी काहि कलेऊ दैहैं। बारहवर्ष दई हम ढीठ्यो यह प्रताप नहिं जान्यो। अब तुम प्रकट भये बसुदेव सुत गर्ग बचन परमान्यो। कतहम काजमहारिपु मारेब्रजआपदनि बिनासी। डारिन दशो कमल करते गिरिदबिसरत ब्रजबासी। बासर सङ्ग सखासब लीने टेरिन धेनु चरावहु। क्यों रहिहैं यह प्राण दरश बिनु संध्यासमय न आवहु। अबतुमराजकरौ कोटिक युग मात पिता सुख देहो। कबहूं तात तात मेरे मोहन मुखसों मोसों कहिहो। ऊ-रध श्वास चरण शिथिलाने नयननि जल भरिलाई। सूरनन्द बिछु-रन की बिपदा सोपैकही न जाई १४१ ॥ रागपूर्वी ॥ अपनै गोपाल को हैां चेरो। जन्म जन्म सुनि सुबल सुदामा निबहेउ यह प्रण मेरो। ब्रह्मादिक इन्द्रादि आदि दै जानत बल सबकेरो। एकश्वासकीत्रास चलतउठि तजितजि अपनो खेरो। कहाभयो जो देश द्वारकाकीन्हो दूरिबसेरो। अपनेही या ब्रजके कारण करिहैं हरि फिरि फेरो। इहँ

उदार हम फिरत साथही तकत असाध अहेरो । सूर हिये ते टरत न गोकुल अंग छुवतही टेरो १४२ ॥

श्रीकृष्णवचन नन्दयशोदा प्रति ॥

रागकलिंग ॥ नीके रहिये यशोदा मैया । आवैंगे दिन चार पांच में हम हलधर दोउ भैया । बंशीबेणु बिखादिदेखियो और अबेर सबेरो । लै जिनजाय चोराय राधिका कछू खिलौनामेरो । जादिनते हमतुमते बिछुरे कोहु न कहे कन्हैया । प्रातसमय उठि कियो न कलेऊ सांझ पियो नहिं धैया । कहा कहौं कछुकहत न आवै यशुमति जेतो दुख पायो । अब सुनियत बसुदेव देवकी कहत हमारो जायो । कहियो जाय नन्द बाबासों संदनिठुरमन कीन्हो । सूरश्याम पहुँचाय मधुपुरी बहुरि संदेश न लीन्हो १४३ ॥ रागमारू ॥ मेरे कान्ह कमलदल लोचन। अबकी बेर बहुरि ब्रज आवहु कहा लगे जिय शोचन । यह लालसा बहुत मेरे जियबैठेदेखत रहिहौं । गाय चरावन जान कुंवरको कबहूं भूलि न कहिहौं । करत अठान न बरजयों कबहूं अरु माखन की चोरी । अपने जियत नयन भरि देखौं हीराकीसी जोरी । एक बेर मिलिजाउ इहांलों अनत कहूं केऊतर । चारिहु दिवसआइ सुखदीजै सूरपहुनई सूतर १४४ ॥ रागधनाश्री ॥ पथिक इतनी कहियोबात । तुम बिनु इहां कुंवरबरमेरे होत जिते उतपात । बधे अघासुर टरत न टारे बालक बनहिं न जात । ब्रज पंजरि रुंधि मानों राखे निकसन को अकुलात । गोपीगाय सकल लघु दीरघ पीतबरण कृशगात । परम अनाथ देखियत तुमबिनु केहि अवलंबिये तात । कान्ह कान्ह के टेरत तबधौं अब कैसेजियमानत । यहब्यवहार आजुलों है ब्रज कपट नाटकल ठानत । दशहूं दिशाते उदितहोतहैं दावानल के कोट। आंखें मूंदिरहत सन्मुख ह्वै नाम कवच दै ओट । ये सबदुष्ट गतेआरि जीते भये एकहीपेट । सत्वर सूर सहायकरोअब समुझि पुरातन हेट १४५ ॥ रागबिहागरो ॥ अबनन्द गइयांलेहु सँम्हार । हमतो तुम्हरे आन प्रकटे गौचराइ दिनचार । दूध दधि सब चोर खायो तुमज्यों कियो प्रतिपार । सूरके प्रभु चले ब्रज तजि कपट कागज फार १४६ ॥

अथ यशोदा वचन नंदजूकेप्रति ॥

रागसोरठ ॥ नन्द तुम छांडे कहां कुमार। कैसे प्राण रहत बिनुदेखे पूछत गोपिगोपार। करुणा करत यशोदा मैया नयन बहे आसार। चितवत नन्द ठगेसे ठाढ़े ग्रन्थहरे मनहरे जुंवार। मुरली धुनि ब्रज में नहिं सुनिये सूरज जन सब करत पुकार। श्याम सुंदर जादिनते बिछुरे कोउ नहिं झांके नन्द के द्वार १४७ मेरो माय अतिप्यारो नँद नंद। कहांबिसारि नन्दतुमआये चूकपरी मतिमंद। बालमाधव अंबुज लोचनकिये अतिआनँदके कन्द। सरवरगोप कुमुदकुम्हिलाने कान्ह बदन बिनु चन्द। चलहु चरणगहैं बसुदेवके मेलिपाण गलफन्द। सूर दासप्रभु गोकुल पठवत वहे तीनि लोक मुनिबन्द १४८ हरि बिछुरत फाट्यो न हियो। भयोकठोर बज्रते भारी यहांरहे अब कहा कियो। बांटि हलाहल सुनि मेरी सजनी औषविही न पियो। मन बुधि गई सँम्हारन तनकी कूडो दांव दियो अब काकरों कौन विधि मिलिहैं परवश प्राणलियो। निशिदिन रटत सूरके प्रभुबिन कैसे परतजियो १४९ उलटि पग कैसे दीनो नन्द। छांडो कहां उभयसुत मोहन धृग जीवन मतिमन्द। कैतुम धनयोवन मदमाते कै तुम छूटेबन्द। सुफल-कसुत बैरीभयो मोको लैगयो आनँदकन्द। रामकृष्णबिन कैसे जीजे कठिन प्रीतिको फन्द। सूरदास अबभई अभागिनि तुम बिन गोकुल-चन्द१५० सराहिये नन्द तिहारोहियो। मोहनसो सुतछांडि मधुपुरी गोकुल आनिजियो। हेयपचिशोच बहुतकरिहारी सको नाहिँभयो। जीवनप्राण हमारे ब्रजको बसुदेव छीनलियो। कहाकरूं मेरे ललित लाड़िले बरजत गवनकियो। सूरदासप्रभु श्यामलालघन परहथजाय दियो १५१ है कोऊ इतनी भांति दिखावै। किंकिणि शब्द चलत धुनि रुनुझुनु ठुमुक ठुमुक गृहआवै। कछुक विलास बदन की शोभा अरुण कोटि गतिपावै। कञ्चन मुकुट कंठ मुक्तावलि मोरपुच्छ छबि पावै। धूसरधूरि अङ्गसँगलीने ग्वालबाल सँगलावै। सूरदासप्रभुकहत यशोदा भागबड़ेते पावै १५२ ॥ राग धनाश्री ॥ भावजन बिनु नहीं बनि सुख कहा प्रेमरूयोग। कागहंसहि सङ्गजैसे कहादुख कहभोग। जगत में यहसंगदेखौ वचनप्रतिकहे ब्रह्म। सूर ब्रजकीकथा कासों कहैयह

करिदम्ब १५३ कहांसुख ब्रजको सो संसार। कहांसुखद बंशीबटय-मुना यहमन सदाबिचार। कहँबनधाम कहां राधासँग कहँ वहब्रजकी बास। कहांलता तरुतरुप्रति बूझति कुञ्जकुञ्जनवधाम। कहँखगमृग वृन्दाबन सुन्दरकहँ बंशीबट ठाम। कहां बिरह सुख बिन गोपिनसंग सूरश्याम मनकाम१५४ यह अद्वैत दरशी रङ्ग। सदामिलि यकसाथ बैठत चलत बोलत सङ्ग। बात कहत न बनत यासों निठुरजोसी जङ्ग। प्रेम सुनि बिपरीति भायत होतहै रस भङ्ग। सदा ब्रज वो ध्यान मेरे रास रङ्ग तरङ्ग। सूर वहरस कहूँ काहू संग मिलि शुभरङ्ग १५५ संग मिलि कहूँका सँग बात। यह तो कथत योग की बातें जामें रसजरि जात। कहत कहा पितु मात कौन के पुरुष नारि कहँ नात। कहाँ यशोदा सीहै मैया कहाँ नन्दसमतात। कहँ वृषभानसुता सँगके सुख वह औसर कहँप्रात। सखी सखा सुखनहीं भवननें नहिंबैकुराठ सुहा-त। वह बातें कहिये केहिकारण आगे यहतन हरि पछितात। सूर-दास प्रभु ब्रज महिमा कहि लिखी बदत बलभ्रात १५६॥ रागपरज॥ पाछेहि चितवत मेरे लोचन आगे परत न पाई। मन हरिलियो मा-धुरी मूरति कहा करौं ब्रजजाई। पवन न भई पताका अम्बर भई न रथको अङ्ग। रेणु न भई चरण लपटाती जाति वहांलों संग। केहि बिधि कर कैसे करि सजनी कब जुमिलें गोपाल। सूरदास प्रभु पठै मधुपुरी मुरछिपरीं ब्रजबाल १५७ चातक न होय कोई बिरहिनि नारी। अब यह पीउ पीउ रटत सुरपति के भुंडन मगन सुख वारी। अति कृश गात देखि सखि वाको अहनिशि रटति पुकारी। देखहु प्रीति बापुरे पशुकी अनत न मानत हारी। अब पतिबिन ऐसी ला-गति ज्यों शोभित सरवर बारी। तैसे सूर जानि सबगोपी जो न कृपा करि मिलहिं मुरारी १५८जबतेहरि मधुबनहिंसिधारे कबहूं कियो न फेरो। भये वहांईके मनमोहन इतही नाहिं चितेरो। बिन देखें कलनाहिं परत है निशि दिन लगत उभेरो। सूरश्याम कोउ आनि मिलावै आनंद होय घनेरो १५९॥ रागनट॥ मोको ना हरि बारभई। जबते हरि मधुबनहिं सिधारे तबते सुधि न लई। कह कीजै संगति नीचे की मन अतिदुखि जु भई। चन्दन चीरअगिनसम लागतस

सूर सई। तेरीगति कोऊनहिं जानत अबकछु मानसई। सूरदासप्रभु दरशन दीजै नेकुजु मयाठई १६० ॥ रागधनाश्री ॥ कुब्जा हरिकी दासी आहि। जैसे आपभाजि गोकुल रहे तैसे राखीताहि। रूपन रतन दुराये राख्यो जैसेनहीं कपूर। जैसेकोपअमोल रतनपरि कहजाने जो क्रूर। वैसेहि रही कूबरी दासी अबिनाशी की आहि। सूरदास प्रभु कंसमारिकै लइ आनी तिहिकाहि १६१ सखासुनु एकमेरी बात। इहलता गृहसंग गोपिन सुधिकरत पछितात। बिधिलिखी नहिंटरत केहु यहकहत अकुलात। हँसि उपँगसुत बचन बोले कहाहरिपछितात। सूरप्रभु इह सुनत मोसों एकहीसें नात १६२ ॥ रागकल्याण ॥ जब ऊधो यकबातकही। तबयदुपति अतिहीसुखपायो मानी प्रकटसही। श्रीमुख कहेउ जाहुतुम ब्रजही मिलौजाइ ब्रजलोग। मोबिन बिरहभरी ब्रजबाला जाइ सुनावहु योग। प्रेम मिटायज्ञान परमोधहु तुमहो पूरण ज्ञानी। सूरउपङ्गसुत मनहरषाने इहमहिमा इनजानी १६३ ऊधो यहतुम निश्चय जानो। मनक्रमबच मैं तुमहिं पठावत ब्रजको तुरत पलानो। पूरण ब्रह्म अलख अबिनाशी ताके तुमहो ज्ञाता। रेख न रूप जाति कुलनाहीं जाकेपितु नहिंमाता। इहमतदै गोपिनकोआवहु बिरह नदीमें भासति। सूर तुरत तुम जाइकहोइह ब्रह्म बिना नहिं आसति १६४ ॥ रागबिहागरो ॥ ऊधो ब्रजको गमन करो। हमहिंबिना बिरहिनी गोपिका तिनके दुखहि हरो। योग ज्ञान परमोधि सबनि को ज्यों सुख पावैं नारि। पूरणब्रह्मअकल परचैकरि मोहिं बिसारैं डारि। सखा प्रबीण हमारेतुमहो तुमतोनहींमहंत। सूरश्यामकारण यह पठवत ह्वै आवैगो संत १६५ तुरत ब्रजजाहु उपङ्गसुत आजु। ज्ञान बुझाय खबरदै आवहु एकपंथ द्वै काज। जबते मधुबनको हम आये फेरिगयो नहिंकोई। युवातिन पै ताहो को पठवै जोतुम लायक होई। यक प्रबीण अरु सखा हमारेज्ञानी तुमसरि कौन। सोइकीजै जैसे वे बाला सावन सीखै पौन। श्रीमुखश्याम कहतयह बाणी उद्धव सुनत निहाल। आयसु मानि सूर प्रभू जैहों नारि मानिहैं बात। कहत न बनै सँदेशो मोपै जननि जितो दुख पायोहो। अब हमसों बसुदेवकी करत आपनो भायोहो १६६ ॥ रागटोड़ी ॥ उपङ्गसुत हाथ

दई कर पाती । यह कहियो यशुमति मैयासों नहिं बिसरै दिनराती। कहत कहा बसुदेव देवकी तुमको हम हैं जायो। कंस त्रास शिशु अतिहि जानिकै ब्रजमें जाइ दुरायो। कहै बनाय कोटि कोइ बातैं कहि बलराम कन्हाई। सूर काज करिकै कछु दिनमें बहुरि मिलैंगे आई १६७ ॥ रागआसावरी ॥ ऊधो हुतो जननि सों मिलियो अरु कुश लात कहोगे। बाबा नन्दहि पालागन कहि पुनिपुनि चरणगहोगे। जादिन ते मधुबन हम आये सोधनहीं तुम लीन्हो। देदे सौंह करोगे हितकरि कहा निठुरई कीन्हो। यह कहियो बलराम श्याम अब आवैंगे दोउभाई। सूरकर्मकी रेखमिटै नहिं यहै कहेउ यदुराई १६८ रागगौरी ॥ पाती लिखि ऊधो कर दीन्ही। नन्द यशोदहि हितकरि दीन्ही हँसे उपङ्गसुत लीन्ही। मुख बचनन कहिहेतु जनायो तुमहो हेतु हमारे। बाल जानि पठये नृप डरते तुम प्रतिपालनहारे। कुब्जा सुन्यो जात ब्रज ऊधो महलहि लियो बुलाई। स्वा हथपाति लिखी राधाकोगोपिन सहितबनाई। मोको तुमअपराध लगावति कृपा भई बिन त्रास। झकत कहा मोपर ब्रजनारी सुनहु न सूरजदास १६९ यदुपति सखा ऊधो जानि। लगे लगे मन यहै शोचन भलो नहिंयह बानि। अंश भुजधरि होतठाढ़े निठुर जैसो काठ। सङ्गयह नहिं बनत नीको होय कैसेहु साठ। जो कहो तो करे क्यों यह निन्दिहै अरु सोहिं। देखिबेको परम सुन्दर रहत नयनि जोहिं। कनक कलश अपान जैसेतैसोइयहरूप। सूरकैसेहुप्रेमपावे तबहिंहोय स्वरूप १७० ॥ रागधनाश्री ॥ यदुपति जानि उद्धव रीति। जेहिप्रकट निज सखा कहि-यत करत भाव अनीत। बिरह दुख सुख जहां नाहींतहँ न उपजैप्रेम। रेखरूप न बरण जाके यहधरेउ यहनेम। त्रिगुण तनकरि लखत हमको ब्रह्म मानत और। बिनागुण क्यों पुहुमि उधरे यह करतमन डोर। बिरहरस केहिमंत्र कहिये क्यों चलैसंसार। कछुकहतयहएक प्रकटत अति भरेउ अहँकार। प्रेमभंजननेमयाको जायक्यों समुझाइ। सूरप्रभु मन यहै आनो ब्रजहि देउ पठाइ १७१ नन्दगोप सब सखा निहारत यशुमतिसुतको भावनहीं। उग्रसेनबसुदेव उपङ्गसुत सुफलक सुत बैसेहिसँगाहीं। जबहींमतन्यारो हरिकीन्होगोपन मन यहव्यापि

गई। बोलिउठे यहि अन्तर सुखहरि निठुर रूप जे ब्रह्ममई। अति प्रतिपालकियोतुम हमरोसुनत नन्दजिय झ्झकिरहे। सूरश्यामऐसो नहिं चहिये जो मोसों यह बचन कहे १७२ मोहिं कहत प्रतिपाल कियो। मोसों कहत होहु जिनि ऐसो नयन दरत नहिं भरत हियो। शंकित नन्द त्रासवाणी सुनिबिलम करतकहक्यों न चले। कंसमारि रजधानी दीन्ही व्रजते बहुरे आनिमिले। मनहींमन ऐसी उपजावत वे उतब्रह्म ब्रह्म दरशी। सूर पिता को मात कवन है रहत सबनिमें वे परशी १७३ कुब्जासी भागिनिकोनारि। कंसहि चन्दन लयेजातही बीचमिलीताको दइतारि। हरिसुकृपा करिरानीकीनी कुब्जमिटायो डारि। यहैबात मधुपुरी जहाँ तहँदासी कहतडरत जियभारि। कुब्जा भूलि कहत जो कोऊ ताहि उठत सब दैदै गारि। सुनहु सूररानीसुनि पावे त्रासहोत जिनि डारे मारि। १७४ ॥ रागरामकली ॥ हरिकी कृपा जापर होइताही। कछुवह बहुत नाहिं हृदय देखो जाही। कहा संशय करत याको कितिक है यहबात। असुरसैन सँहारिडारे भक्त जनसों नात। हरन करन येयहै समरथ कहा बारम्बार। सूरहरिकी कृपाते खलतरि गये संसार१७५कुब्जातो बड़भागिनि ह्वै। करुणा करिहरि जाहि निवाजीआपुरहे तहँराजी ह्वै। पूरब तपकरिबिल-मनलागी मनके भाव पुरावत ह्वै। मथुरानरनारी मुख बाणी रहेउ जहाँ तहँ जयजय ह्वै। दैत्य बिनाशि तुरत तहँ आये यह लीला जाने पै ह्वै। सूरदासप्रभुभावहि के बशमिलत कृपाकरिअति सुखह्वै १७६॥ रागबिलावल ॥ तब बोले हरि नन्दसों मधुरेकर बानी। गर्ग बचन तुमसे कहे सोनहिं निबहेजानी। मैंआयों संसारमें भुवभारउतारन। तिन के तुम धनि धनि कहो कान्हाप्रतिपारन। मात पिता तुम्हरेनहींतुमते अरुकोऊ। एकबेर व्रज लोगसों मिलिहौ हम सोऊ। मिलन हिलन दिन चारि को तुमतोसब जान्यो। मोको तुम अति सुखदयो सोकहा बखान्यो। मथुरा नरनारी सुनें व्याकुल व्रजबासी। सूर मधुपुरी आयकै येई अबिनासी १७७॥ रागबेरठ ॥ गोपालरायहौं न चरण तजि जैहौं। तुमहिं छांडि मधुबन मेरे मोहन कहा जाय व्रजलैहौं। कहिहौं कहा जाय यशुमति सों जब समीप उठिऐहैं। प्रात समय

दधिमथन छांड़िकै काहिकलेऊ दैहैं। बारहबरष दियेहमढोटो यह प्रताप बिन जानो। अब तुम प्रकट भये बसुदेवसुत गरग बचन परमानो। रिपुहति काजसबै हमकीन्हो कत आपदा बिनासो। डारन दियो कमलकरते गिरि दबिमरते ब्रजबासी। बासर सङ्गसखा सब लीन्हे टेरि न धेनु चरैहो। क्यों रहिहैं मेरेप्राण दरश बिन जबसंध्या नहिं ऐहौ। ऊर्ध्व श्वास काया गति छाक्यो नयन नीर न रहाय। सूरनन्द बिछुरे की वेदन मोपै कही न जाय १७८॥ रागिनीजैतश्री। तथा पुरीया धनाश्री रूपकताल॥ कूबरी को न्यावरी जासों गोविन्द बोले। वे त्रयलोकनाथ चाहत हैं काहेन ऐंडो बेंड़ो डोले। जिनसों कृपा करी नँदनंदन सो क्यों न करतकलोले। कारोकारो कुटिल अति कान्हर अन्तरग्रन्थि न खोले। हमबौरी बकबादकरतहैं वृथासुरतियहजोले। दीपक देखि पतंग जरत ज्यों मीन सुजल बिन भोले। प्रीति पुरातन परिजनन सों नेहकसौटी तोले। सूरश्याम उपहास चल्यो ब्रज आप आपने टोले१७९॥ रागरामकली॥ ऊधो जाकेमाथेभाग। अबलनयोग सिखावन आये चेरिहि चपर सुहाग। आये ढवन योग की बेली काटि प्रेम को बाग। कुब्जहि करिआये पटरानी हमहिंदेन बैराग। लौंड़ी की डोंड़ी बाजीजग हरि हाँसीको राग। कुब्जा कमलनयन मिलि खेलत बारहमासी फाग। मिल्यो सोहायो साथ श्याम कहो कहां ंस कहँ काग। सूरदास प्रभु ऊधछांड़िकै चतुर चिचोर तआग १८०॥ रागधनाश्री॥ हरिके बचन सुनहि आहि। यहांको कहै कौन की बातैं ज्ञानध्यान सुमिरोको काहि। को सुखममर तास युवतीको जिनहरिकंसहते। हमरे तो गोपति सुत अधिपतिबनिताओरनते। गोरजरंजितरूप रुचिकारी चितै चितै हरिहोत। कबहुंक करनिसमय तिल नेक न मालकेसोत। ता रिपुसमय सङ्ग मिलिलीन्हे ये आवत तनु घोय। सूरदास स्वामी मनमोहन कत उपजावत दोय १८१ कहौ कौन नाहिन सुख पाये बालगोपाल के राज। ऊधो आप सम्पदा उनकीहै सब इनकेकाज। धनुषतोरि गजमारि मल्लमथि निडरकियो यदुवंश। उन को जाय और सुख दीन्हो करषि केश गहि कंस। कुबिजारूप देखिसुखदीन्होसब कीन्हे मनकाम। उग्रसेन बसुदेवदेवकी

आनेअपनेधाम। दिन प्रति दीनदयाल कृपानिधि यहै हमारीआश।
सूरश्याम हरि होहु कृपाकरि इननयननिकी आश १८२ अब हरि
कौनके रस रीझे। सकतनाहिं निरखत ऊधोशशि बदरी ज्योंबीझे।
पतिनत्यागि अबला गई तजी सकलकुलकानि। यमअंधकार छांड़िये
गाहिलवाकफल लकुट बिनपानि। यतनधुनि निर्गुण भये सब नर गुने
अभिलाष। मनमोहन सोहन नहिं देखे कैसेरैहै साख। बिना चरण
सरोज देखत बरतुकुमुदिनिवास। बिनापुष्करनयन किहिबिधि जिये
सूरजदास १८३ ॥ रागबिलावल ॥ माधव इतनेयतनतबकाहिकिये। अपने
जानि जानि यदुनन्दन बहुत भीतसों राखिलिये। अघ बकवृषभ बरुण
बन्धनते व्याल दावानल जीति पिये। इन्द्र मानमेटो गिरि करधरि
क्षणाक्षणप्रति आनन्ददिये। हरि बिछुरन की प्रीति न जानी बचन
मानि हम बादि जिये। सूरदास अब वा लालन बिनु कहि न सकत
यक बीणहिये १८४ परेखो कौन बोलको कीजै। ना हरि जाति न
पांतिहमारी कहा मानिदुखलीजै। नाहिन मोर चन्द्रिका माथे ना-
हिनउरबनमाल। नहिं शोभित पुष्पन के भूषण सुन्दर श्याम तमाल।
नंदनन्दन गोपीजनबल्लभ काहे को कान्ह कहावै। बासुदेव यादवकुल
दीपक बन्दीजन बिरमावै। बिसरिगयो गृहबनकोनातो रहेउ न एको
अङ्क। सूरश्याम कहँ गई सगाई वा मुरलीकेसंग १८५ ऐसे माइहम
नाहिंजानेश्यामहीं। सेवाकरत करी उनऐसी जातिगईकुलनामनहीं।
तनमन प्रीतिलाय जो तोरेकौनभलाई तामहीं। वे कहपीर पराईजानैं
लुब्धआपनेकामहीं। नागरिनारिरतेकेनागररतेजो कुब्जाठामहीं १८६
॥ राग नट ॥ कंसबध्यो कुब्जाके काज। और नारि हरिको न मिलावहु
कहां गवांईलाज। जैसे काग हंसकी गतिलह लहसतसंग कपूर। जैसे
कञ्चन कांच बराबर गेरू काम सिंदूर। भोजन साथ शूद्र ब्राह्मण के
तैसोइ उनको साथ। सुनहु सूरहरि गायचरैया अबभये कुब्जनाथ १८७
हरिही फेरीकुब्जा ढीठ। टहलकरती महल महलिन संग रवेतीपीठ।
नेकही सुखपाइ भली अतिहि गइगर्वाइ। जात आवतरही कोऊयहै
कहै पठाइ। वे दिना गयेभूलि ताको दिवस दशकी बात। सूरप्रभु
दासी लुभाने ब्रजबधू अनखात १८८ देखो कुबरी के काम। अबक-

हावति पटरानी बड़ेराजाप्रयाम। कहत नहिंकोउ उनहिंदासी वे नहीं गोपाल। वेकहावत राज कन्या वे भये भूपाल। पुरुषकोरी सबहिदेहै कुब्जा काहेकाज। सूरप्रभुको कहाकहिये बीचपाई लाज १८९ यह सुनि हमहिं आवतलाज। जायमथुरा कंसमाखो कूबरी के काज। लोगपुरमें बसतऐसे सबनि यहैसोहात। कबहुंकोऊ कहतनाहीं प्रयाम आगेबात। कहां वैरी कहाकीन्हो कहाआपुन होत। तुमबड़े यदुवंशी राजा मिलेदासी गोत। अजहुंकहै सुनाय कोऊ करै कुब्जा दूरि। सूरडाहनि मरत गोपी कूबरी के भूरि १९० भामिनि कुब्जा सो रँग राते। राजकुमारिहि जो पैपाते तौनहिं अङ्ग समाते। रीझिजाय तनक चन्दन लै मधुबन मारगजाते। ताकी कहा बड़ाईकीजै ऐसेरूपलोभाते। ये अहीर वह कंस कि दासी जोरीकरी बिधाते। ब्रजकी बनितात्यागि सूरप्रभु बूझी उनकीबाते १९१ ॥ रागधनाश्री ॥ तबते मेटे सब आनन्द। या ब्रजकीसब भागसंपदा लेजुगयेनँदनन्द। धेनुनहीं पयस्रवति रुचिर मुख चरति नाहिंतृण कन्द। बिषम बियोग दहत उरसजनी बाढ़िरहे दुखदन्द। शीतल कौन करैरी माई नाहिंयहां हरिचन्द। सूरस्वाति की बूंद आशलगि सूकत रह्योकन्द १९२ ॥ रागमलार ॥ गोपालहि पावहुं केहिदेश। सींगन मुद्रा अरु खप्पर लै करि योगिनि को भेश। कंथा पहिरि बिभूति लगाऊं जटा बढ़ाऊं केश। हरि कारण गोरखहि जगाऊं जैसे स्वांगमहेश। तनमन जारों भस्मचढ़ाऊं बिरहिनि गुरु उपदेश। सूरश्याम बिनुहमहैं ऐसी जैसे मणिबिनु शेश १९३ ॥ रागकान्हरो ॥ हंसकाग को संगभयो। कहँ गोकुल कहँ गोप गोपिका बिधियह संगदयो। जैसे कंचन कांचसंग फल चन्दन संगसुगन्धि। जैसे खरिक कपूरदोउ यकसम यह भई सुगन्धि। जलबिन मीनरहत कहुंन्यारो सोई हरिहि बोलावत। जबब्रजकी बातैं ये कहियत तबहिं तबहिं उचटावत। याको ज्ञानथापि ब्रजपठऊं और न याहि उपाव। सुनहु सूर याको अबपठऊं यहैबनै गोदाव १९४ याको और न कछू उपाय। मेरो प्रकट कहेउनहिं बदिहै ब्रजही देउंपठाय। गुप्तप्रीति युवतिनकी कहिकै याकोकरौंसहन्त। गोपिनके परमोधनकारण जैहै सुनततुरन्त। अतिअभिमानकरैयो मनमें योगिनिकी यहिभांति। सूर

श्याम मनयह निश्चयकरि बैठत हैं मिलिपांति १९५॥ रागनट॥ अबहीं यहे कहोगेयाहि। मोहिं पठवत गोपिकन पै हर्यह्वै है ताहि। योग को अभिमानकरिहै ब्रजहि जैहैवाय। कहेंगे मोहिं श्यामभानतकरो यहचतुराय। आयगये तेहिसमय उद्धवसखा कहिलियो बोलि। कंध धरि भुजभये ठाढ़े करत बचननि ठोलि। बारबार उसास डारतकहत ब्रजकीबात। सूरप्रभुके बचनसुनिसुनि उपँगसुत मुसुकात १९६॥ रागकल्याण॥ उद्धव मन अभिमान बढ़ायो। यदुपति योगजानि जियसांचो नयनअकाश चढ़ायो। नारिनपै मोको पठवतहैं कहतसिखावनयोग। मनहींमन अबकरत प्रशंसायह मिथ्यासुखभोग। आयसुमानि लिख्यो शिरऊपर प्रभुआज्ञापरवान। सूरदासप्रभु पठवत गोकुलमैं क्यों कहो कि आन १९७॥ रागकान्हरो॥ तुम पठवत गोकुलको जैहौं। गद्गद बचन कहत मुख प्रफुलित बार बार समुझैहौं। आलस नहींकरौंतुत्र कारण कौन काज पुनि लैहौं। यहमिथ्या संसार सदाई यहकहिकै उठिऐहौं। सूर दिना द्वै ब्रजजन सुखदै आय चरण पुनिगैहौं १९८॥ रागगौरी॥ उद्धव ब्रज जिनि गहरु लगावहु। तुम ब्रजनारि जानि मन सकुचन कहिधौं योग सुनावहु। बाणी कहत समुझिपै लहिहैं कही हमारी मानो। बिरह दाह यह सुनत बुझैहैं मानो अनलहि पानो। अबहींजाहु बिकल सबगोपी योग बचनकरि पोषहु। सूर नन्दबाबा अरुयशुमतिजननी जाय सँतोषहु१९९गहरु जनिलावहुगोकुलजाई। तुमहिं बिना ब्याकुलहम ह्वै हैं यदुपति करि चतुराई। अपनोई रथ तुरत मँगायो दियो तुरत पलनाई। अपनो मुकुट पिताम्बर अपनो देत सबै सुखपाई। सूरश्याम तद्रूप उपँगसुत भृगुपद एक बचाई। अपनेहीं अंग आभूषण करि आपुनहीं पहिराई २००॥ रागबिहागर॥ श्याम कर पत्र लिखि बनाय। नन्दबबा सों बिनयकरि करजोरि यशुमतिमाय। गोप ग्वाल सखानि कहि मिलि मिलन कंठलगाय। और ब्रजनरनारि जेहैं मानप्रीतिजनाय। गोपिकनलिखि योग पठयो भाव जानि जनाय। सूर प्रभुमन और यहकहि प्रेमलेतदृढाय२०१॥ रागकेदारो॥ बिधना यहै लिख्यो संयोग। कहांते मधुपुरी आये तज्यो माखन भोग। कहां वे ब्रजके सखा सब कहां मथुरा लोग। देवकी

वसुदेव सुत सुनि जननि करिहैशोग । रोहिणीमाता कृपाकरि उकलि
लेतो रोग । सूरप्रभु मुख यह बचन कहि लिखि पठायो योग २०२॥
रागबिहागरो ॥ उद्धव जात ब्रजहि सुने । देवकी बसुदेव सुनिके हृदयहेत
गने । आपसों पाती लिखी कहि धन्य यशुमति नन्द । सुत हमारो
पालि पठयो अति दियो आनन्द । आयके मिलिजातकबहुं न श्याम
अरु बलराम । यहै कहति पठाय हैं अब तबहिं तन विश्राम । बाल
सुख सब तुमहिं लूट्यो मोहिं मिले सुकुमार । सूर यह उपकार तुमते
कहत बारम्बार २०३ ॥ रागपरज ॥ कहां सुखब्रजकोसो संसार । कहां
सुखद बंशीबट यमुना यह मनसदाबिचार । कहँ बनधाम कहां राधा
सँग कहां संग ब्रजबाम । कहां लता तरुतरु प्रति बूझत कुंजकुंज नव
धाम । कहां बिरह सुख बिन गोपिन संग सूरश्याम मन काम २०३
वह सुख कहौ काकेसाथ । कहां नन्दकहां यशुमतिकहां राधानाथ।
भाव जनबिननहीं बनिसुख कहां प्रेमरु रोग । काग हंसहि संग ऐसे
कहां दुख कहँ भोग । जगतमें यह संग देखो बचनप्रति कहे अलेखे।
सूर ब्रज की कथा कासों कहै यहकरि देखे २०५ ॥

इतिश्रीकृष्णानन्दव्यासदेवरागसागरोद्भव सूरसागरसंगीत
रागकल्पद्रुम मथुरालीलासम्पूर्णम् ॥

अथ सूरसागर रागसंग्रहकृत ॥

राग कल्पद्रुम ॥

श्रीमथुरातेश्रीकृष्णजीउद्धवजीकोब्रजमेंपठायोसोकथाप्रारम्भ ॥

मङ्गलाचरण ॥

रागकल्याण तालजलदतिताला ॥

चरणकमल बन्दौं हरिराई । जाकीकृपा पंगुगिरिलंघे अँधरे को
सब कछुदिखराई ॥ बहरोसुनै गुंगपुनिबोलै रंकचलै शिरछत्रधराई।
सूरदासस्वामी करुणामय बारबार बन्दौं तेहिपाई ॥

अथ भ्रमरगीतको प्रस्ताव ॥

श्रीप्रभुजीके बचन उद्धवप्रति ॥

रागसारंग ॥ पहिले करि परणाम नन्दसों समाचार सबदीजो । और
वहां वृषभान गोपसों जाय सकल सुधिलीजो । श्रीदामा आदिक सब

ग्वालन मेरोहुतो भेंटियो। सुखसन्देश सुनाय हमारो गोपिनको दुख मेटियो। मंत्री यकबन बसतहमारोताहिमिले सचुपाइयो। सावधान ह्वै मेरो हुतो ताहीमाथ नवाइयो। सुन्दर परमकिशोर बयक्रमचंचल नयन बिशाल। कर मुरली शिर मोरपंख पीताम्बर उर बनमाल। जिनि डरियो तुम सघन बननमें ब्रजदेवी रखवार। वृन्दाबनसोबसत निरन्तर कबहुं न होत नियार। उद्धव प्रति सब कही श्यामजू अपने मनकी प्रीति। सूरदास किरपाकरि पठये यहै सकल ब्रजरीति १ ॥ रागसोरठ ॥ कहियो नन्द कठोरभये। हम दोउबीरै डारि परघरै मानो थाती सौंपिगये। तनकतनकतेपालि बड़ेकिये बहुतै सुख दिखराये। गोचारनको चलतहमारे पाछेकोशकधाये। यह बसुदेवदेवकीहमसों कहत आपने जाये। बहुरि बिधाता यशुमतिजू के हमहिं न गोद खिलाये। कौनकाज यह राज नगरको को सुखसो सुखपाये। सूरदास ब्रजसमाधानकरु आजुकालिहहम आये २ ॥ रागबिलावल ॥ तबहिं उपङ्गसुत आयगये। सखा सखा कछु अन्तर नाहीं भरि भरि अङ्क लये। अति सुन्दर तनश्याम सरीखो देखतहरिपछिताने। ऐसेकूंवैसी बुधिहोती ब्रज पठवत तबआने। या आगे रसकाव्य प्रकाशे योग बचन प्रकटावै। सूरज्ञानदृढ याके हिरदय युवतिन योग सिखावै ३ हरि गोकुल की प्रीति चलाई। सुनहु उपङ्गसुतमोहिं न बिसरत ब्रज-बासी सुखदाई। यहचित होतजाउँ मैं अबहीं यहां नहीं मनलागत। गोपसुग्वाल गायबनचारत अतिदुखपायो त्यागत। कहँमाखनचोरी कहँ यशुमति पूतजेंवहुकरिप्रेम। सूरश्याम के बचन सहितसुनिब्या-पत अपननेम ४ ॥ रागरामकली ॥ यदुपति लख्योतेहि मुसक्यात। कहत हममन रहेजोई सोईभइ यहबात। बचन परगट करन लागे प्रेमकहा चलाय। सुनहु उद्धव मोहिं ब्रजकी सुधि नहीं बिसराय। रैनि सोवत चलत जागत लगत नहिंमन आन। नन्द यशुमति नारिनर ब्रज जहां मेरोप्रान। कहत हरिसुनि उपङ्गसुत यहकहतहौं रसरीति। सूरचितते टरतनाहीं राधिकाकी प्रीति ५ ॥ रागसारंग ॥ सखासुनोमेरी इकबात। वहलतागनसंगगोपिनसुधिकरत पछितात। कहांवह वृषभानतनया परम सुन्दर गात। सुरति आये रासरस की अधिक जिय अकुलात।

सदाहितु यह रहत नाहीं सकल मिथ्याजात। सूरप्रभु यहसुनो मोसों एकहीसों नात है ॥ रागटोड़ी ॥ उद्धव यह हरिनिश्चयजानो। मन क्रम बचमैं तुम्हैं पठावत ब्रजको तुरतपलानो। पूरण ब्रह्मसकल अविनाशी ताकेतुमहो ज्ञाता। रेख न रूपजाति कुलनाहींजाकेनहिं पितुमाता। यहमत देगोपिन कहँआवहु बिरहनदीमें भासति। सूरतुरत यह जाय कहौतुमब्रह्म बिनानहिंआसति ७॥ रागनट॥ उद्धव बेगिही ब्रजजाहु। सुरति सँदेश सुनायमेटो बल्लभिन को दाहु। काम पावक तूल में तन बिरह श्वास समीर। भसम नाहिन होन पावत लोचनन के नीर। अजोंलों यहिभांति ह्वैहै कछुक सजगशरीर। एतेपर बिनुसमाधाने क्यों धरैंतिय धीर। कहौकहा बनाय तुमसों सखासाधु प्रबीन। सूर सुमतिबिचारिये क्योंजियेजलबिनुमीन ८॥ रागसारंग॥ पथिकसँदेशो कहियो जाय। आवैंगे हम दोनों भैया मैया जनि अकुलाय। याको बिलगु बहुत हममान्यो जो कहिपठयोधाय। कहलों कीर्ति मानिये तुम्हरी बड़ोकियेपयप्याय। कहियोजाय नन्दबाबासोंअरुगहिपक-रेउपाय। दोऊदुखीहोननहिं पावहिं धूमरिधौरीगाय। यद्यपिमथुरा विभव बहुत है तुमबिनु कछु न सुहाय। सूरदास ब्रजबासी लोगनि भेंटतहृदय जुड़ाय ९ नीकेरहियोयशुमतिमैया। आवहिंगे दिनचारि पांचमें हमहलधर दोउभैया। जादिनते हमतुमते बिछुरेकाहु न कहेउ कन्हैया। कबहूं प्रात न कियो कलेवा सांझ न पीन्हो घैया। बंशी बेणुसम्हारि राखियोऔरअबेर सबेरो। मतिलैजाय चुराय राधिका कछुक खिलौना मेरो। कहियोजाय नन्दबाबासों निपट निठुरजिय कीन्हो। सूरश्याम पहुंचाय मधुपुरी बहुरि सँदेश न लीन्हो १०॥ रागकल्याण॥ उद्धवमन अभिलाष बढ़ायो। यदुपति योगजान्यो जिय-सांचो नयन अकाश चढ़ायो। नारिन पै मोको पठवत हौ कहतसि-खावनयोग। मनहीं मनअबकरत प्रशंसाहै मिथ्यासुखभोग। आयसु मानिलियो शिरऊपर प्रभुआज्ञा परमान। सूरदास प्रभु पठवतगोकुल मैं क्यों कहौं कि आन ११॥ रागमलार॥ हैं कोई वैसेहि अनुहारि। मधुबन ते इतआवत सखिरी चितौतु नयन निहारि। माथे मुकुट म-नोहरकुण्डल पीतबसन रुचिकारि। रथपर बैठकहत सारथि सों ब्रज

तन बांहपसारि। जानतिनाहिन पहिंचानति हूं मनु बीते युगचारि। सूरदास स्वामीके बिछुरे जैसे मीन बिन बारि १२ ॥ रागसोरठ ॥ देखौं नन्दद्वाररथठाढो। बहुरिसखी सुफलकसुतआयो परेउसँदेहडरगाढो। प्राण हमारे तबहिं गयोलै अब केहिकारण आयो। जानति हूं अनुमान सखीरी कृपाकरन उठिधायो। इतने अन्तर आय उपँगसुत तेहि क्षण दरशनदीन्हो। तब पहिचानि सखा हरिजूको परमसुचित मन कीन्हो। तब परणाम कियो अति रुचिसों और सबहि कर जोरे। सुनियतरहै तैसोईदेखे परमचतुर मतिभोरे। तुम्हरो दरशनपाय आपनो जन्म सुफलकरि जान्यो। सूर ऊधो सों मिलत भयो सुख ज्यों चखपायो पान्यो १३ कहो कहांतेआयेहो। जानतिहो अनुमानमनो तुम यादवनाथ पठायेहो। वैसेइबरण बसन पुनि वैसेइ तनभूषणसाजि ल्यायेहो। सर्वसुले तबसंगसिधारे अबकापरपहिरायेहो। सुनहुमधुप एकोमनु सबको सोतो उहांलै छायेहो। मधुबनकी मानिनी मनोहर तहहिंजाहु जहँ भायेहो। अब यह कौन सयानप ब्रजपर का कारण उठिआयेहो। सूर जहांलों श्यामगातहैं जानि भलेकरि पायेहो१४ ॥ राग नट॥ ऊधोकोउपदेशसुनो किनुकानदै। सुन्दरश्यामसुजान पठायो मानदै ॥ ध्रुव ॥ कोउआयो उतओर जितै नँदसुवन सिधारे। तहैबेणु धुनिहोइ मनो आयेनँदप्यारे। धाईंसब गलगाजिकै ऊधोदेखेजाय। लैआई ब्रजराज मैं हो आनँदउर न समाय। अरघआरती तिलकदूब दधि माथे दीन्ही। कञ्चनकलश भराय आनि परिकरमा कीन्ही। गोपभीर आंगनभई मिलिबैठे यादवजात। जलझारी आगेधरी होबूझति हरिकुशलात। कुशलक्षेमबसुदेव कुशलदेवै कुबिजाऊ। कुशल क्षेम अक्रूर कुशल नीकेबलदाऊ। पूछिकुशल गोपालकी रहींसकल गहिपाय। प्रेममगन ऊधोभये हो देखत ब्रजकोभाय। मनमन ऊधो कहै इहनबुझिये गोपालहि। ब्रजको हेतुबिसारि योगसिखवत ब्रज बालहि। पातीबांचि न आवई रहेनयन जलपूरि। देखिप्रेम गोपिन को ऊधो ज्ञानगरबगयो दूरि। तब इतउत बहराय नीरनयननमेंसाख्यो। ठानी कथाप्रबोध बोलिसब गुरु समोख्यो। जो ब्रज मुनिवर ध्यावहीं नरपावहिँ नहिंपार। सो ब्रतसीखो गोपिका हो छांडि बि-

थविस्तार । सुनि ऊधोके वचन रहीं नीचेकरितारे । मनो सुधासों सींचि आनि विषज्वाला जारे । हमअबला कह जानहीं योग युगति की रीति । नँदनन्दन व्रतछांडिकै हो कोलिखिपूजै भीति । अविगत अगह अपार आदि अविगतिहै सोई । आदि निरञ्जननाम ताहिरंजै सबकोई । नैननासिका अग्रहैं तहां ब्रह्मको बास । अविनाशी विनशै नहीं हो सहजज्योतिपरकास । घरलागे औ घूर कहे मनकहो बँधावै । अपनो घर परिहरे कहो को घरहि बतावै । मूरख यादवजातहैं हमहिं सिखावतयोग । हमकोभूलीकहतहैं होहमभूली किधौंलोग ।

न्ध ताहिदुहुं लोचनसैसे । ज्ञाननैन जो अन्धनाहि

। बूझै निगम बोलाइको कहै वेद समुझाय । आदि अन्त जाकेनहीं हो कौनपिता को माय । चरणनहीं भुजनहीं कहोऊखल किनबांधो । नैन नासिका मुखनहीं चोरिदधि कोने खांधो । कौन खिलायो गोदमें किनकहे तुतरेबैन । ऊधो ताको न्यावहै हो जाहि न सूझै नैन । हम बूझति सतभाउ न्याउ तुम्हरे मुखसांचो । प्रेम नेम रसकथा कहो कञ्चनकी कांचो । जो कोउपावै शीशदे ताकोकीजै नेमु । मधुपहमारीसों कहो हो योगभलो किधौंप्रेमु । प्रेमप्रेमसोंहोइ प्रेमसों पारहिजैये । प्रेमबँध्यो संसार प्रेमपरमारथ पैये । एकौनिहचो प्रेम को जीवनमुक्ति रसाल । सांचो निहचो प्रेमको हो जो मिलिहैं नँदलाल । सुनि गोपिनकोप्रेम नेम ऊधोको भूल्यो । गावत गुणगोपाल फिरत कुञ्जनिमें फूल्यो । छण छण गोपिनके पगधरे धन्य तिहारो नेम । धायधाय द्रुम भेटहीं हो ऊधो छाकेप्रेम । धनिगोपी धनि गोप धन्य सुरभी बनचारी । धन्यधन्य सोभूमि जहां विहरेबनवारी । उपदेशन आयोहुतो मोहिं भयो उपदेश । ऊधो यदुपतिपै गये हो किये गोपको वेश । भूल्यो यदुपति नाम कहत गोपाल गोसांई । एकबार व्रजजाहु देहु गोपन दिखराई । गोकुलको सुख छांडिकै कहां बसेहो आय । कृपावन्त हरिजानिकै हो ऊधो पकरेपाय । देखतव्रजकोप्रेम नेम कछुनाहिनभावै । उमड्यो नयननिनीर बात कछुकहत न आवै । सूरश्याम भूतलगिरे रहे नयन जलछाय । पोंछि पीतपटसों कहेउ हो

१५ ॥ राग धनाश्री ॥ हमसों कहत कौनकी बातें ।

न ऊधो हम समुझतनाहीं फिरि पूंछतहैं तातें। को नृपभयो कंस किनमारेउ को बसुदेवसुत आहि। इहां हमारे परममनोहर जीजतु है मुखचाहि। दिनप्रतिजात सहजगोचारन गोपसखालेसंग। बासरगत रजनीमुख आवत करत नयनगतिपंग। को व्यापक पूरणअविनाशी कोबिधिवेद अपार। सूर वृथाबकवादकरतहो याब्रजनन्दकुमार १६ रागसारंग ॥तूअलि कासों कहतबनाय। बिन समुझे हमफिरि बूझतहैं एक बारकहो गाय। किन वै गवन कीन्हो शकटनि चढ़ि सुफलक सुत के संग। किन वे रजक लुटाइ नानापटपहिरे अपने अंग। किन हति चाप निदरि गज मारेउ किन वे मल्लमथिजाने। उग्रसेन बसुदेव देवकी किन ये निगड़ हठि भाने। तू काकी परतीति प्रशंसा कौने घोषपठायो। किन मातुलबधि लयोजगत यशकौन मधुपुरीछायो। माथे मोरमुकुट बन गुंजा मुखमुरली धुनिबाजै। सूरजदास यशोदानन्दन गोकुलकहन बिराजै १७ हमतोनन्दघोषकी बासी। नामगोपाल जाति कुलगोपक गोप गोपाल उपासी। गिरिवरधारी गोधन चारी वृन्दावन अभिलासी। राजा नन्द यशोदारानी जलधिनदी यमुनासी। प्राण हमारे परममनोहर कमलनैन सुखरासी। सूरदास प्रभु कहौं कहांलौं अष्टमहासिधिदासी १८ ॥ रागकेदारो ॥ गोकुल सबै गोपालउपासी। योगअङ्ग साधनको ऊधोतिसब बसत ईशपुर काशी। यद्यपि हरि हम तजि अनाथ करितदपि रहति चरणनि रसरासी। अपनी शीतल तऊ न छांडत यद्यपिहैं शशिराहु गरासी। को अपराधयोग लिखि पठवत प्रेमभजन तजि करत उदासी। सूरदास ऐसी को बिरहिनि मांगत मुक्त तजे गुणरासी १९ ॥ रागधनाश्री ॥ जीवन मुह चाही को नीको। दरशपरशदिन रातकरतहैं कान्ह पियारेपीको। नयनन मूंदि मंदिकिन देखोबंध्यो ज्ञान पोथीको। आछे सुन्दरश्यामनोहर और जगतसबफीको। सुनौयोगको कहलै कीजैजहां हानिहैजीको। खाटो मही नहीं रुचि मानै सूरखवैया घीको २० ॥ रागकाफी ॥ आयो घोष बड़ो ब्योपारी। लादिखेपगुण ज्ञानयोगकी ब्रजमेंआयउतारी। फाटक देकरि हाटक मांगत भोरै निपट सुधारी। धुरही ते खोटो खायोहै लये फिरत शिरभारी। इनके कहेकौन डहकावै ऐसी कौनो

अयानी। अपनेदूध छांडि को पीवै खारकूपको पानी। ऊधोजाहु सवार यहांते बेगि गहरु जनि लावो। मुहुमांग्यो पैहो सूरजप्रभुसाहुहि आनि दिखावो २१ योग ठगोरी ब्रज न बिकैहै। यह ब्योपार तिहारो ऊधो ऐसेही फिरि जैहै। जापैलै आयेहो मधुकर ताके उर न समैहै। दाखछांडिके कटुक निबोरीको अपने मुखखैहै। मूरीके पातनके कोयनाको मुक्ताहलदैहै। सूरदासप्रभु गुणहिं छांडिके कोनिर्गुण निरबैहै २२ ॥राग नट॥ आये योग सिखावन पांडे। परमारथी पुराणनि लादे ज्यों बनजारे टांडे। हमरे गति पति कमलनयन की योगसिखेते रांडे। कहो मधुप कैसे समाहिंगे एक म्यान दो खांडे। कहो षटपद कैसेखैयतुहै हाथिनकेसँग गांडे। काकीभूख गईबयारि भखि बिना दूध घृत मांडे। काहेको झालाले मिलवत कौनचारतुम डांडे। सूरदास तीनो नहिं उपजत धनिय धान कुरु कांडे २३ ॥ राग बिलावल ॥ ये अलि कहा योगमें नीको। तजि रसरीति नन्दनन्दनकी सिखवत निर्गुणफीको। देखत सुनत नाहिँ कछु श्रवणनि ज्योति २ करि ध्यावत। सुंदरश्यामदयाल कृपानिधि कैसेहोबिसरावत। सुनि रसाल मुरली सुरकीधुनि सोइकौतुक रसभूलें। अपनी भुजा ग्रीवपर मेलैं गोपिनके मुखफूलें। लोककानि कुलको भ्रमप्रभुमिलि मिलिकै घरबनखेली। अब तुम सूर खवावनआये योगजहर की बेली २४॥ राग मलार ॥ हमरे कौनयोग व्रत साधै। मृगत्वच भस्म अधारि जटाको कोइतनो अवराधै। जाकीकहुं थाहनहिँ पैये अगम अपार अगाधै। गिरिधरलाल छबीले मुखपर एतेबांधको बाँधै। आसन पवन बिभूति मृगछाला ध्याननि को अवराधै। सूरदास मानिक परिहरिके राख गाँठिको बाँधै २५ ॥ रागधनाश्री ॥ हमतो दुहूँभाँति फलपायो। जो ब्रजनाथमिलै तो नीको नातरु जग यशुगायो। कहां वे गोकुलकी गोपी बरण हीनलघु जाती। कहां वे कमला के स्वामीसँग मिलिबैठे यक पांती। निगमध्यान मुनिज्ञान अगोचर तेभये घोष निवासी। ताऊपर अब सांचु कहोधौं मुक्तिकौनकी दासी। योगकथा पालागों ऊधो ना कहु बारम्बार। सूरश्याम तजि और भजे जो ताकी जननीछार २६ राग कान्हरो ॥ पूरण तारण नयनन पूरी। तुम जो कहत श्रवणनि पुनि

समुझत येयाही दुखमूरति बिसूरी। हरि अन्तर्यामी सब जानत बुद्धि बिचारत बचन समूरी। वे रस रूप रतन सागर निधि क्यों मणिपाय खवावत धूरी। रहु रे कुटिल चपल मधु लम्पट कितव सँदेश कहत कटु कूरी। कहँमुनिध्यान कहांब्रजयुवती कैसे जात कुलिश करिचूरी। देख प्रकट सरिता सागर सर शीतलशुभग स्वादरुचि रूरी। सूरस्वातिको बसे जियचातक चितलागत सबभूरी २७॥ रागधनाश्री॥ हमते हरि कबहूं न उदास। रातिखवाय पिवाय अधररस सो क्यों बिसरत ब्रज को बास। तुमसों प्रेमकथाको कहिबो मनहुँ काटिबोघास। बहिरोतान स्वाद कहजाने गूंगोबात मिठास। सुनुरी सखीबहुरि फिरिऐहैं वहसुख बिबिधबिलास। सूरदास ऊधो अब हमकोभयो तेरहों मास २८ तेरो बुरो न कोऊमाने। रसकीबात मधुपनीरस सुनि रसिक होत सोजाने। दादुर बसे निकट कमलनि के जन्म न रस पहिंचाने। अलि अनुराग उडन मन बांध्यो कहे सुनत नहिँकाने। सरिता चली मिलन सागर को कूल मूल द्रुमभाने। कायर बके लोहतेभाजे लरे जो सूरबखाने२९ घरही के बाढे रावरे। नाहिन मीत बियोग बशपरे अनवें उगे अलि बावरे। भुख मरिजाय चरैनहिँ तिनुका सिंहको यहै स्वभाव रे। श्रवण सुधा मुरली के पोषे योग जहर न खवाव रे। ऊधो हमहिं सीखका देहो हरिबिनु अनत न ठांवरे। सूरजदास कहा लै कीजै थाहीनदिया नावरे ३०॥ रागमलार॥ श्याम मुख देखेही परतीति। जो तुम कोटि यतन करि सिखवत योग ध्यानकी रीति। नाहिंन कछू सयानज्ञान में यह हम कैसे मानहिं। कहो कहा कहिये या नभ को कैसे उर में आनहिं। यह मन एक एक वह मूरति भृङ्गकीट सममाने। सूरशपथ दै बूझत ऊधो यह ब्रज लोग सयाने ३१॥ रागधनाश्री॥ लरिकाई को प्रेम कहो अलि कैसे करिकै छूटत। कहा कहौं ब्रजनाथ चरित अब अन्तरगति यों लूटत। चंचलचाल मनोहर चितवनि वे मुसुकानि मन्द धुनिगावत। नटवरभेष नन्दनन्दन को वह बिनोद गृह बनते आवत। चरणकमलकी शपथ करति हौं यह सँदेश मोहिं बिष सम लागत। सूरदास मोहिँ निमिष न बिसरत मोहन मूरति सोवत जागत ३२॥ रागसोरठ॥ अटपटि बातितिहारी ऊधो सुनैसो ऐसी कोहै। हम अहीरि

अबलाशठ मधुकर तिन्है योग कैसेसोहै। बूचिहिखुभी आंधरीकाजर नकटी पहिरे बेशरि। मुंडली पाटीपारनचाहै कोढ़ी अङ्गहि केशरि। बहिरीसों पतिमताकरै सो उत्तर कौनपैपावै। ऐसोन्यावहै ताकोऊधो जोहमैं योग सिखावै। जो तुम हमको लाये कृपाकरि शिरचढ़ाय हम लीन्है। सूरदास नरिअरुज्यों विषको करहि बन्दना कीन्है ३३॥ राग बिहागरो॥ बरु वे कुब्जा भलो कियो। सुनि सुनि समाचार ऊधो मो कछुक सिरात हियो। जाको गुण गति नाम रूप हरिहरेउ सो फिरिन दियो। तिन अपनो मनहरत न जान्यो हँसिहँसि योगजियो। सूरतनक चन्दन चढ़ायतन ब्रजपति वश्यकियो। और सकल नागरि नारिनको दासीदाव लियो ३४॥ रागसारंग॥ हरि काहेके अन्तर्यामी। जोहरि मिलत नहींहैं औसर अवधि बतावत लामी। अपनी चोपजाय उठि बैठे और निरस बेकामी। सोकह पीरपराई जानै जो हरि गरुडागामी। आई उघरि प्रीति कलईसी जैसेखाटी आमी। सूरपर एतेअनखमरतहैं ऊधोपीवतमामी३५ बिलगु जिनि मानहु ऊधो प्यारे। यह मथुरा काजरकी कोठरि जेआवहिं तेकारे। कारेभँवर सुफलकसुतकारे कारे रतनपवारे। कारेनसङ्ग अधिक छबि उपजत तिन्हेंहमैं मनिआरे। मानहु नीलमाटते काढ़ि लेयमुना ज्यों पखारे। वहां ज्ञानकी कौनचलावै सूरश्याम गुणन्यारे ३६॥ रागदेवगन्धार॥ हरिबिनु कैसेया ब्रजजीजै। पङ्कज बरषि बरषि उरऊपर शारंगरिपु जलभीजै। तारापतिके रिपु शिरठाढ़ो निमिषनि चैन न दीजै। चन्दाचौथि जातगोपिनको मधुप आय यशलीजै। वायस अजदोउ शब्दकी मिलनी ताकारण मनछीजै। सूरदासप्रभु हो जगजीवन बेगहि दरशन दीजै ३७॥ रागसारंग॥ अपने स्वारथको सबकोऊ। चुपकरिरहो मधुप रसलम्पटतुमदेखे अरुवोऊ। औरो कछूसँदेश कहनको कहिपठवो किनसोऊ। लीन्हे फिरतयोग युवतिनको बड़ेसयाने दोऊ। तबकत मोहन रास खिलाई जोपै ज्ञान हुतोऊ। अबहमरे जियबैठो यहपद होनीहोउसोहोऊ। मिटिगयोमान परेखोऊधो हिरदय हुतो सो होऊ। सूरदास प्रभु गोकुलनायक चित चिन्ता अब खोऊ ३८ तुम जो कहत सँदेशा आनि। कहा करौं वा नँदनन्दनसों होतनहीं हितुहानि। योगयुगति किहिकाज हमारे यदपि

महासुख खानि। सुने सनेह श्यामसुन्दर के हिलिमिलिकै मनमानि। सोहत लोह परशपारस जो सोवन बारे बानि। पुनि वह चोप कहां चुम्बक ज्यों लटपटाय लपटानि। रूपरहित नीराशा निरगुण निगमहुँ परत न जानि। सूरजदास कौनविधि तासोंअबकीजै पहिंचानि ३९ ॥ रागधनाश्री ॥ इमतोकान्ह केलिकीभूखी। कैसेनिरगुण सुनहिं तिहारो। विरहिनिबिरह बिदूखी। कहिये कहा यहो नहिंजानत काहियोगहै योग। पालागों तुमहींसोंवापुर बसतबावरोलोग। अञ्जनअभरण चीर चारुबरुनेक आपतनकीजै। दण्डकमण्डलभस्मअधारी जो युवतिनको दीजै। सूरदेखिदृढता गोपिनकी ऊधो यह ब्रतपायो। कहै कृपानिधि हो कृपालहो प्रेमैपढन पठायो ४० अँखियां हरिदरशन की भूखी। कैसे रहैं रूप रसराची ये बतियां सुनि रूखी। अवधि गनत यकटक मगुजोवत तब एतो नहिंभूखी। अब इन योग सँदेशन ऊधो अति अकुलानी दूखी। बारक वहमुखफेरि दिखावहुदुहि पयपिवतपतूखी। सूरसकति सतिनाउ चलावैं ज्यों सरिताभर सूखी ४१ ॥ रागकेदारो ॥ नेह न होत पुरानो हे अलि। जलप्रवाह ज्यों शोभासागर तटनवतन ब्रजनाथ अहेबलि। जीवतहै आनन्द रूपरस रवि प्रतीति को मीन चढे थलि। अमी अगाध सिंधु सर भरि तहँ पीवतहूँ न अघात यतेजलि। दिनदिन बढत नीरनलिनी ज्यों श्यामरंगमें नयन रहेरलि। सूरगोपाल प्रीति जियजागी छूटत नाहिन नेकसली सलि ४२॥ रागसारंग ॥ जाय कहो बूझी कुशलात। जाके ज्ञान न होय सो माने कहीतिहारीबात। कारोनाम रूपपुनिकारो कारेअंग सखा सबगात। जोपैभले होत कहुं कारे तो कत बदलि सुता लेजात। हमको योग भोग कुब्जाको काके हिये समात। सूरदास से सेसो पतिके पाले जिन्ह तेही पछितात ४३ कहां लों कीजै बहुतबड़ाई। अतिहि अगाध अपार अगोचर मनसा तहां न जाई। जलबिन तरंग भीतिबिन चित्रन बिनचितही चतुराई। अब ब्रजमें इन रीति कछू यह ऊधो आनि चलाई। रूप न रेख बदन बपुजाके संग न सखा सहाई। ता निर्गुण सों प्रीति निरन्तर क्यों निबहेरी माई। मन चुभिरहेउ माधुरीमूरति रोमरोम अरुझाई। हो बलि गई सूरप्रभु ताके जाके श्याम सदा सुखदाई ४४ ॥ रागमलार ॥ काहे को

गोपीनाथ कहावत। जोपै मधुकर कहत हमारे गोकुल काहे न आवत। सपने की पहिंचानि जानिकै हमहिं कलंकु लगावत। जोपै श्याम कूबरीरीझे सो किन नामधरावत। ज्यों गजराज काजके औसर औरै दशन दिखावत। कहव सुनबको हमहैं ऊधो सूरअनन्त बिरमावत ४५ अबकत सुरति होतहै राजनि। दिनदश प्रीतिकरी स्वारथहित रहत आपनेकाजनि। सबैअयानि भईसुनि मुरली ठगीकपटकी भाजनि। अब मन भयोसिंधुके खग ज्यों फिरि फिरि सरत जहाजनि। वह नाती टूटो तादिनते सुफलकसुत सँगभाजनि। गोपीनाथ कहाय सूरप्रभुकत मारतहो लाजनि ४६ ॥ रागसोरठ ॥ लिखिआई ब्रजनाथकी छाप। बांधे फिरत शीशपर ऊधो देखत आवेताप। नूतनरीति नन्दनन्दनकी घर घरदीजतु थाप। हरिआगे कुब्जाअधिकारी ताते है यहदाप। आयेक-हन योगु अवराधो अबिगत कथाकी जाप। सूरसँदेशो सुनियन लागे कहौकौनके पाप ४७ ॥ रागसारंग ॥ फिरिफिरि कहा सिखावत बात। प्रातकाल उठिदेखत ऊधो घरघर माखन खात। जाकीबात कहत हौ हमसों सोहै हमसों दूरि। यहँहै निकट यशोदानन्दन प्राण सजीवनि मूरि। बालक संगलये दधिचोरत खात खवावत डोलत। सूर शीश सुनि चौंकत नावत अब काहे न मुख बोलत ४८ ॥ रागधनाश्री ॥ अपने सगुण गोपालै माई यहिबिधि काहेदेत। ऊधो की ये निरगुण बातैं मीठी कैसेलेत। धर्म अधर्म कामना सुनावत सुखऔमुक्ति समेत। काकी भूखगई मनलाडू सो देखहु चितचेत। जाके मुखग्र बिचित्तर बरजत निगम कहतहैनेत। सूरश्याम तजिको भुसफटके मधुप तिहारेहेत४९ रागसारंग ॥ हमको हरिकी कथा सुनाउ। अपने ज्ञान कथा हो ऊधो मथुराही लेगाउ। नागरि नारि भले बूझहिंगी अपने बचन सुभाउ। पालागों इनबातनि रेअलि उनहींजाय रिझाउ। सुनिप्रियसखा श्याम सुन्दरके जोपैजिय सतिभाउ। हरिमुख अतिआरत इननयननि बारक बहुरि दिखाउ। जेकोइ कोटियतनकरैं मधुकर बिरहिनि औरसोहाउ। सूरजदास मीनकोजलबिनु नाहिंन और उपाउ ५० ॥ रागकान्हरो ॥ अलि हो कैसे कहौं हरिके रूपरसहि। मेरे तनमें भेद बहुत बिधि रसना न जाने नयनकी दिशहि। जिनदेखेते आहिबचनबिनु जिन्हैं बचन दर-

प्रान न तिसहि। बिनबाणी भरिउमगि प्रेमजल सुमिरिबासगुणगथहहि। बारबार पछितात यहैमन कहाकरै जाबिधि न बशाहि। सूरदास अंगन की यहगति को समुझावै पाछ पदपशुहि ५१ ॥ रागसारंग॥ हमरेहरि हारिलकी लकरी। मनबच क्रम नंदनन्दनसों उर यहढ़ढकरि पकरी। जागत सोवत सपनेसों मुख कान्ह कान्ह यह जकरी। सुनतहि योग लगत ऐसोअलि ज्यों करुईककरी। होईब्याधि हमहिं लेआये देखी सुनी नकरी। यहतौ सूर तिन्हैंलैदीजैजाकेमन चकरी५२ फिरिफिरि कहासिखावतमौन। दुसह बचनअलियोंलागतउर ज्योंजारेपरलौन। सिंगीभस्म त्वचामृगमुद्रा अरु अवराधनपौन। हमअबला अहीर शठ मधुकरघरबन जानै कौन। ये मतलेति नहीं उपदेशों जिन्हें आजु सब सोहत। सूरआजलों सुनी न देखी पोतसूतरी पोहत ५३ ॥ रागजैतश्री ॥ प्रेमरहित यह योग कौन काजगायो। दीननसों निठुरबचन कहेकहा पायो। जिननयननहम कमलनयन सुन्दरमुखहेरो। मूंदनतेनयनकहत कौनज्ञानतेरो। तामें कहुमधुकर हमकहालैनजाहीं। जामेंप्रिय प्राणनाथनन्दनंदननाहीं। जिनकेतुमसखा साधुबातेकहु तिनकी। जीवैंसुनि श्यामकथादासीहम जिनकी। अबिनाशी निरगुण गुणआनि आनि भाखौं। सूरदासजियके जिउकहां कान्हराखौं५४ ॥ रागकेदारौ ॥ जानि चालोअलि बात पराई। नाकोउकहैसुनै याब्रजमें नइकीरति सबजात हिराई। बूझै समाचार मुखऊधो कुलकीआरति बिसराई। भलेसङ्ग बसिभई भली मति भलेमेल पहिंचान कराई। सुन्दर कथा कटुकसी लागति उपजत उर उपदेश खेराई। उलटोन्याव सूरकेप्रभु को बहेजात मांगत उतराई५५॥ रागमलार ॥ याकीसीख सुनेब्रज कोरे। जाकी रहनि कहनि अनमिलअलि कहत समुझि अतिथोरे। आपुन पद मकरंद सुधारत हृदय रहत नित बोरे। हम सों कहत बिरह समुजे हैं गगन कूप खनि खोरे। धानको गाउं पयारते जानो ज्ञान बिषयरस भोरे। सूरसो बहुत कहे न रहे रस गूलर को फल फोरे ५६ निरखत अङ्ग श्याम सुन्दरके बार बार लावतछाती। लोचन जल कागदमसि मिलिकै ह्वैगइ श्यामश्यामकी पांती। गोकुल बसत सङ्ग गिरिधर के कबहूं बयारि लगी नहिं ताती। तबकी कथा कहा कहौं ऊधो जब

हम बैन नाद सुनि जाती। हरिके लाड़ गनति नहिं काहू निशिदिन सुदिन रासरसमाती। प्राणनाथ तुमकबधौंमिलहुगे सूरदास प्रभु बाल सँघाती५७ ॥रागमारू॥ मोहिं अलिदुहूंभांति फलहोति। तब रस अधर लेति मुरली अबभई कूबरी सोति। तुम जु योग मत सिखवन आये भस्म चढ़ावत अङ्ग। इन बिरहिनि में कहुं को देखी सुमन गुहाये मंग। कानन मुद्रा पहिरि मेखली धरे जटा वो धारी। यहांतरल तरिवन काके देखे अरुतन सुखकीसारी। परमबियोगिनि रटति रैनि दिन धरि मनमोहनध्यान। तुमतो चलोबेगिमधुबनको जहांयोगको ज्ञान। निशिदिन जीजतुहै या ब्रजमें देखि मनोहररूप। सूर योगलै घरघर डोलो लेहुलेहु धरि सूप ५८ ॥ रागसारंग ॥ बिलगु जनि मानहु हमरी बात। डरपति बचन कठोर कहतमतिबिन पतियां उठिजात। जो कोउ कहतजरे अपने कछु फिरिपाछे पछितात। जोप्रसादपावत तुम ऊधो कृष्णा नामलै खात। मनजु तिहारो हरि चरणन तरअचल रहतदिनरात। सूरश्यामतेयोग अधिक केहिकहि आवतयहबात५९ अपनीसी कठिन करत मन निशिदिन। कहिकहि कथा मधुप समुझावत तदपि न रहत नन्दनन्दनबिन। बरजन श्रवण सँदेश नयनजल मुख बतियां कछु और चलावत। बहुतभांति चितधरत निठुरतासब तजि औरयहै जियआवत। कोटिस्वर्ग समसुख अनुमानत हरि समीप समता नहिंपावत। थकितसिन्धु नौकाके खगज्यों फिरिफिरिफेरि वहै गुण गावत। जे बासनन बिदारत अन्तर तेइतेइ अधिकु अनूअर दाहत। सूरदास परिहरि न सकत तन बारक बहुरि मिल्योहैचाहत ६० ॥ रागधनाश्री ॥ रहुरे मधुकरमधु मतवारे। कहा करौं निर्गुण लैकै हो जीवहु कान्ह हमारे। लोटत नीच परागपंक में पचत न आपु सम्हारे। बारम्बार सरस मदिराकी अपरस कहा उघारे। तुम जानत हमहूं वैसीहैं जैसी कुसुम तिहारे। घरी पहर सबको बिलमावत जेते आवत कारे। सुन्दरश्याम कमलदललोचन यशुमति नन्ददुलारे। सूर श्याम को सर्बस अर्प्यो अब कापै हम लेहिं उधारे६१ ॥ रागबिलावल॥ काहे को रोकत मारग सूधो। सुनहुमधुप निर्गुण कंटकते राज पन्थ क्यों रूंधो। कैतुम सिखै पठाये कुब्जाके कहीश्यामघन जूधो। वेद

पुराण सुमृत सब ढूंढोयुवतिनयोग कहूंधो। ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछन दूधो। सूर मूर अक्रूर गयेलै ब्याजनिवेरत ऊधो ६२॥ रागमलार॥ बातनसबकोऊ समुझावैं। जेहि बिधि मिलन मिलैं वे माधव सो बिधि कोउ न बतावैं। यद्यपि यतन अनेक रचीपचिमारि असन बिरसावैं। तद्यपिहठी हमारे नयना और न देखेभावैं। बासर निशा प्राण बल्लभतजि रसना और न गावे। सूरदास प्रभुप्रेमहिं लगिकारि कहिये जो कहिआवे ६३॥ रागसारंग॥ निर्गुण कौन देशको बासी। मधुकर हँसि समुझाय सौंहदे बूझत सांचु न हांसी। कोहै जनक जननि को कहियत कौननारि कोदासी। कैसोबरन भेषहैकैसो वहिरस में अभिलासी। पावैगो पुनिकियो आपनो जोरेकहैगो गासी। सुनत मौन ह्वै रहेउ ठग्योसो सूरसबैमतिनासी ६४॥ रागकेदारो॥ नाहिनरहेउ मनमें ठौर। नन्दनन्दन अछतकैसे आनिये उरऔर। चलत चितवत दिवस जागतसपन सोवति राति। हृदयते वहश्याम मूरतिछण न इत उतजाति। कहतकथा अनेक ऊधो लोकलाभ दिखाय। कहाकरौंतन प्रेम पूरण घटनि सिंधु समाय। श्यामगात सरोज आनन ललितपति मृदुहास। सूरऐसे रूपकारण मरत लोचनप्यास ६५॥ रागमलार॥ ब्रज जन सकलश्याम व्रतधारी। बिनगोपाल और नहिंजानत आनकहे व्यभिचारी। योगमोट शिरबोझ आनिके कततुमघोषउतारी। इतनी दूरिजाहुचलि काशीजहां बिकातिपियारी। यहसँदेशनहिंसुनेतिहारो मण्डली अनन्यहमारी। जोरसरीतिकरी हरिहमसों सो कतजात बिसारी। महामुक्ति कोई नहिंबूझैयदपि पदारथ चारी। सूरदासस्वामी मनमोहन मूरतिकी बलिहारी ६६॥ रागधनाश्री॥ कहतिकहा ऊधोसों बोरी। जाकोसुनतरहेहरिके ढिगश्यामसखा यहसोरी। कहाकहनरी मैं पत्यातरी नहींसुनी नहिंही कहनावत। हमकोयोग सिखावनआये यहतेरे मनआवत। करणीभली भलेईजाने कपट कुटिल की खानि। हरिकोसखा नहींरीमाई यहमन निश्चयजानि। कहांरास रस कहां योगधर इतने अंतर भाषत। सूर सबै तुमकतभइबौरी याकीपति कहरावत ६७॥ रागरामकली॥ ऐसेई जनदूत कहावत। मोकोएक अचम्भो आवत यामें एक कुपावत। बचन कठोर कहत कहि दाहत अपनी

महत गाँवावत। ऐसी परकृत परतिछांह को युवतिन ज्ञान बुझावत। आपुन निलज रहत नखशिखलों एतेपर पुनिगावत। सूरकरत परशंसा अपनी हारेहु जीतिकहावत ६८॥ रागधनाश्री॥ प्रकृत जोइजाके अंगपरी। श्वानपूंछकोटिक जोलागेसूधि न काहुकरी। जैसे कागभक्ष नहिंछांडे जनमतज्यों नवरी। धोयेरंगजातकहुकैसेज्यों कारीकमरी। ज्यों अहिडसत उदरनहिं पूरत ऐसी धरणि धरी। सूर होउ सो होउ शोचनहिं तैसेहैं एऊरी ६९॥ रागरामकली॥ तौ हम मानेंबात तुम्हारी। अपनोब्रह्म दिखावहु ऊधो मुकुट पितांबरधारी। भजिहैं तब ताको सब गोपीसहिरहि हैं बरुगारी। भूतसमान बतावत हमको जारहु श्याम बिसारी। जेमुखसदा सुधाअंचवतहैं तेविषक्यों अधिकारी। सूरदास प्रभुएक अंगपररीझिरहीं ब्रजनारी७० रागबिलावल॥ यहसुनतहीनयन पराने। जबहीं सुनत बाततुअ मुखकी रोवत रमतढराने। बारम्बार श्यामघन घनते भाजत फिरत लुकाने। हमकोनहिंप्रतियात तबहिंते जबब्रज आपुसमाने। नातरुयही काछहम कांछति वे यहजानि छिपाने। सूरदोष हमरे शिरधरिहो तुमही बड़े सयाने ७१॥ रागधनाश्री॥ नयननिवहैरूप जोदेख्यो। तौऊधोयहजीवनजगको सांचुसुफलकरि लेख्यो। लोचन चारुचपल खंजनमन रंजन हृदय हमारे। रुचिर कमल मृगमीन मनोहर श्वेतअरुण अरुकारे। रतन जटित कुण्डल श्रवणनि बरगण्ड कपोलनि झांई। मनुदिनकर प्रतिबिंब मुकुट महं ढूंढतयह छबिपाई। मुरली अधर बिकट भौंहैंकरि ठाढ़ेहोत त्रिभङ्ग। मुकुट मालउर नीलशिखरते धसिधरणी ज्यौंगंग। औरभेष को कहै बरणिसब अङ्ग अङ्ग केसरि खौर। देखतबनै कहत रसनासों सूरबिलोकत और ७२॥ रागनट॥ नयनन नन्दनन्दन ध्यान। तहांलै उपदेश दीजै जहां निरगुण ज्ञान। पाणिपल्लव रेखगणि गुण अवधिबिधि बंधान। एतेपरकहिकटुक बचनन हनतजैसेप्रान। चन्द्रकोटि प्रकाश मुख अवतंसकोटिकभान। कोटि मन्मथवारि छबिपर निरखि दीजत दान। भृकुटिकोटि कुदण्डरुचिअवलोकनीसंधान। कोटिबारिजबङ्क नयन कटाक्ष कोटिकभान। कम्बुग्रीवा रत्नहार उदारउरमनि जान। आजानुबाहु उदार अतिकर पद्मधानिधान। श्याम तन पटपीत की

छबि बरकौन बखान। मनहुनिर्तत नीलघनमें तड़ित देतीमान। रास रसिक गोपाल मिलिमधु अधर करतीपान। सूर ऐसे रूपबिन कोइ कहा रसकआान७३ ॥ रागजेतश्री॥ देनआयेऊधोमत नीको। आवहुरी सब सुनहु सयानी लेहु न यशको टीको। तजन कहत अंबर आभूषण गेह नेह सबहीको। शीशजटा सब अङ्ग भस्म अति सिखवत निर्गुण फीको। मेरे जान यहै युवतिन को देतफिरत दुख पीको। तेहि सर पञ्जर भये श्याम तन अब न गहत डर जीको। जाकी प्रकृति परी प्राणन सों शोच न पोच भलीको। जैसे सूर ब्याल डसि भाजत का मुख परत अमीको ७४ ॥ राग सारंग॥ प्रीतिकरि दीन्हीगरेछुरी। जैसे बधिक चुगाय कपटकन पाछे करतबुरी। मुरली मधुरचोप करिकापो मोरचन्द्र टटवारी। बंक बिलोकनि लूकलागिवश सकी न तनहिं स-म्हारी। तलफत छांड़िचले मधुबन को फिरिकै लई न सार। सूरदास वा कमलतरोवर फेरि न बैठीडार ७५ ॥ रागधनाश्री॥ कोउ ब्रज बांचत नाहिन पाती। कत लिखि लिखि पठवत नँदनन्दन कठिन बिरहकी काती। नयन सजल कागद अतिकोमल करअँगुरी अतितातो। पर-शत जरै बिलोकत भीजै दुहूँभांति दुखछाती। क्यों समुझै ये अङ्कसूर सुनु कठिनमदन शरघाती। देखे जियहिं श्यामसुंदरके रहहिं चरण दिनराती ७६ ॥ रागजेतश्री॥ मुकुत आनिमन्दिरमें मेली। समुझि सगुण लेचले न ऊधो ये सब तुम्हरे पूंजिअकेली। कैलैजाहु अनतही बेंचन कैलैजाहु जहां बिषबेली। याहिलागि को मरै हमारे वृन्दावनपायँन तरपेली। शीश धरे घरघर कत डोलत एकमते सबभई सहेली। सूर वहां गिरिधरन छबीलो जिनकी भुजा अंशगहि मेली ७७ ॥ रागकान्हरो॥ हमअलि गोकुलनाथ अराध्यो। मनबचक्रम हरिसोंधरि पतिव्रतप्रेम योग तपसाध्यो। मातपिता हित प्रीति निगमपथ तजि दुखसुख भ्रमु नाख्यो। मान अपमान परं परितोषिसु अस्थिल थित मनुराख्यो। सकुचासन कुलशील परशिकरि जगत बन्दकरि बन्दन। मानपवाद पवन आरोधन हितक्रम काम निकन्दन। गुरुजन कानि अँगानि चहूँ दिशिते भरततापरबिदेखे। पिवत धूम उपहास जहांतहँ अपयश अ-वनि अलेखे। सहज समाधि बिसारि बपुवानक निरखि निमेष न

त्यागत । परम जातिप्रति अङ्ग माधुरी बरत यहै निशिजागत। त्रिकुटि सङ्ग भ्रुवभङ्ग तराटक नयन नयन लगिलागे। हँसनि प्रकाश सुमुख कुण्डलमिलि बदन सरअनुरागे। मुरली अधर मधुर सुरसों सुनिशब्द न हृद सुनिकाने। बरषत रस रुचि पवनसङ्ग सुख पद आनन्द समाने। मंत्र दियो मन जातभजन गुण ध्यान २ हरिको। सूरकहै गुरुकौनकहो अति कानसुने मतफीको ७८ ॥ रागधनाश्री ॥ मीठी बातनिमें कहलीजे। जो पै हरि हितु होहिँ हमारे करन कहो सो कीजै। लाय सुगन्धनाय आभूषण यों कीन्हो अरधङ्ग। ते कैसे अबलिखि पठवहिंगे भस्मचढ़ावनअङ्ग। एकबार विहरत वृन्दावन बेणी बिबिधिबनाई। ते कोंकहत जटा माथेको पलटा नामकन्हाई। काननमें करकान्ह आपने करणफूल पहिराये। तिनमाबत माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाये। कासों कहो दूरिनँदनन्दन तुम जो मधुपमधुपाती। सूर न होय श्यामके मुख को जाहु न जारहु छाती ७९ हरिसों भलो सो पतिसीता को। जाके हेत काज बहुकीन्हे कियो सिन्धुशीताको। रावणमारेउ लंका जारी सुखदेखयो भीताको। दूतहाथ उन्हैं लिखि न पठायो निगमज्ञान गीता को। अबधौं कहा परेखो कीजै कुब्जाके सीताको। जैसे चढ़त सबै सुधिभूली ज्यों पीता चीताको। कीन्ही कृपा योग लिखिपठयो निरखिपत्र रीताको। सूरजदास प्रेमकहजानै लोभी नवनीताको ८० ॥ रागसोरठ ॥ निरमोहिया सों प्रीतिकीन्ही काहेन दुखहोइ। कपटकरि करि प्रीतिकपटी लेगयो मनुगोइ। काल मुखते काढ़ि आनी बहुरि दीन्ही ढोइ। मेरे जियकी सोइजाने जाहिबीती होइ। शोचि आलि मजीठकीन्ही निपट काचीपोइ। सूरगोपी मधुप आगे दरकि दीन्ही रोइ ८१ ॥ रागसारंग ॥ बिन गोपाल बैरन भईं कुंजैं। तब येलतालगत अति शीतल अबभई विषम ज्वाल की पुंजैं। वृथा बहुत यमुना खग बोलत वृथा कमल फूलें अलि गुंजैं। पवन पानि घनसार सजीवनि दधिसुत किरनिभान भइभुंजैं। ये ऊधो कहियो माधवसे बिरह कदन करि मारतलुंजैं। सूरदास प्रभुको मगुजोवत अँखियां भई बरण ज्यों गुंजैं ८२ ॥ रागनट ॥ सँदेशो कैसेके अब कहौं। इन नयनन पातन को पहरो कबलगि देतरहौं। जुकछु बिचार होइ उर अन्तर रचि पचि

गोपिन्ह माहीं । सुखआनत ऊधोतनु चितवत न सो बिचार नहीं । अब सोई मिथ देहुसयानी जाते मखहि लहीं । सूरदासप्रभु कैसे वक सो बिनती के निबहीं ८३ ॥ रागकान्हरो ॥ बहुरो ब्रज बात न चाली । वह जो एकबार ऊधोकर कमलनयन पाती देवाली । पथिकतिहारे पा॰ लागतिहीं मथुरा जाहुजहां बनमाली । कहियो प्रकटपुकार द्वारह्वै कालिन्दी फिरिआयो काली । जबकृपा यदुनाथ कि हमपर रही सु रुचि जो प्रीति प्रतिपाली । मांगत कुसुमदेखि द्रुम ऊँचे गोद पकरि लेते गहिडाली । हमऐसी उनके केतिकहैं अंग प्रसंग सुनहुरी आली । सूरदासप्रभु प्रीति पुरातन सुमिरि सुमिरि राधा उरशाली८४॥ रागनट ॥ मोहनलालके संग आंखि । प्रथम ऊधो आनिदेहम सगुरा डारेनाखि । दोइ तीनि सात अनन्त जैसे कहत सुमृत सोभाखि । हृदय विद्याधर्म्म ज्ञानसों लोचननि अभिलाखि । उडहिं जहांके केलिसखिरी सुमिरि चकरी पांखि । हरि हरेहरि हेरिआलों रही झुकि बांक झांकि । निरखिजल प्रतिबिम्ब बिहसत उडत छोरत साखि । ढूंढियम पुरैनि बनजनु जतपि कुहकुहि कांखि । रैनिज्यों अंकुरत निशि अलिमदन दारिमद माखि । इन्दुउडगण कमल कुमुदिनि मिले सूरजसाखि ८५ राग मलार ॥ हरिदेखनि मधुबन कूपभरे । जे कोई पथिक गये जो ह्यांते फिरिनहिं गवनकरे । कैवे श्याम सिखाइ समोधे कैवे बीचमरे । अ॰ पनेनहिँ पठवत नँदनन्दन हमरेउ फेरिधरे । मसिखुटी कागज जलभीजे सरदो लागिजरे । पातीसूर लिखे क्यों करिजो पलक कपाट अरे ८६ रागनट ॥ नन्दनन्दन मोहनसों मधुकर काहे की प्रीति । जो कीजै तौ होइजलजधर रविकी ऐसीरीति । जैसेमीन कमल चातिकको ऐसेही गइबीति । तलफत जरत पुकारत सुनुशठ नाहिन है यहरीति । मन हठ परेउ कबन्ध युद्धज्यों हारेहु भइजीति । बँधत न प्रेम समुद्र सूरबल बर बारुहि की भीति ८७ मधुबनियां लोगनि को पतिआय । मुख औरै अन्तरगति औरै पतियाँलिखि पठवतहि बनाय । ज्योंकोइल सुतकाग जिआवत भाव भगति भोजनहिं खवाय । कुहकुहाय आये बसन्तऋतु अन्तमिले कुल अपने जाय । जैसे मधुकर पुहुप बासले फेरि न बूझैबात न आय । सूरजहांलौं श्यामगातहैं तिनसों क्यों की॰

ठिगे लगाय ८८ हरिहैं राजनीति पढ़िआये। समुझी बातकहत म-धुकरके समाचार कछुपाये। यक अतिचतुरहुते पहिलेही अरुकरि नेह दिखाये। जानीबुद्धि बड़ी युवतिन की योगसंदेश पठाये। भले लोग आगेके सखिरी परहित डोलत धाये। वे अपनेमन फेरिपाइये अहैं चलत चुराये। तेक्यों नीतिकरत आपुनजे औरनिरीति छुड़ाये। राजधर्म सबभये सूरजहँ प्रजा नजाय सताये ८९ योगकीगति सुनत मेरे अङ्ग आगिबई। सुलगि सुलगि हमरहीं तनमें फूंकि आनिदई। योगहमको भोग कुबिजहिं कौनेशिख सिखई। सिंह रजतजि दशाहिं खराइत सुनीबातनई। कर्मरेखा मिटतनाहीं जोबिधि आनिठई। सूर हरिकी कृपाजापर सकल सिद्धिभई ९० ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधोजान्यो ज्ञानतिहारो। जानेकहा राजगति लीला अन्त अहीरु बिचारो। हम सबै अयानी एक सयानी कुबिजासों मनमानो। आवत नहीं लाजके मारे मानहुँकान्ह खिस्यानो। ऊधोजाहु बाँहदे ल्यावहु सुन्दरश्याम पियारो। ब्याहोलाय धरोदश कुबरी कन्तहु कान्हहमारो। सुनरी सखी कछूनहिं कहिये माधव आवन दीजै। जबहीं मिलहिं सूरके स्वामी हांसी करिकरिजीजै ९१ ऊधोकहो कहन जोपारो। नाहिंन अलिकछु दोष तिहारो सकुचिसाथ जिनिमारो। नाहिन ब्रजबसि नन्दलाल गोपाल बिनोद निहारो। नाहिन रासरसिक रसचाखो तोड़ि लियोसे डारो। जो नहिंगयो सूर प्रीतम सँग प्राण त्यागितन न्यारो। अबतो बहुत देखिबो सुनिबो कौ नकरससों चारो ९२ ऊधो हमहिँ श्यामको यहैपरेखो आवै। तबवह प्रीतिचरण जावक शिर अब कुबिजा मनभावै। तब हम लाडलड़ाय लड़ैते हँसिहँसि कण्ठ लगावै। अबवहरूप अनूप कृपाकरिनयननि क्यों न दिखावै। जो सुख समिप रैनि दिन क्रीड़त सो अब योगसिखावै। जो मुख अमृत पियो भरि रसना सोकैसे विषभावै। करमीड़त पछितात धुनत शिर कम कम मन समुझावै। सूरदास प्रभु बिकल बिरहिनी ऐसी बिधि दुखपावै ९३ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो कहत न कछु बनिआवै। शिरपर सौति हमारे कुबजा चामके दाम चलावै। उनकछु मन्त्रपढ्यो चन्दनमें ताते श्यामहिं भावै। अपने रङ्गहिरँगे साँवरे शुकज्यों

पठावै। छांड्यो नेह हेत गोकुलसों लिखि लिखि योग पठावै। बि-
सरेउ प्रेम अपुरकी दासी अत्र कुलवधू कहावै। ज्योंनटिनी लघुहाथ
लकुटिले कपिज्यों नाचनचावै। सूरदासप्रभुजरी बहुतदुख तापर लोन
लगावै ९५ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधो योग सिखावन आये। कैसे धीरजधरि
हरिपाती लिखिज्यों आप सिधाये। एक समय हरि अपने कारण
कर्णफूल पहिराये। ता कारण माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाये।
जोरि जोरि चितजोरि जोरानो जोरी जोरि न जानो। बिनको प्रेम
कहा भयो ऊधो अब यह योग दृढ़ानो। हरिजो हमसों प्रीति जो
कीन्ही जैसे मीन अरु पानी। तलफि तलफि जिय निकसन लाग्यो
पानी पीर न जानी। निशिबासर मेरी पलक न लागत कोटियतन
करि हारी। जैसे भुअङ्गम तजी केचुरी सो गति भई हमारी। बेणी
सुभग गुहीकर अपने चरणन जावक दीन्हो। कहियोजाय सूरस्वा-
मीसों निपट निठुर जियकीन्हो ९५ ऊधो जनि मधुबन तन देखो।
कछुक दिवस औरो रहि गोकुल जन्म सुफल करिलेखो। कहाजाय
लेहो प्रभुता में राजकाज की बात। बाजकुमार किशोर निरखि जे
घरघर माखन खात। तुम निर्गुण नित कहत निरन्तर निगम नीति
यह नीति। प्रकटरूप मदमत्त नयन क्यों छांड़त प्रेम प्रतीति। जाको
शिव सनकादि सनातन क्षणक्षण मनधरि ध्यावत। सूर सु प्रभु व्रज
गोप सखन सँग गोधन वृन्द चरावत ९६ ॥ राग मलार ॥ ऊधो तुमहौ
अति बड़भागी। अपर सरस तस नेह तगाते नाहिँन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जलभीतर तारसदेहु न दागी। ज्यों जलमांह तेल
को गागरि बूंद न ताके लागी। प्रीति नदीमें पावँ न बोरेउ दृष्टि न
रूप परागी। सूरदास अबला हम भोरी गुर चींटी ज्यों पागी ९७
ऊधो यहमन और न होय। पहिलेही चढ़ि रहेउ श्यामरँग छुटत न
देख्यो धोय। कै तव बचन छांड़ि हरि हमसों सोइ करे जो मूल।
योग हमहिँ ऐसो लागत है ज्यों तोहिँ चम्पक फूल। अब क्यों मि-
टत हाथ की रेखा कहौ कौन विधि कीजै। सूरश्याम सुख आनि
देखावो जाहि निरखि करि जीजै ९८ रागगोंड ॥ ऊधो ना हमबिरही
ना तुम दास। कहत सुनत घटप्राण रहतहैं हरितजि भजहु अकास।

बिरही मीन मरत जल बिछुरे छांडि जिवनकी आस । दास भावनहीं तजत पपीहा बरुसहि रहत पियास । प्रकटप्रीति दशरथ प्रतिपाली प्रीतम के बनवास । सूरश्याम से दृढव्रत कीन्हो मेटि जगत उपहास ९९ ॥ रागसोरठ ॥ ऊधो कहीसो बहुरि न कहियो । जो तुम हमहिं जिवायो चाहो अनबोले ह्वै रहियो । हमरे प्राण अघात होतहैं तुम जानत हो हांसी । वा जीवन ते मरण भलो है करवट लेहौं कासी । जब हरि गमन कियो पूरब लों तब लिखि योग पठायो । यह तन जरिकै भस्मह्वै निबरेउ बहुरि मसान जगायो । कैरे मनोहर आनि मिलावो के लेचलु हम साथे । सूरदास अब मरण बन्योहै पाप तिहारे माथे १०० ॥ रागसारंग ॥ ऊधो तुम अपनो यतन करो । हितकी कहत कुहितकी लागै की बिनवे काजररो । जायकरो उपचार आपनो हम जो कहत हैं जीकी । कछू कहत कछु वे कहि डारत धुनि देखियत नहिं नीकी । साधुहोय तेहि उत्तरदीजै शुभसों मानीहारि । याहीते तुम्हें नँदनन्दन जी पठये यहां हो टारि । मथुरा बेगि गहौ इन पाथँन उपज्यो हेत न रोग । सूरसो बैद्य बेगिकिन ढूंढो भये अर्द्ध जल योग १०१ ॥ रागसोरठ॥ ऊधो जाके माथे भाग । कुब्जा को पटरानी कीन्ही हमहिं देत बैराग । तलफत फिरत सकल ब्रजबनिता चेरी चपरि सोहाग । बन्यो बनायो सङ्ग सखीरी वेरे हंसके काग । लौंडीके घर डौंडी बाजी श्यामराग अनुराग । हाँसी कमलनयनसँग खेलति बारहमासी फाग । योगकि बेलि लगावन आये काटि प्रेम को बाग । सूरदास प्रभु ऊख छांडिकै चतुर चिचोरत आग १०२॥ रागसारंग ॥ ऊधो अब यह समुझ भई । नँदनन्दन के अङ्ग अङ्ग प्रति उपमा न्यायदई । कुन्तल कुटिल भँवरभरि भाँवरि मालति भुरइलई । तजत न गहरु कियो कपटी जब जानी निरसगई । आनन इन्दु बिमुख सम्पुट सजि करषे ते न नई । नवनेही नवनेसा कुमुदिन अन्तहु हेमहई । तनधन श्यामसेइ निशिबासर रटिरसना छिजई । सूरबिवेक हीन चातकमुख बूंदो तो न सई १०३ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधो हम अति निपट अनाथ । जैसे मधु तोरेकी माखीत्यों हमबिन ब्रजनाथ । अधर अमृत की पीरमुई हम बालदशाते जोरी । सोतो बधिक सुफलकसुत

लैगयो अनायासही तोरी। जबलग पलक पारिग सीडति रहि तब लग गये हरि दूरी। कै निरोध निबहै तिहि अवसर दै पग रथ की धूरी। सब दिन करी कृपिण की सङ्गति कबहुँ न कीन्हो भोग। सूर बिधाता रचि राख्योहै कुब्जाके मुख योग १०४॥ रागसोरठ॥ ऊधो ब्रजकी दशा बिचारो। तापाछे यह सिद्धि आपनी योग कथा बिस्तारो। जेहि कारण पठये नँदनन्दन सो शोचहु मनमाहीं। केतिक बीच बिरह परमारथ जानतहो किधौंनाहीं। तुमनिजदास जो सखा श्यामके सन्तत निकट रहत हो। जल बूड़त अवलम्ब फेनको फिरि फिरि कहा गहत हो। वे अति ललित मनोहर आनन कैसे मनहिँ बिसारो। योग युक्ति औ मुक्ति बिबिध बिधि या मुरली परवारो। जेहिउर बसे श्यामसुन्दर घन क्यों निर्गुण कहि आवै। सूरश्यामसोइ भजन बहावै जाहि दूसरोभावै १०५॥ रागसारंग॥ ऊधो यहहित लागै काहे। निशिदिन नयनतपत दर्शनको तुम जो कहत हृदयमाहे। नींदन परत चहूँदिशि चितवत बिरह अनलके दाहे। उरतेनिकसिकरत क्यों न शीतल जोपैकान्ह यहांहे। पालागौं ऐसेहि रहनदे अवधआशजल थाहे। मतिलै डारो निर्गुण सिन्धुमें फिरिनपाइयेचाहे। जाको मन जाहीसेराचेउताासोंबनेनिबाहे। सूरकहा लेकरैपपिहायेतेसरसरिताहे १०६॥ रागनट॥ ऊधोयोग योगहिंगेहु। हम अबलाकहयोग जानहिं शपथहसमों लेहु। जैसेचन्दचकोरचाहत मोरचाहतमेहु। हमहुंचरण सनेहचाहतश्यामसङ्गसनेहु। कनकखंभबिसारि कैसेकरतकाननगेहु। छोड़िचन्दन कुसुमकेशर क्योंचढ़ावहिखेहु। श्यामगातसरोजआनन करत पावकयेहु। सूरकेप्रभुदरशदुर्लभ पातहूंसमुझेहु १०७॥ रागधनाश्री॥ ऊधोब्रजमेंपैठ करी। यहनिर्गुणनिर्मूल गांठरी अबकिनकरहुखरी। नफाजानिकै यहांलैआयेसबैबातअकरी। यहसौदा उहांलै बेचोजहां बड़ीनगरी। हमग्वालिनि गोरस दधिबेचों लेहिंअबैसबरी। सूरयहां कोइ गाँहक नाहीं देखियतु गरेपरी १०८॥ रागसारंग॥ ऊधो तुम जो निकट के बासी। यह परमारथ बूझिकहो धों नाम बड़ोकी कासी। योग न ज्ञान ध्यान अवराधन साधनमुक्तिउदासी। आन प्रकारकहा रुचि मानहिं जो गोपाल उपासी। परमारथी जहांलोंजेते बिरहिनि

के दुख दाई। सूरदास प्रभु रङ्गी प्रेमरङ्ग जारों योग सगाई १०९॥
राग बिलावल॥ ऊधोतुम अतिचतुरसुजान। जे पहिले रङ्ग रङ्गी श्यामरङ्ग तिन्हैं न चढ़ै रङ्ग आन। दुइ लोचनजो बिरदकिये श्रुति गावत एक समान। भेद चकोर कियो ताहूमें बिधु प्रीतम रिपु भान। बिरहिनि बिरह भजै पालागों तुमहो पूरण ज्ञान। दादुर जलबिन जियें पवन भषिमीन तजो हठि प्रान। बारिज बदननयन मेरे षटपद कब करिहैं मधुपान। सूरदास गोपीन प्रतिज्ञा छुवत न योग बिरान ११० ऊधो कोकिल कूजत कानन। तुम हमको उपदेश करतहो भस्म लगावन आनन। औरौसखीसखासङ्ग लैलै टेरतचढ़ति पखानन। बहुरोंआनि पपीहाके मिस मदन हनत जिनुबानन। हमतो निपट अहीरि बावरी योगदीजिये ज्ञानन। कहाकथत मामीके आगे जानतनानी नानन। सुन्दरश्याम मनोहरमूरति भावतनीकेगानन। सूरमुकति कैसे पूजति है वा मुरली की तानन१११॥ रागसारंग॥ ऊधो हमअज्ञानमतिभोरी। जानतिहैंतेयोग की बातें नागर नवल किशोरी। कंचनके मृगकौने देख्योधौं कौनेबांधे डोरी। कहुधौं मधुपबारि मथिमाखन कौनेभरी कमोरी। बिनहीं भीतचित्र किनकाढ़ेउ किननभ बांध्योझोरी। कहो कौनपै कढ़त कनूकाजिनहठि भूसिपछोरी। यहब्यवहारतिहारोबलि जाउँहम अबला मतिथोरी। निरखहिसूरश्याम मुखचन्दहि अँखियां लगनिचकोरी ११२॥ रागगौरी॥ ऊधोकमल नयन बिनरहिये। एक हरि हमें अनाथकरिछांड़ी दुजे बिरह किमि सहिये। जैसेऊजर खेरेकी मूरतिको पूजेकोमाने। ऐसेहिहम गोपालबिनुऊधो कठिनबिथा को जाने। तनमलीन मन कमलनयन सों तामिलिबे की आस। सूरदास स्वामीबिन दीखे लोचन मरत पियास। ११३॥ रागसारंग॥ ऊधो कौन आहि अधिकारी। लेनजाहु यहयोग आपनो कततुम होत दुखारी। यहतोवेद उपनिषद मतहै महापुरुष ब्रतधारी। हम अहीरि अबला ब्रजबासिनि नाहिन परत सँभारी। कोहैसुनत कहतहोकासों कौनकथा अनुसारी। सूरश्याम सङ्ग जात भईमनो अहि कैंचुलीसी डारी ११४॥ रागजैतश्री॥ ऊधो जो तुम हमहिं सुनायो। सोहम निपट हठुके यामनको समुझायो। युगति यतन जिति योग अग-

हिगहि अपथपंथ लों लायो। भटकि फिरेउ बोहितके खगज्योंपुनि फिरि हरिजीपै आयो। हमकोसबैअहित लागति है तुमअतिहितहि बतायो। सरसरिता जलहोम कियेते कहाअगिनि सचुपायो। अब कैसे उपाय उपदेशो जिहिजिय जातजियायो। एकबार जो मिलहिं सूरके प्रभुतब कीजे अपनोभायो ११५॥ रागसारंग॥ ऊधोयोग विसरि जनि जाहु। बांधहुगांठिकहूं जनिछूटैफिरिपाछे पछिताहु। ऐसीवस्तु अनूपम मधुकरमरम न जाने और। ब्रजबासिनके नहींकामको तुम्हरेहीहै ठौर। जोहरि हितकरि हमकोपठयो सोहम तुम्हहीं दीन्हो। सूरदास नारिअरु ज्यों बिषको करहि बंदनाकीन्हो ११६ ऊधोप्रीति न मरणबिचारे। प्रीतिपतंग जरेपावकपरि जरतअंग नहिंटारे। प्रीति परेवा उड़तगगनचढ़िगिरतन आप सम्हारे। प्रीतिमधुप केतकी कुसुम बश करटक आपुप्रहारे। प्रीतिजानि जैसेपयपानी जानिजानिआपनपोजारे। प्रीतिकुरंग नादरसलुब्धक तानितानिरसमारे। प्रीतिजानि जननी सुतकारणकोनअपनपोहारे। सूरश्यामसो प्रीतिगोपिनकी कहु कैसे निरुवारे ११७॥ रागगौरी॥ ऊधोक्यों राखौंयेनैन। सुमिरि सुमिरि गुणअधिक तपतहैसुनत तिहारोबैन। ये जोमनोहरबदनचंदके सादर कुमुद चकोर। परम तृषारतमजलश्यामघन तिनकेचातकमोर। मधुप मराल चरणपङ्कजके गतिबिलास जलमीन। चक्रबाक मणिद्युतिदिन करके मृगमुरलीआधीन। सकललोक सूनोलागतुहै बिनदेखेवारूप। सूरदास प्रभु नँदनन्दन के नखशिख अङ्ग अनूप ११८॥ रागरामकली॥ ऊधो जाहु तुम्है हमजाने। श्याम तुम्है ह्यांनाहिँ पठाये तुमहो बीच भुलाने। ब्रजबासिन सों योग कहतहो बातन कहतन जाने। बड़ेलोग न बिबेक तुम्हारे ऐसे नये अयाने। हमसों कहीलई सो सहिकै जिय गुणि लेहु अपाने। कहँअबला कहँदिशा दिगम्बर समुखकरो पहिँचाने। सांच कहो तुमको अपनी सों बूझतिबात निदाने। सूरश्याम जब तुम्है पठाये तब नेकहु मुसकाने ११९॥ रागधनाश्री॥ ऊधोश्याम सखा तुमसांचे। केकरि लयेस्वांग बीचहि ते वैसेहि लागत कांचे। जैसीकही हमहिँ आवतही औरनिकहि पछिताते। अपनो पतितजि और बतावत महिमानी कछुखाते। तुरत गवन कीजैमधुवनको यहां

कहां यहल्याये । सूरसुनत गोपिनकीबाणी उद्धवशोशनवाये १२० ॥
रागनट ॥ ऊधोबेगि मधुबन जाहु । योगुलेहु सँभारि अपनो बेंचिये जहँ
लाहु । हमबिरहिनी नारि हरिबिनु कौनकरै निबाहु । तहाँदीजै मूर
पूजै नफाकछु तुमखाहु । जो नहीं ब्रजमें बिकानो नगरनारि बिसाहु ।
सूरवेसब सुनतलेहैं जियकहा पछिताहु १२१ ऊधोकछुक समुझिपरी ।
तुम जो हमको योगुल्याये भली करनि करी । यकबिरह जरिरहीं
हरिके सुनत अतिहि जरी । जाहुजनि अबलों न लावहु देखि तुमहिँ
डरी । योगपाती दई तुमकर बड़ेजान हरी । आनि आशा निराशकी-
न्ही सूरसुनि हहरी १२२ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधोसुनत तिहारे बोल । ल्याये
हरि कुशलात धन्यतुम घरघर पारेगोल । कहनदेहु कहकरैं हमारो
बरिउड़ि जैहैझोल । आवतही याकोपहिँचान्यो निपटहि ओछोतो-
ल । जिनकेशोचु न रहि कहिबेको तेबहु गुणनि अमोल । जानीजाति
सूरहम इनकी बतचल चञ्चल लोल । १२३ ॥ रागनट ॥ ऊधो जानि
परेउ सयान । नारि यहको योगुलाये भलेजानु सुजान । निगमहे यहु
पार पायो कहतजासों ज्ञान । नयनत्रिकुटी जोरिसङ्गम ज्यहि करत
अनुमान । पवनधरि रबितन निहारत मनहिँ राखशोमारि । सूरसो
मनुहाथ नाहीं गयोसङ्ग बिसारि १२४ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधो मननहिँ
हाथहमारे । रथचढ़ाय हरिसङ्ग गयेलै मथुरा जबहिँ सिधारे । नातरु
कहा योगुहम छाँड़हिँ अतिरुचिकै तुमल्याये । हमतोझकति श्या-
मकी करणी मनले योग पठाये । अजहूँ मन अपनो हम पावैं तुमते
होयतो होय । सूर शपथ हमैं कोटितिहारी कहो करैंगी सोय १२५
ऊ न्यो हमदुर्ल्लभ । आपुकहत हमसुनत अचंभित जानतहो
जिय सुर्ल्लभ । रेख न रूप बरण जाकेनहिँ ताको हमहिँ बतावत ।
अपनीकहो दरश वैसेको तुम कबहूँ होपावत । मुरली अधर धरत हैं
सोपुनि गोधन बन बन चारत । नैनबिशाल भौंह बंकटकरि देख्यो
कबहुँ निहारत । तनत्रिभङ्गकरि नटवर बपुधरि पीताम्बर तेहिँ सो-
हत । सूरश्याम ज्योंदेत हमहिँसुख त्यों तुमको सोउ मोहत १२६ ॥
राग रामकली ॥ ऊधोहम लायक शिषदीजै । यहउपदेश आगि
कहो कौनविधि कीजै । तुमहीं कहो यहां इतनिन में

कोहै। योगीयती रहित मायाते तिनको येमनु सोहै। जेकपूर चन्दन तनलेपनते बिभूति क्योंछाजै। सूरकहो शोभा क्योंपावै आँखआँधरी आंजे १२७ ऊधोकहा कथत बिपरीति। युवतिनयोग सिखावनआये यहतौ उलटी रीति। जोतत धेनु दुहतपय वृषको करनलगे जो अनीति। चक्रवाक शशिको क्योंजानैं रविचकोर कहप्रीति। पाहनतरे सोलह जो बूडे तो हममाने नीति। सूरश्याम प्रतिअङ्ग माधुरी रही गोपिका जीति १२८ ऊधो युवतिन ओरनिहारो। तवयह योगमोट हमआगे हियेसमुझि बिस्तारो। जेकच श्यामआपने करकरि नितहि सुगन्ध रचाये। तिनको तुम जो बिभूति घोरिके जटालगावन आये। जेहिमुख मृगमदमलयज उबटति सराक्षरा धोवति मांजति। तेहिमुख कहतखेह लपटावन सो कैसेहम छाजति। लोचन आंजिश्याम शशि दरशति तबहीये हरषाति। सूरतिन्है तुमरबि दरशावत यह सुनिसुनि करुआति १२९ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधो नयनन यह व्रत लीन्हो। स्वाति बिनाऊसर सबभरियत ग्रीवरंध्र तुमकीन्हो। मुरलीगरज तात मुकता तनु मेघध्यान जलुदीन्हो। बरुये प्राणजाहिं ऐसेही बचन होहिं क्यों दीन्हो। तुमआये लै योगसिखावन सुनतसहा दुख दीन्हो। कैसे सूर अगोचर लहिये निगम न पावतचीन्हो १३० ऊधो इन नयनन अञ्जन देहु। आनहु क्यों न श्यामरँग काजरु जासों जुरेउ सनेहु। तप तरहत निशिवासर मधुकर नहिं सोहात तनगेहु। जैसेमीन मरतजल बिछुरत कहाकहौं दुख एहु। सब विधि बानिठानि के राखो खरि कपूर को रेहु। बारक मिलवहु श्याम सूर प्रभु क्यों न सुयश जगलेहु। १३१ ॥ रागरामकली ॥ ऊधो भली करीतुम आये। यह बातेंकहि कहि या दुखमें ब्रजके लोगहँसाये। कौनकाज वृन्दावनको सुखदही भातकीछाक। अबवेकान्ह कूबरीराचेबने एकही ताक। मोर मुकुट मुरली पीताम्बर पठवो सोजहमारी। अपनी जटाजूट अरुमुद्रा लीजै भस्म अधारी। वे तौ बड़े सखातुम उनके तुमको सुगमअनीति। सूर सबै मतिभली श्याम की यमुनाजलसों प्रीति १३२ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो बूझति गुपितहितहारी। सबकाहूके मनकी जानत बांधे मूरिफिरतठग बारी। पीतध्वजा उनके पीताम्बर लालध्वजा कुबिजा व्यभिचारी।

सतकी ध्वजा प्रबेल ब्रजऊपर अजस हे ऊधो बोपगारी । उनके प्रेम प्रीति मनरंजन पैंता सकल शीलब्रतधारी । सूरबचन मिथ्या लँगराई ये दोऊ ऊधो की न्यारी १३३ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधो मनमानेकी बात। जरत पतङ्ग दीपमें जैसे औ फिरिफिरि लपटात । रहतचकोर पुहुमि पर मधुकर समिअकाश भरमात। ऐसो ध्यानधरो हरिजी पै क्षणाइत उतनहिं जात। दादुर रहत सदाजलभीतर कमलहि नहिं नियरात। काठफोरिघरकियो मधुपजिमि बँधेअँबुजकेपात। बरषाबर्षतनिशि दिन ऊधो पुहुमीपूरि अघात। स्वातिबूंदके काजपपीहाक्षणाक्षणारटत रहात। सोहि नखात अमृतफल भोजन तोमरि को ललचात। सूरज कृष्णा कूबरीरीझे गोपिन देखि लजात १३४ मधुकररहेउ योगलगि नातो। काहे को बेकाजबकतहो होतयहांते नातो। जबहिलिमिलि पयपानकरतते तबहूं हुतो कहांतो। अब आये निर्गुण उपदेशन जो नहिं हमें सोहातो। काचे गुणकिरि तणहिं लपेटत करिबारिज के तातो। मेरेजान गहेउ चाहतहौ बहुरि कि मैं गलमातो। अबतौ सूर ताहि लै दीजै जाके पेट समातो। जब चहिहैंतबमांगिपठैहैं जो कोइ आवत जातो १३५ ॥ रागसारंग ॥ मधुकरहम न होहिंवेबेली। जिनको तुम तजि भजत प्रीति बिनु करत कुसुम रस केली। बारेते बलबारि बाढ़ि अरु पोषी प्याई पानी। बिनपिय अरस प्रात उठिफूलतहोत सदा हितहानी। ये बल्ली बिहरत बृन्दाबन अरुझीश्याम तमालहि। प्रेम पुष्प रस बास हमारे बिलसत मधुरगोपालहि। योग समीरधीर नहिँ डोलत रूपडारढिगलागी। सूरपराग न तजत हियेते कमलनयन अनुरागी १३६ मधुकर श्याम हमारे ईश। जिनके ध्यानधरे उरअन्तर आनहिं नयन बैन बिनशीश। योगिनजाइ योगउपदेशो जिनके मन दशबीश। एकैमन एकैवहमूरति नितबितवत दिनतीश। काहेनिर्गुण ज्ञानआपुनो जितनित डारतखीश। सूरजप्रभू नन्दनन्दन हैं उनते को अगदीश १३७ ॥ रागमलार ॥ मधुकर तुमहौ श्याम सखाई। पालागों यहदोष बकसियो सनमुख करत ढिठाई। कौनरङ्क सम्पदा बिलसी सोवत सपनेपाई। किनसोनेकी उड़त चिरैया डोरी बांधि खिलाई। धाम धुआंके कहोकौनके बैठो कहांअघाई। किनि अकाश ते तोरि

तरैयां आनि धरी घरमाई। बोरनकी माला गुहि कौने अपने कारन बनाई। किनकल नाउचलत किलहेलो उतरि पारकोजाई। कौनेक-मलनयन ब्रह्मछोड्यो जो समाधि हिलयाई। सूरदास तू फिरि फिरि आवत यामें कौनबड़ाई १३८ ॥ रागधनाश्री ॥ मधुकर मनतो एकैआहि। सोतो लै हरिसङ्ग सिधारे योग सिखावत काहि। रेशठ कुटिल बचन रसलम्पट अबलन तनधौं चाहि। अबकाहेको देतलोनहो बिरहअनल तनदाहि। परमारथ उपचार करतहो बिरह व्यथानहिँ जाहि। जाको राजरोष कफुव्यापै दहीखवावत ताहि। सुन्दरश्याम सलोनीमूरति पूरिरही हियमाहि। सूरताहि तजि निर्गुण सिंधुहि कौनसकै अव-गाहि १३९ ॥ रागसारंग ॥ मधुकर छांड़ अटपटी बातै। फिरिफिरि बार बार सोइ सिखवत हमदुख पावत जाते। अनुदिनदेत असीय प्रातउठि अरु सुख सोवतन्हाते। तुम निशिदिन उरअन्तर शोभत ब्रजयुवतिन को घाते। पुनिपुनि तुम्हें कहत क्यों आवै कछुजाने वहिनाते। सूर-दास जो रँगीश्यामरँग फिरि न चढ़त अबराते १४० मधुपराबरीपहिँ-चानि। बासिरसले अनतबैठे पुहुपकी तजिकानि। बाटिकाबहुबिपिन जाके एक वे कुम्हिलानि। फूलफूलेसघनकानन कौन तिनकेहानि कामपावक जरतछाती लोनलाये आनि। योगपाती हाथ दीन्हो बिष चढ़ायो सानि। श्रीगते भगिाहरी जिनकेकौन तिनमेंबानि। सूरकेप्रभु निरखि हिरदय ब्रजतज्यो यहजानि १४१ मधुकर श्याम हमारेचोर। मन हरिलियो माधुरी मूरति चितै नयनकी कोर। पकरोते हिरदय उरअन्तर प्रेमप्रीतके जोर। गये छड़ाय छोरि सबबन्धन देगये हँसनि अकोर। सोवतते हम उचकि परीहैं दूतमिल्यो मोहिंभोर। सूरश्याम मुसकानि मेरोसर्बस लैगये नन्दकिशोर १४२ मधुकर समुझिकहौ मुख बात। परमदुपियो मत्त नाहिं रवचतु काहेको इतरात। बीचजो परे सत्य पै भाषे बोले सत्यस्वरूप। मुखदेखतको न्याव न कीजै कहां रङ्क कहँ भूप। कछु कहत कछुये मुखनिकसत परनिन्दक व्यभिचारी। ब्रज युव-तिनको योग सिखावत कीरति आनि पसारी। हम जान्यो सो भँवर रसभोगी योग युगति कहँ पाई। परम गुरू शिरमूड़ि बापुरे करमुख छार लगाई। यहै अनीति बिधाता कीन्ही तौऊ समुझत नाहीं। जो

कोइ परहित कूपखनावै परै सो कूपहिमाहीं। सूरसोवे प्रभुअन्तर्यामी
कासों कहों पुकारी। तब अक्रूर अबैइन ऊधो दुहुँमिलि छातीजारी
१४३ मधुकर हमसे कहोकरे। पठयेहौ गोपाल कृपाके आयसु ते न
टरे। रसना वारिफेरि नवखगडके देनिर्गुणके साथ। इतनो तनकु वि-
लगु जिन मानहुँ अँखियां नाहींहाथ। सेवाकठिन अपूरब दरशन क-
हत अबहुँ मैं फेरि। कहियोजाय सूरकेप्रभुसों केरापास ज्योंबेरि१४४
रागधनाश्री॥ मधुकर तौ औरनि सिषदेहु। जानौंगे जब लागैगोहो खरो
कठिनहै नेहु। मन जो तिहारो हरिचरणनतर तनधरि गोकुलआयो।
कमलनयनके सँगते बिछुरे कहुकौने सचुपायो। यहैंरहो जाहु जिनि
मथुरा झूठोमायामोहु। गोपी सूरकहत ऊधोसों हमहींसे तुमहोहु१४५
मधुकर जानत नाहिन बात। फूंकि फूंकि हियरा सुलगावत उठि न
यहांते जात। जो उरबसत यशोदानन्दन निर्गुण कहांसमात। कतभट-
कत डोलत कुसुमनको तुम किन पातनपात। यदपि सकल बल्लीबन
बिहरत जायबसत जलजात। सूरदास ब्रज मिलि बन आये दासी की
कुशलात १४६॥ रागसारंग॥ तिहारी प्रीति किधौं तरवारि। दृष्टिधार
करि मारिसांवरे घायलसब ब्रजनारि। रहीसुखेत ठौर वृन्दावन रणहु
न मानतिहारि। बिलपतिरहीसम्हारत सणसण बदन सुधाकरबारि।
सुन्दर श्यामनोहर मूरति रहिहैं छबिहि निहारि। रंचकशेष रहेउ
सूरजप्रभु अबजिनडारो मारि १४७॥ रागधनाश्री॥ मधुकर कौनमनायो
माने। अबिनाशी अतिअगम अगोचर कहां प्रीतिरसुजाने। सिखवहु
जाहि समाधिकिबातैं जेहैं लोगसयाने। हम अपने ब्रज ऐसेहि बसिहैं
बिरह बायबौराने। सोवत जागत सपने सौंतुक रहीहै सूपतसाने। बाल
कुमार किशोरकि लीला सिंधु सुतामें साने। परेउ जो पयनिधि बूंद
अलपसों को जो अब पहिंचाने। जाके तन धन प्राण सूर हरिमुख
मुसुकानि बिकाने १४८॥ रागमलार॥ मधुकर ये मन बिगरिपरे। समु-
झत नाहिं ज्ञान गीताको हरिमुसुकानिअरे। बालमुकुन्द रूपरसराचे
ताते बक्रखरे। सूधि न होय श्वानपूंछ ज्यों कोटिक यतन करे। हरि
पदनलिन बिसारतनाहीं शीतलउरसँचरे। योग गँभीर अन्धकूप कत
देखतदूरिडरे। हरिअनुराग सुहागभाग भरे अमियते गरलगरे। सूर-

दास बस ऐसेहि रहिहैं कान्ह वियोगभरे १४९ मधुकर जो तुमहितू हमारे। तौ यह भजन सुधानिधि में जनि डारोयोग जलखारे। सुनु शठरीति सुरभि पयदायककयों न लेत हलफारे। जो भयभीतहोतरजु देखत क्यों बढ़वत अहिकारे। निज कृत बूझिबिना दशानन हति सज्ञत धामनहिंहारे। सो बल अछत निशापंकजमें दलकपाट नहिंटारो रे अलि चपल मोदरस लम्पटकत्तहि बकत बिनकाज। सूरश्याम छवि क्यों बिसरतहै नखशिखअङ्ग बिराज १५०॥ रागसोरठ ॥ मधुकरकौन गाँवकीरीति। ब्रजयुवतिन को योगकथा तुम कहत सबै बिपरीति। जा शिरफूल फुलेलमेलिकै हरिकर ग्रन्थेमोरी। ताशिर भस्मसमान पै सेवन जटा करत आघोरी। रतन जटित तारंक बिराजत अरु कमलनकी ज्योति। तिन श्रवणन पहिरावत मुद्रा तोहिं दयानहिंहोति। बेसरिनाक कंठमणिमाला मुखनिसार अस्वास। तिन्ह मुख सिंगी कहाबजावन भोजन आकपलास। जा तनको मृगमद घसि चन्दन सुरंग पटपहिराये। ता तनको रचिचीर पुरातन दै ब्रजनाथ पठाये। वे अबिनाशी ज्ञानघटैगो यहिबिधि योगसिखाये। करोंभोग भरिपूर सूरप्रभुयोग करोब्रजआये १५१ ॥ रागसारंग॥ मधुकर राखियोगकीवात। कहिकहि कथा श्यामसुन्दरकी शीतल करु सबगात। जे निर्गुणगुणहीनगनै सो सुनिसुन्दरि अकुलात। दीरघ नदीनाव कागज की को देख्यो चढ़िजात। हमतन हेरि चितै पट अपनो देखिपथारहिलात। सूरदासप्रभु बनबन बसिकै कौसेकल्प बिहात १५२ ॥ रागनट ॥ मधुकर ये नयना पै हारे। निरखि निरखि मग कमल नयन को प्रेम मगन भये भारे। ता बिनते नींदौ पुनि नाशी चौंकि परत अधिकारे। सपन तुरी जागत पुनि ओई जो हृदय हमारे। यह निर्गुण लेताहि बतावोजो जानैयाकैसारे। सूरदासगोपालछांड़िकै चूसेंटेटीखारे १५३ रागधनाश्री ॥ मधुकर कठ कारेकी जाति। ज्यों जलमीन कमल मधुपनके छणा नहिं प्रीति घटाति। कोकिल कुटिल कपट बायस छलि फिरि नहिं वहि बन जाति। तैसेहि राजकेलिरस अँचयो बैठिएकही पांति। सुतहित योग यज्ञ ब्रत कीजत बहुबिधि नीकी भांति। देखहु अहि मन मोह मया तजि ज्यों जननी जन खाति। तिनको क्यों मन

विषमो करि जै औगुण लों सुख सांति। तैसेइ सूर सुनै यदुनन्दन बजी एक स्वर तांति १५४ ॥ रागरामकली ॥ मधुकर ल्यायेयोगसँदेशो। भली श्याम कुशलात सुनाई सुनतहि भयो अँदेशो। आश रहीजियकबहुं मिलनकी तुम आवतही नाशी। युवतिन कहत जटा शिर बांधतो मिलिहैंअविनाशी। तुमको जिनगोकुलहि पठायो ते वसुदेवकुमार। सूरश्याम मनमोहन बिहरत ब्रजमें नन्ददुलार १५५ ॥ रागसोरट ॥ श्याम विनोदी रे मधुबनियां। अब हरि गोकुल काहेको आवहिं चाहत नवयौवनियां। वे दिन माधव भूलि बिसरि गये गोद खिलाये क-नियां। गुहि गुहि देते नन्द यशोदा तनक कांचके मनियां। दिना-चारिते पहरनसीखे पटपीताम्बरतनियां। सूरदास प्रभु तजीकामरी अब हरिभये चिकनियां १५६ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधो हम अति बौरी। हरिहि दोषनहिं बातैं रोरी। सुभग कलेवरकुंकुम खोरी। गुंजमाल अरु पीत पिछौरी। रूप निरखि दृग लागे ढोरी। चित चुरायलयो मरति मोरी। गहियत सो जो समय अँकोरी। याही ते बुधिकहियत बौरी। सूरश्याम सों कहिये कठोरी। यहउपदेश सुनेते बौरी १५७ कहांलग मानिये अपनी चूक। बिनगोपाल ऊधो मेरी छाती ह्वै न गई द्वै टूक। तन मन यौवन वृथा जातहै ज्यों भुवङ्गकी फूंक। हृदय अगिनको दवा बरतहै कठिन बिरहकी हूक। जिनकीमणि हरि लई शीश ते कहा करै अहिमूक। सूरदास ब्रजबाम बसीं हमनहुं दाहिने शूक१५८ ॥ रागकल्याण ॥ कहैकोइ परदेशीकी बात। मन्दिरभागअर-धकर दै गयेहरि भषु देखौ जात। अजयाभषुअनुसारत नाहीं कैसेके हिवस सिरात। शशि रिपु बरष सूर रिपु युग भर हररिपु की अव-घात। नक्षत्र योग पुनि अर्द्ध जोरिकरि सोई बनत अब खात। मघ पंचक लैगयेश्यामघन तातेमन अकुलात। मनमोहनबिनराहि न परत है बार बार बिलखात। सूरदास बसभई बिरहके कर मीजैं पछितात १५९ ऊधो योग जानै कौन। हम अबला कह योग जानहीं जियत जाको रौन। योग हम पै होय न आवै धरि न आवै मौन। बांधिहैं क्यों मन पवनकू साधि हैं क्यों पौन। अम्बर प्रहिरि कै मृगछाल ओढै कौन। गुरु हमारे कूबरीकर मन्त्र मालाजौन। मदनमोहन बिन

हमारे परे बात न कौन। सूरप्रभु कबआये हैं वे श्यामदुखके दौन। १६० ॥ रागधनाश्री ॥ फूल बिननहिं जाउं सखीरीहरिबिनकैसे बीनों फूल। सुनरी सखि मोहिं रामदोहाई फूल लगत तिरशूल। वे जो देखियत राते राते फूलन फूली डार। हरिबिन फल भारी सीलागत झरिझरि परत ऋँगार। कैसेके पनघट जाउं सखीरी डोलों सरिता तीर। भरि भरि यमुना उमड़ि चलो हैं इन नैनन के नीर। इन नैनन के नीरसखीरी सेजभई घरनाउ। चाहतिहौं याहीपर चढ़िकैश्याम मिलनको जाउँ। प्राण हमारे बिन हरि प्यारेरहे अधरनपर आय। सूरदासके प्रभुसोंसजनीकोनकहै समुझाय१६१ ॥ रागबिहागरो ॥ ऊधो जो मैं तिहारे चरणन लागौं बारकयाब्रजकरबिभावरी। निशिननींद आवै दिन न भोजन भावै मग जोवत भइ दृष्टि झाँवरी। वहै वृन्दावन श्याम सघन बन वहै सुभग साँवरी। एक श्याम बिन श्याम न भावै सुधि न रही जैसे बकत बावरी। लाजछांड़ि हम उहहिँ आवती चलि न सकति आवै बिरह ताँवरी। सूरदास प्रभु बेगि दरश दीजै होयहै जगमें कीरतिरावरी १६२ ऊधोजी जबहिँजाहु गोकुल मणि आगे भेंट अँकवारी पैयों लागन कहियो। अब मोहिं बिपति परी दर्शन बिन सहि न सकत तन दारुण दहियो। शरद चन्द मोहिँबैरि सहाभयो अनिल सहि न परे बिधि रहियो। सूरश्याम बिन गृहबन सूनो बिन मोहन काको मुख चहियो १६३ ॥

श्रीयशोदाजीकेवाक्यउद्धवप्रति ॥

राग सोरठ ॥ सँदेशो देवकीसों कहियो। हसतो धायतिहारे सुतको कृपा करतही रहियो। उबटनतेल और तातोंजल देखेही भजिजाते। जोइजोइ मांगत सोइसोइ देती धर्म कर्मकेनाते। तुमतो टेव जानतहि होइहौ तऊ मोहिँ कहि आवै। प्रात उठत मेरेलाल लड़ैतेहि माखन रोटी भावै। अब यह सूर मोहिँ निशिबासर बड़ो रहत जिय शोच। अब मेरे अलक लड़ैते लालन ह्वैहैं करत सँकोच १६४ यद्यपि मन समुझावत लोग। शूलहोत नवनीत देखिकै मोहनके मुखयोग। प्रात समय उठिमाखन रोटीको बिनमांगे देहै। कोमेरे बालक कुंवर कान्हको छणछण आगो लेहै। कहियो जायपथिक घर आवहिँ राम

श्याम दोउभैया । सूरवहां कतहोत दुखारी जिनके मोसीमैया १६५॥
राग सारंग ॥ जोपै राखतिहौ पहिँचानि । तौबारेक मेरे मोहनको मोहिँ देहु दिखाई आनि । तुमरानी बसुदेव गिरहनी हम अहीर ब्रजबासी । पठैदेहु मेरोलाल लड़ैतो वारों ऐसी हांसी । भलीकरी कंसादिकमारे अवसर काजकियो । अब इनगाइन कौनचरावै भरिभरि लेतहियो । खान पान परधान राजसुख जो कोउ लाड़ लड़ावै । तदपि सूर मेरो यह बालक माखनही सचुपावै १६६ ॥
उद्धवगोकुलतेमथुराआयेतबगोपिनकेपरस्परबाक्य ॥
रागमलार ॥ मेरे मन इतनी सूलरही । वे बतियां छतियां लिखि राखी जे नँदलाल कही । एकदिवस मेरे गृहआये मैंहीं मथति दही । रति मांगत मैं मान किया सखिसो हरि गुसा गही । सोचति अति पछिताति राधिका मुर्छित धरणि ढही । सूरदास प्रभु के बिछुरे ते व्यथा न जाति सही १६७ ॥ रागसारंग ॥ देखो माधव की मिताई । आई उघरि कनक कलई ज्योंदै निज गये दगाई । हमजाने हरिहितू हमारे उनके चित्त ठगाई । छांड़ी सुरति सबै ब्रजकुलकी निठुर लोग मिलि माई। प्रेम निबाहि कहां वे जानें साँचेई अहिराई । सूरदास बिरहिनी बिकल मति कर मीजैं पछिताई १६८ ॥ राग सोरठ ॥ मैं जान्यो मोको माधव हितुहै कियो । अति आदर अलि ज्यों मिलि कमलहि सुख मकरन्द लियो । बरु वह भली पूतना जाको पय सँग प्राण पियो । मन मधु अँचै निकट सूने तन यह दुख अधिक दियो । देखि अचेत अमृत अवलोकन चालजु सींचि हियो । सूरदास प्रभु वा अवार ते ताते परत जियो १६९ अब या तनहि राखि का कीजै । सुनरी सखी श्यामसुन्दर बिन बाँटि बिषम बिष पीजै । कै गिरिये गिरि चढ़िकै सजनी कै स्वकर शीश शिव दीजै । कै दहिये दारुण दावानल के तो जाय यमुन धँसि लीजै । दुसह बियोग बिरह माधव के कौन दिनहिँ दिन छीजै । सूरदास प्रीतम बिन राधे शोचि शोचि मन मन खीजै १७० ॥
भगवानप्रतिउद्धवबाक्य ॥
रागधनाश्री ॥ माधव सुनो ब्रजको नेम । बूझि हम षट्मास देखो

गोपिकनको प्रेम। हृदय ते नहिंटरत उनके श्यामराम समेत। अश्रुसलिल प्रवाह उरपर अरघनयननदेत। चोरअंचलकलशकुच मनोपाणि पदुम चढाय। प्रकट लीलादेखि हरिकेकर्म उठतीगाय। देहगेहसमेत अर्पणा कमललोचन ध्यान। सूर उनके भजनआगे फीको लागो ज्ञान
१७१ कहँलोकहियेब्रजकी बात। सुनोश्याम तुमबिन उनलोगन जैसे दिवसबिहात। गोपीग्वालगायगोसुत सब मलिनबसन कृशगात। परम दीन जनु शिशिरहेमहत अंबुजगण बिनुपात। जो काहू आवत देखतहैं मिलिबूझत कुशलात। चलन न देतप्रेम अति व्याकुल फिरिचरणन लपटात। पिक चातिक बन बसन न पावत बायस बलिनहिंखात। सूरदास संदेशनिके डरपथिक न वा मगजात १७२॥ रागकेदारो॥ उनमें पांच दिवस जोबसिये। नाथ तिहारी सों जिय उपजत फेरि अपनपो कसिये। वह लीलाबिनोद गोपिनके देखेहीबनि आवे। मोकोबहुरि कहां वैसो सुखबड़भागी सोपावे। मनसिबचन कर्मना कहतहौंनाहिन कछु अबराखी। सूरकाढ़ि डारेउ होब्रजतेदूध माँझकी माखी १७३ चित दै सुनो श्यामप्रवीन। हरितिहारे बिरहराधे मैं जो देखीछीन। कहन को संदेश सुंदरि गवन मोतनकीन। छुटी छुद्रावलि चरण अरुझे गिरीबलहीन। बहुरिउठी सम्हारि सुभट ज्योंपरम साहसकीन। हों कतको पठयो वे कोजोहिशठ बावरो अयानो। तुमहूं बोझ बहुतबातन को वहां जाउ तो जानो। बिन देखे मनमोहन सखिरी सबसुख उनको दीन। सूर हरिके चरण अम्बुज रही आशा लीन १७४ माधवयहब्रजको व्योहार। मेरोकहेउ पवनको भुसभयो गावत नन्दकुमार। एकग्वारि गोधनले रेंगति एक लकुट कर लेति। एकमण्डली करबैठारत छाक बांटिके देति। एकग्वारि नटवर बहुलीला एककर्म गुणगावति। कोटि भांतिके मैं समुझाई नेक न उरमें ल्यावति। निशिबासर येही ब्रतसब ब्रज दिनदिन नूतन प्रीति। सूरसकल फीको लागतहै देखत वह रस रीति १७५ कहिबे मैं न कछू सकराखो। बुधिबिबेक अनुमान आपने मुख आई ते भाखी। हौंपचि कहतो पहरसकमें वे सगमाहिं अनेक। हारिमानि उठिचल्यो दीनह्वै छांडि आपनी टेक। कंठबचन न बोलि आयो हृदय परिहसमीन। नयनजलभरि जो रोय दीन्हे ग्रसत आपदहीन।

श्रीमुखकी सिखई ग्रन्थोंते कथि सबभई कहानी। एकहोय त्यहिउत्तर दीजैसूर सुठी अबुहानी १७६ कहोतो सुख आपनो सुनाऊं। ब्रजयुवतिनकी कथा योग की क्यों न यतो दुख पाऊं। हौं यकबात कहत निर्गुणकी ताहीमें अरुझाऊं। वेउमड़ी वारिधि तरङ्ग ज्यों तापर थाहन पाऊं। कौनकौनको उत्तरदीजै ताते भज्यों अगाऊं। वे मेरे शिर पाटी पारहिं कन्था काहि उढ़ाऊं। एकआंधरी हियेकीफूटी दौरे पहिरि खराऊं। सूरसकल ब्रज षटदरशी हो बारहखड़ी पढ़ाऊं १७७ तबते इन सबहुन सचुपायो। जबते हरिसन्देश तिहारो सुनत तावरो आयो। फूले बयाल दुरेते प्रकटे पवन पेटभरि खायो। भूलेमृगा चौंक चरणन ते हुतो जो जिय बिसरायो। ऊंचेबैठि बिहङ्ग सभाबिच उठिकोकिल मङ्गल गायो। निकसि कन्दराते केहरिने माथे पूंछहिलायो। गृहबनते गजराज निकसिकै अँगअँग गर्भजनायो। सूर बहुरिहो कहै राधा यों बैरिनिहींका भायो १७८ फिरि फिरि मोपर कत दुख पावत। अब की और चतुर कोइपठवो बार न होइहै आवत। मैंपरमारथ सबसमुझायो रोष सहित वे कोपी। सुफलकसुतको कहेउ मानिहैं आरति करति हैं गोपी। इतनीसुनत कमलदललोचन खैंचिसुकर करिलीन्हो। सूरश्याम मुसकाय जानि जिय तरक जानि हँसिदीन्हो १७९ ॥

उद्धवप्रतिभगवद्वाक्य ॥

रागधनाश्री ॥ ऊधो मो ब्रज बिसरत नाहीं। हंससुता की सुन्दरि कगरी अरु कुंजनकी छाहीं। वे सुरभी वे बच्छ दोहनी खरिक दुहावन जाहीं। ग्वाल बाल सब करत कुलाहल नाचत गहि गहि बाहीं। यह मथुरा कञ्चनकी नगरी मणिमुक्ताहि लजाहीं। जबहिं सुरति आवत वा सुखकी जिय उमगत तनुनाहीं। अनगन भांतिकरी बहु लीला यशुदा नन्दनिबाहीं। सूरदासप्रभु रहेमौनह्वै यहकहिकहि पछिताहीं १८०॥

गोपिनकेवाक्यउद्धवभगवानप्रतिकहतहैं ॥

रागसारंग ॥ देखुरी हरिजूके नयननकी छबि। यह अनुमान मनमानमानिनी अम्बुज सेवत रबि। खंजरीट अतिव्यथा चपल भये बन मृग जल महँ मीन रहे दबि। इते मान तन कछु कहत हैं कुकबि। इन सों नोखई हरि आवेन कछु फबि। सूरदास उपमा जु गई सब ज्यों होमत

छबि १८१ ॥ रागकेदारो ॥ फिरि ब्रजबसहु गोकुलनाथ। बहुरि न तुमहिं जगाय पठवों गोधननके साथ। बरजों न माखन खात कबहूँ देहोंदेत लुटाय। कबहूँ न देहों उरहनो यशुमति के आगे जाय। दौरि दामन देहुँगी लकुटी न यशोमति पानि। चोरी न देहुँ उघारिकै औगुण न कहिहौं आन। करौं न तुमसों मानहठ हठिहौं न मांगतदान। कहिहौं न मृदु मुरली बजावन करन तुमसों गान। कहिहौं न चरणन देन जावक गुहन बेणी फूल। कहिहौं न करन शिंगार बटतर बसन यमुना कूल। भुज भूषण युत कन्ध धरिकै रास नृत्य न कराउं। हौं सँकेत निकुंज बसिकै दूति मुखन बुलाउं। कोटि नारिसों बिलसि आवहु भृकुटिरिस न चढ़ाउँ। दन्तदेउ न पियत मुख मुख श्रवणश्वास बढ़ाउँ। घोषनारि अयानबावरि समसरी कृतकाज। तुमतो चतुरसुजान सांवरे प्रीतिलागे लाज। चरण मृदुतर कुच कठिनसों करिहौं नहीं संयोग। दृढभुजा भरिसमर कटिभरि उलटो न करिहौंभोग। एकबार जु दरश दिखवहु प्रीतिपन्थ बसाय। चँवरकरौं चढ़ाय आसननयन अँग अँगलाय। देहु दर्शन नन्दनन्दन मिलनहीकी आस। सूरप्रभुकी कुँवर छबि को भरत लोचन प्यास १८२ ॥

उद्धवप्रतिकुब्जाकेवाक्य ॥

रागसारंग ॥ सुनियो एक सँदेशो ऊधो तुम गोकुल को जात। ता पाछे तुम कहियो उनसों एक हमारी बात। मात पिताको हेतजानि कै कान्ह मधुपुरी आये। नाहिन श्याम तिहारे प्रीतम ना यशुदा के जाये। समुझो बूझो अपने मनमें तुम जो कहाभलो कीन्हो। कहँ बालक तुम मत्त ग्वालिनी सबै आप बश कीन्हो। और यशोदा माखन काजे बहुतक त्रास दिखाई। तुमहिं सबैमिलि दांवरि दीन्हीरञ्च दयानहिँआई। अरु वृषभानसुता जो कीन्ही सो तुमसब जियजानो। याही लाजतजी ब्रजमोहन अब काहे दुखमानो। सूरदास यह सुनि सुनि बातैं श्यामरहे शिरनाई। इतकुब्जा उत प्रेमग्वालिनी कहत न कछु बनिआई १ ॥ रागमलार ॥ कोऊ आवत है तन श्याम। वैसेइ पट वैसेइ रथ बैठनि वैसिय है उरदाम। जोजैसे उठि तैसिय दौरीं छाँड़ि सकल गृहकाम। रोमपुलक गद्गद भई तिहि क्षण शोचिअङ्ग अभि-

राम । इतनी कहत आयगये ऊधो रहीठगी तिहिठाम । सूरदास प्रभु ह्यां क्यों आवैं बँधे कुब्जा रसमाम २ ॥ राग सारंग ॥ कबहूं सुधि करत गोपाल हमारी । पूछत नन्द पिता ऊधो सों अरु यशुमति महतारी । कबहूं तो चूकपरी अनजानत कह अबके पछिताने । बासुदेव घर भीतरआये हम अहीर नहिँजाने । पहिले गरग कहेउ हो हमसों या देखे ज्ञिनि भूले । सूरदास स्वामीके बिछुरे राति दिवस उरशूले ३ ॥ रागबिलावल ॥ भलीबात सुनियतहैं आजु । कोऊ कमलनयन पठयोहै तनबनाइ अपनो सो साजु । बूझो सखा कहो कैसेके अबनाहीं कीवे कछुकाजु । कन्समारि बसुदेव गृह आने उग्रसेन के दीनो राजु । राजाभये कहां है यहसुख सुरभि सङ्ग बनगोप समाजु । अब जो सूर करहु कोउ कोटिक नाहिन कान्ह रहत ब्रज आजु ४ ॥ रागनट ॥ ऊधो हम आजुभई बड़भागी । जैसे सुमन सुगन्धले आवतु पवन मधुप अनुरागी । अति आनन्द बढ्यो अँगअँग में परे न यहसुख त्यागी । बिसरे सब दुख देखत तुमको श्यामसुन्दर हमलागी । ज्यों दर्पण मधि दृगनिरखत जहँ दृष्टि तहाँ नहिँजाई । त्योंहीसूर हमैमिली साँवरे बिरहबिथा बिसराई ५ ॥ राग सारंग ॥ पाती सखि मधुबनले आई । ऊधोहाथ श्याम लिखिपठई आइ सुनहु मेरि माई । अपने अपने गृहते दौरींले पाती उरलाई । नयननि नीर निरखि नहिँ खंडित प्रेम न बिथा बुझाई । कहाकरौं सूने यह गोकुल हरि बिनु कछु न सुहाई । सूरदास प्रभु कौन चूकते श्याम सुरति बिसराई ६ ॥ रागनट ॥ सुनु गोपी हरिको संदेशु । करि समाधि अन्तरगति चितवो प्रभुको यह उपदेशु । वे अविगति अबिनाशी पूरण घट घट रहेसमाइ । तिहि निश्चयके ध्यावहु ऐसे सचित कमल मनलाइ । यह उपाइकरि बिरह तजहुगी मिलैं ब्रह्म तबआइ । तत्त्व ज्ञानबिन मुक्ति न होई निगम सुनावत गाइ । सुनत सँदेश दुसह माधव के गोपी जन बिलखानी । सूर बिरह की कौन चलावै नयन ढरत अति पानी ७ ॥ रागसारंग ॥ हो तुमपर ब्रजनाथ पठायो । आतम ज्ञान सिखावन आयो । आपुहि पुरुष आपुही नारी । आपुहि बानप्रस्थ ब्रतधारी । आपुहि पिता आपुही माता । आपुहि भगिनी आपुहि भ्राता । आपुहि पंडित आपुहि ज्ञानी । आपुहि राजा आपुहि

रानी। आपुहि धरती आपु अकासा। आपुहि स्वामी आपुहि दासा। आपुहि ग्वाल आपुही गाई। आपुहि आपु चरावन जाई। आपुहि भँवर आपुहीफूल। आतम ज्ञान बिना जग भूल। रङ्कराइ दूजो नहिं कोइ। आपुहिआपु निरञ्जन सोइ। यहि प्रकार जाको मन लागे। जरा मरण जीते भ्रम भागे। सुनि ऊधो यह कौन सयानी। तुम तो महापुरुष बड़ज्ञानी। योगीहोइसु योगहिजानै। नवधा भक्ति सदामन मानै। भावभगति हरिजन चितधारे। ज्योतिरूप शिवसनक बिचारे। तुम कह रचि रचि कहत सयानी। अबला हरिके रूप दिवानी। जात पीर बंझा नहिँ जानै। बिनु देखे कैसे रुचि मानै। फिरि फिरि कहै उहै सुधिआवै। श्यामरूपबिनु और न भावै। योगसमाधि ज्योति चितलावै। परमानन्द परमपद पावै। नवकिशोरको जबहिं निहारैं। कोटि ज्योति वा छबिपरवारैं। सजल मेघ घनश्याम शरीर। रूपठगी हलधरके वीर। शिरशिखराड कुराडलबनमाल। क्योंबिसरैं वे नयन बिशाल। मृदुमद तिलक अलक घुंघरारे। उनमोहन मनहरे हमारे। भृकुटी विकट नाशिकाराजै। अरुण अधर मुरली कलबाजै। दाड़िम दशन दमक द्युति सोहै। मृदु मुसकानि मदन मनमोहै। चारु चिबुकउरपर गजमोती। दूरिकरतउडुगणकीज्योती। कङ्कणकिङ्किणि पदिकबिराजै। चलतचरण कलनूपुर बाजै। बनकीधातु चित्रतनुकिये। वह छबि चुभिरु रही हमहिये। पीतबसन छबिबरणि न जाई। नखशिख सुन्दर कुंवर कन्हाई। रूप राशि ग्वालनको सङ्गी। कब देखें वहरूप त्रिभङ्गी। जो तुम हितकीबात सुनावहु। मदनगोपालहि क्यों न मिलावहु। ताहिभजहु किनि सबैसयानी। खोजत जाहि महामुनि ज्ञानी। जाके रूपरेख कछुनाहीं। नयनमूंदि चितवहु चित माहीं। हृदय कमलमें ज्योति बिराजै। अनहदनाद निरन्तरबाजै। इड़ापिंगला सुख मन नारी। शून्य सहज में बसैं मुरारी। मात पिता नहिं दारा भाई। जल थल घट घट रहे समाई। यहि प्रकारभव दुस्तर तरिहो। योग पंथ क्रम क्रम अनुसरिहो। ये मधुकरमुख मूंदहुजाई। हमरोचित चित हरि मधुराई। ब्रजबासिन गोपाल उपासी। ब्रह्मज्ञान सुनिआवै हांसी। अबलों योग कबहुं नहिंआयो। मानो कुबिजा रूपमें पायो।

खोलि सुगाहक पाइ दिखायो । साधोमधुकर हाथ पठायो । अबला ठगी अजप रत हेरी । सोठग ठग्यो कंस की चेरी । रामजनम तपसा यदुराई । तिहि फल बधू कूबरी पाई । सीता बिरहबहुत दुखपायो । अब कुबिजा मिलि दियोसिरायो । ज्ञाननिराश कहालैकीजे । योग मोट दासी शिरदीजै । वह अच्युत अविगत अविनासी । त्रिगुणरहित बपु धरे न दासी । कहैमधुकर सुनिबातहमारी । यह वह सून्यसुनहु ब्रजनारी । नहिं दासी ठकुराइनि कोई । जहँदेखहु तहँ ब्रह्महिसोई । आपुहि औरहिं ब्रह्महिं जानै । ब्रह्म बिना दूसर नहिंमानै । बारबार ये बचन निवारो । भक्ति बिरोधी ज्ञान तुम्हारो । होत कहा उपदेशे तेरे । नयन सुबश नाहीं अलिमेरे । हरिपथ जोवत निमिष न लागे । कृष्ण वियोगिनि निशि दिन जागे । नँदनन्दन को देखे जीवैं । रुचि वह रूप पवन नहिं पीवैं । जब हरिआवैं तबसुख पावैं । मोहनमूरति निरखि सिरावैं । दुसहबचनअलि हमहिं न भावहि । योग कहाओढैं कि डसावहि । ऊधो कहैंधन्य ब्रजबाल । जिनके सर्वसमदनगोपाल । वह मत त्यागो यह मति आई । तुम्हरे दरशभगति मैं पाई । तुमसम गुरुमैं दास तुम्हारो । भगति सुनाय जगत निस्तारो । भ्रमरगीतजेसुनैं सुनावैं । प्रेम भक्ति सो प्राणी पावैं । सूरदास गोपी बड़भागी । हरि दर्शन कि ठगोरी लागी ८ मधुकर भली सुमति मति खोई । हांसी होनलगी या ब्रजमें योगहि राखहु गोई । आतम रामलखावतडोलत घटघट व्यापक जोई । चापे कांखफिरत निर्गुणको ह्यां गाहक नहिं कोई । प्रेम कथा सोईपै जानैजापै बीतीहोई । तू नीरस एती कहजानै बूझिदेखिबे ओई । बड़ो दूत तू बड़ेठौर को कहिये बुद्धि बड़ोई । सूरदास पूरीयहि षटपद कहत फिरत है सोई ९ सुनियत ज्ञानकथा अलिगात । जिहिमुख सुधा बेणुरवपूरित हरिप्रीति सरसहिसुनात । जहँ लीलारस सखीसमाजहि कहत कहत दिनजात । बिधना फेरि कियो अब देखियत तहँषटपद समुझात । बिद्यमान रसरास लड़ैते कत मन इत असमझात । रूपरहित कछु बकत बदनते मति कोउ हम भुरकात । साधुवाद श्रुतिसार जानिको उचित न मनबिसरात । नँदनन्दन कमलन री छबि मुख ऊपर परमात । एकएक ते सबै सयानी ब्रज

सुन्दरि न सकात। सूरश्याम रससिंधु गामिनी नहिंवहदशा हिरात१०
ऊधो इतनीकहियो जाय। अति कृशगातभईहैं तुमबिनुबहुत दुखारी
गाय। जलसमूह बरषति अँखियनि ते हूंकत लैलैनाउँ। जहां जहां
गोदोहन करते ढूंढत सोइसोइ ठाउं। परति पछारि खाइ तेहीछन
अति व्याकुलह्वै दीन। मानहुं सूरकाढ़ि डारे हैं वारिमध्य ते मीन।
११ ऊधो योगसिखावन आये। सिंगीभस्म अधारीमुद्रा लै ब्रजनाथ
पठाये। जोपैयोग लिख्यो गोपिनको कतरस रास खिलाये। तबहिं
ज्ञान काहेन उपदेश्यो अधर सुधारस प्याये। मुरली शब्द सुनतवनग-
वनति सुतपतिगृह बिसराये। सूरदास संगछांड़ि श्याम को मनहिंरहे
पछिताये १२ ऊधो लहनो अपनो पैये। जोकछु विधना रचीसो भैये
आनदोष न लगैये। कहियेकहाजु कहतबनाई सोचिहृदयपछितैये।
कुब्जाबरूपावै मोहनसों हमहींयागवतैये। आज्ञाहोयसोईतुमकहिबो
बिनती यहैसुनैये। सूरदास प्रभुकृपा जानिजो दरशनसुधा पिवैये१३
ऊधोहमैं श्यामसुन्दर बिनुसबकोऊसमुझावै। जिहि बिधिमिलहिं
श्यामघन सुन्दरसो बिधिकोउ न बतावै। यद्यपियतनकियेअनेकपरि
तहांनमनबिरमावै। तदपि हठीले हमरे लोचन औरन देख्यो भावै।
बासर निशाप्राण वल्लभबिनु रसना औरन गावै। सूरदासप्रभुप्राणहिं
लगतेकहिये जो कहिआवै१४ऊधोकहा करैंलैतोपा। जौलगिनाहिं
गोपालहि देखति बिरह दहतिमेरिछाती। निमिष सकमोहिं बिसरत
नाहिन शरदसमयकीराती। मनतौ तबहीते हरिलीन्होजबभयोमदन
बराती। पीरपराई कहतुमजानो तातो श्यामसँहाती। सूरदासस्वामी
सो तुमपुनिकहियो ठकुरसुहाती। १५ ऊधोबिरहो प्रेमुकरै। ज्योंबिन
पुटपट गहेन रङ्गहि पुटगहे रसहिपरै। ज्यों आवों घटदहत अनल तनु
तोपुनि अमिय भरै। ज्योंधरि बीजदेह अंकुरधरि तौसत फरनिफरै।
जो धार सहस सुभट सन्मुखरण तोरबि रथहिररै। सूर गोपाल प्रेम
पथजलते कोउन दुखहिडरै १६ ऊधो इतनी जायकहो। सबवल्लवी
कहति हरिसों येदिन मधुपुरी रहो। आजकाज तुमहूं देखत हौतपत
तरणिसम चन्द। सुन्दर श्यामपरम कोमलतनु क्यों बशहे नँदनन्द।
मधुर मोरपिकपुरुष प्रबलअतिबन उपबन चढ़िबोलत। सिंहचक्रसम

गायबच्छव्रज बीथिनबीथिनडोलत। आसनअसन बसनविष अहिसम
भूषण भवन भँडार। जितकित फिरत दुसहद्रुम द्रुमप्रति धनुषशरलयेस-
तमार। तुमतौ परमसाधु कोमलमन जानत हौ सबरीति। सूरश्याम
को क्योंबोलें व्रजबिनटारे यहईति १७ ॥ रागमलार ॥ जोपै ऊधो हृदये
मांझहरी। तोपैइती अवज्ञा उनपैकैसे सहीपरी। तबहिं दवाद्रुमदहन
न पाये अबक्योंदेहजरी। सुन्दरश्याम निकसि उरतेहम शीतल क्यों न
करी। इन्द्रिरिसाय बरषनयननमग घटत न एकघरी। भीजत शीतनीत
तनकांपत रहे गिरि क्यों न धरी। करकङ्कण दर्पणलै दोऊ अबयहि
अनखभरी। एतेमान सूरसुनि योगज बिरहिनि बिरहभरी १८ ऊधो
इत हितुकररहियो। याब्रजको ब्योहारजितोहै सबहरिसों कहियो।
देखि जात अपनी इनआंखिन दावानलदहियो। कहँलों कहौंव्यथा
अति लाजति यहमनको सहियो। कितोप्रहार करत मकरध्वजहृदय
फारि चहियो। यहतन नहिं जरिजात सूरप्रभु नयननको बहियो १९
ऊधो यहि व्रज बिरह बढ्यो। घरबाहिर सरिताबनउपबन बल्लीद्रुमन
चढ्यो। बासररैनि सधूम भयानक दिशि दिशि तिमिर मढ्यो। द्वन्द
करत अति प्रबल होतपुर पयसों अनल डढ्यो। जरिकिन होतभस्म
क्षणमहियां हाहरिमन्त्र पढ्यो। सूरदास प्रभु नँदनन्दन बिनु नाहिन
जात कढ्यो २० बरुयहि कुब्जा भलोकियो। सुनिसुनि समाचारहँसि
ऊधोअधिकजुड़ातहियो। जाकोगुणगहरिरूप नामुहरिहरेउ सो फिर
नदियो। तिहि अपनो मनहरत न जान्यो हँसिहँसि लोगुजियो। सूर
तनक चन्दन चढ़ाय कै अधरामृत जो पियो। औरसकलनागरनारी
को दासीदाउ लियो २१ रागधनाश्री ॥ ऊधो तुम कहियो ऐसे गोकुल
आवहिं। दिनदश रहेसुभलो कीनी अबजिनि गहरु लगावहिं। तुम
बिनुकछु न सुहाय प्राणपतिकानन भवन न भावहिं। बालबिलखि
मुखगौ न चरतहैं बछरनिक्षीर न ध्यावहिं। आंखिन
ऊधो हमकोहकहा जनावहिं। सूरश्याम बिनुतपतिरैनिबिनु हरि-
हिमिले सचुपावहिं २२ ऊधो अबजो कान्ह न ऐहैं।
हृदयबिचारो हमनहतोहुखसैहैं। बूझोजाय कौन के होहा का
। स्वायो खेल्योसंग हमारे तहांकी कहा

मथुराके बासीकोतों भूंठ कहिहैं। अब हम लिखि पठवन चाहति हैं वहांपांति नहिंपैहैं। इन यैग्रनि चरिबो छांड्योहै जोनहिं लालुच-देहैं। एतेपर नहिंमिलत सूरप्रभुफिरिपीछे पछितैहैं २३ ऊधोहमैंदोउ कठिन परी। जो जीवहिं तौ मुनिगाठ ज्ञानी तनतजि रूपहरी। गुण गावहिं तौ शुकसनकादिक सँगधावें तौ लीलाफरी। आशा अवधि सँतोष धरहि तौ धर्मन व्रजसुन्दरी। श्यामाहे सबसखी सुजाती पैसब बिरहभरी। शोकसिंधुतरिबेकीनौका जिहिमुख मुरलिधरी। निशि दिन फिरत निरंकुश अतिबड़ मातेमदनकरी। ढाहेगो सबधामसूरजो चितै न वहकेहरी २४ ऊधो बहुतै दिन गये चरण कमल बिमुखही। दरश हीनदुखितदीन क्षणक्षण बिपदासही। रजनी अति प्रेमपीरगृह बन मनधरै न धीर। बासरमग जोवततउर सरिता बहीनयननीर। अब आवनअवधि आशसोई गनिघटत श्वास। इतोबिरह बिरहिनि क्योंसहि सकैकहिसूरदास२५ ॥ रागआसावरी॥ ऊधो कहतन कछुबनै। अधरामृत आस्वादिनि रसना कैसेयोग भनै। जेहिलोचन अवलोके नख शिख सुन्दर नन्दतनै। तेलोचनक्योंजायँ औरपथ लेपठये अपनै। रागिनि राग तरंग तानघन जेश्रुति मुरलि सुनै। तेश्रुतियोग सँदेश कठिन क-हिकांकर मेलिहमैं। सूरदासश्यामा मोहनकेयहगुण बिबिधिगनै। कनकलताते उपजै न मुक्ता यटपद रङ्क चुनै २६ ॥ रागमारू ॥ ऊधो इन नयननि नेमुलियो। नँदनन्दन सों पतिव्रत बांध्यो दरशत नाहिंबियो। इन्दु चकोर मेघ अरु चात्रिक ऐसेहि बिबिस इयो। तैसे ये लोचन गोपाले यकटक प्रेमपियो। ज्ञानकुसुम लै आयेऊधो चपलन उचित कियो। हरिमुख कमल अमीरस सूरज चाहत वहैलियो २७ ॥ राग केदारो ॥ ऊधोहरि के औरैढंग। जहँ न अनँग रसनेह रूपको तहां दई गतिदई अनङ्ग। जिहि अनङ्गबपु असुर दासिका ते भइ नौतन अङ्ग। अपुबियता तजिदोऊ समभये बानक ललित त्रिभङ्ग। कनकबेलि सत दल शिरसरिाडत टूटतर लतालवङ्ग। श्यामासदन बिसारि भये जाय चञ्चलनारि पलङ्ग। तेसुख बहुतबहुतपावहिंगी जेकरिहैंअँगसङ्ग। का कारणहै जोनहिँ व्रजके सूरप्रभू योरङ्ग२८ ऊधो व्रजरिपु बहुरिजिये। जे हमरे कारण नँदनन्दन हतिहति दूरिकिये। निशिक बेयब की है

आवति अतिडर करति सकम्पहिये। तिनपैते तनप्राणहमारे रविही छिनक छिनार्यालिये। बन वृकरूप अघासुर समगृह कितहू तौनबितै सकिये। कोटिक काली समकालिन्दी दोयत सलिल न जात पिये। अरु ऊंचेउस्वास तृणावर्त्त तिहि सुखसकल उडायदिये। केशीसकल कर्मकेसी बिन सूरशरण काको तकिये २९ ॥ रागसारंग ॥ ऊधोकहिये काहिसुनाय। हरि बिछुरत जेती सहियततहैं इतो बिरहके धाये। बरु माधव मधुबनहीं रहते कत यशुदा के आये। कतप्रभु गोप वेष ब्रज धारेउ कत ये सुख उपजाये। कत गिरिधारि इन्द्रमद मेट्यो कत बन रासबनाये। अबकहु निठुरभये हम ऊपर लिखिलिखि योगपठाये। परम प्रवीण सबै जानत हो ताते यहकहि आये। अपनो कौन कहै सुनि सूरज मात पिता बिसराये ३० हमहूं तौ ऊधो अपनेसो कठिन करति मन निशिदिन। मधुपकथा कहिकहि समुझावत तदपि न रहत नन्दनन्दन बिन। बरजत अब निशिदिवस नयनजल मुखबचनन कछु और चलावति। अनेक भाँति चित धरत निठुरता सब मिलि सुरति यहै जियआवति। कोटिशक समसुख अनुमानति हरिसमीप समता नहिँ पावति। थकित सिन्धुनौका के खग ज्यों फिरि फिरि वोइगुण गावति। जोइ जोइ बचन बिचारति अन्तर तेइ तेइ अनल अधिक उरदाहति। सूरदास परिहरि न सकतितनु बारक बहुरि मिल्योई चाहति ३१ ऊधो भलीकरी गोपाल। आपुन तौ आवत नाहीं यहँ उहाँरहे यहिकाल। चन्दन चन्दहुतो तब शीतल कोकिल शब्द रसाल। अबसमीर पावक समलागत अबब्रज उलटीचाल। हारचीर कंचुकि कंटक भये तरुणि तिलक भयेभाल। सेजासिन्धु गृह तिमिर कन्दरा सर्प सुमणि मणिमाल। हम तौ न्यायसहैं एतोदुख बनबासी जु गुवाल। सूरदास स्वामी सुखसागर भोगी भ्रमर भुवाल ३२ ॥ राग सोरठ ॥ अपने मनसुरति करत रहिबी। ऊधो इतनीबात श्यामसों समयपाय कहिबी। घोष बसतकी चूकहमारी कछू न जिय गहिबी। परमदीन यदुनाथ जानिकै गुणबिचारि सहिबी। एकहिबार दयाल दरशदै बिरह राशिदहिबी। सूरदास प्रभु बहुत कहाकहों बचनलाज बहिबी ३३ ॥ राग केदारो ॥ ऊधो नँदनन्दन सों इतनी कहियो। यद्यपि

ब्रज अनाथकरि छांड्यो तदपि बारइक चितुकरि रहियो। तिनुका तोरिकरहु जिन हमसों एक बासकी लज्जा गहियो। गुण औगुण दोषनहिं कीजत दासनिदास कि इतनी सहियो। तुमबिन श्यामकहा हम करिहैं यह अवलम्ब न सपने लहियो। सूरदास प्रभु यह कहि पठई कहां योगकहुँ पीवन कहियो ३४ ॥ राग सारंग ॥ ऊधोहरिकर पठवत जेती। जो मनहाथ हमारे होतो तौ कत सहती एती। हृदय कठोर कुलिशहू ते अतितामें चेत अचेती। तबकुच बीच अँचलनहिं सहती अब यमुनाकी रेती। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को शरणदेहु अबमेती। बिनदेखे मोहिंकल न परतिहै ज्ञाकोश्रुति गावतहैनेती ३५ ऊधो खरीये जरीहरिके शूलनकी। कुञ्जकलोलकरे बनहीबन सुधि बिसरी वा भूलनकी। ब्रजहम दौरि आंकभरिलीन्ही देखिछांह नव सूलनकी। अब वह प्रीति कहालों बरणौं वा यमुना के कूलनकी। वहछबिछाकि रहेदोउ लोचन बहियां गहिबन भूलनकी। खरकति है वह सूरहिये में मालदई मोहिं फूलनकी ३६ रागनट नारायण॥ ऐसी बात कहो जनिऊधो। ज्योंत्रिदोष उपजेजकलागत निकसत बचन न सूधो। आपनपौ उपचार करौ अति तब औरनि सुखदेहु। मेरे कहैं बनासत राखो शिरके बारेगेहु। जो तुम पद्मपराग छांडिके करहु ग्रामबसि बास। तौहम सूरयहौ करिदेखैं निमिष छांडहींपास ३७॥ राग केदारो॥ ऊधोजु देखेहौंब्रजजात। जायकहियो श्यामसों याबिरह को उत्पात। नयनन कछूनहिं सूझई कछु श्रवणसुनत न बात। श्याम बिन आतुर न बूडत दुसह धुनि भइबात। आये बेतौ आइ जो बहुरि शरीरसमात। सूरकेप्रभु बहुरि मिलिहौ पाछेहूपछितात३८॥ रागसोरठ॥ ऊधो यहहरि कहा करेउ। राजकाज चितदियो सांवरे गोकुल क्यों बिसरेउ। जौलों घोषरहे तौलोंहम सन्ततसेवाकीनी। बारक कबहुँ उलूखल परसेसोई मानिजिय लीनी। जो तुम कोटिकरौ ब्रजनायक बहुते राजकुमारि। तौये नन्दपिताकहँ मिलिहैं अरु यशुमति महतारि। कहँ गोधन कहँगोप वृन्दसब कहँगोरसको खैबो। सूरदास अब सोई करो जिहि होयकान्हको सैबो ३९॥ रागआसावरी॥ ऊधो ऐसोकाम न कीजै। एकरंगकारे तुमदोऊ बोइश्वेत क्योंकीजै। फेरिफेरिके दुखअवगाहहिं

हम सबकरी अचेत । कातपटपर गोता मारतहौ ऐसे भूडकेखेत । तरपट कोटकोट कुलजनमि सुकहा भलाईजाने । फेरत गांठि बांस दांतनु सों बारबार ललचाने । छांड़िकमलसों हेतुआपनो तू कत अनतहिंजाय । लम्पटढीठ बहुत अपराधी कैसे मनपतिआय । इहेंउ बात कहतिहैं तुम सों फिरिमति कबहूँ आवहु । एक बार समुझावहु सूरज अपनो ज्ञान सिखावहु ४० ॥ रागसारंग ॥ ऊधो औरै कथा कहौ । तजियश ज्ञानसुने तावततनु बरुगहि मौनरहौ । रनिद्रुम प्रीतिप्रीति नयननजल सींचध्यान धरलागी । ताकेबीच अतिसुख मनपरबत श्यामसूल अनुरागी । ग्रीषम अलिआये प्रकटहिंव्रज कठिनयोग रबिहेरे । बनमुरझात सूरको राखे मेहनेह बिनतेरे ४१ ऊधो सांचकहो हमआगे । घरमें कहाबचै कहि ताके प्रकटआगिके लागे । जादिनते गोपालसिधारे श्वासअनिल तन जारेउ । अर्धिहिरदय मुखचन्दु सुखभयो काढ़ि बाहिरो डारेउ । एते पर तोहिं सूझतनाहिन योग सिखावन आये । फिरिलैजाहु सूरकेप्रभु पै जिहिहैं यहां पठाये ४२ ऊधोसब स्वारथ के लोग । आपुन केलि करत कुब्जा सँग हमहिं सिखावत योग । भ्रमबनजात सांवरी सूरति जिनदेखहि वहिरूप । अब रसरासपुलिन यमुनाकेकरतलाज भयेभूप । अनुदिन नयन निमेषन लागत भयोविरह अतिरोग । मिलवहु कान्ह कुमार अखनी मिटैसूर सबशोग ४३ ऊधोदीनी प्रीति दिनाई । बातनि सुहृद करम कपटीके चलेचोरकी नाई । विरह बीबबघ चारुसलिल मानो अधर माधुरीप्याई । सोहै जायखगी अन्तरगति औषधबल न बसाई । गरलदान दीयो पै नीको याकहँ नहींउपाय । कैमारै कैकाज सरै तिहि दुखदेख्यो नहिंजाय । कहिमारै सो सूरकहावै मित्रद्रोहन भलाई । सूरदास ऐसेअलि जगमें तिनको रतिनहिं काई ४४ ऊधोजो हरिआवैं तौ प्राणारहैं । आवतजात उलटफिर बैठत जीवन अवधिगहैं । जब हैदामऊखलसों बांधे बदननआय रहे । त्रिभङ्ग रही नवनीत चोर छबि क्यों भूलत नहिं ज्ञानगहे । तिनसों ऐसी क्योंकहिआवैं जे कुल पतिकी त्रासमहे । सूरश्याम गुणरत्ननिधि तजिकै क्यों घटनीरबहे ४५ ऊधो यह निश्चय हमजानी । खोयोगयो नेहनग उनपै प्रीति कोठरी भईपुरानी । पहिले अधर सुधाकरसींची दियोपोषनह लाड़लड़ानी ।

बहुरे खेलकियो शिशुकेभव गृहरचना ज्यों चलत बुझानी। ऐसेही परतीति दिखाई पन्नग कंचुरि ज्यों लपटानी। बहुरो सुरतिलई नहिं ऊसेभवरलता त्यागत कुम्हिलानी। बहुरंगी जहँजाय तहींसुख एकरंग दुखदेह दहानी। सूरदास पशुबनी चोरके खायोचाहत दानापानी४६ ऊधो हमहैं तुम्हरी दासी। काहेको कटुबचन बोलतहो करतआपनी हांसी। हमरे गुणहिगांठि किनबांधेयो हमकह कियो बिचारु। जैसी तुम कीनी सो सबहू जानतुहै संसारु। जो कछुभलीबुरी तुम कहिहो सो सबहम सहिलेहैं। आपनकियो आपभुगतहिंगे दोष न काहूदेहैं। तुमतौ बड़े बड़ेकेपठये अरुसबकेसरदार। यहदुख भयो सूरकेप्रभुसुनि कहत लगावनछार ४७ ऊधोतुम कहत हृदयरहतहै। कैसेहोयप्रतीति कृसुनिये बातें जुसहतहै। बासरर्रैनि कठिनबिरहानल अन्तर प्राण दहतहै। प्रजरिप्रजरिपचि निकसिधूम अन्नयनन नीरबहत है। अ-धिक अवज्ञाहोत देहसुख मर्यादा न गहतहै। कहि क्यों मनमानैये सूरप्रभु इनबातनि जु कहतहै ४८ ऊधो तुमहीं हो सबजान। हमको सोई सिखावन दीजै नन्दसुवन की आन। आमिष भोजनहितहै जाके सो क्यों साग प्रवान। तामुख सेमिपात क्यों भावत जा मुख खाये पान। किंगिरि सुर कैसे सचुमानत मुनिमुरली को गान। ता ऊपर क्यों निर्गुण आवत जा उर श्यामसुजान। हमबिन श्याम बियोगिनि रहि हैं जबलग यहि घट प्रान। सुख ता दिनते होय सूरप्रभु ब्रजबा-सिन के भान ४९ ऊधो यहै बिचार गहो। कै तनगये भलौमानोके हरि ब्रज आय रहो। कानन देह बिरह दो लागी इन्द्री जीव जरो। बुझै श्याम घन कमल प्रेम मुख मुरली बूंद परो। चरण सरोवरमीन मनु सुहृदरहै एकरसरीति। तुम निर्गुण बालूमहँ डारो सूर कौनयह नीति ५० ऊधो कतवे बातें चाली। अति मीठीमधुरी हरिमुखकी हैं उरअन्तरशाली। श्यामसघनतन सींची बेली हस्तकमल धरिपाली। अब वे बेली सूखन लागीं छांड़ि दई हरि माली। तबते कृपा करत ब्रज ऊपर संगलता ब्रजबाली। सूरश्याम बिनमरि न गई क्योंबिरह बयथाकी घाली ५१ ॥ रागनट ॥ ऊधोयोगकी गति सुनतमेरे अंगआगि बई। सुलगि सुलगि हमरहीतनमें फूंकि आनिदई। योग हमकोभोग

कुब्जहि कौनेशिष सिखई। सिंह तिनुका चरन लागो सुनी बातनई। मिटै नाहिं न कर्म रेखा जो बिधि ठाट ठई। सूर प्रभुकी कृपा जापर सकल सिद्धि भई ५२ ॥ रागकेदारो ॥ ऊधो जो हरि हितू तिहारे। तौ तुम कहियो जाय कृपाकै जे दुख सबै हमारे। उर तरवर ज्यों जरति बिरहिनी तुम दौं ज्यों हम जारे। नहिं सिरात नहिं जरतछार ह्वै सुलगिसुलगि भये कारे। यद्यपि उमगि प्रेमजल भिजवत बरषिबरषि घन तारे। जो सींचै यहि भांति यतनकरि तौ इतने प्रतिपारे। कीर कपोत कोकिला खंजनबधिक बियोगबिडारे। इनदुःखन क्योंजियहिं सूरप्रभु ब्रजके लोग बिचारे ५३ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधो कहत सँदेशो आनि। कहाकरौं वा नँदनन्दनसों होत नहित चितहानि। योगयुगति किहि काज हमारे यदपि महा सुख खानि। सनी सनेह श्यामसुन्दर सों हिलिमिलिकै मनमानि। सोहत लोह परश पारसके ज्योंसुबरण बनिबानि। पुनि वह चारु चुम्बक सोनते लटपटाय लपटानि। घर-हित निर्गुण नीरस नितनित निरासहु परत न जानि। सूरदास कौने जा कारण फिरितिन सों कीजै पहिचानि ५४ ॥ रागबिलावल ॥ ऊधो तुमकहियो हरि सों जाय हमारे जियको दरद। दिन नहिं चैनरैनि नहिं सोवत पावक भई जुन्हैया शरद। जबते अक्रूर लैगये मधुपुरी भई बिरहतन बाय छरद। कीन्ही प्रबल जंगी अति ऊधो शोचि भई जस पीरी हरद। सखा प्रवीण निरन्तर हौ तुमताते कहियतखोलि परद। क्राथ रूप दर्शन बिन हरिके सूर मूरि न हियो सुरद ५५ ॥ रागगौरी ॥ ऊधोक्योंआये ब्रज धावते। सहायक सखाराज पदवीमिलि दिन दश कछुक कमावते। कहेउ जु धर्म कृपाकरि कानन सुतो उत बसिके गावते। शुद्ध निवर्त्तिदेखि आंखिनजे श्रोता सकल अघावते। इत कोउ कछू न जानत हरि बिन तौ कतयुगति बनावते। जो कछु कहत सहो सो तुमपहिं अनभवते सुख पावरते। मनमोहन बिन देखे कैसे उरसों औरहि चाहते। सूरदास प्रभु दर्शन बिन यह बार बार पछितावते ५६ ॥ रागदेसाख ॥ ऊधो यहैप्रकृति परिआई तेरे। जोकोउ कोटि करै कैसेहू फिरत नहीं मन फेरे। जा दिनते यशुदा गृह आये मोहन यादवराई। ता दिनतेहरि दरशपरशबिन और न कछूसुहाई।

क्रीडत हँसत कृपा अवलोकत युग समाभरितव जात। परमतप्त सब-हिन तन होती लोचन हृदय अघात। जागत सोवत स्वप्न श्यामघन सुन्दरतन अति भावै। सूरदास अब कमल नयन बिन बातनहींबहरा-वै ५७॥ रागधनाश्री॥ ऊधो मन नाहीं दशबीश। एकहुतो सुगयोहरिके सङ्ग कोआराध तुव ईश। भई अति शिथिल सबै माधव बिन यथा देह बिन शीश। स्वासा अटकिरहे आशालगि जीवहु कोटि बरीश। तुमतो सखा श्यामसुन्दरके सकल योगकोईश। सूरजदासरसिक की बतियां पुरवो मन जगदीश ५८॥ रागकेदारो॥ ऊधोह्यां लगहैं जग जी-जतु। जाते प्रियसों प्रेम पुरातन बहुरि नयोकरि कीजतु। कहँरबि राहु राहु रबि मलि रुचि विधि संयाग बनायो। उहि उपकारआज यहि औसर हरिदर्शन सचु पायो। कहँ वे तुम यदुनाथ सिंधु तटहम गोकुल व्रजबासी। वह बियोग वह मिलन कहां अब काल चालि चौरासी। सूरदास मुनिचरण चरचि किन गुरु लोगन रुचि मानी। तब अरु अब यह परम कठिन अति निमिषे पीर न जानी ५९॥ राग मलार॥ ऊधो तुम सब साथी भोरे। अबके कहे बिलगु मानहुगे कोटि कुटिल ले जोरे। वे अक्रूर क्रूर कृप तिनके रीते भरे भरे गहि ढोरे। वे घनश्याम श्याम अन्तरघन श्यास कामसहबोरे। ये मधुकरद्युति निर्गुण गुणके देखेफटकि पछोरे। सूरदासकारनु संगतितें कह पूजिहै हिगोरे ६०॥ रागसोरठ॥ ऊधो समुझावै सो बैरनि। रे मधुकर निशि दिन मरियतु है कान्ह कुंवर औसेरनि। चितचुभिरही मोहनीमूरति चपल दृगनकी हेरनि। तन मन लियो चुराय हमारो वा मुरलीकी टेरनि। बिसरत नाहिं सुभगतन शोभा पीताम्बरकी फेरनि। कहत न बनैकांध लकुटी धरिछबिबन गाइनघेरनि। तुमप्रवीण हमबिरहबता-वत आंखिमूंदि भटभेरनि। जिहिउरबसत श्यामघन सुन्दर मुक्तिपरो सोइभेरनि। तुमहमैं कहांलेआयेऊधो योगदुखनकेढेरनि। सूररसिक बिन क्यों जीवत हैं निर्गुण कठिन करेरनि ६१॥ रागसारंग॥ ऊधो श्यामहिं तुम लै आवहु। ब्रजजन चातक प्यास मरत हैं स्वाति बूंद बरषावहु। घोष सरोज भयेहैं सम्पुट दिनमणि ह्वै बिगसावहु। ह्यांते जाहु बिलम्ब करहु जनि हमरी दशा सुनावहु। जो ऊधो हरि यहां

न आवैं हमको तहां बुलावहु। सूरदास प्रभु बेगि मिलाय सन्तन में यश पावहु ६२ ऊधोजू योग तबहिँ जान्यो। जादिनते सुफलकसुत के सँगरथ ब्रजनाथ पलान्यो। तादिनते सब छोह मोह मिटिसुतपति हेत भुलान्यो। तजि माया संसार सारकह ब्रजबनितन व्रत ठान्यो। नयन मूंदि मुखरहे मौनधरि तनतपि तेज सुखान्यो। नन्दनँदन मुख मुरली धारी यहेरूप उरआन्यो। सोइ संयोग जिहीभूले मोहिँतुमहूँ योग बखान्यो। ब्रह्मा पचि पचि मुये प्राण तजि तऊ न तिहिप-हिँचान्यो। कहेसुयोग कहालैकीजै निर्गुणपरत न जान्यो। सूरवहै निजरूप श्यामको है उरमाहिँ समान्यो ६३ ऊधो वे सुखअबै कहां। क्षण क्षण नयनन निरखत वह मुख फिरि मन जात तहां। मुखमु-रली शिर मोर पखौआ उर घुंघुचिन को हारू। आगे धेनु रेनु तन मण्डित तिर्छि चितौनी चारू। रातिद्योस सबसङ्ग आपने खेलतबो-लतखात। सूरदास यह प्रभुता चितवत कहि न सकत यह बात६४ कहि ऊधो हरि गये तजिमथुरा कौन बड़ाई पाई। भुवनचतुर्दशको यह वैभव नृपकी जूठि पराई। जो यह काज करैं सो सेवक तोश्रुति पढ़ें बताई। सेवत सेवत जन्म घटावत देयम सदनपठाई। तुमतौ परम साधु अन्तरहित जनिकछु कहौ बनाई। सूरश्याम मनकहाविचारेउ कौन ठगौरी लाई ६५ ऊधो हरि हम निपट बिसारी। जबहींगमन कियो मधुबनको बहुत करी मनुहारी। अबतौवे पतिआति नाहिने हरि पठवत महतारी। उनहूं तो अलि इत आवन की योग सँदेशनि टारी। अबलगि प्राणरहे आशा तकि येजु चले परिचारी। सूरदास स्वामी सों कहियो दे तिलअंजुरि ढारी ६६ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधोजाय बहुरि सुनि आवहु कहा कह्यो है नन्दकुमार। यह न होय उपदेश श्यामको कहत लगावन छार। निर्गुण ज्योति कहा उनपाई सिख-वत बारम्बार। कालिहहि करतहुते हमरे अँग अपने हाथ शिंगार। व्याकुल भईं गोपालहि बिछुरे गयो गुण ज्ञान सम्हार। तातेज्यों भावे त्यों बकतसो नाहीदोष तुम्हार। बिरह सहन को हम सरजीहैं पाहन हृदय हमार। सूरदास अन्तरगत मोहन जीवन प्राण अधार६७ राग बिलावल ॥ ऊधोकह मतदीन्हो हमहिँ गोपाल। आवहुरीसखिसब

मिलिशोचें जोपावें नंदलाल। घरबाहेर ते बोलिलेहु सबजावसकब्रज बाल। कमलासन बैठहुरीमाई मूंदहु नयनबिशाल। षटपदक्कही सोऊ करि देखी हाथकछू नहिंआई। सुन्दरश्याम कमलदल लोचननेकुन देत दिखाई। फिरिभई मगन बिरह सागरमें काहुहि सुधिनरही। प्रेरणा प्रेमदेखि गोपिनके मधुकर मौनगही। कछु धुनिसुनि अवतानि चातककी प्राणपलटि तबआये। सूरसु अबके टेरि पपीहे बिरहीमृतक जिवाये ६८ ऊधोते कि चतुरपद पावत। जेनहिं जानैपीर पराई हैं सर्वज्ञ कहावत। जोपैमीन नीरते बिछुरे कोकरि यतन जिवावत। प्यारेप्राण जातहैं जलबिनु सुधासमुद्र बतावत। हमबिरहिनी श्याम-सुन्दरकी तुमनिर्गुणहिं जनावत येइग मधुप सुमनसब परिहरि कमल बदन रसभावत। कहिपठवत संदेशनि मधुकर कत बकवाद बढ़ावत। करो न कुटिल निठुरचित अन्तरसूरदास कविगावत ६९ ॥ रागकल्याण ॥ ऊधोभली करीअबआये। बिधिकुलालकीने काचेघटतेतुमआनिपकाये। रंगदियो होकान्ह सांवरे अंगअंग चित्रबनाये। गलन न पायेनयननीरतेअवधि अटा ह्वै छाये। ब्रजकरि अंवांयोग करि ईंधनु सुरति अगिनि सुलगाये। कोकउसास बिरहतन प्रज्वलित दरशन आशाफिराये। भये संपूर्ण भरेप्रेमजल छुवन न काहूपाये। राज काजते गये सूरप्रभु नंदनँदन करलाये ७० ॥ रागमलार ॥ ऊधोकुलिशभई यहछाती मेरोमन रसिकलग्यो नंदलालहि भरत रहतदिनराती। तजिब्रजलोक पिताअरुजननी कंठलाइगयेकाती। ऐसेनिठुर भयेहरिहमको कबहुंन पठईपाती। पियपिय कहतरहत जियमेरो होइचातिककी जाती। सूरदासप्रभुप्राणहिं राखहु वैकरिबूंदसवाती ७१ ॥ रागगुर्जरी ॥ ऊधो प्रेम रहितयोगसरस कवन कवनगायो। निठुर बचन दीननिसों कहें कहा पायो। जिननयननिशिदिन मनमोहन मुखहेरो। मूंदनते नयनकहत कवन ज्ञानतेरो। जिनके तुम सखासाधु बातेंकहो तिनकी। जीजें सुनि श्याम कथा दासीहम जिनकी। तातेसुनि मधुकर हमकहा लैन जाहीं। जामें यों प्राणनाथ नंदनन्दन नाहीं। अबिबेकी कुटिल कूर कूरआनि भाख्यो। सूरदास जियकोज्यों कान्ह कहांराख्यो ७२ ॥ राग कान्हरो ॥ ऊधो शरद समयहूं आयो। बहुते दिवस रटत चातक तकि

तेउ स्वातिजल पायो। कबहुंक ध्यान धरत उर अन्तर मुख मुरली लै गावत। शोरसरास पुलिन यमुनाकी शाेशा देखे सुधि आवत। जासें लगन प्रीति अन्तरगत औगुण गुणकरि भावत। हमसें कपट लोक उरताते सूरसनेह जनावत ७३॥ रागसारंग॥ ऊधो कौन कुदिन छांड़ेउ हो गोकुल। बहुरि नआयेफिरिया ब्रजमें बिछुरेउ तबहिं मिल्यो अब शोकुल। गरगबचन समुझे अब मधुबन कथा प्रसंग सुन्योहो गोकुल सुरभये अब त्रिभुवनके पति नाते ज्ञाति लहे अब कोकुल ७४ ऊधो राखिये वहबात। कहतहौ अनहद सुधारसिसुनत हम चपिजात। योग फल कुटमांड ऐसे अजामुख नसमात। बार बार नभाखिये कोइ अमृत तजि विष खात। नयन प्यासे रूपके जलदिये नहिन अघात। सूर प्रभु मन हरेउ तौलगि जौलगि न तन कुसरात ७५ ऊधो तुम लोगनि सों आदेश। इकटक ध्यान धरे निशि जागी यह तुम्हरे उपदेश। उलटि चित्तवित फुरे नडोले अंग भस्म रजलेश। सूरदास प्रभुगोरख बिसरी मैं योगिनिके भेश ७६ ऊधोबात तिहारी जानी। आयेहौ ब्रजके बिनकाजहि दहत हृदय कटुबानी। जोपै श्यामरहत घटतोकत बिरह बिथा न परानी। झूठीबातनि क्योंमनमानत चलिमत अलप गियानी। योग युगतकी नीति अगम हम ब्रजबासिनि कहजाने। सिखबहुजाय जहां नटनागर रहत प्रेम लपटाने। दासी घेरिरहे हरि तुम ह्यां गढ़ि गढ़ि कहत बनाई। निपट निलज्ज अजहुं नचलतउठि कहत सूर समुझाई ७७ ऊधो राखतिहौं पति तेरी। यहंते जाहु जाहु आगेते देखत आंखि बरतहै मेरी। तुमजु कहत गोपाल सत्यहै देखहु जाइ नकुब्जा घेरी। ते सब तैसे सोउबनेहैं वे अहीर वह कंसकी चेरी। तुम सारिखे बसीठ पठाये कहाकहों उनकी मतिफेरी। सूरदास प्रभु तुम्हरेमिलन को ग्वालनि के संग जोवत हेरी ७८॥ रागनट॥ ऊधो वेदबचन परमान। कमल मुखपर नयन खंजनदेखिहैं क्यों आन। श्रीनिकेत समेत सबगुण सकल रूपनिधान। अधरसुधा पिवायबिछुरे पठैदीनोज्ञान। दूरि नहीं दयाल सब घट कहत एक सयान। निकसिक्यों के गोपाल बोधत दुखिनिके दुखजान। रूपरेखनि देखिये बिनस्वाद शब्द भुलान। श्रुवदण्ड अडारि हरिगुण गहतपाशि बिषान। चित्तराग सुजान योगी

सकल सिद्धि निवास। निगम बाणी मेटिकै क्यों कहै सूरजदास ७९
रागसारंग॥ ऊधो अब चित भये कठोर। पूरब प्रीति बिसारी गिरिधर
नौतन राचेओर। जादिनते मधुपुरी सिधारे धीरजरहेउ नमोर। जन्म
जन्मकी दासी तुम्हरी नागर नन्दकिशोर। चितवनि बाण लगाये
मोहन निकसे उरबहि ओर। सूरदास प्रभु कबहि मिलहुगे कहांरहे
रणछोर, ८० ऊधो अब नहिं श्याम हमारे। मधुबन बसत बदलि से
लीन्हे माधो मधुप तिहारे। इतनिहिं दूरिभये कछु औरै जोइ जोइ
मगुहारे। कपटी कुटिल काक कोकिल ज्यों अंतभये उड़िन्यारे। रस
लै भंवरजाय स्वारथहित प्रीतम चित नबिसारे। सूरदास तिनसों कह
कहिये जे तनहूं मनकारे ८१ ऊधो पालागों भले आये। तुम देखे
जनु माधव देखे तुम त्रैताप नशाये। नंद यशोदा नातो टूटो वेद पुरा-
णहु गाये। हम अहीरि तुम अहिर नाम तजि निर्गुण नाम लखाये।
तब यहि घोष खेल बहु खेले ऊखल भुजाबंधाये। सूरदास प्रभुयहै
शूल जिय बहुरि नचरण दिखाये ८२ ऊधो बलैया लेहीं बहुरि
सिधारो। हमजारी जगदीश बिरहकी जरियनको कतजारो। हमरे
प्राणघातहवै निबरे तुमकरि जानोहांसी। यहि जीवनते मरण भलो
है करवट लीजै कासी। कैहरि हमको आनिमिलैहो कैलैजैहो साथे।
सूरश्यामबिनु प्राण तजतिहैं बहुदुख तुम्हरेमाथे ८३ ऊधो निरगुण
कहतहो तुमहों अबयों लेहु। सगुण मूरति नन्दनन्दन हमहिं आनिदु
देहु। ज्ञानपंथ परम कठिन गवन तहां नाहिं। सनकादिक भूलिपरे
अबला कहं जाहिं। पंचतत्त्व परकीरति अपर कैसे जानी। मन बच
कर्म रहित सूबैरनिको बानी ८४ ऊधो और कछू कहिबेको। सोऊ
कहिडारे पालागौं हम सब सुनि सहिबेको। यह उपदेश आजलों मैं
सखि श्रवण सुन्यो नहिं देख्यो। नीरस कटुक तपत जीवनगत चाहत
मन उर लेख्यो। बसत श्याम निकसत न सक पलहिये मनोहर सेन।
याकहं यहां ठौर नाहीं लैराखो जहां सुचैन। हम सब सखि गोपाल
उपासिक तिनसों बातेंछांड़ि। सूर मधुप लैराखि मधुपुरी कुब्जाके घर
गाड़ि ८५॥ रागआसावरी॥ ऊधो कहियोसबै सोहती। जाहिज्ञान सिख-
वन तुम आये सो कहौ ब्रजमें कोयती। अंतहु सीख सुनहुगे हमरी

कहियत बातबिचारि । फुरतन बचन कछू कहिवे को रहै प्रीति सों हारि । देखियत हो करुणाकी मूरति सुनियत हो परपीरक। सोई करो ज्यों मिटै हृदय को दाहपरै उरसी रक । राजपंथते टारि बतावत उरज कुबील कुपेंडो । सूरज दास समाय कहांलों अजके बसन कुम्हेंडो ८६ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो तुमलाये किहि काज । हित की कहत अहितकी लागत बकतन आवैलाज । आपुन कोउपचार करो कछु तबऔरनि शिषदेहु । मेरेकहे जाहु सत्वरही गहो सीयरो गेहु । उहांभेष नानाबिधि के अरु मधुरिहीसे बैदु । हमकातरडराति अपनेशिर ई कलंक है कैदु । सांची बात छांड़ि अब झूठी कहौ कौनबिधि सुनिहैं । सूरदास मुक्ताफलभोगी हंसबह्नि क्यों चुनिहैं ८७ ऊधोउलटी रीति तिहारी सुनै सुयेसो कोहै । अलप वेशअबलाअहीर शठ तिनहिंयोग तौ सोहै । बूचीखुबी आंधरी काजर नकटी पहिरे बेशरि । मुड़ली पटियापारिसंवारै कोढ़लगावैकेशरि । बहिरीपतिसों मतो करेतो ऊतरु जैसेपावै । सोगतिहोय सबैताकोजै ग्वालिनि योग सिखावै । मिलई कहत श्यामजी बतियां तुमको नाहिन दोष । राज काज तुमते न सरैगो काया आपनिपोष । जातभूलिसबै मारगमें यहां आनि कहकहते । भलीभई सुधिरही सूरतौ मोहधार महं बहते ८८ ऊधोतुमहुं सुनौयकबात । जोतन कहत सिखावन सोहमें नाहिन नेक सुहात । शशिदरशन बिनमलिन कुमोदिनिज्यों रबि बिनजल जात । त्योंहम कमलनयन बिनदेखे तलफि तलफि मुरझात । घसि चन्दन घनसार सजेतन ते क्योंभस्मभरात । रहे श्रवण मुरलीधर सोरतसिंगी सुनतडरात । अबलनि आनियोग उपदेशत नाहिंननेक लजात । जिन पायो हरिपरम सुधारस ते कैसे कटुखात । अवधि आश गनि गनि जीवतिहैं अब नहिंप्राण खटात । सूरश्याम हमनिपट बिसारी ज्यों तरुसीरणपात ८९ ॥ रागमारू ॥ ऊधोकहु मधुबनकी रीति । राजा ह्वै ब्रजनाथ तिहारे कहाचलावतनीति । निशिलों करतदाह दिनकरज्यों हुतो सदाशशिप्रीति । पुरवापवन कहेउनहिंमानत गयेसहजबपुजीति। कंसकाज कुबजाको मारेउ भई निरंतर प्रीति । सूरबिरह ब्रजभलो न लागत जहां ब्याह तहंगीत ९० ऊधो कालचाल औरासी । मन हरि

मदन गोपाल हमारो बोलत बोल उदासी। एतेपर हमयोग करहिं
क्यों अबिगतिहै अबिनासी। शुभगोपाल करोबनलीला हमलूटीसुख
रासी। लोचन उमगि चलत हरिकेहित बिनदेखे बरिसासी। रसना
सूरश्यामके रसबिन चातकहूते प्यासी ९१॥ रागआसावरी ॥ ऊधोअँखि-
यां अतिअनुरागी। इकटक मगजोवति अरु रोवति भूलेहु पलक न
लागी। बिनपावस पावसऋतुआई देखतहो बिदमान। अबधौं कहा
कियो चाहत हो छांड़हु नीरसज्ञान। सुनिप्रिय सखा श्यामसुन्दर के
जानत सकल सुभाव। जैसे मिलैंसुरप्रभु हमको सोकछुकरहुउपाव९२
ऊधोतो यहप्राणरहे। आवत जातउलटि फिरिबैठत जीवति अवधि
गहे। जादिनदाम उलूखल बांधेबदन नवायचहे। चुभिजु रहीनवनीत
चोरछबिभूलते ज्ञानकहे। तिनसों क्योंकहियत येबातैं जिनकुल त्रास
सहे। सूरश्याम सुन्दर रस परिहरि न घुटहि नीरबहे ९३ ऊधोकहत
कही न जाय। मदनगोपाललालकेबिछुरत प्राणरहे मुरझाय। जब
स्यन्दन चढ़िगवन कियोइतफिरिचितयो गोपाल। तबहीं परमकृतघ्न
सबैउठि संगलगीं ब्रजबाल। अबयह औरै सृष्टिबिरहकी बकतिबाय
बौरानी। तिनसों कहादेतफिरि उत्तरु तुमहौ पूरणज्ञानी। अबसो
मानघटै काकीजै ज्यों उपजै परतीति। सूरदास कछुबरणि न आवै
कठिन बिरहकी रीति ९४॥ रागसारंग ॥ ऊधोराखहु योगकी बात।
कहिकहिकथा श्यामसुन्दर की शितल करहुसबगात। यह निर्गुण
गुणहीनकथैको शठअबला अरसात। दीरघनदीनाव कागदकी देखो
चढ्योक्यों जात। हमतनहेरिचितै अपनोतन देखि पसारो लात। सूर
श्याम बासरबनबसते कैसेकाल बिहात ९५॥ रागबिहागरो ऊधो यहमन
अधिक कठोर। निकसि नगयोकुम्भकाचेज्यों बिछुरत नन्दकिशोर।
हमकछुप्रीति रीतिनहिंजानी तो ब्रजनाथतजी। हमरेप्रेम नयनकी
ऊधोसब रसरीति लजी। हमतेभली जलचरी बपुरी अपनोनेमनिबा
है। जलते बिछुरतही तनत्यागै जलहीजल को चाहै। अचरज एक
भयो सुनोऊधो जलबिन मीन जियो। सूरदास प्रभु आवन कहिगये
मन बिश्राम गह्यो ९६ ऊधोहोत कहासमुझाये। चित चुभरही सांव-
लो मूरति योगकहा तुमलाये। पालागों कहियो हरिजूसों दरशदेहु

यकवेर। सूरदास प्रभुसों बिनतीकरि यहैसुनैयो टेर ९७ ऊधोहमहिं योगनहिंभावे। चितमेंबसत श्यामघनसुन्दर सो कैसेबिसरावें। तुमजो कही सत्यसबबातें हमरेलेखे धूरि। जाघटभीतर सगुणनिरंतर रहेश्याम भरिपूरि। पालगोंकहियोमोहनसों योगकूबरी दीजे। सूरदासप्रभुरूप निहारो हमरे सन्मुखकीजै ९८ ऊधोहमन योगपदसाधें। सुन्दरश्याम सलोनोगिरिधर नँदनंदन आराधें। जातन रचिरचिभूषणपहिरेभांति भस्मचढावन आवत नाहिन लाज। घट भीतर नितबसत सांवरोमोरमुकुट गिरधारे। सूरदासचितनितमोंलागो योगहि कौनसम्हारे ९९॥ रागसारंग॥ ऊधोकहियो यहसंदेश। लोग कहतकुब्जारतिमातो तातेतुमसकुचोजिनिलेश। कबहुंक इतपगधारि सिधारहु बरुहरिखंड सुबेश।हमरे मनरंजन कीन्हेतेहवैहोभुवननरेश। तबतुम इत ठहराय रहोगे देखहुगे सबदेश। नहिंबैकुंठ अखिल ब्रह्मांडहि ब्रजबिन सब छतकेश। यह कहि मंत्रदियो नंदनन्दनतजि ब्रज भ्रमनबिदेश। यशुमतिजननी प्रियाराधिका देखेऔरउ देश।इतनीकहत कहत श्यामाधें कछुनरहेउ अवशेष। मोहनलाल प्रबाल मृदुलमन तत्क्षणाकरी सुहेश। को ऊधो को दुसह बिरहजुरको नृप नगरखरेश। कैसोज्ञान कहेउ किहिकासों किहिपठयो उपदेश। मुखमृदुछबिमुरली रवपूरितगोरज कर्बुरकेश। नटनाटकगति बिकट लटकलखनैनसेकियो प्रवेश। अतिआतुर अकुलाय धायपियपोंछत नैनकुशेश। कुम्हिलानो मुखपद्म परशकरि देखत छबिहि बिशेष। सूरसोमसनकादि इन्द्रअज शारद निगम महेश। नित्यबिहार सकलरस भ्रमरगीत कहगावहि सुख शेष १००॥ रागआसवरी॥ ऊधोहरिजू हितजनायचित चोरायलयो। ऊधो चपलनयनचलाय अंगरागदयो। परमसाधुसखासुजन यदुकुल केमानि। कहेबात प्रातछकसांची जियजानि। शरद बारिजदृगमेंह काल कसान। क्यों जीवहिं बेधेउर लगे बिषसबान। मोहन मथुरा पै बसें ब्रजपठयो योगसँदेश। क्योंन कांपीमेदिनीकहत युवतिनउपदेश। तुमसयाने श्यामकेदेखहु जियबिचारि।प्रीतमपतिनृपतिभये योगहेघर नारि।कोमलकर मधुरमुरलीअधरधरेतान।पसरिसुधापूरिरहीक अबकान।मृगीमृगजलोचनी भयोउभयएकप्रकार। नादनयनविष

जान्योसारनहार। गोधनतजि गवनकियोलियोविरदगोपाल।नीकेकै कहिबीयह भली निगमचाल।सूरसुमति सुन्दरी कुम्हिलानेमुखसरोज सहिनसके श्यामजू उर चांपिलई उरोज १०१॥ रागसारंग ॥ मधुकर योगनि होतसँदेशनि। नाहिन या ब्रजमें कोउसुनिहै कोटियतनउपदेशनि। रविकेउदय मिलनचकईकोसंध्यासमय अँदेशनि। क्योंबनवसै बापुरे चातकबधिकनं काजबधेसनि।नगरएक नायकबिनसूनोनाहिन काजसवेसनि। सूरसुभाय मिटतक्योंकारे जिहिकुलरीतिडसेसनि१०२ मधुकर जानतहै सबकोऊ। जैसे तुमअरु मीततुम्हारेगुणनिनिपुणहौ दोऊ।पाकेचोरहृदयकेकपटीतुमकारेअरुवोऊ।सरबसुहरतकरतअपनो सुख कैसेहू किनहोऊ।परम छपिराधेरेवनजीवन उबरतनाहिनसोऊ सूरसनेहकरैजो तुमसों सुकरेआपबिगोऊ १०३ मधुकर कहाकान्हहि देखिये हमजीवतही इन नैन। देखतनहिं कछुकमलबदनकोदेहधरत सुनिबैन। अलिकुब्जापतिभयेरमापतिवहांबसैसुखदैन। सिंधुसुधाराधा सुखपीवत कहा न पायोचैन। जेहिअंगकोमल करकामिनिकेधरमन कहअसहैन। तिहिअंगगजवररदअतिभारी वसेवरणितेलैन।जिहिभुज दंडअखराड गगनशशि आलिंगितरसरैन। तिहिभुजदराड प्रचराडमहा बलमल्ल युद्धदलजैन। ये कहियो संदेश श्यामकोजे ब्रजमिटिये गैन। मसिन्यारे होयँलोचनतेवे सुरसुजानकेसेन१०४ मधुकरकहियत बहुत सयाने। तुम्हरीमति कापै बनिआवै हमरेकाज अयाने। तैसोइतू तैसो तेरोठाकुर एकाहिबरनहिबाने। पहिलेहिप्रीति पिवायसुधारस पाछे योग बखाने। एकसमय पंकज रसबासे दिनकर अस्तन माने। सोइ सूरगति भई यहांहरिबिनहाथ मीड़ि पछिताने १०५ मधुकरकहत सँदेशो भूलहु। हरिपद छांड़िचलो तातेतुम प्रीतिप्रेम भ्रमभूलहु। नहिं या उक्ति मृदुल श्रीमुखकी जे तुम उरते भूलहु। विलज जुबदन होत या उच्चरत जे संधानिनि मूलहु। उत बड़ठौर नगर मथुराको इतै तरणितट कूलहु। उत महराज चतुर्भुज सुमिरहु इत किशोर नँददूलहु जे तुमकही बड़े न की बतियां ब्रजजननहिं समतूलहु। सूरश्यामगोपी सँग बिलसे कराठधरे भुजमूलहु १०६ ॥ रागसोरठ ॥ मधुकरयहां नहीं मनमेरो गयोजो संग नन्दनन्दनके बहुरिनकीन्होफेरो। लयो नयन

मुसकानिमोकहेंकियोपरायो घेरो। लैंघ्योजाहिभयो जश ताकेबिसरे उवाय बसेरो। कोसमुभ्काय कहेंसूरजसों रसबसकाहूकेरो। मन्देपरेउ सिधारि अनलखे यहनिर्गुणा मनतेरो१०७मधुकर रेरे मदमतवारे। कहा कोजैवा निर्गुणासों चिरजीवहु कान्हहमारे। लोटतपीत परागकीचमें नीचन अंगसमारे। बारम्बार सरकमदिराकी अपसरकहत उघारे। तू जानत रेरीसी बह्मी जिहिके तुम अलिप्यारे। घरीपहर सबक्यों बिर• मावत जेतक आवत कारे। श्यामशरीर नीरुरुह लोचन यशुमति नन्द दुलारे। तन मन सूर श्यामको अर्प्यो काके लेहिं उधारे १०८ मधु• कर अब हम समुझभई कमलनयनके अंग अंगप्रति उपमान्यायदई। कुंतल कुटिल भंवरभर भावर मालति भुरेलई। तजत नगहरु कियो कपटीजन जानी निरसगई। आनन इन्दु बिमुख सजिसंपुट करते नहीं नई। निरमोही नवनेह कुकुमुदिनि अन्तहुहेसहई। तन घन सजलसेज निशि बासर रटि रसना छिजई। सूर बिवेकहीन चातक मुख बूंदो सो नसई १०९ मधुकर हमहींको समझावत। बारम्बारज्ञानगाथाब्रज अबलन आगे गावत। नंदनन्दनबिन कपट कथा कहि कहि कतरुचि उपजावत। स्रकचन्दन दुखआनि तुषारतकहि कैसे सचुपावत। देखि बिचारि तुहीं अपने जिय नागर हजु कहावत। सब सुमनन फिरि फिरि नीरस करि काहेको कमल बंधावत। कमलनयन कर कमल बदनहे रहे कमल बर भावत। सूरदास प्रभु अलि अनुरागी काहे को शेष सुधावत ११०॥ रागधनाश्री॥ मधुकर को गोपाल कहां को वासी कासोंहै पहिंचानि। तुमधौं संदेश कौनके पठये कहत कौनसों आनि। अपनी चांड आनि उडिबैठेउ भंवर भलोरस जानि। केवह बेलि बढी की सूखी तिनको कह हित हानि। प्रथम वेगु बन हरत हरिगा मन राग रागिनी ठानि। जैसे बधिक बिसासि बिवश करि बधत बिषम शरतानि। पयप्यावत पूतनाहनी छबि बालि हन्यो बलिदानि। सूर्प• नखा ताडका निपाती सूरश्याम यह बानि १११ मधुकरके पठयेते तुम्हरी व्यापक न्यू नपरी। नगरनारि मुखछबितन निरखत हैंबातियां बिसरी। ब्रजको नेह अरु आप पर्गाता एको ना उबरी। तृतीय पंथ प्रगटभयो देखियत जब भेंटी कुबरी। यहतो परम साधु तुम डहक्यो

इन यह मन नवरो। जोकछु कहेउ सुनिचल्यो श्रीमधुकर योग युगति उचरी। सूरदास प्रभु ताकहँ कहिये प्रीति भली पसरी। राजमान सुख रहै कोटिपै धीय न एकघरी ११२॥ रागआसावरी॥ मधुकर बाल बचन कत बोलत। तनक तोहिं न पत्याऊं कपटी अन्तर कपट नखोलत। तू अति चपल अलपको संगी बिकल चहूंदिशि डोलत। माणिक कांच कपूर खल कुटिल एक संग क्यों तोलत। सूरदास यह रटत बियोगिनि दुसह दाह क्यों झोलत। अमृत रूप आनन्द अंगनिधि अनमिल अगम अमोलत ११३॥ रागकेदारो॥ मधुकर मीत नहींसंसार। जहँ जाको सुख लोभ बढतहै तहँताको अनुसार। तौलों लपटिरहत अम्बुजपर हिमकर जनित तुषार। नेकुकप्रभा प्रकट दिनकरकी तत्क्षण तजतब्योहार। मृदुलमल्लिका ऐसी सुनिअलि कुसुमकरत जिहि भार। स्यहि मर्दन करि गन्धलेप पुनि मदनरचत बकसार। नाना स्वाद करत नित भोजन एकहि दिवस अबार। तत्क्षण हस्तचरण गति शिथलित पंथ न पेड पसार। बिषयो भजन त्रिया अँग जबहीं तबत्यागत उरहार। भोरभये निकसत अन्तरकरि गिरि सरिता प्राकार। कहिहैंधौं कौनहेतु हरिगोकुल प्रकटकियो अवतार। काकेहेतु लई कर मुरली अंगरूप शतमार। सूरश्याम ऐसी न बूझिये जहँ नित अटल बिहार। बिरदघटतु किहिको तुमदेखहु यहकछुकरौ बिचार ११४॥ रागसारंग॥ मधुकरदेखि श्याम तनतेरो। हरि मुखकी सुनि मीठी बातें डरपतहै मनमेरो। कतहोचरण छुवतरसलम्पट बरज तहौ बेकाज। परशतगात श्रवणकुच कुंकुम इतनोकरि कछुलाज। बुधि विवेक बलबचन चातुरी ते सब चितै चुराये। सो उनको कहो कहा बिसारेउ लाज छांड़ि ब्रजआये। अबलों कौनहेतु गावतहैं हमआगे यहगीत। सूरसतेसोंधारि कहाहै जोपै त्रिगुण अतीत ११५ मधुकर काकेमीत भये। दिवस चारि की प्रीति सगाई सो लै अनत गये। डहकतफिरत आपनेस्वारथ पायंड औरठये। चाड़सरे चिन्हारेमेटी करत जो प्रीतिनये। शिरहिउचाटिमेलि गयेरावल मनहरिहरिजुलये। सूरदास प्रभुदूत धरमठगि त्रियकेबीज बये ११६ मधुकर कहांपढी यहनीति। लोकवेद श्रुति ग्रंथ रहित सब कथा कहत बिपरीति।

जन्मभूमि ब्रज जननि यशोदा क्योंहि अपराध तजी। अति कुलीन गुणरूप अमितसब दासीजाय भजी। योगसमाधिगूढ श्रुति मुनिमग क्योंसमुझिहै गँवारि। ओपैगुण अतीत व्यापक तो तोहिं कहा॰ डारि। बहुरे मधुप कपट स्वारथ हित तजि बहु बचन बिशेषि। मन क्रम बचन बचति यहि नाते सूरश्याम तन देखि ११७ मधुकर होहु यहांते न्यारे। तुम देखत तन अधिक तपतहै अरुनयननकेतारे। अपनो योग सैंति धरि राख्यो यहां लेत को डारे। तोको जनु अपने सुखकरिहैं मीठेतेपुनि कारे। हमरे गिरिवरधरके नाम गुणबसेकान्ह उर बारे। सूरदास हम सबै एक मत तुम सबखोटे कारे ११८॥ रागनट॥ मधुप बिराने लोग बटाऊ। दिन दश रहत काज अपने को तजि गये फिरे न काऊ। प्रथम सिद्धि पठई हरि हमको आयो ज्ञान अगाऊ। हमको योग भोग कुबजाको वाको यहै स्वभाऊ। कीजै कहा नंद नन्दनको जिनके है मतभाऊ। सूरदास प्रभु तन मन अर्प्यों प्राण रहैं की जाऊ ११९॥ रागसारंग॥ मधुकर महाप्रवीण सयाने। जानततीनि लोककीबातैं अबलन काजअयाने। जेकच कनक कचोरा भरि भरि मेलततेल फुलेल। तिनकेशनको भस्म बतावत टेसूकैसो खेल। जिन केशन कुबरी गहिसुन्दर अपनेहाथबनाई। तिनको जटाधरनकोऊधो कैसेकै कहिआई। जिन श्रवणन ताटंक खुभी अरु कर्णफूल खुटिलाऊ। तिनश्रवणन कश्मीरी मुद्रालटकनचीर झलाऊ। भालतिलक काजरचखनासा नकबेशरि नथफूली। तेसब तजिहमरे मेलन को उज्ज्वल भस्मीखूली। कंठसुमाल हारमणि मुक्ता हीरा रत्न अपार। ताहीकंठ बाँधिबे कारण शृङ्गीयोग सिँगार। जिहिमुख गीतसुभावत गावतकरत परस्पर हास। तामुख मौनगहे क्योंजीवहिंघूंटे ऊरधश्वास। कंचुकिकसीनि कपटघसि चंदनसारी सारसचन्द। अब कंथा एक अति गूदर क्यों पहिरे मतिमन्द। ऊधो उठोसबै पालागैं देख्योज्ञान तुम्हारो। सूरदास मुख बहुरि देखिहैं जीजो कान्ह हमारो १२० मधुकर कौनदेशते आये। जबतेक्रूर गयोलै मोहन तबते भेदनपाये। जाने सखासाधहरिजूके अवधबचनको आये। अबयाभाग नंदनंदन के य। स्वामितकोपाये। आसन ध्यानवायुअवरोधन अलिलनमन अतिभाये।

हैबिचित्र अतिशान सुलच्छणा गुणीयोगमतगाये । मुद्राशृङ्गी भस्म त्वचामृगब्रजयुवती ललताये। अतसीकुसुम बरणामुखमुरली सूरश्याम किनिलाये १२१ मधुकरकान्ह कहीतेनहोहीं। कीधैंनई सखीसिखई हैनिजअनुरागबिरोही। सचिराखीकूबरी पीठिपरयेबातैं चकचोही। श्यामसुगांहकु पायसखीरीछारि दिखायेगोही। नागरमंगिसों भागसंगरजेजगयुवतीहँसिमोही। लियोरूप दैज्ञानठगोरीभलोठग्योठगवोही। हैनिर्गुण सरबरि कुबरीअब घरीकरो हमजोही। सूर सुनागरि नयोगनहिं जिनिजिनहिं आजसबसोही१२२॥रागसोरठ॥मधुकरअवधैं कहाकरेउ चाहत। येसबभई चित्रकी पुतरी शून्यशरीरहि दाहत। हमसें तोसें बैरकहाअलि श्याम अजाभयो राहतु। झारिझूरि मन कतहरिलैगये बहुरि पयारहि गाहतु। अबतौ तोहिंमलतको गहिबो कहधमु करितूलैहै। सूरजकोरह मध्यहोरहै तो अपनो कियो तूपैहै १२३ ॥रागसारंग॥ मधुकर जायकहेउ सुनिमोरो। पीतबसन तनश्याम साजकरि राखति परदातेरो। रहिब्रजके उपदेशन लायक त बरहेउ करिझेरो। इतमान यहसखीमहाशठ छांडत नाहिंनकेरो। ऐसी बात कहैत तासेंहारिजुकहिबेलायक। इहां यशोदाकुंवर बिराजेंसगासंग प्रतिसुख दायक। जोतुम पुष्पपराग छांडिकै करौग्राम बसवास। तौ हमसूरयहौ करिदेखैं क्षणायक छांडैपास १२४ मधुकर आवतइहैपरेखो। ज । योगयज्ञ तपदान नेमब्रत करतरहे होजात। क्योंहूं सुत जोबहेउ कुशलसें कठिनमोहकी बात। करणीप्रकट प्रीतिपिककीरतिअपनेकाजलोंभीर । काजसरेउ दुखगयो कहोवौंकहँबायसकोबीर। जहँजहँ रहेराजकरोतहँतहँ तेउ कोटिशिरभार। यह अशीश हमदेति सूरसुनि न्हातखसो जिनिबार १२५ मधुकरप्रीतिकियेपछितानी। हमजानीऐसी निबहैगीउनकछु औरैठानी। कारेतनको कौनपत्यानो बोलतमधुरीबानी। हमकोलिखि लिखियोग पठावत आपुकरत रजधानी।सूनीसेज श्यामबिनुमोकोतलफतरैनि बिहानी। सूरश्यामप्रभुमिलिकैबिछुरेतातेभतिजुहिरानी१२६ ॥रागकेदारो॥ मधुकर अबसेरोको बोलैसाखि। येसब हरिके संगसिधारे अबलगि रहत न राखि। रूपरंग रससबै परानो बचन न आवत

भाषि। प्राण उदान बसत तब मैं
जीवनमरि मकुन्दहि लैआईइहांआँखि। घरीघरी घसिदेतअँजनमसि
ओररही। नारिअयोगअ-
।विवेक बोहितचढिअसुकारितो
शिवचेत परी। जीवन अति सुकुमार अधीरज युगतिन जातितरी। आपु निराश कछुचलै नआवै लहरि नउठैसमाय। भासिक भँवरभेद देखियतहै मनसा तहो नजाय। गुण अवलंबु कहै नहिं कोई तुमहू निगुण सुनावहु। मनमोहन बिनुकल न परत जिय बेगइ श्याम को ल्यावहु। साधन किये लालमणि माणिक मुक्तारतन अमोल। प्रेमवृ सफलचारि सदाफल निर्भय अमित अडोल। सुमिरण ध्यान श्याम छायाकरि मनमोहन प्रभुनागर। दुस्तर सूरतरहिं क्यों अबला चयुज ल सरिता सागर १२८॥ रागमारू॥ मधुकरको संगतितें जनियत बंश सर्नचितयो। बिनसमझे कह कहति सुन्दरी सोइ मुख कमल गहेउ।
।ल कोनारि। आलापहु गावहु
।नाचहु दाउँधरै लै ।जुआकियो ब्रजमंडल यहहरि जीति अव धि सोंखेलि। हाथपरेउ सुगयहु चपलत्रिया कहा सदनमें हेलि। सुनो कर्मकियो मातुलबधि मदिरा प्रमदु प्रमादु। सूरश्याम एतेऔगुणमें निर्गुणते अतिस्वादु १२९॥ रागसोरठ॥ मधुकर तुमतौ अतिबड़ भागी। अपरस रहत सनेह तगादै नाहिन तुमअनुरागी। पुरइनिपत्र रहतजल भीतमरजतनहिं नवनागी। ज्योंजल सिकत तेलकी गागरि बूंदन ताकोलागी। प्रीति नदीमें पाउँन बोरेउ दृष्टिनरूप अनुरागी। सूरदास अबला हमभोरी गुरचींटी ज्योंपागी १३० मधुकरजो आवतेदूर। योग सिखावन कोहम आयो बड़ोनिपट तकूर। जाघट रहत श्यामघन सुन्दर सदा निरंतरपूर। ताहि छाड़ि क्यों शून्य अराधै खोवै अपनो नूर। ब्रजमें सबगोपाल उपासी कोउन लगावे धूर। अपनो नेम सदा जोनिबाहै सोई कहावे सूर १३१ ॥ रागसारंग॥ मधुकर योग बिरंचि जिनिजाहु। बाँधहुगाँठि छूटिकहुं परिहै फिरिपाछे पछिताहु। ऐसी बात अनूपम ऊधो मर्मन जानै और। ब्रजबनिता के नाहिं प्रेमको तुम रहिये यकठौर। जोतुमहमैं लैआये ऊधो सोहम तुमपै लीन्हो। सूर

दासनारि असविप्र को करहि बन्दना कीन्हो। १३२ ॥ रागसोरठ ॥ मधुकर सुनहु लोचन बात। सहतरोके अंगसब पे नयन उड़ि उड़िजात। ज्यों कपोत बियोग आतुर असतहे तजिवाम। जाल हूं ज्यों फिरि न आवत बिना दरशे श्याम। रहे मन्दि कपाट पल दोउ भये घूंघट ओट। श्वास सत ज्यों जात कितही निकसि मन्मथ फोट। श्रवण सुनियश रहत हरिको मनरहत धरिध्यान। रहत रसना नाम रटिपै इनहिं दर्शन हान। करत देह बिभाग भामिनि जो कछुसब लेत। सूर दरशन्हीं बिना यह पलक चैननदेत १३३ ॥ रागगौरी ॥ मधुकर जोहरि कहीकरैं। राजकाज चितदियो सांवरे गोकुल क्यों बिसरैं। ज्यों ज्यों घोषरहे हम तिहिलों संतत सेवाकीन्ही। बारक कहै उलूखल बाँधे उहैकाँधि जिय लीन्ही। जोहम कोटिकरैं ब्रजनायक बहुतैराजकुमारी। तौएइ नन्द पिता कहँमिलिहैं अरु यमुमति महतारी। गोवर्द्धनकहँ गोप वृन्दसबु कहँ गोरस सचपैहैं। सूरदास अबसोइकरिये बहुरीहूले ऐहैं १३४ ॥ रागबिलावल ॥ मधुकर भल आये बलबीर। दुर्लभ दर्शन सुलभपाये जानिहो परपीर। कहत बचन बिचारि जिय बह सोधिहो मनमाहिं। प्राण पतिकी प्रीति ऊधो है कि हमसों नाहिं। कौन तुमसों कहैं मधुकर कहन योगी नाहिं। प्रीति की कछु रीति न्यारी जानिहो मनमाहिं। नयन नींद न परैं निशिदिन बिरह बाढीदेह। कठिन निर्दय नन्दके सुत जोरि तोरेउ नेह। कहा तुमसों कहैं षटपद हृदय गुप्त कि बात। सूरके प्रभुक्यों बनैज्यों करहि अबलाघात १३५ मधुकर यहकारेकी रीति। मनदै हरत परायो सर्बसु करै कपटकी प्रीति। ज्यों षटपद अम्बुज के दलमें बसत निशा रति मानि। दिनकरउये अनतउड़ि बैठे फिर न करत पहिंचानि। भवन भुजंग पिटारे पाल्यो ज्यों जननी जियतात। कुल करतूति जानि नहिं कबहूं सहज डसि भजिजात। कोकिल काग कुरंग श्यामकी क्षण क्षण सुरति करावत। सूरदास प्रभुको मुख देख्यो निशि दिनहीं मोहिंभावत १३६ ॥ रागसोरठ ॥ मधुप तुम कहा इहै गुण गावहु। येप्रिय कथा नगर नारिनसों कहहु जहाँकछु पावहु। जानत मरम नन्दनन्दनको और प्रसंग चलावहु। हमनाहीं कमलासी भोरी करि चतुराई

मनावहु। जिनि परशे अलि चरण हमारे बिरह ताप उपजावहु। हमनाहीं कुबिजासी भोरी करि चातुरी दिखावहु। अति विचित्र लरिका की नाईं गुरु दिखाय बौरावहु। सूरदास प्रभु नागरि मनसें किहिबिधि आनि मिलावहु १३७॥ रागकेदारो॥ मधुकर पीत बदन किहि हेत। जनि अन्तर मुख पांडुरोग भयो युवतिन योग दुखदेत। रसमय तनमन श्याम धामको जो उचरे संकेत। कमलनयनके बचन सुधासे करण घूंट भरिलेत। कुत्सित कटु बायक सायकसे को बोलत रसखेत। इन चतुरीते लोग बापुरे कहत धर्मकी सेत। माथेपरो योग पथ ताके बक्ता छपद समेत। लोचन ललित कटाक्ष मोक्षबिन महिमा जिये निकेत। मनसावाचा और कर्मणा श्यामसुंदरसों हेत। सूरदास मनकी सब जानत हमरे मनहिं जितेत। १३८ मधुकर मधु मदमातो डोलत। जिय उपजत सोइ कहत नलाजत सधे बोल नबोलत। बकत फिरत मदिराके लीन्हे बारबार तनघूमत। क्रीडारहित सबन अवलोकत लताकली मुख चूमत। अपनेहू तनकी सुधि नाहीं परेउ आनही कोठो। सावधान करिलेहिं अपनपौतुमहींसों करि गोठो। मुखलागी पराग पीक की डारत नाहिन धोई। तासों कह कहिये सुनि सूरज लाजडारि सब खोई १३९ मधुकर ये सुनि तन मन कारे। कहूं न प्रवेत सिद्धताई तन परखे अंग तुम्हारे। कीन्हो कपट कुंभबिच पूरण पयमुख प्रकट उघारे। बाहिर बेष मनोहर दरशत अन्तरगत जुठगारे। अब तुम चले ज्ञानविष ब्रजदै हरण जुप्राण हमारे। तेक्यों भलेहोहिं सूरज प्रभु रूप बचन क्रतकारे। १४०॥ रागसोरठ॥ हनु मधुप कौनको कृतकाज कौन पायो। राजरिपु चमू ध्वंसी पैठि जनपद दियो जीति बिन कपट दुन्दुभि बजायो। सुभटते सुभटगण जीति रबि बश भये फिरउ नृप दशहु दिशि दौं लगायो। ऐसी करुणा किये लेत बिच राखिके सन्मुख सेनसजि सचिव धायो। बसी अजल साजि बाजिन बहु तूर भुव कहा करै ईश पशुहि ठहरायो। नवल बयबेष सम शील गुणरूप सम गवनको हेतकछु मन सुनायो। इतहि जे कपट कपटी क्षिती नाथसों कहौ तुम कहा लिनसे बसायो। सूर संयोग रस धर्मके हेतु जे प्रीतिके हेत तन तन बनायो १४१॥ रागसारंग॥ मधुकर तुम रसल-

कपट लोग। कमल कोशमें रहत निरन्तर हमहिं सिखावत योग। अपनेकाज फिरत ब्रजअन्तर निमिष नहीं अकुलात। पुहुपगये बहुरी बेलिनके नेक ननेरे जात। तुम चंचल हम चोरमकल अँग बातन क्यों पतियात। सूर बिधाता धन्य रची जो मधुप श्याम यक गात १४२ मधुकर कासों कहि समझाऊं। अंग अंग गुणगहे श्यामके निर्गुण काहि गहाऊं। कुटिल कटाक्ष बिकट शायक समलागत मर्मनजाने। मरमिगयेउरफोरि पिछाहेपाछेपै अहटाने। घूमतरहतसम्हारत नाहि यफेरिफेरि समुहाने। टूकटूकह्वै रहे ठोरगहिपाछे पग न पराने। उठत कबन्ध युद्ध योधा ज्यों बादर सन्मुख हेत। सूरश्याम वा अमृत दृष्टि करि सींचि प्राण फल देत १४३ मधुप तुम देखियत हो चितकारे। कालिन्दी तटपार बसत हौ सुनियत श्याम सखारे। मधुकर चिहुर भुजंग कोकिला अवधि नहीं दिन टारे। वे अपने सुख ही के राजा तजियत यह अनुहारे। कपटी कुटिल निठुर हरि मोही दुख दे दूरि सिधारे। बारक बहुरि कबहिं आवहिंगे नयनन साध निवारे। उनकी सुनै सो आप बिगोवै चित चोरत बटमारे। सूरदास प्रभु क्यों मनमानै सेवक करत नन्यारे १४४ मधुकर को मधुबनहिंगयो। काकेकहे संदेश लैआये किन लिखि लेखु दयो। को बसुदेव देवकीनन्दन को यदुकुलहि उजागर। तिनसों हम पहिंचानी नाहिन फिरि लैदीजहु कागर। गोपीनाथ राधिकावल्लभ यशुमति नंदकन्हाई। दिन प्रति दान लेत गोकुलमें दूनीरीति चलाई। तुमतौ परमसयाने ऊधो कहत औरकी औरै। सूरजदास पंथके बहँकेबोलतही ज्यों बौरै१४५एकबातह्वै भांति अटपटे कहौ अलि कहा बिचारे। हरि मधुपुरी रहे जो थिर ह्वै हम दिन क्योंकरि टारे। ब्रजबानक गति और भईहै पूरब दिशा निहारे। सुखकर सब प्रतिकूलभयेते क्यों हरि इत पगुधारे। मधुप सकल खग कटक बदन अब चन्द अगिन अनुसारे। सुमनबाण सम गुहा कुंजगृह धूम मरुत तनजारे। पलटभयो ब्योहार देखियत को दुख दुखते टारे। समाधान नहिंहोत कौनबिधि करत बहुत उपचारे। हमसों कोटिकहैं या ब्रजमें बकौ नन्दकुमारे। सूरजश्याम तहां रहौ तौलों जौलोंदुरति निकारे १४६ ॥ रागसोरठ ॥ ये अलि हमैं अँदेशोआवै। कौन गुनाह योग

लिखि पठयो सोऊ कहि समुझावै। जो अँगरचे बसन आभूषण कैसे भस्म चढावै। कबरी केश सुमन गुहिराखे सो क्यों जटा बनावै। सब बिपरीत कहत तू हमसों सो कैसे चित आवै। सुन्दर श्याम कमल दललोचन सूरश्याम मोहिं भावै १४७ तूअलि कहत कहा समुझाय। हमरे चित सकौ नहिं आवै जोइ कहत तू गाय। हमरे हृदय बसत मनमोहन सुन्दरश्याम शरीर। तू जो कहतहै शून्य अराधन जैसा छीलर नीर। जा अँग चन्दन कुंकुम चरचे तहाँ चढावनक- हतहैाछार। सो तजि हम कबहूं न लगावैं सुनि शठ सूरगँवार १४८॥

श्रीहरिगोपिनको बिरह और भ्रमरगीतको प्रस्ताव॥

रागसारंग॥ बारक नयननहीं मिलिजाहु। कमलनयन घनश्याम राधिके परशत जो न पत्याहु। जानत होकर कमल बिरोधी बरुण बिरोधी बाहु। मुख शशि शक्र पयोधर गिरि अति तहँ तुम कोनवश माहु। गति गज मंद मराल बिरोधी रूचि रिपु हेम सुदाहु। कदलि जंघकटि सिंह बिरोधी नाथ निरखि अकुलाहु। चौन्हिरहे चितजोर सकल अँग सकौ सुफल नसाहु। तदपि सूर इनकी रुचि राखहु तुम जानि अधिक डराहु १४९ बातें बूझत यों बौरावत। सुनहु श्याम वे सखी सयानी पावस रावे चिह्न सुनावति। घन देखत गिरि कहत कुशल मति गरजत गुहा सिंह समुझावति। नहिं दामिनि द्रुमदवा शैलपर रत बयार उलटा झर धावति। कबहुंक दादुर मोर बकत बन ग्वालमंडली खगन खिझावति। नहिं नभ वृष्टि झरत झरनाजलपरि परिबूंद उचटि इत आवति। कबहुंक प्रकटपपीहाबोलत कहिकुपक्षि करतनी बजावति। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको वह बिरहिनि एतो दुख पावति १५० माधो एते यतन तब तुम काहेको कियो। अपने जान जानि यदुनन्दन बहुत डरनते राखि लियो। अघ बक वृषभ ब- सगा बंधन ते बयाल जीति दावानल पिये। इन्द्रमान देत्यो गिरिकर धरि सगा सगा प्रति आनन्द दिये। बिछुरन की हम बात न जानी बचन मानि तब बादि जिये। सूरदास अजहूं वह लालच रहतहै कठिन कठोर हिये १५१ देखियत कालिन्दी अति कारी। कहियो पथिक

जाय हरिसों यों भई बिरह जुरजारी। मनो पलिका ते परी धरणि धसि तरँग तलफ तनुभारी। तट बारू उपचार चूर मनो स्वेद प्रवाह पनारी। बिगलित कच कुस कास पुलिन मनो पंकज कज्जल सारी। भ्रमर मनो मति भ्रमत चहूंदिशि फिरतिहैं अंग दुखारी। निशिदिन चकई ब्याज बकत मुख किनि मानहु अनुहारी। सूरदास प्रभु जोय-मुना गति तेगतिभई हमारी १५२ सखीरी श्याम कहाहित जानै। जो कोउप्रीति करै कैसेहू हठि अपने गुण ठानै। देखो तो जलधरकी बातें बरषतअपने जानै। चातक सदा चरणको सेवक रटतबिना जलपानै। भ्रमरकुरंग काग कोकिल अहि कबि सब कपटबखानै। सूरदास जो सर्बसदीजैकारे कृतहि न मानै१५३ अबयह यों लागेदिनजान। सुमिरत प्रीतिलाज लागतहै उरभयो कुलिश समान। लोचन रहत बदन बिनु देखे बचनसुने बिनुकान। हृदय रहत हरिपाणि परशबिनु बधत न मनसिज बान। मनोसखी मनहिं हमारे वे पहिले तनप्रान। आजु समेटि रचिचले नंदसुत बिरहसृष्टि ब्रजआन। बिधिबछ हरेबहुरि इन कीन्हे वैसेइबेणु बिषान। सूरदास वैसीकछुएऊसमुझतिहौं अनुमान१५४ हैं। मोहनकेबिरह जरीरी तू कतजारत। रेपापी पशुपक्षि पपीहा पिय पियकरि अधरात पुकारत। सबजन सुखी दुखी तूजलबिन तउअन-तनकीतपति बिचारत। करतनकछु करतूतिन ऊपर गूढमृतक अबल-निशर मारत। रेसठ संतापत औरनिको यहिआरति अपने जिय आ-रत। सूरश्याम बिनु ब्रजपर बोलत काहेको अगिलो जन्म बिगारत १५५यहि बिरियां बनते आवते। दूरिहितेबरबेणु अधरधरि बारंबार बजावते। कबहुंक कैसीभांति चतुरचित अतिऊंचे सुरगावते। कबहुंक धौरीधेनु मनोहर लैलैनाम बुलावते। यहिमिसि नाउंसुनाय श्यामघन मुरछे मनहिं जगावते। आगम सुख उपचार बिरहज्वर बासर अंतन-शावते। रुचिरुचि प्रेमप्रिया सैनहिंदै क्रम क्रम बलहि बढावते। सूर सकल रसनिधि निजदरशन पुनिपथ प्रकट करावते१५६अबकछुऔरै होचली। मदनगोपाल बिना याब्रजमें सबैबात बदली। गृह कन्दरास-मान सेज बिष सिंहहु चाहिबली। शीतल चन्दहुतो सखि कहियत तिनहूंते अति अधिक जली। मृगमद मलय उसीर कुमकुमा सींचहि

आयअली। मको क्रिया बिरहजुरतेकछु लागतिनाहिंभली। बहरति अमृत लता सुमि सुरज अधि बिधि फलनि फली। हरिबिध बिमुख कबहुं नहिं बिकसे मनसा कुमुद कली १५७ बिचारततही लागे दिन जान। तुमबिन नन्द सुवन यहि गोकुल निशिभइ कलप समान। मुरली शब्द धेनुकीबोलनि सुनियत नाहिन कान। चलत न रथपर गहेश्याम यों तब लागी पछितान। है कोउ जायकहे माधव सों धीरन धरहीं प्रान। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन ह्वैहै निपट बिनान १५८ सुनियत मुरली देखि लजात। दूरिहुते सिंहासन बैठे शीशनाथ मुसकात। सुरभी लिखी चित्र भीतिन पर ताहि देखि सकुचात। मोरपंख को बिजन बिलोकत बौरावत कहि बात। हमरी चरचा जो कोउ चालत चालत ही चपिजात। सूरदास ब्रज भले बिसारेउ दूध दही क्यों खात १५९ तबते इन सबहिन सचु- पायो। जबते हरि संदेश तुम्हारो सुनत तवारो आयो। फूले ब्याल निकसि दरते अब पवन पेटभरि खायो। गहबरते गजराज निकसिके अँगअँग गरबु बढ़ायो। सघनगुहाते निकसि केहरी माथे पूंछडुलायो॥ सकल बिहंगम कही कौनकी सुकौनराउ कहायो। अब जिनि गहरु लगावहु नागर जौं जिय चाहत ज्यायो। सूरदास अब भयो देखियत बैरिनको मनुभायो १६० या बिनु होय कहा यह सूनो। लै जु प्रकट कीन्हो प्राचीदिशि बिरहिनको दुख दूनो। सुर आसुर निरदय भये सखिरी सायरसर्प समेत। काहु न करी कृपा इलननि में त्रियतन बन दव देत। धन्य कुहू बरषातम चुर खग अरु कमलनको हेतु। जीवहु जरा बापुरो युगजो जुरेराहु अरु केतु। निरखि चन्दतन हसुरिप्रयाम घन बिकलभई ब्रजबाल। सूरदास प्रभु अपने ब्रज पर काहे न होहु कृपाल १६१ अब मोहि निशि देखत डरलागत। बारबार अकुलाय देहते निकसि निकसि जिय भागत। प्राची प्रकट देखि पूरणशशि ह्वै जुगयो तनताती। मानहु मदन बदन बिरहिनसों केतु लियो रिस राती। लांछन छबि अधिकार जनावत अति बलकरि शर साधतु। मानहु किरणि पसारे पासनि हठे बियोगनि बांधतु। सुनि शठ सुदै प्राण अति मेरो याको सबजग जानतु। सूरसिन्धु बूडेते काढ्यो तिन-

हुंके कतहि नमानहु १६२ श्यामसों नेक दिखाई देहु। या तनते दर-
शनके बदले जो भावे सोलेहु। भूलीरही ठगोसी चितवति लगी आस
गुणगेहु। जबतेबन अविवेकी बयननि हठकत कियोसनेहु। कहियो
पथिकजाय पालागों विरहकियो तनखेहु। सूरदासप्रभु प्राणपथिक
को तुमहिं निहारो लेहु १६३ कहियो सुख संदेश अरु हाथ दी-
जियो पाती। समयजानि यहबात चलैगी सुखहोमांझ सुहाती। तब
हम प्राण समर्पणकीन्हे गनेनहीं दिनराती। सुमतिबही नँदनन्दनसेहैं
लै जुरहे मनघाती। जो कोउ साखी तबहीं करती तो कत हम
पछिताती। सूरदास प्रभु मुकर जाय अब संग लिवायो जाती १६४
लोचन व्याकुलहैं दोउदीन। कैसेरहैं दरश बिनुदेखे बिधु चकोरज्यों
लीन। बिवरण भे खंजन निदाघ ऋतु ज्यों बारिज जलहीन। श्याम
सिंधुते बिछुरि परेहैं तरफरात सनोमीन। ज्यों ऋतुराज बिमुखअलि
कोकिल वानोदिन दिनखीन। सूरदास प्रभुबिनु गोपाल अब कतबिध-
ना यहकीन १६५ अब ब्रजभयो धरणिते स्वर्ग। तब गिरिपर थे अब
इनपर गिरि प्रीति कियोंया दुर्ग। सूर असुर छबिबालि वारिगढ़अन्न
अवधि मतिखूटी। प्रिय प्रति बिरह मदन चहुंउयोरी सको अलँगन
टूटी। नयन तड़ाग अवगामठ मरति थंबसकति बरबानी। राधै केलि
पोरिया मानहु देखि परम रजधानी। सोरंभन गोला गर्जनि अतिधुम
धोंधिनभ रोको। जटक रोम कँगुरनि प्रतिमानो अपनी अपनी टो-
की। चढ़त त्रिभंगी श्याम साजिदल खसतनहीं पलआँखी। सोइअब
सूरसहाय हमारे गगन मराइली राखी १६६ प्रीतिकरि काहूसुख न
लहेउ। प्रीतिपतंग करी दीपक सों अपनो प्राणदहेउ। अलिसुतप्री-
तिकरी जलसुत सों संपुट मुखहि गहेउ। शारँग प्रीति जु करी नींद
सों निकटहि बान सहेउ। हमहूं प्रीतिकरी माधव सों चलत न कछु
कहेउ। सूरदास प्रभु बिछुरे राधिका नयनन नीर बहेउ १६७ अबनि-
ज नयन अनाथ भये। मधुबनते माधव सुनि सजनी कहियतु दूरिग-
ये। मथुरा बसत हुती उरआशा यहलगते ब्योहार। अबमन भयेभी-
मके हाथी सपनेहु अगम अपार। सिंधुकूल इकदेश कहतहैं ताहिहा
रका नाउँ। यहतनुसौंपि सूरके प्रभुको आजुवहां उड़िजाउँ १६८ नेक

हु शोच न काहू कीन्हो।सुनि ब्रजनाथ सबनके औगुण मिलि मिलि यह दुख दीन्हो। ऋतु बसंत अनुसमय अधम मति। पिकसहाय लै धावत। प्रीतम संगजानि युवतिन सुख बोलेहूनहिंआवत। सदाशरद शशिसकल कलालै सन्मुख रहतजुन्हाई। कोशाशिपक्षकुहू बीतेबिनु कबहुं न देत दिखाई। त्रिबिध अनिल सौरभ सुमनसयुत मत्तमधुप गुंजार। ज्योंज्यों रच्यो सुकियो बांधिबल तजिमन सबैबिचार। रति पतिअति अनीति करिकोप्यो कोटि धूमध्वज मानु। लैकर धनुष चितैतुम्हरो मुख अबकरलेतुहै जानु। भलीकरी गोकुल फिरि आये नीके काल अतीति। कहाजानि वेप्रबल मल्लसों समर कौन बिधि जीति। सपनयहै कै सत्यकै सुखदुख लहत मनके अंसु। सूर स्वामी अब तुम ब्रजरहिबो बरुउत बसिओ कंसु १६९॥ रागसोरठ ॥ अबहुं रहत तनहरि जु सिधारे काहेकि प्रीति हमारे। छिदि छिदिजात बिरह शरमारैं पुरिपुरि आवत अवधि बिचारे। फटत न हृदय संदेश तुम्हारे कुलिशते कठिन धुकतहै तारे। जीवन मरण दोउ भय भारे कहियधौं सूरलाज पचिहारे १७०॥ रागमलार ॥ शिखिन शिखरचढ़ि टेरसुनायो। बिरहिनि सावधान ह्वै रहियो सजिपावस दलआयो। बादर अति बानैत पवनभयो ताजिचढ़ि अति चटकि दिखायो। दामिनिशैल समान घटायन गरजि निशान बजायो। चातक पिकशुक भंग झिल्लरी सबहिन मारू गायो। मदन सुभटलै पञ्चबानकर ब्रजसन्मुखह्वै धायो। जानि बिदेश नन्दनन्दनको अबलनत्रास दिखायो। सूरश्याम पहिले गुण सुमिरत जात प्राण बिरमायो १७१ किधौं घन गरजत नहिं उन देशनि। किधौंवह इन्द्र हठहि हरि बरज्यों दादुर खाये शेषनि। किधौंवह देश बकनमग छांडेउ धरबूढ़नि नप्रवेशनि। किधौंवहिंदेश मोर चातक पिक बधिकन बधे विशेषनि। किधौंवहि देश बालनहिं झूलति गावत गीत सहेसनि। पथिक न चलत सूरके प्रभुपै जासों कहौं संदेशनि १७२ सखीरी पावस सैन पलान्यो। पायोबीच इन्द्र अभिमानी हरिबिनु गोकुल जान्यो। दशहूं दिशाधूम देखिकै कांपतहै अतिदेह। मनहुचमू चतुरंग चलत बहुबाढ़ीहैखुरखेह। बोलतमोर शैलद्रुम चढ़िबग उड़त त्यागि डरिडाके। मनोसेन

कहराय किरावत भाजत कहतपुराके। गरजत गगनगयन्द गुंजमनो अरु दादुर दलकार। सूरदास प्रभु अपने ब्रजको काहेन लेहु सम्हार १७३ कोउसखि नईचाह सुनिआई। यहब्रज भूमिसकल सुर पतिपै मदन मिलिक करिपाई। घनधावत बगपाँति पटोशिर बैरख तड़ित सुहाई। बोलतपिक चातक ऊंचेसुर मनो मिलिदेतदुहाई। दादुरमोर चकोर बदतशुक सुमन समीर सुहाई। चाहत कियोबास वृन्दावन विधिसोंकहा बसाई। सीवनचापि सक्योतब कोऊहुतेबलकुंवरकन्हाई। अबहुनि सूरश्याम के हरिबिनु ये करिहैं ठकुराई १७४ देखियत चहुंदिशिते घनघोरे। मानहुमत्त मदनके हस्ती बलकरि बंधनतोरे। श्यामसुभग तनचुवत गल्लमद बरषत थोरेथोरे। धावतपवन महावतहूपैमुरत न अंकुश मोरे। मनहुदन्त बगपंक्ति निकसिउर अवधि सरोवरफोरे। बिनुबेलाजल निकसि नयनमग कुच कंचुकिबढ़िबोरे। तब उहिसमय आनि ऐरावत ब्रजपतिसों करजोरे। अबसुनि सूरश्याम के हरिबिनु गरतगात जैसेओरे १७५ बरषाऋतु आईहरि न मिले माई। गगन गरजि घन दामिनिदीन्ही दिखाई। मोरनिबन कुलाई दादुर लीन्हो जगाई। पपीहा पुकारसखि सुनतेविकलभाई। इन्द्रचाप चढ़ाई शायकडारे रिसाई। बिषमबूंद एतेरी याहीते सहो न जाई। पथिकपाती लिखाई बेगदीजै पहुचाई। सूरसुमतिजैसे आवहिं यदुराई १७६ सखीरी चातकमोहिं जियावै। जैसेहि पिउपिउ रटतरैनिदिन तैसेवहै पुनिगावै। पहिले बिरह जरी प्रीतम के तोऊ जीभनिरहावै। आपुनबोलि पिवाइ बिरहिनी अमृतरस बोरावै। जोन सहाइ होययह पंछीप्राण बहुत दुखपावै। जीवन सुफल सूरताही को काज पराये आवै १७७ बहुरि हरिआवहिंगे किहिकाम। ऋतुबसन्त अरु मकर बितैकै अरु बादर भयेश्याम। तारेगनत गगनके सखिरी मोहिं बिते सबयाम। घरकोकाजसबै बिसरायो सुमिरि सुमिरिपियनाम। क्षणभीतर क्षणबाहिरठाढी रुचैनतन धनधाम। सूरदास प्रभुअवधिबिसरत रहे अस्थिअरु चाम १७८ ब्रजपर बहुरोआये गाजन। जो कबहूं पतिजाइ बड़ेकी मुख क्योंदिखवत लाजन। बादरदल चहुं दिशाते उमड़े सुनियन लागेबाजन। घोष के लोग कान्हबल बिनुअब जित

तितधाये भाजन । आपुनजाय द्वारकाछाये लागेश्याम बिराजन। सूरदास गोपी क्यों जीवहिंजिनके बिछुरे साजन १७६ बहुरोबादर बरषन आये । अपनी अवधि जानि नँदनन्दन गरजि गरजि घनछाये। सुनियतहैं सुरलोकबसतहैं सेवकसदा पराये । चातक कुलकीपीरजानिके जहँतहँते उठिधाये। द्रुमकियेहरितहरषि मिलिबल्ली दादुरमृतक जिवाये। छायेनिबिड़ नीर तृणजहँतहँपंछिनहूं पतिभाये। समुझति नहिंसखि चूकआपनी बहुते दिनहरिलाये। सूरदासस्वामी करुणामयमधुबन बसिबिसराये १८०कहाअब पहिले मिलनकोनेह । हमरे जियते नँदनन्दनअब कियोअन्त कहुंगेह । एकदिवस गइगायदुहावन तहँकछु बरष्योमेह । हितकेलिये उढ़ायपीतपटकरनिजसकेदेह । अब हमको लिखिलिखि पठवतहैं योगयुगतिसुमलेहु । सूरदासबिरहिनि कोंजीवहिंकौन यतनहै येहु१८१मोको माईयमुनायम ह्वैरही । कैसे मिलों श्यामसुन्दरको बैरिन बीच बही । जबहिं श्याम उठिचले मधुपुरीकछू न बात कही । ठाढ़ीठगी रही जैसे पुतरी चलत न फेरगही। अब कहकरों कहोमेरी सजनीहों अब बिरह दही । सूरदास प्रभुदरश बिमुख भइ नेकु न सुरति लही १८२ परम बियोगिनि गोबिन्द बिनु कैसेके बितवै दिन सावन के। हरित भूमि भरे सलिल सरोवर मिटे मगमोहन आवनके । पहिरिसुहाई सबकत सुहागिनि झुंडन झूलनि गावनके । गरजत झुमरि घमंड दामिनि मदन धनुष धरि धावनके। दादुर मोर शोर शारँग पिक सोहे निशा सुर पावनके । सूरदास दिन कैसेनिघटत बिगुण किये शिर रावनके१८३मोहिं भरोसो कान्हको डरपो जिनि कोई। सुनुरी यशुमति कंस मीत ते तू जिनि व्याकुल होई। पहिलेही पूतना प्रकटके आई कुच बिष पोई। बासी प्रबल हइदिनके बालक मारी देखत तोई। केशी तृणावर्त्त अघ अरिष्ट इन देख्यो बल टोई । गिरि कर धारि घोष सब राख्यो सूर इन्द्र मद खोई १८४ हमारे माई मोरउ बैरपरे। घन गरजे बरजे नहिं मानत त्यों त्यों रटत खरे। करि इकठौर बीनि इनमें पंख मोहन शीशधरे। याहीते हमहीं को मारत हरिही ढीठकरे। कह जानिये कवन गुण सखिरी हमसों रहत अरे । सूरदास परदेश बसतहरि ये बनते न-

टरै १८५ मानो माई सबनिहूँहै भावत। तब उहिदेश नंदनन्दनपहँ कोउ-नदशा जनावत। धरत न द्रुम नव पल्लव फूल फल पिक बसन्त नहिं गावत। मुदित नसरसरोज नवअलिकुल पवन पराग उड़ावत। पावस बिबिधि बरषा बादरघन उमड़ि नअम्बर धावत। दादुर मोर चकोर नबोलत दामिनि रूप दुरावत। यह अब प्रकट निरन्तर निशिदिन बलकरि बिरह बढ़ावत। सूर बैर ब्रजनाथ नजानत क्यों सर्बज्ञ कहावत १८६ श्यामघन देखि गगनघन डरते। औसरपाय उद्यान गहन बन अपनो सेवा करते। अंग छटा नव घटा निरखिमन ब्रीड़त अल्प उचरते। वे भौं बानि मानि सौ भगता ब्रजपथ पैंड़ नभरते। गो तृण हित हरिजात तबै संग छनछांह अनुसरते। यही पुण्यते जगत जलद ह्वै दशहू दिशा बिचरते। अब बिश्वास प्रवास प्राणपति अति मद सबैसु हरते। सूरश्याम आगम आशाकरि इमन बिरमवा डरते १८७ अब कछु औरै भाय भई। निरखत बदन नंदनन्दन को और हुती सु-गई। उपजी प्रीति हृदय अंतर जड़ सप्तपताल गई। अब द्रुम पसरेउ शिखर अँबरलों चहुँदिशि छायरई। बचन सुपुत्र अंक अवलोकनि गुणनिधि पुण्यमई। सूरदास फल गिरिधर नागर मिलि रस रीति ठई १८८ नयनघन रहत न एक घरी। कबहुँन घटत सदा पावस ब्रज लागिये रहतिझरी। बिरह इन्द्र बरषावत निशिदिन ब्रजपर अधिक करी। ऊरध श्वास समीरतेज जल उरभुवि उमंगि भरी। बूड़त भुजा रोम द्रुमअंबर अरु कुच उच्चघरी। चलि नसकत पथपथिकरहे थकि चन्दनकीच खरी। रसऋतु मिटी भई अबएकै यहविधि उलटिपरी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन ऋतु मर्याद टरी १८९ ॥ रागधनाश्री ॥ रहति रैनि दिन हरि हरि हरि रट। यकटक मगजोवत चकोरलों जबते तुमबिछुरे नागरनट। भरिभरि लोचन नीरलेतिउर सजलकरत कुच कंचुकिके पट। मनहु बिरहकी बिज्जुलतालगि लयो नेम शिव शीश महसघट। जैसे यवके अग्र ओसकन प्राणरहत इमि अवधि-हिकेतट। सूरदास प्रभु सुधि किन मिलहू चलत कहे माधव सों दिन आये निकट १९० अति रसलम्पट मेरेनैन। तृप्ति न मानति पिवत कमलमुख सुन्दरता मृदुबैन। दिन अरु रैनि घरी सम पलभरि काहू

नाहिन चैन । शोभा सिन्धुसमाय कहांलों हृदय साकरो सैन। अब यह बिरह अजर उमगो अँग बिसलायो दुखदैन । सूर बैद ब्रजनाथमधुपुरी काहि पठाऊं लैन १९१ नयनन को मत सुनहु सयानी । निशि दिन तपत सिरातु नक्षणाभरि यद्यपि उमगि चलत पलपानी । हों उपचार अमित उरआनति खलभये लोकलाज कुलकानी । कछु नसुहाय दहे दर्शन दुख बारिज बदन मन्द मुसकानी । रूप लकुट अभिमान निडर ह्वै जग उपहास सहत न लजानी । बुधि बिवेक बल बचन चातुरी मनहु उलटि उनमांझ समानी । आरजपथ गुरुज्ञान गुनकरि बिकल भई तन दशा भुलानी । याचत सूर श्याम अंजनको वह मूरख जिय मांझ हितानी १९२ अबतौ ऐसेई दिन मेरे । सुनुरी सखी दोष नहिं काहू हरिहित लोचन फेरे । मृगमद मलय कपूर कुंकुमा जे सबसंतत चेरे । मन्द सुपवन सुमन शशिशीतल ते देखियत करेरे । चातक मोर कोकिला मधुकर उपबन दियेबसेरे । जोभावत सोबकत दिवसनिशि बरजत रहत नटेरे ।जे द्रुम सींचि सींचि कर अपने कियेबढाय बड़ेरे। सूरदास किशलय करबर ह्वै आनि नयनमगघेरे १९३ अति मलीन वृषभानदुलारी । हरि श्रमजल भीजेउर अंचरयह लालचिन धुवावति सारी । रूखेचिकुर बदनकुम्हिलानो ज्यों नलिनी हिमकरकीमारी । अधमुख देखिऊंचोनहिं चितवति ज्योंवनहारे थकितजुआरी । हरि संदेशसुनत मुर्छितभइ बिरहजरी दूजेअलिजारी । सूरश्यामबिन कैसे जीवैं ब्रजबनिता कि प्राणदियोवारी १९४ ॥ रागजैतश्री ॥ उमंगि चले दोउनयन बिशाल । सुनिसुनि यहसंदेश श्यामघन सुमिरितुम्हारेगुण गोपाल । आननअरु उरजनिके अन्तर जलधारा शोभितत्यहिकाल। जानुयुगुलजनु मेरुशृंगते मिलेजायसम शशिहि सनाल । भीज्यो उर अम्बरअति राजत तिहितरहरिमुक्तनकीमाल। मनहुइन्दुअननवनलिनी दल अलँकृत अमी ओसकनजाल । कहंवह प्रीतिरीति राधाकी कहँ यह करणि उलटीचाल । सूरश्याम यहकपट सँदेशन क्योंजीवहिबिरहिनिबेहाल १९५ केतेदिन बीतेरी हरिबिनदेखे । गनतगनतमिटगई सखीरीकरअँगुरीकीरेखे । जिहियहि बिरहअमर कीन्हीसोबिसरी नयन निमेखे । हैडरपति अवधिहि सूरजप्रभु जिनिपारों सुरलेखे१९६

रागआसावरी ॥ तेहकह जानैपीर पराई । सुन्दरश्याम कमलदल लोचन
हरि हलधरको भाई । मुख मुरली शिरमोर पखौआ बनबन धेनुचरा
ई । जे यमुनाजलके रंगरंगिगये अजहुन तजत कराई । वहंते बिरमि
रहेछखे मन देख्यो हठिसमुझाई । सूरस्वातिको बूंदभयोमन हेरतगयो
हिराई १९७ जनिपत बादिहि चितये प्रान । चलतीबेर हरण नहिं
कीन्होपंथ अमंगलजान । औरोंअंग समाज सकलगुणमन लोचनअरु
ज्ञान । स्यन्दनअग्र पदार्तकिये लै मासिकदइ मुसकान । मथुरा नगर
राजलीला को ब्रजमृगया बनठान । श्यामसृगी व्याधा ऊधो पुनियोग
युगति शशि बान । करुणासिंधु कहत श्रुति मुनि गण तेउन कीन्ही
कान । फिरि जनि मन पछिताहुसूरप्रभु उपजेप्रेमबिज्ञान १९८ तबते
छीनि शरीर सुबाहु । आधो भोजन सुबल करतहै सब ग्वालन मन
दाहु । आनंद गयो गई सब शोभा काहुन मन उछाहु । नन्दगोप
पिछवारे डारत नयनन नीर प्रवाहु । एकबार बहुरो या ब्रज में दूध
पूतखिन खाहु । सूर सपूजवहु गोकुल आशा उलटि मधुपुरी जाहु
१९९ सखीरी हरिहि दोष जनिदेहु । जातेइते सातदुख पैयत हमरेहि
कपट सनेहु । बिद्यमान अपने इन नयनन सूनो देखति गेहु । तदपि
शूल ब्रजनाथ बिरहते फिरि न होत बड़बेहु । कहिकहिकथापुरातन
ऊधोअबतुम अन्तन लेहु । सूरदास तनतोयों ह्वैहै ज्योंफिरि फागुन
मेहु २०० उघरिआयो परदेशीकोनेहु । सबतुम कान्ह कान्हकहिटेरत
फूलतहीअब लेहु । काहेको तुम सर्वस अपनोहाथ पराये देहु । उन
जुमहाठग मथुराछांड़ी सिंधुतीर कियोगेहु । अबतन तपतमहाउर उप
जी बाढ़यो मन संदेहु । सूरदास बिहवलभई गोपी नयनन बरख्यो
मेहु २०१ रागदेवगन्धार ॥ कुंवरि कोउ बैरागिनिबैराग । पलटतिबसन
करति निशिचोरी बपुबिलसत भईयाग । बेसरि बेहमूंदि मृगमदम-
थि नखन बिदारतमांग । श्रवणनते तजितरल तरौना पहिरत फणि
मणिनाग । कुहमावलि ग्रंथितउरमाला रचिपचिबांधीपाग । बासर
रहत रजनिके धोखे धोये मिटत न दाग । सुन्दरि एक श्यामते बिछु-
री ढूंढ़ति है बन बाग । सूरदासप्रभु तुम्हरे मिलनको आलि उड़ावत
काग २०२ ॥ रागटोड़ी ॥ हरि न मिलेरी माई जन्म ऐसेहीं लाग्यो जान

ओवत मग द्योस द्योस बीतत युग समान । चातक पिक बचन सखी सुनि न परै कान । चन्दन अरु चन्द किरणि मनहुं कोटिक भान । युवती तन भूषण सजे जानो रण आतुर ज्ञान । भीषम लौं मदन सहित अर्जुनके बान । सो पतितन सेज सूर चलन चपल प्रान । दक्षिण रवि अवधि अटक इतनी ये आन २०३ रागबिलावल ॥ हरि देखिबे की साध भुई । उड़ि उड़ि फिरत नयन के गोलक फलफूटे जैसे आकरुई । योग सुनत औरै जिय उपजी प्रेमपुलकि श्रम स्वेद चुई । जानो नहीं कहां ते आवति वह मूरति मन मांह हुई । बिन देखेकी व्यथा बिरहिनी अतिजुरजरति न जातिमुई । सूखत सूरधान अंकुर लौं मानहुं बरषा मल हुई २०४ बायस गहगहात सुनि सुन्दरि बाणी बिमल पूर्व दिशि बोली । आजु मिलहिंगे श्यामसनोहर चित दै सुनि राधे मन भोली । कुच भुज नयन अधर फरकत हैं बिन समीर अंचर ध्वज डोली । शोचनिवारि करहु मनआनंद जानत भागदशा बिधिखोली । सुनत बचन सर्वस सखिन के प्रेम पुलकि तरकी उर चोली । सूरदास सुबिलास नन्द सुत रहसो बिलसित नारि अमोली २०५ ॥ रागनट ॥ तुम्हरे बिरह ब्रजनाथ अहो पिय नैननदीबढ़ी । लीन्हेजात निमेष कूल दुहुं सते मानचढ़ी । गोलक नवनौका न सकत चलि स्यो सरकनि बढ़ि बोरति । ऊरध श्वास समीर तरंगन तेज तिलक तरुतोरति । कज्जलकीच कुचीलकियेतट अन्तर अधर कपोल । रहेपथिक सुजहाँ सुतहां थकि हस्त चरण मुखबोल । नाहिन औरउपाय रमापति बिन दर्शन क्षणजीजै । अश्रु सलिल बूड़त सब गोकुल सूरसुकर गहिलीजै २०६ हमको सपनेहूंमें शोच । जादिनते बिछुरे नंदनन्दन ताही दिनको पोच । मनो गोपाल आये मेरे आंगन हँसि भुज बांह गही । कहा करौं बैरिनि भइ निद्रा नेक न अधिक रही । ज्यों चकई प्रतिबिम्ब देखिकै आनन्दी पियजानि । सूर पवनमिस निठुरबिधाता चपल करेउ जलआनि २०७ सपनेहुंतो देखिये जो नयनन नींदपरै । बिरहिनी ब्रजनाथबिन कहौकौन उपायकरै । चन्द मन्दसमीर निशि दिन सेज सजर जरै । कहो कौनिहिंभांति मेरोमन न धीरधरै । बिबश यतन अनेक कीन्हे कछु न चाड़ सरै । सूर शीतल कृष्ण बिन काहै

कौन ताप हरै २०८ सखीरी श्याम सबै यक सार । मीठेवचन मनो-
हर बोलत अन्तर जारनहार। भंवर कुरंग काग कोकिल शिखि कप-
टिनकी चटसार । मदनगोपाल आपुनहिं पढ़ाये प्रीतिकिये बहुवार।
ऊनै आई घटा जलद की प्रेम प्रतीति अपार । सूरदास सरिता भरि
उमड़ी चातक करत पुकार २०९ ॥ रागकान्हरो ॥ अँखियां अज्ञानभईं ।
यक अंग अवलोकत हरिको औरहुती सुगई । यों भूली ज्यों चोर
भरे घरचोरी निधि न लई । बदलत भोरभयो पछितानो करते छांड़ि
दई । जिहि सुख पहिलेही परिपूरण त्योंहीं क्यों न रई । सूर सकति
अति लोभ बढ़योहै उपजत पीर नई २१० ॥ रागकेदारो ॥ मनो विधि
होहीं उलटि रची । जानत नाहिं सखी काहेते प्रेम न परनि पची ।
बूड़ि नमुई नीर नयनन के बही न तेज तची । जलप्रवाह अरु विरह
अगिनते क्यों दुहुं बीचबची ।जो कछु सकललोककी शोभा लैद्वारका
मची । उतकी सकल आधि बड़वानल ममउर आनिखची । वेतो संक-
र्षणाकेभैयाहैं कीरति सकलमची । सूर सुजिहि माया जगमोह्यो सोइ
सुख निरखि नची २११ कैसेधौं वनलव्रज दूरिको आवनु । सुनियतहैं
वहांहुते जो सजनी दूरि कियोहै अनत गवनु । निकट बसत हम मर्म
नजान्यो मिलहु न आई छांड़िभुवन ।अबवै अपने कुटुम्ब सहितसखि
भवन सिधारे जीति जवनु । अगम अनन्त दूरि पश्चिम दिशि जहां
कहतहैं सिन्धुलवनु । सूरदास तन मन तरसत अब यदुपतिपै लैजाय
कवनु । २१२ शरद समयहू श्याम नआये । जानतिहैं रसवस वहि
औसर कहु विरहिन बिरमाये । अमल अकाश कास कुसमित भये
लक्षण शोच नजाये । रससरिता सुलताजल उज्वल अलिकुल कमल
सुहाये । नवमयंक मकरन्द दुन्दध्वज दाहक गरलगंवाये । प्रीतमअंग
संग मिलि सुन्दरि सचिसचि सिंधुसराये । सूनीसेज तुषार तेज नहिं
बिरह सिन्धु उपजाये । सूरश्याम गइ आश मिलनकी भये ब्रजनाथ
पराये २१३ दधिसुत जातहौ उहिदेश । द्वारका हैं श्यामसुन्दर सकल
भुवननरेश । परम शीतल अमिय तनुतुम कहियो यह उपदेश । काच
अपने सारि हमको छांड़ि रहे विदेश । नंदनन्दन जगत वन्दन धरहु
नटवरभेश । नाथ कैसे अनाथ छांडो कहियो सूरसंदेश २१४ हरिके

ह्वयके रसे आली कैसे के कहों बिरहिनी मनबसे। अपने तनमें भेद बहुतबिधि रसना न जाने इन नयननकी दसे। जे देखत ते नयनरसन बिनहारी रसन दसन न लिसे। बिन बाणी जल उमगि अधिकनिशि सुमिरि सुमिरि वह सगुण यसे। बारबार पछितातिं यहैहैं कहाकरों जौ बिधि न बसे। सूर सकल अंगनि की यह गति को समुझावे या छपदपसे २१५॥ रागगौरी॥ केते दिन बीते हरिदेखे बिनमाई। नंद-सुवन मुखकमल मनोहर मूरति श्याम सदा सुखदाई। जब उठिजात प्रात गोसुतलै गोविंद ग्वालसंग बलमाई। अब सुनिकट मथुरा मधु-सूदन निपट जनक जननी बिसराई। तबतेगनत घरीघरआंगन बासर बिथे रैनि न बिहाई। सूरदास ऐसी कठिन भई है प्राण पचत घर छांडि न जाई २१६ वह दिन कैसोई सुहुतोरी। ह्वैजाते मेरे आंगन मोहन बरियारहे है सोरी। बाल दशा की प्रीति निरंतर परी रहति हो ठोरी। राधा राधा नंद नन्दन मुख लगी रहति हीलोरी। बेणु पाणि गहि मोहिं सिखावत मोहन गावत गोरी। सूरदास श्यामा संगम सुख क्षण सुमिरत भइभोरी २१७॥ रागनट॥ रहो रहोरे बिहंगम बनवासी। तुम्हरे बोलतरजनी बाढ़ी बचन सुनत नींदो नासी। तन तल बेली बढ़ि प्रीतमकी ज्यों चकोर चन्दहि तासी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश को जाय लेहों करवट कासी २१८॥ रागगौरी॥ हरि बिन कौन सों कहिये। मनमें व्यथा रहत अरनी ज्यों उरअन्तर द-हिये। कानन भवन रैनि बासरसखि काहुन सुखलहिये। हमतोभई यज्ञके पशु ज्यों कबलों दुखसहिये। कबहुंक जिय आवत लै ऐसी जाय यमुन जल बहिये। सूरदास प्रभु रासकृष्ण बिन कैसेके ब्रजरहि-ये २१९॥ रागकेदारो॥ इतनिक दूरि गोपाल कबहूं न मिलेआई। कहिये कहा दोष काहि दीजे इतनि हमारी जड़ताई। सपनेहूं सोवत सुनुसखिरी अवधि लिखन निधि पाई। एकहिबार अचानक कोकिल उपबन बो-लिजगाई। जो जागों तो कहेउठिदेखो बिकल होति अधिकाई। छिशल कुसुम नवनूत दशोदिशि मधुकर मदन दुहाई। बिछुरत तनुन तज्यों तेहीक्षण हठि न गईसंगमाई। समुझि न परी सूर त्यहिऔसर हंसि निजप्रीति लगाई २२०॥ रागमलार॥ अब वे बातेंईउरही। मोहन

सुख मुसकाय जु कबहूं कान्ह जेजेकही। प्रीति शूलताबुधि न रहीसब
सन्मुख सबैसही। अबहूं शालति उरअंतरते काढ़ेकढ़तनहीं। सखियह
व्यथा बिशालकरमकी कतहै फिरतवही। हरिचुम्बक जहंमिलेसूर-
प्रभु लैचलमोहिंतहही २२१ जाहिरी सखीप्रिय हूनिमेरी। जहं अबहीं
नंदलाल बसतुहैं बारेक वहां आउदै फेरी। तू कोकिला कुलीन श्याम
तन जानत व्यथाबिरहिनीकेरी। उपवन बैठि बोलिपिक बाणी बच-
नबिसाहि मोहिंकरि चेरी। प्राणनके पलटेपाई जैसे अतिहि बिसाहु
सुयशकी ढेरी। नाहिनकोइ और उपकारी यहिबिधि बसुधाहेरी॥
करियहु प्रकट पुकार द्वारहवै अबला आनि अनंग अरि घेरी। ब्रजलौं
आउ सूरके प्रभुको गावहिं कोकिल कीरतितेरी २२२॥ रागसारंग॥
कहूं तो जो कहिबे की होय। प्राणनाथ बिछुरेकी बेदन जानतना-
हिन कोय। तबते अधर सुधारस लैलै रहीमदन रसभोय। जोरस
शिवसनकादि न पावें सो रसबैठी खोय। बिरहव्यथा बाढ़ीउर अन्तर
जामें व्यापी होय। सूरदास मनहरन मनोहर ले जु गयेमनगोय २२३॥
रागमलार॥ कोउमाईबरजै वा चन्दहिं। करतब कोपु बहुतहम ऊपर
कुमुदिन करति अनन्दहिं। कहांकूहू कहंरबि अरु तमचुर कहांबला
हक कारी। चलतन चपल रहत रथथकिकरि बिरहिनिके तनतारी।
निन्दति शैलउदधि पन्नग को चापति कमठ कठोरहि। देतिअशीष
जरा देवीको राहुकेतु किनजोरहि। ज्यों जलहीन मीनतन तलफत
सोइतपति ब्रजबालहि। सूरदास प्रभु बेगिमिलावहु मोहन मदनगोपा
लहि २२४ हरिबिन निशिदेखत डरलागतु। बारबार अकुलाइदेहते
निकसिनिकसि मनभागतु। प्राचीप्रथम देखिपूरणशशि ह्वैआयो
तनतातो। मानहु कमलन बन बिरहिनि को करलीन्हो शिररातो।
भृकुटी कुटिल कनक चापजनु अतिमदशरहि जुसाधे। मनहुकामक-
मन्यातु कोपसों बियमबाणउरबांधे। सुनशठ सोहि प्राणपतिमेरो
जाको यश जगजानत। सूरसिंधु बूड़ेलेकाढ़यो ताहू कृतहु न मानत
२२५॥ रागमलार॥ अंखियां करतिहैं अतिआरि। सुन्दरश्याम पहुनई
के मिस मिलिन जाहुदिनचारि। बांहयकी बायसहि उड़ावत कबदेखों
अनुहारि। राधा श्यामश्याम कहिटेरति कालिन्दी कि करारि।

ग्राबिन सकत न पंख पसारि २२६ ॥ रागकेदारो ॥ जाये कोउ मधुबन लै जाय। पतियां लिखी श्यामसुन्दर की करकंकन दे उताय। अब यह प्रीति कहांगइ माधव मिलते बेणु बजाय। नयन नीर ग्रारंबारिपु भीजै दुखसुख रैनिबिहाय। सून्य भवन मोहिंखरो डरावै यह ऋतु मन न सुहाय। सूरदास यहसमोगयेते पुनिकह लैहैं आय२२७॥ रागसारंग॥ अबये यहांहैं ते कहां। जहं ये श्याम मदनमूरति सखि लै चलिमोहिं तहां। कुटिलअलक मकराकृतकुण्डल चंचल नयनबिसाल। उर अनूप बनमाल बिराजत कंचन लता तमाल। घनतनश्याम पीतपट ओढ़ेजनु अलिकमल पराग। बिपुलबाहु भरिकरि परिरंभन मनोमिले द्रुमनाग। सोवतिही सपने को अतिसुख सत्यजानिजियजाग। सूरदास प्रभुप्रकट मिलनको चातक ज्योंलौं लाग २२८॥ रागमलार ॥ऐसे माई हम न जाने श्यामहिं। सेवा करतकरी उनऐसी गये ज
जोरि प्रीति जो तोरहिं कहा भलाईतामहिं। तेकहपीरपराई जानहिं ज्यों लुब्धक अपने कामहिं। चातक चरण सदाको सेवक दुखीबिना जलपानहिं। सूरदास प्रभु अबयह कीन्हीं रचोकूबरी नामहिं २२९॥ रागदेवगंधार॥ जबते बिछुरे कुंजबिहारी। नींद न परै घटति नहिंरजनी व्यथा बिरह जुरि भारी। बिकसुन्दरी बिरह की बेदन जगमें रही उजारी। रविकी रश्मि लगति अनतातीं यौं शीतल शशि जारी। श्रवणनि दुख सुहाय नहिं सखिरी पिक चातक द्रुमडारी। तनहिं न भावत अति आतुरह्वै कर कंकण जु उतारी। सूरश्याम बिन बिष लागति है कुसुम सेज जुरजारी। बिलख बदन वृषभान नन्दिनी निन्दित कोप रिपुहारी २३०॥ रागकेदारो॥ मैं जान्योरी आये हैं हरि जागिपरे पछितानी। इतेमानततनतलफतसखिरीमनहुमीन बिनपानी। सुनहिं देहते जरत बिरहज्वर यतनिन परकृतआनी। अब कह करों अपथ मिलिबे की बढ़ी व्यथा दुख दुहरानी। पठवप्रथिक सब समाचारलिखि बकति २अति अकुलानी। सूरजश्याम सुधाबिनुकैसे घटतय जानी २३१ ॥ रागमलार ॥ ऐसे जो अबहीं हरिआवैं। निरखिवह बदन मनोहर नयननहत सखपावैं। तैसिय श्याम

घटा तैसोइ हरि तन सौभित बगपंक्ति दिखावैं। तैसोइ मोर कुलाहल सुनिकै सखिकुल हरषि हिंडोरना गावैं। कबहुंक आवजुहिलिमिलि खेलहिं कबहुं निकुंज बुलावैं। कबहुंक संगले सखा धौलचढ़ि मुरलि मलार बजावैं। बिछुरत यहैप्राण कैसेकरि बहुतभांति समुझावैं। जित ही हरिजानि चलतसुनिसूरज तिहिंपहिले उठिधावैं २३२ ॥रागसारंग॥ देखि सखीरी इतहैबइगाउँ। जहां बहीनँदलाल बसतुहै मोहन मथुरा नाउँ। कालिन्दी के तीर विराजत परम मनोहर ठाउँ। जोतन पंख होहिं सुनि सजनी आजु अबै उड़िजाउँ। होनीहोइ सुहोउ यहि अव-सर होंतो अब नआउँ। सूरश्याम सुन्दरसों हितुकरि लोगनि कहा डराउँ २३३ ॥ रागगौरी॥ सुनि सखि धन्यहैं तेनारि। जेअपने प्राणव-ल्लभको सपनेहूं देखत अनुहारि। हैं काहकरौं जुश्याम चलते पहिले ही नींदगई हिनवारि। अब काहूकेलहे नआवति रहीरूठि अपमान सम्हारि। अरु ताहूमें नयन लपत ये अनुदिन सुख बाढ़ति है बारि। सूरदास दोउ सुभग सरोवर चले उमगि मर्याद उतारि २३४ ॥ राग-मलार ॥ जोपै नन्दसुवन घर होते। तौसुनि पिक चातक यह बिनती कत डरती डरतोते। हमहिं अकेलि जानि इहि गोकुल हयगय रथ रथा जोते। मानहु गरजि गरजि घन पठवत मदन महावत पोते। जो कछु काजलागतहै इहिब्रज तेतन सरबसहोते। सूरदास अब धौलचरण बिन कहांसेर अबमोते २३५ हरि परदेश बहुतदिन लाये। कारीघटा देखि बादरकी नयन नीर भरिआये। पालगों तुम बीर बटाऊ कौन देशते आये। इतनी पतिया मेरी दीजहु जहां श्यामघन छाये। दादुर मोरपपीहा बोलत सोवत मदनजगाये। सूरदास स्वामीकेबिछुरे प्रीतम भये पराये २३६ आजु घनश्यामकी अनुहारि। उनैआये सांवरे सखि री देखि रूपकोआरि। इन्द्रधनुष मनो पीतबसनछबि दामिनिदशन विचारि। जनु बगपांति मिली मोतिनकी चितवत चितलेतहै हारि। गरजत गगनगिरागोबिंदकी सुनत नयनभरेवारि। सूरदासगुणसुमिरि श्यामके बिकलभई ब्रजनारि २३७ ॥ रागकेदारो ॥ अबहरि आइहैंजिनि शोचहि। सुनिबिधुमुखी बारिनयननते अपनीसों जिनिमोचहि। लैलै मुखमसि अपने कर करि लिखु संदेश छांड़ि संकोचहि। सूरविरह

जनाउ करति कत प्रबळ मदन रिपु मोचहि २३८ बजकी छतियां बिहरि नाहिनजाति। बिद्यमान बिरहशूल उरहीमें जोसमाति। आवनकी अवधिआशते तालगि पतियाति। प्रेमकथा प्रकटभई अरदराम राति। कहत सुनत समुझत नहिं जियहूं न लजाति। ज्यों ठग निधि हरत करचंगुरवे जिहिभांति। योंकरि सुमुकाइ सूरमनसागइमाति। सकैपै जियमेंरही बदनकमलकोकांति २३९॥ रागकान्हरो॥ करकपोल धरे भुज जानुपर लिखति है चरण नख रेखनि। शोचति बिचारु करत बैठी कामिनि धरतिध्यान मदनमुख मेखनि। नयनन नीरु भरि भरिलेति उसासभिरी धिकधिक येदिनजाति अलेखनि। कमलनयन रहे मधुपुरी छाइकरि जाके गुणन जाने ब्रहमुख शेखनि। अवधि झुठाइ कान्ह हुनुरी सखी क्यों जीवें निशि दामिनि देखनि। सूरदास प्रभुचेटकु लगाइय नाचिगयो नट नाना भेखनि २४०॥ रागसारंग॥ यह सब मैंहीं पोचकरी। श्यामस्वरूप निरखि नयननडडि मैंहनि फन्दपरी। बयकिशोर कमनीय कुमतिहो लुब्धोते न डरी। अबछबि गई समाइ हृदयमें टारतहू नटरी। अति सुख दुख व्याकुल सम्भ्रमभ्रम बिधुमुख निरखि खरी। रोमरोम सुन्दरता देखत आनँद उमगिभरी। यद्यपि सूरसहति सन्मुखशर अंगहु देनसरी। तद्यपि करमुरली अवलोकत उलटि अनंगजरी २४१ ॥ रागकेदारो॥ अब सखि नींदौ गई। भाई जिय अपमानमानि जनु सकुचनि ओटलई। अतिरिस निजबश कतकिये निशि आगम अटकदई। सपनेहुं पियसंयोग सहतिनहिंसह चरि सौतिभई। कहति पोच शोच मनहींमन करत नवनें खई॥ सूरदास तनतजे भले बरु बिधि बिपरीति ठई २४२॥ रागजैतश्री॥ हरिजू आये सो भलिकीनी। मोदेखत यों कहि राधाउठि अंक तिमिरको दीनी। छुटि न भुजाबल फुटि बलयाबल बाँहटूटी लरफटि कंचुकि भीनी। मनहुं प्रेमकी परनिपरेवा याहीते पढ़िलीनी। तन कछु कंप बिकल आतुरभइ उर धकधकी खेदकीनी। चरणचलति गतिगई गलितमति खेदसलिल भुवभीनी। अवलोकत इहिभांति रमापति जनुजीवत अहि मणिछीनी। सूरदास कछुकहि नजाइ मोपैहौं अजान मतिहीनी २४३ रागसारंग॥ नयना अबलागे पछितान। बिछुरत उमगि नीर भरिआये

बिसरे सब औसान। हिलिमिलिके कत प्रेमबढ़ायो सरहिंमये बियवान। तबवह प्रीतिकरी आतुरह्वै समुझि न कछूअज्ञान। बैरीकाम दहै निशिबासर नहीं हमारेसान। ऊधो बिदेश मधुपुर हमको क्योंहूं होतनजान। अतिघटपट देख्योही चाहत अबलागे ललचान। सूरदास प्रभुदान दुखित ह्वै लेनगये सँगप्रान २४४ हरिदर्शन को तरसति अँखियां। झांकति झुकति झरोखा बैठी करमीड़त ज्यों मखियां। बिछुरी बदन सुधारस निधिते लगति नहीं पलपांखियां। चकृतकचितवति उड़ि न सकति दोउ थकित भईंशुभ सखियां। बारबार शिर धुनति बिसूरति बिरहग्रार जनुजांखियां। सूरस्वरूप मिलेही जीवहि नहिं काढ़िकरनि धरति नखियां २४५ नयनन वहैरूप जोदेखो। तोधौं यहजीवन जगको सांचुसफल करिलेखो। लोचन चपल चारुखंजन अनूपअनुरंजनहृदय हमारे। सुरँग कमल मृगमीन मनोहर श्वेतअरुण अरुकारे। कुंडल रतन जटित श्रवणनबर गंडकपोलनि झाईं। मानो-दिनकर प्रतिबिम्बमुकुरमें ढूंढतयह छबिपाई। मुरलीअधरविकटभौहैं करि ठाढ़ेहोहिं त्रिभंग। मुक्तमाल उर नीलशिखर ते धसीधरणिजाभुअंग। और भेष कोकहै बरणिसब अंगनि केसरिखोरी। देखतहीं कहत रसनासों हमपर मोहन जोरी। वे बातें छबिकारि करि सजनी व्यथाहोति शिरभारी। सूरदास प्रभुके बिछुरेते सहत पांचशर मारी २४६ तबते मिटेसबै आनन्द। याब्रजको सौभाग्य संपदा लेजुगये नँदनन्द। व्याकुल भई यशोदाडोलति दुखित नन्दउपनन्द। धेनुनहींपय स्रवत रुदित मुख चरतनहीं तृणकन्द। बिषम बियोग दहति तनसजनी बाढ़िरहे दुखदन्द। शीतलकौन करै रीमाई नहिंन इहांब्रजचन्द। रथचढ़ि चलत गहेहिं न काहू चाहिरही मतिमंद। सूरदास अबकौन छिड़ावैपरी बिरहकेफंद २४७ मेरेजिय कसकैरही। वेबतियांछतियां लिखिराखी जे नँदनंद कही। एकदिवस आयेनंदनंदन हौं गृहमथतदही। रतिमांगत मैं मानकियोहै सोहरि गुसागही। सोचति अरु पछिताति राधिका मूर्छि परतमही। सूरदासस्वामीके बिछुरेबिथा न जात सही २४८॥ रागमलार॥ ऐसे नन्दराइके बारे। इतनन जानिपतियाहु सखीरी जेतेहैं तनकारे। खेलत रंगसंग वृन्दावन निमिषनहोतु न न्यारे

रहितो सुन्यो मारग भये हमको सेमुगये तुम्हारे। उरपर भीजतुहै
आँसनिवृ भयाधीर बहुतासोसरदास प्रभुवेगिमिलहुतुम सरसनहींमुखा
रो २४९ ॥ रागआसावरी ॥ ऐसोकोऊ हितुहै सजनी मोको हरिहि
मिलावै हो। वारक बहुरि नंदनंदन को इहांलैं लै आवैहो। पायँन
परि बिनतीकरैं अरु यह दशा जनावैहो। नवनिकुंज बनकेलि रीति
रस रास कि सुरति अनावैहो। औरौ कौनभांतिकी सकुचनि का-
न्हाको उपजावैहो।मृदितमनिसर प्राणपति सों कहै लोचन जरतजुड़ावै
हो २५०॥ रागधनाश्री ॥ सिखतिकिन जाहु बराऊनाते। नंद यशोदाके
तुमबालक बिनय करतिहैं ताते। तुम्हरी प्रीति हमारीसेवा बानियत
नाहीं काते। लोगुरैखि तुमकहा भुलाने सीतभये बनपाते। तुमनिठु-
रत घनश्याम मनोहर हम अबला भरघाते। कहा करौं जु सनेह न
छूटै रूपजोति गड़जाते। जबहठिदान मांगते हमपै अंगगात लपटाते।
सूरदास प्रभुअबतौ कौनारिपु बीच परेउहै जाते २५१ ॥ रागसारंग ॥ हरि
जु गयेदिन कहां लाये। मानो अवधिवै कहत न समुझी गनतअचानक
आये। भलीकरी जु बहुरि इननयनन सुन्दर चरण दिखाये। जानी
कृपा राजकाजहिमें कहत बचन बिसराये। हृदय अंतरते तुरत प्रकट
किये मन अभिलाष पुजाये। बिरहिनि बिकल बिलोकि सूर प्रभु
धाय हृदय करलाये २५२ जोपैकोउ माधवसोंकहै। यहै बिथाजानि
नँदनंदन कतमधुपुरी रहै। पहिले सब दीनता प्रकटकरि पुनिकरच-
रणगहै। सोपरतोसि है नन्द सुवनकी सुनत न प्रेमसहै। सूरदास प्रभु
को संदेशो कछुसोउ कात निबहै। एकबार यहितनके कारण जे दुख
अनलदहै २५३ ॥ रागआसावरी ॥ गोकुलको सचुकहैं हमसोंमाई।जबते
हमारेचले कन्हाई। तिनबिघर जैसे पहुनो भूखो। जलबिनु सरवर
दीसै सूखो। वे ब्रजनारि कहोकैसे जीवैं। जौलगि हरिदरशन नहिं
पीवैं। सूरदासदुख कासोंकहिये। चलो श्याम मथुरारमिरहिये २५४
रागगौरी ॥ बाढ़ीरैनि कलप करकोसप्रदूरि न करहि बेणुकरधरिबो।
रथथाक्योमानहु मृगमोहे नाहिंन बनत चन्द्रको चलिबो। बीतीजाय
सोइपै जानै कठिनहै प्रेमफन्दको परिबो। कमलनयन बिछुरे सखि
जबते रहत न नयन नीरकोढरिबो। चन्दन रचत अतिहि तापततु

सहिलहिं सकल विरह उर जरिबो। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनबिनु सब भूठोयतननिको करिबो २५५॥ रागकेदारो ॥ हरिकेमिलनमाँ छविकिरसुदहतु। कहियतहै उडराज अमृतमय तजिसुभाव सोकोदहति बहतु। कुपा न छीनहोय मेरोसजनी भूमिडहत रिपुकाथों बसतु। शशिकहिं गवनकरे पश्चिम दिशि राहुग्रसतमोको गहि न गहतु। सेवाङ्ग ध्यान धरततुम दधिसुत मुनिकहेश जैसेरहि न रहतु। सूरदास प्रभुमोहनमूरति चितैजातु पै चित न सहतु २५६ छुटिगइशशिकी शीतलताई। मानहु जारि भस्मकियो चाहत संजनको कलंक लगकाई। याहीते प्रयास अकाश देखियत मनहुरहे काजर लपटाई। ताऊपर शवेत सखासब उडगन अगिन कनिका उडिआई। राहुकेतु दोउजोरिमकाके सब बहि समय जराजोपाई। शासेते पछिजाय पापमें कहति सूर बिरहिनिदुखदाई २५७ सखि आजुकी रैनिको दुख कहेउन जात मोपैपरै। मन रावनको वेणुलियोकार भृगथाके डहपति न चरै। वासो प्राननाथ प्यारे बिनु शिवरिपु बाता नूतन जुरै। अति अकुलाय विरहिनी व्याकुल भूमिडसत रिपुभक्ष्यो न करै। अतिआतुर ह्वै सिन्धुलिखौ कर गहि भामिनिको करनरै। सूरदास आशको रथुचलिगयो पाछे तेरवि उदयकरै २५८ जारन आवारी सुधानके पापी चन्द्र बिलासी। काहे कहतसुधाकर शीतल हैयह अगिनि अमरकोबासी। देखोजाय दवासोलागो बूझत नयनवारि बरषासी। इककुम मुलजरी माधवके अरु लोगनकोहांसी। येक्यों भस्मभई मन्मथसँग याहिजानि भूक्यो पतिग्रासी। सूरजदास कितिक हमदासी इनजारे अविनाशी २५९॥ रागसारंग॥ नाहिं देखति सपनेउ निहारि। सहज गोपाल कहां निर्मोही प्रीतिखोजु गयेमारि। तुमतौवैस बड़ोंकीन्हों मूड़ चढ़ाईगारि। वे नँदसुवन गातके सनियां गयेलात उयोंडारि। जानीनहीं कपटकी चितवनि सबसु दीन्हो डारि। सूरदास प्रभुगोपि दुखित भईं कालिन्दीके करारि २६० सुनोसखी माधवबिनु यातन सब बिपरीतभई। गईछपाय छपाकरकी छबि रही कलंकमई। अँखियां हुतीं कमल पाखुरिसी ते जनिचोरिलई। आंच लगी छेदनों सोनोसो योतन यातुघई। कदली दलसी पीठि मनोहर सोऊ पलटिगई। सकल सूरहरि हरी सम्पदा

बिपदा सहिदई २६१ ॥ रागबिलावल ॥ बिधुबैरी शिरपरबसै निशिनींद न परई । हरिमुखभानुसुभटबिना यहिको बशकरई । गगन शिखर उतरै छटै गरवौजिय धरई । किरणि सकति भुगभरिहनै उरमें सगासरई । उडु परिवार पिशुनसभा अपयशहि न डरई । सोइ परपंचकरै अबला ज्यों जरई । घटैबढ़ै यहिपापते कलिमानहिंटरई । सूरदास समुझाइये ज्योंत्यों यह खरई २६२ ॥रागनट॥ नेकहु शोच न काहूकीनो । सुनि ब्रजनाथ सबनिके औगुण मिलहि मिलेदुखदीनो । ऋतुबसंत असमय अबसमति पिक सुभावलै धावत । प्रीतम संग जानि युवतीरुचि बोले हूनहिं आवत । सदाशरदऋतु सकल कलालै सन्मुख रहति जुन्हाई । शोभितपच्छ कुहू ससबीतत कबहुं न देति दिखाई । त्रिबिधि समीर सुमन सौरभ मिलि मत्तमधुप गुंजार । जोइजोइ रचेउ सोकियोबांधि बल तजिमन सकुचबिचार । रतिपतिअतिअतिथी कीनेको कोटिघूम धुजमानो । लैकरधनुष चितै तुम्हरोमुख अब बोलै तोजानो । भलीक-री नीके ब्रजआये ऐसेकाल अतीत । नाजानिये प्रबलमल्लनिसों समर कौन बिधिजीत । सपनसत्य दुखसुख सुनि सजनि नयेका अंत । सूर-दास प्रभु अब ब्रजरहिये बहुरि बांधियेकंस २६३॥रागमलार॥ देखोमाई नयनन सों घनहारे । बिनुही ऋतु बरषत निशिबासर सदा सजलदोउ तारे । ऊरध श्वास समीरतेजअति दुखअनेक द्रुमडारे । बदनसदन करि बसेबचनखग ऋतुपावसके मारे । हरिभरि बूंदपरत कंचुकिपर मिलि अंजनसोंकारे । मानहु परणकुटी शिवकीनिच धारा श्याम निन्यारे । घुमिरि घुमिरि गरजत निशिबासर अश्रु सलिलकेधारे । बूड़त ब्रजहि सूरको राखै बिनु गिरिवर धर प्यारे २६४ कैसे जीऊं हरि परदेश रहे । गरजि गरजि घन बरसनलागे नदि अरु नार बहे । बासरगये निहारति मारग चातक रैनिदहे । कासोंकहौं तपतमन निशिदिन को यहपीर लहे । कोऊ जाय मदनमोहनसों हमरी बिथाकहे । हमहूं किनि लजाउ सूरप्रभु को ब्रजबिपति सहे २६५ कोउमाई बरजोबो-लतमोरनि । रटत पपीहा श्रवन रहाई होतबिरह की रोरनि । चम-कति चहत चहूंदिशि दामिनि अंबरघरनकी घोरनि । बरषत बुन्द बाण ह्वै लागत क्यों जीजैयहि जोरनि । चन्द्रकि किरणि नयनभरि

पीवत नाथत तृषाति चकोरनि। सूरदास प्रभु हमतो जीवैं मिलिहैं नन्द-
किशोरनि २६६ कैसेजिउ राखोंगी बोलत मोर। देखिसखी तरवर
जनो सेवत चितवत चन्दचकोर। दुगदामिनि अरु मेघघटा ज्यों गर-
जतहै घनघोर। ऐसी अवस्था परिबालकको कठिन मदनझकझोर।
नवसत साजिचलीं ब्रजगोपी उरनाहिंन बँदछोर। सूरदास प्रभुदरश
तुम्हारे पलकनि देति अकोर २६७ कैसेभरिये दिन सावनके। हरित
भूमिभइ सलिल सरोवर सिरेमग मोहनआवनके। हरिहुरंग सबकन्त
गरजत घुमरिघटाघनघोरति मदन
धनुषबरि धावनके। दादुरमोरशोर शारँगपिक निशिदिन निशासुहु
सावनके। सूरज दीनदैनि क्यों निघटै भिशाकिये पिररावनके २६८
जोतु नेकहू उड़िजाहि। बिबिधिबचन सुनायबाणी यहां रिझवतुका-
हि। पतित सुर्खपिक पुरुषपाले कहाणलो रिसाहि। नाहिंनेकोउ
सुनत समुझत बिकल बिरहिनि थाहि। राखिलेवा अवधिलों तनुम-
दनसुखजिनि खाहि। तुहूंतो तन दग्ध देखी बहुरि कहा समुझाहि।
नंदनन्दन को बिरह अतिकहत बनत बनाहि। सूरप्रभु ब्रजनाथबिनती
मोनमोहिं बिसाहि २६९ अबब्रजनाहिंन नन्दकुमार। यहैजानिअजान
मघवा रची गोकुल आरा। मघन जलदनि मेघदामिनि अँहुबरषतधार।
दरशशशि रविदुरयो धीरजु प्रबास पवन अकार। उरजगिरि मयभरन
भारी असमकाम अपार। गरजबिकलबियोग बाणी रहत अवधअ-
धार। मधुप मथुराजाय हरिसों बात कही बिचार। सेन शत्रुसुधासु-
घेरेउ सूरलेहु सम्हार २७० यहिडर बहुरि न गोकुल आये। सुनरीस-
खी हमारीकरणी समुझि मधुपुरी छाये। अधरातक ते उठिकरबा-
लक सबमोहिं जगैहैं आय। बिनु पदत्राण बहुरि पठवैंगी बनहिंचरा-
वन गाय। सूनो भवन आनि रोकैंगी दधि चोरत नवनीत। पकरि
यशोदापै लैजैहैं नाचहु गावहु गीत। ग्वालिनि मोहिं बहुरि बांधैंगी
केते बचन लगाय। एते दुखन सुमिरि सूरमन बहुरि सहैको जाय
२७१ फिरि ब्रज आइये गोपाल। नन्दनृपति कुमारकहिहैं पुनि न
कहिहैं ग्वाल। मुरलिका सुर सप्तदिशि दिशि चलौ निशान बजाय।
दिग्विजय के युवति मंडल भूपपरिहैं पाय। सुरभि सैन सखा सुभट

सँग उठैगी खुर रेणु । आतपत्र मयूर चन्द्रक लसतहैं सखिबेणु । म-दूपतिमधुकर निकरबर मदन आयसुपाय । द्रुमलताबन कुसुमबानिक बसनरुरी बनाय । सकल खगगण पंक पायक पौरिया प्रतिहार । सूरप्रभु ब्रजको समय सुख क्योंसकै शेष आपार २७२ तबते बहुरि न कोऊआयो । वहै जु एकबार ऊधोपै कछुक सोधसों पायो । सुधो बिचारकरै सखि माधव इतैगहरु कहलायो । गोकुलनाथ कृपाकरि कबहूं लिखियो नाहिं पठायो । अवधि आश यतनान करि यह मन अब जैहैं बौरायो । सूरदास प्रभुचातक बोल्यो मेघनअंबर छायो २७३ सखिरी चातक मोहिंजियावतु । जैसेहि रैनि रटतहौं पियपिउ तैसेहि पुनि यह गावतु । अतिसुकंठ सुदेश प्रीतम सुखतर जीभ न लावतु । आपुन पिवत सुधारससजनी बिरहिनि बोलिपिवावतु । जोयहसखी सहाय न होतो प्राण बहुत दुखपावतु । जीवन सुफलसूरताहीकोकाज पराये आवतु २७४ सँदेशनि बिरहव्यथा क्योंजाति । जबलगि परै न दृष्टि वह मूरति मनहु चन्दकी कांति । जादिनते हरि हमतेबिछुरे तब त्योंतन न बुझाति । सूरदास प्रभुमिलहु कृपाके छतियांताहि सिराति २७५ कहियो पथिकजाय माधोसों मन चटक्यो नयनन केलेखे । यहैदिवसहवै झगारतआवत निरखत मुखक्यों लगीनिमेखे । ते अवचाहतइनपै फिरिफिरि बिधिजु लिखीदरशन अवरेखे । कैतूताहिबताय बिदितइम लगी पलक जड़ताके पेखे । अनुदिन सयाक्षरा जोरियतन करि आनतयुग अवलोय बिशेखे । सूरदासप्रभुया अरुणानिते नहिं मनछुटत दरशबिनुदेखे २७६ सखीकरि कछूउपाउ । मातुल मारन चल्यो बिरहिनीके चाउ । हुताशन ध्वजजातउन्नत चल्योहरदिशि बाउ । असमसररिपु नन्दबाहन हरषितगाउ । वारिभवसुत सप्तभांवरि अबलै करिहैं काउ । अबकी बेरड़ाएप्यारे ब्रजसखिन मिलाउ । ऋतु समयगयेमानकीजैसेइकिनिबहिजाउ । सूरप्रभुके [illegible] भुवनराउ२७७अब रह प्रीतिभई पातरी । श्यामकान्ह बलराम हमारे मारग जामिलेउ न जातरी । यह ब्रजराज बसत गोपाललाल कबहुं सुनीपोच बातरी । कंचनकाच कपूर कटुकखरि सोई समहोरा पोत बिकातरी । [illegible] बूंद मलिनक्यों न्हातरी ।

सूरदास मुक्ताफलभोगी कोरिकरत क्योंखात्रिखातरी २७८ ॥ रागबिहागरो ॥साईमोको चन्दलग्यो दुखदैन। कहँपे श्यामकहांवे बतियां कहँवे सुखकीरैन। तारेगनत गगनतेहैंहारी टपकनलागेनैन। सूरदास प्रभुतुम्हरे दरशबिनु बिरहिनको नहिंचैन २७९॥ रागगौरी॥ ब्रजरीमतो अनाथ कियो। सुनरीसखी यशोदानन्दन बिधु संदेशदियो। तबवहकृपाश्याम सुन्दरकी करगिरिटेकिलियो। अरूप्रतिपाल ग्वालगाइनको जलका लिंदि पियो। यह सबदोष हमहिं लागतु है चलत न फट्यो हियो। सूरदास प्रभु नँदनन्दन बिनु कारण कौन जियो २८० ॥ रागधनाश्री॥ मेरोमन मथुराईरहेउ। गयोजुतनते बहुरिनआयो गहिगोपाल गहेउ। इन नयननको भेदुनपावै केहि भेदिया कहेउ। राखोरूप चोरि चित अन्तर सोइ हरि सोधितहेउ। आये बोलत ताबन ऊधो सगिदै लेहु महेउ। निर्गुण साटि गोबिन्दहि माँगत क्यों दुखजात सहेउ। जिहि आधार आजलौं यहितनु ऐसेही निबहेउ। सोइछँडायलेत सुनिसूरज चाहत हृदय दहेउ २८१ ॥ रागनट॥ तबते नयनन नींद हिरानी। परेउ उचाट निमेष न लावत उमगि चलत भरिपानी। एक समय उनमानत अन्तर शोभा सब उरआनी। रहि न सकी तन तपत बिरहज्वर सों अवलोकि डरानी। बिसरिगई तिहिकाल सकल सुधि यह परिहस बिलखानी। बुधि बिवेक बलरहित बिवशगति धरणि परति मुरझानी। सपने में सपनो सुनि सजनी हठि रिसकटि अरुझानी। मत बांचत मनुहारि छुवतपद निरखि बदन मुसकानी। पाणिसरोज उरोजनिपरशे सकुचत समुझि लजानी। रोमरोम प्रकटित पुलकितचित हरषि सुदशा नशानी। जागेते जियशोच पोचअति बिकलभई अकुलानी। इंदु किरणि जनु तरणि तरफि बपु फिरि पाछे पछितानी। पचिहारी पुनि पलक न लागी पल पल देह सुखानी। जिहि बिधि मिलहिं श्यामघनसुन्दर सूर सुयतन बताउ सयानी२८२इसीरी मदन भुवंगम कारे। चितवतही मुसकाय लोभकरि जातुमेसों डारे। तन्त्रन जानौ मन्त्र नजानौ चलौं गुणीगुणहारे। परमप्रीति बिषधरसोंबांधी सोडारत मोहिं जारे। यहै जानि ऊधो ब्रजआये बैदु दैचले हमारे। आवति लहरि जु मदन बिरह की को यह बैदु हँकारे। मदनगोपाल

कहियत सो या विरहहि उतारे। सूरदास प्रभु कबहिं मिलहिं [illegible] डुवाडारे २८३ ॥ रागसारंग ॥ लोगसब देतहुहाईबातें। कहतहि सुगम करतनहिं आवै बोलि न आवत ताते। पहिले आगिसुनत चन्दनसो सखी बहुत उमहे। समाचार ताते अरु सीरे पाछेकौतुकहै। कहत सबै संग्राम सुगम अति कुसुमलता करबार। सूरदास शिरदिये सूरमा कौतुकहै ब्योहार २८४ हमारे हृदयकुलिश बरजीते। फटतन सखी अजहुं वह आशा बरष दिवस भरिबीते। हमहूं समुझिपरानी हूवैके यहै असितनुकी रीति। बहुरि न जीवन सुर्वाफरि करिके मधुपनकीसीप्रीति। अबतो बातरहि घरोपहरकी ज्यों उदबसकी भीति। सूरज प्रयास दाससुख जोवत भये उभय निहचीति २८५ ॥ रागकेदारो ॥ मोहन फिरि किन गोकुल आवत। जिनकुंजनि क्रीडा बनकीन्ही सो सबहिन मनभावत। गोपीग्वाल और ब्रजबनिता सुमिरिसुमिरि गुण गावत। बारेते तुम काहे के। सिरजे कुब्जानाथ कहावत। नितनित प्रीति बढ़ावत उनसों हमहिं कौन ढँगलावत। सूरदास प्रभुपरमनिठुर भये पतियां कत बिसरावत २८६ ॥ रागगौरी ॥ सखि सुनि जानी हरिबै बात। बैठे रथऊपर चढ़ि भोरे हँसत मधुपुरी जात। सुफलकसुत ठग ठाट ठयोउर साधुभेष मनघात। जेतक बड़े धर्मधुजमानी संग प्रेम पथ पात। यादवकुलह्वै सन्त सुनेहैं तिहिके ये उतपात। एकहि हरे प्राण गोकुलके अपरयोग कुसरात। यद्यपि सूर प्रताप प्रयामके दानव दुष्ट डरात। तद्यपि भजनभाव नहिं ब्रजमन खोजत छोपौसात २८७ सुरति करि उहिकिन रोयदियो। चल्योजात पथिक इक मारग गोपीवल तेहि बोलि लियो। कहवौं बीर कहांतेआयो पुहुमि प्रणामकियो। परमप्रीति करि निजगृह बोल्यो पहुना चार कियो। गद्गद कंठ हृदय भरिआयो बचन न कहेउ परेउ। सूरदास प्रभु फिरिबूझेते उत्तर कछु न करेउ २८८ कोऊ मोहनलाल दिखावै। कैसे धीरजु धरै सखीरी अंग अंग मनधावै। ज्यों ज्यों यतन करति वह तन के। त्यों त्यों दुख बितरावै। बिरह आगिनि सोकत चन्दन जल ज्वाला [illegible] । समयभयो सुनिश्यामा हरिजू परमचतुरअब आवै। [illegible]पा ज्वर तनको कृपाचन्द सियरावै २८९ ॥ रागगौरी ॥

ब्रजकीबात भई अबन्यारी। तिहिसुन्दरि सखियोग गाइयतु जहँगा-
वतहैं गिरिधारी। रिपुरणमारि रहेमन दिशित्यों भिक्षुकमा बिस्ता
री। सूर व्यथित दिनसकुचि कुमुदिनी निशि हेमंतप्रजारी २९० ॥
रागसोरठ ॥ हरिसे प्रीतम क्यों बिसराहि। मिलनदूरि मनबसतचन्द है
ज्यों चकोर चितै पछिताहि। जलमें रहे जलहिते उपजै जलही बिनु
कुम्हिलाहि। जल तजि हंस चुनहिं मुक्ताफल मीन कहां उड़िजाहि।
धरणी दुखित देखि बादरज्यों बरषै अरु बिलखाहि। प्रकट नप्रीति
करै परदेशी दुखदै हृदय समाहि। सोइ गोकुल गोबर्द्धन सोई कौन
करै ब्रजकाहि। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनबिनु अनत नकहूं समाहि।
२९१ ॥ रागसोरठा ॥ ग्वाल तू छांड़ि बिरह खरेउ। तेरे बिरह बिरहिणी
ब्याकुल भवनकाज बिसरेउ। करपल्लव उड़पति रथ खैंच्यो मृगपति
बैरकरेउ। पक्षीपतिन सबै सकुचाने चातक अनँग भरेउ। सारँगसुर
[illegible] सगरब उतरेउ। सूरदास सागरसुत पतिके देखत
मदन हरेउ २९२ ॥ रागगौरी ॥ आजु रैनि नहिं नींद परी। जागत गनत
गगनके तारे रसना रटत गोपालहरी। वह चितवनि वह रथकीबैठनि
वह अक्रूरकी बांहपकरी। चितवत सूर ठगीसी ठाढ़ी कहि नसकी
कछु बिरहभरी २९३ ॥ रागसोरठ ॥ जोलैजाय कोऊ वहिदेश। जैसेकै वह
कहै सखीरी तारों सोइभेष। [illegible] हरवाय लखौ आपने सनभेष।

[illegible]

युबात [illegible]। [illegible] कुमुदिनी सूरज रचोप्रीत [illegible]२९४
पथिक पालागों श्यामसों कहियो यहबात। इतनी दूर बसतक्यों बिसरे
अपनेजननी तात। जादिनते मधुपुरी सिधारे श्याम मनोहरगात। तादिन
तेये नयन पपीहा दरश प्यास अकुलात। जहां खेलनकी ठौर तुम्हारी
देखिनन्द मुरझात। जब कबहूं वहि खरिकजातहैं गायदुहावन प्रात।
दुहत देखि औरन के बालक प्राण निकसि नहिं जात। सूर श्याम
फिरि कबै देखिहैं कोमल कर दधि खात २९५ ॥ रागगौरी ॥ बिछुरत
श्रीब्रजराज आजु सखि नयननकी परतीतिगई। उड़ि नमिले हरिसंग
बिहंगम ह्वै नगये घनश्यामसई। याते क्रूर कुटिल सचमेचक वृथा
मीन छबि छीनिलई। रूप रसिक लालची कहावत सो करणी कछु

सो नभई । अब काहे शोचत जलमोचत समयगये नित सूलनई । सूरदास याहीते जड़भये जबते पलकन दगादई २९६ ॥ रागनट ॥ यह बल किसकुजानि बहुराई । तुमतो चले हमन अबलनपै तरकिबांह छिटकाई । कहियत हो अति चतुर सकल बिधि जानत सकल उपाई । तौजानौ जौअब सकोसखा सकौहृदयते जाई । सूरदास स्वामी श्रीपतिके अंतर भावनि भाई । सहिनसके रचि बचन उलटिहँसि लीन्ही कंठलगाई २९७ ॥ रागसारंग ॥ अबचरही में श्याम बताये । यौसमदृष्टि आदिनिर्गुणपद तौकत चित्त चुराये । लये सँभारि सबै दुख अपने राजसंग जे पाये । मोहन बदनबिलोकि मानिरुचि हँसिकर कंठलगाये । हम मतिहीन अज्ञान अल्पबुद्धि तुम अनभय पदपाये । सूरदास तेहि बिराज कहागुणा सूरहु सांझ गंवाये २९८ तौ तू उड़िहि नरेकाग । जौ गोपाल गोकुलहि आवहिंतौहैं हमरे भाग । दधिओदन दोनाके देहौं अरु अंचरकी पाग । लोचन हृदय दुझाय सगुन तन मेटिबिरहके दाग । सूरदास प्रभु मिलहुमया करि याहूते अनुराग । जैसे मात पिता नहिं जानहिं रैनि होयनहिं जाग २९९ ॥ रागधनाश्री ॥ को कहै हरिसों बात हमारी । हमतौ हों सबते जिय जान्यों इतैभये मधुकर अधिकारी । एक प्रकृति सबै कै सब गति तिहि गुण अस जियभावै । अकदराहै नवकंज मनोहर ब्रज किंसुक कारसा कत आवै । कंजनीर चम्पक रस चंचल मति सबहीते न्यारी । ताअलिकी संगति बसिमधुपुरि सूरदासप्रभु सुरति बिसारी ३०० हमारे श्याम चलन कहतहैंदूरि । मधुबन बसत आसही सजनी अब मरिहैं जु बिसूरि । कौने कह्योकहां सुनिआई किहि रुखरथकी धूरि । संगहि सबैचलौ माधवके नातरु मरिबो झूरि । पश्चिमदिशि यकनगर द्वारका सिंधुरह्यो जलपूरि । सूरश्याम क्यों जीवहिंबाला जात सजीवन मूरि ३०१ ॥ रागमलार ॥ सुनुरी ऐसे जो हरि आवैं । निरखि निरखि वे बदन मनोहर नयनबहुत सुखपावैं । तैसेइ हरितबन तैसिय श्यामघटा तैसिय बिच बग पंक्ति दिखावैं । तैसेइ मोर कुलाहल करते हरषि हिंडोरन गावैं । कबहुंक हिलि मिलि खेलन के मिस सघन निकुंज बुलावैं । कबहुंक लै संगसखा मौचवांढ़ मुरलि मलार बजावैं । बिछुरे प्राण रहत कैसे

करि बहु यतननि समुझावैं। निसिदिन बसति चरन सरन प्रभु मिलि
पहिले उठिधावैं ३०२ आजु घन श्यामकी अनुहारि। उनइआये
संचरे सखिरी देखि रूपकीआरि। इन्द्र धनुष मानो पीतपिछौरीदा-
मिनि हँसनि विचारि। मनोबगपांतिमाल मोतिनकी चितवतिचित
निहारि। गरजत गगन गिरह गोविंदके सुनत श्रवण दुनि रवारि।
सूरसकलगुण सुमिरि श्यामके बिलपतिहैं ब्रजनारि ३०३ ॥रागधनाश्री॥
अलिये बहुरि न कबहुं मिलेहरि। कमल नयन मिलिवेके कारणआ-
पनो यतनरही बहुतै करि। कांहुनप्रकटकरी यदुपतिसों दुसहदिराम
गई अवध्योटरि। धीर न धरै प्रेमव्याकुल तन लोलितश्वास नीर लोचन
भरि। बिनगोपाल भईहैं ऐसी ज्यों मछरी जलबिन करी धरि।
सूरदासताते बिथकित भइ अब यह बियोग बिरहसागर तरि ३०४ ॥
रागसारंग ॥ ब्रजते पावसपै न टरी। शिशिर बसंत शरदगत सजनीजीती
अवधिकरी। उनैउनै घन बरसत बाढ़िउरसरिता सलिलभरी। कुमकुम
कज्जलकीच बहेजनु कुच युग पारपरी। तासौंविषमप्रकट ग्रीषमऋतु
इतियेतापकरी। सूरदासप्रभु कुसुम अंबुजनु बिरहिनि तरनि जरी
३०५ अबवे मधुपुरीहैं माधो। जिनको दरशविलोकत नयनन युगहोतो
पल आधो। तबवह कृपाहुती हमऊपर नाजत बदीअगाधो। सूरदास
अपने ब्रजके गुण बकसावत अपराधो ३०६ हमैंनँदनंदन किधौंगारो
इन्द्रकोप ब्रजबह्यो जातहो गिरिधरि सकल उबारो। रामकृष्ण बल
बदत न काहू निडर चरावत चारो। सगरेबिगरेको गिरऊपरबलको
बीर रखवारो। तबते हमन भरोसो पायो कोमिलत्रावर्त मारो। सूर
दास प्रभु रंगभूमिमे हरि जीतोनृपहारो ३०७॥ रागधनाश्री ॥ हरिमुख
देखेबिनजान लागे बहुते दिना। कैसेकरि नयन राखौं कान्हबिना।
यतन कहाकरत सखी सराहिं छिना। सिंह कैसेजीवत बनचरसंगा॥
जोपै नाहींडरपत बचन बिना। अबकहा कहिअत सूरश्याम सुना३०८
आजु बिरहिनी बिरहातुरह्वै केशव केधाय रहतरही। आसरकथा क-
टिलकरिकरि मन क्रमक्रम व्यथासही। संध्या सांझ दीआनिचलीउ-
ठिरहतन अंकगही। अतिश्रमसलय कुमकुमासींचत सरिता सेजबही।
तनतलफत न सुहातकछू अवनयनन नीर बही। तो क्यों सूरहोय अब

प्रीतल पिया वियोग रहौ ३०९ ॥ रागकल्याण ॥ आवन कहिगये अजहुं न आये येतेदिन लाये। इतने दूरि गोपाललाल लिखि संदेशहु न पठाये। चलतधिते मुसकायके मृदुवचन सुनाये। तेईमगठग मोदक भयेमन धीर धरनहरि तनछूके करि छिटकाये। जगमोहन यदुनाथ केशुराजानि न पाये। मानहुं सूर तिहिलाजते घनश्याम सुंदर बहुरि न वदन दिखाये ३१० ॥ रागमलार ॥ सुन्दर श्याम पियाके आरत। सखा सखीबाला प्रौढ़ासब बासर रैनिसम्हारत। वे चकई सरउडगशशि चाहत येसब उनहिं बिचारत। इनसोंकेलि बिलास रासरस सबके संग गोचारत। येतमचुर बिनमणि दधिगापत वे इनको अनुसारत। सूरदासप्रभु रसिक मधुरबलवे युवतिन परगासत ३११ नैननलायोहेभरु। ऊंचे चढ़ि टेरति आरतुर कहिकहि गिरि धरु। गानकरत सींचत वृन्दावन नन्दको घरु। कौन कौनकी दशा कहौंसखि ब्रजतत्तपरु। सबैरहेपगि श्याम सुंदरमें नारीनरु। सूरदास प्रभुरहेमौन कहेउ सचु प्रेमको भरु ३१२ जबजब सुरत्योकरत। तबतब डवडबायजलउ मँगि भरत। ज्योंयुगमीन कमलदल ते चलिजलको अरत। पलक कपाटन होयतो तोयनि करत। ज्यों जलबिन्दुइन्दु मुखते मानो मुक्ताउरढरत। सहजशृंगार शोभा छबिहारोहरत। राधानयनचकोर राखिनँदनंदन चन्दनजरत।सूरदासप्रभुतुम्हरे दरश बिनधीरनधरत ३१३ ॥ रागसारंग॥ मैंमन बहुत भांति समुझायों। कहाकरों दर्शनरस अटक्यो बहुरिनहीं फिरिआयो। इन नयननके भेद स्वरूपन उरसहँ आनिदुरायो। मानो तिहि अभिमान सुपत ह्वै पलटो देन सिखायो। लोक वेदकुल निदर निडरह्वै करतआप मनभायो। मुखछबि निरखि बोधि निखंगलों हठि अपनपौ बँधायो। कहांवे दूरिकहा बन घनयह अपने बलकर धायो। अतिबिपरीतिहोत सूरज प्रभु मुरझियो मदन जगायो ३१४ रागनट॥ मेरे कान्ह कमलदल लोचन। अबकिबार मुखआनिदिखावहु कहालगि जिय शोचन। करतओट पावरहे नहिं कबहूं अरुमाखन की चोरी। अपने जिय नयनन भरि देखहिं हरिहलधर कीजोरी। यह लालसा रही मनमेरे बैठी देखत रहिहौं। गाय चरावन बहुरि श्यामसों भूलिन कबहूं कहिहौं। एकबार मिलिजाह सांवरे अनत

न कहुंके ऊतर । क्योंहूं आँखिनको सुखदीजै सुर पाहुने सूतर ३१५ रागधनाश्री ॥ अबहरि भये कठोर । पूरबप्रीति बिसारि मोहन नव तन राचेओर । जबतुम वृन्दाबनते सिधारे धीरजरहेउ न मोर । बिरहके बाण लगाये मोहन बीधेडरकेओर । जन्मजन्मकी दासीतुम्हरी नागर नवलकिशोर । सूरदासप्रभु कबहुं मिलहुगे कहांरहे चितचोर ३१६ उतीदूरिते को आवैहो । जाकेहाथ संदेश पठाऊं सो कहिकान्ह कहां पावैहो । सिंधुकूल इकदेश कहतहैं देख्योसुन्यो न मनधावैहो । तहांरच्यो नवनगर नंदसुत पुरिद्वारिका कहावैहो । कंचनकेसब भवन मनोहर राजा रंक न तृण छावैहो । वहँके सबबासी लोगनको ब्रजको बसिबो नहिं भावैहो । बहुबिधि करत बिलाप बिरहिनीबहुत उपाव न चितलावैहो । कहाकरों कहँ जाउँ सूरप्रभु को मोहिं हरिपै पहुंचावैहो ३१७ शरद समयहू श्याम न आये । नाजानों रसबशके अवसर किन बिरहिनि बिरमाये । अमल अकाश कुसुम जल फूले शशि नभ स्वच्छ जनाये । तनु सरिता सरिता जल उज्ज्वल अलिकुल कमल सुहाये । सूनीसेज तुषारतेज बिरहानल नन्दन आये । प्रीतम अंग संगसुखकारण सजिसजि सेजबिराये । आनँदकन्द मकरन्दछन्द मिलि ग्राहक गरल गँवाये । हुलेमिलनकी अवधिसूरप्रभुभयेब्रजनाथ पराये ३१८॥ रागमलार ॥ ऐसेसाईं पावसऋतु प्रथम सुरति करि माधोजू आवैंरी ॥ ध्रुव ॥ बरण २ अनेक जलधर अतिमनोहरबेष । तिहिसमय यहगगनशोभा सबनिते सुबिशेष । उडतबक शुकवृंदराजत रटत चातकमोर । बहुभांति चितहित रुचिबढावत दामिनी घनघोर। धरणि तनु तृण रोम हर्षित प्रियसमागम जानि । और द्रुमबल्ली बियोगिनि मिलीपति पहिंचानि । हंसपिक शुक सारिकाअलिकुंजनाना नाद । मुदित मंगल मेघबरषत गतिबिहंग बिषाद । कुरज कुन्दकदम्ब कोबिद करणिका रसकंज । केतकी करबीर चिलक बसंतसम तरु मंज । सघन तरु कलिका अलंकृत सुकृत सुमन सुबास । निरखि नयनन होतमन माधो मिलनकी आस । मनुज मृग पशु पक्षिपरमिति और अमित जे नाम । सुख सुदेश बिदेश प्रीतम सकल सुमिरतधाम। हवैहे न चित्त उपाय शोच न कछुपरत बिचार । नाहिंब्रजबासी बि-

मारत निकटनन्दकुमार । सुनिहुदशा दयाल सुन्दर ललितगतिमृदुहास । चारुलोल कपोल कुण्डलडोलबलित प्रकास । बेणुकर कलगीत गावत गोपिमिगु बहुपास । सुदिन कबयहि आँखिदेखैंबहुरिबाल बिलास । बारबारहि सुधिरहति अति बिरह व्याकुल होति । बालबेगि मुलगै जैसी दीन दीपक ज्योति । सुनिबिलाप कृपाल सूरजदासप्राणप्रतीति । दरशदै दुखदूरि कीन्हों सहित सकै उरप्रीति ३१९ ॥ रागकेदारो ॥ श्यामजूहों निजुकै बिसारी । मारग चितवत सगुशामनावतका गउडावत हारी । नाजानो सखि कौन हेतु ते ब्याधओयह दुखभारी । सूरदास प्रभु तुम्हरेदरशबिन कामबिषम शरमारी ३२० ॥ रागमलार ॥ कहा परदेशीको पतियारो । प्रीति लगायचले मधुबनको बिछुरे दुख दीनोअति भारो । ज्योंजलहीन मीनतलफतहै तैसेव्याकुल प्राणहमारो । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनबिन दीपक जैसेभवन अँध्यारो ३२१ चलहुधौं ले आवहिं गोपाले । पायँ पकरि कै निहुरि बिनतिकहि गहिहलधरकी बाँह बिशाले । बारिक बहुरि आनि दिखरावै नन्द आपने बाले । गायन गनत गोप गोपीजन सीखत बेणु रसाले । यद्यपिमहाराज सुखसम्पति कौनगनै मोतिन अरुलाले । तदपिसूरआकरषि लियोमन उर घुंघुचिनकी माले ३२२ ॥ रागमारू ॥ तुम्हरो गोकुलहो व्रजनाथ । घेरेउहै यहमदन महाभट चमु चतुरंगीसाथ । गरजत अतिगम्भीर निशानु जालगयन्द अपार । धुरवाधूरि उड़त रथ पायक घोरनकी खुरतार । चपलाचमचमाय आयुधवर भांतिबकनि आकार । परतनिशान धाउ तमकतनभ कटकटाति तिहिबार । मारे मार करत दादुरअति पहिरेबहुत सनाह । हरेकवच शिरमुकुट बांधि कै बरहि मिले सब आय । कारेपट पहिरे पिक चातक कहत भाजि जनिजाहि । उनरि २ वै परत आनिते योधा परम उछाहि । भयो घायल धीरजदुहुं बहियां दुरजन उठत ददाल । हबकतहाथ आयगयो योधा अटकिरहेउ उरशाल । भाल खण्डकारी मानोंरथ आन्योभोलों घाल । रह्यो हँकार सुखेत सूरमा सकतरहो उरशाल । अतिहि बियोगजानि किरपानिधि आय सकतिहिगाउँ । कापै जाउँ अनाथ कृपानिधितुमबिन नाहिनठाउँ । नन्दकुमार यशोदानन्दन कमलनयन

बलिजाउँ । पठयो मोहिं जगाउ दिवेको सूरदास मेरोनाउँ ३२३ ॥ रागमलार ॥ बिछुरनजनि काहूसोंहोय । बिछुरनभयो राम सीताको कर्मलिखित खोजो टोय । बिछुरन भयो मीन अरु जलको तलफि तलफि तनखोय । बिछुरन भयो चकई चकवा को रैनि गवांई रोय । रुदन करत बैठी मन महियां बात न बूझै कोय । सूरदास स्वामी को बिछुरन बनत उपाय नसोय ३२४ बलैया लैहौं हो बीर बादर । तुम्हरे रूप सम हमरे प्रीतम गयेनिकट जलसागर । पालागों हारिका सिधारो बिरहिन के दुखदागर । ऐसोसंग सूरके प्रभु के करुणाधाम उजागर ३२५ ॥ रागसारंग ॥ उपमा न्यायकही अंगनकी । चले मधुपुरी क्यों फिरिआवैं शोभाकोटि अनंगनकी । मोरमुकुट शिर सुरधनुकी छबि छुरिरहे दरशावैं । जो कोउकरै कोटि कैसेहूं नेकहु छुवन न पावैं । अलक भ्रमर भ्रम भ्रमत सदा बन बहुबेली रसचाखैं । कमलकोशबासी कहियतपै बंशबंश अपनो मनराखैं । कुण्डल मकर नयन नीरजसे नाशा शुक कबिकुल गावैं । थिर न रहै सकुचे निशि बशह्वै पंजर रहिकै बेणुसुनावैं । भ्रू धनु प्राणहरण दशनावलि हीरक अधर सुबिम्ब । सहज कठिन संगति बुधिहत्ती तहँ कीन्हों अवलम्ब । भुजा प्रचण्ड महारिपु मारक अंश सुक्यों ठहराइ । तामें सप्त छिद्रयुत मुरली मनुहर मंत्र पढ़ाइ । कटिकेहरि पदगति सुहंस सम पीताम्बर तनुहै परधान । मृगीआसगति शिथिल प्रेमपथराखि अवधिबश प्रान । सूरदास शोभा चित चितवत उपज्यो उत्तट बिचार । निरुपमरसपीड़ो तन ... न्दकुमार ३२६ लिखे नहीं पठवत है बोल । है लागत है बहुमोल । हम इहि बार श्यामपर लेटत बीच बिरहको ओर । सूरदास प्रभु हमरे मिलनको हृदय करेउ सुकठोर३२७ कौन सुहागिलसों मनुमिलिहै वा मधुकरके मीत । दिन दशारहि मथुरा हू तजिहैंमोमन यह परतीत । ब्रजते मवन कियो ज्यों औरैके तेऊ दिन बीत । राधामुख सुख यशुमति लालन तन भये ग्रंथ अबीत । घरघर पुरपुर बनबन बीथिन इहै हिलगके गीत । एकौसरण कलपरी नतबहू मुखसुख माधुरिपीत । नहिंकोउ शिरपर नहिं काको डरनहिं लोगनको भीत । नातरु काज करहिं क्यों ऐसे ज्ञानी त्रिगुणा

तीत। सुमिरतनाम नृपति पदवीको सुनतबचन अतिप्रीत। कहिये दशादेहकी सूरकिरण नवनीत ३२८॥ रागमलार॥ नयननिशा धौंपैरही। निरखत बदन नन्दनन्दनको भूलि न तृपति लही। पचिहारी इनकोरुचि कबहूं मैं परमिति नलही। तन बिसख्यो कुललाज गँवाई जगउपहास सही। एतेपर सन्तोष नमानत मर्य्यादा नगही। सूरदास इनलोभिनके सँग कबलौं फिरोंबही ३२९॥ रागसारंग॥ कहो कैसेके दर्शन पाऊं। सुनहु पथिक वहि देश द्वारका जो तुम्हरे संग आऊं। बाहर भीर बहुत भूपनकी पूछत बदन दुराऊं। भीतर भवनभोग भामिनिभर त्यहिठांकोहि पठाऊं। बुधिबल बिधि संयोग यतनकरि तन पियपै पहुंचाऊं। ब्रज यमुनातट केहि रसिक बिनु किहि यह दशा सुनाऊं। यद्यपि सूर जाउं प्रभुतारस भवनको भलो मनाऊं। नवकिशोर मुख मुरली बिन इन नयनन कहा दिखाऊं ३३०॥ रागगौरी॥ तुम्हरीप्रीति कि धौं तरवारि। दृष्टिधार धरिहती जुपहिले घायल सब ब्रजनारि। बिलपत परत सँभारत पुनिपुनि बदन सुधानिधि बारि। करी समर निजखेत वृन्दाबन रणहु नमानी हारि। अब यह कृपा घोष लिखि पठवत कीन्हीमदन गुहारि। कछु अवशेषरह्यो सूरज प्रभु सोउ जानि घालोमारि ३३१ बातहमारीमानोजोती। आवन कहो बहुते दिनलाये तोरी उनहीं कोतो। कछुइ बोलनि केलि आपनी खोइदई वैबाती। ताते परमिति यही ठौरहै चाहै बचन सोवाती। इतनी कहै कोर धरि राखै योगआपने घरको। पैजखैंचि मेटन आयेहो तनऊजारीखरको। नन्दनँदन लेगयेहमारी याब्रजकी सबऊच। सूरश्याम नहिंरटत हृदयते ज्यों ऊजरखेरेकी दूब ३३२ सपने हरिआयेहो किलकी। नींदजु सखी भई रिपु हमको रहि नसकी रति तिलकी। जोजागोतो कोऊ नाहीं रोकेरहत न हिलकी। तब फिरि जननिभई नख शिखते दीप बाति ज्यों झिलकी। पहिलीदशा पलटि लीनीहै त्वचा त्वचाकि तन पिलकी। अब कैसे सहिजात हमारी भई सूर गति झिलकी ३३३

रागबिलावल॥ कहांलौं मनराखिये बिरमाइ। प्र्यासमुता सुत घरनी आइ। हरिबाहन ध्वं ताम्रु सहोदर उदित मुरछि महि जाइ। गिरिजापति रिपु नख शिख ब्यापत

सुधा पिय कथासुनाइ। विरहिनि विरह आप बमादीन्हो लैवैकमल जनु पाइनु लाइ। वेगी मिलौ सूरके स्वामी उदधि सुतापति मिलिहैं आइ ३३४ महादुखित दोउ मेरे नैन। जा दिनते हरि चले मधुपुरी नेक न कबहूं कीनो शैन। भरेरहत अति न निघटत जानत नहिं कब दैन। महा दुखित अतिही भ्रममाते बिनु देखे पावत नहिंचैन। जो कबहूं बलको नहिं खोलत चाह न चाहत मुरली मैन। छांड़त सखा में ये जो शरीरहि रहिके बिथाजात हरिलैन। रमे नयन यहै इन मिलि जैहै और न भाये बैन। सूरदास प्रभु जबतेंबिछुरे तब ते सब लागे दुख दैन ३३५॥ रागमलार॥ क्यों जिवहि कमल कांदो हीन। प्रीतिजिनसोंहुती सजनीबिछुरि तिनदुख दीन। कूलसागरमीन तलफत हैं तहँ लसतछीन। श्यामबारि सुलई बिधिहरि अमलकमल अधीन। नयनअंबुज और शशिगगा दहतहैं मिलितीन। सूरदासप्रभु बिनु ऐसे ब्रज जो चीन्हत नहिं ताहि प्रबीन ३३६ माईरी मेघ गाजै। मनहु कामकोपि चढ़ेउ कोलाहल करक बढ़ेउ पिक चाहत जयजय निशान बाजै। बरशाबरशा बादर बनायेते बाजिगज बिराजै। दामिनिकरबार करनि कंपत सबगात डरनि जलधर समेत सैन्य इन्द्रधनुष साजै। ऐसे अलिलाय धीर बिगत चीरत नयनलाजै। अबलनि अकेली कर अपने कृतनिते बिसरी अवधिसुर सकल अंगमें हहराइभाजै ३३७ माईरी कत कौरनि कोनात। देखोइन्हीं कमलमधुपनकोक्षरा नहिं प्रीतिघटात। कोइल कपिशुक बायस बलिछलि नाहिनडहिवन जात। यद्यपि सुधाराहु शशिपीनो बैठि एकहीपात। श्रुतनितनेम यज्ञ ब्रतकीजत बहुंबिधि नीकीभांत। तिन्हैपायसुख मन मोहितजिय क्यों जननी जगखात। इनको कहा परेखो कीजत अबला बल सुखसात। सूरदास मैं तबहींजानी जबकर बाजो तांत ३३८॥ रागकेदारो॥ सखीरी श्यामक्यों ह्वसेजाइ। औगुण हमजुकिये मेरेप्यारे सो क्यों न देहु बताइ। प्रीति अचेतभई जो हमते थोरोसो उपजी सतभाइ। पांय परौं बिनती करौं जो कोउ श्याम मिलाइ। थोरे दिनकी बयक्रम अबला कासोंरहेलपटाइ। चन्द्रकीरश्मि अगिनिह्वै लागी तारेगनतबिहाइ। बदन मलीन भई सबगोपी छांड़ि चले यदुराइ। नितप्रति भजनकरत

ही मोको चरणकमल चितलाइ । चोटीपर कहा कटकाई माधव जै तुमचले बिसाइ । कानन कुंडल अरु बनमाला सोछबि क्यों बिसराइ । सूरदास घातकभइश्यामा पिउपिउ रसना लाइ । नीरदश्याम सुखदसो भवतनहै कोउआनि मिलाइ ३३९ सखीरी श्यामघटावेआई । जिहि विधिगोचारत मोहनवल उमगिउमगितितधाई । थकितभईचहुंदिशि मुरली धुनि मोहन जबहिं बजाई । तैसोइ नील बपु निरखि निरखि झुकि बरषत घन बलभाई । चकित रहीं सुरभी जित कित सब तजि तृण प्रेमालुभाई । मानहु कलित इँडोर पिराड रुचि धरे अँचल यक-चाई । तव दल छुवविचित्र बिराजत भ्राजतहै बिधुमधू सुहाई । मनहु नीलनग सुरँग सरापट सनिसह नाल सुहाई । सुरति भूयश्रति खलत बिगतकरि अंगसुबरनि बहाई । मनहु बियारिशि नगरदामिनी पटनि लुहित डुमहाई । कुलपरगुंछ स्वच्छ मुक्ताफल कटि केयूर बनाई । उझकत चुगत हंस सारस मानो पावस सबहिं जनाई । चातक मोर चकोर भेखधुनि पिकसमरेश सुनाई । फणिसणि लियेफिरत चातक ज्यों मनु रहे ध्यान बिनाई । उडपति बिधुद्युति घनलों गोवे कुंहकत सरस मलाई । जैसें बक शोभित कोमलधर हिरत फिरत बिमलाई । सुफलक राज आनन यह राजत गाजत गगन सोहाई । कौंधत चपल छटा दशहूंदिशि डोलत मदन दुहाई । बिन गोपाल सकल ये हमको बिष सम लागत माई । सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि गोपिन लेहु जिवाई ३४० सखीरी दुसह कहो क्योंसहिये । यह घनघटा रैनि पिक बोलत बिरह दहन दुखदहिये । शीतकूल दामिनि बैरनिभइ भेकनि भीमशूल सहिये । नींद जो गई सिराय जलज ज्यों तिल बिश्राम न गहिये । नाहिन हितूकरन कोउ अपनो जासों ये दुखकहिये । मदना तीर गँभीर नीरपर बिनुसुखं नाउ ज्यों बहिये । पलक न मिलत छुटी किहि औसर शोक सरल तन तइये । कोकिल काक मोर पुनि कुंह-कत हरषत कहो न सहिये । जो कबहूं याकुपद निरन्तर रहत परम लागत जोहिये । तुवकह सूरति झूठ बदतसब रथ न होत बिनुपहिये । बिकल सयान शँवाथ मन्दमति ज्यों ज्यों अवधि बतइये । सूरश्याम बियोगिनि बिह्वल सकोआवत न हिये३४१ ॥ राग मलार ॥ हरिकीप्रीति

उरमाहँ कोरिकै। आयेअक्रूर लैचले श्यामको हितनाहीं कोउहरिकै। कंचनको रथ आगे कीन्हो हरिहि चढायो जोरिकै। सूरदास प्रभुसब सुखदाता गोकुल चले उजारिकै ३४२ बारक जाइयो मिलि माधो। कोजानै जिय छूटि जायगो श्वासरहै जिय साधो। पहुनहु नन्दबाबाके आवहु देखिलेहुँ पल आधो। मिलहीमें बिपरीतकरीबिधि होतदरशको बाधो। सोसुख शिव सनकादि न पावत जो सुख गोपिन लाधो। सूरदास राधाबिलपतिहै हरिको रूपअगाधो३४३हरिहम काहेको यों बिसारी। प्रेमतरंग बूडत ब्रजबासीतरल श्यामताई हारी। ऋतुमाधव पिक बचन सुधाकर मरुतमदन गतिभारी। सहिनहिंसकतबिरहत्रासो तन आग मिलाकन जारी। ज्यों जलथाकेमीन कहाकरै त्योंहरिमेलि अब हारी। बिजय अधोमुख लेन सूरप्रभु कहियो बिपतिहमारी३४४ जोपै यहै हुती उनकेमन। तौ सब कमलनयन हमकारन काहेकियेब्रज इते यतन। बिषजल व्याल बरुण बरषानल अखिलअशुभ हलिराखे। संततसंग रहत काहूमिस निठुर बचन नहिंभाखे। उन बिपदन कुंचित जो करते कछुन जोय रहेती। कहा कहोंउननिठुरश्यामकोकोनीछ्यों घर रेती। कहिये कहा जो अब जानतहैं आतनको गति सेती। सूरदास प्रभु हितसों चितकै बेगि प्रकट बीतैसी ३४५ तू कहि धौंरी कब हरि आवहिंगे। सँगकिनि चलहु गोवर्द्धनधारी मुरली शब्द सुनावहिंगे। अपने वे रँगमहलमें ठाढे आपहि आप चितावहिंगे। सूरदासप्रभु बेगि किन मिलहु कमलनयन सचुपावहिंगे ३४६॥ रागसोरठ ॥ सखीरीनन्द को गोपाल हमसों गयोतृण ज्योंतोरि। मीन जलकी प्रीति सजनी नाहिं निबही ओरि। कहाभयो आकाशगुडिया कर हमारेडोरि। मिलनको ब्रजनाथ ऊधो मिले गोरि बहोरि। कूबरीके चन्दनराचेप्रीति नाते जोरि। सूरहीरा हाथ टारेउ रही समुद बिरोरि ३४७ निशिदिन बरषत नयन हमारे। सदा रहतपावसऋतु हमको जबतेश्यामसिधारे। दृग अंजन लागतनहिं कबहूं उर कपोल भयेकारे। कंचुकिसूखतनाहिं सुनु सजनी कुचबिच बहत पनारे। सूरदासप्रभु अंबुबढ्योहै गोकुललेहु उबारे। कहँलगकहों श्यामघनसुन्दर बिकल होत अतिभारे ३४८ आछे कमल कोमारग लोभी है अलि शोचकरै। कनककमलिकालवदल

के ढिग बसते उर्ध्वकियरे। कबहुंक पस सँकोचिमौनह्वै अंबु प्रवाह
झरै।कबहुंक कम्पितचकितनिडरह्वै लोलुपता बिसरै। बिधुससूहसं
डलमेंराजत अमृत अंगभरे। एतेउ यतनबचतनहिं तलफत बिनमुखस्वर
उचरे। कीर कमठ कोकिला उरगकुल देखत ध्यानधरे। आपन कोन
पधारो सूरप्रभु देखे कह बिगरे ३४९आये नहिंमाई कोई धों। अबतो
सखी सँदेश कहिनभये नयन थकेमग जोई धों। मथुराते जायनिवास
सिंधुकियो प्राण जिवनधन सोईधों। द्वारावती दूरि अतिमारग कैसे
पहुंचै तोईधों। नाहिन मिलन निराश मृतक भई ब्रजबासिन कहि
रोईधों। सूरदास स्वामी यह जानो जिय अपचैन सबन होईधों ३५०
ब्रजकहि पठय सुशील दयो हम पुनि मन मुनिमत राखै। स्नेहनेह
पुरनारि सकल अति रतिकरि कबहुं न भाखै। ज्यों सुनि हम अकु·
लात पांति दुख त्यों कोउ और न पावै। सूर सँदेशो कहियो हरिपै
तापस मति बिसरावै ३५१ सुनिसुनि प्रभुपै कछु न रहेउ। बैठिरहेजै·
सेही तैसे आनँद ब्रज उदयो। सखा अकुलाय पाय बिरहाज्वर पुनिरस
रास भयो। सूरज सुभट महामुनि ज्ञानी कौने ध्यान लहेउ ३५२ ब्रज
तौ तुमबिन बहुत बिहाल। प्रेमअग्नि कैसे सहै पशुनि क्यों सहैसौ·
तिन शाल। कुशलकर्म केशवके सुनिसुनि पांगलगावतभाल। सूरज
तपत दगत सीनाबलि छुटी नीर छुटि जाल ३५३ ॥ रागसारंग ॥ माधव
भलो नहीं यह रीति। सके सखा ब्रजजन बिन तुमहीं और जनावो
प्रीति। बीथी लता ललित कुसुमित बन श्रीराधा रस गीति। यहसुख
देखि दूसरो चाहत कहयह भई बिपरीति। बेणु बिसारि धनुष कर
लीन्हो शत्रु हननकी भीति। राजअभिमान और राजाबलि अमकरि
करिके जीति। हमरो जीवन तनमन त्राता सूर सनेह कि नीति।कहा
करिहौ करुणाकरि पाछे अवधि किते दिन बीति ३५४ ॥ रागगुर्जरी॥
मोहन मांग्यो अपनो रूप। ज्यों ब्रजबास अचेतहि बैठी ताबनिहारि
अनूप। मेरो मासु मेरो लोचन अलि लैजुगये धुपि धूप। ताऊपर हम
लेनपठायो थालि धरेउ ज्यों सूप। अपनो काज सँवारि सूरप्रभु हमहिं
बतावतकूप। लेबादेई घरीघरीमें कौनरंकको भूप ३५५॥ रागकान्हरो॥
गो रिपु ता रिपु ता सुत आयुध प्रीतम तहां निन्यारे। सो बिरंचि

सम्भव जा तनते तहँ रहे प्राण हमारे। सो बरजतही गवन कियो हठि स्वाद लुब्ध रस आल। कुन्तीनन्द तात मुख जोवति कलमलाइ अति ब्याल। भोर भये पशु बन्धन छूटे ज्यों बिरहिनि रति मानै। यहि बिधि मिलहिं सूर के स्वामी चतुर होय तौ जानै ३५६॥ रागसारंग ॥ बिछुरेउरी मेरो बाल सँघाती। निकसि न जात प्राण ये पापी बिहरत नाहिँ न छाती। होतिहि समय मथति दधि भलीभरि यौबन मदमाती। जो जाने हरि चलतमधुपुरी लाजछांडिसँग जाती। ढारत नीर नैनभरि सुन्दरि नहिं सुहात दिनराती। सूरश्याम सिखिबे कोसखीरी बेगिपठैलिखिपाती ३५७॥ रागकेदारो॥ कहाकरोंहोंअपने हारे। जब गोपाल गये गोकुल ते मथुरा जाय कंस उन मारे। बसुदेव पिता देवकी माता वैजु कहत जगदीश हमारे। मिलहु न जायभाइके नातेसेवा बहुतकरी हमबारे। पालागों ऊधो यह कहियहु नैन सजल भरि ढरत पनारे। सूरदास प्रभु तुम्हरे बिछुरत ऐसे भये कोखिके जा-रे ३५८ बोलिरी सखीचातक पिक मधुकर अरुमोर। दिनहिंदिनको न सहैं बिरहव्यथा घोर। नलिनीदल दूरिकरौ मृगमदका पंक। अब जनितन राखिलेहु मनसिज शरशंक। सजि सुगन्ध सुमनसेजशशिसों कहिजाय। जैसेहि यह बीरकर्म देखहिं सब आय। लाउमलयमारुत अरु ऋतु बसंत संग। पूजत सखि काम मर्म सन्मुख रणरंग। सूरदास प्रभु कृपाल कोमल चित गात। ताही क्षण प्रगट भये सुनत प्रिया बात ३५९॥ रागअड़ानो॥ सबन अवध सुन्दरी बधे जनि। मुक्ता माल अनंग गंगनहिं नवसत साजे अर्थ श्यामघन। भाल तिलक उडपति न होय यह कबरि ग्रंथि अहिपति न सहसफन। नहिं बिभूति दधिसुत न कंठ जड़ यह मृगमद चन्दन चर्चित तन। गगन चर्मयह असितकंचु की देखिबिचारि कहां नन्दीगन। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशबिन बर बश कामकरत हठ हमसन ३६० सुनु सखि श्याम कहांगये मेरे आगे ते। चौंकि परी सपने हरि देखे बिलपि बियोगिनि जागेते। बारों ये आंखि उघरि दोउ आईं अधिक प्रीति अनुरागेते। मिथुनकोक जैसे मिलिबिछुरत रजनि बिमुख भ्रमभागेते। सकहों जरिजरही पहिलेही बिषम बिरह दव दागेते। सूर श्याम बिन अब क्यों जीजै पञ्च बारा

गारलागोते ३६१ ॥ रागमलार ॥ सजलजलद बानैतबदरिया बधनबिरहिनी आई। मारू मोर करत चातककोकिल चहिंलग टेरसुनाई। दामिनिकर कर बारसेहथी माथक बुंद बनाई। मन्मथ फौजजोरि चहुंदिशते ब्रजसन्मुख ह्वै धाई। नहीं सुभट कैसेकाहि पठऊं पथिकन बांहदिशि जाई। थक हम दीन दुखित माधव बिन दूजे गरज डराई। सुनो घोष बैस तकिआये मारू निशान बजाई। गोवर्द्धनधर दूरि सूर सुनि होते आज सहाई ३६२ अब ब्रज भनहुं अनाथ कियो। सुनुरीसखी यशोदा नंदनलिखि संदेशनदियो। तब वह कृपा श्यामसुंदरकी करगिरि टेक लियो। करिप्रतिपालगाय गोपिनको कालीगरलपियो। यहसबदोष हमारोबिछुरत फाटिनगयोहियो। सूरदासजग नँदनंदनबिनु कारण कौनजियो ३६३ हरिकोमारग दिनप्रति जोवति। चहुंदिशि चितै चकोरचंदज्योंलुसिरि २ गुणरोवति॥ लिखिन पठाय देहु नँदनंदन आनहुकागददेवति। जबतेतुमबिछुरे मुरलीधर नेकुनींदनहिंसोवति। कहँलगिकहौं बिकलतातनकी बिरहव्यथा भरिभोवति। सूरदासप्रभु तुम्हरेदरशबिनु जन्मअकारथ खोवति ३६४॥ रागनट॥ हरिबिछुरतप्राण निलज्ज रहेरी। पियसमीप सुखकी सुधिआवै शूलशरीर न जाति सहेरी। निशिबासर ठाढीमग जोवतियेदुख हमनहुनैनचहेरी। गवन करतदेखननहिंपाये नयननीरभरि बहसिबहेरी। तेबातैंबसिरहींहिये मेंउलटि अवधिकेबचन कहेरी। सूरश्याम बिनुपरब बिरहवशमानहुं रबिशशिराहु गहेरी ३६५ ॥ रागसारंग ॥ बेगिनिकुंज चलहु नँदनंदन तुमबिनुराधा निपट निरंग। सन्तताहितकरते अनहित रिपुसदृशहोत उनके सबअंग। बहतमन्द मलयानिल ताको प्रकटित कुवरी भीम भुजंग। पिकचातक शुकधुनि शंकामनअवलोकत भुवधनुषहुरंग। अतिगौरंग श्यामतासों मिलिडभयडर अधिक उतंग। नाहिंन आवत निकट नपरशत शिवशिव भ्रमकरिडरतअनंग। अंजन राहुरूपनयनन में निरखतही बिधुको मदभंग। सूरदुसंधि रहेउ सजनीतन अबनहिंरहे श्यामबिनुसंग ३६६ दूरिकरहु बीणाकर धरिबो। मोहेमृग नाहींरथ हांक्योनाहिंन होत चन्दकोढरिबो। बीतीजाहि सोईपैजाने कठिनहै प्रेमफांसिको परिबो। जबतेबिछुरे कमलनयन सखिरहतन नयननीर

को गरिबो। शीतलचंद अग्निसमलागतकहिये धीरकौन बिधिधरिबो। सूरदासप्रभुतुम्हरेदरश बिनु सबझूठो यतननि कोकरिबो ३६७ भयेनिजनयन अनाथ हमारे। सुन्दरश्याम वहांते सजनीसुनियतदूरि सिधारे। वेजलहैं हममीनसखीरी कैसेजीवहिँ न्यारे। हमचकोरचातक अंबुदतन सुधाबरषि प्रतिपारे। मधुबनबसत आशदरशनकीजोइजोइ मगुहारे। सूरश्यामकीनीबिधिऐसीमृतकहुंतेफिरिमारे३६८दिनहींदिन कोसहैबियोग। नाहिंनयहशरीरसखिमेरो यतेबिरह जुरियोग। सजि श्रीकुसुमसुगन्धसेजरचि बसनकुमकुमाबोरि। नलिनीदलनि दूरिकरि उरतेकंचुकिकेबँदछोरि। जनिबरजेबनबदत मोरपिक मधुपनिसोंकहि आउ। उदित चन्द चन्दन चढ़ायदल त्रिबिधसमीर बहाउ। रतिप्रिय नामश्यामसुन्दरको श्रवणसुनाय सुनाय। तोदेखत तनहोमि मदनमुख मिलिहैंमाधवजाय। सूरसकलघट अंतर्यामी जानियुवतिकी रीति। तबहीं प्रकटभये नँदनन्दन सुमिरिपुरातनप्रीति ३६९ सकुचत कहिन सकतगुप्त हृदयकीबात। सकत बचन अनागत कोऊ कहिजुगयोअव रात। रजनी घटेन सूरप्रकाशै कबउठिदेख्योंप्रात। सूरदास प्रभुसँगते बिछुरेको लावैं कुशलात ३७० तब न बिचारीरी यहबात। चलत न फेंटगही मोहनकी अबठाढ़ी पछितात। निरखि २ मुखरही मौनह्वैथकितभई पलपात। जबरथभयो अदृष्टि अगोचर लोचन अतिअकुलात। सबैअजान भईंवहि औसर ढिगाहि यशोमतिमात। सूरदास स्वामीके बिछुरे कौडी भरिन बिकात ३७१ ॥रागमलार॥ कोकिल हरिकोबोलि सुनावो। मधुबनते उपटारि श्यामकहँ यहिब्रज लैकर आवो। याचक शरण सुदेतसयाने तन मन धन सबसाजु। सुयशबिकात बचनकेबदले क्यों न बिसाहत आजु। कीजैकछु उपकार परायोयहैसयानोकाजु। सूरदासप्रभुकहँयहि अवसर बनबन बसंतबिराजु ३७२ यहिबन मोर नहीं येकामबान। बिरह खेद धनु पुहुप भृंगगुनरिततेरयारिपुसमान। लयेघेरिमनमृग चहुंदिशि ते चूकअहेरी नहींअजान। पुहुपसेन घन रचित युगुलतन क्रीड़तकेशव बननिधान। महामदन मुदित प्रेमरस उमगिभरे मयमें न जान। यहि अवश्याम मिलेसूरप्रभु बदरेउनागदे जीवदान ३७३ आजुबन मोरनि गायोआई। जबते श्रवण सुन्यो सुनि

सजनी तबते रह्योन जाई। ब्रजते बिछुरे मुरलिमनोहर मनोव्याल गयोखाई। औषधि बैदगारुरी हरिबिनमानोंनमंत्रदुहाई। चातकपिक दुखदेतरैनिदिन पिउपिउ बचनसुनाई। सूरदास प्रभुतोपैजोऊं जोहरि मिलिहैं आई ३७४ बहुरि बनबोलनलागेमोर। करत सम्हारनन्दनंदन की सुनिबादरकीघोर। जाकोपियपरदेशसिधारेउ सोजियपरेनिठोर। मोहिंबहुत दुखहरि बिछुरेको थकित बिरहके जोर। चातकपिके चकोर पपीहा येसबहो मिलिचोर। सूरदास प्रभुबेगि मिलहु किन जनम परतहै बोर ३७५ ॥ रागकेदारो ॥ यहशशि शीतल काहेते कहियतु। मीनकेत अंबुज आनन्दित ताते तोहित लहियतु। एक कलंक मिट्यो नहिं अजहूं मनहुं दूसरो लहियतु। यहिदुखतेघटत बढतनित निशानींद रिपुगहियतु। बिरहिनि अरुकमलनि त्रासनि कहँअपकारीरथनहियतु। सूरदास प्रभुमधुबन गवनेतो इतने दुःखसहियतु३७६॥ रागसारंग ॥हरिमें हरिनखकहिजुगये। हरिदरशत हरिमुदित उदितहरि हरिब्रज हरिजुलये। हरिरिपु तारिपु तारिपुको सुत हरिबिनुअधिकबये। हरितनया शोभित जलदहसहँहरि अभिमान गँवाये। अब हरिबदन कितो कुबिजाहरि सूरदासमनभाये ३७७ कहांरहेउ माई नंदको मोहन। वह मूरति जियतेनहिं बिसरति गयोसकलजगसोहन। कान्हबिना गोसुतको चारै कोल्यावै भरिदोहन। माखनखातसंगग्वालनके औरसखा सबगोहन। जोइर सुरति करतिहों सखिरी तेईअधिक मनमोहन। सूरदासस्वामीके बिछुरे क्यों जीवहिं इनछोहन३७८॥ रागमलार ॥ सखीरी हरिबिनुदुखहैभारी। सिंहक सुतहिभूपशानिकट जैसे तैसी गतिभई हमारी। शिबिरबधूअरि काहे निवारति पहुपधनुषके बिशेष। चक्षुश्रवाउरहार त्रासते अछिन दुतियवपुरेष। घटअरु असन समयसुख आनन असीगलितजैसेशेष। जलधर व्योम अंबुक्षत संचत नयन होइ बदलेख। द्विजपति प्रभुमोहिँ आनिमिलावहु हरत आरत जानि। जैसेहरिहि कबन्ध प्रकटभयो हरिअनंद रतिमानि। षटआनन बाहन काननमें घनरजनी तहँबाढी। सूरदासमिलिरसिक शिरोमणि सुनिचातक पिककाढी ३७९ हमते कमलनयनभये दूरि चलनकहत मधुबनहुते सजनी इननयन को मूरि। चलतकान्ह सब

देखन लागीं उडल न रथकीधूरि। सूरदास प्रभु उत्तर न आवै नयन रहे जलपूरि ३८० सखीरी हरिको दोष न देहु। तातेमन पावत जो इतोदुख मेरेहि कपट सनेहु। विद्यमान अपनेही नयनन सूनो देखत गेहु। ते सबये व्रजनाथ बिनाउर फट न होत बड बेहु। कहि कहि कथा पुरातन सखिरी अब अतिअंत न लेहु। सूरदास तन यों वकरोगी ज्यों फिरि फागुन मेहु ३८१॥ रागसारंग॥ बीरबटाऊ ठाढे रहि यो। जबहीं गवनकरो मधुबनको हमरो सँदेश श्याम सों कहियो। बहुती कहा लिखौं पतियामें अँचरा बांधिकमल करगहियो॥ सूरदास प्रभु सखीतुम्हारी तुमही चतुर बदन यह लखियो ३८२॥ रागमलार॥ अब दल उदत बलाहक जोर। मनु मयमत्त मदन सँग दन्ती आवत व्रजपर भोर। बाजीबंक समीर सुरधनुष नहेउव्राग बगडोर। सारथि सुमन सुमंत्र महाबल हांकतहैहो घोर। रथीकाम धनुपुहुपबाण सुर-पतिआसनशिरमोर॥ समरशोर सन्मुखव्रजसाध्योशायकचित्तकठोर। बंदी बदत कोकिला भृङ्गी दादुर चातक मोर। सूरदास प्रभु ऐसे अव-सर राखहु नंदकिशोर३८३॥ रागटोडी॥ परमसुखद शिशुताको नेह। सोजनि तजहुदूरिके बासे सुनहु सुजान जानगतियेह। भँवरकुरंगकाक अरु कोकिल जनिपतियाहु चितैतुमदेह। ऊधोअरु अक्रूर क्रूरकृत उपबन कुटिल कियेरचिगेह। येहौबिनती लिखीकृपानिधि सोउआ-दरकरिलेहु। सूरदास प्रभुक्यों न मिलहुअब तो तनमनफागुनकेमेहु ३८४॥ रागसारंग॥ नाथ अनाथनकी सुधिलीजै। तुमबिनदीनदुखितहैं गोपी ऊधो को पतिया लिखिदीजै। नयन सकल भरिआये हरिबि-न करमेंसुकर मेरी गहिलीजै। सूरदास प्रभुआशामिलनकी अबकीबेर हरि आवनकीजै ३८५ परमचतुर सुन्दरसुखसागर तनकोप्रियप्रति-हार। रूपलकुटिरोके रहतो सखि अनुदिन नंदकुमार। अब ताबिन उर भवन भयोहै शिवरिपुको संचार। दुख आवत मनहटक न मानत सूनो देखि शिंगार। असमु उसास जात अन्तरते करत न सकुचबि-चार। निशा निमेष कपाट लगे बिन शशीससतु सतसार। यहगति मेरीभईहै हरिबिन नाहिं कछू प्रतिहार। सूरदास प्रभुबेगि मिलहुतुम नागरनन्दकुमार ३८६ ऐसोसुनियतहैं दुहिमाहु। याहीते सब बातजा-

लियो चतुर शिरोमणि नाहु। आवन कह्यो न फेरि सिधारे करो पाछली गाह। उहँइ विरमि रहे कुब्जा सँग कौन बेदकी राह। येते पर संतोष न मानत परे हमारेदाह। सूरदासप्रभु पूरो दीजै दिनदश मानोशाह ३८७॥ रागमलार॥ ऐसे सुनियतहैं दोइ सावन। वहै बातफिर शालतिहै श्याम कह्योहै आवन। तबतक प्रीति करीअबलागी अपनो कीयो पावन। यहि दुखसखी निकसि तनजइये जितहितुनेकोउनाव-न। सकहिबेर तजीहमलागी मथुरा नेह बढ़ावन। सूर सुरतिकतहोत हमारी लागीनीकोभावन ३८८॥ रागकल्याण॥ दिनकर दिन देखे डर लागत। शशिशीरी सोउ तातेतनिकलौ हैं देखते मन भागत। कौतुक निरखि सखा मोहन के यमुना पुलिन पनारी। निकटगाये जैसे मृग तृष्णा श्याम सनेह प्रजारी। याचक एक रूप रस कारण लहत न सुख गुणगाये। ग्रीषम शिशिरकौलों उरराखौं सूरदरश बिनुपाये ३८९ सबैऋतु औरै लागत आहि। सुनु सखि वा ब्रजनाथबिना ब्रजफीको लागत चाहि। देखिश्याम घननयनये बरषैं पावस यहै सिरात।शरद सनेह स्वच्छ सरिताउर मारगहुवै अलजात। हिमदिनकर देखेही उपजत निशारहित यहयोग। शिशिर सुरतिआये कांपतउर सुमिरि श्याम उपभोग। निरखि बसन्त बिरह बल्लीतन वे सुख दुखहुवै फूली। ग्रीषमकाम निमिष नहिंछांड़त देहदशासबभूली। षटऋतु मिलिइकधाम कियोबपु उभय त्रिदोषजुरे। सूरअवधि उपचार आजु लौं राखे प्राणभुरे ३९०॥ रागसारंग॥ कहाहोत अबके पछिताने। खेलतखात हँसत अँगसँगरहि हम न श्यामगुणजाने। कोवसुदेवकौन कीथाती कोहैसखि जबहिंउनआने। सोबततायदेउ ऊधोहमैं तुमहूंतो अतिनिपटसयाने। यहनहिंकथा काककेकिलकी कपटरंग मनमाहँ समाने। सूरसमयऋतुराज बिराजे मिलेजाय निजकुलपहिंचाने ३९१ बहुरिनकबहूं मिलेहरि। कमलनयन दर्शनकेकारण हौंसखियतनरही बहुतैकरि। जेजेपथिकगये मधुबनको तिनसोंबिथाकही पांयनपरि। कहियोप्रकट जाय यदुपतिसों श्यामकही सोजातिअवधिटरि। धीरन धरतप्राणव्याकुलअति लेतउसास नीरनयननभरि। सूरदास मनथकित भयेहैं यहबियोग सागर न सकतितरि ३९२बिनगरवहि उपगारगाहेउ।

जाकोसोंधहराह उमापति कलहोय शोधलहेउ। ताकेनीचनीचनयननमें अंजनरूपरहेउ। बिरहसिंधु बलपायप्रकटभयो नाहिंनपरतकहेउ। दुसहदशनदुख दलिनयननजल परसुन परतसहेउ। मानहुश्रवणसुधाअंतरते उरपरजात बहेउ। अबसुख शशिऐसो लागतज्यों बिनमाखनहि गहेउ। सूरदास हरिदानदियेबिनुसुखप्रकाशनिबहेउ ३९३॥ रागविहागरो॥ टरतनहींटारीछबि जियमेंचुभी। घनतनश्याम पितांबरदामिनि चातकज्यों अँखियांलुभी। ज्योंबगपंकति राजितमानो उरमुक्ता कौमाल शुभी। गिरागँभीर गरजसीसुनिकै नाचति अवधि खुभी। मुरलीमोरमनोहरबाणी सुनेकटकटु उभी। सूरमेघ मनमोहनदेखत उपजी कामशुभी ३९४॥ रागसारंग॥ बिनुमाधव राधातन सजनी सब बिपरीति भई। गईछपाय छपाकरकीछबि रहीकलंकमई। लोचनहूते शरदसारसे सूखीबिनचोइ लई। आंचलगे चयोनोसोनो त्यों तनधातुहई। कदली दलसी पीठिमनोहर सोजनु उलटिगई। सम्पतिसब हरिहरीसूरप्रभु बिपदादईदई ३९५॥ रागमलार॥ सखीरीदिखराबहुबहदेश। कहांकहों याब्रजबसि हरिबिनु लहेउ न सुखकोलेश। सुखभोटीअक्रूरजु दीनो हमशिशुदीनो लैजान। जानु न बधिक बिशेसा मृगज्यों हतत बिशासीप्राण। मैंमधुज्योंराखे सचिमोहन ते भृंगीकीरीति। दे दुगछार अवधिलै गमने हनिपति जहांप्रतीति। मोहनबिन हमबसतघोष महँ भई सोसरीसांझ। सूरदास ये प्राणपतित अब कहारहतघटसांझ ३९६॥ रागगौंडमलार॥ ब्रजतजिगये माधोकालि। श्यामसुन्दर कमल गुणनिधि क्यों बिसारों आलि। बैठि निशिबासर बिसूरति बिकल चहुंदिशि भालि। कहकरै छलकर्मअपनो काहिदीजैगालि। तज्योभोजन भवन भूषण अतिबियोग बिहालि। हितनहीं कोउकाहि पठऊं करिरही जियलालि। शोखहीशोखदगादै क्रूरगयोरथचालि। सूरश्याम कहती यशोदा कहापायोपालि ३९७॥ रागमलार॥ कराउरे शारंगजाय श्यामहिं सुरति कराउ। पौढेहोहिं जहां नँदनन्दन ऊंचीटेर सुनाउ। गौग्रीषम पावसऋतु आई सबकाहूचितचाउ। उनबिनु ब्रजबासी योंसोहत ज्योंकरियाबिनु नाउ। तेरोकहो मानिहैं मोहन पांयलागि लैआउ। अबकी बेर सूरके प्रभुको नयनआनि दिखाउ ३९८

रागधनाश्री ॥ यहिविधि पावस सदाहमारे । पूरणपवन प्रवासउरऊरध आगि जुरत सकहारे । बादरश्यास श्वेतनयननमें बरषिअम्बु जलधारे। असणप्रकाश पलकद्युति दामिनि गरजनाम पियपारे । चातकदादुर मोरप्रकटब्रज बातनिरंतर आरे । सकुती तवतेअटकेसब श्यामरहे हि-तडारे । सूरकहा कहिये को जाने याहितके व्योहारे । तुलहिंसेइवहि के पछितानी कठिन बिरहके नारे ३९९ ॥ रागमलार ॥ घटासघुवनपर बरषीजाय । हरिघनश्याम बिना सब बिरहिनि बेलिगई कुम्हिलाय। उग्रतेजसम भानुतपतप्राशि ब्याकुल मन अकुलाय।करहिंकहाउपचार सखीरी नेकुन तपनिबुझाय । जबजब सुरतिहोत उरअंतर तबहिं उठत तलताय । सुमिरि सुमिरि गुणश्यामरामके रहीसूर मुरझाय ४०० रागसारंग ॥ जीवहिंज्यों कमलकांदोहीन । जिनसोंप्रीतिकरी सुनुसजनी तिनबिछुरे दुखदीन। ज्यों सरकूल मीनतलफतहै हुलसहोत जलजीन। श्यामबारिनिधि लहरि बिरह त्यों हमजुमरति लयलीन । शशिच-न्दन घनसार डारिगुणा अधिक तपत मिलितीन । सूरश्यामबिनुघो-अ मौनब्रत बनयंती ज्योंबीन ४०१ ॥ रागनट ॥ अजयर मंडल करतहैका-म ।कहियोपथिक कान्हसोंराखहिं आनि आपनोधाम । सनुखुर भू-रिधुन्धि चतुरंगिनि घेरिहरेउहै गाउँ । अवधिबचनगढ़ ढाहन चाहत निर्दरिपाछिले दाउँ । जलदकमान आप दारुभरि तडित पलीतादेत। गरजनिमनहुंकुरनिगोलीकी पहरकमेंपुललेत। लेहुलेहुधुनिधरतडरत बन्दीपिक चातक मोर । हावाकरत सुभट दादुरपिक दलकि दलकि चहुंओर । कुसुम कदम्ब कुसुमसर अलिमुख छांडत शरधनु खेंचि। पवन वकील प्राणकरमांगत रहीतुमहिंमेबेंचि । तापर अलिजासूस देखिगयोटूट्यो धीरजपानि। जोंजियलाज होहितौराखहु सूरआपनो जानि४०२॥रागकल्याण॥सुनियत कुब्जाकान्ह निवाजी।पीतअटपटीचाल गईदुरि नवसत तनकंचनकीसाजी । भेटीआय नगर दरवाजेचन्दनदेत ठगेकरि बाजी । पायो सुरति सुहाग सबनको हरिप्राचीन प्रीति उप-राजी ।भली भई पूरण फलपायो देखिस्वरूपकाम रतिलाजी । जन्म कोटि तपकियो सूरप्रभु परमसुहागिनि गिरधरहिगाजी ४०३ ॥ राग सारंग ॥ कहादिन ऐसेहोजैहैं । सुनसखिमदन गोपाल न आंगन ग्वालन

सँग फिरिऐहैं। कबहुंकजाय पुलिन यमुनाके बहुतबिरह बिधिखेलत। सुरतिहोत आवत सुरभिन सँग पुहुप लिये करझेलत। मृदु मुसकानि आनिराख्योबपु चलतकहेउहो आवन। सूरसुदिन कबहूंतौ होइहैसुरलोमधुर सुहावन४०४॥ रागमलार ॥सखीरी हरिआवहिंकिहिहेत। वेराजा तुमग्वाल बुलावत यहैपरेखो लेत। अबशिरछत्र कनकमणिराजे मोरचन्दनहिंभावत। सुनिब्रजराज पीठिदैबैठत यदुकुलबिरदबुलावत। द्वारपाल प्रतिपवँरि बिराजत दासीसहसअपार। गोकुलगाइदुहतदुख कौलैं सूरसहेसुकुमार४०५॥ रागकान्हरो ॥ कहाकहौंइननयननकीबात। ये खग युगल उड़ेउ दुइचाहत पल पिंजरा न समात। इकटकमगजोवत निशिबासर पलपल बीतत याम। ब्रजबनिता अति दुखित जानि हरि कब आवहिंगे धाम। अँसुवनि शिथिल भईहै छाती सब ब्रज बाढ़ेउ बारि। योग सँदेश भँवरमें डारत क्योंकरि पावैंपारि। हरिबो बिरहलयेसब अबला अति ब्याकुल आधीन। सूरदास गिरिधरबिन गोकुल जैसे जलबिनमीन ४०६॥ रागमलार ॥ बहुरिपपीहा बोल्योरी माई। नींदगई चिन्ताचितबाढ़ी सुरतिश्यामकीआई। सावनमासमेघकीबर्षा हौउठि आंगनधाई। चहुंदिशि गगनदामिनी कौंधति तिहिं जियअधिकडराई। काहूरागमलारअलाप्यो मुरलीमधुरबजाई। सूरदासबिरहिनीब्याकुल धरणिपरीमुरझाई४०७॥ रागनट ॥देखोमाईलोग चतुर मधुबनके। बातनहींगोपाल बिमोहे गुणजानतमोहनके। जबहरि गमनकियो मथुराको छांड़ेउमोहसबनिके। सूरदासप्रभुबिनयोंलागत मेघ गयोज्यों पवनके ४०८॥ रागसारंग ॥ सखीरी जागौंतो कोऊहिग नाहीं बिलपति बिकलबिहान। मैंजान्यों अँकभरिमिलेमाधो उठि लागीअकुलान। नींदमनो मुरझाय गिरीधर राखी प्रथम पंचसंधानि। अबअतिउरमेंरमेरिमाई सपनकुटेकलवान। सूरसकति रणजनलक्ष्मण ज्योंशरको कछुअगद न आन। ल्यावसजीवनमूरिमुकुन्दहि तबहिंरहैं येप्रान ४०९॥ रागधनाश्री ॥ कहकोई जाने पीरपराई। ज्योंजल माहँ मीनको मारगु पशु पहिंचान्यो न जाई। ब्रजकेलोगुरोग नहिंसमुझत बैद्यहिदेत बताई। सोजाने जाकेतनलागी के जिनदई लगाई। हरिके संगरहत निशिबासर बिरहनदेतदिखाई। नाजानेहमकौनयतन करि

जलमेंआगिलगाई। तनअतिसीनचलन गतियाकी सुधिबुधि सबबिस-
राई।सूरश्यामप्रभुआनि मिलोबहु ग्रातेसबदुखजाई४१० ॥रागबिहागरो॥
जपतिहैंतेरे गुणकीमाला। तुम्हरेकारण योगिनि होउँगीबांधिकमर
मृगछाला। यकबनढूंढि सकलब्रजढूंढ्यों कहूं नपायेनँदलाला। सूरदास
प्रभुतुम्हरे मिलनको हैंबिरहिनीबेहाला ४११ मोहनमदनगोपाल म-
नोहर मथुराजायदु:खदीनो। चलतीबेर अवधिआशादे अजहूं नआयो
कुब्जासँगसुखकीनो। हमैंछांडिऐसीजसजलते मीनकाढि हमतलफति
तनसीनो। सूरदासअबबेगि मिलहुकिनि सबतुम्हरेआधीनो ४१२॥
रागबिलावल॥हरिसुत पावक प्रकटभयो। मारुतसुत बंधव पितु प्रोहितता
प्रतिपालिहछांडिगयो। रतिपतितताकोपुनिबाहनताबाहनधनसुतउन
यो।मीनसुतासुततातकहतहैंतापरकाशतसकलछयो। शशिकेसंगसरोज
कलीकोताते मेरेमन माहँठयो। मीलसुताको रूप न आवत तादिनको
त्रियनेमुलयो। सारँगसुता वाकेसुतको हितु तासुतसोंसुख नाथहयो।
सूरदासरविरथ रविकेबश अजहुंन मोहन दरशदयो ४१३ ॥ रागनट ॥
मिलबहुपार्थ मित्रहिआनि। जलज सुतके सुतकि संचितभई रसकी
हानि। उदधि सुतासुत अवलि उरपर इंद्र आयुधजानि। गिरिसुता
पतितिलक करकस सतत घायकतानि। पिनाकीसुत तासुबाहन
भक्षकोभक्ष बखानि। शाखामृग रिपुबसत मलयजहुतहुताशनजानि।
धर्मसुत अरिके छुभाइहि तजो शिरधरि पानि। सूरदास विचित्र
बिरहिनि चूकमन मनमानि ४१४॥ रागसारंग ॥ जलसुत प्रीतम सुत
रिपु बांधव आयुध आनन बिलखभये। सारँग सुतपति बसत जु
माथे कोटि प्रकाश रिसायगये। मारुत सुतपति रिपु पुरबासी पितु
बाहन भोजन न सोहाये। हरिसुत बाहन भक्षसनेही मानहु अनल
देहदोंलाये। दधिसुत पतिबाहन को बाहन ताको कैसे हो समुझाई।
सूरदास प्रभुधर्मपुत्र रिपु ता अवतारहि सलिलबहाई४१५ हुनरीपक्षी
समुझिशिखमेरी। जहां बसत यदुनाथ जगतमणि बारकतहां आव
करफेरी। तुमकोकिला कुलीन कुशलमति जानति बिथा बिरहिनी
केरी। तासीऔरनहीं उपकारिनि यहवसुधामें बिधिकरहेरी। उपवन
बैठि बोलिबरवाणी वचन बिसारिमोहिं करचेरी। प्राणनिके पलटे

न पाइये सेंतिबिकाति सुयशकीटेरी । कहियोप्रकट पुकारिद्वारह्वै अबलाअनिअनंग दलघेरी । ब्रजलै आउ सूरके प्रभुको गाऊंगी कलकीरति तेरी ४१६ ॥ रागआसावरी ॥ वर बटाऊ पाती लीज्यो । जब तुमजाहु देशद्वारावति हरिनिरिसालगोपालहिंदीज्यो । रंगभूमि रमणीय मधुपुरी राजधान रजकी सुधिकीज्यो । खारसमुद्र छांड़ि किन आवतयह निर्मल यमुनाजलपीज्यो । यागोकुल की सकल ग्वालिनी देति असीस कान्ह चिरजीज्यो । सूरदासप्रभुहमरेहोतेनँदनंदनकेपायँ परीज्यो ४१७ ॥ रागनट ॥ वेदिखियत मधुबन के रूखरी । तामेंश्याम हमारेप्रीतम जिनबिनहरी मेरीनींद भूखरी । उनबिनु मोपैरहेउ न परत है बिनुदेखे नयननि को दूखरी । सूरदासप्रभु मोहन नागरको बिरह कोलभयो तनऊखरी ४१८ ॥ रागकान्हरो ॥ लालउनि सुनीहै मनोहर बंसी । नहिं तन सम्हार युवतीबरतवते मदनभुजंगमडंसी । कोल्यावै संगीत सरोवर मगनभईगति हंसी । आपुनहीं चलिये उद्धरिये मोलि मोह द्रुढ़फांसी । मानहु तरुणतमाल प्रयाभतन लतामालती अंसी । सूरदास प्रभुमोहन नागर लै भुजबीच प्रसंसी ४१९ ॥

पुनःभ्रमरगीत ॥

रागआसावरी ॥ हरिरथरतनजरेउ कि अनूपदिखावै । जिहिमग कुब्जा गये उतहीते आवै ॥ चाल ॥ उतहीते आवै सखिन बुलावै देखोमननहिं बिचारी । मणिमुकुट किरीटितन पीतबसन कोउ गोबिन्दकीअनुहारी । धोइअभयगातलागेदेखनजबलगमेरेआये । ऊधोजियजानेमुखकान्ह लानेकुब्जासंदेशपठाये । चलोचलोधोरी सुनियेकछुबातें । कहहुकहहु ऊधोहरिकी कुशलातें ॥ चाल ॥ कहियेकुशलातेंसांचीबातेंआवनकहेउ किनाहीं । केगरबानेराजसमानेअबहमचितनहुहाहीं । ठाढ़ीतनकम्पहिं सुन्दरि जम्पहिं बारबार अकुलाई । अबजिय कपटकछूजिनराखहु बूझौं सौंहदिवाई । कहहु कहहु तोऊधो तुमक्यों ब्रजआये । तब हँसि बचनकहे हमकुब्जापठाये ॥ चाल ॥ कुब्जापठायेते। ब्रजआये कहत मनोहरबानी । तुम सुनहु संदेशो तजो अंदेशो तुमहो सकलसयानी । गोप सखा चित जिनिराखो अबिगतहै अबिनाशी । मोहन माया पीर न छायासबघटसदानिवासो । ऊधोजिनकहोहरिकोप्रभुताई । सुनिजिय

अलकबढे रिसरहेउ नजाई॥ चाल॥ रिसरहेउ नजाई अनख जियनाहैं यहहरिलोप्रभुताई। दासीकुबिजाकुटिल किसंगतिकौनबड़े मनपाई। तुमपुनिभले कहनआवतहो हमकोसबैसयाने। जोकछु बातें देखियत आंखिन सो उनकेमनमाने। ऊधोहरिके संतहमकहा बखाने।गोबिंद की बातें सबकोउजाने॥ चाल॥ सबकोउ जाने क्यों मनमाने अबनकछू बनिआवे। परबश भये कहतहैं सोई कछु कुब्जा जो कहावै। वाको न्याव दोय सब हमरो करमरेखकोजाने। हम गोरस दुहिके जोराखे गाहक बिधिगतिआने। ऊधो तुम कमलनयनसों कहियोजाई। एक बार कैसेहू ब्रजदेहु दिखाई॥ चाल॥ कहियोजायश्यामसुन्दरसों तब ऊधो समुझावैं। शंकरब्रह्म शेषअरु सुरपति कोऊ अन्तनपावैं। जोपै प्रीति प्रकट मिलिबेकी हृदयध्यान अति धरिये। सूरदास मिलि देत बहुत सुख बिरहशोक कततरिये १॥ रागबिलावल॥ उमँगिब्रजदेखनको सबधाये। एकहिएक परस्पर बूझत जनु मोहनदूलहआये। सोईध्वजा पताका सोई रथचढ़ि दिवस सिधाये। श्रुतिकुंडल अरु पीतबसनस्रक वैसेइ साज बनाये। जाय निकट पहिंचान्यों ऊधो नयन जलज जल छाये। सूरश्याम मिटी प्रत्याशा नूतनबिरह जनाये २ क्यों अलिगमन किये मथुराते कहोधों कहा बिचार। सभा सुमति गुण ज्ञान ध्यानमें नहिं ब्रज भजन प्रकार। ज्यों सूक्षम परधोय नारिको तुम शिर यदुकुलभार। कहा बोलत चित प्राणनाथबिन साधु बादश्रुतिसार। मुनि मुनि मुखमुख भूठनिभूठनि पढ़तबक्यो बिस्तार। हमरेयोगअरु अगम अगोचर शैलधरण आचार। हमतो नँदनन्दन के रसतें पगीधरें नहिं क्षार। सूरदास प्रभु आनि मिलावहु नागर नन्दकुमार ३ कृपाकरि हरिपठयो ब्रजपै तुम्हरो दरश दिखावन। प्रिय संदेश कहोतो काहि लेउ पाछे यश वृन्दावन। तुम हम कबहुं निमेश बिराम नहिं निगम कह्यो मनभावन।अरु एक बीचनि दरशनदीनो भूततत्त्व मुनिपावन। भये अषाढ़ मधुपुरीऊपर श्रीगोकुल पर सावन।भादों चौथ चन्द्रमा की गति ऊधो सखा सुहावन। हमतो कहि निवहे श्यामाजू पुठपवाण बशयावन। इतनी सकल करहु निज रसना नारि सकल गुणगावन। कृष्णकथा ठकुरानी मराडल शुकबच पथ बिसरावन। कहालों कहिये

अलखबिना कछु और न पेखो । कूंचीतार एकमनलाई । नयनमूंदि अंतर्गतध्याई । हृदय कमल महँ ज्योतिप्रकाशी । सोइ अन्तर्यामी अबिनाशी । यहैउपाय बिरहजल तरिहो । योगपन्थ क्रमक्रम अनुसरिहो । यहसंदेश कहेउ गोपाल । सुनतहि बिमुख भई ब्रजबाल । रे मधुकर रस लम्पटबाई । ऐसेबचन न कहेकन्हाई । श्रीवृन्दाबनभवन बिराजें । नटवरभेष सदाहरि साजें । रासबिलास भलेमानेमन । बिच गोपी बिचकान्ह श्यामघन । अलिआये हैं योगसिखावन । देखिके प्रीति लगेशिरनावन । भ्रमरगीत जो दिनदिनगावै । परमानन्दपरम पदपावै । सूरयोगकी कथा न भाई । प्रेमभक्ति गोपीजनपाई ५ पुरी पुकारद्वार गृहगृह प्रति यहसांचीभइ योगीआये । पवन सधावन भवन छिडावन रवनरसाल कृपालु पठाये । आश अवधि परमावधि जीवन तेउ शिथिलकरि काहि तुलाये । कनकबेलि कामिनि ब्रजबालहि योगअगिनि दीबेदिनधायो । भू भरहरण असुर मारणहित कारणकान्ह मधुपुरी छायो । या दोउमें ब्रज एको नाहिंन काहेको उलट्यो यशवितरायो । साँवलश्याम धामदै पठयोनृप अधिकार साजेपायो । सूरन प्रीति बिसारि साँवरे भलीचतुरता जगत सुनायो ६ रागसोरठ ॥ कोउ मधुबन ते है आयो । सखीसुमतु सब सुनो सुचितुदै हितकरि श्यामपठायो । मनमोहन बिछुरे याब्रजमें इते घोसदुखपायो । सोइयहि कमलनयन करुणाकरि हिरदेमांझ बतायो । जाको योगी यतन करतमिलि ज्ञान सुगुरुन दिखायो । सोइइन परमउदार मधुपब्रज बीथिनिमांझ बतायो । अतिकृपाल व्याकुल अबलनि करिको व्यापक अगह गहायो । भजहु सूर सुनिहोत परमसुख नेतिजु निगमनिगायो ७ ॥ रागसारंग ॥ मधुकर भलीसुमति मतिखोई । हाँसी होनलगी या ब्रजमें योगहि राखहु गोई । आतमराम लखावत डोलत घटघट व्यापक जोई । चापे काख फिरत निर्गुणको ह्यांगाहक नहिंकोई । प्रेमकथा सोईपै जाने जापै बीतीहोई । तूनीरस एतीकहा जाने बूझि देखिबेबोई । बडोदूत तू बडेठौरको कहिये बुद्धि बडोई । सूरजदास पुनीप सुयटपद कहत फिरतहै सोई ८ योग युगति यद्यपि हमलीनी लीलाकाकोदैहो । उलटि जाहु मथुरा मधुकर तुम बूझि

बेगि ब्रज ऐहो। रास समय कालिन्दीके तट तव हुव वचन न माने। यहको सुने कुपन्थकी बतियांप्रभु परायेजाने। नगर बसत गुणज्ञान बढ़तये भूलहु बिसरेउ ज्ञान। चारिबाहु बड़भये मधुपुरी खरे सुहाये कान। आपुनफेरकियो देखियतुहैं तुमभूलो हमभूलति। सूरश्याम बल्लभबेणीबिनु दरश सलिल उन मूलति ९ जैसो कियो तिहारेप्रभु अलि तैसोभयो ततकाल। ग्रन्थितसूत धरततिहिग्रीवा जहँधरते बन माल। टेरिदेतश्रीदामा द्रुमचढ़ि सरसबचन गोपाल। तहँअबस्तवत अक्रूर प्रमुखसब कहत कंस कुलकाल। कोमलस्निग्ध कुटिल अलकावलि मृगमद भूषितभाल। तहँ अब लगत धूमबेदी को पुजा भस्म कराल। जहँमणिकङ्कण सुधासरिसजल शतदल मधुकरजाल। ऐसो सर त्यागे सुनुसूरज फन्दत न्याय मराल १० श्यामरामको सङ्गी यह अलितासोंकह संभासा। मोहन नागर नायककी सखिातजेअवरिकह आसा। कसभूत ठानेउर सुनियत रसनासन्धि प्रकासा। भई बिदा ब्रजप्रेम नेमकी हाथटोंकि गहिनासा। इतनीभये नयन नहिँ सुमुझत प्रथम परे गहिपासा। टेक न छांड़त अजहुँ सूरयह बीचबसीठ दमासा ११ हरिबिछुरनकी सूल न जाय। बलि बलि जाउँ मुखारबिन्द पर मूरति मनमें रही समाय। एकदिवस वृन्दाबन महियाँ गहिअँचरा मेरीलाज छुड़ाय। तेदिन ऊधौ नाहिँन बिसरत अम्बरहरे यमुन तटआय। कबहुँक हँसिजु देत आलिङ्गन कबहुँक दुरे उठत हैं गाय। सूरदासस्वामीके गुणगण सुमिरि २ गोपी पछताय १२॥ रागबसन्त॥ कोयलबोली बनबन फूले मधुप गुंजारन लागे। मनोभयो भोर रोर बंदिनिते मदनमहीपतिजागे। तिनहू तेनवपल्लव प्रकटेजे द्रुमहुतेदावानलदागे। मनो रतिपति मनरीझ याचकनि बरण बरणि दयेबागे। नयोमास मधुनई बरनिशा नवनव रस बिबिपागे। नयो नेह नइनागरि कुब्जा कतआवें सूरज अनुरागे १३॥ रागसारंग॥ जिहितन गोकुल नाथ भज्यो। ऊधोहरि बिछुरत तिहिनागरि तेतनु तबहुंतज्यो। जब स्यन्दनचढ़ि गमनकरत फिरिहँसि चितयेगोपाल। तबते परमकृतज्ञ प्राणउठि सङ्गहि चले उताल। अबयह स्थिति और ब्रजकीगति जानत कोउ इकजान। नतो संदेश आपने पियके क्योंनकरती कान। अ-

जहँ सान गई या मनते उपजत नहिँ परतीति । सूरदास जन बरषो कहांलों कठिन प्रेमकीरीति १४ गोपालहि बालकहीते टेव। जानति नहीं कौनपै सीखे चोरीके छलछेव । माखन दूधवच्यो जबखाते सहि रहती करिकानि । अबक्योंसही परति सुनिसजनी नागिनगारि गाकी हानि । कहियो मधुपसंदेश श्यामसों राजनीति समुझाय। अबहूंतजत नाहिँ वह लोभी युगति नहींयदुराय । बुधिविवेक सरवस या व्रजको लैजुरहे मुसकाय । सूरदासप्रभुके गुणअवगुण कहिये कासोंजाय १५ बिसरति क्यों गिरिधरकी बातें। अवधिआशते रह्योमधुपमन तजि न गयो घटतातें । पहिके बिरह सीराभइ देहीं हैंदुःखपरेघातें । तनरिपु काम चित्तरिपु लीलाज्ञानरूचत नहिँयाते। अवणसुन्यो चाहतहरिके गुण जोई कथा रसराते। लोचनरूपध्यानरहे निशिदिनकहो घटेकिहि काते। ज्यों नृप प्राणतजे सुतके हित त्यों न गयेजाते। सूरसुमतेतुही जिय उपजे जोहरि आवैं मथुराते १६ कों मन मानतहै इनबातनि । पायेजानि सकलगुनि मधुकर जेगुण सांवरे गातनि । प्रथमहिंप्रेमय- दीप मधुकर को तजत सकुच जलजातनि । बनरस बहुरि निकटनहिं आवत देखिपुराने पातनि । सुनियतकथा काककोकिलकीकपट रंग कीरातनि। सबदिनसेवाश्रम जरायकेअन्तमिलतपितुमातनि।वेणुवजा- यसुधाकर हरिमुख बनबोली अधरातनि । अतिरति लुब्ध तजी नहिं जाती कहिनसकति कछुप्रातनि । बालीमारोबंधनकीनोलुब्धकजैसी घातनि । कोपलिआय सुताकहि सूरज वा कैतव के आतनि १७ जोपै हमहिं कृष्णजू भावहिं । तो सुनि मधुप यशोदानन्दन अबहीं गोकुल आवहिं । जिनि नयननिमोहन मुखहेरेउ निशिदिनरूपबिचारेउ । ते नयनाव रहत सूने घरप्रीति न हृदय बिदारेउ । जिहितन आसन शयन संगसुख हरिसमीप रतिमानी । तिहितन बिरह न छुटत सुमिर गुणां- चक बिथा न जानी । समसौरभ शशि त्रिबिधि अनिलगुण वैसियप्र- कृतिनिबाहत । बिषमबिरहिनी यामिकांछिननु तउतननाहिँनदाहत। अतिबल उग्र अनंग महाभट जाहिसबै जगु जानत । सोइबल छीनदीन सरवरगहि कोपि धनुष नहिंतानत। बननिवास व्रजबासरासरस देखि देखि दुखपावत। सूरदास बहुरों बियोग बिधि कुकवि निलज ह्वै गा-

वत १८ सबखोटे मधुबनके लोग। जिनके संगश्याम सुन्दर ससीखे हैं उपयोग। आयेहैं ब्रजके हितकारण लेबातनिकोयोग। आसनध्यान नयनमूंदे सखिकैसे जात बियोग। इनहूं भलीजानि उपदेश्यो दासीसे संयोग। सूरसु बैद कहा लै कीजै कहै न जानैरोग १९ यद्यपिमैं बहुत यतन करे। तदपि मधुप हरिप्रिया जानिकै काहुन प्राणहरे। सौरभ युत सुमनस सेवति लै संतत सेजधरे। सनमुख हतत शरदशशि सजनी तऊनअंगजरे। चातक मोरकोकिला मधुकरसुनिसुरश्रवणभरे। शारद ह्वैनिरखति रतिपतिको नेकु न पलकपरे। निशिदिन रटतिनंदनन्दन याउरते छिन नटरे। अतिआतुरचतुरंग चमूचढ़ि अनँग न शरसँचरे। जानतिनहीं कौनडर इतने यातेसबै डरे। सूरदास सकुची श्रीपतिकी सुभट निबल बिसरे २० गोपालहि पाऊंतो जाऊंबहिदेश। सिंगीमुद्रा करखप्पर लैकरि योगिनिको भेश। कंथापहिरौं भस्म लगाऊं जटा बनाऊंकेश। हरिमिलिबे गोरखहि जगाऊं जैसेस्वांग महेश। तनमन जारौं खेहउडाऊं बिरहिनि गुरुउपदेश। सूरश्यामबिनु सबजग सूनो जैसेमणिबिनुशेश२१अबहरि कैकोहैंरहतु। सुनियह दुसहदशागोकुल की ऊधोका हरिकहतु। देखुसखी करुणा अतिइनकी उलटे चरण गहतु। तुमको चाहिअधिक करिमाई आँखिनते अँसुवाबहतु। नीय तिही यह बातजु परदुखनाहिंन सहतु। उपचिपरी परतीत सूरइनदह सुलहतु २२ भलीकरीशोच कहालागे करन। ऊधो कमलनयनसों कहियो गोबर्द्धन के धरन। अबदै बिरह अनल लागे बारन तबदनईजरन। संकट बिपतिपरेते राखी प्रीतिकैकैलईशरन। तुम्हरीदशा ब्रज नायकसुमिरि सुमिरि लागी झरन। सूरश्याम प्राणअब तजिहैं बेगि दिखावो चरन २३ या युवती के गोरसको हरि इकदिन बहुत अरे। ऊधोवे बातें क्यों बिसरति छांडि न हठहिपरे। तादिनको देखी ये अंचरऐंचत ओप भरे। आपसिखाय ग्वाल सबहिनको न्यारेरहेखरे। मोमूरति नयननिमें लगिरहि अँगअँग कैलबरे। सूरश्याम निरखेसचु पैये संदेशे रहेधरे २४ जब वह सुरति होतहै बात। सुनहु मधुप या बेदनको गति मनजानैके गात। रहतनहीं अंतर गतिराखे कहत नहीं कहिजात। भईरीति ज्यों उरगछछूंदरि छांडे बने न खात। येहीहाल

सदा या ब्रजमें बीतत है दिनरात। सूरदास प्रभुको मिलि बिछुरन सु-
मिरि सुमिरि पछितात २५ नयना नाहिंन रहत। यद्यपि मधुप श्याम
सुन्दरको नेरेही कहत। हृदय माहिं जोहरि वे बतावत सोयोनर ल-
हत। परीजु कठिन प्रकृति दरशनकी देखोही चहत। कैसेहीकेवदन
बिलोके बिनुरहेउ न परत। अंतर संदेश अधिक कुल उलटे बहत।
यातेऊधो योगको कहिहु सोन जहत। सूरश्याम इनको बातनिसुनि
देह दवदहत २६ ॥ रागधनाश्री ॥ योग ज्ञानकी बातेंऊधो तुमहीपै बनि
आई। श्रोता कंठ कुसुमकी माला बक्ता लइ ठकुराई। वे ज्ञानी गुरु
सबजग जाने अबदासो रतिपाई। कनक रतन रथऊपर चढ़िके सी-
खिचले ब्रजधाई। तुमतो परमसाधु उपदेशक कथनी कथत बनाई।
प्रेम हरिन नयनीकी संगति ज्ञानपन्थ महँगाई। याको मर्म न जानत
कछु वे कहि सुन्दरि समुझाई। सूरदास प्रभुऐंतुम कहियो बैठेसभा
जुडाई २७ सदागुरु चरण भजन बिनुविद्या कहो कैसे को पावैं। उ-
पदेशक हरिदूरिहुते क्यों हमरे मनआवैं। जोहित कियो तोअधिक
करहि किनि आपुन आइसिखावैं। योग बोझते चलि न सकै तो
हमहीं क्यों न बुलावैं। योगज्ञान मुनिनगर तजेबस सघन गहनबन
धावैं। आसन मौननेमुमन संयम बिपिनमध्य बनिआवैं। आपुनकहे
करे कछुऔरै हमसबहिन डहकावैं। सूरदास ऊधोसों श्यामा अति
संकेत जनावैं २८ साधवसों न बने मुखमोरे। जेहि नयननि शशि
श्याम बिलोक्यो ते क्योंजात तरनिसों जोरे। मुनिमन रमन ये योग
कमठ घन मंदर भारसहत क्यों ओरे। तरुणी हृदय कुमुदके बंधन
कुंजर क्यों न रहत बिनुतोरे। नीलांबर घनश्याम नीलमणि पैयत
क्योंहिंथमके भोरे। सूरभृंगकमलनिके बिरही चंपक मनलागतनाहिं
थोरे २९ ॥ रागजैतश्री ॥ अबहरि औरे भये माई इतनेहिंदूरि। मधुकर
हाथसँदेश पठायो चतुरचातुरीचूरि। रूपराशिसबगुणको परमिति
श्याम सजीवनमूरि। तासों कहत मनहिंमन देखोसबठांहै भरिपूरि।
क्यों ऐसे यहदेह सूरखानिरह बिहरत झकझूरि। तापर छपदकरन
आयेहो कोयलहूलधूरि ३० और सकल अंगनिते ऊधो अँखियाँ
खरी दुखारी। अतिहि पिराति सिरातिन कबहूं बहुत यतन करि

हारी । यकटक रहति निमेष न मिलवति बिया बिकल भइभारी
भरिगइ बिरह बायुबिन दरशन चितवति रहति उघारी । रेरे अलि
गुरु ज्ञान शिलाकहि क्योंसहि सकति तुम्हारी । सूर सुअंजन आनि
रूपरस आरति हरणहमारी ३१ ॥ रागआसावरी ॥ तुम्हरेदेश कहामसि
खूटी । भूखश्याम सबनींद गईअलि हरि बिनुबिरह लयोतन लूटी
दादुर मोरपपीहा बोलत अवधिभई अबझूटी । पाछेआइ कहातुम
करिहो जबतन जैहै छूटी । गोपिसँदेशो हरिपै पठवति प्रथम प्रीति
क्योंटूटी । सूरदास प्रभुयोंजानतिहो वैरकरहिंगे कूटी ३२ सखीरी
जानियत यहि अनुमान । देखियत नहीं यतनजीबे को इतहि बिरह
इतज्ञान । इतैचंदचंदन समीरसखि लागत अगिनिनिदान । उतनिर्गुण
अवलंबन हरिको कठिन बिरोधिन पान । इतभूषण भयकरतअंगके
सब निशि जागिबिहान । इतेसमाधि शून्यगुण ऊधो योगध्यानके
ज्ञान । दुसह दुराजनृपति बड़दोऊदुखको उभयसमान । यहिअवसरको
राखेसूरज कमलनयन बिनु आन ३३॥ रागधनाश्री ॥ आपुदेखि परदेखिये
मधुकर तो औरैसिख देह । बीतेगीत बजाने गोरे खरोकठिनहै नेह ।
मनुज तिहारो हरि चरणनि तरतनुलै गोकुल आयो । कमल नयन
को संग बिछुरिकै कहिकौने सचुपायो । गोकुलरहो जाहुनिज मथुरा
झूठो माया मोहु । गोपीकहति सूरऊधोसों हमहीं से किनिहोहु ३४॥
रागदेवगन्धार ॥ लरिकाईको नेहकहो अलिकैसेछूटत । कहाकरौ ब्रज-
नाथ चरितवहु ममअंतर गति लूटत । वह चितवनि वह चाल मनो-
हर वह मुसकानि मन्दधुनि गावनि । नटवर भेषधरेनँदनन्दन वह
भावनि बनते ब्रजआवनि । चरण कमलकी शपथ करतहैं यहसँदेश
मोहिं बिष समलागत । सूरदासप्रभु निमिष न बिसरति मोहन मूरति
सोवत जागत ३५ ॥ रागबिलावल ॥ सोको जो नाहिंन सुखपायो बल
गोपालकेराज । ऊधोआज सम्पदा उनकी है सबहिनकेकाज । बसुध
तोरि गजनिहति मल्लमथि निडरकियो यदुबंस । मुनिअमरन आनंद
बढ़ायो करउयो करगहि कंस । कुब्जारूपदियो द्विजकोसुत मालीको
मनकाम । उग्रसेन बसुदेव निगड़ते आनेअपनेधाम । दीनदयाल दीन-
प्रभुदाता दिनदिन हम सबको आस । सूरश्याम सों कहो हरहिंहरि

इन नयननकी प्यास३६ ॥ रागमारू ॥ वेहरि क्यों बिसरी । आवत राधा पंथ चरणरज हित सों अंगधरी । भांतिभांति किसलय कुसुमावलि शय्या सुहथकरी । निमिषवियोग होत तबतलफत ज्यों जल बिछुर-करी । सुनत अमित श्यामा रसरंजित सोवत रंगभरी । आपुन कुसुम बयजनकरिलीने करत मरुत लहरी । गोचारननिस जात सघनबन मु-रली अधर धरी । नादप्रनालि प्रवेशघोषमें रिझवत तियसिगरी । प्रकृतपुरुषतामहिं ताकोसँग सूरप्रकटप्रभारी । ऊधोसुनतसुनत मनवि-र्थकित सुफलितकर्म दरी३७ सब सुखलेकर श्यामसिधारे । सुफलक सुत कछुभलो न कीनो दैदैहीउपहारे । चलतपीतपट करथि नराखे यहजिय शोचहमारे । भूख नींद छुटि गई निशिबासर सुनहु न ऊधो प्यारे । महाप्रलयते करत जराख्यो कर धरिशैल उबारे । सूरदासप्रभु तुम्हरे दरशविनु क्योंकुरहैंयेतारे ३८॥ रागकान्हरो ॥ कहानकीजे। अपने काजे । दिनद्वै चारि यहै करि देखो जो हरि मिलैं योगके साजे । माथेजटा पहिरि उरकंथा लावहु भस्म अंग मुखसाजे । सिङ्गीदण्ड माल मृगछाला लोचन मुंदिरहो बिनआंजे । योग बिरहके बीच परमदुख मरियतु हैं यहि दुसह दुराजे । सन्मुखह्वै सबसखी सयानी नाहिनआजु उबरियतु भाजे । ऊधोकही सो सांची मानोबरघा बि-दित पञ्चसोगाजे । यातेसूर कहीना कीजो अवसर बने भोरिके बाजे ३९ हरिठाकुर लोगनसों मधुकर काहेकी है प्रीति । जो कीजै ताई जलधर रविकीसीहै रीति । देखहुमान कमल चातक ज्यों ऐसेही गईबीति । तलफत अरत पुकार करत हैं कछू नाहिने नीति । मनहठपर्यो कबन्ध योधज्यों हारेहु मानेजीति । सकत न प्रेम समुद्र सूरबर बालुकीज्यों भीति ४० भूलतिहो कतमीठीबातन । येअलि हैं उनहीकेसङ्गी चञ्चल चित्त सांवरे गातन । वेमुरली धुनिकै जगमोहत इनकोगुञ्ज सुमन मनपातन । वेडठि आनआन मनरञ्जत येउडिआन तरँग रसरातन । वेनवतन मानिन गृहबासी ये निशिदिनबस रहतजल जातन । ये षटपद वेद्विपद चतुर्भुज इनमें कछुभेद नहिँभातन । स्वारथ निपुण सर्वरसभोगी जोनिपतिपाउ बिरहदुख दातन । वेमाधो येमधुप सूरसुनि इन दोउनमें कौनघट घातन ४१ ॥ रागगौरी ॥ हरिमुख निरखि

निमेष बिसारे । तादिनतेमानो भयेदिगम्बर इन नयननके तारे । तजि शिख सीखवधुर साधुनकी लाज जनेऊजारे । घूंघट अरु छांड़ो बी- थिन अहनिशि अटत उघारे । सहज समाधि रूपरुचि इकटक टरत न टकतेटारे । ताकेबीच बिघन कारणापति बन्धुपिता पचिहारे । सूर सुनति समुझत नियजानत ऊधो बचन तिहारे । करैंकहा ये कहे न मानत लोचन हठी हमारे ४२ उपमा एक न नयन गही । कबिजन कहत कहत नितआये सुधिकरि करिकाहूनकही । कहेचकोर मुख बिधु बिनु जीवत भँवर न तहँउड़िजात । हरिमुख कमल कोशबिछुरे टालेक्यों ठहरात । खञ्जनमन रञ्जनजन जोपै कबहु नहिंन सतरात । पक्षपसारि न उड़त मन्दह्वै समर समीप बिकात । आहेबधन ब्याधह्वै ऊधो जोमृग क्यों न पलाय । देखतभाजि बरोघन बनमें जहँकोउ सङ्ग नधाय । ब्रजलोगनबिन लोचन कैसे प्रतिछण अतिदुखबाढ़त । सूर- दास मीनता कछूयक पलभर सङ्ग न छाँड़त ४३ प्रेम न रुकत हमारे बूते । किहिंगयन्द बाँध्योकहिऊधो पद्मनाल किधौंकाचेसूते । मन- मथसिंह जगायो सोवत सुनिसंदेश श्यामकेसूते । बिरह समुद्र सुकाय कहांते रञ्चकयोग अगिनिकेछूते । परमारथ गुरुज्ञान कहतहौ मुक्तिलै जाउ हमारेहूते । चाहतमिल्यो सूरके प्रभु को क्योंपतिआय तुम्हारे कूते ४४ ॥ रागसोरठ ॥ हरिहमसों करिहो सजनी मीनजलकी प्रीति । कितिकदूरि दयालऊधो अवधिगई ब्यतीति । तलफिकै तनप्राणदी ने प्रेमकी परतीति । नीरनिकट न पीरजानी गइबयथा बपुजीति । चलतहोप्रभु कहोयाहो आइहों रिपुजीति । सूरअब ब्रजनाथसीखे सबैउलटीरीति ४५ ॥ रागसरंग ॥ तुमसों उनसों कहासगाई । हमअहीर अबला ब्रजबासी वे यदुपति यदुराई । कहा भयोजुभले यदुनंदन अब यह बुद्धिबताई । सकुच न आवतघोष बसतको तजिब्रज गये पराई । ऐसेगये उहांयादवपति गाइगोपबिसराई । सूरदास या ब्रजकोनातो भूलि गयो बलभाई ४६ मैं जानीऊधो हरिकीचतुराई । बारबारतुम कहत अध्यातम पावतकौन बड़ाई । तुमजोकहत हो अगम अगोचर हरिरस तज्योनजाई । बाहर भीतर श्यामबरणते सुनियत दूरिभलाई । कौतुम कहत आपअपनीते को तुम कहत कहाई । सूरदास प्रभु

बिरहजरतिहौं बिनुपावकदौंलाई ४७गोपालहि कैसेकैहमदेति। ऊ-
धोको इन मीठोबातन निर्गुण कैसे लेति। अर्थधर्म कामना सुनावत
सब सुख मुक्तिसमेति। ताकोभूलगई मनसाहू देखहु सो चितचेति। जे
व्यापकहि विचारत बर्णत निगम कहतहैं नेति। सूरश्याम तजिकौन
संकतिहै अलिकाके गतिमतिपट हरिबिनु यहिबिधिहै ब्रजरहियतु।
परपीरउ सुनियतु है ऊधो ताते तुमसों कहियतु। चन्दनचन्द पवन
पावकसम मिलि मिलिहै तन दहियतु। जागत याम जात युगयुगसम
यतननिहो निबहइयतु। बिरहसिंधु यदुनाथ श्यामतनकैसेहु पार न
पइयतु। फिरिफिरि अवधिआश अवलम्बित बूड़त तृणजनु गहियतु।
नेकुकु आश दरश की ऊधो तालगि है सब सहियतु। मन क्रम बचन
शपथहै सूरज और कछूनहिं चहियतु ४९॥ रागधनाश्री ॥ कहा कोऊ
जाने परपीर। नन्दनँदनके बिछुरे सखिरी बहतसही शरीर। कहि
कहिकथा मधुप समुझावत मन राखत धरिधीर। नयन मीन कैसे
सचुपावत बिनहरि दर्शननीर। योग समाधि कहा हमजाने ब्रजबा-
सिनी अहीर। कैसेही धौं मिलहिं सूरप्रभु बहुरि तरंगिनितीर ५०॥
रागसारंग ॥ हम तो इतनेही सचुपायो। सुन्दरश्याम कमलदल लोचन
बहुरि सुदरश दिखायो। रजकधनुष गज कंसमारिकै करेउ सबनको
भायो। महाराजह्वै मातुपितहि मिलितऊ न ब्रजबिसरायो। कहाभयो
जो लोगकहतुहैं कान्हमधुपुरी छायो। सुनि यह दशा बिरहिलोगन
को उठिआतुरह्वै धायो। गोपीगोप नन्दयशुदा मिलि प्रेमसमुद्र बढ़ायो।
सतेभाव कृपाल निरखिमुख नयननीर भरिआयो। यद्यपि हम सकु-
चतिप्रभुताशुनिहरिहो अधिक जनायो। वैसेहि सूरबहुरि नँदनन्दनघर
घर माखनखायो ५१॥ रागजैतश्री ॥ हरिसों कहियो हो जैसे गोकुल
आवैं। दिनदशरहे सोभलीकीन्ही अबजनि गहरुलगावैं। नाहिंनकछू
सुहाततुमहिं बिन कानन भवन न भावैं। देखे जात आपनी आँखिन
हम कहि कहा जनावैं। बालबिलख मुख गाउ न चरत तृण बछरा
पीवन पयनहिंधावैं। सूरश्यामबिनु रटति रैनिदिन मिलेहिभले सचु-
पावैं ५२॥ रागसारंग यदुपति को संदेश सखीरी कैसेकै कहैं। बिना
काहे मनहीं मन भीतर कबलगि शूलसहैं। जो कछुबात अपने चित

अंतर रचिपचि शोचिरहौं। मुखआनत ऊधोतनचितवत बहुतविचारनहौं। सो कछु सिखतुम देहु सयानीजाते धीरगहौं। सूरदास प्रभु को सेवकसो विनतीकरिनिबहौं ५३॥ रागसोरठ॥ कबहुंधौंऐसीयेबात कहौ। तजहुशोच मिलिहैं नँदनन्दन हितकरि दुखनिदहौ। तुमबिन क्षमावान के कारण पठये कहनसँदेश। अधिक आयआरतिउपजाई मेटहु बिरह कलेश। यकतुम निकट रहतहौ उनके जानत सकल सुभाय। सोई प्रकट देखि बहदरशन छांड़हु आनउपाय। हमकहकरें कमल लोचन के जब कीयो मृदुहास। सूरदास प्रभु क्यों बिसरति है नखशिख अंग प्रकास ५४ हरि ब्रज कबहिं कह्योहै आवन। सांचे मधुप सुनाय मधुर मोहिं बिरह व्यथा बिसरावन। होयह बात कहा जानोंसखि जातमधुपुरी छावन। अपनीचूक कहांलों मानोंअबलागी दुखपावन। सबनिशि सूरसेज समपावक शशिसीरोतन तावन। कब वे अंचल उरकर गहिहैं दुःसह दाह नशावन ५५ सखीरी मथुरामें है हंस। इकअक्रूर और ये ऊधो जानत नीकेअंस। येदोउ क्षीर नीरपहिंचानत इनहिं बचायो कंस। इनके कुल ऐसी चलि आई सदा उजागर बंस। अजहूं कृपाकरो मधुबनपर जानिआपनोअंस। सूरसुयोग सिखावत अबलनि सुनतहोय मन धंस ५६॥ रागधनाश्री॥ बहुतदिनगये ऊधो चरण कमल बिमुखहो। दरशहीन दुखित दीन छिनुछिनु बिपदासहो। रजनी अतिप्रेम धीर बन घन नहिं धरैंधीर। बासर मगजोवत उरसलिता बहैंनयन नीर। जब लगिहुती अवधि आस सोउ गनि घटरहे स्वास। अतिबियोग बिरही तनुतजिहैं कहैंसूरदास५७॥रागसोरठ॥ येतेमान कहाहरि कुब्जा पायेहैं परिपोतु। इतनो दूरिभये हरिऔरें बिसरी गोकुल गोतु। कैसे सहैं श्याम घनसुन्दर बिरहिनि बिरहिनि सोतु। तुमहों कहो बिचारि हृदय हम जैसोहैं हमकोतु। आयेयोग सिखावन ऊधो सुरभि कन्धब्रज जोतु। सूरदासप्रभुतबहिं जिवहिंगी देखें मुखउद्योतु ५८॥ रागसरंग॥ नाहिंन इहौनेह नयो। मधुमाधव है तुहिब्रज बिधिते पहिलेहीभयो। बीचमनमाली मदनउरआल बात बयो। प्रेमपय सींचेउ सहज हरि रोकि रतिबल लयो। येतेश्यमहै श्यामसुन्दर बिरहबिमल बढेउ। मुरलि मधु छबि पत्रशाखा दृगबि-

नेम चढ़ेउ। कमल तजितुम रमत कर्योनहिं आकके थंवोद। सूरयोगान श्रवण परसे विनु गोपाल विनोद ५९ वारक कान्ह करो किनि फेरो। दरशन दै मधुबन को सिधारो मेरे लेखे सुख इतनो बहुतेरो। भलयोहि मिले वसुदेव देवकी जननि जनक निजकुटुंब घनेरी। केहि अवलम्बि रहेहम ऊधो देखि दुःख नँदयशुमति केरो। तुम बिनको अनाथ प्रतिपालन जाजरि नाउकुसंगबन्हेरो। गयेसिंधुको पारउतारै अब यह सूर थक्यो ब्रजबेरो ६० ॥ रागनट ॥ जाहु जाहु ऊधोजानेहो। जैसेहरि तैसे तुमसेवक कपट चतुरई सानेहो। निर्गुण योग कहां तुम पायोकहो कौनेब्रज आनेहो। यह उपदेश देहु लैकुब्जहि जाके हाथ बिकानेहो। मनतो हरि लैगये हमारेकहो कौनमतिठानेहो। सूरदास अनघेरे ऊधो नागरिरूप भुलानेहो६१ ॥ रागसारंग ॥ मानोभार सकही सांचे। नखशिख कमल नयनकी शोभा एकभृगुलता बांचे। दारूजात कैसेगुण इनमें ऊपर अन्तर श्याम। हमको हैं सुगयन्दबतावत बचन कहत निःकाम। येसब असितदेहवरे जेतेऐसेई सखिजानि। सूरएकते एकआगरो यामथुराकी खानि ६२ ॥ रागसोरठ ॥ कहियेतासोंजोहोय विवेकी। तुमतोअलि उनहींकेसंगी अपनिबातकेटेकी। येतोकोठाली बैठोहै तोसोंमुँहचढ़ावै। भूठीबाततुसी फटकेज्यों कनतोहाथ न आवै॥ अजहूंतो अगहूंइन छांडत यहमूरखमतिभोर। मन क्रम बचन सूर अभ्यन्तर नंदनँदन शिरमोर६३ बातें कहत सयाने कोसी। कपटतिहारो प्रकट देखियत ज्योंजल नायेसीसी। हैंतोकहतु तिहारे हितकी काहेतेशेभरमति। हमहूंमथा तिहारी तो कछुथोरीसी है मरमति। छाय बसाय गये सुफलकसुत नेकहुलागी वारन। सूरकृपाकरिआयेऊधोतापर ढेवाडारन ६४ रागसारंग ॥ आये नन्दनँदन के नेव। गोकुल आनियोग विस्तारो भलीतुम्हारी जेव। जबवृन्दावन रासरचेउ हरि तब कांकत तुमदेव। अब युवतिनको योग सिखावत भस्मअधारी सेव। अबलगु कयों तुम यह मतठान्यो ज्यों योगिनि को भोग। सूरदास प्रभु सुनत अधिक दुख आतुर विरह वियोग ६५ तु अलिकहापरोहै पैंडे। बरतत श्याम आजु मयो हमको बचतनाहिनैबैंडे। यहउपदेश सहित भारोज्यों चढ़िके भये बरेड़े। जिहितन यशुदा सुतको सुखहै

हृदय मांझहोयेड़े । तजि लीला मनुमारग अपनो काहेको चलतउपेंड़े । इहिआदरपरअजहूंबैठो डरत न सूर पलैंडे ६६ माधवनेक दिखाईदेहु । नातनके पलटैया तनसों जो भावैसो लेहु । भूलीफिरत ठगोसी डोलति तजेग्रास अरु गेहु । जबतेइन अपराधी नयनन हटकत कियो सनेहु । कहियो मधुप जाय पालागों बिरहकियोतनखेहु । सूरदासप्रभु प्राणाधिक को तुमहिंनिहोरोलेहु ६७ हमतो तबहिं ते योगलियो । जादिनते मधुकर मनमोहन मधुबन गमन कियो । रहितसनेह सरो रुह सबदिन औखँडभस्म चढ़ाये । परिहरि मेखला चीर चिरातन फिरिफिरि फेरि सिवाये । बांधेबेधु कंठ श्रृङ्गीपिय सुमिरि सुमिरि गुण गावत । करवरबेत दंडडरपावत सुनत प्रवानदुख धावत । भोगभुगति भूलेभावै नहिं फिरै बिरह बैराग । गोरख शब्द पुकारत आरत रस रसना अनुराग । श्रुति अवतंससैन मुद्रावलि अवधि अधार अधारी । दरशन भिक्षामांगत डोलत लोचन पत्रपसारी । रमत न चित्त उदास फिरतअति बनबीथिनि दिनराति । आवत कबहुं कुटुम्ब दरशहित धरिकंटक सोऊ न सुहाति । परम गुरूरति नाथ हाथसिर दयो मंत्र उपदेश । चतुर चेटकी मथुरानाथ सों कहियो अब आदेश । को देख्यो भोगी या ब्रजमें योग देनहेआये । जानीसिद्धि तिहारे सिषकी जिनतुम यहांपठाये । सूरदासप्रभु तंतुलखायो है हमरे सोइध्यान । तुम अलि औरहि ठौर चलावहु अपनो फोकटज्ञान ६८ सनोदोउ एकहि मतेभये । ऊधोअरु अक्रूर बधिक महा ब्रजआखेट ठये । बचनपासि बांधे माधव मृग उनरत घालिलये । इनहींहती मृगी गोपीजन शायक ज्ञान हये । बिरहअग्निको दवादेखियत दहुंदिशा लायदये । अबधों कहा कियो चाहत है सोचत नाहिं नये । परमारथी ज्ञान उपदेशत बिरहिनिप्रेमरये । कैसे जियहिं श्यामबिन सूरज चुम्बकमेघ गयेद६ माधव कौड़िदई पहिंचानि । तबते बिरह कुटिल या गोकुल कीनीहै निज खानि । तनु गिरि जानि आनि अवनी उर यहि डर भीतरहै । श्रमनकान्ह खिनखनत काम शशि किरिशि उदोतुगहै । रज अञ्जन जल नयन द्वारह्वै रह्योहियो भरिपूरि । निकसत नहींउपाय रत्न ज्यों गये श्यामसँग दूरि । तुमसों बात औरं अलिभाषों उलटि ध्यान बपु

जीते। हैनृप लङत प्रजा इन्दर दुख कहो सूरको नीते ७० तुमअलि कमल नयनके साथी। देखियत बड़े काजको ऐसे होतखूसको हाथी। सुन्दरश्याम मण्डमण्डलकृतश्रमजलकन श्रमकाजैं। योगज्ञानह्वै दगन भोगरद कोनोकुंवरिबिराजैं। जबशिशुहतेकुमार अखुरहति यातेप्रीति सुजाने। अबभये विबश जाय दासीकेव्रजतजि प्रकटपराने। करि करि कपट तुच्छ विविधावश भगतकरत अँगभटज्यों। सूरज अवधि मन्त्रसंजोवन मारिजियावत नटज्यों ७१ माधव मधुपुरी रतिमानी। एकबार बिन घोष उमँगि ऋतु बरषा आयतुलानी। घनसुधि नेहबैन बन्देअतिअवधि दामिनी कोधति। दादुरकाम बियोगमोरगन पथिक कुब्जगृह चोंधति। अबहुकुमार अंगअब निरखत जेगुणग्रन्थनिभाखे। अतिकुलवन्त जात सबजानत गहेफेंट तिनराखे। यदुपति कुवँरि नाम कहियतहै ये जग चलत कहानी। सूरशिंगार बने कैसे अलि आँखि आंजियेकानी ७२ अब हरिऔरहिरँगराचे। ऊधोसरससखा तुमकोपि ते तुमतेसयानपकाचे। बालापनते निकट बसतहै शून्या एकपखानो। जैसे बास बसत है कोई तैसे होत सयानो। जे उपमा पटतर लै दीजै ते सब उनको लायक। जोपै अलख रहो है वा दिशि ता दिशि ये व्रज नायक। जोपै यहां कहतहैं निजकरि हरिसबही भरिपूरि। आवाग मनकरतहै काको कौलगुकाते दूरि। जे जे बुद्धि सिखावहु हमको तेसब हमहिंअलेखे। सूरसुमनसा तबसुख पैहैं कमलनयनके देखे ७३ माधव मानिके हित हारि। तौतुव मुख ये योग सँदेशे दीन्हे हैं गहि डारि। घराटानादगीतमुरलोधुनि सनकुरंग सँगराखे। नहिंमारत नहिं मिलत अंकभरि अतुर सखासँगनाखे। नयन लगति घातक ज्यों जानत रतिमानत नहिंगाये। करि करि यतन प्राशाराखेबिनु सूरस्वाति हरिपाये ७४ तबते बहुरि दरशनहिं दीनो। ऊधो हरिमथुरा कुब्जा गृह रहेनेमव्रत लीनो। चारिमास बरषाके आगमनोरहतयकठौरि। दासी धाम पवित्र जानिके नहिंदेखत बहिपौरि। ब्रजबासी सबबाल कहत हैं रिसगहि अनत गये। सूरसगुणहै जातमधुपुरी निर्गुण नाम भये ७५ पठवत योगहोतनहिं लाजन। सुनियत यंत्रतांतिते ज्ञानी कपटराग रुचिबाजन। जियहोगहो क्रूरकी सिखवनि मोह होत नहि

राजन। यहनृपसीतिकहो कौनेहुयुग इनेहोत यथाआजन। सोइतसुरति नहींकोजति दुख देखि पयोजिहि माजन । सबसुधिपरी बचनकन ढोवत हँकेरहो सुखभाजन। केदुर्लहिनि दासीभय दूलहफिरत ब्याह के साजन। सूरबड़ो भुवभूप कंस हत्यो वा कुबरी के काजन ७६ या ब्रजसगुण दीप परकास्यो। सुनिऊधो भृकुटी त्रिबेदपर निशिदिन प्रकट अभास्यो। सबके उरसरबनि सनेहभरिसुमन तिलीकोवास्यो। गुणअनेक तेगुण कपूरसम परिमल बाहर मास्यो। बिरहअगिनि अंगहि सबके नहिं बुझतपरे चौमास्यो। ताकेतोन पुकेया हरिसे तुम से पंचसरास्यो। आनभजन हणसम परितब करती योति उपास्यो। सावनभोग निरंजनतेरे अन्धकार तमनास्यो। बादिनभयोतिहारो आवन बोलतहो उपहास्यो। रहिनसके तुम सोकरूपह्वै निर्गुण काज उकास्यो। बाढीज्योति केशदेशलों फूल्यो ज्ञानमवास्यो। दुरबासना सुलभसबजारेजेकेरहे अकास्यो। तुमतो निपटनिकटके बासी सुनिय तहुते खवास्यो। गोकुलककुरसरीति नजानत देखत नहीं तमास्यो। सूरकरमकीखीर परोस्यो फिरफिर चरतजवास्यो ७७ कहिबे औरी जिनि शकराखो। लांबीमेह्न दईहै तुमकोबकततरहो दिनआखौ। जाकी बात कहततुम हमको सुभोरहोके कांधो। तेरोकहेउ पवन को भुस भयो उड़उजात ज्यों आंधी। काहेते श्रमकरतु सुनतुको होतजिवन को रोयो। सूरइतेहू मांझन सूझतनिपट नयन को खोयो ७८ प्रीति उहिदेश न कोऊजानत। तोतुबातकहतअलिऐसी बिनहिं वृथापहिं चानत। जेगोपाल गृहगृहब्रजभीतर चोरीलेदधिखाते। ते अबदुखित देखिब्रजबासिन दूरिहिभये कुबजाते। सूरकुटिल जितने सुनियतहैं लोग पुरातनगावत। नखशिखलों बियरूप बसतहैं सबबन नाम कहावत ७९ हमपरहेतुकरे रहियो। वहदिनऊधोबिरसतनाहीं फिरिफिरिकाच हियो। देखेजातहो अपनीअँखियाँ यातनको दहियो। याब्रजको ब्यवहार ऐसोभयोसब प्रभुसोंकहियो। श्यामशरीर कमलदललोचन कबहिंदरश लहियो। सबसुख लाड लड़ायसूर प्रभु वेहि धुरारहियो ८० हरिबिन कैसेराखों प्रान। पहिलेही रँगरँगीश्यामरँग अबन च- ढतरँग आन। कागदझूठो लेखनि झूठी मसिझूठीपरवान। जेजेबचन

काहेहरितुम सों झूठहमारे ग्यान। श्यामसुँदरकी बतिआँझूठी झूठेतुम भगवान। सूरदासप्रभु बेगिमिलहु किनव्यथा बिरह पहिंचान ८१ बि-लग्रु हममानहिं ऊधो काको। तरसत हैं बसुदेव देवकी नाहिंन मात पिताको। काकेमातुपूतको काकोदूध पियोहरिजाको। नंदयशोदा लाड़लड़ाये नहिंनभयो हरिताको। कहियो जाय बनाय बीनती जो हितुहै अबलाको। सूरदास प्रभुप्रीतिरीति कासों कुटिल मिल्यो कुब्जा को ८२ हमहिंतो इतनेही सों काजु। कैसेहूं अलिकमल नयनको ब्रज लै आवहु आजु। और अनेक उपाय तुम्हारे बिकलकरहु सुखराजु। कैसेहैं निबहत अबलनिपै कठिन योगकोसाजु। नखशिखशुभगश्याम तनकोछबि दरशन हरत बिराजु। सूरदास मनरहत कौन बिधि मदन बिलोके बाजु ८३ जौलगिहृदय ज्ञान नहिं आवै। तौलगि कोटियतन करै कोऊबिन बिबेक नहिंपावै। न्याय बिचारि सपनसों देख्यो मैं सब यतननि जोय। नाना दारु मध्य ज्यों पावक प्रकट मथेते होय। तुमहीं कहत सकल अँगब्यापक अरु सबहीसे नियरे। नखशिखलों तनजरत निशादिन निकसि करत किमि सियरे। सांचेबोलसबै बोलत हो ज्योंमुख मेले तुलसी। सूर सुऔषध हमहिं बतावत ज्यों कफज्वर पर गुरसी ८४ सँदेशन सुनत प्रीति गतिजानी। चातकस्वाती बूंदलों सागर भरेउ बतावत पानी। बिनगुण मोहबंध्यो शुकनल ज्यों बन्यो बन कल कीनी। अबयों मनप्रठये देखन तुम यहै सुरति हमलीनी। निर्गुण के ऐसे गुण सुमिरत मुनिअलिसखा सनेही। ज्योंहरिलियो कौन ऐसी हितु सूर सुपैयतदेही ८५ सबजल तजेप्रेमके नाते। तऊ स्वाति चातक नहिंछांड़त प्रकट पुकारत ताते। समझत मीननीरकी बातें तऊप्राण हठिहारत। सुनतकुरङ्ग नादरस पूरणयदपि ब्याधशर मारत। निमिष चकोर नयननहिं लावत शशि जोवत युगबीते। कोटि पतंगज्योति बपुजारे भयेन प्रेमघटरीते। अबलागनहिं बिसरी वेबातें सँग जुकरींब्रजराज। सुनिऊधो हमसूरश्यामको छांड़िदेहकेकाज ८६ मनकी मनही मांझरही। कहियेजायकौनसों ऊधोनाहिंन परतसही। अवधि अधार आवनहिं जीवत मनहीं व्यथासही। चाहतिहुतीगुहार जहांते तहँहिते धारबही। अबवह दशादेखिनिज नयनन सबमर्य्या-

दहही । सूरदासप्रभु के बिछुरेते दुसह बियोगदहो ८७॥ रागनट ॥कहि थोअति अबला दुखपावैं । हिरन पवनप्रति प्रविशत ज्योंहि बारबार समुझावैं । सारंगरिपु ता पतिरिपु वारिपु तारिपु तनहिजुजावैं । हरि वाहन बाहनपति घायल ता सुतआनिबचावैं । सुररिपु गुरु बाहन तारिपु पति ताचढ़ि भेषदिखावैं ।सूरदास प्रभुतुम्हरेमिलनकोबिरहिनि तपति बुझावैं ८८ ॥ रागकेदारो ॥ हमतोसब बातनि सचुपायो । गोद खिलाय पिवायदेह पय पुनि पालने झुलायो । देखति रहीफगिान कोमरिजाड्यों गुरुजपड्यों न भुलायो । अबनहिं समुझति कौनपापते बिधनासो उलटायो । बिनुदेखे पलपल नहिं क्षराक्षरा येही चितही चायो । अबहिं कठोरभये ब्रजपति सुतरोवत मुंहु न चुवायो । तबहम दूधदही केकारग घरघर बहुतखिझायो । सोअब सूरप्रकटहेलाश्यो योगरू ज्ञानपठायो ८९ ॥ रागमलार ॥ ब्रजपर मदन कटकई आई । ऊधोदेश मधुपुरीबासी कहियो हरिसोंजाई । गरजिचले चहुंदिशते बादर ज्योंरणबंबबजाई । पारक अरु असवार कामके सुभट चले समुदाई । अतिबडघटा सुडिप पंकति सों दामिनि ध्वज फहराई । चातक पिकपशिष द्रुमशाखाचढ़ि अवगानि टेरसुनाई । कटिनिषंग काम कुटिल धनुषलेभौनहुंकार बुलाई । मुखअरबिंद दिखाय सूरप्रभु अब किनिलेहु छुडाई ९० ॥ रागकान्हरो ॥ जोसकरन्द लुब्धनू मधुकर मुख कमल छांडिकत करत भ्रमन । नहिंसौरभपद पद्मके तुल्य कहुताइमते रसजात कोलिबन । सारङ्गार भुवन छैबैट रस्त कोरमुनि मुनिन श्रवन । कहाकान दीनो छखे पथ कहा बिचार कियो ब्रजभ्रवन । प्रथमहिंपाप सुजनमेको फलु भेंटधरी सावना पवन । क्यों कहिराई बातयोगनिकी सूरअछत राधिका रवन ९१ ॥ रागधनाश्री ॥ अंखियां हरिदरशनकी प्यासी । बिनुदेखे पलयुग सम बितवति क्योंजीवें ब्रजबासी । घरघर छांडे बनबन डोलत ऐसे फिरत उदासी । इहै सुहात रैनिदिन कहियत हैं निर्गुण अबिनासी । ज्यों बिनुभोर कमलशशि त्रासित परे प्रेमकी फांसी । सूरदासप्रभु बिनु यों लागत जैसेमीन जलसासी९२॥रागआशावरी ॥सुनिउत्तर किनदेरे मधुकर बातसखी आननकी । निकट रहत यांते बूझति हैं कथाचलत काननकी । कैसे बेय रहत

मनमोहन कौनप्रियाप्रानलको। कोछबि निरखतबदनकमलको का-
हों मनमानलको। तुमअक्रूर बसुदेवदेवकी सभाभली जानलको। क्यों
करिसकै बिषयजल तीरथ काहूचितै चानलको। कहिहौ सबै प्राण
नायकज्यों तुम्हरेगुण गानलको। सूरसुनत फीकाभयो योग जु गोपिन
मन ध्यानलको ९३ इतनो जानिपरै जो ऊधो मनपछितात्रो घरैनहीं।
केसरि तरलतरङ्गिनको गति उपजति आतिबही। मालाकार दुलार न-
न्दकेगोपीबेलिजुही। क्यों सुखवत करुणानिधिजलबिनु पैयतुबनमेंमही।
अग्निउपज जबजब वृन्दावन योगयुक्ति निबही। तैसे समयभयोऽब
ब्रजमें जौन बुझावै अबहीं। सुनतकथा सुखबचन सखीके ऊधो ग्रन्थ
ग्रही। सूरश्यामतिहिक्षण तहँप्रकटे यातेचलतकही ९४ श्यामताके
लये मधुपको हैबातैं सुनिलीनो। मैंजानो सखि कछुहैं पैकछु नाहिंन
काहेकि करणो कीनो। कहि युवतीबनाइ लघुता कीनीबड़ाई अपथ
अकथ कथा माधुरसभीनी। धर्मकियो सुजाल भल्लतिलक भाल
लइफदालि मृगीबागतिभीनी। ज्ञानके सुनत सुनिज्ञान मन उपजत
तिहिकेबदलेहम भई मतिहीनी। राखिलेहु सूरस्वामी जो संदेशअंत-
र्यामी नातरु कुसुन्थ रूप कालसम पीनो ९५॥ रागकल्याण ॥ जाहु
बजाहु जाहुआगे ते ऊधो पतिराखति हैं तेरी। काहेको जियरोय
दिवावत देखतिआँखि बरतिहै मेरी। तूजु कहत है साँच हैं गोविंद
कहियत हैं कुब्जा उहि घेरी। दोऊ मिले तैसेई तैसे ये अहीर वह कंस
किचेरी। तुमसारिखे बसीठ पठाये कहिये कहा बुद्धिउहिकेरी। सूर
दास पहिली सुधि बिसरी देतहते ग्वालन रँगहेरी ९६॥ रागसारंग॥
हमरे को बनयोग अराधे। बहुआभोरी दगड अधारी मूंजन को तन
बांधे। आसन पवन बिभूति मृगछाला इतने को को साधे। सूरदास
हरिकोबाक परिहरि कौनगाँठि कोबांधे ९७॥ रागगौरी॥ श्याम तु-
म्हारी ये बाते। अपनिचोप को ढुंहकि कहतही भूलतहौ जुअबहिं
उठिजाते। श्यामशरीर बहेअरपद गुणा अतिहीलुब्ध फिरत दिनराते।
रातीदेख कनेर कलीज्यों अन्तरसेत कपटजिय याते। जिह्वा कोटि
बकतहु न बनई अतिहि बिचित्र षटपदी घाते। कहँलौं परखो करै
सूरप्रभु बारक मिलहु प्रीतिकेनाते ९८॥ रागमलार॥ श्यामकोइहै प-

रखोआवै। कैवह प्रीति चरणायावक इत अब कुब्जामन भावै। तब कत पाणिधरयो गोवर्द्धन कतब्रजपतिहि छुड़ावै। कतवह बेणु अधर मोहन धरि लैलैनाम बुलावै। तब कत लाड़लड़ाइ लड़ैरी हँसिहँसिकंठ लगावै। अब वहरूप अनूप कृपाकरि नयननहू न दिखावै। जासुख सङ्ग समीप रैनिदिन सोइअब योगसिखावै। जिनमुख अमृतदयेरसना भरि सो कैसेबिष प्यावै। करमोड़ति पछितातिं हियेभरि क्रमक्रम मनसमुझावै। सूरदास यहिभाँति बियोगिनि तातेअतिदुख पावै ९९ लिखिलिखि कितव पठावहु कागर। हम अबलनपर मयाभईहै भये कुबँरिबश नागर। ऊधो योग कहालै कीजै जलबिनु सूखोसागर। कहियों मधुप कांचके धोखे कोदेहै बैरागर। कहि या प्रकट सँदेश जितहिबे मधुबन श्याम उजागर। सूरश्यामबिनु क्योंमन राखहिं तन यौवनकी आगर १०० सखीरी मोमन धोखेजात। ऊधो कहत रहत हरिमधुपुरि गतआगत न थकात। इतदेखो तौआगेमधुकर मत्तन्याय सतरात। फिरिचाहो तो प्राणनाथ इतसुनत कथा मुसिकात। हरि साँचे ज्ञानीसबझूठे जेनिर्गुण यशगात। सूरदासजिहि सबजग डहँक्यो ते इनको डहकात १०१ जियसों सुरति करत रहिबी। घोषबसतकी पीरहमारी कछू न मन बहिबी। ऊधो एकबात हरिजूसों समयपाय कहिबी। परमजानु यदुनाथजातिकी गुणबिचारि सहिबी। एकबार दर्शन सुखदैके बिरह आधिदहिबी। सूरदास प्रभु पाणिगहन अरु बचनलाज गहिबी १०२ भौंराकाहेको भयोउदासी। बपुतेरो कारो बदन उपीरोतुकलि सो कइ ग्रासी। सबकलिका को रसलैकेपुनिबेऊ करी निरासी। सांचो सूरश्यामकोसेवक योग युगति सुउपासी॥ १०३॥ रागगौरी॥ ब्रजतेद्व ऋतु पैनगई। पावसअरुग्रीषम प्रचंडसखि हरिबिनु अधिक भई। ऊरध श्वास समीर नयनघन सबजल योग-जुरे। बरषि जोप्रकट किये दुख दादुरहुते जु दूरिदुरे। विषमवियोग दुसह दिनकरसम दिनउठिउदयकै। हरिबिधु बिमुख सतोकहि सूरज को ततनतापहरे १०४ नाहिं न ब्रज नन्दको कुमार। परमचतुर सुन्दर सुखदायक तनकोप्रिय प्रतिहार। रूपलकुट सखिलयेरहतहो अनुदिन नयनन द्वार। अब तिनबिनु उर भवनभयो है शिबरिपुको सञ्चार।

निशानिमेष कपाट लगेबिनुशशिमूसत तनसार। सूर प्राणलहि आश न छांड़त सुमिरि अवधि आधार १०५ ॥ रागसोरठ ॥ ऐसेजो हरिजू आवहिं। निरखि निरखि वा बदनमनोहर नयन बहुत सुखपावहिं। तैसिय श्यामघटातैसोइ हरितबन तैसियबिच बगपंक्तिदिखावहिं। तै सोइ मोर कोलाहल सुनिकै सखीहरषि हिंडोरना गावहिं। कबहुंक यहिमिस संग जुरवेलैं कबहुं निकुंज बुलावहिं। कबहुंक लैसँग सखा शैलचढ़ि मुरली मधुर बजावहिं। बिछुरत प्राण रहैंकैसे करि बहुत भांति समुझावहिं। जितहीचलत जानिसूरजप्रभु तितहितितहि उठि धावहिं १०६ ॥ रागधनाश्री ॥ नन्दनँदन सों इतनो कहियो। यद्यपि ब्रज अनाथकरि छांड़ेउ बारक हमपर चितधरि रहियो। तिगुणा तोरि कतव डारतहैं एकबासकी लज्जागहियो। गुण अवगुण सब मेटि हमारे हमदासिनकी इतनी सहियो। तुमबिनु प्राण अवहिं कां-ड़तिहैं अबये लोचनसपने लहियो। सूरदास पातीलिखि पठई अहो प्रीतितहँ औरं निबहियो १०७ ॥ रागसारंग ॥ राखोयहमत योग कपट पटो ऊधो पाइँपरों। कहँरसरीति कहां मनशोधनु सुनिसुनि लाजम-रों। चन्दनछांड़ि बिभूति बतावत यहदुख क्यों वभरों। सगुणहिलय रहेउ उरअंतर निर्गुण कहा करों। निशिदिन रसना जपत श्यामघन सौनिनक्यों बपरों। नासागहि तुमध्यान बतावत बेसरि कहांधरों। मुद्रान्यास अंगअँग भूषण पतिब्रतते न टरों। सूरदासप्रभु यह ब्रत मेरे हरिमिलि नहिं बिछुरों १०८ ॥ रागनट ॥ माईयह मधुबनकीरीति। नीरसजानि तजोंसखा भीतर नवलकुसुम करैप्रीति। जिनहिंसंगके से-वककै तब क्यों आवै परतीति। हमहिंछांड़ि निरमेकुबजाके आये न रिपुकोजीति। जनि पतियाउ मधुरसुनि बातन आयेकरन सभीति। सूरदास असमझ श्यामको ज्यों भुसपरकी भीति १०९ ॥ रागसारंग ॥ जानीआली ऊधोकीचतुराई। ब्रजमंडलकी दशादेखिकै कथा न वै बिसराई। परमप्रिया को देखन पठये काहगति योगबनाई। उनको आनभाव बिछुरन कहि वैबतियां हमलाई। कहा कह्योहरि कहा सुन्यो तुम कहलीला सुखगाई। यद्यपि बिबुध बड़े यदुकुल में नेकु न बढ़ी बड़ाई। गुणासय मित्र सदा श्री पति के मुक्तिपुरी अब गाई।

नहिं ऐसी ब्रजबन की लीला सूरश्याम लरिकाई ११० ॥ रागगौरी ॥ तुमहिं मधुप गोपाल दोहाई । कबहुंक श्याम करत ह्यां को मन कियोंनियर्टचित्त सुधिबिसराई । हमअहीर मतिहीनबापुरी हटकतहू हठि करहिंमिताई । उड़नागर मथुरा निरमोही अँगअँग भरेकपट चतुराई । सांची कहहु देहु श्रवणनसुख छांड़हु जिया कुटिल सुताई । सूरदास प्रभु बिरदलाजधरि मेटहुयहँकी नेकुहँसाई १११ कैसे ओवें ऊधोहरिपरदेश रहे । बरषि बरषिहरि गर्जतमेघा नदिका नारबहे । कहिपठयोमधुपुरी सखीमेरेहोतो चरणागहे । बासरगाये निहारत मारग चातक रैनिडहे । कासोंकहौं तपतमन निशिदिन कोयहपीरलहे । हमहूं किन लेजाय सूर प्रभु को ब्रज दुखहिसहे ११२ ॥ रागसोरठ ॥ उघरिआये कान्ह कपट को खानि । सबहुहरेउ बजाय बांसुरी अब छांडी पहिचानि । जिनपय पियत पूतनामारी दमकरी नहिंहानि । बलिकोंलिबांधि पतालपठायेनेकु न कीनीकानि । जैसेबधिक अधिक मृगबिंधवत रागरागिनी ठानि । अवधि आश परतीति ओट दै हनत विषमसरतानि । जैसेनटशर टरत न उरते तुमऊधो भ्रतिजानि । सूरदासप्रभु के जिय भावै आयहुमाये मानि ११३ कहियो मधुप जाय हरिसों मेरोमन अटकेउ नयननके लेखे । इहै दोष दैदै झगरतहै तब निरखतहै मुखन निमेखे । कैततही बताय बदति यों लगीपलक जड़ जाके पेखे । तेसब अब इनपै भरि छांड़त बिधि जो लिखे दर्शनसुख लेखे । यहिबिधिअनुदिन युक्ति यतनकरि गनतकईअंगुरी अवरेखे । सूरदास इन झगरन नहिंचित घटत बदन बिन देखे ११४ कहहु कहा हमते बिगरी । कौन अन्याय योगलिखि पठये हँसिसेवा कबहूं न करी । पाखँड प्रीति करी नँदनन्दन अवधि अधारहुसो सोटरी । मुद्रा जटाऊधोलै आये ब्रजबनितापहिरो बिगरी । जातिस्वभावमिटैनहिंसजनी अन्तनऊकोरीठकरी । सूरदासप्रभुबेगिमिलहुकिन नातकप्राण जात हमरी ११५ योग कौनसों हरिपाये । निजआज्ञा तपकियो बिधाता कमलस रामिनगाये । योगयुक्तिशंकरआराधी परमतत्व लखना ये । भुजभरि भीव कबहिं नँदनन्दन हिलिमिलि कण्ठुर गाये । बक दालभ्य महाऋषि कबहूं तसाक्षाया न कराये । बरषत दूखित जानि

मनमोहन कर्णगिरिधर करजाये। अतितप पुंज विप्रदुरवासा दुरवा
सशापितपाये। चक्रसुदर्शन तपतमहामुनि कौतुक अगलयसाये।
बहुतप कियो मार्कंडेमुनि आजा सिंधुभरमाये। चकतभयेगोपी अब
कहिकहिहरि वरुणालय सुकराये। भक्त विरह कातर करुणामय
वेद निरंतरगाये। कोहैयोग सुनत खांडवो सूर प्रकाश मनभाये ११६
हमरेकौन योगव्रतसाधै। मृगमदमद अनारी केथाको इतनो आराधै।
जाकोकहुं थाहनहिं पैयत अगमअपारअगाधै। गिरिधरलाल छबीले
को यह कहापढायो पाधै। सुनि मधुकर सखा सब रसचाखयो से
क्यों सुखपावत आधै। सूरदास ऐसोमणि तजिके घुंघचीगांठि को
बांधै ११७ हमअलि कैसेकै पतियाहिं जाको कौन ठौन मनलावो।
होंकरिरही कंठमें माला या विनापिरायेवावो। तुमहीं दाहत आहि
यहनिगु या काइासर हि त्यहिकाम। सूरदास मथुराहिं सिधो मोहन
रोमरोम सुख राज ११८॥ रागआसावरी॥ ज्ञानयज्ञके श्रोतावक्तापै बक्ता
हमजाने हो। अबला समर्थनहिं या मारग में कहतप्रीति के लागेहो।
बहुबल्ली कच्छप जै मधुकर नाहिंसुरपत पहिं बागेहो। पै निशिमकरन्द
गन्धलोभी ह्वै तनतकठिन तम प्रागेहो। तुमश्रोता शृंगश्रोता कहुंधों
कुर्कात हमहिं अयानेहो। तुम आये पदपल्लव तजिके सूना न जात
कतिबानेहो। वेबक्ता अरु तुम वक्ता हो गुरुशिष्य दोऊ समानेहो।
पढिआयेतुम संदेशोपाको कछु कुबजाके कानेहो। मकरन्दमाधुरीपरभृत
अतिभृत उड़ते प्रीतिकिनुहानेहो। ताते तुमफिरि जाहुमधुपुरी बाचक
ताहि बिगानेहो। अबहम तुमभईइतनेही अपथ पंथके दानेहो। पू-
रणाता सिधिमद हमनाली भये देशाकेराने हो। ऊधो बचन कछूनहिं
उपजत सुन्दरिके सुखकानेहो। सूरदास सांवलरंग माते बोसीतअति
अभिमानेहो ११९॥ रागसोरठ॥ अपनोस्वारथ पिलोचनमुग नाथोकलो
मधुदेश। हमको रच्यो पुरुषमुनि ऊधो अगिनमें कियोप्रवेश। बरषा
सुआति लिलेमोहनसों ओरलियो उपदेश। ताते कछु न बिचारेउ
हमहितसतिपठओसंदेश। दरशनदीजै नयनदौआयो प्रथमस्वच्छ नव-
वेश। सूरदासमनलोभ प्रयासको दुर्लभहमनेश १२० कहाभयोजु
आजु राजाभयो। अबतौ कछू औरको औरै बांध्योहै जू ह्वै भुजनयो।

अबलों तो छोटेछाँग घरघर भोजन माँगि लयो। सोई ब्रज अब क्यों बिसरायो जहँ चोरीते जन्म गयो। कालिह तो ग्वालिन के संग मथिकेपीवतहे जु दयो। अबहम औरअनन्दकीनोहै इनहुयोगलिखि पठयो। अबयह ज्ञान वेद परबाणी हमपर अरु अभिमानभयो। सूरदास चतुराई देखीकुब्जा चितहरयो १२१ कहुअलि काके मीत अहीर। काहेको भरि भरितुम डारति इन नयननतेनीर। आपुन पीय पिवावति ग्वालिनि इन गैयनकोक्षीर। सखासखा पलपल बिसरत नाहीं या यमुनाकोतीर। हृदये भीतर दवलागोहैदाहत सकलशरीर। अँगअँग के तवताछुनि सूरज संकर्षणकेबीर १२२ जोहि जोहि तजो ब्रजकीभीर। कहकहों अलिहरि लखी तुम सखासुन्दरधीर। मदननृप शशि नेस अबलनि दुर्गदूत समीर। विपिन सेना साजि नवदल बदत बन्दीकीर। फूलहीद्रुम मध्यमानों कवच कञ्चनचीर। ककुभ कुञ्जर बिटप मोर सुचारु चमरसदीर। चमूचञ्चल चलत नाहिंन थकितह्वै पुरतीर। ससरमानहुं कीट कीरट हथन अति तियधीर। यासज्ञातक ग्वाबिबाजक कहैंकासोंपीर। सूररसिक शिरोमणीबिन जरत यमुनानीर १२३ बिरही कहँलों आपु सँभारै। जबते गंग परी हरिपद ते तबते बहिबो नाहिं निवारै। नयननते बिछुरी सौंहैं रहैं शशि अजहूं तनगारैं। रामतेबिछुरी कमलकंठभये सिंधुभये जरिछारैं। बेणुते बिछुरी बीति अवधि भइ बदही कौन निवारै। सूरदास जाके अँगबिछुरैऊधो किहि बिधा परचारैं १२४॥ रागकेदारो ॥ उरमें माखनचोर गड़े। अब कैसे निकसतहैं ऊधो तिरछे ह्वै जु अड़े। यदपिअहीर यशोदानन्दन तदपि न जातछड़े। वहांकहत यदुबंश महाकुल हमहिं न लगतबड़े। कोबसुदेव देवकीहै को नाजानैंसो बूझै। सूरश्याम सुन्दर बिनदेखे और न कोऊसूझै १२५॥ रागनट॥ रे अलिकहा सिखावन आयो। येतो नयनरूपरस राचे कहेउ न करत परायो। योगयुगति हम कछू न जानहिं नाकछुब्रह्मज्ञानो। नवकिशोर मोहन मृदुमूरति तासों मन अरुझानो। भलीभई तुम आये ऊधो देखहु दुसह दुखारी। दाँव उपाय मिलाय सूरघन आरति हरहु हमारी १२६॥ रागआसावरी॥ हमतो मृतक जिवत शशिसाखी। तुम अलि रबिहित कमल बिशेषी

हरे बिमल मधुसाखी। मुरली मधुरश्याम मुख सुमिरत खोंचे अमृत दुबार। मधुहारी अक्रूरदई मख अबबिलग्राइ छार। मनको बिरह नयनकाहजानैं श्रुतिमतितुहिसुनावै। सूरभक्त अंग सीकुटिलता ताकू योग सुनागावै १२७ ॥ रागकेदारो ॥ यहै प्रकृति परिआई ऊधो मधु दिनकी यम मेरे। जो कोउ कोटिकरै कैसेहूं फिरत न लोचनफेरे। जादिनतेयशुमति गृहआये मोहन यादवराई। तादिनते वा दरश परशबिन और न कछू सुहाई। क्रीडत हँसत कृपाअवलोकत युगसमान पलजाते। प्रेमसबनि सबही अँग लहते लोचन पैन अघाते। जागत सोवत सपन निशादिन सुन्दर तन अतिभावै। सूरदास ता कमल नयनबिन बातनि कओंरहि आवै १२८ ॥ रागकल्याण ॥ उत्तर कहत न देत अलिनीचि। ओछसनेम सहतिक्यों बेली बड़ी कमलकर सींचि। मुरलीअधर सुधानिधि आनन दैपोखी दिन राति। अब ये काम वामबातनीके सुरति रीति किहिबाति। सम्मुख्यो श्यामकरो स्वारथकी रचिगुणा कपटो साज। सूरसक राखतहै नाता जगत कहत ब्रजराज १२९ ॥ रागकान्हरो ॥ तुमते अलि नहदेखासुनोको। जहांबसत गोपालहमारो तहांजायदुखहीको। सुन्दर बदन कमल मुरलीध्वनि कलसुख शब्द सुनायो। तबतेचलयो मधुपमन तहँई बहुरि नहीं घरआयो। जैसेदेह श्वासबिन तैसे मनबिन लागत फीको। केहिकेहि यतन प्राण राखै हम सूर सजीवन जीको १३०॥ रागनट ॥ हेगोपाल गोकुलकेबासी। ऐसीबातैं सुनिसुनि ऊधो लोगकरतहैंहांसी। मथिमथिसिंधु सुधा सुरपाये सिंधुभयेबियआसी। इमिहति कंसराज दै औरनि आपुचाहिकैदासी। बिसरेउ सूरबिरह दुखअपनो सुनतचालि औरासी। ज्यों न बिहंगम गुन बिलोको प्रकट न पकरतफांसी १३१ ॥ रागबिलावल ॥ ज्ञानबिना कतहूं कछुनाहिं। निर्गुणतजि सगुणहिं क्यों ध्यावतिऊधो कहौ किहिपाहिं। तत्वभुजेतैं निकट न छूटे ज्यों तनकेसँग छाहिं। झूंठेबचन कहत काहे को सुनै हृदय दबदाहिं। तन धन नयनमोहनी युवती औरन नाहिं लखाहिं। सूरदास अलपेकरलागे छांकीकहौकेहिमाहिं १३२ ॥ रागधनाश्री ॥ हमारे बोलबचन परतीति। येऊधो हम जानत नाहिंन तुम्हरे गांव किरीति। सुन्दरश्याम गये मधुबन को कह्योकंस रिपुजीति। उनकी

बातन कौन पतीजै भुसऊपर की भीति। आवन अवधिसदाये बदि हु-
लसों बायेदिन बहुतककी बीति। सूरदासप्रभु मिलहु कृपाकरि सुमिरि पु-
रातनप्रीति १३३। रागसारंग॥ बदलेको बदलौ लैजाहु। उनकी एक
कुमारी ह्वै तुम सबैजनैया आहु। तुमतो हमैं ज्ञानकी भोरी छोड़ैसारो
खाउ। हमरीबेर सुकुरहु भागत हिये चौगुनोचाउ। अबतुम सबी
लिखित ह्वै जैयो सेहु उनकोदाहु। सूरदासव्रजयोहार भयोते हमतुम दोऊ
आहु १३४॥ रागजैतश्री॥ हरिकरि देखो तेरोज्ञान। सुफलककसुत सबंह
सँग लै गयो तू लैन आयो प्रान। कृपाकतअपलोक लावत कहतयह
संदेश। डरपिकातर होहुजानिन कहतवे नवलेश। योगमतिअतिविशद
कीरति होहिं बांछित काम। सदातनमय तामईरहोवेपुरुष तुमभाम।
हम चरण कंज सुवासलैलै जीवत ऐसीरीति। कहतत्तिनसों प्रेम छूंटहु
ना चहहु यहिप्रीति। अजहुँ नहिं कहिकहि सिरानों या कथाकोछोउ।
सूरधोखोतनकको मनदेखिलीनोंसोउ १३५॥ रागसारंग॥ तूजो कहतहरि
हृदयरहतहैं। कैसे होय प्रतीतिमधुपश्रुनि दुखइतने जु सहतहैं। बासर
रैनि कठिन बिरहागिनि अंतरप्राण दहतहैं। अजरि प्रजरि तनतिक-
सिषमगरु नयननिनीर बहतहैं। कठिन अवज्ञा होतदेहदुख मरयादान
गहतहैं। कहौन क्यों मनमाने सूरज इनबातन जुकहतहैं १३६ जा-
निकै बावरीजनिहोहु। तत्त्वमिले ऐसीह्वै हो ज्यों पारस परसेलोहु।
मेरो कहेउसत्यकरि मानहु भेंटसबनि को दोहु। तबलगिसब पाती की
चौपरि जबलगि असारमोहु। रेरे मधुप बातयहऐसी क्योंकहिआवत
तोहु। सूरबस्तुहिंछांड़ि अभागी हमहिं बतावत खोहु १३७ ऐसी
कहूंकहो जिनिऊधो। कमलनयनकी कानिकरत नतुदेतो उत्तरसूधो।
बातनही उड़िजायऔर ज्यों त्यों हमनाहिंनकाची। मन क्रम बचन
प्रतिज्ञअंतगत कान्हकुलँग रँगराचो। पालागों खोईतुम कीजो मिटै
हृदयको सूल। मुरलीधर को आनि दिखावहु पहिरेपीतदुकूल।
इनहीं बातनभयेश्यामतन मिलवतहो गढ़िछोलि। सूरबचन सुनि र-
हेउ ठग्योसो बहुरि न आयोबोलि १३८ आलि सुनजाहु फिरि बहि
देश। चोर करिकरिहो भगाई सीख सिखवनलेश। भाललोचनचन्द
चमकत कठिन कंठहिशेष। नादमुद्रा त्रिशूलिभारी करो रावल भेष।

बहांजाय सँदेशकहियो जटाधरो सबशीश। कौनकारण नाथछांडी सूररहे ऋँदेश १३९॥ रागदेवगन्धार ॥ ज्योपै रहैं प्रीतिकी बात। तो ऊधो तुम निकटरहतक्यों निरखि साँवरोगात। बचन कहत भरिलेत नयन जल सुरतिकरत अकुलात। जो घटघटहरि रहतनिरन्तर कतहिमधुपुरी जात। सगुणप्रीति ऐसीप्रति पालत दुखितहोत अतिगात। तुमनिर्गुण सों प्रोसिकरत क्यों सूरसमुझिपछितात १४०॥ रागटोड़ी ॥ सुखदेखेकी कौनमिताई। जैसेकृपणहिं दीनमाँगनाखालचलीने करतबड़ाई। प्रीतम सों जो सदाएकरस निशिबासर बढ़ेप्रेमसवाई। चितमहँ और कपट अन्तरगति ज्यों फलखीर नीरचिकनाई। तब वहकरी नंदनन्दन अलिबनबाली रसरास खिलाई। अब यह कितिक दूरि मधुपुरि ज्यों उड़िके भ्रमर बेलि बिसराई। सुनिसंदेश सूरपाती लिखिकैहि ओस कन प्यास बुझाई। सूरजदास उदास भईअब पाखँड प्रीतिउघरिनिज आई १४१॥ रागकेदारो ॥ जबलों ज्ञानहृदय नहिंआवै। तबलगि कोटि यतनकरै कोऊबिनु बैराग न पावै। बिनाविचार सबैसपनो सों मैं देख्यो सबजोय। नानादारु मध्यज्यों पावक प्रकटमथेतेहोय। तुमहीं कहत सकल घटव्यापक अरु सबहिनकेनीरे। नखशिखलों तनुजरत है निशिदिन निकसिकरत किनिसीरे। सांचेबोल सबै बोलतहो मुखमें मेले तुलसी। सूर सु औषधि हमहिं बतावत ज्यों कफज्वरपर गुरसी १४२बालेंहमहूं तो कहिजानत। जोपैनेह नहिंहुतो पुरातन तो नातो कतमानत। मघवा तृषितपानि पल्लवशिर गिरिधारी यशुगायो। दावानल अरिष्टजीतेब्रज तृणावर्त गहिलायो। येगुण सबसुन्दर मुरली धुनि ध्यानहियेते खुलहिंन। सूरमधुपको जायमधुपुरी सुनहिंकुँवर सब दुलहिन १४३ काजकह कीनो मथुराजाय। सखातिहारे शत्रु हने ते यहब्रज प्रकटेआय। शशिसम कंसकंस आयुबले उड़गनअसुर समान। निशाअघासुर उदरजानि जियडर न रहतपल प्रान। तबदावानल पानकियो अबउन सँगमिलि बलकीनें। परिमल पवनकपूर सकहो इतपतिकरतनतीनें। अब ब्रजबास हासकरि मानत डरकुब्जा जिनिरूठे। चलत बचन रिपुमारि आइहैं सूरकहो दोउझूठे १४४॥ रागसारंग ॥ कहेउ तिहारो लागतकाहे। कोटिक यतनकरहु जो ऊधो

नाहिन बनत निबाहे। काहेको अपनेजिय भूलन करकरि मनकीला हे। यहभ्रमतो अबहीं भाजैगो ज्यों पयार के गाहे। काशीके लोग-निलें सिखवहु जो समुभत यामाहे। सूरदासप्रभु गोकुलभीतरजोजततहँ सुखचाहे १४५॥ रागललित ॥ शोचतिराधा लिखतिनखनि महिवचन कहत कंठजलतास। क्षितिपर कमल कमलपर कदलीकदली पङ्कज कियो प्रकास। तापर अलिसारँग सारँगपतिसारँगरिपुकियो लेकुल बास। तहँअरिपंथ पिता युगऊदित बारिज बिंदरंग भवआभास। सारँगमुखते परत अम्ब ढरि मनोंशिवपूजित तपतिबिनास। सूरदास प्रभुबिनु हरिहर रिपुदाहत अंगदिखावतत्रास१४६॥ रागधनाश्री ॥ भयो अलिनेह निरंतर भारो। छांड्यो भोगयोग व्रजभीतर श्याम मिलन ब्रतधारी। नयनकमल पुतरीहि पारथी बीरसजल शिरनाये। परी-बिरह परनाम अवनिको उठिजुगई हरिआये। सुनेसखा तैसेईलागत सबगुण भेषबनाये। जितीसुनति मधुबनकी बातेंसहीसूरतुगाये१४७॥ रागमारू ॥ हमतो सबहिनसें हितछांड्यो। कतगत कथा सुनहु अलि तेरो योगप्रेम बिनुखांड्यो। काजर परसि जरति पावक सम बुझति चले जलधार। निशितम तकेपलकनहिं लागतगनत बच्योनहितार। कोकिलकुंज कुंजमधुकर धुनि घनबोलत डरडारे। सूरहितू बहुयतन कियेहूं आपहोत कहुंकारे१४८॥ रागकेदारो ॥ सुनतिअलितेरे मुखबातें। कमल नयन की कपट कहानी ह्वै आयो तन तातें। कत व्रजराज काज गोकुल के सबैकियो गहिनातें। अबनहिं निमिष वियोग स-हतज्यों करत कामशिर हातें। मधुबन जाय कान्ह कुब्जा सँगमति भूलीसुधि सातें। तिहिंगज यूथ निमिष नहिं बिछुरत सूर काम मद मातें १४९॥ रागसारंग ॥ बोल इक इनहूं को सुनिलीजै। कैसी उठनि उधों ऊधोतैसो उत्तरकीजै। यामें कछू अनुचितै नाहीं अपनो मतौन दीजै। सुनरी सखी भाजिये किहिडर चलोजाय मुख छीजै। द्वै कर जोरिभई सब ठाढ़ी सोइ कहो जिहिजीजै। सूरदास सोईमतिदै जिहि बदन सुधारस पीजै १५०॥ रागसोरठ ॥ जुहे मिष्टफल सो काहि कैसे आवै। जैसेमूक मिठाईको सुखअन्तर अन्तरभावै। परमस्वादु सबहीते न्यारो अमित तोष उपजावै। मन बाणी गुण कर्म्म अगोचर सोइ

जाने जोपावै। बिनारूप गुण नामयुक्ति बिन निरालम्बकन ध्यावै। भजै न अंत तहींते सूरज सगुणलीन मनगावै १५१ ॥ रागकेदारो ॥ जोपै अलि मथुरा लैजाहु। आरतिहरहु श्रवण लोचनकी मेटहुउरकोदाहु। बुधिबलबचन जहाजबाहुगहि बिरहसिंधु अवगाहु। पारलगावहु मधुपुरकेतट चन्दतज्यो जनुराहु। देखे आयरूप कुब्जाकोसहि न सकत यहदाहु। जीवन जन्म सुफलकरि लेखहि सूर जन्म उत्साहु १५२॥ रागसारंग॥ जादिनते गोपालचले। तादिनते ऊधो यात्रजके सबस्वभाव बदले। घटेअहार बिहार हरषहित सुखशोभा गुणगान। ओज तेज सबरहित सकलविधि आरति असम समान। बाढीनिशा बलय आभूषण उरकंचुकी उसास। नयननिजल अंजनअंचल प्रति अवाअवधिकीआस। अवइहिदशा प्रकट यातनकी कहियोजाय सुनाय। सूरदास प्रभुसोंसो कहियो बेगिमिलहिं अवआय १५३ ॥ रागआसावरी ॥ सबदिन एकसे नहिंहोते। तबअलि शशि सीरोअबतातो भयोबिरहजरि सोते। करियटमास रास निशिअंतर एकोनिमिष न जान्यो। अब औरैगति भई कान्हबिनु पलबीतत युगमान्यो। किहिमतयोग युक्ति शाखा श्रुति तेकलिकहे घनेरे। अबनहिं और छहाइ सूरगुण सुमिरि श्यामसँगकेरे १५४ ॥ रागधनाश्री ॥ काम गँवारिसों परेउ। रूपहीन कुलहीन कूबरी तासोंमन जु हरेउ। उनकोसदा स्वभाव सलिलको खोरिनिखाड भरेउ। सकुच्योनहीं जानि ऊधो तन उमगनि मन पसरेउ। फेरिफिरत असुरदासीके जनुजड़मार धरेउ। सूरदास गोपाल रसिकमिलिअकरम करम करेउ १५५ ॥

यहां ते कुब्जा को संदेशो गोपिन सों उद्धव कहतेहैं ॥

रागसोरठ ॥ मोपरकाहेकोभ्रुकति ब्रजनारी। काहूकेभागसों साझो नाहिंन हरिकी कृपानियारी। फलनि मांझजैसे करुइतुंबरी रहति जो घूरेडारी। हाथपरी जब गुणी जननके बाजत रागदुलारी। यह सँदेश कुब्जा कहिपठयो अरुकीनीमनुहारी। तनटेढ़ी सब कोऊ जानत परसे भइ अधिकारी। हौंतौदासी कंसरायकी देखहु हृदय बिचारी। सूरश्याम करुणाकरस्वामी अपनेहाथ सँवारी १५६ ॥

उद्धवप्रति गोपियों के ॥

रागसारंग ॥ कहाभयो मथुराहिगये । अब अलिहरिकैसे सुखपावत तनहै भाँतिभये । इहां अटकमन प्रेमपुरातन नूतन नेहनये । उहांवरत नृपवेष दिनहिंदिन यहँकर मुरलिलये । कहाहठकेकर परेउ अक्रूरके बहु टग टारठये । अबक्यों कान्हरहतबिन गोकुल लोगनके सिखये । राजा राजकरो अपनेगृह माथेछत्रदये । चिरजीवहु यहांसूर कन्हैया योजत मुखचितये १५७ गगनसघन नगरनिभयोहन्द । प्रसरीभूमंडल केतकि युत मारुतमत मकरन्द । परपथ अपथभयोसुनि सजनीगयो बासुखित खेत । कोउनजाइ कान्हपद देसबो दोउ तजि निबह अनेत । बिपति बिचारिजानि यदुनंदन दीनोंदरश उदार । सूरदासभेंटे उनभेंटो बिरह बिकल भ्रमभार १५८ यहसंदेश कहेजोऊधो कहौकौनपैपाये । करि-यततहें अनुमानएकमन यहिमिससहो यहँआये । हरिजू प्रथमनन्द यशु-मतिगृह नाना लाड़ लड़ाये । उर उत्संग कन्हैया लैलै माखन खान सिखाये । सुबलसुदामाकेसँग सबब्रजबीथिनि बीथिनिधाये । कछुयक ज्ञानभये खेलनतब गोतरा देनपठाये । बेणुमधुर धुनिबोलत थेइ थेइ संगन नाचनचाये । जलथल नितनूतन लीलाके केतेउयुग बिरमाये । यहिबिधि बिबिध कुतूहल क्षण क्षण करत आपने भाये । कब चले मधुबनकबमारो रिपु बचन अचम्भ जनाये । पाछेरहे सुनतमोहनप्रिय उर्क्षकि उरस्थललाये । सूरदासप्रभु बूझतबतियां सखियन स्वप्नबताये १५९ माधो आवनहारभये । अंचल उड़त अधिकमन आनँद फरकत नयनखये । भईप्रतीति आपने जियते सबन शृंगारठये । मानहुं नवब-संतके आगम प्रकटतपातनये । शोचिबिचारि जीयअंतरमति चितवत निकटभये । सूरश्याम अंतरते निकसिके सब सुख हँसि पुजये १६० फिरिफिरिकहा सिखावतबात । प्रातकालउठि देखतिऊधो घरघर माखनखात । जिनकीबात कहततुम हमसोंसोहै हमतेदूरि । यहांनि-कट यशुदाकेनन्दन प्राणनहींकी मूरि । बालक संग लियेदधि चोरत खात खवावत डोलत । सूरशीश नीचो कत नावत अबक्यों नाहिंन बोलत १६२ जोकरिकृपा पाउँधरेब्रजमेंतोकछु तुमहिं दिखावै । मोत घरे जो बैठिरहैक्षण मुरलीमन्द सुनावै । अबहिंसिधारे बन गोचारन

हमबैठीं यशगावैं। निशिआगम श्रीदामाकेसँग नाचत ब्रह्म बतावैं। कोजाने संकोच छिपाते तुमडर निशिपै न आवैं। तब दुख द्वन्द बढ़ै अति दारुण सखियनि प्राणछिड़ावैं। नाकरिये नँदलाल यहांपै जो कोउ कोटिसिखावैं। सूरदास यहसुनि ऊधोमन क्योंहुन मथुराधावैं १६२॥ रागनट॥ बातन क्यों ब्रजनाथ मिलनको बिसरतहै अलिनेह। बंशनिनाद स्वादरस लम्पट मानत नहिं श्रुति येह। को मातुल बध कौन मधुपुरीको पति परजन गेह। को ऊधोको योगनिरूपन नव किशोर बिनुखेह। कोटियतन युगवो बनबेली बनसींचे बनमेह। होरा हीरचीर सोंवामिलि नीरबिना सबदेह। कुम्भज कुंभसमान ज्ञानपथ बिनगुण पानपवेह। सूरश्याम रससहज माधुरी रसिकनिको अवलेह १६३॥ रागधनाश्री॥ हमतो भजिहैं नँदकिशोरना। योगठलटि लेजाव ऊधोजहँ बसे चितके चोरना। योगहि योग मिलाइये हम या योग अयोग। ऊधोतिनलै दीजिये अलिजहँहै नित्यसँयोग। पुरण पूरण कहतहो उहापूरण यहांकौन। ऊधोकहा तुमदेतहो अलिदशखऊपर लौन। मिलनभांति बहुबिधिहै यामिलबेको हेत। सूरदासप्रभु अवधि बदीहै मिलिहैं जहँ कुरुखेत १६४॥

उद्धवप्रति यशोदाजूके वचन॥

रागसारंग॥ ऊधो ऐसो हमहिं न जानो। सुतके हेतु मरमनहिं पायो प्रकटे शारँगपानी। निशिबासर छतियां लैलाऊं बालकलीलागाऊं। ऐसेभाग बहुरि फिरिह्वैहैं मोहन गोदखिलाऊं। जाकारणमुनि ध्यान धरें शिवअङ्ग बिभूति लगावैं। सोबालक लीला धरि गोकुल ऊखल साथबँधावैं। बिदरत नहीं बज्रकी छतियां हरिबियोग क्यों सहिये। सूरदास ब्रजनन्दनँदन बिनु कहो कौन बिधि रहिये १६५॥

उद्धवोक्तिप्रभुप्रति॥

रागसारंग॥ जबह्वैयहह्वैतेगयो। तबब्रजराजसहितसबगोपिनआगेह्वैज लयो। उतरेजाय नन्दबाबाके सबहिनसोधुलहेउ। साँचिकहो मेरी सोंऊधोमैयाकहाकहेउ। बारम्बारकुशलतापूंछी लैलैतुम्हरोनाम। मन बकबकीरिया चातकलौं कृष्णाकृष्णबलराम। सुंदर परमबिचित्र सुशो- भित यहमुरली देघाली। लइउठाय शिरनाय सूरप्रभु प्रीतिआनि उर

साखी १६६ ॥ रागसोरठ ॥ माधो मैं योगको बोझबहेउ। श्यामामुखविधु बचनसुधारस सुनिहुनि कछु न कहेउ। सकल शृंगार साररस सर्वसु ब्रज नवनीति लहेउ। छूंछेभाँड ब्रह्मांडलोक हित पीवन दयो महेउ। नवनव भावतुरङ्ग महोदधि ब्रजघरघर उमहेउ। हमजो कहेउ ज्ञानको मारग पाइनि जातढहेउ। मोहिँ अचरजजु ये पैलागत तुमकैसे ज्ञात सहेउ। सूरश्याम सुनिसखा सयानो लेभुजबीच गहेउ १६७ माधोजूमैं उतअति सचुपायो। अपनो जानि सँदेश व्याजकरि ब्रजजन मिलन पठायो। क्षमाकरो तोकरों बीनती जोउत देखिहोंआयो। श्रीमुखज्ञान पन्थजे उचरेउ तापैं कछु न सुहायो। सकल निगम सिद्धांत जन्मश्रम श्यामा सहज सुनायो। नहिंश्रुति शेष महेश प्रजापति जेरस गोपिन गायो। कटुककथा लागी मोहिँमेरी उहिरस सिन्धुउम्हायो। उततुम देखे और भाँति मैं सकललयाहि बुझायो। तुम्हरीअकथकथा तुमजानो हमजननाहिँ बसायो। सूरदास सुन्दरपद निरखत नयननीर बहायो १६८॥ रागकेदारो कहत न बनैव्रजकी रीति। कहासम शठको पठायो देखि उनकी प्रीति। युवतिवल्लभ कहावतहो करत सकल अनीति। मोहिँतो इहकठिन लागत औरकों परतीति। सुनहुतो कान आपनों लोक लोकनिकीति। सूरप्रभु अपनी सचाई रही निगमनजीति१६९ जोतुम करुणाके आलै। तौकत होत कठोर कठिन मनमाहिँ बहुत दुखशालै। बहोंबिरदकी लाजदीनप्रति करिसदृष्टि ब्रजदेखो। मोसों बात कहौकिन सन्मुख कहा अवनिकोलेखो। निगम कहत बशहोत भक्तके सोई उनहूं कीनी। सूरजश्वास छाँडि हाहान्रज जल अँखियां भरिलीनी १७० मैंजान्योंहो उहिँको भयो। परेउजु उनके प्रेमकोस मय तुमप्रभु बिसरिगयो। तुमसों शपथ करिगयो साथव बेगि कहेउ हो आवन। देखतही वैसोई ह्वै गयोलग्यो उन्हें मिलिगावन। समुझि श्याम षटमास व्यतीते कहाहुतो कहआयो। सूरअनकही दैगोपिन सों अवतामँदि उढिधायो १७१ सुनिलीनो उनहींको कहेउ। अपनी चाल जानि मनहीमन शुतो अगराय रहेउ। वेहीकाज हों कतहि पठायो शठबावरो अयानें। तुमहुं बहुत बूझोबातनको वहां जाउतों जानों। अबलनसों कहिपारत नाहिंन बाततोरि करिकानि। अत

बोले पूरो दै लीन्हीं बहुत दिननको जानि। आज्ञाभंग होयक्यों मो पै गयो तुम्हारे ढोले। सूरपद्यावनहूकीबूझी रहेउ युक्तिसोंलीले १७२ मैं हरि उहां काउदै हारो। आज्ञाभंगहोय क्यों मापै बचन तुम्हारे पारो। हारिमानि उठिचल्योदीन ह्वै जानि अपनपो केदु। समुझिलेहु तुमइतनेहीमें कहकरै सिगाकोबेदु। उत्तरको उत्तरनहिं आवत तबै उन्हें मिलिजात। तुम्हरी किती बात ब्रह्माको अर्द्ध बचन भैमात। अपनीचाल जानि मनहींमन चल्योबकीठी तोरि। सूरसकहू अङ्ग न काची मैंदेखी टकटोरि १७३ सबब्रज घरघर एकैरीति। ज्यों कुरु क्षेत्र गड़ेउ धनबाढ़े त्योंप्रभु तुमतनप्रीति। वेसब परमविचित्र सयानी अरु सबहीजग कीति। मेरे बचनसुनत ठाईंसब ज्योंबालुकी भीति। एकैगहन गहीइनदृढ़कै मेटिवेदकीरीति। गोपभेषभजि सूरसांवरेरहीं बिश्वबरजीति १७४ सुनहुश्याम सुजान त्रिया गजगामिनिकीपीर। बिरहसर गम्भीर ग्राहक कामग्रसी अधीर। शोकपंकमगी सुसुन्दरि मोचिनयननि नीर। करति समदिनरैनिबिरहबल बिकलभईशरीर। चक्रलेकर बेगिघातहु कृपाकरि बलबीर। कोटिदुःख समूहबंधनि काढ़िआनहुतीर। कहाजानि छुडायलीन्हीं द्विरद दीनदयाल। सूर प्रभु न बिसारियेजू राधिकासीबाल १७५ सुनहुश्याम जे सब ब्रज ब- निता बिरह तुम्हारे भईबावरी। नाहिं न नाय औरकहि आवै छांडे चेटक कथारावरी। कबहुं कहतिहरि माखनखावैं कौनबसेहो यही गाँवरी। कबहुं कहत धरिबांधा ऊखल घरघरते लैचलींदामरी। कबहुं कहति ब्रजनाथ साथते चन्दभयो यहिठांवरी। सूरदासप्रभुतु- म्हरे दरशबिन भइबे सूरति सुभगसांवरी १७६ सुनियेब्रजकीबात गु- साईं। रथकी ध्वजा पीतपट भूषण देखतही उठिधाईं। जेबातें तुम कहीयोगकी ते मैं सबै सुनाईं। नयनमूंदि गुणाकर्म तुम्हारे प्रेममगन ह्वै गाईं। बारबार संदेश यशोदा कहतद्वारलगिआईं। हुतीकछूहमहीं सों नाता निपटकहा बिसराईं। सूरदासप्रभु बनबिनोदकरि जेतुमगाय चराईं। तिनगायनको ग्वालन घेरतमानहुआहि पराईं १७७ कान्ह तुम्हारी बिकल बिरहिनी बिलपति बिरह बिगोये। अतिआरतिन सम्हारत तनमन इकटककै मगजोये। काजरमिलि लोचन जल बर्षत

दुखद सुखद छबि रोये। राहु केतु शशि मिलि मिटि मधुकर अंक छुडावत धोये। अबलाकहा योगमतजाने मनमथ व्यथाबिलोये। सूर श्यामको नीर चुवतहै नीलसुबसन निचोये १७८ ब्रजजन दुखित तन अतिक्षीश। रटत इकटक जगतचातक श्यामतन घननील। घोस कारति सकल मिलिकरि कथित सुधा बलबीर। रैनि उडपति निरखि तलफति मीनज्यों जलतीर। कहन जो तुमकहो मोसों पचिरहेउ उपदेश। चिकन पटजल बूंद ज्यों हरि बचन उर न प्रवेश। बरु मुकुट मुरलीअधर पटपीत उर बनमाल। रहीबहछबि अंग अँग ज्यों लता लपटि तमाल। करहु कृपा अनाथ बन्धव कहो ऊधो जाय। सूरप्रभु अबकी दरशदै मरतलेहु जिवाय १७९ हरिजू सुनहुबचन सुजान। ऊधोकहत संदेश ब्रजको सखासंत निदान। बिरह व्याकुल क्षीणतन गतहीनलोचनकान। मैंसकलब्रज दीनदेख्यों ज्योंबिना तन प्रान। तुमबिना शोभानहीं ज्यों दिवस बिनहैंभान। आसश्वास उसासघटमें अवधिआशामान। जगतजीवन जगतपालक जगन्नाथ कृपाल। करहुयत्नकछु सूरकेप्रभुज्योंजियहिं ब्रजबाल १८०॥ रागमाडू॥ माधव बिलपति प्रियपति क्षण घोयअति दुखारो। सुन्दरि सुकुमारिअंग अनंग आधि टारो। बिरह व्यालगरलग्रसित सुधा सींचितारो। ज्ञानगुरुत्व मथुराधरो उत कछु न बिचारो। राजकाज तजिकै सजि सुबेष सिधारो। बातन बिरमाय यहै नेहको तुम्हारो। शीतज्ञान नलिनी मृदुबेलि सतिप्रजारो। निगमचारि राशिगमन तरुण त्रियातारो। चन्द्रबदनि राहुग्रहो सकलआविमारो। हमसेनाथ वे केतेउ आउपै तुमबिना न उजियारो। मंत्रीअरु मित्रमोसों जगत यशभारो। सोइमोहिं सिखवाय शोग वृद्ध बय बिगारो। अक्रूरके संगचलत बचन कहेउ सम्हारो। सुनतक्यों न चलतप्रभु नयन कहा निहारो। जानिइत अभलोकके हित कहो निगमचारो। ऊधोप्रति कछु न कहत श्यामसुन्दर प्यारो। मीडत करकमल हाहा रावाते होनन्यारो। हृदय रसभरा चलत लोचन जल धारो। ऐसोकठिन देखिसखा आयो क्योंअवारो। सूरदास प्रभुत्यहिक्षण मिल्योजाय सँवारो १८१ धर्म अभिमान बहेउ जन्मनते न लहेउ भजन प्रकार। कौनकाज यदुकुलमें

बड़ाई कीनोभूकोभार। केलिकथाकल कोकिल बधनी अनन्नित नभसिखचारातहँकीनो प्रतिबोध चातुरी देखिविचित्र विहार। स्याम पधारि हरि बचन वेदको कहेउ योग अधिकार। तेहि कुक्कुर्म मर्मत्र भेदत सुमिरिरूप सुकुमार। पुनि ऐसीभाँति करौ प्रति नीतन विरचौ नाथ उदार। फेरैंनिगम दावनल सूरज अन्तहि आगम अपार १८२॥ रागसारंग॥कोऊसुनत न बात हमारी। कहँमत योगयुगति शाखा श्रुति प्रकटप्रेम ब्रजनारी। कोऊ कहति गये गोचारन कोऊ धेनु दुहिदेत। कोऊ कहति इन्द्रवरषातकि गोबर्द्धनकरलेत। कोऊकहतिनागकालो सुनि गये यमुनके तीर। कोऊकहति अघासुरमारत लयेसंग बलबीर। कोऊ कहति ग्वालसँग खेलत बनमें जाय लुकाने। सूरसुमिरि गुण नाथ तिहारे कोऊ कहेउ न माने१८३॥ रागगौरी॥ दिनदश घोष चलहु गोपाल। गाइनिको अवसेर मिटावहु भेंटहुभुजभरिग्वाल। नाचतनहीं मोर वा दिनते बोलत बरषे काल। मृगदूबरे दरश तुम्हरे बिनु सुनत न बेणु रसाल। वृन्दावन भावतो तुम्हारो देखहु श्याम तमाल। सूर-श्याम मैया यशुमति के फिरि आवहुनँदलाल १८४॥ रागसारंग॥ अब गति पंगु भयो मनमेरो। आयोवहां निगुरण कहिबेको भयो सगुण को चेरो। अति अज्ञान कहत कहि आयो दूत भयो वहिकेरो। निज जन जानि यतनते तिनसों कीन्हें नेहघनेरो। मैं कछु कहे ज्ञानगाथा ते नेक न परसति नेरो। सूर मधुप उठि चल्यो मधुपुरी बोरी योग को बेरो१८५॥ रागमारू॥ मैंसमुझाय बहुत अपनोसो। तदपि उनपर रीति न उपजी लग्यो सबनि सपनोसो। कही तुम्हारी सबै सुनाईप्रेम सहितवे कोपी। सुफलकसुत कोकहेउ मानिहैं अरतिकरतिसबगोपी। जानिबूझि करिहें कत पठयो शठबावरो अयानो। तुमहूंबहुत बोझ बातनिको वहांजाउतो जानो। इतनो सुनत कमलदललोचन गहिकर सों करलीनो। प्रीति सहित मुसकाय सूरप्रभु तरकजानि हँसिदीनो १८६ बिनती एकसुनहु श्रीश्याम। चलन न देतिचल्यो नहिंभावत चलतकह्यो आवन यहयाम। तुम सर्वज्ञ सबहिंके व्यापक जीवन पद जनके विश्राम। संततरहतढीठ्योदै कहियत हो सेवक सुखधाम। वह रसरीतिप्रीति गोपिन कीलये रहति लीला गुणनाम। सूरदास प्रभु

सब सुखदाता तेऊतो नियरे नंदग्राम १८७ ॥ रागसोरठ ॥ तुम्हारी भा-
वती कहेउ । वह कहियो नँदनन्दन आगे अति दुखदुसह सहेउ । लोल
उसासश्रोाच्न निशिदिनके नेकन रूपरहेउ । बिरालितके मन्दन छबिऐसे
जनुशशि राहुगहेउ । माखन काढ़िकूबरी लीन्हो ब्रजमें रहेउ महेउ ।
सूरश्याम रतिजनम प्रेमपै बहुरौ जम्योकहेउ१८८ ॥ रागसारंग ॥ब्रजमें
सम्भ्रम मोहिं भयो । तुम्हरो ज्ञान सँदेशो प्रभु जू सबैजु भूलिगयो ।
तुमहीं सों बालक किशोर बपु मैं घरघर प्रतिदेख्यो । मुरलीधरघन
श्याममनोहर अद्भुतनटवर पेख्यो । कौतुक रूपग्वाल वृन्दन में गाय
चरावन जात । सांझ प्रभातहि गोदोहन मिसचोरी माखनखात । नँद
नन्दन जुबाललीला करिगोपिनचित्तचुरावत । इननयननि ते ब्रह्मति-
हारो देख्योहू नहिंभावत । करिकरुणा उनदरशन दीनो मैं परिचयोग
बहेउ । सगमानहुं षटमास सूरप्रभु देखतभूलिरहेउ १८९ ब्रजमें एक
अचम्भो देख्यो । मोरमुकुट पीताम्बर धारे तुम गाइन सँग पेख्यो ।
गोपबाल सँग धावत तुम्हरे तुम घरघर प्रतिजात । दूध दहेउरूमहेउलै
ढारत चोरीमाखन खात । गोपीसबमिलि पकड़तितुमको तुमछुड़ाय
करि भागत । सूरश्याम नितप्रति यहलीला देखि देखि मन लागत
१९० ॥ रागरामकलो ॥ यहकछु नाहिंन नेहनयो । मधुप माधव सोजु यह
ब्रज बिधिते पहिले भयो । बीजमन माली मदनमनु आलबाल बयो ।
प्रेमपै सींचो पहिलही रूपरति बल दयो । इते श्रम तन श्यामसुन्दर
बिरवाबिमल बढ़ेउ । निरखत श्यामसुन्दर मन मोहन बिन आनन्द
उरतेकढ़ेउ । कवल तजितन रचतनाहीं आकको आमोद । सूरजीवन
बचन परसत बिन गोपाल बिनोद १९१ ॥ रागबिहाग ॥ निठुर माईया
मधुबन के लोग । जेगपठइदे श्यामको अब सब ब्रजबिरह बियोग ।
हम जानत तुम ऐसीकरोगे प्रीति करि किधोंयोग । सूरदास प्रभुतु-
म्हरे मिलन को कबमिलि यहसंयोग १९२ ॥ रागपरज ॥ पियरीश्याम
बियोगी मधुकररे । श्यामसुंदर मधुबनको सिधारे अंत बटाऊ लोग
मधुकररे । एकदिन हरिहम मिलिक्रीड़ाकरते अब लिखिपठयेयोग ।
बिछुरन भये मिलन कब ह्वै है कितहम कित वहलोग । सूरदास प्रभु
तुम्हरे दरश को नदियानावसँयोग १९३ ॥ रागनट ॥ ऊधो कबआइहैं

नँदलाल। हेरतपंथ बहुतदिन बीते सबब्रजबाल बिहाल। घेरिलियो चहुं ओर प्रेमवश पूछत ग्वालनिग्वाल। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को फिरिकरिहैं प्रतिपाल १९४ ॥ रागपरजकलिंगरा ॥ सुनिलीजो नाथ सँदेसवाब्रज बासिन ऐसोकह्यो। बालापनको नेह छाँड़िके करि कुब्जासे प्रीतिनह्यो। नित्तउठि रारिकरत हरि हमसों जब हमवेचन जातदह्यो। अबतो बीचपरो बरषनको यह अँखियां देख बिलोकरही। अबसुनियत महराज भयेहैंलोटतकंचन कोटमही। वे दिन बिसरिगयेसुनि ऊधो घरघर माँगत छांछमही। वे तोहैं तीन लोकके ठाकुर ब्रजयुवतिन शिरपेचदह्यो। सूरदासदुख कासोंकहिये ओछेकी प्रीति कौलों निबह्यो १९५ ॥ रागधनाश्री ॥ कैसे धीरज धरूं ऊधो तुम योग सिखावन आये। एकसमय हरिअपने करनन करणाफूल पहिराये। ताकारण माटीके मुद्रा मधुकर हाथपठाये। एकबेर वृन्दावनकुंजन शिरपेकेश बनाये। यह अवसर ऐसो मृगछाला ब्रह्मज्ञान दरशाये। सूरश्यामसों यों जायकहियो ब्रजन भक्तबिसराये। बिनदेखेकल परत न एकपल साँवर हाथबिकाये १९६ जाजारेमधुकरदूरदूर। रंगरूप एकहीमूरत मेरो मनकियो चूरचूर। जब लग गाजरज तब लग निकट ह्वै काज सरेपै रहै धूर। सूरश्यामअपने गरजके कलियन रसले घूर घूर १९७ जबते सुन्दर बदननिहारेउ। तादिनते मधुकरमन अटक्यो बहुत करी निकरै न निकारेउ। मातपिता पतिबंधुसजनजनि तिनहूंका कहिबोन सिधारेउ। रहीनलोकलाज मुखनिरखत दुसह क्रोध फीकोकरिडारेउ। ह्वैबो होयसो होय कर्मबश अबजोकोसबशोच निवारेउ। दासी भई दास सूरजप्रभु भलो पोच अपनो न बिचारेउ १९८ ॥ रागपरजताल जत ॥ नयना मेरे नयननि मांझसमाने। टारे न टरत एकरस मधुकर प्रेमप्रीति अरुझाने। मनबुधि थकित भई सब उनको बहुतयतनकरि हाने। बिन्दे फन्दबिहंग बापुरो ते सबभयेहैं बिराने। मन बच क्रम पलकनि के अन्तर युगबलहोतसयाने। सबहरिलये सूरप्रभुवश करि त्रिहिबीतेसोजाने १९९ ॥ रागपरज ॥ ब्रजजन सकल श्यामव्रत धारी। बिनगोपाल औरजोंह आवतते कहिये व्यभिचारी। योग मोट शिर बोझ आनितुम कतघों घोष उतारी। इतनिक दूरिजाहु चलिकाशी

जहां बिकातिहै प्यारो। यह सँदेश सुनि लिये तुम्हारो अतिमरवडली अनन्यहमारो। ज्योंरसरीति कही हरिहमसोंसो क्योंजात बिसारी। महामुक्ति कोऊनहिं बांछै कृष्णापदारथ चारी। सूरदास स्वामी मनमोहनमूरति की बलिहारी २०० यह बातहमारे कौन सुनै। जिनचाहेउहरि रूपसुरति करि भूलि अँगारनिकोचुनै। यह सेवन को ठौर न देखततातेसुनिमनमें गुनै। केशुकबिरह बयारपवनको बैठे ठाने को धुनै। तब उनभांतिन लाड़लड़ाये अबबुभियेन यहउनै। बालिकांड़िके सरहमारे अबनरबायकोलुनै २०१ ऊधो सूधेनेक निहारो। हम अबलनि को सिखवनिआये सुनो सयानतिहारो। निर्गुणकह्यो कहाकहियतहै तुम निर्गुण अति भारो। सेवतिसगुण श्यामसुन्दरकोमुक्तिलई हमचारी। हमसालोक्यस्वरूप सयुज्या रहत समीप सहाई। सो तजि कहति औरकी औरै तुम अलि बड़ेअढ़ाई। हममूरख तुमबड़ेचतुरहौ बहुतकहा कहिये। वेही काजसदा भटकतहै अबसारग गहिये। अहो अज्ञान ज्ञान उपदेशत ज्ञानरूप हमहीं। निशिदिन ध्यान सूर प्रभुको अलि देखत जितततहीं २०२ कहा रसबारिआये की प्रीति। यों गड़े उरअन्तर ऊधो भुस ऊपर की भीति। नैन बैन अरु हृदय मिलत सबबांटतप्रेमप्रतीति। येदोउ हंससोतजब सनमुख लेतिनहींमनजीति। ऊधो यह संदेशो कहियो मधुबन कैसी रीति। सूरदास सोई जनजाने गईहै तिनहिंमेंबीति २०३ मधुकर कोहिके मनमानै। जिनके एकअनन्य ब्रतसूझैक्यों दूजोउरआनै। यहतो योगस्वाद अलिऐसो या बिधाखरिसानै। कैसेधों यहबात पतिव्रता सुनि घट पुरुष बिरानै। जैसे मृगगण ताकिबधिक हगकर कोदण्डगहितानै। हिंसाकरिपोषततन मन सुखमिश्र अपराध न आनै। बड़ोबिचित्र कुब्जारंगरंगे हमनिर्गुण लखिठानै। सूरश्याम रसगुण रतिमानी मधुप प्राण जिनठानै २०४ ऊधोकाहे को भगतकहावत। जोपैयोग लिखपठयो हमको तुमहुं न भस्म चढ़ावत। शृङ्गीमुद्रा भस्म अधारी हमहिं को कहा सिखावत। कुब्जाअधिक श्यामको प्यारो ताहिनहीं पहिरावत। यहतो हमको तबहिं न सिखयो जबते गायचरावत। सूरदास प्रभुको कहियो अब लिखि लिखि कहा पठावत २०५ ऊधो अब ब्रज पहुंचेजाई। तबकी

कथा कृपा करि कहिये हम सुनि हैं मनलाई। बाबानंद यशोदा मैया मिले कवन हित आई। कबहूं सुरति करति माखन की किधौं रहे बिसराई। गोपसखा दधि भात खात बन अरु चाखते चखाई। गाउ बच्छ मुरली सुनि उमड़त आदर कहत किहि भाई। गोपिन गृहव्यवहार बिसारे मुख सन्मुख सुखपाई। पलकओट निमिषन अनखाती यह सुख कहां समाई। सकसखी उनपै ज्योंराधे लेतिमनै जु चुराई। सूरश्याम यह बारबार कहि मनहीं मन पछिताई २०६ भरिभरि लेत लोचन नीर। तुमबिना ब्रजनाथ बिरहिनि बिरह खेद अधीर। कमल गात उरआनि राखत छिरक चन्दनचीर। जालमणि शशि किरणरोकत मलय मन्दसमीर। हैं यहां तुम पासपठये जानि मनमथपीर। सूरदास सुजान श्रीपति मिलि हरो जियपीर २०७ नयन घन घटत न एकघरी। कबहुं न मिटतसदा यह पावस ब्रजलागि रहत झरी। बिरहइन्द्र बर्षत निशि बासर यहि अधि अधिककरी। ऊरध श्वास समीरते जलजराऊधी उमँगिभरी। बूड़तिभुजोंरोम झंबाद्रु सब अरु कुच ऊचथरी। चलि न थकित पद पथिकरहे थकि चन्दन कीचखरी। सबऋतु मिटिएकभईब्रज माहि यहिबिधि उलटिधरी। सूरदास प्रभु तुम्हरे बिछुरे मतिमर्यादटरी २०८ सुनऊधो मोहिं नेकन बिसरत येब्रजबासीलोग। तुमउनकोकछु भलो न कीनोनिशिदिन दियो बियोग। यदपि कनक मणि रचीद्वारका सकलराज्य सुखभोग। तदपि मनहिं यह हरत बंशीबट बनयमुनासंयोग। वे उतरहत प्रेम अवलंबन इततेपठयो योग। सूरउसास छांड़ि भरिलोचन बढ़ेउ बिरह जवरोग २०९॥ रागधनाश्री ॥ है कोई इतनीभांति दिखावै। किंकिणि शब्दचमन सुनुरुनु झुनु ठुनकठुनक गृहआवै। कछुक बिलास बदनकीशोभा असुण कोटि गतिगावै। कुञ्चित मुकुट कण्ठमुक्तावलि मोरपंख छवि छावै। समरधूरि अँग केसँग लीन्हे ग्वालबालसँगलावै। सूरदास प्रभु कहत यशोदा भागबड़ेलेपावै २१० पंथीइतनीकहियोबात। तुम बिन यहां कुवँरबरमेरे होतजिते उत्पात। बकीअघासुर टरत न टारेबालक बनहिं न जात। ब्रजपंजरी रूंधि मनों राखे निकसनको अकुलात। गोपी गाय सकल लघु दीरघ पीतबरणकृशगात। परम अनाथ देखि-

यत तुमबिन कोहिअवलम्बिय तात । कान्ह कान्हके टेरत तबधौं अब कैसे जिय मानत । यह व्यवहार आजुलौंहैब्रज कपटनाटछल ठानत । दशहूंदिशिते उदित होतहै दावानलकोकोट । आँखें मूंदि रहत संमुख ह्वै नाम कवच दै ओट । ये सब दुष्ट गते अरुजोजे भये एकहो पोट । सत्वरसुर सहायकरौ अब समुझिपुरातन होट २११ तुमकोहो कहँते आयेहो । जानतहो उनमान मनो तो तुम यदुनाथ पठायेहो । वैसोहि बरण बसन तनवैसे वैभूषणासजि लायेहो । लेसर्वसु सँग सखा सिधारे अबकापर पहिरायेहो । अहोमधुप एकैमन सबके सुतोवहां ले छाये हो । अबयह कौन सयान बहुरिब्रज जा कारण उठिआयेहो । मधुवनकीमानिनी मनोहरतहँहिंजाहु जहँभायेहो । सूरजहांलों श्यामगात है जानिभलेकरि पायेहो २१२ कोऊ वैसेहीअनुहारि । मधुबनतेआवतहैंसखिरी देखौनयननिहारि । माथेमोरमुकुट कटि किंकिणिपीत बसन रुचिकारि । वैसेहिबातकहति सारथिसों ब्रजजन भुजापसारि । इतनोबात विचारत अन्तर मनुबीतेयुगचारि । सूरदास प्रभु बिन सब ऐसी जैसे मीन बिनुबारि २१३ ॥ रागपरज ॥ हों यह तेरेहि कारण आयो । तेरीसों सुनु जननि यशोदा हठिगोपाल पठायो । कहाभयो जो लोग कहत हैं दुखित जु माताजायो । खान पान परिधान राज्य सुखतेही लाड़ लड़ायो । इतो हमारो राज्य द्वारका मो जी कछू न भायो । जबजब सुरतिहोत वहिहितकी बिछुरि वच्छज्योंधायो । बूझे समाचार सुधिपाई बहुतक सुख दिखरायो । चलहु न कुटुंब समेत सूरनँदनन्दन उहां बुलायो २१४ ॥ रागनट ॥ ऊधो कहाकरोंलेपाती । जबहिं न देखेउँ गोपाललाल को विरह जरावतछाती । जानतहौ तुम मानतनाहीं तुम्हरो श्यामसँघाती । निमिष निमिष में बिसरत नाहीं शरद सुहाई राती । यह पातीलैजाहु द्वारका जहँ बसे श्यामसुजाती । मनहमरो लेगये उहांको कामकठिन सुरघाती । सूरदासप्रभु काह चाहतहैं कोटिक बात सुहाती । एकबेर मुख बहुरि देखावहु रहे चरणरजराती २१५ ॥ रागबिलावल ॥ गोकुलजीवन गोबिंद मेरे । जाहिलागि हो रहोजु तनमन दुखभूलत भटकत सनेहेरे । जाकेगर्व बदों नहिं सुरपति रहेउ जु दिवस सातलौं घेरे । ब्रजकोनाथ गोबर्द्धन धारी सुभग

भुजननख रेखजुनेरे। जाकोयश ऋषिगर्ग बखान्यो कहत निगमनि-
जुते सजुडरे। सोश्रवसूर सहित संकर्षण पायेयतन घनेरे २१६ ॥ राग-
नट ॥ बहुतदिनबीते हरिबिछुरवही।दर्शनहीनदीन दुःखित ह्वै बहुबिधि
बिपति सही। रजनी दिवस प्रेम अति पीड़ित गृहबन धरत न धीर।
पग पग मग जोवत उरअन्तर भीजत नैननमीर। अबलों आश अवधि
बदि गिनिगिनि राखतिहैघटबास। सूरदास प्रभुप्रीति पुरातन मिलहु
पियामनआस २१७॥ रागधनाश्री ॥ मोहन ब्रजतजिगये जुकालि। सुन्दर
श्याम कमलदल लोचन क्यों बिसरै निधिआल। कहाकरौं छतकर्म
आपनो कैरही कितजाल। दुष्टअति अक्रूर आयो लैगयो रथचाल।
रुदन करहिं जु ठाढ़िबनिता करति अतिदुख हाल। सूरकेप्रभु काहि
यशोदा कहां पाई पाल २१८ ॥ रागनट ॥ हमपरऐसोयोग न होई।
सुनिसुनिबचन तिहारेऊधो नयना आवतरोई। कुन्तल कुटिल मुकुट
कुण्डलछबि रहीरहो अतिपोई। सूरश्याम बिनप्राणरहै नहिं कोटि
करौ किनकोई २१९ ॥ ऊधो योगकहो किधौं हाँसी। अबते आय
हमारे ब्रजमें डारि प्रेमकी फांसी। तुमहौबड़े योगकेपालक संगलिये
कुब्जासी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश को करबट लीजो कासी २२०
बिनयसुनो एकमेरीरे। जादिनते बिछुरे नँदनन्दन कामकटक तनघे-
रीरे। देखोहृदय बिचारि तुमहिंअब प्रीतिरीतिसब केरी। जहँजोकी
निधि तहँ सब सोधै ज्यों मृगनाद अहेरी। बेद समान रतन रखवश ते
शशिबिन रैनि अँधेरी। सूरदासस्वामी कब आवैं बशीकरण ब्रजफेरी
२२१ बिनती सुनहु हमारी। जादिनते बिछुरे नँदनन्दन काम अनल
अति जारी। हमको योग सिखावन ऊधो पठये आप मुरारी। डांडे
ऊपर लोन लगावत कहत न बातबिचारी। हमसोंप्रीतिभई सपनेकी
कोनीदासीनारी। इनबातन निश्चयकुब्जापति भयेहैं श्यामबिहारी।
अबऊधो कछुकहत न आवै प्रेमघटा अतिभारी। लिख्यो परमपद सूर
श्यामसब गोकुल दीनदुखारी २२२ ऊधोधन तुम्हरोब्यवहार। धनिवे
ठाकुर धनि वे सेवक धन तुमबर्तनहार। आम को काटबबूर लगावत
चन्दन को करवार। साह कोपकरि चोरको छोड़त चुगलन को इत-
बार। सूरश्याम कैसे निबहैगी अन्धधुन्ध सरकार २२३ ऊधो तुम

कहत कौनकी बातें । सुनि ऊधो हम समुझत नाहीं फिरि पूछत हैं तातें । को नृपभयो कंस किनमारेउ को वसुदेवसुतआहि । इहँ यशुदा सुत परममनोहर जीजतुहै मुखचाहि । निशिदिन रहत धेनु बनचारन गोपसखनके संग । बासर गत रजनीमुख आवत करत नयनगति पंग । को पूरण अविगत अविनाशी को बिधि वेद अपार । सूरवृथा कत वाद बढ़ावत इहिब्रज नन्दकुमार २२४ ॥ रागकेदारो ॥ कमल नयन की अवधिबिसरानी अजहूं भये न आवन । निशि बासरहो मधुरामनावति मिलहु कृपाकरि भावन । सबै संदेश बिदेशी आये वृक्षपखेरूछावन । मानोबिरह बिवाहन आयो कोड़ामंगल गावन । तामहिं मोरघटाघन गर्जहिं संगमिले तिहि सावन । भरिभादों बैठाइ घोंघपति नारिनदुख बिसरावन । बिनदेखे कल परै न यक क्षण वह सूरति चितचावन । सूरदास प्रभु ठानी ऐसी बैरीकंस ज्यों रावन २२५ ॥ रागमलार ॥ शिखरचढ़िशिखी सुटेर सुनायो । बिरहिनि सावधान ह्वै रहियो सजि पावनदल आयो । बादरबान तपावत साजो चढ़िके चटिकनचायो । मदन सुभट करपञ्च बाण लै ब्रज सनमुख ह्वै धायो । पिक चातक खग मृग जे हँसगण सब मिलि मारूगायो । जानि बिदेश गये हरि तातें अबलनि त्रास दिखायो । मनमोहन बिन देखे सजनी घरि पल क्षण न सुहायो । सूरदास स्वामी गुण पहिले सुमिरि प्राण बिरमायो २२६ ॥ रागनट ॥ अबतो वे लागे दिनजान । सुमिरति प्रीति लाज लागति है उरभयो कूपसमान । लोचन रहित बदन बिनु देखे बचनसुनों बिनुकान । हिरदै रहतु पावनूपुर से छीजत तनमन प्रान । वे यशमेटि गये नँदनन्दन बिरहसृष्टि ब्रजआन । बिधिवश हरे बहुरि फिरि कीन्हेवेशिशुवेद बखान । जबतेगये मधुपुरीमोहन बिषय खान अरूपान । यहते सूरयहै जो भावतिहो बसिये अनुमान २२७ ऊधोकहतसँदेशो नीको । हितउपदेश करन ब्रजआयो लियेमतोहरिजीको । योग युगति निर्गुण उपदेशत ज्ञान सुनाय यती को । बिरह व्याधि औषधि नीकी ज्यों आमवातहै पथ्यमही को । हमको योगभोग कुबरीको ज्ञानदृढ़ायेजीको । सूरश्याम बिन और न जाने यह निश्चय है हीको २२८ तुम्हरीप्रीति ऊधो पूर्वजन्मकी अबहुभये मेरे तनहुके

गरजी। बहुतदिननितेबिरमिरहेहो सँगते बिछोहिहमहिं गये बरजी। आदिनते तुम प्रीति करीहे घटति न बढ़ति तोलिलहु नरजी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनबिन तनयोंहोतबिरह भयोदरजी २२९॥ रागबिहाग॥ कृष्णाकृष्णा करत डोलूं कृष्णा कहां में पाऊँ। नहिं विधना मोहिंपंख दीने उडिके द्वारिका में जाऊँ। ऊधो जु तुम बेग जाओ श्यामहिं बेगले आऊँ। सूरके प्रभु दरश दीयो तेरो कहाय अब कौन की कहाऊं २३०॥ रागबिहागरो॥ जावोजावोमेरेआगेते मैं पति राखों ऊधोतेरी। काहेको अबरोष दिवावत देखत आंखबरतहैमेरी। तुम ज्यों कहतहो संगहे गोबिन्द कहियतहै कुब्जाउन चेरी। दोऊ मिले तैसेईतैसे वे अहीर वह कंसकि चेरी। तुमसारिखे बसीठपठाये कहिये कहाबुद्धि उनकेरी। सूरश्याम सुधि बिसरिगई वह गावत हैं ग्वालन सँगहेरी २३१॥ रागसिंधु॥ ऊधोइतनो मोहिंसतावत। कारीघटा देखि बादरकी दामिनि चमक डरावत। हेमसुता पतिको रिपु व्यापै दधिसुत रथ न चलावत। अम्बुखँडन को शब्द सुनतही चित चकित उठिधावत। कंचन पुरपतिको जो भ्राताते सब बलहि न आवत। शंभू सुत को जोबाहन है कुहुके असलसलावत। यद्यपि भूषणअंगबनावत सोइभुजंगहोइ धावत। सूरदास बिरहिनि हति व्याकुल खगपति चढ़ि किन आवत २३२ ऊधो यह हित लागतकाहे। निशिदिन नयन तपति हरिकहियो तुम जु कहत हद माहे। पलक न परत चहूं दिशि चितवत बिरहानल के दाहे। इतनी आरत काहे न मिलही जो पर श्याम यहांहि। पालागों ऐसेहि रहन दे अब न आशजल थाहे। जनि बोरहु सगुता समुद्रमें पुनिपाई बिनचाहे। उपजि परी जासों जिहि ढँग सँगसो अँगबने निबाहे। सूर कहा लै करे पपीहा एते सर सरिताहे २३३ वैसी शारँग करहिं लिये। शारँग कहत सुनत वे शारँग शारँग मनहिं दिये। शारँग थकी बैठि यह शारँग शारँग बिकल हिये। शारँगधरकि शारँगपरिशारँग शारँग क्रोध किये। शारँग है भुज करहिबिराजत शारँगरूपबिये। सूरजदास मिलहिंवा शारँग तो परि सुफल जिये २३४ देखो माई श्यामसुरति अबआवै। दादुरमोर कोकिला बोलैं पावस अगम जनावै। देखि घटा घनचापि दामिनी

मदन सिंगार बनावै। बिरहिनि देखि अनाथ नाथ बिन चढ़ि नहिं ब्रजपर आवै। कासों कहों जाय कोइ हरिपै यह संदेश सुनावै। सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि ब्रजबनिता सचुपावै २३५॥ रागसिंधु ॥श्याम सिधारे कौने हिं देश। तिनके कठिन करे जो सखि री जिनके पिय परदेश। उन ऊधो कछु भली न कीन्ही कौन जगतको बेश। स्रग भार प्राण रहत नहिं हरिबिन निशिदिन अधिक अंदेश। अतिहि निठुर पातीनहिं पठई काहू हाथ सँदेश। सूरदास प्रभु यह उपजतहै धरिये योगिनिबेश२३६हरिबिन वे सुखबहुरि कहां। यदपि नयन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां। मुखमुरली शिर मोरपंख बने अरु घुंघचिनको हार। आगेधेनु रेनु तनमंडित चितवन तिरछी चार। रातदिवस अँगअँग अपनेहित हँसि मिलि खेलतखात। सूरदेखि वह प्रभुताउनकीकही न आवैबात २३७ऐसोकोऊ नाहिंनसजनी जोमोहं नहिं मिलावै। एकैबार बहुरि नँदनंदन को यहँलों लैआवै। पायँन परि बिनती करिमेरी यहसब दशासुनावै। निशि निकुंज सुखकेलि परमरुचि रासरंग की सुरति करावै। और कौनहूं सातकी सकुचनि सब बिधिकी उपजावै। पुनिपुनि सूरबहै करिहरिसों लोचनअरतिबुझावै २३८ बटाऊ होहिं नकाकेमीत। संगरहत शिरमेलि ठगोरीहरत अचानकचीत। मोहेनयन रूपदरशनके अवणमुरलिकोगीत। देखतही हरिलैजु सिधारे बांधिपिछौरी प्रीत। यहितेभृकुतियहै मगचितवति सुखजु भये बिपरीत। सूरदास बरुमिलहु पियारे आश तजी परतीत २३९हमैंतो इतनेहीसोंकाज। कैसेहूबल कमलनयनको ब्रजले आवहि आज। औरअनेक उपायतुम्हारे सकल करहु सुखराज। कैसेये निबहैं अबलनपै कठिन योगके साज। नखशिख सुभगश्याम अनतनको दरशनहरति बियाज। सूरदासप्रभु महरकौनबिधि बदनबिलोकनिवाज। २४० ऊधोहम अज्ञान अतिभोरी। सिखवोजाय योगकी बातैं नागरि नवलकिशोरी। कंचनकोमृगकौने देख्यो किनलै बांधेडोरी। कहिधौं मधुप बारि मथिमाखन कौनेभरी कमोरी। बिनहीं भीति चित्रकिन लेखो किनि नभ घाल्यो घोरी। कहिधौं कौने काढ्यो कनिका जो हठि तुसी पिछोरी। सबबिधि परम ज्ञान तुम्हारो हम अबला मति

भोरी। चाहकसुरश्याम शशिपूरण अँखियां त्रिविधचकोरी२४१ हरिसुत सुतहरिके तनआहि। यहको कहेकौनकी बातें ज्ञानध्यान सुमिरोकेकाहि। कोटुखसरैं तासुजेवतीकोको जिनकंस हते। हमरेतो गोपतिसुत अधिपति वनिता औरनसे। मोरज अन्धरूप रुचिकारी चितेचिते हरिहोत। कबहूं के करनी समेतिलो नेकनमानके सोत। तारिपु समेसंग शिशुलीन्हे आवत है तन घोय। सूरदास स्वामी मन मोहन कत उपजावत रोय२४२ जलबिनतरंग भीतिबिन लेखन बिन चेतहि चतुराई। याब्रजमें कछुनहीं चाहहै ऊधो जानि सुनाई। मन चुभिरही माधुरीमूरति अंगअंगउरझाई। सुन्दरश्याम कमलदललोचन सूरदास सुखदाई२४३ सबखोटे मधुबनके लोग। जिनसँग श्याम सुँदर सखि सिखयेसबही एकहियोग। आये हैं कहियत ब्रजऊधो युवतिनको लेयोग। आसनध्यान नयनमूंदे सखि कैसे कटे बियोग। हमअहीर इतनी कहजानैं कूकपिसों संयोग। सूरसुबैद कहांलोंकीजै कहे न जानेरोग२४४ माईरी मधुबन की यह रीति। नोरसजानि तजतस्वण भीतर नवलकुसमरस प्रीति। तिनकेसंगीहैं कैतवचितक्यों आवै परतीति। हमहिं छांड़ि बिरमहिं कुब्जा सँग आये न रणरिपु जीति। जिनिप्रतियाहु मधुरसुनि बातें लागेकरनसभीति२४५ ऊधो जिनि मधुबन तनदेखो। कछुक दिवस औरो ब्रजबसिके जनमसुफल करिलेखो। कहाजायलैहो वहांऊधो जामें राजकिबाते। बालकिशोर कुमार निरखिसुख घरघर माखन खाते। तुमनिर्गुण निजकहत निरन्तर निगमनेति यह नीति। प्रकटरूप मदमत्त नयन को छांड़ो दरशन प्रीति। शिवबिरंचि सनकादिकमुनिमन संतत जाकोध्यावत। सूरदास प्रभु गोपसुतन सँग गोधन वृन्दचरावत २४६ ॥

रागधनाश्री ॥ उद्धव को उपदेश सुनो ब्रजनागरी। रूपशीललावण्य सबै गुणआगरी। प्रेमध्वजा रसरूपिणी उपजावन सुखपुंज। सुन्दर श्याम बिलासिनी नव वृन्दावन कुञ्ज। सुनो ब्रजनागरी १ कहन श्याम संदेशएकमें तुमपै आयों। कहन समयसंकेत कहूं अवसर नहिं पायों। शोचतही मनमें रहेउ कब पाऊं यक ठाउँ। कहि सँदेश नँदलाल को बहुरि मधुपुरी जाउँ। सुनो ब्रजनागरी २ सुनत श्याम को

नाम ग्राम गृह की सुधि भूली। भरि आनँद रस हृदय प्रेमबेलीद्रुम फूली। पुलकिरोम सब अंग गये भरिआये जलनैन। कराठघुटेगदगद गिरा बोले जातन बन। व्यवस्था प्रेमकी ३ अर्द्धासन बैठारि बहुरि परिकरमादीन्ही। श्यामसखा निज जानि बहुरि सेवा बहु कीन्ही। बूझति सुधि नँदलाल की विहँसत सुख ब्रजबाल। नीकेहैं बलबीरजू बोलति बचनरसाल। सखासुनुश्याम के ४ कुशलश्याम अरुराम कुशल संगी सब उनके। यदुकुल सिगरे कुशल परम आनँद है उनके। पूछन ब्रज कुशलातको आयों तुम्हरे तीर। मिलिहैं थोरे दिवसमें जिनि जिय होहु अधीर। सुनो ब्रजनागरी ५ सुनि मोहन संदेशरूप सुमिरणाह्वै आयो। पुलकित आननकमल अंग आवेश जनायो। विह्वल ह्वै धरणीपरीं ब्रजवनिता मुरझाय। दैजल छींट प्रबोधहीं उद्धव बातसुनाय। सुनो ब्रजनागरी ६ वे तुमते नहिं दूरि ज्ञानकी आँखिन देखो। अखिल विश्वभरिपूरिब्रह्मसब रूप विशेखो। लोहदारुपाषाणमें जलथल महि आकाश। सचर अचर बर्तत सबै ज्योतिहि रूप प्रकाश। सुनोब्रजनागरी ७ कौनब्रह्मकोजाति ज्ञानकासों कहिऊधो। हमरेसुन्दरश्याम प्रेमको मारग सूधो। नैन बैन श्रुति नासिका मोहन रूप लखाय। सुधिबुधि सब मुरलीहरी प्रेम ठगोरी लाय। सखा सुन श्यामके ८ यह सबसगुण उपाधिरूपनिर्गुणहै उनको। निर्विकारनिर्लेप लगतनाहिं तीनों गुनको। हाथ न पाय न नासिका नैन बैन नहिं कान। अच्युतज्योति प्रकाशहींसकलविश्वकोप्रान। सुनोब्रजनागरी९ जो मुख नाहिंन हतो कहो किन माखनखायो। पायँन बिन गोसंग कहो बनबनको धायो। आँखिनमें अंजनदयो गोवर्द्धन लयोहाथ। नन्द यशोदा पूतहै कुवँरकान्ह ब्रजनाथ। सखासुनुश्यामके१०जाहिकहत तुमकान्ह ताहिकोउ पिता न माता। अखिल अंड ब्रह्मगड विश्व उनहीं में जाता। लीलागुणअवतारहै धरिआये तनश्याम। योग युगत होपाइये परब्रह्म पुरधाम। सुनोब्रजनागरी ११ ताहि बताओ योग योग्य ऊधोतहँजावो। प्रेम सहित हम पास श्यामसुन्दर गुणगावो। नैन बैन मन प्राणमें मोहन गुण भरिपूरि। प्रेमपियूषै छोडिकै कौन समेटैधूरि। सखा सनुश्यामके १२ धूरि बुरीजोहोय ईश क्यों शीश

चढ़ावै। धूरिसेवमैंआय कर्म करिहरिपदपावै। धूरिहिते यहतनभयो धूरिहितेब्रह्मांड। लोकचतुर्दश धूरिते सप्तद्वीप नवखंड। सुनौब्रजनागरी १३ कर्म धूरिकी बातकर्म अधिकारी जाने। कर्मधूरिको आनि प्रेम अमृतमेंसाने। तबहींलों सब कर्महै जबलग हरिउरनाहिं। कर्मबश्य सब विश्वके जीवबिमुखहैजाहिं। सखासुनुश्यामके१४ तुमनिन्दतकहकर्म कर्म्मतेसद्गति होई। कर्मरूपतेबलो नाहिं त्रिभुवनमेंकोई। कर्महिंते उत्पत्तिहैकर्महिंतेहै नाश। कर्म कियेतेमुक्तिहै परब्रह्मपुरबास। सुनौ ब्रजनागरी १५ कर्मपाप अरुपुण्य लोह सोनाकी बेरी। पायँन बंधन दोउ कोउ मानों बहुतेरी। ऊंच कर्म ते स्वर्गहै नीचकर्मते भोग। प्रेम बिना सब पचिमरैं विषय बासना रोग। सखासुनुश्यामके १६ कर्म बुरे जो होयँ योगकाहेको धारैं। पद्मासन सब धारि रोकि इंद्रिनको मारैं। ब्रह्मअग्नि जरिशुद्ध ह्वै सिद्धि समाधि लगाय। लीनहोयँसायुज्यमें ज्योतिहिज्योति समाय। सुनौब्रजनागरी १७ योगी योगै भजै भक्ति निरूपै जानै। प्रेमपियूषै प्रकट श्यामसुन्दर उरआनै। निर्गुण गुणहिं जोपाइये लोगकहैं जोनाहिं। घरके नागन पूजहीं बांवी पूजन जाहिं। सखासुनुश्यामके १८ जो उनके गुण होय वेद क्यों नेति बखानैं। निर्गुणसगुणजु आत्म रची ऊपरसुखसानैं। वेदपुराणनि खोजिकै पायो किनहुन एक। गुणहींके गुण होहिंते कहौ अकाश कि टेक। सुनोब्रजनागरी १९ जोउनकेगुणनाहिं और गुणभये कहांते। बीजबिना तरु जमैं मोहितुम कहो कहांते। वा गुण की परछांह री माया दर्पणबीच। गुणतेगुणन्यारेभये अमलबारि जलकीच। सखासुनुश्यामके २०मायाके गुणऔर और हरिके गुणजानो। उनगुणको इनमाहिं आनिकाहेको सानो। जाकेगुण अरुरूपको जान न पायो भेद। ताते निर्गुण रूपको बदत उपनिषद वेद। सुनो ब्रजनागरी २१ वेदहु हरिके रूप श्वास मुखते जोनिसरे। कर्मक्रिया आसक्त सबै पिछलीसुधिबिसरे। कर्ममध्य ढूंढै सबै किनहुन पायो देख। कर्म सहित हो पाइये ताते प्रेम विशेख। सखा सुनु श्याम के २२ प्रेम जो कोऊ बस्तु रूप देखे लवलागै। बस्तु दृष्टि बिन कहो कहांप्रेमी अनुरागै। तरणिचन्द्रके रूपको गुणनहिं पायोजान। तो उनको कह जानिये

गुणातीत भगवान । सुनो ब्रजनागरी २३ तरणि अकाश प्रकाश तेजमय रहेउ दुराई । दिव्य दृष्टिहो रूप भले वह देखो जाई । जिनकी वे आंखैं नहीं देखें कनकहरूप । तिन्हैं बिश्वास क्यों ऊपजे ऊपरे कर्मके कूप । सखासुनुश्यामके २४ जबकरिये नित कर्म भक्तहू जामेंआई। कर्मरूप किहिकहा काहिपैकूल्योजाई । क्रमक्रम कर्म्महिं सबकिये कर्मनाश ह्वै जाय । तबैआत्मनि कर्म्मकरि निर्गुणब्रह्म समाय । सुनो ब्रजनागरी२५ जो उनके नहिं कर्म कर्मबन्धन है आवै । तो निर्गुणहै बस्तुमात्र परमात्म बतावै । जो उनको परमात्महै तौ प्रभुता कछु नाहिं । निर्गुण भये अतीतके सगुणकमल जगमाहिं । सखासुनु श्याम के २६ जो गुण आवै दृष्टिमांझ नहिं ईश्वर सारे । वे सबहुनते बासुदेव अच्युतहैं प्यारे । इन्द्री दृष्टि बिकारते रहत अधोक्षज जोति । शुद्ध सरूपी जानि जिय दरशिजु ताते होति । सुनो ब्रजनागरी २७ नास्तिकजेहैंलोग कहाजानैं हितरूपै । प्रकटभानुको छांडिगहैं परछाँहींधूपै । हमरे तुम्हरे रूपही और न कछू सुहाय । ज्यों करतल आभासकौ कोटिक ब्रह्म दिखाय । सखासुनुश्यामके २८ऐसे में नँदलाल रूप नयनन के आगे । आयगये छबि छाय बने पियरे उरबागे । ऊधोसोंमुख मोरिकै कहि कछु उतते बात । प्रेमअमृतमुखते स्रवत अंबुज नयन चुचात । तरक रसरीतिकी २९ अहोनाथ श्रीनाथ और यदुनाथ गोसाईं । नँदनन्दन बिडरात फिरततुम बिन सबगाईं । काहेन फेरिकृपालहो गोग्वालन सुख देहु । दुखनिधि जलमें बूड़हीं करि अवलम्बनलेहु । निठुरह्वै कहँरहे ३० कोउ कहै अहो दरशदेहु पुनि बेणु बजावो । दुरिदुरि बनकी ओट कहा हिय लोन लगावो । हमको तुमसे सकहैं तुमको हमसीकोरि । बहुतभांति के रावरे प्रीति न डारोतोरि । सबैइकबारहीं३१ कोऊकहै अहोदरश देत फिरिलेत दुराई । यह छलविद्या कहो कौन पिय तुमहिंसिखाई । हम परबश आधीनहैं ताते बोलतदीन । जलबिन कहो कैसे जिये गहिरे जलकी मीन । विचारियरावरे ३२ कोऊकहै अहो श्याम कहा इतराय गये हौ । मथुराको अधिकार पाय महराज भयेहौ । ऐसीकछु प्रभुताहुती जानत कोऊ नाहिं । अबला बधसनि डरिगये बली डरे जग माहिं ।

पराक्रम जानिकै ३३ कोऊ कहै अहो श्याम चहतमारना को ऐसे। गिरिगोवर्द्धन धारि करी रक्षा तुम कैसे। ग्वालछत्र अरु ग्वालनि राखि लये सब ढोर। अब बिरहानल दहतहौ हँसि हँसि नन्दकिशोर। चोरि चित लै गये ३४ कोऊ कहै ये निठुर इन्हैं पाल कनाहिँ ब्यापै। पाप पुण्यके करणाहार ये आपहि आपै। इनके निर्दय रूप में नाहिंनकछु बिचित्र। पयपीवत प्राणन हरे पूतना बाल चरित्र। मित्रयेकौनके ३५ कोऊ कहैरी आज नाहिं आगे चलिआई। रामचन्द्रके धर्मरूपमेंहींनिठुराई। यज्ञकरावन जातहैं विश्वामित्र समीप। मगमेंमारी ताड़का रघुवंशीकुलदीप। बालहीरीतियह ३६ कोऊ कहै यहपरमधर्मज्ञोजितपूरे। लक्षलक्ष संधान धरे आयुध के रूरे। सीताजूके कहेते सूर्पणखा पै कोपि। छेदिश्रुअंग बिरूपकै लोगन लज्जा लोपि। कही ताकी कथा ३७ कोऊ कहैरी सुनो और इनके गुण आली। बलिराजा पै गये भूमि मांगन बनमाली। मांगत बामनरूप ह्वै परबतभये अकाय। सत्यधर्मसब छाँड़िकै धरोपीठपैपाय। लोभकी नावये ३८ कोऊ कहैरी कहा हिरणाकश्यप ते बिगरेउ। प्रेमहीत प्रह्लाद पिता सन्मुखह्वै झगरेउ। सुत अपनेको देतहो मिलादयड बनाय। इनवपुधरि नरसिंहको नखन बिदारेउजाय। बिनाअपराध ही ३९ कोऊ कहै इन परशुराम ह्वै मातामारी। फरसा कांधेधारि भूमि क्षत्रिन संहारी। शोणितकुंड भरायकै पोषे अपनेपित्र। इनके निर्दय रूपमें नाहिंन कछू बिचित्र। त्रिलग कह मानिये ४० कोऊ कहैरी कहादोषशिशुपालनरेशै। ब्याह करनकोगये नृपति भीषमके देशै। दलबलजोरिबरात को ठाढेहैं छबिबाढ़ि। इनछलकरि दुलही हरी सुधितग्रासमुखकाढ़ि। आपने स्वारथी ४१ यहिबिधिहै आवेश परम प्रेमीअनुरागी। औरस्वप पियचरित तहांते देखनलागी। रोमरोम हरि ब्यापि कै मोहन जिनकी आय। जिनको भूत भविष्यको जानत कौनदुराय। रँगीली प्रेमकी ४२ देखत इनको प्रेम नेमऊ शोको भाज्यो। तिमिर भाव आवेश बहुत अपनेमन लाज्यो। मनमेंकहै रज पायकै लैमाथे निजधारि। हौंतो कृत अकृतरहो बिनुबनआनँदबारि। बन्दनायोग्ययं ४३ कबहूंकै गुणगाय श्यामके इन्हैं रिझाऊं। ताते

गुणातीत भगवान । सुनो ब्रजनागरी २३ तर्णा अकाश प्रकाश तेजमय रहेउ दुराई । दिव्य दृष्टिही रूप भले वह देखो जाई । जिनको वे आंखैं नहीं देखें कवनहरूप । तिन्हैं बिश्वास क्यों ऊपजे ओपरे कर्मके कूप । सखाहुनुश्यामके २४ जबकरिये नित कर्म भक्तहू जानेंआई। कर्मरूप किहिकहो काहिपैछूट्योजाई । क्रमक्रम कर्म्महिं सर्वकिये कर्मनाश ह्वैजाय । तबैआत्मनि कर्म्मकरि निर्गुणब्रह्म समाय । सुनो ब्रजनागरी२५ जो उनके नहिं कर्म कर्मबन्धन है आवै। तो निर्गुणहै बस्तुमात्र परमाणा बतावै । जो उनको परमाणहै तौ प्रभुता कछु नाहिं । निर्गुण भये अतीतके सगुणसकल जगमाहिं । सखाहनु श्याम के २६ जो गुण आवै दृष्टिमांझ नहिं ईश्वर सारे। वे सबहुनते बासुदेव अच्युतहैं न्यारे । इन्द्री दृष्टि बिकारते रहत अघोक्षय जोति। शुद्ध स्वरूपी ज्ञानि जिय दर्शनजु ताते होति । सुनो ब्रजनागरी २७ नास्तिकजेहैंलोग कहाजानें हितरूपै। प्रकटभानुको छांडिगहैं परछाँहींधूपै। हमरे तुम्हरे रूपही और न कछू सुहाय। ज्यों करतल आभासको कोटिक ब्रह्म दिखाय । सखाहुनुश्यामके २८ऐसे में नँदलाल रूप नयनन के आगे । आयगये छबि छाय बने पियरे उरबागे। ऊधोसोंमुख मोरिकै कहि कछु उतते बात। प्रेमअमृतमुखते श्रवत अंबुज नयन चुचात। तरक रसरीतिकी २९ अहोनाथ श्रीनाथ और यदुनाथ गोसाईं । नँदनन्दन बिडरात फिरततुम बिन सबगाईं। काहेन फेरिकृपालहो गोग्वालन सुख देहु । दुखनिधि जलमें बूडहीं कर अवलम्बनलेहु । निठुरह्वै कहँरहे ३० कोउ कहै अहो दरश देहु पुनि बेणु बजावो । दूरिदूरि बनकी ओट कहा हिय लोन लगावो। हमको तुमसे एकहैं तुमको हमसीकोरि। बहुतभांति के रावरे प्रीति न डारोतोरि। सबैइकबारहीं३१ कोऊकहै अहोदरश देत फिरिलेत दुराई। यह छलविद्या कहौ कौन पिय तुमहिंसिखाई। हम परवश आधीनहैं ताते बोलतदीन। जलबिन कहो कैसे जिये गाहिरे जलकी मीन। बिचारियरावरे ३२ कोऊकहै अहो श्याम कहा इतराय गये हौ। मथुराको अधिकार पाय महराज भयेहौ। ऐसीकछु प्रभुताहुती जानत कोऊ नाहिं। अबला बधतनि डरिगये बली डरे जग माहिं।

पराक्रम जानिकै ३३ कोऊ कहै काहे श्याम चहतभारण जो येते ।
गिरिगोवर्द्धन धारि करी रक्षा तुम कैसे । ग्वालबाल अरु ग्वालिते
राखि लये सब ढोर । अब बिरहानल दहतहौ हँसि हँसि नन्दकि-
शोर । चोरि चित लै गये ३४ कोऊ कहै ये निठुर इन्हैं पाप नाहिँ
ब्यापै । पाप पुण्यके करखाहार ये आपहि आपै । इनके निर्दयरूप
में नाहिंनकछू बिचित्र । पयपीवत प्राणन हरे पूतना बाल चरित्र ।
मित्रयेकौनके ३५ कोऊ कहैरी आज नाहिं आगे चलिआई । राम-
चन्द्रके धर्मरूपमेंहींनिठुराई । यज्ञकरावन जातहैं विश्वामित्र समीप ।
मगमेंमारी ताड़का रघुबंशीकुलदीप । बालहीरीतियह ३६ कोऊ कहै
यहपरमधर्मब्रोजितपुरे । लक्ष्मलक्ष संधान धरे आयुध के छूरे । सीता
जूके कहेते शूर्पणखा पै कोपि । छेदिसुअंग बिरूपकै लोगन लज्जा
लोपि । कही ताकी कथा ३७ कोऊ कहैरी सुनो और इनके गुण
आली । बलिराजा पै गये भूमि मांगन बनमाली । मांगत बामनरूप
ह्वै परबतभये अकाय । सत्यधर्मसब छाँड़िकै धरीपीठपैपाय । लोभको
नाबये ३८ कोऊ कहैरी कहा हिरणाकश्यप ते बिगरेउ । प्रेमढीठ प्र-
हलाद पिता सन्मुखह्वै झगरेउ । सुत अपनेको देतहो सिक्षादण्ड ब-
ताय । इनबपुधारि नरसिंहको नखन बिदारेउजाय । बिनाअपराध
ही ३९ कोऊकहै इन परशुराम ह्वै मातामारी । फरसा कांधेधारि
भूमि क्षत्रिन संहारी । शोणितकुंड भरायकै पोषे अपनेपित्र । इनके
निर्दय रूपमें नाहिंन कछू बिचित्र । बिलग कछ मानिये ४० कोऊ
कहैरी कहादोषशिशुपालनरेशौ । ब्याह करनकोगये नृपति भीषमके
देशौ । दलबलजोरिबरात को ठाढ़ेहैं छबिबाढ़ि । इनछलकरि दुलही
हरी सुधितग्रासमुखकाढ़ि । आपने स्वारथी ४१ यदिविधिहै आवेश
परम प्रेमीअनुरागी । औरछवि चित्रचरित तहांते देखनलागी । रो-
मरोम हरि ब्यापि कै मोहन जिनकी आय । जिनको भूत भविष्यको
जानत कौनदुराय । रँगीली प्रेमकी ४२ देखत इनको प्रेम नेमकछु सोको
भाउयो । तिमिर भाव आवेश अतुल अभेषकलाउयो । मनमेंकहै रज
पायकै लैमाथे निजधारि । होंतो कृत अकृतरहों त्रिभुवनआनँदबारि ।
बन्दनायोग्यये ४३ कबहूंकै सुरागाय श्याम के इन्हैं रिझाऊं । ताते

प्रेमाभक्ति श्यामसुंदरकी पाऊं। जिहिविधि मोपै रीझहीं सो विधि करौं बनाय। तासे मो मन शुद्ध है दुविधा ज्ञान मिटाय। पाय रस प्रेमको ४४ ताहीक्षण यकभँवर कहूं तेहो उड़िआयो। ब्रजवनितनके पुंज माहिं गुञ्जत छबिछायो। चहेउ चहतहैपगनपै अरुणाकमल दल जानि। मानो मन ऊधोभयो प्रथमहिं प्रकटेउ आनि। मधुप को बेष धरि ४५ ताहि भँवरसों कहैं सबै प्रतिउत्तर बातैं। तर्क बितर्क नि- युक्ति प्रेमरसरूपी घातैं। जनिपरशौ ममपावँरे तुम मानत हमचोर। तुमहींसे कपटीहुते मोहननंदकिशोर। यहांते दूरिहो ४६ कोऊकहैरी विषमांझ जेते हैं कारे। कपटकुटिलकी कोटिपरममानुष मसिहारे। एकश्यामतन परशिकै जरतआजलों अंग। तापाछे यामधुपहूलायो योग भुवंग। कहाइनकोदया ४७ कोउ कहैरी मधुपबेष उनहीं को धारेउ। श्यामपीत गुंजारबैन किंकिणि झनकारेउ। वा पुर गोरस चोरिकै फिरिआयो यहदेश। इनकोजनि मानहु कोऊ कपटी इन कोबेश। चोरिजनि जायकछु ४८ कोऊकहैरे मधुपकहैं अनुरागी तुमको। कौनेगुणको जानि यही अचरजहै हमको। कारोतन अति पातकी मुखपियरोजगनन्द। गुणअवगुण सबआपनो आपुहिंजानि अलिन्द। देखिले आरसी ४९ कोउकहैरे मधुप कहातू रसको जानै। बहुत कुसुमपरबैठि सबै आपनसम मानै। आपन सम हमको कियो चाहत है मतिमन्द। द्विविध ज्ञान उपजाय कै दुखित प्रेम आनन्द। कपट के छन्दसों ५० कोउ कहै रे मधुप कहा मोहनगुणगावै। हृदय कपट सों परमप्रेम नाहिंन छबिपावै। जानति हो सब भांतिकै सर्बस लियो चुराय। येबौरी ब्रजबासिनी कोजो तुम्हैं पतियाय। लहे हम जानिकै ५१ कोउ कहै रे मधुप कौन कहै तुम मधुकारी। लिये फि- रत मुख योगगांठ काटाव कटारी। रुधिर पानकियो बहुतकै अरुण अधर रँगरात। अब ब्रजमें आयेकहा करनकौन को घात। जातकिन पातकी ५२ कोउ कहै रे मधुप प्रेम षटपद पशुदेख्यो। अबलों यहि ब्रज देश नाहिं कोउनाहिं बिशेख्यो। द्वै सँगआनन ऊपरोजामें कारो गात। खल अमृतसम मानहीं अमृत देखि डरात। बादियहरसिकता ५३ कोउ कहै रे मधुप ज्ञान उलटो लेआयो। मुक्तिपरे जे फेरि तिन्हैं

पुनि कर्म बतायो। वेद उपनिषद सार जे मोहन गुण गहिलेत। तिनके आत्मा शुद्धकरि फिरिकर दयादेत। योग चतसारमें ५४ कोउ कहैरे मधुप निर्गुण इन बहुकरि जान्यो। तर्क वितर्क नियुक्त बहुत उनको यह आन्यो। पर इतनो नहिं जानहीं वस्तु विना गुण नाहिं। निर्गुण होहिं अतीत के सगुण सकल जगमाहिं। सखा सुनु श्याम के ५५ कोउ कहै रे मधुप तुम्हें लज्जा नहिंआवै। सखा तुम्हारे श्याम कूबरीनाथ कहावै। यहनोचो पदवीहुतीगोपीनाथ कहाय। अब यदु कुल पावनभयो दासी जूंठनिखाय। मरतकहं बोलको ५६ कोउ कहै अहो मधुपश्यामयोगी तुमचेला। कुब्जा तीरथजायकियो इन्द्रिनको मेला। मधुवन सुधि विसरायके आयोगोकुल माहिं। यहांसबै प्रेमी बसैं तुम्हरो गाहक नाहिं। पधारो रावरे ५७ कोउ कहैरे मधुप साधु मधुवनकेऐसे। और तहांके सिद्धलोग ह्वै हैं धौं कैसे। अवगुण गुण गहिलेतहैं गुणको डारतमेटि। मोहन निर्गुण को गहैं तुम साधनको भेंटि। गांठिको खोइकै ५८ कोउकहैरे मधुपहोहिं तुमसेजोसंगी। क्यों न होय तनश्याम सकल बातन चोरंगी। गोकुलमें जोरीकोऊ पाई नाहिं तुम्हारि। मदन त्रिभंगी आपुही करी त्रिवंकीनारि। रूपगुण शील की ५९ यहिविधि सुमिरिगोविन्द कहतिऊधोप्रतिगोपी। भृ- ङ्गसंज्ञाकरि कहत सकल कुल लज्जालोपी। तापाछे इकबारही रु- दितसकल ब्रजनारि। हा करुणामय नाथ हा केशव कृष्ण मुरारि। फाटिहियरोचल्यो ६० उमँगो जो कोउ सलिल सिंधुलै तनकीवारनि। भीजत अम्बुजनारि कंचुकी बहुगुण हारनि। ताहीप्रेमप्रवाहमें उद्धव चले बहाय। भलीज्ञानकोमेंड हौं ब्रजमें दीन्होआय। कुलहितारनभये ६१ प्रेमप्रशंसा करत शुद्धजोभक्ति प्रकाशी। दुविधा ज्ञान गलानि मन्दता सिगरीनाशी। कहतमोहिंविस्मयभयो हरिके ये निजपात्र। हौंतो कृतकृत ह्वै गयो इनकेदर्शनमात्र। मेटिमत ज्ञानको ६२ पुनिपुनि कहि हरिकहन बात एकांतपठायो। मैं इनको कछु मर्म जानिसको नहिंपायो। कहौं जु निज मर्याद की ज्ञानकर्म लो रोपि। प्रेमब्रप्रे- मासकह्वै कुललज्जाकरि लोपि। धन्ययेगोपिका ६३ जोऐसे मर्या दमेटि मोहनकोध्यावैं। काहेन परमानंद प्रेमपदवीकोपावैं। ज्ञानयोग

सबकरसते प्रेम परेहीसांच । हैंयहिपटतर देतहैंहीराआने कांच ।
विषमता बुद्धिकी ६४ धन्य धन्य जोलोग भजत हरिकोजो ऐसे । जे
कोउ पारसऔर प्रेमबिन पावतकैसे । मेरेयालघुज्ञानको उरमद रहेउ
उपाध । अबजानो व्रजप्रेमकोलहत न आधोआध । वृथाश्रमकरियके
६५ पुनिकह उत्तम साधुसंग नित्यैहै भाई । पारस परशेलोह तुरतकं-
चन ह्वै जाई । गोपीप्रेम प्रसादको हौं अब सीखो आय । ऊधोते मधु-
कर भयो द्विविधा ज्ञान मिटाय । पायरसप्रेमको ६६ पुनिकहि पर-
शतपायँ प्रथमहो इनहिं निवारो । भृङ्ग सँज्ञाकरिकहतनन्दसबहीते
डारो । अब ह्वैरहौं व्रजभूमिको पग मारगकी धूरि । बिचरतपदमोपै
परै सबसुखजीवनमूरि । मुनिन दुर्लभ अहै ६७ कैसेहोहुं द्रुमलता बेलि
बल्लीबनमाहीं । आवत जात सभाय परति मोपै परछाहीं । सोऊमेरे
बशनहीं जोकछुकरों उपाय । मोहनहोहिंप्रसन्नजो यहबरमांगौंजाय
कृपाकरि देहुजू ६८ ऐसेमग अभिलाषकरत मथुरा फिरिआयो । गद्-
गद पुलकितरोम अंग आवेश जनायो। गोपीगुण गावनलग्यो मोहन
गुण गयभूलि । जीवनको लै कहकरैं जोनहिं जीवनमूलि । भक्तिको
सारयह ६९ ऐसेशोचत जहां श्याम तहँआयोधायो । परिकर्मा दण्ड
वत बहुतआवेशजनायो । कछुनिर्दयता श्यामकी करि कोपित दोउ
नैन । कछुब्रजबनिता प्रेमकी बोलत रस भरिबैन । सुनौ नँदलाड़िले
७० करुणामयअरु रसिकतातुम्हरीसबझूठी । जबहीं लौं नहिंलखी
तबहिंलौंबांधी मूठी । मैंजान्योब्रज जायकै तुम्हरो निर्दयरूप । जोतुम
को अवलंबही वाकोमेलोकूप । कौन यहधर्महै ७१ पुनिपुनि कहहो
चलौजाय वृन्दावन रहिये । प्रेमपुंज को प्रेमजाय गोपिनसँग लहि-
ये । और काम सब छाँड़िकै उनलोगनि सुखदेहु । नातरूटूट्यो जातहै
अबहीं नेह सनेहु । करौगे तो कहा ७२ सुनत सखा के बैन नैन भरि
आये दोऊ । बिबश प्रेम आवेश रही नाहीं सुधि कोऊ । रोम रोम
प्रतिगोपिका ह्वैरहि साँवरिगात । कल्प तरोरुह साँवरो ब्रजबनिता
भईंपात । उलहि अंगअंगते ७३ हो सचेत कहिभलो सखापठयो सु-
धिल्यावन । अवगुण हमरेआनि तहांते लगेबतावन । मोमें उनमें अ-
न्तरो एकौ-छनतिरनाहिं । ज्यों देखौमोमाहिं वे त्योंमैं उनहींमाहिं।

तरंगनि बारि ज्यों ७४ गोपीरूप दिखाय तबै मोहन बनवारी। ऊधो भ्रमहिं निवारिडारिसुख मोहकि जारी। अपनोरूपदिखायकैलीन्हो बहुरि दुराय। नंददास पावनभयो जो यहलीलागाय। प्रेमरससुपुंजनी ७५ मधुकर काहेको गोकुल आये। वैसेही सच अपने मनमें दूलोंबि रह जगाये। हमजानतिहैं जिन्हें पठाये श्यामसँदेशो ल्याये। जनम जनम के दूत तिरावन कौनहिं लार लगाये। कहा करहिं कहँ जायँ सखीरी हरि बिन कछु न सुहाये। जन्म सुफल सूरतिनकोजे का- जपरायेधाये १॥ रागमलार॥ आयेसाईढुरँगश्याम के संगी। जोपहिले रँगरँगे श्याम रँग तिनहींको बुधिरंगी। हमरीउनकी सी मिलवतहौ ताते भये बिहंगी। सुधीकहै सबनि समुझावत ते सांचे सरबंगी। औ- रनि को सरबसु लै मेटत आपुन भये त्रिभंगी। सूरसुनाम शिलीमुख जोपै वे घन कबँच उपंगी २ आयेनँदनन्दनकेभेव। गोकुलमांझ योग बिस्ताख्योभली तुम्हारी जेव। अब वृंदावन रासरच्यो हरि तबहिं कहाये देव। अबयह ज्ञान सिखावन आही भस्म अधारी सेव। अब- लन को लै सो ब्रत ठान्यो जो योगिन को योगु। सूरदास ये सुनत न जीवहिं आतुर बिरह बियोगु ३ कोउब्रज बांचतनाहिंन पाती। कत लिखिलिखि पठवत नँदनन्दन कठिन बिरह की काती। नयनसजल कागज़ अति कोमल कर अँगुरी अति ताती। परसे जरे बिलोके भीजे दुहूं भांति दुखछाती। क्यों ये बचन सुअंक सूर सुनि बिरहमदन शरघाती। मुखमृदु बचन बिना सींचे अब जिवहिं प्रेमरसमाती ४॥ रागसारंग॥ देनआये ऊधोमतनीको। हित उपदेश करनब्रजआये लिये मतो हरिजीको। योगयुगति निरगुण उपदेशत ज्ञानसुनायपतीको। आवहुरी मिलि सुनहु सयानी लिये सुयश को टीको। तजन कहत अम्बर आभूषण देहगेह सुतहीको। अंगभस्मकरि शीशजटा धरि सि- खवत निरगुण फीको। मेरेजानयहै युवतिनको देतफिरतदुखपीको। ता सरापले भयेश्यामतन तऊण गहत डरजीको। जाकीप्रकृति परीरी जीवहि तैसोशोच न भलीबुरीको। जो लगि सूरब्याल डसि भाजो सुखनाहिं होतअमीको ५॥ रागबिहाग। तालयकतारा॥ कथाकथा करतडोलं कथाकहां पाऊं। द्वारेतेदौड़आऊं तोऊ नलाज लजाऊं सोहिंछांड़ि

और की मैं कौन की कहाऊं । ऊधो तुम बेगि जाओ प्रेम लिखि पठाऊं । ढूंढत फिरौं बनकुंजमाहिं श्याम श्याम गाऊं । बिधना नहिं पंखदियें उड़िकै तहँ जाऊं । ऊधो तुम बेग जाओ श्यामहिंलै आओ । सूरजप्रभु दरश दियो सबहि कंठ लाओ ६ ॥

इतिसूरसागरभ्रमरगीतसम्पूर्णम् ॥

इतिश्रीसूरदासजीकृतसूरसारावलीनित्यकीर्त्तनरागकल्पद्रुमादि
अनेकरागसंयुक्तसूरसागरसमाप्तः ॥



मुंशीनवलकिशोर के छापेखाने मुक़ाम लखनऊ में छपा फ़रवरी सन् १८८६ ई०